बृहत् मुहावरा कोश

(प्रथम खण्ड)

संकलन एवं सम्पादन

प्रतिभा अग्रवाल

एम० ए०, डी० फिल० डी० लिट्०

''कीरति भनिति भूति भलि सोई।
सुरसरि सम सब कहँ हित होई।।''

उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान

महात्मा गाँधी मार्ग - लखनऊ

ाग ग्रन्थमाला-262

बृहत् मुहावरा कोश

(प्रथम खण्ड)

संकलन एवं सम्पादन

प्रतिभा अग्रवाल

एम० ए०, डी० फिल० डी० लिट्०



''कीरति भनिति भूति भलि सोई।
सुरसरि सम सब कहँ हित होई॥''

उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान

(हिन्दी समिति प्रभाग)

राजर्षि पुरुषोत्तमदास टण्डन हिन्दी भवन

महात्मा गांधी मार्ग, लखनऊ

Brihat Muhawara Kosh (A dictionary of 35 thousand idioms)
collected and edited by Dr.Pratibha Agrawal

प्रकाशक
विनोद चन्द्र पाण्डेय
निदेशक,
उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान,
लखनऊ

©-उ० प्र० हिन्दी संस्थान,
लखनऊ

प्रथम संस्करण : 1986

द्वितीय संस्करण : 1992

प्रतियाँ : 3000

मूल्य: रु० 140.00 (एक सौ चालीस)

मुद्रक :
जीवन शिक्षा मुद्रणालय (प्रा०) लिमिटेड
गोलघर, वाराणसी

दो शब्द

भाषा की सजीवता और प्रवाह बहुत कुछ मुहावरों पर निर्भर है। मुहावरे जीवन के सचित्र अनुभव-खण्ड हैं। ये न हों तो भाषा सूनी हो जाय। जहाँ होते हैं, भाषा बोलने लगती है। कहीं फुदक-फुदक कर चलती है, कहीं इठला कर बहती है, कहीं पर लगाकर उड़ती है। ये मुहावरे किसी एक व्यक्ति के दिये हुये नहीं होते, समाज की थाती होते हैं। परंपरा में पलते हैं, प्रयोग में पकते हैं और फिर आम जैसे मीठे होकर अपने रस से सबको आनंदित कर देते हैं। इसीलिए ये बार-बार लाये जाते हैं, दोहराये जाते हैं, मुहावरे में रहते हैं तो मुहावरा कहलाते हैं।

हिन्दी भाषा और साहित्य की अपनी एक लम्बी यात्रा है। संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश एवं अन्य अनेक भाषाओं के सौरस्य की यह भाषा उत्तराधिकारिणी या सहभागिनी है। ब्रज, अवधी, भोजपुरी, बुँदेली आदि अन्य भाषाएँ इसकी अंगभूता हैं। हिन्दी के प्रयोग का लोकालय सभी दृष्टियों से बहुत व्याप्त है। नगर, ग्राम एवं जीवन के विविध क्षेत्रों को आयत्त किये हुये इसकी शक्ति अपार है। अतएव, भाषा के अन्य अंगों की सुपुष्टता के साथ इसका मुहावरा-कोश भी अति व्यापक है।

हिन्दी के व्यापक धरातल से सभी मुहावरों का एकत्रीकरण, उनका वर्गीकरण, प्रयोग आदि का कार्य भी अत्यंत श्रमसाध्य है। डा. प्रतिभा अग्रवाल ने अपने अपूर्व परिश्रम एवं विवेक से इस कार्य को सम्पन्न किया। उन्होने मुहावरो से संबंधित इस शोध-कार्य को शोध-प्रबंध के रूप में, पहले संक्षेप में कलकत्ता विश्वविद्यालय की डी. फिल् उपाधि के लिये, तदुपरान्त उसका विस्तार कर अधिक व्यापकता के साथ डी. लिट्. उपाधि के लिये प्रस्तुत किया। उनके शोध-प्रबंधों के परीक्षक भी ख्यातनामा विद्वान् थे। सभी ने उनके कार्य की जी-खोलकर प्रशंसा की। इससे इस कार्य की प्रामाणिकता पर भी मुहर लग गई।

डा. प्रतिभा अग्रवाल के शोध-प्रबंध के दूसरे भाग को, जिसमे 35000 मुहावरे हैं उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान ने तीन खण्डो मे प्रकाशित किया है। इसका प्रथम खण्ड सन् 1986 में प्रकाशित हुआ। अध्येताओं में यह लोकप्रिय हुआ और शीघ्र ही इसका प्रथम संस्करण समाप्त हो गया।

वृहत् मुहावरा कोश के प्रथम खण्ड के द्वितीय संस्करण का प्रकाशन करते हुए हमें अपार हर्ष हो रहा है। आशा है, हिन्दी-प्रेमी सज्जन इस ग्रन्थ से लाभान्वित होंगे।

गंगा दशहरा
ज्येष्ठ शुक्ल 19 सं. 2049
10 जून 1992

डॉ. शरण बिहारी गोस्वामी
कार्यकारी उपाध्यक्ष

प्रकाशकीय

किसी भी भाषा में निहित भावों की सहज-सरल सम्प्रेषणीयता के लिए आवश्यक है कि उसमें मुहावरों का समावेश हो। मुहावरों के प्रयोग से भाषा में सजावट आती है, उसके प्रति पढ़ने अथवा सुनने वालों को रुचि बढ़ती है। प्रचलित मुहावरे तो स्मृति-पटल पर अंकित रहते हैं, जिनका समावेश लेखन अथवा वार्तालाप में किया जाता है परन्तु पूर्णतया मुहावरेदार प्रभावी भाषा के लिए आवश्यक है कि मुहावरों का कोई संकलन उपलब्ध हो, जिसकी सहायता से आवश्यकतानुसार उचित स्थान पर उचित मुहावरों का प्रयोग किया जा सके।

भाषा की इसी अपेक्षा को ध्यान में रखकर उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान द्वारा बृहत् मुहावरा कोश के प्रकाशन की व्यवस्था की गयी थी। कोशों की अपनी श्रृंखला के तारतम्य में यह हर्ष का विषय है कि अब बढ़ती हुई मांग को देखते हुए बृहत् मुहावरा कोश के प्रथम खण्ड का द्वितीय संस्करण प्रस्तुत किया जा रहा है। आशा है, हमारे इस प्रयास का हिन्दी जगत् मे पूर्ववत् स्वागत होगा।

विनोद चन्द्र पाण्डेय
निदेशक

प्रस्तुत ग्रंथ

आज से 26–27 वर्ष पूर्व सन् 1960 के आसपास हिन्दी मुहावरों पर कार्य शुरू किया था। मेरे पिता स्वर्गीय बाल कृष्ण दास (सुपुत्र बाबू राधाकृष्ण दास) ने यों ही बैठे-बैठे करीब बीस हजार मुहावरों का संग्रह कर डाला था। इनमें से करीब पांच हजार मुहावरे हिन्दी के साहित्यिक ग्रंथों से लिये गये थे, शेष आम बोलचाल से संग्रहीत थे। साहित्य में प्रयुक्त करीब पांच हजार और मुहावरों का संग्रह करके मैंने उन पर काम शुरू किया। संग्रहीत मुहावरों का पूरा संदर्भ प्रस्तुत करने के साथ ही उनका वर्गीकरण शुरू किया—संज्ञायुक्त मुहावरे, संज्ञा-क्रिया युक्त मुहावरे, विशेषण-संज्ञा-क्रिया युक्त मुहावरे आदि-आदि। अध्ययन के लिए कबीर से प्रारम्भ करके सन् 1960–61 तक प्रकाशित 73 लेखकों की 151 पुस्तकें ली गयी थीं जिनमें कविता, कहानी, उपन्यास, निबन्ध आदि साहित्य की सभी विधाएं सम्मिलित थीं। इन ग्रंथों में कई ग्रंथावलियां भी थीं। इनमें से करीब दस हजार मुहावरों का संग्रह करके एवं उनका उपर्युक्त ढंग से वर्गीकरण करके "हिन्दी मुहावरे (अध्ययन, संकलन एवं साहित्यिक प्रयोग)" शीर्षक से सन् 1963 में मैंने अपना पहला शोध प्रबंध कलकत्ता विश्वविद्यालय में डी० फिल० की उपाधि के लिए प्रस्तुत किया जो स्वीकृत हुआ एवं जिसका प्रकाशन सन् 1969 में कलकत्ता विश्वविद्यालय ने किया। पुस्तक के फ्लैप पर प्रकाशकों ने शोध प्रबंध के तीनों परीक्षकों के मत उद्धृत किये—

> हमें इसमें कोई भी संदेह नहीं है कि प्रकाशित होने पर प्रस्तुत शोध-कार्य भारतीय-आर्य भाषाओं में उपलब्ध मुहावरा-साहित्य तथा अभिव्यक्ति के अन्यान्य माध्यमों के भंडार में एक अत्यन्त महत्वपूर्ण योगदान होगा।
>
> **—डाक्टर सुनीति कुमार चाटुर्ज्या**

> प्रस्तुत शोधकार्य की मौलिकता, हिन्दी के अनेक लेखकों की रचनाओं से सामग्री के संग्रह एवं उसको आगे और अध्ययन के लिए संयोजन करने में है। अपने आप में यह एक विशाल काम रहा है और इसे योग्यता एवं निष्ठा से पूरा करने के कारण शोधकर्ता प्रोत्साहन की अधिकारी हैं।
>
> **—डाक्टर धीरेन्द्र वर्मा**

> हिन्दी मुहावरों के इस महान संग्रह को प्रस्तुत करने में शोधकर्ता ने दृष्टिकोण की जिस व्यापकता का परिचय दिया है, उसकी प्रशंसा किये बिना कोई नहीं रह सकता।
> प्रस्तुत कार्य व्याख्यात्मक नहीं है। किन्तु इसका महत्व उस सामग्री के संग्रह में है जो बहुमूल्य है।
>
> **—डाक्टर सुकुमार सेन**

भारतीय भाषाओं के तीन दिग्गज विद्वानों के उपर्युक्त मतों ने ग्रंथ को गौरवान्वित किया और मुझे आगे इस दिशा में कार्य करने के लिए प्रेरित किया। अब तक मेरे पास 25 हजार मुहावरे एकत्र हो चुके थे। मैंने अनुभव किया कि इस कोश को और समृद्ध करके एक बड़ा मुहावरा कोश प्रस्तुत किया जा सकता है। वैसे भी पहले ग्रंथ में हिन्दी साहित्य में प्रयुक्त केवल 10 हजार मुहावरे ही दिये गये थे। मैंने सन् 1970 में पुनः कार्य करना प्रारम्भ किया, करीब 30–32 ग्रंथों को और देखा, विभिन्न मुहावरा कोशों से छूटे मुहावरों को लिया और इस प्रकार 36–37 हजार मुहावरों के संग्रह का अध्ययन एवं सम्पादन प्रारम्भ किया। इनमें से करीब 15 हजार मुहावरों के साहित्यिक प्रयोग उपलब्ध हुए, शेष के नहीं। संग्रह में करीब 15 हजार मुहावरे ऐसे भी हैं जिनका उल्लेख न किसी ग्रंथ में मिला न किसी कोश में। हो सकता है और ग्रंथ देखने पर उनमें से कुछ के प्रयोग मिल जायें पर इस ग्रंथ को प्रस्तुत करते समय तक वे मेरी नजर में नहीं आये थे। किसी भी काम को करने के लिए कोई निमित्त तै कर लिया जाय तो काम आसान हो जाता है अतः पुनः शोध प्रबंध प्रस्तुत करने का निर्णय किया, कलकत्ता विश्वविद्यालय में ही सन् 1974 में "हिन्दी भाषा में व्यवहृत मुहावरों का भाषा-वैज्ञानिक, आलोचनात्मक एवं

तुलनात्मक अध्ययन" शीर्षक से डी० लिट० की उपाधि के लिए शोध प्रबंध प्रस्तुत किया जो सन् 1975 में स्वीकृत हुआ। करीब 3500 पृष्ठों का वह शोध प्रबंध दो भागों में विभाजित था—पहला संग्रहीत मुहावरों के अध्ययन-विवेचन से सम्बन्धित था और दूसरा अर्थ एवं प्रयोग के साथ 35 हज़ार मुहावरों का संकलन था। पहले भाग में 464 पृष्ठों में विस्तार से हिन्दी मुहावरों का ऐतिहासिक, भाषा-वैज्ञानिक, आलोचनात्मक तथा तुलनात्मक अध्ययन प्रस्तुत किया गया तथा अन्त में हिन्दी के करीब 6000 ऐसे मुहावरों का संग्रह प्रस्तुत किया गया जो हूबहू उसी रूप में या और अर्थ में बांग्ला तथा गुजराती भाषाओं के प्रयोग में प्रचलित हैं। दूसरे भाग में (चार खंडों में) हिन्दी के 35 हज़ार मुहावरों का संग्रह प्रस्तुत किया गया। प्रस्तुत ग्रंथ उक्त शोध प्रबंध के उत्तरार्द्ध का प्रथम खंड है। शेष दो खंड शीघ्र ही प्रकाशित होंगे। पूर्वार्द्ध अलग से प्रकाशनाधीन है।

जैसा कि ऊपर कहा जा चुका है, पैंतीस हज़ार मुहावरों में से करीब पंद्रह हज़ार मुहावरों के साहित्यिक प्रयोग प्राप्त हुए हैं। उनमें से अनेक के प्रयोग कबीर से लेकर आधुनिक लेखकों तक ने किये हैं। अनेक ऐसे मुहावरे भी हैं जिनका प्रयोग विशेष युग में ही हुआ है यथा साधनात्मक मुहावरों का भक्तिकाल में, श्रृंगारिक मुहावरों का रीतिकाल में तथा आधुनिक भावबोध या अंग्रेजी से समन्वित मुहावरों का आधुनिक युग में। मुहावरों की स्थिति एवं प्रामाणिकता का आधार उनका प्रयोग ही माना जा सकता है। यदि किसी क्षेत्र में किसी अर्थ में किसी मुहावरे का प्रचलन है तो उसे सही मानना ही उचित है। संग्रह के करीब चालीस प्रतिशत मुहावरों पर गण्यमान्य साहित्यकारों द्वारा विशेष अर्थ में प्रयुक्त होने की मुहर लगी ही है। करीब चालीस प्रतिशत मुहावरे ऐसे हैं जिनका साहित्यिक प्रयोग तो नहीं मिला किन्तु अन्यान्य कोशों में जिनका उल्लेख प्राप्त होता है। इनके अतिरिक्त एक बड़ी संख्या ऐसे मुहावरों की है जो उपर्युक्त दोनों कोटियों में नहीं आते तथापि आम बोलचाल में जिनका मुहावरापन प्रतिष्ठित है। संग्रहीत मुहावरों में कुछ मुहावरे ऐसे भी हैं जिनके सम्बन्ध में मन में शंका उठ सकती है, स्वयं मेरे मन में भी है तथापि उन्हें छोड़ देने की अपेक्षा उन्हें रखना अधिक उचित लगा। वैसे ऐसे मुहावरों की संख्या 1 प्रतिशत से भी कम ही होगी।

ग्रंथ के प्रारम्भ में उन ग्रंथों एवं कोशों की सूची दी गयी है जिनसे मुहावरे लिये गये हैं। उसी के साथ संदर्भ स्वरूप उद्धृत संक्षिप्त रूपों का पूरा विवरण भी दिया गया है। चूंकि ग्रंथ एवं ग्रंथकार सभी सुपरिचित हैं अतः आशा है सुधी जिज्ञासुओं को विशेष असुविधा न होगी।

मैं आभारी हूँ उन गुरुजनों की जिन्होंने इस ग्रंथ को तैयार करने में मेरा दिशा-निर्देश किया था। साथ ही आभारी हूँ उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान की जिसने ग्रंथ को प्रकाशित करने का गुरु दायित्त्व वहन करने का संकल्प किया। पूरी सावधानी बरतने के बावजूद ग्रंथ में कुछ त्रुटियाँ रह गयी हैं, मुद्रण की भूलें रह गयी हैं। पाठकों से अनुरोध है कि वे उनके लिए मुझे क्षमा करें।

प्रतिभा अग्रवाल

साहित्यिक रचनाएँ जिनसे मुहावरे संग्रह किये गये हैं

संकेत-तालिका के साथ

संकेत	पूरा विवरण	प्रस्तुत संस्करण एवं विशेष द्रष्टव्य
1. अंधेरे०—राकेश	अंधेरे बंद कमरे में—मोहन राकेश	
2. अशोक०—हृ० प्र० द्वि०	अशोक के फूल—हजारी प्रसाद द्विवेदी	चतुर्थ 1955
3. अजय०—देव०	अजय की डायरी—डा० देवराज, राजपाल एण्ड संस, दिल्ली 1960	प्रथम 1960
4. अतीत०—महादेवी	अतीत के चलचित्र—महादेवी वर्मा, भारती भंडार, प्रयाग 1941	छठां 2013 वि०
5. अना०—निराला	अनामिका—सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला', भारती भण्डार, प्रयाग 1937	द्वितीय 2005 वि०
6. अपनी०—उग्र	अपनी खबर—पाण्डेय बेचन शर्मा 'उग्र', राजकमल प्रकाशन, दिल्ली 1960	प्रथम 1960
7. अम्बु०—रा० बे०	अम्बपाली—रामबृक्ष बेनीपुरी, बेनीपुरी प्रकाशन, पटना–6	संशोधित नवीन संस्करण 195[illegible]
8. अमृत और विष—नागर	अमृत और विष—अमृतलाल नागर, लोक भारती प्रकाशन, इलाहाबाद 1966	प्रथम 1966
9. आजाद०—प्रेमचंद	आजाद कथा—रतननाथ सरशार, अनुवाद—प्रेमचंद, सरस्वती प्रेस, बनारस 1947	तृतीय 1947
10. इंशा०—इंशा०	इंशा, उनका काव्य तथा रानी केतकी की कहानी—इंशा अल्ला खां, कमलमणि ग्रंथमाला कार्यालय, काशी 1985 वि०	प्रथम 1985 वि०; लेखक एवं संपादक—ब्रजरत्न दास
11. इंस्टा०—भग० वर्मा	इंस्टालमेण्ट—भगवतीचरण वर्मा, भारती भंडार, प्रयाग 1936	चतुर्थ 2009 वि०
12. इश्क०—बोधा	इश्कनामा—बोधा नकछेदी तिवारी, डुमराव, शाहाबाद	रचनाकाल रीतियुग
13. उखड़े०—यादव	उखड़े हुए लोग—राजेन्द्र यादव, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली 1956	प्रथम 1956
14. उलटा वृक्ष—कृ० चं०	उलटा वृक्ष—कृशनचंदर, राजपाल एंड संस, दिल्ली	प्रथम : सन् का उल्लेख नहीं है

संकेत	पूरा विवरण	प्रस्तुत संस्करण एवं विशेष द्रष्टव्य
15. एक०–मुल्क०	एक था राजा—मुल्कराज आनंद	
16. एक चादर०–बेदी	एक चादर मैली सी—राजेन्द्र सिंह बेदी, नीलाभ प्रकाशन, इलाहाबाद 1961	प्रथम 1961
17. एक म्यान०–नानक०	एक म्यान दो तलवारें—नानकसिंह, राजपाल एंड सन्स, दिल्ली 1968	प्रथम 1968
18. कंकाल–प्रसाद	कंकाल—जयशंकर प्रसाद, भारती भंडार, प्रयाग, 1929	अष्टम 2013 वि०
19. क० ग्रंथा०–कबीर	कबीर ग्रंथावली—कबीर, नागरी प्रचारिणी सभा, काशी 1987 वि०	चतुर्थ 2008 वि०; साखी, सबद एवं रमैनी; संपादक श्यामसुन्दर दास; रचनाकाल भक्तियुग
20. क० र०–सेनापति	कवित्त रत्नाकर—सेनापति, हिन्दी परिषद्, विश्वविद्यालय, प्रयाग 1936	चतुर्थ 1949; रचनाकाल रीतियुग
21. कठ०–दे० स०	कठपुतली—देवेन्द्र सत्यार्थी, एशिया प्रकाशन, नयी दिल्ली, 1954	प्रथम 1954
22. कनु०–भारती	कनुप्रिया—धर्मवीर भारती, भारतीय ज्ञानपीठ, काशी 1959	प्रथम 1959
23. कबीर–हृ० प्र० द्वि०	कबीर—हजारीप्रसाद द्विवेदी, हिन्दी ग्रंथ रत्नाकर लि०, बम्बई 1968 वि०	पंचम 1955
24. कम०–कम०	कमलेश्वर : श्रेष्ठ कहानियां—कमलेश्वर, राजपाल एंड संस, दिल्ली	उल्लेख नहीं
25. कर्म०–प्रेमचंद	कर्मभूमि—प्रेमचंद, हंस प्रकाशन, प्रयाग 1932	प्रथम 1932
26. कला०–पंत	कला और बूढ़ा चांद—सुमित्रानंदन पंत, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली 1959	प्रथम 1959
27. कला०–उग्र	कला का पुरस्कार—पांडेय बेचन शर्मा उग्र, आत्माराम एंड संस, दिल्ली 1955	प्रथम 1955
28. कल्याणी–जैनेन्द्र	कल्याणी—जैनेन्द्र कुमार, हिन्दी ग्रंथ रत्नाकर कार्यालय, बम्बई 1940	तृतीय 1953
29. कवि०–तुलसी	कवितावली—तुलसीदास, गीता प्रेस, गोरखपुर	पंद्रहवां 2015 वि० रचनाकाल भक्तियुग
30. कामना–प्रसाद	कामना—जयशंकर प्रसाद, भारती भंडार, प्रयाग 1984 वि०	चतुर्थ 2004 वि०
31. कुछ–प० पु० बख्शी	कुछ—पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी, इंडियन प्रेस, इलाहाबाद 1947	प्रथम 1947

संकेत	पूरा विवरण	प्रस्तुत संस्करण एवं विशेष द्रष्टव्य
32. कुण्ड०–गिरधरदास	कुण्डलिया—राय गिरधरदास	रचनाकाल–रीतियुग
33. कुरु०–दिनकर	कुरुक्षेत्र—दिनकर, आर० सिन्हा, 2003 वि०	प्रथम 2003 वि०
34. कुल्ली०–निराला	कुल्ली भाट—सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला, गंगापुस्तक माला, लखनऊ 1939	द्वितीय 2004 वि०
35. केशव० (1)–केशव	केशव ग्रंथावली, भाग 1—केशवदास, हिन्दुस्तानी एकेडमी, उत्तर प्रदेश, इलाहाबाद 1954	प्रथम 1954; रचनाकाल—भक्तियुग
36. केशव० (2)–केशव	केशव ग्रंथावली, भाग 2—केशवदास, हिन्दुस्तानी एकेडमी, उत्तर प्रदेश, इलाहाबाद 1955	प्रथम 1955 रचनाकाल—भक्तियुग
37. गंगा०–उग्र	गंगा का वेटा—पांडेय वेचन शर्मा उग्र, स्वरूप ब्रदर्स, खजुरी बाजार, इन्दौर 1940	प्रथम 1940
38. ग़वन–प्रेमचंद	ग़वन—प्रेमचंद, हंस प्रकाशन, इलाहाबाद 1931	उल्लेख नहीं
39. गीता०–तुलसी	गीतावली—तुलसीदास, गीता प्रेस, गोरखपुर	रचनाकाल—भक्तियुग; पद संख्या दी गयी है
40. गु० कहा०–गुलेरी	गुलेरीजी की अमर कहानियां—चंद्रधर शर्मा गुलेरी, सरस्वती प्रेस, वनारस	तृतीय 1945
41. गु० नि०–बा० मु० गु०	गुप्त निवन्धावली—बालमुकुन्द गुप्त, गुप्त-स्मारक ग्रंथ प्रकाशन समिति, 147, हरिसन रोड, कलकत्ता 2007 वि०	प्रथम 2007 वि०; सन् 1890 से 1907 तक की रचनाएं संग्रहीत हैं
42. गुलेरी० (1)–गुलेरी	गुलेरी ग्रंथ, खंड 1—चंद्रधर शर्मा गुलेरी, नागरी प्रचारिणी सभा, काशी 2000 वि०	प्रथम 2000 वि०
43. गोदान–प्रेमचंद	गोदान—प्रेमचंद, सरस्वती प्रेस, वनारस 1936	बारहवां 1954
44. गोली–चतुर०	गोली—चतुरसेन शास्त्री, राजहंस प्रकाशन, दिल्ली	प्रथम : सन् का उल्लेख नहीं है
45. घन० कवित्त–घना०	घनानंद कवित्त—घनानंद	प्रथम 2000 वि०; संपादक—विश्वनाथप्रसाद मिश्र; रचना-काल—रीतियुग
46. चक्र०–दिनकर	चक्रवाल—रामधारीसिंह दिनकर, उदयाचल, पटना 1956	प्रथम 1956; स्व-संकलित; रेणुका, हुंकार, रसवन्ती, द्वन्द्व गीत, सामधेनी, कुरुक्षेत्र, वापू, धूप-छांह, धूप और धुंआ, रश्मिरथी, नीम के पत्ते, दिल्ली एवं नीलकुसुम रचनाओं से संकलित
47. चतुरी०–निराला	चतुरी चमार—सूर्यकांत त्रिपाठी निराला, किताव महल, इलाहाबाद 1945	द्वितीय 1947

संकेत	पूरा विवरण	प्रस्तुत संस्करण एवं विशेष द्रष्टव्य
48. चिंता० (1)–शुक्ल	चिंतामणि भाग-1—रामचंद्र शुक्ल, इंडियन प्रेस, इलाहाबाद 1919	उल्लेख नहीं
49. चित्र०–भग० वर्मा	चित्रलेखा—भगवतीचरण वर्मा, भारती भंडार, इलाहाबाद 1934	सोलहवां 2016 वि०
50. चित्र०–कौशिक	चित्रशाला—विश्वम्भरनाथ शर्मा कौशिक, गंगा पुस्तक माला, लखनऊ 1924	तृतीय 2001 वि०
51. चुभते०–हरिऔध	चुभते-चौपदे—अयोध्यासिंह उपाध्याय हरिऔध, हिन्दी साहित्य कुटीर, बनारस 1924	प्रथम 1924
52. चेतन–अश्क	चेतन—उपेन्द्रनाथ अश्क, 5, खुसरो बाग, इलाहाबाद 1952	प्रथम 1952
53. चोखे०–हरिऔध	चोखे चौपदे—अयोध्या सिंह उपाध्याय हरिऔध, हिन्दी साहित्य कुटीर, बनारस 1924	नवीन संस्करण 2008 वि०
54. चोटी०–निराला	चोटी की पकड़—सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला, किताब महल, इलाहाबाद 1946	द्वितीय 1947
55. जग०–पद्माकर	जगद्विनोद—पद्माकर, वाणी वितान, ब्रह्मनाल, वाराणसी 1992 वि०	द्वितीय 2015 वि० संपादक—विश्वनाथप्रसाद मिश्र; रचनाकाल–रीतियुग
56. जय०–गुप्त	जयद्रथ-वध—मैथिलीशरण गुप्त, साहित्य सदन, चिरगांव, झांसी 1910	उनतालिसवां 2011 वि०
57. जय०–जैनेन्द्र	जयवर्धन—जैनेन्द्र कुमार	उल्लेख नहीं
58. जहाज०–इ० जोशी	जहाज का पंछी—इलाचंद्र जोशी, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली 1955	प्रथम 1955
59. जिंदगी–निर्गुण	जिंदगी—द्विजेन्द्रनाथ निर्गुण, किताब महल, इलाहाबाद 1954	प्रथम 1954
60. जिंदगी०–उषा०	जिंदगी और गुलाब के फूल—उषा प्रियम्वदा, भारतीय ज्ञानपीठ, काशी 1961	प्रथम 1961
61. जैसे०–परसाई	जैसे उनके दिन फिरे वैसे [सबके फिरें—हरिशंकर परसाई, भारतीय ज्ञानपीठ, काशी 1963	प्रथम 1963
62. ज्ञान०–यशपाल	ज्ञानदान—यशपाल, विप्लव प्रकाशन, 1947	प्रथम 1947
63. झांसी०–वृं० वर्मा	झांसी की रानी—वृंदावनलाल वर्मा, मयूर प्रकाशन, झांसी 1946	पंचम 1954
64. झूठा० (1)–यशपाल	झूठा-सच भाग-1—यशपाल, विप्लव कार्यालय, लखनऊ 1958	प्रथम 1958
65. झूठा० (2)–यशपाल	झूठा-सच भाग-2—यशपाल, विप्लव कार्यालय, लखनऊ 1960	प्रथम 1960

संकेत	पूरा विवरण	प्रस्तुत संस्करण एवं विशेष द्रष्टव्य
66. टेढ़े०–भग० वर्मा	टेढ़े मेढ़े रास्ते—भगवती चरण वर्मा, भारती भंडार, इलाहाबाद	तृतीय 1954
67. ठाकुर०–ठाकुर	ठाकुर शतक—ठाकुर, भारत जीवन प्रेस	1904; संपादक—काशीप्रसाद रचनाकाल–रीतियुग
68. ठेठ०–हरिऔध	ठेठ हिन्दी का ठाट—अयोध्यासिंह उपाध्याय हरिऔध, हिन्दी साहित्य कुटीर, बनारस 1899	नूतन संशोधित प्रथम संस्करण 2011 वि०
69. डार०–कृ० सो०	डार से बिछुड़ी—कृष्णा सोबती, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली 1960	प्रथम 1960
70. तितली–प्रसाद	तितली—जयशंकर प्रसाद, भारती भंडार, प्रयाग 1934	आठवां 2015 वि०
71. त्याग०–जैनेन्द्र	त्यागपत्र—जैनेन्द्र कुमार, हिन्दी ग्रंथ रत्नाकर प्रा० लि० बम्बई 1937	सातवां 1955
72. दिनकर०–प्रवासी	दिनकर के काव्य—प्रवासी, आनन्द पुस्तक भवन, पहड़िया, वाराणसी–2 सन् 1957	प्रथम 1957
73. दिल०–जी०	दिल ही तो है—जी० पी० श्रीवास्तव, हिन्द पाकेट बुक्स प्राइवेट लिमिटेड, दिल्ली	उल्लेख नहीं
74. दूध०–दे० स०	दूधगाछ—देवेन्द्र सत्यार्थी, राजकमल प्रकाशन, 1958	प्रथम 1958
75. दे० दु०–शिव०	देहाती दुनिया—शिवपूजन सहाय, पुस्तक भंडार, पटना	तृतीय 1939
76. देवकी०–रां० रा०	देवकी का बेटा—रांगेय राघव, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा 1954	द्वितीय 1956
77. दोहा०–तुलसी	दोहावली—तुलसीदास, श्री सद्गुरु कुटीर, गोलाघाट, अयोध्याजी	प्रथम 2015 वि०; रचनाकाल–भक्तियुग, दोहा संख्या दी गयी है
78. धरती०–वि० प्र०	धरती अब भी घूम रही है—विष्णु प्रभाकर, राजपाल एंड संस, दिल्ली 1959	प्रथम 1959
79. धूम०–उ० भट्ट	धूमशिखा—उदयशंकर भट्ट, गौतम बुक डिपो, दिल्ली 1949	प्रथम 1949
80. ध्रुव०–प्रसाद	ध्रुवस्वामिनी—जयशंकर प्रसाद, भारती भंडार, इलाहाबाद 1990 वि०	पंद्रहवां 2016 वि०
81. नंद० ग्रंथा०–नंद०	नंददास ग्रंथावली—नंददास, नागरी प्रचारिणी सभा, काशी 2006 वि०	दूसरा 2014 वि०; संपादक—ब्रजरत्नदास; रचनाकाल–भक्तियुग
82. नदी०–अज्ञेय	नदी के द्वीप—सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन अज्ञेय, सरस्वती प्रेस, वाराणसी	तृतीय
83. नये हाथ–वि० रस्तोगी	नये हाथ—विनोद रस्तोगी, आत्माराम एंड संस, दिल्ली	द्वितीय 1967

संकेत	पूरा विवरण	प्रस्तुत संस्करण एवं विशेष द्रष्टव्य
84. निर्मला–प्रेमचंद	निर्मला—प्रेमचंद, हंस प्रकाशन, इलाहाबाद 1928	दसवां 1961
85. निशि०–वि० प्र०	निशिकान्त—विष्णु प्रभाकर, आत्माराम एंड संस, दिल्ली 1955	प्रथम 1955
86. नूर०–भक्त	नूरजहां—गुरुभक्तसिंह भक्त, गुरुदास एंड ब्रदर्स, आजमगढ़ 1935	बारहवां संस्करण
87. पंच०–गुप्त	पंचवटी—मैथिलीशरण गुप्त, साहित्य सदन, चिरगांव, झांसी 1925	इकतिसवां 2010 वि०
88. पद०–जायसी	पद्मावत—मलिक मुहम्मद जायसी, साहित्य सदन, चिरगांव, झांसी 2012 वि०	प्रथम 2012 वि०; संपादक—वासुदेव शरण अग्रवाल; खंड एवं चौपाई संख्या दी गयी है; रचनाकाल–भक्तियुग
89. पद्म० के पत्र–पद्म० शर्मा	पद्मसिंह शर्मा के पत्र—पद्मसिंह शर्मा, आत्माराम एंड संस, दिल्ली–6 सन् 1956	प्रथम 1956; संपादक—बनारसी दास चतुर्वेदी, हरिशंकर शर्मा
90. पद्म पराग–पद्म० शर्मा	पद्म पराग—पद्मसिंह शर्मा, भारती पब्लिशर्स लि०, पटना 1986 वि०	प्रथम 1986 वि०
91. पद्मा०–पद्माकर	पद्माभरण—पद्माकर, वाणी वितान, ब्रह्मनाल, काशी 1992 वि०	द्वितीय 2015 वि०; संपादक–विश्वनाथप्रसाद मिश्र; रचना-काल–रीतियुग
92. परख–जैनेन्द्र	परख—जैनेन्द्र कुमार, हिन्दी ग्रंथ रत्नाकर लिमिटेड, बम्बई–4, 1929 या 1930	नवम् 1960
93. परती०–रेणु	परती परिकथा—फणीश्वर नाथ रेणु, राजकमल प्रकाशन, 1957	प्रथम 1957
94. परि०–निराला	परिमल—सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला', गंगा पुस्तक माला, लखनऊ 1930	पंचम 2007 वि०
95. परीक्षा०–श्री० दास	परीक्षा गुरु—श्रीनिवास दास, मारवाड़ी टेडर्स एसोसिएशन, कलकत्ता 1884 वि०	द्वितीय
96. पल्लव–पंत	पल्लव—सुमित्रानंदन पंत, भारती भंडार, प्रयाग 1926	पंचम 2005 वि०
97. पैंतरे–अश्क	पैंतरे—उपेन्द्रनाथ अश्क, नीलाभ प्रकाशन, प्रयाग	प्रथम
98. प्र० पी०–प्र० ना० मि०	प्रताप पीयूष—प्रतापनारायण मिश्र	
99. प्रतीक्षा–यादव	प्रतीक्षा—राजेन्द्र यादव, हिन्द पाकेट बुक्स प्राइवेट लि०, दिल्ली	उल्लेख नहीं
100. प्रिय०–हरिऔध	प्रिय प्रवास—अयोध्यासिंह उपाध्याय हरिऔध, हिन्दी साहित्य कुटीर, बनारस 1914	अष्टम 2010 वि०

संकेत	पूरा विवरण	प्रस्तुत संस्करण एवं विशेष द्रष्टव्य
101. प्रेम सा०—ल० ला०	प्रेम सागर—लल्लू लाल, भार्गव बुक डिपो, चौक, बनारस 1867	द्वितीय संस्करण
102. प्रेमा०—प्रेमचंद	प्रेमाश्रम—प्रेमचंद, हंस प्रकाशन, इलाहाबाद 1921	प्रथम 1921; रचनाकाल 1918–19
103. बया०—ल० ना० लाल	बया का घोंसला और सांप—लक्ष्मीनारायण लाल, नीलाभ प्रकाशन, इलाहाबाद	उल्लेख नहीं
104. बल०—ना०	बलचनमा—नागार्जुन, किताब महल, इलाहाबाद, 1952	द्वितीय 1956
105. बाण०—ह० प्र० द्वि०	बाणभट्ट की आत्मकथा—हजारी प्रसाद द्विवेदी, हिन्दी ग्रन्थ रत्नाकर कार्यालय, बम्बई 1946	द्वितीय 1954
106. बाहर०—देव०	बाहर भीतर—डा० देवराज, राजकमल प्रकाशन, कापीराइट 1954	प्रथम 1954
107. बिहारी रत्ना०—बिहारी	बिहारी रत्नाकर—बिहारीलाल ग्रन्थकार, शिवाला, बनारस 1925	द्वितीय 1955; सम्पादक—जगन्नाथ दास रत्नाकर; रचना-काल—रीतियुग; दोहा संख्या दी गयी है
108. बुद्ध०—बच्चन	बुद्ध और नाचघर—हरवंशराय बच्चन, राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली 1958	प्रथम 1958
109. बूंद०—नागर	बूँद और समुद्र—अमृतलाल नागर, किताब महल, इलाहाबाद 1956	प्रथम 1956
110. बोल०—हरिऔध	बोलचाल—अयोध्यासिंह उपाध्याय हरिऔध, हिन्दी साहित्य कुटीर, बनारस	द्वितीय 2013 वि०
111. बौने०—रां० रा०	बौने और घायल फूल—रांगेय राघव, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा 1957	प्रथम 1957
112. ब्रह्म०—दे० स०	ब्रह्मपुत्र—देवेन्द्र सत्यार्थी, एशिया प्रकाशन, नयी दिल्ली 1956	प्रथम 1956
113. भट्ट नि०—बा० भट्ट	भट्ट निबन्धावली—बालकृष्ण भट्ट, नागरी प्रचारिणी सभा, काशी 2004 वि०	प्रथम 2004 वि०
114. भारती०—रां० रा०	भारती का सपूत—रांगेय राघव, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा 1954	द्वितीय 1956
115. भा० ग्रंथा० (1)—भारतेन्दु	भारतेन्दु ग्रन्थावली भाग-1—भारतेन्दु हरिश्चन्द्र, नागरी प्रचारिणी सभा, काशी 2007 वि०	प्रथम 2007 वि०; संकलन एवं सम्पादन—ब्रजरत्न दास; भार-तेन्दु के 18 नाटक एवं निबंध

संकेत	पूरा विवरण	प्रस्तुत संस्करण एवं विशेष द्रष्टव्य
116. भा० ग्रंथा० (2)–भारतेन्दु	भारतेन्दु ग्रन्थावली भाग-2—भारतेन्दु हरिश्चन्द्र, नागरी प्रचारिणी सभा, काशी 1991 वि०	द्वितीय 2010 वि०; संकलन एवं सम्पादन—ब्रजरत्न दास; भारतेन्दु के 69 काव्य-ग्रन्थ एवं स्फुट कविताएं
117 भा० ग्रंथा० (3)–भारतेन्दु	भारतेन्दु ग्रन्थावली भाग-3—भारतेन्दु हरिश्चन्द्र, नागरी प्रचारिणी सभा, काशी 2010 वि०	प्रथम 2010 वि०; संकलन एवं सम्पादन—ब्रजरत्न दास; भारतेन्दु के निबंधों का संग्रह
118. भिखा०–कौशिक	भिखारिणी—विश्वम्भर नाथ शर्मा कौशिक, गंगा पुस्तकमाला, कार्यालय, लखनऊ 1929	उल्लेख नहीं
119. भूले०–भग० वर्मा	भूले-बिसरे चित्र—भगवतीचरण वर्मा, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली 1959	प्रथम 1959
120. भूषण ग्रंथा०–भूषण	भूषण ग्रन्थावली—भूषण, वाणी वितान प्रकाशन, काशी 2017 वि०	प्रथम 2017 वि०; सम्पादक—विश्वनाथ प्रसाद मिश्र; रचनाकाल—रीतियुग
121. भोर०–जग० माथुर	भोर का तारा—जगदीश चन्द्र माथुर, नीलाभ प्रकाशन, प्रयाग 1947	द्वितीय 1957
122. भ्र० सा०–सूर	भ्रमर गीत सार—सूरदास	सम्पादक—रामचन्द्र शुक्ल; रचनाकाल—भक्तियुग
123. मति० मक०–मतिराम	मतिराम मकरन्द—मतिराम, इंडियन प्रेस, प्रयाग 1939	प्रथम 1939; सम्पादक—हरदयाल सिंह; रचनाकाल—रीतियुग
124. मधु०–बच्चन	मधुशाला—हरवंश राय बच्चन, सुषमा निकुंज इलाहाबाद, 1935	तृतीय 1938
125. मर्म०–हरिऔध	मर्म स्पर्श—अयोध्यासिंह उपाध्याय हरिऔध, राजपाल एंड संस, दिल्ली 1954	प्रथम 1954
126. मा–कौशिक	मा—विश्वम्भर नाथ शर्मा कौशिक, गंगापुस्तक माला, लखनऊ 1929	पंचम 1954
127. मा० मा० (1)–कि० गोस्वामी	मालती माधव भाग-1—किशोरीलाल गोस्वामी, श्रीसुदर्शन प्रेस, वृन्दावन 1909–1910	द्वितीय 1919
128. मा० मा० (2)–कि० गोस्वामी	मालती माधव भाग-2—किशोरीलाल गोस्वामी, श्री सुदर्शन प्रेस, वृन्दावन 1909–1910	द्वितीय 1925
129. मान० (1)–प्रेमचंद	मानसरोवर भाग-1—प्रेमचन्द, हंस प्रकाशन, इलाहाबाद	आठवाँ 1959
130. मान० (2)–प्रेमचंद	मानसरोवर भाग-2—प्रेमचन्द सरस्वती प्रेस, बनारस 1936	उल्लेख नहीं

संकेत	पूरा विवरण	प्रस्तुत संस्करण एवं विशेष द्रष्टव्य
131. मान० (3)–प्रेमचंद	मानसरोवर भाग-3—प्रेमचन्द, हिन्दुस्तानी पब्लिशिंग हाउस	पांचवां 1950
132. मान० (4)–प्रेमचंद	मानसरोवर भाग-4—प्रेमचन्द, सरस्वती प्रेस, बनारस 1936	सातवां 1955
133. मान० (5)–प्रेमचंद	मानसरोवर भाग-5—प्रेमचन्द, हंस प्रकाशन, इलाहाबाद	उल्लेख नहीं
134. मान० (6)–प्रेमचंद	मानसरोवर भाग-6—प्रेमचन्द, हिन्दुस्तानी पब्लिशिंग हाउस, इलाहाबाद	तृतीय 1951
135. मान० (7)–प्रेमचंद	मानसरोवर भाग-7—प्रेमचन्द, हिन्दुस्तानी पब्लिशिंग हाउस, इलाहाबाद	तृतीय 1951
136. मान० (8)–प्रेमचंद	मानसरोवर भाग-8—प्रेमचन्द, हंस प्रकाशन, इलाहाबाद	द्वितीय
137. मिश्र निबंध०	माधव मिश्र–निबन्ध–माला, इंडियन प्रेस लिमिटेड, इलाहाबाद, 1992 वि०	पहला 1992 वि०; सम्पादक—द्वारका प्रसाद शर्मा; झाबर मल्ल शर्मा
138. मुकुल–सु० कु० चौ०	मुकुल—सुभद्राकुमारी चौहान, ओझा बन्धु आश्रम, इलाहाबाद 1930	प्रथम 1930
139. मृग०–वृ० वर्मा	मृगनयनी—वृन्दावनलाल वर्मा, मयूर प्रकाशन, झाँसी 1950	सातवां 1955
140. मेरे०–गुलाब	मेरे निबन्ध—जीवन और जगत—गुलाब राय, गया प्रसाद एण्ड संस, आगरा 1955	प्रथम 1955
141. मैला०–रेणु	मैला आँचल—फणीश्वर नाथ रेणु, समता प्रकाशन, पटना 1954	प्रथम 1954
142. मोहल्ले०–बिन्दु अग्र०	मोहल्ले की बुआ—बिंदु अग्रवाल	
143. यशो०–गुप्त	यशोधरा—मैथिलीशरण गुप्त, साहित्य सदन, चिरगाँव, झाँसी 1989 वि०	प्रथम 1989 वि०
144. ये कोठे०–नागर	ये कोठेवालियाँ—अमृतलाल नागर, राजकमल प्रकाशन 1961	प्रथम 1961
145. रंग० (1)–प्रेमचंद	रंगभूमि भाग-1—प्रेमचन्द, गंगा पुस्तक माला, लखनऊ 1924	बारहवां 1955
146. रंग० (2)–प्रेमचंद	रंगभूमि भाग-2—प्रेमचन्द, गंगा पुस्तक माला, लखनऊ 1924	बारहवां 1955
147. रहीम कवि०–रहीम	रहीम कवितावली—अब्दुल रहीम खानखाना, नवल किशोर प्रेस, लखनऊ 1926	प्रथम 1926; रचना—भक्ति-काल; दोहे, सोरठे, बरवै, नायिका भेद, मदनाष्टक, नगर-शोभा वर्णन, खानखाना कृत बरवै, खेट कौतुकम्, स्फुट छंद ।

संकेत	पूरा विवरण	प्रस्तुत संस्करण एवं विशेष द्रष्टव्य
148. राधा०—ब्र० स०	राधाकान्त—ब्रजनन्दन सहाय, हरिदास एण्ड कम्पनी 201, हरिसन रोड कलकत्ता 1912	प्रथम 1912
149. राधा० ग्रंथा०—राधा० दास	राधाकृष्ण ग्रन्थावली—राधाकृष्ण दास, नागरी प्रचारिणी सभा 1930	प्रथम 1930; कविता, लेख, जीवन चरित एवं पांच नाटक; सम्पादक—श्यामसुंदर दास
150. राम० (बाल) (अ) (अर) (कि) (सुं) (लं) (उ)—तुलसी	रामचरितमानस—तुलसीदास, गीताप्रेस, गोरखपुर	नवम 2014 वि०; टीकाकार—हनुमान प्रसाद पोद्दार; रचना-काल—भक्तियुग
151. रेशमी०—राम० वर्मा	रेशमी टाई—रामकुमार वर्मा, भारती भंडार, इलाहाबाद 1941	चतुर्थ 2009 वि०
152. लाल०—जी०	लाल बुझक्कड़—जी० पी० श्रीवास्तव, भार्गव पुस्तकालय, गायघाट वाराणसी 1929	द्वितीय 1948
153. लिली—निराला	लिली—सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला, गंगा ग्रन्थागार, लखनऊ 1933	तृतीय 2006 वि०
154. विनय०—तुलसी	विनय पत्रिका—तुलसीदास, गीता प्रेस, गोरखपुर	सत्रहवां 2015 वि०; रचना-काल—भक्तियुग; पद-संख्या दी गयी है
155. विष०—प्रेमी	विषपान—हरिकृष्ण प्रेमी, आत्माराम एण्ड संस, दिल्ली 1944	पंचम 1958
156. वृं० स०—वृन्द	वृन्द सतसई—वृन्द दास, ब्रदर्स बुकसेलर, अनारकली 1929 लाहौर	प्रथम 1929; रचनाकाल—रीतियुग
157. वैदेही०—हरिऔध	वैदेही-वनवास—अयोध्यासिंह उपाध्याय हरिऔध, हिन्दी साहित्य कुटीर, बनारस 1939	चतुर्थ 2007 वि०
158. वैशाली० (1)—चतुर०	वैशाली की नगरवधू भाग-1—चतुरसेन शास्त्री, शारदा प्रकाशन, भागलपुर 1949	तृतीय 1959
159. वैशाली० (2)—चतुर०	वैशाली की नगरवधू भाग-2—चतुरसेन शास्त्री, दी अपर इंडिया पब्लिशिंग हाउस, लखनऊ 1949	द्वितीय 1955
160. शब्द०—देव	शब्द रसायन—देव, हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग संवत् 2000	द्वितीय 2004 वि०; सम्पादक—जानकीनाथ सिंह मनोज; रचनाकाल—रीतियुग
161. शेखर० (1)—अज्ञेय	शेखर—एक जीवनी भाग-1—सच्चिदानन्द हीरानन्द वात्स्यायन 'अज्ञेय', सरस्वती प्रेस, बनारस 1941	छठां 1958
162. शेखर० (2)—अज्ञेय	शेखर—एक जीवनी भाग-2—सच्चिदानन्द हीरानन्द वात्स्यायन 'अज्ञेय', सरस्वती प्रेस, बनारस 1944	उल्लेख नहीं

संकेत	पूरा विवरण	प्रस्तुत संस्करण एवं विशेष द्रष्टव्य
163. स० ग्रंथा०–स० मिश्र	सदल मिश्र ग्रन्थावली—सदल मिश्र, विहार राष्ट्रभाषा परिषद, पटना 1960	प्रथम 1960
164. सतमी०–राहुल	सतमी के बच्चे—राहुल सांकृत्यायन किताव महल, इलाहावाद 1939	चतुर्थ 1955
165. सत्य के प्रयोग–मो० क० गांधी	सत्य के प्रयोग—मोहनदास करमचन्द गाँधी, अनु० महावीर प्रसाद पोद्दार, सस्ता साहित्य मंडल प्रकाशन, नई दिल्ली, संवत् 1982	ग्यारहवां (नवीन संस्करण) 1956
166. सा० जि०–ल० प्र० सु०	साहित्य जिज्ञासा—ललिता प्रसाद सुकुल, आत्माराम एण्ड संस, दिल्ली 1952	प्रथम 1952
167. सा० सी०–महा० द्विवेदी	साहित्य-सीकर—महावीर प्रसाद द्विवेदी, तरुण भारत ग्रन्थावली, प्रयाग 1929	ग्यारहवां
168. सा० सु०–वा० भट्ट	साहित्य सुमन—बालकृष्ण भट्ट, एल० के० भट्ट, 94 काटन स्ट्रीट, कलकत्ता 1886	द्वितीय 1922
169. साकेत–गुप्त	साकेत—मैथिलीशरण गुप्त, साहित्य सदन, चिरगांव झाँसी 1932	द्वितीय 1992 वि०
170. सात०–नागर	सात घूंघटवाला मुखड़ा—अमृतलाल नागर, राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली 1968	प्रथम 1968
171. सारा०–यादव	सारा आकाश—राजेन्द्र यादव, राजकमल प्रकाशन, 1960	पेपरबैक संस्करण पाकेट बुक 1960
172. सिंदूर०–ल० मिश्र	सिंदूर की होली—लक्ष्मीनारायण मिश्र, भारती भंडार, बनारस 1934	प्रथम 1934
173. सु० सु०–सुदर्शन	सुदर्शन–सुमन—सुदर्शन, राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली 1929	प्रथम 1929
174. सुकुल०–निराला	सुकुल की बीबी—सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला, भारती भंडार, इलाहावाद	प्रथम 2004 वि०
175. सुनीता–जैनेन्द्र	सुनीता—जैनेन्द्र कुमार, हिन्दी रत्नाकर प्रा० लि०, बम्बई 1935	छठां 1958
176. सुहाग०–नागर	सुहाग के नूपुर—अमृतलाल नागर, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली 1960	प्रथम 1960
177. सू० सा०–सूर	सूर-सागर—सूरदास, नागरी प्रचारिणी सभा, काशी 2006 वि०	द्वितीय 2012 वि०; रचनाकाल—भक्तियुग; सम्पादक—नंद-दुलारे वाजपेयी, पद संख्या दी गयी है
178. सेवा०–प्रेमचंद	सेवासदन—प्रेमचंद, हंस प्रकाशन, इलाहावाद 1919	उल्लेख नहीं

संकेत	पूरा विवरण	प्रस्तुत संस्करण एवं विशेष द्रष्टव्य
179. सो०–बच्चन	सोपान—हरवंश राय बच्चन, भारती भंडार, इलाहाबाद 2010 वि०	प्रथम 2010 वि०; स्वसंकलित प्रारंभिक रचनाएं : मधुशाला, मधुबाला, मधुकलश, निशा निमंत्रण, एकांत संगीत, आकुल अंतर, सतरंगिनी, बंगाल का काल, हलाहल, सूत की माला, खादी के फूल, मिलन यामिनी से.
180. सौं०–ब्र० स०	सौंदर्योपासक—ब्रजनन्दन सहाय, खंगविलास प्रेस, पटना 1940	द्वितीय 1910
181. स्कंद०–प्रसाद	स्कंदगुप्त—जयशंकर प्रसाद, भारती भंडार, 1985 वि०	द्वितीय 1990 वि०
182. स्वर्ण०–पंत	स्वर्णधूलि—सुमित्रानन्दन पंत, भारती भंडार, लीडर प्रेस, प्रयाग 1947	प्रथम 1947
183. हि० सा०–ह० प्र० द्वि०	हिन्दी साहित्य—हजारी प्रसाद द्विवेदी, अत्तरचंद कपूर एण्ड सन्स, दिल्ली, आगरा, अम्बाला	1955

विशेष संकेत

दे०	:	देखिए
प्र०	:	प्रयोग
वि०	:	विक्रम संवत्

विशेष : (1) सामान्यतः पृष्ठ संख्या दी गयी है तथापि पाठकों की सुविधा के लिए सूर सागर (सूर) तथा विनय पत्रिका (तुलसी) में पद संख्या, बिहारी रत्नाकर (बिहारी) एवं दोहावली (तुलसी) में दोहा संख्या तथा पद्मावत (जायसी) में खंड और चौपाई संख्या दी गयी है।

(2) संकेत-तालिका में "पूरा विवरण" के अंतर्गत प्रथम प्रकाशन का वर्ष दिया गया है। पुस्तक पर प्रकाशन की तिथि विक्रम संवत् में होने पर उसे यथानुरूप रखा गया है। ऐसी स्थिति में वर्ष के साथ "वि०" लिख दिया गया है। अन्य स्थलों पर ईस्वी सन् से तात्पर्य है।

बृहत् मुहावरा कोश

पहला खण्ड

[अ–छ]

मुहावरा कोश

अ

अंक करना—स्वीकार करना। प्र० विधि ने जो तुम्हें अच्छा-बुरा दिया है, उसे अंक करो।

अंक देना,-भरना,-लगना,-लगाना, अंकमाल देना, अंकवार देना—आलिंगन करना। प्र० साषत बांमण मति मिलै, वैसनों मिलै चंडाल। अंकमाल दे भेटिये, मानौं मिले गोपाल (कबीर ग्रंथा०-कबीर, 53); तब अंकम दै गोरा मिला (पद०-जायसी, 53/7); सूरदास प्रभु संग मिलि हरषित, प्यारी अंकम भरियां (सू० सा०–सूर, 3238); तेहि भरि अंक राम लघु भ्राता (राम० (अ)–तुलसी, 554); भेंटे नहीं भरि अंक लला भरि जीभ न बोली जू बोल नवीनें (केशव० (1)–केशव, 57); हाय एक बेर तो आकर अंक में लगा जाओ (भा० ग्रं० (1) –भारतेन्दु, 448); उस समय सुअंक लगा करके××चुम्बन से कौन मुझे भरकर ताड़ना ताप लेती थी हर (चक्र०–दिनकर, 255)।

अंक भरना—दे० अंक देना

अंक में छिपाना—आश्रय में ले लेना। प्र० मुझे कोई भी तो ऐसा नहीं दिखलाई पड़ता जो उसे अंक में छिपा ले।

अंक लगना—दे० अंक देना

अंक लगाना—दे० अंक देना

अंक लेना—(1) आलिंगन करना। प्र० प्रिया निरखति पंथ, मिलैं कब हरि कंत, गए इहिं अत हंसि अंक लीन्हो (सू० सा०–सूर, 2602)।
(2) गोद में लेना। प्र० प्रथम भये सुत को बहू, अंकहि लेति लजाति (मति० मक०–मतिराम, 250)।

अंकमाल देना—दे० अंक देना

अंकवार देना—दे० अंक देना

अंकवार भरना—(1) आलिंगन करना। प्र० बरबस ही अंकवारि भरत धरि, काहू सौं अपनौ मन लावै (सू० सा०–सूर, 2051); ऊषा ने ज्यों प्यार करना चाहा कि पति को अंकवार भर कंठ लगाऊं, तो नयनों से नींद गई (प्रेम० सा०–ल० ला०, 240)।
(2) संतानवती होना। प्र० अभी तक बहू की अंकवार नहीं भरी, ब्याह हुए तीन बरस हो गये। बड़ी चिन्ता लगी है।

अंकित करना—किसी स्थिति या रूप को साकार कर देना। प्र० प्रस्तुत लेख में लेखक ने उस दिन के दंगे को यथार्थ रूप में अंकित किया है।

अंकुर जमना,-फूटना, अंकुरित होना, अंखुआ फूटना—प्रारंभ होना। प्र० यह भावना मेरे हृदय में उसी दिन अंकुरित हुई, जब यहाँ आने के चौथे दिन बाद मैंने आंखें खोली (रंग० (1) -प्रेमचंद, 155)।

अंकुर थापना—प्रारंभ करना। प्र० ग्वालनि देखि मनहिं रिस कांपै, पुनि मन मैं भय अंकुर थापै (सू० सा०-सूर, 1203)।

अंकुर फूटना—दे० अंकुर जमना

अंकुरित होना—दे० अंकुर जमना

अंकुश देना,-रखना—(1) नियंत्रण रखना, वश में रखना। प्र० मैमंता मन मारि रे, घटहि माहैं घेरि। जबहीं चालै पीठि दे, अंकुस दे दे फेरि (कबीर ग्रंथा०-कबीर, 29); बहुत दिनों से नारायण ने सरकार के सम्मुख यह सुझाव रखा था कि शिकारी गांव में थाना बनाया जाय, जिससे माझुली के उस छोर पर सहज ही अंकुश रखा जा सके (ब्रह्म०-दे० स० 248)।
(2) दुःख देना। प्र० न जाने क्यों मां उस पर हर समय अंकुश रखती हैं?

अंकुश मानना—नियंत्रण या दबाव मानना। प्र० उससे कहना बेकार है, वह किसी का अंकुश मानने को राजी नहीं है।

अंकुश में आना—नियंत्रण या दबाव में आना। प्र० टॉमस को देखते ही बागी उसके अंकुश में आ गये (सात०–नागर, 155)।

अंकुश रखना—दे० अंकुश देना

अंकुश रहना या होना—नियंत्रण रहना या होना। प्र० भाषा पर साहित्य का अंकुश रहता था, यहां तक कि चाहे कोई शब्द व्याकरण की रीति से सर्वथा शुद्ध हो यदि वह साहित्य की टकसाल में होकर नहीं निकला×××तो कवि समाज में वह खरे सिक्के के रूप में स्वीकार नहीं किया जाता था (पद्मपराग–पद्म० शर्मा, 318)।

अंखफोर—बुद्धिमान। प्र० कालिकाप्रसाद अपने को बड़ा अंखफोर समझता है।

अंखिगर बनना—(1) देखना, ध्यान देना। प्र० भाई मेरे, अंखिगर बनो, सारी स्थिति पर ठीक से विचार करो।
(2) चतुर बनना। प्र० क्यों मुझसे अंखिगर बनने की कोशिश कर रहे हो? मैं तुम्हारी नस-नस से वाकिफ़ हूं।

अंखुआ फूटना—दे० अंकुर जमना

अंग उभरना—यौवन के लक्षण दिखलाई पड़ना। प्र० राजो के अंग उभर आये, चेहरा भर आया।

अंग ऐंड़ा करना—घमंड करना, इतराना । प्र0 अरे; तो इसमें अंग ऐंड़ा करके डोलने की क्या बात है ?

अंग करना—स्वीकार करना । प्र0 जाकौं मनमोहन अंग करै (सू0 सा0 –सूर, 37) ।

अंग गल-गल कर गिरना—किसी भयानक रोग से शरीर का मांस गलकर गिरना । प्र0 तू यदि अभी भी न चेता तो देख लेना, एक दिन तेरे अंग गल-गल कर गिरेंगे ।

अंग चढ़ाना—शरीर पर लगाना । प्र0 बाजत ताल-मृदंग जंत्र-गति, चरचि अरगजा अंग चढ़ाई (सू0 सा0–सूर, 637) ।

अंग छूना—शरीर छूकर कसम खाना । प्र0 सूर हृदय तैं टरत न गोकुल अंग छुअत हौं तेरी (सू0 सा0—सूर, 4913) ।

अंग जलना, अंग-अंग जलना,-में आग लग जाना—ईर्ष्या या क्रोध की अधिकता होना । प्र0 सुनकर मेरे अंग-अंग में आग लग गयी पर मैं क्रोध पी गया (जैसे0–परसाई, 34) ।

अंग टूटना, अंग-अंग टूटना—(1) अंगड़ाई आना । प्र0 इस तरह हर समय अंग टूटता रहता है कि क्या कहूं । (÷)
(2) शरीर में दर्द होना । प्र0 देखिए प्रयोग 1 (÷)

अंग ढीला पड़ना या होना—थकान के कारण शिथिल हो जाना । प्र0 सारे दिन मेहनत करने के बाद उसका अंग ढीला पड़ गया था, वह जमीन पर ही लेट रहा ।

अंग तोड़ना,-मरोड़ना—अंगड़ाई लेना । प्र0 चौबीसों घंटा अंग तोड़ते रहना कोई अच्छी आदत नहीं है ।

अंग देना—थोड़ा आराम करना । प्र0 तीन कोस रास्ता तै करके आये हो, तनिक अंग दो फिर काम में लगना ।

अंग धरना—पहनना । प्र0 आज ठंड है । अब तो कपड़े अंग धरो ।

अंग न मोड़ना—विचलित न होना । प्र0 प्रात उठैं जमुना-जल खोरें । सीत उष्न कहुं अंग न मोरें (सू0 सा0–सूर, 1417) ।

अंग पड़ना—हिस्से पड़ना, स्वभाव का अंग बन जाना । प्र0 प्रकृति जो जाकैं अंग परी (सू0 सा0–सूर, 4144) ।

अंग फड़कना—शरीर के किसी अंग में स्पंदन होना जो शुभ या अशुभ माना जाता है । प्र0 फरकहिं सुभग अंग सुनु भ्राता (राम0 (बाल) –तुलसी, 239) ।

अंग फूले न समाना,-मुसकुराना, में अंग समाना, अंग-अंग फूले न समाना, -मुसकुराना—बहुत प्रसन्न होना, अंग-अंग से प्रसन्नता प्रकट होना । प्र0 लज्जित होहिं पुरबधू पूछ, अंग-अंग मुसकात (सू0 सा0-सूर, 487); अंगद तो अंग-अंग न फूलै । पौन के पुत्र कह्यो अति भूले (केशव0 (2)–केशव, 412); वह मनोभावों को छिपाना चाहती थी कि रमा उसे ओछी न समझे; लेकिन एक-एक अंग खिला जाता था (गबन-प्रेमचन्द, 60) ।

अंग बनना,-होना—किसी व्यक्ति या वस्तु का अत्यन्त महत्वपूर्ण हो जाना, अभिन्न अंग बन जाना । प्र0 संगीत आज मेरे जीवन का अंग बन गया है; संदीप हमारे परिवार का ही एक अंग है, उसका अहित हो, यह मैं नहीं देख सकता ।

अंग भरना—(1) जवानी के लक्षण दिखाई देना । प्र0 कांता के अंग भरने लगे, चेहरे पर एक लावण्य आ गया ।
(2) पुष्ट होना । प्र0 पहले तो कमल एकदम दुबला था, अब जरा अंग भर आया है ।
(3) गोद में लेना । प्र0 मुख के रेनु झारि अंचल सौं जसुमति अंग भरै (सूर0 –अ0 सू0 को0) ।

अंग मरोड़ना—दे0 अंग तोड़ना

अंग मुसकुराना—(1) शोभा टपकना । प्र0 उसका सौंदर्य निखर आया था, अंग मुसकुरा रहे थे ।
(2) दे0 अंग फूले न समाना

अंग में अंग चुराना—संकुचित होना । प्र0 आपको देखकर वह अंग में अंग चुराकर भाग गयी ।

अंग में अंग न समाना—दे0 अंग फूले न समाना

अंग मोड़ना—(1) अंगड़ाई लेना । प्र0 पौढ़ि गई हरुएँ करि आपुन, अंग मोरि तब हरि जंमुआने (सू0 सा0–सूर, 815) ।
(2) विचलित होना । प्र0 साधू अंग न मोड़ही ज्यूं भावै त्यूं खाव (कबीर ग्रंथा0–कबीर, 9) ।
(3) पीछे हटना । प्र0 तुम बहुत आगे निकल आये हो । अब अंग मोड़ने का प्रश्न ही नहीं उठता ।
(4) लज्जा से देह छिपाना । प्र0 बहू बड़ी सुशील है । हर समय अंग मोड़े बैठी रहती है ।

अंग लगना—(1) शरीर को पुष्ट करना । प्र0 कमला को कितना भी खिलाओ-पिलाओ, जैसे कुछ अंग ही नहीं लगता ।
(2) हिल-मिल जाना । प्र0 पड़ोसी का तीन साल का बच्चा खूब अंग लग गया था ।
(3) उपयोग में आना । प्र0 यह कोट किसी के अंग लग जाय तो संतोष हो । मेरे काम का तो रहा नहीं ।
(4) आलिंगन करना । प्र0 पिय तुम आइ अंग लगि जाओ, तड़पत हौं दिन रैन ।

अंग लगाना—(1) महत्त्व देना, अपना लेना । प्र0 पहले उसको राजा साहब बहुत अंग लगाये रहते थे (झांसी0-वृं0 वर्मा, 144) ।
(2) हिला-मिला लेना । प्र0 बच्चों का क्या, जो अंग लगायें, उसी के हो जाते हैं ।
(3) पहनना । प्र0 नयी की नयी साड़ी फट गयी, मैंने उसे अंग तक नहीं लगाया था ।
(4) आलिंगन करना । प्र0 पिता ने मुझे अंग लगाया, उनका स्वर भर्रा आया ।

अंग लाना—अंग से लगाना, निकट बुलाना । प्र0 पीहरि जाऊं न रहूँ सासुरै, पुरषहि अंग न लाऊं (कबीर ग्रंथा0–कबीर, 166) ।

अंग शिथिल होना—भावातिरेक के कारण कुछ करने की सामर्थ्य न रह

जाना। प्र0 अस मन गुनत चले मग जाता, सकुच सनेहँ सिथिल सब गाता (राम0 (अ) -तुलसी 593)।

अंग साधना—शारीरिक साधना करना। प्र0 जोग अंग जे साधत ऊधो, न सब बसत ईसपुर कासी (भ्र0 सा0—सूर, 21)।

अंग से अंग लगाना—निकट रखना, अपना बना लेना। प्र0 मैं तो दासी जनम जनम की अंग से अंग लगाओ।

अंगू होना—दे0 अंग बनना।

अंग-अंग—(1) पूरी तरह से। प्र0 अंग-अंग विषभरी राधिका।

(2) पूरा शरीर। प्र0 अंग अंग से रोष टपकता, वाणी तेजोमय थी।

अंग-अंग खिल जाना—दे0 अंग फूले न समाना

अंग-अंग जलना—दे0 अंग जलना

अंग-अंग टूटना—दे0 अंग टूटना

अंग-अंग ढीला करना या होना—(1) बहुत थका देना या थक जाना। प्र0 आजु बने नवरंग छबीले। डगमगात पग अंग-अंग ढीले (सू0 सा0—सूर, 3264)।

(2) मारते-मारते बुरा हाल कर देना या होना। प्र0 तुम कहना मत मानो, अभी मैं आकर तुम्हारा अंग-अंग ढीला करता हूं।

अंग-अंग फड़कना—बहुत चंचल होना। प्र0 पूछो मत, उसके तो अंग-अंग फड़कते हैं।

अंग-अंग फूले न समाना—दे0 अंग फूले न समाना

अंग-अंग मुसकुराना—दे0 अंग फूले न समाना

अंग-अंग में आग लग जाना—दे0 अंग जलना

अंग-अंग विष भीनना—बहुत खोटा होना। प्र0 अंग-अंग विषभीनी तू है, मोकों सिखवत सीख।

अंग-अंग शिथिल होना—दे0 अंग शिथिल होना

अंगड़-खंगड़—टूटा-फूटा, फालतू। प्र0 तुमने तो सारा कमरा अंगड़-खंगड़ सामान से भर रखा है।

अंगड़ाई तोड़ना—आलस्य में पड़े रहना, कुछ न करना। प्र0 बाप-दादा दौलत छोड़ गये हैं, तुम पड़े-पड़े अंगड़ाई तोड़ो।

अंगड़ाई लेना—चेतनता का प्रारंभ होना। प्र0 भीत न होओ, प्रिय, अब नारी, लेती जागृति की अंगड़ाई (स्वर्णधूलि—पंत, 145)।

अंगलगू—हिला हुआ। प्र0 ऐसे अंगलगू बच्चे को दूर करना क्या आसान होगा ?

अंगाकड़ी करना,-लगाना—बाटी सेंकना। प्र0 अपने खाने की क्या चिन्ता है, चार अंगाकड़ी लगा लूंगा, काफी होंगी।

अंगाकड़ी लगाना—दे0 अंगाकड़ी करना

अंगार उगलना—कड़ी या कटु बातें कहना। प्र0 मेरा प्रस्ताव सुनते ही श्रीनाथ बाबू अंगार उगलने लगे।

अंगार फांकना—अहितकर काम करना। प्र0 तुम्हें अंगार फांकना अच्छा लगता है तो फांको, मैं तुम्हारे साथ नहीं!

अंगार बटोरना—लड़ाई मोल लेना। प्र0 तुम हर समय अंगारे बटोरते फिरते हो, इस तरह कहीं काम चलता है।

अंगार बनना—(1) अत्यंत क्रोधित होना। प्र0 भैया के पास मत जाना, वे इस समय अंगार बने बैठे हैं।

(2) लाल हो जाना। प्र0 तवा अंगार हो गया, तुम्हें इसका होश है ?

अंगार बरसना—(1) बहुत तेज धूप होना। प्र0 जेठ का महीना, चारों ओर अंगार बरस रहे थे।

(2) अपशब्द कहा जाना। प्र0 रामू के मुंह से बात निकली कि विमाता के मुंह से अंगार बरसने लगे।

(3) दैवी विपत्ति आना। प्र0 उस बेचारे पर तो जैसे अंगार बरस रहे हों।

अंगार लगाना—जलते वचन कहना। प्र0 न जाने कैसा स्वभाव है इस लड़की का, हर समय अंगारे लगाया करती है।

अंगार सिर पर धरना,-रखना—भारी विपत्ति या कष्ट सहना। प्र0 अब तो इस अंगार को सिर पर रखना ही पड़ेगा, उपाय भी क्या है।

अंगार सिर पर रखना—दे0 अंगार सिर पर धरना

अंगार होना—दे0 अंगार बनना

अंगारों की चांदी—वर्क पीटने की चांदी।

अंगारों पर चलना,-पैर रखना—(1) जानबूझकर अहितकर काम करना या खतरा उठाना। प्र0 तुमने जब अंगारों पर चलना ही तै कर लिया है तो फिर कोई क्या कर सकता है।

(2) इतराकर चलना। प्र0 रानी, इस तरह अंगारों पर न चलो, एक दिन मुंह की खाओगी।

अंगारों पर पैर रखना—दे0 अंगारों पर चलना

अंगारों पर लोटना—(1) कष्ट पाना। प्र0 तिन्हैं यौं सिराति छाती तोहि वै लगति ताती, तेरे बांटें आयौ है अंगारनि पै लोटिबो (घन0 कवित्त-घना0; 34); तीन दिन फिर मैंने अंगारों पर लोट-लोट कर काटे (मान0 (2)—प्रेमचंद, 105)।

(2) ईर्ष्या होना। प्र0 कांति की जिंदगी तो अंगारों पर लोटते ही बीती है, अंगारों पर लोटते ही बीतेगी।

(3) रोष प्रकट करना। प्र0 क्यों अंगारों पर लोट रहे हो? सारी स्थिति पर ठंडे दिमाग से विचार करो।

अंगारों पर लोटाना—अत्यंत कष्ट देना। प्र0 तुम्हें अंगारों पर न लोटाया तो मेरा नाम नहीं।

अंगिया की बखिया उधेड़ना—व्यर्थ की बहुत छानबीन करना। प्र0 कुछ लोगों की आदत होती है—अंगिया की बखिया उधेड़े बिना उन्हें चैन नहीं मिलता।

अंगुरियाना—परेशान करना। प्र0 चौबीसों घंटा किसी को अंगुरियाने से वह कैसे काम करेगा ?

अंगुल-अंगुल—(1) सम्पूर्ण, पूरी तरह से। प्र0 हम जौ-जौ और अंगुल-अंगुल और पोर-पोर भस्म हो रहे हैं (गोदान—प्रेमचंद, 14)

(2) बहुत थोड़ा-सा। प्र0 उसकी मत पूछो, वह तो अंगुल-अंगुल जमीन के लिए जान दे रहा है।

अंगुल-अंगुल पर कांटे बिछाना—अनेक बाधाएं उपस्थित करना; बहुत कष्ट देना। प्र0 अपनी ओर से उसने अंगुल-अंगुल पर कांटे बिछाने में कोई कसर न रखी।

अंगुली के मुहावरों के लिए उंगली के मुहावरे देखिए।

अंगुश्त करना—लांछित करना। प्र0 दूसरों को अंगुश्त करने से पहले अपने गरेबान में मुंह डालकर देख लेना चाहिए।

अंगूठा चटाना—तुच्छ समझना। प्र0 पांव को चाट-चाट जो जीये, हैं अंगूठा हमें चटाते वे (बोल0–हरिऔध, 152)।

अंगूठा चूमना—(1) खुशामद करना प्र0 जो अंगूठा हैं हमें दिखला रहे क्यों अंगूठा हैं उन्हीं का चूमते (चुभते0–हरिऔध, 87)।
(2) अधीन होना।

अंगूठा चूसना—बड़े होकर भी बच्चों का-सा काम करना। प्र0 तुम सारी जिन्दगी अंगूठा ही चूसते रहना।

अंगूठा दिखाना, -बताना—किसी वस्तु को देने या कोई काम करने से साफ इनकार कर देना। प्र0 घूंघट ओट चितै घनआनंद, चोट बितै अंगुठाहि दिखावै (घन0 कवित्त-घना0, 190); बस मैं प्रेम का चकमा देकर सरस्वती से अपना काम निकाल लूंगा और फिर उसे अंगूठा दिखलाकर अलग हो जाऊंगा (मा0 मा0 (1)—कि0 गो0 53-54); आप राजा साहब से रुपए लेकर तिजोरी में रखते और मुझे अंगूठा दिखा देते (गोदान–प्रेमचंद, 236)।

अंगूठा नचाना—चिढ़ाना। प्र0 क्यों अंगूठा नचा रहे हो बेटा?

अंगूठा बताना—दे0 अंगूठा दिखाना

अंगूठा मारना, अंगूठे पर मारना—तुच्छ समझना, उपेक्षा करना। प्र0 हुंह, मैं ऐसी साड़ियों को अंगूठे पर मारती हूं, हटाओ इन्हें।

अंगूठा-छाप लगाना—स्वीकार करना या होना, सहमत होना। प्र0 अब मैया ने अंगूठा-छाप लगा दी है, तुम आराम से जाने की तैयारी करो।

अंगूठी का नगीना होना—(1) बहुत प्रिय होना। प्र0 बंदीजान उनके प्राणों का प्राण थी, अंगूठी का नगीना थी।
(2) सुखद एवं मनोहर संयोग होना। प्र0 रमेश और शीलो परस्पर अंगूठी का नगीना हैं।
(3) महत्त्वपूर्ण होना। प्र0 राम बाबू के लिए इस समय आप अंगूठी का नगीना हो रहे हैं।

अंगूठी डाल देना—घेरा डाल देना। प्र0 जंगल के चारों ओर पुलिस ने अंगूठी डाल दी ताकि कोई डाकू भाग न पाये।

अंगूठी में नग-सा जड़ना—बहुत सुंदर बना देना। प्र0 तू घर में बहू क्या लाया, तूने अंगूठी में नग-सा जड़ दिया।

अंगूठे पर मारना—दे0 अंगूठा मारना

अंगूठे से लेकर चोटी तक—पूरी तरह। प्र0 इस प्रकार की कोई चिट्ठी पढ़कर बीरी पांव के अंगूठे से लेकर सिर की चोटी तक जल-भुनकर रह जाती (एक म्यान0–नानक0, 165)।

अंगूर आना—घाव भरना, घाव भरने के समय छोटे-छोटे दाने निकलना। प्र0 अंगूर आने लगे हैं, घाव जल्दी ही ठीक हो जायेगा।

अंगूर का मड़वा,-की टट्टी—(1) अंगूर की बेल के चढ़ने और फैलने के लिए बांस की फट्टियों का बना मंडप।
(2) एक प्रकार की आतिशबाजी जिससे अंगूर के गुच्छे के समान चिनगारियां छूटती हैं।

अंगूर की टट्टी—दे0 अंगूर का मड़वा

अंगूर खट्टे होना—न मिलनेवाली वस्तु का दोषपूर्ण होना। प्र0 तुम्हारी मनःस्थिति को मैं अच्छी तरह समझ सकता हूं। अंगूर न मिले तो खट्टे तो होंगे ही।

अंगूर चटकना,-तड़कना,-फटना—भरते हुए घाव की झिल्ली फटना।

अंगूर तड़कना—दे0 अंगूर चटकना

अंगूर फटना—दे0 अंगूर चटकना

अंगूर बंधना,-बांधना,-भरना—घाव पर झिल्ली आना।

अंगूर बांधना—दे0 अंगूर बंधना

अंगूर भरना—दे0 अंगूर बंधना

अंगों का जोड़ हिल उठना—बहुत मार से शरीर का अंग-अंग दर्द करना। प्र0 इतना बड़ा गट्ठर सिर पर लाद दिया। अंगों का जोड़-जोड़ हिल उठा।

अंचल जोड़ना, -पसारना, -रोपना—विनयपूर्वक मांगना। प्र0 चरन नाइ सिरु अंचलु रोपा, सुनहु बचन पिय परिहरि कोपा (राम0 (लं) -तुलसी, 866); अंचल जोरे करत बीनती, मिलिबे को सब दासी (ब्र0 सू0 को0)।

अंचल डालकर लेना—स्नेहपूर्वक अंगीकार करना (मां के समान)। प्र0 एक जु साधु मोहि मिल्यो तिन लीया अंचल लाइ (कबीर ग्रंथा0-कबीर, 258); कबहुं हृदय लगाइ हितकरि, लेति अंचल डारि (सू0 सा0—सूर, 736)।

अंचल देकर—अंचल की ओट करके। प्र0 पीताम्बर वह सिर ते ओढ़त, अंचल दै मुसुकात (ब्र0 सू0 को0)।

अंचल पसारना—दे0 अंचल जोड़ना

अंचल बांधना—संकल्प करना। प्र0 जब तक तुम दृढ़ मन से अंचल नहीं बांधोगी, तब तक कुछ न होगा।

अंचल भरकर लेना—स्त्रियों का अंचल पसारकर आशीर्वाद ग्रहण करना। प्र0 मुदित मातु अंचल भरि लेहीं (राम0 (बाल)-तुलसी, 358)।

अंचल भरना—सुहागिन स्त्रियों की गोद में शुभ चीजें डालकर आशीर्वाद देना।

अंचल में बंधा-बंधा घूमना—किसी के वश में होना। प्र0 बेवफा औरत ××जो मेरे जीवन में जरा-सा आनन्द भी नहीं सह सकती, चाहती है, मैं उसके अंचल में बंधा-बंधा घूमूं (मान0 (2)–प्रेमचंद, 226)।

अंचल में बांधना—(1) यत्नपूर्वक रखना। प्र0 आप बिलकुल परेशान मत होइए। मैं इसे अंचल में बांधकर रखूंगी।
(2) याद रखना। प्र0 जो कह रहा हूं उसे अंचल में बांध लो, नहीं तो बाद में पछताओगी।

अंचल रोपना—दे0 अंचल पसारना

अंचल लेना—आंचल से मुंह ढंक लेना। प्र० रुद्र कौ देखि के मोहिनी लाज करि, लियो अंचल, रुद्र तब अधिक मोह्यो (ब्र० सू० को०)।

अंचल से बंधना—विवाह होना। प्र० मैं स्वयं इनके अंचल से बंधी (दूधगाछ—दे० स०, 85)।

अंछर पढ़कर मारना, अंछर मारना—(1) जादू करना। प्र० बहू ने तो ऐसा अंछर पढ़कर मारा है कि बेटा और किसी ओर नजर ही नहीं डालता। (÷)

(2) वश में कर लेना। दे० प्रयोग 1 (÷)

अंछर मारना—दे० अंछर पढ़कर मारना

अंजन बना लेना—बहुत प्रिय बना लेना। प्र० मेरी बेटी को तो ससुराल वालों ने अंजन बना लिया है।

अंजन लगाने को भी नहीं—तनिक भी नहीं। प्र० दूध-घी अंजन लगाने तक को तो मिलता नहीं, पाठे होंगे। (गोदान—प्रेमचंद, 6)।

अंजर-पंजर ढीला करना या होना—(1) खूब मारना या मार खाना। प्र० मकतबखाने में जाता हूं, तो खौफ है, कहीं लौंडे रोज की कसर न निकालें और अंजर-पंजर ढीले कर दें (आजाद० प्रेमचंद, 63)।

(2) बुरा हाल करना या होना। प्र० कुर्सी-टेबुलों का तो अंजर-पंजर ढीला हो गया है।

(3) बहुत थकना। प्र० मैं सुबह साढ़े चार बजे से काम में जुटा हूं। मेरे अंजर-पंजर ढीले हो रहे हैं, मुझे थोड़ा आराम कर लेने दो।

(4) गर्व चूर कर देना या होना। प्र० मैं तुम्हारा अंजर-पंजर ढीला न कर दूं तो कहना।

अंजाम को पहुंचना, अंजाम पाना—फल पाना। प्र० अपनी करनी के मुताबिक अंजाम को ही तो पहुंचोगे।

अंजाम देना—पूरा करना। प्र० आप मुझे जो कहेंगे मैं अंजाम देने की कोशिश करूंगा।

अंजाम पाना—दे० अंजाम को पहुंचना

अंजुरी का जल—जल्दी ही समाप्त हो जानेवाला। प्र० जोवन रूप दिवस दस ही कौ, जल अंजुरी कौ जानी (सू० सा०—सूर, 3210)।

अंजुरी भर रुपए—बहुत रुपये। प्र० यह तुम्हीं लोगों का गुर्दा है कि अंजुली भर रुपए तकदीर के भरोसे गिन देते हो। (गोदान—प्रेमचंद, 8)।

अंटा गुड़गुड़ होना—(1) गहरी चोट से बेहोश हो जाना। प्र० लाठी के एक वार में ही वह अंटा गुड़गुड़ हो गया।

(2) नशे में होना। प्र० उस रात मधुआ अंटा गुड़गुड़ पड़ा रहा।

अंटा-गफील करना या होना—नशे में बेसुध करना या होना। प्र० उनको सराय में ही अंटा-गफील करना चाहा (आजाद०—प्रेमचंद, 38)।

अंटाचित (त्त) गिरना—पीठ के बल गिरना। प्र० धक्का खाकर वह अंटाचित्त गिर पड़ा।

अंटाचित्त होना—(1) स्तंभित होना। प्र० मेरी बातें सुन वह तो अंटाचित हो गया।

(2) बरबाद होना। प्र० कामता की सारी जमीन-जायदाद अंटाचित हो गयी।

(3) नशे में बेसुध होना। प्र० सुरेश अंटाचित पड़ा है, वह आठ घंटे के पहले उठनेवाला नहीं है।

अंटी करना—धोखा देकर कोई वस्तु ले लेना। प्र० छोटे भाई के मारे रुपयों को तुमने अंटी कर लिया, अब मुझसे अपनी ईमानदारी की डींग हांक रहे हो।

अंटी काटना, -मारना—जेब काटकर पैसे निकाल लेना।

अंटी गर्म करना या होना—घूस देना या लेना; रुपये देना या मिलना। प्र० जेलर साहब की अंटी गर्म कर दो, सब ठीक हो जायेगा।

अंटी देना—गरदन पकड़कर निकाल देना। प्र० इस दुष्ट को अभी अंटी देकर निकाल बाहर करो।

अंटी पर चढ़ना—वश में आना। प्र० अलायार खां पुराना घाघ था। बड़ी मुश्किल से अंटी पर चढ़ा। (निर्मला—प्रेमचंद, 168)।

अंटी मारना—(1) चाल चलना, धोखा देना। प्र० रामकृष्ण हर समय अंटी मारने के चक्कर में रहता है।

(2) तराजू की डांडी इस तरह पकड़ना कि तौल में कम चढ़े। प्र० साहू पर नजर रखना, घी कम न तौल दे। अंटी मारने में उसके जैसा उस्ताद दूसरा नहीं।

(3) जुए में कौड़ी आदि छिपा कर धोखा देना। प्र० देखो-देखो, इस बार यह फिर अंटी मार गया।

(4) कुश्ती का एक दाँव।

(5) दे० अंटी काटना

अंटी में बांध लेना—(1) अच्छी तरह याद रखना। प्र० मेरी बात अंटी में बाँध लो, भला होगा।

(2) यत्न से रखना, कमर में बांध लेना। प्र० दोनों चीजें अंटी में बांध लो।

अंटी रखना—छिपाकर रख लेना। प्र० घर का कितना ही सामान उसने अंटी रख लिया।

अंटीबाज—धोखेबाज।

अंड-बंड—बे-सिर-पैर का; फालतू। प्र० जब देखो तब यह कोई-न-कोई अंड-बंड काम ले बैठता है।

अंड-बंड करना—(1) खराब करना, गड़बड़ करना। प्र० अभी सारा सामान ठीक करके, सजाकर गयी और तुमने फिर अंड-बंड कर दिया।

(2) गायब कर देना। प्र० देखो, कोई भी चीज अंड-बंड मत करना, कहे देता हूं।

अंडबंड कहना,-बकना—(1) गालीगलौज करना। प्र० मैं उनके पास नहीं जाऊंगा, चाहे काम मिले या न मिले। वे बहुत अंड-बंड कहते हैं।

(2) बेसिलसिले बात करना। प्र० तुम इतना अंड-बंड क्यों बकते हो, मतलब की बात कहो न।

अंडबंड बकना—दे० अंडबंड कहना

अंडा उड़ाना—बहुत बड़ी धूर्तता करना। प्र० वाह भाई, तुम तो अंडा ही उड़ाने लगे।

अंडा काटना—किसी रहस्य का पता लगाने के लिए प्रयत्न करना। प्र०

देखो भाई, मैं तो कब से अंडा काट रहा हूं पर कुछ पता चले तब न।

अंडा खटकना—अंडा फूटना।

अंडा ढीला होना—(1) दुर्बल होना। प्र0 इधर तीन महीनों से बहुत काम करना पड़ा है, अंडा ढीला हो गया।
(2) दिवालिया हो जाना। प्र0 उनसे अब क्या मिलेगा ? उनका तो अंडा ढीला हो गया।
(3) थक जाना। प्र0 मुझसे इस समय वहां नहीं जाया जायेगा, मेरा अंडा ढीला हो रहा है।

अंडा फोड़ना—समय से पहले कुछ कर बैठना। प्र0 तुमसे अंडा फोड़ने के लिए किसने कहा था ? मैं आता तब बात करता।

अंडा लड़ाना—एक तरह का जुआ खेलना।

अंडा सरकना—(1) दुर्बल होना। प्र0 वह क्या करके निहाल करेगा, उसका अंडा तो आप ही सरक रहा है।
(2) बेहोश होना। प्र0 इसका तो अंडा सरक रहा है, जल्दी डाक्टर को खबर करो।

अंडा सरकाना—कुछ काम करना, हाथ-पैर हिलाना। प्र0 अंडा सरकाना तो तुम जानते नहीं, खाली बकबक करते हो।

अंडा सेना—(1) किसी वस्तु की बड़े यत्न से रक्षा करना। प्र0 मामा जी के यहाँ तुम्हारी चीजें यत्नपूर्वक रखी हैं, वे उनका अंडा सेते हैं।
(2) घर में निकम्मे रहना। प्र0 कालिंका आजकल अंडे से रहा है।

अंडे का शाहजादा—अनुभवहीन। प्र0 ये ठहरे अंडे के शाहजादे, ये क्या जानें।

अंडे बच्चे—बाल-बच्चे।

अंडुआ बैल—(1) सुस्त व्यक्ति। प्र0 यह मजदूर तो एकदम अंडुआ बैल है, कुछ करना ही नहीं चाहता।
(2) बिना बधियाया बैल ; सांड़।

अंत आना—मृत्यु का समय निकट होना। प्र0 लगता है अब दीवान साहब का अंत आ गया है।

अंत करना—(1) हद करना, अति करना। प्र0 तुम भी अंत करते हो बेटा। कोई ऐसी बातें मुंह से निकालता है..?
(2) समाप्त करना, मार डालना। प्र0 मैं उसका अंत किये बिना नहीं मानूंगा।

अंत काम न आना, अंत समय काम न आना—मृत्यु के समय काम न आना, देखभाल न करना। प्र0 पिय-सुत-दारा परिजन कोऊ अंत काम नहिं आवे।

अंत की बाट—अंतिम समय। प्र0 किनहूं लाख पांच को जोरी, अंत की बाट गगरिया फोरी (कबीर)।

अंत न पाना—पूर्ण रूप से समझ न पाना। प्र0 गण गंध्रप मुनि अंत न पावा, रह्यौ अलख जग धंधै लखा (कबीर ग्रंथा0-कबीर, 230) ; निगम नेति सिव अंत न पावा (राम0 (बाल)–तुलसी, 212) ; जिनकी महिमा महि अंत न पायो. हम को बपुरा जस वेदन गायो (केशव0 (2) -केशव, 255)।

अंत बनना या बनाना—(1) परलोक में अच्छी स्थिति में होना। प्र0 बहुत दिन माया-मोह में पड़े रहे। अब तो अंत बनाने की सोचो।
(2) किसी काम का अच्छा अंत होना या करना। प्र0 अंत बना तो सब बना, अंत बिना कछु नाय।

अंत बिगड़ना या बिगाड़ना, अंतकाल बिगड़ना या बिगाड़ना—परलोक बिगड़ना या बिगाड़ना ; सद्‌गति न पाना। प्र0 आन देव की भक्ति भाइ करि कोटिक कसब करेगौ, सब वे दिवस चारि मन-रंजन, अंत काल बिगरेगौ।
(2) फल बुरा होना या करना। प्र0 इस काम का अंत बिगड़ेगा ही, मैं कहे देता हूं।

अंत मोची के मोची रहना—अंत तक तुच्छ ही रह जाना।

अंत लेना—(1) अंत करना, मार डालना। प्र0 बासर बसंत के अनंत ह्वै कै अंत लेत, ऐसे दिन पौर जु निहारै जिय राति है (घन0 कवित्त–घनानंद, 106)।
(2) भेद लेना। प्र0 तनिक अंत लेकर देखो, शायद कुछ पता चले।

अंत होना—बड़ा नुकसान होना, नष्ट या समाप्त होना। प्र0 इस सौदे में मेरा तो अंत हो गया।

अंतःसम्बन्ध होना—घनिष्ठ सम्बन्ध होना।

अंत-काल बिगड़ना या बिगाड़ना—दे0 अंत बिगड़ना या बिगाड़ना

अंतड़ियां कुलबुलाना, अंतड़ियां जलना,-लगना, अंतड़ियों का कुलहोह अल्लाह पढ़ना,-में आग लगना—तेज भूख लगना। प्र0 मुझे जल्दी से खाने को दो। मेरी अंतड़ियां कुलबुला रही हैं।

अंतड़ियां गले (में) पड़ना—दुःख में पड़ना। प्र0 क्या बतलाऊं ? ऐसी अंतड़ियां गले पड़ गयी हैं कि छूटने का कोई रास्ता ही नहीं दिखता।

अंतड़ियां जलना—दे0 अंतड़ियां कुलबुलाना

अंतड़ियां टटोलना—(1) पेट छूकर देखना कि भोजन किया है या नहीं। प्र0 जोरू टटोले गठरी। मां टटोले अंतरी।
(2) भीतरी भेद पाने की कोशिश करना। प्र0 वह खुदा तक की अंतड़ी टटोल आने का दावा करता है। तुमने उसे क्या समझा है।

अंतड़ियां निकाल लेना—बहुत कष्ट देना, मार डालना। प्र0 रंज हमको निकालना है तो अंतड़ियां क्यों निकाल लेवें हम (बोल0 –हरिऔध, 222)

अंतड़ियां लगना—दे0 अंतड़ियां कुलबुलाना

अंतड़ियों का कुलहो अल्लाह पढ़ना—दे0 अंतड़ियां कुलबुलाना

अंतड़ियों का बल खुलना या खोलना—बहुत दिनों बाद भर पेट भोजन करना। प्र0 जब खुला तब खुल खिलाने से सका खोलने से बल न आंतों का खुला (बोल0–हरिऔध, 223)।

अंतड़ियों में आग लगना—दे0 अंतड़ियां कुलबुलाना

अंतड़ियों में बल पड़ना—आंतों में दर्द होना । प्र0 बल पड़े दूसरे न क्यों विगड़ें, बल पड़े जब बला बनी आंतें (बोल0—हरिऔध, 222)।

अंतड़ी की बात—गुप्त बात, अन्दरूनी बात। प्र0 मिसर खान्दान की अंतड़ी की बात मैं समझता हूं (परती0—रेणु, 482)।

अंतर करना, -रखना—दुराव करना, दूर रहना, बचना। प्र0 सूर सुनहु री ग्वारि अपानी, अंतर हमसौं राखति (सू0 सा0—सूर, 2099)।

अंतर कांप उठना—भयभीत हो जाना।

अंतर का पट खोलना—(1) ज्ञान प्राप्त करना। प्र0 अंतर का पट खोल़ बावरे, सहजहि पिय को पावेगा।

(2) हृदय की बात कहना। प्र0 अंतर का पट खोल, मुक्त हो मन को हलका कर डालो।

अंतर खोलना—हृदय की बात कहना। प्र0 जे लागे बेहद सूं, तिनसूं अंतर खोलि (कबीर ग्रंथा0—कबीर, 26)।

अंतर तिलमिला जाना—किसी अपवाद या दुर्वचन को सुनकर बहुत बुरा लगना। प्र0 इस लड़के के कारण क्या नहीं सुनने को मिलता। अंतर तिलमिला कर रह जाता है।

अंतर पड़ना—मनमुटाव होना। प्र0 अब तो दोनों भाइयों में भी अंतर पड़ गया है।

अंतर में उतर जाना—हृदय को स्वीकार होना। प्र0 उनके बहुतेरे वचन सीधे मेरे अंतर में उतर जाते। (सत्य के प्रयोग—मो0 क0 गांधी, 119)।

अंतर में संग्राम चलना, -होना—मन में परस्परविरोधी विचारों में संघर्ष होना। प्र0 उनके अंतस्तल में निरंतर भीषण संग्राम होता रहता है (रंग0—प्रेमचंद, 179)।

अंतर में संग्राम होना—दे0 अंतर में संग्राम चलना

अंतर रखना—दे0 अंतर करना

अंतर रो पड़ना—दिल से दुःखी हो जाना। प्र0 इसकी हालत देखकर अनजाने लोगों का भी अंतर रो पड़ता है, अपनों की तो बात ही छोड़ो।

अंतर-कपट खोलना—मन के कपट को दूर करना। प्र0 इन बातनि को कौन पत्यैहै, अंतर कपट न खोलैं (सू0 सा0—सूर, 4487)।

अंतर-पट—दुराव, परदा। प्र0 तुम जब मित्र हो गये तो फिर तुमसे क्या अंतर-पट।

अंतर-पट साजना—छिपकर बैठना। प्र0 इस तरह अंतर-पट साजने से कोई लाभ है? सामने आओ।

अंतरिक्ष होना—गायब हो जाना। प्र0 देखते-देखते घर की सारी सम्पत्ति न जाने कैसे अंतरिक्ष हो गयी।

अंतर्निविष्ट करना या होना—किसी बात को अच्छी तरह हृदयंगम करना या होना। प्र0 निर्गुणिए संतों की वाणी सहज ही अंतर्निविष्ट नहीं होती।

अंतर्मुख होना—स्व-सीमित हो जाना, बात को अपने तक रखना। प्र0 पण्डित देवी दयाल विशेष रूप अंतर्मुख हो गये (लिली—निराला, 72)।

अंत-समय काम न आना—दे0 अंत काम न आना

अंतस्तल को छेदना—बहुत पीड़ा पहुंचाना। प्र0 तुम्हारी यह निष्ठुर दृष्टि, तुम्हारा यह निर्दय आघात मेरे अंतस्तल को छेदे डालता है (रंग0—प्रेमचंद, 322)।

अंतस्तल में बैठना—हृदय में स्थान बना लेना। प्र0 अंतस्तल में बैठ प्रिये तुम शासन नित प्रति करतीं।

अंतिम अंक—समाप्त-प्राय (जीवन, घटना या बात)। प्र0 हम लोग अंतिम अंक तक पहुंच गये हैं। जल्दी ही सब कुछ शेष हो जायेगा।

अंतिम कदम—अंतिम चेष्टा। प्र0 मैंने अंतिम कदम उठा दिया है, अब जो होना होगा, होगा।

अंतिम घड़ियां गिनना, -सांस गिनना, -चलना, -लेना—(1) मृत्यु के अत्यंत निकट होना। प्र0 सखी ने लिखा है कि वृद्ध विषम ज्वर से पीड़ित होकर अंतिम घड़ियां गिन रहे हैं (अतीत0—महादेवी, 59)।

(2) समाप्ति पर होना। प्र0 जब मैं सोचने-समझने लायक हुआ तो देश का व्यावसायिक रंगमंच अंतिम सांसें ले रहा था (पैंतरे-अश्क, 9)।

अंतिम घड़ी तक—(1) शेषपर्यन्त। प्र0 मैं अंतिम घड़ी तक चेष्टा करूंगा, कोई कसर न रखूंगा।

(2) मृत्युपर्यन्त। प्र0 अंतिम घड़ी तक वे पुत्र के लिए रट लगाये रहे, पर उस निर्मोही ने एक बार भी सुध न ली।

अंतिम सांस गिनना—दे0 अंतिम घड़ियां गिनना

अंतिम सांस चलना—दे0 अंतिम घड़ियां गिनना

अंतिम सांस लेना—दे0 अंतिम घड़ियां गिनना

अंत्येष्टि करना या होना—(1) किसी काम के अंतिम भाग को भी किसी प्रकार पूरा करके छुट्टी पाना। प्र0 बस, अब जरा-सा बाकी रह गया है। सोचता हूं कैसे जल्दी-से-जल्दी अंत्येष्टि करके छुट्टी पाऊं।

(2) अंतिम संस्कार करना।

अंदर और बाहर, अंदर-बाहर—मन और ऊपर से। प्र0 वह नईम, जिसका अंदर और बाहर एक था××इतना धूर्त, ऐसा मक्कार हो सकता है (मान0 (3)—प्रेमचंद, 259)।

अंदर की आंख खुलना—ज्ञान होना। प्र0 अंदर की आंख खुले बिना इस कोरे किताबी ज्ञान से कुछ नहीं आता-जाता।

अंदर होना—जेल में बंद होना। प्र0 तुम एक कोट को रोते हो, हम साला पकड़े जाते तो अंदर हो जाते (पैंतरे—अश्क, 127)।

अंदर-अंदर—मन-ही-मन। प्र0 पिताजी अंदर-अंदर बहुत नाराज हैं।

अंदर-अंदर कड़ाही में गुड़ पगना—गुप्त मंत्रणा होना। प्र0 बाहर किसी को कुछ मालूम नहीं, अंदर-अंदर कड़ाही (कड़ाई) में गुड़ पगता रहा (बल0 -नागा0, 183)।

अंदर-बाहर—दे0 अंदर और बाहर

अंदाज उड़ाना—(1) अनुमान करना। प्र0 इस तरह अंदाज उड़ाने की जरूरत नहीं है। तुम सब बातें ठीक-ठीक पता लगाकर आओ। (2) दूसरे की पूरी-पूरी नकल करना। प्र0 उसने मास्टर साहब का ऐसा अंदाज उड़ाया कि पूछो मत।

अंधकार—अज्ञान। प्र0 प्रकटी ज्योति मिट्या अंधयारा (कबीर ग्रंथा0—कबीर, 315); श्री गुरुदेव कृपालु की, कृपा सुबुद्धि समीप, तिमिर मिटै, प्रगटै हृदै-मंदिर अनुभवदीप; (शब्द0—देव, 1); हे ईश्वर! ××इस भारतभूमि का अंधकार दूर कर (राधा0 ग्रंथा0—राधा0 दास, 566)।

अंधकार कटना—अज्ञान दूर होना। प्र0 हे प्रभो, कभी इसका अंधकार कटेगा भी या नहीं?

अंधकार का युग, अंधकारमय युग—वह समय जिसका कोई इतिहास न हो। प्र0 हर्षवर्द्धन के बाद कई शताब्दियों तक का युग भारतीय इतिहास का अंधकार का युग कहा जाता है।

अंधकार के कुएं में पड़ा होना, -गर्त में होना—परम अज्ञान की स्थिति में होना। प्र0 सूझत नहीं बीसहू लोचन, पर्यौ तिमिर कैं कूप (सू0 सा0-सूर, 578)।

अंधकार के गर्त में होना—दे0 अंधकार के कुएं में पड़ा होना

अंधकार के बीचोबीच—निराशाजनक स्थिति में। प्र0 अंधकार के बीचोबीच खड़ी लक्ष्मीबाई को समझ न आया कि वह पेशवा की बातों को कहां तक माने।

अंधकार छा जाना,-नजर आना—(1) चारों ओर प्रतिकूल परिस्थिति ही दिखलाई पड़ना। प्र0 ऐसी दसा जग छायो अंधेर बिना हित—मूरति कौन संभारै (घन0 कवित्त—घना0, 181); चारों ओर अंधेरा नजर आता था (कुल्ली0—निराला, 80)।
(2) चक्कर आ जाना। प्र0 उस धूप और गर्मी में चलते-चलते घाम के मारे उसके तालू चटक गये, अंधकार नजर आने लगा।

अंधकार नजर आना—दे0 अंधकार छा जाना

अंधकार फैलना—अज्ञान की स्थिति होना। प्र0 जब चारों ओर अंधकार फैला हुआ हो और रास्ता न सूझ रहा हो तो व्यक्ति हिम्मत कैसे रखे?

अंधकार में चलना—अज्ञान की स्थिति में काम किये जाना। प्र0 हम लोग बड़े अंधकार में चल रहे थे (जैसे0—परसाई, 18)।

अंधकार में बिजली चमकना—निराशा में आशा की झलक मिलना। प्र0 इस बेकारी के घोर अंधकार में एकाएक एक दिन बिजली चमकी (दिल0—जी0, 75)।

अंधकार में रहना या होना, अंधकार होना—अज्ञान में होना। प्र0 अंधेरा भरा यहां पर था, उजाला योरप से आया (मर्म0—हरिऔध, 111)।

अंधकार होना—दे0 अंधकार में रहना या होना

अंधकारपूर्ण, अंधकारमय—निराशाजनक। प्र0 ऐसी अंधकारपूर्ण स्थिति में क्या किया जाय, समझ में नहीं आ रहा है।

अंधकारमय—दे0 अंधकारपूर्ण

अंधकारमय युग—दे0 अंधकार का युग

अंधकूप में गिरना या गिराना—अपना या दूसरे का अहित करना। प्र0 इंद्राणी, तुम तो अपने साथ मुझे भी अंध-कूप में गिराओगी।

अंधकूप में डालना, -ढकेलना—अहित करना। प्र0 निदान यह कि जन्मपत्री के ऊपर निर्भर होकर आजन्म अपनी संतानों को अंधकूप में डालना कैसी बड़ी मूर्खता है? (राधा0 ग्रंथा0—राधा0 दास, 55?)।

अंधकूप में ढकेलना—दे0 अंधकूप में डालना

अंधड़ बहना—(1) किसी बात का बड़े जोरों में चलन होना। प्र0 आजकल अनुशासनहीनता और अराजकता का अंधड़ बह रहा है। (2) आंधी आना।

अंधभक्त—बिना सोचे-विचारे भक्ति करनेवाला। प्र0××लिख तो डालूं लेकिन जीवित महाशयों की बिरादरी—अंध-भक्त बिरादरी—का बड़ा भय है (अपनी0—उग्र, 10)।

अंध-विश्वास—बिना सोचे-विचारे किया गया विश्वास। प्र0 इस तरह अपने मातहतों पर अंध-विश्वास करके तुम अपना अहित करोगे।

अंधा—विवेकहीन; ज्ञानशून्य; बेफिक्र। प्र0 राम न जपहु कहा भयौ अंधा, राम बिना जम मेलै फंधा (कबीर ग्रंथा0—कबीर, 129); स्वामि धरम स्वारथहि बिरोधू, बैरु अंध प्रेमहि न प्रबोधू (राम0 (अ)—तुलसी, 651); सुनते ही शृंगी ऋषि××क्रोध कर कहने लगे कि कलियुग में राजा उपजे हैं अभिमानी धन के मद से अंधे हो गये हैं दुखदानी (प्रेम0—ल0 ला0, 3); ग़रज़ बावली होती है पर आज मालूम हुआ कि वह अंधी भी होती है (रंग0 (2)—प्रेमचंद, 70)।

अंधा आइना—धुंधला शीशा।

अंधा करना—ज्ञानशून्य कर देना। प्र0 चारु मोहिनी आइ आंध कियो, तव नख-सिख तैं रोयौ (सू0 सा0—सूर, 43); मोह न अंध कीन्ह केहि केही (राम0 (उ)—तुलसी, 1096); हाय आशा भी क्या ही बुरी वस्तु है और प्रेम भी मनुष्य को कैसा अंधा कर देता है (भा0 ग्रं0 (1)—भारतेंदु, 457); मेरी अक्ल पर परदा पड़ा हुआ था। स्वार्थ ने मुझे अंधा कर रखा था (गबन—प्रेमचंद, 308)।

अंधा कुआं—सूखा कुआं। प्र0 उसके एक कोने में, छोटा-सा बेरी का वृक्ष जिसकी छाया में एक टूटा-सा अंधा कुआं (शेखर0 (1)—अज्ञेय, 18)।

अंधा घोड़ा—जूता (साधु एवं फकीरों द्वारा ही प्रयुक्त)।

अंधा झोंपड़ा—पेट। प्र0 इस अंधे झोपड़े की खातिर जीवन में न जाने क्या-क्या करना पड़ता है।

अंधा तारा—नेपच्यून तारा।

अंधा दीया—धुंधले प्रकाशवाला दीपक। प्र0 हटाओ इस अंधे दीये को सामने से।

अंधा बगला—बुरे ढंग से काम करनेवाला; घबराया हुआ। प्र0 मधुकर अंधा बगला है, उससे कुछ पार न पड़ेगा।

अंधा बनना—जानबूझकर भी न जानना। प्र0 आंख होते जो अंधा बने। कैसे वह फल-फूल सकेगा जो जड़ अपनी आप खने (मर्म0-हरिऔध, 148)।

अंधा बनाना (1) ज्ञानशून्य करना। प्र0 वास्तव में आचार्य माण्डव्य ने पिताजी को कामुक और अंधा बना रखा है (वैशाली0 (1) -चतुर0, 162)।
(2) धोखा देना, मूर्ख बनाना। प्र0 तुम दुनिया को अंधा बनाकर अपना मतलब सिद्ध करना चाहते हो।

अंधा भैंसा—लड़कों का एक खेल।

अंधाचुक्की भिड़ाना—यों ही अंदाज से कुछ कहना। प्र0 तुम्हें ठीक से पता तो है नहीं, क्यों अंधाचुक्की भिड़ा रहे हो?

अंधाधुंध—अन्याय, अविचार, मनमाना काम। प्र0 दूर अंधाधुंध जिससे हो सके बांधकर के धुन वही धंधा करे (चुभते0-हरिऔध, 33)।

अंधाधुंध उड़ाना, -लुटाना—बिना सोचे-विचारे खर्च करना। प्र0 पंद्रह साल तक खूब कमाई की है और अब उसे अंधाधुंध उड़ा रहा है।

अंधाधुंध चलना—अन्याय सहा जाना। प्र0 ऐ हो सो अंगरेज की जा अंधाधुंधी चल जै है? (झांसी0-वृ0 वर्मा, 150)।

अंधाधुंध मचना या मचाना—अन्याय होना या करना, मनमानी होना या करना। प्र0 तुम हर समय अंधाधुंध मचाते हो तो उसका नतीजा तो भोगना ही पड़ेगा।

अंधाधुंध लुटाना—दे0 अंधाधुंध उड़ाना

अंधाधुंध सरकार, अंधी सरकार—मनमानी व्यवस्था। प्र0 सूरदास ऐसी क्यों निबहै, अंधाधुंध सरकार (सू0 सा0-सूर, 4527)।

अंधानुकरण करना—बिना सोचे-विचारे अनुकरण करना। प्र0 अनुकरण करो पर अंधानुकरण से सदा बचो।

अंधी आंखों में पुतलियां पड़ना—निस्पन्द वस्तु में स्पन्दन होना। प्र0 दवा देने के पंद्रह मिनिट बाद बदन में कुछ हरकत हुई, अंधी आंखों में पुतलियां पड़ीं।

अंधी खाई—बहुत बड़ा अंतर। प्र0 वाकई हमारे हीरो-हीरोइनों और दूसरे टेकनीशियनों की आय के बीच अंधी खाई नहीं होनी चाहिए (दूधगाछ-दे0 स0, 317)।

अंधी खोपड़ी—मूर्ख। प्र0 कौन से अंधेर अंधाधुंध को कर दिखाती है न अंधी खोपड़ी (बोल0-हरिऔध, 23)।

अंधी भेड़—बिना सोचे-विचारे अनुकरण करनेवाला। प्र0 मजदूर अंधी भेड़ होते हैं, उन्हें कोई भी बहका सकता है।

अंधी सरकार—दे0 अंधाधुंध सरकार।

अंधे की आंख, -लकड़ी, -लाठी—एकमात्र सहारा। प्र0 एकै है उपाइ, राम पाइन के पाइबे कौं, सेनापति वेद कहैं अंध की लकरियै। (क0 र0-सेनापति, 113); निराशा में प्रतीक्षा अंधे की लाठी है (रंग0 (2) -प्रेमचंद, 52)।

अंधे की लकड़ी—दे0 अंधे की आंख

अंधे की लाठी—दे0 अंधे की आंख

अंधे कुएं की ओर दौड़ना—आशा का जरा-सा सूत्र पकड़कर कोई काम करना। प्र0 पर प्यासा आदमी अंधे कुएं की तरफ दौड़े तो मेरे खयाल में उसका कोई कसूर नहीं (गबन-प्रेमचंद, 286)।

अंधे कुएं में ढकेल देना—सत्यानाश कर देना। प्र0 उस धोखेबाज ने तो मुझे अंधे कुएं में ढकेल दिया।

अंधे कुत्ते की तरह हवा को भूंकना—बिना सोचे-समझे बिना प्रयोजन शोर करना या झगड़ा करना। प्र0 किस बात पर बिगड़ती है भाई! यह तो अच्छा नहीं लगता कि अंधे कूकर की तरह हवा को भूंका करे (गोदान-प्रेमचंद, 40)।

अंधे के आगे रोना—नासमझ के सामने कुछ कहना। प्र0 ऐसी सभा में अपना निबन्ध पढ़ना अंधों के आगे रोना था (प्रेमा0-प्रेमचंद, 131)।

अंधे के हाथ बटेर लगना—किसी अयोग्य व्यक्ति को कोई उपयोगी और महत्त्वपूर्ण चीज मिल जाना, अनायास कुछ मिल जाना। प्र0 यद्यपि रचना श्रेष्ठ पन्त जी की थी, मेरी कुछ भी नहीं थी, लेकिन स्कूल में प्रतिभा का अभाव होने से मुझ अंधे के हाथ भी बटेर लग गई थी (अपनी0-उग्र, 99)।

अंधे को अंधा कहना—बुरे को बुरा कहना, जो जैसा है उसे वैसा कह देना। प्र0 अंधे को अंधा कह दो तो वह झट बुरा मान जाता है।

अंधे को आंख मिलना, अंधे को दो आंख मिलना—परम लाभ होना। प्र0 हरषित हृदय मातु पहिं आए, मनहुं अंध फिर लोचन पाए (राम0 (अ) -तुलसी, 440); अंधे को आंखें मिल गयीं। रानी की दादी ने बहनजी को जी भरकर असीसी (अमृत0-नागर, 182)।

अंधे को काजल—अनुपयुक्त एवं व्यर्थ शृंगार। प्र0 बूचिहि खुमी आंधरी काजर नकटी पहरै बेसर (सूर)।

अंधे को चिराग दिखाना—अज्ञान में पड़े व्यक्ति को ज्ञान का रास्ता दिखलाना। प्र0 मुझ अंधे को चिराग दिखानेवाला कहां छिपा बैठा है?

अंधे को दिन-रात बराबर होना—काम में न आनेवाली वस्तु का होना या न होना समान होता है।

अंधे को दो आंख मिलना—दे0 अंधे को आंख मिलना

अंधे झोपड़े में आग लगना—भूख लगना। प्र0 दो बज गये। अंधे झोपड़े में आग लग रही है। पहले इसे बुझवाओ।

अंधे से अंधा मिलना—दो मूर्खों का मिलना। प्र0 अंधे से अंधा मिल गया है। अब तो भगवान ही मालिक है।

अंधे-बहरे का संदेश—ऐसा संदेश जिसमें कहने-सुनने वाले दोनों गड़बड़ कर रहे हों। प्र0 यह तो अंधे-बहरे का संदेशा हो गया। अब तुम रहने दो, मैं खुद बातें कर लूंगा।

अंधेर करना या होना—अन्याय करना या होना, गजब करना या होना। प्र0 लेकिन ऐसा अंधेर तो कभी नहीं हुआ (गोदान-प्रेमचंद, 115)।

अंधेर छाना—मनमानी होना, गड़बड़ी होना। प्र0 चारों ओर अंधेर छाया हुआ है, कोई किसी की बात सुनने को राजी नहीं।

अंधेर मचना या मचाना—मनमानी करना या होना। प्र0 अगर आज यह मालूम हो जाय कि किसी ने हमारे पापों का भार अपने सिर ले लिया, तो संसार में अंधेर मच जाय (रंग0—प्रेमचंद, 16)।

अंधेरखाता, अंधेरगर्दी—मनमानी घोखाघड़ी। प्र0 इस अनर्थ और अंधेर-खाते का कुछ ठिकाना है (पद्म0 के पत्र, —पद्म0 शर्मा, 52); यह हाल है। यह अंधेरगर्दी देखो (जिंदगी —निर्गुण, 14)

अंधेरगर्दी—दे0 अंधेरखाता

अंधेरगर्दी मचना या मचाना—मनमानी करना या होना। प्र0 ऐसी अंधेरगर्दी मत मचाओ लाला, मैं गरीब मर जाऊंगा।

अंधेर-नगरी—अन्यायपूर्ण व्यवस्था। प्र0 यह अंधेर-नगरी है। राजा में इतना ही विवेक होता तो राज्य की यह दशा ही क्यों होती? (रंग0—प्रेमचंद, 183)

अंधेर छा जाना—शोक छाना, अत्यंत निराशापूर्ण स्थिति होना। प्र0 पुत्र-वियोग से उसके चारों ओर अंधेरा छा गया।

अंधेरा छोड़ना—प्रकाश के सामने से हटना। प्र0 जरा अंधेरा छोड़कर खड़े हो, तुम तो एकदम लालटेन के सामने आ गये।

अंधेरा पक्ष—(1) कष्ट के दिन या बुरे दिन। प्र0 मेरे जीवन के अंधेरे पाख का भी कभी-न-कभी अन्त होगा और उजाला पाख आयेगा यही संतोष किये बैठा हूँ।
(2) कृष्ण पक्ष।

अंधेरा ही अंधेरा दिखलाई पड़ना—चारों ओर निराशाजनक प्रतिकूल परिस्थिति होना। प्र0 पन्ना को चारों ओर अंधेरा ही अंधेरा दिखाई देता था (मान0 (1)—प्रेमचंद, 1)।

अंधेरा होना—(1) बुरे दिन होना। प्र0 पाछैं चढ़ौ विमान मनोहर, बहुरौ ब्रज मैं होत अंधेरौ (सू0 सा0—सूर, 3608)।
(2) निराशा की स्थिति होना। प्र0 आप जैसे विद्वान् संसार से उठ जायेंगे तब तो हिन्दी की दुनिया में अंधेरा ही हो जायगा (गु0 नि0—बा0 मु0 गु0, 435)।
(3) निःसंतान होना। प्र0 जिन्दगी का मजा संतान से है। जिसके आगे अंधेरा है, उसके लिए धन-दौलत किस काम का (मान0 (7) —प्रेमचंद, 35)।

अंधेराकूप, अंधेरागुप्प, अंधेराटोप—घना अंधकार। प्र0 अंधकूप मा आवै उड़त आव तसि छार (पद0 —जायसी, 42/23)।

अंधेरा-गुप्प—दे0 अंधेराकूप

अंधेराटोप—दे0 अंधेराकूप

अंधेरी कोठरी—(1) पेट। प्र0 इस अंधेरी कोठरी में कुछ डालोगे भी या यूं ही एकादशी करनी है?
(2) गुप्त भेद। प्र0 चीन की अंधेरी कोठरी का हाल कौन जानता है।
(3) गर्भ।

अंधेरी कोठरी का यार—गुप्त प्रेमी।

अंधेरी झुकना—बहुत अंधेरा होना। प्र0 देखते-देखते अंधेरी झुक आई, हाथ से हाथ न सूझता था।

अंधेरी डालना, -देना—(1) आंखें बंद करके मारना ताकि मार खाने-वाला देख न सके। प्र0 उस कम्बख्त पर अंधेरी डालना ही होगा, वह ऐसे काबू में न आयेगा।
(2) धोखा देना। प्र0 ऐसी सरासर अंधेरी मत डालो, दूसरे एकदम बेवकूफ नहीं हैं।

अंधेरी देना—दे0 अंधेरी डालना

अंधेरे कुएं में गिरना, -पड़ना—घोर अनिष्ट होना। प्र0 राम न रमहु मदन कहा भूले परत अंधेरें कूवा (कबीर ग्रंथा0—कबीर, 170)।

अंधेरे कुएं में पड़ना—दे0 अंधेरे कुएं में गिरना

अंधेरे घर का उजाला, -चिराग, -दीपक, -दीया—(1) इकलौता बेटा। प्र0 वही लड़का तो ××मेरे अंधेरे घर का दीपक था (भा0 ग्रं0 (1) —भारतेंदु, 573)।
(2) वंश की मर्यादा बढ़ानेवाला। प्र0 विमल ही उस अंधेरे घर का चिराग है।
(3) अत्यंत सुन्दर। प्र0 रूपमती सचमुच रूपमती थी और उस वृद्धा के अंधेरे घर का दीया थी।

अंधेरे घर का चिराग—दे0 अंधेरे घर का उजाला

अंधेरे घर का दीपक—दे0 अंधेरे घर का उजाला

अंधेरे घर का दीया—दे0 अंधेरे घर का उजाला

अंधेरे घर में दीपक जल उठना—शुष्क हृदय में सरसता आना, दुःख या निराशा के बाद सुख और आशा का आगमन होना। प्र0 वर्षों की निराशा, दुःख और अकेलेपन के बाद उस दिन उनके अंधेरे घर में दीपक जल उठा।

अंधेरे में जा छिपना—एकदम गायब हो जाना। प्र0 ईमानदारी और मुरौवत तो जैसे अंधेरे में छिपी हों।

अंधेरे में टटोलना—जहां सब कुछ अज्ञात हो, वहां किसी बात का पता लगाने की चेष्टा करना। प्र0 संयोगलभ्य ज्ञान को लेकर मनुष्य ने अंधेरे में और टटोला है और थोड़ा-थोड़ा आगे बढ़ता गया है (अशोक0—ह0 प्र0 द्वि0, 153)।

अंधेरे में ढेला फेंकना, -ढेला मारना, -तीर चलाना, -तीर छोड़ना, -तीर मारना, -निशाना लगाना, -हाथ मारना—(1) अज्ञात स्थिति में लाभ का कोई प्रयत्न यों ही करना। प्र0 इस प्रतिस्पर्धा के लिए लालाजी ने भी जब एक गान प्रस्तुत किया, तब मेरे मन में भी आया कि अंधेरे में एक तीर मारने में घाटा ही क्या है (अपनी0 —उग्र, 103)।
(2) अंदाज से किसी बात का पता लगाने की चेष्टा करना। प्र0 तुम्हारा सारा प्रयत्न अंधेरे में ढेला फेंकना है। इस तरह काम करके तुम कुछ भी न उपलब्ध करोगे।

अंधेरे में ढेला मारना—दे0 अंधेरे में ढेला फेंकना

अंधेरे में तीर चलाना—दे0 अंधेरे में ढेला फेंकना

अंधेरे में तीर छोड़ना—दे0 अंधेरे में ढेला फेंकना

अंधेरे में तीर मारना—दे0 अंधेरे में ढेला फेंकना

अंधेरे में निशाना लगाना—दे0 अंधेरे में ढेला फेंकना ।

अंधेरे में रखना—अज्ञान में रखना, स्थिति को न बताना । प्र0 उसको बुरा लगा कि हरि प्रसन्न अब भी××श्रीकान्त को अपने बारे में अंधेरे में रख सकता है (सुनीता—जैनेन्द्र, 74) ।

अंधेरे में रास्ता टटोलना—किसी मुसीबत से निकलने का किसी प्रकार प्रयत्न करना। प्र0 अब तो मैं अंधेरे में रास्ता टटोल रहा हूं। कोई मुझे बाहर प्रकाश में जाने का मार्ग दिखला दे।

अंधेरे में हाथ मारना—दे0 अंधेरे में ढेला फेंकना

अंधेरे-उजेले—वक्त-बेवक्त, सुख-दुःख में। प्र0 और कुछ न सही तो अंधेरे-उजेले तो काम आवे ?

अंधेरे-मुंह—प्रातःकाल, तड़के। प्र0 गोबर अंधेरे ही मुंह उठा और कोदई से विदा मांगी (गोदान—प्रेमचंद, 137) ।

अंबर के तारे गिनना—(1) वियोग या दुःख के कारण नींद न आना। प्र0 अंबर के तारे गिनते जाने कितनी रातें बीतीं।
(2) बड़ी बेचैनी में दिन बिताना । प्र0 देखिए प्रयोग (1)

अंबर के तारे डिगना—असंभव बात का होना । प्र0 तुमने ऐसा जघन्य काम कैसे किया ? आज तो अंबर के तारे डिग गये ।

अ-आ, इ-ई से शुरू करना—ठेठ प्रारंभ से शुरू करना । प्र0 आग में सब कुछ स्वाहा हो गया । काम-काज सब अ-आ, इ-ई से शुरू करना होगा ।

अकंटक राज्य करना—बिना किसी विरोध या प्रतिद्वंद्विता के राज्य करना । प्र0 जानहिं सानुज रामहि मारी, करउं अकंटक राजु सुखारी (राम0 (अ)—तुलसी, 549) ।

अकड़ जाना या अकड़ना, -दिखाना—(1) घमंड करना । प्र0 सरकार के वे पुराने सेवक××यों अकड़ते हुए चले जायं (रंग0 (2)—प्रेमचंद, 339) ।
(2) ज़िद करना । प्र0 न निकले कड़ी बात मुंह से, किसी से कभी नहीं अकड़ें (मर्म0 —हरिऔध, 90) ।

अकड़ दिखाना—दे0 अकड़ जाना या अकड़ना

अकड़कर चलना—(1) गर्व करना । प्र0 श्यामलाल अब अकड़कर चलने लगा है। उसकी अकड़ झाड़नी होगी ।
(2) सीना तानकर चलना । प्र0 इतना अकड़कर क्यों चलते हो ? ठीक से चलो।

अकड़-तकड़—घमंड । प्र0 अकड़-तकड़ उसमें बहुत सारी थी (इंशा0 —इंशा0, 91) ।

अकड़-फूं—झूठी शान, अकड़ । प्र0××उसकी मोटी अम्मा की अकड़-फूं भरी साहबियत के बड़े-बड़े और बड़े रोचक रंगीन किस्से आम जवानों पर फैले हुए थे (अमृत0 —नागर, 58) ।

अकड़ू खां बने रहना—अपने ही घमंड में चूर रहना ।

अकड़े बैठना—अपनी ज़िद पर अड़े रहना । प्र0 नौशा साहब अकड़े बैठे थे कि मोटर साइकिल मिलने पर ही खायेंगे ।

अकरम करम करना—बुरा काम करना । प्र0 कुछ भी था, यह अकरम करम तुम्हें नहीं करना चाहिए था ।

अकाल का मारा—अकाल के कारण पीड़ित । प्र0 उत्तरी बिहार की बहुत बड़ी जनसंख्या अकाल की मारी घोर कष्ट पा रही है ।

अकाल पड़ना, -होना—बहुत कमी होना । प्र0 बढ़िया चावलों का तो इस साल अकाल पड़ा हुआ है ।

अकाल होना—दे0 अकाल पड़ना

अकिल-दाढ़ फूटना—अक्ल आना । प्र0 अब अचानक कौन सी अक्कल दाढ़ फूट आई उस कमबख्त के ? (सारा0 —यादव, 85) ।

अकेला-अकेली—अकेले । प्र0 कह देना अकेला-अकेली उस ओर न जाये।

अकेली कहानी—एकपक्षीय बात । प्र0 यह तो अकेली कहानी है, हमें उमाकांत की बात भी सुननी चाहिए ।

अकेली जान, अकेले दम, अकेले राम—बंधनमुक्त, अकेला व्यक्ति । प्र0 अकेली जान, उन्हें क्या ! कहीं भी पड़ रहेंगे ।

अकेले घर में छकेला मारना—अकेले घर में मौज उड़ाना । प्र0 सब लोग 20 दिनों से मसूरी गए हैं। मैं अकेले घर में छकेला मार रहा हूं।

अकेले चने का भाड़ फोड़ सकना, एक चने का भाड़ फोड़ सकना—अकेले कुछ भी कर पाना । प्र0 कुछ पढ़े लिखे मिलकर देश सुधारा चाहते हैं। हहा हहा ! एक चने से भाड़ फोड़ेंगे । (मा0ग्रं0 (1)—भारतेंदु, 474); तो बहू जी, अकेला चना तो भाड़ नहीं फोड़ता, अगर सब भाई साथ दें, तो तैयार हूं (कर्म0—प्रेमचंद, 265)।

अकेले दम—दे0 अकेली जान

अकेले राम—दे0 अकेली जान

अकेले-दुकेले—अकेले। प्र0 रात में उस बगीचे की ओर अकेले-दुकेले मत जाना। कहते हैं वहां कुछ ऊपरी फसाद है।

अक्ल का अंधा, अक्ल का दुश्मन, अक्ल गुद्दी के पीछे होना, अक्ल से सरोकार न होना—महामूर्ख। प्र0 कहीं तो अक्ल के अंधे मिल ही जायेंगे जो 'मिट्टी की मूरत' को सोने की मूरत समझ लें (कठ0 —दे0 स0, 90) ।

अक्ल का अजीर्ण होना—(1) जरूरत से ज्यादा अक्ल लगाना । प्र0 तुम्हें तो अक्ल का अजीर्ण हो गया है। रोज कोई-न-कोई उलटी-पुलटी योजना लिए तैयार रहते हो। अरे, हाथ-पैर चलाओ।
(2) अक्ल मारी जाना। प्र0 तुम्हें क्या अक्ल का अजीर्ण हुआ था जो इतनी रात को वहां चले गये ?

अक्ल का चिराग गुल होना, अक्ल का दीवाला निकलना—अक्ल मारी जाना । प्र0 तुम्हारी अक्ल का चिराग गुल हो चुका है। ठंडे होकर बैठो ।

अक्ल का दीवाला निकलना—दे0 अक्ल का चिराग गुल होना

अक्ल का दुश्मन—दे0 अक्ल का अंधा

अक्ल का पुतला, अक्ल का पूरा, अक्ल की गठरी, अक्ल की पुड़िया—बड़ा बुद्धिमान। प्र0 ये फिरंगी भी बड़े चालाक हैं, पूरे अकल के पुतले हैं। (इंस्टा0—भग0 वर्मा, 81) ।

अक्ल का पूरा—दे0 अक्ल का पुतला

अक्ल का मारा—बेवकूफ। प्र0 इस अक्ल के मारे को मैं क्या कहूं।

अक्ल का हवा बतलाना—अक्ल काम न करना। प्र0 अक्ल ने हवा बतलायी, आंखों में अंधेरी छायी××× (आजाद0—प्रेमचंद, 317)।

अक्ल काम करना—कोई युक्ति लगना, कोई उपाय समझ आना। प्र0 तुम्हारी अक्ल तो इन सब मामलों में बहुत काम करती है।

अक्ल की आंख—अक्ल। प्र0 अक्ल की आंख से देखो तब वास्तविकता समझ में आयेगी।

अक्ल की गठरी—दे0 अक्ल का पुतला

अक्ल की गांठ खोलना—बुद्धि से काम लेना। प्र0 अजी दो-चार चालें चलो तो आप-ही-आप जी लग जायेगा। जरा अक्ल की गांठ तो खोलो (गबन—प्रेमचंद, 34)।

अक्ल की दौड़—युक्ति, उपाय। प्र0 देख लिया तुम्हारा न्याय और तुम्हारे अक्कल की दौड़ (गोदान—प्रेमचंद, 116)।

अक्ल की पुड़िया—दे0 अक्ल का पुतला

अक्ल की बखिया उधेड़ना—बुद्धि नष्ट कर देना। प्र0 इस वैभव ने तुम्हारी अक्ल की बखिया उधेड़ दी है।

अक्ल के घोड़े दौड़ाना—अनेक प्रकार से विचार करना, कल्पना करना। प्र0 मैंने तो बहुत अक्ल के घोड़े दौड़ाये पर सब व्यर्थ।

अक्ल के तोते उड़े जाना—होश-हवास दुरुस्त न रहना। प्र0 इस समय उनकी अक्ल के तोते उड़ रहे हैं, बाद में बात करना।

अक्ल के नाखून लेना—समझकर बात करना। प्र0 उसमें जरा भी अक्ल नहीं है। अक्ल के नाखून लेना तो जानता ही नहीं।

अक्ल के पीछे डंडा लिए फिरना,-लट्ठ लिए फिरना—बिना समझे-बूझे किसी काम को करना। प्र0 ठीक है, तुम अक्ल के पीछे डंडा लिए फिरो। बाद में पछताओगे।

अक्ल के पीछे लट्ठ लिए फिरना—दे0 अक्ल के पीछे डंडा लिए फिरना

अक्ल के पुर्जे ठीक करना—अच्छी तरह समझाना। प्र0 तुम्हारी अक्ल के पुर्जे ठीक किए बिना काम नहीं चलेगा।

अक्ल के बीच आना—समझ में आना। प्र0 आया कुछ अक्ल के बीच या नहीं?

अक्ल खर्च करना, -से काम लेना—समझ को काम में लाना, सोचना। प्र0 अक्ल खर्च किए बिना इस योजना का कुछ भी पल्ले नहीं पड़ेगा।

अक्ल खुल जाना—समझदारी आ जाना। प्र0 होरी बैठा सोच रहा था—लड़के की अक्ल जैसे खुल गयी है (गोदान—प्रेमचंद, 217)।

अक्ल खो बैठना,-गुम होना,-घास खाना,-घास चरना,-चकराना,-चक्कर में आना,-चक्कर में पड़ना,-चरने जाना,-चेंथरी में चढ़ना,-जाती रहना,-पर ईंट पड़ना,-पर ताले पड़ना,-पर पत्थर पड़ना,-पर परदा पड़ना,-पर पुटकी पड़ना,-बौड़ाना,-मारी जाना—बुद्धि का काम न करना, कुछ समझ में न आना। प्र0 ईंट पड़े तुम्हारी अकिल पर, इतना भी नहीं जानते यह गुलाल है। (राधा0 ग्रंथा0—राधा0 दास, 95); तुम्हारी अक्ल पर पत्थर पड़ गया है, इसमें हमारा कोई दोष नहीं (मान0 (7) —प्रेमचंद, 26); अक्कल चेंथरी में चढ़ गई सो अब उनें कछू सूझत नईयाँ (झांसी0—वृ0 वर्मा, 150)।

अक्ल गुद्दी के पीछे होना—दे0 अक्ल का अंधा

अक्ल गुम होना—दे0 अक्ल खो बैठना

अक्ल घास खाना—दे0 अक्ल खो बैठना

अक्ल घास चरना—दे0 अक्ल खो बैठना

अक्ल चकराना—दे0 अक्ल खो बैठना

अक्ल चक्कर में आना—दे0 अक्ल खो बैठना

अक्ल चक्कर में पड़ना—दे0 अक्ल खो बैठना

अक्ल चर जाना—बुद्धि भ्रष्ट कर देना। प्र0 इसी से कहते हैं, रियासत आदमी की अक्ल चर जाती है (गोदान—प्रेमचंद, 147)।

अक्ल चरने जाना—दे0 अक्ल खो बैठना

अक्ल चेंथरी में चढ़ना—दे0 अक्ल खो बैठना

अक्ल छांटना—जबरदस्ती अक्ल लगाना। प्र0 बिना मतलब अक्ल मत छांटो। मुंह बंद करके बैठो।

अक्ल जम जाना—समझदारी आना। प्र0 अक्ल जम जाने पर काम करना ठीक होता है।

अक्ल जाती रहना—दे0 अक्ल खो बैठना

अक्ल ठिकाने आना—सबक मिलना। प्र0 अब कुछ दिन धक्के खाने से उसकी अक्ल अपने आप ठिकाने आ जायेगी (परीक्षा0—श्री0 दास, 107)।

अक्ल ठिकाने करना—(1) सबक सिखलाना। प्र0 उस दुष्ट की अक्ल ठिकाने किए बिना काम नहीं चलेगा।

(2) सोच-समझकर काम करना। प्र0 अक्ल ठिकाने करके सोचो कि तुम्हें क्या करना चाहिए। हड़बड़ाओ मत।

अक्ल दंग रह जाना या हो जाना—बहुत आश्चर्य होना।

अक्ल दीमक चाट जाना—अक्ल में कुछ न होना, मूर्ख होना। प्र0 इसकी अक्ल दीमक चाट गया है, इससे बेकार माथा मत लगाओ।

अक्ल दुम में बांधकर चलना—बेवकूफी का काम या बातें करना। प्र0 अरे यार, तुम तो अक्ल दुम में बांधकर चलते हो।

अक्ल देना—राय देना, समझाना। प्र0 ठीक है, मैं मूर्ख हूं। अब आप ही अक्ल दीजिए।

अक्ल दौड़ाना, -भिड़ाना, -लगाना, -लड़ाना—युक्ति लगाना, उपाय सोचना। प्र0 जरा अक्ल दौड़ाकर देखो कि कैसे उसे पटाया जा सकता है।

अक्ल पढ़ाना—युक्ति बताना, अक्ल सिखाना (आमतौर पर बुरे भाव का द्योतक)। प्र0 उसी ने यह सब अक्ल पढ़ाई होगी, मैं जानती हूं।

अक्ल पर ईंट पड़ना—दे0 अक्ल खो बैठना

अक्ल पर ताले पड़ना—दे0 अक्ल खो बैठना

अक्ल पर पत्थर पड़ना—दे0 अक्ल खो बैठना

अक्ल पर परदा पड़ना—दे0 अक्ल खो बैठना

अक्ल पर पुटकी पड़ना—दे0 अक्ल खो बैठना

अक्ल बड़ी या भैंस बड़ी होना—स्थूल आकार से सूक्ष्म बुद्धि श्रेष्ठ होना।

अक्ल बेच खाना—मूर्खता का काम करना। प्र0 उसने अक्ल बेच खायी है तभी न अपने पैरों पर कुल्हाड़ी मारने का काम कर रहा है।

अक्ल बौड़ाना—दे0 अक्ल खो बैठना

अक्ल भिड़ाना—दे0 अक्ल दौड़ाना

अक्ल मारी जाना—दे0 अक्ल खो बैठना

अक्ल मोटी होना—बुद्धि की कमी होना। प्र0 जोधा पहलवान था पर जिस तरह देही मोटी थी, अकल भी उसकी वैसी ही हो गई थी (जिंदगी–निर्गुण, 81)।

अक्ल मोल लेना—किसी समझदार से राय लेना। प्र0 तुम्हें खुद नहीं समझ आता तो किसी से अक्ल मोल लो।

अक्ल लगाना—दे0 अक्ल दौड़ाना

अक्ल लड़ाना—दे0 अक्ल दौड़ाना

अक्ल सठियाना—बुद्धि-भ्रम होना। प्र0 ××तुम्हारी आर्य-समाजियों के साथ रह-रहकर अक्ल सठिया गई है (सारा0–यादव, 87)।

अक्ल से काम लेना—दे0 अक्ल खर्च करना

अक्ल से दूर की बात, बाहर की बात—समझ में न आनेवाली बात। प्र0 तुम व्यर्थ माथा मत लगाओ। यह तुम्हारी अक्ल से दूर की बात है।

अक्ल से बाहर की बात—दे0 अक्ल से दूर की बात

अक्ल से सरोकार न होना—दे0 अक्ल का अंधा

अक्ल हवा हो जाना—सारी चतुराई या गर्व दूर हो जाना। प्र0 अगर कहीं महावीर स्वामी आ जाते××तो सारी अक्ल हवा हो जाती तुर्रमखानों की (लिली–निराला, 86)।

अक्लमंद को इशारा काफी होना—तनिक इशारा पाकर ही अक्लमंद व्यक्ति का बात समझ लेना।

अक्लमंद की दुम बनना—अपने को बहुत होशियार समझना। प्र0 समझ तो रत्ती भर है नहीं और बनता है अक्लमंद की दुम।

अक्ली गद्दे लड़ाना—दिमागी विचार या तर्क करना। प्र0 आप बता सकती हैं, किसी फ़िलॉसफ़र ने अक्ली गद्दे लड़ाने के सिवा और कुछ किया है? (गोदान–प्रेमचंद, 145)।

अक्षर घसीटना—जल्दी में कुछ लिखना। प्र0 चार अक्षर घसीट दीजिए तो भी मेरा काम बन सकता है।

अक्षर घोंटना—(1) कंठस्थ करना। प्र0 अक्षर घोंटे बिना संस्कृत का ज्ञान नहीं प्राप्त किया जा सकता।
(2) अक्षर लिखने का अभ्यास करना। प्र0 आज भी गांवों में पटिया के ऊपर बच्चों से अक्षर घोंटवाया जाता है।

अक्षर से भेंट न होना—एकदम बे-पढ़ा-लिखा होना। प्र0 कबीरदास की अक्षर से भेंट न हुई थी परन्तु स्वानुभव द्वारा उन्होंने जो ज्ञान अर्जित किया, वह अमूल्य था।

अक्षर-अक्षर—पूरा-पूरा, सब कुछ। प्र0 तेज ने सुनील को रेशमा की कहानी भी तो अक्षर-अक्षर कह सुनाई थी (कठ0–दे0 स0, 271)।

अक्स उतारना—हूबहू चित्र बनाना।

अक्स छनना—रंग उतर जाना। प्र0 ध्यान रखना कि चित्र का अक्स न छन जाय।

अक्स लेना—किसी चित्र पर महीन काग़ज़ लगाकर चित्र उतारना।

अखज़ करना—(1) चुनना। प्र0 मुझे जो कहना था वह मैं कह चुका, अब तुम खुद अपना रास्ता अखज़ कर लो।
(2) बात में से बात निकालना। प्र0 वे तो ऐसा अखज़ करने लगती हैं कि उठना मुश्किल हो जाता है।

अखज निकालना—वैर का बदला लेना। प्र0 वे अखज निकालने के लिए ही यह सब कर रहे हैं।

अखज रखना—वैर-भाव रखना। प्र0 तुम क्यों भाई से अखज रखते हो?

अखाड़ा उठना—किसी दल या जमात का जाना। प्र0 बूढ़े साधु बाबा का अखाड़ा पिछले सोमवार को उठ गया।

अखाड़ा गरम होना—बहुत भीड़ होना। प्र0 आजकल रामलीला में अखाड़ा खूब गरम रहता है।

अखाड़ा जगाना—अखाड़े में लोगों का आना-जाना शुरू करवाना। प्र0 वासुदेव को भी कसरत का शौक था××उसने फिर अखाड़ा जगाया (मान0 (3)–प्रेमचंद, 7)।

अखाड़ा जमना या जमाना—(1) किसी जगह बहुत से आदमियों का एक साथ जुटना या जुटाना। प्र0 उन्हीं के घर में कम्युनिस्टों का अखाड़ा जमता है (अमृत0 –नागर, 403)।
(2) कुश्ती आदि के लिए लोगों का जुटना या जुटाना।

अखाड़ा निकलना—तमाशा दिखानेवालों का जुलूस निकलना। प्र0 आज पटेबाजों के दो अखाड़े निकले।

अखाड़ा बनाना—वाद-विवाद या लड़ाई का स्थान बना लेना। प्र0 उसने इस प्रांत में अपने विद्रोहात्मक विचारों का यहां तक प्रचार किया कि इसे विद्रोहियों का अखाड़ा बना दिया (रंग0–प्रेमचंद, 270)।

अखाड़ा मारना—(1) विजय प्राप्त करना। प्र0 आज की कुश्ती में दारासिंह ने अखाड़ा मार लिया।
(2) काम पूरा होना। प्र0 अब मुझे कोई चिंता नहीं है, मैंने अखाड़ा मार लिया है।

अखाड़ा होना—मुकाबिला होना, तर्क-वितर्क होना। प्र0 मेरा और आचार्य विजय का अखाड़ा तो इसी समय हो जाय (मृग0–वृं0 वर्मा, 327)।

अखाड़िया—मुकाबिला करने में अभ्यस्त। प्र0 बाबू द्वारकाप्रसाद पुराने अखाड़िया हैं। उन्हें भिड़ा दो।

अखाड़े का जवान—कसरती बदन का आदमी।

अखाड़े का पुराना खिलाड़ी—पुराना जानकार। प्र0 यह है अखाड़े का पुराना खिलाड़ी, इसे सब दांव-पेंच मालूम होंगे।

अखाड़े की मिट्टी पोतना—लड़ने को प्रस्तुत होना। प्र0 तुम भी खूब हो, इतनी सी बात पर अखाड़े की मिट्टी पोतने लगे?

अखाड़े में आना, -उतरना—मुकाबिले के लिये प्रस्तुत होना। प्र0 तो फिर आ जाओ अखाड़े में, तुम्हें भी देख लिया जाय।

अखाड़े में उतरना—दे0 अखाड़े में आना

अखाड़े से भागना—हार स्वीकार करके चले जाना। प्र0 उसने मुझे दूर से आते देखा और अखाड़े से भाग खड़ा हुआ।

अखाड़ेबाज—दांव-पेंच में लगा रहनेवाला व्यक्ति। प्र0 रामनिवास पुराना अखाड़ेबाज है, तुम उससे पार न पा सकोगे।

अख्तर चमकना—अच्छे दिन होना, भाग्योदय होना। प्र0 किसी भले आदमी का साथ करो तो तुम्हारा अख्तर चमक जाय।

अख्ती घोड़ी—ऐसी स्त्री जिसके स्तन साफ न दिखलाई दें।

अगड़म-बगड़म, अगड़म-शगड़म—व्यर्थ, फालतू। प्र0 वह देर तक अगड़म-शगड़म बकता रहा, फिर चला गया।

अगड़म-शगड़म—दे0 अगड़म-बगड़म।

अगर-मगर करना—(1) तर्क करना। प्र0 हर काम में अगर-मगर करने की उसकी बड़ी बुरी आदत है।

(2) किसी काम को करने में सोच-विचार करना। देखिए प्रयोग (1)

(3) किसी काम को करने में बहाने बनाना। देखिए प्रयोग (1)

अगला कदम उठाना—किसी काम को थोड़ा और आगे बढ़ाना। प्र0 विश्वविद्यालय अनुदान आयोग अगला कदम क्या उठायेगा, हमें पता नहीं।

अगली पंक्ति में खड़ा होना—सबसे पहले होना, एकदम सामने होना। प्र0 देश के लिए प्राण उत्सर्ग करनेवालों में तुम मुझे अगली पंक्ति में खड़ा पाओगे।

अगले जमाने का आदमी—बहुत ईमानदार व्यक्ति। प्र0 राय साहब ठहरे अगले जमाने के आदमी। उनसे ऐसे ही व्यवहार की आशा थी।

अगले जमाने में—पहले के समय में, भूतकाल में। प्र0 अगले जमाने की बातें तो सब सपना हो गयीं।

अगलों को रोना—मरे हुओं के लिए दुःख करना। प्र0 जिंदगी भर अगलों को ही रोती रहोगी या जो हैं, उनकी ओर भी नज़र डालोगी?

अगवानी लेना—आगे बढ़कर स्वागत करना। प्र0 सजि गज रथ पदचर तुरग लेन चले अगवान (राम0 (बाल)—तुलसी, 307)।

अगस्तिक यात्रा—कभी न समाप्त होने वाला काम। प्र0 तुमने तो न जाने कहां की यह अगस्तिक यात्रा शुरू कर दी है।

अगाड़ी मारना—मोहरा मारना, शत्रु-सेना को आगे से खदेड़ना। प्र0 रुद्र प्रताप ने स्वयं अगाड़ी मारी और उनके सेनापति ने पीछे से आक्रमण कर दिया।

अगाड़ी पिछाड़ी तुड़ाकर भागना—सब बंधन तोड़कर भागना। प्र0 प्रकाश एकदम अगाड़ी-पिछाड़ी तुड़ाकर भागा।

अगाड़ी-पिछाड़ी बांधना—किसी बात का हर तरह से प्रबन्ध करना। प्र0 अगाड़ी-पिछाड़ी बांधकर बेटे को हॉस्टल में रहने को भेजना।

अगाड़ी-पिछाड़ी लगना या लगाना—बंधन में पड़ना या बांधना। प्र0 मुझे तो ऐसी अगाड़ी-पिछाड़ी लग गयी है कि छूटने का कोई रास्ता ही नज़र नहीं आता।

अगिया बैताल—(1) अत्यंत क्रुद्ध। प्र0 वे अगिया बैताल बने आंधी की तरह कमरे में घुस पड़े (दिल0—जी0, 25)।

(2) बहुत उत्साही। प्र0 गोपाल अगिया बैताल है, उससे कह दो, वह सब प्रबंध करवा देगा।

अगुआ बनना, -होना—नेता बनना या होना। प्र0 हर काम में वे ही क्यों अगुआ बनना चाहते हैं?

अगुआ होना—दे0 अगुआ बनना

अग्नि धधक उठना, -भड़क उठना—विद्रोह, क्रोध आदि का भाव फैल जाना। प्र0 एक बार यदि यह अग्नि धधक उठी तो इसे सम्हालना मुश्किल होगा।

अग्नि प्रगट करना—आग जलाना। प्र0 पावक प्रगट करहु तुम्ह बेगी (राम0 (लं)—तुलसी, 993)।

अग्नि प्रज्वलित करना या होना—विद्रोह आदि का भाव भड़काना या होना। प्र0 तुम क्यों ज़बरदस्ती यह अग्नि प्रज्वलित कर रहे हो?

अग्नि भड़क उठना—दे0 अग्नि धधक उठना

अग्नि में भस्म करना—सर्वदा के लिए समाप्त कर देना।

अग्नि संस्कार करना या होना—मृतक का दाहकर्म करना या होना। प्र0 ×× बंगाल में योगियों को कहीं तो समाधि दी जाती है और कहीं-कहीं उनका अग्नि संस्कार भी किया जाता है (कबीर—ह0 प्र0 द्वि0, 11)।

अग्नि-परीक्षा—कठिन परीक्षा। प्र0 इस गवाही में मेरी ऐसी अग्नि-परीक्षा होगी, मुझे पता न था।

देखिए "आग" के मुहावरे भी।

अघोरपंथी—हर तरह का खान-पान करनेवाला या विचित्र आचरण करनेवाला व्यक्ति।

अचंभों का बच्चा—आश्चर्यजनक वस्तु।

अचक्के में—औचक में, अचानक। प्र0 शेर इस तरह अचक्के में हमला कर बैठेगा, यह हमने नहीं सोचा था।

अचार करना, -निकालना, -बनाना—खूब मारना। प्र0 जो ऐसा होता, तो यह कोठी के बाहर भी आने पाते? आप सब मिलकर इनका अचार न निकाल लेते? (आजाद0—प्रेमचंद, 149)।

अचार डालना—बाद में काम में लेने के लिए यत्नपूर्वक उठाकर रख देना। प्र0 हो चुका यहाँ ब्याह। रखें अपनी लड़की अपने घर—अचार डालें (दे0 दु0—शिव0, 234); साड़ियों का अचार डालना है क्या जो ले-लेकर रखे जा रही हो?

अचार निकालना—दे0 अचार करना

अचार बनाना—दे0 अचार करना

अच्छा—खूब, बहुत, अधिक। प्र0 हम अच्छा सो गये।

अच्छा करना—बुरा करना (व्यंग्य में)। प्र0 जी हाँ, आपने बड़ा अच्छा

किया जो नौकरी छोड़ दी और दर-दर की ठोकरें खाने को तैयार हो गये।

अच्छा घर—सम्पन्न परिवार। प्र0 पर बहू, जब तक घर अच्छा न मिले, तब तक जी भी तो नहीं भरता (मा—कौशिक, 137)।

अच्छा वक्त—भाग्योदय के दिन। प्र0 आजकल तुम्हारा अच्छा वक्त है, जो करना है कर डालो।

अच्छा-बिच्छा—ठीक, दुरुस्त। प्र0 वह अच्छा-बिच्छा बैठा बातें कर रहा था। अचानक एकदम से छटपटाने लगा।

अच्छी कटना, -गुज़रना, -बीतना—आनंद में दिन बीतना। प्र0 अभी तो अच्छी ही कट रही है, आगे की देखी जायगी।

अच्छा कहना—(1) मौके की बात कहना। प्र0 यह तुमने अच्छी कही। मैं अभी कमल बाबू से बातें करता हूँ।

(2) प्रशंसा करना। प्र0 तुम तो उनके बारे में हमेशा अच्छी ही कहते हो।

अच्छी गुजरना—दे0 अच्छी कटना

अच्छी बीतना—दे0 अच्छी कटना

अच्छे आना, -मिलना—ठीक अवसर पर आना। प्र0 तुम अच्छे आये, मैं तुम्हारे यहाँ आदमी भेजने ही वाला था।

अच्छे का मुंह देखकर उठना—दिन का शुभ प्रारंभ होना। प्र0 यकीन हो गया, आज अच्छे का मुंह देखकर उठे हैं (गोदान—प्रेमचंद, 111)।

अच्छे घर बयाना देना—अच्छी साख वाले से व्यवहार करना, अच्छी शुरुआत होना। प्र 0 उन्होंने मुझे चकमा देकर अच्छे घर बायन दिया है (व्यंग्य) (मा—कौशिक, 392)।

अच्छे थान का घोड़ा—मशहूर स्थान या जाति का घोड़ा।

अच्छे दिन आना, -होना—सुख-समृद्धि के दिन आना। प्र0 तब मामी के दिन फिर भी अच्छे थे, अब तो मामी का भाग ऐसा उलटा है कि बस....(अंधेरे0—राकेश, 344)।

अच्छे दिन देखना या देखे होना—सुख-समृद्धि में दिन गुजारना। प्र0—'बाबा सुखदेव सिंह' के माता-पिता भी उन बचे-खुचे लोगों में से थे जिन्होंने कभी अच्छे दिन देखे थे ×× (एक म्यान0—नानक0, 27)।

अच्छे दिन होना—दे0 अच्छे दिन आना

अच्छे मिलना—दे0 अच्छे आना

अच्छे रहना—(1) लाभ में रहना। प्र0 वाह भाई, तुम्हीं अच्छे रहे। हम लोग तो यहां टापते ही रह गये।

(2) स्वस्थ रहना। प्र0 लखनऊ में तो मैं एकदम अच्छा रहा, वहां से बनारस आने पर तबियत खराब हो गयी।

अच्छे से पाला पड़ना—विचित्र आदमी से वास्ता पड़ना। प्र0 क्या कहूं, अच्छे से पाला पड़ गया है, किसी तरह न काम करता है न कराता है।

अच्छे हालों से गुजरना—आराम से दिन बीतना। प्र0 उसकी अच्छे हालों से गुजर रही है, कोई चिंता नहीं।

अच्छे-अच्छे—नामी-गरामी। प्र0 शहर के अच्छे-अच्छे लोग मालवीय जी की शव-यात्रा में शामिल हुए।

अछरकट्टू—साधारण पढ़ा-लिखा। प्र0 यह अछरकट्टू इस मामले में क्या सलाह देगा?

अछरौटी-बर्तनी—हिज्जे, वर्त्तनी।

अछूता—(1) दूर, निर्लेप। प्र0 इसलिए उनका जीवन शासकों के रंग से अछूता सा ही था (सा0 जि0—ल0 प्र0 सु0, 7)।

(2) उपयोग में न आया हुआ; कोरा या नया। प्र0 तुम्हारे पास यदि कोई अछूती धोती पड़ी हो तो मुझे दे दो।

अछूता दामन—वह व्यक्ति जो किसी अपवाद आदि से लांछित न हो। प्र0 तुम उसकी इतनी आलोचना कर रहे हो पर यह बतलाओ कि किसका दामन अछूता है?

अछूता न छोड़ना—अलग न रहने देना। प्र0 वह मुझे बदनाम कर रहा है तो मैं भी उसे अछूता नहीं छोड़ूंगा।

अछूती कोख—वह स्त्री जिसकी कोई संतान न मरी हो।

अजगर की तरह पड़े रहना—आलस्य में दिन बिताना। प्र0 क्या दिन भर अजगर की तरह पड़ रहते हो? कुछ काम किया करो।

अजगर के मुंह में जाना—किसी बड़े काम या व्यक्ति के द्वारा सामान्य और छोटे व्यक्तियों के अस्तित्व का लोप हो जाना। प्र0 उनके साथ काम करने का निर्णय करके मैंने बहुत बड़ी भूल की। मेरा तो सब कुछ अजगर के मुंह में चला गया।

अजगर बनना—जमकर बैठना। प्र0 दादाजी अजगर बने बैठे हैं, न जाने कब खिसकेंगे।

अजगरी वृत्ति—बिना काम-काज किये जिन्दगी बितानेवाली मनोवृत्ति। प्र0 करता क्या है, अजगरी-वृत्ति में दिन गुज़ार रहा है।

अजवायन की नास न छूटना—एकदम नादान होना। प्र0 यह तो ऐसी बातें कर रहा है जैसे अभी तक इसकी अजवायन की नास न छूटी हो।

अजाब मोल लेना—अकारण कष्ट या झंझट में पड़ना। प्र0 तुमने यह अजाब मोल लिया ही क्यों?

अजायबखाने में रखने काबिल—आश्चर्यजनक, अद्भुत। प्र0 जी हां, आपका कोट तो अजायबखाने में रखने काबिल है।

अजीबो-गरीब—विचित्र। प्र0 ऐसी अजीबो-गरीब सूरत बनाये वह आ पहुंचा कि मैं एकदम हड़बड़ा गया।

अजीर्ण होना—(1) बहुतायत होना। इतना अधिक होना कि वह होना कष्टप्रद हो जाये। प्र0 लड़के दस बजे आयें, चार बजे छुट्टी पायें, यह नहीं कि दिनभर दांता-किलकिल, पढ़ना भी अजीरन हो जाय (आजाद0—प्रेमचंद, 61)।

(2) कष्टप्रद होना। प्र0 तुम्हें वह ऐसा अजीर्ण क्यों हो गया? कुछ तो कारण होगा।

अटक होना—(1) किसी की मृत्यु के कारण सामाजिक लेन-देन कुछ दिन के लिए बंद होना। प्र0 रामदयाल जी के यहां लड्डू मत भेजो, नहीं लेंगे। उनके यहां अटक है, बहनोई गुजर गये हैं।

(2) कोई रुकावट या बाधा होना। प्र0 बाहर जाने में कोई अटक तो है नहीं, तुम खुद जाकर टी-सेट खरीद लाओ।

अटकन-चटकन खेलना—बेकार काम करना। प्र0 यह सुबह से क्यों अटकन-चटकन खेल रहा है?

अटकना या अटकाना—(1) उलझना : झगड़े आदि में उलझना या उलझाना। प्र0 जाओ, अपने काम से लगौ, आजकल भम्भड़ के दिनन में मुझसे और मेरे रमेस से न अटकना। (अमृत0—नागर, 84)।

(2) रुकना या रोकना। प्र0 मैं तो कितनी देर से उठने-उठने को कर रहा था पर मास्टर साहब ने अटका लिया।

अटकल झाड़ना—अंदाज से बहुत कुछ कहे जाना। प्र0 बहुत ज्यादा अटकल मत झाड़ो, ठीक से कुछ पता हो तो बताओ।

अटकलपच्चू (च्छू)—(1) बिना सोचे-विचारे। प्र0 कदाचित् इसीलिए कल बुलाया है, खूब छान-परताल करके तब राय देंगे। अटकल-पच्चू बातें कहनी होतीं तो अभी न कह देते (प्रेमा0—प्रेमचंद, 73)।

(2) मन-गढ़ंत। प्र0 तुम अपनी अटकल-पच्छू रहने दो। मैं पूरा पता लगा लूंगा।

अटकलपच्चू भिड़ाना, -हांकना—अंदाज लगाना। प्र0 अटकलपच्चू हांकना छोड़कर ठीक-ठीक बात बतलाओ।

अटकलपच्चू हांकना—दे0 अटकलपच्चू भिड़ाना

अटकलबाज—अनुमान लगानेवाला। प्र0 तुम ठहरे अटकलबाज, हर बात में अटकल लगाते रहते हो।

अटकाव होना—(1) सहारा होना। प्र0 जरा भी अटकाव हुआ तो मैं ऊपर चढ़ जाऊंगा।

(2) दे0 अटक होना (1)

अटपट बोलना—बिना समझे-बूझे बोलना। प्र0 बड़े बाबू के सामने अटपट बोलने को किसने कहा था?

अटपट रास्ते चलना—गलत काम करना। प्र0 तुम्हारी पुरानी आदत है, सीधा रास्ता छोड़कर अटपट रास्ते ही चलोगे।

अटल हो जाना—निश्चित हो जाना। प्र0 खा-पीकर अटल हो गये और लम्बी तानकर पड़ रहे।

अटवाटी-खटवाटी लेकर पड़ना, अटवास-खटवास लेकर पड़ना, अरपाटी-परपाटी लेकर पड़ना—रूठकर या हताश होकर चुपचाप खाट पर पड़ रहना। प्र0 वृद्धा माता तो इतनी हताश हुईं कि उसी वक्त अटवास-खटवास लेकर पड़ रहीं (मान0 (3)—प्रेमचंद, 124)।

अटवास-खटवास लेकर पड़ना—दे0 अटवाटी-खटबाटी लेकर पड़ना

अटसट—(1) अनुचित प्रेम-संबंध। प्र0 उन दोनों में तो बरसों से अटसट चल रही है।

(2) चालाकी। प्र0 हर समय अटसट के फेर में न रहा करो।

अटसट लगाना—युक्ति बैठाना। प्र0 कोई अटसट लगाओ तो दार्जि-लिंग का चक्कर लगा आया जाय।

अटसट लड़ना या लड़ाना—षड्यंत्र होना या करना। प्र0 सारा दफ्तर आजकल अखाड़ा बना हुआ है। सब अटसट लड़ा रहे हैं।

अटूट शृंखला—न शेष होनेवाला क्रम। प्र0 उसका अंतर मंथन कर रहा था, विचारों की अटूट शृंखला उसे पल भर को भी चैन नहीं लेने दे रही थी।

अटेरन—दुबला। प्र0 यह बेचारा तो एकदम अटेरन हो गया है।

अटेरन कर देना—हरा देना; दम न लेने देना। प्र0 अब मुझसे और नहीं होता, तुमने तो मुझे अटेरन कर दिया।

अटेरन फेरना—घोड़े को घुमाना।

अट्ठ-सट्ट—(1) इधर-उधर का; फालतू; खराब। प्र0 न जाने कहाँ-कहाँ का अट्ट-सट्ट सामान लाकर घर भर दिया है।

(2) अनुचित। प्र0 बहुत अट्ट-सट्ट बकने से कोई फायदा है?

अट्ठे-पंजे लड़ाना—दांव-घात सोचना। प्र0 दिन-रात दूसरों को नीचा दिखलाने के लिए अट्ठे-पंजे लड़ाने में ही मत रहा करो।

अठकापालीपन—उत्पात। प्र0 छोड़ दें आप अठकपालीपन, मत करें होंठ काट-काट सितम (चुभते0—हरिऔध, 77)।

अठखेलियां करना—(1) खेल करना। प्र0 मुहल्ले भर के लड़के उस मैदान में जुटकर अठखेलियां कर रहे थे।

(2) हंसी-ठट्ठा करना। प्र0 मुझसे हर समय अठखेलियां मत किया करो, मुझे बिल्कुल पसंद नहीं।

अठखेलियां सूझना—मौज-मस्ती सूझना। प्र0 तुम्हें क्या, तुम्हें तो चौबीसों घड़ी अठखेलियां सूझा करती हैं।

अडिग छाप होना—अमिट प्रभाव होना। प्र0 पिताजी की उस दिन की बातों की आज तक मेरे मन पर अडिग छाप है।

अड़ंगा अड़ाना, -डालना -देना, -मारना, -लगाना—बाधा पहुंचाना। प्र0 मिस्टर तंखा दांव-पेंच के आदमी थे, सौदा पटाने में ×× अड़ंगा लगाने में ×× दुम झाड़कर निकल जाने में सिद्धहस्त (गोदान—प्रेमचंद, 94)।

अड़ंगा डालना—दे0 अड़ंगा अड़ाना

अड़ंगा देना—दे0 अड़ंगा अड़ाना

अड़ंगा मारना—दे0 अड़ंगा अड़ाना

अड़ंगा लगाना—दे0 अड़ंगा अड़ाना

अड़ंगा-नीति अपनाना—हर काम में बाधा डालना। प्र0 हर काम में अड़ंगा-नीति अपनाने को उन्होंने अपना धर्म बना रखा है।

"अड़ंगी" के लिए "अड़ंगा" के मुहावरे देखिए।

अड़ंगे पर चढ़ना या चढ़ाना—(1) वश में होना या करना। प्र0 मधुआ किसी तरह अड़ंगे पर चढ़े तब न अपना मतलब सिद्ध हो।

(2) बहकावे में आना या लाना। प्र0 करीम को अड़ंगे पर चढ़ा-कर सलीम उसे ठगना चाहता है।

अड़ जाना या अड़ना, -बैठना, अड़कर खड़ा होना—हठ करना, अपनी बात पर दृढ़ रहना। प्र0 अम्मा तो हर बात में अड़ जाती हैं। इस तरह कैसे निर्वाह होगा।

अड़ पकड़ना, अड़तल पकड़ना, -लेना—किसी की शरण में जाना। प्र0 हे गिरधारी, मैंने तो तुम्हारी अड़ पकड़ रखी है, तुम चाहे रखो

चाहे मारो।

अड़ बैठना—दे0 अड़ जाना।

अड़कर खड़ा होना—दे0 अड़ जाना।

अड़तल पकड़ना,—शरण में जाना। प्र0 मैं आपका ही अड़तल पकड़ूँगा और कहाँ जाऊँगा।

अड़तल लेना—दे0 अड़तल पकड़ना।

अड़ते से अड़ जाना—लड़ने वाले से लड़ जाना। प्र0 मैं यूँ कुछ नहीं बोलता पर हाँ अड़ते से अड़े बिना कैसे काम चले।

अड़ियल टट्टू—हर काम को रुकते-रुकते करनेवाला, बिना टोंके-कहे किसी काम को न करनेवाला। प्र0 वह मनचला, उद्धत, सबसे अलग रहने वाला अड़ियल टट्टू हो गया (शेखर0 (1)—अज्ञेय, 91)।

अड़िया करना—जहाज के लंगर की रस्सी खींचना।

अड़े पर काम आना—दुर्दिन में सहायता देना। प्र0 कोई अड़े पर तो काम नहीं आता, पर हाँ मीन-मेख निकालने के लिए सब हैं।

अड्डा जमना—लोगों का जुटकर हँसी-मजाक करना। प्र0 उस दिन तो मेरे यहाँ रात डेढ़ बजे तक अड्डा जमा रहा।

अड्डा जमाना—(1) कई आदमियों का जुटकर हँसी-मजाक करना। प्र0 फिर छुट्टी हुई तो लिखने लगे या दामोदरन की दुकान पर अड्डा जमाने जा बैठे (दूधगाछ—दे0 स0, 86)।

(2) अधिकार में ले लेना। प्र0 देख लेना, भाभी धीरे-धीरे इस कमरे और छत पर भी अड्डा जमा लेंगी।

(3) टिक जाना। प्र0 तुम नानाजी के यहाँ अड्डा जमाने के इरादे से जा रहे हो न?

अड्डी होना—झगड़ा होना। प्र0 मुझसे सुशीला से अड्डी हो गयी है।

अड्डे पर आना—(1) दुरुस्त हो जाना, ठीक रास्ते पर आना। प्र0 यार, अभी भड़कता है, धीरे-धीरे अड्डे पर आवेगा (मा—कौशिक, 108)।

(2) अपने निवास-स्थान पर आना। प्र0 रोटी मैं अड्डे पर आकर ही खाऊँगा।

अड्डे पर चहकना— अपने स्थान पर रोब दिखाना। प्र0 उसकी परवाह मत करो। वह केवल अपने अड्डे पर चहकना जानता है।

अड्डे पर बोलना—स्थान-विशेष पर बोलना। प्र0 ये जनाब हर कहीं नहीं केवल अपने अड्डे पर बोलते हैं।

अड्डेबाजी करना—कहीं जुटकर गप्प मारना। प्र0 परीक्षा समाप्त हो गयी है। अब तो अड्डेबाजी के सिवा और कोई काम है नहीं।

अढ़ैय्या काटना—साढ़े-साती शनिश्चर चढ़ने पर कष्टपूर्ण अंतिम अढ़ाई वर्ष व्यतीत करना, बहुत कष्ट में होना। प्र0 चाचाजी आजकल अढ़ैया काट रहे हैं।

अढ़ैय्या लुढ़काना—मेहनत का काम करना। प्र0 कौन-सी अढ़ैय्या लुढ़काकर चले आ रहे हो जो ऐसे निढाल पड़ गये?

अता-पता लगाना—किसी सम्बन्ध में सामान्य जानकारी करना; खोज-पूछ करना। प्र0 वहाँ जाकर सब अता-पता लगाकर आओ तब फिर आगे बात बढ़ायी जाय।

अति करना—सीमा का अतिक्रमण करके कोई काम करना (सामान्यतः अनुचित करना)। प्र0 सुनौ सखी अति नहीं कीजिये, मूँड़ परै अपनैंही (सू0 सा0—सूर, 2668)।

अतिसार होकर निकलना—किसी तरह पच न पाना, किसी की चीज या रकम हड़प न कर पाना। प्र0 हमारा जो कुछ तुमने खाया है वह अतिसार होकर निकलेगा।

अतीत की मिट्टी खोदना—विगत बातों को याद करना। प्र0 शेखर जब एक विदग्ण औदास्य में अपने कमरे में बैठकर दुर्दम अभिमानी घोड़े की तरह अतीत की मिट्टी खोदने लगा (शेखर0 (2)—अज्ञेय, 20)।

अथाह में पड़ना, -समुद्र में गोते लगाना, -सागर में बहना—(1) ऐसी मुसीबत में पड़ना जिससे सहज ही मुक्ति का रास्ता न दिखे। प्र0 सोनपुर वाला कारखाना बंद हो जाने से मैं ऐसे अथाह में पड़ गया हूँ कि क्या कहूँ।

(2) गहरी चिन्ता में डूबे होना। प्र0 चाचाजी की आकस्मिक मृत्यु से बाबूजी तो हर समय अथाह सागर में बहते रहते हैं।

अथाह समुद्र में गोते लगाना—दे0 अथाह में पड़ना।

अथाह समुद्र में छोड़ देना—बीच में या मुसीबत की स्थिति में छोड़ देना। प्र0 इस तरह मुझे अथाह समुद्र में छोड़कर तुम नहीं जा सकते।

अथाह समुद्र में डूबना—बचने का कोई उपाय न होना, घोर अनिष्ट हो जाना। प्र0 मैं तो खुद ही अथाह समुद्र में डूबा हूँ, मुझसे क्या आशा करते हो भाई।

अथाह सागर में बहना—दे0 अथाह में पड़ना।

अदक जाना—डर जाना। प्र0 पिता और भाई के भीषण वाक्युद्ध से सहदेव एकदम अदक गया।

अदक समाना—भय होना। प्र0 उसके मन में ऐसा अदक समा गया है कि वह इस ओर पैर रखने की हिम्मत ही नहीं करता।

अदन का रास्ता लेना, -को सिधारना—मर जाना। प्र0 सुलतान मियां ने तीन साल पहले अदन का रास्ता लिया।

अदन को सिधारना—दे0 अदन का रास्ता लेना।

अदब की जगह—वह व्यक्ति या वस्तु जिसका अदब करना जरूरी हो। प्र0 अदब की जगह तो अदब किया करो। हर समय जंगलीपन क्या अच्छा लगता है?

अदबदाकर—अचानक हड़बड़ाकर। प्र0 हम लोगों ने तै कर रखा था कि पिताजी के जन्म-दिन के आयोजन की चर्चा उनसे पहले से न करेंगे पर दीदी ने अदबदाकर कह ही दिया।

अदम पैरवी में—मुकदमे में आवश्यक कार्यवाही के अभाव में। प्र0 देखो तो सही, अदम पैरवी में उसकी हार हो गयी।

अदला-बदली करना—हेर-फेर करना। प्र0 देखो, मेरे मजमून में कोई अदला-बदली मत करना।

अदा-बदा—सधा बधा, पहले से तै किया हुआ । प्र0 यह अदा-बदा मामल है, सभी जानते हैं ।

अदालत करना या होना,-अदालत चढ़ना—मुकदमा लड़ना या लड़ जाना । प्र0 न सीधे से दूँगा, न टेढ़े से दूँगा । अदालत करो (मान0 (7) —प्रेमचंद 207; ऐ, मैं तो चढूँगी अदालत । कह-कहकर मुकर जाना क्या हँसी-ठट्ठा है (आजाद0—प्रेमचंद, 109) ।

अदालत का कीड़ा—वह व्यक्ति जो बराबर कचहरी जाया-आया करे और मामला मुकदमा किया करे । प्र0 दीनदयाल अदालत के कीड़े थे (गबन—प्रेमचंद, 4) ।

अदालत की धूल फांकना—मुकदमे के चक्कर में व्यर्थ पड़ना । प्र0 कहीं मार-पीट हो जाय तो थाना-पुलिस हो, बँधे-बँधे फिरो×× अदालत की धूल फांको×× (गोदान—प्रेमचंद, 43) ।

अदालत के भील—वकील और रिश्वतखोर कर्मचारी । प्र0 अदालत के इन भीलों से खुदा बचाये ।

अदालत चढ़ना—दे0 अदालत करना ।

अदालत दौड़ना—मामला-मुकदमा करना । प्र0 असामी में इतना बूता है कि रोज अदालत दौड़े ? (गोदान—प्रेमचंद, 245) ।

अदालत में जाना—मुकदमा दायर करना या होना । प्र0 हम सुना है कि तुमहूं हमरे खिलाफ अदालत मां जाय रही हो ? (अमृत0—नागर, 502) ।

अदृश्य का हाथ होना—किस्मत के अधीन होना । प्र0 हमारे प्रत्येक कार्य में अदृश्य का हाथ है (चित्र0—भग0 वर्मा, 108) ।

अद्धी-अद्धी पर जान देना—धन की बहुत छोटी राशि को पाने या बनाये रखने के लिए अत्यंत आतुर होना । प्र0 धन का संचय करना ठीक है पर इस तरह अद्धी-अद्धी पर जान देना तो ठीक नहीं ।

अधकचरा—अपरिपक्व । प्र0 आलोचना के क्षेत्र में अधकचरी दृष्टि के लिए कोई स्थान नहीं है ।

अधकचरी बात—इधर-उधर से सुनी हुई अप्रामाणिक बात । प्र0 क्रांति-कारी दल और कांग्रेस दोनों का नाम उनके लिए पहले तो कुतूहल का कारण था किन्तु पीछे उनके सम्बन्ध की अधकचरी बातें भी पास तक पहुँचने लगीं (सतमी0—राहुल, 91) ।

अधकट्टी—रसीद का आधा बचा हिस्सा । प्र0 अधकट्टी सम्हाल कर रखना ।

अधखिली कली—वह बालिका जिसका यौवन पूरा विकसित न हुआ हो ।

अधमेसर—मूर्ख ।

अधमरी—बहुत दुर्बल एवं कृश । प्र0 वह बेचारी तो अधमरी हो गयी है, कोई देखने-सुनने वाला नहीं ।

अधर में चलना—इतराना । प्र0 ऐसा अधर में न चलो गुइयाँ, आज की-सी बात सदा नहीं भी रह सकती है ।

अधर में झूलना, -पड़ना, -लटकना, -रहना—पेशोपेश में पड़ना । प्र0 (1) समूची जाति का भाग्य अधर में लटका हुआ है (अशोक0—ह0 प्र0 द्वि0; 46) ।

(2) पूरा न होना । प्र0 मकान अधर में पड़ा हुआ है । आपस के झगड़े का हेस-नेस हो तो काम आगे बढ़े ।

अधर में पड़ना—दे0 अधर में झूलना ।

अधर में रहना—दे0 अधर में झूलना ।

अधर में लटकना—दे0 अधर में झूलना ।

अधिकार जमाना—अपने अधिकार में कर लेना । प्र0 पूरे मकान पर भैया ने अधिकार जमा रखा है ।

अधूरा कर देना—कमजोर कर देना । प्र0 बीमारी ने सुनीता को अधूरा कर दिया था ।

अधूरा जाना—समय से पहले गर्भपात हो जाना ।

अधूरा सपना—अपूर्ण कल्पना या विचार । प्र0 मेरी सारी जिन्दगी तो अधूरे सपनों के ताने-बाने में उलझ कर ही रह गयी ।

अधूरा होना—(1) बिना समझ का होना । प्र0 ऐसे अधूरे आदमी से कौन बात करे ।

(2) शक्ति कम होना । प्र0 बुढ़ापे के कारण वह तो अधूरा हो गया है ।

अधूरी कहानी रह जाना—असामयिक वियोग या मृत्यु होना ।

अधेले की हाँड़ी देकर कुत्ते की जाति पहचानना—थोड़ा नुकसान उठाकर किसी व्यक्ति के स्वभाव और चरित्र को परखना । प्र0 बाद में बड़ा नुकसान उठाने के बदले शुरू में ही अधेले की हाँड़ी देकर कुत्ते की जाति पहचानना मैं बेहतर समझता हूँ ।

अधोड़ी तनना या तानना—भर पेट भोजन होना या करना । प्र0 आज तो अधोड़ी तन गयी, आराम करना जरूरी है ।

अधोमुख रहना—लज्जा के कारण दृष्टि नीची रखना । प्र0 अधमुख रहति अनत नहिं चितवति ज्यों गथ हारे थकित जुआरी (सू0 सा0 —सूर, 469) ।

अध्याय बदलना—बात या कार्य बदलना । प्र0 तर्क को अप्रिय रूप लेते देख मैंने बड़ी होशियारी से उस अध्याय को बदल दिया ।

अध्याय समाप्त होना—बात या कार्य समाप्त होना । प्र0 चलो, कम-से-कम एक बार यह अध्याय तो समाप्त हुआ ।

अनंत निद्रा में सोना—मृत्यु होना । प्र0 लम्बी बीमारी के बाद महामना पंडित मदनमोहन मालवीय अनंत निद्रा में सो गये ।

अनकही देना, -लेना—(1) चुप होना । प्र0 सूर अनकही दै गोपिन सों, श्रवन मूँदि उठि धायो (सूर) ।

(2) किसी का कहा न मानना । प्र0 तुमने तो अनकही देने का निर्णय कर लिया है । तब फिर मैं क्या कहूँ ।

अनकही लेना—दे0 अनकही देना ।

अनखिली कली—वह बालिका जिसका यौवन अभी विकसित न हुआ हो ।

अनखुन खोजना—जबरदस्ती झगड़ा करने का बहाना ढूंढ़ना । प्र0 उसकी आदत है । अनखुन खोज-खोजकर लड़ती रहती है ।

अनगढ़ बात—(1) भोंड़े ढंग से कही बात । प्र0 उसे बात करने का तनिक शऊर नहीं है । हर किसी से अनगढ़ बातें करती है ।

(2) अपरिपक्व बात । प्र0 उनकी ऐसी अनगढ़ बातें सुनकर हँसी आती है ।

अनगढ़ बोलना—(1) भोंड़े ढंग से बात करना । प्र0 अनगढ़ बोलने का तुम्हारा स्वभाव है । मैं तो तुमसे हैरान आ गया हूँ ।

(2) नासमझी की बात करना । देखिए प्रयोग (1) ।

अनचाहत का संग होना—अप्रिय व्यक्ति का साथ होना । प्र0 भयो सखि अनचाहत को संग ।

अनजान बनना—जानते हुए भी अनजान बनने का भाव दिखलाना । प्र0 अच्छा, तुम इस तरह अनजान क्यों बन रहे हो ?

अनजाने तालाब में डुबकी लगाना—(1) सर्वथा नयी और अनजान स्थिति में पड़ना । प्र0 रामप्रसाद के सामने और कोई रास्ता नहीं है, अनजाने तालाब में डुबकियाँ लगा रहा है ।

(2) खतरे का काम करना । प्र0 इस अनजाने तालाब में डुबकी लगाने की इच्छा तो न थी, पर क्या करता, और कोई उपाय न था ।

अनबिंधा मोती—क्वाँरी लड़की ।

अनबोल रानी—शांत प्रकृति की स्त्री ।

अनभल ताकना—बुरा चाहना । प्र0 मैंने कभी किसी का अनभल नहीं ताका फिर भी भगवान् ने मुझे यह सजा दी ।

अनभोरी देना—चकमा देना । प्र0 मैं ग्वालिन दधि बेचन आई क्यों देते अनभोरी (सूर) ।

अनमन—उदास मन । प्र0 आज बड़ी अनमन बैठी हो । क्या बात है ?

अनमिलत बात करना—प्रतिकूल बात कहना । प्र0 अनमिलती बातैं कहति, तातैं सुनियत नाँहि (सू0 सा0 –सूर, 2109) ।

अनमोड़—अपनी बात पर दृढ़ रहनेवाला । प्र0 दीपावली तो जन्म-जन्म की अनमोड़ है (कठ0 –दे0 स0; 60) ।

अनरस पड़ना—मनमुटाव होना । प्र0 श्रीकांत और सुनीता के बीच अनरस पड़ गया है ।

अनरस बोलना—रूखेपन से बात करना । प्र0 वह इतना अनरस बोलता है कि मैं उससे बात नहीं करना चाहता ।

अनसन-पाटी लेकर पड़ रहना—रूठकर बिना खाये-पिये पड़े रहना । प्र0 भाभी तभी से अनसन-पाटी लेकर पड़ी हैं ।

अनसुनी करना—पुकार पर ध्यान न देना; आनाकानी करना । प्र0 जीवन-अधार, घन-आनंद उदार महा, कैसे अनसुनी करी चातिक-पुकार तैं (घन0 कवित्त –घना0, 18) ।

अनसोहन होना—दुश्वार होना, अप्रिय होना । प्र0 बड़ा उत्पात कर रखा है तुम लोगों ने, बैठना अनसोहन हो गया ।

अनाज का दुश्मन—पेटू । प्र0 रामदीन तो अनाज का दुश्मन है, यहाँ दस दिन रहा तो अनाज की कुंडी खाली हो जायेगी ।

अनाज की शक्ल न देखना—अत्यंत भूखा होना । प्र0 मालिक, आज तीन दिनों से अनाज की शक्ल भी नहीं देखी है । कुछ दया हो जाय ।

अनाथ की आँख—बे-सहारे का सहारा । प्र0 यह बेटा ही मुझ अनाथ की आँख, बुढ़ापे का सहारा है ।

अनाप-शनाप—बेहिसाब, फालतू । प्र0 और अपनी आमदनी की परवाह न करता हुआ अनाप-शनाप खर्च करता है (गबन –प्रेमचंद, 318) ।

अनाप-शनाप बकना—अनकहनी या ऊटपटाँग बातें करना । प्र0 वे कहीं अनाप-शनाप बकने लगीं तो मुझसे चुप न रहा जायेगा ।

अनी की चोट—व्यंग्य या अप्रिय बात से पहुँचनेवाली पीड़ा । प्र0 कहाँ तक अनी की चोट सही जाय, हर बात की सीमा होती है ।

अनी पर अड़ना—तलवार का वार सहना, मरना । प्र0 फिर काम पड़ जाने पर अनी के ऊपर अड़ जाने के लिये मेरी देह तो है ही । (मृग0–वृं0 वर्मा, 396) ।

अनी पर कनी खाना—अपने सम्मान एवं बात की खातिर प्राण तक देने को तैयार रहना । प्र0 पानीदार लोग अनी पर कनी खाने तक को तैयार रहते हैं ।

अनोखा गुल खिलना—विचित्र बात होना । प्र0 विवाह के दिन वहाँ ऐसे-ऐसे अनोखे गुल खिले कि क्या कहूँ ।

अनोखे घर में कटोरी आना—क्षुद्र मनुष्य को कोई चीज मिलना । प्र0 रामू की बात हटाओ, उसकी बुद्धि फिर गयी है । अनोखे घर में कटोरी आ गयी है न, इसीलिए ।

अन्न अंग लगना,-लगना,-शरीर लगना—अच्छे खाने-पीने से शरीर पुष्ट होना । प्र0 पीयूष को अन्न अंग ही नहीं लगता, वह वैसा-का-वैसा ही है ।

अन्न का कन्न करना—अच्छी चीज को भी खराब कर देना । प्र0 इसे काम क्या है, अन्न का कन्न किया करता है ।

अन्न का कीड़ा—खाने का लालची । प्र0 अच्छा खाना सभी को अच्छा लगता है पर अन्न का कीड़ा बनना तो ठीक नहीं ।

अन्न का दाना मुँह से न लगाना—कुछ न खाना, एकदम भूखे होना । प्र0 दोनों छोटी बच्चियों को छोड़कर किसी ने अन्न का दाना भी मुँह से नहीं लगाया था (अमृत0 –नागर, 146) ।

अन्न पर पलना—(किसी के) आश्रय में रहना । प्र0 मेरे ही अन्न पर पलनेवाला यह कृतघ्न, मुझे ईमानदारी का पाठ पढ़ा रहा है ।

अन्न मिट्टी होना—खाना-पीना हराम होना । प्र0 जेहि दिन वह छेकै गढ़ घाटी । होइ अन्न ओही दिन माटी (जायसी) ।

अन्न लगना—दे0 अन्न अंग लगना ।

अन्न शरीर लगना—दे0 अन्न अंग लगना ।

अन्न-जल उठना, -पूरा होना, -रूठना—(1) रोजी छूट जाना । प्र0 रेलवे-विभाग से अब उसका अन्न-जल उठ गया है ।

(2) कहीं पर और रहने की सुविधा न रह जाना । प्र0 मामाजी के यहाँ से अन्न-जल उठ गया, अब और गुजारा नहीं हो सकता ।

अन्न-जल करना—खाना-पीना करना । प्र0 चतुर्वेदी जी इतने रुष्ट हुए कि उन्होंने मेरे यहाँ अन्न-जल करने तक से इनकार कर दिया ।

अन्न-जल के अधीन होना—किसी स्थान का अन्न-जल भाग्य में बदा होना । प्र0 सुलतानपुर के अन्न-जल के अधीन हैं, जब तक किस्मत में लिखा होगा, यहाँ रहना ही होगा ।

अन्न-जल छूटना—संबंध एकदम टूट जाना। प्र0 ××× हमें इस घर की फूटी कौड़ी भी हराम है। आज तक का अन्न-जल था, नाता भी था। आज से दोनों छूटे (अमृत0 नागर, 34)।

अन्न-जल छोड़ना,-त्यागना,-न छूना—उपवास करना, कुछ भी न खाना। प्र0 (क) उसी दिन से अम्मा ने अन्न-जल छोड़ दिया है। (ख) मैं अब इस घर में अन्न-जल नहीं छुऊँगा।

अन्न-जल त्यागना—दे0 अन्न-जल छोड़ना।

अन्न-जल न छूना—दे0 अन्न-जल छोड़ना।

अन्न-जल पूरा होना—दे0 अन्न-जल उठना।

अन्न-जल रूठना—दे0 अन्न-जल उठना।

अन्न-जल से भेंट न होना—उपवास होना। प्र0 घर की यह हालत है कि कई-कई दिनों तक अन्न-जल से भेंट नहीं होती।

अन्न-जल होना—कहीं रहना बदा होना, खाना-पीना होना। प्र0×× हमें इस घर की फूटी कौड़ी भी हराम है। आज तक का अन्न-जल था, नाता भी था। आज से दोनों छूटे (अमृत0 नागर, 34)।

अन्न-वस्त्र—जीवन-निर्वाह की सामान्य आवश्यकताएँ। प्र0 यह बात बिलकुल तो असत्य नहीं है कि ईश्वर सबको किसी-न-किसी हीले से अन्न-वस्त्र देता है (सेवा0–प्रेमचंद, 98)।

अन्यथा करना—रद्द करना; परे हटाना। प्र0 इस तरह मेरी बात को अन्यथा मत कीजिए, बाबूजी।

अपनपौ खोना, -तजना, -देना—अपने अहम् को छोड़ देना। प्र0 अति अभिमान लोभ के घाले, चले अपन पौ खोइ (कबीर ग्रंथा0–कबीर, 195); नातरु सूर सुमित्रा-सुत पर वारि अपुनपौ दीजै (सू0 सा0 –सूर, 597); अति सूधो सनेह को मारग है जहाँ नेकु सयानप बाँक नहीं। तहाँ साँचे चलैं तजि आपनपौ झझकैं कपटी जे निसांक नहीं (घन0 कवित्त –घना, 48)।

अपनपौ छिपाना—अपने वास्तविक रूप को छिपाये रखना। प्र0 सदा रहहिं अपनपौ दुराएं। सब विधि कुसल कुबेष बनाएं (राम0(बाल) –तुलसी, 171)।

अपनपौ तजना—दे0 अपनपौ खोना।

अपनपौ दिखलाना—प्रेम प्रदर्शित करना। प्र0 तुमने मेरे साथ ये अपनपौ दिखला के मेरा दिल ले लिया (सात0–नागर, 72)।

अपनपौ देना—दे0 अपनपौ खोना।

अपनपौ पहचानना, -पाना—अपने आप को जानना-पहचानना। प्र0 अपुनपौ आपुन हीं में पायो (सू0 सा0–सूर, 407); अब आपनपौ पहिचानि विप्र। सब करहु आगिलो काज प्रक्षि (केशव (2) –केशव, 269)।

अपनपौ पाना—दे0 अपनपौ पहचानना।

अपनपौ भूल जाना, -हारना—आत्म-विस्मृत हो जाना। प्र0 धन-सुत-दारा काम न आवैं, जिनहिं लागि आपुनपौ हारौ (सू0 सा0–सूर, 80); देखि भानुकुल भूपनहि बिसरा सखिन्ह अपान (राम0 (बाल) –तुलसी, 241)।

अपनपौ हारना—दे0 अपनपौ भूल जाना।

अपना आदमी—अपना परिचित या प्रिय व्यक्ति। प्र0 निज जन जानि ताहि अपनावा (तुलसी)।

अपना आल्हा अलापना—अपनी प्रशंसा करना, अपने कामों का वर्णन करना। प्र0 उस प्रसन्नता के जोश में उन्होंने दुबारा अपना आल्हा अलापना शुरू किया (अमृत0 –नागर, 180)।

अपना उल्लू कहीं न जाना—अभी भी कोई ऐसा होगा जिसे धोखा देकर फायदा उठाया जा सकता है। प्र0 अपना उल्लू कहीं नहीं गया है, मैं तो उनसे रुपये ऐंठूँगा ही।

अपना उल्लू सीधा करना—अपना मतलब निकालना। प्र0 ये किसी के सगे नहीं हैं—ये केवल अपना उल्लू सीधा करना चाहते हैं (विष0–प्रेमी, 9)।

अपना ऐब लीपना—अपने दोष को छिपाने का प्रयत्न करना। प्र0 वह बेकार अपना ऐब लीपने की कोशिश कर रही है।

अपना करके रखना—यत्नपूर्वक या प्रेमपूर्वक रखना। प्र0 आपका बेटा मेरा बेटा है। मैं उसे अपना करके रखूँगा।

अपना करना, -लेना—सप्रेम स्वीकार करना। प्र0 नृपति हमहिं अपनौ करि जानौ, तुम लायक हम नाहिं (सू0 सा0—सूर, 1201); श्री राधे मोहिं अपुनो कब करिहौ (भा0 ग्रं0 (2)– भारतेन्दु, 577)।

अपना कलछा बना रखना—अपने लाभ का साधन बना रखना। प्र0 वाह जी वाह, आपने तो मुझे अपना कलछा बना रखा है।

अपना कान देखे बिना कौए के पीछे दौड़ना—पास में खोजे या देखे बिना दूर खोज करना; किसी के बहकावे में आकर ऐसा करना। प्र0 अपना कान देखे बिना कौआ के पीछे दौड़ना अच्छा नहीं (मैला0 -रेणु, 18)।

अपना काम करना—अपना मतलब निकालना। प्र0 तुमने तो अपना काम कर लिया, मेरे काम का क्या होगा?

अपना किया पाना—करनी के अनुरूप फल पाना। प्र0 अपना किया तो मुझे पाना ही होगा। वही मैं पा रहा हूँ।

अपना कोई न होना—अपना कोई मित्र या सुहृद न होना।

अपना गीत गाना, -राग अलापना, -गाना, अपना-अपना राग अलापना, अपनी गाना, अपनी-अपनी गाना—अपनी-ही-अपनी कहे जाना दूसरे की न सुनना। प्र0 फिर भी अपना ही राग गाये जाता है (भा0 ग्रं0 (1) –भारतेन्दु, 621); अगर तुम अपना ही राग अलापोगे तो मैं कहे देती हूँ, मैं अपने घर चली जाऊँगी (कर्म0–प्रेमचंद, 17-18)।

अपना गुड़ भोजन बराबर समझना—अपनी खराब वस्तु को भी अच्छी मानना।

अपना घर छोड़कर घूरा बुझाना—अपने अहित का ध्यान छोड़कर दूसरे के अहित को रोकना। प्र0 अपनौ घर परिहरैं कहौ को घूर बुझावैं (सू0 सा0–सूर, 4713)।

अपना घर दूर से ही सूझना—अपना फायदा दूर से ही मालूम पड़ना।

अपना घर देखना—(1) अपनी स्थिति देखना। प्र0 पहले अपना घर देख लो फिर शादी में पचीस हजार रुपये खर्च करने की बात सोचो।

(2) अपना लाभ या हित देखना। प्र0 दुनिया पहले अपना घर देखती है, फिर परोपकार करने चलती है।

अपना घर समझना—किसी प्रकार का संकोच न करना। प्र0 फिर आपके घर को मैं अपना घर समझता हूँ (मान0(7)–प्रेमचंद,5)।

अपना जवाब आप ही होना—बेमिसाल होना। प्र0 अजी साहब, अपना जवाब वे आप ही हैं, उनसा दूसरा नहीं।

अपना झोंपड़ा अलग बनाना—अपना घर बनाना; आत्म-निर्भर होना। प्र0 अंत में उसने निश्चय किया कि मुझे अपना झोंपड़ा अलग बनाना चाहिए (सेवा0—प्रेमचंद, 192)।

अपना टका सीधा करना—(1) आमदनी करना। प्र0 मैं रिश्वत क्यों न लूँ? देनेवाला अपना टका सीधा करता है, मैं अपना।

(2) रुपया वसूलना। प्र0 मैं तो उनसे अपने टके सीधे कर ही लूँगा चाहे सीधे से, चाहे टेढ़े से।

अपना ठिकाना करना—अपनी जीविका या रहने आदि का प्रबंध करना। प्र0 पहले अपना ठिकाना तो कर लूँ फिर चाचा के बेटों की बात सोचूँगा।

अपना ढोल पीटना—अपनी बात कहना, अपना प्रचार करना। प्र0 जीवन इतना अल्प है कि आदमी को अपने ही ढोल पीटने से छुट्टी नहीं मिलती, जाति का मजीरा कौन बजाये? (प्रेमा0—प्रेमचंद, 120)।

अपना तमाचा अपने मुँह पर पड़ना—दूसरे को नुकसान पहुँचाने में अपना ही अहित होना। प्र0 अच्छा तो अब रहस्य खुला। मैंने सिर पीट लिया। क्या जानता था, अपना तमाचा अपने ही मुँह पर पड़ेगा (मान0 (1) –प्रेमचंद, 287)।

अपना दाँव लेना—मौका न चूकना। प्र0 भली कही तू मेरी बेटी, लयौ आपनौ दाउ (सू0 सा0 –सूर, 1327)।

अपना दिल हाथ में रखना—संयमित रहना। प्र0 अपने दिल को हाथ में रखकर शिवाजी बोले—××

अपना दुख रोना—अपने कष्ट-मुसीबत की चर्चा करना। प्र0 वे तो चौबीसों घण्टा अपना दुख रोते रहते हैं। कोई कहाँ तक सुने।

अपना दूध छोड़कर खारा पानी पीना—अपनी अच्छी चीज छोड़कर बुरी लेना। प्र0 अपनौ दूध छाड़ि को पीवै, खारे कूप कौ वारी (सू0 सा0–सूर, 4583)।

अपना देकर लड़ाई मोल लेना—जानबूझकर ऐसा काम करना जिसमें अपना नुकसान भी हो और लड़ाई भी हो। प्र0 अपना देकर लड़ाई मोल लेनेवाला तुम जैसा मूढ़ कोई और न होगा!

अपना देश बेगाना लगना—अपना घर या अपनी वस्तु से ही लगाव न होना। प्र0 मेरा मन फट गया है, मुझे अपना देश भी बेगाना लगता है।

अपना बनाना—दे0 अपना करना।

अपना बोया आप काटना—जैसा करना वैसा पाना। प्र0 अपनी बोयौ आप लुनौ तुम, आपै ही निरवारौ (सू0 सा0—सूर, 4522)।

अपना मीठा लगना—अपनी वस्तु प्रिय लगना। प्र0 अपना सभी को मीठा लगता है सो तुम्हें भी लगता है।

अपना मुँह तो देखो जाकर—'तुम अत्यन्त तुच्छ हो'—यह भाव व्यक्त करना। प्र0 मोटर साइकिल लेंगे। हुँह, जरा अपना मुँह तो देखो।

अपना राग अलापना—दे0 अपना गीत गाना।

अपना राग गाना—दे0 अपना गीत गाना।

अपना रास्ता देखना, -लेना—(1) अपने काम से लगो—ऐसा कहना। प्र0 वे ही काज फिरत भटकत कत, अब मारग निज गहिये (सू0 सा0 –सूर, 4518); उनसे आँख बरकाओ। कान मूँद कर अपना रास्ता लिया करो (झाँसी–वृं0 वर्मा, 52)।

(2) कोई सम्पर्क न रखना; चल देना। प्र0 मैं वेश्या नहीं कि तुम्हें नोच-खसोट कर अपना रास्ता लूँ (गबन–प्रेमचंद, 48)।

(3) किसी को कोई वस्तु न देना हो या उसका कोई काम न करना हो तो उपेक्षापूर्वक 'अपना रास्ता देखो' कह कर टालते हैं। प्र0 मुझसे कुछ भी नहीं मिलने वाला है। तुम अपना रास्ता देखो।

अपना रास्ता लेना—दे0 अपना रास्ता देखना।

अपना लेना—दे0 अपना करना।

अपना समझना—आत्मीय समझना। प्र0 अपनौ जानि संदेस ब्याज करि, ब्रज जन मिलन पठायौ (सू0 सा0–सूर, 4769)।

अपना हाड़-मांस होना—वे जिनका सम्बन्ध अपने रक्त मांस से हो, सगोत्री। प्र0 किसनू मेरा अपना ही हाड़-मांस है, उसके लिए मैं सब कुछ करने को तैयार हूँ।

अपना हाथ जगन्नाथ होना—(1) अपना हाथ पवित्र होना।

(2) स्वतंत्र व्यक्ति, जिसके काम में कोई हस्तक्षेप न करे।

अपना हाथ तक न सूझना—बहुत अँधेरा होना। प्र0 बरपि धूरि कीन्हेसि अँधियारा। सूझ न आपन हाथ पसारा (राम0 (उ0)—तुलसी, 919)।

अपना ही खोटा होना, -पैसा खोटा होना, -रुपया खोटा होना,-सिक्का खोटा होना, सोना खोटा होना—अपने ही व्यक्ति या वस्तु में ऐब होना। प्र0 माईजान, कहें क्या, जब अपना ही सोना खोटा हो तो परखवइया का क्या कुसूर? (राधा0 ग्रंथा0—राधा0 दास, 719)।

अपना ही दाँव सूझना—अपनी ही जीत दिखाई देना। प्र0 तुम्हें तो अपना ही दाँव सूझता है पर जरा सारी स्थिति पर ठीक से गौर तो करो।

अपना ही पैसा खोटा होना—दे0 अपना ही खोटा होना।

अपना ही रुपया खोटा होना—दे0 अपना ही खोटा होना।

अपना ही सिक्का खोटा होना—दे0 अपना ही खोटा होना।

अपना ही सोना खोटा होना—दे0 अपना ही खोटा होना।

अपना-अपना करना—सब यश-गौरव का भागी स्वयं बनना, सब कुछ

हमारा ही है ऐसी ध्वनि होना। प्र0 हर बात में अपना-अपना करने की उनकी सदा की आदत है।

अपना-अपना चर्खा ओटना—अपनी-अपनी बात किये जाना। प्र0 सब अपना-अपना चर्खा ओटने लगती हैं (मैला0—रेणु, 71)।

अपना-अपना राग अलापना—दे0 अपना गीत गाना।

अपना-पराया, -बेगाना—शत्रु-मित्र। प्र0 अपने-पराये सभी जब मुंह मोड़ लें तो फिर क्या किया जाय।

अपना-पराया करना—भेद-भाव रखना। प्र0 बड़ी भाभी बहुत अपना-पराया करती हैं। अपने लड़कों को चुपके से मिठाई मगाकर खिला देती हैं, हमारी बात नहीं पूछतीं।

अपना-बेगाना—दे0 अपना-पराया।

अपना-सा मुंह लेकर चले जाना, -रह जाना, -लौट जाना—खिसियाकर चले जाना, लज्जित होना। प्र0 जब इन्द्राणी ने इन्द्र से यों कह सुनाया तब वह अपना-सा मुंह ले उलट नारद जी के पास आया (प्रेम0 सा0-ल0 ला0; 222); मित्रवृन्द सुबह शाम हाजिरी देने आते और अपना-सा मुंह लेकर लौट जाते (मान0 —प्रेमचंद), 56)।

अपना-सा मुंह लेकर रह जाना—दे0 अपना-सा मुंह लेकर चले जाना।

अपना-सा मुंह लेकर लौट जाना—दे0 अपना-सा मुंह लेकर चले जाना।

अपनी आंख से देखना—अपने दृष्टिकोण या विचार के अनुसार स्थिति को देखना। प्र0 हमें अपने देश को अपनी आँखों से देखना है (अशोक0-ह0 प्र0 द्वि0; 162)।

अपनी इज्जत अपने हाथ होना, -पगड़ी अपने हाथ होना, -बात अपने हाथ होना—अपनी इज्जत को बनाना या बिगाड़ना; अपने वश में होना। प्र0 मैं कहता हूँ अपनी इज्जत अपने हाथ में होती है (अमृत0—नागर, 585)।

अपनी ऐसी-तैसी में जाना—तुम्हारा जो जी आवे करो, मुझसे कोई मतलब नहीं। प्र0 तो जाओ अपनी ऐसी-तैसी में (लाल0—जी0, 17)।

अपनी ओर—अपने पक्ष या समर्थन में। प्र0 मँझले भैया को अपनी ओर किये बिना काम नहीं चलेगा।

अपनी ओर खींचना—अपनी ओर आकर्षित करना। प्र0 उस रूपसी ने मुझे ऐसा अपनी ओर खींचा कि मैं अपने पर काबू न रख सका।

अपनी ओर निहारना, -तरफ खयाल करना—अपनी स्थिति का खयाल रखना। प्र0 दूसरों की आलोचना करने से पहले अपनी ओर निहार लेना अधिक उचित होता है।

अपनी ओर से निबाहना—अपना करणीय किये जाना। प्र0 आखिर तुम ही अपनी ओर से कहाँ तक निबाहते रहोगे?

अपनी कब्र आप खोदना—स्वयं अपने अनिष्ट का काम करना। प्र0 वह तो अपनी कब्र आप ही खोदने पर तुल गया है।

अपनी खचाना—दूसरे के तर्कों की अवहेलना करके अपनी ही बात कहे जाना। प्र0 सूरदास प्रभु अपनी खचाई रही निगमन जीति।

अपनी खाट के नीचे झाँकना, -देखना—अपना दोष देखना। प्र0 पहले अपनी खटिया के नीचे झाँक लो, तब दूसरों से बोलो (झूठा0 (2) -यशपाल, 342)।

अपनी खाट के नीचे देखना—दे0 अपनी खाट के नीचे झांकना।

अपनी खाल में मस्त रहना—अपनी स्थिति में खुश रहना। प्र0 तुम अपनी खाल में मस्त रहो, तुम्हें क्या।

अपनी खिचड़ी अलग पकाना, -डेढ़ ईंट की मसजिद अलग बनाना, -ढाई चावल की अलग चुराना, -छौंकना, -ढाई चावल की खिचड़ी अलग चढ़ाना, -पकाना, -बनाना, -तीन छटाँक की पकाना—(1) अपने को सबसे अलग रखना, सबसे अलग राय देना। प्र0 सब गुरुजन को बुरो बतावै, अपनी खिचड़ी अलग पकावै (भा0 ग्रं0 (2) —भारतेन्दु, 810)।

(2) चौका-चूल्हा अलग कर लेना। प्र0 उसका विचार था कि यदि बहुत कुछ सहने और तरह देने पर भी परिवार के साथ निर्वाह न हो सके, तो आये-दिन के कलह से जीवन को नष्ट करने की अपेक्षा यही उत्तम है कि अपनी खिचड़ी अलग पकाई जाय (मान0 (7) —प्रेमचंद, 143)।

अपनी खुशी से जीना—अपने सुख में मस्त रहना, अपनी इच्छानुसार जीवन-यापन करना। प्र0 वह भाग्यवान है, अपनी खुशी से जीता है, हमारी तरह बंधन में नहीं है।

अपनी खुदी को मिटाना—अपने अस्तित्व-व्यक्तित्व को ही नष्ट कर देना। प्र0 इस तरह अपनी खुदी को मिटाकर जीने में जो सुख है, उसे तुम क्या जानो।

अपनी गरज बावली होना—अपना स्वार्थ सिद्ध करने में व्यक्ति भले-बुरे उचित-अनुचित का विवेक खो बैठता है। प्र0 अपनी गरज बावली होती सरकार, नहीं तो इतनी रात को आपको न तंग करता।

अपनी गली के शेर होना, में कुत्ते का भी शेर होना, अपने गाँव में कुत्ते का भी शेर होना, अपने घर में कुत्ते का भी शेर होना—अपने क्षेत्र में सशक्त होना। प्र0 तुम लोग अपनी गली के शेर हो यहाँ चाहे जो कह लो परन्तु अदालत में तुम्हारी गीदड़ भभकी नहीं चल सकती (परीक्षा0 —श्री0 दास, 91); होरी ने समझा, शायद फिर इसके सिर भूत सवार हुआ तभी ललकार रहा है।×× अपने गाँव में कुत्ता भी शेर हो जाता है, लेकिन आने दो (गोदान—प्रेमचंद, 136)।

अपनी गली में कुत्ते का भी शेर होना—दे0 अपनी गली के शेर होना।

अपनी गाँठ का (से), -गिरह का (से), -जेब का (से)—अपने पास का। प्र0 धन संग्रह करने का कार्य तो इन्हीं मोटे-मोटे लोगों के हाथ में होता है और ये अजगर स्वयं अपनी जेब से नाम-मात्र को देते हैं (विप0—प्रेमी, 21)।

अपनी गाँठना—अपना मतलब निकालना। प्र0 वह और कुछ नहीं जानता। वह तो अपनी गाँठेगा ही।

अपनी गाना—दे0 अपना गीत गाना।

अपनी गिरह का—दे0 अपनी गाँठ का।

अपनी गिरह का कुछ न जाना—अपना कोई नुकसान या खर्च न होना। प्र0 मेरी अपनी गिरह का क्या जाता है जो जबरदस्ती ना करके उनका कोप-भाजन बनूँ।

अपनी गुड़िया सँवार देना—वित्त अनुसार बेटी का विवाह कर देना।

अपनी गौं का, अपने मतलब का, -यार—मतलबी, स्वार्थी। प्र0 दुनिया में सब अपने मतलब के हैं, कोई किसी की नहीं सोचता।

अपनी छाती पर हाथ रखकर कहना—ईमान और विश्वास के साथ कहना। प्र0 अपनी छाती पर हाथ रखकर कहो कि उस समय तुम्हारे मन में मैल नहीं था।

अपनी जमाना—अपनी बात कहना। प्र0 रामेश्वर बाबू किसी और की सुनते ही नहीं, बस अपनी जमाते जाते हैं।

अपनी जाँघ उघारना—स्वयं बेहयाई का काम करना। प्र0 करिये कहा, लाज मरियै जब अपनी जाँघ उघारी (सू0 सा0—सूर 173); महाराज ! लाज आपुही निज जाँघै उघारे (विनय0—तुलसी, 245)।

अपनी जाँघ का सहारा होना—अपनी शक्ति का सहारा होना। प्र0 वह कमाई कर कभी हारा नहीं। जाँघ का अपनी सहारा है जिसे (चुभते0—हरिऔध, 38)।

अपनी जान और किसी और की जान एक करना—जान लेने-देने पर उतारू होना। प्र0 आज अपनी जान और इसकी जान एक करूँगा (आजाद0—प्रेमचंद, 518)।

अपनी जान सबको प्यारी होना—अपनी जान का मोह सबको होना।

अपनी जिन्दगी का नक्शा आप बनाना—आत्म-निर्भर होना, अपनी इच्छानुसार जिन्दगी बिताना। प्र0 आगे कुछ नौकरी वगैरा तलाश करके अपनी जिन्दगी का नक्शा आप बनाऊँगी (अमृत0—नागर, 550)।

अपनी जेब का—दे0 अपनी गाँठ का।

अपनी डफली अपना राग होना—सबका अपनी-अपनी बात कहना। प्र0 हम कुल हिन्दू जाति को एक रंग में रँगना चाहते हैं मगर जाति-जाति के अपनी-अपनी डफली और अपने-अपने राग ने रही-सही एकता को धता बता दिया है (चुभते0 (भू0) —हरिऔध, 5)।

अपनी डेढ़ ईंट की मसजिद अलग बनाना—दे0 अपनी खिचड़ी अलग पकाना।

अपनी ढाई चावल की अलग चुराना—दे0 अपनी खिचड़ी अलग पकाना।

अपनी ढाई चावल की अलग झोंकना—दे0 अपनी खिचड़ी अलग पकाना।

अपनी ढाई चावल की खिचड़ी अलग चढ़ाना—दे0 अपनी खिचड़ी अलग पकाना।

अपनी ढाई चावल की खिचड़ी अलग पकाना—दे0 अपनी खिचड़ी अलग पकाना।

अपनी ढाई चावल की खिचड़ी अलग बनाना—दे0 अपनी खिचड़ी अलग पकाना।

अपनी ढेंढ़र न देखना दूसरे की फूली देखना; -फूली न देखना, दूसरे का माँड़ा देखना—अपने बड़े दोष की उपेक्षा करना और दूसरे के सामान्य दोष की चर्चा करना।

अपनी तरफ खयाल करना—दे0 अपनी ओर निहारना।

अपनी तीन छटाँक की पकाना—दे0 अपनी खिचड़ी अलग पकाना।

अपनी नाक कटाकर दूसरों का असगुन मनाना—अपना नुकसान करके या मर्यादा नष्ट करके भी दूसरे का नुकसान करना। प्र0 न जाने लोगों को अपनी नाक कटा कर औरों की बदशगुनी करने में क्या मजा आता है (परीक्षा0—श्री0 दास, 21)।

अपनी नींद सोना, अपनी नींद सोना अपनी नींद उठना, अपनी नींद सोना अपनी भूख खाना—(1) अपनी इच्छानुसार काम करना। प्र0 जयदयाल अपनी नींद सोता है, अपनी नींद उठता है।
(2) निश्चिन्त रहना। प्र0 देखिए प्रयोग (1)।

अपनी नींद सोना अपनी नींद उठना—दे0 अपनी नींद सोना।

अपनी नींद सोना अपनी भूख खाना—दे0 अपनी नींद सोना।

अपनी नौबत बजाना—आनन्द मनाना। प्र0 कबीर नौबत आपणीं, दिन दस लेहु बजाइ (कबीर ग्रंथा0—कबीर, 20)।

अपनी पगड़ी अपने हाथ होना—दे0 अपनी इज्जत अपने हाथ होना।

अपनी पूँछ का पीछा करनेवाला कुत्ता—अपने अतिरिक्त और किसी से मतलब न रखनेवाला। प्र0 वह ठहरा अपनी पूँछ का पीछा करनेवाला कुत्ता—उससे तुम क्या उम्मीद करते हो ?

अपनी फूली न देखना—अपना ऐब न देखना। प्र0 तुम जमाने का ऐब देखते फिरते हो, अपनी फूली क्यों नहीं देखते।

अपनी फूली न देखकर दूसरे का माँड़ा देखना—दे0 अपनी ढेंढ़र न देखना दूसरे की फूली देखना।

अपनी बला और के सिर डालना—अपना झंझट का काम दूसरे के ऊपर डाल देना।

अपनी बात अपने हाथ होना—दे0 अपनी इज्जत अपने हाथ होना।

अपनी बात का एक, -धनी, -पक्का—वादा का पक्का। प्र0 शीतला-प्रसाद अपनी बात के एक ही हैं। उनकी ओर से शुबहा नहीं।

अपनी बात का धनी—दे0 अपनी बात का एक।

अपनी बात का पक्का—दे0 अपनी बात का एक।

अपनी बात पर आना—जिद पकड़ना। प्र0 दीदी जब अपनी बात पर आ जाती हैं तो फिर उन्हें समझाना मुश्किल होता है।

अपनी बात रखना—अपनी कही हुई बात या प्रतिज्ञा को पूरा करना। प्र0 मैंने अपनी बात रख दी। मुझसे और क्या चाहते हो।

अपनी मौत मरना—(1) स्वयं अपनी करनी से मरना। प्र0 सोना ले आने का गैरकानूनी काम करने को मैंने पहले ही मना किया पर उसने सुना ही नहीं। वह अपनी मौत मरा है।
(2) स्वाभाविक मृत्यु होना। प्र0 दादाजी अपनी मौत मरे। उसके लिए और कोई जिम्मेदार नहीं।

अपनी राह चलना—अपनी इच्छानुसार करना। प्र0 वैसे सब हैं आजाद चलने को अपनी-अपनी राह (बुद्ध0—बच्चन, 76)।

अपनी राह लगना—अपने काम में लग जाना, कोई सम्पर्क न रखना। प्र0 'पंख आते ही पट्ठे चेले, पर झाड़कर, गुरु को दक्षिणा में अँगूठा दिखा, अपनी राह लगते हैं (कला0—उग्र, 21)।

अपनी लपेट में लेना—अपने प्रभाव में लेना। प्र0 गाँव में एक बार प्लेग फैली तो उसके माँ-बाप को भी अपनी लपेट में ले गई (एक म्यान0—नानक; 9)।

अपनी हराई-भराई न भूलना—अपनी तबाही याद रखना। प्र0 अपनी हराई-भराई क्या सहज ही भूली जा सकती है?

अपनी ही ओटे जाना, -ओसाना, -ही हाँकना—अपनी ही बात कहे जाना। प्र0 बात समझे, न बात की जड़, अपनी ही ओटे जाती है (मा0—कौशिक, 87)।

अपनी ही ओसाना—दे0 अपनी ही ओटे जाना।

अपनी ही कहे जाना, -ही गाना, -सी कहे जाना—अपने अनुकूल बात कहे जाना, जो स्वयं मानते हों, उसे ही कहे जाना। प्र0 अच्छा, सुनने दीजिएगा या अपनी ही गाये जाइएगा? (गोदान—प्रेमचंद, 164)।

अपनी ही गाना—दे0 अपनी ही कहे जाना।

अपनी ही चलाना, -बात ऊपर रखना, -चलाना—अपनी कही बात ही मानी जाय, ऐसा रुख रखना। प्र0 पर वह अपनी ही चलाती है (परख—जैनेन्द्र, 55)।

अपनी ही पड़ी रहना, अपनी-अपनी देखना, -पड़ी रहना—अपने ही लाभ की चिन्ता में रहना। प्र0 उसे तो रात-दिन अपनी ही पड़ी रहती है।

अपनी ही बात ऊपर रखना—दे0 अपनी ही चलाना।

अपनी ही बात चलाना—दे0 अपनी ही चलाना।

अपनी ही बिल्ली का खौंखियाना—अपने ही व्यक्ति का गुस्सा दिखलाना। प्र0 हमारे सामने अकड़ेगी? हमारी बिल्ली हमीं को खौंखियाए। (झूठा0 (2) —यशपाल, 484)।

अपनी ही हाँकना—दे0 अपनी ओटे जाना।

अपनी-अपनी करना—अपने ही स्वार्थ में लीन रहना। प्र0 कहा कृपिन की माया गनियै, करत फिरत अपनी-अपनी (ब्र0 सू0 को0)।

अपनी-अपनी गाना—दे0 अपना गीत गाना।

अपनी-अपनी जगह—अपनी-अपनी स्थिति में या अवसर पर। प्र0 अपनी-अपनी जगह पर तुम दोनों ही ठीक हो।

अपनी-अपनी तान उड़ाना—अपनी-अपनी कहना, अलग-अलग सबकी कल्पनाएँ करना।

अपनी-अपनी देखना—दे0 अपनी ही पड़ी रहना।

अपनी-अपनी पड़ी रहना—दे0 अपनी ही पड़ी रहना।

अपनी-अपनी रोटी चुपड़ना—अपना लाभ करना। प्र0 भाई, वहाँ तो सभी अपनी-अपनी रोटी चुपड़ने में लगे हैं, मेरी कौन सुनता है।

अपनी-परायी ठोकरें खाना—इधर-उधर मारे-मारे फिरना। प्र0 इतने दिनों तक किया क्या, अपनी-परायी ठोकरें खाता रहा।

अपनी बीती—दे0 आप-बीती।

अपनीवाली पर आना—अपनी जिद के अनुसार ही काम करना। प्र0 मैं जानता था। वे अपनीवाली पर आकर ही रहेंगे।

अपनी-सी—अपनी इच्छानुसार। प्र0 सिद्धि मंत्र कानों में अपनी-सी करने को फूंकेगा (मर्म0—हरिऔध, 132)।

अपनी-सी कर गुजरना या करना—यथासाध्य प्रयत्न करना। प्र0 अपनी-सी मैं बहुतै कीन्हीं रहति न मेरी आन (ब्र0 सू0 को0)।

अपनी-सी कहे जाना—दे0 अपनी ही कहे जाना।

अपने आगे आना—स्वयं भोग चुकना। प्र0 मेरे अपने आगे तो आ चुका है, मैं सब जानता हूँ।

अपने आगे किसी को कुछ न गिनना, -बदना, -समझना—अपने को ही सबसे बुद्धिमान समझना और सबको तुच्छ समझना। प्र0 बहुत रोस चाहै पिय हना। आगें घालि न काहूँ गना (पद0—जायसी, 40/2); हमारे बड़े भैया की बहू भी ऐसी ही आयी थी। किसी को अपने सामने बदती ही नहीं थी (सारा0—यादव, 33)।

अपने आगे किसी को कुछ न बदना—दे0 अपने आगे किसी को कुछ न गिनना।

अपने आगे किसी को कुछ न समझना—दे0 अपने आगे किसी को कुछ न गिनना।

अपने आप—स्वयं, बिना किसी प्रयास के। प्र0 मुझे तो अपने आप चिट्ठी मिल गयी, कोई कोशिश नहीं करनी पड़ी।

अपने आप को आसमान पर खींचना—अपने आपको बहुत बड़ा समझना। प्र0 वह तो अपने आप को आसमान पर खींचता है, उससे क्या बातें करूँ।

अपने आपको दूर जानना, -मानना—अपने को दूर तक ही बात सोचनेवाला गुणी समझना। प्र0 हिटलर अपने आप को बड़ा दूर जानता था पर सब हेकड़ी भूल गयी।

अपने आपको दूर मानना—दे0 अपने आपको दूर जानना।

अपने आपको बेच देना, -को बेच देना—किसी का पूर्ण अनुगत हो जाना, किसी के कहे अनुसार सब कुछ करना। प्र0 मैंने तो अपने आपको तुम्हारे हाथों बेच दिया है, तुम जो कहो, करूँगा।

अपने आप को भूलना—(1) किसी मनोवेग के कारण बेसुध होना। प्र0 पति-वियोग में वह तो अपने आप को भूल बैठी है।
(2) मदान्ध होना। प्र0 तीन पेग डालकर वह अपने आपको भूल बैठा है।
(3) घमण्ड में चूर होना। प्र0 कान्ता से बात करने से कोई लाभ नहीं। वह आज-कल अपने आपको भूल बैठी है।

अपने आपको लगाना, -समझना—बहुत गर्व करना। प्र0 कान्ति अपने आपको बहुत लगाती है।

अपने आपको समझना—दे0 अपने आपको लगाना।

अपने आप में—स्वयं, बिना किसी बाह्य सहायता या आडम्बर के। प्र0 यह साड़ी तो अपने आप में इतनी सुंदर है इस पर कढ़ाई की

क्या जरूरत ?

अपने आप से लड़ना—मानसिक अंतर्द्वन्द्व की स्थिति में होना । प्र0 मैंने कुछ भी नहीं देखा और एक कोने में नंगी धरती पर पड़कर अपने आपसे लड़ने लगा (सारा0 —यादव, 17) ।

अपने आपे में न रहना या न होना, -में न होना—अपने ऊपर नियंत्रण खो बैठना । प्र0 मुझे क्षमा करें डाक्टर, मैं इस समय अपने आपे में नहीं हूँ (रैनामी0—राम0 वर्मा, 68) ।

अपने ऊपर ओढ़ लेना, -ले लेना—कोई काम करने का दायित्व जबरदस्ती लेना । प्र0 हर काम अपने ऊपर ओढ़ लेने की तुम्हारी बड़ी बुरी आदत है ।

अपने ऊपर पड़ना—खुद सहना । प्र0 यह चतुराई परी मोहीं पर, मनमन अतिहिं लजानी (सूर0 सा0—सूर, 2385) ।

अपने ऊपर ले लेना—दे0 अपने ऊपर ओढ़ लेना ।

अपने काम से काम रखना—किसी के झगड़े-झमेले में न होना, किसी के लेने-देने से मतलब न रखना । प्र0 मैं अपने काम से काम रखना चाहता हूँ । अपना झमेला तुम लोग खुद निपटाओ ।

अपने काम से लगना—अपना काम करना । प्र0 जाओ, अपने काम से लगो, आजकल मम्भड़ के दिनन में मुझसे औंर मेरे रमेस से न अटकना (अमृत0 —नागर, 84) ।

अपने कायदे की—अपनी मर्यादा के अनुरूप । प्र0 मैं तो इतनी-सी बात जानता हूँ कि हर कोई को अपने कायदे की बात करनी चाहिए ।

अपने किये का इलाज न होना, -को भुगतना—अपनी करनी के अनुरूप फल पाना । प्र0 अब क्यों पछता रहे हो ? अपने किये का इलाज नहीं होता । चुपचाप भोगो ।

अपने किये को भुगतना—दे0 अपने किये का इलाज न होना ।

अपने को उँड़ेलना, -को खोलना—अपने मन की सारी बातें कह देना । प्र0 उस लम्बे से पत्र में मानो संतों ने अपने को उँडेल कर रख दिया था (नूले0—भग0 वर्मा, 371) ।

अपने को खो बैठना—(1) आत्मविस्मृत हो जाना । प्र0 मेरी कोख धन्य हुई कि मेरा बेटा देश के काम में अपने को खो बैठा (बीने0—रां0 रा0, 52) ।

(2) अपना सब कुछ गँवा देना । प्र0 वह तो स्वदेश की रक्षा के लिए अपना सब कुछ खो बैठा है ।

अपने को खोलना—दे0 अपने को उँड़ेलना ।

अपने को डुबा देना—(1) व्यक्तित्व समर्पित करना । प्र0 मैं यहाँ आयी हूँ, तुममें अपने को डुबा देने के लिए (चित्र0—भग0 वर्मा, 95) ।

(2) किसी काम में लग जाना । प्र0 समाज-सेवा के काम में उसने अपने आपको डुबा दिया है ।

(3) आत्म-विस्मृत हो जाना । प्र0 भगवद् भजन में उसने अपने को डुबा दिया है ।

अपने को तौलना—अपनी स्थिति को परखना, अपनी मानसिक स्थिति को स्वयं देखने-समझने का प्रयत्न करना । प्र0 पहले अपने को तौलो और फिर निर्णय लो । हड़बड़ाने की कोई जरूरत नहीं है ।

अपने को बहुत लभाना—बहुत गर्व करना । प्र0 कान्ह तुम बहुत लगावत अपुने को होरी-खिलार (भा0 ग्रं0 (2)—भारतेन्दु, 362) ।

अपने को बिसरा देना, -भूल जाना, -में खोये रहना, -से बाहर होना—आत्म-विस्मृत होना, किसी काम या भाव में डूब जाना । प्र0 हाय ! यह तो अपुने सों बाहर होय रही है (भा0 ग्रं0 (1) —भारतेन्दु, 431) ।

अपने को बेच देना—दे0 अपने आपको बेच देना ।

अपने को भूल जाना—दे0 अपने को बिसरा देना ।

अपने को मरना—अपने या अपने आत्मीयों के लिए चिन्तित होना या कुछ करना । प्र0 वह तो अपने को ही मरता रहता है, किसी और के लिए क्या करेगा ।

अपने को मानना, -समझना—घमण्ड होना । प्र0 वह अपने को क्या समझती है, जरा पता तो चले ।

अपने को मिटा देना, -लुटा देना—किसी काम में अपने को तबाह कर देना । प्र0 अपने को मिटा देने में मैंने कंजूसी नहीं की, खुले हाथ से दिया (शेखर0 (2) —अज्ञेय, 166) ।

अपने को लाट साहब समझना—अपने को बहुत बड़ा समझना, बहुत गर्व करना । प्र0 तुम अपने को बड़ा लाट साहब समझते हो क्या जो तुम्हारे कहने से सब कुछ हो जायेगा ?

अपने को लुटा देना—दे0 अपने को मिटा देना ।

अपने को ही खाना—अपना ही अनिष्ट करना । प्र0 उतर धाइ तब दीन्ह रिसाई, रिसि आपुहि बुधि औरहि खाई (पद0—जायसी, 818) ।

अपने को समझना—दे0 अपने को मानना ।

अपने खयाल में मस्त रहना, -रहना—केवल अपनी चिन्ता में ही रहना । प्र0 उसे दीन-दुनिया से कोई वास्ता नहीं, वह अपने खयाल में ही मस्त रहता है ।

अपने खयाल में रहना—दे0 अपने खयाल में मस्त रहना ।

अपने गरेबान में मुँह डालना—अपनी योग्यता और हैसियत का ध्यान रखना । प्र0 दूसरों को कुछ कहने से पहले अपने गरेबान में मुँह डालकर देखो ।

अपने गाँव में कुत्ते का भी शेर होना—दे0 अपनी गली के शेर होना ।

अपने घर आता बुरा न लगना—स्वयं को कुछ मिलना अच्छा लगता है ।

अपने घर का राजा होना—अपने घर में ही अधिकार होना, बाहर वालों पर जोर न चलना । प्र0 अपने घर के तुम राजा हो, सब की राजा कंस (सूर0 सा0—सूर, 2129) ।

अपने घर बैठना, -खाना—अपने पास रखना, दूसरों के ऊपर न लादना । प्र0 मुक्ति रहौ पर बैठि आपने, निर्गुन सुनि दुख पैयै (सू0 सा0—सूर, 4310) ।

अपने घर में कुत्ते का भी शेर होना—दे0 अपनी गली के शेर होना ।

अपने घर में दिया जलाकर तब मसजिद में जलाना—अपना उपकार करके तब परोपकार करना । प्र0 संसार की रीति है कि पहले अपने

घर में दिया जलाकर मस्जिद में जलाते हैं (सेवा0—प्रेमचंद, 49)।

अपने घर रखना— दे0 अपने घर बैठना।

अपने घाट उतारना—अपने अनुकूल बनाना। प्र0 रद्धूबाबू घाघ रायबहादुर को अपने घाट न उतार सके (अमृत0—नागर, 126)।

अपने चलते—अपनी शक्तिभर। प्र0 अपने चलत न आजु लगि, अनभल काहुक कीन्ह (राम0 (अ)—तुलसी, 391)।

अपने टिक्के लगाना—अपने ही मतलब की बात करना। प्र0 उसे हर समय अपने टिक्के लगाने की ही पड़ी रहती है।

अपने ढग का—विचित्र, असामान्य। प्र0 वह महल अपने ढंग का है।

अपने तई खींचना—अपना लाभ चाहना। प्र0 वह हमेशा अपने तई खींचना चाहता है, यह उचित नहीं।

अपने तक रखना—किसी से न कहना। प्र0 तुम अभी चंद दिन यह बात अपने तक ही रक्खो (पैंतरे—अश्क, 101)।

अपने दही को खट्टा न कहना—अपनी चीज को बुरा न कहना।

अपने दिनों को रोना—दुःखमय जीवन बिताना। प्र0 इतनी निर्दयता और मुझ जैसे अभागे पर, जो आप ही अपने दिनों को रो रहा है (रंग0—प्रेमचंद, 271)।

अपने दिल में लेना—सुनकर खामोश रहना। प्र0 बड़े चाचाजी क्या करते, उनकी बातों को अपने दिल में लेकर रह गये।

अपने दिल से पूछना—स्वयं विचार करके देखना।

अपने पक्ष में उड़ा ले जाना—अपने पक्ष में कर लेना। प्र0 ××अपनी हेलीकाप्टर की सूझ पर हाजी जन सहानुभूति को अपने पक्ष में उड़ा ले जायेंगे (अमृत0—नागर, 603)।

अपने पर आना—(1) अपने पूर्व स्वभाव या व्यवहार के अनुरूप आचरण करना। प्र0 बस, तुम आ गये न अपने पर। मैं पहले ही जानता था।

(2) अपने ऊपर विपत्ति पड़ना। प्र0 सब गांधी जी की जै बोलते हैं, पर अपने पर आती है तो कान पर जूँ नहीं रेंगती (बौने0—रां0 रा0, 23)।

अपने परों आप उड़ना—स्वयं किसी कार्य को करने की चेष्टा करना।

अपने पीछे—अपनी मृत्यु के उपरांत। प्र0 मैं तो अपने पीछे की सोच रहा हूँ। ये लड़के कैसे-कैसे जिन्दगी चलायेंगे।

अपने पैर पर (में) कुल्हाड़ी मारना, -पत्थर मारना, -हाथों अपना गला घोंटना, -अपनी इज्जत की कब्र खोदना, -अपने पैर में कुल्हाड़ी मारना, -मुँह में थप्पड़ मारना, -लिए गड्ढा खोदना, -कब्र खोदना, -कुआँ खोदना, -कुल्हाड़ी मारना, -पैर पर कुल्हाड़ी मारना, -पत्थर मारना—स्वयं अपना अहित करना। प्र0 आप अकारज आपनो, करत कुबुध के साथ पांय कुल्हाड़ी देत है, मूरख अपने हाथ (वृ0 स0—वृन्द, 102); हाय सखी इन हाथन सों अपने पग आप कुठार में दीनो (मा0 ग्रं0 (2)—भारतेन्दु, 171); ये लोग अपने पैरों पर कुल्हाड़ी मार रहे हैं (टेढ़े0—भग0 वर्मा, 51)।

अपने पैर पर पत्थर मारना—दे0 अपने पैर पर कुल्हाड़ी मारना।

अपने पैरों पर (से) खड़े होना—(1) अपनी जीविका स्वयं अर्जित करना। प्र0 मैं इन्हें दिखा दूँगी कि मैं अपने पैरों पर खड़ी हो सकती हूँ (रंग0 (1)—प्रेमचंद 52)।

(2) बिना किसी आश्रय या सहारे के अपना काम चलाने में समर्थ होना। प्र0 उर्दू पत्रों में बहुत कम ऐसे हैं जो अपने पाँवों से खड़े हो सकते हों (गु0 नि0 बा0 मु0 गु0, 310); यह द्वन्द्व तब तक चलता रहा—××—जब तक पराड़कर जी की कृपा से रचनाकार की हैसियत से मैं अपने पैरों पर खड़ा नहीं हो गया (अपनी0 उग्र, 109)।

अपने फैज को पहुँचना—अपने कर्म के अनुरूप फल पाना। प्र0 तुम कुछ भी कहो या करो, तुम्हें अपने फैज को पहुँचना ही होगा।

अपने बछड़े के दाँत जानना—अपने परिचित व्यक्ति को अच्छी तरह जानना।

अपने बल पर खड़ होना— किसी से सहायता न लेना। प्र0 उसकी इच्छा है कि वह जल्दी ही अपने बल पर खड़ा हो जाये।

अपने बाप से पैदा होना—कुछ भी क्षमता, सामर्थ्य या शक्ति होना, खरा होना। प्र0 अपने बाप से पैदा हूँ तो तुम्हारा मटिया-मेट कर दूँगा (जिन्दगी—निर्गुण, 60)।

अपने बावले को समझना—अपने मन को सान्त्वना देना। प्र0 तुम्हारी बातें तो समझ में आ रही हैं पर अपने बावले को कैसे समझाऊँ?

अपने बीच पाना—अपने साथ में पाना। प्र0 निरालाजी को अपने बीच पा हम धन्य हो गये।

अपने भाग्य का आप फैसला करना—अपने भविष्य के बारे में स्वयं निर्णय करना। प्र0 आप लोग छोड़ दीजिए, मैं खुद अपने भाग्य का फैसला करूँगा।

अपने भावें—अपने अनुसार। प्र0 मैंने तो अपने भावें कोई कसर नहीं उठा रखी।

अपने मतलब का—दे0 अपनी गौं का।

अपने मतलब का यार—दे0 अपनी गौं का।

अपने मतलब की—अपने हित या स्वार्थ की। प्र0 कहते हैं कान खराब है पर अपने मतलब की सब बात सुनाई पड़ती है।

अपने मन का—मनमानी करनेवाला। प्र0 आपने माना न, खोया मान अब मानते क्यों जब कि अपने मन के हैं (बोल0—हरिऔध, 208)।

अपने मरे बिना स्वर्ग न मिलना—स्वयं कोई काम किये बिना उसका फल न मिलना। प्र0 यही तो बात है, बिना अपने मरे सुरग (स्वर्ग) देखने को नहीं मिलता (मा—कौशिक, 352)।

अपने माथे ओढ़ लेना—किसी दायित्व को स्वयं ले लेना। प्र0 तुम हर काम को अपने माथे क्यों ओढ़ लेते हो?

अपने मुंह अपना बखान करना, -अपनी करनी बखानना, -मियाँ मिट्ठू बनना—स्वय अपनी तारीफ करना। प्र0 अपने मुंह तुम आपनि करनी। बार अनेक भाँति बहु बरनी (राम0 (बाल) —तुलसी, 280); बजरंगी बहुत बढ़कर बातें न करो, अपने मुंह मियाँ मिट्ठू

बनने से कुछ नहीं होता (रंग0 (1) –प्रेमचंद, 32) ; जो रहे मनमानियों में मस्त वे, क्यों न अपने मुंह मियाँ मिट्ठू बनें (बोल0–हरिऔध, 85) ।

अपने मुँह अपनी करनी बखानना—दे0 अपने मुंह अपना बखान करना ।

अपने मुँह धन्नासेठ बनना—स्वयं अपनी ईमानदारी या धन दौलत का बखान करना । प्र0 बस करो, बहुत अपने मुंह धन्नासेठ बन लिये ।

अपने मुँह मियाँ मिट्ठू बनना—दे0 अपने मुंह अपना बखान करना ।

अपने मुँह में आप थप्पड़ मारना—ऐसा काम करना जिससे अपना ही अहित या बदनामी हो । प्र0 चंदा कैसे देता, अपने मुंह में आप ही थप्पड़ मारता (रंग0 (2) –प्रेमचंद, 144) ।

अपने मुँह से (कहना, -माँगना)—स्वयं । प्र0 आह ! तू फिर अपने मुंह से क्यों कुछ नहीं माँगता (मा0 (5) –प्रेमचंद, 230) ।

अपने में खपा लेना—अपने साथ किसी प्रकार मिला लेना । अब तो शांता बहू बनकर इस घर में आ गयी है, हमें उसे अपने में खपाना ही होगा ।

अपने में खोये रहना—दे0 अपने को बिसरा देना ।

अपने में न होना—दे0 अपने आपे में न रहना ।

अपने रंग—अपनी इच्छानुसार, अपने में ही मस्त । प्र0 प्रभु पौढ़े पालनैं अकेले, हरषि-हरषि अपनैं रंग खेलत (सू0 सा0—सूर, 681) ।

अपने रंग के राजा—अपनी इच्छानुसार कार्य करनेवाला । प्र0 अपने-अपने रंग के राजा, मानत नांहीं कोई (कबीर ग्रंथा0—कबीर, 195) ।

अपने रंग पर उतार लेना—अपने अनुकूल बना लेना । प्र0 धीरे-धीरे मैं उसे भी अपने रंग पर उतार लूँगी ।

अपने रंग विहरना, -में भूले रहना, -मस्त होना, -रँगे होना—अपने सुख में सुखी होना । प्र0 अपनैं राँगें सब कोइ राता, मधुकर बाँस लेहि मैमंता (कबीर ग्रंथा0—कबीर, 235) ; तहँ सुख मानि, बिसारि नाथ-पद, अपनैं रंग बिहरतौं (सूर0 सा0–सूर, 203) ; रंग में बिगड़ा कम न, बेसमझी मगर रंग में अपने सदा भूली रही (चुभते0-हरिऔध, 57) ।

अपने रंग में भूले रहना—दे0 अपने रंग विहरना ।

अपने रंग में मस्त होना—दे0 अपने रंग विहरना ।

अपने रंग में रँगे होना—दे0 अपने रंग विहरना ।

अपने राम—स्वयं । प्र0 अपने राम तो वहाँ हरगिज नहीं जायेंगे ।

अपने रास्ते करना—अपने तरीके से करना । प्र0 हम वह काम अपने रास्ते करेंगे, लेकिन फिर अखबार वालों का डर भी तो है (बाँने0 –रां0 रा0; 65) ।

अपने रास्ते चलना—(1) अपने तरीके से आगे बढ़ना । प्र0 दुनिया अपने रास्ते चली गयी, अशोक पीछे छूट गया (अशोक0–ह0 प्र0 द्वि0; 13) ।

(2) किसी दूसरे के काम में विघ्न न डालना । प्र0 तुम अपने रास्ते चलो, उससे क्यों उलझते हो ?

अपने रास्ते में काँटे बोना,-विष बोना, -हक में काँटे बोना,-विष बोना—स्वयं अपना अहित करना । प्र0 पिता का विरोध करके तुम अपने रास्ते में काँटे बो रहे हो ।

अपने रास्ते में विष बोना—दे0 अपने रास्ते के काँटे बोना ।

अपने रास्ते लगना—चले जाना, जो इच्छा हो करना । प्र0 खप्पर लिये बार मा माँगौं, भुगुति देइ लै मारग लागौं (पद0—जायसी, 23/3) ।

अपने रूप में आना—अपने वास्तविक रूप में प्रकट होना । प्र0 बस भोला का इतना कहना था कि मैया अपने रूप में आ गये ।

अपने शीशे में उतारना—अपने अनुकूल बनाना । प्र0 सबसे पहले लव-सूल काले खाँ खलीफा को अपने शीशे में उतारेगा (सात0–नागर, 62) ।

अपने सामने किसी को न गिनना—अपनी तुलना में सबको तुच्छ समझना। प्र0 मुख्तार अपने सामने किसी को गिनते ही नहीं (मान0 (8) –प्रेमचंद, 207) ।

अपने सिर ओढ़ना,-लेना—अपने ऊपर दायित्व लेना । प्र0 मत उपजस आनौ सिर अपने, कठिन मदन की पीर (सू0 सा0–सूर, 4563) ; वह भाग न जाता तो क्या करता, तीन महीने का गर्भ वह अपने सिर ओढ़कर ब्याह करता ? (कंकाल–प्रसाद, 54) ।

अपने सिर पड़ना—अपने ऊपर दायित्व आना, स्वयं भुगतना पड़ना । प्र0 सुनौ सखी अति नहीं कीजियै, मूँड़ परै अपनैं ही (सू0 सा0—सूर, 2668) ; लड़के जब अपने माँ-बाप के सामने भी जिन्दगी का थोड़ा-सा सुख न भोगेंगे, तो फिर जब अपने सिर पड़ गयी तो क्या भोगेंगे (गोदान—प्रेमचंद, 27) ।

अपने सिर पर मारना—खुद लेकर जो मर्जी आये सो करना । प्र0 यह लै देह मारु सिर अपनै, जासौं कहत कंत तुम मेरी (सू0 सा0–सूर, 2425) ।

अपने सिर लना—दे0 अपने सिर ओढ़ना ।

अपने सिर-पड़ी—जो अपने को भोगना पड़े । प्र0 अपने सिर पड़ी आप ही निबेड़ूंगी, अच्छा दोस्तों, अलविदा (सात0–नागर, 152) ।

अपने सुख सुखी,-अपने दुख दुखी रहना—दुनिया में अपने सिवा और किसी की कोई चिन्ता न करना, अपने में ही सीमित होना ।

अपने से—अपनी शक्ति एवं सामर्थ्य के अनुसार । प्र0 अपने से जितना हुआ उन्होंने कर दिया । अब बेटा न खुश हो तो वह क्या करें ।

अपने से बाहर होना—दे0 अपने को बिसरा देना ।

अपने हक में काँटे बोना—दे0 अपने रास्ते में काँटे बोना ।

अपने हक में विष बोना—दे0 अपने रास्ते में काँटे बोना ।

अपने हलवे-माँडे से मतलब होना—अपने लाभ की चिन्ता होना । प्र0 मगर तुम नमक-हरामों को अपने हलवे-माँडे से मतलब, चाहे कोई मरे या जिये (मान0 (4) —प्रेमचंद, 267) ।

अपने हाथ की चीज, -बात—अपने अधिकार या सामर्थ्य के भीतर आने वाला काम या बात । प्र0 यह तो अपने हाथ की बात है, जैसे कहिएगा कर दूंगा ।

अपने हाथ की बात—दे0 अपने हाथ की चीज ।

अपने हाथ (हाथों) में होना—अपने वश में होना । प्र0 कित आवन पुनि अपने हाथा, कित मिलिकै खेलब एक साथा (पद0—जायसी, 4/2) ।

अपने हाथों—स्वयं । प्र0 ते विप्रन्ह सन आपु पुजावहिं उभय लोक निज हाथ नसावहिं (राम0 (उ) —तुलसी, 1129) ।

अपने हाथों अपना गला घोंटना—दे0 अपने पैर पर कुल्हाड़ी मारना ।

अपने हाथों अपनी इज्जत की कब्र खोदना—दे0 अपने पैर पर कुल्हाड़ी मारना'।

अपने हाथों अपने पैर में कुल्हाड़ी मारना—दे0 अपने पैर पर कुल्हाड़ी मारना ।

अपने हाथों अपने मुँह में थप्पड़ मारना—दे0 अपने पैर पर कुल्हाड़ी मारना ।

अपने हाथों अपने लिए गड्ढा खोदना—दे0 अपने पैर पर कुल्हाड़ी मारना ।

अपने हाथों कब्र खोदना—दे0 अपने पैर पर कुल्हाड़ी मारना ।

अपने हाथों कुआँ खोदकर पानी पीना—केवल अपना ही सहारा होना । प्र0 मैंने तो सारी जिन्दगी अपने हाथों कुआँ खोदकर पानी पिया है ।

अपने हाथों कुआँ खोदना—दे0 अपने पैर पर कुल्हाड़ी मारना ।

अपने हाथों कुल्हाड़ी मारना—दे0 अपने पैर पर कुल्हाड़ी मारना ।

अपने हाथों पापड़ बेलना—जानबूझकर कष्ट उठाना या इधर-उधर का बहुत-सा काम करते फिरना । प्र0 मैंने अपने हाथों बहुत पापड़ बेले हैं ।

अपने हाथों पैर पर कुल्हाड़ी मारना—दे0 अपने पैर पर कुल्हाड़ी मारना ।

अपने हाथों पैर पर पत्थर मारना—दे0 अपने पैर पर कुल्हाड़ी मारना ।

अपने हाल पर—अपनी जैसी स्थिति है, उसी के अनुसार । प्र0 मैं अब अपने आपसे पूरी तौर पर मजबूर हूँ वशीर खाँ, और मुझे मेरे ही हाल पर छोड़ दो (सात0 —नागर, 151) ।

अपने हाल में न रहना—होश-हवास में न रहना । प्र0 कनक जी अपने हाल में नहीं हैं, मैं उनसे क्या और कैसे कहूँ ।

अपने ही घर में—अपनों के बीच, अपनों में से ही कोई एक । प्र0 जब अपने ही घर में आग लगानेवाले मौजूद हों तो जो कुछ न हो जाय वह थोड़ा है (प्रेमा0—प्रेमचंद, 206) ।

अपने ही घर में आग लगानेवाला—अपनों में से ही कोई एक अहित करनेवाला । प्र0 जब अपने ही घर में आग लगानेवाले मौजूद हों तो जो कुछ न हो जाय वह थोड़ा है (प्रेमा0—प्रेमचंद, 206) ।

अपनेपन पर आना—अपने बुरे स्वभाव का परिचय दे देना । प्र0 बस इतने में तो वह अपनेपन पर आ गया ।

अपने-पराये की सुनना—सबकी धौंस सहना । प्र0 जब ऐसा काम किया है तो अपने-पराये सब की सुनना ही पड़ेगा ।

अपने-पराये की ठोकरें खाना—सगे-सम्बन्धियों से दुर्व्यवहार पाना । प्र0 उसने सदा अपने-परायों की ठोकरें खायीं, कभी किसी का स्नेह-सद्व्यवहार न मिला ।

अपमान का घूँट पीना, -पीना—अपमान चुपचाप सह लेना, प्रतिवाद न करना । प्र0 तो क्या हम अपमान का घूँट चुपचाप पी लें (विष0—प्रेमी, 9) ।

अपमान पीना—दे0 अपमान का घूँट पीना ।

अपयश का टीका—कलंक, बदनामी । प्र0 सुनि रे मधुप मूढ़ ब्रज आयौ, लै अपजस को टीकौ (सू0 सा0—सूर, 4446) ।

अपरस उघारना—अप्रिय कहना, नीरस बात कहना । प्र0 बारंबार सरक मदिरा को अपरस रहत उघारे (सू0 सा0—सूर, 4122) ।

अपलक रहना—स्तब्ध रह जाना, पूरी तरह मोहित हो जाना । प्र0 तुम्हारी शोभा देख, फूलों की आँखें, अपलक रह गयीं (कला0—पंत, 97) ।

अपलोक चढ़ाना—दोषी ठहराना । प्र0 नेकु ढरें सुधरें सब काज, अकाज इतौ अपलोक चढ़ैयै (घन0 कवित्त—घना0, 200) ।

अपार हो जाना—(1) किसी प्रकार दिन या काम का न बीतना । प्र0 इसका हाल देखो, पाव भर आटे की रोटी सेंकना अपार हो रहा है ।

(2) अप्रिय लगना, बोझ स्वरूप लगना । प्र0 क्या मेरा चार दिन यहाँ रहना भी तुम्हें अपार हो रहा है ?

अफर जाना—(1) भारी बोझ आदि उठाने के कारण हाँफ जाना । प्र0 उतना बड़ा गट्ठर ढोकर लाते-लाते वह अफर गया ।

(2) पेट बहुत भर जाना । प्र0 आज भोजन अधिक हो गया, पेट अफर गया ।

अफर कर चलना—अकड़ दिखाना । प्र0 जब से वह कम्पनी का डायरेक्टर बना है तब से उसका अफर कर चलना देखो ।

अफलातूँ का नाती, -बच्चा—बड़ा अभिमानी, बुद्धिमान या शक्तिवान । प्र0 जी हाँ, आप तो अफलातूँ के नाती ठहरे, आपका क्या कहना ।

अफलातूँ का बच्चा—दे0 अफलातूँ का नाती ।

अफलातूनी करना—डींग हाँकना । प्र0 वह हर समय अफलातूनी क्यों करता है ?

अफवाह उड़ना या उड़ाना—अप्रामाणिक चर्चा फैल जाना या फैलाना । प्र0 बाकी विद्यार्थियों ने उसे अब भी पढ़ाई में जुटे हुए पाकर आई0 सी0 एस0 की तैयारी से लेकर अफीम खाने तक सब तरह की अफवाहें उसके विषय में उड़ाईं (शेखर0 (2) -अज्ञेय, 21) ।

अफवाह गर्म होना—जोरों में चर्चा होना । प्र0 कुछ दिनों में यह अफवाह भी गर्म हुई कि अधिकारी वर्ग में कुँवर साहब की रियासत जब्त करने का विचार किया जा रहा है (रंग0 (2) -प्रेमचंद, 240) ।

अफीम खाये होना—होशहवास में न होना, सचेत न होना । प्र0 गायकवाड़, होलकर, सिन्धिया, अवध के नवाब ये सब अफीम ही खाये बैठे हैं (झाँसी0—वृं0 वर्मा, 115) ।

अफीम देना—नुकसानदेह चीज देना, नुकसान पहुँचाना । प्र0 उसने गलती की यह ठीक है, पर क्या इसीलिए तुम भी उसे अफीम दे दोगे ?

अब का—वर्तमान युग का । प्र0 पुरानी बातें छोड़ो, अब की कहो ।

अब की—इस बार । प्र0 अब की छोड़ देता हूँ पर फिर कभी ऐसी कच्ची-पक्की बात मुंह से निकाली तो चमड़ी उधेड़कर रख दूंगा ।

अब जाकर—इतनी देर पीछे । प्र0 इस प्रसंग के लिए तीन दिनों से मैं पुस्तकें देख रहा था । अब जाकर मिला ।

अब भी—इतने पर भी । प्र0 अब भी तुम क्यों नहीं चेतते ?

अब से—भविष्य में आगे । प्र0 अब से कभी वहाँ जाने की जरूरत नहीं है ।

अब-तब करना—बहाने बनाना । प्र0 पिछले सात दिनों से वे अब-तब कर रहे हैं—मैं कितना दौड़ूं ?

अब-तब का होना, -लगना—मरणासन्न होना । प्र0 जब कभी उसका पोता अब-तब का होता तो उसके दरवाजे पर एक गंभीर हलचल मच उठती (धरती0—वि0 प्र0, 152) ।

अब-तब लगना—दे0 अब-तब का होना ।

अबरू पर बल आना—क्रुद्ध होना । प्र0 मुझे देखकर तो उनके अबरू पर बल आ जायेंगे ।

अबरू पर मल न आना—असर न होना । प्र0 उनसे क्या कहूँ ? उनके अबरू पर मैल नहीं आनेवाला है ।

अ-ब-स जानना—प्रारंभिक जानकारी होना, साधारण ज्ञान होना । प्र0 जीनियरिंग का अ-ब-स भी मैं नहीं जानता, मैं कारखाना कैसे चला सकता हूँ ?

अबे-तबे करना, -बकना, -से पेश आना—अशिष्टता से बातें करना । प्र0 वह हर समय अबे-तबे करता है, मुझे बिलकुल पसंद नहीं ।

अबे-तबे बकना—दे0 अबे-तबे करना ।

अबे-तबे से पेश आना—दे0 अबे-तबे करना ।

अब्तर करना—खराब करना, विगाड़ना । प्र0 तुम क्यों अपनी इज्जत अब्तर करते हो ?

अब्बर के जब्बर होना—कमजोर के लिए सशक्त होना । प्र0 अब्बर के हम जब्बर औ जब्बर के हम दास ।

अभ्र उठना—आसमान में बादल छा जाना । प्र0 धीरे-धीरे करके आसमान में अभ्र उठ आवे, चारों ओर अंधकार छा गया ।

अभय देना, अभयदान देना, अभय-बाँह देना, अभय-वचन देना—कोई अहित न होने का आश्वासन देना । प्र0 बरषत में गोपाल बुलाए, अभय किये दै बाँह (सू0 सा0—सूर, 1485); चरण नाइ सिरु बिनती कीन्ही, लछिमन अभय बाँह तेहि दीन्ही (राम0 (कि)—तुलसी, 778) ।

अभय-दान देना—दे0 अभय देना ।

अभय-बाँह देना—दे0 अभय देना ।

अभय-वचन देना—दे0 अभय देना ।

अभिनय करना—(1) किसी बात को इस प्रकार कहना कि असत्य होते हुए भी सत्या सी लगे । प्र0 उसने उन लोगों के सामने ऐसा अभिनय किया कि पूछो मत । (2) झूठा बहाना बनाना । प्र0 तुम्हें सचमुच गुस्सा आ रहा है या तुम अभिनय कर रहे हो ?

अभिन्न हृदय—बहुत घनिष्ठ । प्र0 परन्तु 192..... के यूनिवर्सिटी-टूर में हम दोनों अभिन्न हृदय हो गये (ज्ञान0—यशपाल, 88) ।

अभिमान गलना—घमण्ड दूर होना । प्र0 मुदित जसोदा होत गलित अभिमान ।

अभिमान चूर्ण करना, -दलना—घमण्ड नष्ट करना । प्र0 केलि-भौन बैठी प्यारी सरस सिंगार करैं, सौतिन के सब अभिमानै दरत सो (भा0 ग्रं0 (2) -भारतेन्दु, 824) ।

अभिमान दलना—दे0 अभिमान चूर्ण करना ।

अभिमान में जलना—बहुत घमण्ड करना । प्र0 सो धौ कहा जु न कियो सुजोधन, अबुध आपने मान जरै (विनय0—तुलसी, 137) ।

अभियोग लगाना—दोषारोपण करना । प्र0 आप व्यर्थ मुझ पर क्यों अभियोग लगा रहे हैं ?

अभिलाषाओं का महल बनाना—बहुत-सी बड़ी-बड़ी कल्पनाएँ करना । प्र0 उसने सारा जीवन अभिलाषाओं का महल बनाते बिताया है ।

अमचुर बना देना—बहुत मारना, मारते-मारते हड्डी-पसली चूर-चूर कर देना । प्र0 मैं उसकी अच्छी धुलाई करूँगा, अमचुर बनाकर छोड़ूँगा ।

अमचुर हो जाना, अमहर हो जाना—बहुत दुबला हो जाना । प्र0 श्रीकान्त बेचारा तो एकदम अमचुर हो गया है ।

अमनिया करना—काटकूट तथा धोकर ठीक करना । प्र0 ठाकुर जी के भोग का फल पहले अमनिया कर लो ।

अमर होना—(लोगों के हृदय में) सदा के लिए स्थान बना लेना; सदा स्मरण किया जाना । प्र0 मानवता के इतिहास में बापू अमर हो गये हैं ।

अमरौती खाकर आना—अमर होकर आना । प्र0 दादाजी तो जैसे अमरौती खाकर आये हैं, किसी तरह विदा होने का नाम ही नहीं लेते ।

अमल दरामद होना—काम में लाया जाना—प्र0 इतने दिनों बाद जाकर डिग्री अमल दरामद हुई ।

अमल-पानी करना—नशा करना । प्र0 जरा अमल-पानी कर लूं तब चलूं, उसके बिना रंग नहीं जमेगा ।

अमली जामा पहनाना—किसी वस्तु को व्यावहारिक रूप देना । प्र0 देखो, यूँ तो बात बनने से रही । इसे अमली जामा पहनाना पड़ेगा ।

अमहर हो जाना—दे0 अमचुर हो जाना ।

अमिट छाप छोड़ना, -डालना, -पड़ना—स्थायी प्रभाव डालना या पड़ना । प्र0 बाबूजी अपनी अमिट छाप मेरे अंतर पर छोड़ गये हैं ।

अमिट छाप डालना—दे0 अमिट छाप छोड़ना ।

अमिट छाप पड़ना—दे0 अमिट छाप छोड़ना ।

अमृत के समान—प्रिय, सुखदायक । प्र0 काहूँ खेल भएउ बिख काहूँ अंब्रित भूरि (पद0—जायसी, 20/5); रघुपति चित्रकूट बसि

नाना चरित किए श्रुति सुधा समाना (राम0 (अ) तुलसी, 688)।

अमृत का घड़ा, -की घरिया—महत्त्वपूर्ण और मूल्यवान् वस्तु। प्र0 वहाँ क्या अमृत का घड़ा रखा है जो उसे पाने के लिए तुम इतने उतावले हो रहे हो?

अमृत की घरिया—दे0 अमृत का घड़ा।

अमृत की घरिया पीकर आना—लम्बी आयु पाना। प्र0 नानी जी अमृत की घरिया पीकर आयी हैं, अभी बहुत वर्षों रहेंगी।

अमृत के समान—दे0 अमृत।

अमृत घोलना—बात या स्थिति को बहुत रुचिकर या मीठी बना देना। प्र0 पंत जी बातों में अमृत घोल देते हैं।

अमृत बरसना—बहुत सुखद और प्रिय होना। प्र0 मेरे लिए तो यहाँ अमृत बरस रहा है।

अमृत में डूबी हुई,-सनी हुई—अत्यंत मधुर। प्र0 बोले गिरा अमिअं जनु बोरी (राम0 (बाल) –तुलसी, 340)।

अमृत में सनी हुई—दे0 अमृत में डूबी।

अयश की पिटारी देना—अपयश का भागी बनाना। प्र0 अजस पेटारी ताहि करि गई गिरा मति फेरि (राम0 (अ) –तुलसी, 383)।

अयोध्या सूनी होना—किसी के जाने से घर एकदम सूना हो जाना। प्र0 रामू जी की दोनों संतानें बाहर चली गयीं। उनकी अयोध्या सूनी हो गयी।

अरंड की जड़—अनिश्चित, बेठिकाने। प्र0 यह नौकरी तो अरंड की जड़ है। कब तक रहेगी, इसका भरोसा नहीं।

अरई करना, -देना, -लगाना—ताकीद करना, टोके जाना। प्र0 किसी व्यक्ति को हर समय अरई करना ठीक नहीं।

अरई देना—दे0 अरई करना।

अरई लगाना—दे0 अरई करना।

अरक-अरक होना—पसीने-पसीने होना। प्र0 इतनी ऊँची चढ़ाई चढ़कर वह अरक-अरक हो गया।

अरकना-बरकना—इधर-उधर करना, नष्ट करना। प्र0 घर की सारी चीजों को अरकने-बरकने के सिवा और कोई काम तुम्हें नहीं है?

अरकस-बथुआ—व्यर्थ की चीजें। प्र0 ठीक है, तुम अरकस-बथुआ बटोरते फिरो।

अरकस-बथुआ गिनना, -समझना—अत्यंत तुच्छ समझना। प्र0 वह तो तुम लोगों को अरकस-बथुआ समझता है।

अरकस-बथुआ समझना—दे0 अरकस-बथुआ गिनना।

अरका—अनोखा। प्र0 अरका नाई बाँस की नहरनी।

अरण्य-रोदन—व्यर्थ रुदन, व्यर्थ, असफल। प्र0 कत श्रम करत सुनत को ह्याँ है, होत जु बन को रोयो (सु0 सा0–सूर, 4158); हमें आज सावधानी से बाधक तत्त्वों का अध्ययन करना है और देखना है कि हमारे मंगलप्रयत्न अरण्य-रोदन सिद्ध न हों (अशोक0-ह0 प्र0 द्वि0, 155)।

अरदब में डालना—किसी दवाव या रुकावट की स्थिति में डालना। प्र0 मन में सोच लिया था, होरी को किसी अरदब में डाल कर गाय को उड़ा लेना चाहिए (गोदान–प्रेमचंद, 104)।

अरदली उतरना—एक के बाद एक कई पुरुषों के साथ सम्भोग करना।

अरपाटी-परपाटी लेकर पड़ना—दे0 अटवाये-खटवाये लेकर पड़ना।

अरबी-फारसी—शेखी, बढ़-बढ़कर की जानेवाली बातें। प्र0 बे ते मत करो मप्पों के, नाहीं तो तोरी सारी अरबी-फारसी घुसेड़ देबै (भार0 ग्र0 (1)–भारतेन्दु, 335)।

अरबी-फारसी बूकना—बहुत बढ़-बढ़कर बातें करना, ज्ञान का गर्व करना। प्र0 उसे अपनी अरबी-फारसी बूकने से फुर्सत मिले तब न किसी की बात सुने।

अरमान आना—(1) दुखी होना। प्र0 अपने अन्याय-अविचार का ऐसा दुष्परिणाम देखकर भी तुम्हें अरमान नहीं आता? (2) घमण्ड होना। प्र0 इतना अरमान किस बात का आ रहा है, जरा मैं भी तो सुनूँ।

अरमान उछालना—उमंगें तुष्ट करना। प्र0 बड़ी अपने मन की महफिल में अनेक मानसिक प्रेमियों को इकट्ठा कर अपने अरमान उछालती थी (बूँद0–नागर, 68)।

अरमान का खून होना—इच्छाओं को जबरदस्ती समाप्त कर देना। प्र0 बेटा नालायक निकल गया, अर्जुन सिंह के सारे अरमानों का खून हो गया।

अरमान ठंडा पड़ना, -दिल में रह जाना, -रह जाना, -सिराना—इच्छाओं का मन में ही मर जाना। प्र0 उनकी मृत्यु के कारण मेरे सारे अरमान ठंडे पड़ गये।

अरमान दिल में रह जाना—दे0 अरमान ठंडा पड़ना।

अरमान निकालना—इच्छा पूरी करना। प्र0 वह तो दिल खोलकर अरमान निकालेगी (मान0 (1) –प्रेमचंद, 94)।

अरमान पर पानी फिरना, -पाला पड़ना—अरमान पूरा न होना। प्र0 क्या-क्या अरमान थे सब पर पानी फिर गया (सारा0–यादव, 40); पड़ गया रात ही भर में बस उनके अरमानों पर पाला (नूर0–भक्त, 117)।

अरमान पर पाला पड़ना—दे0 अरमान पर पानी फिरना।

अरमान रह जाना—दे0 अरमान ठंडा पड़ना।

अरमान सिराना—दे0 अरमान ठंडा पड़ना।

अरमान से भरा होना—जोश होना, उत्साह से भरा होना। प्र0 इस समय देवीदयाल अरमानों से भरा है, वह बहुत कुछ कर सकता है।

अरमान-भरा घोंघा—वह व्यक्ति जिसमें इच्छाएँ तो बड़ी-बड़ी हों पर सामर्थ्य बिल्कुल न हो।

अरसना-परसना—आलिंगन करना। प्र0 अरसि-परसि हँसि-हँसि लपटाहीं (सूर)।

अरस-परस होना—स्पर्श से अपवित्र हो जाना। प्र0 तुम अपने मुसलमान दोस्त को बुलाना चाहते हो तो बुलाओ, पर बाहर अलग बैठाना। मेरे सारे घर से उसकी अरस-परस न हो।

अर्घ्य-पाद्यं करना—मारपीट करना । प्र0 मैं वह अर्घ्य-पाद्यं करूँगा कि तुम जिन्दगी भर याद रखोगे ।

अर्थ करना, -लगाना—तात्पर्य समझना या समझाना । प्र0 मेरी समझ में तो नहीं आ रहा है, आप ही इन पंक्तियों का अर्थ कीजिए ।

अर्थ का अनर्थ करना या होना—अच्छी बात या काम का गलतफहमी से बुरा रूप ले लेना या लिया जाना । प्र0 तुम अर्थ का अनर्थ क्यों कर रहे हो ?

अर्थ खोलना—अर्थ स्पष्ट करना । प्र0 और दर्द उस लिपि के अर्थ खोल रहा है (कनु0-भारती, 32) ।

अर्थ पर चढ़ाना—खूब प्रशंसा करना । प्र0 उसे अर्थ पर चढ़ाकर तुम उसका भला नहीं कर रहे हो ।

अर्थ लगाना—दे0 अर्थ करना ।

अर्थ-पिशाच—पैसा कमाने के लिए बहुत क्रूर बना व्यक्ति । प्र0 प्रकाशक प्राय: अर्थ-पिशाच हैं (पद्म0 के पत्र–पद्म0 शर्मा, 26) ।

अर्द्ध-चंद्र देना—गरदन पकड़कर बाहर निकालना । प्र0 वह उद्दंडता करे तो अर्द्ध-चंद्र देकर निकाल बाहर करना ।

अर्द्धजल देना—मृत्यु के ठीक पूर्व शरीर को आधा जल में और आधा स्थल पर रखना । प्र0 मुझे गंगा में अर्द्धजल देना ।

अर्द्धजल जोग होना—मरने के निकट शव को स्नान कराके आधा जल में और आधा बाहर रखना । प्र0 सूर सुबैद वेगि किन ढूँढ़ो भए अर्द्ध-जल जोग (भ्र0 सा0–सूर, 105) ।

अर्द्धासन देना—अपने साथ एक आसन पर स्थान देना; समान आदर या स्नेह देना । प्र0 मैं तो उन्हें हमेशा अर्द्धासन देता हूँ ।

अर्श के तारे तोड़ना—कमाल कर दिखाना । प्र0 रोशनआरा ने तो आज अर्श के तारे तोड़कर रख दिये ।

अर्श पर चढ़ाना—सिर चढ़ाना, धृष्ट या उद्दंड बनाना । प्र0 तुम्हीं ने इसे अर्श पर चढ़ाया है, अब तुम्हीं इसका परिणाम भुगतो ।

अर्श पर रहना या होना—बहुत गर्व करना । प्र0 वह तो हर समय अर्श पर ही रहता है ।

अर्श से फर्श तक—हर ओर, पूरी तरह ।

अलंग पर आना, -छाना, -होना—घोड़े का मस्ताना ।

अलंग पर छाना—दे0 अलंग पर आना ।

अलंग पर होना—दे0 अलंग पर आना ।

अलख जगाना—(1) पुकारकर परमात्मा का स्मरण करना । प्र0 गोरखनाथ चारों ओर अलख जगाते घूमते रहते थे ।

(2) परमात्मा के नाम पर भिक्षा माँगना । प्र0 तुम अब अलख जगाओ, और क्या !

अलग करना—(1) नौकरी से बर्खास्त करना । प्र0 दोनों कहार अलग कर दिये गये (निर्मला-प्रेमचंद, 148) ।

(2) खर्च से बचाकर रख देना ताकि भविष्य में काम आ सके । प्र0 इसमें से पाँच सौ रुपए बैंक में जमा कर दो ताकि वक्त-जरूरत काम आ सके ।

(3) बँटवारा करना । प्र0 भैया ने मुझे अलग कर दिया है ।

अलग रास्ता पकड़ना—काम करने का भिन्न ढंग स्वीकार करना । प्र0 देखो भाई, तुमने जब अलग रास्ता पकड़ लिया है तब फिर मुझसे क्या पूछते हो ?

अलग होना—(1) बँटवारा होना । प्र0 दोनों भाई अब अलग हो गये हैं ।

(2) कोई सम्बन्ध न रखना । प्र0 मुझसे अब कोई मतलब नहीं, मैं उस झमेले से एकदम अलग हो गया हूँ ।

अलग-अलग रहना—दूर रहना, सम्पर्क न रखना । प्र0 जीजी इस झमेले से अपने को अलग-अलग रखना चाहती हैं ।

अलफ होना—बहुत क्रुद्ध होना । प्र0 मेरी बात सुनते ही ताऊजी तो अलफ हो गये ।

अलबल होना—व्याकुल होना । प्र0 बहूरानी इतने में ही अलबल हुई जा रही हैं, और के लिए कैसे कहूँ ।

अलबी-तलबी छाँटना—(1) (अरबी-फारसी मिश्रित) कठिन भाषा बोलना । प्र0 वे हर समय अलबी-तलबी छाँटकर रोआब डालने के चक्कर में पड़े रहते हैं ।

(2) रोब जमाना । प्र0 मुझसे अलबी-तलबी छाँटने से कोई लाभ नहीं है ।

अलबी-तलबी धरी रहना—रोब या क्रोध का निष्फल होना । प्र0 वे कसकर झड़प देंगे तो तुम्हारी सारी अलबी-तलबी धरी रह जायगी ।

अलबी-तलबी भुलाना या भूलना—रोब या आतंक नष्ट करना । प्र0 तुम किस फेर में हो, तुम्हारी अलबी-तलबी सब भुला दूँगा ।

अलल बछेड़ा—अनुभवहीन । प्र0 कमल अभी अलल बछेड़ा है, वह क्या कहेगा ।

अलल हिसाब देना—पावने का हिसाब किये बिना कुछ रकम दे देना । प्र0 उसे कुछ अलल हिसाब दे देना, फिर बाद में देखा जायगा ।

अललटप्पू—यों ही अंदाज से । प्र0 वह यों ही अललटप्पू बातें करता है ।

अलल्ले-तलल्ले करना—खूब रुपया बनाना । प्र0 आजकल सभी अलल्ले-तलल्ले करने की फिक्र में रहते हैं ।

अलल्ले-तलल्ले खर्च—बेहिसाब खर्च । प्र0 कोई चालीस लाख का बोझ सिर पर है फिर भी वही दम-खम है, वही अलल्ले-तलल्ले खर्च हैं (गोदान–प्रेमचंद, 235) ।

अलसेट लगाना—झंझट खड़ी करना । प्र0 तुम क्यों अपनी ओर से अल-सेट लगाते हो, वे जो करना चाहते हैं उन्हें करने दो ।

अलादीन का चिराग—इच्छा पूरी करनेवाला । प्र0 तुम्हारे भैया न हुए अलादीन का चिराग हो गये कि जो तुम्हारे मुँह से निकला वह झट हाजिर ।

अला-बला बताना—दे0 आला-बाला बताना ।

अलारम बजना—खतरे की घंटी बजना । प्र0 जाओ जाओ, अलारम की घंटी बज गयी ।

अलार्म भरना—जोश दिलाना। प्र0 आप इस तरह अलार्म न भरें नहीं तो हम भी कुछ कर बैठेंगे।

अलाली आना, -चढ़ना, -सवार होना, -सूझना—निकम्मा होना, सुस्ती आना। प्र0 तुम्हें हर समय अलाली क्यों चढ़ी रहती है?

अलाली चढ़ना—दे0 अलाली आना।

अलाली सवार होना—दे0 अलाली आना।

अलाली सूझना—दे0 अलाली आना।

अलिफ के नाम बे न जानना—एकदम अज्ञानी या बिना पढ़ा-लिखा होना। प्र0 तुर्रा यह है कि अलिफ के नाम बे नहीं जानते (आजाद0—प्रेमचंद, 71)।

अलिफ नंगा—बिलकुल नंगा। प्र0 उसकी दशा देखकर बड़ा दुःख हुआ। अलिफ नंगा सड़क पर घूम रहा था।

अलिफ से बे न करना—अपनी ही बात पर अड़े रहना। प्र0 मैंने इतना समझाया पर उन्होंने अलिफ से बे न किया।

अली की फटकार पड़ना—बहुत बड़ी मुसीबत पड़ना। प्र0 खुदा करे, निगोड़ों पर अली की फटकार पड़े (मा0—कौशिक, 311)।

अलेख करना—लिखे हुए को मिटा देना। प्र0 तुम क्या किस्मत के लिखे को अलेख कर सकते हो?

अलोना रहना—नमक न खाने का व्रत रखना। प्र0 ताई आज अलोना रहेंगी, खयाल रखना।

अल्लम-गल्लम—कूड़ा-कचरा, व्यर्थ का काम या चीज। प्र0 घर में न जाने कहाँ-कहाँ का अल्लम-गल्लम भर रखा है।

अल्लाह का नाम लो—यह काम मुझसे न होगा, छोड़ो—इस अर्थ में प्रयुक्त। प्र0 अल्लाह का नाम लो, मैं वहाँ हरगिज न जाऊँगा।

अल्लाह का बेटा—(1) पैगम्बर। प्र0 उस अल्लाह के बेटे को हजार-हजार बंदगी।

(2) बहुत बड़ा आदमी। प्र0 तुम क्या अल्लाह के बेटे हो जो हम सब तुम्हारे तलवे सहलायें?

अल्लाह को प्यारा हो जाना—मृत्यु को प्राप्त होना। प्र0 इनके अतिरिक्त हसीना बाई और नसीमबाई, दो उगती हुई संगीत-तारिकाएँ अपनी भरी जवानी में ही अल्लाह को प्यारी हो गयीं (ये कोठे0—अ0 नागर, 107)।

अल्लाह मियाँ की गाय—सीधा आदमी। प्र0 मियाँ भाई तो नवाब भी हैं, मगर अल्लाह मियाँ की गाय (आजाद0—प्रेमचंद, 199)।

अल्लाह-अमीन से पालना—देवता-पितर मनाते हुए बड़े यत्न से पालना। प्र0 पहले के तीनों बेटे खुदा को प्यारे हो गये। इसे किसी तरह अल्लाह-अमीन से पाला है।

अवकाश ग्रहण करना—अवधि पूरी हो जाने पर नौकरी से मुक्त हो जाना। प्र0 अगले महीने ही बाबूजी अवकाश ग्रहण करेंगे।

अवट (टि) मरना—मारे-मारे फिरना। प्र0 जो आचरन विचारहु मेरो कल्प कोटि लगि अवटि मरौ।

अवट (औट) डालना—खूब छानबीन करना। प्र0 उसने सारी जगह अवट डाला पर कोई सुराग न मिला।

अवतारी—(1) शरारती। प्र0 बिन्दो बीबी का लड़का बड़ा अवतारी है, एक पल न चैन से बैठता है, न बैठने देता है।

(2) श्रेष्ठ, महापुरुष। प्र0 महात्मा गांधी अवतारी पुरुष थे।

अवधान से होना—गर्भवती होना।

अवधि गिनना—प्रतीक्षा करना। प्र0 अवधि गनत, इकटक मग जोवत, तब इतनौ नहिं झूखीं (सू0 सा0—सूर, 4175)।

अवधि देना, -बदना—तिथि निश्चित करना। प्र0 आवन अवधि बदी-हरि हम सौं, सोऊ गई व्यतीति (सू0 सा0—सूर, 4361); बीती जानि अवधि सब पिय की जे हम सों बदियाँ (भा0 ग्रं0 (2)—भारतेन्दु, 116)।

अवधि बदना—दे0 अवधि देना।

अवसर आ बनना—अच्छा मौका होना। प्र0 सोच विचारि देखौ मन माँही, औसर आइ बन्यूं रे (कबीर ग्रंथा0—कबीर, 166)।

अवसर का लाभ उठाना—स्थिति अनुकूल हो तो, अपना काम बना लेना। प्र0 गंगाधर जी यहाँ आये हुए हैं, तुम्हें इस अवसर का लाभ उठाकर उनसे तुरंत मिल लेना चाहिए।

अवसर की ताक में होना, -ताकना, -देखना—लाभ का मौका देखना। प्र0 कुटिल कुबंधु कुअवसर ताकी। जानि राम बनवास एकाकी (राम0 (अ)—तुलसी, 587); फिर मंत्री पद पर अभिषिक्त होने पर भी वह प्रतिज्ञा भूल न सका, अवसर की ताक में लगा रहा (राधा0 ग्रंथा0 राधा0 दास, 255)।

अवसर खोना, -चूकना, -हाथ से जाने देना, -हाथ से निकल जाना, -हारना—आये हुए सुअवसर का लाभ न उठाना। प्र0 औसर हास्यो रे, तैं हास्यौ (सू0 सा0—सूर, 336); अहह मंद मनु अवसर चूका, अजहुँ न हृदय होत दुइ टूका (राम0 (अ)—तुलसी, 508); सोफी को जरूर साथ लाना, और इस अवसर को हाथ से न जाने देना (रंग0 (1)—प्रेमचंद, 70-71)।

अवसर चूकना—दे0 अवसर खोना।

अवसर चेतना—ठीक अवसर पर समझदारी से काम लेना। प्र0 इहि औसरि चेत्या नहीं, चूका अबकी बात (कबीर ग्रंथा0—कबीर, 23)।

अवसर ताकना—दे0 अवसर की ताक में होना।

अवसर देखना—दे0 अवसर की ताक में होना।

अवसर बीतना, -मारा जाना—मौका निकल जाना। प्र0 अवसर बीते चेतेगा तो काम कहाँ से होवेगा।

अवसर मारा जाना—दे0 अवसर बीतना।

अवसर लेना—मौका देखकर बदला लेना। प्र0 हरखू चुप बैठनेवाला जीव नहीं है, वह जरूर अवसर लेगा।

अवसर हाथ आना, -लगना—सुयोग मिलना। प्र0 यह तो बहुत अच्छा अवसर हाथ आया है, रुपए लेकर धर्म-कार्य में लगा दो (रंग0 (1)—प्रेमचंद, 127)।

अवसर हाथ लगना—दे0 अवसर हाथ आना।

अवसर हाथ से जाने देना—दे0 अवसर खोना।

अवसर हाथ से निकल जाना—दे0 अवसर खोना।

अवसर हारना—दे0 अवसर खोना।

अवस्था उतरना, -ढलना—बुढ़ापा आना, जवानी न रह जाना। प्र0 मैं पूछती हूँ, जब मेरी अवस्था उतर जायगी और मैं क्षीण हो जाऊँगी, तब भी क्या आप इतना प्यार करेंगे ? (मृग0–वृ0 वर्मा, 386)।

अवस्था गिर जाना—आर्थिक स्थिति खराब हो जाना। प्र0 मामाजी की अवस्था आजकल बहुत गिर गयी है।

अवस्था ढलना—दे0 अवस्था उतरना।

अवां की तरह छाती सुलगना—भीतर-ही-भीतर जलन से कुढ़े जाना। प्र0 समुझि राजसुख दुखित अराती। अवां अनल इव सुलगइ छाती (राम0 (बाल)–तुलसी, 171)।

अवाई उड़ाना—झूठे समाचार फैलाना। प्र0 तुम अवाई उड़ाते फिरो। तुम्हें और कोई काम तो है नहीं।

अवारी देना—नाव फेरना। प्र0 अब अवारी दो, मुझे वापिस लौटना है।

अविश्वास का प्रस्ताव पास करना—सामूहिक रूप से किसी के प्रति अविश्वास प्रकट करना। प्र0 सभा ने शंकर प्रसाद के विरुद्ध अविश्वास का प्रस्ताव पास कर ही दिया।

अव्वल दर्जे का, -नंबर का—(1) श्रेष्ठ। प्र0 तुम्हारा काम अव्वल दर्जे का है, कोई कुछ नहीं कह सकता।
(2) बहुत धूर्त है—इस अर्थ में प्रयुक्त। प्र0 रामदीन अव्वल नंबर का है। मैं उससे कोई सम्बन्ध नहीं रखना चाहता।

अव्वल नंबर का—दे0 अव्वल दर्जे का।

अव्वल-अव्वल—पहले-पहले। प्र0 वाह, अव्वल-अव्वल तुम कहाँ से टपक पड़े ?

अश-अश करना—बहुत पसंद करना। प्र0 मेरी नयी घड़ी देखकर वह अश-अश करने लगा।

अशरफियों की लूट और कोयलों पर मुहर होना—मूल्यवान वस्तु की परवाह न करना और व्यर्थ की वस्तु को महत्त्व देना। प्र0 उसकी किफायत अशर्फियों की लूट और कोयलों पर मुहर को चरितार्थ करती थी (प्रेमा0–प्रेमचंद, 185)।

अशरफी-कदम चलना—बहुत धीरे-धीरे नज़ाकत से चलना। प्र0 अरे यार, क्या अशरफी-कदम चल रहे हो, कदम बढ़ाओ न।

अश्रु बहाना—दुःख प्रकट करना। प्र0 बेटे के कारनामे का किस्सा सुनकर देवी बाबू अश्रु बहाते बैठे रहे।

अष्टावक्र—टेढ़ा-मेढ़ा। प्र0 पिछली दुर्घटना के बाद बेचारा एकदम अष्टावक्र हो गया है।

असमय मुरझा जाना—असमय क्षय को प्राप्त होना। प्र0 पारिवारिक कलह और अशांति के कारण वह बेचारा असमय मुरझा गया।

असल—मूलधन। प्र0 यहां असल मिलने का ठिकाना नहीं, तुम सूद की बात करते हो।

असल का—वैध संतान। प्र0 यदि मैं असल का हूँ तो दिखा दूंगा कि मेरा अपमान करके तुम आसानी से नहीं निकल सकते।

असल के असल होना—अच्छे व्यक्ति की संतान भी अच्छी होना।

असलियत पर आना—असली रूप पर आना, अपने स्वभाव के अनुरूप भाव प्रकट करना, वास्तविक रूप स्पष्ट हो जाना। प्र0 इतना सुनना था कि वे असलियत पर आ गये और उबल पड़े।

असामी उतारना—किसी को अपने लाभ का साधन बना लेना। प्र0 विन्ध्येश्वरी प्रसाद आजकल असामी उतारने में लगे हैं।

असामी फांसना, -बनाना—किसी को अपने अनुकूल बनाना। प्र0 मैंने आज एक तर असामी फांस लिया है, अब कोई चिन्ता नहीं।

असामी फोड़ना—समझा-बुझाकर किसी को दूसरे से विमुख करके अपने अनुकूल बनाना। प्र0 रघु बाबू ने मेरे असामी को फोड़ लिया है।

असामी बनाना—दे0 असामी फांसना।

असामी समझना—अपने वश में समझना। प्र0 उन्हें अपना असामी मत समझ बैठना।

अस्तबल की बला बंदर के सिर जाना—किसी का रोग, दोष या अपराध उसके पास जाने या रहने वाले के सिर जाना। प्र0 अच्छी खासी मुसीबत है। मैंने तो कुछ किया नहीं पर अस्तबल की बला बंदर के सिर पड़ रही है।

अस्तबल में दुलत्ती चलना या चलाना—आपस में ही झगड़ा होना या करना। प्र0 वहाँ तो अस्तबल में ही दुलत्ती चल रही है।

अस्तर देना—रंग करने से पहले नीचे रंग की एक तह देना ताकि रंग अच्छा आये।

अस्ति-अस्ति करना—हाँ-हाँ या वाह-वाह करना। प्र0 पंडित जी के प्रस्ताव पर सभी अस्ति-अस्ति करने लगे।

अस्ति-नास्ति करना, -कहना, -में कहना—स्पष्ट उत्तर न देना। प्र0 अस्ति-नास्ति कुछ कर दीजिए, हमें व्यर्थ दुविधा में क्यों रख रहे हैं ?

अस्ति-नास्ति कहना—दे0 अस्ति-नास्ति करना।

अस्ति-नास्ति दिखाना—दोनों पक्षों को सामने रखना, अच्छा-बुरा दोनों सुझाना। प्र0 मैंने तो दोनों को अस्ति-नास्ति दिखला दिया, अब वे जाने और उनका काम जाने।

अस्ति-नास्ति न होना—संदेह न होना। प्र0 मुझे इस मामले में कोई अस्ति-नास्ति नहीं है।

अस्ति-नास्ति में कहना—दे0 अस्ति-नास्ति करना।

अस्ति-नास्ति में डालना—दुविधा या संदेह में रखना। प्र0 सबको अस्ति-नास्ति में क्यों डाले हुए हैं ?

अस्त्र मांजना—अस्त्र की धार तेज करना। प्र0 आप तो प्रोपेगण्डास्त्र मांज रहे थे ? (पद्म0 के पत्र–पद्म0 शर्मा, 109)।

अस्मत पर डाका डालना,-लूटना—बेइज्जत करना (स्त्री को), व्यभिचार करना। प्र0 स्त्री के शील ने कायरता और कमजोरी बनकर उसकी अस्मत पर डाके डलवाये हैं (अमृत0–नागर, 553)।

अस्मत पर डाका पड़ना—स्त्री को बेइज्जत किया जाना। प्र0 हमारी अस्मत पर डाका पड़ा पर किसी ने चूं तक न की।

अस्मत बेचना—शारीरिक भोग के लिए स्त्री का अपने को धन लेकर सुलभ कराना। प्र0 मैं एक हाथ से अस्मत बेचकर अपनी आजाद जिन्दगी खरीद करना चाहती हूँ (अमृत0—नागर, 550)।

अस्मत लूटना—दे0 अस्मत पर डाका डालना।

अस्सी की आमद और चौरासी का खर्च होना—आमदनी से अधिक खर्च होना। प्र0 तुम्हारा तो सारा रवैया ही अटपटा है। अस्सी की आमद चौरासी का खर्च करते हो।

(तुम जैसे) अस्सी हजार फिरना—बहुतेरे लोग होना। प्र0 तुम अपने को समझते क्या हो? तुम जैसे अस्सी हजार फिरते हैं।

अहंकार का पुतला—बहुत घमंडी।

अहाता करना—घेर देना। प्र0 मैदान में अहाता कर दो ताकि गायें इधर-उधर न भागें।

अहिर-चपाट, अहीर—उजड्ड और मूर्ख।

अहिवात अचल होना,-अटल होना, -चिर होना,-युग-युग तक रहना—सदा सौभाग्यवती रहना। प्र0 सदा अचल एहि कर अहिवाता (राम0 (बाल)—तुलसी, 79); साजि सिंहासन तानहिं छातू। तुम्ह मांथें जुग जुग अहिवातू (पद0—जायसी, 51/7)।

अहिवात अटल होना—दे0 अहिवात अचल होना।

अहिवात चिर होना—दे अहिवात अचल होना।

अहिवात जाना—विधवा होना। प्र0 प्रीति करहु रघुवीर पद मम अहिवात न जाइ (राम0 (लं)—तुलसी, 876)।

अहिवात युग-युग तक रहना—दे0 अहिवात अचल होना।

अहीर—दे0 अहिर-चपाट।

आ

आंक छोड़ना, -डालना—निशान लगाना। प्र0 इन सब कपड़ों पर आंक डाल दो।

आंक डालना—दे0 आंक छोड़ना।

आंक पड़ना—प्रभाव पड़ना। प्र0 इतने दिनों मामा के साथ रहकर आया है, उनकी आंक तो पड़ती ही।

आंका हुआ सपना—कल्पना। प्र0 मेरा आंका हुआ सपना धूलिसात् हो गया, सारी भावना नष्ट हो गयी।

आंख (आंखें) अंगार होना—गुस्से से आंख लाल होना। प्र0 शिवाजी की आंखें अंगार हो गयीं, नथने फड़कने लगे।

आंख (आंखें) अटकना या अटकाना—प्रेम होना या करना। प्र0 रूप-राशि उस नव ललना से आंखें बरबस जा अटकीं।

आंख आंजने को भी नहीं—तनिक भी नहीं। प्र0 दूध-घी आंख आंजने को भी मयस्सर नहीं होता दादा।

आंख आना, -दुखने आना—आंख में लाली, सूजन और पीड़ा होना। प्र0 आंख पानी के बहे है बह गई, आंख आये आंख ही जाती रही (बोल0—हरिऔध, 34)।

आंख (आंखें) आसमान में टंग जाना—आसमान की ओर देखना। प्र0 तभी ऊपर आकाश में कुछ पक्षियों का झुंड उड़ता गुजर गया। उसकी आंखें आसमान में टंग गईं (कम0-कम0, 121)।

आंख (आंखें) उघारना—सचेत होना। प्र0 जिन्होंने नहीं आंख अब तक उघारी (चुभते0—हरिऔध, 187)।

आंख (आंखें) उघारी रहना—प्रतीक्षा में पलक न लगना। प्र0 भरि गई बिरह बयारि दरस बिनु, निसिदिन रहतिं उघारी (सू0 सा0—सूर, 4188)।

आंख (आंखें) उठना—(1) बुरी नजरों से देखा जाना। प्र0 अपनी जान की फिक्र न थी पर नारीत्व की ओर किसी की आंख भी न उठनी चाहिए (मान0 (1)—प्रेमचंद, 260)।

(2) आशापूर्ण दृष्टि से देखना। प्र0 कर्म की क्षमता प्राप्त करने के लिए बार-बार कर्ता की ओर आंख उठती है (चिन्ता0 (1)—शुक्ल, 18)।

(3) कृपा दृष्टि होना। प्र0 आंख उठती दीन दुखियों पर रहे, पांव गिरतों के उठाने को उठे (चोखे0—हरिऔध, 20)।

(4) लेने की इच्छा होना। प्र0 यहां तक कि चांदनी चौक के अमीर व्यापारियों की लोभी आंखें सुभागी के भाड़ की तरफ उठने लगीं (सु0 सु0—सुदर्शन, 45)।

(5) दे0 आंख आना।

आंख उठाकर देखना—(1) कुदृष्टि से देखना। प्र0 जब स्वजन लोग अपने शील-शिष्टाचार का पालन करें××सत्पथ का अवलम्बन करें, तो दुर्दिन का साहस नहीं कि उस कुटुम्ब की ओर आंख उठाकर देखे (स्कंद0—प्रसाद, 67)।

(2) मुकाबला करना या विरोध करने का साहस होना, असम्मान का भाव रखना। प्र0 भारत में जिस समय चंद्रगुप्त, अशोक आदि के शक्तिशाली राज्य थे××उस समय किसका साहस था कि इसकी तरफ आंख उठाकर देखता (विष0—प्रेमी, 98)।

(3) गौर से देखना। प्र0 चारों ओर आंख उठाकर देखिए तो बिना काम करने वालों की ही चारों ओर बढ़ती है (भा0 ग्रं0 (3)—भारतेन्दु, 898)।

आंख (आंखें) उठाकर भी न देखना—(1) तुच्छ समझना, नफरत करना। प्र0 जिस हिन्दी की ओर पहले लोग आंख उठाकर न देखते थे वह सबकी आंखों का तारा हो चली थी (गु0 नि0—बा0 मु0 गु0, 110)।

(2) ध्यान न देना। प्र0 दूकान पर सभी तरह के लोग आते थे, मर्द भी औरत भी। क्या मजाल कि किसी की ओर आंख उठाकर देखा हो (गबन—प्रेमचंद, 237)।

(3) अनिष्ट करने या हड़पने का साहस भी न कर पाना। प्र0 जिस दिन ऐसा हो जायेगा, उस दिन कोई भी इधर आंख उठाकर न देखेगा (स्कंद0—प्रसाद, 110)।

(4) कुदृष्टि से न देखना। प्र0 वह किसी दूसरी मिहरिया की

ओर आंख उठाकर भी नहीं देखता (मान० (1) –प्रेमचंद, 301)।
(5) कार्य में इतना व्यस्त होना कि देखने का भी समय न मिले। प्र० सुबह से काम पर बैठा हूँ। आंख उठाकर देखने तक की फ़ुरसत नहीं मिली।
(6) बहुत लज्जालु होना। प्र० वह तो किसी की ओर आंख उठाकर देख भी नहीं पाती।

आंख उठाकर सीधे देखना—साहसपूर्वक देखना। प्र० तुम उनकी ओर आंख उठाकर देख सकते हो तो जाओ, बातें कर आओ, मेरी हिम्मत तो नहीं है।

आंख (आंखें) उठाना—(1) बुरी दृष्टि से देखना। प्र० फिर किसी की तरफ आंख भी न उठायें (सु० सु० –सुदर्शन, 200)।
(2) हानि पहुंचाने की चेष्टा करना। प्र० हुजूर के अहदे हुकूमत में किसकी मजाल है जो शाही रैयत पर आंख उठावेगा (राधा० ग्रंथा० –राधा० दास, 716)।
(3) देखने का साहस होना। प्र० जिसे मैं गोद में उठाकर प्यार करता था, उसकी तरफ आज आंखें न उठा सका (मान० (1) –प्रेमचंद, 92)।
(4) देखना। प्र० तनिक आंख उठाओ तब न पता चलेगा कि कौन आया है।

आंख (आंखें) उलझना या उलझाना—प्रेम होना या करना, आकृष्ट होना। प्र० का करौं गोइयां अरुझि गई अंखियां (भा० ग्रं० (2) –भारतेन्दु, 182); बाले! तेरे बाल-जाल में कैसे उलझा दूं लोचन? (पल्लव–पंत, 37)।

आंख (आंखें) उलटना—(1) पुतली का ऊपर चढ़ जाना (मरते समय)। प्र० उन्होंने दो हिचकियां लीं और आंखें उलट दीं। (गोली –चतुर०, 328)।
(2) घमंड से व्यवहार में अंतर आना। प्र० लट गये जब कि चाल उल्टी चल आंख कैसे न तब उलट जाती (बोल०–हरिऔध, 48)।
(3) पुराना भाव न रह जाना। प्र० उनकी आंखें आजकल उलट गयी हैं। उनसे मुझे कोई आशा नहीं।

आंख (आंखें) ऊंची न होना, -ऊपर न उठना—(1) उच्च विचार न आना, उत्तम निर्णय न लेना। प्र० हम जाति को ऊंचे उठाना चाहते हैं, पर हमारी आंख ऊंची होती ही नहीं। (चुभते० (भू०)–हरिऔध, 6)।
(2) लज्जा के कारण सामना न करना। प्र० मेरी आंखें तो ऊपर नहीं उठ पाईं, मैं किस मुंह से कुछ कहता।

आंख (आंखें) ऊंची रखना—(1) आत्मसम्मान होना। प्र० आंख ऊंची न रख सके जब तो आंख ऊंची भला रहे कैसे (चुभते०–हरिऔध, 92)।
(2) मानदण्ड ऊंचा रखना। दे० प्रयोग 1।

आंख (आंखें) ऊंची होना—(1) सम्मानित होना। प्र० आंख जिससे देश की ऊंची हुई, क्यों न आंखों पर बिठायें हम उसे (चुभते०–हरिऔध, 4)।
(2) दूसरों का सामना कर पाना, सगर्व कुछ कह पाना। प्र० भले ही वह रह ले नीची, आंख ऊंची होगी कैसे (मर्म०–हरिऔध, 89)।

आंख (आंखें) ऊपर न उठना—दे० आंख ऊंची न होना।

आंख (आंखें) कड़वाना—(1) आंखों पर जोर पड़ने से नींद के कारण आंखों में पीड़ा होना। प्र० जागना जब न लग सका कड़वा, तब भला आंख क्यों न कड़वाती (बोल०–हरिऔध, 37)।
(2) नींद आना। प्र० रात ग्यारह बज गये। हरखू की आखें कड़वाने लगीं पर साहब का पता न था।

आंख करना—ध्यान देना, लगाव रखना। प्र० ह्या हमसों मिलिवो ठहराय कै नैन कहूं अनते ही करीजै (मति० मक०–मतिराम, 109)।

आंख कहीं दिल कहीं और होना—(1) ध्यान दूसरी ओर होना। प्र० तुम इस तरह आंख कहीं दिल और कहीं लगाकर बैठोगे तो पूरा पड़ चुका।
(2) प्रिय के ध्यान में लीन होना। प्र० वह तो अपने पर काबू खो चुकी है–आंख कहीं दिल और कहीं हो रहा है।

आंख (आंखों) का अंजन, –सुरमा—बहुत थोड़ा। प्र० लाला, पांच रुपयों से क्या होगा। यह तो आंख का अंजन भर होगा।

आंख (आंखों) का (के) अंधा—बुद्धिहीन। प्र० मैं कुछ ऐसा ×× आंखों का अंधा थोड़े ही हूं जो सिर हिला कर खेद करूं (भा० ग्रं० (1) –भारतेन्दु, 615); इसीलिए कि वह तुम्हें सबसे बड़ा आंखों का अंधा समझती है, दूसरों को इतनी आसानी से बेवकूफ नहीं बना सकती (गोदान–प्रेमचंद, 195)।

आंख का अंधा गांठ का पूरा—मूर्ख धनवान। प्र० सच तो यह है कि, जो कोई ऐसा ही शौकीन आंख का अंधा गांठ का पूरा मिलेगा तो लेगा (प्र० भी० –प्र० ना० मि० 147); आंख के अंधों और गांठ के पूरों की तलाश आपको भी उतनी ही है, जितनी मुझको (गोदान –प्रेमचंद, 235)।

आंख का उजाला, -तारा, -तिल, -नूर, -की पुतली, -रोशनी—बहुत प्रिय व्यक्ति। प्र० रूप उजियारे जान प्यारे पर प्रान वारे, आंखिन के तारे, न्यारे कैसें धौं करौं उनै (घन० कवित्त-घना०; 215); हाय रे! मेरे आंखों के उजियाले को कौन ले गया (भा० ग्रं० (1)–भारतेन्दु, 310); क्या वे अपनी माताओं की नयन-ताराएं नहीं थीं (बाण०-ह० प्र० द्वि०; 205)।

आंख (आंखों) का कांटा, -शूल—अप्रिय व्यक्ति या वस्तु। प्र० आज भी जी का नहीं कांटा कढ़ा है खटकता आंख का कांटा न कम (चुभते० –हरिऔध, 67); अगर न करूं तो नक्कू बनूं और सबकी आंखों में कांटा बन जाऊं (मान०–प्रेमचंद, 68)।

आंख (आंखों) का काजल चुराना—सामने की चीज चुरा ले जाना, सब की उपस्थिति में कोई ऐसा काम कर बैठना जो किसी को पता तक

न चले। प्र0 देखते ही देखते जी ले गया आंख का काजल चुराना है यही (बोल0–हरिऔध, 45)।

आंख का कोया, -डेला, -ढेला—आंख का सफेद भाग।

आंख का गिला भौंह के आगे कहना, -की बदी भौंह के आगे कहना—किसी का दोष उसके मित्र या संबंधी से कहना। प्र0 क्या कहूँ, आँख की बदी भौंह के आगे कहकर संतोष करता हूँ।

आंख का घी निकलना—दे0 आंख का तेल निकलना।

आंख का जाला—मोतियाबिन्द, आंख का रोग जिसमें पुतली पर सफेद झिल्ली आ जाती है।

आंख (आंखों) का टोना लगना, -की चोट लगना—किसी की प्रेमपूर्ण दृष्टि से आकृष्ट होना।

आंख का डेला—दे0 आंख का कोया।

आंख का ढेला—दे0 आंख का कोया।

आंख (आंखों) का तारा—दे0 आंख का उजाला।

आंख (आंखों) का तिल—दे0 आंख का उजाला।

आंख (आंखों) का तिल खो देना—अंधा हो जाना। प्र0 क्यों न खो देंगे आंख का तिल वे आंख का तेल जो निकालेंगे (चो`0-हरिऔध, 14)।

आंख (आंखों) का तेल निकलना—बारीक काम करने से आंखों पर बहुत जोर पड़ना या डालना। प्र0 कलकत्ते के प्रेस बड़े ही रद्दी हैं। प्रूफ पढ़ते-पढ़ते आंखों का तेल और कमर का कचूमर निकल गया (पद्म0 के पत्र –पद्म0 शर्मा, 150)।

आंख (में) कानासूर—बहुत अप्रिय या दुखदायी। प्र0 तुम तो उनकी आंखों का नासूर हो गये हो।

आंख (आंखों) का नूर—दे0 आंख का उजाला।

आंख (आंखों) का परदा—आंखों से प्रकट होने वाला लज्जा का नैसर्गिक भाव। प्र0 परदा तो आंख का होता है। कहीं चादर हया सिखाती है? (आजाद0 –प्रेमचंद, 238)।

आंख (आंखों) का परदा उठना, -खुलना, -हटना—अज्ञान दूर होना। प्र0 खुल रहा है दिन ब दिन परदा मगर आंख का परदा नहीं अब भी खुला (चुभते0 –हरिऔध, 57)।

आंख (आंखों) का परदा उठा देना—निर्लज्ज हो जाना। प्र0 उसने आंखों का पर्दा उठा दिया है, वह सब कुछ कर सकती है।

आंख (आंखों) का परदा खुलना—दे0 आंख का पर्दा उठना।

आंख (आंखों) का परदा हटना—दे0 आंख का पर्दा उठना।

आंख (आंखों) का पानी—लज्जा, शील या मर्यादा का भाव। प्र0 फूटें, पानी न हो पड़ी भी जिन आंखों में (साकेत –गुप्त, 448)।

आंख (आंखों) का पानी उतर जाना, -गिर जाना, -ढरकना, -ढलना, -मर जाना—निर्लज्ज हो जाना, मान-मर्यादा का ख्याल न करना। प्र0 जिनके आंख का पानी ढरक गया है××उन्हें नीचे से नीचा काम करने में संकोच नहीं रहता (सा0 सु0 –बा0 भट्ट, 47); दूसरी लड़की होती तो मुंह न दिखाती। आंख का पानी मर गया है (गोदान –प्रेमचंद, 158)।

आंख (आंखों) का पानी गिर जाना—दे0 आंख का पानी उतर जाना।

आंख का पानी ढरकना—दे0 आंख का पानी उतर जाना।

आंख (आंखों) का पानी ढलना—दे0 आंख का पानी उतर जाना।

आंख का पानी न सूखना—निरंतर रोना। प्र0 किन्तु अब तो उसकी आंखों का पानी नहीं सूखता था (चेतन –अश्क, 137)।

आंख का पानी मर जाना—दे0 आंख का पानी उतर जाना।

आंख का फेर होना—देखने में भ्रम होना। प्र0 यह आपकी आँखों का फेर है, और कुछ नहीं।

आंख का बांध तोड़कर आंसू बहना—बहुत रोना।

आंख (आंखों) का बुरा—बुरी नजरों से देखनेवाला। प्र0 आँखों का बुरा आदमी है, पर दिल का बुरा नहीं (मान0(4)–प्रेमचंद, 277)।

आंख (आंखों) का बोलना—आंखों द्वारा भाव प्रकट होना। प्र0 जिह्वा चाहे निःशब्द हो जाय, पर आंखें बोलने लगती हैं (रंग0 –प्रेमचंद, 216)।

आंख (आंखों) का मारा—प्रेम-पीड़ित। प्र0 क्या अजब मर मर जिये माता रहे आंख का मारा अगर मारा फिरे (बोल0–हरिऔध, 51)।

आंख का मोती—आंसू। प्र0 आंखों के मोती यों न बिखेरो, आओ (साकेत –गुप्त, 223)।

आंख (आंखों) का शूल—दे0 आंख का कांटा।

आंख (आंखों) का सच्चा—कुदृष्टि न रखनेवाला। प्र0 आदमी बड़ा देवता था, हाथ का सुच्चा और आंख का भी सुच्चा (झूठा0 (1) –यशपाल, 126)।

आंख (आंखों) का सुरमा—दे0 आंख का अंजन।

आंख का सुरमा बनाना, -की पुतली करना, -बनाना, -समझना, -मणि बनाना—अत्यंत प्रिय मानना, यत्न और स्नेहपूर्वक रखना। प्र0 जौं बिधि पुरब मनोरथु काली, करौं तोहि चख पूतरि आली (राम0 (अ)–तुलसी, 393); तुम्हें उसके कदमों की खाक माथे पर लगानी चाहिये, आँखों का सुरमा बनाना चाहिये (मान0 (3) –प्रेमचंद, 162)।

आंख (आंखों) का हंसना—आंखों से हंसी टपकना। प्र0 उसकी आंखें हंस रही थीं (चित्र0 –भग0 वर्मा, 24)।

आंख (आंखें) काढ़ना—रोष प्रकट करना। प्र0 आंख तो आप काढ़ते ही थे अब लगे काढ़ने कलेजा क्यों (चोखे0–हरिऔध, 50)।

आंख किरकिराना—आंख में बालू आदि पड़ जाने के कारण पीड़ा होना। प्र0 सुबह से ही आंख किरकिरा रही है, लगता है कुछ पड़ गया है।

आंख (आंखों) की ओट—(1) दृष्टि से परे। प्र0 नैननि ओट होत पल एकौ, मैं मन भरति अतंक (सू0 सा0–सूर, 1223); जो हसि सो हसि मुंह मसिलाई आंखि ओट उठि बैठहि जाई (राम0 (अ) – तुलसी, 525)।

(2) क्षणिक वियोग। प्र0 'हरीचंद' रस-माती पलहू दृग अंतर न सहै (भा0 ग्रं0 (2) –भारतेन्दु, 403)।

आंख (आंखों) की ओट करना या होना—(1) सामने से दूर करना

या होना। प्र0 वेगि करहु किन आंखिन ओटा देखत छोट खोट नृप ढोटा (राम0 (बाल)–तुलसी, 286); नैननि ओट होत पल एकौ, मैं मन मरति अतंक (सू0 सा0–सूर, 1223); मुझे भी अपने पुत्र से प्रेम है, मैं भी उसे आंख की ओट नहीं करना चाहता (मा0–कौशिक, 52)।

(2) यत्नपूर्वक छिपाकर रखना। प्र0 आंख की ओट कर उसने अपने बेटे की रक्षा की।

आंख (आंखों) की किरकिरी—कष्टदायक व्यक्ति या बात। प्र0 भद्दी तरह अदा किया हुआ छोटा पार्ट भी नाटक के लिए आंख की किरकिरी बन सकता है (भोर0–जग0 माथुर, 152)।

आंख (आंखों) की गंगा-जमुना—आंसुओं की धार। प्र0 उसकी आंखों की गंगा-जमुना उसकी दाढ़ी के जंगलों-बेलों में गुम हो रही थी (एक चादर0–बेदी, 140)।

आंख की चोट लगना—दे0 आंख का टोना लगना।

आंख (आंखों) की ठंडक—प्रिय व्यक्ति या वस्तु। प्र0 उसका सबसे छोटा बेटा ही उसकी आंखों की ठंडक है।

आंख की तपन बुझाना—देखने की तीव्र इच्छा की तुष्टि होना। प्र0 गहि बहियाँ हौं लैकै जैहौं, नैननि तपति बुझान दै (सू0 सा0–सूर, 892)।

आंख (आंखों) की पकड़ में आना—दिखलाई पड़ना। प्र0 कुछ क्षण देखते रहने के उपरान्त चांदी का वह गहना आंख की पकड़ में आ गया (मृग0–वृं0 वर्मा, 319)।

आंख की पट्टी खुलना—सजग होना, ज्ञान होना। प्र0 आंख की पट्टी नहीं तब भी खुली बिछ रहे हैं जाल अब भी नित नये (चुभते0–हरिऔध, 136)।

आंख (आंखों) की पुतली—दे0 आंख का उजाला।

आंख की पुतली करना—दे0 आंख का सुरमा बनाना।

आंख (आंखों) की पुतली चढ़ जाना, -फिर जाना—मरते समय पुतली का स्थिर होना और ऊपर हो जाना, मरणासन्न होना। प्र0 एक क्षण में आँखों की पुतलियाँ फिर गयीं (प्रेमा0–प्रेमचंद, 365)।

आंख (आंखों) की पुतली फिर जाना—दे0 आं की पुतली चढ़ जाना।

आंख (आंखों) की पुतली बनाना—दे0 आंख का सुरमा बनाना।

आंख (आंखों) की पुतली समझना—दे0 आंख का सुरमा बनाना।

आंख की बदी भौंह के आगे कहना—दे0 आंख का गिला भौंह के आगे कहना।

आंख (आंखों) की मणि बनाना—दे0 आंख का सुरमा बनाना।

आंख की राह दिल में आना—देखते ही मोहित कर लेना। प्र0 वह तो आँखों की राह दिल में आ गया, मैं कुछ भी न कर सका।

आंख की रोशनी—दे0 आंख का उजाला।

आंख (आंखों) की सूई निकल जाना—हर समय के कष्ट से छुटकारा मिलना। प्र0 हरदयाल यहाँ से गया, मेरी आँखों की सूई निकल गयी।

आंख (आंखों) की सूई निकालना—किसी कठिन काम के अधिकांश भाग के पूरा हो जाने पर शेष थोड़ा करके गौरव का भागी बनना। प्र0 वे किसी काम के नहीं होते××जो कि चाहेंगे जायं सब कुछ बन पर निकालेंगे आंख की सूई (बोल0–हरिऔध, 37)।

आंख (आंखों) की सूइयां निकालना बाकी होना—किसी बड़े काम का बहुत थोड़ा भाग करने को बाकी रहना।

आंख (आंखों) की हया—किसी का लिहाज, आंतरिक लाज-शर्म। प्र0 मुखदेई के आँखों की हया गायब हो गयी है।

आंख (आंखों) के आगे, -सामने—(1) उपस्थिति में। प्र0 इतनोई सुख कमलनयन मेरी अंखियनि आगैं खेलौ (सू0 सा0–सूर, 3591); हरि मम आंखिन आगे डोलौ (भा0 ग्रं0 (2)–भारतेन्दु, 783)।

(2) जीवन काल में। प्र0 यहु सबु भा इन आंखिन्ह आगे (राम0 (अ) –तुलसी, 528); मेरी आंखों के आगे सब हो-हवा जाए तो गंगा नहाऊँ (सारा0–यादव, 197)।

आंख के आगे अंधेरा छा जाना, -सामने अंधेरा छा जाना—(1) अत्यंत आपद जनक स्थिति का आ पड़ना। प्र0 राशिवर्ष ठीक हो जाने पर जब लेनदेन की बातें होने लगतीं तब कृष्णचंद्र की आंखों के सामने अंधेरा छा जाता था (सेवा0–प्रेमचंद, 7)।

(2) संसार सूना दिखलाई पड़ना। प्र0 जब से हरि ह्याँ से सिधारे तब से हमारी आंख आगे अंधेरा हो रहा है (प्रेम0–ल0 ला0; 267)।

(3) कमजोरी आदि के कारण चक्कर आ जाना। प्र0 पेट में लगी हुई लात से शशि एक बार 'हुक' करके रह जाती है, उसकी आंखों के आगे अंधेरा छा जाता है (शेखर0(2)–अज्ञेय, 186)।

आंख के आगे आना—अनुभव में आना, प्रमाणित होना। प्र0 हाँ, जो सुना करता था, वह आंखों के आगे आया (रंग0–प्रेमचंद, 317)।

आंख (आंखों) के आगे घूमना, -नाचना, -फिरना, -रहना, -के सामने घूमना, -नाचना, -फिरना, -लगे रहना, में घूम जाना—(1) आंख के सामने हूबहू रूप खड़ा हो जाना। प्र0 चित्रलेखा के स्वर का संगीत उसके कानों में गूंज रहा था, उसके सौन्दर्य की आभा उसकी आंखों के आगे नाच रही थी (चित्र0–भग0 वर्मा, 52)।

(2) ध्यान में आना, स्मृति में बना रहना। प्र0 जल-थल-नभ-कानन-घर-भीतर, जहँ लौं दृष्टि पसारौ री तितही तित मेरे नैननि आगैं निरतत नंद-दुलारौ री (सू0 सा0–सूर, 753); लगेइ, रहत मेरे नैननि आगे राम लषन अरु सीता (गीता0 (अ) –तुलसी, 53); स्वयं भारतेन्दु जी की दो मूर्तियाँ आज तक आंखों के सामने घूमती हैं (राधा0 ग्रंथा0–राधा0 दास, 362); तू हरदम मेरी आंखों के सामने फिरती रहती थी (गोदान –प्रेमचंद, 317)।

आंख (आंखों) के आगे नाचना—दे0 आंख के आगे घूमना।

आंख (आंखों) के आगे फिरना—दे0 आंख के आगे घूमना।

आंख के आगे रहना—दे0 आंख के आगे घूमना, करना।

आंख (आंखों) के इशारे पर चलना—आज्ञाकारी होना, कहे अनुसार करना। प्र0 कृष्णकुमार बीबी की आंखों के इशारों पर चलता है।

आंख (आंखों) के इशारे पर नाचना—पूरी तरह वश में होना। प्र0 वह तो बीबी की आंखों के इशारों पर नचता है।

आंख के कोये बिलट जाना—(1) मर जाना। प्र0 लुट गये पिट उठे गये पटके आंख के भी बिलट गये कोये (चुभते0—हरिऔध, 108)।

(2) खूब दुर्दशाग्रस्त होना। प्र0 दे0 प्रयोग (1)।

आंख के डोरे—आंख के कोयों पर की बारीक लाल नसें।

आंख (आंखों) के तले आना, -नीचे आना—(1) देखने में आना। प्र0 और पतित आवत न आंखि-तर देखत अपनौ साजौ (सू0 सा0—सूर, 96)।

(2) अच्छा या सुंदर लगना। प्र0 देव देखि तव बालक दोऊ अव न आंखि तर आवत कोऊ (राम0 (बाल)—तुलसी, 297); वृषभानुसुता हित मत्त मनोहर औरहिं डीठि न आनत हैं (केशव0—केशव, 34)।

आंख (आंखों) के तारे हिलना—प्रेम होना। प्र0 वे उतारे न चित्त से उतरे हिल सके जिन से आंख के तारे (चोखे0—हरिऔध, 35)।

आंख (आंखों) के नीचे आना—दे0 आंख के तले आना।

आंख (आंखों) के नीचे से गुजरना—सामने होना, देखने में आना। प्र0 यह हिसाब यदि बाबूजी की आंखों के नीचे से गुजरता तो यह भूल न रह जाती।

आंख के सामने—दे0 आंख के आगे।

आंख के सामने अंधेरा छा जाना—दे0 आंख के आगे अंधेरा छा जाना।

आंख (आंखों) के सामने घूमना—दे0 आंख के आगे घूमना।

आंख (आंखों) के सामने नाचना—दे0 आंख के आगे घूमना।

आंख (आंखों) के सामने फिरना—दे0 आंख के आगे घूमना।

आंख के सामने फिरा करना—हर समय ध्यान में बना रहना। प्र0 मगर अभी तक जोहरा की सूरत उनकी आंखों के सामने फिरा करती है (गबन—प्रेमचंद, 329)।

आंख (आंखों) के सामने लगे रहना—दे0 आंख के आगे घूमना।

आंख (आंखों) को खटकना—अप्रिय लगना। प्र0 उसका इस तरह उघाड़े बदन घूमना मेरी आंखों को बहुत खटकता है।

आंख (आंखों) को ठंढक पहुंचना—आंखों को अत्यन्त सुन्दर लगना। प्र0 कैसा प्यारा बच्चा है, देखकर आंखों को ठंढक पहुंच गयी।

आंख (आंखें) खटकना—आंखों में पीड़ा होना। प्र0 आंख में न जाने क्या पड़ गया है, तब से खटक रही है।

आंख (आंखें) खुलना—(1) आंखों में ठंढक आना, मजा आ जाना। प्र0 तुमने गिलास मेज पर रख दिया। जरा पियो, आंखें खुल जायेंगी (मान0 (7)—प्रेमचंद, 40)।

(2) ज्ञान होना, सचेत होना। प्र0 नीलू की मां न जायेगी तो लोगों की आंखें न खुलेंगी (वौने0—रां0 रा; 40)।

(3) आश्चर्यचकित हो जाना। प्र0 बाग-बगीचे, शानदार सड़कें, बिजली की चकाचौंध पैदा कर देने वाली—रोशनी! देखकर आंखें खुल जायेंगी। (भूले0 —भग0 वर्मा, 307)।

(4) नींद से जगना। प्र0 अचानक भाई साहब की दहाड़ से मेरी भी आंख खुल गयी (सारा0—यादव, 218)।

आंख (आंखें) खुलवाना—(1) आंख बनवाना। प्र0 आंख खुलवाना जरूरी हो गया है, उसके बिना काम नहीं चलेगा।

(2) मुसलमानों में विवाह की एक रस्म।

आंख (आंखें) खुली की खुली रह जाना—(1) मृत्यु को प्राप्त होना। प्र0 कुंदन लाल की आंखें खुली की खुली रह गयीं।

(2) आश्चर्य-चकित रह जाना। प्र0 उनके यहां की शान-शौकत देखकर आंख खुली की खुली रह गयी।

आंख (आंखें) खुली रखना—सचेत और जागरूक रहना। प्र0 चाहिये आंखें खुली रखना सदा, दुख सकेंगे टल नहीं आंखें ढके (चुभते0 —हरिऔध, 39)।

आंख (आंखें) खून की बोटी बन जाना—(1) बहुत रोने के कारण आंखें लाल हो जाना। प्र0 कहां की ऐसी मुसीबत पड़ गयी कि आंखें खून की बोटी बन गयीं? (आजाद0 —प्रेमचंद, 204)।

(2) बहुत क्रोधित होना। प्र0 बख्तावरसिंह को देखते ही वे बावले-से हो गये, आंखें खून की बोटी बन गयीं।

आंख (आंखें) खोलकर गड्ढे में गिरना—जान-बूझकर बुरा या अहितकर काम करना। प्र0 मेरी बुद्धि भ्रष्ट हो गई है, मैं आंखें खोलकर गढ़े में गिर रहा हूं (रंग0 (1) —प्रेमचंद, 139)।

आंख (आंखें) खोलकर देखना—अच्छी तरह देखना, जागरूक होकर देखना। प्र0 देखो खोलकर आंख, सुनो खोलकर कान (बुद्ध0—बच्चन, 44)।

आंख खोलना—(1) किसी को सचेत करना, ज्ञान देना या होना। प्र0 सतगुर को महिमा अनंत, अनंत किया उपगार, लोचन अनंत उघाड़िया, अनंत दिखावणहार (कबीर ग्रं0—कबीर, 1); अस्तु अस्तु साथी सब बोले। अंध जौ अहै नैन विधि खोले (पद0 —जायसी, 15/10); यद्यपि अनुवाद अच्छा नहीं बना, तथापि योरपवालों की आंखें खोल दी (सा0 सी0 —महा0 द्वि0., 43)।

(2) जन्म पाना। प्र0 यही तो था चारों तरफ का वातावरण जिसमें हरिश्चन्द्र ने आंखें खोली थीं और अपने कार्यभार में रत हुए थे (सा0 जि0 —ल0 प्र0 सु0; 12)।

(3) पशुओं के बच्चों का जन्म के 3-4 दिन बाद आंख खोलना।

(4) दे0 आंख खुलवाना।

आंख (आंखें) गड़ना—(1) किसी वस्तु को पाने के लिए नजर लगी होना। प्र0 जाहु भले हो कान्ह, दान अंग-अंग कौ मांगत हमरो जोबन रूप, आंखि इनकी गड़ि लागत (सू0 सा0—सूर, 2079)।

(2) दृष्टि जमना। प्र0 उसने मुड़कर दड़े पर आंखें गड़ाई (कम0-कम0; 45)।

(3) आंखों में पीड़ा होना। प्र0 आज कई दिनों से मेरी आंख गड़ रही है।

(4) आंख धंसना। प्र0 वह तो इतनी दुबली हो गयी है कि आंखें एकदम गड़ गयी हैं।

आंख (आंखें) गड़ाकर देखना—बहुत ध्यानपूर्वक देखना। प्र0 आहट की दिशा में आंखें गड़ाकर देखने लगे (मृग0–वृं0 वर्मा, 26)।

आंख (आंखें) गड़ाना, -गाड़ना—(1) दृष्टि जमाना, टकटकी बंधना। प्र0 कुमारगिरि ने चित्रलेखा पर अपनी आंखें गड़ा दीं (चित्र0–भग0 वर्मा, 49)।

(2) प्राप्ति की उत्कट इच्छा होना। प्र0 यह आपको चूसकर निस्तत्व बनाकर, जयपुर का पल्ला पकड़ेगा–उन्हें निचोड़ कर मेवाड़ पर आंख गड़ायेगा (विप0–प्रेमी, 97)।

आंख (आंखें) गड़ाये बैठना—किसी वस्तु को पाने की तीव्र इच्छा लिए प्रतीक्षा करना। प्र0 वे तुम्हारे मकान पर आंखें गड़ाये बैठे हैं।

आंख (आंखें) गरम करना—किसी की सुंदरता देखकर आनंद पाना। प्र0 हाँ हाँ, मेले में जरूर जाओ भाई। बहुत-सी कामिनियाँ आयेंगी, आंखें गरम करना।

आंख (आंखें) गाड़ना—दे0 आंख गड़ाना।

आंख (आंखें) घुलना—आंख मिलना। प्र0 दोनों की आंखें घुलीं, पुलक छलक पड़ा।

आंख (आंखें) घूमते ही—तनिक ध्यान हटते ही। प्र0 हम सभी तो वहाँ खड़े थे। जरा आंख घूमी और कोई सूटकेस लेकर चम्पत हो गया।

आंख (आंखें) चकमका उठना—तेज प्रकाश आदि के कारण दृष्टि का अस्थिर हो जाना। प्र0 अचानक मोटर की इतनी तेज रोशनी पड़ी कि हमारी आंखें चकमका उठीं।

आंख (आंखें) चकाचौंध होना -चौंधिया जाना—(1) किसी वस्तु की ऊपरी टीमटाम का बहुत आकृष्ट करना जिसके कारण और कुछ जँचे ही नहीं। प्र0 चाकचिक्य ने लोगों की आंखें चौंधिया दी हैं, सादी चीज पर ठहरतीं नहीं (पद्म0 के पत्र–पद्म0 शर्मा, 122)।

(2) तेज प्रकाश के कारण आंखों का झंपी जाना। प्र0 उनकी आभा से आंखें होतीं चकाचौंध (सो0–बच्चन, 270)।

आंख (आंखें) चढ़ना—(1) नशे या नींद से पलकों का चढ़ जाना। प्र0 कुछ हमें भी गया नशा-सा चढ़ देख उसकी चढ़ी-चढ़ी आंखें (बोल0–हरिऔध, 36)।

(2) गुस्से में आना। प्र0 इधर तो उनकी आंखें और भी चढ़ी रहती हैं (तितली-प्रसाद, 54)।

(3) मृत्यु के पूर्व पुतलियों का ऊपर की ओर स्थिर होना। प्र0 चढ़ गई आंखें, पलक थिर हो गई ढल पड़ा आंसू ढलक पड़ी गरदन (बोल0 –हरिऔध, 136)।

आंख (आंखें) चढ़ाना—गुस्सा करना। प्र0 कापर नैन चढ़ाए डोलति. ब्रज में तिनुका तोर (सू0 सा0 –सूर, 928); इस पर लड़की कुछ आंखें चढ़ाकर 'धत्' कहकर दौड़ गई (गु0 कहा0–गुलेरी, 19)।

आंख (आंखें) चमकना—(1) खुश होना। प्र0 मुझे हंसते-खेलते देखकर उसकी आंखें चमकने लगती थीं (सु0 सु0 –सुदर्शन, 71)।

(2) तेज रोशनी के कारण दृष्टि स्थिर न रह सकना।

आंख (आंखें) चमकाना, -झपकाना—आंखों से इशारा करना, आंख मटकाना। प्र0 वह कोठे के ऊपर खड़ी आँखें चमकाती रही।

आंख (आंखें) चरने जाना—सामने की चीज पर नजर न होकर कहीं और होना। प्र0 आंख चरने न जो गई होती दुख तले आंख के न क्यों आता (बोल0 –हरिऔध, 53)।

आंख (आंखें) चलना—आंख से आंसू बहना। प्र0 हा! करुनामय नाथ हो! केसी! कृष्ण मुरारि। फाटि हिय दृग चह्यौ (नंद0 ग्रंथा0 –नंद0; 163)।

आंख (आंखें) चलाना—आंखों से इशारा करना। प्र0 कैसी आंखें चलाती है। अंगों को कितना फड़काती है (मृग0 –वृं0 वर्मा, 146)।

आंख (आंखें) चार करना या होना—(1) सामना करना या होना। प्र0 रानी-बहिना और मिश्रजी की आंखें फिर चार हुई (परती0 –रेणु, 491)।

(2) प्रेमारंभ होना। प्र0 वह कौन घड़ी थी जिसमें ये आंखें चार हुई थीं (नूर0 –मक्त, 27)।

आंख (आंखें) चीर कर देखना—ध्यान से देखना, घूरना। प्र0 इस तरह आंख चीर कर क्या देख रहे हो?

आंख (आंखें) चुरा जाना—छिपकर निकल जाना या सामना न करना। प्र0 मेरे सामने कहाँ आया, आंखें चुरा गया।

आंख (आंखें) चुराकर—छिपकर। प्र0 सूर स्याम वा छवि कौं नागरि निरखति नैन चुराए (सू0 सा0–सूर, 2773); जब अटल नृत्य कर रहा था तब वह आँख चुरा-चुरा कर लाखी की ओर देखता था (मृग0–वृं0 वर्मा, 11-12)।

आंख (आंखें) चुराना, -छिपाना—(1) कतराना-सामने न आना। प्र0 प्रीतिपगी अंखियानि दिखाय कै हाय अनीत सु दीठि छिपैयै (घन0 कवित्त –घना0, 19); गांव का साहूकार भी पतिव्रता स्त्रियों की भांति आंखें चुराने लगा (मान0(8)–प्रेमचंद, 6)।

(2) लज्जा से बराबर न ताकना। प्र0 अंगिया नील, माँड़नी राती निरखत नैन चुराई (सू0 सा0–सूर, 1671); कोई विश्वास करेगा कि जो आंधी पानी में नहीं रुका वही समर आज दो हफ्तों से शाखा नहीं गया है और अपने ही साथियों से आंखें चुराता घूम रहा है? (सारा0–यादव, 8)।

(3) आकृष्ट कर लेना। प्र0 चुराती किसकी आंखें न थीं, झलकती मुख पर सहज उमंग (मर्म0–हरिऔध, 116)।

आंख (आंखें) चूकना—असावधानी होना। प्र0 चूक अपनी कब समय पर देख ली दीठ सब दिन चूकती ही तो रही (चुभते0–हरिऔध, 58)।

आंख (आंखें) चौंधिया जाना—दे0 आंख चकाचौंध होना।

आंख (आंखें) छत से लगना—(1) प्रतीक्षा करते रात बीत जाना।

प्र0 सोच में रात बीत जाती है आंख छत से लगी ही रहती है (चुभते0—हरिऔध, 15)।

(2) टकटकी लगना। प्र0 आंखें छत से लगाये वे सारी समस्या पर विचार कर रहे थे।

(3) आंख टंग जाना। प्र0 मुझसे पानी मांगा और इसके पहले कि मैं पानी दूं, उनकी आंखें छत से लग गयीं।

आंख (आंखें) छलकना, -छलछलाना, -डबडबाना—आंखों में आंसू भर आना। प्र0 उन बातों को सोच न कब छलके नयन (वैदेही0—हरिऔध, 107)।

आंख (आंखें) छलछलाना—दे0 आंख छलकना।

आंख (आंखें) छिपाए न छिपना—मन का भाव आंखों से प्रकट होना, छिपाए न छिपना। प्र0 उसके ना-ना करने से क्या होता है, उसकी आंखें छिपाए नहीं छिपती हैं।

आंख (आंखें) छिपाना—दे0 आंख चुराना।

आंख (आंखें) जमना या जमाना—(1) नजर स्थिर होना या स्थिर नजर से देखना। प्र0 उत्तर में मैंने मुस्करा दिया और आंखें झील पर जमा दीं (अजय0-देव0, 105)।

(2) लेने की नियत होना। प्र0 किसलिये माला हिलाते तब रहे माल पर ही जब जमी आंखें रहीं (चुभते0—हरिऔध, 124)।

(3) अच्छा लगना। प्र0 उनकी आंखें खेमों की नक्काशी पर जम गयीं।

आंख (आंखें) जमीन में गड़ जाना, -से लग जाना, -सिली रहना—शर्मा जाना या शर्माकर नीचे धरती की ओर एकटक देखना। प्र0 उनकी ग्रीवा झुकी हुई थी, आंख धरती में गड़ी हुई थीं (वाण0—ह0 प्र0 द्वि0, 137)।

आंख (आंखें) जमीन से लग जाना या लगाना—दे0 आंख जमीन में गड़ जाना।

आंख (आंखें) जमीन से सिली रहना—दे0 आंख जमीन में गड़ जाना।

आंख (आंखें) जलना—(1) कष्ट होना, क्रोध होना। प्र0 जे दृग सिराए घनआनंद दरस-रस, ते अब अमोही दुख-ज्वाला जारियत है (घन0 कवित्त0—घना0; 226)।

(2) ईर्ष्या होना। प्र0 आंख जल जाय देख-देख जिसे, आंख का जल उसे बना लें क्यों (बोल0—हरिऔध, 42)।

(3) आंखों में पीड़ा होना। प्र0 जी मतला रहा है, बंद-बंद टूट रहा है, आंखें भी जलती हैं (आजाद0—प्रेमचंद, 178)।

आंख (आंखें) जाना—(1) अंधा होना। प्र0 जो तब कैसे चली जाती नहीं, जब किसी की आंख ही जाती रही (चोखे0—हरिऔध, 55)।

(2) दिखलाई पड़ना। प्र0 चारों ओर जहां तक आंखें जातीं, भीड़ ही भीड़, आदमी ही आदमी, सिर ही सिर (गोली—चतुर0, 34)।

(3) ध्यान आकृष्ट होना। प्र0 और कुछ शायद यह भी था कि रेखा की चर्चा से रियासत में लोगों की आंखें उसकी ओर जायेंगी, कुछ तनाव पैदा होगा और रेखा फिर उससे साहाय्य चाहेगी (नदी0—अज्ञेय, 53)।

आंख (आंखें) जुड़ना—टकटकी लगी होना। प्र0 केतु-पट अंचल सदृश हैं उड़ रहे, कनक-कलशों पर अमर दृग जुड़ रहे (साकेत—गुप्त, 3)।

आंख (आंखें) जुड़ाना—देखकर तृप्ति होना। प्र0 बीच-बीच में चलती पालकी का पर्दा उठाकर पालकी के साथ-साथ घोड़े पर चलते हुए अपने 'बांके सिपहिया' को देखकर वह अपनी आंखें जुड़ा लेती थी (सात0—नागर, 134)।

आंख (आंखें) जोड़ना—(1) नजर मिलाना। प्र0 सुनहु सूर सहजहि की धौं रिस, मो सौं लोचन जोरति हौ (सू0 सा0—सूर, 2817); जोरि नयन निरलजवा कत मुसकाउ (रहीम कवि0—रहीम, 52)।

(2) प्रेमपूर्ण दृष्टि से देखना। प्र0 भौंह, उंचै, आंचरु उलटि, मौरि मोरि, मुंह मोरि। नीठि नीठि भीतर गई, दीठि दीठि सौं जोरि (बिहारी रत्ना0—बिहारी, 242); भौंह नचाइ प्रेम चितवन लखि हंसि मुसुकाइ नैन रह्यो जोरि (भा0 ग्रं0 (2)—भारतेन्दु, 280)।

आंख (आंखें) झपना, -झपकना—(1) नींद आना। प्र0 रात-भर वहीं लेटा रहा, एक पल आंख नहीं झपकाई (कम0-कम0 66)।

(2) आंखें बंद होना। दे0 प्रयोग 1।

आंख (आंखें) झपकना या झपकाना—(1) दे0 आंख झंपना।

(2) दे0 आंख चमकाना।

आंख झुक जाना, -झेंपना—शर्मिन्दा होना। प्र0 आदमी ऊंचा उठ जाता है पर उसकी आंखें झुकी रहती हैं (चेतन—अश्क, 165)।

आंख (आंखें) झेंपना—दे0 आंख झुक जाना।

आंख (आंखें) टंग जाना—(1) मृत्यु के पूर्व पुतलियों का ऊपर चढ़ जाना एवं स्थिर हो जाना। प्र0 जी हमारा था बहुत दिनों से टंगा, आज आंखें भी हमारी टंग गईं (चोखे0—हरिऔध, 33)।

(2) स्थिर दृष्टि से देखना। प्र0 जो नेत्र अभी तक जयाश्व पर टिके हुए थे, वे सब फिर चर पर टंग गये (देवकी0—रां0 रा0, 70)।

आंख टिकना, -ठहरना, -थिराना—(1) दृष्टि का स्थिर रह पाना। प्र0 तरुनि गईं चकचौंधि कैं, नहीं नैन थिराहीं (सू0 सा0—सूर, 2835); अबकी बार शेखर ने आंखें नीची कर लीं—व्यथा के उस अभिमान के आगे उसकी आंख नहीं टिकी (शेखर0 (2) अज्ञेय, 124)।

(2) पसंद आना। प्र0 अरे मन्नौतियों की बहू है मेरी! बेटे की कहीं आंख भी टिकती थी (डार0 कृ0 सो0 37)।

आंख (आंखें) टिमटिमाना—झपकी लेना। प्र0 बुढ़ऊ कपड़ों की निगरानी करने के बदले आंखें टिमटिमा रहे हैं।

आंख (आंखें) टूटी पड़ना—बहुत नींद आना। प्र0 मेरी आंखें तो टूटी पड़ रही हैं (मृग0—वृ0 वर्मा, 460)।

आंख (आंखें) टेढ़ी करना या होना—(1) नाराज होना। प्र0 कर सकें, हम भी भला ही तो करें, आंख भौं टेढ़ी करें तो क्यों करें (बोल0

–हरिऔध, 37);

(2) अंतर पड़ना, प्रतिकूल होना। प्र0 एक शुक्र की आख टेढ़ी थी सो उसे यह मरकत आराम कर लेगा (पैंतरे–अश्क, 148)।

आंख टेढ़ी करवाना या कराना—नाराज करना। प्र0 क्यों मामी की आंखें टेढ़ी करवाती हो?

आंख (आंखें) टोरना—शर्मिन्दा होना। प्र0 मुझे देखते ही सुजाता ने आंखें टोर लीं।

आंख (आंखें) ठंडी करना या होना, -सिराना—किसी चीज को देखकर सुख होना। प्र0 सूरदास धनि नंद की घरनी, देखत नैन सिराइ (सू0 सा0–सूर, 651); कवहुं नयन मम सीतल ताता (राम0 (सुं) –तुलसी, 809); जे दृग सिराए घनआनंद दरस-रस, ते अव अमोही दुख ज्वाला जारियत हैं (घन0 कवित्त–घना0; 226); ऐसी-ऐसी चीजें कि देखकर आंख ठण्ढी हो जायं (मान0 (2)–प्रेमचंद, 61)।

आंख (आंखें) ठहरना—(1) स्थिर दृष्टि से देखना। दे0 आंख टिकना।

(2) अत्यंत सुंदर वस्तु को देखकर दृष्टि का चकाचौंध हो जाना। प्र0 पच्चीकारी ऐसी हो रही है कि आंखें नहीं ठहरतीं (गोदान–प्रेमचंद, 235)।

(3) कोई वस्तु श्रेष्ठ लगना। प्र0 वह कन्या जैमाल कर लिये, चारों ओर दृष्ट किये वीच में फिरती है पर किसी पै दृष्ट उसकी नहीं ठहरती (प्रेम0 –ल0 ला0; 229)।

आंख डकर-डकर करना, आंख ढकर-ढकर करना—दुर्वलता या उपवास के कारण आंखों का वड़ी-वड़ी लगना। प्र0 महीने भर से लड़का विस्तर पर पड़ा है, आंखें डकर-डकर करने लगी हैं।

आंख (आंखें) डवडवाना—दे0 आंख छलकना।

आंख (आंखें) डालना—(1) प्रेम करना, ध्यान में रखना। प्र0 सौदागर की लड़की आंखें नृपकुमार पर डाले (नूर0–मक्त, 61)।

(2) किसी स्थिति पर विचार करना। प्र0 हुए उत्तेजित मन के भाव शान्त वन जाते हैं तत्काल, याद कर मानवता का मंत्र, लोक नियमन पर आंखें डाल (वैदेही0 –हरिऔध, 25)।

(3) ध्यान या महत्त्व देना। प्र0 जिसने तुम्हारी वुराई पर आंख न डाली, तुमको देवता समझा××हाय! तुमने उसी देववाला को छोड़ा (ठेठ0 –हरिऔध, 52-53)।

(4) पाने की इच्छा करना। प्र0 हर किसी की चीजों पर आंखें डालना ठीक नहीं।

(5) देखना। प्र0 तुमने तो यूं ही जरा आंखें डालीं, उससे क्या होगा, ठीक से देखो।

आंख ढकर-ढकर करना—दे0 आंख डकर-डकर करना।

आंख (आंखें) तरसना—दर्शनों के लिये व्याकुल होना। प्र0 अजी साहव, आंखें तरस गयीं पर आप की झलक तक न मिली।

आंख (आंखें) तरेरना—क्रोधपूर्ण दृष्टि से देखना। प्र0 मुनि लछिमन विहसे वहुरि नयन तरेरे राम (राम0 (वाल)–तुलसी, 284); मुन्नी उसके पास से दूर हट गयी और आंखें तरेरती हुई बोली—कर चुके दूसरा उपाय (मान0 (1)–प्रेमचंद, 146);

आंख (आंखों) तले न आना, -लाना—तुच्छ समझना, अच्छा न लगना। प्र0 कोई चीज तुम्हारी आंखों-तले नहीं आती तो मैं क्या करूं।

आंख (आंखों) तले न लाना—दे0 आंख तले न आना।

आंख तिरछाना—तिरछी नजर से देखना। प्र0 तू वैठी-वैठी आंखें तिरछा रही है, यह क्या मेरी नजरों से छिपा है?

आंख (आंखें) तृप्त करना या होना—देख कर सुख पाना या होना। प्र0 तुव वदन देखे विना ये, तृप्त होत न नैन (सू0 सा0–सूर, 2619)।

आंख (आंखें) थिराना—दे0 आंख टिकना।

आंख (आंखें) दवाना—आंख से इशारा करना। प्र0 तुम आंखें दवाकर क्या कहना चाह रहे थे, वोलो?

आंख (आंखें) दिखाना—गुस्सा करना। प्र0 वहुत भांति तिन्ह आंखि देखाए (राम0 (वाल)–तुलसी, 297); मकुआ मरंगी अव हिलसी हरामजादे, लावर दगैल स्यार आंखिन दिखाये तैं (ठाकुर0–ठाकुर, 27); मैंने तो निश्चय कर लिया है कि अगर मुझे कभी आंखें दिखायीं तो मैं भी इन्हें मजा चखा दूंगी (मान0 (7)–प्रेमचंद, 42)।

आंख दुखनें आना—दे0 आंख आना।

आंख देकर देखना—एकटक देखना। प्र0 रहयहु देखि दृग दै कहा तुहि न लाज कछु घूत। मैं वेटी वृषभानु की तूं अहीर को पूत (जग0–पद्माकर, 64)।

आंख (आंखें) देखना—(1) गुस्सा या रोव सहना। प्र0 देख लें आंख क्यों किसी की हम पड़ गये भीड़ क्यों कुढ़ें कांखें (वोल0–हरिऔध, 38)।

(2) हालत देखना, रीति-नीति जानना। प्र0 मैंने सवकी आंखें देख ली हैं, वेकार लोगों का गुणगान न करो।

आंख (आंखें) देना—(1) ध्यान देना। प्र0 समय और आंखें हमीं हैं न देते (चुभते0–हरिऔध, 187)।

(2) अज्ञान दूर करना। प्र0 उस परम कृपालु ने आंखें दीं, मैं अज्ञानांधकार से मुक्त हो सका।

आंख (आंखें) दौड़ाना—(1) ध्यान देना। प्र0 दौड़ में हम हैं वहुत पीछे पड़े पर किसी ने आंख दौड़ाई नहीं (चुभते0–हरिऔध, 57)।

(2) चारों ओर देखना। प्र0 जरा आंख दौड़ाओ तो उस कुएं के पीछे वह पत्थर नजर आ जायेगा।

आंख (आंखें) धुली-धुलाई होना—दिल साफ होना। प्र0 उन्हें मैं अच्छी तरह जानती हूं, उनकी आंख धुली-धुलाई हैं।

आंख न उठाना—(1) कोई सम्पर्क न रखना, एकदम छोड़ देना। प्र0 अवकी जान वची तो शराव की ओर आंख न उठाऊंगा (मान0 (3) –प्रेमचंद, 194)।

(2) ध्यान न देना, आकृष्ट न होना। प्र0 इस विधुर जीवन में मैंने किसी स्त्री की ओर आंख तक नहीं उठाई (गवन–प्रेमचंद, 38)।

(3) अत्यंत व्यस्त होना। प्र0 सुबह से टेबुल पर बैठा हूँ, आंख उठाने तक की फुर्सत नहीं मिली।

(4) दे0 आंख ऊंची न होना।

आंख न खोलना—बेहोश रहना। प्र0 आज तीन दिन से उसने आँख नहीं खोली है।

आंख न झिपना—लज्जित न होना। प्र0 मुझे ताज्जुब इस बात का है कि उसकी आंखें तक नहीं झिपीं, वैसे ही खड़ा-खड़ा देखता रहा।

आंख न भाना—बिलकुल पसंद न होना। प्र0 सुन बेटा, मैं तो तुम्हारे बहनोई को आंख नहीं भाती (डार0—कृ0 सो0, 52)।

आंख न मारना—पलक न बंद करना, जागते रहना। प्र0 जिहि जल तृन, पसु दारु बूड़ि, अपने संग औरन पारत तिहि जल गाजत महावीर सब तरत आंखि नहिं मारत (ब्र0 सू0 को0)।

आंख न होना—(1) समझ न होना। प्र0 किसी में आंख ही न हो तो कोई क्या करे।

(2) केवल सुनी बात पर विश्वास कर लेना, खुद देखने-जानने की कोशिश न करना। प्र0 मां को आंखें नहीं हैं क्या जो हर बात मान लेती हैं।

आंख (आंखें) नचाना—चंचलतापूर्वक आंख की पुतली को इधर-उधर करना। प्र0 छैल नए नित रोकत गैल सु फैलत का पै अरैल भए हौ लै लकुटी हंसि नैन नचावत बैन रचावत मैन-तए हौ (घन0 कवित्त—घना0, 197)।

आंख (आंखें) निकलना—(1) बहुत अखर जाना; आश्चर्य में आ जाना। प्र0 अबकी बाजार बड़ा तेज रहा महतो, इसके अस्सी रुपए देने पड़े। आंखें निकल गयीं (गोदान—प्रेमचंद, 8)।

(2) दुर्बल या क्लांत होना। प्र0 अरविन्द की तो आंखें निकल आई हैं, न जाने कैसा लगने लगा है।

आंख (आंखें) निकालना—गुस्से से देखना। प्र0 हरिधन ने आंखें निकाल कर कहा—क्या मैं तुम लोगों से कम काम करता हूँ (मान0 (1)—प्रेमचंद, 140)।

आंख (आंखें) नीची करना या होना—लज्जित होना। प्र0 सुनि ऊधो के वचन रहीं नीचे करि तारे (सूर); या पवित्र कुल सामने सबको नीचो नैन (राधा0 ग्रंथा0—राधा, दास, 606); अबकी बार शेखर ने आंखें नीची कर लीं (शेखर0 (2)—अज्ञेय, 124)।

आंख (आंखें) नीली-पीली करना या होना—क्रोध करना या होना। प्र0 पी ली है हमने ऐसी भंग निराली, उलटे आंखें नीली पीली कर लेंगे (बोल0 —हरिऔध, 55)।

आंख पटपटा जाना, -पट्टम होना—आंख फूट जाना। प्र0 पट, पटाकर, न पट सकी जिससे क्यों गईं पटपटा न वे आंखें (चोखे0—हरिऔध, 35)।

आंख पट्टम होना—दे0 आंख पटपटा जाना।

आंख पड़ना—(1) दिखलाई पड़ना। प्र0 राम-लखन जब दृष्टि परे, री (गीता0 (बाल)—तुलसी, 76); ज्यों ही आंखें मुझ पर पड़ीं प्यार के साथ बोलीं (प्रिय0 —हरिऔध, 95)।

(2) लेने की इच्छा होना। प्र0 नयी किताबें उठाकर आलमारी में बंद करो, कहीं चाचा की आंख पड़ी तो बचना मुश्किल हो जायेगा।

(3) कुदृष्टि पड़ना। प्र0 लड़के को सबके सामने मत लाना, किसी की आंख पड़ जायगी।

आंख (आंखें) पथरा जाना—(1) प्रतीक्षा करते-करते थक जाना। प्र0 आंखें पथरा गईं न बरसे क्यों तुम ऐसे भए कठोर (राधा0 ग्रंथा—राधा0 दास, 21)।

(2) नैनों का गतिहीन हो जाना, मरणासन्न होना। प्र0 विनय ने नायकराम को देखा। नाड़ी का पता न था, आंखें पथरा गई थीं (रंग0 (2)—प्रेमचंद, 62)।

आंख पर अंधेरा छाना—अज्ञान में होना। प्र0 क्यों अंधेरा आंख पर है छा गया किस लिये हम लोग अंधे हो गये (चुभते0—हरिऔध, 130)।

आंख पर अटकना—आंखों को प्रिय लगना। प्र0 उसकी छवि मेरी आंखों पर अटक गयी है।

आंख (आंखों) पर आइए, -बैठिये—आदरपूर्वक आमंत्रित करना। प्र0 आप हमारी आंखों पर आइए हुजूर, ऐसी क्या बात है।

आंख (खों) पर चढ़ना—(1) बुरा लगना। प्र0 क्यों चढ़कर आंख आंखों पर चढ़ें (बोल0—हरिऔध, 38)।

(2) अच्छा लगना, ध्यान में बना रहना। प्र0 रामनाथ की लड़की मेरी आंखों पर चढ़ी हुई है—मैं उसी से ब्याह करूँगा।

आंख पर जोर डालना, -देना, -पड़ना—ऐसा कार्य करना जिससे आंखों पर श्रम पड़े। प्र0 कसीदे की कढ़ाई में आंखों पर बड़ा जोर पड़ता है।

आंख पर जोर देना—दे0 आंख पर जोर डालना।

आंख पर जोर पड़ना—दे0 आंख पर जोर डालना।

आंख (खों) पर ठीकरी रखना—(1) देखकर भी तरह दे जाना। प्र0 ठोकरें देख जाति को खाते, ठीकरी आंख पर अगर रख लें (चुभते0—हरिऔध, 44)।

(2) निर्लज्ज हो जाना। प्र0 तो कर लो, मैं क्या मना करती हूं? तुमने तो आंखों पर ठीकरी रख ली (मा—कौशिक, 61)।

(3) रुखाई करना। प्र0 सज्जन जब लालाजी के यहां से तस्वीरें लाने के लिए गया तो उन्होंने अपनी पहले वाली मिठास और मुरौवत को भुलाकर आंखों पर ठीकरी रख ली (बूंद0—नागर, 400)।

आंख (खों) पर तिनका रखना—जान-बूझकर परवाह न करना। प्र0 आप आंखों पर तिनका रखे बैठे हैं, उधर श्यामलाल सब लूटे जा रहा है।

आंख पर पट्टी बंधना या बांधना, -परदा पड़ना—बुद्धि भ्रष्ट होना, सामने होती हुई बात की ओर से भी अनजान बनना या होना। प्र0 किन्तु लोभ तथा दुर्वासना की पट्टी मेरी आंखों पर बंधी थी (राधा0 —ब्र0 स0, 62); काकी ने लड़कों को खिला-पिला दिया

मुझसे पूछा तक नहीं। क्या उसकी आंखों पर भी परदा पड़ गया है (मान0 (1) -प्रेमचंद, 13)।

आंख (आंखों) पर परदा डालना—(1) वस्तुस्थिति को ठीक न समझ पाना, अज्ञान में रहना। प्र0 महत्त्वाकांक्षा आंखों पर परदा डाल देती है (मान0 (1) –प्रेमचंद, 52)।

(2) जानबूझकर मूर्ख बनना। प्र0 रामलाल आंखों पर परदा डालकर बैठा है तो कोई क्या करे।

(3) मूर्ख बनाना। प्र0 उसने मेरी आंखों पर परदा डालकर जो मर्जी आई, करवा लिया।

आंखें (आंखों) पर परदा पड़ना—दे0 आंख पर पट्टी बंधना या बांधना।

आंख (खों) पर बैठाना, -रखना—बहुत आदर और यत्न करना। प्र0 हो चुके देस पर निछावर जो ×× चाहिये आंख पर उन्हें रख लें (चुभते0–हरिऔध, 5)।

आंख (खों) पर बैठिये—दे0 आंख पर आइए।

आंख (खों) पर पलकों का बोझ न होना—अपनों के लिए कुछ करने में कष्ट न होना, अपनों का बोझा उठाने में कष्ट न होना। प्र0 तुम भी कैसी बातें करती हो? तुम्हारे लिए कुछ भी कहने में तकलीफ कैसी! आंख पर पलकों का बोझ नहीं होता।

आंख (खों) पर रखना—दे0 आंख पर बैठाना।

आंख (खों) पलट जाना, -फिर जाना, -बदलना—(1) गुस्सा होना। प्र0 मुझे देखते साथ उनकी आंखें पलट गयीं।

(2) रुख बदल जाना। प्र0 भोला की आंखें कुछ ऐसी फिरीं कि उसे अब रग्घू में सब बुराइयां ही बुराइयां नजर आतीं (मान0 (7) –प्रेमचंद, 1)।

(3) परस्पर व्यवहार में न्यूनता आना। प्र0 ह ...ता का मिल रहा बदला तुम्हें बेतरह आंखें गई हैं क्यों बदल (चुभते0–हरिऔध, 24)।

आंख (खें) पसारना—(1) दूर तक देखना, अच्छी तरह देखना। प्र0 हरि त्यौं टुक दीठि पसारत ही अंगुरीन पसारन लोग लगै (केशव0 –केशव, 92); अतः आंखें पसार के देखो कि तुम्हारे जीवनकाल में पढ़ी-लिखी सृष्टि वाले पंच किस ओर झुक रहे हैं (प्र0 पी0 –प्र0 ना0 मि0; 156)।

(2) सप्रेम स्वागत करना। प्र0 उस दिन गांधीजी के स्वागत में सारा कलकत्ता आंखें पसारे था।

आंख (खें) पसीजना, में नमी आना, -घुलना—आंसू आ जाना। प्र0 इन्द्रा की आंखों में नमी आ गई थी (कम0–कम0, 87)।

आंख (खें) पहचानना—संकेत समझना। प्र0 मैंने झट उनकी आंखें पहचानीं और वहां से नौ-दो-ग्यारह हो गया।

आंख (खें) पाना—(1) आंखों की रोशनी मिलना। प्र0 मोतियाबिन्द का आपरेशन हो जाने से उसने अपनी आंखें फिर से पा लीं।

(2) प्रिय वस्तु मिलना। प्र0 उसने बेटे को क्या पाया मानों आंखें पा लीं।

(3) इशारा समझना। प्र0 उनकी आंखें पाते ही मैं उठ खड़ा हुआ।

आंख (खें) पिराना—किसी अप्रिय वस्तु को देखकर कष्ट पाना। प्र0 इसने नये फैशन के कपड़े पहने हैं तो तुम्हारी आंख क्यों पिराती है?

आंख (खें) फटना—(1) आश्चर्यचकित रह जाना। प्र0 बस, फटसी गईं बड़ी आंखें, मानो थीं नई जड़ी आंखें (साकेत–गुप्त, 162)।

(2) आंखों में बहुत पीड़ा होना। प्र0 मेरी तो आंखें फटी जा रही हैं। मुझसे अब और कसीदा न होगा।

आंख (खें) फड़कना—आंख की पलक का बार-बार हिलना जो शुभ या अशुभ का सूचक माना जाता है। प्र0 फरकहिं सुखद बिलोचन बाहू (राम0 (अ) –तुलसी, 584); आप मत जाइए, देखिए मेरी दहिनी आंख फड़कती है (राधा0 ग्रंथा0–राधा0 दास, 808)।

आंख (खें) फाड़कर देखना—(1) आंख खोलकर देखना। प्र0 वे कागज-पेंसिल लिये बड़े उत्कण्ठित चित्र से, आंखें फाड़े, आपके आने का मार्ग देख रहे हैं (पद्म पराग–पद्म0 शर्मा, 36)।

(2) आश्चर्य या भय से देखना। प्र0 अंतर ही किधौं अंतरही, दृग फारि फिरौं कि अभागनि भीरौं (घन0 कवित्त –घना0; 108); धुंधली आंखें फाड़कर बोले—आप भंग तो नहीं खा गये हैं (मान0 (1) –प्रेमचंद, 229)।

(3) क्रोध से देखना। प्र0 आप इस तरह आंखें फाड़कर क्यों देख रहे हैं?

आंख (खें) फिर जाना—(1) आंख उलट जाना। प्र0 देखते-देखते उनकी आंखें फिर गयीं, प्राण-पखेरू उड़ गये।

(2) दे0 आंख पलट जाना।

आंख (खें) फूट जाना—(1) घोर अज्ञान होना। प्र0 तौ का ऐसी आंखें फूट गईं के धरम-करम कछू नहीं लेखत? (झांसी0–वृ0 वर्मा, 150)।

(2) बुरा लगना, कुढ़न होना। प्र0 हां-हां, मैं गवाही करने को तैयार हूँ। मेरा नाम सबसे पहले लिखा दो। अंधे को देखकर मेरी तो अब आंखें फूटती हैं (रंग0 (2) –प्रेमचंद, 117)।

(3) सिलाई-पढ़ाई आदि कार्यों को बहुत अधिक करने से आंखों में कष्ट होना या ज्योति कम हो जाना। प्र0 कपड़े सीते-सीते मेरी आंखें फूट गयीं (मान0 (1) –प्रेमचंद, 97)।

(4) किसी रोग या चोट के कारण आंख जाती रहना। प्र0 सम्हालकर गुल्ली-डंडा खेलना, किसी की आंख न फूट जाय।

आंख फूलना—आंख आ जाना, दुखना। प्र0 है कमल फूलना भला लगता, आंख का फूलना नहीं भाता (चोखे0–हरिऔध, 55)।

आंख (खें) फेरना, -मोड़ना—(1) ध्यान हटाना। प्र0 सुनि री सखी दोष नहि काहू, हरि हित लोचन फेरे (सू0 सा0–सूर, 3807)।

(2) दृष्टिपात करना, प्रेम से देखना। प्र0 सुर, नर, मुनि, असुर नाग, साहिब तौ घनेरे, (पै) तौ लौं जौलौं रावरे न नेकु नयन फेरे (विनय0–तुलसी, 78)।

(3) सामना न करना, कतराना, उपेक्षा का भाव दिखलाना। प्र0 तुम्हारे बास्स और पार्टी के लोग मिलने पर भी आंखें फेर लेते हैं (धरती0 –रेणु, 450)।

(4) नाराज होना, पहले की-सी कृपा या स्नेह-दृष्टि न होना। प्र0 मां-बाप का मन इतना निठुर नहीं होता। हां, लड़के अलबत्ता जहां चार पैसे कमाने लगे कि मां-बाप से आंखें फेर लीं (गोदान –प्रेमचंद, 224)।

आंख (खें) फैलाकर देखना—(1) आश्चर्य से देखना। प्र0 उन्होंने आंखें फैलाकर परिषद्-भवन में उमड़ती उत्तेजित भीड़ को देखा (वैशाली0 (1) –चतुर0, 16)।

(2) दूर तक देखना। दे0 प्रयोग (1)।

आंख फैलाना—सचेत करना। प्र0 तुलसीदास ने सिर्फ सयानों की आंख फैलाई है, यानी महापुरुषों की नहीं (कुल्ली0 –निराला, 10)।

आंखें फोड़ना—(1) आंखों पर बहुत जोर डालना। प्र0 यहां रात-दिन आंखें फोड़नी पड़ती हैं×× तब कहीं यह विद्या आती है (मान0 (1) –प्रेमचंद, 79)।

(2) अंधा कर देना। प्र0 पिता के निष्ठुर आदेश के कारण कुणाल की आंखें फोड़ दी गयीं।

(3) ध्यान से देखना। प्र0 बहुत आंखें फोड़ीं पर मुझे तो कुछ भी नजर न आया।

आंख (खें) बन्द करना या होना—(1) अज्ञान में पड़े होना। प्र0 हम अंधकार में उजाला करते थे, बन्द आंखों को खोलते थे, सोतों को जगाते थे (चुभते0 (भू0) –हरिऔध, 2)।

(2) मर जाना। प्र0 मालूम नहीं, कब आंखें बंद हो जायं, फिर यह थाती किसके हाथ लगेगी, कौन जाने ? (मान0 (7) –प्रेमचंद, 27)।

(3) उदासीन होना, कोई ध्यान न देना। प्र0 उस सत्य से न इन्कार किया जा सकता था और न इसके प्रति आंखें बंद की जा सकती थीं (भूले0 भग0 वर्मा, 145)।

(4) बेहोश हो जाना। प्र0 देखो, इसने आंखें बंद कर ली हैं, जल्दी पानी लाओ।

आंख (खें) बंद करके—बिना सोचे-विचारे; बिना किसी प्रतिवाद के। प्र0 मैं तो आंखें बंद करके आपकी आज्ञा मानती हूं, मुझे सोचने-विचारने की क्या जरूरत।

आंख बचना—ध्यान न होना। प्र0 आंख बची माल यारों का।

आंख (खें) बचाना, -बरकाना—चोरी-चोरी इस प्रकार कुछ करना कि कोई देख न सके। प्र0 इती भीर हूं भेदि कै, कित हूं ह्वै, इत आइ। फिरै डीठि जुरि डीठि सौं सबकी डीठि बचाइ (बिहारी रत्ना0–बिहारी, 612); हरुए गवन नवेलिआ, डीठि बचाइ। पौढ़ी जाइ पलंगिआ, सेज बिछाइ (रहीम कवि0–रहीम, 44); मिस मालती उसकी आंख बचाकर कमरे से निकलने लगीं (गोदान–प्रेमचंद, 71)।

आंख बचे का चांटा खाना—तनिक गफलत होने से अपना अहित होना; एक खेल जिसमें असावधान होने पर चांटा लगाते हैं। प्र0 तुम हर वक्त असावधान रहोगे तो आंख बचे का चांटा खाओगे ही।

आंख (खें) बदलना—दे0 आंख पलट जाना।

आंख बनवाना या बनाना—शल्य-चिकित्सा द्वारा आंख का इलाज करवाना या करना।

आंख बरकाना—दे0 आंख बचाना।

आंख (खें) बरसना, -बहाना—खूब रोना। प्र0 तौ हमकौं होती कत यह गति, निसि दिन बरषति आंखी (सू0 सा0—सूर, 3827); वाके गुन जब चित चढ़ैं, बरसत नयन अपार (कुण्ड0 –गिरधर-दास, 10); आंखें संकेत से कहती हैं कि हमें कुछ न कहो, नहीं बरसने लगेंगी (कंकाल –प्रसाद, 38)।

आंख (खें) बराबर करना या होना—सामना करना। प्र0 देखते बार-बार हैं उनको, आंख होती नहीं बराबर है (बोल0–हरिऔध, 48)।

आंख बवा जाना—(1) मर जाना। प्र0 बुड्ढी की आंखें बवा गयीं नीचे उतारो।

(2) आश्चर्यचकित रह जाना। प्र0 उसकी आंखें बवा गयीं। वह एकटक देखता रह गया।

आंख बहाना—दे0 आंख बरसना।

आंख (खें) बिगड़ना—(1) रुख या विचार में परिवर्तन होना। प्र0 क्यों भला हम बिगड़ न जायेंगे, जब हमारी बिगड़ गईं आंखें (चोखे0 –हरिऔध, 15)।

(2) आंख उलट जाना, पथरा जाना।

आंख बिचलना—नजर हटना। प्र0 बड़ा बेहंगम लड़का है। तनिक आंख बिचली कि फुर से उड़ा (दे0 दु0—शिव0; 48)।

आंख (खें) बिछाना या बिछना—(1) प्रेम से स्वागत करना, आदर करना या होना। प्र0 उन बिछे सिर घरों के पांव तले, जो न आंखें बिछीं बिछीं तो क्या (चुभते0 –हरिऔध, 5)।

(2) प्रेम या उत्सुकता से प्रतीक्षा करना। प्र0 आधी घड़ी पीछे अटल भी ×× आ गया। जैसे ये दोनों उसके लिये आंखें बिछाये बैठी हों (मृग0 –वृ0 वर्मा, 196)।

आंख बिलंद होना—अतिरिक्त प्रसन्न होना, बहुत लाभ के कारण मति-भ्रम तक हो जाना। प्र0 नाना की जमा-जथा कार्तिक बाबू को क्या मिली कि उनकी आंखें ही बिलंद हो गयीं।

आंख (खें) बीरबहूटी हो जाना—आंखें बहुत लाल हो जाना। प्र0 मेहता का मुख लाल हो रहा है। आंखें बीरबहूटी बनी हुई हैं (गोदान –प्रेमचंद, 144)।

आंख (खें) बैठ जाना—आंख गल जाना। प्र0 जब कि उठना बहुत सताता है आंख तो बैठ क्यों नहीं जाती (चुभते0–हरिऔध, 67)।

आंख (खें) भर आना, -लाना—(1) आंखों में आंसू आना। प्र0 पंथ निहारै कामनी लोचन भरी लेइ उसासा (कबीर ग्रंथा0–कबीर, 303); नयन भरि जो रोय दीन्हों ग्रसित आपद दीन (भ्र0

सा0—सूर, 388); महाराज, इस बात के सुनते ही करुनाकर आंखों भर वसुदेव जी बोले.... (प्रेम0 —ल0 ला0; 327); अमरकान्त की आंखें फिर भर आईं (कर्म0—प्रेमचंद, 3)।

(2) करुणा होना। प्र0 यह सुन कर ब्रजकिशोर की आंखें भर आईं (परीक्षा0—श्री0 दास, 153)।

आंख भर देखना, -भरकर देखना—खूब अच्छी तरह देखना, तृप्त होकर देखना। प्र0 बन-बन ढूंढ़ौं नैंन भरि जोऊँ, पीव न मिलै तौ बिलखि करि रोऊँ (कबीर ग्रंथा0—कबीर, 212); धनि न नैंन भरि देखा पीऊ। पिय न मिला धनि सौं भरि जीऊ (पद0 —जायसी, 52/4); जाहु चली घर आपु, नैन भरि हम देख्यौ है (सू0 सा0 —सूर, 2109); जगत पिता रघुपतिहि बिचारी। भरि लोचन छबि लेहु निहारी (राम0 (बाल) —तुलसी, 253); एक संग रंग ताकी चरचा चलावै कौन आंख भरि देखिये की साथ मरियत हैं (क0 र0—सेनापति, 36); अब वह कौन है जो तुम्हें आंख भर कर और ढब से देख सके (इंशा0—इंशा; 104)।

आंख (खें) भर लाना—दे0 आंख भर आना।

आंख भरकर देखना—दे0 आंख भर देखना।

आंख (खें) भारी होना—जागरण, काम या ज्वर के कारण आंखों का अलसायी होना। प्र0 आंखें बड़ी भारी हो रही हैं, पता नहीं क्यों?

आंख (खें) भिड़ाना—परस्पर एक दूसरे को देखना। प्र0 तुम भरी सभा में उस नाज़नीन से आंखें भिड़ाया करो।

आंख भी बराबर न करना—किसी के सामने न आना, लज्जित होना। प्र0 जो स्त्रियाँ कभी घर से बाहर भी नहीं निकली थीं, जो ×× तनिक आंख भी बराबर नहीं कर सकती थीं, वे भी अपने भाइयों, पतियों और पुत्रों को ढूंढ़ने के लिये गांव की गली-गली में हाय-हाय करती और बिलबिलाती फिरीं (दे0 दु0—शिव0; 85)।

आंख (खें) मचकाना या मिचकाना—(1) इशारा करना। प्र0 उन्होंने आँख मिचकाया और वह उठ खड़ा हुआ।

(2) बार-बार आंख खोलना-बंद करना। प्र0 तुम हर समय आँखें क्यों मिचकाते हो? इस आदत को छोड़ो।

(3) बुरा समझना। प्र0 आप को तो कुछ भी अच्छा नहीं लगता, हर चीज पर आंख मिचकाते हैं।

आंख (खें) मटकाना—दे0 आंख मचकाना (1) एवं (2)

आंख (खें) मरोड़ना—(1) आंख से इशारा करना। प्र0 नैन मरोरि तनिक मुसकाय चली वह कामिनी डाल कै जादू।

(2) नाक-भौंह चढ़ाना। प्र0 आह, क्या आंखें मरोड़ रही है। मैं तो इसी अदा पर फिदा हो गया हूँ।

आंख (खें) मांगना—(1) आंखें बनी रहने देने की याचना करना; त्राहि-त्राहि कर उठना; कष्ट से मुक्ति चाहना। प्र0 जरा से टट्टू पर जब दो हाथियों का बोझ लादोगे, तो टट्टू बेचारा आंखें मांगने लगेगा, या नहीं? (आजाद0—प्रेमचंद, 62)।

(2) देखने की शक्ति चाहना। प्र0 डाक्टर साहब मैं आपसे अपनी आंखें मांगता हूँ, जैसे भी हो कुछ कीजिए

आंख (खें) मारते-मारते—तनिक-सी देर में, बहुत शीघ्र। प्र0 तिहिं जल गाजत महावीर सब, तरत आंखि नहिं मारत (सू0 सा0—सूर, 567); आंखें मारते-मारते लहनासिंह सब समझ गया (उ0 कहा0—गुलेरी, 54)।

आंख (खें) मारना—आंखों से इशारा करना। प्र0 झिंगुरीसिंह ने आंखें मारकर कहा—निकालो पचास रुपए पटवारी साहब (गोदान—प्रेमचंद, 118); आंख की देखी कहेंगे लाख में मारते हैं आंख तो मारा करें (बोल0—हरिऔध, 36)।

आंख (खें) मिचना—मर जाना। प्र0 अच्छा, अब यदि भगवान् न करे, कल को उनकी आंखें मिच गईं, तो मेरी क्या दशा होगी (मा0—कौशिक, 10)।

आंख (खें) मिलना—(1) अत्यंत प्रिय वस्तु का मिलना। प्र0 सबेरे हमारे रेजिमेंण्ट को देहरादून जाने का हुक्म हुआ। मुझे आंखें-सी मिल गयीं (मान0 (2) —प्रेमचंद, 107)।

(2) दो व्यक्तियों का परस्पर एक-दूसरे की ओर देखना (प्रेम भाव से)। प्र0 उन हरकी हंसि कै इतै, इन सौंपी मुसकाइ। नैन मिलैं मन मिलि गए दोऊ मिलावत गाइ (बिहारी रत्ना0—बिहारी, 128); आनंद-सरूप अलि सांवरो तक्यौ ता कहूं, दीठि के मिलत बढ़ि पर्यौ चित चाव री (घन0 कवित्त—घना0; 187); उनकी एकमात्र अभिलाषा यही होती है कि किसी प्रकार आंखें मिल जायें (सु0 सु0 —सुदर्शन, 221)।

आंख (खें) मिलाना—(1) आंख सामने करना, बराबर ताकना। प्र0 चंद किरन रस रसिक चकोरी रबि रुख नयन सकइ किमि जोरी। (राम0 (अ) —तुलसी, 428); अब आप कान रखके, आंखें मिलाके, सन्मुख होके टुक इधर देखिए (इंशा0 —इंशा; 90)।

(2) सामने आना। प्र0 कविराज जी सुबह उससे आंखें मिलाये बिना गुज़र गये थे (चेतन —अश्क, 337)।

(3) मुंह दिखाना। प्र0 पिता महिपाल अपने बच्चों से कैसे आंख मिलायेगा (बूंद0—नागर, 215)

(4) प्रेमपूर्ण दृष्टि से देखना। प्र0 राह बाट मैं लाज निगोड़ी कैसे नैन मिलावैं (भा0 ग्र0 (2) —भारतेन्दु, 63)।

(5) प्रताप या तेज के कारण मुकाबला न कर पाना। प्र0 सौंह दिस्टि कइ हेरि न जाई जेइ देखा सो रहा सिर नाई (पद0 —जायसी, 1/16)।

(6) रुख न देना। प्र0 किसमत का धनी है, डायरेक्टर हो गया। अब तो आंख भी नहीं मिलाता (पैंतरे —अश्क, 87)।

आंख (खें) मींचना, -मूंदना—(1) कोई ध्यान न देना, अज्ञान में होना। प्र0 इस संकीर्ण स्वार्थ भरी, दंभ भरी गुटबाजियों में पड़कर पढ़ा-लिखा और चतुर-भोला सामान्य सभ्य सुप्रतिष्ठित जन समक्ष से नासमझी की ओर आंखें मीचे बढ़ा जा रहा है (अमृत0 —नागर, 124)।

(2) मृत्यु होना। प्र0 उतने पर भी ताल्लुकदार साहब की आंखें मुंदने के साथ-साथ गांव के लोगों ने इनकी तरफ से भी मुंह फेर लिया (कुल्ली0—निराला, 37)।

आंख (खें) मूंदकर—बिना कुछ सोचे-विचारे। प्र0 आंख मूंद धर्म सम्बन्धी बातों को मानते रहो इसी में कल्याण है (भट्ट नि0 —बा0 भट्ट, 104)।

आंख मूंदकर सोना—बिना कुछ किये बैठे रहना, बिना सोचे-विचारे बैठे रहना। प्र0 किसी ने नहीं इस तरह हाथ धोया भला कौन यों मूंद कर आंख सोया (चुभते0 —हरिऔध, 185)।

आंख (खें) मूंदना—दे0 आंख मींचना।

आंख (खों) में आंख गड़ाना, -डालना—ध्यानपूर्वक एक दूसरे को देखना। प्र0 माधुरी ने उसकी आंखों में आंखें गड़ा कर कहा (मान0 (7) —प्रेमचंद, 46)।

(2) प्रेमपूर्वक देखना। प्र0 आलिंगन में बंधी हुई माधवी ने अपने प्रेमी की छाती में छिपा हुआ सिर उठाकर आंखों में आंखें डालकर देखते हुए कहा (सुहाग0—नागर, 50)।

(3) ढिठाई से देखना। प्र0 वह उसी तरह आँखों में आंखें डाले देखता रहा, तनिक भी डरा नहीं।

आंख में आंख डालना—दे0 आंख में आंख गड़ाना।

आंख में आंजने भर को न होना—बिलकुल ही न होना। प्र0 बच्चा, अभी अच्छा-बुरा कुछ मिल तो जाता है। वे दिन आ रहे हैं कि दूध आंखों में आंजने को भी न मिलेगा (रंग0 (1) —प्रेमचंद, 33)।

आंख में आंसू न आना—तनिक दुःख न होना। प्र0 न जाने कैसी कठ-करेजी है यह, इसकी आंखों में आंसू तक नहीं आते।

आंख (खों) में उंगली करना, -डालना—धोखा देना। प्र0 जिसकी नह-उंगली का दुखना मुझसे सहा न जाता वही आंख में मेरी उंगली करते नहीं लजाता (मर्म0 —हरिऔध, 150)।

आंख (खों) में उंगली डालना—दे0 आंख में उंगली करना।

आंख में एक होना—सब एक समान मानना। प्र0 मातादीन, श्रीप्रकाश और गुरुदयाल सभी मेरी आंख में एक हैं।

आंख में कच्चा बैठना—आंख फूट जाना (स्त्रियों द्वारा गाली की तरह प्रयुक्त)।

आंख में करकना—अप्रिय लगना। प्र0 जगपती किसी लायक हुआ है, तो रिश्तेदारों की आंखों में करकने लगा है (कम0—कम0 22)।

आंख में कांटा होना—असह्य होना। प्र0 तुम्हारा रवैया तो आंख में कांटा हो गया है।

आंख में कांटे की तरह खटकना, -खटकना, -खार होना, -चुभना—अत्यंत अप्रिय लगना। प्र0 हम लोग तुम्हारी आंख में कांटे की तरह खटकते हैं (प्रेमा0—प्रेमचंद, 28)।

आंख में कांटे की तरह चुभना—दे0 आंखों में कांटे की तरह खटकना।

आंख (खों) में काजल घुलना या घुलाना—(1) काजल लगना या लगाना। प्र0 आंख में है घुला लिया काजल, आंख में धूल क्यों न वे डालें (बोल0—हरिऔध, 49)।

(2) आंख में काजल लगने से तकलीफ होना। प्र0 तुम तो ऐसा छटपटा रहे हो मानो आंखों में काजल घुल रहा हो।

आंख (खों) में काजल न टिकना—बहुत अधिक रोना। प्र0 मन चित हुतें न बिसरै मोरें। नैन कजल चखु रहै न मोरें (पद0—जायसी, 31/1)।

आंख में किरकिरी होना—(1) देखने में अप्रिय होना। प्र0 इस सफेद चादर को बीच से हटाओ। यह आंखों में किरकिरी हो रही है।

(2) अप्रिय होना। प्र0 सुखदा देवीदयाल के आंखों की किरकिरी है। वह उसकी बात नहीं सुनना चाहता।

आंख (खों) में खटकना—दे0 आंख में कांटे की तरह खटकना।

आंख में खाक की चुटकी डालना—(1) दे0 आंख में खाक झोंकना।

(2) कोई भी भलाई का काम न करना। प्र0 आंखों में चुटकी डालने के सिवा तुमने और तो कुछ किया नहीं।

आंख में खाक झोंकना, -धूल झोंकना, -डालना, -देना—सरासर धोखा देना। प्र0 व्याकुल होत हरे ज्यों सरबस, आंखिनि धूरि दई (सू0 सा0—सूर, 50); तुमने तो उसकी आंखों में धूल डाल दी (परीक्षा0 —श्री0 दास, 19); हां, जनता की आंखों में धूल झोंकने के लिए अच्छा स्वांग है (गोदान—प्रेमचंद, 95)।

आंख (खों) में खार होना—दे0 आंख में कांटे की तरह खटकना।

आंख में खुबना, -गड़ना, -चुभना—(1) अत्यंत प्रिय लगना। प्र0 जनि जानहु हौं तुम्ह सौं दूरी। नयनन्हि मांझ गड़ी वह सूरी (पद0 —जायसी, 24/21); हमरौ यौवन रूप आंखि इनके गड़ि लागत (व्र0 सू0 को0)।

(2) अप्रिय लगना। प्र0 सरस्वती उसकी आंखों में चुभती है (गु0 नि0-बा0 मु0 गु0 509); किसी ने सिर पर टोपी टेढ़ी रखी और पड़ोसियों की आंखों में खुबा (मान0 (3) —प्रेमचंद, 57)।

आंख (खों) में खून उतरना—बहुत क्रोधित होना। प्र0 शीलों के विषय में सुनकर उसकी आंखों में खून उतर आया था (झूठा0 (2)— यशपाल, 529)।

आंख (खों) में गड़ना—दे0 आंखों में खुबना।

आंख (खों) में गड़नेवाली किरकिरी—अत्यंत अप्रिय। प्र0 लेकिन मेरे लिए यह शब्द क्या है? हृदय में उठनेवाला शूल, कलेजे में खट-कनेवाला कांटा, आंखों में गड़नेवाली किरकिरी (मान0 (3)— प्रेमचंद, 24)।

आंख में गिरना—पूर्व प्रतिष्ठित मान-मर्यादा का नष्ट होना। प्र0 जब तक संन्यासी अपने संन्यासाश्रम में रहता है, वह हिन्दू का पूज्य होता है, पर घरबारी होकर वह उसकी आंखों में गिर कर भ्रष्ट हो जाता है (कबीर— ह0 प्र0 द्वि; 10)।

आंख में घूम जाना—दे0 आंख के सामने घूम जाना।

आंख (खों) में चढ़ना—(1) देखने में अच्छा लगना। प्र0 वह नेकलेस

मेरी आंखों में चढ़ गयी है, मैं तो वैसी ही बनवाऊंगी ।

(2) किसी वस्तु की प्राप्ति की इच्छा होना । प्र0 यह घोड़ा बड़े साहब की आंखों में चढ़ गया है। अब तुम इसे अपने पास अधिक दिन न रख सकोगे ।

आंख में (पर) चरबी छाना—अत्यन्त घमंडी होना । प्र0 अहा ! तुम्हारी आंखों पर तो गहरी चरबी छाई है (गु0 नि0—बा0 मु0 गु0; 631); क्या सूझ नहीं पड़ता है, आंखों में चरबी छाई (नूर0—मक्त, 31) ।

आंख (खों) में चुमना—दे0 आंख में कांटे की तरह खटकना और आंख में •खुबना ।

आंख में जल छाना—आंसू भर आना । प्र0 हरषि बंधु दोउ हृदयं लगाए, पुलक अंग अंबक जल छाए (राम0 (बाल)—तुलसी, 310); बोलीं विदेहजा धीरे नयनों में जल था आया (वैदेही0—हरिऔध, 76) ।

आंख में जादू होना—ऐसी आंखें जिन्हें देखते ही लोग मोहित हो जायं । प्र0 क्या हुआ जो बात में जादू नहीं हो किसी की आंख में जादू अगर (बोल0—हरिऔध, 50) ।

आंख में जाला पड़ना—आंख का रोग-विशेष । प्र0 जब रही छीनती उंजाला तू आंख तुझमें तभी पड़ा जाला (बोल0—हरिऔध, 57)।

आंख में झांकना—आंखों से मन के भाव जानने की कोशिश करना । प्र0 वह लिली की आंखों में झांकने लगा (ब्रह्म0—दे0 स0, 229) ।

आंख में झांई पड़ना—चिन्ता, विषाद आदि के कारण आंख के चारों ओर कालापन आना ।

आंख में टेकुआ या तकला चुभाना—आंख फोड़ देना । प्र0 उधर जरा देख ही लिया तो क्या इसके लिए आंखों में तकला चुभो दोगे ?

आंख (खों) में टेसू फूलना, -तीसी फूलना, -सरसों फूलना—मस्ती होना, अपने मनवाली बात ही सब ओर दिखलाई पड़ना । प्र0 हैं हमीं कुछ इस तरह के सिर-फिरे, आंख में सरसों सदा फूली रही (चुमते0—हरिऔध, 57) ।

आंख (खों) में ठहरना—पसंद आना, मन में बना रहना, महत्त्वपूर्ण लगना । प्र0 आंख जिस पर ठहर नहीं पाती, आंख में वह ठहर सके कैसे (चोखे0—हरिऔध, 40) ।

आंख में डर न होना—तनिक भी लज्जा या भय न होना । प्र0 इसकी आंख में डर तो है ही नहीं, मुंह लगी जवाब दिये जा रही है ।

आंख में तरावट या तरी आना—(1) आंखों का तृप्त होना । प्र0 झूठे बट्ठे को मूवाफ पड़ी चोटी में, देखते ही जिसे आंखों में तरी आती है (भा0 ग्रं0 (2) —भारतेन्दु, 790) ।

(2) ताजगी आना । प्र0 गुलाब का ठंढा शरबत पीकर आंखों में तरी आ गयी ।

आंख में तीसी फूलना—दे0 आंख में टेसू फूलना ।

आंख में धूल झोंकना—दे0 आंख में खाक झोंकना ।

आंख (खों) में धूल डालना—दे0 आंख में खाक झोंकना ।

आंख (खों) में धूल देना—दे0 आंख खाक में झोंकना ।

आंख में नमक झोंकना, -डालना, -देना, -नमक-मिर्च झोंकना, -नमक-राई देना, -मिर्च झोंकना—(1) धोखा देना; अहित करना, पीड़ा पहुंचाना । प्र0 धूल दें आंख में मले ही हम, लोन क्यों आंख में किसी को दें (बोल0—हरिऔध, 42) ।

(2) अंधा बनाना । प्र0 उसकी आंखों में नमक-राई दूं, वह ऐसी नजर से कैसे देख सका ?

आंख में नमक डालना—दे0 आंख में नमक झोंकना ।

आंख में नमक देना—दे0 आंख में नमक झोंकना ।

आंख में नमक-मिर्च झोंकना—दे0 आंख में नमक झोंकना ।

आंख में नमक-राई देना—दे0 आंख में नमक झोंकना ।

आंख (खों) में नमी आना—दे0 आंख पसीजना ।

आंख (खों) में नमी घुलना—दे0 आंख पसीजना ।

आंख में नींद न होना—विरह या चिन्ता के कारण उद्विग्न होना । प्र0 पिछले कई दिनों से उसकी आंखों में नींद नहीं है ।

आंख में नींद भरी होना—नींद के मारे आंखों का बंद हुई जाना, अलसाई होना । प्र0 तुम सोने क्यों नहीं जाते, आंखों में नींद भरी हुई है ।

आंख पहचान में की परछाईं तैर जाना—पहचान लेने का भाव आंखों से प्रकट होना । प्र0 ××फिर आंखों में वही पहचान की परछाईं तैर गयी थी (कम0-कम0, 91) ।

आंख (खों) में पानी आना, -पानी भर आना—(1) रोना आ जाना । प्र0 वचन कहत लोचन भरे बारी (राम0 (बाल) तुलसी, 115); उत्तर मुख आयो नहीं, जल भरि आयो नैन (केशव0 (2) —केशव, 395); एकनाथ ने××अपने मित्र-बंधुओं के विषय में सोचा और उसकी आंखों में पानी आ गया (सु0 सु0 —सुदर्शन, 19) ।

(2) दयार्द्र होना, दुखी होना । प्र0 उसकी करुण-कथा सुनकर चाचा की आंखों में पानी आ गया ।

आंख (खों) में पानी न होना. -लाज न होना, -लाज -लिहाज न होना—निर्लज्ज होना । प्र0 कांता की आंखों में पानी नहीं है, वह कुछ भी कह और कर सकती है ।

आंख में पानी भर आना—दे0 आंख में पानी आना ।

आंख में फीका लगना—पसंद न आना, देखने में श्रीहीन-सा लगना । प्र0 वहां की सजावट में सभी कुछ था फिर भी न जाने क्यों आंखों में फीकी लगती थी ।

आंख में बराबर तौलना—सबको समदृष्टि से देखना । प्र0 वे अपनी आंख में सबको बराबर ही तौलते हैं ।

आंख में मछली तैरना—रोना आना । प्र0 बड़ी की आंखों में फिर मछली तैर गई (बूंद0 —नागर, 61) ।

आंख में मिर्च झोंकना—दे0 आंख में नमक झोंकना ।

आंख में मिर्चे का अंजन करना—बहुत परेशान करना । प्र0 उसने तो मेरी आंखों में मिर्चे का अंजन कर रखा है । कैसे उससे छुटकारा पाऊं ।

आंख में मुरव्वत होना, -लाज-लिहाज होना—लिहाज या शील होना। प्र0 उस आंखों में मुरव्वत अब रही नहीं, उसके पास जाकर क्या करोगे ?

आंख (खों) में मैल आना—मनमुटाव होना। प्र0 इधर कुछ दिनों से देवरानी-जेठानी की आंखों में मैल आ गया है।

आंख (खों) में मैल लाना—मनमुटाव करना। प्र0 तुम अपनी ओर से आंखों में मैल मत लाओ।

आंख (खों) में मोतिया उतरना—मोतियाबिन्द होना। प्र0 उधर हुजूरसिंह को आंखों में मोतिया उतर आया (एक चादर0—बेदी, 17)।

आंख (खों) में रखना—(1) यत्नपूर्वक रखना। प्र0 आंखिन में सखि राखिबे जोगु, इन्हें किमि कै बनवासु दियो है (कवि0—तुलसी, 33); चाह जो यह है कि हाथों से पले, पेड़ पौधों से अनूठे फल चखें, तो जिसे हैं आंख में रखते सदा, चाहिये हम आंख भी उस पर रखें (चोखे0—हरिऔध, 14)।

(2) मन में रूप बसा होना। प्र0 बालि नयन जनु राखिअ पलक न कीजै ओट (पद0—जायसी, 41/19)।

आंख (खों) में राई-नोन डालना—नष्ट कर देना। प्र0 जब गई हैं फूट आंखें भी तरी लोन राई आंख में डालें न क्यों (बोल0 —हरिऔध, 33)।

आंख (खों) में लाज न होना—दे0 आंख में पानी न होना।

आंखों में लाज-लिहाज न होना—दे0 आंखों में पानी न होना।

आंख में लाज-लिहाज होना—दे0 आंख में मुरव्वत होना।

आंख में शील होना—मुरव्वती और शीलवान् होना। प्र0 श्रीनंदा की आंखों में शील है।

आंख में सरसों फूलना—दे0 आंख में टेसू फूलना।

आंख (खों) में सलाई करना, -सूई डालना—किसी के साथ बुराई करना। प्र0 जो निकालें न आंख का कांटा, डाल दें तो न आंख में सूई (बोल0 —हरिऔध, 41)।

आंख में सुख कलेजे में ठंढक होना—पूरी प्रसन्नता होना। प्र0 नाती का मुंह देखकर उसकी आंख में सुख और कलेजे में ठंढक हो गयी।

आंख में सूई चुभना—बहुत अप्रिय लगना। प्र0 तब भला सूझता हमें कैसे, आंख में जब कि चुभ गई सूई (चुभते0 —हरिऔध, 101)।

आंख (खों) में सूई डालना—दे0 आंख में सलाई करना।

आंख (खें) मैली करना या होना—बुरी नजर रखना या होना। प्र0 तुमसे आंख मैली करूंगा तो मरने के बाद खुदा को क्या मुंह दिखाऊंगा ? (झूठा0 (1) —यशपाल, 498)।

आंख (खें) मोड़ना—दे0 आंख फेरना।

आंख (खें) रखना—(1) निगरानी करना, ध्यान रखना। प्र0 व्यक्तिगत संबंधों को मैं पवित्र मानती आयी हूं। इन्हीं में उत्सुकता की आंख रखना मुझे घिनौना लग रहा था (जय0 —जैनेन्द्र, 89)। मैं भी उन पर दृष्टि रखने चला जाऊंगा (देवकी0 —रां0 रा0, 78)।

(2) मुहब्बत करना। प्र0 मैं तो सदा से उस पर आंखें रखता रहा हूँ।

(3) इच्छा करना। प्र0 इस फूलदान पर तुम आंख मत रखो, यह तुम्हें नहीं मिलेगा।

आंख (खें) रत्ती होना—क्रोध से आंख लाल होना, क्रोधित होना। प्र0 मामू की आंखें रत्ती हो आईं (डार0— कृ0 सो0, 15)।

आंखें (खें) लगना—नींद लगना, झपकी आना। प्र0 तैं फिरि फिरि दाब सब पांखी। केहि दुख रैनि न लावसि आंखी (पद0 —जायसी, 31/1); जब जब वै सुधि कीजियै, तब तब सब सुधि जांहि, आंखिनु आंखि लगी रहै, आंखैं लागति नाहिं (बिहारी रत्ना0 —बिहारी, 62); प्रातःकाल उसकी आंख लग गई (चित्र0—भग0 वर्मा, 92)।

(2) टकटकी लगना। प्र0 जे अंखियनि तुम स्याम बिलोके, ते अंखियां हम लागों (सू0 सा0 —सूर, 4150)।

(3) प्रेम होना। प्र0 रैनि-द्यौस जागैं ऐसी लगीं जु कहूं न लागैं, पन अनुरागैं पागैं चंचलता च्वै गई (घन0 कवित्त —घना0, 159); कठिन प्रीति की रीति जहां लागे दुइ नयना (कुण्ड0—गिरधरदास, 18); उन सभों में एक के साथ उसकी आंख लग गई (इंशा0—इंशा0; 91)।

(4) किसी वस्तु को पाने की ताक में होना। प्र0 गुलरी वाली धनहर जमीन पर सोशलिस्टों की आंख है (परती0—रेणु, 327)।

(5) पर्याप्त या अच्छा जान पड़ना। प्र0 सभी को सेवैयां चाहिए और थोड़ा किसी को आंख नहीं लगता (मान0 (1) —प्रेमचंद, 25)।

(6) ध्यान जाना। प्र0 जिस दिन से सुलोचना की आंखें शंभू पर लगीं, उस दिन से उसका जीवन कुछ बदल गया (मा0—कौशिक, 100)।

(7) उम्मीद होना, आशा बंधी होना। प्र0 ऐ सपूतो, तुम सपूती मत तजो, हैं तुम्हारी ओर ही आंखें लगीं (चुभते0 —हरिऔध, 23)।

आंख (खें) लगाना—(1) नियत खराब करना, लेने की इच्छा करना। प्र0 मैकूलाल अब इसके घर और जमीन पर आंखें लगाए हैं (मूले0—भग0 वर्मा, 7)।

(2) प्रेम करना। प्र0 लघुता अंग, नहीं कछु करनी, निरखत नैन लगाए (सू0 सा0 सूर, 1279); जु कियौ बदनाम सबै ब्रज मैं अब आंखैं लगाइ दिखात न आंखन (ठाकुर0 —ठाकुर, 30-31); उन पहिले आकर हमसे आंख लगाई (भा0 ग्रं0 (2)—भारतेंदु, 195); आंख लगाकर आंख बदल दी उसने आंख चुराकर (नूर0 —भक्त, 104)।

आंख (खें) लगी रहना—(1) उत्सुकतापूर्वक प्रतीक्षा करना। प्र0 पंखि आंखि तेहि मारग लागी दुनहुं रहाहिं। कोइ न संदेसी आवहिं तेहि का संदेस कहाहिं (पद0—जायसी, 31/8); साजि सेज भूषन बसन सबकी नजर बचाइ रही नींद मिस पौढ़ि कै दृग दुवार

सौं लाइ (जग0–पद्माकर, 29); अब अप्रिय हुआ है क्यों उसे गेह आना प्रतिदिन जिसकी ही ओर आंखें लगी हैं (प्रिय0—हरिऔध, 234)।

(2) स्थिर दृष्टि से देखना। प्र0 उन्होंने आंखें फैलाकर परिषद्-भवन में उमड़ती उत्तेजित भीड़ को देखा, जिनकी जलती हुई आंखें उन्हीं पर लगी थीं (वैशाली0 (1) –चतुर0; 16)।

(3) उम्मीद होना। किसी से किसी बात या काम की आशा होना। प्र0 देश की आंखें तुम्हारी ओर लगी हुई हैं, तुम्हीं इसका बेड़ा पार लगाओगे (रंग0 (2) –प्रेमचंद, 376)।

आंख (खें) लजाना—लज्जित होना, शर्मिन्दा होना। प्र0 उनके सामने जाते मेरी आंखें लजाती हैं।

आंख (खें) लड़ना—प्रेमपूर्ण दृष्टि से देखना, प्रेम होना। प्र0 नैन जुग नैनन सौं प्रथमै लड़े हैं धाय अधर कपोल तेऊ टरै नहिं टेरे हैं (भूषण ग्रंथा0–भूषण, 239); कोई रामगोपाल महोदय सगे संबंधी थे: किसी ब्याह-बरात में इसके यहाँ आये थे, आंख लड़ गई (ये कोठे0 –नागर, 54)।

आंख (खें) लड़ाना—(1) एकटक देखना। प्र0 वह कभी इन्द्रदेव और कभी शैला को देखती फिर संध्या की आने वाली कालिमा की प्रतीक्षा करती हुई नीले आकाश से आंख लड़ाने लगतीं (तितली –प्रसाद, 28)।

(2) दो प्रेमियों का चाव से एक दूसरे को देखना। प्र0 स्त्रियां सुंदर तो ऐसी नहीं पर आंख लड़ाने में बड़ी चतुर (भा0 ग्रं0 (3) –भारतेन्दु, 947)।

(3) सस्ता इश्क करना। प्र0 जिन्हें भगवान की आड़ में सस्ती गलेबाजी और आंखें लड़ाने का चाव हो वे किरपा कर हमारे यहां आने का कष्ट न करें (अमृत0–नागर, 157)।

आंख (खें) ललचाना—देखने की इच्छा होना। प्र0 देखि रूप लोचन ललचाने (राम0 (बाल) –तुलसी, 240)।

आंख (खें) लाना—(1) देखना। प्र0 लटकति बेसरि जननि की, इकटक चख लावै (सू0 सा0 –सूर, 690)।

(2) सोना, आंखें लगाना। प्र0 तें फिर फिर दाध्ये सब पांखी, केहि दुख रैनि न लावसि आंखी (पद0 –जायसी, 31/1)।

आंख (खें) लाल करना, -लाल-पीली करना या होना—क्रोध करना या होना। प्र0 असन नयन भृकुटी कुटिल चितवत नृपन्ह सकोप (राम0 (बाल) –तुलसी, 274); त्यों पद्माकर हाल कहैं मति लाल करौ दृग ख्याल के खंजन (जग0 –पद्माकर, 15); खाइये न मुंह को बखेरिये न बैर कांटे, कर लाल आंख लहू सगों का न गारिये (मर्म0–हरिऔध, 164); अब उसे कोई कल्लू कहे तो आंखें लाल पीली करता है (मान0 (8) –प्रेमचंद, 65)।

आंख (खें) लाल-पीली करना—दे0 आंख लाल करना या होना।

आंख लेना—अंधा करना। प्र0 राजा ने बेचारे चित्रकार की आंखें ले ली।

आंख साथ न देना—आंख का काम न देना। प्र0 अब तो आंखों ने साथ देना छोड़ दिया है, दो पेज भी नहीं पढ़ पाता।

आंख (खें) सामने करना या होना—सामना करना, लज्जा का अनुभव न करना। प्र0 नख-रेखा सोहैं नई, अलसोहैं सब गात। सौहैं होत न नैन ए, तुम सौहैं कत खात (बिहारी रत्ना0–बिहारी, 240); सामने आंख तब करें कैसे, सामने आंख जब नहीं होती (चोखे0–हरिऔध, 40)।

आंख (खें) सिराना—दे0 आंख ठंडी करना या होना।

आंख (खें) सीधी करना या होना—(1) लज्जा छोड़ मुक्त भाव से मिल पाना, सामना कर पाना। प्र0 संभव है, उसके पास धन भी हो जाय। पर यह असंभव है कि वह उसके सामने आंखें सीधी कर सके (गबन–प्रेमचंद, 132)।

(2) मेल करना या होना। प्र0 पड़ सकती जो नहीं किसी पर सीधी क्यों न भूल उन आंखों में देवें भर (बोल0–हरिऔध, 12)।

आंख (खें) सेंकना—किसी सुंदर वस्तु को जी भर देखना। प्र0 अच्छा यह सब जलसे आपने देखे और अब भी आंखें सेंका ही करते हैं, मगर सच कहिएगा ××नेकनाम हुए या बदनाम (आजाद0–प्रेमचंद, 30)।

आंख (खों) से—(1) भाव से। प्र0 लोग जिस आंख से तुम्हें देखें तुम उसी आंख से उन्हें देखो (चोखे0–हरिऔध, 12)।

(2) स्वयं। प्र0 आंख से देखकर तो मुझसे चुप न रहा जायगा, तुम बुरा मानो चाहे भला।

(3) सादर। प्र0 आपका आदेश मुझे आंखों से स्वीकार है।

आंख (खों) से अंगार बरसना या बरसाना, -आग निकलना, -आग बरसना या बरसाना, -लाल अंगारे निकलना, -लौ छूटना—क्रोधित होना। प्र0 होरी आंखों से अंगारे बरसाता धनिया की ओर लपका (गोदान–प्रेमचंद, 116); ठाकुर शत्रुहन सिंह की आंखों से आग निकलने लगी (लिली–निराला, 131)।

आंख से आंख घुलना—नजर से नजर मिलना। प्र0 बस आंख से आंख घुली और मन मस्त हुआ।

आंख से आंख जुड़ना—(1) एक दृष्टिकोण होना। प्र0 तो बुरी दीठ किस तरह लगती। किस लिये आग जाति में बोती जो किसी देव-दीठ वाले की दीठ से दीठ जुड़ गई होती (चुभते0–हरिऔध, 58)।

(2) देखकर प्रेम होना। प्र0 आंखें जुड़ीं आंखों से मन हुए एक, सखि!

आंख से आंख जोड़ना, -बिधना—दृष्टि-विनिमय के माध्यम से प्रेम करना या होना। प्र0 नैनहि नैन जो बेधि गँ नहिं निकसहि वै बान (पद0 –जायसी, 23/8); भांति भली वृषभान-लली जब तें अंखियां अंखियानि सों जोरी (केशव0–केशव, 47)।

आंख से आंख बिधना—दे0 आंख से आंख जोड़ना।

आंख से आंख मिलना या मिलाना—(1) एक दूसरे की ओर एक साथ

देखना। प्र0 उसकी आंखें चित्रलेखा की आंखों से मिल गईं (चित्र0 —भग0 वर्मा, 11)।

(2) बिना संकोच या दुविधा के। प्र0 मैं उनकी आंख से आंख मिलाकर सब कुछ कह दे सकता हूं।

आंख (खों) से आंसू की झड़ी लगना—बहुत रोना। प्र0 कथा इतनी दर्दनाक थी कि सोफी की आंखों से आंसू की झड़ी लग गयी (रंग0 —प्रेमचंद, 219)।

आंख (खों) से आंसू चलना, -छनना, -बरसना, -बहाना, -पानी चलना, -पानी छनना, -पानी बरसना, -पानी बहाना—आंसू बहना, रोना। प्र0 सूर-स्याम सुंदर यह सुनि कै, नैननि नीर बहायौ (सू0 सा0—सूर, 4769); कब होती है ग्लानि उसे आंखों से आंसू छने? (मर्म0 —हरिऔध, 123)।

आंख से आंसू छनना—दे0 आंख से आंसू चलना।

आंख से आंसू बरसना—दे0 आंख से आंसू चलना।

आंख से आंसू बहाना—दे0 आंख से आंसू चलना।

आंख (खों) से आग निकलना या निकालना—दे0 आंख से अंगार बरसना या बरसाना।

आंख (खों) से आग बरसना या बरसाना—दे0 आंख से अंगार बरसना या बरसाना।

आंख (खों) से उतरना, -गिरना—(1) मान-प्रतिष्ठा में कमी होना। प्र0 जब कि तुम हो उतर गये जी से आंख से तो उतर न क्यों जाते (बोल0—हरिऔध, 40)।

(2) विस्मृत होना। (1) उसकी सूरत एक क्षण के लिए आंखों से न उतरती थी (मान0 (3)—प्रेमचंद, 20)।

आंख (खों) से ओझल न करना—हर समय अपने सामने या पास रखना। प्र0 जो हो, इधर लिख नहीं पाया, यह वस्तु सत्य मैं अपनी आंखों से ओझल नहीं कर सकता (अमृत0—नागर, 243)।

आंख (खों) से ओझल होना, -ओट होना—दिखलाई न पड़ना। प्र0 मैं तो चाहती हूँ कि इन्दु मेरी आंखों से ओझल न हो (तितली—प्रसाद, 42)।

आंख (खों) से ओट होना—दे0 आंख से ओझल होना।

आंख से कभी न देखना—कभी न प्राप्त होना। प्र0 दूध-दही पहले कभी आंखों से देखा तो था नहीं, उस पर टूट पड़ना स्वाभाविक है।

आंख (खों) से काजल चुराना—दे0 आंख का काजल चुराना।

आंख से गिरना—दे0 आंख से उतरना (1)।

आंख (खों) से गिरा देना—वक़त कम कर देना। प्र0 आपने उसे क्यों ऐसा आंखों से गिरा दिया है।

आंख से गुज़रना—सामने आना। प्र0 उसने एक दुनिया देखी थी, मगर ऐसा युवक उसकी आंखों से आज तक न गुजरा था (सु0 सु0—सुदर्शन, 22)।

आंख (खों) से चिनगारी कढ़ना, -छूटना, -निकलना, -फूटना, -बरसना, -ज्वाला निकलना—अत्यधिक क्रोध होना। प्र0 कढ़ रही हैं तो कढ़ें चिनगारियां, अब न आंखें नीर बरसाती रहें (चुभते0—हरिऔध, 31); उस मौत के संभव कारणों की कल्पना से उसकी आंखों से चिनगारियां फूट जाना चाहती थीं (ज्ञान0—यशपाल 161)।

आंख से चिनगारी छूटना—दे0 आंख से चिनगारी कढ़ना।

आंख से चिनगारी निकलना—दे0 आंख से चिनगारी कढ़ना।

आंख से चिनगारी फूटना—दे0 आंख से चिनगारी कढ़ना।

आंख से चिनगारी बरसना—दे0 आंख से चिनगारी कढ़ना।

आंख (खों) से चुराना, -छिपाना—चोरी-चोरी। प्र0 अम्मा की आंखों से छिपा कर चार-छह धोतियां ज़रूर उन्होंने अपने पास रख रखी होंगी (सारा0—यादव, 114)।

आंख (खों) से छिपाना—दे0 आंख से चुराना।

आंख से ज्वाला निकलना—दे0 आंख से चिनगारी कढ़ना।

आंख (खों) से दिखाना—प्रमाणित करना। प्र0 तुम्हें मेरी बात पर विश्वास नहीं आ रहा है, चलो तुम्हें आंखों से दिखा दूं।

आंख (खों) से दिखायी देना—समझ में आना। प्र0 तुम्हें आंखों से दिखायी नहीं देता कि चिट्ठी का क्या मतलब है।

आंख से दूर होना—सामने से हट जाना। प्र0 जब दिनमनि श्री कृष्ण दृगनि तें दूरि भए दुरि (नंद0 ग्रंथा0—नंद, 2); चली जा हो आंखों से दूर, अब यहां क्या है तेरा काम। (वैदेही0—हरिऔध, 17)।

आंख से न उतरना, -निकलना, -हटना—सदैव ध्यान बना रहना, भुलाये न भूलना। प्र0 ता खिन तें इन आंखिन तें न कढ़्यो वह माखन चाखन हारो (जग0—पद्माकर, 19); सुमन का लावण्यमय स्वरूप उसकी आंखों से कभी न उतरता था (सेवा0—प्रेमचंद, 147)।

आंख से न देखना—(1) बिल्कुल पसंद न करना। प्र0 जब हमें आंख से न देख सके आंख से आंख क्यों मिलाते तब (बोल0—हरिऔध, 45)।

(2) कभी न देखना। प्र0 मैंने तुम्हारी कलम आंख से भी नहीं देखी, मुझे क्यों चोरी लगा रहे हो?

आंख से न निकलना—दे0 आंख से न उतरना

आंख से न हटना—दे0 आंख से न उतरना।

आंख से नमस्कार करना, -लेना, -सलाम करना, -लेना—घमण्ड के कारण स्वयं प्रणाम करने के लिए या प्रत्युत्तर में हाथ न उठना या न उठाना। प्र0 मैंने तो इतने प्रेम से नमस्कार किया पर वे आंखों से नमस्कार लेकर रह गये।

आंख से नमस्कार लेना—दे0 आंख से नमस्कार करना।

आंख से नींद उड़ जाना, -पलक न लगना—चिन्ता या विरह के कारण नींद न आना। प्र0 नींद भाभी की आंखों से उड़ गयी और वह देवर और देवरानी की बातें सुनने लगी (चेतन—अश्क, 208)।

आंख से पलक न लगना—दे0 आंखों से नींद उड़ जाना।

आंख से पानी चलना—दे0 आंख से आंसू चलना ।

आंख से पानी छनना—दे0 आंख से आंसू चलना ।

आंख से पानी बरसना—दे0 आंख से आंसू चलना ।

आंख से पानी बहाना—दे0 आंख से आंसू चलना ।

आंख से लाल अंगारे निकलना—दे0 आंख से अंगार बरसना ।

आंख (खों) से लौ छूटना—दे0 आंख से अंगार बरसना ।

आंख से सलाम करना—दे0 आंख से नमस्कार करना ।

आंख से सलाम लेना—दे0 आंख से नमस्कार करना ।

आंख (खें) हरी होना—प्रसन्न होना, किसी वस्तु को देखकर आनंद होना । प्र0 क्या रमणीय जगह है. देखकर आंखें हरी हो गयीं ।

आंख (खें) हर्ष से नाच उठना—मन की प्रसन्नता का आंखों द्वारा प्रकट होना । प्र0 मैं जब मिली तब भी उसकी आंखें हर्ष से नाच रही थीं ।

आंख है कि बटन ?—दिखता नहीं क्या ?; कुछ समझ में न आना । प्र0 बाप साले की आंखें हैं कि बटन (प्रतीक्षा—यादव, 57) ।

आंख (खें) होते अंधा होना—बुद्धि होते हुए भी नासमझी का काम करना । प्र0 कोई आंख होते हुए भी अंधा बन जाए तो क्या इलाज है ।

आंख होना—(1) लेने की नियत होना । प्र0 आप नहीं जानते हैं कि जमींदार के घर के लोगों की आंख उस पर है (तितली— प्रसाद, 103) ।

(2) ज्ञान होना, विवेक होना । प्र0 इससे भी मुझे एक अमूल्य शिक्षा मिली, एक भ्रम टूट गया, आगे को आंखें हो गई (पद्म0 के पत्र —पद्म0 शर्मा, 65) ।

(3) अत्यंत प्रिय होना । प्र0 मोरें भरतु रामु दुइ आंखी (राम0 (अ) —तुलसी, 401); दोनों बालक उसकी दो आंखें थीं (मान0 (4) —प्रेमचंद, 170) ।

(4) संतान । प्र0 ये दोनों ही मेरी आंखें हैं ।

(5) आंख की शक्ल का छेद होना । प्र0 आलू की आंखें निकाल डालो ।

(6) कृपा-दृष्टि या दयाभाव होना । प्र0 आपकी आंख हो जाय तो मेरा काम पूरा पड़ जाय ।

(7) परख होना । प्र0 कांगड़ा शैली के चित्रों की उन्हें बड़ी अच्छी आंख है ।

आंख-ओझल, आंख-ओट—अनुपस्थिति में । प्र0 मेरे आंख-ओझल होते ही उसने यह कांड कर डाला ।

आंख-ओट—दे0 आंख-ओझल ।

आंख-ओट पहाड़ ओट होना—सामने न होने पर दूर-नजदीक एक-सा होना । प्र0 क्यों लिखते, हमसे नाता ही क्या था । मुंह देखे की प्रीति थी ! आंख ओट पहाड़ ओट (ग़बन —प्रेमचंद, 252) ।

आंख-कान खुला रखना, -खोलकर चलना—अत्यंत सावधानी से किसी काम को करना । प्र0 तो न खुल खेलती मुसीबत यों जो खुला आंख कान रखते हम (चुभते0 —हरिऔध, 44) ।

आंख-कान खोलकर चलना—दे0 आंख-कान खुला रखना ।

आंख-कान देना—सुनकर या देखकर ध्यान देना । प्र0 औरतों के झगड़े पर यदि मर्द लोग आंख कान देने लगें तो हुआ (मैला0—रेणु, 71) ।

आंख-कान में चार अंगुल का फर्क होना—स्वयं देखी और दूसरों से सुनी बात में बहुत अंतर होना । प्र0 तुमने सुरेश की बात झट क्यों मान ली ? पता नहीं, आंख-कान में चार अंगुल का फर्क होता ही है ।

आंख-कान से दुरुस्त होना—बे ऐब होना । प्र0 जी हां, लड़की आंख-कान से दुरुस्त है । मेरी देखी हुई है ।

आंख-कान होना—(1) समझानेवाला होना । प्र0 पहले तो हम लोगों के आंख-कान यही थे (मैला0—रेणु, 231) ।

(2) देख-सुनकर समझनेवाला । प्र0 तुम चिन्ता मत करो, मुझे आंख-कान हैं, मैं खुद सोच-समझकर काम करूंगा ।

आंख-तांख निकलना—मृत्यु समीप आना । प्र0 अब क्या धरा है इसमें. आंख-तांख निकल आई है, जरा देर में दम तोड़ देगा ।

आंख-दीदे से डरना, आंख-नाक से डरना—ईश्वर से डरना । प्र0 अरी भगवान, और किसी से नहीं तो आंख-दीदे से तो डर ।

आंख-नाक से डरना—दे0 आंख-दीदे से डरना ।

आंख-भौंह चढ़ाना, -टेढ़ी करना—क्रोध करना । प्र0 तू हर समय आंख-भौंह चढ़ाये रहेगी तो कौन तुझसे बात करेगा ?

आंख-भौंह टेढ़ी करना—दे0 आंख-भौंह चढ़ाना ।

आंख-भौंह सिकोड़ना—नापसन्द करना । प्र0 उन्हें तो कुछ भी पसन्द नहीं आता, हर चीज को आंख-भौंह सिकोड़ा करते हैं ।

आंखमिचौनी—धोखा । प्र0 पता नहीं, यह आंखमिचौनी कब तक चलती रहेगी ।

आंख-मिचौनी खेलना—(1) धोखा देने की कोशिश करना । प्र0 तुम मुझसे आंख-मिचौनी मत खेलो, मैं सेर का सवा सेर साबित होऊंगा ।

(2) एक खेल ।

आंख-लगी—प्रेमिका । प्र0 मैं क्या तुम्हारी आंख-लगी हूं कि जैसा कहोगे वैसा करती रहूंगी ।

आंखवाला—समझदार, अनुभवी । प्र0 आंखवाले हम तुम्हें कैसे कहें, जब न आंखें आज तक उन पर पड़ीं (चुभते0—हरिऔध, 162) ।

आंखवाला अंधा—जानते-समझते हुए भी भूल करनेवाला । प्र0 अभियुक्त जवान है, शिक्षित और सभ्य है अतएव आंखोंवाला अंधा है (मान0 (8) —प्रेमचंद, 46) ।

आंखें (किसी ओर) उठ जाना या उठी होना—बहुत-से लोगों का खास किसी ओर देखना । प्र0 बाजार में मुझे पहचानने वाले न पहचानने वालों को मेरी विशेषता से परिचित करा रहे थे—चारों ओर से आंखें उठी हुई थीं (चतुरी0—निराला, 11) ।

आंखें कांच होना—मर जाना । प्र0 तब तक उसकी चहेती कुतिया बौली की आंखें कांच हो चुकी थीं (एक चादर0—बेदी, 9-10) ।

आंखें किसी की ओर लगना, -के ऊपर होना—किसी की ओर ही बराबर

ध्यान लगा रहना । प्र0 और फिर, फिर जब मैं उस सभा में इसे सुनाना आरंभ करूंगा, तब, तब, सारे उज्जयिनी की आंखें मेरे ऊपर होंगी (मोर0—जग0 माथुर, 141) ।

आंखें किसी के ऊपर होना— दे0 आंखें किसी की ओर लगना ।

आंखें खिलखिलाना—आंखों से प्रसन्नता टपकी पड़ना । प्र0 अपने परम प्रिय बालबंधु को सामने खड़ा देख श्रीकांत की आंखें खिलखिलाने लगीं।

आंखें खिलना—प्रसन्न होना। प्र0 संयोगिता को देखकर रमाकांत की आंखें खिल गयीं।

आंखें खींचना, -आंखों को खींचना, -पकड़ना—ध्यान या दृष्टि आकृष्ट करना। प्र0 न जाने, ढुलक ओस में कौन, खींच लेता मेरे दृग मौन (पल्लव—पंत, 39); फिर भी उसमें कृष्ण जैसी आंखों को पकड़ लेने वाली बात न थी (देवकी0—रां0 रा0, 14) ।

आंखें खुली रहते—जीतेजी। प्र0 मेरी आंखें खुली रहते कोई यहां की एक चीज इधर-उधर नहीं कर सकता।

आंखें गीली होना—आंखों में आंसू भर आना। प्र0 गयासुद्दीन का गला भर आया और आंखें गीली हो गईं (मृग0—वृ0 वर्मा, 68) ।

आंखें गुद्दी में रहना या होना—(1) मूर्ख होना। प्र0 तुम्हारी आंखें तो गुद्दी में हैं, तुम्हें कुछ थोड़े ही समझ में आयेगा।

(2) दिखाई न देना। प्र0 आंखें गुद्दी में हैं क्या जो झाड़ से टकरा गये ?

आंखें गोल हो जाना—आश्चर्य होना। प्र0 मैंने हीरा दरवान से कहा तो उसकी आंखें गोल हो गईं (परती0 —रेणु, 292) ।

आंखें घुमा लेना—किसी की ओर से उदासीन हो जाना। प्र0 बाबूजी ने राम की ओर से आंखें घुमा ली हैं।

आंखें चारों ओर दौड़ाना—सब ओर अच्छी तरह देखना। प्र0 जरा चारों ओर आंखें दौड़ाकर देखो तो सब समझ में आ जायेगा।

आंखें चारों तरफ चकर-मकर करना—दृष्टि स्थिर न रहना । प्र0 आंखें चारों तरफ चकर-मकर करते रहे तो इस चित्र की बारीकी पल्ले नहीं पड़ेगी।

आंखें चारों तरफ रहना या होना—सब का या सब पर ध्यान रखना। प्र0 दादाजी की आंखें चारों तरफ रहती हैं, कोई उनकी नजर से नहीं बच सकता।

आंखें जाती रहना—दिखलाई न पड़ना । प्र0 दादीजी की आंखें जब से जाती रहीं, तब से वे बड़े कष्ट में हैं।

आंखें टंगी होना—आतुरता से प्रतीक्षा करना। प्र0 तुम्हारे लिये आंखें टंगी रहेंगी (राधा0 —ब्र0 स0, 56) ।

आंखें टेढ़ी-मेढ़ी होना—नाराज होना। प्र0 बाबू दीनदयाल की आंखें आजकल टेढ़ी-मेढ़ी हैं। देखो, क्या गुल खिलता है।

आंखें ठंढी रहना या होना—सुख-शांति से रहना, औलाद जिन्दा और सुखी रहे। प्र0 मेरी तो यही इच्छा है कि सब फलें-फूलें, सब की आंखें ठंढी रहें।

आंखें ढकी रखना—अज्ञान में पड़े रहना। प्र0 चाहिये आंखें खुली रखना सदा, दुख सकेंगे टल नहीं आंखें ढके (चुभते0 —हरिऔध, 39)।

आंखें तनना—क्रोधित होना। प्र0 श्रीमाल की आंखें तन गयीं, शरीर कांपने लगा।

आंखें तर होना—दे0 आंखें गीली होना ।

आंखें तलवों से मलना—बहुत ज्यादा खुशामद करना। प्र0 तुम अपनी आंखें साहब के तलवों से मलते रहो, तुम्हारा कल्याण हो जायेगा।

आंखें तलवों से लगना—आदर होना। प्र0 मेरी आंखें स्वामी जी के तलवों से लग गयीं, मन परम तृप्ति का अनुभव करने लगा।

आंखें तिरमिरा जाना—आंखें चकाचौंध होना, विस्मित होना। प्र0 वहां की सजावट देखकर मेरी आंखें तिरमिरा गयीं (राधा0—ब्र0 स0, 10-11) ।

आंखें थकना—(1) देखकर लुब्ध या मुग्ध रह जाना। प्र0 लखो, दिया है पहना, किसने यह हार बना, भारति-उर में अपना, देख दृग थके (अना0 —निराला, 17) ।

(2) प्रतीक्षा करते-करते थक जाना । प्र0 नैन थके पिय पंथ निहारत, अब मन धीर धरे ना ।

आंखें दबाकर देखना—नीची दृष्टि से देखना। प्र0 सब तरह से जो बेचारे हैं दबे, मत उन्हें आंखें दबाकर देखिये (चुभते0—हरिऔध, 115)।

आंखें दरवाजे से लगी होना, -पथ पर लगी होना—किसी की बहुत उत्सुकतापूर्वक प्रतीक्षा करना । प्र0 साजि सेज भूषन बसन सबकी नजर बचाई, रही नींद मिस पौढ़ि कै दृग दुवार सों लाई (जग0 —पद्माकर, 49); उसकी आंखें भी आज उस पथ पर नहीं लगी हुई हैं (शेखर0 (1)—अज्ञेय, 163) ।

आंखें दुखना—देखकर कष्ट या ईर्ष्या होना। प्र0 उनकी बढ़ती से आपकी आंखें क्यों दुखती हैं ?

आंखें दो-चार होना—सामना होना । प्र0 विश्वनाथ से आंखें दो-चार होते ही वह शर्म से गड़ गया ।

आंखें धोना—ठीक से देखना, देखने के लिए आंखों को साफ करना (व्यंग्य)। प्र0 अच्छी तरह से आंखें धो आइए । उसके बिना आपको इसकी खूबसूरती नहीं नजर आयेगी।

आंखें नाचना—भूख के कारण आंखें निकल पड़ना । प्र0 तन हुआ सूख-सूख कर कांटा भूख से नाच हैं रही आंखें (बोल0—हरिऔध, 35) ।

आंखें निकल पड़ना—(1) भूख आदि के कारण आंखों का बड़ी-बड़ी लगना। प्र0 तंखा दो डग और बढ़े । आंखें निकली पड़ती थीं (गोदान—प्रेमचंद, 100) ।

(2) बहुत क्रोधित होना। प्र0 आंख निकली किसे लगी न बुरी (बोल0—हरिऔध, 215) ।

आंखें निकाल लेना—कठोर दंड देना। प्र0 जानते हैं न कि जिन लड़कों के मां-बाप हैं, उन्हें मारेंगे तो वे आंखें निकाल लेंगे (रंग0 (1) —प्रेमचंद, 91) ।

आंखें पक जाना—प्रतीक्षा करते-करते थक जाना। प्र0 आपकी राह

देखते-देखते तो आंखें थक गयीं (चेतन—अश्क, 251)।

आंखें पथ पर लगी होना—दे0 आंखें दरवाजे पर लगी होना।

आंखें पैदा करना—(1) शऊर सीखना। प्र0 पहले आंखें पैदा करो फिर मेरे सामने आना।

(2) किसी विषय को समझने की जानकारी हासिल करना। प्र0 चित्रकला के सूक्ष्म सौन्दर्य को समझने के लिए आंखें पैदा करो।

आंखें प्यासी होना—देखने की उत्कट इच्छा होना। प्र0 अंखियां हरि दरसन की प्यासी (सू0 सा0—सूर, 4176)।

आंखें फटी रह जाना—आश्चर्य या आनन्द से आंखें खुली रह जाना। प्र0 इला की आंखें फटी सी रह गई (जय0—जैनेन्द्र, 102)।

आंखें फाड़े होना—अच्छी तरह देखते रहना। प्र0 और हम लोग आंखें फाड़े ही थे (जैसे0 —परसाई, 90)।

आंखें फिसलना, -बिछलना—दृष्टि स्थिर न रह पाना। प्र0 आंख मानसिंह पर से फिसलती हुई निहालसिंह पर जा अटकी (मृग0 —वृ0 वर्मा, 328)।

आंखें फेरकर—चेहरा घुमाकर, पूरी उपेक्षा से। प्र0 ××निचली मंज़िलों से कोई भी ऊपर आता था, तो उनकी तरफ से आंखें फेरकर उनकी कोठरी के पास से निकल जाता था (अंधेरे0—राकेश, 28)।

आंख (खें) बंदकर, -मूंदकर—(1) बिना सब बात सोचे-विचारे। प्र0 पन्ना की बातों को वह प्राचीन मर्यादानुसार आंखें बंद करके मान लेता था (मान0 (1) —प्रेमचंद, 1)।

(2) बिना भय के। प्र0 तुम आंखें मूंदकर उनके पास चले जाओ, तुम्हारा काम हो जायेगा।

आंखें बंधना, -बंधी की बंधी रह जाना—दृष्टि जमना। प्र0 पहली बार ही जो देखा तो आंखें बंधी की बंधी रह गयीं (मोर0—जग0 माथुर, 74)।

आंखें बिछलना—दे0 आंख फिसलना।

आंखें मिट जाना, -सफेद हो जाना, -आंखों में तेल की सलाई फिरना—अंधा हो जाना। प्र0 अब तो उसकी आंखें भी सफेद हो गयीं और कानों ने भी जवाब दे दिया।

आंखें मूंदकर—दे0 आंखें बंदकर।

आंखें रह जाना—(1) किसी सामान्य वस्तु के लिए बहुत अधिक मूल्य देने पर आश्चर्य में भर जाना। प्र0 बाप रे बाप, साड़ी का दाम देखकर मेरी आंखें रह गयीं।

(2) आंखों पर बहुत ज़ोर पड़ने के कारण कष्ट होना। प्र0 प्रूफ देखते-देखते आंखें रह जाती हैं।

आंखें रहना या होना—लेने या पाने की नियत होना। प्र0 मैं यह बर-दाश्त नहीं कर सकता कि ××उनकी आंख मेरे घर की लड़कियों पर हो (अंधेरे0—राकेश, 95)।

आंखें राह में बिछाना, -आंखों के पांवड़े बिछाना—बड़े आदर, उत्सुकता से प्रतीक्षा करना। प्र0 आंख उनकी राह में देवें बिछा, प्यारवाली आंख से उनको लखें (बोल0—हरिऔध, 34); आंखों के पांवड़े, बिछा राह तकने की बातें प्रेमिका के मुख से.... (ज्ञान0—यशपाल, 144)।

आंखें रो-रोकर सुजाना, -आंखें सुजाना—बहुत रोना। प्र0 क्यों रो-रोकर आंखें सुजाती हो?

आंखें रोशन करना या होना—(1) खुश होना। प्र0 किलकारी मारते पुत्र की ओर नजर डालने भर से उसकी आंखें रोशन हो जाती हैं।

(2) ज्ञान प्राप्त होना। प्र0 आंखें रोशन किये बिना तुम्हारा उद्धार नहीं।

आंखें लगाए बैठना—प्रतीक्षा करना, इच्छा लिए बैठना। प्र0 हम तो यहां आंख लगाये बैठे थे (झूठा0 (1) —यशपाल, 192)।

आंखें लगाए रखना या लगाना—(1) इन्तजार करना। प्र0 उन्तीस तारीख को भी कनक ग्यारह बजे तक बंगले के फाटक की ओर पोस्ट मैन के लिये आंखें लगाये रही (झूठा0 (1)—यशपाल, 376)।

(2) एकटक देखना। प्र0 कुछ पढ़ रहे हैं, कुछ ऊंघ रहे हैं, कुछ जाली के उस पार बैठी तरुणियों पर आंखें लगाये हैं।

आंखें लगाकर देखना—बड़े ध्यानपूर्वक किसी वस्तु की रखवाली करना। प्र0 कोठरी के दरवाजे पर बैठा वह सारे घर को आंखें लगाए देखा करता।

आंखें लहू-सी होना, -आंखों से आग के अंगारे निकलना—गुस्से में भर जाना। प्र0 देख आंखें हुई लहू जैसी, आंखों में है लहू उतर आता (चोखे0—हरिऔध, 54)।

आंखें सदा या सर्वदा के लिए मूंद लेना—मर जाना। प्र0 जिस दिन सदा के लिए आंख मूंद लूंगा, उस दिन तुम लोग रोओगे।

आंखें सफेद हो जाना—दे0 आंखें मिट जाना।

आंखें सहना—गुस्सा सहना। प्र0 देखो भाई, तुम्हारी इतनी आंखें कौन सहेगा?

आंखें साथ लगी फिरना—किसी ओर दृष्टि का पूरी तरह आकृष्ट होना। प्र0 नाच की चटक लसै, अंगनि मटक-रंग, लाड़िली लटक-संग लोचन लगे फिरैं (घन0 कवित्त —घना0; 134)।

आंखें सुजाना—दे0 आंखें रो-रोकर सुजाना।

आंखों का कहे देना—आंखों से भाव प्रकट होना। प्र0 कोई कहे या न कहे, पर जानते सब हैं। तुम्हारी आंखें, उनकी आंखें ढोल पीट कर कहती हैं (मृग0—वृ0 वर्मा, 55)।

आंखों का ढूंढ़ना—देखने की इच्छा होना। प्र0 रजनी की आंखें सुशील को ढूंढ़ रही थीं।

आंखों का नासूर हो जाना—(1) अप्रिय, हर समय दुःख देनेवाला। प्र0 उसकी चाल-ढाल मेरी आंखों का नासूर हो गयी है।

(2) आंखों से हर समय पानी गिरना।

आंखों का बीमार—प्रेम से पीड़ित। प्र0 आंखों के बीमार से कुछ भी कहना व्यर्थ है।

आंखों का रोना—देखने को तरसना। प्र0 प्रियतम की बस एक झलक को रोतीं बेबस आंखें।

आंखों का शिकार होना—किसी की आंखों से मोहित हो जाना। प्र0 पूछो मत, मैं तो उसकी आंखों का शिकार हो गया।

आंखों का सोता सूख जाना—आंसू एकदम बंद हो जाना। प्र0 उसकी आंखों का सोता सूख गया है। पुत्र-वियोग ने उसे एकदम जड़ कर दिया है।

आंखों की कसम—अगर ऐसा न हो तो आंखें फूट जाएं—इस अर्थ में प्रयुक्त। प्र0 आंखों की कसम, तुम खुद चलकर देख लो।

आंखों की कोर से देखना—(1) स्पष्ट रूप से न देखकर छिपे भाव से देखना। प्र0 प्रभुदयाल कोने में बैठा उसे आंखों की कोर से देखता रहा।

(2) कृपा-दृष्टि से देखना। प्र0 सूर के प्रभु कृपा-सागर, चितै लोचन-कोर (सू0 सा0 –सूर, 253)।

आंखों की जबान से कहना—अपने हृदय के भावों को आंखों द्वारा व्यक्त करना। प्र0 मैंने सब कुछ तो आंखों की जबान से कह दिया, मुंह से कहने को क्या बाकी बचा है।

आंखों के आगे चांदना होना—(1) स्पष्ट दिखलाई पड़ना। प्र0 उसके मन में कोई दुविधा नहीं है, उसकी आंखों के आगे चांदना है, वह सब साफ देख रहा है।

(2) स्पष्ट न दिखलाई पड़ना। प्र0 लगता है तुम्हारी आंखों के आगे चांदना है जो तुम्हें कुछ नहीं समझ आता।

आंखों के आगे चिनगारी छूटना, -लौ छूटना—(1) चकाचौंध होना। प्र0 चारों ओर तीव्र आलोक छा गया। आंखों के आगे चिनगारी छूटने लगी।

(2) दुर्बलता के कारण दिखाई न देना। प्र0 लगातार सात दिनों तक वह रेगिस्तान में बिना दाना-पानी भटकता रहा। आंखों के आगे लौ छूटने लगी।

आंखों के आगे तारे छूटना, -नाचना, -में (से) तितलियां उड़ना—सर चकरा जाना, दुर्बलता या थकावट का आधिक्य होना। प्र0 अभी उन्होंने वाक्य पूरा भी न किया था कि पूरे जन्नाटे के साथ एक थप्पड़ उनकी कनपटी पर पड़ा और उनकी आंखों के आगे तारे नाचने लगे (चेतन–अश्क, 26); मगर मुश्किल से पचास कदम चले होंगे कि गर्दन फटने लगी, पांव थरथराने लगे और आंखों में तितलियां उड़ने लगीं (गोदान–प्रेमचंद, 99)।

आंखों के आगे तारे नाचना—दे0 आंखों के आगे तारे छूटना।

आंखों के आगे पलकों की बुराई करना—इष्ट-मित्रों के बीच निन्दा करना। प्र0 तुम तो आंखों के आगे पलकों की बुराई करने लगे। इससे लाभ?

आंखों के आगे रखना या रहना—हर समय साथ रखना या रहना। प्र0 फिर यहां रहने पर कम से कम तुम तो मेरी आंखों के आगे ही रहोगी (अमृत0–नागर, 197)।

आंखों के आगे लौ छूटना—दे0 आंखों के आगे चिनगारी छूटना।

आंखों के आगे से परदा हटना—(1) बुरी धारणा बदल जाना। प्र0 तुम्हारी बातें सुनकर मेरी आंखों के आगे से परदा हट गया।

(2) अज्ञान या भ्रम दूर होना। प्र0 पहले अपनी आंखों के आगे का परदा हटाओ फिर कुछ करो।

आंखों के तले लहू उतरना या उतराना—क्रोध से आंखें लाल हो जाना या करना। प्र0 शुक्ला की बातें सुनकर उसकी आंखों के तले लहू उतर आया।

आंखों के तीर चलाना—तिरछी नजरों से देखकर मोहित करना। प्र0 आंखों के तीर चलाकर क्यों सारे जहान को घायल कर रही हो?

आंखों के नाखून लेना—(1) शऊर सीखना। प्र0 पहले आंखों के नाखून लो, फिर मेरे पास आना।

(2) चतुर बनना। प्र0 बहुत आंखों के नाखून न ले छोकरी! तू डाल-डाल तो मैं पात पात।

आंखों के पांवड़े बिछाना—दे0 आंखें राह में बिछाना।

आंखों के बल—बड़ी खुशी से। प्र0 बस आप एक चिट्ठी लिख दीजिएगा। मैं आंखों के बल दौड़ा आऊंगा।

आंखों के बल चलना—ध्यान से देखकर चलना। प्र0 आंखों के बल क्यों नहीं चलते? कहीं का कहीं पैर रख रहे हो।

आंखों के हुजूर में रखना—सदैव आंखों के सामने रखना। प्र0 इसी कारण तो मैं इसे आंखों के हुजूर में रखता हूं।

आंखों को खींचना—दे0 आंखें खींचना।

आंखों को खो बैठना, -रो बैठना—दृष्टिहीन होना। प्र0 आपरेशन से भी कोई लाभ न हुआ, अंत को आंखों को रो बैठी।

आंखों को चौंधियाना, -में चकाचौंध होना—(1) तेज प्रकाश के कारण सीधे न देख पाना। प्र0 मुझको चाहिए बिजली के समान वक्र रेखाओं का सृजन करने वाली, आंखों को चौंधिया देने वाली तीव्र और विचित्र ज्वाला (कामना–प्रसाद, 47)।

(2) आश्चर्य-चकित रह जाना। प्र0××आपकी पंडित प्रभा संसार के सारे संस्कृत पंडितों की आंखों में चकाचौंध पैदा कर देती है (सा0 सी0–महा0 द्वि0, 103)।

आंखों को पकड़ना—दे0 आंखें खींचना।

आंखों को रो बैठना—दे0 आंखों को खो बैठना।

आंखों, घुटनों के आगे आना—सामने आना, भोगना पड़ना। प्र0 वह जैसा मेरे साथ करती है, वैसा उनकी आंखों, घुटनों के आगे आये (आजाद–प्रेमचंद, 287)।

आंखों तल—दृष्टि में, दिखलाई पड़ना। प्र0 आप से आप ही जंचे हमको आ सका आप सा न आंख तले (बोल0–हरिऔध, 43)।

आंखों तले अंधेरा छा जाना—कमजोरी के कारण आंखों की ज्योति का शिथिल होना। प्र0 उस दिन तो सचमुच मेरी आंखों तले अंधेरा छा गया था।

आंखों देखकर—जानबूझकर। प्र0 तुमने सब कुछ आंखों देखकर होने दिया है। अब किससे शिकायत कर रहे हो?

आंखों (से) देखकर मक्खी निगलना—किसी बुरे काम को होता देखकर

भी चुप रहना; कुछ न कहना, जानबूझकर अहित या बुरा काम करना। प्र0 औरत जात का हाथ पकड़ते भी तो नहीं बनता; आंखों से देखकर मक्खी निगलनी पड़ती है (गोदान–प्रेमचंद, 119)।

आंखों देखते—जानकारी में। प्र0 आंखों देखते सब कुछ घटित हो गया और हम लोग मुंह ताकते खड़े रह गये।

आंखों देखना न कानों सुनना—अद्भुत, अपूर्व। प्र0 मैया ऐसा करिश्मा तो न कभी आंखों देखा न कानों सुना।

आंखों देखी कानों सुनी—विश्वास योग्य, स्वयं अपने अनुभव में आयी। प्र0 आयु के बासठ वर्षों में आंखों देखा कानों सुना और मन से भोगा हुआ सारा अनुभव क्या 'जगमिथ्या' करके हठपूर्वक टाल दूं (अमृत0–नागर, 675)।

आंखों पर ऐनक लगाना—देखने की तमीज़ हासिल करना। प्र0 जाओ, आंखों पर ऐनक लगाकर आओ तब अवनीन्द्र नाथ के इस चित्र को बारीकी से देख सकोगे।

आंखों पर कदम लेना—इज्ज़त से लाना, पैर छूना। प्र0 हुजूरे आला, मैं आंखों पर उनके कदम लूंगा, आप इशारा भर कर दें।

आंखों पर हाथ रखना—जानबूझकर ध्यान न देना, अज्ञान में रहना। प्र0 तुम आंखों पर हाथ रखे रहो, जो होना होगा, होगा।

आंखों में—विचार में, परख में। प्र0 पर मुझे ऐसा लगा कि उनकी आंखों में अब भी मैं कांटा हूं (त्याग–जैनेन्द्र, 63)।

आंखों में अंगारे जलना—बहुत क्रोधित होना, आंखों से रोष प्रकट होना। प्र0 पिता की आंखों में अंगारे जल उठे (चेतन—अश्क, 144)।

आंखों में अड़ना—बराबर ध्यान में बना रहना। जब तुम्हीं आंख में अड़े आकर तब बिचारी पलक पड़े कैसे (बोल0–हरिऔध, 57)।

आंखों में आंखें पड़ना—प्रेम होना। प्र0 लगता है उसकी आंखों में तेरी आंखें पड़ गयी हैं।

आंखों में उतरना—आंखों से प्रकट होना। प्र0 लेकिन मेरी मनोदशा शायद मेरी आंखों में उतर आई थी (भूले0–भग0 वर्मा, 323)।

आंखों में कहना, -बातें करना, -से बातें करना, -आंखों आंखों में कहना, -बातें करना या होना—आंखों के इशारे से बात करना। प्र0 नैन-नैन कीन्हीं सब बात, गुप्त प्रीति प्रगटायौ (सू0 सा0–सूर, 1292); हडसन ने आंखों-ही-आंखों में अपनी पत्नी को बताया–मैं उनसे बिल्कुल बात नहीं करूंगा (ब्रह्म0–दे0 स0; 358)।

आंखों में कैद करना—आंखों के सामने सदा रूप बना रहना। प्र0 तूं मति मानैं मुकतई कियैं कपट चित कोटि, जो गुनही, तो राखियं आंखिनु मांझ अगोटि (बिहारी रत्ना0–बिहारी, 250)।

आंखों में कौंध जाना—दृष्टि के सम्मुख स्वरूप आ जाना। प्र0 आज भी उसका वह रूप आंखों में कौंध जाता है।

आंखों में खाए जाना—इशारे से धमकाना। प्र0 मैया दूर कोने में खड़े मुझे आंखों में खाए जा रहे थे।

आंखों में घर करना—(1) अत्यंत प्यारा होना। प्र0 किस तरह उससे बचावें आंख हम आंख में जिसने हमारी घर किया (बोल0–हरिऔध, 46)।

(2) हर समय ध्यान में बसा रहना। प्र0 चाहिए न कुछू जाको चाह तासों फल पायौ, यातें वाही वन के सरूप नैन कीनौ घरु (घन0 कवित्त—घना0; 175)

आंखों में चकाचौंध होना—दे0 आंखों को चौंधियाना।

आंखों में चित्र खिंच जाना—आंखों में रूप का हूबहू बना रहना। प्र0 टाइगर हिल से देखे गये सूर्योदय का चित्र आंखों में खिंच गया है।

आंखों में चोब आना—आंखों में लाली आना (चोट आदि के कारण)

आंखों में छाये रहना—आंखों के सामने ध्यान बना रहना। प्र0 तुम तो सदा मेरी आंखों में छाये रहते हो।

आंखों में जंचना—योग्य या अच्छा लगना। प्र0 कोई दूसरा गहना उसकी आंखों में जंचता ही न था (गबन–प्रेमचंद, 3)।

आंखों में जगह करना, -जगह मिलना—(1) किसी के दिल में स्थान पाना, किसी को प्रिय होना। प्र0 शकुन्तला ने दुष्यंत की आंखों में जगह कर ली।

(2) सम्मान पाना। प्र0 गुरुदेव को मेरी आंखों में बहुत बड़ी जगह मिली हुई है।

आंखों में जगह देना—सम्मान करना, प्रिय बनाना। प्र0 आपको सभी आंखों में जगह देंगे।

आंखों में जगह मिलना—दे0 आंखों में जगह करना।

आंखों में जरा भी मैल होना—हया-शर्म होना। प्र0 तुम्हारी आंखों में जरा भी मैल है या नहीं? फिर वही काम करने लगे?

आंखों में जहान स्याह होना—सब ओर अंधेरा ही अंधेरा दिखलाई पड़ना।

आंखों में जान आना, -जी आना, -दम आना—ठंडक पहुंचना। प्र0 एक गिलास ठंढा शर्बत पीकर उसकी आंखों में जान आयी।

(2) आंखों का बीमारी के बाद ठीक होना। प्र0 पूरे छह महीने बाद उसकी आंखों में दम आया है।

आंखों में जी आना—दे0 आंखों में जान आना।

आंखों में जोत आना—प्रसन्नता के कारण आंखों में चमक आना, बहुत प्रसन्न होना। प्र0 अहाते के फाटक में फिटन के प्रवेश करते ही सेठ जी का चेहरा खिल उठा, आंखों में जोत आ गयी (अमृत0–नागर, 22)।

आंखों में झूलना—स्मृति में आना। प्र0 उसकी आंखों में कितने ही मकान झूल गये (जैसे0—परसाई, 67)।

आंखों में डोरे डालना—क्रोधित होना। प्र0 आप व्यर्थ आंखों में डोरे डाल रहे हैं, पहले पूरी बात तो सुन लीजिए।

आंखों में डोरे लगाना—प्रेमपाश में बांधना। प्र0 यार, तुम्हारी तो पांचों घी में है। प्रेम से आंखों में डोरे लगाओ और आनंद लो।

आंखों में तितलियां उड़ना—दे0 आंखों के आगे तारे छूटना।

आंखों में तेल की सलाई फिरना—दे0 आंखें मिट जाना।

आंखों में दम आना—दे0 आंखों में जान आना।

आंखों में दर्द होना—किसी अप्रिय वस्तु को देखकर कष्ट पाना। प्र0 इस कुत्ते को हटाओ यहां से। इसे देखकर मेरी आंखों में दर्द होने

लगता है।

आंखों में धंसना—प्रिय होना। प्र0 धंस गया वह रूप आंखों में, हृदय के गहन तल में।

आंखों में नाचना, -फिरना, -बसना, -रमना, -रहना—बराबर ध्यान बना रहना, स्मृति में बना रहना। प्र0 भिजई हौं रोम रोम आनंद के घन छाय, बसी मेरी आंखिन मैं आंखनि गुपाल की (घन0 कबित्त घना0; 182); देखी जा के सु-छवि जिसकी लोचनों में रमी हो (प्रिय0—हरिऔध, 197); आज भी जब उनकी याद आती है तो वह रंगरेलियां आंखों में फिर जाती हैं (मान0 (1) —प्रेमचंद, 88)।

आंखों में पड़ना—दिखाई देना। प्र0 तुम कह रहे हो तो किताब वहीं होगी पर मेरी आंखों में तो पड़ी नहीं।

आंखों में पनीलापन आना या होना—आंसू छलछला आना। प्र0 पारवती की आंखों में पनीलापन था (कम0-कम0; 123)।

आंखों में पालना—अत्यंत प्रिय मानना। प्र0 शांता ने अपने भाई पर अपना सारा स्नेह उड़ेल दिया था, उसे आंखों में पाला था।

आंखों में प्यास होना—देखने की इच्छा होना। प्र0 उसकी एक झलक पाने की प्यास आज भी आंखों में बनी है।

आंखों में फिरना—दे0 आंखों में नाचना।

आंख में वसंत छाना, -फूलना, -हरियाली छाना—चारों ओर आनंद ही आनंद दिखलाई पड़ना, मस्ती होना।

आंखों में वसंत फूलना—दे0 आंख में वसंत छाना।

आंखों में बसना—दे0 आंखों में नाचना।

आंखों में बहार फिर जाना—खूब प्रसन्न होना, आंखों से प्रसन्नता टपकना।

आंखों में बातें होना या करना—दे0 आंखों में कहना।

आंखों में बैठक बनाना—हर समय ध्यान में रखना। प्र0 तेरे लिए तो मैंने आंखों में बैठक बना रखी है, तू आकर तो देख।

आंखों में बैठना या बैठाना, -रखना—अत्यंत प्रिय होना; सदैव सामने रखने की इच्छा होना। प्र0 हम दुहुं नैन घालि कै राखहिं। ऐसि भाख यहि जीभ न भाखहिं (पद0—जायसी, 32/3); सांच की सी मूरति ह्वै आंखिन मैं पैठी आय, महा निरमोही मढ़े मोह सों हियो ठगी (घन0 कबित्त—घना0; 158); श्रद्धा और प्रीति से तुमको नयनों में बिठलावेगी (मुकुल—सु0 कु0 चौ0; 100)।

आंखों में भंग घुटना—आंखों से भांग का नशा प्रकट होना। प्र0 मुझसे तो बहाना न बना यार, तेरी आंखों में भंग घुट रही है।

आंखों में भटकटैया के कांटे होना, -राई-नोन देना—किसी की नज़र का असर मिटाने के लिए ऐसा करते हैं। प्र0 कहने वालों की आंखों में राई-नोन और भटकटैया के कांटे मगर सभी कहते हैं कि आप मुमताज महल जैसी लगती हैं (सात0—नागर, 45)।

आंखों में मन के भाव उतरना—आंखों की दृष्टि द्वारा मन के भाव का प्रकट होना। प्र0 ऐसा दिखता है कि ज्वालाप्रसाद की आंखों में उनके मन के भाव उतर आए थे (भूले0—भग0 वर्मा, 231)।

आंखों में मोती कूट-कूट कर भरा होना—बड़ी सुंदर रसीली आंखें होना।

आंखों में मोती होना—आंखों में आंसू आना। प्र0 कभी करुण-रस भाव से भरे भरती आंखों में मोती है (मर्म0 —हरिऔध, 130)।

आंखों में मोहिनी होना, -रसीलापन होना—आंखों में आकर्षण होना। उस लड़की की आंखों में मोहिनी है, यह मैं कह सकता हूं।

आंखों में रखना—दे0 आंखों में बैठना या बैठाना।

आंखों में रमना—दे0 आंखों में नाचना।

आंखों में रस भरकर—स्नेहस्निग्ध दृष्टि से। प्र0 धनिया ने आंखों में रस भरकर कहा (गोदान —प्रेमचंद, 32)।

आंखों में रसीलापन होना—दे0 आंखों में मोहिनी होना।

आंखों में रहना—दे0 आंखों में नाचना।

आंखों में राई-नोन देना—दे0 आंखों में भटकटैया के कांटे होना।

आंखों में रात कटना या काटना—किसी चिन्ता या व्यग्रता से रात काटना, रात जागकर बिता देना। प्र0 रात कैसे कटे न आंखों में, क्यों न चिन्ता भरी रहें आंखें (बोल0—हरिऔध, 33)।

आंखों में वचन करना या होना—आंखों से वायदा करना। प्र0 तुम लोगों ने आंखों में ही वचन कर लिया? मुझे खबर तक न हुई।

आंखों में शोले भड़क उठना—बहुत क्रोधित हो जाना। प्र0 सरधना के नवाब की नीली आंखों में शोले भड़क उठे (सात0—नागर, 39)।

आंखों में समाना—अत्यंत प्रिय होना, चित्त में स्मरण बना रहना। प्र0 नैनन्ह मांह तौ उहै समाना। देखौं जहां न देखउं आना (पद—जायसी 27/40); अंग सुभग सजि, ह्वै मधु -मूरति, नैननि मांह समाऊं (सू0 सा0—सूर, 667); जहां लखो तहं रूप तुम्हारे नैनन माहिं समाना (भा0 ग्र0 (2)—भारतेन्दु, 134)।

आंखों में सरूर होना—नशा आदि के कारण आंखों का लाल होना। प्र0 सामने से बांके लाल आते दिखे, वही मस्ती भरी चाल, सरूर भरी आंखें।

आंखों में सांझ फूलना—आंखों में लालिमा होना। प्र0 आए हौ भोर भएं घनआनन्द आंखिन मांझ तौ सांझ सी फूली (घन0 कबित्त —घना0, 122)।

आंखों में सुरमा की तरह समाना—एकदम भीतर तक समा जाना, प्रिय होना। प्र0 वह नाज़नीन मेरी आंखों में सुरमा की तरह समा गयी।

आंख में हरियाली छाना—दे0 आंख में वसंत छाना।

आंखों में हलका हो जाना—किसी का सम्मान घट जाना। प्र0 अपने इस आचरण के कारण वह मेरी आंखों में हलका हो गया है।

आंखों से अलग न करना -दूर न करना या होना—निकट रखना या होना। प्र0 इन अंखियनि आगैं तैं मोहन, एकौ पल जनि होहु नियारे (सू० सा0—सूर, 914); मैं आंखों से अलग न तुझे लाल मेरे करूंगी (प्रिय0—हरिऔध, 50)।

आंखों से आंखें चार होना—नज़र मिलना। प्र0 ×××वह डर रहा था कि मुन्नी की जादुई आंखों से आंखें चार होते ही वह अपने वश में न रह सकेगा (सात0—नागर, 8)।

आंखों से आग के अंगारे निकलना—दे0 आंखें लहू सी होना।

आंखों से आना—नम्रतापूर्वक आना। प्र0 आप जब भी मुझे स्मरण करेंगे, मैं आंखों से आऊंगा।

आंखों से एक आंसू भी न निकलना—तनिक भी दुःख न होना। प्र0 ××× हजारों को अंडमान तथा अन्य जेलों में एड़ियां रगड़ते हुए मरना पड़ा पर उन देशवासियों की आंख से आंसू तक न गिरे (एक म्यान0–नानक0 4)।

आंखों से कबूल होना—अंतर से स्वीकार होना। प्र0 आप जो भी आदेश देंगे, मुझे आंखों से कबूल होगा।

आंखों से करना—दिल से करना। प्र0 इसे आंखों से करने का वादा करो तब तो तुम्हें दूं, नहीं तो किसी और को दूं।

आंखों से काम करना या कराना—(1) किसी की इच्छा जानकर या उसका संकेत मात्र पाकर काम करना या कराना। प्र0 मां आंखों से काम करा लेती हैं, उन्हें कहने की जरूरत नहीं पड़ती।

(2) प्रेम या भक्ति से कोई काम करना। प्र0 वह आपका काम आंखों से करता है। आपको ठीक पता नहीं।

आंखों से खून आना, -खून के आंसू टपकना, -बरसना, -खून टपकना, -खून निचुड़ना, -बरसना—बहुत क्रोध होना। प्र0 आपको देखकर किस नागरिक के हृदय में प्रतिशोध की ज्वाला नहीं धधक उठती? किसकी आंख से खून के आंसू नहीं टपकने लगते (अम्ब0–रा0 बे0, 64); क्यों निचुड़ता न आंख से लोहू, जब लहू खौल बेतरह पाया (बोल0–हरिऔध, 34)।

आंखों से खून के आंसू टपकना—दे0 आंखों से खून आना।

आंखों से खून के आंसू बरसना—दे0 आंखों से खून आना।

आंखों से खून टपकना—दे0 आंखों से खून आना।

आंखों से खून निचुड़ना—दे0 आंखों से खून आना।

आंखों से खून बरसना—दे0 आंखों से खून आना।

आंखों से गंगा-जमुना बहना, -जल की धार बहना, -झड़ी लगना या लगाना—बहुत रोना। प्र0 सुख संपति बिति गई सबनि की, अंखियन लागी झरनि (सू0 सा0–सूर, 4570); देखैं कहा? सपनोहूं न देखत, नैन यौं रैनि दिना झर लावत (घन0 कवित्त–घना0, 28); कछु न लखात ताहि अति व्याकुल दृग-झर लावत भारो (भा0 ग्रं0 (2) –भारतेन्दु, 84); आंखों से गंगा-जमुना बह चलीं (बूंद0 –नागर, 107)।

आंखों से (कोई भाव) चूना—आंखों द्वारा प्रकट होना। प्र0 आकुलित पुलकित गात। अनुराग नैन चुचात (सू0 सा0–सूर, 1241)।

आंखों से जमाना देखना—अनुभवी होना। प्र0 ताऊजी के पास जाओ। उन्होंने आंखों से जमाना देखा है, तुम्हें सही सलाह देंगे।

आंखों से जल की धार बहना—दे0 आंखों से गंगा-जमुना बहना।

आंखों से जान निकलना—प्रतीक्षा की हद होना। प्र0 बाप रे बाप? आज तो आंखों से जान निकल गयी। आपको इतनी देर कैसे लग गयी?

आंखों से झड़ी लगना या लगाना—दे0 आंखों से गंगा-जमुना बहना।

आंखों से ताड़ लेना—देखकर ही समझ जाना। प्र0 तुम्हें कहने की जरूरत नहीं है, मैं तो आंखों से ही ताड़ गया था।

आंखों से दूर न करना या न होना—दे0 आंखों से अलग न करना या न होना।

आंखों से देखना—(1) प्रत्यक्ष अनुभव करना। प्र0 पौन सौं जागति आगि सुनी है पै पानी तें लागति आंखिन देखी (घन0 कबित्त –घना0, 74)।

(2) जानकारी में। प्र0 आपके चार पैसे खाता हूं, तो आपको आंखों से देखकर गड़े में न गिरने दूंगा (रंग0 (1)–प्रेमचंद, 377)।

आंखों से परदा हटना—अज्ञान दूर होना। प्र0 उसकी आंखों पर से सहसा एक पर्दा हट गया था (चेतन –अश्क, 293)।

आंखों से पीकर कान की प्यास बुझाना—सुनी बात को स्वयं देखकर तृप्त होना, किसी के रूप-गुण का वर्णन सुनने के बाद उसे देखकर तृप्त होना।

आंखों से पीना—(1) अच्छी तरह देखना। प्र0 और जैसे निमिष-मात्र के लिए आगन्तुक को आंखों से पीकर चेतन भागता हुआ ऊपर पहुंचा ×× (चेतन—अश्क, 39)।

(2) ललक से देखना। प्र0 पत्नी के रूप को वह आंखों से पीये जा रहा था पर किसी तरह तृप्ति नहीं हो रही थी।

आंखों से बातें करना—दे0 आंखों में कहना।

आंखों से मोती गिरना, -बरसना—रोना। प्र0 दिल हिले, आंख से गिरे मोती, दिल खिले फूल झड़ पड़े मुख से (चोखे0–हरिऔध, 36)।

आंखों से मोती बरसना—दे0 आंखों से मोती गिरना।

आंखों से रस निचुड़ना—मस्ती छा जाना। प्र0 कुछ पूछो मत, सबकी आंखों से रस निचुड़ रहा था।

आंखों से रस बरसना—प्रेमपूर्ण दृष्टिपात करना। प्र0 है कोई आंख विष उगल देती है किसी आंख से बरसता रस (बोल0–हरिऔध, 52)।

आंखों से लगाना—(1) सादर स्वीकार करना। प्र0 धन्यवाद की विभूति तक़सीम कर दी है। सब ने सिरमाथे पर चढ़ाई, आंखों से लगाई (पद्म0 के पत्र–पद्म0 शर्मा, 188)।

(2) बहुत यत्न और प्यार करना। प्र0 आपकी भेंट को उसने आंखों से लगाया, उसका दिल भर आया।

आंखों से लहू टपकना—(1) बहुत क्रोध होना। प्र0 तुम्हें देखते ही उसकी आंखों से लहू टपकने लगता है।

(2) बहुत दुःख या क्षोभ होना। प्र0 अपने देश की दुर्गति देखकर आंखों से लहू टपकने लगता है।

आंखों से विष उगलना—रोषपूर्ण दृष्टिपात करना। प्र0 है कोई आंख विष उगल देती है किसी आंख से बरसता रस (बोल0 –हरिऔध, 52)।

आंखों से सब कुछ पढ़ लेना—चेहरा देखकर भाव जान लेना। प्र0 चपल थी तो नीलिमा जो मानो आंखों से सब कुछ पढ़ लेना चाहती थी (बौने0–रां0 रा0, 86)।

आंखों ही आंखों में—संकेत द्वारा, दृष्टि विनिमय द्वारा। प्र0 और चलते-चलते बानो रानी को जरा-सी आड़ देकर आंखों ही आंखों में रमेश से अपना जन्म-जन्म का नाता जादू-सा जोड़ गयी (अमृत0—नागर, 536)।

आंखों ही आंखों में चुरा लेना—चालाकी करना, चालाकी से कोई चीज गायब कर देना। प्र0 वाह यार, तुम तो आंखों ही आंखों में चुरा लाये।

आंखों-आंखों पर (में) रहना—प्रिय रहना, ध्यान में रहना। प्र0 ऐसे गुणों से बाबू प्रेमकुमार छात्रों की आंख-आंख पर रहते, गले-गले से फिरते हैं (लिली—निराला, 109)।

आंखों-आंखों में उड़ा देना—दे0 आंखों ही आंखों में चुरा लेना।

आंखों-आंखों में कहना—दे0 आंखों में कहना।

आंखों-आंखों में खा जाना—दृष्टि से ऐसा प्रकट करना जैसा जीता निगल जायेंगे। प्र0 जगदीश का गुस्सा सीमा लांघ चुका था, लगता था आंखों-आंखों में खा जाएगा।

आंखों-आंखों में बातें करना या होना—दे0 आंखों में कहना।

आंखों-देखा—(1) स्वयं देखा हुआ। प्र0 इसकी कितनी ही आंखों-देखी मिसालें दी गयीं (गबन—प्रेमचंद, 279)।

(2) किसी घटना या खेल आदि को देखकर दिया गया धारा-वाहिक विवरण। प्र0 अब आप तीसरे दिन के मैच का आंखों देखा हाल सुनिए।

आंच आना, -पाना, -लगना—हानि पहुंचना। प्र0 धनी, वेद विद विप्र, नृप, नदी, वैद्य ये पांच, जहां होहिं नहिं तहं बसे निश्चै पावै आंच (राधा0 ग्रंथा0—राधा0 दास, 67); तुम्हारे ऊपर आंच आने के पहले मेरे तन के टुकड़े-टुकड़े हो जायेंगे (मृग0—वृ0 वर्मा, 396)।

आंच का खेल—खतरनाक काम। प्र0 तुम आंच का खेल क्यों खेल रहे हो?

आंच खाना—(1) गरम होना। प्र0 तब खरा रह गया कहां सोना जब हुआ मैल दूर आंचें खा (चुभते0—हरिऔध, 15)।

(2) गुस्सा हो जाना। प्र0 व्यर्थ आंच खाने से कोई लाभ नहीं, ठंढे दिमाग से सोच-विचार कर निर्णय लो।

(3) अधिक पक जाना या जल जाना। प्र0 आलू दम जरा आंच खा गया।

आंच दिखाना, -देना—आंच के सामने या हलकी आंच पर रखकर गरम करना। प्र0 घी को जरा आंच दिखा लाओ तो। देखो, हलकी आंच देना नहीं तो स्वाद बिगड़ जायगा।

आंच देना—दे0 आंच दिखाना।

आंच पाना—दे0 आंच आना।

आंच बुझना—क्रोध या विद्रोह का कम होना। प्र0 मलेशिया की आंच किसी तरह नहीं बुझ रही है।

आंच लगना—दे0 आंच आना।

आंच लगाना—(1) गर्मी पहुंचाना। प्र0 तरकारी को जरा और आंच लगाओ।

(2) अहित करना। प्र0 तुम अपनी ओर से क्यों आंच लगाते हो?

आंच सहना—दुःख या विपत्ति सहना। प्र0 उतरती जाती है पगड़ी, आबरू आंचें सहती हैं (मर्म0—हरिऔध, 78)।

आंच से खेलना—जानबूझकर जोखिम का काम करना। प्र0 इस तरह आंच से खेलना सर्वथा नादानी है।

आंचल का सर्वस्व—प्रिय संतान। प्र0 हे प्रभो, मेरे आंचल के सर्वस्व को मुझसे मत छीनो।

आंचल की ओट, -छाया, -शरण—सहारा, आश्रय, कृपा। प्र0 मोहन है अति माधुरि-मूरति, राखियै अंचल ओट (सू0 सा0—सूर, 3513); छिपकर भी तो सुधि ले न सकी, छाया अंचल की दे न सकी (चक्र0—दिनकर, 253)।

आंचल की छाया—दे0 आंचल की ओट।

आंचल की शरण—दे0 आंचल की ओट।

आंचल की हवा लगना—शांति मिलना, किसी स्त्री के स्नेह की छत्रच्छाया में शांति मिलना। प्र0 मां की बात ही कुछ और होती है, उसके आंचल की हवा लगते ही सब दुःख भूल जाता है।

आंचल डालना—(1) आंचल फैलाकर भीख मांगना। प्र0 मैं तुम्हारे सामने आंचल डाले बैठी हूं, तुम दया करो।

(2) मुसलमानों में विवाह की एक रीति।

आंचल दबाना—स्तन से दूध पीना। प्र0 बच्चा आंचल नहीं दबा रहा है, न जाने क्या बात है।

आंचल देना—(1) बच्चे को दूध पिलाना। प्र0 बच्चा कब से रो रहा है, आंचल क्यों नहीं देतीं?

(2) विवाह की एक रस्म।

आंचल पकड़ना—(1) विवाह करना। प्र0 मैंने उसका आंचल पकड़ा है, मैं अपने कर्त्तव्य से विमुख नहीं होऊंगा।

(2) सहारा देना। प्र0 कोई मेरा आंचल पकड़े तब न मैं हिम्मत करूं।

आंचल पड़ना—आंचल छू जाना (जो बुरा माना जाता है)। प्र0 सम्हालकर, किसी पर आंचल न पड़ जाय।

आंचल पर बैठाना, -बिछाना—बहुत आवभगत करना। प्र0 शांति को गृहिणी ने आंचल पर बैठाया। उसकी खातिर में सारे घर ने आंचल बिछाया।

आंचल पसारना, -फैलाना, -रोपना—अत्यंत दीनभाव से भीख मांगना, नम्रता दिखाना। प्र0 मैंने आज तक अपनी व्यथा अपने मन में रखी, लेकिन आज मैं आपसे आंचल फैलाकर भिक्षा मांगती हूं (गोदान—प्रेमचंद, 196)।

आंचल फाड़ना—(1) पर्दानशीन औरत का दूसरों से बात करना। प्र0 बहू का इस तरह आंचल फाड़ना क्या उचित था?

(2) एक टोटका।

आंचल फैलाना—दे0 आंचल पसारना ।

आंचल बिछाना—दे0 आंचल पर बैठाना।

आंचल मुंह पर लेना—घूंघट निकालना। प्र0 ससुर के सामने आंचल मुंह पर ले लो बहू।

आंचल में बांधना—(1) पा लेना, सहज उपलब्ध होना। प्र0 तुम थोड़े ही समय में सारी कलाओं को अपने आंचल के छोर में बांध लोगी, मुझको विश्वास है (मृग0—वृ0 वर्मा, 249) ।

(2) किसी की कही बात को अच्छी तरह याद रखना। प्र0 उनकी बातें आंचल में बांध रखना, लाभ होगा।

(3) हर समय पास रखना। प्र0 हां, ठीक है, बेटे को तुम हर समय अपने आंचल से बांधे रहो। बहुत अच्छा होगा।

आंचल में मुंह छिपाना—किसी स्त्री की आड़ लेकर या उसका सहारा लेकर अपनी रक्षा करना। प्र 0 तुम मां के आंचल में मुंह छिपाये रहो, सारी जिन्दगी ऐसे ही काट देना

आंचल में सात बातें बांधना—एक टोटका करना।

आंचल रोपना—दे0 आंचल पसारना ।

आंचल लेना—(1) आंचल से पैर छूकर प्रणाम करना। प्र0 शांति ने सास का आंचल लिया और एक ओर खड़ी हो गयी।

(2) स्वागत करना । प्र0 सबका आदरपूर्वक आंचल लेना।

आंचल सम्हालना—देह को ठीक से ढकना। प्र0 आंचल संभालो बहू, शऊर सीखो।

आंट डालना—दुश्मनी करवाना। प्र0 क्यों आंट डलवाते हो हमारे बीच।

आंट पड़ना, -होना—मनमुटाव होना। प्र0 अब तो हम लोगों के बीच आंट पड़ गयी है।

आंट पर चढ़ना—घात पर चढ़ना। प्र0 मुन्ना—जहां तक हो आंट पर न चढ़ो (चोटी0 —निराला, 144) ।

आंट रखना—शत्रुता मानना। प्र0 रामनाथ तो मुझसे सदा से आंट रखता है ।

आंट लगाना—रुकावट डालना। प्र0 तुम इस तरह मेरे काम में आंट न लगाओ, अच्छा न होगा।

आंट होना—दे0 आंट पड़ना।

आंट-सांट—साजिश। प्र0 कालीपद और दीपू मिलकर आजकल खूब आंट-सांट कर रहे हैं।

आंटी पड़ना—मन में गांठ पड़ना। प्र0 अब तो आंटी पड़ गयी है, तुम कुछ भी कहो, कोई लाभ नहीं।

आंडू बिकना—बिना परिश्रम काम हो जाना। प्र0 जब तक आंडू बिकता है, तब तक क्या चिन्ता है।

आंड़े-बांड़े खाना—इधर-उधर मारे-मारे फिरना। प्र0 बस, तुम आंड़े-बांड़े खाते फिरो। तुमसे और कोई उम्मीद नहीं।

आंत उतरना—एक रोग जिसमें आंत उतरकर नाभी के नीचे चली जाती है और पीड़ा देती है। प्र0 जो न चित्त से कभी उतर पाई, अब उतर आंत वह सताती है (बोल0 —हरिऔध, 224)।

आंत उलटी आना—दुर्गति होना; कष्ट होना; प्राणांतक स्थिति होना। प्र0 जाति की आंतें उलटती देखकर, आ गईं मुंह में अगर आंतें नहीं (बोल0 —हरिऔध, 223) ।

आंत कढ़ना—कष्ट पाना। प्र0 क्यों कुढ़ें और हम कुढ़ें किस पर, कढ़ गई आंत तो रहे कढ़ती (बोल0 —हरिऔध, 224) ।

आंत की आंत—बहुत लम्बा। प्र0 तुम्हारी गाय का पगहा तो आंत की आंत जैसा है।

आंत की ऐंठ निकलना—अभिमान दूर होना। प्र0 तब भला कान ऐंठ देने से, आंत की ऐंठ क्यों निकल पाती (बोल0 —हरिऔध, 75) ।

आंतें कटना—बहुत अधिक दस्त होना, आंव पड़ना।

आंतें करोना, -कुलकुलाना, -कुलबुलाना, -कूं कां करना, -बजना, -मसोसना, —आंतों का कुलहुअल्लाह पढ़ना—जोर से भूख लगना। प्र0 दांत कैसे नहीं निकालें हम, आंत है कुलबुला रही मेरी (बोल0—हरिऔध, 224); इस वक्त तो भूख लगी हुई है। आंतें कुलहुअल्लाह पढ़ रही हैं (आजाद0 —प्रेमचंद, 297) ।

आंतें कुलबुलाना—दे0 आंतें करोना ।

आंतें कूं कां करना—दे0 आंतें करोना ।

आंतें गले पड़ना—मुसीबत में पड़ना। प्र0 व्यर्थ उससे अपने दिल की बात कही। इन लोगों से कह दे, तो उलटी आंतें गले पड़ जायं (गबन—प्रेमचंद, 296) ।

आंतें गले में आना, -निकलना, -मुंह को (में) आना—बहुत परेशानी में होना। प्र0 जाति की आंतें उलटती देखकर, आ गईं मुंह में अगर आंतें नहीं (बोल0 —हरिऔध, 223) ।

आंतें निकलना—दे0 आंतें गले में आना ।

आंतें बजना—दे0 आंतें करोना ।

आंतें भारी होना—पेट साफ न होना। प्र0 आज कई दिनों से आंतें भारी हैं, भूख नहीं लगती।

आंतें मसोसना—दे0 आंतें करोना ।

आंतें मुंह को (में) आना—दे0 आंते गले में आना ।

आंतें समेटना—भूख बर्दाश्त करना। प्र0 पेट भरता न देखकर अपना. लोग आंतें समेट लेते हैं (बोल0—हरिऔध, 222) ।

आंतें सूखना—खाना न मिलना। प्र0 है यही चाह सुख मिले न मिले, तन सुखायें न सूखती आंतें (बोल0 —हरिऔध, 223) ।

आंते-पोते जलना—बहुत क्रोध होना। प्र0 मेरे सामने अपना बड़प्पन मत झाड़ा कर। मेरे आंते-पोते जल जाते हैं (मोहल्ले0 —बिन्दु अग्र0; 104) ।

आंतों का कुलहु-अल्लाह पढ़ना—दे0 आंतें करोना।

आंतों का ढेर करना—मार डालना। प्र0 ले, अब जल्दी उसका नाम बताइए, अभी आंतों का ढेर किये देता हूं (आजाद0 —प्रेमचंद, 77) ।

आंतों का बल खुलना या खुलवाना, -खोलना—भर पेट भोजन कराना

या.करना, तृप्तिपूर्वक भोजन करना या कराना। प्र0 आज लम्बे अरसे बाद आंतों का बल खुला, मज़ा आ गया।

आंतों का बल खोलना—दे0 आंतों का बल खुलना।

आंतों में बल पड़ना—पेट में दर्द होना। प्र0 हंसते-हंसते मेरी आंतों में बल पड़ गये।

आंतों से बातें निकाल लेना—मन की या गुप्त बात निकलवा लेना। प्र0 एलिग नवाब साहब जैसे हिन्दुस्थानियों की आंतों तले से बात को निकालने का कड़ा जानता था (झांसी0 —वृ0 वर्मा, 144)।

आंध आंना—कष्ट होना। प्र0 अच्छा, तुम्हें जबान हिलाने में क्यों आंध आती है?

आंधी—बहुत फुरती और तेज़ी से कोई काम करने वाला; चुस्त। प्र0 सूद देने में तो हम आंधी हैं (आज़ाद0—प्रेमचंद, 237)।

आंधी आना—किसी बात या वस्तु का पूरे वेग से आना। प्र0 संतौ भाई आई ज्ञान की आंधी रे (कबीर ग्रंथा0 —कबीर, 93)।

(2) असंतोष या विरोध होना। प्र0 द्विवेदी जी ने समय-समय पर कुछ ऐसे लेख लिखे हैं जिनके कारण हिन्दी साहित्य में एक आंधी सी आ गई है (कुछ —प0 पु0 बख्शी, 75)।

(3) विपत्ति आना। प्र0 हमारे ऊपर तो ऐसी आंधी आयी कि पूछो मत।

आंधी उठना या उठाना—(1) प्रबल आंदोलन होना या करना। प्र0 क्या आपकी धारणा है कि दूसरी ओर से जो आंदोलन की आंधी उठ रही है वह ईर्ष्या-द्वेष के दुर्भाव से रहित है (पद्म0 के पत्र—पद्म0 शर्मा, 66)।

(2) अंधेर होना या करना। प्र0 बाप रे बाप, ऐसी आंधी उठा रखी है कि पूछो मत।

(3) मन में बहुत आवेग होना। प्र0 मेरे मन में उठने वाली आंधी ने मुझे बहुत अस्थिर कर दिया है।

(4) धूमधाम मचना या मचाना। प्र0 क्यों बेकार आंधी उठा रहे हो? सब काम ढंग से करना चाहिए।

आंधी का आम—बहुत सस्ता। प्र0 यहां तो नायलान की साड़ियां आंधी का आम हो रही हैं, जितनी चाहे, ले लो।

आंधी की तरह—अत्यंत वेग से। प्र0 वे अगिया बैताल बने आंधी की तरह कमरे में घुस पड़े (दिल0 —जी0, 25)।

आंधी की तरह आना, बगूले की तरह जाना—फौरन चले जाना। प्र0 कोई आंधी की तरह आये और बगूले की तरह चला जाय तो उसकी खातिर-तवज्जोह कैसे की जाय।

आंधी चलना—(1) विचारों का मंथन होना। प्र0 सम्राट मेरी आत्मा में आंधी, भीषण आंधी चलती रहती है (मोर0 —जग0 माथुर, 60)।

(2) दे0 आंधी आना (1), व0(2)।

आंधी बनना—उग्र रूप धारण करना। प्र0 इसीलिए सरजू के मन में जो बात अपनी अभिव्यक्ति पाने के लिए आंधी बन रही थी उसे वह करोने से पीता चल रहा था (बया0 —ल0 ना0 लाल, 12)।

आंधी रोग होना—बहुत बोलना। प्र0 बाबा, इस लड़के को तो आंधी रोग है, रुकता ही नहीं।

आंधी से खेलना—जानबूझकर विपत्ति में पड़ना। प्र0 आंधियों से खेलता है, बातें करता है—बिजलियों से आलिंगन (स्कंद0 —प्रसाद, 25)।

आंधी हो चलना या जाना—तेजी से भाग जाना। प्र0 मूसन तिवारी ने बेतहाशा खदेड़ा। हम लोग तो बस अपने-अपने घर की ओर आंधी हो चले (दे0 दु0 —शिव0, 8)।

आंय-बांय—व्यर्थ का। प्र0 जाकी रचना वाकै आगें। आंय-बांय सारे भै भागें (नंद0 ग्रंथा0 —नंद0; 167)।

आंय-बांय करना, -बकना—इधर-उधर की बेमतलब बातें करना। प्र0 आंय-बांय बकता है, साफ़ बात नहीं बताता (मा0—कौशिक, 328)।

आंव-बांय बकना—दे0 आंय-बांय करना।

आंय-बांय-सांय (में) उड़ा देना, -बूंकना—इधर-उधर की बात में मतलब की बात को समाप्त कर देना। प्र0 तम्बोलिन और बेलदारिन से पूछते थे तो वह भी आंय-बांय-सांय उड़ा देती थीं (आज़ाद0—प्रेमचंद, 459)।

आंय-बांय-सांय बूंकना—दे0 आंय-बांय-सांय (में) उड़ा देना।

आंवल नाल गड़ना—मातृभूमि होना। प्र0 यहां मेरा आंवल नाल गड़ा है। यहां के कण-कण से मुझे प्यार है।

आंस आना—किशोर होने के समय मूंछ की रेखा आना, किशोर होना। प्र0 सुधाकर का कंठ फूट चुका था, आंसें आने लगी थीं।

आंसुओं का तार न टूटना, -तार बंधना, -बहना, -परनाला बहना या बहाना, -की झड़ी बंधना, -लगना, -बाढ़ आना—बहुत देर तक रोते रहना। प्र0 चहुं दिसि कान्ह कान्ह कहि टेरत, अंसुवन बहत पनारे (सू0 सा0 —सूर, 4718); यह सोचकर ज्ञानशंकर जोर से रो उठे। आंसू की झड़ी लग गयी (प्रेमा0—प्रेमचंद, 444); वदन बिलोके बिना बावले युगल-नयन बन जायेंगे तार बांध बहते आंसू का बार-बार घबरायेंगे (वैदेही0 —हरिऔध, 59)।

आंसुओं का तार बंधना—दे0 आंसुओं का तार न टूटना।

आंसुओं का तार बहना—दे0 आंसुओं का तार न टूटना।

आंसुओं का परनाला बहना या बहाना—दे0 आंसुओं का तार न टूटना।

आंसुओं की झड़ी बंधना—दे0 आंसुओं का तार न टूटना।

आंसुओं की झड़ी लगना—दे0 आंसुओं का तार न टूटना।

आंसुओं की नदी बांध तोड़ कर उमड़ पड़ना—बहुत जोरों से रोना आना। प्र0 आंसुओं का दरिया बांध तोड़कर उमड़ पड़ा। बशीर खां के पैरों पर अपना सर पटकते हुए वह बोली ××× । (सात0 —नागर, 9)।

आंसुओं की बाढ़ आना—दे0 आंसुओं का तार न टूटना।

आंसुओं में डूबना, -से मुंह धोना—बहुत रोना, कष्ट में दिन बिताना।

प्र0 स्याम बिनु अंसुअनि बूड़त, दुसह घुनि भइ गात (सू0 सा0 —सूर, 4692); डूबते हैं जो गये वे डूब तो आंसुओं में आंख क्या है डूबती (बोल0—हरिऔध, 64)।

आंसुओं से मुंह धोना—दे0 आंसुओं में डूबना।

आंसुओं से सींचना—बहुत प्रेम और पीड़ा से किसी भाव को पल्लवित करना। प्र0 वह बेचारी तो पति की याद को आंसुओं से सींच-सींच कर हरी किये हुए है।

आंसू अपने अंदर पीना—मन के दुःख को भीतर ही दबा रखना। प्र0 चुपचाप अपने आंसू अंदर पीकर वह सीखता चला जाता है (चेतन —अश्क, 3)।

आंसू आना—दुःख या सुख के अतिरेक के कारण आंखों में आंसू भर आना। प्र0 जेइं मुख देखा तेइ हंसा सुना तो आए आंसु (पद0 —जायसी, 1/23)।

आंसू उमड़ पड़ना—रोना आ जाना, मन दुखी होना। प्र0 अपने आप को रोकने की बहुत कोशिश करने के बावजूद उसकी आंखों में आंसू उमड़ पड़े।

आंसू का क़तरा—आंसू। प्र0 पर वे मकबरे क्या उसकी रूह को उतनी राहत पहुंचा सकते हैं जितनी उसके दोस्त आंसू के क़तरे टपका कर पहुंचाते हैं (सा0 सु0 —बा0 भट्ट, 108)।

आंसू का घूंट पीकर रह जाना, -पीकर रह जाना, -पीना—भीतर ही भीतर रोकर रह जाना। प्र0 भूख से सूख ओंठ जब जाते दाता-भाग्य-विधाता से क्या पाते? घूंट आंसुओं के पीकर रह जाते (परि0 —निराला, 133-134); पर जिस बेबस को आंसू पीकर रह जाना पड़ता है, उसका आंसू वही पोंछता है जो —××(दे0 दु0 —शिव0; 29)।

आंसू गारना, -गिराना, -डालना, -ढारना (1) रोना। प्र0 नारि चरित करि ढारइ आंसू (राम0 (अयोध्या) —तुलसी, 384); निठुरा आगे रोइबो, आंस गारिबो खीस (रहीम कवि0 —रहीम, 10); देखो भयंकर भेड़िये भी आज आंसू डालते (जय0—गुप्त, 78)।

आंसू गिराना—दे0 आंसू गारना।

आंसू चलना, -छनना—आंखों से आंसुओं की धारा बहना। प्र0 चल सका कुछ बस न आंसू के चले (बोल0—हरिऔध, 61)।

आंसू छनना—दे0 आंसू चलना।

आंसू छलकना, -डबडबा आना—आंखों में आंसू आना। प्र0 कुमुदिनी की आंखों में आंसू छलक आये।

आंसू टपकाना—दुःख करना। प्र0 अब आंसू टपकाने से क्या लाभ? चुप होकर बैठो।

आंसू डबडबा आना—दे0 आंसू छलकना।

आंसू डालना—दे0 आंसू गारना।

आंसू ढारना या ढालना—दे0 आंसू गारना।

आंसू न थमना, -सूखना—दुःख का आवेग कम न होना। प्र0 अभी अन्न-जल की हाय-हाय से आकाश फट रहा है, लोगों के आंसू भी सूखने नहीं पाये हैं कि हैज़े की चढ़ाई ने लोगों के और भी छक्के छुड़ा दिये (मिश्र निबंध0)।

आंसू न सूखना—दे0 आंसू न थमना।

आंसू निकल पड़ना—सहसा रो देना। प्र0 बेटे का नाम मेरी जबान पर आते ही उसके आंसू निकल पड़े।

आंसू पलकों पर होना—ज़रा-ज़रा सी बात पर रो पड़ना। प्र0 आनंदी स्त्रियों के स्वभावानुसार रोने लगी, क्योंकि आंसू उनकी पलकों पर रहते हैं (मान0 (7)—प्रेमचंद, 146)।

आंसू पीकर रह जाना—दे0 आंसू का घूंट पीकर रह जाना।

आंसू पीना—दे0 आंसू का घूंट पीकर रह जाना।

आंसू पुंछना या पोंछना—ढाढ़स बंधना या बंधाना। प्र0 पर मदनबान से कुछ रत्ती केतकी के आंसू पुछते चले (इंशा0—इंशा, 113); मान लिया कि उन पर मेरी ईर्ष्या का रहस्य खुल गया तो सहृदयता और शालीनता इसमें थी कि वह मुझसे सहानुभूति प्रकट करते, मेरे आंसू पोंछते (प्रेमा0—प्रेमचंद, 35)।

आंसू पोंछनेवाला—सहानुभूति दिखलानेवाला। प्र0 ××मेरी बीवी को रो-रोकर दिन काटने पड़े, कोई आंसू पोंछनेवाला भी नहीं हुआ ××(रंग0—प्रेमचंद, 525)।

आंसू बरसना या बरसाना, आंसू धार रोना—ऐसा रोना जिसमें खूब आंसू गिरे। प्र0 बिना बिलोके मुख-मयंक छवि पल-पल आंसू बरस रही हैं (वैदेही0—हरिऔध, 105)।

आंसू बहना या बहाना—दुःख होना या करना। प्र0 ओ निजत्व के वादक, इस अरण्य-रोदन से लाभ? अपने पर, आंसू मत बहाओ (कला0 —पंत, 90)।

आंसू बहानेवाला—संवेदना प्रकट करनेवाला। प्र0 कोई उसकी लाश पर आंसू बहानेवाला भी न होगा (ग़बन—प्रेमचंद, 133)।

आंसू भर आना, -लाना—रोने लगना। प्र0 उनका रूखा उत्तर पा मेरी आंखों में आंसू भर आए।

आंसू भर लाना—दे0 आंसू भर आना।

आंसू सिर पड़ना—शाप पड़ना। प्र0 बुढ़िया के आंसू ज़रूर तुम्हारे सिर पड़ेंगे, तुमने बहुत सताया है।

आंसू सूख जाना—रोना न आना, अत्यधिक दुःख के कारण काठ मार जाना। प्र0 सुखिया काठ-सी बनी बैठी थी, उसके आंसू सूख गये थे।

आंसू तोड़—कुसमय की वर्षा। प्र0 यह आंसू-तोड़ वर्षा सारी फसल चौपट कर देगी।

आंसू-धार रोना—दे0 आंसू बरसना या बरसाना।

आंसें भींगना—मसें भीनना। प्र0 अटल हट्टा-कट्टा युवक था। आंसें भीग चुकी थीं (मृग0—वृं0 वर्मा, 13)।

आ खड़ी होना—आ पड़ना, सम्मुख उपस्थित होना। प्र0 मेरे सिर ऐसी मुसीबत आ खड़ी हुई है कि पूछो मत।

आ गिरना—अचानक गिर पड़ना। प्र0 तीन दिनों तक लगातार वर्षा होने के कारण छत आ गिरी।

आ घुसना—आना या होना। प्र० आज के सामाजिक जीवन में इतनी बुराइयां आ घुसी हैं कि कुछ कहा नहीं जा सकता।

आ घेरना—आना, चारों ओर छा जाना। प्र० देखते-देखते टिड्डीदल की तरह सैनिकों ने आ घेरा।

आ जमना, आ जुटना—इकट्ठा होना या अड्डा जमाना। प्र० मुहल्ले के आधे दर्जन मनचले ब्राह्मण युवक उस वेश्या से मिलने मेरे यहां आ जमते थे (अपनी० —उग्र, 23)।

आ जुटना—दे० आ जमना।

आ टपकना, -धमकना—एकाएक आना। प्र० हम सब मौज में बैठे गप्पें मार रहे थे कि अचानक श्रीविलास जी आ टपके। सब मजा किरकिरा हो गया।

आ धमकना—दे० आ टपकना।

आ निकलना—आना। प्र० अचानक उधर से बाबूजी आ निकले।

आ पड़ना—सहने या करने को जो भी आ जाय। प्र० सुख दुख कीरति भाग अपने आइ पैर सो गहियै (ब्र० सू० को०)।

आ फंसना—मुसीबत में पड़ जाना। प्र० कुछ पूछो मत यार, न जाने किस झमेले में हम आ फंसे।

आ बनना—(1) लाभ उठाने का अच्छा अवसर हाथ आना। प्र० अब क्या सोचैं आइ बनीं, सिर परि साहिब राम धनी (कबीर ग्रंथा० —कबीर, 118)।

(2) पाला पड़ना, मौका पड़ना। प्र० मद्य पंचक लै गए स्याम घन आय बनी यह बात (भ्र० सा०—सूर, 365); क्यौं भरियै, करियै सु कहा, हमैं आनि बनी इन लोगन सों इत (घन० कवित्त —घना०, 72)।

आ बे लौंडे जा बे लौंडे करना—काम में मन न लगाकर इधर-उधर में समय बिता देना। प्र० तुम सारे दिन आ बे लौंडे जा बे लौंडे करते रहो, काम हो चाहे चूल्हे में जाय।

आ रहना—गिर पड़ना। प्र० हम लोग बैठे बात कर रहे थे कि अचानक पंखे की एक पत्ती आ रही।

आ लगना—(1) किसी ठिकाने पहुंचना। प्र० अब तो यही इच्छा है कि तुम जल्दी ही कहीं ठौर-ठिकाने से आ लगो, मेरा काम पूरा हो।

(2) साथ लगना। प्र० न जाने कहां से यह मनहूस आ लगा।

आ लेना—(1) पास पहुंच जाना, पकड़ लेना। प्र० मैं बहुत तेज भागा पर श्रीपत से पार न पा सका। उसने दौड़कर मुझे आ लिया।

(2) आक्रमण करना, टूट पड़ना। प्र० रात्रि के निविड़ अंधकार में अचानक शत्रु सेना ने आ लिया।

आई—(1) होनी। प्र० आई को कोई मेट नहीं सकता।

(2) मृत्यु। प्र० आई को रोकना किसी के वस का नहीं है भाई।

(3) आयु। प्र० जब तक आई है तब तक रहना ही पड़ेगा दादी।

आई करना—(1) मान लेना। प्र० आखिर कितनी बार आई करूं? कह तो दिया कि कल रुपये दे दूंगा।

(2) बर्बादी करना। प्र० बेटा, तुम क्यों अपनी और बाल बच्चों की जिन्दगी आई कर रहे हो?

आई बात न रुकना—मन में आई बात को अपने तक रख पाना कठिन होना। प्र० अरे मैं तो जानती ही थी, आई बात रुकती नहीं। तुम कहे बिना न रहोगी।

(किसी की) आई मुझे आ जाय—(किसी की) मृत्यु मुझे लग जाय। प्र० हे भगवान्! मेरे बेटे की आई मुझे आ जाय, तू इसे ठीक कर दे।

आई लक्ष्मी को ठुकरा देना—मिलते धन को न लेना। प्र० ×× रमेश ने आयी लक्ष्मी को ठुकरा दिया (अमृत० —नागर, 237)।

आई-गई—भली-बुरी। प्र० वह तो भुस में आग लगाकर दूर से तमाशा देखेंगे, आई-गई तुम्हारे सिर जायेगी (रंग० (1)—प्रेमचंद, 107)।

आई-गई करना या होना—बीती बात को भूल जाना। प्र० लेने-देने की तो खैर कोई बात नहीं, एकाध साल में बात आयी-गयी हो जाती है (सारा०—यादव, 40)।

आई-गई पार होना—किसी वस्तु का शेष होना या गायब हो जाना। प्र० तुम चौकियों की बात कर रहे हो, वे तो कब की आई-गई पार हो गयीं।

आई-गई बराबर होना—किसी बात या वस्तु का समाप्त हो जाना। प्र० अब इस चर्चा से क्या लाभ। बात आई-गई बराबर हुई, सब भूल जाओ।

आई-गई होना—(1) नष्ट होना, शेष होना। प्र० फिर सब जगह तो आई-गई हुई केवल परिवार में नीलकांत की याद का सांड़ सास-बहू के हृदय के कगारों को सींगों से तोड़-तोड़ कर दरिद्रता की नदी में बहाता हुआ भविष्य के अंधकार की तरह डकारने लगा (बौने० —रां० रा०, 73)।

(2) परिचित होना। प्र० तुम तो उनके यहां आई-गई हो, तुम्हें जाने में क्यों संकोच हो रहा है?

आईना, आईने की तरह—रूप बतलानेवाला, बिना किसी दुराव-छिपाव का, स्पष्ट। प्र० हिसाब बिलकुल आईना होना चाहिए (रंग०—प्रेमचन्द, 4)।

आईना कर दिखाना, आईना दिखाना—हकीकत जाहिर करना। प्र० तुम्हें तो कोई आईना दिखानेवाला मिले तब बात समझ में आये।

आईना कर देना या होना—साफ कर देना। प्र० वाह, सारी चीजें एकदम आईना हो रही हैं।

आईना दिखाना—दे० आईना कर दिखाना।

आईना-बंदी—(1) झाड़-फानूस आदि की सजावट। प्र० पूरा दीवान-खाना आईना-बंदी से जगमगा रहा था।

(2) फर्श में की गयी ईंट या पत्थर की जुड़ाई।

आईने की तरह—दे० आईना।

आईने पर (में) छाया पड़ना—कलुष आना। प्र० देखो भाई, एक बार आईने पर छाया पड़ गयी तो पड़ गयी। इसके लिए तो पहले से ही सचेत रहना चाहिए।

आईने में मुंह देखना—अपनी योग्यता को जांचना। प्र० है तुम्हारा न

मुंह कि संभलोगे मुंह तनिक देख आईने में लो (चुभते0 –हरिऔध, 95) ।

आई-बाई पच जाना—हेकड़ी निकल जाना। प्र0 अभी बाबूजी से कह दूंगी तो तुम्हारी आई-बाई पच जायेगी।

आउ-बाउ बकना—फालतू बातें करना। प्र0 अब आउ-बाउ बकना बंद करो।

आक करना—मौरूसी अधिकार से वंचित करना। प्र0 तुम कहना नहीं मानोगे तो नानाजी तुम्हें आक कर देंगे।

आक की बुढ़िया—बहुत बुड्ढी। प्र0 अरे, वह आक की बुढ़िया हुई, वह क्या करेगी?

आक़बत के बोरे समेटना—बहुत दिनों तक जीने की इच्छा करना। प्र0 कुछ ऊपर साँ के तो हुए, अब आखिर क्या आक़बत के बोरिये बटोरेंगे। (आजाद0–प्रेमचन्द, 47) ।

आक़बत बनना—मृत्यु के उपरान्त सद्गति मिलना। प्र0 कुछ दान-पुण्य कर जाओ तो आक़बत बनेगी।

आक़बत बिगड़ना या बिगाड़ना—मृत्यु के बाद सद्गति न मिलना या ऐसा काम करना जिससे सद्गति न मिले। प्र0 तुम सम्हलकर नहीं चलोगे तो आक़बत बिगड़ेगी, और क्या?

आक़बत में दिया दिखाना—परलोक में काम आना। प्र0 मनुष्य के सत्कर्म ही आक़बत में दिया दिखलाते हैं।

आकाश और पाताल में होना—बहुत ऊंची और नीची स्थिति में होना। प्र0 इंद्रदत्त–आप आकाश पर हैं, मैं पाताल में हूं, क्या बातें हों? (रंग0 (2) –प्रेमचन्द, 137) ।

आकाश का तारा चाहना—असंभव काम करना चाहना, दुर्लभ चीज की कामना करना। प्र0 तुम चाहत हौ गगन-तरैया, मांगें कैसें पावहु (सू0 सा0–सूर, 1391) ।

आकाश का तारा तोड़ना, -तारा लाना, -फूल लाना—(1) असंभव या दुष्कर कार्य करना। प्र0 मैं भली भांति जानता हूं कि मैं आकाश के तारे तोड़ने जा रहा हूं—वह फल खाने जा रहा हूं, जो मेरे लिए वर्जित है (रंग0 (1) –प्रेमचंद, 154) ।

(2) दुर्लभ वस्तु लाना। प्र0 मैं तुम्हारे लिए आकाश का तारा कहां से लाऊं? जो ला सकता हूं, वही तो लाऊंगा।

आकाश का तारा लाना—दे0 आकाश का तारा तोड़ना।

आकाश का फूल लाना—दे0 आकाश का तारा तोड़ना।

आकाश की कोर—क्षितिज। प्र0 डूबते सूर्य की रक्तिम किरणों से आकाश की कोर लाल हो उठी।

आकाश की बातें करना—असंभव बातें करना, बहुत बड़ी-बड़ी बातें करना। प्र0 सिपारसी डरपुकने सिट्टू बोलैं बात अकासी (भा0 ग्रं0 (1) –भारतेन्दु, 333) ।

आकाश के देवता बने फिरना—बहुत भले और नेक बनना। प्र0XX तब तुम्हारे दुष्कर्मों से खानदान की नाक न कटती थी? आज तुम आकाश के देवता बने फिरते हो? (सेवा0–प्रेमचंद, 202) ।

आकाश खुलना—(1) दे0 आसमान खुलना।

(2) रास्ता साफ होना। प्र0 अब तो तुम्हारा आकाश खुल गया है, तुम निश्चिन्त होकर काम में जुट जाओ।

आकाश गिरना, -टूटना—(1) बहुत बड़ी विपत्ति आना। प्र0 टेलिग्राम देखते ही उस पर आकाश गिर पड़ा।

(2) बिजली गिरना, वज्रपात होना। प्र0 चारों ओर से उमड़ते-घुमड़ते बादल उनका गुरु गंभीर गर्जन और मूसलाधार वृष्टि। ऐसा लगता था आकाश टूट पड़ेगा।

आकाश चढ़ना या चढ़ाना—दे0 आसमान चढ़ना या चढ़ाना।

आकाश चढ़ाना—सम्मान देना। प्र0 धरती तें आकास चढ़ावैं, चढ़े अकास गिरावैं (कबीर ग्रंथा0–कबीर, 320) ।

आकाश चूमना, -छूना, -पर मस्तक उठाए होना, -लगना, -से ऊंचा होना, -से बातें करना—बहुत ऊँचा होना। प्र0 धन अंबराउं लाग चहुं पासा। उठै पुहुमि हुति लाग अकासा (पद0 जायसी, 2/3); कर रहे नृप सौध गगन-स्पर्श हैं, शिल्प कौशल के परम आदर्श हैं (साकेत–गुप्त, 4) ।

आकाश छूना—दे0 आकाश चूमना।

आकाश टूटना—दे0 आकाश गिरना।

आकाश दुहकर दूध चाहना—असंभव बात या काम करना। प्र0 लोभी जस यह धार गुमानी। नभ दुहि दूध चहत ए प्रानी (राम0 (अ) –तुलसी, 711) ।

आकाश पकड़ना, -बांधना—(1) असंभव काम करना या बात कहना। प्र0 तुम बांधति आकाश, बात झूठी को सैहै (सू0 सा0–सूर, 2109) ।

(2) बहुत दौड़धूप करना। प्र0 क्यों बेकार आकाश बांध रहे हो? मामाजी हम लोगों के लिए कुछ न करेंगे।

आकाश पर काली छाया झूमना—संध्या होना। प्र0 आकाश पर काली छाया झूमने लगी यानी सांझ हो गई (बौने0–रां0 रा0, 31) ।

आकाश पर चढ़ जाना—बहुत गर्व करना। प्र0 ऐसी बड़ाई मत करो कि पतोहू आकास पर चढ़ जाय (दे0 दु0 –शिव0, 201) ।

आकाश पर चढ़ाना—बहुत मान देना। प्र0 मैं धूल में पड़ी हुई थी। आप लोगों ने मुझे आकाश पर चढ़ा दिया (कर्म0–प्रेमचंद, 77) ।

आकाश पर चलना—बहुत श्रेष्ठ स्थिति में होने का गर्व करना। प्र0 राजा साहब यहां से चले, तो ऐसा मालूम होता था, मानों आकाश पर चल रहे हैं (रंग0–प्रेमचंद, 172) ।

आकाश पर दीया जलाना—गर्व करना, बड़ा से बड़ा काम करना या करने की हिम्मत रखना। प्र0 जब तेरी उमिर थी तो हम भी आकाश पर दिया जलाते थे, पर अब वह कलेजा कहां से लायें? (प्रेमा0 –प्रेमचंद, 100) ।

आकाश पर मस्तक उठाए होना—दे0 आकाश चूमना।

आकाश पर लटकाना—बहुत तकलीफ देना, आशंका में रखना। प्र0 राम-राम, इतनी-सी बात के लिए मुझे आकाश पर लटका दिया (निर्मला—प्रेमचंद, 136) ।

आकाश पर होना—(1) बहुत श्रेष्ठ स्थिति में होना। प्र0 आप आकाश पर हैं, मैं पाताल में हूं, क्या बातें हों (रंग0 –प्रेमचंद, 350)।
(2) बहुत गर्व में होना। देखिए प्रयोग (1)।

आकाश फट पड़ना, -में छेद होना—बहुत अधिक वृष्टि होना। प्र0 आकाश फटा पड़ रहा था। छाजन की हालत देख-देख कर सुभागी का जी कांप रहा था।

आकाश बांधना—दे0 आकाश पकड़ना।

आकाश में उड़ना—(1) बड़ी-बड़ी कल्पना करना। प्र0 हबीब ने आकाश में उड़ते हुए कहा—इतना बड़ा बोझ। मेरे कंधे इतने मजबूत नहीं हैं (मान0(1)–प्रेमचंद, 201)।
(2) अपने को श्रेष्ठ मानना, गर्व करना। प्र0 रामप्रसाद जी आजकल आकाश में उड़ रहे हैं, उनकी क्या बात।

आकाश में ऐंठना—बहुत गर्व करना। प्र0 को न लड़ैती सरूप न काहि तुहीं कछू जाति अकासहिं ऐंठी (केशव0 (1) –केशव, 69)।

आकाश में छेद करना—(1) कोई बहुत बड़ा काम करने का गर्व करना। प्र0 हां मामी ! पढ़कर आकाश में छेद किया है, उसने (परती0–रेणु, 135)।
(2) बहुत चालाकी करना। प्र0 वह हर समय आकाश में छेद करने की कोशिश में रहता है।
(3) बहुत शोरगुल करना। प्र0 रानी के बैनों ने सातों आसमान में छद कर दिये (एक चादर0–बेदी, 32)।

आकाश में छेद होना—दे0 आकाश फट पड़ना।

आकाश में थेगली लगाना, -पैबंद लगाना, आकाश-गंगा में नहाना—असंभव कार्य को करने की चेष्टा करना। प्र0 क्यों आकाश में थेगली लगाने बैठे हो, छोड़ो।

आकाश में पैबंद लगाना—दे0 आकाश में थेगली लगाना।

आकाश मेघाच्छन्न होना—दुर्दिन के आसार होना। प्र0 कांति को चारों ओर अंधकार ही अंधकार नजर आ रहा था। उसका आकाश मेघाच्छन्न हो रहा था।

आकाश लगना—दे0 आकाश चूमना।

आकाश से भी ऊंचा होना—दे0 आकाश चूमना।

आकाश से गिरना, -धरती पर आना, -पाताल में गिरना—(1) सन्न रह जाना। प्र0 निरंजन पलभर में आकाश से पृथ्वी पर आ गया (कंकाल –प्रसाद, 79); सेठजी मानों आकाश से पाताल में गिर पड़े (मान0 (2) –प्रेमचंद, 36)।
(2) उन्नति के बाद पतन होना। प्र0 धरती ते आकास चढ़ावै चढ़े अकास गिरावै (कबीर ग्रंथा0–कबीर, 320)। (कबीर ग्रंथा0—कबीर, 320)
(3) दे0 आसमान से गिरना भी।

आकाश से धरती पर आ गिरना—दे0 आकाश से गिरना।

आकाश से पाताल में गिरना—दे0 आकाश से गिरना।

आकाश से बातें करना—दे0 आकाश चूमना।

आकाश हिला देना—अत्यधिक कोलाहल होना। प्र0 समुद्रगुप्त की विशाल सेना ने आकाश हिला दिया, शत्रुओं के दिल दहल गये।

आकाश-कुसुम—दुर्लभ वस्तु। प्र0 जब तक तलाक का कानून न जारी होगा, आपका स्वराज्य आकाश-कुसुम ही रहेगा (मान0 (2) –प्रेमचन्द, 286-287)।

आकाश-गंगा में नहाना—दे0 आकाश में थेगली लगाना।

आकाश-पाताल एक करना, -छाना—आंदोलन करना, बहुत उद्योग करना। प्र0 फिर इन लोगों को विज्ञापन देने के ऐसे-ऐसे ढंग मालूम रहते हैं कि एक कम उपयोगी पुस्तक के लिये भी वे आकाश-पाताल एक कर देते हैं (सा0 सी0–महा0 द्वि0, 95)।

आकाश पाताल का सा अंतर—बड़ा अंतर। प्र0 उनके मेरे संस्कारों में आकाश पाताल का सा अंतर है (पैंतरे0–अश्क, 155)।

आकाश-पाताल के कुलाबे एक करना, -मिलाना—(1) बड़ी-बड़ी बातें करना। प्र0 नुकीली मूंछें, लहराती-फहराती डाढियां, आकाश-पाताल के कुलाबे मिलाने वाली डींग भरी गर्वोक्तियां, ये सब शौर्य सौन्दर्य के अल्प-विज्ञापन ही तो थे (मेरे0 –गुलाब0, 60)।
(2) बहुत उद्योग करना। प्र0 पिता की मृत्यु के बाद से तो बेचारा आकाश-पाताल के कुलाबे एक कर रहा है पर जो बात बिगड़ गयी सो बिगड़ गयी।

आकाश-पाताल के कुलाबे मिलाना—दे0 आकाश-पाताल के कुलाबे एक करना।

आकाश-पाताल छाना—दे0 आकाश-पाताल एक करना।

आकाश-पाताल दिखाई देना—सहसा विपत्ति आने पर व्याकुल होना। प्र0 गोदाम में आग लगने का समाचार सुनते ही उसे आकाश-पाताल दिखाई देने लगा।

आकाश-पाताल सोचना—दूर-दूर तक सोच-विचार करना। प्र0 वह दिन भर एकांत में पड़े आकाश-पाताल सोचते रहे (भिखा0–कौशिक, 84)।

आकाश-भेदी—(1) बहुत ज़ोर की आवाज़। प्र0 सूरदास के घर से अट्टहास की आकाशभेदी ध्वनि, तो चकराई (रंग0 (1) –प्रेमचंद, 389)।
(2) बहुत ऊँचा। प्र0 उन झोपड़ियों के बीच वह आकाश-भेदी भवन अच्छा विपर्यय था।

आकाशीवृत्ति—निर्वाह की अनिश्चित दशा। प्र0 घर बिका, कुछ जमीन थी वह बिकी, फिर गहनों की बारी आयी, यहाँ तक कि अब केवल आकाशीवृत्ति थी (मान0 (2)–प्रेमचंद, 128)।

आक्रमण करना—किसी बात के लिए किसी से बार-बार कहे जाना, उससे जवाब-तलब करना। प्र0 मैं वहाँ जाकर बैठा ही था कि सब लोग चारों ओर से मेरे ऊपर आक्रमण करने लगे।

आखर देना—वचन देना। प्र0 काका ने हमें आखर दिया है कि वे हमें पढ़ायेंगे।

आखरी उठाना—शरारत करना। प्र0 अच्छा, अब आखरी उठाना बंद

करो, बहुत हुआ।

आखिर करना या होना—(1) पूरा करना या होना। प्र0 अब इस काम को आखिर करो, कब तक लटकाए रखोगे।

(2) मार डालना या मरना। प्र0 उस दुष्ट का आखिर किए बिना मुझे चैन नहीं।

आखिरत संवारना—मृत्यु के उपरान्त सद्‌गति की व्यवस्था करना। प्र0 बहुत दिन दुनिया के गोरखधंधे में लिप्त रहे, अब चौथेपन में आखिरत संवारने की चेष्टा करो।

आखिरी दम पर होना—मृत्यु या शेष होने के निकट होना। प्र0 टिवाना मिनिस्ट्री आखिरी दमों पर है (कठ0—दे0 स0; 268)।

आखिरी बहार—ढलती जवानी। प्र0 आखिरी बहार है, मजा लूट लो।

आखू (खो) र की भरती—फालतू चीजें या निकम्मे आदमियों का समूह। प्र0 तुमने तो आखूर की भर्ती कर रखी है, कमरा न हुआ, कबाड़खाना हुआ।

आग—घोर असंतोष, विद्रोह, उग्र विचार। प्र0 अपनी विकसित होती हुई आत्मा में एक आग और छिपाकर एक प्रशान्त विद्रोह बनकर शेखर घर लौट आया (शेखर0 (1) —अज्ञेय, 177); माधुरी के मन में अनवरी के द्वारा जो आग जलाई गई है, वह कई रूप बदलकर उसके कोने-कोने को झुलसाने लगी है (तितली —प्रसाद, 47)।

आग उखाड़ना—दबी बात को फिर उठाना। प्र0 तुम क्यों आग उखाड़ रहे हो?

आग उगलना—किसी के विरुद्ध कुछ कटु कहना। प्र0 बाद में रूपरतन ने महिपाल को इसके लिए समझा-बुझाकर राजी कर लिया कि पत्रिका उतनी ही आग उगले जितने में उसके प्रकाशक पर आंच न आये (बूंद0—नागर, 192)।

आग उठाना—झगड़ा मोल लेना। प्र0 आग उठाने के सिवा तुम्हें और कोई काम नहीं समझ पड़ता?

आग उभाड़ना, -को हवा देना—क्रोध या उत्तेजना को और बढ़ाना। प्र0 अम्मा ने आग को हवा दी—नहीं तब सब लोग अंधेरे ही में पड़े रहते थे (मान0 (1) —प्रेमचंद, 155)।

आग कंजियाना, -झंवाना—आग बुझने लगना। प्र0 बोरसी की आंच धीरे-धीरे कंजियाने लगी।

आग करना—(1) आग जलाना। प्र0 जल्दी से चूल्हे में आग करो, पानी गरम करना है।

(2) बहुत गरम करना। प्र0 तवा एकदम आग कर डाला, ध्यान कहां है?

आग का खेल—आतिशबाजी।

आग का पतंगा, -परकाला, -पुतला—बहुत क्रोधी। प्र0 कृष्णा तो आग का पतंगा है, उससे मैं बात नहीं करूंगा।

आग का परकाला—दे0 आग का पतंगा।

आग का पुतला—दे0 आग का पतंगा।

आग का बाग—(1) आतिशबाजी। प्र0 दिवाली-मेले में आग के बाग की बहार देखने लायक थी।

(2) सुनार की अंगीठी।

आग की आंच—कष्टपूर्ण या प्राणघातक स्थिति। प्र0×× प्रिय साथियों को आग की आंच में छोड़कर अपनी जान बचाना घोर नीचता है (मान0 (6) —प्रेमचंद, 57)।

आग की तरह फैलना—बहुत तीव्र गति से फैलना। प्र0 यह बात आग की तरह फैल गयी।

आग की लपट उठना, -जाग उठना, -धधक उठना—विद्रोह, क्रांति आदि का प्रारम होना। प्र0 सन् 1942 का साल! चारों ओर आग की लपट उठ रही थी। ब्रिटिश शासन की नींव थरथरा गयी।

आग की लपट लगना—किसी विपत्ति या कष्ट का असर पड़ना। प्र0 बेचारे कल्याण बाबू को तो कुछ लेना-देना भी न था, नाहक उन्हें आग की लपट लगी।

आग के मोल—बहुत महंगा। प्र0 साड़ियां तो आग के मोल हो रही हैं, कौन खरीदे।

आग के सुपुर्द करना—जला देना। प्र0 श्रीकांत ने सारी बहियां आग के सुपुर्द कर दीं।

आग को हवा देना—दे0 आग उभाड़ना।

आग खाना—(1) उपद्रव करना। प्र0 बहुत आग मत खाओ, कमल।

(2) अपना नाश करना। प्र0 तुम जान-बूझकर आग खा रहे हो।

आग खाना अंगार हगना—करनी के अनुसार फल पाना। प्र0 आप क्या कर सकती हैं? वह यदि आग खायेगा तो अंगार हगेगा ही।

आग गाड़ना—राख के नीचे आग दबा देना ताकि वह देर तक बनी रहे।

आग चुगना—कष्टदायक वस्तु को भी आनंद से ग्रहण करना। प्र0 अरे भाई, प्रेम के मार्ग पर चलनेवालों को आग चुनना ही पड़ता है।

आग जगाना, -जोड़ना, -बनाना—आग जलाना। प्र0 थकी-मांदी सुखिया ने किसी तरह आग जगायी, अदहन चढ़ाया। बहू, जल्दी से चूल्हे में आग जोड़ो।

आग जलना—खाना बनना। प्र0 बाप-बेटे दोनों प्रातःकाल से संध्या तक मजदूरी करते, तब कहीं आग जलती (मान0 (7) —प्रेमचंद, 210)।

आग जाग उठना—दे0 आग की लपट उठना।

आग जिमाना—होम करना। प्र0 अग्नि जिमाकर फिर आगे का विधि-विधान होगा।

आग जिलाना—बुझती हुई आग को कुरेदकर या हवा देकर पुनः तेज करना, आग जलाना। प्र0 बोरसी में अंगारे दबे हैं, जरा लेकर आग जिला लो।

आग जोड़ना—दे0 आग जगाना।

आग झंवाना—दे0 आग कंजियाना।

आग झाड़ना—पत्थर या चकमक पत्थर से आग पैदा करना। प्र0 हमने आग झाड़कर लकड़ी जलायी और उस पर हिरन का मांस रख दिया।

आग डालना—नष्ट हो, इस अर्थ में स्त्रियों द्वारा प्रयुक्त गाली। प्र0 आग डालूं तेरी चोटी-पट्टी पर।

आग ठंडी पड़ना—(1) क्रोध शांत होना। प्र0 कुछ हो, दिल की आग तो ठंडी हो गई (रंग0 (1) –प्रेमचंद, 197)।

(2) उत्तेजना या आंदोलन शांत होना। प्र0 धीरे-धीरे करके आग ठंडी पड़ी।

(3) आग बुझ जाना। प्र0 आग तो ठंडी पड़ गयी, रोटी कैसे सेकूंगी ?

आग तलवे से लगना या लगाना—बहुत क्रोधित होना या करना। प्र0 उस दुष्ट की बातें सुन-सुनकर तो तलवों से आग लग जाती है।

आग दबा रखना—क्रोध आदि को प्रकट न होने देना। प्र0 मैंने किसी तरह आग को दबा रखा है, तुम न सुनोगे तो क्या परिणाम होगा, कह नहीं सकता।

आग दबी रहना—किसी क्रोध, प्रतिहिंसा या आंदोलन आदि का अप्रकट रूप से मौजूद रहना। प्र0 सारे देश के अंतर में आग तो दबी हुई थी ही। बस जरूरत किसी के कुरेदने की थी।

आग दामन से ढांकना—भयानक व्यक्ति या वस्तु को प्रश्रय देना। प्र0 तुम दामन से आग ढंक रहे हो। सुलतान तुम्हारी बोटी-बोटी नुचवा देगा।

आग दिखाना—(1) गरम करना। प्र0 लाख को ज़रा आग तो दिखाओ।

(2) जला देना। प्र0 माली ने राकेश की चिट्ठियों को आग दिखा दिया।

(3) तोप में बत्ती देना।

आग देना—(1) दाह करना। प्र0 को मोहि आगि देइ रचि होरी (पद0—जायसी, 34/4); स्त्री—(हंसकर) मर जायेंगे तो आग देने तो जाओगे, तब कहां भागोगे (मान0 (1)—प्रेमचंद, 254)।

(2) नष्ट करना। प्र0 काजीलाल ने सारे कारबार को आग दे दी।

(3) गर्म करना। प्र0 घी के कनस्तर को ज़रा आग दो, निकल आयेगा।

आग धधक उठना—दे0 आग की लपट उठना।

आग धोना—(हुक्का भरने के लिये) अंगारों के ऊपर से राख दूर करना। प्र0 आग धोकर चिलम भरना।

आग निकलना—बहुत तप जाना। प्र0 छत पर तो आग निकल रही है।

आग पड़ना—(1) शेष हो जाना, नष्ट होना। प्र0 कैसेहुं कंत फिरै नहिं फेरे। आगि परी चित उर धनि केरे (पद0–जायसी, 52/8)।

(2) बहुत गर्मी पड़ना। प्र0 जेठ का महीना! चारों ओर आग पड़ रही थी।

(3) महंगाई होना। प्र0 विलायती चीजों पर तो आजकल आग पड़ी है।

आग पर आग डालना, -मेलना—दुःख या कष्ट को और बढ़ाना। प्र0 तुम आग पर आग क्यों डाल रही हो बहू ?

आग पर आग मेलना—दे0 आग पर आग डालना।

आग पर (में) घी छोड़ना, -डालना, -तेल छिड़कना, -तेल डालना—क्रोध या विद्रोह आदि के भाव को उभाड़ना। प्र0 जगधर, आग पर तेल छिड़कना अच्छी बात नहीं (रंग0 (2)—प्रेमचंद, 132)।

आग पर (में) घी डालना—दे0 आग पर (में) घी छोड़ना।

आग पर (में) तेल छिड़कना—दे0 आग पर (में) घी छोड़ना।

आग पर (में) तेल डालना—दे0 आग पर (में) घी छोड़ना।

आग पर (में) पानी डालना—विद्रोह, क्रांति, क्रोध आदि को शांत करने का प्रयत्न करना। प्र0 राजा साहब ने उनके तेवर देखकर आग पर पानी डालते हुए कहा—XXX (मान0 (2)–प्रेमचंद, 181)।

आग पर (में) लोटना—दुःख, विरह या ईर्ष्या से व्याकुल होना। प्र0 वह तो आजकल आग पर लोट रहा है, उसका हाल मत पूछो।

आग फांकना—(1) हानि उठाना। प्र0 आज-कल व्यापार में आग फांकना ही हाथ लगता है।

(2) जान-बूझकर मुसीबत में पड़ना। प्र0 तुम तो जान-बूझकर आग फांक रहे हो, कोई क्या करे।

(3) शेखी बघारना। प्र0 बहुत आग न फांको, यार।

आग फुंकना या फूंकना—(1) बहुत गर्मी होना। प्र0 दोपहर के ठीक 2 बजे थे, चारों ओर आग फुंक रही थी।

(2) बहुत गुस्सा होना। प्र0 बेटे की उद्दंडतापूर्ण बातें सुनते ही उनके तो आग फुंक गई।

(3) उत्तेजित करना, विद्रोह आदि के भाव को बढ़ावा देना। प्र0 बड़ी दम है भाई, इनके शब्दों में—आग फूंक देते हैं, आग। (उखड़े0–यादव, 276)।

आग फैलना—किसी आंदोलन का उग्र रूप धारण करना। प्र0 स्वतंत्रता की आग चारों ओर फैलती गयी।

आग बढ़ना या बढ़ाना—(1) क्रोध बढ़ जाना या बढ़ाना। प्र0 तुम क्यों उसकी आग को बढ़ा रहे हो ? तुम्हारी ही क्षति होगी।

(2) झगड़ा-विद्रोह आदि का भयंकर रूप लेना या देना। प्र0 इस आग का न बढ़ना ही सबके लिए हितकर है।

आग बन जाना—(1) अत्यंत क्रोधित हो जाना। प्र0 मेरा प्रस्ताव सुनते ही वे तो आग बन गये।

(2) बहुत तप जाना। प्र0 जल्दी हटाओ, कलछुल तो एकदम आग बन गयी।

आग बनाना—दे0 आग जगाना।

आग बरसना—बहुत गरमी पड़ना, खूब लू चलना। प्र0 सारे शहर में जैसे आग बरस रही हो (धूम0–उ0 भट्ट, 90)।

आग बरसाना—(1) शत्रु पर खूब गोलियां चलाना। प्र0 लक्ष्मीबाई की सेना आग बरसा रही थी।

(2) खूब जली-कटी सुनाना। प्र0 नयनरंजनी अपनी बहू पर आग बरसा रही थीं।

आग बुझना या बुझाना—(1) विरह-भाव दूर होना या करना, दुःख दूर होना या करना। प्र0 जीव विलंब्या जीव सौं, अलप न लषिया जाइ। गोबिंद मिलै न झल बुझै, रही बुझाइ बुझाइ (कबीर ग्रंथा0 —कबीर, 35)।

(2) गुस्सा दूर होना या करना। प्र0 आज दो-चार खून हो जायेंगे, तभी यह आग बुझेगी (रंग0 (2) —प्रेमचंद, 132)।

(3) भूख शांत होना या करना। प्र0 मुझे तीन दिनों से खाना नहीं मिला है। इस आग के बुझे बिना मैं और कुछ नहीं कर सकता।

(4) किसी उग्र आंदोलन का ठंडा पड़ना। प्र0 दस-पांच के प्राण लिए बिना यह आग नहीं बुझने वाली है।

आग बोना—(1) लड़ाई लगाना, अनिष्ट करना। प्र0 जातियां मुंह जोह जिनका जी सकीं इन दिनों हैं आग वे ही बो रहीं (चुभते0—हरिऔध, 22)।

(2) आंदोलन की शुरुआत करना, लोगों को उत्तेजित करना। प्र0 श्यामनारायण ही यह आग बो रहे हैं।

आग भी न लगाना—अत्यंत तुच्छ समझना। प्र0 मैं तो आपके धन को आग भी न लगाऊंगा, पिताजी।

आग भड़क उठना या भड़काना—किसी दबे हुए क्रोध, प्रतिहिंसा या आंदोलन आदि का उभड़ना या उभाड़ना। प्र0 अब मुझे देखकर महाराज के कलेजे में आग भड़क उठती है (राधा0 ग्रंथा0—राधा0 दास, 594); इलाके में आग सुलग रही थी, हवा पाते ही भड़क उठी (प्रेमा0 —प्रेमचंद, 25)।

आग मूतना—बहुत अन्याय करना, गजब ढाना। प्र0 यह नवाब का नाती आग मूत रहा है (दे0 दु0—शिव0; 40)।

"आग में" के मुहावरों के लिए देखिए "आग पर" भी।

आग में आग डालना, -लगाना, -ईंधन डालना, -घी डालना, -पड़ना -फूंक देना, -हवा देना—किसी उग्र भाव, द्वेष या आंदोलन को और तीव्र करना। प्र0 मिसेज सेवक आग में ईंधन डालती रहती थीं, एक ओर क्लार्क को उकसातीं, दूसरी ओर सोफी को समझातीं (रंग0 (1)—प्रेमचंद, 401)।

आग में आग लगाना—दे0 आग में आग डालना।

आग में ईंधन डालना—दे0 आग में आग डालना।

आग में उतरना, -कूदना, -पांव डालना, -हाथ डालना—जान-बूझकर अहितकर काम करना। प्र0 लाग से लोग जल रहे हैं तो पांव अपना न आग में डालें (चुभते0—हरिऔध, 43); सब बातें खूब सोच-समझ कर इस आग में कूदिये (पद्म0 के पत्र—पद्म0 शर्मा, 109)।

आग में करना, -डालना—दूर करना, नष्ट करना। प्र0 आग में करो ऐसी पढ़ाई को, मैं बाज आया।

आग में कूदना—दे0 आग में उतरना।

आग में कूदनेवाला—बड़े-से-बड़े साहस का काम करने वाला। प्र0 यों तो चिन्ता के सैनिकों में सभी तलवार के धनी थे×× उसके इशारे पर आग में कूदनेवाले (मान0 (5)—प्रेमचंद, 71)।

आग में गिरना—(1) कष्ट में पड़ना। प्र0 परमानन्द जी बेचारे तो आग में गिर पड़े।

(2) गलत रास्ते पर जाना। प्र0 तुम आग में गिर रहे हो, यह समझ लो।

(किसी की) आग में गिरना, -पड़ना—दूसरे की विपत्ति अपने ऊपर लेना। प्र0 तुम हमेशा उसकी आग में गिरे हो पर उसने अभी तक तुम्हारे लिये क्या किया है।

आग में घी डालना—दे0 आग में आग डालना।

आग में घी पड़ना—दे0 आग में आग डालना।

आग में झोंकना—नष्ट कर देना, घोर विपत्ति में डाल देना, जान-बूझकर अहित करना। प्र0 क्या हमें जानबूझ कर राजकुमारी को आग में झोंक देना चाहिए (विप0—प्रेमी, 74)।

आग में डालना—दे0 आग में करना।

आग में पड़ना—नाश को प्राप्त होना। प्र0 तुम समय रहते न चेतोगे तो सब आग में पड़ जायेगा।

(किसी की) आग में पड़ना—दे0 (किसी की) आग में गिरना।

आग में पांव डालना—दे0 आग में उतरना।

आग में पेशाब करना, -मूतना—बहुत उत्पात करना। प्र0 तुम तो आग में पेशाब करते हो, कोई कहाँ तक बरदाश्त करे।

आग में फूंक देना—दे0 आग में आग डालना।

आग में मूतना—दे0 आग में पेशाब करना।

आग में हवा देना—दे0 आग में आग डालना।

आग में हाथ डालना—दे0 आग में उतरना।

आग लगना—(1) नष्ट हो, शाप भाव से प्रयुक्त। प्र0 याकैं तौ है आजु हीं मिलौं कि मरि जाऊं ऐसें, आगि लागें मेरी माई मेहु पाइयतु है (केशव0—केशव, 66)।

(2) क्रोध उत्पन्न होना, कुढ़न होना। प्र0 जोग की गति सुनत मेरें, अंग आगि बई (सू0 सा0—सूर, 4321); सुरंगु महावरु सौति-पग निरखि रही अनखाइ। पिय-अंगुरिनु लाली लखैं खरी उठी लगि लाइ (बिहारी रत्ना0—बिहारी, 287)।

(3) महंगाई होना। प्र0 जहां तुम्हारी हुकूमत जाती है, वहां खाने-पीने की चीजों को एकदम आग लग जाती है (गु0 नि0—बा0 मु0 गु0, 241)।

(4) किसी आंदोलन या असंतोष का फैलना। प्र0 एटर्नी अब्दुल हक़ का नाम लेकर कहा, वह हाईकोर्ट में मुफ्त लड़ेंगे और हिन्दुस्तान भर में यह आग लगेगी (चोटी0 —निराला, 50)।

(5) दुर्दिन होना, बुरी या असंतोषजनक स्थिति होना। प्र0 संसार में तो आप ही आग लगी हुई है, चमार भी ठाकुर की पूजा करने लगेंगे, तो फिर्यी रहेगी कि रसातल को चली जायगी? (मान0 (5)—प्रेमचंद, 4)।

आग लगने पर कुआं खोदना—पहले से विपत्ति से बचने का उपाय न कर रखना और जब सिर पर आ पड़े तब दौड़-धूप करना। प्र0

पहले से तो तुम गफलत में पड़े रहे. अब आग लगने पर कुआं खोदने चले हो।

आग लगने पर पानी को दौड़ना—काम जब बिगड़ने लगे तब उसे बनाने का प्रयत्न शुरू करना, बाद में चेतना। प्र0 जे वन जलैं त जल कूं धावै (कबीर); भाई, तुम आग लगने पर पानी को दौड़ने में विश्वास करते हो पर मैं नहीं।

आग लगने पर पानी न मिलना—(1) दुर्दिन में सहायक न मिलना। (2) क्रोध आने पर उसके शमन का कोई उपाय न समझ पड़ना।

आग लगने पर बिल्ली का मूत ढूंढ़ना—विपत्ति आने पर कोई व्यर्थ का काम करना या दुर्लभ वस्तु ढूंढ़ना। प्र0 तुम भी आग लगने पर बिल्ली का मूत ढूंढ़ने चले।

आग लगने पर मेह पाना, -मिलना—ठीक वक्त पर काम बनने का डौल होना। प्र0 भाई, मुझे तो आग लगने पर मेह मिल गया। भगवान् ने मेरी सुन ली।

आग लगने पर मेह मिलना—दे0 आग लगने पर मेह पाना।

आग लगाकर आग-आग चिल्लाना—जान-बूझकर कोई अहितकर काम करना और फिर सहायता के लिए चिल्लाना।

आग लगाकर तमाशा देखना—अहित करके मज़ा लेना। प्र0 अभी तुम आग लगाकर तमाशा देखो। कभी-न-कभी तो तुम्हें इसका फल मिलेगा ही।

आग लगाकर पानी को दौड़ना,-बुझानें को दौड़ना—जान-बूझकर अहितकर काम करना और फिर उससे बचने का उपाय करना। प्र0 मुंशी दयानाथ की आंखों में उस कृत्य का कुछ मूल्य नहीं। आग लगाकर पानी लेकर दौड़ने से कोई निर्दोष नहीं हो जाता (गबन—प्रेमचंद, 145)।

आग लगाकर बुझाने को दौड़ना—दे0 आग लगाकर पानी को दौड़ना।

आग लगाकर रोटी सेंकना—दूसरे का अहित करके अपना काम बनाना। प्र0 तुम आग लगाकर रोटी सेंको। मुझसे यह न होगा।

आग लगाना—(1) लड़ाई लगाना, इधर की बात उधर करके लड़वा देना। प्र0 ऐसो न होय कै यह बात फोड़ि कै उलटी आग लगावै (भा0 ग्रं0 (1)—भारतेन्दु, 442) *; यह सब इसी रानी का काम है ×× आग लगाती फिरती है (सु0 सु0—सुदर्शन, 209)।

(2) चुगली खाना। प्र0 देखिए प्रयोग (1)*।

(3) जोश बढ़ाना, भड़काना। प्र0 कितनी हैं उत्पात-सहचरी, कितनी ही हैं आग लगाती (मर्म0—हरिऔध, 151); मामा ने जो आग लगा दी है, वह मेरे बुझाए नहीं बुझ सकती (रंग0 (1) —प्रेमचंद, 180)।

(4) उद्वेग बढ़ाना। प्र0 कहि सो संदेस विहंगम चला आगि लाइ सगरिउ सिंघला (पद0—जायसी, 31/14)।

(5) नष्ट करना, अनिष्ट करना।

आग लगे—बुरा हो, नाश हो। प्र0 और ये निगोड़ी सकीना की बच्ची, आग लग जाये इसके सोने में.... (अमृत0—नागर, 318)।

आग लेने आना—तुरंत लौटने के इरादे से आना। प्र0 इस तरह आग लेने क्यों आते हो? इससे अच्छा तो मत आया करो।

आग सिर पर रखकर चलना—बड़े खतरे का काम करना। प्र0 आग को सर पर रखकर चलना है, और वह भी दस्तार से ढककर इस तरह से चलना है कि चाहे सर जल जाये पर पगड़ी पर आंच न आने पाए (सात0—नागर, 8)।

आग सुलगती रहना—क्रोध-विद्रोह आदि का भाव बराबर बना रहना। प्र0 मेरे अंतर में तो निरंतर आग सुलगती रहती है।

आग सुलगना या सुलगाना—(1) क्रोध-विद्रोह आदि के भाव फैलना या फैलाना। प्र0 इलाके में आग सुलग रही थी, हवा पाते ही भड़क उठी (प्रेमा0—प्रेमचंद, 25)।

(2) क्रोध या जोश आना। प्र0 जिनके हृदय में कभी आग सुलगी ही नहीं, ठेस लगते ही अहंकार नहीं छलका (कुरु0—दिनकर, 30)।

आग से आग बुझाने की कोशिश करना—(1) क्रोध या बुराई को क्रोध या बुराई से शांत करने की कोशिश करना। प्र0 आग से आग बुझाने की कोशिश तो तुम ही किया करते हो (दूबगाछ—दे0 स0, 342)।

(2) असंभव काम करने की कोशिश करना।

आग से खेलना—जान-बूझकर भयानक परिस्थिति से सम्पर्क रखना। प्र0 आग से खेल बैठी बच्ची! आप भी जली, सारा नगर जला डाला (सुहाग0—नागर, 99)।

आग से पानी होना—क्रोध शांत होना। प्र0 पिताजी आग से पानी हो गये। उठकर कमरे में टहलने लगे।

आग हाथ में लेनेवाले का हाथ जलना—खतरनाक काम करने वाले को तदनुरूप फल मिलना। प्र0 सूर अनल कर जो गहै, डाढ़ै पुनि सोई (सू0 सा0—सूर, 2861)।

आग होना—(1) क्रुद्ध होना। प्र0 डेढ़ साल पहले बेटे ने इनसे यह प्रस्ताव किया होता, तो आग हो जाते (कर्म0—प्रेमचंद, 242)।

(2) बहुत गर्म होना। प्र0 चिमटा तो एकदम आग हो गया।

आग-पानी—(1) उपद्रवी। प्र0 श्रीचरण तो आग-पानी है, कोई काम ढंग से नहीं करता।

(2) जल्दबाज। प्र0 देखिए प्रयोग (1)

आग-पानी का वैर, आग-फूस का वैर, -साथ—(1) ऐसी स्थिति जिसमें अनिष्ट की पूरी आशंका हो। प्र0 दोनों कमसिन हैं और आप भी जवान। आग और फूस का साथ क्या? (आजाद0—प्रेमचंद, 562)।

(2) जन्म की दुश्मनी होना। प्र0 रूस और अमेरिका में आग-पानी का वैर है।

आग-पानी का संग, आग-फूस की मित्रता—परस्परविरोधी और हानिकारक व्यक्तियों या वस्तुओं का साथ होना। प्र0 मेरी दृष्टि में श्याम और कृपानाथ का आग-पानी का संग है, अधिक दिन निभेगा नहीं।

आग-पानी का परवाह न करना—प्रतिकूल स्थितियों की चिन्ता न करना। प्र0 कर्त्तव्य कभी आग और पानी की परवा नहीं करता (रंग0—प्रेमचंद, 94)।

आग-पानी में कूदना, आग-पानी से गुज़रना—सब प्रकार के कष्ट या खतरे उठाना। प्र0 संयोजक जी जो कहेंगे उसे काली टोपी वाले नौजवान प्राण रहते नहीं काट सकते हैं। आग और पानी में कूद सकते हैं (मैला0—रेणु, 220)।

आग-पानी में से गुज़रना—दे0 आग-पानी में कूदना।

आग-फूस का वैर—दे0 आग-पानी का वैर।

आग-फूस का साथ—दे0 आग-पानी का वैर :

आग-फूस की मित्रता—दे0 आग-पानी का संग।

आग-बबूला बनना, -होना, आग-भभूका बनना, -होना—अत्यंत क्रोधित होना। प्र0 बादशाह भए आग-बबूला यह सब सुनतहिं (राधा0 ग्रंथा0—राधा0 दास, 725); वह जरा-सा छूने से रोने लगता है; और तुम उसे डांटने पर भी आग-भभूका हो जाती हो (दे0 दु0—शिव0, 50)।

आग-बबूला होना—दे0 आग-बबूला बनना।

आग-भभूका बनना—दे0 आग-बबूला होना।

आग-भभूका होना—दे0 आग-बबूला होना।

आगम करना—लाभ का डौल करना। प्र0 सुषमा का अभिभावक बनकर तो तुम अपना ही आगम कर रहे हो।

आगम जनाना—होनहार की सूचना देना। प्र0 हाय सखी! कोई मोकूं आगम जनावै ना।

आगम देखना—भविष्य को दृष्टि में रखना। प्र0 मुझे अपनी संतानों का आगम भी तो देखना है।

आगम बनाना—परलोक बनाना। प्र0 अब बहुत माया-मोह छोड़ो, आगम बनाने की चिन्ता करो।

आगम बांधना—आनेवाली बात का निश्चय करना। प्र0 आगम बांध तुमने यह बात बिचारी है, न जानिए कैसी होय, मैंने तुम्हारी बात मान ली (प्रेम0—ल0 ला0, 95)।

आगम होना, आगा भारी होना—गर्भ रहना। प्र0 बहू को तीन महीने का आगम है।

आग-लगाऊ—झगड़ा भड़कानेवाला। प्र0 रामानन्द तो पुराने आग-लगाऊ हैं।

आग-सा लगना—बहुत अप्रिय या दुःखदायी लगना। प्र0 ये तौ नैन वाही को बदन हेरें सीरे होत, और बात आली सब लागति ज्यौं आगि है (घन0 कवित्त—घना0, 183)।

आगा—शरीर के आगे के अंग। प्र0 उसका आगा भारी हो रहा है, अब वह बच्ची नहीं।

आगा काटना—किसी अपशकुनकारक प्राणी या वस्तु का आगे से निकल जाना। प्र0 दरवाज़े के बाहर पैर रखा ही था कि बिल्ली आगा काट गई।

आगा भारी होना—दे0 आगम होना।

आगा मारना—किसी की उन्नति में बाधा पहुँचाना। प्र0 तुम उसका आगा क्यों मार रहे हो? तुम्हारा तो कोई लाभ भी नहीं है।

आगा मारा जाना, -रुकना—उन्नति में रुकावट पड़ना। प्र0 मेरा तो आगा मारा गया, तुम जो चाहो कहो।

आगा रुकना—दे0 आगा मारा जाना।

आगा रोकना—(1) हमला रोकना। प्र0 खुर्रम के सैनिकों ने बड़ी बहादुरी से आगा रोका।

(2) किसी बड़े दायित्व को संभालना। प्र0 तुम आगा रोकोगे तभी बेटी का ब्याह पार पड़ेगा।

(3) आड़ करना ताकि दिखलाई न पड़े। प्र0 तुम तनिक आगा रोको, वह देख न ले।

(4) उन्नति में बाधक होना। प्र0 मैं क्यों किसी का आगा रोकूं?

आगा लेना—शत्रु से भिड़ना। प्र0 सेनापति ने बढ़कर आगा लिया।

आगा सम्हालना—सामने का हमला रोकना। प्र0 आगा सम्हालने का गुरु दायित्व सुन्दरसिंह के कंधों पर था।

आगा सूझना—आगे की बात समझ में आना। प्र0 यह पंडित खंडित बैरागू, दोस ताहि जेहि सूझ न आगू (पद0—जायसी, 8/4)।

आगा-तागा लेना—आदर-सत्कार करना। प्र0 बरात का आगा-तागा लेने में कोई कमी न हो, ध्यान रखना।

आगा-पीछा करना—सोच-विचार करना, किसी काम के करने से जी चुराना। प्र0 दर्जियों और धुनियों ने भी कुछ आगा-पीछा कर अपनी स्वीकृति दे दी (सतमी0—राहुल, 10)।

आगा-पीछा त्यागना, -न होना—सोच-विचार या दुविधा न करना या न होना। प्र0 अब मुझे प्राण विसर्जन करने में तनिक भी आगा-पीछा नहीं है (राधा0 ग्रंथा0—राधा0 दास, 735)।

आगा-पीछा देखना, -विचारना, -सुझाना, -सोचना—भले-बुरे परिणाम पर विचार करना। प्र0 मगर होरी ने आगा-पीछा सुझाकर आखिर धनिया को किसी तरह राज़ी कर लिया (गोदान—प्रेमचंद, 105)।

आगा-पीछा न होना—दे0 आगा-पीछा त्यागना।

आगा-पीछा विचारना—दे0 आगा-पीछा देखना।

आगा-पीछा सुझाना—दे0 आगा-पीछा देखना।

आगा-पीछा सोचना—दे0 आगा-पीछा देखना।

आगा-पीछा होना—(1) दुविधा या सोच-विचार होना। प्र0 इससे भक्ति के सामाजिक महत्त्व को××स्वीकार करने में किसी को आगा-पीछा नहीं हो सकता (चिन्ता (1)—शुक्ल, 34)।

(2) किशोरावस्था पार करने पर बालिकाओं के उरोज तथा नितम्बों का भर आना। प्र0 बड़ी अल्हड़ है रमदेइया! आगे-पीछे का खयाल ही नहीं।

(3) श्वसुर-कुल एवं पितृ-कुल में किसी का देखरेख करने को होना। प्र0 रानी को इस बात का बहुत दुःख था कि उसका आगा

तो जैसा-तैसा है भी लेकिन पीछा कोई नहीं (एक चादर0–वेदी, 16)।

आगी होना—दे0 आग होना।

आगी-पानी—दे0 आग-पानी।

आगे—(1) सम्मुख। प्र0 इनकौ गुन-औगुन हरि-आगैं, तिल-तिल भेद जनावैं (सू0 सा0–सूर, 2875)।

(2) भविष्य में। प्र0 जौं प्रिय बिरहँ प्रान प्रिय लागे, देखब सुनब बहुत अब आगे (राम0 (अ)–तुलसी, 541)।

(3) मुकाबिले में। प्र0 रामधन के आगे तुम नहीं टिक सकोगे।

आगे आना—(1) सामने आना, मिलना। प्र0 कबीर सुख कौं जाइ था, आगे आया दुख (कबीर ग्रंथा0–कबीर, 19)।

(2) अनुभव में आना, प्रत्यक्ष होना। प्र0 पर आखिर को मुंह की खाई। अपनी करनी आगे आई (गु0 नि0 –बा0 मु0 गु0, 721)

(3) सामना करना, भिड़ना। प्र0 हिम्मत हो तो आगे आओ, वहीं से मत बकबक करो।

आगे करना—(1) प्रमाणित कर देना। प्र0 मूरख कैं ज्यौं बुद्धि पाछिली, हमहूं करि दियौ आगे (सू0 सा0 –सूर, 2851)।

(2) विपत्ति में फंसाना। प्र0 तुम तो खूब निकले। मुझे आगे करके खुद निश्चिन्त हो गये।

(3) सामने करना। प्र0 यशोधरा एक पल स्थिर दृष्टि से देखती रही। फिर उसने राहुल को आगे कर दिया।

(4) अगुआ बनाना। प्र0 रामनाथ जी को आगे किये बिना काम नहीं होगा।

आगे का उठा—जूठा। प्र0 आगे की उठी थाली मांजने के लिए रख दो।

आगे का उठा खानेवाला—नीच, तुच्छ। प्र0 आगे का उठा खानेवाला यह रमचनमा मुझसे जबान लड़ाता है।

आगे का कदम पीछे पड़ना, -पैर पीछे पड़ना—(1) अवनति होना। प्र0 क्या कहूं, आगे का कदम पीछे हट गया, ऐसा सोचा भी न था।

(2) डर के कारण पीछे लौटना। प्र0 मेरा जी दहल गया, आगे का पैर पीछे पड़ा।

आगे का कपड़ा—घूंघट। प्र0 आगे का कपड़ा ठीक करो, बहूरानी।

आगे का कपड़ा खींचना—घूंघट काढ़ना। प्र0 आगे का कपड़ा खींचो बहू, बाबूजी आ रहे हैं।

आगे का छोकरा या छोकरी—(1) उम्र में बहुत छोटा। प्र0 मो आगें की महरि बिटिनियां, काहे करे वह मान (सू0 सा0 –सूर, 3043)।

(2) अनुभवहीन। दे0 प्रयोग (1)।

आगे का पैर पीछे पड़ना—दे0 आगे का कदम पीछे पड़ना।

आगे का पैर रखकर पीछे का उठाना, -को देखकर पीछे का पैर उठाना—भावी स्थिति दृढ़ करके तब वर्तमान को छोड़ना। प्र0 बुद्धिमान लोग हमेशा आगे का पैर रखकर तब पीछे का उठाते हैं।

आगे की उखेड़—कुश्ती का एक पेंच।

आगे की थाली उठ जाना, -छिन जाना—मिलती हुई वस्तु का छिन जाना। प्र0 भाभी जी, मेरी तो आगे की थाली उठ गयी।

आगे की थाली छिन जाना—दे0 आगे की थाली उठ जाना।

आगे की सुध लेना—भविष्य के बारे में सोचना। प्र0 बीती ताहि बिसार दे, आगे की सुधि लेय।

आगे को—दे0 आगे।

आगे को कान होना—भविष्य के लिए सचेत होना। प्र0 इस बार तो जो होना था, हो गया। हां, आगे को कान हुए।

आगे को देखकर पीछे का पैर उठाना—दे0 आगे का पैर रखकर पीछे का उठाना।

आगे खुदा का नाम—बस, इतना ही। आगे भगवान् जाने। प्र0 अभी तो दोनों जून रोटी मिली जा रही है, आगे खुदा का नाम।

आगे चलकर, -जाकर—भविष्य में। प्र0 ये सारे व्यक्ति आगे चलकर क्या रुख लेंगे, यह कहना कठिन है।

आगे जाकर—दे0 आगे चलकर।

(किसी के) आगे झुकना—किसी प्रकार की आंतरिक या बाह्य आवश्यकता के कारण किसी की बात मानना या उसके सामने नत होना। प्र0 मैं किसी भी हालत में किसी के आगे झुकने को तैयार नहीं।

आगे डालना—बेमन से दे देना। प्र0 बहू जो मेरे आगे डाल देती है, मैं उसे ही बहुत मानती हूं।

आगे डोलना, -फिरना—संतान रहना। प्र0 मेरे कौन आगे डोलता है जिसके लिए इतनी हाय-हाय करूं?

आगे देखकर चलना, -देखना—सावधानी से काम करना, भविष्य के प्रति सजग रहना। प्र0 तुम यदि आगे देखकर नहीं चलोगे तो यही परिणाम होगा।

आगे देखना—दे0 आगे देखकर चलना।

आगे देखना न पीछे—किसी बात पर ध्यान न देना, बात के विभिन्न पहलुओं पर विचार न करना। प्र0 कमला तो आगे देखे न पीछे, जिसने जो कह दिया सो करने को राजी हो जाती है।

आगे देना—सामने रखना। प्र0 पूछती क्या हो, खीर की कटोरी आगे दो तो।

आगे दौड़ पीछे चौड़ होना—आगे का काम करना पीछे का ध्यान ही न रखना। प्र0 उनके यहां तो हमेशा आगे दौड़ पीछे चौड़ होती है, कोई नयी बात थोड़े ही है।

आगे धरना, -रखना—(1) किसी विषय को उपस्थित करना, बतलाना। प्र0 बाबूजी के आगे सारी बातें रख दो फिर वे जो कहें उसके अनुसार निर्णय करो।

(2) आदर्श बनाना। प्र0 मैं तो महात्मा गांधी के आदर्श को आगे रखकर ही चलता रहा हूं और चलूंगा।

(3) भेंट देना। प्र0 नित्यानंद ने फलों से भरी टोकरी मेरे आगे धर दी।

आगे नाचना—स्मृति में सजीव हो जाना। प्र0 मोहसिन के नंगे चूतड़ और बाबा की अंतिम दिन की आंखें शेखर के आगे नाच गई (शेखर0 (2) –अज्ञेय, 104)।

आगे निकल जाना—तुलना में श्रेष्ठ होना, उन्नति कर जाना। प्र0 शंख तो पहले ही बहुत आगे निकल गया (दूधगाछ—दे0 स0, 46)।

आगे पड़ना—सामने आना। प्र0 जबरदस्ती कोई चीज़ आगे पड़ ही जाय तो आंख कैसे मूंद लूं।

आगे पैर न पड़ना—दुश्चिन्ता या भय से गति रुक जाना। प्र0 कोप भवन सुनि सकुचेउ राऊ, भय बस अगहुड़ परइ न पाऊ (राम0 (अ0)—तुलसी, 394)।

आगे फिरना—दे0 आगे डोलना।

आगे बढ़कर लेना, -से लेना, -होकर लेना—आदरपूर्वक स्वागत करना। प्र0 आगे होइ जेहि सुरपति लेई (राम0 (अ0)–तुलसी, 463); देखत ही मुसकाइ उठी चलि, आगे ह्वै आदर कै पुनि लीनो (मति0 मक0 –मतिराम, 128); राजा जनक ने आगे बढ़कर विश्वामित्र को लिया।

आगे नाथ न पीछे पगहा—वंश में आगे-पीछे कोई न होना। प्र0 शतरंज खेलने बैठते तो सवेरा कर देते, दफ्तर भी भूल जाते। न आगे नाथ न पीछे पगहा (गबन –प्रेमचंद, 32)।

आगे बढ़ना—(1) प्रगति होना। प्र0 नये युग का आदमी है, इस नई दुनिया में यह काफी आगे बढ़ेगा (भूले0 –भग0 वर्मा, 263)।
(2) किसी कार्य को करने के लिए मुस्तैद होना। प्र0 तुम एक बार आगे तो बढ़ो। धीरे-धीरे सब अनुकूल हो जायेगा।

आगे बढ़ाना—किसी व्यक्ति या काम की प्रगति करवाना। प्र0 सुधांशु बड़े बाबू का भतीजा है। वे उसे ही आगे बढ़ायेंगे।

आगे बैठा होना—वंश में होना। प्र0 मेरे आगे कौन बैठा है जिसके लिए इतनी हाय-हाय करूं।

आगे भी चलना पीछे भी चलना, आगे-पीछे दोनों ओर चलना—परस्पर विरोधी काम या बात करना, एक मत पर स्थिर न रहना। प्र0 तेरा मिज़ाज आज तक मेरी समझ में न आया। तू आगे भी चलती है, पीछे भी चलती है (गोदान–प्रेमचंद, 262)।

आगे रंग लाना—भविष्य में कोई अच्छा या बुरा परिवर्तन होना। प्र0 अभी चुप-चाप नज़र रखो। देखो वह आगे क्या रंग लाता है।

आगे रखना—दे0 आगे धरना।

आगे लेना—आश्रय में लेना, आदर-स्नेह करना। प्र0 हरि आदर आगै लिया, ज्यूं गउ बछ की लार (कबीर ग्रंथा0 –कबीर, 64)।

आगे से—(1) भविष्य में। प्र0 आगे से उसे मेरे पास हरगिज़ मत भेजना।
(2) भूतकाल से। प्र0 आगे से जो होता आया है, वही आज भी होगा।

आगे से दूर होना—सामने से हट जाना। प्र0 ऊधौ होउ आगे तैं न्यारे (सू0 सा0—सूर, 4145)।

आगे से बढ़कर—आग्रहपूर्वक स्वयं आगे बढ़कर। प्र0 बहू बिचारी तो खुद ही आगे से बढ़कर हर काम करने को तैयार रहती है।

आगे से लेना—दे0 आगे बढ़कर लेना।

आगे होकर लेना—दे0 आगे बढ़कर लेना।

आगे होना—श्रेष्ठ होना। प्र0 संसार-प्रसिद्धि में भी बंगाली देश में आगे थे (चोटी0 –निराला, 10)।

आगे-आगे—(1) क्रम में पहले। प्र0 आगे-आगे गुरुजी थे, उनके पीछे भक्तों का दल, फिर ठाकुर जी की सवारी।
(2) भविष्य में। प्र0 देखते चलिए, आगे-आगे क्या होता है।

आगे-आगे कूदना—सब काम में अपने आप सबसे पहले पहुंच जाना। प्र0 हर काम में तुम आगे-आगे क्यों कूदते हो?

आगे-आगे रहना—सब काम में पहले रहना। प्र0 चाचाजी हर काम में आगे-आगे रहते हैं, चाहे सुख का हो चाहे दुःख का।

आगे-आगे हो लेना—कोई काम खुद आगे बढ़कर जबरदस्ती करना। प्र0 जहां देखो वहां बनारसी बाबू आगे-आगे हो लेते हैं। क्यों भला?

आगे-डोलता—संतान। प्र0 इस आगे-डोलते की चिन्ता कैसे छोड़ दूं?

आगे-पीछे—(1) सोच-विचार में। प्र0 इसी प्रकार आगे-पीछे में पड़े हुए सवेरा हो जायेगा (गबन –प्रेमचंद, 123)।
(2) खानदान में। प्र0 न कोई आगे न कोई पीछे, न रोनेवाला न कोई हंसने वाला, मगर माया बनी हुई है (गबन –प्रेमचंद, 136)।
(3) कुछ समय के अंतर से। प्र0 खुसरो कहीं बाहर किसी मुहिम पर थे कि पीछे अचानक कुछ आगे-पीछे, माता और भाई, दोनों का एक साथ देहान्त हो गया (पद्म-पराग –पद्म0 शर्मा, 199)।
(4) सहायक। प्र0 परदेश में बाल-बच्चों के साथ रहना, न कोई आगे न पीछे, सोचा कितना झंझट है (गोदान –प्रेमचंद, 224)।

आगे-पीछे घूमना—हर समय साथ रहना, खुशामद करना। प्र0 जब वह चला जायेगा तो फिर वही "गीतादी, गीतादी" करती आगे-पीछे घूमेगी (प्रतीक्षा –यादव, 9)।

आगे-पीछे देखकर चलना—हर तरह से बहुत सावधानी से काम करना। प्र0 समझदार व्यक्ति आगे-पीछे देखकर चलते हैं।

आगे-पीछे दोनों ओर चलना—दे0 आगे भी चलना पीछे भी चलना।

आगे-पीछे फिरना, -रहना—हर समय खुशामद करते रहना। प्र0 कृष्णकांत हर समय बड़े बाबू के आगे-पीछे फिरता रहता था सो उसका कुछ-न-कुछ लाभ तो होना ही था।

आगे-पीछे रहना—दे0 आगे-पीछे फिरना।

आगो-मागो करना—मूर्खता करना। प्र0 तुम वहां जाकर आगो-मागो के सिवा और क्या करोगे?

आग्नेय दृष्टि—रोषपूर्ण दृष्टि। प्र0 तुलीप ने उनको आग्नेय नेत्रों से देखा (एक0 –मुल्क0, 350)।

आघात पहुंचना—किसी की बात या कार्य से मन को पीड़ा पहुंचना। प्र0 ऋषिनाथ की उन बातों से मुझे बड़ा आघात पहुंचा है।

आज को—आज, इस समय। प्र0 आज को तुम यह कह रहे हो, कल

पलट जाओगे। तुम्हारा क्या भरोसा।

आज तक—वर्त्तमान समय तक, अभी तक। प्र0 आज तक मैंने कभी किसी को धोखा नहीं दिया।

आजकल—वर्त्तमान समय। प्र0 आज-कल के फैशन की बात कुछ मत पूछो।

आज-कल करना, -बताना—झूठे वादे करना; टालना। प्र0 भैयाजी रोज आज-कल कर रहे हैं, कुछ तै ही नहीं करते।

आज-कल के फेर में पड़ना—समय टालना। प्र0 तुम आजकल के फेर में क्यों पड़े हो? इससे तुम्हारा क्या लाभ हो रहा है?

आज-कल के मेहमान—मृत्यु के सम्मुखीन व्यक्ति। प्र0 दादाजी अब आज-कल के मेहमान हैं।

आज-कल बताना—दे0 आजकल करना।

आज-कल में—जल्दी ही। प्र0 आजु काल्हि हरि आइहैं, यह सपने की बात (सू0 सा0 –सूर, 3708); वे चेताये क्यों नहीं हैं चेतते जो चिता पर आजकल में चढ़ेंगे (चुभते0 –हरिऔध, 160)।

आज-कल लगना—(1) मृत्यु निकट होना। प्र0 दादाजी का आज-कल लगा हुआ है।

(2) देर होना। प्र0 आज-कल तो न जाने कब से लगा है। काम हो जाय, तब की बात है।

(3) टाल-मटोल होना। प्र0 मेरी समझ में नहीं आ रहा है कि कपूरचंद जी आज-कल क्यों लगाये हैं?

आज-कल होना—शीघ्र ही होने की आशा होना। प्र0 तुम थोड़ा और सब्र करो। आज-कल हो रहा है। काम जरूर होगा।

आज-दिन—इस जमाने में। प्र0 आज-दिन किसी का कोई भरोसा नहीं।

आज्ञा आंखों से उठाना, -माथे पर रखना, -माथों पर लेना, -माथों मानना, -सिर पर मानना—आदरपूर्वक आज्ञा ग्रहण करना। प्र0 पिउ आएसु माथे पर लेऊं, जौं मागै नै नै सिर देऊं (पद0 –जायसी, 27/34); जोइ-जोइ कहत, करति सोई-सोइ आयसु माथैं मानि (सू0 सा0 –सूर, 2618); सिर धरि आयसु करिअ तुम्हारा (राम0 (बाल) –तुलसी, 88)।

आज्ञा उठाना, -कंधों पर लेना—आज्ञा ग्रहण करना। प्र0 तिन्हहि जीति रन आनेसु बांधी। उठि सुत पितु अनुशासन कांधी (राम0 (बाल) –तुलसी, 190); मैंने आपकी आज्ञा उठाई है, मैं उसे पूरी करूंगा।

आज्ञा कंधों पर लेना—दे0 आज्ञा उठाना।

आज्ञा माथे होना—आज्ञा सादर स्वीकार होना। प्र0 पिता क आएसु मांथे मोरे (पद0 –जायसी, 3/8)।

आज्ञा माथों पर लेना—दे0 आज्ञा आंखों से उठाना।

आज्ञा माथों मानना—दे0 आज्ञा आंखों से उठाना।

आज्ञा सिर पर मानना—दे0 आज्ञा आंखों से उठाना।

आज्ञा हाथों पर लेना—आज्ञा तुरंत पूरी करना। प्र0 आएसु लिहें रहेहु निति हाथा। सेवा करेहु लाइ मुंह माथा (पद0 –जायसी, 32/8)।

आटम-पाटम—इधर-उधर। प्र0 तुम आटम-पाटम डोला करो, छुट्टी हुई।

आटा गीला होना—काम बिगड़ जाना, झंझट होना। प्र0 आज-कल सबका आटा गीला हो रहा है। किस-किस की बात की जाय।

आटा छानना—निकम्मा बैठना। प्र0 तुम आटा छानने पर ही उतारू हो तो बैठे आटा छानो, बाद में मेरे पास रोते हुए मत आना।

आटा पायना—किसी तरह रोटी बनाना या रसोई बनाना। प्र0 बहुएं आटा पाथ लेती हैं। पर गृहस्थी चलाना क्या जानें (गोदान–प्रेमचंद, 25)।

आटा-आटा कर देना या होना—चूर-चूर कर देना या होना। प्र0 तुमने तो मिठाई एकदम आटा-आटा कर दी, कैसे परोसूं?

आटा-दाल—बहुत आवश्यक दैनिक उपयोग की वस्तु। प्र0 प्रेम ही उनके लिए आटा-दाल है और प्रेम ही उनका सर्वस्व है (कुछ–प0 पु0 बख्शी, 6)।

आटा-दाल का भाव खुलना, -मालूम होना—(1) किसी काम की गुरुता मालूम होना। प्र0 मेरे दरजे में आओगे लाला××तब आटे-दाल का भाव मालूम होगा (मान0 (1) –प्रेमचंद, 83)।

(2) होश ठिकाने आना। प्र0 आज मियां सलीम को आटे दाल का भाव मालूम हुआ (कर्म0 –प्रेमचंद, 314-15)।

आटा-दाल का भाव बता देना—अच्छा सबक देना। प्र0 अगर आप न आ जाते, तो अभी और भी पिटता, मैं इसे दाल आटे का भाव बता देती (सु0 सु0 –सुदर्शन, 199)।

आटा-दाल का भाव मालूम होना—दे0 आटा-दाल का भाव खुलना।

आटा-दाल की फिक्र करना या होना, आटा दाल के फेर में रहना—जीविका की चिन्ता करना या होना। प्र0 अब तो आटा-दाल की फिक्र करनी ही है।

आटा-दाल के फेर में रहना—दे0 आटा-दाल की फिक्र करना या होना।

आटा-माटी करना या होना—बरबाद करना या होना। प्र0 अब जब सब आटा-माटी हो गया, तब मेरे पास आये हो।

आटे की आया—(1) भोली-भाली स्त्री। प्र0 शांति तो आटे की आया है, वह बात को बिगाड़ेगी ही।

(2) मूर्ख स्त्री। प्र0 दे0 प्रयोग (1)।

आटे के साथ घुन पिसना—बड़े या समर्थ के साथ छोटे या निरपराध का भी कष्ट पाना। प्र0 मैंने उनका साथ पकड़कर बहुत बड़ी भूल की। आटे के साथ घुन पिस गया।

आटे में नमक बराबर—उचित मात्रा में। प्र0 झूठ बिन फीकी लगै, अधिक झूठ दुःख भौन झूठ तितौ ही बोलिये, ज्यों आटे में लौन (वृ0 स0–वृन्द, 100); अब तो अच्छी फिल्में आटे में नमक के बराबर भी नहीं रह गईं (दूधगाछ –दे0 स0, 163)।

आटे में नमक-सा मिल जाना—एक हो जाना, एक-जी हो जाना। प्र0 कबीर गुरु गस्या मिल्या, रलि गया आंटै लूण (कबीर ग्रंथा0–कबीर, 2)।

आटे में नमक से भी कम—बहुत कम। प्र0 सरकार स्थान-स्थान पर सहायता तो कर रही है, पर यह आटे में नमक से भी कम है (ब्रह्म0 ×दे0 स0, 316)।

आठ आना—आधा। प्र0 इनकी कुटिल कामना यही होगी कि उन्हें फोड़कर लखनपुर के आठ आने अपने लड़कों के नाम हिब्बा करा लें (प्रेमा0–प्रेमचंद, 149)।

आठ का अस्सी करना—थोड़े को बहुत बढ़ाना। प्र0 अरे यार, आठ के अस्सी तो न करो। यह ठीक नहीं।

आठ वार नौ त्यौहार होना—रोज़ कोई-न-कोई त्यौहार लगा रहना। प्र0 गृहस्थी में छुट्टी कहां, चाची? आठ वार, नौ त्यौहार, रोज़ कुछ-न-कुछ लगा ही रहता है।

आठ सूली पर रहना—हमेशा कष्ट में रहना। प्र0 उस बेचारी का प्राण सदा आठ सूली पर रहता है।

आठ सौ चालीस होना—परम धूर्त होना। प्र0 तुम चार सौ बीस नहीं आठ सौ चालीस हो, समझे।

आठ-अठारह कर देना या होना—(1) दिक कर देना या होना। प्र0 हम लोग उन्हें ऐसा आठ-अठारह करेंगे वे जिंदगी भर याद रखेंगे।
(2) तितर-बितर करना या होना। प्र0 घर की इतनी चीजें, सब आठ-अठारह हो गयीं।

आठ-आठ आंसू रुलाना—बहुत दुःख देना। प्र0 जो बात आठ-आठ आंसू रुलाती है वही किसी दिन बड़ा आनन्द उत्पन्न कर सकती है (गु0 नि0–बा0 मु0 गुप्त, 234)।

आठ-आठ आंसू रोना—बहुत अधिक रोना। प्र0 किसी ने छेड़ा तो छपरखट पर जाके अपना मुंह लपेट के आठ-आठ आंसू पड़ा रोता है (इंशा0–इंशा0, 96); माताजी तुम्हारी चर्चा करके आठ-आठ आंसू रोती थीं (रंग0 (2)–प्रेमचंद, 273-74)।

आठ-काठ जुहाना—सारी गृहस्थी जुटाना। प्र0 नई जगह थी। आठ-काठ जुहाते पंद्रह दिन निकल गये।

आठवें चंद्रमा होना—बुरे दिन होना। प्र0 श्रीपत के आजकल आठवें चंद्रमा हैं, जिस काम में हाथ लगाता है, वही चौपट होता है।

आठों गांठ कुम्मैत होना—चतुर होना। प्र0 हम लोग आपको बछिया के ताऊ ही समझते थे, मगर आप तो आठों गांठ कुम्मैत निकले (मान0 (3)–प्रेमचंद, 327)।

आठों पहर,-चौंसठों घड़ी—हर समय। प्र0 आठ जाम चौंसठि घड़ी, तुअ निरखत रहै जीउ (कबीर ग्रंथा0–कबीर, 249); और वह तुम्हारे साथी क्या हो गये, जो तुम्हें आठों पहर घेरे रहते थे (मान0 (1)–प्रेमचंद, 40)।

आठों पहर चौसठों घड़ी—दे0 आठों पहर।

आठों पहर जामे से बाहर रहना—हर समय क्रोध में . प्र0 तुम तो आठों पहर जामे से बाहर रहते हो। ऐसे ।न चलता है?

आठों पहर सूली रहना या होना—सदा दुःखमय जीवन बिताना। प्र0 मेरी किस्मत में तो आठों पहर सूली है, सो भोग रही हूं।

आठों सिद्धि नवों निधि मिलना—सब कुछ मिलना। प्र0 तुम्हें तो आठों सिद्धि नवों निधि मिल गई हैं, अब तुम्हें किस चीज़ की शिकायत है?

आडम्बर खड़ा करना, आडम्बर फैलाना, आडम्बर बांधना—झूठा दिखावा करना। प्र0 तुम बड़ा आडम्बर खड़ा करते हो। इतने की क्या ज़रूरत है?

आडम्बर फैलाना—दे0 आडम्बर खड़ा करना।

आडम्बर बांधना—दे0 आडम्बर खड़ा करना।

आड़ करना—पक्ष लेना, सहारा देना। प्र0 पर एक चोर पर आफत आई देख दूसरा चोर उसकी आड़ कर लेता है (मान0 (3) –प्रेमचंद, 244)।

आड़ चितरना—माथे पर बिंदियां या दूसरे नमूने बनाना। प्र0 रामू की बहू बड़ी सुंदर आड़ चितरती है, उसी से नई बहू को सजवाओ।

आड़ देना—(1) सहायता करना। प्र0 ××जो लोग सेवा-भाव रखते हैं और जो स्वार्थ-सिद्धि को जीवन का लक्ष्य नहीं बनाते, उनके परिवार को आड़ देने वालों की कमी नहीं रहती (मान0 (1)–प्रेमचंद, 89)।
(2) आड़ करना। प्र0 कमरे में पर्दे की आड़ दे दो।

आड़ पकड़ना,-में आना—सहारा लेना, शरण में आना। प्र0 लड़के वालों ही के लिए आदमी आड़ पकड़ता है। जब लड़का ही न रहा तो भला बिरादरी किस काम आवेगी (मान0 (8)–प्रेम0 14)।

आड़ में—(1) बहाने से। प्र0××भगवान की आड़ में अपनी क्षमता और अपने वैभव का प्रदर्शन मनुष्य में अहम्मन्यता को जन्म देता है (भूले0–भग0 वर्मा, 168)।
(2) आश्रय में। प्र0 मैं तो आपकी आड़ में हूं, आप जो कहेंगे, करूंगा।

आड़ में आना—दे0 आड़ पकड़ना।

आड़ में खेल खेलना—किसी के बहाने अपना स्वार्थ साधना। प्र0 मैं इतना गया बीता हूं कि सुरेश मेरी आड़ में खेल खेले और मैं समझ तक न पाऊं? (बौने0–रां0 रा0, 146)।

(किसी की) आड़ में बैठना—किसी का सहारा लेना। प्र0××यहां कौन है, जिसकी आड़ में मैं छिन भर बैठूंगी (रंग0—प्रेमचंद, 329)।

आड़ लेना—(1) पक्ष लेना। प्र0 बेशरम वो है या तू कि जब देखो, तब बहू की आड़ लिये चले आ रहे हैं (सारा0 –यादव, 158)।
(2) सहारा लेना। प्र0 धत्! बेकार ही मैं बूआजी की आड़ ले रहा हूँ।
(3) बाधा-बंधन मानना, मर्यादा मानना। प्र0 इस काम में धर्म की आड़ लेना उचित नहीं।

आड़ होना—रक्षक के रूप में होना, सहारा होना। प्र0 उनकी आड़ न होती, तो पुलिस ने अब तक मुझे कब का लदवा दिया होता (रंग0 (1) –प्रेमचंद, 218)।

आड़ा लोट मारना—जहाज का डगमगाना। प्र0 समुद्र में भयंकर तूफान उठा। जहाज आड़ा लोट मारने लगा।

आड़ा वक्त—बुरा समय। प्र0 पर साथ ही यह भी सुना था कि आड़े वक्त पर उन्होंने रियासत की अनेक बार बहुमूल्य मदद की थी। (गोली –चतुर0; 142)।

आड़ी करना—चांदी-सोने के लंबे वर्क को पीटकर चौड़ा करना।

आड़ी देकर बैठना—जमकर बैठ जाना। प्र0 तुम वहाँ किताब देने गये थे या आड़ी देकर बैठने?

आड़ी लेना (संगीत)—ताल से मात्रा छोड़ कर गाना।

आड़ी होना—बाधा होना। प्र0 मेरे मार्ग में यही एकमात्र आड़ी है। यह दूर हो जाय तो मैं निश्चिन्त होऊँ।

आड़ी-तिरछी सुनाना—टेढ़ी बातें कहना। प्र0 ताई की पुरानी आदत है, हर समय आड़ी-तिरछी सुनाया करती हैं।

आड़े आना, -काम आना, -दिन काम आना, -समय काम आना, -होना—दुर्दिन में काम आना, सहायक होना। प्र0 इसलिए सात सौ आठ सौ जो हाथ बचेगा, वह आड़े दिन काम ही आयेगा (त्याग0 –जैनेन्द्र, 68); जभी अपने घर मार खाती थी, तभी जान बचाकर उसके घर भाग जाती थी। वह मेरे आड़े आ जाता था (रंग0 (2) –प्रेमचंद, 127)।

आड़े काम आना—दे0 आड़े आना।

आड़े दिन काम आना—दे0 आड़े आना।

आड़े देना—आड़ करना। प्र0 आड़ै दै आले बसन, जाड़े हूं की राति, साहसु ककै सनेह बस, सखी सबै ढिग जाति (बिहारी रत्ना0–बिहारी, 283)।

आड़े पड़ना—बीच में पड़ना, रुकावट डालना। प्र0 तुम क्यों व्यर्थ आड़े पड़ते हो? वह जो करता है, करने दो।

आड़े समय काम आना—देखिए आड़े आना।

आड़े हाथों लेना—खूब फटकारना। प्र0 एक दिन उसने मेहता को आड़े हाथों लिया (गोदान–प्रेमचंद, 334)।

आड़े होना—दे0 आड़े आना।

आड़े-तिरछे होना—क्रोधित होना। प्र0 आप तो हर बात में आड़े-तिरछे होते रहते हैं।

आढ़-आढ़ करना—टालमटोल करना। प्र0 जारि मोहिनी आढ़-आढ़ कियौ तब नखसिख तैं रोयौ (ब्र0 सू0 को0)।

आतंक जमाना—भय पैदा करना। प्र0 नादिरशाह ने समूचे प्रदेश में वह आतंक जमाया कि लोग चूं करने की हिम्मत नहीं करते थे।

आता-जाता—आने-जाने वाला। प्र0 किसी आते-जाते के हाथ मेरी किताबें भेज दीजिएगा।

आतिश का परकाला—उत्साही या ऊधमी व्यक्ति। प्र0 रमानाथ आतिश का परकाला है, वह बहुत कुछ कर सकता है।

आतिश-मिजाज़—बिगड़ैल, गुस्सा होनेवाला। प्र0 बाप रे बाप! ऐसा आतिश-मिजाज़ तो मैंने देखा ही नहीं।

आतिशे रश्क में जलना—किसी की उन्नति देखकर ईर्ष्या करना। प्र0 इस तरह आतिशे रश्क में जलकर तुम अपना ही खून जलाते हो।

आती रकम—मिलता हुआ धन। प्र0 आती रकम कोई छोड़ता है कि मैं ही छोड़ूं।

आती लक्ष्मी को ठुकराना—मिलते धन को न लेना। प्र0 भई, आती हुई लक्ष्मी भी तो नहीं ठुकराई जाती (निर्मला–प्रेमचंद, 56)।

आते-आते आयेगा—देर और मुश्किल से आयेगा। प्र0 बाहर से सामान आना आसान थोड़े ही है, आते-आते आयेगा।

आते-आते फिर जाना—इरादा बदल देना, लौट जाना। प्र0 सब बात पक्की हो गयी थी, लेन-देन की बात भी हो गयी थी फिर भी अंत में वे आते-आते फिर गये।

आते-जाते—हर समय। प्र0 आते-जाते उनके तगादे सुनते-सुनते कान पक गये।

आत्मसम्मान को चोट लगना—आत्मसम्मान की भावना को दुःख पहुंचना। प्र0 ऐसी स्थिति में बाबूजी से कुछ भी मांगने में मेरे आत्मसम्मान को चोट लगती है।

आत्मसम्मान बेचना—अपने मान-अपमान की उपेक्षा करके स्वार्थ साधना। प्र0 इस तरह किसी की गर्दन पर सवार होकर, अपना आत्म-सम्मान बेचकर गये तो क्या गये? (मान0 (7) –प्रेमचंद, 25)।

आत्मा—(1) प्रमुख व्यक्ति। प्र0 सतीप्रथा-निवारण-आंदोलन की आत्मा राजा राममोहन राय थे।
(2) मूल भाव या सार। प्र0 वाह! काव्य की आत्मा को तो तुम पकड़ ही नहीं पाये।

आत्मा कलपाना, -सताना—जी को कष्ट देना। प्र0 तुम्हें आत्मा कलपाकर ही सुख मिलता है, तो वैसा ही करो।

आत्मा का अंतर पड़ना—मन में दुर्भावना आना। प्र0××मतभेद जान लेने पर भी, हमारे बीच आत्मा का अंतर कभी नहीं पड़ा (सत्य के प्रयोग –मो0 क0 गांधी, 471)।

आत्मा का खून होना—आंतरिक इच्छा के विपरीत कुछ करने को बाध्य होना। प्र0 तुम्हारा साथ देने में दयाल की आत्मा का खून होगा, इसीलिए वह तुमसे कन्नी काटता है।

आत्मा का गवाही न देना, -साक्षी न देना—किसी कार्य के लिए मन का स्वीकृति न देना। प्र0 तुम्हारा साथ देने के लिए मेरी आत्मा किसी तरह गवाही नहीं देती।

आत्मा का साक्षी न देना—दे0 आत्मा का गवाही न देना।

आत्मा का हनन करना, -की हत्या करना—अपनी इच्छा एवं मान्यताओं के प्रतिकूल कोई काम करना। प्र0 अपनी आत्मा की हत्या करके पढ़ने से भूखा रहना कहीं अच्छा है (कर्म0–प्रेमचंद, 18)।

आत्मा की हत्या करना—दे0 आत्मा का हनन करना।

आत्मा को गिराना—पतित हो जाना, बुरे काम करना। प्र0 उन्होंने अपनी आत्मा को कितना गिरा दिया है? (सेवा0–प्रेमचंद, 149)।

आत्मा को ठोंका देना—आत्मा को कुरेदना, किसी बात का मन को बहुत छू जाना। प्र0 शब्दों ने उनकी आत्मा को एक ठोंका दिया था,

और वह जाग्रत हो गयी थी (प्रेमा0–प्रेमचंद, 63)।

आत्मा ठंडी करना या होना—(1) शांति देना या मिलना। प्र0 उसे नरक-यातना भोगते देखकर ही मेरी आत्मा ठंडी होगी।
(2) भूख मिटना, तृप्ति होना। प्र0 पहले कुछ खाने को दो, आत्मा ठंडी करूं फिर कुछ और।

आत्मा तड़पना—हृदय का व्याकुल होना। प्र0 तुम अनुमान नहीं कर सकते कि इस संबंध में मेरी आत्मा कितना तड़पी है।

आत्मा बेचना—भले-बुरे का विवेक छोड़ देना, अपने क्षुद्र सीमित स्वार्थों के लिए नैतिकता के सब मूल्यों की उपेक्षा करना। प्र0 उन देश-द्रोहियों ने तो अपनी आत्मा पहले ही बेच दी थी।

आत्मा मसोसना—(1) इच्छाओं को दबाना। प्र0 मैं तो आत्मा मसोस कर रह गया।
(2) भूख को दबाना। दे0 प्रयोग (1)।

आत्मा में डालना, -पड़ना—पेट भरना। प्र0 पहले थोड़ा सुस्ता लो, फिर कुछ आत्मा में डालो।

आत्मा में पड़ना—दे0 आत्मा में डालना।

आत्मा सताना—दे0 आत्मा कलपाना।

आदम न आदमज़ात—सूना, निर्जन। प्र0 गंगा किनारे क्या घूमने जाया जाय, आजकल तो वहां आदम न आदमज़ात, एकदम सूना रहता है।

आदमियत उठ जाना—मनुष्यत्व का व्यवहार न रह जाना। प्र0 दुनिया से अब आदमियत एकदम उठी जा रही है।

आदमियत करना, -पकड़ना—भलमनसाहत करना, शिष्ट आचरण करना। प्र0 उनमें आदमियत है ही कहां जो करेंगे?

आदमियत पकड़ना—दे0 आदमियत करना।

आदमियत में लाना, -सिखाना या सीखना—शिष्ट तौर-तरीके सिखलाना या सीखना। प्र0 पहले लड़के को आदमियत में लाओ।

आदमियत सिखाना या सीखना—दे0 आदमियत में लाना।

आदमियत से गुज़र जाना—बेकाबू हो जाना, ऐसा हो जाना कि कहने-सुनने का कोई असर न हो। प्र0 बिशनसिंह आदमियत से गुज़र गया है, उसका भविष्य अंधकारमय है।

आदमी—(1) पक्षवाला, समर्थन-प्राप्त। प्र0 उन्हीं के आदमी अधिकतर नौकर रखे गये (अमृ0–नागर, 577)।
(2) पति। प्र0 रमदेइया का आदमी आया था कल।
(3) मज़दूर। प्र0 आठ आदमी लगे हैं फिर भी काम पूरा नहीं हो पा रहा है।
(4) विशिष्ट क्षमता सम्पन्न व्यक्ति। प्र0 अरे भाई, आदमी तो राम प्रसाद जी हैं। उनके जैसा कैंड़ेवाला कम दिखेगा।
(5) नौकर। प्र0 घर के काम की तकलीफ होती है तो एक आदमी क्यों नहीं रख लेते?
(6) सभ्य; शिष्ट; इज्ज़तदार; भलामानस। प्र0 कमलाकांत, तुम आदमी बनो। आदमी बने बिना तुम कैसे सिर ऊंचा करके खड़े हो सकोगे।

आदमी करना—पति या खसम बनाना। प्र0 सुभागी ने आदमी कर लिया है उसी के साथ रहती है।

आदमी के लिबास में आना—शिष्ट आचरण करना। प्र0 वह एकदम जंगली है। आदमी के लिबास में आना जानता ही नहीं।

आदमी छूटना—किसी खोज के लिए आदमियों का जाना। प्र0 डाकुओं के पीछे आदमी छूटे हैं, आशा है जल्दी ही पता लग जायेगा।

आदमी दौड़ाना—किसी खोज के लिए चारों ओर आदमी भेजना। प्र0 आदमी तो दौड़ाया है पर कहीं पता चले तब न।

आदमी नहीं घनचक्कर होना—(1) घुमक्कड़ होना। प्र0 रमाकांत तो आदमी नहीं घनचक्कर है, कहीं टिकता ही नहीं।
(2) मूर्ख होना। प्र0 यार, तुम तो आदमी नहीं घनचक्कर हो।

आदमी नहीं पायजामा होना—देखिए आदमी नहीं घनचक्कर होना (2)।

आदमी नहीं फरिश्ता होना—बहुत ही नेक होना। प्र0 बाबू ज्ञान प्रकाश आदमी नहीं फरिश्ता हैं।

आदमी पर आदमी गिरा पड़ना—बहुत भीड़ होना। प्र0 गोबर हैरान था, इतने आदमी नगर में कहां से आ गये? आदमी पर आदमी गिरा पड़ता था (गोदान–प्रेमचंद, 143)।

आदमी बनना या बनाना—(1) शिक्षित या सभ्य होना या बनाना, भला आदमी बनाना। प्र0 जाते हो तो जाओ, आदमी बन जाओगे (मान0 (5)–प्रेमचंद, 287)।
(2) ठीक से कपड़े आदि पहनकर सभ्य शिष्ट दिखलाई पड़ना। प्र0 अभी-अभी कुंवर महेन्द्रपाल आने वाले हैं। अंदर जा कर आदमी बन जाओ (नये हाथ–वि0 रस्तोगी, 27)।

आदमी लगाना—गुप्तचर पीछे लगा देना। प्र0 जहां-जहां जाय, आदमी लगा रखो, देखे रहे, मालूम कर ले, असली कौन है (नोटी0–निराला, 94)।

आदर की चादर पड़ना—आदर होना, प्रतिष्ठा बनी रहना। प्र0 सोचती हूं कि यदि सती विधवा होती तो मेरे बुढ़ापे पर चार के आदर की चादर तो पड़ी रहती, मेरे रूप के खण्डहरों पर दुनिया यों घृणा और उपेक्षा की खिल्ली तो न उड़ाती (सुहाग0–नागर, 31)।

आदर की निगाह से देखना—आदर करना। प्र0 मैं सदा उन्हें आदर की निगाह से देखता हूं।

आदर देना—आदर करना। प्र0 ब्रह्मा कह्यौ, बुरौ तुम कियौ। निज गुरु कौं आदर नहिं दियौ (सू0 सा0–सूर, 416); सो बड़ सो सब गुन गन गेहू, जेहि मुनीस तुम्ह आदर देहू (राम0 (अ)–तुलसी, 473)।

आदाब बजाना—बड़ा मानना, आदर करना। प्र0 मैं तो आपको हमेशा आदाब बजाता हूं।

आदि से अंत तक—पूर्ण रूप से। प्र0 मैंने आदि से अंत तक उन्हें सब कुछ बता दिया।

आदि-अंत न पाना—पूर्ण जानकारी न होना। प्र0 आदि अंत कोउ जासु न पावा (राम0 (बाल) –तुलसी, 131)।

आदि-अंत न होना—अपार होना, बहुत अधिक होना। प्र0 भगवान की लीला अपरम्पार है, उसका आदि-अंत नहीं है।

आदि-अंत सोचना—पूर्ण रूप से विचार करना। प्र0 आदि-अंत सब सोचकर तब काम में हाथ डालना चाहिए।

आधा तीतर आधा बटेर होना—दो परस्पर विरोधी भाव, रंग, स्थिति आदि का एक साथ होना। प्र0 शंकर ने ××बहुत चाहा कि भारत फिर वैसा ही हो जाय जैसा वैदिक ऋषियों के समय में था किंतु भारत उस तरह न होकर आधा तीतर आधा बटेर-सा हो गया (सा0 सु0—बा0 भट्ट, 116); या तो हिन्दुस्तानी रखिए या अंगरेजी। यह क्या कि आधा तीतर आधा बटेर (गबन—प्रेमचंद, 82)।

आधा पल—बहुत थोड़ा समय। प्र0 पहनेहु नंद बबा के आवहु, देखि लिहुँ पल आधौ (भ्र0 सा0—सूर, 315)।

आधा पेट खाना, आधे पेट रहना—भरपेट भोजन न मिलना। प्र0 आधा पेट खाकर कितने दिन रहा जा सकता है?

आधा बनिया होना—थोड़ी वणिक-वृत्ति होना, अपने लाभ को दृष्टि में रखना। प्र0 देखो, तुम ठहरे आधे बनिया। तुमसे यह काम न होगा, छोड़ दो।

आधा हो जाना—पहले की अपेक्षा बहुत कम हो जाना। प्र0 रामू पहले से आधा हो गया है। पहचाना ही नहीं जाता।

आधान से होना—गर्भवती होना।

आधार होना—(1) सहारा होना। प्र0 मेरा आधार तो यह बेटा ही है।

(2) भोजन मिलना। प्र0 पहले पेट में कुछ आधार हो तब न गाड़ी आगे चले।

आधारबल—सहायक। प्र0 मेरे आधारबल तो आप ही हैं, आपके सिवा मैं किसका मुंह ताकूं?

आधार-भित्ति,-शिला, -स्तंभ—किसी काम के करने वालों में महत्त्वपूर्ण, मुख्य आधार। प्र0 इस सारे आंदोलन की आधार-भित्ति तो महात्मा गांधी ही थे।

आधार-शिला—दे0 आधार-भित्ति।

आधार-स्तम्भ—दे0 आधार-भित्ति।

आधी कौड़ी का—तुच्छ। प्र0 रामनाम ललित ललामु कियो लाखनि को, बड़ो कूर कायर कपूत कौड़ी आध को (कवि0—तुलसी, 144)।

आधी जबान भी न कहना—कुछ भी न कहना। प्र0 मैं तो इसी मारे उसे कभी आधी जबान भी कुछ नहीं कहता।

आधी जान का होना—अत्यंत कमजोर होना। प्र0 बैल बिचारा तो आधी जान का हो रहा है। इसे क्यों मार रहे हो?

आधी बात कहना, -मुंह से निकालना—(1) ज़रा-सा डांटना। प्र0 जिसने कभी आधी बात नहीं कही, कभी तू करके नहीं पुकारा, वह मालिक अब उसे छोड़े चला जा रहा था (गबन—प्रेमचंद, 197)।

(2) शिकायत करना। प्र0 बेचारे को न अच्छा खाने को लेमि न पहनने को, फिर भी कभी मुंह से आधी बात नहीं निकालता (मा—कौशिक, 130)।

आधी बात न पूछना—(1) कोई चिंता न करना। प्र0 मौसी के यहां वह बड़े कष्ट में दिन गुजार रहा था। कोई उसको आधी बात न पूछता था।

(2) कोई महत्त्व न देना। प्र0 दे0 प्रयोग (1)।

आधी बात न सहना—ज़रा भी अपशब्द न सहना। प्र0 कमला से किसी की आधी बात तो सही नहीं जाती, ऐसी बिगड़ैल सास के साथ कैसे गुज़ारा होगा?

आधी बात मुंह से निकालना—दे0 आधी बात कहना।

आधी मुर्गा आधा बटेर होना—दे0 आधा तीतर आधा बटेर होना।

आधे पल के लिए भी—न्यूनतम समय के लिए भी। प्र0 हरि-हरि-हरि हरि सुमिरन करौ। आधे पलकहुं जनि बिस्मरौ (सू0 सा0—सूर, 412)।

आधे पेट रहना—दे0 आधा पेट खाना।

आधे मन से—पूरी रुचि के साथ नहीं। प्र0 वह हर काम आधे मन से करता है इसलिए जल्दी पूरा नहीं होता।

आधो आध—एकदम आधा। प्र0 इस खरबूजे को आधोआध काट कर दोनों में बांट दो।

आनंद के खर्राटे भरना—चैन से सोना, निश्चिन्त होना। प्र0 भाई तुम तो बड़े बाप के बेटे हो! आनंद के खर्राटे भरो। हम गरीबों की क्या पूछते हो?

आनंद के ढोल बजना या बजाना, -तार बजना या बजाना—आनंद होना या मनाना। प्र0 भूधरमल को पुत्र की प्राप्ति हुई है। उनके यहां आनंद के ढोल बज रहे हैं।

आनंद के तार बजना या बजाना—दे0 आनंद के ढोल बजना या बजाना।

आनंद में पगना, आनंद-सागर में डुबकी खाना—खूब आनन्दित होना। प्र0 संसय तजि मन आनंद पाग्यौ (भा0 ग्रं0 (1)—भारतेन्दु, 607); होरी ने आनंद के सागर में डुबकियां खाते हुए××कहा (गोदान—प्रेमचंद, 38)।

आनंद लूटना—मौज करना। प्र0 इसी बहाने से आप यहां आ कर दो-चार दिन आनंद लूटते (पद्म0 के पत्र—पद्म0 शर्मा, 30)।

आनंद सागर में डुबकी खाना—दे0 आनंद में पगना।

आन—रोक। प्र0 उनके यहां जाने पर क्या कोई आन है?

आन का पक्का—अपनी प्रतिज्ञा पर दृढ़ रहनेवाला। प्र0 महाराणा प्रताप आन के पक्के थे, आन के लिए उन्होंने अपना सब कुछ विसर्जित कर दिया।

आन की आन में—(1) फौरन, उसी दम। प्र0 आन की आन में उसने तीन घोड़े लाकर खड़े कर दिये।

(2) प्रतिष्ठा का ध्यान करके। प्र0 आन की आन में आकर उसने अपना सब कुछ अर्पित कर दिया।

आन की तान, -तान—कुछ का कुछ, ऊटपटांग। प्र0 तुम तो आन की

तान उड़ाते हो।

आन की तान बातें करना—ऊटपटांग बातें करना। प्र0 तुम हर समय आन की तान बातें क्यों करते हो?

आन के धन पर लक्ष्मीनारायण होना—दूसरे के धन-ऐश्वर्य पर मौज करना, दूसरे के धन-ऐश्वर्य पर अपना अधिकार जताना।

आन छोड़ना, तोड़ना—(1) सम्मान घटाना। प्र0 जब बाबूजी ने अपनी आन छोड़ दी तो फिर मुझे क्या?

(2) प्रण छोड़ना, ज़िद छोड़ना। प्र0 और जो चाहे सो हो, वह अपनी आन नहीं तोड़ सकता।

आन तोड़ना—दे0 आन छोड़ना।

आन निभाना—प्रण पूरा करना। प्र0 तुम पहले अपनी आन निभाने की चेष्टा करो।

आन पर अंधा होना, -जान देना, -मर मिटना—अपनी प्रतिज्ञा को पूरी करने के लिए कठिन-से-कठिन कार्य करने को भी तैयार रहना। प्र0 हम अपनी आन पर जान देते थे (मान0(7)—प्रेमचंद, 259)।

आन पर जान देना—दे0 आन पर अंधा होना।

आन पर नज़र रखना—प्रतिष्ठा का ख़याल करना। प्र0 अपनी आन पर नज़र रखना ज़रूरी होता है। गयी आन फिर नहीं लौटती।

आन पर मर मिटना—दे0 आन पर अंधा होना।

आन फिरना—विजय-घोषणा होना। प्र0 मेरे जान कनकपुरि फिरिहै रामचंद्र की आन (सू0 सा0—सूर, 565)।

आन फेरना—ढिंढोरा पीटना। प्र0 आन आन फेरी मदन, करो मान तज मान (विक्रम सतसई)।

आन बनना—मुसीबत पड़ना। प्र0 मुझ पर तो ऐसी आन बनी है कि क्या कहूं? मैं तो हर ओर से पिसा जा रहा हूं।

आन बोलना—दुहाई देना। प्र0 दरसन-दान दीजै भावते सुजान, रहे आसा लागि प्रान आन बोलत तिहारियै (घन0कवित्त—घना0; 225)।

आन मानना—(1) इज्जत करना। प्र0 बड़ों की आन मानना हम सबका फ़र्ज़ है।

(2) डर मानना। प्र0 दे0 प्रयोग (1)।

आन में आना—लोक-लाज का बहुत ख़याल रखना। प्र0 आन में आकर उन्होंने घर चौपट कर दिया।

आन रखना, -सम्हालना—(1) प्रतिज्ञा पूरी करना, ज़िद पूरी करना। प्र0 अपनी आन रखने के लिए व्यक्ति क्या नहीं करता।

(2) इज्ज़त रखना। प्र0 दे0 प्रयोग (1)

आन सम्हालना—दे0 आन रखना।

आन-खान होना—सत्यानाश होना। प्र0 घर का क्या नहीं था पर धीरे-धीरे सब आन-खान हो गया।

आन-तान—दे0 आन की तान।

आनन-फानन—तुरंत। प्र0××सब के लड़कों के अनशन करने की खबर××आनन-फानन ही फैल गयी थी (अमृत0—नागर, 359)।

आन-बान—शान, रुतबा। प्र0 अरे भाई, उनकी आन-बान ही निराली है।

आन-बिनान—सज्जनता, सौजन्य। प्र0 उन्होंने अपने आन-बिनान के कारण मेरी सहायता की तो बदले में उनके लिए कुछ करने की मेरी इच्छा भी तो स्वाभाविक है।

आना—(1) बकाया होना। प्र0 काग़ज़वाले के एक हज़ार से ऊपर आ रहे थे (गोदान—प्रेमचंद, 174)।

(2) किसी वस्तु के भीतर दूसरी वस्तु अंटना। प्र0 इस डब्बे के भीतर कंटर नहीं आता।

(3) प्रस्तुत होना। प्र0 राम पढ़ने से वैसे तो जी चुराता है पर जब पढ़ने पर आता है तो खाना-पीना सब भूल जाता है।

(4) मालूम होना, ज्ञात होना। प्र0 तुम्हें कुछ भी नहीं आता, तुम क्या काम करके निहाल करोगे?

आना-जाना—जन्म-मृत्यु। कहै कबीर जे आप बिचारै, मिटि गया आवन जाना (कबीर ग्रंथा0—कबीर, 90)।

(2) अनैतिक संबंध रखना।

आना-पाई चुकता होना—लेन-देन का हिसाब सफाया होना। प्र0 मेरा और विश्वनाथ जी का हिसाब आना-पाई चुकता हो गया है।

आना-पाई शुद्ध होना—एकदम ठीक होना। प्र0××हिसाब-किताब आना-पाई शुद्ध रखना, बीजक और माल की खानगी में ठीक समय का ख़याल रखना, ये बातें कुछ ऐसी भारी नहीं हैं कि चुस्त और चालाक रोज़गारियों में बहुत कदर के लायक हों (भट्ट नि0—बा0 भट्ट, 41)

आनी-जानी—(1) आने-जानेवाली चीज़। प्र0 रुपया तो आनी-जानी है, उसका इतना मोह ठीक नहीं।

(2) क्षण-भंगुर। प्र0 यह जीवन आनी-जानी है, इसके लिए इतनी हाय-हाय क्यों?

आप—ईश्वर। प्र0 आपकी मर्जी के बिना एक पत्ता भी नहीं खड़क सकता।

आप ऐसे आप वैसे करना—किसी की बुराई निकालना। प्र0 तुम तो हर समय आप ऐसे आप वैसे करते रहते हो? इसके सिवा और कोई काम नहीं है?

आप की जूती की नोक से—अत्यंत उपेक्षापूर्वक किसी बात या काम को अस्वीकार करना। प्र0 मैं वहां जाऊँगी आपकी जूती की नोक से।

आप तो आप ही हैं—आप बेजोड़ हैं। आप जैसा मूर्ख या बुद्धिमान और कोई नहीं है।

आप में आना—होश-हवास ठीक हो जाना। प्र0 चाचाजी की ज़ोरदार लताड़ खाकर वह आप में आ गया।

आप से—स्वयं। प्र0 तुम आप से उनके पास क्यों नहीं जाते?

आप से आप—स्वयं, खुद ब खुद। प्र0 तुम क्या समझते हो सब कुछ आप से आप हो जायेगा?

आप ही अपना जवाब होना, -आप-सा होना—बेजोड़ होना। प्र0 सब भंति सुजान न आन समान कहा कहौं आप तें आप लसै (घन0

कवित्त;–घना0 129) ।

आप ही आप—(1) बिना किसी और की प्रेरणा के। प्र0 किसी ने उससे कुछ कहा नहीं था। वह आप ही आप वहाँ गया।

(2) मन ही मन में किसी को संबोधन करके नहीं। प्र0 आप ही आप वह न जाने क्या-क्या बकते रहे।

आप ही आप-सा होना—दे0 आप ही अपना जवाब होना।

आप ही नाक (नाम) चोटी गिरफ्तार होना—अपनी इज़्ज़त का बहुत खयाल होना। प्र0 दयाराम जी तो आप ही नाक (नाम) चोटी गिरफ्तार रहते हैं, उनसे कुछ कहने की ज़रूरत नहीं है।

आप-आप करना—(1) किसी का सम्मान करना, किसी की विनती करना। प्र0 स्वामी श्रद्धानंद जी के वहाँ पहुँचते ही सब लोग आप-आप करने लगे।

(2) खुशामद करना। प्र0 बड़े साहब के सामने दीपंकर खूब आप-आप करता था।

आप-आपकी पड़ना—(1) अपने-अपने काम में फंसना। प्र0 आजकल सभी को आप-आप की पड़ी रहती है, कौन किसकी सुनता है।

(2) अपनी-अपनी रक्षा या लाभ का ध्यान रखना। प्र0 देखिए प्रयोग (1)।

आप-आपको—अलग-अलग, न्यारे-न्यारे। प्र0 दोनों ही चित्र आप-आप को सुंदर हैं।

आप-आप में—आपस में, परस्पर। प्र0 अच्छा, इस तरह आप-आप में झगड़ा करना क्या ठीक है?

आप-बीती—अपने दुःख की कहानी। प्र0 क्या करोगे मेरी आप-बीती सुनकर। बड़ा दर्द भरा किस्सा है।

आप-भाई—अपने मन को अच्छा लगनेवाला काम या बात। प्र0 मैं तो एक बात जानता हूँ, सभी आप-भाई करना चाहते हैं।

आप-रूप—परमेश्वर-स्वरूप। प्र0 सभी भक्तों की साधना का चरम उद्देश्य है उस आप-रूप की प्राप्ति।

आपस का—सम्बन्धी या निकट का व्यक्ति। प्र0 रामलाल आपस के आदमी हैं, उनसे जो कहोगे, करवा दूंगा।

आपस में गिरह पड़ना—मनमुटाव होना। प्र0 अब तो दोनों भाइयों में भी आपस में गिरह पड़ गयी है।

आपस में रहना—व्याभिचारिक सम्बन्ध होना। प्र0 वे दोनों तो आपस में रहते ही हैं, यह तो खुली बात है।

आपस में होना—तकरार होना। प्र0 बात छोटी ही थी पर इसी पर दोनों में आपस में हो गयी।

आपसदारी—भाईचारा। प्र0 आपसदारी का मामला है, आज तो मुझे जाना ही होगा।

आपसवाले—सम्बन्धी, मित्र। प्र0 आपसवालों से सबसे कैसे नाता तोड़ लिया जाय?

आपा-खोना—(1) अहंकार त्यागना, नम्र होना। प्र0 ऐसी बाणी बोलिये, मन का आपा खोइ (कबीर ग्रंथा0–कबीर, 57)।

(2) अपने ऊपर नियंत्रण न रख पाना। प्र0 वह जवान लड़ाती है तो मैं अपना आपा खो बैठता हूँ (बूंद0–नागर, 113)।

(3) अपना गौरव छोड़ना। प्र0 उन्होंने इस बुढ़ापे में आकर अपना आपा खो दिया है।

आपा खोलना—मन की सारी बातें कह डालना। प्र0 पर उससे गहरे अनुभव व्यक्त करना भी दीवार से कहना मान उसने कभी अपना आपा नहीं खोला (सुहाग0–नागर, 120)।

आपा डालना, -तजना, -सौंपना—अपनी सत्ता को भूलना, निरभिमान होना। प्र0 क्या सचमुच हम इनके हाथ में समूचे राष्ट्र की सम्पत्ति उसी प्रकार छोड़ देने को तैयार हैं, जिस प्रकार भक्त अपना समूचा आपा जनार्दन को सौंप देता है? (अशोक0–ह0 प्र0 द्वि0; 28)।

आपा तजना—दे0 आपा डालना।

आपा दिखलाना—दर्शन देना या आत्मदर्शन होना। प्र0 कै बिरहणि कूं मींच दे, कै आपा दिखलाइ आठ पहर का दाझणां, मोपैं सह्या न जाइ (कबीर ग्रंथा0– कबीर, 10)।

आपा पीट डालना—अपने शरीर को पीटना। प्र0 असहाय बहू ने अपना ही आपा पीट डाला।

आपा बिसरना या बिसारना, -मिटना या मिटाना, -मेटना—अभिमान जाता रहना या छोड़ देना। प्र0 आपा मेट्यां हरि मिलै, हरि मेट्यां सब जाइ (कबीर ग्रंथा0–कबीर, 65)।

आपा मिटना या मिटाना—दे0 आपा बिसरना।

आपा मेटना—दे0 आपा बिसरना।

आपा सम्हलना या सम्हालना—(1) चैतन्य होना। प्र0 आपा सम्हाल बिना परम तत्त्व की प्राप्ति असंभव है।

(2) देह की सुध रखना। प्र0 तुमसे तो अपना आपा ही नहीं संभलता, तुम मेरी क्या सहायता करोगे।

(3) अपना निर्वाह करना। प्र0 देखिए प्रयोग (2)।

आपा सौंपना—दे0 आपा डालना।

आपाधापी पड़ना, -रहना या होना—अपनी-अपनी फिक्र होना। प्र0 प्रायः साल-भर तक रियासत में यही आपाधापी रही (रंग0 (2) –प्रेमचंद, 67)।

आपाधापी रहना या होना—दे0 आपाधापी पड़ना।

आपे में आना, -रहना या होना—अपने होश-हवाश में होना, काबू में होना। प्र0 इसलिए जब एक दिन प्रेमा के पिता उनके पास पहुँचे और केशव से प्रेमा के विवाह का प्रस्ताव किया तो बूढ़े पंडित जी अपने आपे में न रह सके। (मान0 (1) –प्रेमचंद, 229)।

आपे में रहना या होना—दे0 आपे में आना।

आपे से जाना—संज्ञाहीन होना। प्र0 वह तो नशे में धुत आपे से चला गया था।

आपे से निकलना, -बाहर निकलना, -बाहर होना—होश–हवाश में न होना, अत्यधिक उद्विग्नता के कारण असंयमित हो उठना। प्र0 मेरी बुद्धि ऐसी अकुला रही है कि मैं अपने आपे से बाहर हुआ

जाता हूँ (मा0 ग्रं0 (1) –भारतेन्दु, 551); नौकर ने विस्तर लगाने में जरा भी देर की ××साइकिल अच्छी तरह साफ नहीं हुई, तो वह आपे से बाहर हो जाता (मान0 (1)–प्रेमचंद, 104)।

आपे से बाहर निकलना—दे0 आपे से निकलना।

आपे से बाहर होना—दे0 आपे से निकलना।

आफत उठाना—(1) दुःख सहना। प्र0 आफत उठाते-उठाते मेरा मन बुझ गया।

(2) उधम मचाना। प्र0 बच्चों ने बड़ी आफत उठा रखी है। उन्हें रोको न।

आफत कटना—(1) बुरे दिन दूर होना। प्र0 अब तो लड़के की नौकरी लग गयी है। राम-राम करके आफत कटी।

(2) किसी मुश्किल काम का पूरा हो जाना। प्र0 तीन महीने की दौड़-धूप के बाद सर्टिफिकेट मिली। किसी तरह आफत कटी।

आफत का टुकड़ा, -परकाला, -की पुड़िया—(1) बहुत खुराफाती व्यक्ति। प्र0 हां, है तो वह ऐसी ही आफत की परकाला (रंग0 (2)– प्रेमचंद, 189)।

(2) बड़ा उद्यमी या कुशल व्यक्ति। प्र0 कृष्णकान्त आफत का टुकड़ा है। वह सब कर सकता है। तुम निश्चिन्त होकर उसके हाथों में कागज वगैरह सौंप दो।

आफत का परकाला—दे0 आफत का टुकड़ा।

आफत का मारा—बुरा दिन देखे हुए। प्र0 वह आफत की मारी ×× किसी वृक्ष की छाँह खोजती फिरती थी (गोदान–प्रेमचंद, 122)।

आफत की पुड़िया—दे0 आफत का टुकड़ा।

आफत के बादल उमड़ना, -फट पड़ना—बड़ी मुसीबत पड़ना। प्र0 इन पर चारों तरफ से आफत के बादल उमड़े चले आते हैं पर इन्हें कुछ खबर नहीं है (परीक्षा0–श्री0 दास, 146)।

आफत खड़ी करना, -घोलना, -डालना, -लाना—झंझट या मुसीबत पैदा करना। प्र0 तुम तो बिना मतलब आफत खड़ी कर रहे हो। इस समय चुप नहीं रह सकते?

आफत घोलना—दे0 आफत खड़ी करना।

आफत जोतना—आफत करना, जिद करना। प्र0 लाता हूं, लाता हूं, माई। तुम तो आफत जोतती हो, हां-नहीं तो (अमृत0–नागर, 559)।

आफत झेलना—दुःख सहना। प्र0 उसने जो-जो आफतें झेली हैं उन्हें वही जानती है।

आफत टूटना, -पड़ना—मुसीबत आना। प्र0 बाबूजी के गुजर जाने से मुझ पर ऐसी आफत टूट पड़ी कि क्या कहूं?

आफत डालना—दे0 आफत खड़ी करना।

आफत ढाना, -तोड़ना, -मचाना—(1) गजब करना। प्र0 इस अष्ट-ग्रही ने सचमुच आफत ढा रखी थी (अमृत0 –नागर, 643)।
(2) उधम मचाना, तकलीफ देना। प्र0 विद्यार्थियों ने आजकल इतनी आफत मचा रखी है कि काम करना मुश्किल हो रहा है।

आफत ढोना—झंझट या तकलीफ सहना। प्र0 लाख कहता रहा पर अम्मा न मानी अब आफत मुझे ढोनी पड़ रही है (अमृत0–नागर, 201)।

आफत तोड़ना—दे0 आफत ढाना।

आफत पड़ना—दे0 आफत टूटना।

आफत फट पड़ना—दे0 आफत के बादल उमड़ना।

आफत मचाना—दे0 आफत ढाना।

आफत में पड़ना, -फंसना—झंझट-मुसीबत में फंसना। प्र0 कुछ पूछो मत। ऐसी आफत में पड़ गया हूं कि क्या कहूं।

आफत में फंसना—दे0 आफत में पड़ना।

आफत मोल लेना, -सिर पर लेना—जान-बूझकर झंझट में पड़ना। प्र0 उसने जान-बूझकर आफत मोल ली है, अब तो इसे झेलना ही होगा।

आफत लाना—दे0 आफत खड़ी करना।

आफत सिर पर लेना—दे0 आफत मोल लेना।

आब—(1) इज्जत। प्र0 इंसान की आब तभी तक है, जब तक कि आबरू है (मा –कौशिक, 333)।

(2) रौनक। प्र0 उनके चेहरे पर बड़ा आब है।

आब आना—रौनक हो जाना, चमक आना। प्र0 देखो तो सही, तेल-पानी कर देने से आलमारी पर कैसा आब आ गया।

आब उतर जाना—बेइज्जत हो जाना। प्र0 अब ठीक हुआ। आब उतर गयी, अब मुंह पिटाकर बैठो।

आब का—पानीदार व्यक्ति, मान-अपमान और अपनी बात को महत्व देनेवाला खरा व्यक्ति। प्र0 वे तो बड़े आब के व्यक्ति हैं, अपनी कही बात से कभी नहीं पलटते।

आब के हाथ होना, -बदा होना, आबदाना होना—जीविका के वश में होना, रहने का संयोग होना। प्र0 सब कुछ आब के हाथ है। संयोग हुआ तो जरूर दुबारा आना होगा। जब तक यहां का आबदाना है, रहूंगा, फिर जहां ठिकाना लगेगा, चला जाऊंगा।

आब खोना—ऐसा काम करना जिससे पूर्व-प्रतिष्ठा का क्षय हो। प्र0 आधा नर आसामुपी यौं हीं खोवैं आब (कबीर ग्रंथा0–कबीर, 44)।

आब चढ़ाना, -देना—पालिश से चमक पैदा करना, कलई करना। प्र0 कुर्सी-टेबुलों पर आब चढ़ा दो, तो कमरे की रौनक बढ़ जाये।

आब जाना, -बिगड़ना—(1) प्रतिष्ठा नष्ट हो जाना। प्र0 जब गया आब गालियां बक-बक तब रहे क्या गुलाब से धुलते (चोखे0–हरि-औध, 89)।

(2) चमक नष्ट हो जाना। प्र0 मोती का आब चला गया है, अब पालिश करने से कोई लाभ नहीं।

आब देना—दे0 आब चढ़ाना।

आब बदा होना—दे0 आब के हाथ होना।

आब बिगड़ना—दे0 आब जाना।

आब रखना—(1) रौनक बनाए रखना। प्र0 मकान की आब बनाए रखना।

(2) इज्जत रखना। प्र0 तुम अपना आब नहीं रखना चाहते हो

तो मैं क्या करूं ?

आब रूठना—रहने का संयोग टल जाना, जीविका न रहना। प्र0 जब आब ही रूठ गया तब क्या उपाय है। कैसे यहां रहूं।

आब-आब करना—घर में ऐसी भाषा का प्रयोग करना जिसे घर के लोग न जानते हों, कम-अक्ल। प्र0 क्या फालतू आब-आब कर रहे हो ? सीधे से बात क्यों नहीं करते ?

आब-आब होना—(1) लज्जित हो जाना। प्र0 शंकरदयाल की लताड़ सुनकर वह आब-आब हो गया।

(2) पसीने-पसीने होना। प्र0 तीन मील तक दौड़ते-दौड़ते वह आब-आब हो गया।

(3) द्रवित होना। प्र0 मेरी दुःख-गाथा सुनकर वे आब-आब हो गये।

आब-ओ-नमक—स्वाद। प्र0 सालन का आब-ओ-नमक जरा देख लेना।

आब-ओ-रंग—रूपरंग, जलवा। प्र0 दुनिया का आब-ओ-रंग देखने काबिल है।

आब-ओ-हवा रास आना—जलवायु अनुकूल होना। प्र0 राजगीर की आब-ओ-हवा रास आई तो पंद्रह दिन रह जाऊंगा।

आबखोरा भरना—पीर को शर्बत चढ़ाना। प्र0 आबखोरा भरना मत भूल जाना नहीं तो अजाब तुम पर ही पड़ेगा।

आब-ताब—चमक, तड़क-भड़क। प्र0 उनके चेहरे की आब-ताब देख कर तबियत बाग-बाग हो जाती है।

आबदाना उठना—दे0 आब रूठना।

आबदाना लगना—नौकरी मिलना। प्र0 गोविन्द का आबदाना लग गया, मेरे सिर से एक बड़ा बोझ उतर गया।

आबदाना होना—दे0 आब के हाथ होना।

आबदार—इज्जतदार, रुआबदार। प्र0 जैसे आबदार मोती की कीमत है वैसे ही आबदार आदमी की भी।

आबदीदा होना—आंखें डबडबाना। प्र0 मुझे बिलखते देख वह भी आबदीदा हो गयी।

आबनूस का कुंदा—अत्यंत काला और मोटा आदमी।

आबपाशी करना—बढ़ावा देना। प्र0 मेरे आबपाशी करने से भी कुछ न होगा, मैं जानता हूँ।

आबरू—प्रतिष्ठा का आधार। प्र0 दादा जी ही हमारे परिवार की आबरू हैं।

आबरू उतारना, -बिगाड़ना—बेइज्जत करना। प्र0 उन्होंने भरी सभा में मेरी आबरू उतार ली।

आबरू के दर पर होना, -पीछे पड़ना, -को बट्टा लगना, -लागू होना—इज्जत नष्ट करने पर उतारू होना। प्र0 रमेश ने उनकी ×× आबरू को बट्टा लगाया, उनकी पत्नी को भड़काया ×× (अमृत0—नागर, 702)।

आबरू के पीछे पड़ना—दे0 आबरू के दर पर होना।

आबरू को (में) बट्टा लगाना—दे0 आबरू के दर पर होना।

आबरू को लागू होना—दे0 आबरू के दर पर होना।

आबरू खाक में खोना, -मिलना या मिलाना, -खोना, -गंवाना, -जाना, -देना, -पर पानी फिरना, -मिट जाना—इज्ज़त बिगड़ना या बिगाड़ना। प्र0 मेरी तो आबरू पर पानी फिरा जा रहा है, और तुम मज़ाक समझती हो (मा—कौशिक, 248)।

आबरू खाक में मिलना या मिलाना—दे0 आबरू खाक में खोना।

आबरू खोना—दे0 आबरू खाक में खोना।

आबरू गंवाना—दे0 आबरू खाक में खोना।

आबरू जाना—दे0 आबरू खाक में खोना।

आबरू देना—दे0 आबरू खाक में खोना।

आबरू पर आ बनना—आबरू खतरे में होना। प्र0 जब किसी की आबरू पर आ बनी किस लिये आंसू भला तब तुम बहे (बोल0—हरिऔध, 63)।

आबरू पर पानी फिरना—दे0 आबरू खाक में खोना।

आबरू पैदा करना—इज्ज़त पाना। प्र0 अपने सुकर्मों से उन्होंने खूब आबरू पैदा की है।

आबरू बना रखना—इज्जत बनी रहे ऐसा काम करना। प्र0 इस गिरी हालत में भी वे अपनी आबरू बनाये रखने में सफल हुए हैं।

आबरू बिगड़ना—दे0 आबरू उतारना।

आबरू मिट जाना—दे0 आबरू खाक में खोना।

आबरू में फरक आना, -बट्टा लगना—पूर्व-प्रतिष्ठा में दाग लगना। प्र0 मैं नहीं चाहता कि मेरी वजह से आपकी आबरू में बट्टा लगे (मान0 (2) —प्रेमचंद, 213)।

आबरू में बट्टा लगना—दे0 आबरू में फरक आना।

आबरू रखना—इज्ज़त बनाए रखना। प्र0 अगर यह सच है तो तुमने मेरी आबरू रख ली (रंग0 —प्रेमचंद, 339)।

आबरू रहना—इज्ज़त बनी रहना। प्र0 अब तो यही कामना है कि किसी तरह मेरी आबरू रह ज़ाय।

आबरू लुटना—बेइज्जत होना। प्र0 चले किसलिए कभी तब वह, आबरू गई अगर लूटी (मर्म0—हरिऔध,. 77)।

आबरू लेकर बैठना—प्रतिष्ठा की खातिर कुछ करना। प्र0 तुम अपनी आबरू को लेकर बैठे रहो, मैं तो बीमार बेटे को छोड़कर यहां और नहीं रह सकती।

आबहवा बिगड़ना—(1) चारों ओर का वातावरण खराब होना। प्र0 आजकल आबहवा ही बिगड़ी है, कोई किसी की नहीं सुनता।

(2) जलवायु दूषित होना। प्र0 सुबलगढ़ की आबहवा जुलाई में बिगड़ जाती है।

आबाद करना—भरा-पूरा बनाना। प्र0 नाती-पोतों ने घर को आबाद कर रखा है।

आबाद रहना या होना, आबादी होना—भरा-पूरा रहना; फलना-फूलना। प्र0 काली मैया से प्रार्थना है कि तुम्हारा परिवार सदा आबाद रहे।

आबादानी—नाच-रंग, मौज-मस्ती। प्र0 करते क्या हैं, आबादानी में दिन गुजार रहे हैं।

आबादी होना—दे0 आबाद रहना।

आबी करना—एक विशेष प्रक्रिया द्वारा कपड़े पर चमक लाना।

आभा फूटना—स्पष्ट आभास होना। प्र0 उससे सौन्दर्य की आभा फूट रही थी।

आम और मछली की भेंट होना—असंभव बात होना। प्र0 अख्वाह, आप किधर से टपक पड़े? आज तो आम और मछली की भेंट हो गयी।

आम का आम और गुठली का दाम मिलना—मूल वस्तु के लाभ के साथ ही और लाभ होना।

आम खाने से काम होना गुठली गिनने से नहीं,-पेड़ गिनने से नहीं, -मतलब कि पेड़ गिनने से—सार से मतलब होना। प्र0 इस पितृभक्त और पितृतुल्य कवि का नाम क्या था इस पर पुराने विद्वानों ने लक्ष्य नहीं दिया। उन्हें आम खाने से काम था, गुठलियां गिनने से नहीं (गुलेरी ग्रंथ0 (1)–गुलेरी, 219)।

आम खाने से काम होना पेड़ गिनने से नहीं—दे0 आम खाने से काम होना गुठली गिनने से नहीं।

आम खाने से मतलब कि पेड़ गिनने से—दे0 आम खाने से काम होना, गुठली गिनने से नहीं।

आम जबान पर फैला होना—हर किसी द्वारा कहा जाना। प्र0×× उसकी मेमियत और उसकी मोटी अम्मा की अकड़-फूं भरी साहबियत के बड़े-बड़े और बड़े रोचक रंगीन किस्से आम जबानों पर फैले हुए थे (अमृत0 –नागर, 58)।

आम-इमली का साथ—दो बेमेल व्यक्तियों का साथ। प्र0 मैं कहे दे रही हूं, यह आम-इमली का साथ दो-चार दिन भी नहीं चलेगा।

आमदनी टूटना—आमदनी कम होना। प्र0 आमदनी एकदम टूटने लगी (कल्याणी–जैनेन्द्र, 33)।

आमने-सामने—उपस्थिति में, सम्मुख, खुलकर। प्र0 तुम लोग एक बार बैठकर आमने-सामने बात-चीत क्यों नहीं कर लेते?

आमाल खराब करना—रजिस्टर में किसी के दोषों का दर्ज करना। प्र0 सेन साहब जैसा कमीना आदमी नहीं देखा। हर किसी का आमाल खराब करता ही है–चाहे ज्यादा चाहे कम।

आमीं-आमीं करने वाला—हां में हां मिलाने वाला। प्र0 गुप्ता से कुछ न होगा। वह तो खाली आमीं-आमीं करने वाला है।

आय की बाय खड़ी होना,-लगना—जबरदस्ती झंझट आगे उपस्थित होना। प्र0 शांता प्रसाद तो आजकल बड़े परेशान हैं, न जाने कहां की आय की बाय आ खड़ी हुई है।

आय की बाय लगना—दे0 आय की बाय खड़ी होना।

आय-बाय भूल जाना—शैतानी भूल जाना। प्र0 कसकर हंटर पड़ेंगे न तो सब आय-बाय भूल जायेगी।

आया लड़का मितरा जाना—होता काम रुक जाना। प्र0 सब बातचीत पक्की हो गयी थी कि बैनर्जी ने बीच में अड़ंगा लगा दिया। बस, आया लड़का मितरा गया।

आया-गया—(1) अतिथि-अभ्यागत। प्र0 बच्चों से कोई चीज बचे तब न आये-गये के लिए रखी जाय।

(2) परिचित। प्र0 मंगला बाबू आये-गये हैं, वे काम जरूर करवा देंगे।

आया-गया होना—समाप्त होना। प्र0 उस दिन के लड्डू तो कब के आये-गये हो गये।

आयीं-घायीं करना, -बताना—बहाना बनाना। प्र0 उसने ऐसे ही आयीं-घायीं करके छोड़ दिया।

आयीं-घायीं बताना—दे0 आयीं-घायीं करना।

"आयी" के लिए देखिए "आई"।

आयु का पट्टा लिखाकर लाना—सदा जीवित रहने की इच्छा रखना। प्र0 दादाजी तो लगता है आयु का पट्टा लिखाकर आये हैं।

आयु खुटाना, -तुलाना, -सिराना—आयु कम होना, मौत निकट होना। प्र0 अब जानि होइ अधीर, कंस की आयु तुलानी (सू0 सा0–सूर, 3708); जेहि सुभाय चितवहिं हितु जानी। सो जानइ जनु आइ खुटानी (राम0 (बाल) –तुलसी, 275)।

आयु तुलाना—दे0 आयु खुटाना।

आयु सिराना—दे0 आयु खुटाना।

आये दिन—प्रायः। प्र0 आये दिन स्त्री-पुरुष में जूते चलते रहते हैं (मान0 (2) –प्रेमचंद, 113)।

आये पर न चूकना—ठीक अवसर पर न चूकना। प्र0 वे बड़े होशियार हैं, आये पर चूकते नहीं।

आये-गये का सौदा होना—मरने के करीब होना। प्र0 यही समझो कि आये-गये का सौदा है, और क्या?

आरंभशूर—बड़ी बहादुरी से किसी काम को शुरू करके जल्दी ही पस्त हो जानेवाला।

आर घुसेड़ना—पैनी चीज से मारना, कांटा चुभाना। प्र0 चलते बैल को आर क्यों घुसेड़ते हो?

आरजू बर आना, -मिटना—इच्छा पूरी होना। प्र0 आज मेरी आरजू बर आई।

आरजू मिटना—दे0 आरजू बर आना।

आरती उतरना या उतारना, -करना—आदर-सत्कार होना या करना। प्र0 एक की तो है उतरती आरती, दूसरे का है उतर जाता गला (चोखे0–हरिऔध, 199)।

आरती करना—दे0 आरती उतरना या उतारना।

आरती लेना—आरती उतारकर उस पर हाथ फेरकर सिर से लगाना। प्र0 उनके सामने होरी कैसे खाली हाथ आरती ले लेगा (गोदान–प्रेमचंद, 187)।

आर-पार होना—वारा-न्यारा होना। प्र0 उम्मीद तो है कि अब जल्दी ही मामले का आर-पार होगा।

आरा चलना या चलाना, -सिर पर चलना या चलाना—कष्ट मिलना या देना। प्र० प्रमीला की सास तो हर समय आरा चलाती रहती है। कैसे गुजारा हो?

आरा सिर पर चलना या चलाना—दे० आरा चलना या चलाना।

आराम करना—(1) सोना। प्र० ताऊजी जरा आराम कर रहे हैं। कहिए तो जगा दूं।
(2) बिना काम के बैठना। प्र० जी नहीं, आजकल वह आराम कर रहा है। क्या करे, कहीं काम मिल ही नहीं रहा है।

आराम की नींद सोना, -से पांव फैलाना,-बैठना—एकदम निश्चिन्त होना। प्र० उधर का सब मैं संभाल लूंगा। आप आराम की नींद सोइए; आप आराम से बैठिए, मरने-खपने को तो मैं हूं ही।

आराम में आना—सुख में दिन बिताना। प्र० आराम में आना उनकी किस्मत में ही नहीं है।

आराम में होना—(1) सोना। प्र० शहंशाह इस वक्त आराम में हैं, उन्हें जगाना मुनासिब नहीं।
(2) सुख में दिन बिताना। प्र० आजकल वह काफी आराम में है।

आराम लेना—विश्राम करना। प्र० हुजूर अभी आराम ले रहे हैं, शाहज़ादे।

आराम से—फुर्सत में, धीरे-धीरे। प्र० इस ग्रंथ को आराम से पढ़िएगा, कोई जल्दी नहीं है।

आराम से गुज़रना, -जाना, -दिन जाना—चैन से दिन बीतना। प्र० इधर काफी दिनों से आराम से गुज़र रही है।

आराम से जाना—दे० आराम से गुज़रना।

आराम से दिन जाना—दे० आराम से गुज़रना।

आराम से पांव फैलाना—दे० आराम की नींद सोना।

आराम से बैठना—दे० आराम की नींद सोना।

आराम होना—फायदा होना। प्र० हकीम जी की दवा से उन्हें काफी आराम है।

आरी आना—घबड़ा जाना। प्र० उसकी हरकतों से मैं आरी आ गया हूँ।

आरू आना—समवेदना प्रकट करने वालों को देखकर आंसू आ जाना। प्र० मुझे देखते ही उसे आरू आ गया।

आर्थिक ढांचा—आर्थिक स्थिति। प्र० सारे समाज का आर्थिक ढांचा एक बड़े परिवर्त्तन की अपेक्षा करता है।

आर्द्र कंठ—भावातिरेक पूर्ण स्वर, दुःखपूर्ण स्वर। प्र० होरी आर्द्र कंठ से बोला×× (गोदान—प्रेमचंद, 23)।

आर्द्र-नेत्र—शोकातुर। प्र० आज आप क्यों आर्द्र-नेत्र हैं तात, मुझे बतलाएं।

आर्य-पथ—मर्यादापूर्ण आचार। प्र० इते मान व्याकुल भइ सजनी, आरज पंथहुं तैं बिडरी (सू० सा०—सूर, 3622)।

आल-औलाद बैल, आस औलाद—बाल-बच्चे। प्र० आदमी और कुछ नहीं तो आल-औलाद की तो चिन्ता करता है।

आल-जंजाल—झंझट-झमेला। प्र० बड़ा आल-जंजाल फैला है, किसी तरह शेष नहीं होता।

आलथी-पालथी मारना—पालथी लगाकर बैठना। प्र० तुम पहले आलथी-पालथी मारो, फिर भोजन शुरू करो।

आल-बैल—दे० आल-औलाद।

आलम फटा पड़ना, -भर उठना—बहुत भीड़ हो जाना। प्र० आलम फटा पड़ता है (मान० (1) —प्रेमचंद, 156)।

आलम भर उठना—दे० आलम फटा पड़ना।

आल-हम्द पढ़कर फूंकना—कुरान की आयत पढ़कर झाड़ना।

आल-हाल—फिलहाल, अभी। प्र० तुम्हें आल-हाल कोई जरूरत हो तो मुझे खबर करना।

आलारेसी—बेपरवाही। प्र० तुम्हारे स्वभाव में बड़ी आलारेसी है।

आलारेसी कारखाना—अंधेरखाता। प्र० उनके यहां आलारेसी कारखाना है, वहां से कुछ भी ठीक-ठीक न पता चलेगा।

आलिंगन करना—स्वीकार करना। प्र० कप्तान स्काट समझ गए कि ओट्स मृत्यु का आलिंगन करने जा रहा है।

आले लेना—घर का कोना-कोना खोजना। प्र० मैंने तो आले ले लिये पर कहीं बटुआ नहीं दिखा।

आले-बाले—इधर-उधर में। प्र० दिन खोया आले-बाले कातन बैठी दिया उजाले।

आले-बाले बनाना—हीला-हवाली करना। प्र० देखो, तुम मुझे आले-बाले मत बताओ, समझे।

आल्हा का पंवारा—व्यर्थ का लंबा-चौड़ा वर्णन। प्र० अब बस भी करो। तुम्हारा यात्रा-वर्णन तो आल्हा का पंवारा हो गया।

आल्हा गाना—अपना दुःख-सुख सुनाना। प्र० वह घंटों तक लखनपुर वालों को उद्दण्डता और दुर्जनता का आल्हा गाते रहे (प्रेम०—प्रेमचंद, 394)।

आव देखना न ताव—बिना भला-बुरा सोचे-विचारे। प्र० बांके ने आव देखा न ताव, दन से तमंचा दाग दिया (आजाद०—प्रेमचंद, 6)।

आवभगत में स्वाहा करना या होना—शुष्क व्यवहार करना या होना। प्र० पता था कि उनके यहां से कुछ मिले-जुलेगा नहीं पर उन्होंने तो आवभगत में भी स्वाहा कर दिया।

आवरण में ढंका रहना—किसी बात का गुप्त रहना। प्र० यह सचाई आवरण में ढंकी रहे, इसी में हम सबका कल्याण है।

आवां का आवां बिगड़ना, -बिगड़ना—सबकी अक्ल मारी जाना। प्र० वहां तो आवां का आवां बिगड़ गया था, कौन टेलीफोन करता।

आवां बिगड़ना—दे० आवां का आवां बिगड़ना।

आवां में पकी मटकी—पक्की, घुटी हुई। प्र० वो लड़की आंवें में पकी मटकी है। उसने घुटन में गति करके सच्चा ज्ञान पाया है (अमृत० —नागर, 553)।

आवां लगना या लगाना—पकाने के लिए मिट्टी के कच्चे बरतनों को सजाना। प्र० झटपट कसोरे दो। आवां लग रहा है, ये बरतन भी रख जायेंगे।

आवाँ-सा बैठना—सर्वनाश होना । प्र० मेरा तो आवाँ-सा बैठ गया, मेरी हालत मत पूछो ।

आवागमन छूटना, -से छुटकारा पाना, -से रहित होना—मोक्ष प्राप्त होना । प्र० भाव-भगति के बिना रे साधो, आवागमन न छूटै ।

आवागमन से छुटकारा पाना—दे० आवागमन छूटना ।

आवागमन से रहित होना—दे० आवागमन छूटना ।

आवाज़ उठना या उठाना, -बढ़ना या बढ़ाना—(1) चर्चा करना । प्र० ब्रह्मपुत्र का इतिहास तो लोगों को मालूम नहीं था × × अतुल ने ही इसके लिए सबसे पहले आवाज़ उठाई थी (ब्रह्म० दे० स०, 380)।
(2) किसी बात के विरोध में बोलना । प्र० इस ज्वलंत अन्याय के विरुद्ध ऐसी जबरदस्त आवाज़ चारों ओर से उठी कि सरकार के लिए इन कैदियों को ज्यादा दिन जेल में रखना नामुमकिन हो गया (सत्य के प्रयोग–मो० क० गाँधी, 578)।
(3) माँग उपस्थित करना । प्र० जहाँ-तहाँ यह आवाज़ें उठने लगीं कि दुश्मन लवसूल को दीवार में चिनवा दिया जाए (सात०—नागर, 153)।
(4) (गाने में) स्वर ऊँचा करना । प्र० जरा आवाज़ उठाओ, यहाँ तक सुनाई ही नहीं पड़ता ।

आवाज़ ऊँची करना, -ऊँचे चढ़ाना—ज़ोर से बोलना । प्र० "मैं उनसे मिलकर रहूँगा, तुम मुझे रोक नहीं सकते" आवाज़ को कुछ ऊँचा चढ़ाते हुए मैंने कहा (जहाज०–इ० जोशी, 61)।

आवाज़ ऊँचे चढ़ाना—दे० आवाज़ ऊँची करना ।

आवाज़ करना, -देना, -फेंकना, -मारना, -लगाना—पुकारना । प्र० मुझे यह अच्छा नहीं लगता कि ज़रा-सी बातों के लिए नौकरों को आवाज़ देता फिरूँ (मान० (2)–प्रेमचंद, 211)।

आवाज़ कसना—व्यंग्य मारना । प्र० कुछ लोगों ने उसे देखकर आवाज़ें भी कसीं (भूले०–भग० वर्मा, 502)।

आवाज़ कान में पड़ना—सुनाई देना । प्र० इधर से जाते समय भी यह आवाज़ कान में पड़ी थी ।

आवाज़ खुलना—बैठी आवाज का स्पष्ट होना । प्र० आज सात दिनों बाद आवाज़ खुली है ।

आवाज़ गिरना—स्वर मंद पड़ना । प्र० "समझकर कहो, चाहिए या नहीं ?" "चाहिए"–आवाज़ गिर गई (चोटी०–निराला, 54)।

आवाज़ चढ़ना—आवाज़ तेज होना । प्र० अनजाने ही शरद की आवाज़ चढ़ गयी (उखड़े०–यादव, 376)।

आवाज़ चुराना—गला दबाकर बोलना या गाना । प्र० आवाज़ मत चुराओ, खुलकर गाओ ।

आवाज़ दबना—(1) कमज़ोर स्थिति होना । प्र० उनका दिमाग दुरुस्त हो गया है । आजकल आवाज़ दब गयी है ।
(2) किसी माँग का दब जाना । प्र० मज़दूरों की आवाज़ इधर ज़रा दबी है ।

आवाज़ देना—दे० आवाज़ करना ।

आवाज़ निकालना—बोलना, चूँ करना । प्र० तुमने आवाज़ भी निकाली तो मैं जान से मार डालूँगा ।

आवाज़ पड़ना—(1) बुलाहट होना । प्र० मैं आकर बैठा ही था कि भीतर से आवाज़ पड़ गयी ।
(2) गला बैठ जाना । प्र० आजकल आवाज़ एकदम पड़ गयी है, गाया ही नहीं जाता ।

आवाज़ पर कान देना, -धरना, -रखना, -लगाना—ध्यान से सुनने का प्रयत्न करना । प्र० आवाज़ पर कान दो । देखो, कहाँ से आ रही है ।

आवाज़ पर कान करना—दे० आवाज़ पर कान देना ।

आवाज़ पर कान रखना—दे० आवाज़ पर कान देना ।

आवाज़ पर कान लगाना—दे० आवाज़ पर कान देना ।

आवाज़ पर लगना—ध्वनि का संकेत समझकर काम करना । प्र० बहुत-से जानवर आवाज़ पर लगते हैं ।

आवाज़ फटना, -मारी जाना—स्वर खराब हो जाना । प्र० बुढ़ापे में गायकों की आवाज़ प्रायः फट जाती है ।

आवाज़ फेंकना—दे० आवाज़ करना ।

आवाज़ बढ़ना या बढ़ाना—दे० आवाज़ उठना या उठाना ।

आवाज़ बुलंद करना—विरोध करना । प्र० विद्यार्थियों ने आजकल खूब आवाज़ बुलंद कर रखी है ।

आवाज़ बैठना—दे० आवाज़ पड़ना (1)।

आवाज़ भर्राना, -भारी होना—भावातिरेक या कफ के कारण स्वर साफ न निकलना । प्र० हाथ काँपता, हृदय धड़कता है मेरी भारी आवाज़ (मुकुल–सु० कु० चौ०, 71); बीते दिनों की बातें करते-करते पिता की आवाज़ भर्रा गयी ।

आवाज़ भारी होना—दे० आवाज़ भर्राना ।

आवाज़ मारना—दे० आवाज़ करना ।

आवाज़ मारी जाना—दे० आवाज़ फटना ।

आवाज़ मीठी होना—सुरीला गला होना । प्र० यामिनी की आवाज़ बड़ी मीठी है ।

आवाज़ में आवाज़ मिलाना—हाँ में हाँ मिलाना । प्र० आप आवाज़ में आवाज़ मिलाते जाइए—आपकी पौ-बारह है ।

आवाज़ में चिकनई होना—स्नेहभरी आवाज़ । प्र० मुझे आश्चर्य हुआ कि आवाज में अब भी चिकनाई और प्यार है (सारा०–यादव, 228)।

आवाज़ में टीस होना—करुण स्वर होना । प्र० विद्याधरी की आवाज़ में बड़ी टीस थी ।

आवाज़ लगाना—दे० आवाज़ करना ।

आवाज़ लड़ना—एक के सुर से दूसरे के सुर का मेल न खाना । प्र० दोनों साज़ों की आवाज़ लड़ रही है, ठीक से मिलाकर बजाओ ।

आवाज़ लौटना—प्रतिध्वनि होना । प्र० उस विशाल गुम्बद के नीचे हम खड़े बातें कर रहे थे । हमारी आवाज़ें लौटी आ रही थीं—अजीब समा था ।

आवाज सातवें आसमान जा पहुँचना—बहुत तेज आवाज़ होना, दूर-दूर तक सुनाई पड़ना। प्र० वाह-वाह की आवाज़ सातवें आसमान जा पहुँची (आजाद०–प्रेमचंद, 31)।

आवाज सुनाना—अपनी बात कहना। प्र० अभी मैं आपको अपनी आवाज़ सुनाता हूँ।

आवाज होना—बात का कोई मूल्य होना। प्र० अगर मेरी उस घर में कोई आवाज़ नहीं है तो ठीक है (अंधेरे०–राकेश, 97)।

आवाजकशी करना—बोली बोलना, किसी काम या व्यक्ति पर रिमार्क देना। प्र० इस तरह उसका आवाज़कशी करना सर्वथा अनुचित एवं आपत्तिजनक है।

आशनाई जोड़ना, -लगना या लगाना—प्रेम करना या होना। प्र० तुम दुनिया भर से आशनाई जोड़ते फिरो, तुम्हें क्या।

आशनाई लगना या लगाना—दे० आशनाई जोड़ना।

(किसी की) आशा करना—मुँह ताकना, किसी की सहायता चाहना। प्र० जब तक मुझमें दम है तब तक मैं किसी की आशा क्यों करूँ?

आशा का दीपक जलाना—आशा को मन में स्थान देना। प्र० तुम कब तक इस तरह आशा का दीप जलाये बैठी रहोगी?

आशा की डोर टूटना, -छूटना, -टूटना—आशा का शेष हो जाना। प्र० जो वे आते न ब्रज बरसों, टूट जाती न आशा (प्रिय०–हरिऔध, 201); मेरी आशा की डोर टूट गयी है, मैंने अपने मन को बटोर लिया है।

आशा की रेख न होना—तनिक भी आशा न होना। प्र० बिछुरे रात फिरि सहजि समांनां, रेख रही नहीं आसा (कबीर ग्रंथा०–कबीर, 102)।

आशा छूटना—दे० आशा का डोर टूटना।

आशा टूटना—दे० आशा की डोर टूटना।

आशा तकना या ताकना—किसी के भरोसे बैठे रहना, प्रतीक्षा करना। प्र० वाह! मैं तो आशा ताकता यहाँ बैठा रहा और तुम वहाँ पहुँच गये।

आशा तोड़ना—(1) निराश करना। प्र० आस जनि तोरहु स्याम हमारी (सू० सा०–सूर, 1647); जियत धारि जिय धीर, सो आसा जिन तोरिए (राधा० ग्रंथा०–राधा० दास, 772)।
(2) आशा न लगाना। प्र० मैंने तो आशा एकदम तोड़ दी थी, तुमने आकर फिर से मुझे विचलित कर दिया।

आशा देना, -बंधाना—ढाँढ़स, साहस देना। प्र० इस प्रकार चारों ओर से हिन्दी की उन्नति के लिये जो प्रयत्न हो रहा है वह बहुत कुछ आशा बँधानेवाला है (पद्म पराग–पद्म० शर्मा, 315)।

आशा पर कुठाराघात होना, -तुषारापात होना, -पानी पड़ जाना, -फिरना—आशा का निष्फल होना। प्र० बीजगुप्त की आशा पर तुषारापात हुआ, उसका प्रफुल्ल मुख मुरझा गया (चित्र०–भग० वर्मा, 11); आशा थी, तुम लोग बुढ़ापे में मेरा पालन करोगे। तुमने उस आशा पर पानी फेर दिया (मान० (1)–प्रेमचंद, 260)।

आशा पर तुषारापात होना—दे० आशा पर कुठाराघात होना।

आशा पर पानी पड़ जाना—दे० आशा पर कुठाराघात होना।

आशा पर पानी फिरना—दे० आशा पर कुठाराघात होना।

आशा पर पानी फेरना—आशा नष्ट कर देना। प्र० उसने मेरी सारी आशाओं पर पानी फेर दिया है।

आशा पुगना, -पूजना, -पूरना—आशा पूरी होना। प्र० अविनासी मोहि ले चल्या, पुरई मेरी आस (कबीर ग्रंथा०–कबीर, 78); जौं अस साधि आव तय जोगू। पूजै आस मान रस भोगू (पद०–जायसी, 15/10); एकहि बार आस सब पूजी (राम० (अ)–तुलसी, 386); राधे मेरी आस पुजाओ (भा० ग्रं० (2)–भारतेन्दु, 327)।

आशा पूजना—दे० आशा पुगना।

आशा पूरना—दे० आशा पुगना।

आशा बँधना या बाँधना—आशा होना या करना। प्र० एक महात्मा मिले हैं, उनसे आशा बँध रही है (चोटी०–निराला, 151)।

आशा बँधाना—दे० आशा देना।

आशा मर जाना—आशा का पूरी न होने के कारण धीरे-धीरे एकदम लुप्त हो जाना। प्र० बीजगुप्त की आशाएँ मर चुकी थीं।

आशा रखना—आशा करना। प्र० मैं तो इसीलिए किसी से कोई आशा ही नहीं रखती।

आशा लगना या लगाना, -संजोना—आशा होना या करना। प्र० हम लोगों को तो बड़ी आशा लगी थी कि इस बार आपके दर्शन होंगे।

आशा संजोना—दे० आशा लगाना।

आशा हरी होना, -लता लहलहा उठना—आशा का बलवती होना, पुनः आशा होना। प्र० तू अब फिर वही निर्भय, युद्धवीर, साहसी जसवन्तसिंह है, ×× जिसके मुँह की ओर देखकर मेरी मुरझाई हुई आशाएँ हरी हो जाती हैं (सु० सु०–सुदर्शन, 316)।

आशा होना—सहारा होना। प्र० मुझे तो आपकी ही आशा है। मैं और कहाँ जाऊँ और कौन मेरी बात सुनेगा!

आशाओं का बाग लगाना—बहुत आशा करना। प्र० आशाओं के बाग लगाने में हम कितने कुशल हैं। (मान० (3)–प्रेमचंद, 103)।

आशा-लता लहलहा उठना—दे० आशा हरी होना।

आशिकी रंग घोलना—आशिकाना अंदाज़ में कहना। प्र० लालता महराज ने रंग-आशिकी घोला, लोग बाग उनकी अदाओं पर हँस पड़े (अमृत०–नागर, 331)।

आश्चर्य में डाल देना—ऐसी बात करना जिससे आश्चर्य हो। प्र० तुमने तो मुझे आश्चर्य में डाल दिया।

आश्चर्य में डूब जाना—बहुत आश्चर्य होना। प्र० उसकी बातें सुनकर मैं आश्चर्य में डूब गया।

'आस' के लिए देखिए 'आशा' के मुहावरे।

आसन कसना—अंगों को तोड़-मरोड़कर बैठना।

आसन का पक्का—घोड़े आदि पर जमकर सवारी करनेवाला। प्र० लौंडा आसन का पक्का जान पड़ता है। (मान० (8)–प्रेमचंद, 191)।

आसन ग्रहण करना—बैठना। प्र० हेडमास्टर साहब के आसन ग्रहण करने के बाद हम सब बैठे।

आसन छोड़ना—आदर करने के लिये उठ जाना। प्र० मुनि विश्वामित्र को आया देख राजा हरिश्चन्द्र ने झट आसन छोड़ा।

आसन जमना या जमाना, -जोड़ना—(1) स्थिर एवं स्थायी भाव से बैठना। प्र० मालूम होता है पंडित पद्मसिंह शर्मा सम्मेलन के साथ खिचे फिरते हैं क्योंकि × × गतवर्ष देहरादूनी सम्मेलन के समय वह ज्वालापुर में जमकर बैठे थे और अबके आगरे में आसन जमा है। (पद्म० के पत्र–पद्म० शर्मा, 3); मगर जग्गी को रमा का आसन जमाना अच्छा नहीं लगता। (गवन–प्रेमचंद, 157)।

(2) स्थायी असर होना। प्र० कलकत्ता छोड़ने का विचार दिल में आसन जमा चुका है।

आसन जोड़ना—दे० आसन जमना या जमाना (1)।

आसन डगमगाना, -डिगना, -डोलना, -हिलना—(1) जाना, जाने को उद्यत होना, बैठने में स्थिर भाव न रहना। प्र० जिस समय कोई कलावन्त पक्का गाना गाने के लिए आठ अंगुल मुँह फैलाता है और 'आ-आ' करके विकल होता है उस समय बड़े-बड़े धीरों का धैर्य छूट जाता है—दिन-दिन भर चुपचाप बैठे रहने वाले बड़े-बड़े आलसियों का आसन डिग जाता है। (चिन्ता० (1)–शुक्ल, 25)।

(2) लालच होना। प्र० ऐसी स्थिति में संयमी युवक का आसन भी डोल जाता, रमा तो विलासी था (गवन–प्रेमचंद, 288)।

(3) आतंकित होना। प्र० बेदखली शुरू हुई तो बहुतों के आसन डोल जायेंगे (कर्म०–प्रेमचंद, 320)।

(4) स्थिति डावांडोल होना। प्र० कबीर सूता क्या करै, सूता होई अकाज ब्रह्मा का आसन खिस्या, सुणत काल की गाज (कबीर ग्रंथा०–कबीर, 6)।

(5) स्थिति पर विचार करने की प्रेरणा होना। प्र० ढाई घंटे तक समझाने और तर्क करने के पश्चात् शंकरन् का आसन हिला।

आसन डिगना—दे० आसन डगमगाना।

आसन डिगाना—(1) जगह से विचलित करना। प्र० साधु-महात्माओं का आसन डिगाना कोई आसान काम नहीं।

(2) लोभ या इच्छा उत्पन्न करना। प्र० देखिए प्रयोग (1)।

आसन डोलना—दे० आसन डगमगाना।

आसन तले आना—वश में होना। प्र० इतने वर्षों बाद वह आसन तले आया है।

आसन देना—सम्मान से बैठाना। प्र० सनमुख संकर आसनु दीन्हा। (राम० (बाल)–तुलसी, 73); आवत देखि लिये उठि आगे ह्वै, आपुहों 'केसव' आसन दीनों (केशव०–केशव, 17)।

आसन पहचानना—(1) किसी के रुख को ताड़ लेना। प्र० जगधर ने आसन पहचाना, इसी ढंग की दो-चार बातें और कीं। आखिर ठाकुरदीन गवाही देने से इंकार करने लगा (रंग० (2)–प्रेमचंद, 121-122)।

(2) बैठने के ढंग से घुड़सवार को पहचान लेना।

आसन पाकर चाबुक जमाना—किसी काम को करने या बात के होने का थोड़ा आसार देखने पर उसे और आगे बढ़ाना। चाबुक मारकर जिस तरह घोड़े को तेज दौड़ाते हैं वैसे ही किसी को अनुकूल देखकर उसे और उत्तेजित करना। प्र० चौधरी ने होरी का आसन पाकर चाबुक जमाया (गोदान–प्रेमचंद, 29)।

आसन पाना—दे० आसन पहचानना (1)।

आसन बाँधना—कुश्ती का एक दाँव जिसमें प्रतिपक्षी को जाँघों से जकड़ लेते हैं।

आसन माँड़ना, -मारना—आसन लगाकर बैठना। प्र० त्रिकुट कोट मैं आसन माडै, सहज समाधि विषै सब छांडै। (कबीर ग्रंथा०–कबीर, 158); मढ़ मंडप चहुँ पास सँवारे। जपा तपा सब आसन मारे। (पद०–जायसी, 2/6); आगे ये समाचार पाय अर्जुन संन्यासी का भेष बनाय × × एक भली-सी ठौर देख मृगछाला बिछाय आसन मार बैठा (प्रेम०–ल० ला०, 335)।

आसन मारना—दे० आसन माँड़ना।

आसन मिलना—(1) सहारा मिलना, कुछ कहने या करने का आधार होना। प्र० गतवर्ष भोला की स्त्री लू लगने से मर गयी थी। यह होरी जानता था, लेकिन पचास बरस का खंखड़ भोला भीतर से इतना स्निग्ध है, वह न जानता था। × × होरी को आसन मिल गया (गोदान–प्रेमचंद, 8)।

(2) पद मिलना, गिनती में होना। प्र० अब तो रमाशंकर को भी पार्टी में आसन मिल गया है। उसकी पाँचों घी में है।

आसन लगाना—(1) टिककर बैठना। महात्मा जी, आप वट-वृक्ष के नीचे आसन लगाओ।

(2) योग साधना के लिए शरीर को वश में करना। प्र० आसन लगाकर कुंडलिनी को जागृत करने की चेष्टा करो।

(3) भोजन के लिए बैठने के लिए आसन बिछाना। प्र० सब लोग तो आ गये हैं। आसन लगाओ जल्दी। क्यों देर कर रहे हो?

(4) किसी काम के लिए अड़कर बैठना। प्र० केशव तो चाचा के दरवाजे पर आसन लगाकर बैठ गया है। अब कुछ-न-कुछ हेस-नेस हो ही जायगा।

आसन से आसन जोड़ना—ध्यान लगाना। प्र० गंगा-तट पर यहाँ से वहाँ तक ध्यानी-भक्त लोग आसन से आसन जोड़े बैठे थे।

आसन हिलाना—दे० आसन डगमगाना।

आसन-पाटी—खाट-खटोला, ओढ़ने-बिछौने का सामान। प्र० अपना आसन-पाटी उठाकर तुम यहाँ से रफूचक्कर हो।

आसन-पाटी लेकर पड़ना—रूठकर चारपाई पर पड़ रहना। प्र० पिता की रूखी बातें सुन मगनवान आसन-पाटी लेकर पड़ रही।

आस-पास—निकट, थोड़ा इधर-उधर। प्र० आस-पास कहीं गया होगा। अभी आ जायगा।

आसमान का कुलावा मिलाना—दे० जमीन-आसमान के कुलावे मिलाना।

आसमान का रखा न जमीन का—किसी लायक न रखा। प्र० बेटा, तुम्हारे रवैये ने तो मुझे आसमान का रखा न जमीन का।

आसमान की ओर देखना, धरती की ओर नहीं—बहुत गर्व करना। प्र० लरकिनो सबनि घर, तोसी नहिं काउ निडर चलति नभ चितै नहिं तकति धरनी (सू० सा०—सूर, 1316)।

आसमान की बातें करना—दे० आकाश की बातें करना।

आसमान की सैर करना—बड़ी-बड़ी बातें सोचना, बहुत-सी कल्पना करना। प्र० बूढ़े दरोगा उस वक्त तक पिनक में आसमान की सैर कर रहे थे, लिहाजा हुक्म वहीं रुक गया (अमृत०—नागर, 497)।

आसमान के तारे तोड़ना—दे० आकाश का तारा तोड़ना।

आसमान खुलना—वर्षा के बाद बादलों का छंटना, वृष्टि बंद होना। प्र० बहुत दिनों बाद खुला आसमान (अना०—निराला, 138)।

आसमान गिराना—बहुत ज़ोर से चिल्लाना। प्र० क्यों आसमान गिराते हो? धीरे से बोलने में कोई हर्ज है?

आसमान चढ़ना या चढ़ाना,—पर चढ़ना या चढ़ाना—(1) ऊपर उठना या उठाना। प्र० कबीर मन पंषी भया बहुतक चढ्या अकास (कबीर ग्रंथा०—कबीर, 30)। गगन चढ़इ रज पवन प्रसंगा (राम० (बाल)—तुलसी, 12); क्यों भला आसमान पर न चढ़ें, जब पतंगें चढ़ीं चढ़ाने से (चुभते०—हरिऔध, 100)।

(2) बहुत बढ़ावा पाना या देना। प्र० उनकी खुशामदों ने उसकी अहम्मन्यता को आसमान पर चढ़ा दिया था (मान०(1)—प्रेमचंद, 185)।

(3) झूठी प्रशंसा करके गर्व पैदा करना। प्र० मदन मोहन को लोगों ने आसमान पर चढ़ा रखा था (परीक्षा०—श्री० दास, 124–125)।

(4) बहुत गर्व होना। प्र० नयी बहू तो हर समय आसमान पर चढ़ी रहती है।

(5) बड़ी-बड़ी कल्पनाएं करना। प्र० बहुत आसमान न चढ़ो, धरती पर रहकर सोचो।

आसमान छूना—बहुत कुछ पा लेना, कुछ असंभव कर पाना। प्र० और उस क्षण परमेश्वरी को लगा कि अब जीवन में उसे कुछ और नहीं चाहिए। उसने आसमान छू लिया है (जिन्दगी०—उषा०, 11)।

(2) प्रशंसा का अतिरेक करना। प्र० × × × पर सैनिकों के बारे में आसमान छूने वाले जिन ढंगों से रिपोर्ट उन्हें पहुँचाई गई इससे वे इस नतीजे पर पहुँचे कि सचमुच ही जो अब गदर न हुआ तो फिर शायद कयामत तक भी न हो सकेगा (एक म्यान०—नानक०, 82)।

(3) बहुत ऊँचा होना। प्र० मंदिर की ध्वजाएँ आसमान छू रही थीं।

आसमान झांकना—(1) गर्व करना। प्र० अब किसके बूते पर आसमान झांक रहे हो?

(2) मुर्गबाजों की बोली में लड़ने के लिए मुर्गे का तैयार होना।

आसमान टूट पड़ना, -फट पड़ना—(1) किसी विपत्ति का अचानक आ पड़ना। प्र० × × अल्लाह करे झूठे पर बिजली गिरे, आसमान फट पड़े (आजाद०—प्रेमचंद, 214–215)।

(2) बहुत वृष्टि होना। प्र० आषाढ़ के महीने में ही आसमान फटा पड़ता था।

आसमान तक के अरमान—बड़े-बड़े अरमान। प्र० अरमान आसमान तक के थे मगर जमीन का शिकंजा उन्हें निचोड़कर धूल में मिलाये देता था (बौने०—रां० रा०, 155)।

आसमान तका देना,-दिखा देना—कुश्ती में परास्त कर देना। प्र० गुरु, दो मिनट के अंदर ही आसमान दिखा दूँ इसे, उस्ताद बुद्धू सिंह पहलवान का शिष्य हूँ (भूले०—भग० वर्मा, 164)।

आसमान ताकना,-देखना—(1) कुश्ती में परास्त होना। प्र० उस्ताद ने वह पेंच लगाई कि जमाल आसमान ताकने लगा।

(2) बहुत घमंड होना। प्र० वह तो हर समय आसमान देखती रहती है।

आसमान थर्रा उठना—जुर्म-सितम होना। प्र० पूर्वी बंगाल में पाकिस्तान के नृशंस हत्याकांड से आसमान थर्रा उठा।

आसमान दिखा देना—दे० आसमान तका देना।

आसमान देखना—दे० आसमान ताकना।

आसमान नापना—असंभव काम करना। प्र० तुम तो सदा आसमान नापने ही चलते हो।

आसमान पर (में) उड़ना—(1) घमंड करना। प्र० कल तक पैदल चलता था × × अब आसमान पर उड़ने लगा (सारा०—यादव, 158)।

(2) कल्पना में डूबे रहना। प्र० अब यहाँ आकर मैं साफ़-साफ़ देख रहा हूँ कि आप लोग आसमान में उड़ रहे हैं और ज़मीन पर उतरना ही नहीं चाहते (कठ०—दे० स०, 85)।

(3) बहुत ऊँचे संकल्प करना। प्र० आसमान में उड़ने में कोई हानि नहीं है पर उतना ही उड़ो जितने की ताकत अपने पंखों में हो।

आसमान पर कदम रखना, -खिंचना, -पैर लगाना—बहुत अकड़ना। प्र० इस तरह आसमान पर कदम रखकर क्या पा लोगे?

आसमान पर खिंचना—दे० आसमान पर कदम रखना।

आसमान पर चढ़ना या चढ़ाना—दे० आसमान चढ़ना या चढ़ाना।

आसमान पर थूकना—(1) बड़ों को लाञ्छन लगाना। प्र० भगवान् बुद्ध को गार्हस्थ्य धर्म का पालन करने में असमर्थ बतलाना आसमान पर थूकना है।

(2) बड़ों को लाञ्छन लगाने के प्रयत्न में स्वयं कलंकित होना, बेवकूफी करना। प्र० देखिए प्रयोग (1)।

आसमान पर दिमाग चढ़ना या चढ़ाना,-मिजाज होना, -होना-अधिक घमण्डी होना या बना देना। प्र० दौलत मिलते ही उसका दिमाग आसमान पर चढ़ गया।

आसमान पर पैर लगाना—दे० आसमान पर कदम रखना।

आसमान पर मिजाज़ होना—दे० आसमान पर दिमाग चढ़ना।

आसमान पर होना—(1) दे० आकाश पर होना।
दे० (2) आसमान पर दिमाग चढ़ना।

आसमान फट पड़ना—दे० आसमान टूट पड़ना।

आसमान फाड़ना—बहुत शोर करना या होना। प्र० कुल्ली की स्त्री चिल्ला-चिल्ला कर आसमान फाड़ रही है। (कुल्ली०–निराला, 139)।

आसमान में खेती करना—दे० आकाश में थेगली लगाना।

आसमान में चकती लगाना– दे० आकाश में थेगली लगाना।

आसमान में छेद करना या होना—दे० आकाश में छेद करना।

आसमान में ढेला फेंकना—व्यर्थ प्रयत्न करना, ऐसा काम करना जिसमें अपना नुकमान होने की आशंका हो। प्र० तुम बेवकूफ हो जो आसमान में ढेला फेंक रहे हो।

आसमान में थिगली लगाना—दे० आकाश में थेगली लगाना।

आसमान में पेवंद लगाना—दे० आकाश में थेगली लगाना।

आसमान में सीढ़ी लगाना—दे० आकाश में थेगली लगाना।

आसमान साफ होना—आकाश में बादल इत्यादि न होना। प्र० कई दिनों बाद आज आमसान साफ हुआ है।

आसमान सिर पर उठाना—शोरगुल करना; उपद्रव करना; आंदोलन करना। प्र० ज़रा देर को खाना नहीं मिलता तो ये आसमान सिर पर उठा लेते हैं (धूम०–उ० भट्ट, 60)।

आसमान सिर पर टूट पड़ना–बहुत बड़ी विपत्ति आ पड़ना। प्र० भैया, मेरे सिर पर आसमान टूट पड़ा है, मैं क्या करूँ, तुम्हीं बताओ।

आसमान सूझना—घबराहट होना, होश दुरुस्त होना। प्र० तजमनियाँ को भी अब आसमान सूझने लगा है। बड़ी हवेली की पटरानी बनने आई थी (परती०–रेणु, 424)।

आसमान से आग बरसना—बहुत तेज़ धूप होना। प्र० दोपहर का समय था। आसमान से आग बरस रही थी (मान० (7)–प्रेमचंद, 174)।

आसमान से उतरना—बहुत श्रेष्ठ व्यक्ति का आगमन होना, किसी बड़े काम को करके आना। प्र० धोती प्रभा को देता तो वह उछल पड़ती। एकदम ऐसा लगता जैसे आसमान से उतरता हुआ चला आ रहा हूँ (सारा०–यादव, 173)।

आसमान से ऊँचा होना,-कंधा मिलाकर खड़ा होना, -टकराना, -टक्कर खाना,-लेना,-बातें करना—तेतखन आइ बेवान पहूँचा। मन सों अधिक गंगन मौं ऊँचा (पद०–जायसी, 46/1); मैंने उत्सुक नेत्रों से उस गुफा की ओर देखा तो वहाँ एक विशाल राजप्रासाद आसमान से कंधा मिलाये खड़ा था (मान० (6)–प्रेमचंद, 83)।

आसमान से कंधा मिलाकर खड़ा होना—दे० आसमान से ऊँचा होना।

आसमान से गिरकर खजूर पर अटकना—(1) एक कष्ट से छूटकर दूसरे में पड़ जाना। प्र० मकान मिला तो क्या हुआ, रुपये चोरी चले गये। आसमान से गिरकर खजूर में अटक गया।
(2) किसी काम में बड़ी विपत्ति से छूटकर छोटी में आकर रुकावट पड़ना। प्र० मालिकों से तो सब बातचीत हो गयी पर बड़े बाबू ने अड़ंगा लगा दिया। आसमान से गिरकर खजूर में अटक गये।

आसमान से गिरना, -जमीन पर आ जाना—(1) सन्न रह जाना। प्र० यह सुनकर राजा साहेब तो जैसे आसमान से गिर पड़े। (भूले०–भग० वर्मा, 235)।
(2) अत्यंत लज्जा का अनुभव करना। प्र० बुआ की दुर्दशा देख मैं आसमान से जमीन पर आ रहा।
(3) मान-मर्यादा नष्ट हो जाना। प्र० मेरा तो सब कुछ चौपट हो गया—आसमान पर था, जमीन पर आ रहा।
(4) अचानक मिलना। प्र० ब्लैकमार्केट नहीं किया तो यह सारा ऐश्वर्य, वैभव क्या आसमान से गिर पड़ा है?
(5) दे० आकाश से गिरना।

आसमान से जमीन पर आ जाना—दे० आसमान से गिरना।

आसमान से टकराना—दे० आसमान से ऊँचा होना।

आसमान से टक्कर खाना—दे० आसमान से ऊँचा होना।

आसमान से टक्कर लेना—दे० आसमान से ऊँचा होना।

आसमान से टपक पड़ना—अचानक आ पड़ना या मिल जाना। प्र० आप कहाँ से आसमान से टपक पड़े? आइए, आइए।

आसमान से बरसना—बहुतायत होना। प्र० धन-ऐश्वर्य तो उनके यहाँ आसमान से बरस रहा था।

आसमान से बातें करना—दे० आसमान से ऊँचा होना।

आसमान हिला देना—बहुत उत्पात करना, बहुत परेशान करना। प्र० बाप रे बाप, इन लड़कों ने आज आसमान हिला डाला है।

आसमानी गजब टूटना—बहुत बड़ा संकट आना। प्र० रामलगन जी पर तो जैसे आसमानी गजब टूट पड़ा है। उनकी दशा क्या कहें?

आसमानी तीर—बेतुकी बातें। प्र० अपने ये आसमानी तीर अपने पास रखो, यहाँ इनकी ज़रूरत नहीं है।

आसमानी पिलाना—ताड़ी पिलाना।

आसमानी फरमानी, -बला—दैवी विपत्ति। प्र० सब तो सब, इस आसमानी बला का क्या करूँ।

आसमानी बला—दे० आसमानी फरमानी।

आसमानी बात—काल्पनिक या हवाई बात। प्र० इसीलिए इसमें घटना, चरित्र, वार्तालाप सभी बातें आसमानी होती हैं (दिल०–जी०, 68)।

आसरा कर देना—सहारे का इंतज़ाम कर देना। प्र० कहीं मेरा भी आसरा कर देते तो बाकी ज़िन्दगी चैन से कट जाती।

आसरा जोहना, -ताकना, -देखना—(1) प्रतीक्षा करना। प्र० इतनी रात तक बैठी तुम किसका आसरा जोह रही हो?
(2) आशा करना। प्र० इसी कारण तो मैं किसी का आसरा ताकती ही नहीं।

आसरा टूटना—सहारा न रहना। प्र० बालेश्वर प्रसाद के जाने से मेरा

आसरा टूट गया।

आसरा ताकना—दे० आसरा जोहना।

आसरा देखना—दे० आसरा जोहना।

(किसी के) आसरे आना—(किसी के) सहारे का आश्वासन मानकर आना। प्र० हम तो आपके ही आसरे इतनी दूर पैदल चलकर आए हैं। आप हमें निराश न करें।

आसुरी-माया—षड़यंत्र, चालबाज़ी। प्र० मातादीन की आसुरी माया तुम्हारी समझ से बाहर है।

आसेब उतारना—मंत्र से भूत भगाना।

आसेब पहुँचना—तकलीफ होना। प्र० तुम ऐसा काम ही क्यों करो कि दूसरों को आसेब पहुँचे?

आस्तीन का साँप—वह व्यक्ति जो मित्र होकर शत्रुता करे। प्र० कौन जाने चौकीदार भी उन्हीं में मिल गया हो, खिदमतगार भी आस्तीन के साँप हो गये हों (मान० (2)–प्रेमचंद, 26)।

आस्तीन चढ़ाना, -सरकाना—(1) मारने या सामना करने को प्रस्तुत होना। प्र० अमर ने लड़ने के लिए यहाँ भी आस्तीनें चढ़ा लीं। (कर्म०–प्रेमचंद, 18)।

(2) किसी काम को करने को तैयार होना। प्र० कहने भर की देर थी कि सब लड़के आस्तीनें सरकाकर तैयार हो गये।

आस्तीन में साँप पालना—किसी छिपे दुश्मन को प्रश्रय देना। प्र० भला सालिगराम आस्तीन में साँप पालेगा? (बूँद०–नागर, 50)।

आस्तीन सरकाना—दे० आस्तीन चढ़ाना।

आह करना, -खींचना, -भरकर रह जाना, -भरना, -मारना—दुःख प्रकट करना, ठंढी साँस खींचना। प्र० लोग हैं देपौत लाखों मर रहे हम नहीं हैं आह तब भी मारते। (चुभते०–हरिऔध, 63); रुद्र रूप से सब डरते हैं देख-देख भरते हैं आह (अना०–निराला, 110)।

आह खींचना—दे० आह करना।

आह निकलना—बहुत कष्ट होना। प्र० तुम्हारा कर्ज़ा चुकाते-चुकाते तो मेरी आह निकल गयी।

आह पड़ना, -लगना—शाप पड़ना, किसी को दुःख पहुँचाने का फल मिलना। प्र० आज मुझ पर कितने बेकसों की आहें पड़ रही हैं। (रंग० (2)–प्रेमचंद, 205)।

आह भरकर रह जाना—दे० आह करना।

आह भरना—दे० आह करना।

आह मारना—दे० आह करना।

आह लगना—दे० आह पड़ना।

आह लेना—किसी सताये हुए आदमी का शाप लेना। प्र० वे तरह तो दिल मसल देवें नहीं, आह भूले भी किसी की हम न लें। (बोल०–हरिऔध, 117)।

आहट पाना, -मिलना—आवाज़ से किसी के होने का या किसी बात का आभास पाना। प्र० किसी की आहट पा वह चट चौकन्ना हो गया।

आहट मिलना—दे० आहट पाना।

आहट लेना—(1) चुपके-चुपके पता लगाना। प्र० कॉलेज से लौटकर बाहर से शंकर ने आहट ली। प्रेम कुमार प्रसन्न थे। (लिली–निराला, 123-124)।

(2) किसी के आने की टोह लेने के लिए कान लगाये बैठना। प्र० वह आहट ले रहा था कि कब कुंडी खटके और वह नौ-दो-ग्यारह हो।

आहुति देना—बलिदान करना। प्र० देश की बलिवेदी पर हम सब अपनी आहुति देने को प्रस्तुत हैं।

इ

इंगित करना—बातों-बातों में किसी काम या बात की ओर ध्यान आकृष्ट करा देना। प्र० मैंने कई बार इंगित किया पर उनकी समझ में न आया तो क्या करूँ।

इंगित पर नाचना—दे० इशारों पर चलना।

इंच जाना—निकल जाना। प्र० देखना, पूरा ज़हर इंच जाय।

इंचे-इंचे रहना—खिंचे-खिंचे रहना। प्र० न जाने क्यों यह इससे इंचो-इंची रहती है।

इंतज़ार खींचना—इंतज़ार करना। प्र० आज जीवन में पहला अवसर था कि मुंशी जी को इतनी इंतज़ार खींचनी पड़ी (मान० (8)–प्रेमचंद, 204)।

इंद्र का अखाड़ा—(1) खूबसूरत लड़कियों का दल। प्र० एक हो तो बोलूँ, दो हो तो बोलूँ, चार निकाह तक तो जायज़ हैं, मगर जब इन्द्र का अखाड़ा पीछे पड़ जाय तो क्या करूँ? (आज़ाद०–प्रेमचंद, 433)।

(2) खूब सजा हुआ मकान जहाँ राग-रंग हो रहा हो।

इंद्र का आसन डोलना, -हिलना—अपनी सत्ता एवं अधिकार के प्रति आशंकित होना, स्थिति डावाँडोल होना। प्र० तो कहने का मतलब यह कि आखिर इन्द्र का आसन भी डोल ही गया।

इंद्र का आसन हिलना—दे० इन्द्र का आसन डोलना।

इंद्र की परी—बहुत खूबसूरत। प्र० असल में उन्होंने लेना चाहा पढ़ाई और खूबसूरती के रौब में, सो ऐसी राजा इन्दर की परी भी नहीं लगीं (सारा०–यादव, 40)।

इंद्र बनना—सब प्रकार का आनंद लूटना। प्र० अरे भाई, वे तो इन्द्र बने बैठे हैं, उनकी क्या चलाते हो।

इंद्रजाल का खेल—माया, धोखापूर्ण। प्र० यह संसार ठहरा इंद्रजाल का खेल। तुम इसमें क्यों भूल रहे हो?

इंद्राणी बनकर बैठना—खूब सजधज कर बैठना। प्र० आय-हाय, कुरबान जाऊँ, यह तो एकदम इन्द्राणी बनकर बैठी है।

इंद्रायन का फल—ऊपर से सुंदर पर भीतर से कटु। प्र० धनपाल इन्द्रायन का फल है, उस पर रत्ती भर भी भरोसा न करना।

इंद्रिय कसना, -मारना—इंद्रियों को वश में रखना। प्र० पद्मासन सब द्वार रोकि इंद्रिन कों मारैं। (नंद० ग्रंथा०–नंद०, 155)।

इंद्रिय के वश होना—विषयासक्त होना।

इंद्रिय मारना—दे० इंद्रिय कसना।

इंसाफ का खून करना—अन्याय करना। प्र० मुगल शासन के दौरान अनेक अवसरों पर बड़ी निर्ममतापूर्वक इन्साफ का खून किया गया है।

इकबाल बुलंद होना—किस्मत अच्छी होना। प्र० लालजी का इकबाल बुलंद है आजकल, उनकी मत पूछो।

इकहरा (डील, बदन)—ऐसा व्यक्ति जो न मोटा हो न दुबला। प्र० प्रभु सेवक की मसें भींग रही थीं, छरहरा डील इकहरा वदन ×× (रंग०—प्रेमचंद, 2)।

इकाई बँधना या बाँधना—इकट्ठे होकर काम करना। प्र० सब लोग इकाई बाँधकर बैठ जायें तो काम होते देर थोड़े ही लगेगी।

इक्कास करना, -रखना—झगड़ा करना। प्र० तुम रास्ते चलते हर किसी से इक्कास क्यों करते रहते हो ?

इक्कास रखना—दे० इक्कास करना।

इक्कीस बिस्वे होना, -रहना या होना—तुलनात्मक दृष्टि से कुछ बढ़कर होना। प्र० हमारी पतित समाज की नीचे को गिरने की झुकावट आगे से अब इक्कीस बिस्वे है, उन्नीस नहीं हुई। (भट्ट नि०—बा० भट्ट, 109)।

इक्कीस रहना या होना—दे० इक्कीस बिस्वे होना।

इक्कीस-बाइस करना—बर्बाद करना या होना। प्र० पिता द्वारा छोड़ी गयी अतुल सम्पत्ति उसके हाथ लगी पर उसने सब इक्कीस-बाइस कर दिया।

इक्कीस-बाइस का अंतर—बहुत थोड़ा अंतर। प्र० दोनों साड़ियों के कपड़े में इक्कीस-बाइस का अंतर है, ज्यादा नहीं।

इक्के-दुक्के—(1) थोड़े। प्र० सड़क पर इक्के-दुक्के लोग दिखलाई पड़ रहे थे। सब ओर सन्नाटा-सा छाया था।
(2) अकेले। प्र० रात में उस ओर इक्के-दुक्के मत जाना।

इगर-दिगर करना या होना—बेतरतीब करना या होना। प्र० बैठे-बैठे उसने सारे कागज इगर-दिगर कर दिये।

(किसी की) इच्छा की लौंडी होना—किसी की इच्छाओं के अनुसार ही सब करना। प्र० जब यह मेरी इतनी-सी बात नहीं मान सकते, तब फिर मैं क्यों इनके इशारों पर चलूँ, क्यों इनकी इच्छाओं की लौंडी बनी रहूँ ? (मान० (7)—प्रेमचंद, 21)।

इच्छा जागना—इच्छा होना। प्र० लीलावती की कल्पना में न जाने कितने चित्र बन-बिगड़ रहे थे, अंतर में न जाने कितनी इच्छाएँ जाग रही थीं।

इच्छा दबाना—मन में हुई इच्छा को रोकना। प्र० इच्छाओं को दबाना उचित नहीं, इच्छाओं को तुम उत्पन्न ही न होने दो (चित्र०—भग० वर्मा, 20)।

इच्छा पूजना—इच्छा पूरी होना। प्र० करु सुदिस्टि औ किरिपा हिछा पूजै मोरि। (पद०—जायसी, 17/1)।

इच्छा-भोजन—मनोनुकूल पेटभर भोजन। प्र० साधु बाबा, हम आपको इच्छा-भोजन कराना चाहते हैं। बोलिए, क्या ग्रहण कीजिएगा।

इजलास तक (पर) चढ़ना—अदालत में जाना। प्र० मैं दमड़ी भी न दूँगी चाहे मुझे हाकिम के इजलास तक ही चढ़ना पड़े। (गोदान—प्रेमचंद, 114)।

इजलास पर (किसी को) चढ़ाना—(किसी पर) मुकदमा दायर करना, इजलास तक ले जाना। प्र० गाँव भर के सामने उसका पानी उतारूँगी। उसे इजलास पर चढ़ाऊँगी (दे० दु०—शिव०, 36)।

इजार में पहन लेना—डर न मानना, अत्यंत तुच्छ समझना। प्र० उसने तो जैसे सबको इजार में पहन लिया है, उस पर कोई असर ही नहीं होता।

इजारबंद का ढीला होना—व्यभिचारी या व्यभिचारिणी होना।

इजारबंद खोलना—स्त्री-प्रसंग करना।

इजारबंद पर हाथ डालना—व्यभिचार का उपक्रम करना।

इजारबंदी का रिश्ता—पत्नी के रिश्ते से। प्र० रामनाथ से इजारबंदी का रिश्ता है, वह मेरी बीवी का फुफेरा भाई है।

इज्जत अपने हाथ होना—इज्जत को बनाना-बिगाड़ना अपने वश में होना। प्र० मैं तो एक बात जानता हूँ कि इज्जत अपने हाथ होती है।

इज्जत उतारना, -चली जाना, -जाना, -डूब जाना, -धूल में मिलना, -पर पानी फिरना, -मिट्टी होना, -में बट्टा लगना—प्रतिष्ठा नष्ट होना। प्र० आमदनी की कमी और दूसरे कारणों से कुछ उर्दू अखबारों को ×× कितने ही ऐसे काम करने पड़ते थे जिनसे अखबारों की इज्जत में बट्टा लगता है। (गु० नि०—बा० मु० गु०, 206); कहते हैं इससे घर की इज्जत जाती है (अमृत०—नागर, 295); आज तो सारे गाँव के सामने उनकी इज्जत उतर गयी (गोदान—प्रेमचंद, 267)।

इज्जत उतारना, -लेना—किसी की प्रतिष्ठा नष्ट करना। प्र० मजदूरों का चिट्ठा एक महीने से नहीं बंटा इसलिए वह मेरी इज्जत लिया चाहते हैं (परीक्षा०—श्री०दास, 96); आपने मेरी इज्जत उतारने के लिए मुझे यहाँ बुलाया था ? (भोर०—जग० माथुर, 120)।

इज्जत कमाना—मर्यादा प्राप्त करना। प्र० उन दिनों हाजी पर धर्म का गहरा रंग चढ़ा था, इज्जत कमा रहे थे (अमृत०—नागर, 599)।

इज्जत का सवाल—मर्यादा की रक्षा का प्रश्न। प्र० इस समय रुपये-पैसे का सवाल नहीं, इज्जत का सवाल है।

इज्जत के पीछे पड़ना—मर्यादा नष्ट करने पर उतारू होना। प्र० वह तो हाथ धोकर मेरी इज्जत के पीछे पड़ गया है।

इज्जत खाक में मिलाना, -डुबाना, -दो कौड़ी की करना, -दो कौड़ी की न रहना, -धूल में मिलाना, -पर पानी फेरना, -मिट्टी कर देना, -मिट्टी में मिलाना, -में बट्टा लगाना—अपनी या किसी और की प्रतिष्ठा नष्ट करना, कलंकित होना या करना। प्र० मैं जानता हूँ कि आपको अपने कारण किसी गरीब की इज्जत में बट्टा लगाना हरगिज मंजूर न होगा। (परीक्षा०—श्री० दास, 89-90); वह क्यों चौधरी से

लड़ी ? क्यों उसकी इज्ज़त मिट्टी में मिला दो ? (गोदान–प्रेमचंद, 31) ।

इज्ज़त खोना, -गँवाना, -देना—ऐसा काम करना जिससे प्रतिष्ठा नष्ट हो । प्र० उसने अपनी इज्ज़त खो दी, अब उसे वापिस पाना मुश्किल है ।

इज्ज़त गँवाना—दे० इज्ज़त खोना ।

इज्ज़त चली जाना—दे० इज्ज़त उतरना ।

इज्ज़त जाना—दे० इज्ज़त उतरना ।

इज्ज़त डुबाना—दे० इज्ज़त खाक में मिलाना ।

इज्ज़त डूब जाना—दे० इज्ज़त उतरना ।

इज्ज़त देना—दे० इज्ज़त खोना ।

इज्ज़त दो कौड़ी की करना या होना—दे० इज्ज़त खाक में मिलाना ।

इज्ज़त दो कौड़ी की न रहना—दे० इज्ज़त खाक में मिलाना ।

इज्ज़त धूल में मिलना—दे० इज्ज़त उतरना ।

इज्ज़त धूल में मिलाना—दे० इज्ज़त खाक में मिलाना ।

इज्ज़त पर आँच आना, -बिक जाना—बेइज्ज़त होना, बदनाम होना । प्र० मेरी जान भले ही चली जाए, पर मेरी लड़की की इज्ज़त पर आँच न आने पाए (गोली–चतुर०, 309) ।

इज्ज़त पर पानी फिरना—दे० इज्ज़त उतरना ।

इज्ज़त पर पानी फेरना—दे० इज्ज़त खाक में मिलाना ।

इज्ज़त पर हाथ डालना—बेइज्ज़त करना, बदनाम करने का प्रयत्न करना । प्र० चोरी से तो पुलिस को मौका मिलता है कि जंगलियों की इज्ज़त पर हाथ डाले (कठ०–दे० स०, 270) ।

इज्ज़त पाना, -पैदा करना, -बनना, -मिलना—सम्मान होना, प्रतिष्ठित पद मिलना । प्र० पं० मोतीलाल नेहरू ने बड़ी इज्ज़त पायी; आज के ज़माने में खुशामद के बिना इज्ज़त नहीं बनती ।

इज्ज़त पैदा करना—दे० इज्ज़त पाना ।

इज्ज़त बख्शना—प्रतिष्ठा देना । प्र० हुजूर, मुझे भी तो इज्ज़त बख्शें ।

इज्ज़त बनना—दे० इज्ज़त पाना ।

इज्ज़त बढ़ाना, -बनाना—अधिक आदर पाना । प्र० पिछले बरसों उन्होंने काफी इज्ज़त बढ़ा ली है ।

इज्ज़त बनाना—दे० इज्ज़त बढ़ाना ।

इज्ज़त बिक जाना—दे० इज्ज़त पर आँच आना ।

इज्ज़त बिगड़ना या बिगाड़ना, -लुटना या लूटना—(1) बलात्कार किया जाना या करना । प्र० हम सिलिया को अकेले न ले जायेंगे, उसके साथ मातादीन को भी ले जायेंगे जिसने उसकी इज्ज़त बिगाड़ी है । (गोदान–प्रेमचंद, 249) ।

(2) प्रतिष्ठा नष्ट होना या करना । प्र० उस कपूत ने तो मेरी इज्ज़त बिगाड़ने में कोई कसर नहीं रखी है ।

इज्ज़त बेचना—प्रतिष्ठा नष्ट होने वाला काम करना । प्र० बल्कि वे तो उसकी इज्ज़त भी बेच देना चाहते थे (बौने०–रां० रा०, 206) ।

इज्ज़त मिट्टी कर देना—दे० इज्ज़त खाक में मिलाना ।

इज्ज़त मिट्टी में मिलाना—दे० इज्ज़त खाक में मिलाना ।

इज्ज़त मिट्टी होना—दे० इज्ज़त उतरना ।

इज्ज़त मिलना—दे० इज्ज़त पाना ।

इज्ज़त में बट्टा लगना—दे० इज्ज़त उतरना ।

इज्ज़त में बट्टा लगाना—दे० इज्ज़त खाक में मिलाना ।

इज्ज़त रखना, -सम्हालना—प्रतिष्ठा की रक्षा करना । प्र० इस बार आप किसी तरह मेरी इज्ज़त रख लीजिए तो मेरा बड़ा कल्याण होगा ।

इज्ज़त लुटना या लूटना—दे० इज्ज़त बिगड़ना या बिगाड़ना ।

इज्ज़त लुटाना—ऐसा काम करना जिससे इज्ज़त खराब हो । प्र० उस शूद्र का क्या, घर की इज्ज़त लुटा दी उसने (बौने०–रां० रा०, 27) ।

इज्ज़त लेना—दे० इज्ज़त उतरना या उतारना ।

इज्ज़त सम्हालना—दे० इज्ज़त रखना ।

इत-उत करना या होना, -इता-उता करना या होना—सामान छिपाना या गायब करना या होना । प्र० माँ के अशक्त होते ही बड़ी बीबी ने उनकी सारी चीजें इत-उत कर दीं ।

इतना बड़ा मुँह रह जाना या हो जाना, -सा मुँह निकल आना—लज्जित हो जाना । प्र० मिल गया सारा बड़प्पन धूल में, आज तो इतना बड़ा मुँह हो गया (बोल०–हरिऔध, 85) ।

इतना होना—इस कदर होना, बहुत होना । प्र० डाब तो बंगाल में इतना होता है कि पूछो मत ।

इतना-उतना—थोड़ा बहुत, सामान्य । प्र० अरे कुछ इतना-उतना दे दिया होगा और क्या । सब देने वाले जीव वे नहीं हैं ।

इतना-सा मुँह निकल आना—दे० इतना बड़ा मुँह रह जाना ।

इतनी-सी बात—छोटी-सी बात, सामान्य बात । प्र० मेरी इतनी-सी बात भी तुम नहीं मान सकते ?

इतने में—इसी बीच में । प्र० हम लोग जाने का प्रोग्राम बना ही रहे थे कि इतने में वहाँ से टेलिग्राम आ गया ।

इतने से इतना कर देना—बहुत बढ़ा देना । प्र० देखो तो सही मैंने ज़रा-सी बात कही सो भाभी ने उसे इतने से इतना कर दिया ।

इतमीनान की साँस लेना—राहत अनुभव करना । प्र० अब कहीं जाकर इतमीनान की साँस ले सका हूँ ।

इता-उता करना—दे० इत-उत करना ।

इति श्री करना या होना, -इति होना—समाप्त करना या नष्ट करना या होना । प्र० अब इस किस्से की इति श्री करो आखिर कब तक रगड़ोगे ।

इति होना—दे० इति श्री होना ।

इतिहास के काले पन्ने—इतिहास का अंधकारमय युग । प्र० भारतीय इतिहास के काले पन्ने असंतोष, अव्यवस्था और अन्याय की गाथाओं से रंगे पड़े हैं ।

इतिहास के दर्पण में—इतिहास की घटनाओं के माध्यम से । प्र० इतिहास के दर्पण में उस युग के जन-जीवन की झाँकी सहज ही देखी जा सकती है ।

इत्तफाक होना—स्नेह-सम्बन्ध होना। प्र० डिप्टी साहब से चाचा जी का अच्छा इत्तफाक है।

इत्ते-पित्ते जलना, -भड़कना—कुढ़ जाना, क्रोधित हो जाना। प्र० इस शब्द से रमेश की माँ के इत्ते-पित्ते भड़क उठे (अमृत०—नागर 452)।

इत्ते-पित्ते भड़कना—दे० इत्ते-पित्ते जलना।

इत्ते-पित्ते सुलगा देना—बहुत गुस्सा दिला देना। प्र० इस पत्र ने मेरे इत्ते-पित्ते सुलगा दिया (अमृत०—नागर, 46)।

इधर का (से) उधर करना या होना—बदलना, प्रतिकूल बना देना या होना। प्र० देखते-देखते उसने सारा मामला इधर का उधर कर दिया।

इधर का होना न उधर का—(1) किसी काम का न रहना। प्र० तुम्हारी सारी पढ़ाई-लिखाई न इधर की रही न उधर की।

(2) दोनों ओर से निराश होना। प्र० इत के भए न उत के, चालें भूल गँवाइ (कबीर ग्रंथा०—कबीर, 23); आपके ही भरोसे मैंने दूसरी चेष्टा भी नहीं की। अब आप कुछ न कर सकेंगे तो मैं न इधर का रह जाऊँगा न उधर का।

(3) किसी पक्ष में न होना। प्र० चाचाजी ने साफ कह दिया है कि वे न इधर के रहेंगे, न उधर के।

इधर की उधर और उधर की इधर लगाना, -इधर की उधर करना, -लगाना, -इधर-उधर की करना, -लगाना—चुगलखोरी करना, आपस में लड़वा देना। प्र० इधर की उधर और उधर की इधर लगाया करती हैं (आज़ाद०—प्रेमचंद, 413)।

इधर की उधर करना—दे० इधर की उधर और उधर की इधर लगाना।

इधर की उधर लगाना—दे० इधर की उधर और उधर की इधर लगाना।

इधर की दुनिया उधर करना—बहुत दौड़ धूप और मेहनत करना। प्र० बेचारे ने इधर की दुनिया उधर कर डाली पर काम हुआ नहीं।

इधर की दुनिया उधर होना, -पृथ्वी उधर हो जाना—"कदापि नहीं" के अर्थ में प्रयुक्त। प्र० यह मुझसे हरगिज़ न होगा, चाहे इधर की दुनिया उधर हो जाय (आजाद०—प्रेमचंद, 175)।

इधर की पृथ्वी उधर होना—दे० इधर की दुनिया उधर होना।

इधर कुआँ उधर खाई होना, -बावड़ी होना—दोनों ओर विपत्ति होना। प्र० अटल बोला—इधर कूदता हूँ तो बावड़ी है, उधर फाँदता हूँ तो कुआँ है (मृग०—वृ० वर्मा, 284)।

इधर कुआँ उधर बावड़ी होना—दे० इधर कुआँ उधर खाई होना।

इधर भी चलना उधर भी चलना—परस्पर विपरीत बात या काम करना। प्र० ज्ञान—इधर भी चलती है, उधर भी (प्रेमा०—प्रेमचंद, 206)।

इधर या उधर होना—फैसला होना। प्र० बात पंचों तक पहुँच गयी है। मामला जल्दी ही इधर या उधर हो जायेगा।

इधर से उधर फिरना—चारों ओर घूमना। प्र० क्या इधर से उधर फिर रहे हो? राम बाबू के पास क्यों नहीं जाते?

इधर-उधर—(1) यहाँ-वहाँ। प्र० पूर्वी बंगाल के शरणार्थी आज भी इधर-उधर आश्रय खोजते फिर रहे हैं।

(2) आसपास। प्र० यहीं कहीं इधर-उधर गये होंगे।

इधर-उधर करना—(1) टालमटोल करना, हीलाहवाली करना। प्र० मैं उनसे पिछले पंद्रह दिनों से कह रहा हूँ पर वे बराबर इधर-उधर कर रहे हैं।

(2) उलट-पुलट करना, क्रम भंग करना। प्र० सारे कार्ड तुमने इधर-उधर कर दिये।

(3) भिन्न-भिन्न जगहों पर रख देना, हटा देना। प्र० पुलिस के आने की खबर मिलने के साथ उन्होंने सारे कागज़-पत्र इधर-उधर कर दिये।

इधर-उधर की करना—दे० इधर की उधर और उधर की इधर लगाना।

इधर-उधर की बात करना, -कहना, -हाँकना—(1) टालने के लिए बिना मतलब की बात करना। प्र० मेरा उत्तर न दे वे इधर-उधर की बातें करने लगे।

(2) गप्प करना, सुनी-सुनाई बात करना। प्र० क्यों इधर-उधर की हाँकते हो?

इधर-उधर की बात कहना—दे० इधर-उधर की बात करना।

इधर-उधर की लगाना—दे० इधर की उधर और उधर की इधर करना।

इधर-उधर की हाँकना—दे० इधर-उधर की बात करना।

इधर-उधर झांकना, -देखना—अपने बचाव के लिए कोई रास्ता ढूंढ़ना, सामना न कर पाना। प्र० मुनीम जी इधर-उधर झांकने लगे (भारती०—रां० रा०, 57)।

इधर-उधर देखना—दे० इधर-उधर झांकना।

इधर-उधर में रहना—व्यर्थ समय खोना। प्र० वह तो हर समय इधर-उधर में रहता है। उसका काम कभी पूरा नहीं हो सकता।

इधर-उधर रहना—साथ में रहना, पीछे लगे रहना। प्र० चार सिपाही हर समय उनके इधर-उधर रहते थे।

इधर-उधर से—अनिश्चित जगह या सूत्र से। प्र० उनसे तो नहीं, इधर-उधर से सुना है।

इधर-उधर होना—(1) उलट-पलट होना, बिगड़ना। प्र० सारा सामान इधर-उधर हो गया, तुमने तनिक भी ध्यान न दिया।

(2) भाग जाना, तितर-बितर होना। प्र० तीरों की बौछार के सामने सारी सेना इधर-उधर हो गयी।

इन तिलों में तेल न होना—इनसे काम निकलने की आशा नहीं है। प्र० तुम बेकार शिव बाबू के यहाँ दोनों वक्त जा रहे हो। इन तिलों में तेल नहीं है, यह क्यों नहीं समझते।

इने-गिने—थोड़े से। प्र० इने-गिने लोग मंच के सामने बैठे ऊँघ रहे थे।

इन्हीं पैरों जाना, -लौटना—अविलम्ब लौट जाना। प्र० अबहिं गई, आई इनि पाइनि, लै गयो को करि चोरी (सू० सा०—सूर, 903); अगर अपनी कुशल चाहते हो, तो इन्हीं पैरों × × लौट जाओ, उसके सामने जाकर क्यों अपना पानी उतरवाओगे (ग़बन—प्रेमचंद,

275)।

इन्हीं पैरों लौटना—दे० इन्हीं पैरों जाना।

इमका-ढिमका—हर कोई। प्र० अच्छा तमाशा है। इमके-ढिमके सब चले आ रहे हैं।

इमारत खड़ी करना—इमारत बना लेना। प्र० इमारतें खड़ी करने का विचार उसने त्याग दिया था जिन पर खर्च होता (मृग०—वृ० वर्मा, 397)।

इलज़ाम के रद्दे रखना—एक के बाद एक इलज़ाम लगाते जाना। प्र० अब बस भी कीजिए, कब तक इलज़ाम के रद्दे रखते जाइएगा ?

इलाज करना—उपाय करना, किसी दुष्ट व्यक्ति की दुष्टता दूर करने का उपाय करना। प्र० किरणवाला देवी का इस बार कुछ इलाज करना ही पड़ेगा।

इलायची देना, -बाँटना, -भेजना—निमंत्रण देना। प्र० जमींदार के बड़े कुँवर के विवाह में सारे गाँव को इलायची बंटी थी।

इलायची बाँटना—दे० इलायची देना।

इलायची भेजना—दे० इलायची देना।

इलाहाबादी हजामत बनना या बनाना—जबर्दस्त धोखा खाना या देना। प्र० अपनी तो ऐसी इलाहाबादी हजामत बन गयी है कि पूछो मत।

इलाही मोहर होना—ऐसी रकम या वस्तु जिसे हड़पना पाप समझा जाय। प्र० मकतब का रुपया इलाही मोहर है, उसको हाथ मत लगाना।

इल्लत कटना या काटना—झगड़ा या झंझट निबटना या निबटाना। प्र० किसी तरह से घर की इल्लत कटे तो चैन की साँस लूँ।

इल्लत पालना, -लगाना—व्यर्थ की झंझट लगाना। प्र० तुमने जान-बूझकर इल्लत पाल रखी है तो भोगो।

इल्लत लगाना—दे० इल्लत पालना।

इशारा करना—(1) बात-बात में कुछ इंगित कर देना। प्र० मैंने उसे इशारा तो कर दिया था कि अच्छी तरह समझ-बूझकर शिवप्रसाद से सौदा करे।
(2) किसी बहती हुई धारा को जरा-सा इंगित से मोड़ देना। प्र० जरा उँगली से पानी को इशारा कर दो, उधर नाली की ओर चला जायेगा।

इशारे पर—इच्छानुसार, कहे अनुसार। प्र० वह तो आपके इशारे पर जान तक देने को तैयार है।

इशारे-इशारे में—किसी और बहाने से कुछ कहना या संकेत करना। प्र० इशारे-इशारे में उन्होंने सब कह दिया, कुछ बाकी नहीं छोड़ा।

इशारों का गुलाम, -की दासी—इच्छानुसार चलनेवाला (ली)। प्र० सारा मुहल्ला उसके इशारों का गुलाम है (रंग० (1)—प्रेमचंद, 223)।

इशारों की दासी—दे० इशारों का गुलाम।

इशारों पर चलना, -नाचना—किसी दूसरे की इच्छा के अनुसार काम करना। प्र० हीरा क्रोध में उसे मारता था, लेकिन चलता था उसी के इशारों पर (गोदान—प्रेमचंद, 29); वह घर का सारा काम करती, इशारों पर नाचती × × × पर न जाने क्यों चचा और चची दोनों उससे जलते रहते थे (मान० (1)—प्रेमचंद, 203)।

इशारों पर नचाना—अपनी इच्छानुसार सब काम करवा लेना। प्र० × × उनकी बागडोर उस स्त्री के हाथ में है, जो पाटलिपुत्र के बड़े-से-बड़े सामन्तों को केवल संकेत पर नचा सकती है (चित्र०—भग० वर्मा, 69)।

इशारों पर नाचना—दे० इशारों पर चलना।

इश्क लड़ाना—प्रेम करना। प्र० तो तुम जिम्मेदारी के नाम पर अपनी तमाम माशूकाओं से इश्क लड़ाओगे (बूँद०—नागर; 512)।

इस कान की खबर उस कान को भी न होना—अत्यंत गोपनीय रखना। प्र० देखो इस बारे में किसी के सामने भूल से भी ज़बान मत खोलना। इस कान की खबर उस कान को न हो।

इस कान सुनना उस कान उड़ा देना, -निकाल देना, से उस कान निकाल देना—बात पर बिलकुल ध्यान न देना। प्र० × × यद्यपि जनता उनके हाथ में न थी, पर कुछ-न-कुछ आदमी उनकी बातें सुन ही लेते थे। हाँ, इस कान सुनकर उस कान उड़ा देते (कर्म०—प्रेमचंद, 302)।

इस कान (से) सुनना उस कान (से) निकाल देना—दे० इस कान सुनना उस कान उड़ा देना।

इस कान से उस कान निकाल देना—दे० इस कान सुनना उस कान उड़ा देना।

इस कोठे का धान उस कोठे में करना—व्यर्थ का काम करना। प्र० × × बनिया बेचारा क्या करे,—इस कोठे का धान उस कोठे करे, उसे फुर्सत नहीं, उसके लिए ये सब समझ से बाहर की बातें हैं क्योंकि रुपये-पैसे की नहीं (कुल्ली०—निराला, 109)।

इस कोठे का धान उस कोठे में जाना या होना—केवल स्थानांतरित होना। प्र० जमादार सिर्फ इस कोठे का धान उस कोठे गया है। दवा जाओ (चोटी०—निराला, 119)।

इस जन्म में नहीं—कदापि नहीं।

इस पर खाक डालो,—पत्थर मारो—इसका ज़िक्र न करो।

इस पर न जाना,—भूलना—ऐसा न मानना, इस भरोसे न रहना। प्र० इस पर मत भूलो कि बाबूजी तुम्हें विलायत भेज देंगे।

इस पर न भूलना—दे० इस पर न जाना।

इस पर पत्थर मारो—दे० इस पर खाक डालो।

(अंगूठा दिखाकर) इस पर होना—अत्यंत तुच्छ समझता हूँ। प्र० ऐसी-ऐसी लड़कियाँ मेरे इस पर हैं।

इस पार या उस पार—अंतिम निर्णय होना। प्र० अब तो ऐसी स्थिति है कि या तो इस पार या उस पार।

इस हाथ की खबर उस हाथ को न होना—निकटतम व्यक्ति को भी जानकारी न होना। प्र० × × सियासत का खेल परदा-दर-परदा सात फाटकों में बंद होकर खेलना चाहिए ताकि इस हाथ की खबर

उस हाथ को भी न लगे (सात०—नागर, 85)।

इस हाथ देना उस हाथ लेना—तुरंत देना-लेना बराबर करना, कुछ बकाया न लगा रखना। प्र० मेहनत-मजूरी का दाम धीरे-धीरे पटता रहता, क्योंकि कोई धंधा तो था नहीं कि इस हाथ ले उस हाथ दे (कम०—कम०, 97)।

इसी दम—तुरन्त। प्र० तुम इसी दम उनसे सब हाल कह दो।

इसी दुनिया में (रहकर) बाल सफ़ेद करना—खूब दुनियावी अनुभव किये होना। प्र० मैंने भी इसी दुनिया में बाल सफ़ेद किये हैं (कर्म०—प्रेमचन्द, 342)।

इसी रास्ते चलना—ऐसा रुख अख्तियार करना। प्र० × × जब दुनिया इसी रास्ते पर चल रही है, तो मैं भी क्यों न चलूं? (अंधेरे०—राकेश, 482)।

इस्तिजा का ढेला—तुच्छ व्यक्ति।

इस्तिजा लड़ना या लड़ाना—अत्यन्त मित्रता होना या करना। प्र० आजकल कामता और गंगाराम में खूब इस्तिजा लड़ रहा है।

इस्तिजा से इस्तिजा लड़ाना—सांसारिक सुख भोग करना। प्र० इस्तिजा से इस्तिजा लड़ाने में सारी जिन्दगी गुज़ार दी, अब बुढ़ौती में नया क्या करूँगा।

इहलीला समाप्त होना—मर जाना।

ई

ईंगुर होना—बहुत लाल होना। प्र० सुबह से चूल्हे के पास बैठी है, चेहरा ईंगुर हो रहा है।

ईंचा-खींची—दे० खींचतान।

ईंचातानी—दे० खींच-तान।

ईंट का घर मिट्टी करना या होना—बने-बनाए घर को बर्बाद कर देना या होना। प्र० रामदीन क्यों इस तरह ईंट का घर मिट्टी कर रहा है?

ईंट का छल्ला देना—कच्ची दीवाल से सटाकर ईंट की इकहरी जोड़ाई करना।

ईंट का जवाब ईंट से पत्थर का जवाब पत्थर से देना—जो जैसा करे, उससे वैसा ही बर्ताव करना।

ईंट का जवाब पत्थर से देना—अपमान या बुराई का कड़ा जवाब देना या बदला लेना। प्र० मैं तो यह सब व्यवहार नहीं जानता। यहाँ तो ईंट का जवाब पत्थर से देना सीखा है (रंग० (1)—प्रेमचंद, 225); ईंट का जवाब हमें पत्थर से देना है, तुर्कों को तुर्की में, घूंसे से थप्पड़ का (परि०—निराला, 231)।

ईंट खोद-खोदकर खाना—घर की एक-एक चीजें बेच-बेचकर घर-गृहस्थी चलाना, किसी तरह जीवन-यापन करना। प्र० उनकी हालत इधर खराब हो गयी है, ईंट खोद-खोदकर खा रहे हैं।

ईंट जोड़ना—दीवार उठाने के लिए ईंट बैठाना या जोड़ाई करना। प्र० कब्र पर ईंटें जोड़ दी गयीं, चारों ओर क्यारी बना दी गयी।

ईंट तक बिकवाना—सब कुछ ले लेना। प्र० अपने रुपये वसूलने के लिए मैं उसके घर की ईंटें तक बिकवा दूंगा।

ईंट पर ईंट रखना—निर्माण की एक-एक सीढ़ी चढ़ना, धीरे-धीरे प्रगति होना। प्र० स्वतंत्रता-प्राप्ति के बाद से हम निरंतर आगे बढ़ रहे हैं। प्रगति के विशाल भवन की ईंट पर ईंट रखी जा रही है।

ईंट से ईंट बजना या बजाना—(1) किसी नगर या घर को ध्वंस करना। प्र० उनको सूचना न हुई, तो दुश्मन किले की ईंट-से-ईंट बजा देगा (सु० सु०—सुदर्शन, 28)।
(2) गहरा मुकाबला करना या होना। प्र० तुम बुज़दिल हो तो क्या, हम ईंट से ईंट बजाकर रख देंगे इस बृटिश हुकूमत की (भूले०—भग० वर्मा, 503)।
(3) लड़ाई करवाना या होना। प्र० तुम दोनों में ईंट से ईंट बजवाने पर क्यों तुले हो?

ईंट से पत्थर बजना या बजाना—किसी नगर या घर का ध्वंस हो जाना।

ईंट-पत्थर—कुछ नहीं। प्र० तुमने इतने दिनों तक क्या पढ़ा, ईंट-पत्थर?

ईंटों से निकलकर कीचड़ में फंसना—एक मुसीबत से निकलकर दूसरी में फंसना।

ईंधन हो जाना—शक्तिहीन या नीरस हो जाना। प्र० ईंधन हो जाओगे तब क्या कर पाओगे। अभी समय है, जो करना है कर डालो।

ईद—आनंदोत्सव।

ईद का चाँद—बहुत कम दिखलाई पड़नेवाला प्रिय व्यक्ति। प्र० तारा जी तो ईद का चाँद हो गयी हैं (झूठा० (2)—यशपाल, 482)।

ईद के पीछे टर हो जाना—मौके पर काम न हुआ तो बेकार है। प्र० अभी मुझे रुपये न मिले तो फिर ईद के पीछे टर हो जायेगी।

ईद मनाना—आनंदोत्सव मनाना। प्र० पढ़े मर्सिया दुनिया सारी ईद मनाती मधुशाला (मधु०—बच्चन, पद 25)।

ईद-बकरीद—विशेष-विशेष अवसरों पर। प्र० रोज़ न सही ईद-बकरीद तो चेहरा दिखलाने आ जाया करो।

ईमान काँपना—डरना, हृदय का गवाही न देना। प्र० उससे छल करते मेरा ईमान काँपता है।

ईमान का खून करना—बेईमानी करना। प्र० आप इसकी कैसे आशा रखते हैं कि मेरे कहने से वह अपने ईमान का खून करने पर तैयार हो जायेंगे (प्रेमा०—प्रेमचंद, 26)।

ईमान का खेल,-सौदा—ऐसा सौदा जिसमें बेईमानी न हो। प्र० यहाँ तो ईमान का खेल है। आप आँख मूंदकर सौदा कर सकते हैं।

ईमान का पैसा खाना—ईमानदारी से जीविका चलाना। प्र० हम ईमान का पैसा खाते हैं (शेखर० (1)—अज्ञेय, 63)।

ईमान का सौदा—दे० ईमान का खेल।

ईमान की कहना,-बात कहना—ईमान से कहना। प्र० भाई, मैं तो ईमान की कहता हूँ। तुम्हें यकीन नहीं हो पा रहा है तो क्या करूँ?

ईमान की बात कहना—दे० ईमान की कहना।

ईमान खोना,-छोड़ना—बेईमान हो जाना। प्र० तुमने तो ईमान खो दिया है, तुमसे मुझे कोई आशा न रही।

ईमान छोड़ना—दे० ईमान खोना।

ईमान जाना, -ठिकाने न होना, -डिगना, -डोलना, -बंट जाना, -बिगड़ना,-में खलल आना, -ग्रह पड़ना, -फर्क आना, -हवा हो जाना—मन में बेईमानी आ जाना। प्र० बात-बात में जिसका ईमान जाने लगे उसका क्या भरोसा? तभी से उनके ईमान में फर्क आ गया है।

ईमान ठिकाने न होना—दे० ईमान जाना।

ईमान डिगना—दे० ईमान जाना।

ईमान डोलना—दे० ईमान जाना।

ईमान देना,-बगल में दबाना,-बिगाड़ना—बेईमानी करना। प्र० गुरु गोविन्द सिंह के लड़कों ने जान दे दी पर ईमान नहीं दिया।

ईमान बंट जाना—दे० ईमान जाना।

ईमान बगल में दबाना—दे० ईमान देना।

ईमान बह जाना—नीयत एकदम खराब हो जाना। प्र० हरखू का ईमान एकदम बह गया है।

ईमान बिगड़ना—दे० ईमान जाना।

ईमान बिगाड़ना—दे० ईमान देना।

ईमान बेचना—घूस या पैसे के लोभ में बेईमानी करना। प्र० वह कौड़ी-कौड़ी के लिए अपना ईमान बेचता फिरता है, पचास रुपए तो बहुत हैं।

ईमान में आना—उचित एवं न्यायपूर्ण लगना। प्र० सौ रुपये लौटाना ही तुम्हारे ईमान में आता हो तो, ठीक है, उतना ही दो।

ईमान में खलल आना—दे० ईमान जाना।

ईमान में ग्रह पड़ना—दे० ईमान जाना।

ईमान में फर्क आना—दे० ईमान जाना।

ईमान लाना—विश्वास करना। प्र० तुम मेरी बात पर ईमान क्यों नहीं लाते?

ईमान से कहना—सच कहना। प्र० ईमान से कहो तो कि तुमने उनसे रुपये माँगे या नहीं?

ईमान हवा हो जाना—ईमान जाना।

ईर्षा खंड—एक तरह का अर्द्ध नपुंसक व्यक्ति।

ईर्ष्या से जलना,-फुंकना—बहुत ईर्ष्या करना। प्र० हाँ बेटा, लोगों की तो आदत होती है, ईर्ष्या से जलते हैं (शेखर० (2)—अज्ञेय, 153)।

ईर्ष्या से फुंकना—दे० ईर्ष्या से जलना।

ईश्वर का मारा—बदकिस्मत। प्र० मैं तो ईश्वर का मारा हूँ, मेरा हाल क्या पूछते हो।

ईश्वर के घर पहुँच जाना—मृत्यु को प्राप्त होना। प्र० कदाचित् ईश्वर इसकी रक्षा कर रहे हैं, जभी तो दिन-दिन निखरती आती है, नहीं अब तक तो ईश्वर के घर पहुँच गयी होती (मान० (3)—प्रेमचंद, 114)।

ईश्वर के नाम पर, -वास्ते—(1) और किसी के लिए न करने की इच्छा हो तो न सही परमात्मा के नाम पर ही सही; बहुत अनुनयपूर्वक किसी को कोई काम करने के लिए प्रेरित करना। प्र० ठीक है, मैंने तुम्हारी सब बातें अच्छी तरह सुन लीं। अब तुम ईश्वर के वास्ते चुप रहो।

(2) धर्मार्थ। प्र० उन्होंने अपनी सम्पत्ति का बहुत बड़ा हिस्सा ईश्वर के नाम पर दे दिया।

ईश्वर के वास्ते—दे० ईश्वर के नाम पर।

ईश्वर के हाथ होना—अपने वश में न होना। प्र० अपनी ओर से मैं पूरी कोशिश कर रहा हूँ पर काम का होना न होना ईश्वर के हाथ है।

ईश्वर को प्यारा होना—मर जाना। प्र० आज डेढ़ साल हुआ उसका छोटा बेटा ईश्वर को प्यारा हो गया।

उ

उँगलियाँ उछल आना—मारने के कारण चेहरे या बदन पर उँगलियों के निशान उभर आना। प्र० ऐसी ग्लानि अपने भीतर महसूस हो रही थी कि अपने दोनों गालों पर जोर से अंधाधुंध तमाचे-ही-तमाचे मारूँ कि उँगलियाँ-ही-उँगलियाँ उछल आएँ······(सारा०—यादव, 72)।

उँगलियों की पोरों पर गिनते—बहुत जल्दी-जल्दी। प्र० उँगलियों की पोरों पर दिन गिनते ही उड़ गए (अमृत०—नागर, 86)।

उँगलियों की पोरों पर गिनने लायक, -पर गिनने लायक—बहुत थोड़े। प्र० प्रथम तो इस दुस्समय में प्रजाहितैषी विचारशील राजा ही कम हैं जो हैं भी, तो इतने ही जितने अँगुलियों के पोरों पर गिने जा सकें (मिश्र निबंध०); जाति पर मर मिटने वाले तो उँगलियां पर गिने जा सकते हैं (रंग०—प्रेमचंद, 278)।

उँगलियों पर आ जाना—बहुत निकट होना। प्र० महिपाल के घर भाँजी के विवाह के दिन भी उँगलियां पर आ गये थे (बूँद०—नागर, 576)।

उँगलियों पर गिन-गिनकर दिन काटना, -दिन गिनना—(1) बहुत आतुरतापूर्वक प्रतीक्षा करना। प्र० केसरी सिंह चला गया और मैं उँगली पर गिन-गिन कर दिन काटने लगी (गोली—चतुर०, 315)।

(2) किसी प्रकार दिन काटना। प्र० दिन फिरेंगे या फिरेंगे ही नहीं। अब दिन हैं उँगलियों पर गिन रहे (चुभते०—हरिऔध, 3)।

उँगलियों पर गिनने लायक—दे० उँगलियों की पोरों पर गिनने लायक।

उँगलियों पर दिन गिनना—दे० उँगलियों पर गिन-गिनकर दिन काटना।

उँगलियों पर नचाना—वश में कर रखना, जैसा चाहे वैसा कराना। प्र० मैं चाहूँ तो मनुष्य को अपनी उँगलियों पर नचा सकती हूँ (ब्रह्म०—दे० स०, 38)।

उँगलियों पर नचाने वाला—पूरी तरह वश में रखनेवाला। प्र० देख लेना, सबको अपनी उँगलियों पर नचाने वाला यह समरू तुम्हारी नजरों की डुगडुगी पर पालतू बंदर-सा नाचने लगेगा (सात०—नागर, 13)।

उँगलियों पर नाचना—(1) बहुत अच्छी तरह जानकारी में होना। प्र० जोतिष की पोथियाँ उनकी उँगलियों पर नाचती रहती हैं (दे० दु०—शिव०, 18)।

(2) पूरी तरह वश में होना। प्र० रत्ना तो इसकी उँगलियों पर

नाचती है।

उँगली उठना—(1) कोई रुकावट या अहित होना। प्र० जय ने सुना पर बिलकुल नहीं सुना। कोई प्रतिबंध नहीं किया। राज्य की ओर से उँगली तक उठने नहीं दी गई (मान० (3)—प्रेमचद, 96-97)।
(2) निन्दा होना। प्र० तो उठेंगी न उँगलियाँ कैसे आँख में की गई अगर उँगली (बोल०—हरिऔध, 151)।
(3) मत व्यक्त करना। प्र० आपकी हिमायत में एक उँगली भी न उठेगी (मान० (6)—प्रेमचंद, 266)।
(4) इशारा होना। प्र० उनकी उँगली मेरी ओर ही उठी। मुझे बाध्य होकर उठना पड़ा।

उँगली उठाती आँखें—ऐसी दृष्टि जिससे भर्त्सना का भाव प्रकट होता हो। प्र० ×× वह मेहमानों, दोस्तों, परिचित-अपरिचितों—सभी की उँगली उठाती आँखों से बचता कतराता गलियों-गलियों मंदिर की ओर चला जा रहा है (सारा०—यादव, 8)।

उँगली उठाना—(1) निन्दा या बदनामी करना या होना। प्र० ऐसे ही कनक को काफी लोग जानते-पहचानते हैं। लोग उँगलियाँ उठायें तो अच्छा नहीं (झूठा० (1)—यशपाल, 209)।
(2) मारना (तनिक भी)। प्र० मंगल रानो पर उँगली भी न उठाता था (एक चादर०—बेदी, 93)।
(3) स्पष्ट संकेत करना। प्र० मैं उँगली उठाकर खुद अपनी गली के आस-पास के चार छः महल्लों और नगर के ऐसे कई लोगों को बतला सकता हूँ जो ××× (अमृत०—नागर, 68-69)।

उँगली उठाने वाले—बदनामी करने वाला। प्र० उसकी मदद तो कोई न करेगा, लेकिन तुम्हारे ऊपर उँगली उठानेवाले बहुतेरे निकल आयेंगे (कर्म०—प्रेमचंद, 88)।

उँगली करना—(1) हैरान करना। प्र० तुम हर समय मुझे उँगली क्यों करते रहते हो?
(2) उँगली घुसेड़ना। प्र० मैं तुम्हारी आँखों में उँगली कर दूंगा।

उँगली काटना, -दाँत से काटना—(1) विस्मय करना। प्र० रमाकांत को उस दयनीय दशा में देख जालपा उँगली दाँतों से काटकर रह गयी।
(2) पश्चात्ताप करना। प्र० अब उँगली काटने से क्या लाभ! पहले चेतते तो बात भी बनती।

उँगली कान में देना—कुछ न सुनना। प्र० मैं जब भी कुछ कहने चलता हूँ तो तुम उँगली कान में देकर बैठ जाती हो।

उँगली चटकाना, -तोड़ना, -फूटना या फोड़ना—उँगली को इस प्रकार दबाना कि चट का शब्द हो। प्र० फोड़ पायें तो रहें घर फोड़ते बैठ कर या उँगलियाँ फोड़ा करें (चुभते०—हरिऔध, 88)।

उँगली चढ़ा देना—बहुत तंग करना। प्र० तुम उसके रुपये जल्दी से लौटा दो, वह मुझे उँगली चढ़ाये हुए है।

उँगली (लियाँ) चमकाना, -नचाना, -मटकाना—हाथ मटकाना। प्र० जो न तलवार को सकें चमका तो लगें उँगलियाँ न चमकाने (चुभते०—हरिऔध, 88)।

उँगली चाटते रह जाना—सुस्वादु भोजन से किसी तरह न अघाना। प्र० तवहूँ हम जो मांस पकाय देई कि आप खाय के उँगली चाटत रह जाव (टेढ़े०—भग० वर्मा, 301)।

उँगली तोड़ना—दे० उँगली चटकाना।

उँगली दाँत से काटना—दे० उँगली काटना।

उँगली दिखाना, -पसारना—(1) निन्दा करना, दोष बतलाना। प्र० हरि त्यौं टुक दीठि पसारत ही अँगुरीन पसारन लोग लगैं (केशव०—केशव, 92); मगर इस उलट-फेर के समर्थन के लिए उनके पास ऐसी दलीलें थीं कि कोई उँगली न दिखा सकता था (गोदान—प्रेमचंद, 95)।
(2) डराना-धमकाना। प्र० जब देखा तब वे इसे उँगली दिखाया करते हैं।

उँगली दिखानेवाले का मुँह सी देना—निन्दा करने वालों की बोलती बंद कर देना। प्र० वह उँगली दिखानेवाली का मुँह सी देगी (गोदान—प्रेमचद, 271)।

उँगली न रखने देना—छूने न देना। प्र० वह तो अपनी किताब पर मुझे उँगली भी नहीं रखने देता।

उँगली देते पहुँचा पकड़ना, -पकड़ते पहुँचा पकड़ना—थोड़ा सहारा पाकर पूरा अधिकार जमाना। प्र० कहाँ एती चतुराई, पढ़ी आप जदुराई, आँगुरी पकरि पहुँचा कौं पकरत हौ (क० र०—सेनापति, 41); लेकिन इतना तो सरकार जानते ही हैं कि लोग उँगली पकड़ते-पकड़ते पहुँचा पकड़ लेते हैं (रंग० (1)—प्रेमचंद, 128)।

उँगली न दुखना—तनिक भी कष्ट न होना। प्र० जाय दुख तो जी हमारा जाय दुख देखिये उनकी न नेह उँगली दुखे (चोखे०—हरिऔध, 136)।

उँगली नचाना—दे० उँगली चमकाना।

उँगली पकड़कर राह दिखाना—बराबर पूरी तरह मार्ग प्रदर्शित करना। प्र० हर प्रसाद जी ने तो मुझे सदा उँगली पकड़कर राह दिखलाई है।

उँगली पकड़ते पहुँचा पकड़ना—दे० उँगली देते पहुँचा पकड़ना।

उँगली पकड़ाना—सहारा देना। प्र० आप मुझे उँगली पकड़ा दीजिए, बाकी का सब मैं सम्हाल लूंगा।

उँगली पर गिनते रात काटना—प्रतीक्षा करते-करते ही रात बीत जाना। प्र० जहाँ जहाँ दाम तहाँ मन धावै। अँगुरी गिनतां रैनि बिहावै (कबीर ग्रंथा०—कबीर, 169)।

उँगली पसारना—दे० उँगली दिखाना।

उँगली फूटना या फोड़ना—दे० उँगली चटकाना।

उँगली मटकाना—दे० उँगली चमकाना।

उँगली में लहू लगाकर शहीद बनना—बिलकुल नहीं या थोड़ा त्याग करके बड़ा यश लेना। प्र० धूर्त, कायर, रंगा हुआ सियार, राष्ट्रीयता का दम भरता है ×× उँगली में लहू लगाकर शहीदों में नाम लिखाना चाहता है (रंग० (2)—प्रेमचंद, 246)।

उँगली रखना—दोष दिखाना। प्र० ×× द्विवेदी जी ×× अपनी

भाषा को भ्रम रहित समझते हैं। उस पर किसी के उँगली रखने की गुंजाइश नहीं देखते (गु० नि०—बा० मु० गु०, 503)।

(किसी काम में) उँगली लगाना—(1) योग देना। प्र० कमला कढ़ाई में तनिक उँगली लगाओ न। मैं अकेली कब तक पूरा कर पाऊँगी।
(2) छूना। प्र० वह उँगली लगाने दे तब न मैं सिर दबाऊँ।

उकटा-पुरान करना, उघटा-पुरान करना—गई-बीती और दबी-दबाई बात की चर्चा करना, कहासुनी करना। प्र० संतो बुआ उस दिन इतना उकटा-पुरान कर गयीं कि कुछ मत पूछो।

उकठा काठ—नीरस व्यक्ति। प्र० उस उकठे काठ को साथ ले चलकर क्या आनन्द आयेगा?

उखटा रूख—बूढ़ा। प्र० इस उखटे रूख से काम पूरा न पड़ेगा। कोई और इंतजाम करो।

उखड़कर बोलना—झिझककर कहना। प्र० पहले वे चुप रहे फिर उखड़-कर धीरे-धीरे बोलने लगे।

उखड़ना—(1) अनमना हो जाना। प्र० सज्जन बहुत उखड़ा हुआ था (बूंद०—नागर, 418)।
(2) विचलित होना, मुकाबला न कर पाना। प्र० वकीलों ने इनसे भी सवाल किया, पर सच्चे गवाह क्या उखड़ते (गबन—प्रेमचंद, 314)।
(3) कुछ दम न रह जाना, प्रभाव नष्ट हो जाना। प्र० अब मेला उखड़ गया। चलो, अब गाना उखड़ गया।

उखड़ा हुआ—उदास, खिन्न। प्र० ×× रघ्घूसिंह जब घर पहुँचे तो बेहद उखड़े हुए थे (अमृत०—नागर, 126)।

उखड़ा-उखड़ा—उदास, अन्यमनस्क। प्र० दिन भर चेतन उखड़ा-उखड़ा-सा घूमता रहा था (चेतन—अश्क, 269)।

उखड़ी हुई बातें करना, -उखड़ी-उखड़ी बातें करना—(1) अव्यवस्थित-सी बातें करना। प्र० इस गृहस्थी की विशृंखलता के लिए वह अपने को अपराधी समझ रही थी। उसकी बातें उखड़ी-उखड़ी हो रही थीं (तितली—प्रसाद, 151)।
(2) उदासीनता या विरक्ति से बातें करना। प्र० क्यों नहीं तब जायगा कोई उखड़, बात हम उखड़ी हुई जब कहेंगे (चुभते०—हरिऔध, 34)।

उखड़ी-उखड़ी बातें करना—दे० उखड़ी हुई बातें करना।

उखड़ी-पुखड़ी सुनाना—अंडबंड बातें सुनाना। प्र० आप इतनी उखड़ी-पुखड़ी सुनायेंगे तो कोई क्यों आपके पास आयेगा।

उखड़े-उखड़े—बेमन से, उदास भाव से। प्र० वे यों ही खोए-खोए-से सख्त चेहरा किए एक ओर खड़े रहे और उससे नहीं, लीना से उखड़े-उखड़े बोलते रहे (प्रतीक्षा—यादव, 59)।

उखाड़ देना या उखाड़ना, -फेंकना—(1) परास्त कर देना, स्थिति प्रति-कूल बना देना। प्र० अब तुम भी एक तक़रीर कर डालो खन्ना, नहीं मेहता तुम्हें उखाड़ फेंकेगा (गोदान—प्रेमचंद, 165)।
(2) बिलकुल नष्ट करना। प्र० पुरातत्त्व की खोज में भी धर्म की तरह कुछ सिद्धांत जम-से जाते हैं, उन्हें उखाड़ने में देर लगती है (गुलेरी ग्रंथ (1)—गुलेरी, 159)।

उखाड़ फेंकना—दे० उखाड़ देना।

उखाड़ना—कुछ पाना; कुछ कर पाना। प्र० आप इतना शोरगुल करके क्या उखाड़ लेंगे, सो बतलाइए।

उखाड़-पछाड़—(1) इधर का उधर। प्र० यहाँ उखाड़-पछाड़ मत करो, शांति से बैठो।
(2) चुगलखोरी। प्र० उखाड़-पछाड़ करने की आपको बड़ी बुरी आदत है।

उखाड़ा न उखड़ना, उखाड़े एक न उखड़ना—(1) किसी प्रकार विचलित न कर पाना। प्र० मैंने हरचंद कोशिश की पर वह उखाड़ा न उखड़ा।
(2) कुछ कर न सकना। प्र० तुमसे कुछ उखाड़ी तो उखड़ती नहीं, फालतू बातें करते हो।

उखाड़े एक न उखड़ना—दे० उखाड़ा न उखड़ना।

उगती तारिका—नयी अभिनेत्री। प्र० इनके अतिरिक्त हसीना बाई और नसीम बाई, दो उगती हुई संगीत तारिकाएँ अपनी भरी जवानी में ही अल्लाह को प्यारी हो गईं (ये कोठे०—नागर, 107)।

उगते ही जल जाना—आरंभ होने के साथ ही नष्ट हो जाना। प्र० अवधेश बड़ा अच्छा कवि था पर उगते ही जल गया।

उगल-उगल कर खाना—बिना भूख के खाना, बेमन से खाना। प्र० इस तरह उगल-उगल कर क्यों खा रहे हो, छोड़ दो।

उगलना—(1) कह डालना, बकना। प्र० फिर क्या था, यह सुनते ही साधु-साहब प्लुत स्वर में हाँ-हाँ, कहकर लगे अँगरेज़ी उगलने (पद्म पराग—पद्म० शर्मा, 119)।
(2) वापिस देना। प्र० तुम्हें मेरे रुपये उगलने ही होंगे, इस तरह तुम उन्हें नहीं पचा सकते।
(3) रहस्य को प्रकट कर देना। प्र० जब मैंने कसकर चपेटा तो उसने सब उगल दिया।

उगलवा लेना—(1) जबर्दस्ती कहलवा लेना। प्र० अब की जिस रोज श्याम बाबू आए, उसी दिन उनसे सब उगलवा लूंगी (मा—कौशिक, 282)।
(2) वसूल कर लेना। प्र० तुम देखते चलो कि वह कैसे इनसे अपने रुपये उगलवा लेता है।

उग्र रूप धारण करना—(1) क्रांति-आंदोलन आदि का जोर पकड़ना। प्र० नेताओं की पूर्व योजना के विपरीत 1942 के आंदोलन ने उग्र रूप धारण कर लिया।
(2) क्रोधित होना। प्र० इतना सुनना था कि करुणानिधि ने वह उग्र रूप धारण किया कि हम सब घबड़ा गये।

उघटना—भला-बुरा कहना। प्र० उघटति हौ तुम मात-पिता लौं, नहिं जानति हौ यम कौ (सू० सा०—सूर, 2126)।

उघटा-पुरान करना—दे० उकटा-पुरान करना।

उघड़ना—(1) वास्तविकता प्रकट हो जाना। प्र० उघरहिं अंत न होहि निवाहू। कालनेमि जिमि रावन राहू (राम० (बाल)—तुलसी, 12)।

(2) साफ या सच बात कह देना। प्र० हम जातहिं वह उघरि परैगी, दूध दूध, पानी सो पानी (सू० सा०—सूर, 2341)।

उघड़ी ढांकना—अपमान या निन्दा को दूर करने का उपाय करना। प्र० अपनी उघड़ी ढांको, मेरी चिन्ता मत करो।

उघर कर नाचना—लोक-लाज छोड़कर मनमाना काम करना, अपनी असलियत प्रकट कर देना। प्र० अब हौं उघरि नच्यौ चाहत हौं, तुम्हैं विरद बिन करिहौं (सू० सा०—सूर, 134); उघरि नचे हैं, लोक-लाज तें बचे हैं, पूरी चोपनि रचे हैं, सुदरस, लोभी रावरे (आँखों के लिए) (घन० कवित्त—घना०, 65)।

उघारी टाँग—निर्लज्जतापूर्ण आचरण। प्र० दूसरों की उघारी टाँग मत देखो, अपनी देखो।

उचकना—अभिमान करना। प्र० भूषण तो ऐसा उचक रहा था कि बस! लगता था जैसे वही पहली बार प्रथम श्रेणी में पास हुआ हो।

उचकाना—(1) उड़ा ले जाना। प्र० दूसरों की चीजें उचकाने की तुम्हारी बड़ी बुरी आदत है।

(2) भगा ले जाना। प्र० वह श्रीकांत की बहन को फुसलाकर उचका ले गया।

उचक्का—सामान हटा-बढ़ा देने वाला, बिना भरोसे का आदमी। प्र० रामदीन का नाम मत लो, वह एक नंबर का उचक्का है।

उचटना, उचाट खाना, -होना—मन न लगना। प्र० मैं आजकल में यहाँ से चली जाऊँगी, अब मन नहीं लगता, उचट गयी हूँ।

उचटा देना—बहका देना। प्र० तुमने उसे उचटा कर भगा दिया?

उचाट खाना—दे० उचटना।

उचाट होना—दे० उचटना।

उचापत लाना—धूर्तता करना। प्र० वाह यार, तुम हमीं से उचापत लाते हो।

उचापत होना—साख होना। प्र० बाजार में दामोदर जी की उचापत है, उन्हें कोई असुविधा न होगी।

उच्च को गिरह आना (उच्च ग्रह)—भाग्योदय होना, जन्मपत्री में उच्च स्थान होना।

उच्छू आना या होना—दम घुटना।

उछंग लेना—आलिंगन करना। प्र० सूर स्याम ज्यों उछंग लई मोहिं त्यों मैं हूँ हँसि भेटौंगी (ब्र० सू० को०)।

उछल आना—निशान पड़ना। प्र० उसके हाथ में जहाँ-जहाँ बेंत लगी है, उछल आया है।

उछल पड़ना—एकाएक आवेश में आ जाना। प्र० ×× नव-वर्ष की उपाधियाँ पाने वालों की सूची में अपना नाम देखकर लक्ष्मीचंद्र उछल पड़ा (भूले०—भग० वर्मा, 330)।

उछलकर चलना—(1) शक्ति के बाहर काम करना। प्र० बेटी के विवाह में अपनी सामर्थ्य के अनुसार काम करो। उछलकर क्यों चलते हो?

(2) घमंड करना।

उछल-कूद करना—(1) बढ़-बढ़कर बातें करना। प्र० तो उछल-कूद क्या रहे करते जो किया छोड़ छल न देश भला (चुभते०—हरिऔध, 35)।

(2) बहुत खुश होना।

उछल-कूद दिखलाना—अभिमान की बातें करना। प्र० किसी शुभ परिणाम पर दृष्टि रखकर निन्दा-स्तुति, मान-अपमान आदि की कुछ परवा न करके प्रचलित प्रथाओं का उल्लंघन करने वाले वीर या उत्साही कहलाते हैं, यह देखकर बहुत-से लोग केवल इस विरुद के लोभ में ही अपनी उछल-कूद दिखाया करते हैं (चिन्ता०—शुक्ल, 8)।

उछल-कूद मचाना—शरारत करना। प्र० लड़कों ने बड़ी उछल-कूद मचा रखी है, सारी दोपहर आँख तक न लगने दी।

उछाल भरना, -मारना—उछलना। प्र० देखो न, बछड़ा कैसा उछाल भर रहा है।

उछाल मारना—दे० उछाल भरना।

उछाल-उछाल कर कहना—बार-बार काफी महत्त्व देकर चर्चा करना। प्र० श्रीमती चौधरी ने खुद ही लच्छू के आगे अपना भय प्रकट किया था कि चुनाव के प्रचार में उनका और लाला रेवतीरमन का सम्बन्ध अवश्य उछाल-उछाल कर बखाना जायगा (अमृत०—नागर, 646)।

उछाल-छक्की—बदचलन स्त्री।

उजड़ा घर बसना या बसाना—एक स्त्री की मृत्यु के बाद फिर से विवाह होना। प्र० आज नहीं तो कल, उजड़ा घर बसाना ही है।

उजड़ा बसाना—दे० उजड़ा घर बसना या बसाना।

उजड़ा-पुजड़ा—रद्दी, बर्बाद। प्र० बगीचा एकदम उजड़ा-पुजड़ा पड़ा है।

उजड़ी कोख—निस्संतान, वंध्या। प्र० मिल न इसकी सकी जड़ी कोई, कोख उजड़ी उजाड़ देती है (बोल०—हरिऔध, 225)।

उजड़ी दुनिया—पत्नी-पुत्र से हीन जीवन। प्र० अब मेरी उजड़ी दुनिया में हरियाली का लेश नहीं, प्रकाश की क्षीण रेखा भी न रही।

उजरत पर देना—भाड़े पर देना। प्र० यों नहीं तो उजरत पर देगा? वैसे ही ले लेना।

उजला मुंह करना या होना—कीर्ति या सम्मान प्राप्त करना या होना। प्र० पार्टी के नेता के रूप में उसका वरण उसका मुंह उजला करता है।

उजली गुजरान—सुख की जिन्दगी। प्र० तुम उजली गुजरान वाले, तुम्हारी-हमारी क्या तुलना।

उजली तबियत—(1) साफ नीयत, साफ बुद्धि। प्र० उनकी बात मत पूछो, बड़ी उजली तबियत उन्होंने पाई है।

(2) रंगीन तबियत। प्र० देखिए प्रयोग (1)।

उजली प्रकृति—भला व्यक्ति। प्र० रहिमन उजरी प्रकृति को, नहीं नीच को संग, करिया बासन कर गहे, करिखा लागत अंग (रहीम कवि०—

रहीम, 25)।

उजली समझ—सहज ही बात को समझ लेने वाली बुद्धि या व्यक्ति। प्र० आदमी की उजली समझ हो तो हर काम आसान हो जाता है।

उजाड़ करना या होना—(1) नाश करना या होना। प्र० नील गायों के झुंड ने सारी खेती उजाड़ कर दी।

(2) सूना या श्रीहीन करना या होना। प्र० सूरदास-प्रभु सुख के दाता, गोकुल चले उजारि कै (सू० सा०—सूर, 3605)।

उजाड़-खेड़ा—ऐसी जगह जहाँ कोई न बसता हो। प्र० उस उजाड़-खेड़े में कौन जाकर रहेगा?

उजाड़ना—बहुत बड़ी क्षति पहुँचाना। प्र० मैं आप लोगों को कष्ट नहीं देना चाहता, आपको उजाडकर अपना घर नहीं बनाना चाहता (रंग० (1)—प्रेमचंद, 226)।

उजाड़-मुंह, उजाड़-सूरत—मनहूस सूरतवाला।

उजाड़-सूरत—दे० उजाड़-मुँह।

उजान पर देना—भाड़े पर देना।

उजाला होना—(1) उन्नति होना, आनंद होना। प्र० वह कुंवर उदैभान जिससे तुम्हारे घर का उजाला है इन दिनों में कुछ उसके बुरे तेवर और बेडौल आँखें दिखाई देती हैं (इंशा०—इंशा, 96); तुमसे ही इस घर में उजाला होगा (सुहाग०—नागर, 94)।

(2) प्रिय होना। प्र० सूर बली वीर जसुमति कौं उज्यारौ लाल चित्त कौं करत चैन बैनहिं सुनाइ कै (क० र०—सेनापति, 18)।

(3) सबेरा होना। प्र० उजाला हो गया, उठो। कब तक सोते रहोगे?

उजाले का तारा—शुक्र ग्रह।

उजाले में चोरी कर लेना—सरे आम कुछ चुरा लेना। प्र० सूरदास ठगि रही ग्वालिनीं, मन हरि लियौ अंजोरि (सू० सा०—सूर, 888)।

उजाले-उजाले—दिन-दिन में। प्र० जल्दी-जल्दी पैर बढ़ाओ ताकि हम लोग उजाले-उजाले रामपुर पहुँच जायँ।

उझकना-बिझकना—उछल-कूद करना।

उझल पड़ना—(1) एकाएक क्रोध आ जाना। प्र० बात-बात में उझल पड़ने की तुम्हारी बड़ी बुरी आदत है।

(2) बहुत से मनुष्य, पशु या वस्तु का आ पड़ना। प्र० उस दिन कथा में सारा शहर उझल पड़ा था।

उटक्कर का फ़तीहा—व्यर्थ घूमनेवाला। प्र० अरे यार, उस उटक्कर के फ़तीहे को कौन पूछता है।

उटक्कर लैस—अटकलपच्चू। प्र० हर समय उटक्कर लैस बातें मत किया करो।

उट्ठी बोल जाना या बोला देना—हार जाना या हरा देना। प्र० किशनू में क्या दम है? वह तीन दिनों में ही उट्ठी न बोल दे तो कहना।

उठ आना—(1) भाड़े के मकान में रहने लगना। प्र० जब से दूसरे मकान में उठ आए हैं, बहुत दुखी रहते हैं (निर्मला—प्रेमचंद, 139)।

(2) रहने लगना। प्र० तो फिर मैं यहीं उठ आऊँ? (आजाद०—प्रेमचंद, 245)।

उठ खड़ा होना—(1) विरोध में खड़े होना। प्र० मक्कारों को उठने दो पैरों से मैं कुचलूंगा (नूर०—भक्त, 95)।

(2) प्रस्तुत होना, सामने आना। प्र० बीच में ही उनके विलायत जाने का प्रश्न उठ खड़ा हुआ।

(3) बीमारी के बाद स्वास्थ्य लाभ करना। प्र० भैया किसी तरह उठ खड़े हों, मैं तो यही मनाता हूँ।

(4) चलने को तैयार होना। प्र० उनका टका-सा जवाब पाकर मैं उठ खड़ा हुआ।

उठ जाना या उठना—(1) किसी चलन या भाव का बंद या बहुत कम हो जाना। प्र० भूषन भनत उठि गयौ है धरा सों धर्म, उठि गौ सिंगार सबै राजा राव राने को (भूषण ग्रन्था०—भूषण, 239); एक किसान दूसरे के खेत पर न चढ़े तो कोई जाफा कैसे करे, प्रेम तो संसार से उठ गया (गोदान—प्रेमचंद, 23); मैं भी हूँ सोचता जगत से कैसे उठे जिघिंसा (कुरु०—दिनकर, 33)।

(2) मृत्यु होना। प्र० इस वाक्य से लेखक जी महाराज का मतलब तो यह है कि पण्डित बलदेव प्रसाद हिन्दी के अच्छे लेखक थे, वह उठ गये (गु०—नि०—बा० मु० गु०, 441)।

(3) खर्च हो जाना। प्र० रग्घू अभी तो तेलहन बिका था, क्या इतनी जल्दी रुपये उठ गए? (मान० (1)—प्रेमचंद, 7)।

(4) भाड़े पर लग जाना। प्र० लाला ओंकार नाथ बहुत चाहते हैं कि ये खेत उठ जायं, लेकिन गाँव के लोग अब उन खेतों का नाम लेते डरते हैं (मान० (8)—प्रेमचंद, 74)।

(5) खेत में जुताई होना। प्र० भूमि अभी थोड़ी-सी ही उठ पाई है (मृग०—वृ० वर्मा, 43)।

(6) उन्नति करना, जागरित होना। प्र० निपुणिका का विवाह किसी कान्दविक वैश्य के साथ हुआ, जो भड़भूजे से उठकर सेठ बना था (बाण०—ह० प्र० द्वि०, 8)।

(7) चोरी चला जाना। प्र० नहीं बाबू साहब मैं यहाँ रुपये नहीं रखने दूंगा × × कहीं रुपये उठ जायें तो मैं बेगुनाह मारा जाऊँ। सुभीते का ताला भी तो नहीं है (गबन—प्रेमचंद, 99)।

(8) उपयोग में आना। प्र० कम-से-कम 50) के मिट्टी के बर्तन उठ गये होंगे (प्रेमा०—प्रेमचंद, 200)।

(9) विचलित हो जाना। प्र० कितेक शिव शंकर गए उठि, राम समाधि अजहूँ नहीं छूटि (कबीर ग्रंथा०—कबीर, 99)।

उठक-बैठक, उठ-बैठ—(1) हैरानी, दौड़-धूप। प्र० आज का सारा दिन तो उठ-बैठ में निकल गया।

(2) बेचैनी। प्र० सारी रात उठ-बैठ में काटी है, एक पल को भी चैन नहीं मिला।

(3) उठने-बैठने की कसरत। प्र० छह महीने नियम से रोज 50 उठ-बैठ करो—फिर सेहत देखना।

उठती उम्र,-कोंपल,-जवानी—युवावस्था का प्रारंभ। प्र० उठति बयस.

मसि भींजति, सलोने सुठि, सोभा देखवैया बिनु वित्त ही बिकैहैं (गीता० (अ)—तुलसी, 37); आह ! एक युग बीत गया, शोक और नैराश्य ने उठती जवानी को कुचल दिया (मान० (5)—प्रेमचंद, 61)।

उठती कोंपल—दे० उठती उम्र।

उठती जवानी—दे० उठती उम्र।

उठती-परती—जोत का एक नियम जिसके अनुसार खेत जोतने पर ही लगान देना पड़ता है।

उठती-पैंठ—हाट का दिन।

उठती बरात—खत्म होता हुआ काम। प्र० उठती बरात है। जो कुछ मिल गया, उसी को लाख समझ (दे० दु०—शिव०, 240)।

उठती शहवत—कामोत्तेजना।

उठती-बैठती बात—(1) प्रामाणिक बात। प्र० जो न होती बात उठती बैठती, बात दिल में बैठ जाती किस तरह (बोल०—हरिऔध, 196)।

(2) साधारण बात। प्र० हर उठती-बैठती बात की परवाह कौन करता है।

उठते-बैठते—हर स्थिति में, हर समय। प्र० ऊठत बैठत सूतक लागै सूतक परै रसोई (कबीर ग्रंथा०—कबीर, 288); पाँव भी रक्खें अहितपथ में न तो हित अगर कर दें न उठते-बैठते (चोखे०—हरिऔध, 123)।

उठना बैठना—(1) आना-जाना, संग-साथ रहना। प्र० आप जानते हैं कि बड़े-बड़ों में मेरा उठना-बैठना है (अमृत०—नागर, 363)।

(2) आज्ञाकारी और अनुगत होना। प्र० वहू की बात पर उठने-बैठने वाले बेटे को फूटी निगाह से नहीं देख सकती, वह (परती० —रेणु, 256)।

उठ-बैठ—दे० उठक-बैठक।

उठल्लू—जिसका कोई ठौर-ठिकाना या हक न हो। प्र० इधर जमींदार दयाराम ने इन सबको उठल्लू और बाग को लावारिस साबित किया (लिली—निराला, 83)।

उठल्लू का चूल्हा—(1) बेकाम इधर-उधर फिरनेवाला, निकम्मा। प्र० सीताराम एकदम उठल्लू का चूल्हा है, बरसों से ऐसे ही जिन्दगी बसर कर रहा है।

(2) जिसका कोई ठौर-ठिकाना न हो। प्र० मैं ठहरा उठल्लू का चूल्हा, जहाँ रख दीजिएगा वहीं पड़ा रहूँगा।

उठा देना—(1) किराये पर देना। प्र० लोगों ने सलाह दी, एक हल तोड़ दो और खेतों को उठा दो (मान० (1)—प्रेमचंद, 125)।

(2) खर्च कर देना। प्र० इस पर भी हमारे हिन्दुस्तानी साहब के पिता ने सपूत जी के पढ़ाने में भली चंगी रोकड़ उठा दी है (प्र० पो०—प्र० ना० मि०, 159)।

(3) स्थगित कर देना। प्र० राजन के ब्याह स मैंने मुंहदेखाई की रसमें उठा दी हैं।

(4) समाप्त कर देना। प्र० धीरे-धीरे करके सब समाप्त हो गया। दूकान तक उठा देनी पड़ी।

उठा धरना—तुलना में आगे बढ़ जाना। प्र० वाह भाई, तुमने तो मुझे भी उठा धर ! बहुत अच्छे।

उठा न रखना—कोई युक्ति बाकी न छोड़ना। प्र० तुमने तो अपने साध्य भर कोई बात उठा नहीं रखी ? (राधा० ग्रंथा०—राधा० दास, 776); तुम्हें न्याय मिले इसके लिए मैंने कुछ उठा नहीं रखा (गंगा०—उग्र, 80)।

उठा पाना—कर सकना। मैं यदि इस काम को उठा पाने में अपने को समर्थ पाता तो आपको दुबारा कहने का जरूरत न पड़ती।

उठा मारना—दे मारना, जमीन पर गिरा देना। प्र० गुस्से में आकर उसने फूलदान उठा मारा।

उठा रखना—(1) बाकी रखना, कसर छोड़ना। प्र० अब नहिं राखौं उठाइ, बैरी नहिं नान्हौं (सू० सा०—सूर, 3556); मैंने तुम्हारे हित स्वयं ही क्या उठा रखा कहो ? (जय०—गुप्त, 68)।

(2) स्थगित करना। प्र० बात कल के लिये उठा रखी गयी (कर्म० —प्रेमचंद, 64)।

उठा लेना—(1) मृत्यु होना, मृत्यु की कामना करना। प्र० उसने कितनी बार ईश्वर से विनती की थी, तुझे स्वामी के सामने उठा लेना मगर उसने यह विनती स्वीकार न की (मान० (1)—प्रेमचंद, 256)।

(2) हटा लेना। प्र० बहुत सोच-विचारकर मैंने अपनी आपत्ति हटा ली है।

(3) किसी कार्य का भार ले लेना। प्र० अब जब उनसे बात करने का दायित्व उठा लिया है तो उसे पूरा करना ही पड़ेगा।

उठाई-गीर—जिसका कोई घर-द्वार न हो, आवारा। प्र० उस उठाई-गीर का मेरे सामने नाम मत लो।

उठाऊ चूल्हा—दे० उठल्लू का चूल्हा।

उठाए उठना, बैठाए बैठना—पूरी तरह वश में होना। प्र० अरे मैं तो ऐसा कर दूँ कि वो तेरे उठाए उठे, तेरे बैठाए बैठे (बूंद०—नागर, 329)।

उठाकर ताक पर रखना—एकदम छोड़ देना। प्र० मेरी सारी आपत्तियों को उन्होंने उठाकर ताक पर धर दिया।

उठा-धर करना—चीजों को ठीक-ठीक जगह पर रखना। प्र० गृहस्थी में सौ झंझट हैं। और कुछ नहीं तो हर दस-पाँच दिन में उठा-धर करना ही पड़ता है।

उठा-धराई करना—इधर-उधर करना, गड़बड़ करना। प्र० लगता है अगर इस बार कोई उठाधराई नहीं करेंगे तो जिन्दा नहीं बचेंगे (सारा०—यादव, 111)।

उठान में ही लोट-पोट हो जाना—प्रारंभिक स्थिति में ही समाप्त हो जाना। प्र० × × तथापि अफसोस कि मेरा विचार अपनी उठान में ही लोट-पोट हो गया (मिश्र निबन्ध०)।

उठाना—(1) उन्नत करना। प्र० उसे उठाने की कोशिश में खुद मेरे गिर जाने का खतरा है (भूले०—भग० वर्मा, 490); मेरे मीत,

तुम किसी को उठाने में असमर्थ (बुद्ध०—बच्चन, 10)।

(2) बरदाश्त करना। प्र० आप ही बतलाइए, मैं भी आखिर कहाँ तक सब उठाता रहूँ ?

(3) खर्च करना। प्र० माँ डेढ़ सौ रुपये दे गयी थीं, तुमने पंद्रह दिनों में ही उठा दिये ?

(4) अलग रखना, हटाना। प्र० कढ़ाई को अब उठाओ, अंधेरा होने को आया।

उठा-पटक करना या होना—(1) कुश्ती होना। प्र० दोनों पहलवानों में घंटे भर तक उठा-पटक होती रही पर कोई फैसला न हो सका।

(2) झगड़े में मार-पीट होना। प्र० दोनों भाइयों में उठा-पटक होने लगी। मैंने छुड़ाने की बहुत कोशिश की पर दोनों ऐसा गुंथ गये थे कि अलग करना असंभव था।

(3) हार-जीत की चेष्टा करना। प्र० चाणक्य और राक्षस में उठा-पटक चालू रही—अंतिम निर्णय दूर दिख रहा था।

उठा-बैठी—दे० उठ-बैठ।

उठा-बैठी लगाना—चचल होना, शांत न रहना। प्र० वह तो चौबीसों घंटे उठा-बैठी लगाती रहती है, एक पल थिर नहीं बैठती।

उठौवा कमाना—दैनिक मजदूरी करना।

उठौवा पायखाना—वह पायखाना जिसे भंगी साफ करे।

उड़ आना—शीघ्र आना। प्र० ज्योंही वह किसी कार्यवश उसे पुकारती कि दयाला, चाहे कुछ भी कर रहा हो, काम छोड़कर और उड़कर आता (एक म्यान०—नानक, 250)।

उड़ चलना—(1) तेज दौड़ना, भागना। प्र० फिटन उड़ी जाती थी और उसके साथ ताहिरअली के होश भी उड़े जाते थे (रंग०(1)—प्रेमचंद, 208)।

(2) कुमार्ग स्वीकार करना। प्र० तुमने तो उड़ चलने का निर्णय कर लिया है तो फिर और क्या कहा जाय।

उठाया जाना—(1) दिया जाना। प्र० किन्तु ठीका उसे न देकर ऊँची दर पर उठाया गया।

(2) किसी प्रश्न को उपस्थित करना। प्र० मेरी तो इच्छा नहीं थी कि उस दिन यह सवाल उठाया जाय पर शांति नहीं मानी, वह चर्चा छेड़ने पर कटिबद्ध थी।

(3) इतराना, घमंड करना। प्र० घर में मोटर का आना था कि वह तो उड़ चला।

(4) भला लगना, अच्छा लगना। प्र० हल्के धानी रंग की साड़ी पहने वह उड़ चली।

उड़ जाना—(1) खर्च हो जाना। प्र० यह नहीं समझते कि उनके दो हजार कब के उड़ चुके (मान० (1)—प्रेमचंद, 138)।

(2) समाप्त हो जाना। प्र० न जाने क्यों जब भी वह लिखने बैठता तभी उसके सब विचार कहीं उड़ जाते (शेखर० (2)—अज्ञेय, 117)।

(3) गायब होना। प्र० जब चाहता है बिना पूछे उड़ जाता है (झूठा० (2)—यशपाल, 654)।

(4) चोरी चला जाना। प्र० सोने की करधनी, तौक × × निकालकर अम्मा ने अलग डिब्बे में रखे थे, सो रात में डिब्बा ही उड़ गया (बूंद०—नागर, 19)।

उड़कर—(1) स्पष्ट बात न करके, झांसा देकर। प्र० भला वे भला, हम पहचान गये, हमसे उड़कर कोई जायगा कहाँ ? (आजाद०—प्रेमचंद, 215)।

(2) अनुमानतः, अधिक-से-अधिक। प्र० देखो भाई, बहुत उड़कर करेंगे तो वे एक सेट गहना दे देंगे। इससे अधिक कहाँ से करेंगे।

उड़कर पड़ना—बहुत लालच करना। प्र० दूध-दही देखते ही वह उस पर उड़कर पड़ता है।

उड़कर पादना—छोटे मुंह बड़ी बात करना।

उड़ता बनना या होना—भाग जाना, गायब होना। प्र० दूर से ही मुझे आता देख वह उड़ता बना।

उड़ता-उड़ता—बिना पूरे विश्वास के, सशंक। प्र० कनक ने उड़ता-उड़ता अनुमान प्रकट किया—हो सकता है, फिल्म लाइन में ही कोशिश कर रहे हों (झूठा० (2)—यशपाल, 286–287)।

उड़ती आँख से, -नजर से, -निगाह से—सरसरी तौर पर। प्र० मुखदा ने पत्र को उड़ती आँखों से देखकर कहा × × ......(कर्म०—प्रेमचंद, 230)।

उड़ती आवाज—(1) अस्पष्ट ध्वनि। प्र० कहीं दूर से बांसुरी की उड़ती आवाज़ आ रही थी।

(2) अफवाह। प्र० कुछ उड़ती-सी आवाज़ तो मैंने भी सुनी थी पर उस समय मैंने बिलकुल गौर नहीं किया।

उड़ती खबर, -बात, -उड़ती खबर, उड़ती-पुड़ती खबर—बाजारू खबर, अफवाह। प्र० उड़ती-उड़ती खबर तो हमने भी सुनी है (राधा० ग्रंथा०—राधा० दास, 677); खबर तो उड़ती-उड़ती मुझे भी मिली है लेकिन मैंने ध्यान नहीं दिया (भूले०—भग० वर्मा, 172)।

उड़ती चिड़िया के पंख गिनना, -पहचानना, -भांपना—थोड़ा भी आभास मिलते ही वस्तुस्थिति को समझ लेना। प्र० यहाँ ऐसा अनाड़ी नहीं हूँ, उड़ती चिड़िया पहचानता हूँ (रंग० (2)—प्रेमचंद, 44); उड़ते पंछी के पर गिन सकते हैं यहाँ फिल्मों में (पैंतरे—अश्क, 54)।

उड़ती चिड़िया को हल्दी लगाना, -पकड़ना, उड़ते बुलबुल के पर बाँधना—बहुत होशियार होना। प्र० उसकी चपल बुद्धि ने जैसे उड़ती हुई चिड़िया पकड़ ली (गोदान—प्रेमचंद, 42); वह उल्लू का पट्ठा अगर कभी बम्बई में आता तो देखता कि बम्बई की फिल्मी जिन्दगी में चाबुकदस्त लोग किस तरह रगे-गुल से बुलबुल के—बैठे बुलबुल के नहीं उड़ते बुलबुल के पर बाँधते हैं (पैंतरे—अश्क, 63)।

उड़ती चिड़िया पकड़ना—दे० उड़ती चिड़िया को हल्दी लगाना।

उड़ती चिड़िया पकड़नेवाला—बहुत होशियार। प्र० उड़ती चिड़िया पकड़नेवाले हैं (आजाद०—प्रेमचंद, 246)।

उड़ती चिड़िया पहचानना—दे० उड़ती चिड़िया के पंख गिनना।

उड़ती चिड़िया भाँपना—दे० उड़ती चिड़िया के पंख गिनना ।

उड़ती नजर डालना—यों ही ज़रा-सा देख लेना । प्र० एक उड़ती हुई नज़र सुजला की ओर डालते हुए व्यास ने फिर उसी ×× ढंग से उत्तर दिया (ज्ञान०–यशपाल, 53) ।

उड़ती नजर से—दे० उड़ती आँख से ।

उड़ती निगाह से—दे० उड़ती आँख से ।

उड़ती बात—दे० उड़ती खबर ।

उड़ती-उड़ती—इधर-उधर से । प्र० उसकी बात उड़ती-उड़ती मुझ तक पहुँचती रहती है (ब्रह्म०–दे० स०, 275) ।

उड़ती-उड़ती खबर—दे० उड़ती खबर ।

उड़ती-उड़ती नजर से—दे० उड़ती आँख से ।

उड़ती-पुड़ती खबर—दे० उड़ती खबर ।

उड़ते बुलबुल के पर बाँधना—दे० उड़ती चिड़िया को हल्दी लगाना ।

उड़द के आँटे की तरह ऐंठना—(1) बहुत नाराज़ होना । प्र० अब बस भी करो, कहाँ तक उड़द के आटे की तरह ऐंठा करोगे ।
(2) गर्व करना ।

उड़द पढ़कर मारना,-मारना—टोना झाड़ना, भूत भगाना ।

उड़द पर सफेदी—बहुत कम । प्र० उसमें खूबसूरती क्या है, उड़द पर सफेदी है ।

उड़द मारना—दे० उड़द पढ़कर मारना ।

उड़नधाईं—धूर्तता, चालाकी । प्र० अब अपनी उड़नधाईं बंद करो नहीं तो पछताओगे ।

उड़नधाईं करना,-खेलना,-बताना,-झाईं करना,-झाईं की बातों में डालना—इधर-उधर की बातें करके बहकाना । प्र० मदन बान उनकी इस रुखाई को उड़नधाईं की बातों में डालकर बोली (इंशा०–इंशा०, 125); और लोग भी इसी तरह की उड़नधाइयाँ बताते थे, किसी को किसी पर विश्वास न था (गोदान–प्रेमचंद, 186) ।

उड़नधाईं खेलना—दे० उड़नधाईं करना ।

उड़नधाईं बताना—दे० उड़नधाईं करना ।

उड़नछू करना—बड़ी सफाई से किसी वस्तु को गायब कर देना । प्र० देखते-देखते उसने टेबुल पर से कलम उड़नछू कर दी ।

उड़नछू होना—भाग जाना, गायब हो जाना । प्र० बड़े लाट होकर आपके भारत में पदार्पण करने के समय इस देश के लोग श्रीमान् से जो-जो आशाएँ करते और सुख-स्वप्न देखते थे, वह सब उड़नछू हो गये (गु० नि०–बा० मु० गु०, 198) ।

उड़नझाईं करना—दे० उड़नधाईं करना ।

उड़नझाईं की बातों में डालना—दे० उड़नधाईं करना ।

उड़न-पखेरू—चंचल । प्र० कहैं कबीर सुनहु रे संतहु इहु मन उड़न पखेरू बन का ।

उड़न-फाखता—सीधा-सादा, बेवकूफ ।

उड़ना—(1) साफ-साफ न बताना, छिपाना । प्र० तू मुझसे इतना क्यों उडती है (भा० ग्रं० (1)–भारतेन्दु, 520); वाह, आप तो ऐसा उड़ रहे हैं, गोया यह भी छिपाने की बात है (गोदान–प्रेमचंद, 150) ।
(2) बहुत खुश होना । प्र० मुझसे बातें मत करो—मैं आज उड़ रहा हूं । जानते हो, मुझे 125) की नौकरी मिल गयी है ।

उड़ाई हुई—किसी के साथ भगायी गई स्त्री । प्र० वह उड़ाई गई है, इसलिए उसकी गणना 'हृता' वर्ग में की जायगी (सुहाग०–नागर, 28) ।

उड़ा-उड़ा रहना—खिन्न या उदास होना । प्र० निराधार पढ़ाई में जी न लगता था । घर से उड़ा-उड़ा रहने लगा (अमृत०–नागर, 108) ।

उड़ाऊ,-खाऊ—सब धन को मौजमस्ती में बरबाद करनेवाला । प्र० लड़का समझदार है । और छोकरों की तरह उड़ाऊ नहीं है (गोदान–प्रेमचंद, 207) ।

उड़ाऊ-खाऊ—दे० उड़ाऊ ।

उड़ान की लेना—गप्प हाँकना । प्र० वे उड़ान की लिये जा रहे थे और हम लोग मजा ले रहे थे ।

उड़ान भरना,-लेना—कल्पना करना । प्र० उसने तो अब तक का समय उड़ान भरने में ही लगाया है, किया कुछ नहीं ।

उड़ान मारना—(1) बहाना करना । प्र० मुझसे उड़ान क्यों मारते हो ? जो कहना है साफ-साफ कह दो ।
(2) कल्पना करना । प्र० तुम बैठे उड़ानें मारो ।
(3) छलांग मारना । प्र० कुसुम को आता देख बंदर ने उड़ान मारी और साड़ी लिए-दिए बगल के पेड़ पर जा विराजा ।

उड़ान लेना—दे० उड़ान भरना ।

उड़ानधाईं—दे० उड़नधाईं ।

उड़ाना—(1) व्यय करना । प्र० पाँच हज़ार दहेज में दे दें, और पाँच हज़ार नेग-न्यौछावर, बाजे-गाजे में उड़ा दें तो फिर हमारो बधिया ही बैठ जायगी (मान० (1)–प्रेमचंद, 64) ।
(2) नष्ट कर देना । प्र० उर ऊँचे उछ्वास तृनावर्त, तिहिं सुख सकल उड़ाई दिए (सू० सा०–सूर, 4238) ।
(3) चुपके से किसी की वस्तु को गायब कर देना । प्र० महात्मा जी ने उन्हें सब्ज बाग दिखाकर उनकी घड़ी, अंगूठियाँ, रुपए सब उडा दिये (गोदान–प्रेमचंद, 62) ।
(4) हड़प लेना । प्र० मन में सोच लिया था, होरी को किसी अरदब में डालकर गाय को उड़ा लेना चाहिए (गोदान–प्रेमचंद, 144) ।
(5) अफवाह फैलाना । प्र० किसी ने उड़ा दिया है कि तुम लोगों को लड़का पसन्द नहीं है (झूठा० (1) –यशपाल, 156) ।
(6) तुच्छ समझकर ध्यान न देना । प्र० कई पंडितों ने इस बात को करामाती किंवदन्ती कहकर उड़ा दिया है (कबीर–ह० प्र० द्वि०, 11) ।
(7) हटा देना, न रखना । प्र० शायद मेरी वाली जगह बहुत जल्द ही उड़ा दी जायेगी (अंधेरे० –राकेश, 293) ।
(8) बहाना बनाकर ले लेना । प्र० कहीं अम्मा से 10 रु० उड़ा लाये, कहीं अब्बाजान से किताब के बहाने से पाँच-दस ऐंठ लिये

(कर्म० –प्रेमचंद, 64)।

(9) अपहरण करना। प्र० विवाह की प्रथा उस समय केवल यह थी कि वर-पक्ष अपने सूर-सामन्तों को लेकर सशस्त्र आता था और कन्या को उड़ा ले जाता था (मान० (2) –प्रेमचंद 19)।

उड़ी-उड़ाई—इधर-उधर से सुनी हुई। प्र० ऐसी उड़ी-उड़ाई बातों पर यकीन करना छोड़ो।

उड़ी-उड़ी बातें करना—बेमन से बात करना। प्र० तुम तो अब ऐसी उड़ी-उड़ी-सी बातें करने लगे कि क्या कहूँ (मा–कौशिक, 106)।

उड़ू-उड़ू होना—तिरस्कृत होना। प्र० तुम्हें तो हर तरह से उड़ू-उड़ू होना पसंद है तो वही सही।

उड़ेंच निकालना—दोष निकालना। प्र० हर काम में उड़ेंच क्यों निकालते रहते हो?

उतर आना—प्रस्तुत होना, किसी भाव या रुख को अपना लेना। प्र० लेकिन इतने पर भी राय साहब ने दग़ा की, तो मैं भी शठता पर उतर आऊँगा (गोदान–प्रेमचंद, 176)।

उतर जाना—(1) पहले से दुर्बल हो जाना। प्र० "मैं तो मोटी-ताजी कभी न थी।" "इस वक्त तो पहले से भी उतरी हुई हो" (कर्म० –प्रेमचंद, 243)।

(2) प्रौढ़ होना। प्र० मतलब यह कि बाई जी उम्र से उतर चुकी थीं (ज्ञान०–यशपाल, 44)।

(3) स्वर का नीचे के स्वर की ओर झुकाव होना। प्र० पंचम का तार उतर गया है, पहले मिलाओ।

(4) किसी अंग का कटकर अलग होना। प्र० तलवार के एक भरपूर हाथ से उसका सिर उतर गया।

(5) फल का अधिक पक जाना। प्र० यह आम हटाओ, उतर गया है।

उतर पड़ना—किसी काम को करने के लिए कटिबद्ध होना। प्र० अब तो मैं समाज-सेवा के काम में उतर पड़ा हूँ, पीछे हटने का प्रश्न नहीं उठता।

उतरकर—निम्न श्रेणी का, घटकर, तुलना में कम। प्र० वह जात में मुझसे उतर कर है (ठेठ०–हरिऔध, 8); पहले वाले गीत से तो यह उतरकर ही है।

उतरती उम्र—ढलती उम्र। प्र० पजनेश का वाक्य पूरा नहीं हो पाया था—कि उतरती अवस्था की एक स्त्री डलिया झाड़ू लिये दरवाजे पर आई (झाँसी०–वृं० वर्मा, 45)।

उतरन, उतरन-पतरन, उतारन—इस्तेमाल की हुई चीज़, किसी का द्वारा पहनकर इस्तेमाल की हुई चीज़। प्र० मैंने अभी तक विट्टी बहन जी की उतरन पहनी है। अब मैं नई जरूर खरीदूँगी (अमृत०–नागर, 113)।

उतरन-पतरन—दे० उतरन।

उतरना—(1) कहीं ठहरना, डेरा करना। प्र० भलेहिं नाथ कह कृपा निकेता। उतरे तहं मुनिवृन्द समेता (राम० (बाल)–तुलसी, 224); तुम्हारे ही वास्ते तो जी पर खेलकर यहाँ उतरे हैं (भा० ग्रं० (1) –भारतेन्दु, 525)।

(2) पार करना। प्र० सनमुख लोह भरत सन लेऊँ, जिअत न सुरसरि उतरन देऊँ (राम० (अ)–तुलसी, 550); नदी उतर फिर आये तहाँ, बैठी सोचती थी देवकी जहाँ (प्रेम०–ल० ला०, 19)।

(3) अतिथि रूप में आना। प्र० एडीटर साहब! एक एण्टी-कांग्रेस आपके घर में उतर रहा है, आप उसे मार तो न डालेंगे (गु० नि० –बा० मु० गु०, 259)।

(4) दाम में कमी करना। प्र० आप समझते हैं यह कुछ और उतरेगा? (गबन–प्रेमचंद, 119)।

(5) हड्डी सरकना। प्र० वह उतर कब सका अखाड़े में, हो कलाई उतर गयी जिसकी (बोल०–हरिऔध, 150)।

उतरा आना—बहुतायत होना। प्र० आजकल बाजार में आम तो एकदम उतरा आया है!

उतरा गला,-स्वर—(1) दबी आवाज़। प्र० चंद्रिका असमंजस में पड़ गया ×× उतरे गले से कहा—मैं भी किला देख लेता (कुल्ली०–निराला, 47)।

(2) नीचे उतरा हुआ स्वर। प्र० उतरे स्वर में मत बजाओ, तबला मिला लो।

उतरा चेहरा,-मुंह—मलिन चेहरा, उदास चेहरा, अपमानित चेहरा। प्र० उसका उतरा हुआ चेहरा देखकर तारा और छोटी, दोनों को यह अनुभव हुआ (बूंद०–नागर, 61)।

उतरा मुंह—दे० उतरा चेहरा।

उतरा स्वर—दे० उतरा गला।

उतरा कर चलना—गर्व करना। प्र० मन बहुत उतराकर चल बेटी, बाद में पछतायेगी।

उतराकर बहना—बिना गंभीरतापूर्वक विचार किए किसी बात के प्रभाव में बह चलना। प्र० कान्यकुब्ज विचित्र देश है, आयुष्मान्। काशी में लोग धर्म के नाम पर इस तरह उतराकर नहीं बहते (बाण०–ह० प्र० द्वि०, 183)।

उतराना—बहुतायत होना। प्र० नायलन की साड़ियाँ तो आजकल बाजार में उतरा आयी हैं, जहाँ देखो वहाँ वही।

उतान चलना,-होना—बहुत घमंड करना। प्र० भिखमंगे बाप की बेटी ठहरी, बड़े घराने में पड़ते ही उतान हो गयी (दे० दु०–शिव०, 34)।

उतान होना—दे० उतान चलना।

उतार पर होना—(1) क्रोध या जोश का धीरे-धीरे ठंडा होना। प्र० दो-चार रोज़ और सब्र करो। बाबूजी का गुस्सा उतार पर है। वे ठंडे हो जायँ तो बातें करूँ।

(2) फल का अधिक पकना। प्र० खरबूजा उतार पर है, आज खा डालो।

(3) ढलती उम्र। प्र० हसीना बानू उस समय उतार पर थीं।

उतार-चढ़ाव—(1) भली-बुरी स्थिति; उत्थान-पतन। प्र० इस ब्राह्मणी स्त्री गंगादासी का जीवन बचपन ही से बड़ा दुःखमय और उतार-चढ़ाव का रहा था (एक०–मुल्क०; 50)।
(2) दाम कम-ज्यादा होना। प्र० आजकल बाजार बड़ा अनिश्चित है—रोज उतार-चढ़ाव होता रहता है।

उतार-चढ़ाव देखना—(1) अनुभवी होना, जिन्दगी में बहुत कुछ अच्छा-बुरा सहे होना। प्र० मैंने जिन्दगी में बहुत उतार-चढ़ाव देखा है, सब समझ सकती हूँ।
(2) चेहरे के बनते-बिगड़ते भावों को देखना। प्र० मैं उनके चेहरे का उतार-चढ़ाव देखता रहा।
(3) किसी वस्तु की बनावट देखना। प्र० मैं जरा इस मूर्त्ति का उतार-चढ़ाव देख रहा था।

उतार-चढ़ाव देना,-बताना—(1) धोखा देना। प्र० गोविन्द ने मुझे खूब उतार-चढ़ाव दिया।
(2) बहकाना। प्र० देखिए प्रयोग (1)।

उतार-चढ़ाव बताना—(1) ऊँच-नीच समझा देना। प्र० मैंने तो तुम्हें उतार-चढ़ाव सब बता दिया था। फिर भी तुमने कोई ध्यान नहीं दिया।
(2) दे० उतार-चढ़ाव देना।

उतारन—दे० उतरन।

उतारना—अवनत कराना, घमंड चूर करना। प्र० अपनी तरफ से मैं जितना लोगों को ऊँचा उठाने की कोशिश करता गया, लोग उतना मुझे उतारने पर तुले रहे (चतुरी०–निराला, 38)।
(2) फाड़ना, अलग करना। प्र० अच्छा, आप सात के दाम दे दीजिए। बोलिए, कितनी खरीदारी मंजूर है? दस गज़ उतारूँ? (आज़ाद०–प्रेमचंद, 76)।
(3) नकल करना। प्र० उस दिन क्लास में उसने मन्मथ को ऐसा उतारा कि सब हँसते-हँसते लोट-पोट हो गये।
(4) पीना। प्र० पंडित जी लोटा भर भंग हलक के नीचे उतार गये।
(5) गिराना। प्र० ऊपर की मंजिल उतार दी गयी है।
(6) व्यक्त करना। प्र० कविता के कोमल भावों को वे खड़ीबोली में सफलतापूर्वक नहीं उतार पाये।
(7) वश में करना, अनुकूल कर लेना। प्र० भाभी को मैंने उतार लिया है, तुम चिन्ता मत करो।

उतारा उतारना,-करना—किसी दैवी या भूत-प्रेत के कुप्रभाव को दूर करने के लिए टोना-टोटका आदि करना। प्र० कर उतारा हम उतारेंगे उसे भूत सिर पर जो किसी के चढ़ गया (बोल०–हरिऔध, 15)।

उतारा करना—दे० उतारा उतारना।

उतारू होना—प्रस्तुत होना। प्र० छैलू की अम्मा, समझाव इन लड़कन का। क्या करन पर उतारू भए हैं ई लोग? (अमृत०–नागर, 365)।

उतारे का माल—चोरी का माल, मुफ्त में मिला माल। प्र० यह उतारे का माल नहीं है भाई जो सत्रह रुपये में मिल जायगा।

उत्तम-मध्यम कहना—भला-बुरा कहना। प्र० शांतिलाल ने बहुत उत्तम-मध्यम कहा पर उसके कानों पर जूँ तक न रेंगी।

उत्तर आना—उत्तर देते बनना। प्र० उतरु न आव बिकल बैदेही (राम० (अ)–तुलसी, 432)।

उत्तीके बजना—बे रौनक होना। प्र० सारे आयोजन में उत्तीके बज रहे थे, बिलकुल जमा नहीं।

उत्तू—बेवकूफ। प्र० तुम ठहरे एकदम उत्तू, समझे।

उत्तू करना,-बनाना—(1) बहुत मारना। प्र० मैंने उसे जी भरकर उत्तू किया।
(2) बेवकूफ बनाना। प्र० देखिए (1)

उत्तू बनाना—दे० उत्तू करना।

उत्तू-उत्तू करना—मारते-मारते बुरी गत बनाना। प्र० खबरदार, वहाँ जाना मत नहीं तो उत्तू-उत्तू कर दिये जाओगे।

उत्थान-पतन—उन्नति और अवनति। प्र० जीवन में उत्थान-पतन तो लगा ही रहता है।

उत्साह की लहर दौड़ना—उत्साह होना। प्र० घाट पर उत्साह की लहर दौड़ गई (सुहाग०–नागर, 11)।

उत्साह टूटना, -ठंडा पड़ना, -ठंडा होना,-ढीला पड़ना—उत्साह समाप्त होना। प्र० इसका संपादन-भार पंडितवर दामोदर शास्त्री जी पर आया जब कि पंडित जी का उत्साह ढीला पड़ा और चंद्रिका अस्त हुई (राधा० ग्रंथा०–राधा० दास, 513); उसका सारा उत्साह ठंडा पड़ गया (गोदान–प्रेमचंद, 304)।

उत्साह ठंडा पड़ना—दे० उत्साह टूटना।

उत्साह ठंडा होना—दे० उत्साह टूटना।

उत्साह ढीला पड़ना—दे० उत्साह टूटना।

उत्साह पर पानी पड़ना—किसी से प्रतिकूल उत्तर पाकर उत्साह एकदम खत्म हो जाना। प्र० इससे सहसा मेरे बाहर जाने के उत्साह पर पानी पड़ गया (अंधेरे-राकेश, 33)।

उत्साह बढ़ाना—प्रोत्साहन देना। प्र० आप उनका उत्साह तो बढ़ाते नहीं उल्टे बुरा-भला कहते हैं।

उथलना-पुथलना, उथल-पुथल करना,-मचाना—(1) उलट-पुलट करना। प्र० उसने रुपये ढूँढ़ने के चक्कर में सारी आलमारी उथल-पुथल कर दी।
(2) क्रांति करना; परिवर्तन लाना। प्र० सन् 1857 का जागृति ने सारे देश में उथल-पुथल मचा दी।

उथल-पुथल करना—दे० उथलना-पुथलना।

उथल-पुथल मचाना—दे० उथलना-पुथलना।

उथल-पुथल होना—(1) स्थिति में परिवर्तन होना। प्र० इधर नन्दराम के परिवार में भी बड़ा उथल-पुथल हो गया (भिखा०–कौशिक, 222)।

(2) हलचल होना, गड़बड़ होना। प्र० हरिसन रोड पर आज काफी उथल-पुथल हो गयी है।

उदमाती—बदचलन स्त्री।

उदय से अस्त तक—पृथ्वी के एक छोर से दूसरे छोर तक, सारी पृथ्वी में। प्र० उदय अस्त तक यश है उनका छा रहा।

उदय होना—उन्नति होना। प्र० भगवान् करे तुम्हारा उदय हो, तुम हर तरह से सुखी रहो।

उदर अघाना—खूब पेट भर भोजन करना।

उदर जिलाना—पेट पालना। प्र० माँगत बार-बार सेष ग्वालन को पाऊँ, आप लियौ कछु जानि भक्ष करि उदर जियाऊँ (ब्र० सू० को०)।

उदर भरना, उदरपूर्ति करना—(1) जीविका चलना। मातु पिता बालकन्हि बोलावहिं, उदर भरै सोइ धर्म सिखावहिं (राम० (उ)—तुलसी, 1128)।

(2) भोजन करना। प्र० ग्वारनि के पनवारे चुनि-चुनि, उदर भरांजै सीथिनि (सू० सा०—सूर, 1108)।

उदरपूर्ति करना—दे० उदर भरना।

उदासी खींचना—सब ओर से विमुख हो जाना। प्र० पिछले कई महीनों से बाबू जी ने उदासी खींच ली है।

उदासी छाना—उदास होना। प्र० आज मन पर न जाने कैसी उदासी छायी हुई है।

उदाहरण सामने रखना—आदर्श उपस्थित करना। प्र० बच्चों के सामने तुम क्या उदाहरण रख रहे हो, यह भी तो देखना होगा।

उधराना सतुआ—जो अपने उपयोग में आनेवाली चीज़ न हो। प्र० यह खूब कही कि यह साड़ी मेरी हुई। उधराना सतुआ पितरों के नाम। तुम्हें पसन्द न आयी तो मुझे दे दी।

उधार करना—उधार लेना। प्र० कहीं से चार चांदनियाँ उधार कर लो, काम चल जायगा।

उधार खाए बैठना—(1) किसी आसरे पर दिन काटना। प्र० उनकी तो जैसे बुद्धि भ्रष्ट हो गई है। × × मुरारी लाल के नाम पर उधार खाए बैठी हैं (मान० (1)—प्रेमचंद, 66)।

(2) हर समय तैयार रहना। प्र० शास्त्रार्थ करने के लिये वह उधार ही खाये बैठा रहता था (मृग०—वृं० वर्मा, 401)।

उधार खाना—(1) कर्ज लेना। प्र० सब का कर्ज खाकर तो बैठे हो, किसी को तुमने बख्शा है।

(2) अपकृत होना, वश में होना। प्र० हमने उनका उधार खाया है क्या जो सारी ज़िन्दगी उनकी हाँ-जी हाँ-जी करते रहें?

उधार खाना और भुस में आग लगाना—बहुत अधिक ऋण कर लेना जो अत्यन्त हानिकर हो उठे।

उधार चढ़ना या चढ़ाना—कर्ज लेना या होना। प्र० जो भलेमानस होते तो दूसरे का उधार न चढ़ाते (अमृत०—नागर, 581)।

उधार न छोड़ना—कोई कसर न रखना। प्र० मेरा उसूल है कि अन्यायी को पूरा दंड दो। उसमें मैं कभी उधार नहीं छोड़ता।

उधार लगना—उधार पर दिया हुआ होना। प्र० चार हज़ार रुपये उधार लगे हैं, बाकी बैंक में हैं।

उधार लेना—किसी दूसरे से कुछ लेना; अपनी सम्पत्ति न होना। प्र० आजकल अधिकांश साहित्यकार विदेशों से विचार उधार लेकर साहित्य रचना करते हैं।

उधार-खाता—उधार देना-लेना। प्र० क्या करूँ राकेश, उधार-खाते ही गृहस्थी चलानी पड़ती है।

उधेड़कर रख देना—सारा कच्चा-चिट्ठा खोल देना। प्र० इस नयी रचना में तो आपने आत्मवादियों को उधेड़कर रख दिया (गोदान—प्रेमचंद, 56)।

उधेड़ना—(1) भेद खोल देना। प्र० उसके भेद को इस तरह उधेड़ने की कोशिश क्यों कर रहे हो?

(2) बुरी गति करना, मार डालना। प्र० खबरदार, मेरे मुँह न लगना नहीं तो मैं तुम्हें उधेड़कर रख दूंगा।

उधेड़बुन करना,-में पड़ना,-रहना,-लगना—सोच-विचार में होना। प्र० शांतिकुमार × × फिर उसी उधेड़-बुन में पड़ गये (कर्म०—प्रेमचंद, 232); तो आपने इतने दिनों में यह उधेड़-बुन की है? (परख—जैनेन्द्र, 94)।

उधेड़बुन में पड़ना—दे० उधेड़बुन करना।

उधेड़बुन में रहना—दे० उधेड़बुन करना।

उधेड़बुन में लगना—दे० उधेड़बुन करना।

उनका-सिफत—उनका (एक कल्पित पक्षी) की तरह कभी न दिखलाई पड़नेवाला व्यक्ति। प्र० आजकल तो आप उनका-सिफत हो रहे हैं।

उनकी-सी कहना—उनका समर्थन करना। प्र० भाई, सुनो, सूबेदार साहब के सामने तो मैं उनकी-सी कह रहा था (आजाद०—प्रेमचंद, 255)।

उन्नति के शिखर पर—बहुत उन्नत अवस्था में। प्र० चंद्रगुप्त के समय में गुप्त साम्राज्य उन्नति के शिखर पर था।

उन्नीस बिस्वे—अधिकतर, अधिकांश। प्र० मेरे ख्याल में उन्नीस बिस्वे तो वे आयेंगे ही नहीं।

उन्नीस होना—तुलना में कुछ घटकर होना। प्र० हमारी पतित समाज की नीचे को गिरने की झुकावट आगे से अब इक्कीस बिस्वे है, उन्नीस नहीं हुई (भट्ट नि०—बा० भट्ट, 109)।

उन्नीस-बीस का फर्क होना,-बैठना,-होना—दो व्यक्तियों या वस्तुओं में बहुत थोड़ा अंतर होना। प्र० पोटा ने जैसा सुना था, वैसी ही है। दूसरी भी उन्नीस-बीस ही बैठेगी (मृग०—वृं० वर्मा, 116); दोनों के कपड़े में उन्नीस-बीस का फर्क है कोई भी ले लो।

उन्नीस-बीस बैठना—दे० उन्नीस-बीस का फर्क होना।

उन्नीस-बीस होना—दे० उन्नीस-बीस का फर्क होना।

उन्हीं पैरों लौट जाना—तुरंत लौट जाना। प्र० "अभी लो, सरकार"—अचिन्तराम उन्हीं पैरों लौट गया।

उपक्रम बाँधना—किसी काम को करने की तैयारी करना। प्र० जी हाँ, उपक्रम बाँध रहा हूँ।

उपदेश की खराई होना—उपदेश बुरा मालूम पड़ना, अनुकूल न होना। प्र० मीठी कथा कटुक-सी लागति, उपजत है उपदेस खराई (सू० सा०–सूर, 4217)।

उपरफट्टू—व्यर्थ या बेमतलब काम या व्यक्ति। प्र० सारे दिन उपरफट्टू में निकल जाता है। इन सब उपरफट्टुओं से तो मैं हैरान आ गया हूँ।

उपरफट्टू बात—इधर-उधर की दिखावटी बात। प्र० मेरी बाँह छाँड़ि दै राधा, करत उपरफट बातैं (सू० सा०–सूर, 1299)।

उपराचढ़ी—स्पर्धा। प्र० कर किसी से बेसबब उपराचढ़ी, आँख पर चढ़ना भला होता नहीं (बोल०–हरिऔध, 39)।

उपराला करना—पक्ष लेना। प्र० झगड़ा होता है तो होने दो–तुम उपराला करने क्यों चले?

उपरी-उपरा—एक-दूसरे से बढ़ जाने की इच्छा। सुशीला और कांति में हर समय उपरी-उपरा लगा रहता है।

उपलासी फूलना—कामोद्दीप्त होना।

उपहास चलना—उपहास होना। प्र० या व्रज मैं उपहास चलत है, सुनि-सुनि श्रवन रहति मनहीं मन (सू० सा०–सूर, 2299)।

उपाय चलना—युक्ति कारगर होना। प्र० कठिन पासि कछु चलैन उपाई (कबीर ग्रंथा०–कबीर, 231); मैंने हरचंद कोशिश की पर कोई उपाय नहीं चला।

उपाय रचना—उपाय करना, युक्ति करना। प्र० जाइ उपाय रचहु नृप एहू (राम० (बाल) तुलसी, 178)।

उपारना-परियाना—नष्ट करना। प्र० यह लड़का सब कुछ उपार-परियाकर ही रहेगा।

उपासी पड़ना—उपवास करना या होना। प्र० बड़ा बहूजी तीन दिन से उपासी पड़ी हैं।

उफ करना या होना—नष्ट कर देना। प्र० सब उफ करके ही शशिकांत को चैन मिला।

उफ न करना—(1) चुपचाप चोट सह लेना। मैं सब कुछ चुपचाप सह गया मैंने उफ तक न की।

(2) चुप रहना। प्र० तुम्हारा भला इसी में है कि इस मामले में तुम उफ भी न करो।

उफनना या उफनाना—लड़ने को तैयार रहना, गुस्सा होना। प्र० रामू हर समय उफनाता रहता है न जाने कहाँ की गर्मी चढ़ी रहती है; शेखर का उत्तर सुन पिताजी उफन पड़े।

उफर पड़ना—भाड़ में जाना। प्र० उफर पड़े तुम्हारी पढ़ाई जिसने सारे घर का सत्यानाश कर डाला।

उबटना खेलना—गले मिलना (मुसलमानों में विवाह के समय की एक रस्म)।

उबलती चाटना—अभिमान करना। प्र० एक दिन उसकी पिटाई हो जायगी तो सब उबलती चाटना निकल जायगा।

उबलना—(1) क्रोध करना, गुस्से में बकबक करना। प्र० दुबे जी, लड़का नादान है, खून में गरमी है, जरा-जरा-सी बात पर उबल पड़ता है, तो इसकी बात का बुरा न मानियेगा (भूले०–भग० वर्मा, 16)।

(2) बड़े जोश में आना, तीव्र असंतोष होना। प्र० मैं जो कुछ लिखता हूँ, बहुत उबल कर लिखता हूँ पर पीछे लगता है कि वह अच्छा नहीं है (शेखर० (2)–अज्ञेय, 114)।

(3) मन का भेद खोल देना। प्र० मैं ऐसी कच्ची नहीं कि थोड़े में बहुत उबल पड़ूँ (भा० ग्रं० (1)–भारतेन्दु, 444)।

उबाल आना—एकाएक हृदय में उत्कट क्रोध या असंतोष आदि का होना। प्र० उनके मन-ही-मन में रह-रहकर बड़ा उबाल आता था (अमृत० –नागर, 23)।

उबाल ठंडा हो जाना—जोश या क्रोध का शांत हो जाना। प्र० बस, इतने में ही उबाल ठंडा हो गया?

उबासी लेना—अपनी बोरियत प्रकट करना। प्र० भाषण सुनते-सुनते लोग ऊब गये, उबासी लेने लगे।

उभ-चुभ करना या होना—मन का शंकित या भावाकुल होना। प्र० चाचाजी की बातें सुनकर मैं उभ-चुभ करने लगा।

उभर चलना, उभरकर चलना, उभरना—(1) गर्व करना। प्र० हर समय उभरकर चलना ठीक नहीं।

(2) उन्नति करना। प्र० उनका कारखाना आजकल खूब उभर चला है।

(3) गुप्त बात को प्रकट करना। प्र० धीरे-धीरे करके वह उभरने लगा और कंपनी का सारा कच्चा-चिट्ठा सुना गया।

उभरकर चलना—दे० उभर चलना।

उभरना—(1) हालत ठीक होना। प्र० इतने दिनों के कष्ट और संकट के बाद अब कहीं उभर पाया हूँ।

(2) दे० उभर चलना।

उभार पर होना—बढ़ना। प्र० आजकल रोजगार खूब उभार पर है।

उभार लेना—ऊपर आना, उतराना। प्र० हम सब किनारे पर खड़े देखते रह गये—उसने एक बार उभार लिया और फिर लहरों में खो गया।

उभारना, उभारा देना—भड़काना। प्र० कालू ने उसके साथियों को उभारने की बहुत कोशिश की पर वह असफल रहा।

उभारा देना—दे० उभारना।

उभारा लेना—किसी बीमारी का कम होकर फिर से उभरना। प्र० भैया की बीमारी बार-बार उभारा ले रही है, कुछ समझ में नहीं आ रहा है कि क्या करूँ।

उमंग उठना, भरना—मन में उत्साह होना; मन में कोई खयाल आना। प्र० अचानक उमंग उठी कि दार्जिलिंग चला जाय, बस झट प्रोग्राम बना डाला।

उमंग भरना—दे० उमंग उठना।

उमगना, उमड़ना—(1) खूब खुश होना, भावातिरेक होना। प्र० पुत्ती गुरु की पत्नी अपनी संतानों में से एक का विवाह कार्य आरंभ करते हुए अपने महत्त्व से आप ही उमगी-उमगी पड़ती थीं (अमृत०

—नागर, 85)।

(2) एकत्र होना; आना। प्र० सुबह से सारा शहर इस क्षेत्र की ओर ही उमड़ पड़ा (अमृत०—नागर, 400)।

(3) वेग से बहना। प्र० तीन दिनों की लगातार वर्षा के कारण नदी उमग चली।

उमड़-उमड़कर रोना—बिलख-बिलख कर रोना। प्र० बिदा होते समय संतो उमड़-उमड़कर रोई।

उमड़-घुमड़ कर बादल बरसना, उमड़ना-घुमड़ना—खूब वृष्टि होना। प्र० सावन का महीना—उमड़-घुमड़कर बादल बरस रहे थे।

उमड़ना—दे० उमगना।

उमड़ना-घुमड़ना—(1) पूरी तरह आच्छादित कर लेना, बार-बार आना-जाना। प्र० सारी रात कांति के मन में यही भाव उमड़ते-घुमड़ते रहे। वह किसी तरह सो नहीं पाई।

(2) दे० उमड़-घुमड़कर बरसना।

उम्मीद टूटना, -तोड़ना—इच्छा पूरी न होना या न करना। प्र० ऐसे उम्मीद न तोड़ो बहूजी। मैं बड़ी आसा लगाकर आयी थी।

उम्मीद तोड़ना—दे० उम्मीद टूटना।

उम्मीद पर हाज़िर होना—आशा लेकर आना। प्र० मैं तो इसी उम्मीद पर हाज़िर हुआ था कि आप ज़रूर कुछ-न-कुछ करेंगे।

उम्मीद बंधना—आशा होना। प्र० मास्टर साहब की आज की बातों से कुछ उम्मीद बंध रही है।

उम्मीद बर आना—इच्छा पूरी होना। प्र० अब तो तुम्हारी उम्मीद बर आई!

उम्मीद से होना, -होना—गर्भवती होना। प्र० बहू के कुछ उम्मीद है?

उम्मीद होना—दे० उम्मीद से होना।

उम्मीदवार खड़ा करना—चुनाव आदि में अपने पक्ष के व्यक्ति को चुनाव लड़ने के लिए खड़ा करना। प्र० हमारे संघ ने यह निश्चय भी किया है कि कौन्सिल में अब की जो जगह खाली हो, उसके लिए आपको उम्मेदवार खड़ा किया जाय (गोदान—प्रेमचंद, 66)।

उम्र कटना या काटना, -टेरना—उम्र बीतना या बिताना। प्र० मैं तो उम्र टेर रहा हूँ। ऐसी जिन्दगी का होना न होना दोनों बराबर है।

उम्र का पैमाना भर जाना, -प्याला भर जाना, -तमाम होना—जीवन का अंत निकट होना। प्र० अब मेरी उम्र का पैमाना भर गया है, मैं जल्दी ही रुखसत पाने वाला हूँ।

उम्र का प्याला भर जाना—दे० उम्र का पैमाना भर जाना।

उम्र के दिन भरना—दुःख से जिन्दगी बिताना। प्र० करीमू किसी तरह उम्र के दिन भर रहा है, और क्या?

उम्र खिसकना—उम्र बीतना। प्र० किसी तरह उम्र खिसकी जा रही है। इसे जीना थोड़े ही कहते हैं।

उम्र गंवाना—उम्र को बिना किसी उपयोग में लाए बिता देना। प्र० मूरख मन बिन हरी भजन के क्यों तू उमर गंवाता?

उम्र टेरना—दे० उम्र कटना या काटना।

उम्र ढलना, -लदना—प्रौढ़ावस्था की ओर बढ़ना। प्र० कब आयहौ औसर जानि सुजान बहीर लौं बैस तौ जाति लदी (घन० कबित्त—घना०, 92); बात कुछ इस प्रकार चली थी कि कुछ स्त्रियाँ अनन्त यौवना होती हैं, जो आयु ढल जाने पर वृद्धा नहीं लगतीं (ब्रह्म०—दे० स०, 54)।

उम्र तमाम करना या होना—जीवन नष्ट करना या होना। प्र० मैं सामने वालों की तरह अस्मत फ़रोशी का धंधा ही करके अपनी उम्र तमाम नहीं करना चाहती (अमृत०—नागर, 550)।

उम्र तमाम होना—दे० उम्र का पैमाना भर जाना, उम्र तमाम करना।

उम्र पकना—बुढ़ौती आना। प्र० अब हम लोगों की उम्र पकने लगी है, महिपाल (बूँद०—नागर, 514)।

उम्र लदना—दे० उम्र ढलना।

उम्र भर का पट्टा लिखना या लिखाना—सारी ज़िन्दगी के लिए वचनबद्ध होना। प्र० मैंने क्या तुम्हारी उम्र भर का पट्टा लिखाया है?

उम्र भर की रोटियाँ सीधी कर लेना—जीवन भर के लिए खाने-पीने का प्रबंध कर लेना। प्र० मैंने तो इस एक सौदे से अपनी उम्र भर की रोटियाँ सीधी कर लीं।

उर आनना, -लाना—आलिंगन करना, प्यार करना। प्र० अपने-अपने गृह तैं दौरीं लै पाती उर लाई (सू० सा०—सूर, 4104); बहुरि लाइ उर लीन्हि कुमारी (राम० (बाल)—तुलसी, 115); दौरि भुजनि भरि लईं सबनि लै-लै उर लाईं (नंद० ग्रंथा०—नंद, 13)।

उर ताड़ना करना—छाती पीटना। प्र० उर ताड़ना करहिं बिधि नाना (राम० (ल)—तुलसी, 987)।

उर (में) धरना, -में रखना—ध्यान में रखना, स्मरण रखना, विश्वास करना। प्र० जौ हरि-व्रत निज उर न धरैगौ (सू० सा०—सूर, 75); अब उर धरहु ब्रह्म बर बानी (राम० (बाल)—तुलसी, 86)।

उर पर खाना—सीधे झेलना, किसी आंतरिक आघात को सहना। प्र० फूंक-ज्वाल हमहुं लागी, कुंवरि उर पर खाइ (सू० सा०—सूर, 1363)।

उर फाड़ना—बहुत कष्ट देना। प्र० ओ रे निर्मोही, तू फाड़ता उर क्यों है?

उर में अड़ना—हृदय में स्थान लेना। प्र० वहै मुसक्यानि, वहै मृदु बतरानि, वहै लड़कीली बानि आनि उर मैं अरति है (घना० कबित्त—घना०, 3)।

उर में आना, -उपजना—ध्यान में आना, मन में आना। प्र० बहुत भाँति करि मैं समुझायौ एक न उर मैं आवत (सू० सा०—सूर, 4763); सती सो दसा संभु कै देखी। उर उपजा संदेहु बिसेखी (राम० (बाल)—तुलसी, 64)।

उर में उपजना—दे० उर में आना।

उर में गड़ना—(1) हृदय में रूप बस जाना। प्र० उर में माखन चोर गड़े (सू० सा०—सूर, 4349)।

(2) कसकना। प्र० उस दिन का तुम्हारा निर्मम व्यवहार आज भी

मेरे उर में गड़ रहा है।

उर में गांसी लगना—हृदय को बहुत पीड़ा पहुँचना। प्र० सूरदास सोई पै जानै, जा उर लागै गाँसी (सू० सा०—सूर, 4325)।

उर में छाई—हृदय पर पूर्ण प्रभाव होना। प्र० रही न लाज प्रीत उर छाई (राम० (बाल)—तुलसी, 345)।

उर में दाह होना—मन को कष्ट होना। प्र० हठ कीन्हें अंतहुँ उर दाहू (राम० (बाल)—तुलसी, 257)।

उर में रखना—दे० उर धरना।

उर में लाना—हृदय में स्थान देना। प्र० जिनकौं इक अनन्य व्रत सूझै, क्यों दूजौ उर आनै (सू० सा०—सूर, 4333); मंजु मधुर मूरति उर आनी। भई सनेह सिथिल सब रानी (राम० (बा) तुलसी, 346)।

उर मे न समाना—भावातिरेक होना। प्र० लै आई ब्रजराज गृह, आनंद उर न समाय (सू०सा०—सूर, 4713)।

उर में हूलना—मन में चुभना या पीड़ा पहुँचाना। प्र० नहिं या युक्ति मृदुल श्रीमुख की जे तुम उर में हूलहु (भ्र० सा०—सूर, 247)।

उर लाना—दे० उर आनना।

उर सालना—हृदय में कसक होना। प्र० वेध्यौ जीव विरह कै भालै, राति दिवस मेरे उर सालै (कबीर ग्रंथा०—कबीर, 185); लखनु भरतु रिपुदवन सुनि भा कुबरी उर सालु (राम० (अ)—तुलसी, 384)।

उर से टालना—मन से दूर करना, याद भुलाना। प्र० वह मुसकान मनोहर चितवनि, कैसें उर तैं टारौं (सू० सा०—सूर, 4239)।

उर से लगाये रहना—बहुत प्यार करना। प्र० भाभी तो बेटे को हर समय उर से लगाये रहती हैं।

उर दाह होना—हृदय को पीड़ा पहुँचना। प्र० तब प्रभु गुहहि कहेउ घर जाहू सुनत सूख मुखु भा उर दाहू (राम० (अ)—तुलसी, 469); सूरत जराय कियौ दाह पातसाह-उर स्याही जाइ सब पातसाही-मुख झलकी (भूषण ग्रंथा०—भूषण, 163)।

उरिण करना—किसी उपकार के बदले में स्वयं भी कुछ करके मुक्त होना। प्र० कैसे हूँ कर उरिन कीजै, गोपिकनि सौं मोहिं (सू० सा०—सूर, 4099); गुरुहि उरिन होतेउँ श्रम थोरें (राम० (बाल)—तुलसी, 281)।

उलंग होना—बिना देख-रेख के आवारा-सा हो जाना। प्र० लावारिस है, बाप-माँ, भाईबन्द कोई नहीं है, तभी ऐसा उलंग हो गया है (शेखर०(2)—अज्ञेय, 66)।

उलझन—दुविधा, पेंचीली स्थिति। प्र० विकच नलिन लखें सकुचि मलिन होति, ऐसी कुछु आँखिन अनोखी उरझनि है (घन० कवित्त—घना०; 16)।

उलझन पड़ना—झंझट उठ खड़ी होना। प्र० रमा के विवाह में एक नयी उलझन पड़ गयी है।

उलझन में डालना—चिन्ता में डालना, झंझट में डालना। प्र० यह सब कहकर तो तुमने मुझे उलझन में डाल दिया।

उलझना—(1) झगड़ पड़ना। प्र० मैं इस अंधे के पीछे बरबस उनसे उलझ पड़ी (रंग०—प्रेमचंद; 224)।

(2) आसक्त होना। प्र० अब तो उससे मन उलझ गया है, अपने ऊपर मेरा ही वश नहीं रहा।

(3) किसी काम में लगना। प्र० मैं तो आजकल बहन के ब्याह में ऐसा उलझ गया हूँ कि और किसी बात का होश ही नहीं है।

उलझना उलझाना—बात-बात में दखल देना। प्र० जब तक लालाजी लेहाज करते हैं तब तक ही उनका उलझना उलझाना बन रहा है (परीक्षा०—श्री० दास)।

उलझना-पुलझना—बुरी तरह फंसना। प्र० मैं तो इस झमेले में ऐसा उलझ पुलझ गया हूँ कि निकलने का कोई रास्ता ही नहीं दीखता।

उलझाना—(1) रोक रखना, तंग करना। प्र० सूर स्याम माखन दधि लीजै, जुवतिनि कत उरझावत (सू० सा०—सूर, 2141)।

(2) फंसाना। प्र० उसने जबरदस्ती मुझे उलझा दिया, नहीं तो मेरा इस काम से क्या सरोकार?

(3) जेल की सजा देना।

उलझा-सुलझा—बुरा-भला। प्र० मुझसे जो उलझा-सुलझा बन पड़ेगा, कर दूंगा।

उलझेड़े में फंसना—बखेड़े में फंसना। प्र० मैं तो बड़े उलझेड़े में फंस गया हूँ।

उलट जाना—(1) मर जाना। प्र० कबरी न हिली न डुली, चीखी न चिल्लाई, बस एक दम उलट गई (इंस्टा०—भग० वर्मा, 92)।

(2) सरसरी तौर पर पढ़ जाना। प्र० सारी कथाओं को उलट जाइए, यहाँ के प्रधान देवी-देवता ××मानवी स्तर वाले स्त्री या पुरुष के साथ सम व्यवहार करते नहीं दीख पड़े (सा० जि०—ल० प्र० सु०; 81)।

(3) प्रतिकूल हो जाना, बदल जाना। प्र० पिछले पचास-पचपन वर्षों में धीरे-धीरे करके हमने एक शक्ति अर्जित की थी—अनेक बमकांड हुए, अनेक सामाजिक क्रांतियाँ आईं, त्याग और तपस्या का महत्त्व बढ़ा, पैसे वाले तथाकथित आदमियों की जगह निःस्वार्थ देश-प्रेमियों और ईमानदार व्यक्तियों की साख बढ़ी······लेकिन आज सब उलट गया (अमृत०—नागर, 45)।

(4) बात कहकर फिर पलट जाना। प्र० ऐन मौके पर वह उलट गया और मेरा बंटाधार हो गया।

उलट देना—स्थिति को बिगाड़ देना। प्र० अब नहिं समुझति कौन पाप तैं, बिधना सो उलटायौ (सू० सा०—सूर; 4153)।

उलट पड़ना—(1) जुट जाना। प्र० उस दिन के जलसे में सारा नगर उलट पड़ा।

(2) नाराज होना। प्र० मेरा इतना कहना था कि शशिभूषण बाबू उलट पड़े।

(3) बात कहकर पलट जाना। प्र० देखो, ठीक मौके पर तुम उलट मत जाना।

उलटकर जवाब देना—उत्तर-प्रत्युत्तर देना। प्र० तुम्हारी इतनी हिम्मत

कि उलटकर जवाब देते हो ?

उलटकर न देखना—बिलकुल ध्यान न देना। प्र० वह यह कहकर चला आया और फिर कभी उसने उधर उलटकर भी न देखा।

उलटकर बात न करना—कोई जवाब न देना। प्र० उन्होंने मेरी सारी दलीलें चुपचाप सुन लीं पर खुद उलटकर बात तक न की।

उलट-पुलट,-फेर—स्थिति-परिवर्तन। प्र० सिसौदियों के भाग्य ने बहुत उलट-फेर देखे हैं (विष०–प्रेमी, 91)।

उलट-पुलट करना या होना—(1) गड़बड़ कर देना या होना। प्र० तुमने तो सारा मामला ही उलट-पुलट कर दिया।

(2) इधर-उधर कर देना या होना। प्र० कमरे का सारा सामान उलट-पुलट कर दिया था—किताबें बिखरी पड़ी थीं, आलमारी के कपड़े जमीन पर फैले हुए थे।

उलट-पुलटकर—भली-भाँति। प्र० मैंने तो उलट-पुलटकर देख लिया था। अब यह फटी कैसे निकल आयी ?

उलट-पेंच की बातें करना, -फेर की बातें करना—एक बात पर दृढ़ न रहना, कभी कुछ कभी कुछ कहना, धोखाधड़ी की बातें करना। प्र० रामदयाल जी को उलट-पेंच की बातें बिलकुल पसन्द नहीं हैं, उनसे साफ बातें करना।

उलट-पेंच में फंसना—झंझट में पड़ना। प्र० मैं भी न जाने कहाँ की उलट-पेंच में फंस गया।

उलट-फेर—दे० उलट-पुलट।

उलट-फेर करना या होना—दे० उलट-पुलट करना या होना।

उलट-फेर की बातें करना—दे० उलट-पेंच की बातें करना।

उलट-फेर होना—परिवर्त्तन होना। प्र० धरमशाला तो हमारे बाबा के नाम ही से बनेगी बैजूबाबा, इसमें कोई उलट-फेर नहीं हो सकता (अमृत०–नागर, 402)।

उलटा—विपरीत, प्रतिकूल। प्र० उलटौ न्याउ सूर के प्रभु कौ वही जाति माँगति उतराई (सू० सा० सूर, 4217); कोऊ दूर न कर सकै, विधि के उलटे अंक (वृ० स०–वृन्द, 76)।

उलटा अर्थ लगाना—जो कहा जाय उसका प्रतिकूल अर्थ लगाना। प्र० तुम हर बात का उलटा अर्थ क्यों लगाते हो ?

उलटा घड़ा बाँधना,-घड़ा बाँधना—और-का-और करना। प्र० रमाकांत के हाथ में चीज़ पड़ी और उसका उलटा धड़ा बंधा।

उलटा ज़माना—वह समय जब भली बात बुरी समझी जाय, अंधेर का समय। प्र० भाई साहब, आजकल ऐसा उलटा ज़माना आ गया है कि पूछिए मत। लड़के बात सुनने को राजी नहीं।

उलटा जवाब देना—धृष्टता करना। प्र० अपनी गलती मंजूर करने के बदले उलटा जवाब देते हो।

उलटा तवा—बहुत काला। प्र० ये तुम्हारा उल्टा तवा, उसकी बीबी, उसके तमाम घरवाले मिलकर खा गये उसे, वरना बहोत बड़ा आर्टिस्ट होता महिपाल (बूंद०–नागर, 29)।

उलटा धड़ा बाँधना—दे० उलटा घड़ा बाँधना।

उलटा पाठ पढ़ाना—विरोधी बात बताना। प्र० मैं आया था तुमसे सलाह लेने—सोचा था कोई उपाय बताओगे, सो तुम उल्टा पाठ पढ़ा रहे हो (भिखा०–कौशिक, 163)।

उलटा पासा पड़ना—अपनी युक्ति या चाल सफल न होना। प्र० अपना पासा तो इस बार उलटा पड़ गया।

उलटा फिरना, -लौटना—तुरंत लौट पड़ना। प्र० उनका कोरा-सा जवाब सुनते ही वह उलटा लौट गया।

उलटा लटकना—किसी चीज़ के लिए बहुत प्रयत्न करना। प्र० वह उलटकर लटक जाये तो भी उसे यह नौकरी नहीं मिल सकती।

उलटा लौटना—दे० उलटा फिरना।

उलटा समझना—गलत समझना। प्र० मैंने तो उसके भले के लिए ही उसे चले जाने को कहा पर तुषारकांति ने उलटा समझ लिया।

उलटा हाथ—बायां हाथ। प्र० उलटे हाथ से लो, जूठे से नहीं।

उलटा हाथ देना—बायें हाथ से मारना, अत्यंत तुच्छ समझकर मारना। प्र० × × मुँह बंद कर नहीं दूँगा उलटा हाथ, मुंह टेढ़ा हो जायगा (आजाद०–प्रेमचन्द, 9)।

उलटा-पुलटा—गलत, अनुचित। प्र० तब उलटी पलटी फबी, जब सिसु रहे कन्हाइ (सू० सा०–सूर, 2079)।

उलटा-पुलटा करना या होना—दे० अलट-पुलट करना।

उलटा-सीधा—(1) अंडबंड, भला-बुरा। प्र० हम लोग जल्दी-जल्दी कुछ उल्टा-सीधा खाकर शिकार पर जाने को तैयार हो गए (एक० –मुल्क०; 261)।

(2) बिना क्रम का। प्र० तुमने सब उलटा-सीधा करके रख दिया न।

उलटा-सीधा समझाना,-सिखाना—गलत बातें बतलाना, बहकाना। प्र० परन्तु उस समय के अंग्रेज हाकिमों को न जाने क्या उल्टी-सीधी समझा कर अमलों ने उर्दू ही हिन्दुस्तानी भाषा है, समझा दिया (राधा० ग्रंथा०–राधा० दास, 84); ज़रा धीरे बोलो, नहीं तो कोई ज़रा से में समझेगा कि मैं तुम्हें जाने क्या उलटा-सीधा सिखा रही हूँ (सारा०–यादव, 23)।

उलटा-सीधा सिखाना—दे० उलटा-सीधा समझाना।

उलटी आंतें गले पड़ना,-में आना,-टाँग गले पड़ना, टांग गले में आना—मुसीबत आना। प्र० सोचा था, दो-चार साल और ज़िन्दगी का मजा उठा लूँ, पर उलटी आँतें गले पड़ीं (निर्मला–प्रेमचंद, 49)।

उलटी आँतें गले में आना—दे० उलटी आँतें गले पड़ना।

उलटी कहना—असंगत बात कहना। प्र० तुम्हारी तो आदत पड़ गयी है, हर समय उल्टी ही कहोगी।

उलटी गंगा बहना या बहाना—अनहोनी या विपरीत बात होना या करना। प्र० पुरुष निर्द्वन्द्व बैठे मूछों पर ताव देते हैं, मगर यहाँ उलटी गंगा बह रही है—× × (मान० (4)–प्रेमचन्द, 256–257)।

उलटी चपत लगना—अपने लाभ के लिए किये गये काम में अपना नुकसान होना। प्र० मैं तो उनके पास इस आशा से गया था कि वे मेरी

नौकरी लगवा देंगे । पर वह वात तो हो ही नहीं पायी, बाढ़ पीड़ितों को सहायता देने की उलटी चपत मुझे ही लग गयी ।

उलटी चाल—विपरीत आचरण । प्र० इन्द्री अजित, बुद्धि विषयारत, मन की दिन-दिन उलटी चाल (सू० सा०–सूर, 127) ।

उलटी छावनी बाँधना—झूठमूठ किसी अभियोग में फँसाना । प्र० रामू के खिलाफ उलटी छावनी बाँधकर उसने अपना बदला ले लिया ।

उलटी छुरी का घाव मारना—बहुत पीड़ा पहुँचाना । प्र० मैं नहीं जानता था कि गोवरधन ऐसा दगा करेगा । उलटी छुरी का घाव मार गया (दे० दु०–शिव० 244) ।

उलटी छुरी से काटना—बहुत दुःख देना । प्र० इस तरह हर समय उलटी छुरी से काटना सरासर अन्याय है ।

उलटी छुरी से गला रेतना—बहुत दुःख देना । प्र० तुमने मेरे साथ भलाई की है या उलटी छुरी से मेरा गला रेता है ? (गोदान–प्रेमचंद, 241)।

उलटी झाड़ू फेर देना—एकदम हटा देना या महत्त्व न देना । प्र० किसी ने इस तरह मेरी वात काटी, तो मैंने भी उनकी सलाह पर इस प्रकार एकदम उलटी झाड़ू फेर दी (दिल०–जी०, 27) ।

उलटी टाँगें गले पड़ना—दे० उलटी आंतें गले पड़ना ।

उलटी टाँगें गले में आना—दे० उलटी आंतें गले पड़ना ।

उलटी पट्टी पढ़ाना—गलत बातें बनाकर अपने अनुकूल बनाने का उद्योग करना । प्र० ×× हम जानते हैं कि एक श्रेणी के जीव ऐसे भी हैं जो इस समय मारवाड़ियों का ध्यान देशीय वस्तुओं की ओर आकर्षित करने के बदले "ठकुरसोहाती" कह कर उन्हें उलटी पट्टी पढ़ा रहे हैं (मिश्र निबंध०) ।

उलटी मात खाना,-होना—लाभ के लिए किये गये काम में अपना ही नुकसान होना । प्र० वड़ी होशियारी से वे एक-एक चाल चलते रहे पर अंत में उलटी मात खा गये ।

उलटी मात होना—दे० उलटी मात खाना ।

उलटी माला जपना,-फेरना—बुरा मनाना, अहित चाहना । प्र० ठीक है, तुम उलटी माला ही फेरना चाहते हो तो फेरो, मैं भी देख लूँगा ।

उलटी माला फेरना—दे० उलटी माला जपना ।

उलटी राह पकड़ना—गलत काम करना । प्र० राह उलटी किसलिये पकड़ी गई । क्यों घुमाने से नहीं हैं घूमते (चुभते०–हरिऔध, 87) ।

उलटी रीति—मानी जाती हुई परम्परा से भिन्न विमुख रीति । प्र० उलटी रीति तिहारी ऊधौ, सुनै सो ऐसी को है (सू० सा०–सूर, 4168)।

उलटी समझ—बेवकूफी, नासमझी । प्र० किशन की उलटी समझ को क्या कहा जाय ।

उलटी साँस चलना,-लेना—मरणासन्न होना; शेष होने के करीब होना । प्र० लज्जा अत्यंत निर्लज्ज होती है । अंतिम काल में भी जब हम समझते हैं कि उसकी उलटी साँसें चल रही हैं, वह सहसा चैतन्य हो जाती है ×× (रंग०–प्रेमचंद, 56) ।

उलटी साँस लेना—(1) दे० उलटी साँस चलना ।

(2) पश्चात्ताप करना । प्र० उस समय तो तुमने ध्यान नहीं दिया, अब उलटी साँसें लेते रहो ।

उलटी हवा बहना—उलटी रीति चल पड़ना, परम्परा से भिन्न रीति-रिवाज, दृष्टिकोण का होना । प्र० जब हर ओर उलटी हवा बह रही हो तो उपाय भी क्या है । सब स्वीकार कर लो ।

उलटी होना—विपरीत होना, कारगर न होना । प्र० उलटी हो गईं सब तदबीरें, कुछ न दवा ने काम किया ।

उलटी-खोपड़ी—जड़, मूर्ख । प्र० वह तो ऐसा उलटी खोपड़ी है कि उससे कैसे पार पाया जाय, तुम्हीं वतलाओ ।

उलटी-पुलटी बात,-सीधी बात—व्यर्थ की बात, अनुचित बात । प्र० परमात्मा करे—शेखर, तुम फिर तो नहीं सोचोगे उलटी-पुलटा बातें—(शेखर० (2)–अज्ञेय, 191) ।

उलटी-सीधी कहना,-सुनना या सुनाना—खरी-खोटी सुनना या सुनाना, भला-बुरा कहना या सुनना । प्र० जब देखो तब वे उलटी-सीधी सुनाया करते हैं ।

उलटी-सीधी पड़ना—दुर्दिन आना, बुरा परिणाम भोगना । प्र० कुछ उल्टी-सीधी पड़े, तो हुजूर ही संभालेंगे (मान० (4)–प्रेमचंद, 208) ।

उलटी-सीधी बात—दे० उलटी-पुलटी वात ।

उलटी-सीधी सुनना या सुनाना—दे० उलटी-सीधी कहना ।

उलटी-सुलटी पड़ना—कुछ भला-बुरा होना । प्र० कर दो, मुझे क्या—उलटी-सुल्टी पड़ेगी, तो तुम्हें ही भुगतनी पड़ेगी (मा–कौशिक, 215) ।

उलटे उस्तरे से मूंड़ना,-हजामत बनाना,-छुरे से मूंड़ना,-हलाल करना—(1) बेवकूफ बनाना । प्र० यही तो मालती की विशेषता है कि जो औरों को सीधे उस्तरे से मूँड़ता है, उसे वह उल्टे छुरे से मूँड़ती है (गोदान–प्रेमचंद, 190) ।

(2) बेवकूफ बनाकर अपना लाभ करना । प्र० आपकी नीति में घरवालों को ही उलटे छुरे से हलाल करना चाहिए ? (गोदान–प्रेमचंद, 146) ।

उलटे उस्तरे से हजामत बनाना—दे० उलटे उस्तरे से मूँड़ना ।

उलटे काँटे तौलना—कम तौलना । प्र० ठीक से नजर रखना, साहू उलटे काँटे न तौल दे, उसकी बड़ी बुरी आदत है ।

उलटे छुरे से मूंड़ना—दे० उलटे उस्तरे से मूँड़ना ।

उलटे छुरे से हलाल करना—दे० उलटे उस्तरे से मूँड़ना ।

उलटे पाँव (पैर) चले जाना,-जाना,-फिरना,-लौटना,-वापस होना—तुरन्त लौट पड़ना । प्र० उलटि जाहु अपनैं पुर माहीं, वादिहिं करत लराइ (सू० सा०–सूर, 4419); हुजूर ने किसी को बुलाकर कुछ पूछताछ न की न सही ×× पर जो लोग दौड़कर कुछ कहने-सुनने की आशा से हुजूर के द्वार तक गये थे, उन्हें भी उलटे पाँव लौट आना पड़ा (गु० नि०–बा० मु० गु०, 225); पहला विचार तो हुआ कि उलटे-पाँव वापस जाऊँ (रंग० (1)–प्रेमचंद, 335) ।

उलटे पाँव (पैर) जाना—दे० उलटे पाँव चले जाना ।

उलटे पाँव (पैर) फिरना—दे० उलटे पाँव चले जाना ।

उलटे पाँव भागना—तुरन्त बेतहाशा भागना । प्र० मैं तो उलटे पाँव भागा वहाँ से, क्योंकि एक दफा मेरे जी में भी आया कि मैं इस्तीफा दे दूँ (भूले०—भग० वर्मा, 484) ।

उलटे पाँव (पैर) लौटना—दे० उलटे पाँव चले जाना ।

उलटे पाँव (पैर) वापस होना—दे० उलटे पाँव चले जाना ।

उलटे फँसना—अच्छे के लिए कोई काम करने के प्रयत्न में स्वयं फँस जाना । प्र० मैं तो वहाँ बिचवई करने गया और बदकिस्मती देखो कि उलटे खुद ही फँस गया ।

उलटे बाँस पहाड़ ले जाना,-बरेली भेजना,-ले जाना—जहाँ किसी चीज़ की बहुतायत हो या जरूरत न हो, वहाँ उसे ले जाना । प्र० रसगुल्ले का टिन कलकत्ता ले जा रहे हो ? वाह भाई, यह तो उलटे बाँस बरेली ले जाना हुआ ।

उलटे बाँस बरेली भेजना—दे० उलटे बाँस पहाड़ ले जाना ।

उलटे बाँस बरेली ले जाना—दे० उलटे बाँस पहाड़ ले जाना ।

उलटे मुंह गिरना,-पड़ना—दूसरे को नीचा दिखाने के बदले स्वयं नीचा देखना । प्र० अन्त तलक लड़कों से लड़े । आखिर को उलटे मुंह पड़े (गु० नि०—बा० मु० गु०, 719) ।

उलटे मुंह पड़ना—दे० उलटे मुंह गिरना ।

उलटे मुल्क का—विचित्र देश का । प्र० न जाने किस उलटे मुल्क का आदमी है, कुछ तौर-तरीका ही नहीं समझ पड़ता ।

उलटे रास्ते चलना—ग़लत रास्ते पर चलना, प्रतिकूल या बुरे काम में लगना । प्र० जब तुमने उलटे रास्ते चलना ही तै कर रखा है तो मैं क्या कर सकता हूँ ।

उलटे सर हो जाना—खुश होने के बदले नाराज़ हो जाना । प्र० उन्हीं के भले की बात और वे ही उलटे सर हो गये ? वाह भाई ।

उलटे हाथ का दाँव—बायें हाथ का खेल । प्र० तुम कोई चिन्ता मत करो, यह मेरे उलटे हाथ का दाँव है ।

उलटे हाथों लेना—खूब फटकारना । प्र० मैंने उन्हें उलटे हाथों लिया (झूठा० (1)—यशपाल, 263) ।

उलटे होकर कहना—हर तरह से कहना, मिन्नत और आग्रह से कहना । प्र० तुम उलटे होकर भी कहो तो भी वे टस से मस न होंगे ।

उलटे होकर टँगना—हज़ार कोशिश करना । प्र० तुम उलटे होकर टंग जाओ तो भी वे तुम्हारी बात न मानेंगे ।

उलथा मारना—(1) कलाबाजी करते हुए कूदना (पानी में) ।
(2) करवट बदलना ।

उलर के पड़ रहना—पेट के बल सो जाना । प्र० वह उलर के पड़ा है, उसे उठाओ तब न खाना खाया जाय ।

उलाहना उतारना—जी छुड़ाना, किसी की शिकायत को बेमन से दूर कर देना । प्र० मिलने क्या आये, उलाहना उतार गये ।

उलूल-जलूल बकना—निरर्थक बातें कहना । तुम हर समय उलूल-जलूल बकना छोड़ दो ।

उल्लू, -का पट्ठा—बेवकूफ । प्र० तुम जैसे उल्लू उसे समझ ही नहीं सकते, हल क्या करेंगे । (ग़बन—प्रेमचन्द, 174) ।

उल्लू का गोश्त खिलाना—बेवकूफ बनाना । प्र० देखो, मुझे ही उल्लू का गोश्त खिलाने की कोशिश मत करो ।

उल्लू का पट्ठा—दे० उल्लू ।

उल्लू का बासा होना,-बोलना—सूना और निर्जन होना । प्र० सिपैहिया टोला में तो अब दिन में ही उल्लू बोलता है (मैला०—रेणु, 23) ।

उल्लू की दुम—महान् मूर्ख । प्र० वह ठहरा उल्लू की दुम, उसकी बात मत चलाओ ।

उल्लू की मिट्टी पड़ना—(1) आलसी हो जाना । प्र० उस पर उल्लू की मिट्टी पड़ गयी है, रात-दिन पड़े-पड़े सोने के सिवा उसे और कोई काम नहीं ।
(2) बुद्धि भ्रष्ट होना । प्र० तुम पर तो उल्लू की मिट्टी पड़ गयी है, जो करने चलते हो, उलटा ही करते हो ।

उल्लू की लकड़ी फेरना,-बनाना—बेवकूफ बनाना । प्र० जमींदार महोदय ने मेरे सिर पर ऐसी उल्लू की लकड़ी फेरी कि मैं छह महीने के लिए नहीं तो छह दिन के लिए अवश्य अंधा हो गया (मेरे०—गुलाब०, 20); उल्लू मुझे बनाने आई उड़ती मैं पहिचानूँ (नूर०—भक्त, 62) ।

उल्लू के मुंह में नाम पड़ना—किसी काम के लिए बार-बार एक ही आदमी को कहना । प्र० लगता है उल्लू के मुंह में नाम पड़ गया है, एक सांस एक ही बात कहे जा रहा है ।

उल्लू के-से दीदे निकालना—डरावनी और बड़ी-बड़ी आँखें करके डराना । प्र० यह उल्लू के-से दीदे क्यों निकाल रहे हो ?

उल्लू खिलाना—वश में करना । प्र० सुलतान ने तुम्हें उल्लू खिला दिया है वरना तुम इस तरह उसकी गुलामी न करते ।

उल्लू फंसना—मूर्ख व्यक्ति मिलना । प्र० चाहे आपके वास्ते दुःखी हो चाहे अपने संसार के दुःख से, आपको दोनों उल्लू फंसे हैं (भा० ग्रं० (1)—भारतेन्दु, 449) ।

उल्लू फंसाना, -फांसना—(1) किसी बेवकूफ को अपने वश में करके उसका लाभ उठाना । प्र० आज़ाद ने × × दुआ दी कि खुदा कर, ऐसा एक उल्लू रोज़ फंस जाये (आज़ाद०—प्रेमचन्द, 382) ।
(2) बेवकूफ बनाना । प्र० श्रीनाथ को अच्छा उल्लू फंसाया । रोता रह गया बेचारा ।

उल्लू फांसना—दे० उल्लू फंसाना ।

उल्लू बनना—मूर्ख बनना । प्र० सच तो यह है कि वह उल्लू बन जाता है, फिर बच नहीं सकता (ये कोठे०—नागर, 214) ।

उल्लू बनाना—दे० उल्लू की लकड़ी फेरना ।

उल्लू बोलना—दे० उल्लू का बासा होना ।

उल्लू सिर पर बैठना—विपत्ति आने की सूचना मिलना । प्र० बस, अब यही समझो कि सिर पर उल्लू बैठ चुका है ।

उल्लू सीधा करना—किसी को बेवकूफ बनाकर काम निकालना, किसी के अज्ञान का लाभ उठाना । प्र० अपना उल्लू सीधा करने को बुलबुल

उन्हें बनाऊँगी (नूर०–भक्त, 107)।

उल्लू-पंथी—बेवकूफी। प्र० अब देखो-देखो, हम इसी उल्लू-पंथी से चिढ़ते हैंगे तुमाई (अमृत०–नागर, 558)।

उल्लू-बसंत—महा उल्लू। प्र० इसके जैसा उल्लू-बसंत तो देखा ही नहीं।

उस की—ईश्वर की। प्र० हम-तुम उसकी मर्जी के बिना क्या तिनका भी हिला सकते हैं?

उस बूंद से भेंट न होना—(1) उससे कोई मतलब न होना। प्र० अपनी उस बूंद से भेंट कहाँ भाई।

(2) कभी भेंट न होना। प्र० देखिए प्रयोग (1)।

उस रास्ते न जाना—अनुसरण न करना। प्र० मैंने उस रास्ते न जाने का फैसला कर लिया है और उस पर दृढ़ हूँ।

उसास छोड़ना,-भरना,-लेना—दुःख के कारण लम्बी सांस लेना। प्र० पंथ निहारै कामनी लोचन भरी लेहुं उसासा (कबीर ग्रंथा०–कबीर, 303); ऊतरु देइ न लेइ उसासू (राम०(अ)–तुलसी, 384)।

उसास भरना—दे० उसास छोड़ना।

उसास लेना—दे० उसास छोड़ना।

उसी जलवायु में पलना—उसी वातावरण में बड़े होना। प्र० मैं तो उसी जलवायु में पला हूँ, मेरे लिए वहाँ की मौज-मस्ती बड़ी स्वाभाविक और प्रेरणादायक है।

उसेर करना—(1) उत्कंठित होना। प्र० वह तो कब से तुम्हारे लिए उसेर कर रहा है।

(2) नाराज़ होना। प्र० उसेर मत करो बेटा।

उस्ताद—(1) होशियार। प्र० दबकर, झुककर, तनकर या ऐंठकर जैसे भी हो अपना मतलब पूरा करने में ओस्ताद थी (बल०–नागा०, 112)।

(2) छली या धूर्त। प्र० तुम भी तो कम उस्ताद नहीं हो। उसकी करनी का फल चखा दो।

उस्ताद के आगे उस्तादी दिखाना, -से उस्तादी करना—होशियार या धूर्त से भी होशियारी लगाना।

उस्ताद से उस्तादी करना—दे० उस्ताद के आगे उस्तादी करना।

उस्तादी करना—चालाकी करना। प्र० वाह भाई, तुम मुझसे ही उस्तादी करने लगे?

उस्तादी निकल जाना—चालाकी या धूर्तता खत्म हो जाना। प्र० जयराम को आने तो दो, उसकी सब उस्तादी निकल जायगी।

ऊ

ऊंघते को ठेलना—तंग करना। प्र० जब इन्हें मालूम है कि इनके पृथक् रहने से मेरी निन्दा हो रही है, तो यह जान-बूझ कर क्यों मेरा उपहास करा रहे हैं। यह तो ऊँघते को ठेलने का बहाना हो गया (रंग० (2)–प्रेमचन्द, 355)।

ऊंघते को लेटने का बहाना मिलना—जो काम करना चाहें उसके लिए कोई सहारा मिलना या उपाय समझ में आना। प्र० इन शब्दों ने इर्फान अली की दुविधाओं को दूर कर दिया। औंघते को लेटने का बहाना मिल गया (प्रेमा०–प्रेमचन्द, 248)।

ऊँच-नीच—(1) भला-बुरा। लैके दियो न जाय ऊँच अरु नीच बतावै (कुण्ड०–गिरिधरदास, 7); मानाइहन को देर तक सारा ऊँच-नीच समझाया गया (सुहाग० नागर, 166)।

(2) जातिगत या आर्थिक भेद-भाव। प्र० जब लग ऊंच-नीच करि जानां, ते पसुवा भूले भ्रम नांनां (कबीर ग्रंथा०–कबीर, 109); हरि हरि हरि हरि सुमरौ सब कोई। ऊँच नीच हरि गनत न दोई (सू० सा०–सूर, 236); एक के लिए समाज की ऊंच-नीच भावना मजाक और आक्रमण का विषय थी, दूसरे के लिए मर्यादा और स्फूर्ति का (कबीर०–ह० प्र० द्वि०, 153)।

ऊंच-नीच का भेद न रखना—जाति-भेद न मानना, सबको समान समझना।

ऊंच-नीच देखना, -समझना, -सोचना—भला-बुरा विचार करना। प्र० अरे ऐसे सोचने से काम नहीं चलता, सब ऊंच-नीच देखा करो देबू की अम्मा (कम०–कम०, 102)।

ऊंच-नीच समझना—दे० ऊंच-नीच देखना।

ऊंच-नीच समझाना, -सुझाना, -ऊंचा-नीचा दिखाना, -समझाना, -सुझाना—(1) उचित-अनुचित बतलाना। प्र० घरवाली के आँसू पोंछे, ऊंच-नीच समझाई, तसल्ली दी (अमृत०–नागर, 490)।

(2) बहकाना। प्र०–× × लेकिन ठाकुर ने ऐसा ऊंच-नीच सुझाया, महाजनी के हथकंडों का ऐसा भीषण रूप दिखाया कि उसके मन में भी यह बात बैठ गयी (गोदान–प्रेमचन्द, 103)।

ऊंच-नीच सुझाना—दे० ऊंच-नीच समझाना।

ऊंच-नीच सुनना या सुनाना, ऊंची-नीची सुनना या सुनाना—भला-बुरा सुनना या कहना। प्र० उन्होंने इतनी ऊंच-नीच सुनाई कि कह नहीं सकता।

ऊंच-नीच सूझना—उचित-अनुचित का ध्यान देना। प्र० तुम्हें क्या ऊंच-नीच नहीं सूझता जो इतने अपमान के बाद भी वहाँ जाने को तैयार हो?

ऊंच-नीच सोचना—दे० ऊंच-नीच देखना।

ऊंचा—अच्छा, ऊँचे दर्जे का। प्र० सीझी सब तरकारी भा जेंवन सब ऊंच (पद०–जायसी, 45/8); ऊँचो मन, ऊँची रुचि, भागु नीचो निपट ही, लोकरीति-नायक, लंगर लबारु है (कवि०–तुलसी, 143); पान बेचना कोई ऊँचा काम नहीं है (रंग०(1)–प्रेमचन्द, 29)।

ऊंचा आसन देना, -पीढ़ा देना, -सिंहासन देना, -स्थान देना—खूब आदर करना। प्र० उन्होंने तो हमेशा मुझे ऊँचा पीढ़ा दिया है, मुझे उनसे कोई शिकायत नहीं।

ऊंचा उठना या उठाना—(1) श्रेष्ठ बनना या बनाना। प्र० शेखर को लगा कि वह कुछ छोटा हो गया है या उसके सामने वाला व्यक्ति कुछ ऊँचा उठ गया है (शेखर० (2)–अज्ञेय, 63)।

(2) उन्नति होना या कराना। प्र० जाति को ऊँचा उठाने के लिये बाग अपनी कब न वे खींचे रहे (चुभते०–हरिऔध, 132)।

ऊंचा ओहदा, ऊंची कुर्सी, -जगह—बड़ी अफसरी। प्र० × × × मेरे बिन भाई बन्द और रिश्तेदारों को मेरे बाप ने पुलिस में नौकरी दिलाई,

वे ही अब ऊँचे-ऊँचे ओहदों पर पहुँचकर मुझसे रुख तक नहीं मिलाते (अमृत०—नागर, 120)।

ऊंचा करना—श्रेष्ठ बनाना। प्र० ऊँचे मन, ऊँचे कर, ऊँचे ऊँचे करी दैकै, ऊँचे करे भूमि के भिखारिन के भाग हैं (मति० भक०—मतिराम, 170)।

ऊंचा कुल, -खानदान, -घर, -घराना—प्रतिष्ठित, कुलीन और सम्पन्न परिवार। प्र० ऊँचे कुल क्या जनमियो, जे करणी ऊँच न होइ (कबीर ग्रंथा०—कबीर, 49); जी हाँ, वो तो मैंने आपकी बेटी को अपने बहन के ब्याह में काम करते देखकर ही समझ लिया था कि ये संस्कार किसी बहुत ऊँचे खानदान के ही हैं (अमृत०—नागर, 181)।

ऊंचा खानदान—दे० ऊँचा कुल।

ऊंचा घर—दे० ऊँचा कुल।

ऊंचा घराना—दे० ऊँचा कुल।

ऊंचा दाम—महंगा। प्र० अगर ऊँचे दामों का हुआ तो बेचारा देगा कहाँ से? (ग़बन—प्रेमचन्द, 64)।

ऊंचा निवास पर नीची करतूत होना—श्रेष्ठ स्थिति में होकर नीचा काम करना। प्र० ऊंच निवासु नीचि करतूती। देखि न सकहिं पराइ विभूति (राम० (अ)—तुलसी, 383)।

ऊंचा पीढ़ा देना—दे० ऊंचा आसन देना।

ऊंचा बैठना—बड़े लोगों की संगति में रहना। प्र० ऊंचा बैठना तो है पर करनी? कभी उसकी ओर भी नज़र डालते हो?

ऊंचा मनसूबा—बड़ा इरादा; श्रेष्ठ इरादा। प्र० विनय के ऊँचे-ऊँचे मनसूबे, माता की बड़ी-बड़ी अभिलाषाएँ × × सब विध्वंस हो जायेंगे (रंग०—प्रेमचन्द, 83)।

ऊंचा मिजाज—बदमिजाज। प्र० बाबू श्रीदास का बड़ा ऊंचा मिजाज़ है, मैं उनसे बातें नहीं करना चाहता।

ऊंचा रोना, ऊंचा-ऊंचा रोना—ज़ोर से रोना। प्र० कल वाली पीड़ें जागीं तो जी हुआ ऊंची-ऊंची रोऊं (डार०—कृ० सो०, 18)।

ऊंचा लाभ—बहुत अधिक लाभ। प्र० कोवलन आगे गति न देख अपना सारा माल सिकन्दरिया में खपा, ऊंचा लाभ उठा श्वसुर की आज्ञानुसार स्वदेश के लिए लौट पड़ा (सुहाग०—नागर, 117)।

ऊंचा साहस—बड़ा, श्रेष्ठ कोटि का साहस। प्र० पुरुषहि चाहिअ ऊंच हिआउ। दिन-दिन ऊंचे राखैं पाउ (पद०—जायसी, 16/5)।

ऊंचा सिंहासन—शासक, उच्च अधिकारीवर्ग। प्र० परन्तु मुझे यह भी मालूम है कि ऊँचे सिंहासनों तक इन साहित्यिकों की वाणी नहीं पहुँची है (अशोक०—ह० प्र० द्वि०, 155)।

ऊंचा सिंहासन देना—दे० ऊंचा आसन देना।

ऊंचा सुनना,-सुनाई देना—कम सुनना, बहरा होना। प्र० रेडियो का स्वर भी काफी ऊंचा रखते थे, शायद घर के लोग बहुत ऊंचा सुनते थे (झूठा० (2)—यशपाल, 386)।

ऊंचा स्थान देना—दे० ऊंचा आसन देना।

ऊंचा स्थान मिलना—ऊंचा ओहदा मिलना, आदर-सत्कार होना। प्र० श्रीकान्त को वहाँ खूब ऊंचा स्थान मिला।

ऊंचा स्थान होना—श्रेष्ठ माना जाना। प्र० बौद्ध-साहित्य में अश्वघोष, मातृचेट अथवा आर्यशूर का बड़ा ऊंचा स्थान है (गुलेरी ग्रंथ (1) —गुलेरी, 102)।

ऊंचा स्वर लगाना—संगीत में तार-सप्तक के स्वर में गाना। प्र० संध्या मुखर्जी बड़ा ऊंचा स्वर लगा सकती हैं।

ऊंचा हाथ रहना या होना—(1) बड़ा योगदान होना। प्र० हाथ ऊंचा सदा रहा किसका, हित सकल सुख सहज सहेजे में (चोखे०—हरिऔध, 9)।

(2) उदार होना। प्र० ऊंचे मन, ऊंचे कर, ऊंचे-ऊंचे करी दै कै, ऊंचे करे भूमि के भिखारिन के भाग हैं (मति० भक०—मतिराम, 170)।

ऊंचा होना—(1) गुस्सा होना। प्र० ऐसे मौकों पर सुनीता अनायास ऊंची हो पड़ती है (सुनीता—जैनेन्द्र, 15)।

(2) बढ़कर होना, श्रेष्ठ होना। प्र० दिन-दिन ऊंच होइ सो जेहि ऊंचे पर चाउ (पद०—जायसी, 16/5); जालपा फिर ताँगे पर बैठकर घर चली, तो उसे मालूम हो रहा था मैं कुछ ऊंची हो गयी हूँ (ग़बन—प्रेमचन्द, 142)।

(3) अच्छा होना। प्र० विधवा-विवाह के सम्बन्ध में उनके विचार काफी ऊँचे हैं। कोई असुविधा न होगी।

ऊंचाई पर चढ़ाना—ऊँचे उठाना, उन्नत बनाना। प्र० मुझे क्यों ऊँचाई पर चढ़ाना चाहती हो, जहाँ पहुँचने की शक्ति मुझमें नहीं है? (ग़बन—प्रेमचन्द, 255)।

ऊंचा-ऊंचा रोना—दे० ऊंचा रोना।

ऊंचा-नीचा—(1) हानि-लाभ, भला-बुरा। प्र० तुम्हें पुरश्री के पास बिल्वमठ जाने के लिए जो रुपया चाहिए उसके प्रबन्ध में मैं ऊँचा-नीचा सब काम करने को प्रस्तुत हूँ (भा० ग्रं० (1)—भारतेन्दु, 557); चाहा खरी सुनाना ज्योंही सोच बहुत ऊँचा-नीचा गला भर गया, बोल न फूटा, आँखों को अपनी मींचा (नूर०—भक्त, 6)।

(2) ऊबड़-खाबड़, समथल न होना। प्र० कैमटीफॉल जाने का रास्ता काफी ऊँचा-नीचा है।

ऊंचा-नीचा दिखाना—दे० ऊंच-नीच समझाना।

ऊंचा-नीचा समझाना—दे० ऊंच-नीच समझाना।

ऊंचा-नीचा सुझाना—दे० ऊंच-नीच समझाना।

ऊंची आवाज़—ज़ोर से। प्र० अब यह घर किसी रोगी का कमरा न था जहाँ ऊँची आवाज़ से बोलना बुरा समझा जाय (सु० सु०—सुदर्शन, 199)।

ऊंची उड़ान—बड़ी-बड़ी कल्पनाएँ या सूझ। प्र० योरोपीय कला-समीक्षा की यह बड़ी ऊँची उड़ान या बड़ी दूर की कौड़ी समझी गई है (चिन्ता० (1)—शुक्ल, 164); जॉन सेवक की ऊंची-से-ऊंची उड़ान भी यहाँ तक न पहुँची थी (रंग० (1)—प्रेमचन्द, 82)।

ऊंची करनी—अच्छे काम। प्र० ऊँचे कुल का जनमिया, जे करणी ऊँच न होइ (कबीर ग्रंथा०—कबीर, 48)।

ऊंची कुर्सी—दे० ऊँचा ओहदा।

ऊंची कोटि का—श्रेष्ठ। प्र० यही तो उम्र है जब व्यक्ति को ऊँची कोटि का साहित्य पढ़ना चाहिए।

ऊंची गाना, -लेना—अपनी बड़ाई आप करना। प्र० तुम तो चौबीसों घंटा ऊँची गाते रहते हो।

ऊंची चाल चलना—सामर्थ्य से बाहर जाकर परम्परा का निर्वाह करना। प्र० मौसी को ऊँची चाल चलने को कहा किसने था ? तुमने ?

ऊंची जगह—दे० ऊँचा ओहदा।

ऊंची जात—वर्ग व्यवस्था के अनुसार ब्राह्मण, वैश्य या क्षत्रिय जाति का व्यक्ति। प्र० ऊँची समझी जाने वाली जातियों में सुरक्षित स्थान में पहुँचकर अपनी विशेषता बना रखने का उद्योग शुरू हुआ × × (हिन्दी सा०–ह० प्र० द्वि०, 100)।

ऊंची टेर सुनाना—हार्दिक पुकार या याचना करना। प्र० मैं तो कब से ऊँची टेर सुना रहा हूँ, कोई कान दे तब न। लगता है भगवान् भी बहरे हो गये हैं।

ऊंची तान लेना—ऊँचे स्वर में गाना। प्र० स्रवन सुहाई गारी दै गावति, ऊँची तान लेति प्रिय गारी (सू० सा०–सूर, 3526)।

ऊंची दर—महँगा दाम। प्र० उजरत ऊँची दर से माँगी जो मैंने दी (सत्य के प्रयोग–मो० क० गाँधी, 589)।

ऊंची दूकान फीका पकवान होना—रूप के अनुरूप गुण न होना। प्र० ऊँची दूकान और फीका पकवान का कटु अनुभव बहुत से लोगों को होता है × × (मेरे०–गुलाब०, 50)।

ऊंची नाक रखना या होना—मान-मर्यादा का बहुत ध्यान होना। प्र० शाक्य अपनी ऊँची नाक रखते थे, पर आपको सेना से डरते भी थे (वैशाली० (1)–चतुर०, 152)।

ऊंची निगाह—परख का ऊँचा स्तर। प्र० पुरस्कार देने वाले ऊँची निगाह के थे (सा० जि०–ल० प्र० सु०, 9)।

ऊंची पदवी पाना—सम्मान पाना। प्र० है हरि भजन कौ प्रवांन। नींच पाँवै ऊँच पदवी बाजतें नीसान (कबीर ग्रंथा०–कबीर, 190)।

ऊंची पहुँच—दूरदर्शिता, दूर की सूझबूझ। प्र० भाषा और वैराग्य को एक ही लठ से हाँकना हमारे द्विवेदी जी की ऊँची पहुँच का काम है (गु० नि०–बा० मु० गु०, 443)।

ऊंची बात करना—ज़ोर से बोलना। प्र० × × जो आदमी कभी अपने कमरे में भी ऊँची बात नहीं करता था, वह आज पम्प के पास में कैसे चिल्ला रहा है (अंधेरे०–राकेश, 33)।

ऊंची बुद्धि—श्रेष्ठ मति। प्र० ऊँचे चढ़े ऊँच खंड सूझा। ऊँचे पास ऊँचि बुधि बूझा (पद०–जायसी, 16/5)।

ऊंची बोली बोलना—नीलाम में सबसे बढ़कर बोलना। प्र० मैं सबसे ऊँची बोली बोलूँगा और उस चित्र को लूँगा ही।

ऊंची लेना—दे० ऊँची गाना।

ऊंची साँस लेना—दुःख में मग्न होना। प्र० अब तो ऊँची साँस लेते ही सारी जिन्दगी कटनी है।

ऊँची हवा में होना—बहुत बड़ा समझना, गर्व करना। प्र० जब गोस्वामी जी अपनी पोथी के लिये ऐसी ऊँची हवा में हैं तो हमें अपना चुप रहने का इरादा छोड़कर उन्हें कुछ नीचे उतार लेना चाहिए (गु० नि०–बा० मु० गु०, 562)।

ऊँची हाँकना, ऊँची-ऊँची बातें करना—लम्बी-चौड़ी बातें करना। प्र० राम प्रकाश को ऊँची हाँकने से फ़ुरसत मिले तब न काम करे।

ऊँची-ऊँची उड़ान भरना, -लेना—बड़ी-बड़ी कल्पना करना। प्र० चिन्तन की ऊँची-ऊँची उड़ानें भर कर महिपाल फिर अपनी परेशानियों की सतह पर उतर आया (बूँद–नागर, 116)।

ऊँची-ऊँची उड़ान लेना—दे० ऊँची-ऊँची उड़ान भरना।

ऊँची-ऊँची बातें करना—दे० ऊँची हाँकना।

ऊँची-नीची पचाना—भली-बुरी बातों को सहना। प्र० सन्त लोग तो खलों के वचन सहते ही हैं, दुनियादार लोग भी न जाने कितनी ऊँची-नीची पचाते रहते हैं (चिन्ता० (1)–शुक्ल, 136)।

ऊँची-नीची बात—भली-बुरी बात। प्र० मुन्शी जलधारी, तुम हवेली की बहुत-सी ऊँची-नीची बात जानते हो (परती०–रेणु, 373)।

ऊँची-नीची सुनना या सुनाना—दे० ऊँच-नीच सुनाना।

ऊँचे गले से, -स्वर में—ज़ोर से, तेज़ स्वर में। प्र० कंठ लागि सो हौसुर रोई (पद०–जायसी, 19/1); गोपी ग्वाल झूलों पै झूलझूल ऊँचे सुरों से मल्हारें गाते थे (प्रेम०–ल० ला०, 54)।

ऊँचे चढ़कर कहना—पुकारकर कहना, सबको बताना। प्र० ऊँचे चढ़ मीरा कहे कोई कह दे गिरधर से जाय।

ऊँचे चढ़कर गिरना—उन्नति के बाद पतन होना।

ऊँचे चढ़ना—(1) उन्नति करना। प्र० क्या हुआ जो अब वह बढ़ गए, ऊँचे पर चढ़ गए (इंशा०–इंशा०, 98)।
(2) अभिमान करना। प्र० वह तो हर समय ऊँचा चढ़ा रहता है, उसकी न पूछो।

ऊँचे टेरना, -पुकारना—ज़ोर से पुकारना। प्र० हरि भजि, बिलंब छाँड़ि सूरज सठ, ऊँचे टेरि पुकार्यौ (सू० सा०–सूर, 336); पूजिहौं देवी न देव कोऊ किन वेद-पुरानहु ऊँचे पुकारौ (भा० ग्रं० (2)–भारतेन्दु, 545)।

ऊँचे दर्जे का—अच्छा, श्रेष्ठ। प्र० द्विवेदी जी कुछ ऊँचे दरजे की बात कहने लगते हैं तो सड़क की धूल समेटने लगते हैं (गु० नि०–बा० मु० गु०, 443)।

ऊँचे पुकारना—दे० ऊँचे टेरना।

ऊँचे बोल का मुँह नीचा होना—घमंडी का घमंड चूर होना। प्र० तुम अपनी ओर से कुछ मत कहो—ऊँचे मुँह का बोल नीचा होता ही है।

ऊँचे बोल बोलना—दम्भपूर्ण बातें करना। प्र० इस तरह ऊँचे बोल बोलना ठीक नहीं।

ऊँचे बोलना—ज़ोर से बोलना। प्र० जब पिछली बेंचों पर से किसी ने चिल्लाकर पृथ्वीराज से कुछ ऊँचे बोलने को कहा तो मुझे पृथ्वीराज के बदले उस दर्शक से सहानुभूति हुई (पैतरे–अश्क, 32)।

ऊँचे मन का—महान्; श्रेष्ठ, उदार। प्र० दान समै गनै धन तृन सों कुबेर हू को तनक सुमेरु महादानि ऊँचे मन को (मति० मक०—मतिराम, 155)।

ऊँचे माप पर होना—श्रेष्ठ स्थिति में होना। प्र० पंडित जी इस समय ऊँचे माप पर हैं, मौज है पूरी तरह से।

ऊँचे शिखर पर पहुँचना—बहुत उन्नति होना।

ऊँचे से गिरना—श्रेष्ठ स्थिति से पतन होना। प्र० कोई कुछ भी कहे, करे, तुम क्यों ऊँचे से गिरना चाहते हो?

ऊँचे स्वर में—दे० ऊँचे गले से।

ऊँचे-खाले पैर पड़ना, -नीचे पैर पड़ना—(1) गलती होना। प्र० बाबूजी, ऊँचे-खाले पैर सबका पड़ जाता है (मा—कौशिक, 190)।
(2) भ्रष्ट होना। प्र० देखिए प्रयोग (1)*।

ऊँचे-नीचे पैर पड़ना—दे० ऊँचे-खाले पैर पड़ना।

ऊँट—(1) बहुत लंबा। प्र० अरे तुम तो एकदम ऊँट हो गये। कितनी लम्बाई है—5 फुट 11 इंच?
(2) बड़ा। प्र० करम में लिखा के लाए थे कि लड़के धींगरे, ऊँट हो जाएँ तब तक खिलाना, सो खिलाएँगे (सारा०—यादव, 42)।
(3) लम्बी गर्दनवाला।

ऊँट का किसी करवट बैठना—अनिश्चित स्थिति होना। प्र० वहाँ तो फिरंगी का राज हैगा, अभी कुतवाल साहेब तक नहीं फरमा सकते हैंगे कि ऊँट किस करवट पे कल को बैठेगा (सात०—नागर, 71)।

ऊँट का पहाड़ के नीचे आकर अपनी ऊँचाई देखना—बड़प्पन का गर्व करनेवाले का गर्व, अपने से बड़े के सामने आकर, दूर होना, वास्तविकता का पता चलना।

ऊँट का मक्का की ओर भागना—अपने मूल स्थान की ओर जाना।

ऊँट का सुई की नोक में जाना—असम्भव काम होना। प्र० तुम तो ऊँट को सुई की नोक में डालना चाह रहे हो। ऐसा भी कहीं हुआ है?

ऊँट की कोई कल सीधी न होना—बेतुके आदमी के किसी काम का भरोसा न होना। प्र० आदमी अच्छे हों, तमीज वाले हों तो कमरा छोड़ कोठरी में भी गुजारा किया जा सकता है। पर इसका क्या किया जाय कि ऊँट की कोई कल सीधी ही नहीं (पैंतरे—अश्क, 74)।

ऊँट की चोरी झुके-झुके करना, -निहुरे-निहुरे करना, -नीचे-नीचे करना—न छिपनेवाली बात को छिपाने की कोशिश करना।

ऊँट की चोरी निहुरे-निहुरे करना—दे० ऊँट की चोरी झुके-झुके करना।

ऊँट की चोरी नीचे-नीचे करना—दे० ऊँट की चोरी झुके-झुके करना।

ऊँट की पूँछ से पूँछ बाँधना—एक के पीछे एक का चलना। प्र० तुमको क्या, ऊँट की पूँछ से पूँछ बाँध लो, छुट्टी हुई।

ऊँट के गले की बिल्ली होना—बेजोड़ बात या व्यक्ति होना। प्र० तुम तो उसके साथ ऊँट के गले की बिल्ली जैसी लगती हो।

ऊँट के मुँह में जीरा होना—अधिक की आवश्यकता होने पर बहुत थोड़ा मिलना। प्र० साम-दाम दण्ड-भेद सब उपाय करने पर दो हजार ईंटें पहुँच पाती हैं, जिसे हमारे × × काण्ट्रैक्टर जी ऊँट के मुँह के जीरे से भी कम बतलाते हैं (मेरे०—गुलाब०, 24)।

ऊँध लेना—तेल देना। प्र० गाड़ी ऊँध लो, रेत है।

ऊक-चूक—भूल-चूक।

ऊके-चूके—कभी-कभी। प्र० तो ऊके-चूके आते हैं, रोज कहाँ आते हैं?

ऊख छोड़कर आग चिचोरना (ऊख का अगौरा)—सारवान् वस्तु को छोड़ निस्सार से सार पाने का प्रयत्न करना। प्र० सूरदास प्रभु ऊख छाँड़ि कै, चतुर चचोरत आग (सू० सा०—सूर, 4270)।

ऊखल में सिर देना—जान-बूझकर झंझट के काम में पड़ना। प्र० अब तो ऊखल में सिर दे दिया है, जो होगा सो देखा जायगा।

ऊटक-नाटक करना—(1) ऊधम करना। प्र० मुन्ना अब तुम ऊटक-नाटक करना बंद करो नहीं तो मार खा जाओगे।
(2) सामान इधर-उधर करना। प्र० तुम क्या ऊटक-नाटक कर रहे हो?
(3) व्यर्थ का इधर-उधर का कुछ काम करते रहना। प्र० कोई ढंग का काम तो अभी तक मिला नहीं है। कुछ ऊटक-नाटक करके गुजारा हो रहा है।

ऊटपटांग बकना, -बातें करना, -बोलना, -हाँकना—बेतुकी बातें करना। प्र० ऊटपटाँग बकना बन्द करोगे या नहीं?

ऊटपटाँग बातें करना—दे० ऊटपटाँग बकना।

ऊटपटाँग बोलना—दे० ऊटपटाँग बकना।

ऊटपटाँग हाँकना—दे० ऊटपटाँग बकना।

ऊड़ा पड़ना—कमी होना। प्र० बाजार में महीन साड़ियों का ऊड़ा पड़ गया है।

ऊत पित्तर की होना—भूत-प्रेत की बाधा होना।

ऊद होना—उत्सुक होना। प्र० खाने को ऊद कमाने को मजनूं।

ऊदड़-गूदड़—चीथड़ा, फटा-पुराना कपड़ा।

ऊद-बिलाव की ढेरी—कभी न मिटने वाला झगड़ा। प्र० उन दोनों का झगड़ा तो ऊद-बिलाव की ढेरी हो गया है। उसका अन्त नहीं।

ऊधम उठाना, -जोतना, -मचाना—उपद्रव करना। प्र० कितनी ऊधम उठा रहे हो, जरा देर शान्त नहीं बैठ सकते?

ऊधम जोतना—दे० ऊधम उठाना।

ऊधम मचाना—दे० ऊधम उठाना।

ऊधो का लेना न माधो का देना—किसी से कोई मतलब न होना। प्र० अपने राम को तो न ऊधो का लेना न माधो का देना। तुम लोग जो चाहो करो।

ऊधो की पगड़ी माधो के सिर रखना या होना—किसी का काम या दायित्व किसी और के ऊपर डालना या होना। प्र० ऊधो की पगड़ी माधो के सिर रखने को किसने कहा था? मैंने?

ऊन की दून करना—छोटी-सी बात को बड़ी बनाना। प्र० तू भी ऊन की बात दून करके बोलती है (परती०—रेणु, 469)।

ऊन मानना—दिल दुःखी करना। प्र० तुम ऊन मत मानो, मैं तुम्हारे लिए नयी साड़ी ला दूँगा।

ऊनी-ऊनी फिरना—इधर-उधर चक्कर काटना। प्र० दिन भर तो ऊनी-ऊनी फिरती है, रात को सिलाई करने बैठती है।

ऊपर आना—(1) चिढ़ जाना। प्र० वे तो हर बात में ऊपर आ जाते हैं।
(2) प्रकट होना; स्पष्ट होना। प्र० तुम ज़रा अच्छी तरह पूछो तो सब ऊपर आ जायगा।

ऊपर उठना, -चढ़ना—(1) उन्नति होना, विकसित होना, श्रेष्ठ होना। प्र० आपका तर्क यह मान लेता है कि मनुष्य पशु से ऊपर उठ सकता है, और यह कि वैसे उठना महत्त्व की बात है (अजय०-देव०, 38)।
(2) सीमा का अतिक्रमण करना। प्र० कुछ समय बाद गुरु-परिवारों में ऐसे लोग भी पैदा हो गए जिनकी दृष्टि स्वार्थ, ईर्ष्या या लोभ से ऊँची न उठ सकी (एक म्यान०-नानक, 21)।
(3) स्वर का और ऊपर के पर्दे पर लगना। प्र० मध्यम के तार का स्वर ऊपर चढ़ गया है, उसे पहले मिला लो।

ऊपर उठाना, -चढ़ाना—(1) उन्नति करना। प्र० पाश्चात्य आचार व्यवहार के वेताल-संचार द्वारा वे मुर्दा जाति को जिलाना और अधः-पतित देश को ऊपर उठाना चाहते थे (पद्म पराग-पद्म० शर्मा, 23)।
(2) महत्त्व या प्रशंसा देना। प्र० किसी को ऊपर या नीचे गिराने के अभिप्राय से न मैंने कभी किसी की प्रशंसा की है न निन्दा (पद्म० के पत्र-पद्म० शर्मा, 131)।

ऊपर करना—देना, ले आना। प्र० यह टाई तुमने कहाँ से ऊपर की ?

ऊपर करके जाना—दे० ऊपर-ऊपर जाना।

ऊपर का काम—(1) मुख्य काम के अतिरिक्त किया जाने वाला काम। प्र० अकेले आदमी को घर से ही फुरसत नहीं मिल सकती। ऊपर के काम कहाँ से करे।
(2) झाड़ू-बुहारू, बर्तन आदि साफ करने के अतिरिक्त काम। प्र० ऊपर के काम के लिए एक छुट्टा नौकरानी रख ली है।

ऊपर का खर्च, ऊपरी खर्च—इधर-उधर का फुटकर खर्च। प्र० लेकिन ऊपर की आमदनी थी, तो ऊपर का खर्च भी था (गबन-प्रेमचंद, 89)।

ऊपर का (को) दम भरना—(1) ऊँची सांस लेना। प्र० इस तरह ऊपर का दम क्यों भरते हो ?
(2) दिखावटी सहानुभूति प्रकट करना। प्र० चाचाजी वग़ैरह सब ऊपर का दम भरनेवाले हैं, मुझे पता है।

ऊपर की आमदनी—इधर-उधर की कमाई, घूस आदि। प्र० हमारे स्थान पर कोई भी हो, ऊपर की आमदनी के बिना तो गुज़ारा कर ही नहीं सकता (ब्रह्म०-दे० स०, 247)।

ऊपर की ओर थूकना—अपने से श्रेष्ठ व्यक्ति का तिरस्कार करना। प्र० तुमने सदा ऊपर की ओर थूका सो थूक तुम पर ही पड़ा।

ऊपर की दोनों जाना—अंधा होना। प्र० तुम्हारी क्या ऊपर की दोनों चली गयीं ?

ऊपर की बात—वह बात जो हार्दिक न हो। प्र० ऊपर की मोहि बात न भावै, देखै गावै तो सुख पावै (कबीर ग्रंथा०-कबीर, 162)।

ऊपर की सांस ऊपर नीचे की नीचे रह जाना—बहुत डर जाना, स्तब्ध रह जाना। प्र० बस पूछो ना जी, ऊपर का साँस ऊपर और नीचे का नीचे (निशि०-वि० प्र०, 293)।

ऊपर के ऊपर, ऊपर ही ऊपर, ऊपर-ऊपर—बिना किसी को बताए, अलग-अलग। प्र० उन्हें कुल तीन रुपये माहवार मिलते थे, यह भी उनके हाथ न लगते। नाहरी ऊपर ही ऊपर उड़ा लेती (गोदान-प्रेमचंद, 267)।

ऊपर चढ़ना—दे० ऊपर उठना।

ऊपर चढ़ाना—दे० ऊपर उठाना।

(किसी के) ऊपर छार पड़ना—मरना। प्र० छार पड़ेगी तेरे ऊपर तब तू क्या ... पावेगा।

(किसी के) ऊपर छोड़ना—किसी के भरोसे छोड़ना। प्र० मैंने तो आपके ऊपर छोड़ दिया है। आप जो भी फैसला करेंगे, मुझे स्वीकार होगा।

(किसी के) ऊपर टूट पड़ना—अचानक आक्रमण करना। प्र० प्रताप की सेना अचानक मुग़ल सेना पर टूट पड़ी।

(किसी के) ऊपर डालना—(1) जिम्मेदार बनाना। प्र० उन्होंने सारा दोष मेरे ऊपर डाल दिया और खुद होशियारी से कन्नी काट गये।
(2) बीच में डालकर बहाने से कहना। प्र० तुम मेरे ऊपर डालकर कह देना, सब लोग इशारा समझ जायेंगे।

ऊपर तक पहुँच होना—बड़े अधिकारियों तक अपनी बात पहुँचाने की या पूरी करवाने की क्षमता होना। प्र० रघुनाथ बाबू की ऊपर तक पहुँच है, वे आपका काम जरूर करवा देंगे।

(किसी के) ऊपर पड़ना—दुःख उठाना। प्र० मेरे ऊपर जो कुछ पड़ी है उसे मेरा जी ही जानता है।

(किसी के) ऊपर मढ़ना—जिम्मे करना। प्र० अच्छा मजाक है, आप सारा दोष मेरे ऊपर मढ़ रहे हैं।

(किसी के) ऊपर मरना—किसी को पाने की या उसके सान्निध्य की बलवती इच्छा होना। प्र० राजीव तो उस हसीना पर मरने लगा है।

ऊपर रखना—अधिक महत्त्व दिया जाना। प्र० देश के हित को दलगत राजनीति से ऊपर रखना चाहिए।

ऊपर लेना—जिम्मे लेना, हाथ में लेना। कान्ति की लड़की की शादी की दावत का इन्तज़ाम मैंने अपने ऊपर ले लिया है।

ऊपर से—(1) वेतन से अधिक, घूस के रूप में, नाजायज़ ढंग से। प्र० कभी दो-चार पैसे ऊपर से आ जाते हैं, उनको भी तो नहीं छिपा सकता (गोदान-प्रेमचंद, 27)।
(2) उसके अतिरिक्त। प्र० असुर जोन ता ऊपर दीन्हीं धर्म उछेद करायौ (ब्र० सू० को०); दो-तीन सौ लड़की का दाम चुकाये और इतना ही ऊपर से खर्च करे, तब जाकर ब्याह हो (गोदान-प्रेमचंद, 28)।
(3) प्रत्यक्ष में दिखाने के लिए। प्र० उन्होंने तुम्हें ऊपर से न्योता दे दिया है। सचमुच देने का मन होता तो पहले से न कहते।

ऊपर से ऊपर खा जाना, -ही ऊपर उड़ा जाना, -खा जाना—बिना दूसरों को बताये या मूल हिसाब में जोड़े अलग ही से ले लेना । प्र० उन्हें कुल तीन रुपये माहवार मिलते थे × × यह भी उनके हाथ न लगते । नोहरी ऊपर ही ऊपर उड़ा लेती (गोदान—प्रेमचंद, 267) ।

ऊपर से ऊपर ले लेना, -ऊपर ही ऊपर ले लेना—पहले ही ले लेना, अलग से ले लेना । प्र० गिरधर लाल के यहाँ से मिले रुपये उसने ऊपर ही ऊपर ले लिए ।

ऊपर से नीचे गिरना—अत्यन्त अप्रत्याशित घटना के फलस्वरूप बड़ा आघात पहुँचना । प्र० शेख का मुँह खुला रह जाता है, आँखें फट-सी जाती हैं, दुनिया भूल जाती है—वह कहीं बहुत ऊपर से गिरता है (शेखर० (1)—अज्ञेय, 175) ।

ऊपर से नीचे तक—पूर्ण रूप से । प्र० वे ऊपर से नीचे तक स्वदेशी के रंग में रंगे थे ।

ऊपर से नीचे तक जल जाना—बहुत अधिक क्रोध या ईर्ष्या होना । प्र० निशिकान्त की बातें सुनकर मैं ऊपर से नीचे तक जल गयी ।

ऊपर से नीचे तक देखना—गौर से या उपेक्षापूर्वक पूरी हुलिया देखना । प्र० गुलशन ने राजो को ऊपर से नीचे तक देखा और फिर मुँह फेर कर खड़ा हो गया ।

ऊपर से राम-राम करना—देखने में बड़े भले लगना, मीठी-मीठी बातें करना । प्र० अरे, वह ऊपर से राम-राम करता है पर बड़ा घाघ है ।

ऊपर ही ऊपर, ऊपर-ऊपर—(1) दिखावटी । प्र० अबकी उसे आये छह महीने हो गये थे मगर उनका स्नेह अभी तक ऊपर ही ऊपर था (कर्म०—प्रेमचंद, 13) ।

(2) दे० ऊपर के ऊपर ।

ऊपर ही ऊपर उड़ा जाना—दे० ऊपर से ऊपर खा जाना ।

ऊपर ही ऊपर खा जाना—दे० ऊपर से ऊपर खा जाना ।

ऊपर ही ऊपर ले लेना—दे० ऊपर से ऊपर ले लेना ।

ऊपर हो आना—किसी गुप्त बात का प्रकट हो जाना । प्र० तुम दो दिन चुप बैठे रहो । सब अपने आप ऊपर हो आवेगा ।

ऊपर होना—(1) श्रेष्ठ होना, बढ़कर होना । प्र० अबकी संयोग से होरी की ऊख गाँव भर के ऊपर थी (गोदान—प्रेमचंद, 269) ।

(2) बड़ा होना (ओहदे या उम्र में) । प्र० मैं जो चाहूँ सो होय, मेरे ऊपर और न कोय (गु० नि०—बा० मु० गु०, 708) ।

(3) मान्य होना । प्र० इसमें सन्देह की गुंजायश ही कहाँ है । उनकी बातें तो ऊपर रहेंगी ही ।

ऊपर-ऊपर—दे० ऊपर ही ऊपर ।

ऊपर-ऊपर का—दिखावटी । प्र० देखो, ऊपर-ऊपर की बातें करने से कोई लाभ नहीं, सच्ची बात कहो ।

ऊपर-ऊपर जाना—(1) तनिक न रुकना । प्र० वह तो आता भी है तो ऊपर ही ऊपर चला जाता है, तनिक देर भी नहीं बैठना चाहता ।

(2) फालतू की चीजों में रुपया खर्च हो जाना । प्र० सारा रुपया ऊपर-ऊपर चला गया, मैं देखते-सुनते हुए भी कुछ न कर सका ।

(3) केवल ऊपर-ऊपर की चीज़ों को देखना, भीतरी ओर न देखना । प्र० तुम तो केवल ऊपर-ऊपर जाते हो, मामले की गहराई तक क्यों नहीं उतरते ।

ऊपर-झापड़—(1) इधर-उधर । प्र० वह आया तो था, बस ऊपर-झापड़ करके चला गया ।

(2) किसी तरह । प्र० ऊपर-झापड़ से कुछ कमा लेता हूँ और क्या !

ऊपर-तले—एक के बाद दूसरा । प्र० ये दोनों भाई ऊपर-तले के हैं । साल भर में ऊपर-तले उनके यहाँ चार गमियाँ हो गयीं ।

ऊपर-नीचे होना—बड़े संकट की स्थिति में होना । प्र० बाज़ार मंदा होने से श्रवण ऊपर-नीचे होने लगा । उसे किसी सहारे की सख्त ज़रूरत थी ।

ऊपरवाला—(1) अपने से ऊपर का पदाधिकारी । प्र० इसके साथ-साथ यह चिन्ता भी लगी रहती है कि ऊपरवाले खुश रहें (प्रेमा०—प्रेमचंद, 32) ।

(2) भगवान् । प्र० ऊपरवाले का ही भरोसा है, वही राखनहार है ।

ऊपरवालियाँ—चुड़ैलें, परी, चीलें । प्र० उसके सिर ऊपरवालियाँ आती हैं ।

ऊपरी—(1) सतही, जो गहरा न हो ऐसा ज्ञान । एक मैं हूँ कि स्वयं अपने विषय का ऊपरी ज्ञान रखता हूँ (नदी०—अज्ञेय, 94) ।

(2) वैधानिक तरीकों से भिन्न । प्र० किसी ऊपरी तरीके से काम हो सके तो देखो ।

ऊपरी आमदनी—दे० ऊपर की आमदनी ।

ऊपरी खर्च—दे० ऊपर का खर्च ।

ऊपरी घर—दूसरे का घर । प्र० ऊपरी घर में दो-चार दिनों से ज्यादा नहीं रहा जा सकता ।

ऊपरी टाँका—कच्ची सिलाई । प्र० मशीन से बखिया कर दी न । अब ऊपरी टाँकें खोल दो ।

ऊपरी चेहरा—बनावटी भाव । प्र० सबका ऊपरी चेहरा और असली चेहरा अलग-अलग होता है ।

ऊपरी दिल से, -मन से—दिखावटी, बनावटी, जो आंतरिक न हो । प्र० ऊपरी दिल से मुझे आने को मत कहो ।

ऊपरी धंधा पीटना—ऊपर का फुटकर काम करना । प्र० उनके घर की रोटी पानी और ऊपरी धंधा पीटती हैं दिनरात × × (अमृत०—नागर, 374) ।

ऊपरी फसाद, -फेर, ऊपरी-पराई—प्रेत-बाधा । प्र० जरूर ऊपरी फेर लागत है बिटिया (नये हाथ—वि० रस्तोगी, 79) ।

ऊपरी फेर—दे० ऊपरी फसाद ।

ऊपरी मन से—दे० ऊपरी दिल से ।

ऊपरी माल की चाट पड़ना—बाज़ार की चीज़ों की आदत पड़ना । प्र० विनोद को ऊपरी माल की चाट पड़ गयी है, घर की रोटी थोड़े ही अच्छी लगती है ।

ऊपरी-पराई—दे० ऊपरी फसाद ।

ऊबड़-खाबड़ होना—मुसीबतों और रुकावटों से भरा होना। प्र० देश सेवा का मार्ग बड़ा ऊबड़-खाबड़ है। अपनी शक्ति-सामर्थ्य तौलकर उस ओर कदम बढ़ाना।

ऊर्ध्व सांस घोंटना—योगसाधना में साँस को रोकना, कुंभक। प्र० तिहि मुख मौन गहे क्यों जीजै, घूंटत ऊरध स्वास (सू० सा०–सूर, 4433)।

ऊसर की खेती—असम्भव बात या काम। प्र० परन्तु इस विभाग की वेतन-वृद्धि ऊसर की खेती है (मान० (8)–प्रेमचंद, 76)।

ऊसर खेत—निरर्थक वस्तु या व्यक्ति। प्र० पिता और भाइयों ने तो उसे ऊसर खेत समझ रखा था (मान० (7)–प्रेमचंद, 166)।

ऊसर खेत में केसर होना—नालायक बाप का लायक बेटा होना। प्र० उनके यहाँ तो ऊसर खेत में केसर हुई है—क्या बाप था और कैसा बेटा निकला।

ऊसर में दूब जमना—(1) जिस काम के होने की बिल्कुल उम्मीद न हो, उसके होने का आसार नजर आना। प्र० अच्छा, रामदीन कारखाने में काम करने का इरादा कर रहा है? तब तो कहा जाय कि ऊसर में दूब जमने जा रही है।

(2) निस्सन्तान स्त्री का गर्भ धारण करना। प्र० ब्याह के पाँच साल बाद ऊसर में दूब जमी है।

ऊसर में बीज डालना, -बोना—व्यर्थ काम करना। प्र० क्यों ऊसर में बीज डाल रहे हो? इससे क्या लाभ होगा?

ऊसर में बीज बोना—दे० ऊसर में बीज डालना।

ऊहापोह होना—दुविधा होना। प्र० तुम्हें क्यों इतनी ऊहापोह हो रही है, कुछ बतलाओ तो!

ऊहूँ करना—अस्वीकार करना। प्र० उन्होंने यदि एक बार ऊहूँ कह दिया तो कह दिया। फिर हाँ होने की कोई गुंजायश नहीं है।

ऋ

ऋण उतरना या उतारना—कोई बोझ उतरना या उतारना, कर्ज अदा होना या करना। प्र० जब तक ऋण नहीं उतरेगा तब तक मुझे चैन नहीं मिलेगा।

ऋण करना, -काढ़ना, -खाना—कर्ज लेना। प्र० रिनि काहू कर लीन्हेस काढ़ी। मकु तहं गएं होइ किछु बाढ़ी (पद०–जायसी, 7/1); पर क्षत्रिय का तो धर्म नहीं कि किसी के आगे हाथ पसारे, फिर ऋण काढ़े (भा० ग्रं० (1)–भारतेन्दु, 283)।

ऋण काढ़ना—दे० ऋण करना।

ऋण खाना—दे० ऋण करना।

ऋण घना होना—कर्ज बढ़ना। प्र० मेरा ऋण दिन पर दिन घना होता जा रहा है। क्या करूँ, समझ में नहीं आता।

ऋण चढ़ना या चढ़ाना—(1) कर्ज बढ़ना या बढ़ाना। प्र० रोज ऋण चढ़ा जा रहा है, कैसे छुटकारा मिलेगा, पता नहीं।

(2) आभार बढ़ना या बढ़ाना। प्र० आपके इस चढ़ते हुए ऋण को मैं कभी भी नहीं चुका सकूँगा।

ऋण पटना या पटाना—कर्ज चुकना या चुकाना। प्र० जल्दी से ऋण पट जाए तो मुझे मुक्ति मिले।

ऋण मढ़ना, -लादना—किसी के जिम्मे कर्ज छोड़ जाना। प्र० बाबूजी तीन हजार कर्ज मढ़ गये हैं। मैं इसे कभी चुका भी पाऊँगा या नहीं, कह नहीं सकता।

ऋण लादना—दे० ऋण मढ़ना।

ऋण से उऋण होना—अपने प्रति भलाई करने वाले के प्रति भलाई करके कृतज्ञता प्रकट करना। प्र० श्रीनिवास जी के ऋण से मैं कभी भी उऋण नहीं हो सकता।

ऋण से लदा रहना—कर्ज के बोझ से दबा होना। प्र० मैं तो सिर से पैर तक ऋण से लदा हूँ, मेरी कुछ न पूछो।

ऋण-शुद्धि होना—ऋण चुकना। प्र० जब तक ऋण-शुद्धि नहीं होती तब तक उन्हें शान्ति नहीं मिलेगी।

ऋणी रहना या होना—कृतज्ञ होना। प्र० मैं आजीवन आपका ऋणी रहूँगा।

ऋद्धि-सिद्धि पाना—समृद्धि और सफलता पाना। प्र० मैंने सब ऋद्धि-सिद्धि पा ली, और कुछ बाकी नहीं है।

ए

एंच करना—जल्दी करना। प्र० तुम हर काम में एंच करते हो।

एंच होना—कमी होना। प्र० इस बार पानी की एंच है, बारिश हुई ही नहीं।

एंच-तानकर—खींच-तान कर, किसी तरह। प्र० एंच-तानकर किसी तरह काम चलाऊँगा, और क्या।

एंचन में फँसना—झंझट में पड़ना। प्र० वह बेचारा तो बुरी तरह एंचन में फँस गया है।

एंचना—(1) खींचना। प्र० जरा इस कागज पर सीधी लाइनें तो एंच दो।

(2) आराम करना। प्र० जरा देर एंच लूं तो थकान मिट जाये।

(3) वसूलना। प्र० उसने मुझसे दस रुपये एंच ही लिये।

एंच-पेंच की बात करना—धूर्तता करना। प्र० देखो, मुझसे एंच-पेंच की बातें मत करो नहीं तो अच्छा न होगा।

एंच-पेंच डालना—बात या काम में रुकावट डालना, उलझना। प्र० रामसुभग ने ऐसी एंच-पेंच डाल दी कि काम वहीं अटक गया है।

एंच-पेंच बताना—चालबाजी करना। प्र० वह तुम्हें ऐसा एंच-पेंच बतायेगा कि तुम्हारी तबियत खुश हो जायगी।

एंचा तानी करना या होना—झगड़ा करना या होना। प्र० तुम लोग हर समय एंचा तानी क्यों करते रहते हो?

एंड मारना, -लगाना—उसकाना। प्र० तुम मुझे एंड मारने की कोशिश कर रहे हो?

एंड लगाना—दे० एंड मारना।

एंडा-बेंडा फिरना—इतराते फिरना। प्र० वह तो एंडा-बेंडा फिरता रहता है, उसे और कोई काम नहीं है।

एंडा-बेंडा सुनना या सुनाना—गाली सुनना या सुनाना, उल्टी-सीधी बातें

सुनना या सुनाना। प्र० मैं कुछ भी एंडा-बेंडा सुनने को राज़ी नहीं हूँ।

एंडी-बेंडी चाल चलना- (1) मस्ती में झूमना। प्र० वाह, क्या एंडी-बेंडी चाल चल रही है।

(2) गलत काम करना। प्र० वह क्यों एंडी-बेंडी चाल चलता है?

एंडी-बेंडी सुनना या सुनाना—दे० एंडा-बेंडा सुनना या सुनाना।

ए-री हां री करना—समर्थन करना, बहनापा होना। प्र० तुम लोगों को और कुछ काम तो है नहीं, रात-दिन ए री हां री किया करो।

एक अंक, -आंक—ध्रुव बात, पक्की बात। प्र० जाउँ राम पहिं आयसु देहू एकहिं आँक मोर हित एहू (राम० (अ)–तुलसी, 540)।

एक अंग भी कच्ची न होना—अविचलित होना। प्र० सूर एकहू अंग न कांची, मैं देखी टकटोरी (सू० सा०–सूर, 4746)।

एक अंडा—एक ही संतान।

एक अंदाज से—बराबर, एक समान। प्र० उसका हाथ एक अंदाज से चलता रहा।

एक आंक—दे० एक अंक।

एक आंख देखना—(1) एक झलक देखना। प्र० इसलिये मैं सब हिसाब अपने और तुम्हारे बीच साफ़ समझूंगा यदि मैं अपने मरने के समय तुम्हें एक आंख देख लूं (भा० ग्रं०(1)–भारतेन्दु, 614)।

(2) सबके साथ समान भाव रखना। प्र० ताई हम सब भाई, बहनों को एक आंख देखती थीं।

एक आंख न आना—कोई ढंग न आना।

एक आंख न भाना—तनिक भी अच्छा न लगना। प्र० कोयलों की दलाली में हाथ काले करते रहना मुझे एक आँख नहीं भाता (दूधगाछ–दे० स०, 360)।

एक आंख रोना एक आंख हँसना—सुख और दुःख दोनों का साथ-साथ होना।

एक आंख से देखना, -निगाह से देखना—सबको बराबर समझना। प्र० पंजाब कालिज के चन्दे के लिए दौरा करने के वक्त लेक्चर में मैंने कहा था कि हिन्दू मुसलमानों को मैं एक ही आँख से देखता हूँ (गु० नि०–बा० मु० गु०, 253)।

एक आन में—क्षण भर में, तुरन्त। प्र० मैं एक आन में रुपये लेकर आता हूं।

एक आम की दो फांकें, -चने की दो दाल—(1) अत्यन्त घनिष्ठ। प्र० ये दोनों एक आम की दो फांकें हैं।

(2) बिल्कुल एक-से। प्र० देखिए प्रयोग (1)

(3) सगे। प्र० देखिए प्रयोग (1)

एक आंवे के बर्तन, -खपड़ी के नहलाये, -गुरु के चेले, -टाट के, -डाल के तोड़े, -तरकश के तीर, -थैली के चट्टे-बट्टे—(1) एक ही दल के एक ही समान। प्र० जोइ-जोइ आवत वा मथुरा तें एक डार के तोरे (सू० सा०–सूर, 4213); तुम दोनों एक ही थैली के चट्टे-बट्टे हो (मान०(4)–प्रेमचंद, 74)।

(2) सगे भाई-बहन। प्र० ये दोनों एक ही खपड़ी के नहलाये हुए हैं।

एक इंच भी पीछे न हटना—तनिक भी विचलित न होना। प्र० तुम अपनी बात से एक इंच भी पीछे मत हटना।

एक ईंट के लिए भवन गिराना—थोड़े लाभ के लिए बहुत नुकसान करना। प्र० यह उसने क्या किया? एक ईंट के लिए भवन गिरा दिया?

एक उम्र बाद—बहुत दिनों बाद। प्र० तुम आज कहाँ से टपक पड़े? एक उम्र के बाद तुम्हारे दर्शन हो रहे हैं।

एक उम्र में—बहुत समय में। प्र० मुझे तो वह सारा कांड एक उम्र में मालूम हुआ।

एक और एक ग्यारह करना या होना, एक-एक मिलकर ग्यारह करना या होना—मिलकर शक्ति बढ़ती है। प्र० तुम लोग यदि मिलकर काम करो तो क्या नहीं कर सकते। एक और एक ग्यारह होते हैं, समझे?

एक कड़ी होना—(1) विकास की एक स्थिति होना। प्र० मानव-विकास की महत्त्वपूर्ण कड़ी है समाजवाद।

(2) दो स्थितियों को जोड़नेवाला। प्र० अच्छा, तो फिलहाल आप ही दोनों के बीच की एक कड़ी हो रहे हैं।

एक कदम आगे बढ़ना—थोड़ी और प्रगति करना। प्र० मैं एक कदम और आगे बढ़ा और मैंने प्रकाशन का काम करने का निर्णय किया।

एक करना—(1) यहाँ-से-वहाँ बहुत दौड़-धूप करना। प्र० खजांची कलकत्ता और राजधानी एक किये हुए हैं (चोटी०–निराला, 117)।

(2) मिला देना। प्र० लो, मुन्नी ने दाल-चावल सब एक कर दिया।

एक कलम—(1) एक बार के हुक्म से। प्र० झाँसी राज्य की संपूर्ण सेना एक कलम बरखास्त कर दी गई (झाँसी०–वृ० वर्मा, 166)।

(2) लगातार, एक साथ। प्र० गहमरी जी ने बासठ वर्ष एक ही कलम से लिखा (वैशाली० (2)-चतुर०, 310)।

(3) थोड़ी लिखावट। प्र० भैया! लिख दे एक कलम खत मों बालक के जोग (चक्र०–दिनकर, 11)।

(4) बहीखाते का एक दाखिला। प्र० कृष्णलाल के नाम पड़े रुपये को एक कलम और टाँक लो।

एक कहना चार सुनना, - दस सुनना—किसी को भला-बुरा कहना और फिर बदले में उससे अधिक सुनना। प्र० जो एक कहेगा उसे चार सुनना ही पड़ेगा। मैं न कहूँ न सुनूं।

एक कहना दस सुनना—दे० एक कहना चार सुनना।

एक कहानी होना—कहने-सुनने की बात भर रह जाना। प्र० भाई की बातें तो अब एक कहानी हो गयी है।

एक का एक—समूचा। प्र० एक का एक खीरा मत दे देना, मुन्ना को नुकसान करेगा।

एक का चार करना—बहुत बढ़ा देना। प्र० उनकी तो एक की चार करने की आदत है।

एक कान से सुनकर दूसरे से निकाल देना—सुनी बात पर कोई ध्यान न देना। प्र० मछुवे × × मछुवे की बेटी अपने प्रेमी के गीत-एक कान से सुनती थी, दूसरे कान से निकाल देती थी (दूधगाछ-दे० स०, 250)।

एक की अट्ठारह लगाना, -चार जड़ना, -चार लगाना, -तीन लगाना, -दस जड़ना -दस लगाना, -लाख लगाना—(1) खूब बढ़ा-चढ़ाकर बातें बताना। प्र० हरीचंद ब्रज बड़े चवाई, कहत एक की लाख लगाई (भा० ग्रं० (2)-भारतेन्दु, 190)।

(2) दूसरे की बुराई करना। प्र० कोई सुन लेगा तो वहाँ जाकर एक की चार जड़ आयेगा (प्रेमा०-प्रेमचंद, 13)।

एक की एक से न बनना—परस्पर मेल न होना। प्र० उनके घर की हालत मत पूछो। एक की एक से नहीं बनती, रात-दिन महाभारत मची रहती है।

एक की चार जड़ना—दे० एक की अट्ठारह लगाना।

एक की चार लगाना—दे० एक की अट्ठारह लगाना।

एक की चोट एक पर आना—एक की तकलीफ से दूसरे को तकलीफ पहुँचना। प्र० उनके घर में ऐसा भाई-चारा है कि एक की चोट एक पर आती है।

एक की तीन लगाना—दे० एक की अट्ठारह लगाना।

एक की दवा दो होना—एक को दबाने के लिए दो की जरूरत होना।

एक की दस कह लेना—भरपूर बदला ले लेना। प्र० मैं छोड़ूँगी थोड़े ही, एक की दस कर लूँगी।

एक की दस जड़ना—दे० एक की अट्ठारह लगाना।

एक की दस लगाना—दे० एक की अट्ठारह लगाना।

एक की दस सुनना या सुनाना, -सौ सुनाना—(1) एक बात के उत्तर में बहुत बातें सुनना या सुनाना। प्र० तुम एक की दस सुनना चाहती हो तो सुनो।

(2) थोड़ी निन्दा करके बहुत निन्दा सुनना या सुनाना। प्र० देखिए प्र० (1)।

एक की दो कह लेना—दुगुना बदला लेना। प्र० ठीक है भाई, तुम एक की दो कह लेना, बस।

एक की लाख लगाना—दे० एक की अट्ठारह लगाना।

एक की सौ सुनना या सुनाना—दे० एक की दस सुनना या सुनाना।

एक के ऊपर एक—एक के बाद एक, क्रम से। प्र० एक के ऊपर एक ऐसी मुसीबत आती गयी कि मुझे तो लगा कि अब और न सह सकूँगा।

एक के ऊपर एक गिरे पड़ना—(1) बहुत-से लोगों का किसी एक वस्तु के लिए होड़ करना। प्र० आजकल लोहे के आयात लाइसेन्स के लिए लोग एक के ऊपर एक गिरे पड़ते हैं।

(2) बहुत भीड़ होना। प्र० रामलीला में आज गजब की भीड़ थी—लोग एक के ऊपर एक गिरे पड़ते थे।

एक के तीन बनाना—अनुचित नफा लेना। प्र० वह बड़ा होशियार है, एक के तीन बना रहा है।

एक के दो करना—खूब लाभ करना। प्र० सेठ जी आजकल एक के दो करने में लगे हैं।

एक के पीछे दूसरा—(1) बारी-बारी से। प्र० एक के पीछे दूसरा आता, सलाम करता और आगे बढ़ जाता।

(2) धीरे-धीरे। प्र० मैं चुप-चाप देखता रहा, एक के पीछे दूसरा खिसकता गया।

एक को एक खाये जाना—परस्पर द्वेष होना। प्र० वहाँ एक को एक खाये जा रहे हैं, सब अपनी और केवल अपनी चिन्ता में लगे हैं।

एक को हजार करना—थोड़े को बहुत बढ़ा-चढ़ा देना। प्र० आप भी एक को हजार कर रहे हैं। इतनी तारीफ की क्या बात है?

एक कोना खिसकना—स्थिति बिगड़ना। प्र० अब तो दलसुखराय का भी एक कोना खिसकने लगा है।

एक खपड़ी के नहलाये—(1) सगे भाई-बहन। प्र० ये दोनों एक ही खपड़ी के नहलाये हुए हैं।

(2) दे० एक आँवे के बरतन।

एक खालसा का सवा लाख होना—बहुत बहादुर होना, हिम्मत होने से शक्ति का बहुत बढ़ जाना।

एक खून होना—एक ही माँ-बाप की संतान होना। प्र० अलग हैं तो क्या हुआ, हैं तो एक खून (गोदान-प्रेमचंद, 30)।

एक गरम एक नरम—एक गुस्सेवर और दूसरा शान्त। प्र० एक गरम और एक नरम होने से ही साथ निभ सकता है, दोनों गरम हो जायें तो कैसे गुजारा हो।

एक गुरु के चेले—दे० एक आँवे के बरतन।

एक घड़ी भी नहीं—तनिक देर भी नहीं, तुरन्त। प्र० एक घड़ी की भी देरी नहीं चलेगी, तुम फौरन भागो।

एक घाट पर पानी पीना—आपस में भय न होना। प्र० गउब सिंघ रेंगहिं एक बाटा। दूअउ पानि पिअहिं एक घाटा (पद०-जायसी, 1/15)।

एक घूंट पानी को भी न पूछना, -बूंद पानी को भी न पूछना—किसी काम न आना। प्र० यही बेटे, जिनके लिए तुम इतनी हाय-हाय कर रहे हो, मौका आने पर एक बूंद पानी को भी नहीं पूछेंगे।

(2) तनिक आदर-सत्कार न करना। प्र० मैं उतनी दूर चलकर गया, किसी ने एक घूंट पानी तक को न पूछा।

एक घूंट पानी देने वाला भी न होना—कोई सहायक न होना। प्र० किन्तु एक अनजान नगर में अकेले कैसे रहूँगी, न कोई आगे, न पीछे। कोई एक घूंट पानी देने वाला भी नहीं (मान० (6)-प्रेमचंद, 40)।

एक चने का भाड़ न फोड़ सकना—अकेले आदमी का कुछ न कर सकना।

एक चने की दो दाल—दे० एक आम की दो फाँकें।

एक चावल से बटलोई भर का हाल जानना—जरा-सी से पूरी का अंदाज कर लेना। प्र० एक चावल से ही बिलफेल पाठकों को बटलाई भर का हाल जानना होगा (गु० नि०-बा० मु० गु०, 493)।

एक चित्ती कौड़ी भी पास में न होना—पास में कुछ भी न होना। प्र० यहाँ तो जब से आई हूँ ऐसा हाथ खाली हो गया है कि अहिवात का

सौदा करने के लिए भी एक चित्ती कौड़ी पास में नहीं है (दे० दु०–शिव०, 122)।

एक छींटा भी न होना—किञ्चित् भी न होना। प्र० दाल में घी का एक छींटा भी तो नहीं है।

एक ज़बान कहना—एक बार कहना, संक्षेप में कहना। प्र० मैंने एक जबान कह दिया तो काम होना ही चाहिए।

एक जबान रखना—बात का पक्का होना। प्र० तुम्हें एक जबान रखनी चाहिए, उसके बिना बाज़ार में साख नहीं बनेगी।

एक जान एक प्राण, -मन—अत्यन्त घनिष्ठ। प्र० रमाकान्त और पवन एक जान एक प्राण हैं, उन्हें दूर करना कठिन है।

एक जान एक मन—दे० एक जान एक प्राण।

एक जान करना—मरना और मारना। प्र० मैं अपनी और उसकी एक जान कर दूंगी, वह किस फेर में है?

एक जान का—एक-सा। प्र० दोनों थाली एक जान की हैं, कोई सी भी ले लो।

एक जान दो कालिब—घनिष्ठ प्रेमी।

एक जान हज़ार गम, -मुसीबतें—एक व्यक्ति के सिर बहुत-सी झंझटें होना।

एक जान हज़ार मुसीबतें—दे० एक जान हज़ार गम।

एक जूती पहनना एक उतारना—एक औरत को छोड़ना और दूसरी को करना।

एक झंडे के नीचे खड़े होना—एक मत या दल में आना। प्र० धाक अपनी बांध हैं जग में रहे एक झंडे के तले वे हो खड़े (चुभते०–हरिऔध, 133)।

एक झंडे के नीचे लाना—एक मत या दल में लाना। प्र० सारे देश को अब एक झंडे के नीचे लाना होगा।

एक टाँग—एक हिस्सा। प्र० तुम हर काम की एक टाँग छोड़ क्यों देते हो?

एक टाँग खड़ा रहना, -पर खड़े रहना, -फिरना, -से खड़े रहना—जी जान से किसी काम में लगे रहना। प्र० मैं उनके यहाँ सारे दिन एक टाँग से खड़ा रहा फिर भी उनका रुख न बदला।

एक टाँग घूमना, -से नाचना—बराबर घूमते रहना। प्र० वह × × सेठ की अर्दली में बारह-बारह घंटे खड़ा है या एक टाँग से नाच रहा है तो पैसा कमा रहा है (अमृत०–नागर, 638)।

एक टाँग टूटना—एक सहारे का जाता रहना। प्र० शीला क्या गयी, मेरी तो एक टाँग ही टूट गयी।

एक टाँग नाव में होना—इधर-उधर दोनों ओर फँसे होना। प्र० उसकी एक टाँग हाजी की नाव में भी है (अमृत०–नागर, 635)।

एक टाँग पर खड़े रहना—दे० एक टाँग खड़ा रहना।

एक टाँग फिरना—दे० एक टाँग खड़ा रहना।

एक टाँग से खड़े रहना—दे० एक टाँग खड़ा रहना।

एक टाँग से नाचना—दे० एक टाँग घूमना।

एक टाट के—दे० एक आँवे के बरतन।

एक टोला गायब होना—एक आँख न होना। प्र० उस बेचारे का तो एक टोला गायब हो गया।

एक डाल के तोड़े—एक समान। प्र० दे० एक आँवें के बर्तन।

एक डाल पर रहना—(1) अपनी बात पर दृढ़ रहना। प्र० वे एक डाल पर रहनेवाले जीव हैं, उनके विचार-परिवर्तन की बात मत सोचो।

(2) किसी एक पक्ष की ओर होना। प्र० मैं तो एक डाल पर रहना पसन्द करता हूँ, इधर-उधर नहीं करता।

एक डोर में बँधना—(1) प्रेम होना। प्र० बँध सकेंगे न एक डोरे में तोड़ करके रहा महा बंधन (चुभते०–हरिऔध, 93)।

(2) विवाह होना। प्र० 3 नवम्बर को सुषमा और हरीश एक डोर में बँध गये।

एक डौल के—एक ही तरह के। प्र० दोनों सुग्रीव और बाली की तरह एक ही डौल के हैं।

एक ढेले से दो चिड़िया मारना, -तीर में दो निशाना लगाना, -से दो शिकार करना या होना, -निशाने (में) से दो शिकार करना या होना, -पंथ दो काज करना या होना—ऐसा काम करना जिससे दोहरा लाभ हो, दो काम बनें। प्र० ज्ञान बुझाइ खबर दै आवहु, एक पन्थ द्वै काज (सू० सा०–सूर, 4050); मैं भी एक ही निबन्ध में इन दोनों विषयों का समावेश कर दूंगा, एक ही ढेले से दो चिड़ियाँ मार लूंगा (कुछ–प० पु० बख्शी, 5)।

एक तरकश के तीर—दे० एक आँवे के बर्तन।

एक तरफ़—एकान्त, अलग। प्र० तुम भैया को एक तरफ ले जाकर सलाह कर लो।

एक तहसील गायब होना, -परगना गायब होना, -बाज़ार बन्द होना—काना होना।

एक ताक—समान, तुल्य। प्र० सखन संग हरि जेंवत छाक प्रेम सहित मैया दै पठयी सबै बनायै हैं एक (इक) ताक (व्र० सू० को०)।

एक तार—(1) लगातार, सम भाव से। प्र० कबीर हरि के नाँव सूं, प्रीत रहै इकतार (कबीर ग्रंथा०–कबीर, 57); पर इन काली-काली घटा और पुरवैया के झोंके तथा पानी के एक तार झमाके से तो कोई भी न बचेगा (भा० ग्रं०–(1)–भारतेन्दु, 444)।

(2) एक ही रूप-रंग का, समान, बराबर। प्र० कोई फर्क नहीं पड़ता, कपड़ा हर कहीं एक ही तार है।

एक तिनका भी न लगाना—कुछ भी न समझना। प्र० धनवाली की चहेती ठहरी किसी को एक तिनका क्यों लगावेगी? (परती०–रेणु, 80)।

एक तीर में दो निशाना लगाना—दे० एक ढेले से दो चिड़िया मारना।

एक तीर से दो शिकार करना या होना—दे० एक ढेले से दो चिड़िया मारना।

एक तो—पहले तो, पहली बात तो यह कि। प्र० एक तो तुम समय से आये नहीं, ऊपर से धौंस जमा रहे हो?

एक तो करेला ऊपर से नीम चढ़ा होना—बुरे या तीखे का और बल पाकर और बुरा या तीखा होना, बहुत अप्रिय होना। प्र० अरे इसमें कोरी गैर जात ही का तो प्रश्न नहीं हैगा। ससुर करेला और ऊपर से नीम

चढ़ा। करम फूटी विधवा में ब्याह करैगा (अमृत०—नागर, 453)।

एक थाली में खाना—मित्रता होना, घनिष्ठ सम्बन्ध होना। प्र० एक थाली में न खाओ, एक घर में तो रहो, इतना सम्बन्ध तो बनाये रखो (प्रेमा०—प्रेमचंद, 43)।

एक थैली के चट्टे-बट्टे—दे० एक आँवे के बरतन।

एक दम (में)—बिना रुके, लगातार। प्र० मैं तो एक दम चक्की चलाती रही फिर भी पूरा गेहूँ न पीसा जा सका!

एक दम की हस्ती—ज़रा देर की जिन्दगी। प्र० मामू का क्या, एक दम की हस्ती हैं! तुम लोग अपनी सोचो।

एक दरजा ऊँचा होना—अधिक या बढ़कर होना। प्र० धूर्तता में वे एक दरजा और ऊँचे हैं।

एक दूसरे का, -पर, -में, -से—परस्पर। प्र० अब तक बराबर सभाओं में जाकर एक-दूसरे का सिर इसीलिये फोड़ते हैं जिसमें धर्म की उन्नति हो (राधा० ग्रंथा०—राधा० दास, 634)।

एक दूसरे का मुंह ताकने लगना—कोई उत्तर न बन पड़ने पर यह आसरा देखना कि दूसरा कुछ बोले। प्र० मेरा प्रश्न सुनकर सब एक-दूसरे का मुँह ताकने लगे।

एक दूसरे का हाथ पकड़ना—साथ-साथ चलना, सहारा देना। प्र० परन्तु महाराज, कला कर्तव्य को सजग किये रहे, भावना विवेक को सम्बल दिये रहे, मनोबल और धारणा एक-दूसरे का हाथ पकड़े रहें (मृग०—वृ० वर्मा, 422)।

एक-दूसरे की तरफ खिंचना या खींचना—एक-दूसरे को प्रिय होना। प्र० धीरे-धीरे दोनों एक-दूसरे की तरफ खिंचते गये।

एक दूसरे पर—दे० एक-दूसरे का।

एक दूसरे पर जान देना, -निछावर करना—बहुत अनुरक्त होना। प्र० सरोज और उसके पति दोनों ही एक दूसरे पर अपनी जान निछावर करते हैं ×× (अमृत०—नागर, 184)।

एक दूसरे पर जान निछावर करना—दे० एक दूसरे पर जान देना।

एक दूसरे में—दे० एक दूसरे का।

एक दूसरे से—दे० एक दूसरे का।

एक दूसरे से खिंच जाना—परस्पर दुराव या मनोमालिन्य होना। प्र० इस घटना से ऐसी गाँठ पड़ी कि दोनों एक दूसरे से खिंचते गये।

एक देकर दो की आशा करना—थोड़ा करके बदले में अधिक चाहना। प्र० तुम तो एक देकर दो की आशा कर रहे हो, सो कैसे होगा।

एक दृष्टि से देखना—दे० एक आँख से देखना।

एक धक्का लगना—(1) घाटे आदि के कारण स्थिति विचलित होना। प्र० कपड़े पर नया कर लग जाने से उन्हें एक धक्का और लगा।

(2) अनहोनी अप्रत्याशित घटना से हृदय का स्तब्ध होना। प्र० पत्नी और पुत्र तो पहले ही गुजर गये थे, छोटे भाई की मृत्यु से उन्हें एक धक्का और लगा।

(3) रोग का आक्रमण होना। प्र० टायफाइड के तीन महीने बाद ही कॉलरा हो गया, बेचारे को एक धक्का और लग गया।

एक धागे में पिरोना—एक साथ मिलाना। प्र० सूरदास कंचन अरु कांचहिं, एकहिं धाग पिरोयौ (सू० सा०—सूर, 43)।

एक धारा में बहना—एक ही भाव या विचार का होना। प्र० कमलनयन और श्रीनाथ इस समय एक ही धारा में बह रहे हैं।

एक नंबर—(1) सबसे पहले। प्र० दुनियादारी और मिलनसारी बरतने में एक नम्बर (अमृत०—नागर, 55)।

(2) सबसे श्रेष्ठ, श्रेष्ठ। प्र० यह टी-सेट एक नम्बर का है, ले लो।

एक न चलना, -लगना—कोई भी वश न होना, कोई युक्ति कारगर न होना। प्र० उसके सप्रेम आग्रह के सामने अमरकान्त की एक न चलती (कर्म०—प्रेमचंद, 22)।

एक न मानना, -सुनना—बिलकुल बात न मानना। प्र० मैंने बहुत समझाया पर उसने एक न सुना।

एक न लगना—दे० एक न चलना।

एक न सुनना—दे० एक न मानना।

एक न सूझना—कोई उपाय न समझ पड़ना। प्र० तुम्हीं बतलाओ कि कैसे इस स्थिति से उबरूं। मुझे तो एक नहीं सूझता कि क्या करूँ, कैसे करूँ।

एक नज़र देखना—(1) ज़रा देर के लिए देखना, झलक मात्र मिलना। प्र० वृद्ध सज्जन ने शव के मुँह से कपड़ा हटाया और उसके एक नज़र देख लेने के बाद फिर ढँक दिया (चेतन—अश्क, 90)।

(2) ठीक से न देख पाना। प्र० मैंने उस दिन लड़की को बस एक नज़र देखा था। कुछ अँधेरा भी था और वह दूर भी थी।

एक नज़र में—एक ही बार के देखने में। प्र० मैंने तो एक नजर में ही उसे अच्छी तरह भाँप लिया।

एक नयी दुनिया बना लेना—स्थिति में बड़ा परिवर्तन कर लेना। प्र० इन पैंतालिस-छियालिस बरसों में हमसे भी गये बीते, घुटे पिसे तबाह इन्सानों ने अपने लिए वाकई एक नयी दुनिया बना ली है (अमृत०—नागर, 423)।

एक निगाह से देखना—दे० एक आँख से देखना।

एक निशाने (में) से दो शिकार करना या होना—दे० एक ढेले से दो चिड़िया मारना।

एक पंक्ति में बैठना—बराबर का दर्जा मिलना, एक साथ होना। प्र० तैसैंहि रास केलि रस अंचयौ, बैठि एक ही पाँति (सू० सा०—सूर, 4371)।

एक पंगत में बैठनेवाले, -पत्तल में खाने वाले—एक ही जातिवाले ऐसे व्यक्ति जिनमें रोटी-बेटी का सम्बन्ध हो। प्र० वाह, वे दोनों तो एक ही पंगत में बैठनेवाले हैं, उनमें परस्पर सम्बन्ध होने में क्या अड़चन हो सकती है?

एक पंथ दो काज करना या होना—दे० एक ढेले से दो चिड़िया मारना।

एक पग आगे होना—बढ़कर होना। प्र० श्रवण तो भाई से भी एक पग आगे है।

एक पतिव्रत—एकनिष्ठ प्रेम। प्र० एक पतिव्रत हरि रस जिनकें, और हृदै

नहिं आनैं (सू० सा०–सूर, 4170)।

एक पत्तल में खाने वाले—दे० एक पंगत में बैठनेवाले।

एक पत्ती का साया तक न मिलना—कोई सहारा या आश्रय न रह जाना। प्र० भला सोचो तो डिप्टी साहब के कानों में यह बात पड़ जाय तो तुम्हारा क्या हाल हो? कहीं एक पत्ती का साया भी न मिलेगा (प्रेमा०–प्रेमचंद, 57)।

एक पत्ती तक न तोड़ना—कुछ न करना, बहुत सामान्य काम भी न कर पाना। प्र० काउंसिल कुछ नहीं कर सकता। एक पत्ती तक नहीं तोड़ सकता (रंग० (2)–प्रेमचंद, 142)।

एक पत्ती भी न हिलना—(1) कोई काम न होना। प्र० क्या मजाल कि घर में उनकी इच्छा के विरुद्ध एक पत्ती भी हिल जाय (मान० (3)–प्रेमचंद, 73)।

(2) तनिक भी हवा न होना। प्र० कैसी गर्मी है! एक पत्ती तक नहीं हिल रही है।

एक पर एक—(1) एक के बाद एक। प्र० उस पर तो एक पर एक मुसीबतों का पहाड़ टूटता रहा और वह शान्त-चित्त सब कुछ सहता गया।

(2) एक से एक बढ़कर। प्र० एक पर एक विद्वान् संसार में पड़े हैं कमी थोड़े ही है।

एक पर एक गिरना—(1) बहुत भीड़ होना। प्र० उस दिन भरत-मिलाप में लोग एक पर एक गिरे पड़ते थे।

(2) टूट पड़ना, गिरना। प्र० कहाँ एक पर एक गिरे पड़ रहे हो? जरा हटकर खड़े हो।

एक पर के सौ कौवे बनाना—थोड़ी बात को बहुत बढ़ा-चढ़ा देना। प्र० उसकी तो पुरानी आदत है, एक पर के सौ कौवे बनाये बिना उसे रोटी नहीं पचती।

एक परगना गायब होना—दे० एक तहसील गायब होना।

एक पल कल्प के समान लगना—समय का बहुत लम्बा प्रतीत होना। प्र० भरत दसा सुमिरत मोहि निमिप कल्प सम जात (राम० (लं०)–तुलसी, 1005)।

एक पल में, -पलक में—ज़रा-सी देर में। प्र० कहै कबीर करता की बाजी, एक पलक मैं राज विराजी (कबीर ग्रंथा०–कबीर, 177); कै मारौं, जीवत धरि ल्यावौं, एक पलक मैं ताहि (सू० सा०–सूर, 2014)।

एक पलक में—दे० एक पल में।

एक पाँति में बैठना या बैठाना—जाति में मिल जाना या मिलाना, एक-सा सम्मान पाना या देना। प्र० कह वै कमला के स्वामी संग मिलि बैठी इक पाँती (सूरदास)।

एक पाठ पढ़ लेना, -सीख रखना—एक सबक सीख लेना, एक शिक्षा मिल जाना। प्र० इस असफलता से मैंने एक पाठ पढ़ लिया है, कभी हड़बड़ाकर कोई काम नहीं करना चाहिए।

एक पाठ सीख रखना—दे० एक पाठ पढ़ लेना।

एक पान का दो टुकड़ा करके खाना—बहुत घनिष्ट होना। प्र० तहसीलदार हरगौरी और तहसीलदार विश्वनाथ प्रसाद अब एक पान को दो टुकड़ा करके खाते हैं (मैला०–रेणु, 224)।

एक पानी—एक बार। प्र० एक पानी और ऊपर-नीचे कर लो, सब सामान ठीक से लग जायेगा।

एक पास—पास-पास। प्र० दोनों टेबुलों को एक पास रख देना।

एक पेट के—सहोदर। प्र० कृष्ण-बलराम एक पेट के नहीं थे।

एक पैर भीतर एक पैर बाहर, -यहाँ एक पैर वहाँ—अस्थिर होना, कभी यहाँ कभी वहाँ जाते रहना। प्र० चार दिन तक ज्ञानशंकर को बैठने का अवकाश न मिला। एक पैर दीवानखाने में रहता था × × दूसरा पैर शामियाने में रहता था (प्रेमा०–प्रेमचंद, 334)।

एक पैर यहाँ एक पैर वहाँ—दे० एक पैर भीतर एक पैर बाहर।

एक पैर रकाब पर रखे तैयार होना, -में होना—हमेशा जाने को तैयार रहना। प्र० सन्तोष बाबू का एक पाँव रकाब में ही रहता है।

एक पैर रकाब में होना—दे० एक पैर रकाब पर रखे तैयार होना।

एक पैर से खड़ा रहना—बहुत भाग-दौड़ करना, बिना विश्राम किये किसी काम या व्यवस्था में लगे रहना। प्र० कांग्रेस अधिवेशन के समय वे एक पैर से खड़े रहते।

एक पैर से नाचना—पूरी तरह नशे में होना। प्र० प्रीति के बचन बाँचे, बिरह अनल आँचे, आपनी गरज तुम एक पायँ नाचे (सू० सा०–सूर, 3167)।

एक प्राण दो शरीर होना, -मन दो तन होना, एक प्राण होना—अत्यन्त घनिष्ठ होना। प्र० सूर स्याम नागर, यह नागरि, एक प्रान तन दो है (सू० सा०–सूर, 2521)।

एक फूंक में उड़ा देना—महत्त्वहीन या नगण्य बना देना। प्र० गोविन्दी ने इन प्रमाणों को एक फूंक में उड़ा दिया (गोदान–प्रेमचंद, 195)।

एक बाज़ार बन्द होना—दे० एक तहसील गायब होना।

एक बात कहना—अन्तिम निश्चित बात कहना। प्र० तुम एक बात कहो कि जाओगे या नहीं।

एक बात की बीस बात बनाना—बहुत-से बहाने करना। प्र० मोर मुकुट मुरली पीताम्बर, एक बात की बीस बनाई (सू० सा०–सूर, 3250)।

एक बात पर रहना या होना—कही बात पर दृढ़ रहना। प्र० आदमी को एक बात पर रहना चाहिए, बार-बार बात पलटना ठीक नहीं।

एक बात है—सहज है, मुश्किल नहीं। प्र० फिल्मी गाना गाना एक बात है पर शास्त्रीय संगीत के लिए बहुत अभ्यास करना पड़ता है।

एक बाल भी सीधा न कर पाना—तनिक भी लाभ न कर पाना। प्र० इस बार तुम एक बाल तो सीधा कर ही न सकोगे, मैं कहे देता हूँ।

एक बाल भी टेढ़ा करना या होना, -बाँका करना या होना, -रोम भी टेढ़ा करना या होना, -बाँका करना या होना—तनिक भी क्षति पहुँचना या पहुँचाना। प्र० पर ऐसा कदापि न होने पावे कि बसन्त के कारण उसके ऐसे अनुपम मित्र का एक रोम भी टेढ़ा हो (भा० ग्रं० (1)–भारतेन्दु, 614)।

एक बाल भी बाँका करना या होना—दे० एक बाल भी टेढ़ा करना या होना।

एक बित्ता अधिक—बढ़कर। प्र० वहाँ उनका बाहर से भी एक बित्ता अधिक आदर होता है (दे० दु०–शिव०, 22)।

एक बूंद पानी को भी न पूछना—दे० एक घूंट पानी को भी न पूछना।

एक बूंद रक्त रहते—आखिरी दम तक। प्र० शरीर में एक बूंद भी रक्त रहते सिसौदिया अपने देश की रक्षा के लिए तत्पर रहेंगे।

एक बेल के तोमड़े—एक विचार वाले। प्र० तुम सब एक ही बेल के तोमड़े हो।

एक भर—थोड़ा-सा। प्र० यह एक-भर डरा है, तो तुम दस-भर हल्ला मचाकर इसकी घबराहट को और बढ़ा रही हो (दे० दु०–शिव०, 16)।

एक भाव बिकना—सब बराबर होना। प्र० आज की व्यवस्था में न्याय-अन्याय विवेक-अविवेक सब एक भाव बिकते हैं।

एक भी न होना—कुछ भी न होना। प्र० कवित विवेक एक नहिं मोरे (राम० (बाल)–तुलसी, 16)।

एक मन दो तन होना—दे० एक प्राण दो शरीर होना।

एक माँ-बाप का बनना या होना—मिल-जुलकर रहना। प्र० एक माँ-बाप के हुए बिना तुम लोग कैसे साथ काम कर सकोगे।

एक मामला होना—परस्पर कोई भेद न होना, बहुत घनिष्ठ सम्बन्ध होना। प्र० आपस में जब एक मामला हो तब न काम बने।

एक मुंह कहना, एक मुंह से कहना, -होकर कहना—(1) सबका सहमत होना। प्र० इस समय सारा चित्तौर एक मुंह होकर तुम्हारी प्रशंसा कर रहा है (राधा० ग्रंथा०–राधा० दास, 623)।
(2) बार-बार कहना। प्र० मैं एक मुंह कहे चली गयी पर किसी के कान पर जूं न रेंगी।

एक मुंह दो बात—एक ही मनुष्य द्वारा दो तरह का बयान। प्र० उसका रत्ती भर भरोसा नहीं। वह एक मुंह दो बात करनेवाला आदमी है।

एक मुंह बोलना—(1) सबका एक ही बात कहना। प्र० सब तो एक मुंह बोल रहे थे पर तुमने उस समय बिलकुल ध्यान नहीं दिया।
(2) जरा-सा बोलना। प्र० वे मुझसे एक मुंह बोले तक नहीं। ऐसी उपेक्षा।

एक मुंह से कहना—दे० एक मुंह कहना।

एक मुंह सैकड़ों जबान होना—(1) बहुत बोलनेवाला व्यक्ति। प्र० भई, मैं उससे पार नहीं पा सकता। वह तो एक मुंह सैकड़ों जबान है।
(2) एक मुंह से हजारों बातें सुनानेवाला व्यक्ति। प्र० देखिए प्रयोग (1)।

एक मुंह होकर कहना—दे० एक मुंह कहना।

एक मुंह होना—सब का सहमत होना। प्र० आप सब एक मुंह हैं तो मैं भी आपके साथ हूं।

एक मुट्ठी अन्न—थोड़ा-सा खाद्यान्न। प्र० हैं तरसते एक मुट्ठी अन्न को आपकी मूठी नहीं अब भी खुली (चुभते०–हरिऔध, 4)।

एक मुट्ठी मिट्टी डालना—मृतक को कब्र में सुलाकर उस पर मिट्टी डालना।

एक मुट्ठी होना—एक होना। प्र० अब दिसांगमुख वाले एक मुट्ठी होकर रह सकेंगे (ब्रह्म०–दे० स०, 220)।

एक मुश्त, -मूठ—एक साथ, सब। प्र० एक मुश्त इतने रुपये मैं कहाँ से दूंगा?

एक मूठ—दे० एक मुश्त।

एक में एक करना—उल्टा-सीधा करना। प्र० देखो तो सही, इस लड़की ने सारी चीजें एक में एक कर दीं।

एक में गूंथना, -सूत्र में गूंथना, -पिरोना, -बँधना—बिखरी वस्तु या भाव को एक क्रम में करना। प्र० पहले इन सारी बातों को एक में गूँथो फिर इन पर सिलसिले से विचार करो।

एक म्यान में दो तलवार होना—जहाँ एक की जगह हो, वहाँ दो का होना, दो विरोधियों का एक साथ रहना। प्र० रहै क्यौं एक म्यान असि दोय (भा० ग्रंथा० (2)–भारतेन्दु, 582); एक म्यान में दो तलवारें नहीं रह सकतीं (गोदान–प्रेमचंद, 302)।

एक रंग आना एक रंग जाना—मुंह पर हवाई उड़ना। प्र० परमेश्वर का चेहरा उस समय देखने लायक था, एक रंग आ रहा था एक रंग जा रहा था।

एक रंग, -रंग एक तार—एक-सा; समान रूप से। प्र० वह एक रंग एक तार हाथ चलाता रहा।

एक रंग एक तार—दे० एक रंग।

एक रंग चढ़ना—एक ही भाव या विचार का होना। प्र० आज तो सारे देश पर एक रंग चढ़ा हुआ है।

एक रंग में रंगना—एक-सा प्रभाव या विचार कर देना या होना। प्र० धर्म निज रंगतें दिखा न्यारी, है उसे एक रंग में रंगता (चुभते०–हरिऔध, 179)।

एक रत्ती—बहुत थोड़ा। प्र० मुझे उसकी एक रत्ती परवाह नहीं है।

एक रत्ती भी न ठहर सकना—मुकाबले में बिलकुल ही न ठहर पाना। प्र० किशोर के सामने वह एक रत्ती भी नहीं ठहर सकता।

एक रस्सी में नापना—एक साथ कर देना। प्र० सबको एक रस्सी में नापे बिना काम नहीं चलेगा।

एक राय से—सर्व सम्मति से। प्र० अन्त में एक राय से बम्बई जाना तै हुआ।

एक रोम भी टेढ़ा करना या होना—दे० एक बाल भी टेढ़ा करना या होना।

एक रोम भी बाँका करना या होना—दे० एक बाल भी टेढ़ा करना या होना।

एक लकड़ी से सबको हाँकना, -लाठी से सबको हाँकना—अच्छे-बुरे सबको एक-सा समझना। प्र० फिर यदि ईश्वर एक ही लाठी से सबको हाँके तो उसकी जगदीशता का क्या हाल हो? (प्र० पी०–प्र० ना० मि०, 128); ×× मेरे उन्मत्त भाई साहब एक ही लाठी से दोनों हो

को हाँकने में कोई ग्लानि या हानि नहीं समझते थे (अपनी०—उग्र, 23)।

एक लख्त—एकदम, एक बारगी। प्र० आप बैठ जाइए, मैं सब कपड़े एक लख्त लिये आता हूँ।

एक लगाकर चार पाना—थोड़ा रुपया खर्च करके अधिक पाना। प्र० वाह भाई, तुम्हारी तो चाँदी ही चाँदी है। एक लगाकर चार पानेवाले खुशकिस्मत तुम्हीं हो।

एक लड़ी में पिरोना—शृंखला स्थापित करना, एक साथ करना। प्र० उन्होंने बिखरे हुए भावों और विचारों को बड़ी खूबी से एक लड़ी में पिरो दिया।

एक लाठी से सबको हाँकना—दे० एक लकड़ी से सबको हाँकना।

एक लेना न दो देना—कोई सम्बन्ध न रखना। प्र० इस किस्से से मुझे कोई मतलब नहीं। मुझे एक लेना न दो देना, मैं क्यों झमेले में पड़ूँ।

एक लोटा पानी तक के खादार न होना—कुछ भी न लेना। प्र० वे बेचारे तो हम लोगों को बार-बार समझाते थे कि देखो, मालिक से बिगाड़ करना अच्छी बात नहीं। हमसे कभी एक लोटा पानी के खादार नहीं हुए (मान० (6)—प्रेमचंद, 237)।

एक लोटा पानी देनेवाला कोई न होना—बहुत साधारण-सी सहायता करनेवाला या देख-रेख करनेवाला भी न होना। प्र० मेरा तो घर उजड़ गया नहतो, कोई एक लोटा पानी देनेवाला भी नहीं (गोदान—प्रेमचंद, 8)।

एक शमा के परवाने—एक स्त्री के कई प्रेमी। प्र० सरोज, कुमार और राजीव तीनों तो एक ही शमा के परवाने हैं—वह है नगीना।

एक समान दिन जाना, -बीतना, -होना—बराबर एक-सी स्थिति होना। प्र० मैंने तो कभी कोई सुख जाना ही नहीं, सब दिन एक समान ही रहे।

एक समान दिन बीतना—दे० एक समान दिन जाना।

एक समान दिन होना—दे० एक समान दिन जाना।

एक साँचे में ढले होना—एक-सी आकृति या स्वभाव वाले होना। प्र० तुम दोनों तो एक साँचे में ढले हो (ब्र० सू० को०)।

एक साँस में—एक बारगी। प्र० छाछ का छन्ना एक साँस में चढ़ा गया (कठ०—दे० स०, 271)।

एक साधना—ध्यान एक ही तरफ लगाना। प्र० एकै साधे सब सधै, सब साधे सब जाय।

एक सिरे से—बिलकुल पूरा। प्र० तुम एक सिरे से देख जाओ तो भूल नजर आ ही जायगी।

एक सूत्र में गूँथना—दे० एक में गूँथना।

एक सूत्र में पिरोना—दे० एक में गूँथना।

एक सूत्र में बँधना—एक ही सम्बन्ध में बँधना। प्र० क्या हम सब मानवता के एक सूत्र में नहीं बँधे हुए हैं?

एक सूत्र में बाँधना—दे० एक में गूँथना।

एक सूरत से—एक-सा, लगातार। प्र० सुबह से यह लड़का नयी कमीज के लिए एक सूरत में ज़िद किये जा रहा है। यह भी कोई बात है?

एक से इक्कीस करना या होना, -देना—थोड़े-से बहुत बढ़ाना या बढ़ना। प्र० भगवान् एक से इक्कीस करें, यही मनाता रहता हूँ (दे० दु०—शिव०, 63)।

एक से इक्कीस देना—दे० एक से इक्कीस करना।

एक से एक—एक की स्पर्द्धा में दूसरा बढ़कर। प्र० अति विचित्र तहँ लोक अनेका। रचना अधिक एक ते एका (राम० (उ०)—तुलसी, 1107)।

एक से एक दो से ग्यारह होना—एक के और साथ होने से शक्ति बहुत बढ़ जाती है।

एक से दिन न जाना, -रहना—दुःख या सुख का सदा न बना रहना। प्र० तुम इस तरह हिम्मत मत हारो। सब दिन एक से नहीं जाते।

एक से दिन न रहना—दे० एक से दिन न जाना।

एक से होना—एक ही खयाल या मनोवृत्ति वाले होना। प्र० बाप-बेटे एक से ही हैं, किसी से कोई उम्मीद रखना व्यर्थ है।

एक सौ चौवालीस लगाना—(1) भारतीय दंड संविधान की धारा 144 को लागू करना। प्र० हैदराबाद में 144 लग गया है।
(2) किसी प्रकार का प्रतिबन्ध लगाना। प्र० अरे यार, अब इस तरह 144 तो मत लगाओ। दिल खोलकर हँसे-बोले बिना स्वास्थ्य कैसे ठीक रहेगा।

एक स्वर से—सर्व सम्मति से, एक राय होकर। प्र० पांडवों ने माता की बात एक स्वर से मान ली।

एक स्वर से बोलना—(1) लगातार बोलते जाना। प्र० एक सुर से बोलते तो क्यों नहीं, सुर अगर सुर से मिलाना जानते (बोल०—हरिऔध, 139)।
(2) एक मत होकर कहना। प्र० खोलते तो कान कैसे खोलते, एक सुर से बोलते ही जब नहीं (चुभते०—हरिऔध, 110)।

एक हाथ का काम—एक ही आदमी द्वारा किया हुआ काम। प्र० एक हाथ का काम होने से ही सफाई आती है। तुम तीनों ने साड़ी में हाथ लगाकर उसे चौपट कर दिया।

एक हाथ बढ़कर—और अधिक, तुलना में बढ़कर। प्र० बेटा तो बाप से भी एक हाथ बढ़कर है।

एक हाथ से ताली न बजना—(1) एक के किये कुछ न होना। प्र० दोऊ चाहैं मिलन को, तो मिलाप निरधार, कबहूँ नाहिं बाजिहैं, एक हाथ सों तार (वृं० स०—वृन्द, 101)।
(2) केवल एक आदमी से झगड़ा न होना। प्र० तुमने भी कुछ तो कहा ही होगा। एक हाथ से ताली थोड़े ही बजती है।

एक हाथ से दुहना—आधा लाभ ही कर पाना। प्र० अब लग एक ही हाथ से दुह रहे थे, अब दोनों से दुहेंगे (अमृत०—नागर, 24)।

एक हाथ से देना दूसरे से लेना—किये का फल फौरन मिलना। प्र० इस बार तो एक हाथ से देना और दूसरे से लेना हो गया।

एक ही कहना—ऐसी बात कहना जिसका जोड़ न हो। प्र० नाक रगड़वाने की बात तुमने एक ही कही, मेरे तो ध्यान में भी नहीं आई थी।

एक ही घर का—एक ही वंश का। प्र० वे दोनों एक ही घर के हैं इसीलिए चेहरा मिलता है।

एक ही चटसार के पढ़े होना—एक-सी बुद्धि वाले होना। प्र० अब समुझों हम आत तुम्हारी, पढ़े एक चटसार (सू० सा०–सूर, 2123)।

एक ही टाट के—(1) एक ही जाति के। प्र० दोनों एक ही टाट के हैं इसलिए उनमें घनिष्ठ सम्बन्ध होना स्वाभाविक ही है (ब्र० सू० को०)।

(2) समान स्वभाववाले। प्र० दे० प्रयोग (1)।

एक ही तराजू पर तौलना, -भाव तौलना—एक ही मापदण्ड से सबको परखना। प्र० मैं तो सबको एक ही तराजू पर तौलने के पक्ष में हूँ।

एक ही ताक होना—एक ही तरह का होना। प्र० अब वै श्याम कूबरी दोऊ बने एक ही ताक (सू० सा०–सूर, 4504)।

एक ही थैली के चट्टे-बट्टे होना—दे० एक आँवें के बरतन।

एक ही दाम बिकना—एक-सा होना। प्र० तैसे तुम तैसेइ वै ठाकुर, एकहि मोल बिकाने (सू० सा०–सूर, 4598)।

एक ही नाव पर सवार होना—एक-सी स्थिति होना। प्र० हम-तुम तो एक ही नाव पर सवार हैं, पारुल (कठ०–दे० स०, 240)।

एक ही बर्तन में चरणामृत और मदिरा भरना—व्यवहार में भले-बुरे का भेद न करना।

एक ही भाव तौलना—दे० एक ही तराजू पर तौलना।

एक ही रही—खूब रही। प्र० तुम लोग भी वहाँ पहुँच गये, यह तो एक ही रही।

एक ही राग अलापना, -गाये जाना—एक ही बात बार-बार कहे जाना। प्र० तुम तो एक ही राग अलापते रहते हो! अब बस भी करो।

एक ही राग गाये जाना—दे० एक ही राग अलापना।

एक ही हुक्के के—एक ही जाति-बिरादरी के। प्र० वे लोग तो एक ही हुक्के के हैं, उनके बीच रोटी-बेटी का सम्बन्ध हो सकता है।

एक ही होना—अपूर्व होना, बेजोड़ होना। प्र० अवनीन्द्र नाथ ठाकुर का वह चित्र एक ही है।

एक ही सिक्के के दो पहलू होना—हर वस्तु के दो पक्ष होना। प्र० तुम इतना समझ लो कि एक ही सिक्के के दो पहलू होते हैं, तुम्हें दोनों का पता होना चाहिए।

एक हो जाना—(1) आपस का झगड़ा दूर कर मिल जाना; भले होना। प्र० इतने बरसों के झगड़े के बाद अब दोनों देवरानी-जेठानी एक हो गयी हैं।

(2) एक-सा होना। प्र० दोनों सेट एक हो गये, अब दोनों बहनों में किसी को आपत्ति न होगी।

एक-अंग लड़ना—लड़ने में एक ही हथियार का प्रयोग करना, एक ही ओर से लड़ना। प्र० हुजूर, ढाल तो जनानों के लिए हैं, हम उम्र भर एक-अंग लड़ा किये, तलवार ही से चोट लगायी और उसी पर रोकी (आजाद०–प्रेमचंद, 14)।

एक-अंग होना—एकनिष्ठ प्रेम होना, अद्वय भाव होना। प्र० कबीर दुविधा दूरि करि, एक-अंग ह्वै लागि (कबीर ग्रंथा०–कबीर, 53)।

एक-आध—कोई विरला। प्र० कहै कबीर गुर ग्यान थैं, एक-आध उबरंत (कबीर-ग्रंथा०–कबीर, 3)।

एक-एक—प्रत्येक, अलग-अलग। प्र० सभा में उपस्थित एक-एक आदमी ने वही प्रतिज्ञा दुहरायी।

एक-एक अंग खिल जाना—दे० अंग फूले न समाना।

एक-एक कंकड़ जोड़-जोड़कर—थोड़ा-थोड़ा संग्रह करके। प्र० एक-एक कंकड़ जोड़-जोड़कर मैंने यह मकान बनवाया था।

एक-एक करके—(1) अलग-अलग करके। प्र० आजु हौं एक-एक करि टरिहौं (सू० सा०–सूर, 134)।

(2) एक के बाद दूसरा, धीरे-धीरे। प्र० एक-एक करके करो, सब काम एक साथ कैसे होगा।

एक-एक की चार-चार सुनना या सुनाना—दे० एक की दस सुनना या सुनाना।

एक-एक की तीन-तीन जड़ना—खूब बढ़ा-चढ़ाकर शिकायत करना। प्र० तुमने एक-एक की तीन-तीन जड़ी होगी (मान०(8)–प्रेमचन्द, 89)।

एक-एक की सौ-सौ सुनना या सुनाना—दे० एक की दस सुनना या सुनाना।

एक-एक के दो-दो करना, -बनाना—(1) दूना लाभ करना। प्र० भाई-जान, मैं तो इस बार एक-एक के दो-दो करूँगा, देखिएगा।

(2) व्यर्थ समय नष्ट करना। प्र० कुछ नहीं, दिन भर एक-एक कि दो-दो किया करता है।

(3) काम बढ़ाना। प्र० कुछ सहायता करना तो दूर रहा, इसने एक-एक का दो-दो बना दिया।

एक-एक के दो-दो बनाना—दे० एक-एक के दो-दो करना।

एक-एक को चुन-चुनकर—सबको, किसी को भी छोड़े बिना। प्र० एक-एक को चुन-चुनकर मैं वह सबक सिखाऊँगा कि सबको छठी का दूध याद आ जायेगा।

एक-एक कोना छान मारना—सब जगह खोजना। प्र० उसने एक-एक कोना छान मारा पर जूता न मिला।

एक-एक कौड़ी को तरसना या तरसाना—सामान्य चीजों के लिए भी ना करना या ना होना। प्र० मैं तो आपके राज में भी एक-एक कौड़ी को तरसा करता था, अब भी तरसता हूँ।

एक-एक कौड़ी दाँत से पकड़ना, -पाई पर जान देना, -पैसा दाँत से पकड़ना—बहुत कंजूस होना। प्र० × × जब हाथ खाली हो जाता है तब आदमी एक-एक कौड़ी दाँत से पकड़ता है (मान०(4)–प्रेमचन्द, 154)।

एक-एक दाने पर मुहर होना—कोई भी चीज जल्दी न निकल पाना। प्र० लाला रामकिशोर के यहाँ एक-एक दाने पर मुहर होती है, उनके

यहाँ से कुछ भी मिलना सहज नहीं।

एक-एक दिन भारी होना, -पल पहाड़-सा लगना, -पल पहाड़-सा होना, -भारी होना, -पल युग-सा लगना, -मिनट भारी होना—प्रतीक्षा की घड़ी का कष्टदायक होना, थोड़ा समय बहुत लम्बा जान पड़ना। प्र० एक इक पल जुग सबनि कौं मिलन कौं अतुरात (सू० सा०—सूर, 4081); तुम कुल एक हफ्ते बाहर रहीं। मुझे एक-एक पल पहाड़ हो गया (ग़बन—प्रेमचन्द, 205)।

एक-एक नस पहचानना, -रग जानना, -रग पहचानना—पूरी तरह जानना। प्र० मैं तुम्हारी एक-एक नस पहचानती हूँ, मुझसे मत उड़ो।

एक-एक नस हिला देना—अच्छी तरह मज़ा चखा देना। प्र० उन्हीं के चरनों के प्रिताप से कल ये ऐसा अनमोल डाकूमेण्ट मेरे हाथ में पड़ गया है कि हम इनकी एक-एक नस हिला देंगे (बूंद०—नागर, 207)।

एक-एक पग चलना दूभर होना—बहुत थक जाना। प्र० सुबह से अन्न का एक दाना तक मुंह में नहीं गया था। एक-एक पग चलना दूभर हो रहा था।

एक-एक पर गिरना—(1) खूब बिक्री होना। प्र० आम के बाजार का हाल मत पूछो। आज लोग एक-एक पर गिर रहे थे।

(2) मतवालेपन की हालत होना। प्र० रात बारह बजे तक दावत चलती रही, लोग एक-एक पर गिरे जा रहे थे।

(3) खूब भीड़ होना। प्र० मेले में आज लोग एक-एक पर गिरे जा रहे थे।

एक-एक पल पहाड़-सा लगना—दे० एक-एक दिन भारी होना।

एक-एक पल पहाड़ होना—दे० एक-एक दिन भारी होना।

एक-एक पल भारी होना—दे० एक-एक दिन भारी होना।

एक-एक पल युग-सा लगना—दे० एक-एक दिन भारी होना।

एक-एक पाई चुकाना—सब कर्ज़ चुका देना। प्र० आप छह महीना और सब्र कीजिए, मैं आपकी एक-एक पाई चुका दूंगा।

एक-एक पाई पर जान देना—दे० एक-एक कौड़ी दाँत से पकड़ना।

एक-एक पैसा दांत से पकड़ना—दे० एक-एक कौड़ी दाँत से पकड़ना।

एक-एक बाल चुन जाना—बहुत मार पड़ना। प्र० होरी ने ज़रा-सा इशारा कर दिया होता, तो तुम्हारा एक-एक बाल चुन जाता (गोदान—प्रेमचंद, 159)।

एक-एक मिनट भारी होना—दे० एक-एक दिन भारी होना।

एक-एक मिलकर ग्यारह करना या होना—दे० एक और एक ग्यारह करना या होना।

एक-एक मुंह में सौ-सौ जबान होना—हर व्यक्ति का बहुत बोलना। प्र० ×× जब तक मैं बिन ब्याहा था, तो बीवीवाले गूंगे हो गये थे और अब जो शादी कर ली, तो एक-एक मुंह में सौ-सौ जबानें हैं (आज़ाद०—प्रेमचन्द, 225)।

एक-एक रग जानना—दे० एक-एक नस पहचानना।

एक-एक रग पहचानना—दे० एक-एक नस पहचानना।

एक-चित्त होकर भजना—अनन्य भाव से स्मरण करना। प्र० मोकौं भजौं एक चित ह्वै कै, निदरि लोक-कुल-कानि (सू० सा०—सूर, 1651)।

एकचित्त होना—एक मत होना। प्र० मुहमद चारिउ मीत मिलि भए जो एकइ चित्त (पद०—जायसी, 1/22)।

एकछत्र राज्य होना—सर्वाधिकार होना, कोई बोलनेवाला न होना। प्र० आजकल सास वृन्दावन गयी है सो शीला का एकछत्र राज्य है।

एक ज़बान, एक ज़बान एक बात, एक-मुंह एक-ज़बान—अपनी बात पर पक्का रहने वाला। प्र० देखो राकेश, तुम एक-ज़बान रहो तो ज्यादा अच्छा हो।

एक-जान—बहुत मिले-जुले, घनिष्ठ, एक दल के। प्र० बख्तावर सिंह और शमशुद्दीन एक-जान थे।

एक जी करना—एकदम मिला देना। प्र० टमाटर और पुदीना को एक-जी कर दो, तब स्वाद आयेगा।

एकटक आशा देखना, -लगना या लगाना—बराबर आशा करना या होना। प्र० जन्म ते एकटक लागि आसा रही विषय विष खात नहिं तृप्ति मानी (ब्र० सू० को०)।

एकटक आशा लगना या लगाना—दे० एकटक आशा देखना।

एकतरफा डिगरी—(1) एकतरफ़ा निर्णय। प्र० चाचा जी ने एकतरफा डिगरी दे दी तो फिर क्या कहूँ?

(2) वह डिगरी जो मुद्दालेह के गैर हाजिर होने के कारण मुद्दई को मिले।

एकतरफी बात—एक पक्ष की बात, एक पक्ष के अनुकूल बात। प्र० आप तो एकतरफी बात करते हैं, ऐसा उचित नहीं।

एक-दिल होना—बहुत घनिष्ठ होना, एक-मत होना। प्र० और बिथा कहने-सुनने में दोनों के एक-दिल हो गये (अमृत०—नागर, 460)।

एक-दो-तीन बोलना, -होना—(1) नीलाम करना या होना।

(2) दौड़ आदि शुरू करवाना या होना।

एक-दो-तीन होना—(1) चल देना। प्र० राज्यश्री झम्म से थाल ज़मीन पर पटक कमरे से एकदम एक-दो-तीन हो गई (बूंद०—नागर, 497)।

(2) दे० एक-दो-तीन बोलना।

एक-न-एक—कोई एक अवश्य। प्र० एक-न-एक कमीज तो उसे पसन्द आयेगी ही।

एक-न-एक रोग लगना—कोई-न-कोई मुसीबत लगी रहना। प्र० क्या करूँ गृहस्थी में एक-न-एक रोग लगा ही रहता है।

एक-पेट—एक-से, गुप्त मंत्रणा करके एक-सा काम करने वाले। प्र० ए सब दुष्ट हते हरि जेते, भए एकहीं पेट (सू० सा०—सूर, 3789)।

एक-प्राण होना—दे० एक प्राण दो शरीर होना।

एक-ब-एक—अचानक। प्र० हम लोग बैठे मजे से सिगरेट पी रहे थे कि एक-ब-एक बाबूजी आ गये।

एकवग्गा—एक वर्ग के। प्र० वे सभी एकवग्गा हैं, उनसे ऐसे ही व्यवहार की उम्मीद थी।

एक-बात एक-जबान—दे० एक-जबान।

एक-मुंह एक-जबान—दे० एक-जबान।

एक-रंगा—गहरे लाल रंग का कपड़ा। प्र० ब्याह का घर है, एक-रंगा लगेगा ही; थोड़ा मँगवा लो।

एक-रस—(1) एक समान, विकार रहित, घुल-मिल जाना। प्र० भरत सुभाउ सुसीतलताई, सदा एक रस बरनि न जाई (राम० (बाल)–तुलसी, 56)।

(2) ऐसी स्थिति जिसमें कभी परिवर्तन न हो, नीरस। प्र० आओ शेखर, मैं और कुछ नहीं कर सकती, पर तुम्हारे इस एकरस जीवन में कुछ नयापन ला सकती हूँ (शेखर० (1)–अज्ञेय, 107-108)।

एक-रूप—समान, दिखने में एक-सा। प्र० दोनों बहनें बिलकुल एक-रूप हैं।

एकलौता—(1) बड़ा दुलारा। प्र० जी हाँ, वह तो आपका एकलौता ठहरा, उसके सात खून माफ हैं।

(2) अकेला।

एक-सा करना—एक में मिला देना। प्र० तुमने सबको एक-सा करने की कोशिश ही कहाँ की?

एक-हत्था करना—एकाधिकार करना। प्र० उन्होंने सारी जायदाद एक-हत्था कर ली है।

एकहरा बदन—न अधिक मोटा न अधिक दुबला शरीर। प्र० लम्बी नाक, उन्नत ललाट, माथे पर घुंघराली लटें, एकहरा बदन–सहज ही मन आकृष्ट हो जाता था।

एकान्त हो बैठना—संसार से विरक्त हो जाना। प्र० मैं अब एकान्त हो बैठना चाहता हूँ, बहुत हाय-हाय कर ली।

एका होना—मेल होना। प्र० अभी तक तो देवरानी-जेठानी में एका है, कल की कौन कह सकता है।

एकाएक जा गिरना, -टूट पड़ना—अचानक पहुँच जाना या आक्रमण कर देना। प्र० बाल-मण्डली हल्ला करती हलवाई की दूकान पर एकाएक टूट पड़ी और पल भर में लड्डू के थाल का सफाया हो गया।

एकादशी—उपवास। प्र० राशनकार्ड ले आओ, नहीं तो आज एकादशी रहेगी, कहे देती हूँ (ज़िन्दगी–निर्गुण, 2)।

एकादशी का खाया द्वादशी को निकलना—एक दिन का लिया दूसरे दिन देने को बाध्य होना।

एकामई करना—(1) एक कर देना, मिला देना। प्र० सब दाल-चावल मुन्ना ने एकामई कर दिया, मुझे फिर से अलग करना पड़ेगा।

(2) छुआछूत का ध्यान न रखना। प्र० रामघनी से तो मैं परेशान आ गयी हूँ, सारा घर एकामई किये रहता है, सुनता ही नहीं।

एक्का-दुक्का—अकेले-दुकेले। प्र० रघु बाबू के बगीचे की ओर एक्का-दुक्का मत जाना, खासकर रात के समय।

एड़ करना—(1) एड़ी के इशारे से घोड़े को चलाना। प्र० घोड़े को एड़ करो और बढ़ चलो।

(2) चल देना; रवाना होना। प्र० अभी से ही क्यों एड़ कर रहे हो, जरा देर तो रुको।

एड़ देना, -लगाना—(1) बाधा डालना। प्र० हर काम में एड़ क्यों देते हो?

(2) लात मारना। प्र० चुप रहो नहीं तो वह एड़ दूंगा कि मुँह के बल गिरोगे।

(3) घोड़े को एड़ी के इशारे से चलाना।

एड़ मारना—एड़ी के इशारे से घोड़े को चलाना।

एड़ लगाना—दे० एड़ देना।

एड़ा मारना, एड़ी मारना—(1) किसी काम में विघ्न डालना। प्र० रामलाल की तो एड़ा मारने की पुरानी आदत है।

(2) कुश्ती का एक दाँव।

एड़ियाँ घिसना, -रगड़ना -रगड़-रगड़ कर मरना—(1) घोर परिश्रम करना। प्र० घिस चुके जितना कि घिस सकते रहे, लाभ क्या अब एड़ियाँ अपनी घिसे (चुभते०–हरिऔध, 64)।

(2) कष्ट सहना। प्र० जब से देवकान्त का पिता लम्बी बीमारी में एड़ियाँ रगड़-रगड़ कर चल बसा था, माँ ने अपने हाथों के परिश्रम से ही घर चलाया था (ब्रह्म०–दे० स०, 187)।

एड़ियाँ रगड़ना—दे० एड़ियाँ घिसना।

एड़ियाँ रगड़-रगड़कर मरना—दे० एड़ियाँ घिसना।

एड़ियाँ रगड़-रगड़ कर मरना पर पानी की बूंद भी न मिलना—बहुत कष्ट पाकर मरना और कोई सहारा देनेवाला न होना। प्र० इस तरह मारूँ कि एड़ियाँ रगड़-रगड़ कर मरें—पानी की एक बूंद भी न मिले (रंग०–प्रेमचंद, 333)।

एड़ी का पसीना चोटी चढ़ना, एड़ी-चोटी का ज़ोर लगाना,-पसीना एक करना, -बहाना—घोर परिश्रम या उद्योग करना। प्र० पुलिस ने एड़ी-चोटी का ज़ोर लगाया, कि मुलज़िमों में कोई मुखबिर बन जाय, पर उसका उद्योग सफल न हुआ (गबन–प्रेमचंद, 313); लोग चोटी और एड़ी का अगर एक करते हैं पसीना तो करें (बोल०–हरिऔध, 233)।

एड़ी चाटना—खुशामद करना। प्र० उसे एड़ियाँ चाटने से फ़ुर्सत मिले तब न कोई और काम करे।

एड़ी तले की धरती खिसकना—(1) किसी अप्रत्याशित घटना के कारण एकदम स्तम्भित रह जाना। प्र० भाई की चोरी का किस्सा सुन उसके एड़ी तले की धरती खिसक गयी।

(2) किसी बड़े सहारे का अचानक टूट जाना। प्र० पिता की मृत्यु से उसके एड़ी तले की धरती खिसक गई।

एड़ी मारना—दे० एड़ा मारना।

एड़ी से चोटी तक—सिर से पैर तक, पूरी तरह से। प्र० एक बिजली-सी उसके शरीर में एड़ी से चोटी तक कौंध गई (ज्ञान०–यशपाल, 100)।

एड़ी से चोटी तक आग लगना, -जल जाना—(1) बहुत नाराज होना। प्र० देखते ही वासुदेव महाराज एड़ी से चोटी तक जल उठे (गोली–

चतुर०, 196)।

(2) बहुत ईर्ष्या होना। प्र० मुझे देखते ही उसे एड़ी से चोटी तक आग लग जाती है।

एड़ी से चोटी तक जल जाना—दे० एड़ी से चोटी तक आग लगना।

एड़ी-चोटी का जोर लगाना—दे० एड़ी का पसीना चोटी चढ़ना।

एड़ी-चोटी का पसीना एक करना—दे० एड़ी का पसीना चोटी चढ़ना।

एड़ी-चोटी का पसीना बहाना—दे० एड़ी का पसीना चोटी चढ़ना।

एड़ी चोटी कुर्बान करना, -निसार करना, -पर कुर्बान करना, -पर न्यौछावर करना, -वारना—(1) अत्यन्त तुच्छ समझना। प्र० वार जायँ क्यों उस पर जिसने एड़ी-चोटी पर से वारा (बोल०—हरिऔध, 234)।

(2) पूरी तरह न्यौछावर होना। प्र० मैं तो तुम्हारी एड़ी-चोटी पर न्यौछावर हूँ, तनिक तो मेरी ओर ध्यान दो।

एड़ी-चोटी निसार करना—दे० एड़ी-चोटी कुर्बान करना।

एड़ी-चोटी पर कुर्बान करना—दे० एड़ी-चोटी कुर्बान करना।

एड़ी-चोटी पर न्यौछावर करना—दे० एड़ी-चोटी कुर्बान करना।

एड़ी-चोटी पर वारना—दे० एड़ी-चोटी कुर्बान करना।

एड़ी-देख—चश्मबद्दूर (नजर लगने पर या भूत-प्रेत का डर होने पर स्त्रियों का यह वाक्य बोलना)।

एतबार उठना—विश्वास न रहना। प्र० एक बार जब किसी का एतबार उठ जाता है तो उसे फिर से जमाना कठिन होता है।

एतबार खोना—पूर्व विश्वास का हट जाना। प्र० मैंने उस पर एतबार खो दिया है।

एतबार जमना या जमाना—विश्वास होना या पैदा करना। प्र० जब किसी तरह उसका एतबार नहीं जम पा रहा है तो फिर क्या किया जाय ! छोड़ दो उसे।

एरा-फेरी—(1) बदलना। प्र० बार-बार एरा-फेरी करना ठीक नहीं, दुकानदार भला क्या सोचेगा ?

(2) बार-बार आना-जाना। प्र० इस तरह एरा-फेरी करने में क्या धरा है। उन्हें पता तो है ही, कर सकेंगे तो खुद ही कर देंगे।

एवज उतारना—किसी काम के बदले में काम करना। प्र० उसने दो दिन तुम्हारा काम कर दिया तो क्या उसका एवज उतारना जरूरी है ?

एवजमावज—बदले में। प्र० ऐसे थोड़े ही छुट्टी मिलेगी, एवजमावज मुझे भी कुछ देना ही पड़ेगा।

एवजी देना—किसी के बदले में काम करना। प्र० मैं आजकल रामनिहोर की एवजी दे रहा हूँ।

एवजी रखना—किसी के बदले में दूसरे को काम के लिए रखना। प्र० तुम छुट्टी पर जा रहे हो तो मैं किसी को एवजी रख लूँगा।

एहसान उठाना, -लेना—आभारी बनना। प्र० मैं किसी का एहसान उठाने को तैयार नहीं हूँ।

एहसान का टोकरा लादना, -नमदा कसना, -बोझा लादना, -बोझा सिर पर लादना, -खोपड़ी पर लादना, -जताना, -सिर पर लादना—अपने किये काम के उपकार की याद दिलाना, बहुत एहसान करना। प्र० आप उल्टा हमारी खोपड़ी पर एहसान लादते हैं (भिखा०—कौशिक, 133)।

एहसान का नमदा कसना—दे० एहसान का टोकरा लादना।

एहसान का बोझा लादना—दे० एहसान का टोकरा लादना।

एहसान का बोझा सिर पर लादना—दे० एहसान का टोकरा लादना।

एहसान का मारा—एहसान के बोझ से दबा। प्र० समर बेचारा तो एहसान का मारा है, वह क्या कहे।

एहसान खोपड़ी पर लादना—दे० एहसान का टोकरा लादना।

एहसान चुकाना—उपकार के बदले में स्वयं भी कुछ उपकार करना। प्र० उन्होंने मेरा बड़ा उपकार किया है, उसका एहसान चुकाना जरूरी है।

एहसान जताना—दे० एहसान का टोकरा लादना।

एहसान रखना—आभारी बनाना। प्र० इस तरह बेटों पर एहसान रखने की क्या जरूरत है ?

एहसान लेना—दे० एहसान उठाना।

एहसान सिर पर लादना—दे० एहसान का टोकरा लादना।

एहसान से दबे जाना—बहुत अधिक कृतज्ञ होना। प्र० मैं तो पहले ही आपके एहसानों से दबा हूँ, और न दबायें।

ऐ

ऐंचा-ताना—एक आँख से टेढ़ा देखनेवाला।

ऐंचातानी—तनाव, विरोध। प्र० तुम जिन्दगी भर ऐंचातानी करते रहोगे पर तुम्हारा कुछ बनेगा नहीं।

ऐंचातानी करना—अपनी ओर मिलाने की कोशिश करना। प्र० इस वक्त दोनों ऐंचातानी करने में जोर से जुटे हैं।

ऐंचा-तानी में पड़ना—झगड़े में फँसना। प्र० अरे छोड़ो भी, तुम भी किस ऐंचातानी में पड़ गये।

ऐंठ ढीली करना या होना, -निकलना या निकालना—घमंड चूर कर देना या होना। प्र० जब निकल ऐंठ ही गई सारी तब भला मूँछ किसलिये ऐंठे (चुभते०—हरिऔध, 41); ज्यादा बढ़-चढ़ कर मत बोलो नहीं सारी ऐंठ ढीली कर दूँगी, समझे ?

ऐंठ दिखाना—घमंड करना। प्र० उनको काम क्या है, हर समय अपने पैसे की ऐंठ दिखाया करते हैं।

ऐंठ निकलना या निकालना—दे० ऐंठ ढीली करना या होना।

ऐंठ में रहना, ऐंड़ा-ऐंड़ा डोलना, -फिरना—घमंड में चूर रहना। प्र० वै त्रैलोकीनाथ चाहत हैं, काहैं न ऐंड़ी डोलै (सू० सा०—सूर, 4263); ऐंड़ि ऐंड़ि बतलाहि भानु के सन्मुख जुगनू (कुण्ड०—गिरधरदास, 22); अरी याह को है साँवरो सो लंगर ढोटा ऐंड़ोई ऐंड़ो डोलै (भा० ग्रं० (2)—भारतेन्दु, 57); ऐंठ में आप बैठे ही रहे इधर महाराज के दर्शन कर मैं पुनः जवान हो गया (गंगा०—उग्र, 11–12)।

ऐंठ रखना, -लेना—(1) होशियारी से ले लेना। प्र० कहीं अम्मा से 10) उड़ा लाये, कहीं अब्बा-जान से किताब के बहाने से पाँच-दस ऐंठ लिये (कर्म०—प्रेमचंद, 64)।

(2) दबा लेना। प्र० उसने मेरे दो सौ रुपये ऐंठ लिये और अब देने का नाम नहीं है।

ऐंठ लेना—दे० ऐंठ रखना।

ऐंठकर—(1) अभिमान से। प्र० बोलती ऐंठ-ऐंठ कर जब भी जीभ तब ऐंठ क्यों न दी जाती (चोखे०—हरिऔध, 93)।

(2) बिगड़कर। प्र० निर्मला ने ऐंठकर कहा—× × ×(निर्मला—प्रेमचंद, 187)।

ऐंठकर चलना—गर्व से चलना। प्र० किन लोगों को पैसे की गर्मी हो गई है, कौन राह चलते ऐंठकर चलते हैं (मैला०—रेणु, 174)।

ऐंठना—(1) अभिमान करना। प्र० अब तो तरकि-तरकि ऐंठति हैं, लेनी लेति बनाइ (सू० सा०—सूर, 3023); जिन बाजारों में मनचले जवान अस्त्र-शस्त्र सजाये ऐंठते फिरते थे, वहाँ उल्लू बोल रहे थे (मान० (3)—प्रेमचंद, 145)।

(2) वसूलना। प्र० सिपाही ने समझा था, शिकार फँसा, इससे कुछ ऐंठूंगा (मान० (3)—प्रेमचंद, 203)।

(3) जिद करना। प्र० तुम तो बिलकुल बच्चों की तरह ऐंठ जाते हो।

(4) सर्दी के कारण ठिठुर जाना। प्र० बाप रे, कैसी सर्दी है, सारा बदन ऐंठा जा रहा है।

(5) क्रोधित होना। प्र० उनसे तो कुछ भी कहो बस ऐंठ जाते हैं।

(6) कड़ा पड़ना। प्र० इन लोगों को वश में रखने के लिये आपको कभी-कभी ऐंठ जाना चाहिए।

ऐंठबाज—घमंडी। प्र० मैं तो उससे बात नहीं करता, बड़ा ऐंठबाज है।

ऐंठी-बैंठी करना—अकड़ दिखलाना। प्र० देखो भाई, मेरे सामने ऐंठी-बैंठी करने से कोई लाभ नहीं, मैं एक टंगड़ी में तुम्हे उलट दूंगा।

ऐंठू खाँ—घमंडी। प्र० ऐसे ऐंठू खाँ से आखिर कौन बात करना चाहेगा?

ऐंड़ कर देना—निकम्मा बना देना। प्र० उससे काम लेना चाहिए, तुम लोगों ने तो उसे बेकार बैठाकर ऐंड़ कर दिया है।

ऐंड़ निकल जाना—गर्व दूर हो जाना। प्र० लाज अंचै बिन काज खगी तिनहीं सों पगौ जिन रंग-रए हौ। ऐंड़ सबै निकसैगी अबै घनआनंद आनि कहा उनए हौ (घना० कवित्त—घना०, 198)।

ऐंड़ रहना या हो जाना—(1) निकम्मा हो जाना। प्र० इसे काम तो कुछ रहता नहीं है, बिलकुल ऐंड़ हो गया है।

(2) नष्ट-भ्रष्ट हो जाना। प्र० सारा काम ऐंड़ हो जायगा और तुम लोग देखते रह जाओगे।

ऐंड़ते फिरना, ऐंड़ा-ऐंड़ा चलना—गर्व करना। प्र० धन-जीवन-मद ऐंड़ो-ऐंड़ो, ताकत नारि पराई (सू० सा०—सूर, 328)।

ऐंड़्दार—घमण्डी। प्र० जेते ऐंड़दार दरबार-सिरदार सब, ऊपर प्रताप दिल्लीपति कौ अभंग भौ (मति० मक०—मतिराम, 155)।

ऐंड़ा-ऐंड़ा चलना—दे० ऐंड़ते फिरना।

ऐंड़ा-ऐंड़ा डोलना—दे० ऐंठ में रहना।

ऐंड़ा-ऐंड़ा फिरना—दे० ऐंठ में रहना।

ऐंड़ा-बैंड़ा चलना—बुरे मार्ग पर चलना। प्र० इसके दोस्तों ने ही इसे भड़काया है, इसी से आजकल ऐंड़ा-बैंड़ा चलने लगा है।

ऐंड़ी-बेंड़ी—टेढ़ी-तिरछी, सुस्त। प्र० कैसी ऐंड़ी-बेंड़ी चाल है इस लड़की की।

ऐंड़ी-बेंड़ी सुनाना—टेढ़ी बातें करना, भला-बुरा कहना। प्र० × ×पर वह टर्रा आदमी था, बाहर जाकर ऐंड़ी-बेंड़ी सुनाने लगा × × (आजाद०—प्रेमचंद, 301)।

ऐन नाक पर—बहुत पास। प्र० इस प्रकार वैशाली की ऐन नाक पर यह पाटलिग्राम मगधों का सैनिक स्कंधावार बनता जा रहा है (वैशाली० (2)—चतुर०, 111)।

ऐन-मैन—ठीक वैसा ही। प्र० वह तो ऐन-मैन अपनी माँ जैसी लगती है।

ऐब निकालना—दोष बताना। प्र० काम तो कुछ है नहीं, दिन भर बैठे-बैठे दूसरों के ऐब निकालते रहते हैं।

ऐब लगाना—दोष देना, कलंक लगाना। प्र० देखो जी तुम बिना मतलब मेरे ऊपर ऐब न लगाओ।

ऐयाम से होना—मासिकधर्म से होना।

ऐरे-गैरे नत्थू-खैरे, -पंच कल्यानी—ऐसे व्यक्ति जिनसे अपना विशेष सम्बन्ध न हो, फालतू या तुच्छ व्यक्ति। प्र० मैं पानी-पाँड़े थोड़े ही हूँ, जो ऐरे-गैरे नत्थू-खैरे सबको पानी पिलाता फिरूँ (चतुरी०—निराला, 12); ऐरे-गैरे पंच कल्यानी जितने घुस आये थे, उनकी सफाई हो गई।

ऐरे-गैरे नत्थू खैरे—दे० ऐरे-गैरे।

ऐरे-गैरे पंच कल्यानी—दे० ऐरे-गैरे।

ऐश उड़ाना, -मनाना—मौज करना। प्र० अभी खूब ऐश उड़ा लो दच्चू जब अपने सिर पर पड़ेगी तो मालूम पड़ेगा।

ऐश मनाना—दे० ऐश उड़ाना।

ऐश में डूबा रहना—दिन-रात भोग-विलास में डूबे रहना। प्र० राजा साहब रात-दिन ऐश में डूबे रहते थे और उधर राज्य की शक्ति क्षीण होती जा रही थी।

ऐसा काटे कि लहर न आए—सर्वदा के लिए समूल नष्ट कर देना।

ऐसा पचा गए कि डकार भी न लिया—किसी वस्तु को लेकर चुपचाप बैठ रहना। प्र० मेरे दो हजार रुपयों को तो वे ऐसा पचा गए कि डकार भी न लिया।

ऐसा-तैसा—साधारण, तुच्छ। प्र० तुमने उन्हें क्या ऐसा-तैसा आदमी समझ लिया है?

ऐसा-वैसा न होना—विशिष्ट या विशेष होना। प्र० यह आदमी बड़े काम का है, कोई ऐसा-वैसा नहीं।

ऐसा-वैसा समझना—दे० ऐरा-गैरा समझना।

ऐसा-वैसा होना—दे० ऐरा-गैरा समझना।

ऐसी कम तैसी, -की तैसी—धमकाने में प्रयुक्त, हमें कोई परवाह नहीं—इस अर्थ में प्रयुक्त। प्र० बैठका खोलते ही उन्होंने पूछा—डिप्टी साहब? मैंने कहा—अपनी ऐसी की तैसी में चले गए (कुल्ली०—निराला,

118)।

ऐसी कही कि धोये न छूटे—ऐसी खरी-खोटी सुनाई जो जिन्दगी भर याद रहे। प्र० कल अम्मा ने भी खूब सुनाया उन्हें, ऐसी कही कि धोये न छूटेगी।

ऐसी की तैसी—दे० ऐसी कम तैसी।

ऐसी जगह मारना जहाँ पानी भी न मिले, ऐसे घाट मारना जहाँ पानी न मिले—खूब दुर्गति करना या मारना; ऐसी स्थिति को पहुँचा देना जहाँ कोई सहायक न हो। प्र० मेरा बस चले, तो तुमको ऐसी जगह कत्ल करूँ जहाँ पानी तक न मिले (आज़ाद०–प्रेमचंद, 303)।

ऐसी है वैसी है करना—दुनिया भर की बुराई निकालना। प्र० मैं जो भी काम करता हूँ उसमें आप ऐसी है वैसी है करने लगते हैं।

ऐसी-तैसी करना—इज्जत नष्ट करना। प्र० तुमने चार आदमियों के सामने मेरी ऐसी-तैसी कर दी।

ऐसी-तैसी में जाना—(1) कुछ परवाह न होना—इस अर्थ में प्रयुक्त। प्र० दावत को ऐसी-तैसी में जाने दो, चलो आज सिनेमा देखा जाय। (2) बरबाद हो जाना। प्र० सारी कमाई ऐसी-तैसी में चली गई और तुम लोग हाथ पर हाथ धरे बैठे हो।

ऐसी-वैसी, ऐसे-वैसे—अत्यन्त साधारण, तुच्छ, अनुचित बात। प्र० कोई ऐसी-वैसी चीज़ मत लेती आना, ज़रा अच्छी देखकर लाना।

ऐसी-वैसी बात करना—अनुचित बात या काम करना। प्र० हरवंस कल उसके यहाँ गया था मगर उससे भी वह कोई ऐसी-वैसी बात कर आया है (अंधेरे०–राकेश, 449)।

ऐसे घाट मारना जहाँ पानी न मिले—दे० ऐसी जगह मारना जहाँ पानी न मिले।

ऐसे भोले हो—(व्यंग्य में) बड़े चतुर हो। प्र० तुम तो ऐसे भोले हो कि क्या कहना?

ऐसे-ऐसे जेब में पड़े होना—ऐसे लोगों को बहुत तुच्छ समझना।

ऐसे-तैसे—व्यर्थ के, बुरी नीयत या चाल-चलन वाले लोग। प्र० ऐसे-तैसे लोगों के चक्कर में पड़ कर यही गति होती है।

ऐसे-वैसे—दे० ऐसी-वैसी।

ओ

ओंटना—एक ही बात कहे जाना। प्र० अब चुप भी रहोगे या वही बात ओंटे जाओगे।

ओंठ उखाड़ना—परती खेत को पहली बार जोतना।

ओंठ कांपना—क्रोध या शीत के कारण ओंठ फड़कना।

ओंठ काटना, -चबाना—क्रोध या दुःख प्रकट करना। प्र० पिताजी ने होंठ चबाकर कहा—हम जैसा कहते हैं, कर (कुल्ली०–निराला, 40)।

ओंठ चबाकर रह जाना—क्रोध को भीतर-ही-भीतर दबाकर रह जाना। प्र० सूरदास को देखता तो ओंठ चबाकर रह जाता (रंग०–प्रेमचंद, 333)।

ओंठ चबाना—दे० ओंठ काटना।

ओंठ चाट-चाटकर खाना—खूब स्वाद से खाना। प्र० हम लोगों ने क्या ओंठ चाट-चाटकर चाट खायी है, कि पूछो मत।

ओंठ चाटते रह जाना—और खाने की इच्छा बनी रहना। प्र० क्या खाना खिलाया यार, कि हम ओंठ चाटते ही रह गये।

ओंठ चाटना—(1) किसी वस्तु के खा लेने पर स्वाद के लालच से ओंठों पर जीभ फेरना, लालची होना। प्र० इस तरह ओंठ नहीं चाटा करो, बुरी आदत है। (2) मन मसोसना। प्र० होंठ को चाट-चाट लेते हैं, देख दिल का उचाट होना हम (चुभते०–हरिऔध, 16)।

ओंठ चाटा करना—खाने के बाद देर तक उसका स्वाद लिया करना। प्र० तुम्हारे यहाँ के स्वादिष्ट भोजन के बाद देर तक हम ओंठ चाटा किये।

ओंठ चिपकना—खूब मीठा होना। प्र० बालूशाही तो ऐसी थी कि ओंठ चिपक रहे थे।

ओंठ चूसना—ओंठों पर चुम्बन लेना।

ओंठ तक आकर रह जाना—कहते-कहते रुक जाना। प्र० गनीमत समझो कि बात ओंठ तक आकर रह गयी।

ओंठ तक न हिलाना—कुछ न कहना। प्र० एक चुप हज़ार चुप, उसने ओंठ तक न हिलाया।

(कुछ कहते-कहते) ओंठ पपड़ा जाना—बड़े आग्रह से बार-बार किसी बात को कहना पर उसका कोई असर न पड़ने से थक जाना या हताश हो जाना। प्र० दिन-रात 'भौजी-भौजी' कहते-कहते ओंठ पपड़ा गये और भौजी मुझे देखकर नौ हाथ का घूँघट काढ़ लेती है (दे० दु०–शिव०, 132)।

ओंठ पपड़ाना, -ओंठ फटना—खुश्की के कारण ओंठ पर पपड़ी पड़ना।

ओंठ फटना—दे० ओंठ पपड़ाना।

ओंठ फड़कना—क्रोध के कारण ओंठ काँपना। प्र० पिताजी का ओंठ फड़क रहा था, वे कमरे में इधर-से-उधर चक्कर काट रहे थे।

ओंठ बँधने लगना—अत्यन्त स्वादिष्ट लगना। प्र० ×× इस दूकान की बरफ़ी तो शहर भर में मशहूर है। वह लज्ज़तो होती है कि ओंठ बँधने लगते हैं (आज़ाद०–प्रेमचंद, 220)।

ओंठ बिचकाना, -बिजकाना, -बिदकाना—घृणा प्रकट करना, नापसन्द करना। प्र० ओंठ क्यों बिचकाते हो? तुम्हें नहीं पसन्द है तो मत खाओ।

ओंठ बिजकाना—दे० ओंठ बिचकाना।

ओंठ बिदकाना—दे० ओंठ बिचकाना।

ओंठ मटकाना—कुछ कहना। प्र० मैं क्या बात करूँ, भाभी ओंठ तक तो मटकाती नहीं।

ओंठ मलना—कड़ुई बात कहने का दण्ड देना। प्र० मुँह बन्द करो नहीं तो ओंठ मल दूँगी।

ओंठ लगाये टूटना—किसी चीज़ का बहुत खस्ता और भुरभुरा होना। प्र० मठरी तो बस पूछो मत, ओंठ लगाये टूटती थी।

ओंठ सिल जाना या सी देना—कुछ कहने की स्थिति में न होना या चुप करा देना। प्र० क्यों, तुम्हारे ओंठ सिल गये थे क्या जो उस समय

कुछ न बोले ?

ओंठ हिलना या हिलाना—धीरे-धीरे कुछ कहना या कहा जाना। प्र० उस समय तो तुम ओंठ हिलाकर रह गये। अपनी बात ठीक से कहना चाहिए था न।

ओंठों पर—मुँह में, जबान पर। प्र० फिर कभी यह शब्द ओंठों पर भी मत लाना।

ओंठों पर आना—कहा जानेवाला होना। प्र० उनका नाम ओंठों पर आया तो था पर फिर बस, रह गया।

ओंठों पर जबान फेरना—बहुत प्यास महसूस करना। प्र० बच्चा ओंठों पर जबान फेर रहा है, इसे दो चम्मच पानी दे दो।

ओंठों पर नाचना—(1) खूब याद रहना। प्र० भूलूँगा कैसे साहब, उसका नाम उसी दिन से ओंठों पर नाच रहा है।

(2) कुछ-कुछ याद रहना। प्र० कुछ ओंठों पर नाच तो रहा है पर पूरी बात याद नहीं।

ओंठों पर पपड़ी जमना—(1) आतंकित होना। प्र० सुलताना डाकू के नाम से लोगों के ओंठों पर पपड़ी जमती थी।

(2) ओंठ फटना। प्र० ओंठों पर पपड़ी जम रही है तो जरा क्रीम लगा लो।

ओंठों पर लाना—कहना, धीरे-धीरे कहना। प्र० मैं इसी कारण कोई बात ओंठों पर भी नहीं लाती।

ओंठों पर हँसी खेलना, -दौड़ जाना, -नाचना—हँसी की हल्की रेखा चेहरे पर प्रकट होना। प्र० × × वह आत्माभिमान जो उस समय भी उनके मुख से टपक रहा था, क्या करुणा के हृदय से कभी विस्मृत हो सकता था (मान० (1)–प्रेमचंद, 38); व्याकुलता प्राणों में बसती हँसी अधर पर करती नर्तन (स्वर्णधूलि-पंत. 72)।

ओंठों पर हँसी दौड़ जाना—दे० ओंठों पर हँसी खेलना।

ओंठों पर हँसी नाचना—दे० ओंठों पर हँसी खेलना।

ओंठों में कहना—बहुत धीरे से कहना। प्र० वह ओंठों में ही कहकर रह गया होगा तो कोई क्या करे ?

ओंठों (में) से मुसकुराना—मंद-मंद मुसकुराना। प्र० उसका वह ओंठों में मुसकुराना मन से नहीं उतरता।

ओंठों से खाना—बिना दाँत लगाये खाना। प्र० बालूशाही तो ओंठों से ही खा जाऊँगा, इतनी मुलायम है।

ओंठों से टूटना—बहुत मुलायम होना। प्र० पकवान तो ऐसे बढ़िया थे कि ओंठों में टूटते थे।

ओंठों से हँसी फूटना—हँसी आना। प्र० उसकी आँखों और ओंठों से हँसी फूटी पड़ती थी (ज्ञान०–यशपाल, 134)।

ओक आना—वमन होना।

ओक लगाना—अँजुरी से पानी पीना। प्र० ओक लगाओ, यहाँ गिलास कहाँ धरा है।

ओखली में सिर देकर मूसलों को न गिनना, -न डरना—किसी काम को शुरू कर लेने पर फिर कठिनाइयों या कष्टों की ओर ध्यान न देना। प्र० तब भला वह मूसलों को क्या गिने जब किसी ने ओखली में सिर दिया (चुभते०–हरिऔध, 10)।

ओखली में सिर देकर मूसलों को न डरना—दे० ओखली में सिर देकर मूसलों को न गिनना।

ओखली में सिर देकर मूसलों से बचना चाहना—कोई काम शुरू करके उसके परिणाम से बचना चाहना। प्र० अब ओखली में सिर डालकर तुम मूसलों से नहीं बच सकते (कर्म०–प्रेमचंद, 46)।

ओखली में सिर देकर रोना—जान-बूझकर आफत में पड़ना और फिर पछताना। प्र० जान-बूझकर ओखली में सिर देकर रोनेवाले को देखकर रोना आता है।

ओखली में सिर देना—जान-बूझकर विपत्ति में पड़ना या कष्ट सहना। प्र० पराई आलोचना करने को निकलना ओखली में सिर देना है (गु० नि०–बा० मु० गु०, 505); तब कौन इस ओखली में सिर दे ? (मान० (7)–प्रेमचंद, 30)।

ओखियाँ सुनाना—आवाजें कसना। प्र० मणिराम ने कमरे में पैर रखा नहीं कि चारों ओर से लोग ओखियाँ सुनाने लगे।

ओगदा खाना—बिना घी का भोजन करना। प्र० मुझसे ओगदा न खाया जायगा, कहे देता हूँ।

ओछा घड़ा—नीच पुरुष।

ओछा हाथ पड़ना—(1) हल्की मार पड़ना। प्र० अभी ओछा हाथ पड़ा है, भरपूर पड़ेगा तब देखना।

(2) वार का पूरा हाथ न पड़ना। प्र० देखिए प्रयोग (1)।

ओछी कोख—ऐसी स्त्री जिसके बच्चे होते ही मर जाएँ।

ओछी नजर से देखना—बुरा समझना। प्र० लेकिन कोई समझदार इन्सान आज भी किसी शरीफ़ लड़की लड़के को तवायफ़ की औलाद होने की वजह से ओछी नजर से नहीं देखेगा (ये कोठे०–नागर, 96)।

ओछी पूंजी—कम पूंजी। प्र० ओछी पूंजी के भरोसे बड़ा काम कैसे शुरू किया जा सकेगा है।

ओछी समझ बताना—बुरी राय देना। प्र० तुम बड़े भाई होकर इसे ओछी समझ बताते हो ?

ओछे घर में—छोटे मन वाले व्यक्ति के पास। प्र० डारत खात देत नहिं काहूँ, ओछैं घर निधि आई (सू० सा०–सूर, 2860)।

ओछे बर्तन का उबलना—थोड़ा पाकर बहुत उछलने लगना। प्र० देखो भाई, मुझे तो ओछे बर्तन का उबलना बिलकुल नहीं सुहाता।

ओझाई करना—रूठे आदमी को मनाना। प्र० तुम ओझाई करने मत आना, कहे देती हूँ।

ओट में—बहाने से, हीले से। प्र० समझदार सास बेटी की ओट में बहू को डाँटती-समझाती है।

ओटना—(1) भुगतना। प्र० जो कुछ ओटना पड़ेगा, ओटूँगी।

(2) एक ही बात कहे जाना। प्र० तुम वही एक बात ओटे जाओगे या किसी और की भी सुनोगे।

ओटल हो जाना—नजर से दूर हो जाना। प्र० देखते-देखते नाव ओटल

हो गयी।

ओटा-माई खेलना—भेद छिपाना। प्र० तू मुझसे ही ओटा-माई खेलती है बेटी।

ओड्डे मिलाना—बहाने बनाना। प्र० अब और ओड्डे न मिला, सीधे से बता रुपये कहाँ रखे हैं।

ओढ़ना—अपने ऊपर दायित्व लेना। प्र० सब काम अपने ऊपर ओढ़ लेने में बनारसी बाबू सबसे आगे रहते हैं।

ओढ़ना उतारना—(1) गुप्त भेद खोलना। प्र० किसी का ओढ़ना उतारना क्या भले आदमियों का काम है ?
(2) बनी-बनाई प्रतिष्ठा बिगाड़ देना। प्र० देखिए प्रयोग (1)।

ओढ़ना ओढ़ाना, ओढ़नी ओढ़ाना, -डालना—विधवा स्त्री के साथ सगाई करना।

ओढ़ना-बिछौना—(1) हर समय साथ रहनेवाला, पूरी तरह प्रभावित करनेवाला। प्र० लोभइ ओढ़न लोभइ डासन, सिस्नोदर पर जमपुर त्रासन (राम० (उ०)–तुलसी, 1065)।
(2) अत्यन्त तुच्छ। प्र० मैं क्या ओढ़ना-बिछौना हूँ जो इस तरह दुरदुरा दिया।

ओढ़ना-बिछौना बनाना—हर काम में लाना। प्र० घर में कोई नयी चीज़ नया कपड़ा आया नहीं कि इन्होंने उसे अपना ओढ़ना-बिछौना बनाया नहीं।

ओढ़ना-बिछौना बाँधना, -समेटना—चलने की तैयारी करना। प्र० साथ चलने के लिए उन्होंने ओढ़ना-बिछौना बाँध लिया था पर अचानक किसी आवश्यक काम के कारण रुक जाना पड़ा।

ओढ़ना-बिछौना समेटना—दे० ओढ़ना-बिछौना बाँधना।

ओढ़नी ओढ़ना—जनाना लिबास पहनना। प्र० तुम ओढ़नी ओढ़कर घर में बैठो, हम लोग बाहर निकलती हैं।

ओढ़नी ओढ़ाना—दे० ओढ़ना ओढ़ाना।

ओढ़नी डालना—दे० ओढ़ना ओढ़ाना।

ओढ़नी की बतास लगना, -हवा लगना—स्त्री का गुलाम होना। प्र० मंगरू को शहर आकर ओढ़नी की बतास लगी, दिन भर उसी में मगन रहने लगा।

ओढ़नी की हवा लगना—दे० ओढ़नी की बतास लगना।

ओढ़नी बदलना—सखी बनाना। प्र० दोनों राजकुमारियों ने ओढ़नी बदल-कर सारी ज़िन्दगी साथ निभाने की प्रतिज्ञा की।

(किसी के ऊपर) ओढ़ा देना—(1) किसी काम को जबरदस्ती दूसरे पर डाल देना। प्र० क्या बताऊँ, मैं वहाँ गया था मिलने और चाचाजी ने यह काम ओढ़ा दिया।
(2) किसी दूसरे पर कोई अपयश थोप देना। प्र० वाह भाई, चोरी तुमने की और उसे इसके ऊपर ओढ़ा दिया ?

ओढ़ैं कि बिछावैं—लेकर क्या करें; निरुपयोगी वस्तु। प्र० दुसह वचन असि हमहिं न भावै, जोग कथा ओढ़ैं कि दसावैं (सू० सा०–सूर, 4712)।

ओत पड़ना—लाभ होना। प्र० कुछ ओत पड़े बिना इतना झमेला कौन करेगा।

ओत-कसर—नफा-नुकसान। प्र० अपनी ओत-कसर का विचार मैं करूँगा या तुम ?

ओना लगना—तालाब में इतना पानी हो जाना कि निकासी के रास्ते निकल जाये।

ओनामासी करना या कराना, -होना—अक्षरारम्भ करना या कराना। प्र० मुन्ना तीन साल का हो गया, ओनामासी करवा दो (ॐ नमः सिद्धम् का बिगड़ा हुआ रूप)।

ओनामासी होना—दे० ओनामासी करना या कराना।

ओप देना—चिकना करना; चमकाना। प्र० घर के सब बर्तनों को ओप देकर ठीक कर दो।

ओर आना—अंत समीप होना; समाप्त होना। प्र० न जाने कैसी गृहस्थी है कि दिनभर लगे भी रहो और काम का ओर नहीं आता।

ओर उठना या उठाना, -करना, -लेना—पक्षपात करना। प्र० आप बड़े हैं, आपको ओर नहीं उठाना चाहिए।

ओर करना—(1) समाप्त करना। प्र० उनकी आदत है कि किसी काम को शुरू करती हैं तो उसका ओर किये बिना नहीं रहतीं।
(2) दे० ओर उठना।

ओर न छोर, ओर-छोर न मिलना, -न होना—कोई आसार या तुक न होना; कोई सीमा न होना; अंत न होना। प्र० ओर न छोर, तुम जाने की बात कैसे करने लगीं। उनकी बातों का ओर-छोर तो होता नहीं, कोई मतलब क्या निकाले।

ओर न होना—सीमा न होना; अपरम्पार होना। प्र० सोभा-सिन्धु अंग अंगनि प्रति, बरनत नाहिन ओर री (सू० सा०–सूर, 757)।

ओर निभाना—अंत तक किसी का साथ देना या सहायता करना। प्र० तीन्यौ पन मैं ओर निबाहे, इहै स्वांग कौं काछै (ब्र० सू० को०)।

ओर लेना—दे० ओर उठना या उठाना।

ओर-छोर न मिलना—दे० ओर न छोर।

ओर-छोर न होना—दे० ओर न छोर।

ओर-पास, ओरे-छोरे—आस-पास। प्र० ठीक से देखो, जायगा कहाँ, यहीं कहीं ओर-पास होगा।

ओरी का पानी बड़ेरी चढ़ाना—दुष्कर काम करना। प्र० वह तो ओरी का पानी बड़ेरी चढ़ाना चाहता है, सो कैसे हो।

ओरे छोरे—दे० ओर-पास।

ओलतियों भाँग चूना—खूब नशीला होना।

ओलती तले का भूत—हर समय घर में रहने वाला दुष्ट आदमी।

ओला करना या होना—ठंडा करना या होना। प्र० ऐसी ओला रसोई कैसे गले के नीचे उतरे ?

ओले पड़ना—विपत्ति आना। प्र० सब पर ओले पड़ते हैं × × × सब मरती हैं एक तू नहीं मरती (एक चादर०–बेदी, 31)।

ओली ओड़ना, -पसारना—आँचल फैलाकर कुछ माँगना। प्र० हे गोरी

माता, हम ओली ओड़कर तुमसे विनती कर रहे हैं, इसका सुहाग बनाये रखो।

ओली पसारना—दे० ओली ओड़ना।

ओल्हा करना—भेद छिपाना। प्र० तुम मुझसे ही ओल्हा करती हो?

ओस का मोती—सुन्दर या प्रिय पर शीघ्र ही नष्ट होनेवाला। प्र० सास का दुलार ओस का मोती था।

ओस चाटना—बहुत की आवश्यकता होना पर थोड़ा उपलब्ध होना। प्र० दस रुपये लेकर क्या करूँगा, ओस न चाटना ही भला है।

ओस चाटने से प्यास न बुझना—छोटी चीज़ से बड़ी आवश्यकता की पूर्ति न होना।

ओस पड़ना—नष्ट होना; उदास होना। प्र० यह बात जो जी में गड़ गई है एक ओस सी मुझ पै पड़ गई है (इंशा०—इंशा०, 107); जीवन की सारी अभिलाषाओं पर ओस पड़ गई (रंग० (2)–प्रेमचंद, 344)।

ओसरा (री) ताकना—अपनी बारी की प्रतीक्षा करना। प्र० मैं कब से ओसरा ताक रही हूँ, तुम्हें कैसे आगे जाने दूं।

ओसाना—(1) फटकारना। प्र० सरकार, आपने उस दुष्ट को ओसाया, बहुत अच्छा किया।
(2) बहुत बात करना। प्र० बस-बस, बहुत मत ओसाओ, हो गया।

औ

औंटना—(1) एक ही बात बार-बार कहे जाना। प्र० कब तक अपनी ही औंटोगे बेटा, अब बस करो।
(2) परेशान करना। प्र० इस कमबख्त ने तो एकदम औंट डाला।
(3) बहुत गर्म करना। प्र० दूध जल्दी औंटा लो।

औंठ उठाना—परती खेत जोतना।

औंधा जाना—नशे में बेहोश हो जाना।

औंधा नसीब—बदकिस्मती। प्र० यह सब उसके औंधे नसीब के कारण हुआ।

औंधा होना—(1) बेवकूफ होना। प्र० तुम तो एकदम औंधे हो, समझे।
(2) गिर पड़ना। प्र० भीड़ का धक्का लगा और वह वहीं औंधा हो गया।
(3) बेहोश होना। प्र० अरे देखो-देखो, यह आदमी औंधा हो गया है इसे सम्हालो।

औंधा-सीधा लेटना—बेढंगा पड़ा रहना। प्र० क्या औंधे-सीधे लेटे हो जी, ठीक से बैठो।

औंधी खोपड़ी का होना—मूर्ख होना, बात का उलटा अर्थ लगाने वाला। प्र० लेकिन ये रुपए वाले कुछ ऐसी औंधी खापड़ी के लोग हैं कि जो उनका उद्धार करने आता है, उसी के दुश्मन हो जाते हैं (मान० (2)–प्रेमचंद, 35)।

औंधी समझ—उलटी समझ, जड़ बुद्धि। प्र० सबको समझाया जा सकता है पर जिसकी औंधी समझ हो उसका क्या किया जाय।

औंधे का जना—महामूर्ख, बेवकूफ।

औंधे गिरना, -मुंह गिरना—(1) बुरी तरह धोखा खाना। प्र० हम भला कैसे न औंधे मुंह गिरें। है अजब औंधी हमारी खोपड़ी (बोल०—हरिऔध, 23)।
(2) मुंह के बल गिरना। प्र० पीछे से इतनी जोर का धक्का लगा कि वह औंधा गिरा।

औंधे घड़े पर पानी डालना—ऐसे व्यक्ति से कुछ कहना जिस पर कोई असर न हो। प्र० उससे क्या कहूँ, औंधे घड़े पर पानी डालने से कोई लाभ है!

औंधे मुंह—मुंह के बल। प्र० रोज सुबह औंधे मुंह लेटने से पेट दब जायगा।

औंधे मुंह गिरना—दे० औंधे गिरना।

औंधे मुंह दूध पीना—लड़कपन करना। प्र० तुम सारी ज़िन्दगी ऐसे ही औंधे मुंह दूध पीती रहोगी?

औकात पर आना—असलियत प्रकट होना। प्र० आ गया न अपनी औकात पर! मैं पहले ही कह रही थी।

औकात पर रहना—शक्ति के अनुसार चलना। प्र० अपनी औकात पर रहो, उससे बाहर मत जाओ।

औकात बसर करना—जीवन-निर्वाह करना। प्र० किसी तरह औकात बसर किये जा रहा हूँ, बस।

औखे दिन आना—दुःखप्रद समय आना। प्र० औखे दिन आने पर आदमी की बुद्धि भी मारी जाती है।

औघट घाट—दुर्गम पथ। प्र० गर्त को न तो मानना गर्त, न औघट घाटों से डरना (मर्म०—हरिऔध, 143)।

औघट घाट उतारना—मुसीबत में डालना। प्र० लोग शुरू से ही कहा करते थे कि यह सेठ को अपने यहाँ बहुत बुलाता है, किसी समय उन्हें औघट घाट ही जा उतारेगा (ये कोठे० —नागर, 18)।

औघट घाट बचाकर चलना—विपत्तियों से सावधान रहना। प्र० आदमी को औघट घाट बचाकर चलना चाहिए, यह नहीं कि आँख मूंदकर हर काम में कूद पड़े।

औघट घाट लगना—मुसीबत में पड़ना। प्र० इसका ऐसा स्वभाव है, न जाने कौन से औघट घाट लगेगी।

औघड़ की झोली—तरह-तरह की करामाती चीजों का संग्रह।

औघड़पना—अटपटा काम। प्र० तुम तो सारी ज़िन्दगी औघड़पना ही करते रहे।

औचट में पड़ना—संकट में पड़ना। प्र० इधर काफी दिनों से बड़ी औचट में पड़ा हुआ हूँ।

औज को पहुँचना—खूब उन्नति करना। प्र० तुम दिन-दिन औज को पहुँचो, यही आशीर्वाद है।

औझड़ मारना, -लगाना—खूब चाँटें मारना। प्र० तुम्हें तो ऐसा औझड़ मारूँगा कि तुम्हारी खोपड़ी भन्ना जायगी।

औझड़ लगाना—दे० औझड़ मारना।

औतारी—देवशक्ति वाला; अपूर्व । प्र० महात्मा गाँधी को औतारी न माने तो भी इसमें कोई संदेह नहीं कि उनमें कुछ अलौकिक शक्ति थी ।

औदक जाना या होना—डर से चौंक जाना । प्र० सिर पर खड़े होकर ढोल मत बजाओ, बच्चा औदक जायगा ।

औदसा फिरना—बुरे दिन आना; दशा में परिवर्तन होना । प्र० किसी की जब औदसा फिरती है तो ऐसा ही होता है ।

औने-पौने—कम दाम पर । प्र० नई सड़क बन रही है । उसके आस-पास की करीब-करीब सभी जायदाद औने-पौने खरीदते, हड़पते चले जा रहे हैं × × (अमृत०—नागर, 365) ।

औने-पौने करना, -देना—(1) हानि उठाकर भी बेच देना । प्र० कर्ज की अदायगी के लिए ही × × वे अपनी तमाम जायदाद खड़े-खड़े औने-पौने करने लगे (बूंद०— नागर, 578) ।

(2) इधर-उधर कुछ कर लेना । प्र० मैं तो उन सब को पापी समझता हूँ, जो औने-पौने करके, इधर का सौदा उधर बेचकर, अपना पेट पालते हैं (रंग० (1)—प्रेमचन्द, 33) ।

(3) नष्ट कर देना । प्र० घर में सभी कुछ था, धीरे-धीरे इसने सब औना-पौना कर दिया ।

औने-पौने देना—दे० औने-पौने करना ।

औने-पौने निकालना, -बेचना—हानि उठाकर भी बेच देना । प्र० मैंने तो यही सोचा कि कोई गाहक लग जाय तो इक्के को औने-पौने निकाल दूं (मान०(1)—प्रेमचंद, 305) ।

औने-पौने बेचना—दे० औने-पौने निकालना ।

और का और हो जाना—एकदम बदल जाना; कुछ-का-कुछ हो जाना । प्र० तीन साल अमेरिका रहकर यह लड़का एकदम और का और हो गया है ।

और की और कहना—दूसरी या असंबंधित बात कहना । प्र० मधुकर तुम हौ चतुर सयाने ! कहत और की और (सू०—सा० सूर, 4477) ।

और की फुल्ली देखना, अपना टेंटर न देखना—दूसरों का छोटा दोष देखना, अपना बड़ा दोष न देखना ।

और क्या हाँ—"ऐसा ही है"; उत्साहवर्द्धक वाक्य । प्र० और क्या हाँ, मैं भी तो यही कह रहा था ।

और घर देखना, -दरवाजा देखना—दूसरे का सहारा खोजना । प्र० यहाँ तुम्हारी दाल न गलेगी, आबादीजान ? और दरवाजा देखो (मान० (5)—प्रेमचंद, 36) ।

और तुर्रा यह कि—और ऊपर से यह । प्र० खुद तो वक्त से आना नहीं, और तुर्रा यह कि कार्यक्रम शुरू क्यों नहीं किया ।

और तो और—सबके साथ यह भी । प्र० और तो और, यह पिद्दी भी हमें चार बात सुना गया ।

और तो क्या—और बातों का जिक्र ही क्या, और अधिक । प्र० और तो क्या, इन्होंने एक गिलास पानी तक को न पूछा; और तो क्या कर सकते थे विचारे ।

और दरवाजा देखना—दे० और घर देखना ।

और रोना ही क्या है—यही तो अफसोस है । प्र० लड़का बात सुनता तो और रोना ही क्या था ।

और ही कुछ होना—सबसे निराला होना; विलक्षण होना । प्र० तुम पार नहीं पा सकतीं, उनकी सब बातें और ही कुछ होती हैं ।

और ही धातु के बने होना—सर्वथा भिन्न स्वभाव का व्यक्ति होना । प्र० उन्हें अनुकूल बनाना आसान नहीं है, वे और ही धातु के बने हैं ।

और ही बात होना—स्थिति बिलकुल भिन्न होना । प्र० सोभा और हीरा अलग ही हो गये, नहीं आज इस घर की और ही बात होती (गोदान—प्रेमचंद, 27) ।

और ही रंग खिलना—कुछ विचित्र और नया घटित होना । प्र० वहाँ पहुँचकर देखा तो और ही रंग खिला था ।

और ही हो जाना—दे० और का और हो जाना ।

औरत की जूती चाहना—औरत की खुशामद करना; पूर्ण अनुगत होना । प्र० इस लड़के को क्या कहूँ, हर समय औरत की जूती चाहा करता है ।

औरत के लहंगे में घुसे रहना—घर में बैठना; छिपे रहना । प्र० ठीक है, ठीक है, तुम औरत के लहंगे में घुसे रहो, हम जाते हैं ।

औरतों की दलाली करना—भोग के लिए औरतों की व्यवस्था करके अपना लाभ करना । प्र० क्या उसे औरतों की दलाली से अपना धंधा बनाना होगा ? (अमृत०—नागर, 574) ।

औरतों को भी मात करना—स्त्री-सुलभ गुणों या अवगुणों की अधिकता होना । प्र० यार, तुम तो औरतों को भी मात कर रहे हो । कोई इस तरह उकटा-पुरान करता है ?

और-तौर—कोई और उपाय । प्र० और-तौर ततबीर करि करहु नहुप को भ्रष्ट ।

औरेब सुधारना—उलझन दूर करना । प्र० तुम्हारी औरेब सुधारने के लिए सुरेश बाबू को बुलाना पड़ेगा ।

औल-फौल बकना—बुरा कहना । प्र० खबरदार, अब और औल-फौल मत बकना ।

औलू-सा लगना—विचित्र-सा लगना । प्र० कोठी का सारा वातावरण अजीब औलू-सा लग रहा था ।

औले-बरसौले करना—ढंग से काम न करना । प्र० औले-बरसौले करना है तो चले जाओ यहाँ से ।

औसर—दे० अवसर ।

औसान उठना, -उड़ना, -खता करना या होना, -जाता रहना, -भूलना—सुध-बुध भूलना; धीरज न रहना । प्र० आँख खुलने पर अपने-आपको राजमहल में पाकर उसका औसान उठ गया ।

औसान उड़ना—दे० औसान उठना ।

औसान खता करना या होना—दे० औसान उठना ।

औसान जाता रहना—दे० औसान उठना ।

औसान भूलना—दे० औसान उठना ।

क

कंउधा—अच्छा और चमकीला पर क्षणिक। प्र० तुम्हारे इस कंउधे ठाट-बाट पर मैं भूलनेवाला नहीं हूँ।

कंक—भुक्खड़ और लालची। प्र० बड़ा कंक आदमी है, उसे क्या बुलाऊँ।

कंकड़ चुनना—चिन्ता या वियोग के दुःख से किसी काम में मन न लगना। प्र० पिय बिन बैठी चुनै कांकरी, कल न मिलै दिन रैन।

कंकड़-पत्थर—व्यर्थ की चीज़ें। प्र० बकस में क्या कंकड़-पत्थर भर रखा है, हटाओ सब।

कंकड़ी कर देना—तुच्छ समझना; कुछ न मानना। प्र० इस तरह रुपयों को कंकड़ी करने से क्या लाभ?

कंकड़ पहनना या पहनाना—विवाह होना या करना। प्र० जब एक बार कंकण पहन लिया तो फिर निभाना तो पड़ेगा ही।

कंकाल (सा)—बहुत दुबला। प्र० बीमारी के बाद हरखू कंकाल हो गया है।

कंगन बोहना—प्रजा मिलाना। प्र० मैं आपसे कंगन बोहने का साहस कैसे कर सकता हूँ।

कंगल-टिर्रे—गरीब, गरीब पर अकड़ू। प्र० भीड़ बहुत ही है, मेला दरिद्र और मैले लोगों का। यहाँ के लोग बड़े ही कंगल टिर्रे हैं (भा० ग्रं० (3)–भारतेन्दु, 951)।

कंगाल गुंडा, -बाँका—गरीब पर शौकीन।

कंगाल बाँका—दे० कंगाल गुंडा।

कंगाली छाना—गरीबी आना। प्र० रूपनारायन बाबू के परिवार पर तो कंगाली छा गयी है।

कंगाली में आटा गीला होना—दे० महंगी में आटा गीला होना।

कंघी करना—बाल संवारना। प्र० कंघी करके आती हूँ।

कंघी-चोटी, -पट्टी—बनाव-शृंगार। प्र० तब से मारा मरदानापन भागा जब से सीखा कंघी-चोटी करना (बोल०–हरिऔध, 7); इन औरतों की तैयारी भी × × मेहमान दरवाजे पर खड़ा हो तो ये कंघी-पट्टी में जुट जायँगी (पैंतरे–अश्क, 60)।

कंघी-चोटी में रहना, -से छुट्टी न मिलना—बनाव-शृंगार में ही रहना। प्र० बेटी पढ़ाई में लगी रहती है, बहू कंघी-चोटी में रहती है, गृहस्थी सारी मेरे सिर आ जाती है।

कंघी-चोटी से छुट्टी न मिलना—दे० कंघी-चोटी में रहना।

कंघी-पट्टी—दे० कंघी-चोटी।

कंचन और काँच को एक ही धागे में पिरोना—अच्छे और बुरे की एक-सी गति करना। प्र० सूरदास कंचन अरु कांचहिं, एकहिं धगा पिरोयौ (सू० सा०–सूर, 43)।

कंचन का कौर खिलाना—किसी के लिए बहुत खर्च करना। प्र० मुझे कौन कंचन का कौर खिला देता है जो मैं उसके लिए हाय-हाय करूँ।

कंचन नीर—साफ पानी। प्र० गंगा का जल उस दिन एकदम कंचन नीर था। ऐसा स्वच्छ जल तो कभी देखा ही नहीं।

कंचन बरसना—अत्यन्त लाभ होना; समृद्धि और शोभा से युक्त होना। प्र० मैं तुम्हारी जगह होती तो दिखा देती कि इसी नौकरी में कैसे कंचन बरसता है (रंग० (2)–प्रेमचंद, 222)।

कंजूस मक्खीचूस—अत्यन्त कृपण। प्र० लालाजी कंजूस मक्खीचूस हैं, वे एक कौड़ी न देंगे।

कंटक होना—(1) कष्टदायक व्यक्ति या वस्तु। प्र० हार चीर कंचुकि कंटक भए, तरनि तिलक भयौ भाल (सू० सा०–सूर, 4354)।
(2) बाधा। प्र० यदि मैं ही तुम्हारा कंटक हूँ तो मैं आज ही यहाँ से चली जाऊँगी।

कंटक दूर होना, -निकलना—किसी दुःख या दुःखदायी व्यक्ति से छुटकारा पाना। प्र० किसी तरह उसका कंटक दूर नहीं हो रहा है, एक-न-एक मुसीबत खड़ी ही रहती है।

कंटक निकलना—दे० कंटक दूर होना।

कंटकाकीर्ण पथ, कंटकित पथ—मुसीबतों से भरा काम। प्र० ऐसे कंटकाकीर्ण पथ पर चलने का साहस विरले ही कर पाते हैं।

कंटकित पथ—दे० कंटकाकीर्ण पथ।

कंटकेनैव कंटकं—कांटे से कांटा निकालना। प्र० देखो बन्धु, कंटकेनैव कंटकं, मैं तो इसमें विश्वास करता हूँ।

कंटकोद्धार करना—विघ्न-बाधा से मुक्ति दिलाना। प्र० मेरा कंटकोद्धार कौन करेगा, सो बोलिए।

कंटिया डालना—कुएँ आदि में गिरी हुई वस्तु को निकालने के लिए कांटा-नुमा औज़ार डालना।

कंटिया में फँसाना—प्रलोभन देकर फँसाना। प्र० देखते-देखते राम बाबू ने हम लोगों को कंटिया में फँसा लिया।

कंठ करना, -रखना—याद रखना; मुखस्थ करना। प्र० यह छोटे ही पन में ऐसा श्रुतिधर था कि एक बेर जो सुनता वा जो कला देखता कंठ कर लेता और जान जाता (भा० ग्रं० (3)–भारतेन्दु, 62); क्यों न होता दुलार दुनिया में। प्यार का पाठ कंठ जो होता (चोखे०–हरिऔध, 28)।

कंठ का हार बनना या होना—(1) बहुत प्रिय होना। प्र० सीता तो राम के कंठ की हार थीं।
(2) सदा साथ रहना। प्र० दे० प्रयोग (1)।

कंठ के नीचे उतरना—स्वीकार होना। प्र० आपकी बात किसी तरह मेरे कंठ के नीचे नहीं उतरती।

कंठ खुलना—आवाज़ साफ होना; आवाज़ निकलना। प्र० इस बार मेरा कण्ठ खुला (राधा०–प्र० स०, 19); भाग खुल जाये खुले अब कंठ जो (बोल०–हरिऔध, 138)।

कंठ न खुलना—(1) शर्म के कारण बोल न पाना। प्र० ससुर जी के सामने मेरा कंठ ही न खुलेगा।
(2) गला फँसना। प्र० दवा तो हो रही है पर अभी तक कंठ नहीं खुला है।
(3) कुछ न बोल पाना। प्र० उस समय तुम्हारा कंठ क्यों नहीं खुला था?

कंठ फूट निकलना, -फूटना—(1) घंटी फूटना, युवावस्था आरम्भ होने पर

आवाज का बदलना। प्र० लड़के का कंठ फूट आया है ×× अब बबुआ नहीं है (कुल्ली०—निराला, 15)।

(2) मुंह से शब्द निकलना। प्र० कुछ कहे कंठ तब भला कैसे। कंठ ही फूट जब नहीं पाया (बोल०—हरिऔध, 139)।

(3) तोते आदि के गले में रंगीन धारी निकलना।

कंठ फूटना—दे० कंठ फूट निकलना।

कंठ बैठना—आवाज भारी होना। प्र० कंठ बैठ रहा है तो मुंह में मुलेठी रख लो।

कंठ भर आना—भावोच्छ्वास के कारण बोली का भारी हो जाना। प्र० यह कहते-कहते उनका कंठ भर आया।

कंठ मधुर होना, -रसीला होना—स्वर में माधुर्य होना। प्र० सींचते कंठ हैं अलापों का। रस बरसते हुए रसीले कंठ (बोल०—हरिऔध, 138)।

कंठ मिलाकर—स्वर मिलाकर। प्र० बार-बार रोती रावी की लहरों से निज कंठ मिलाकर देवि! तुझे, सच रुला चुका हूँ सूने में आँसू बरसाकर (चक्र०—दिनकर, 18)।

कंठ में कफ अटकना—अन्त समय निकट आना। प्र० सूरदास सठ तब हरि सुमिरेयो, जब कफ कंठ गह्यौ (सू० सा०—सूर, 327)।

कंठ रखना—दे० कंठ करना।

कंठ रसीला होना—दे० कंठ मधुर होना।

कंठ रुँधना—आवेग के कारण आवाज न निकलना। प्र० इसके बाद वे कुछ न बोल सकीं, कंठ रुँध गया।

कंठ लगना या लगाना, -लाना—लिपटना या लिपटाना; प्रेम या स्नेह से मिलना; आलिंगन करना। प्र० कंठ लागि सो हौसुर रोई (पद०—जायसी, 19/1); मोहन बदन बिलोकि मानि रुचि, हँसि-हँसि कंठ लगाए (सू० सा०—सूर, 4009); प्रान पियारो सो पायंन लाग्यो री मैं हँसि कंठ लगाय न लीनो (मति० मक०—मतिराम, 111); ताकों तू मन खोलि अंक भरि कण्ठ लगावै (कुण्ड०—गिरधरदास, 25); प्यारे जू है जग की यह रीति बिदा की समै सब कंठ लगावैं (भा० ग्रं० (2) —भारतेन्दु, 158)।

कंठ लाना—दे० कंठ लगना या लगाना।

कंठ सींचना—किसी पेय से सूखा गला तर करना। प्र० तब भला क्या उमड़-घुमड़ करके मेघ तू है बरस-बरस जाता, एक प्यासे हुए पपीहे का कंठ ही सींच जब नहीं पाता (चोखे०—हरिऔध, 103)।

कंठ सूखना—प्यास के कारण गले में शुष्कता होना। प्र० दीजिये दो घूँट पानी ही पिला बेतरह है कंठ सूखा जा रहा (बोल०—हरिऔध, 137)।

कंठ होना—(1) सुरीला स्वर। प्र० गीत क्यों कंठ के बिना गावें (बोल० —हरिऔध, 138)।

(2) याद होना। प्र० अभी तक तुम्हें कविता कंठ नहीं हुई?

कंठगत करना—खा जाना। प्र० जी हाँ, आप प्रेम से लड्डू कंठगत करते जाइए।

(प्राण) कंठगत होना—(प्राण) कंठ तक आ जाना।

कंठस्थ करना या होना—दे० कंठ होना प्र० (2)।

कंठा उठाना, -छूना, कंठी उठाना, -छूना—कंठी छूकर कसम खाना। प्र० मैं कंठा छूकर कहता हूँ मालिक, मैंने कुछ नहीं कहा है।

कंठा छूना—दे० कंठा उठाना।

कंठा फूटना—सुग्गे के गले में कंठे का चिह्न पड़ना। प्र० हीरामन हौं तेहि क परेवा। कंठा फूट करत तेहि सेवा (पद०—जायसी, 9/2)।

कंठी उठाना—दे० कंठा उठाना।

कंठी छूना—दे० कंठा उठाना।

कंठी छोड़ना, -तोड़ना—संकल्प तोड़ देना। प्र० वे अपनी कंठी नहीं छोड़ेंगे, मैं कहे देता हूँ।

कंठी तोड़ना—दे० कंठी छोड़ना।

कंठी देना—चेला करना या बनाना। प्र० आप हमें कब कंठी दीजिएगा?

कंठी पहन लेना—भक्त हो जाना; शिष्य होना। प्र० अब तो राम सुभग सिंह ने भी कंठी पहन ली है।

कंठी बाँधना, -लेना—(1) चेला बनना। प्र० गुरुजी आवें तो हम सभी कंठी बाँध लेंगे।

(2) मद्य-मांस या विषय को छोड़ना। प्र० आपने यह कंठी कब से ले ली?

कंठी लेना—दे० कंठी बाँधना।

कंडा हो जाना—(1) सूखना। प्र० आम को धूप में से हटाओ, नहीं तो कंडा हो जायगा।

(2) दुबला हो जाना। प्र० लड़का तो सूखकर कंडा हो रहा है, कुछ खयाल करो।

(3) मरना। प्र० लाठी के एक ही वार से सियार कंडा हो गया।

कंथा उढ़ाना—योगी बनाना। प्र० वे मेरे सिर पटिया पारैं, कंथा काहि उढ़ाऊँ (सू० सा०—सूर, 4044)।

कंथा पहनना—योगी बनना। प्र० तू राजा का पहिरसि कंथा। तोरें घटहि माँह दस पंथा (पद०—जायसी, 11/6)।

कंधछूट कहार—पालकी ढोनेवालों में वह कहार जो विश्राम करने के लिए पालकी न ढो रहा हो, केवल साथ चल रहा हो। प्र० हम लोगों में जो कंधछूट रहेगा, वह थोड़ी-थोड़ी दूर पर उसके पीछे से सोंटा जमाता चलेगा तब साथ न छूटेगा (दे० दु०—शिव०, 215)।

कंधा छिलना—अत्यन्त भीड़ होना। प्र० मेले में भीड़ का हाल मत पूछो, कंधा छिला जा रहा था।

कंधा झाड़ना—सजग एवं प्रस्तुत होना; विशेष मुद्रा में कंधे हिलाना। प्र० कंधा झाड़कर एक बार अपने केशों को फिर संयत करने के बाद उसने कहा—सुनिए (बाण०—ह० प्र० द्वि०, 214)।

कंधा टेढ़ा करना—विरोध या प्रतिवाद करना; कुछ कहना। प्र० जब तक तुम गुलाम बने रहोगे, उनकी सेवा-टहल करते रहोगे, तुम्हें भूसा-चोकर मिलता रहेगा, लेकिन जिस दिन तुमने कंधा टेढ़ा किया, उसी दिन मार पड़ने लगेगी (मान० (7)—प्रेमचंद, 75–76)।

कंधा डाल देना—(1) अधीनता स्वीकार कर लेना; हिम्मत छोड़ देना। प्र० आज तक हम सके न कंधा डाल, कौन कहता है सिर गया है

घूम (मर्म०—हरिऔध, 97)।

(2) थक कर पस्त हो जाना। प्र० एकदम से कंधा मत डालो, पहले कोशिश तो करो (मा—कौशिक, 373)।

(3) बैल का कंधे से जुआ उतारना।

कंधा देना, -लगाना—(1) अरथी उठाना। प्र० हम तो मर भी जाते हैं तो कोई दुआर पर झाँकने नहीं आता, कंधा देना तो बड़ी बात है (मान० (1)—प्रेमचंद, 130)।

(2) अपनाना। प्र० हम विचार अस आवै मेरहि दीज न कांध (पद०—जायसी, 46/7)।

(3) बोझ उठाने में सहायक होना। प्र० जब कि कंधा था लगाना चाहता आह! हमने डाल तब कंधा दिया (चुभते०—हरिऔध, 64)।

(4) किसी के सम्मान में उसका सिंहासन आदि कंधे पर उठाना। प्र० पहले तो विजयादशमी के दिन यहाँ के बड़े-बड़े महाजन रात्रि को जब विमान उठता था, जामा पगड़ी पहिर कर कंधा लगाते थे (राधा० ग्रंथा०—राधा० दास, 320)।

कंधा पकड़कर चलना—(1) दूसरे के सहारे काम करना। प्र० जो कंधा पकड़े औरों का आँखों को कर बंद चले (मर्म०—हरिऔध, 148)।

(2) बहुत दुर्बल होना। प्र० अरे इसका यह हाल! यह कंधा पकड़कर चलने लगा है?

कंधा बदलना—थक जाने के कारण एक कंधे का बोझ दूसरे पर रखना। प्र० चलते-चलते अकस्मात् पालकी ठहर गई, कहार कंधा बदलने लगे (मिश्र निबन्ध०)।

कंधा भिड़ाना—सहयोग देना। प्र० वे तो सदा कंधा भिड़ाने को तैयार रहे हैं।

कंधा मिलाकर चलना—बराबर से चलना या काम करना। प्र० वह मर्द का आश्रय नहीं चाहतीं, उससे कंधा मिलाकर चलना चाहती हैं (गोदान—प्रेमचंद, 78)।

कंधा लगना—भारी बोझ उठाने के कारण कंधे में घाव होना। प्र० लाग से ही जाति-हित गाड़ी खिंचे लग गया कंधा बला से लग गया (चुभते०—हरिऔध, 29)।

कंधा लगाना—दे० कंधा देना।

कंधावर भेजना—विवाह के समय वर के लिए धोती-चादर भेजना।

कंधे उचकाना—अनजान बनना। प्र० आप कंधे क्यों उचका रहे हैं? क्या आपको कुछ नहीं पता?

कंधे का जनेऊ रखना—हिन्दुत्व की रक्षा करना। प्र० सिरजा सिवाजी चोटी राखी हिन्दुवान की, जनेऊ राखे कांध के (भूषण)।

कंधे की उड़ान—मालखंभ की एक कसरत जिसमें कंधे के बल उड़ते हैं। प्र० हम न अंधे हैं आप ही संभलें देख ली है उड़ान कंधे की (बोल०—हरिऔध, 147)।

कंधे पर उठाए फिरना—बड़ा आदर करना। प्र० जी हाँ, उन्हें तो लोग कंधे पर उठाए फिरते हैं।

कंधे लगाना—कंधे से लगाना; बाहों में भर लेना। प्र० माँ ने बेटी को कंधे लगाया और सिसक पड़ी।

कंधे से कंधा छिलना, -रगड़ा जाना—बहुत भीड़ होना। प्र० हम लोग ठाकुरद्वारे में पहुँचे, तो दर्शकों की भीड़ लगी हुई थी, कंधे से कंधा छिलता था (मान० (1)—प्रेमचंद, 157)।

कंधे से कंधा जोड़कर बैठना—बराबर में बैठना। प्र० ×× बाबाजी ऐसे अफसरों के कंधे से कंधा जोड़कर बैठने के अभ्यस्त थे (एक म्यान०—नानक०—199)।

कंधे से कंधा भिड़ाकर, -मिलाकर, -लगाकर—(1) आपस में सहयोग के साथ। प्र० तीनों जने मिलकर काम कीजिए—कंधा से कंधा लगाकर (परती०—रेणु, 70)।

(2) समान स्तर पर। दे० कंधा मिलाकर चलना।

कंधे से कंधा मिलाकर—दे० कंधे से कंधा भिड़ाकर।

कंधे से कंधा रगड़ा जाना—दे० कंधे से कंधा छिलना।

कंधे से कंधा लगाकर—दे० कंधे से कंधा भिड़ाकर।

कंधेला डालना—बिना सिर ढके कंधे से साड़ी का पल्ला लेना। प्र० न जाने कैसा जमाना आ गया है, बहू कंधेला डाले घूमा करती है।

कंधों पर आना—किसी काम का उत्तरदायित्व आना। प्र० अब उनका काम भैया हरीकृष्ण के कंधों पर आ पड़ा (बाहर०—देव०, 7)।

कंधों पर उठाना, -लेना—किसी कार्य की जिम्मेदारी लेना। प्र० शासन कार्य का इतना बोझ कंधों पर उठाये भी आप साहित्य का इतना अध्ययन कर सकते हैं (झूठा० (2)—यशपाल, 214)।

कंधों पर ढोना—दायित्व लेना या निर्वाह करना (आमतौर पर अनिच्छा-पूर्वक)। प्र० जो कुछ पड़ेगी उसे कंधों पर ढोना ही होगा।

कंधों पर पड़ना—दायित्व ऊपर पड़ना। प्र० संसार को नयी ज्योति देने की जिम्मेदारी आज हमारे तरुण साहित्यकारों के कंधों पर आ पड़ी है (अशोक०—ह० प्र० द्वि०, 46)।

कंधों पर बोझ पड़ना, -होना, -भार होना, -होना—दायित्व ऊपर होना।

कंधों पर बोझ होना—दे० कंधों पर बोझ पड़ना।

कंधों पर भार होना—दे० कंधों पर बोझ पड़ना।

कंधों पर लेना—दे० कंधों पर उठाना।

कंधों पर होना—दे० कंधों पर बोझ पड़ना।

कंपकंपी आना, -चढ़ना, -छूटना, -पैदा होना, -लगना, कंपनी छूटना—अत्यन्त भय या शीत के कारण काँपना। प्र० कोउ अपनै जिय भान करौ भाई, मोहिं तो छूटति अति कंपनी (सू० सा०—सूर, 2710); राजा में समस्त राजकीय प्रभुता के गुण ऐसे ही उद्दण्ड हैं जिनका खयाल भी मन में आने से कंपकंपी पैदा होती है (भट्ट नि०—बा० भट्ट, 9); तब भला क्या खड़े हुए रण में है अगर कंपकंपी हमें आती (बोल०—हरिऔध, 179)।

कंपकंपी चढ़ना—दे० कंपकंपी आना।

कंपकंपी छूटना—दे० कंपकंपी आना।

कंपकंपी पैदा होना—दे० कंपकंपी आना।

कंपकंपी लगना—दे० कंपकंपी आना ।

कंपनी छूटना—दे० कंपकंपी आना ।

कंपा मारना, -लगाना, -कंपास लगाना—किसी को फँसाने के लिए युक्ति भिड़ाना । प्र० अच्छा सूरदास, ईमान से बता दो, सुमागी को किस मंत्र से बस में किया × × मैं भी कहीं कंपा लगाऊँ (प्रेमचंद) ।

कंपा लगाना—दे० कंपा मारना ।

कंपास लगाना—(1) नाप-जोख करना । प्र० मैदान में इंजीनियर लोग कंपास लगा रहे थे ।
(2) दे० कंपा मारना ।

कंपूका बिगड़ा हुआ—(1) क्रान्तिकारी । प्र० उस जैसा कंपूका बिगड़ा हुआ तो मैंने देखा ही नहीं ।
(2) बदमाश । प्र० देखिए प्रयोग (1) ।

कंबल ओढ़ना या ओढ़ाना—जेल की सजा दिलवाना । प्र० मैं इसे कंवल ओढ़वा कर ही छोड़ूँगा ।

कंबल ओढ़ाकर लूटना—मूर्ख बनाकर लूट लेना । प्र० अजी साहब, इन लोगों ने बेचारे गरीब भलेमानस को कम्वल ओढ़ाकर लूट लिया ।

कंबल के बाहर पैर निकालना, -फैलाना—अपनी सामर्थ्य से अधिक काम करना या खर्च करना । प्र० उसने खुद क्यों अपनी कमली से बाहर पाँव फैलाया ? (गबन—प्रेमचंद, 144) ।

कंबल के बाहर पैर फैलाना—दे० कंबल के बाहर पैर निकालना ।

कंबल डालना—कोई कपड़ा या कम्बल ओढ़ाकर मारना । प्र० हुजूर, वे चार थे, उन्होंने जबरदस्ती मेरे ऊपर कंबल डाल दिया ।

कंबल तानकर सोना—निश्चिन्त रहना । प्र० आँखों के सामने, दिन दहाड़े जुल्म होता है और हमारे सोसलिस्ट और कौमलिस्ट भाई कमलिया तान कर सोये रहते हैं (परती०—रेणु, 96) ।

कई कदम पीछे छोड़ना—किसी काम में किसी से आगे बढ़ जाना । प्र० असहयोग में लगे तो महात्मा गांधी को भी कई कदम पीछे छोड़ गये (पद्म पराग—पद्म० शर्मा, 76) ।

क, ख, ग—सामान्य ज्ञान, प्रारम्भिक ज्ञान । प्र० वह पति-धर्म का क ख ग भी नहीं जानता (मान० (2)—प्रेमचंद, 276-77); इंडस्ट्री और इंडस्ट्रियल कल्चर क्या होती है, इसका अभी इन्हें क ख ग भी नहीं आता (प्रतीक्षा—यादव, 44) ।

ककड़ी का चोर—तुच्छ चीजों को चुराने वाला । प्र० चोरी करो तो ढंग से बड़े माल की करो । यह क्या कि ककड़ी चोर बने फिरते हो ।

ककड़ी के चोर को कटारी से मारना—छोटे कसूर पर कठोर दंड देना । प्र० यह तो अन्याय है कि ककड़ी के चोर को कटारी से मारा जाय ।

ककड़ी-खीरा करना, -समझना—कुछ कद्र न करना । प्र० घर में मुझे सबने ककड़ी-खीरा कर रखा है ।

ककड़ी-खीरा समझना—दे० ककड़ी-खीरा करना ।

ककहरा भी न जानना—कुछ भी न जानना, पूर्णतः अनभिज्ञ होना । प्र० हाँ न, आप तो ककहरा भी नहीं जानते, आप क्या समझिएगा ।

कक्कन छोड़ाना—(1) बहुत मारना । प्र० ठहरो तो, इसका कक्कन मैं छोड़ाऊँगा ।
(2) बहुत मेहनत कराना । प्र० देखिए प्रयोग (1) ।

कच बाँधना—बगल से हाथ लेकर गर्दन के ऊपर चढ़ाकर दबाना ।

कचकच करना, -मचाना, कचबच करना—झगड़ा करना । प्र० सारे दिन घर में कचकच मची रहती है ।

कचकच मचाना—दे० कचकच करना ।

कचकचाकर—कसकर; खीझकर । प्र० भैया से रहा नहीं गया, उन्होंने कचकचाकर एक चाँटा लगा ही दिया ।

कचपच, कचबच—(1) भीड़ । प्र० ऐसी कचपच में मुझे नींद न आयेगी ।
(2) गन्दगी । प्र० देखिए प्रयोग (1) ।

कचपचिया टोला—घनी बस्तीवाला मुहल्ला । प्र० कहाँ के कचपचिया टोला में डेरा डाल रखा है तुमने ?

कचपेंदिया—अस्थिर मनवाला । प्र० इस जैसे कचपेंदिया का एक पाई भरोसा मत करना ।

कचबच—दे० कचपच ।

कचबच करना—दे० कचकच करना ।

कचर-कचर कर खाना, कचर-कूट करना, -खाना—खूब भरपेट भोजन करना । प्र० हाँ जी, यह सब मिथ्या एक प्रपंच है, खूब मजे में मांस कचर-कचर के खाना और चैन करना (भा० ग्रं० (1)—भारतेन्दु, 71) ।

कचरकूट करना—(1) खूब मारना ।
(2) दे० कचर-कचर कर खाना ।

कचरकूट खाना—दे० कचर-कचर कर खाना ।

कचर-पचर खाना—इधर-उधर की चीजें खाना । प्र० दो-तीन दिनों से बड़ा कचर-पचर खाना हो रहा है ।

कचर-पचर होना—अस्त-व्यस्त; गीला होना । प्र० सारा कमरा एकदम कचर-पचर हो रहा है ।

कचरियाँ बेचना—कई लोगों का मिलकर बहुत बातें और शोर करना । प्र० जी घबड़ा गया, तुम लोग अब कचरियाँ बेचना बन्द करो ।

कचलोहिया—दुर्बल व्यक्ति या वस्तु । प्र० दो सच्चे दोस्त ऐसे दरजनों कचलोहियों से अच्छे हैं (मान० (8)—प्रेमचंद, 210)

कचहरी उठ जाना—जज आदि के चले जाने के कारण कचहरी का काम बन्द होना । प्र० संध्या का समय था । कचहरी उठ गयी थी (मान० (3)—प्रेमचंद, 130) ।

कचहरी करना—मुकदमे का फैसला करना । प्र० जज साहब सोमवार को कचहरी करेंगे ।

कचहरी के कुत्ते—कचहरी आने वालों की ओर ताक लगाए बैठे लोग । प्र० अकेले न जाना, नहीं तो कचहरी के कुत्ते तुम्हें बहुत दिक करेंगे (रंग० (2)—प्रेमचंद, 164) ।

कचहरी चढ़ना—कचहरी तक मुकदमा जाना । प्र० × × उसके होने वाले बच्चे का पिता अगर चाहे तो कचहरी चढ़ के तुमसे उसे ले जायगा (अमृत०—नागर, 673) ।

कचहरी बर्खास्त करना—जुटे लोगों को जाने को कहना । प्र० अब तुम लोग कचहरी बर्खास्त करो, रात काफी बीत चुकी है ।

कचहरी लगना—बहुत से लोगों का एक जगह जुटकर बैठना । प्र० क्या बात है, बड़ी कचहरी लगी है ।

कचहरी होना—(1) लोगों का एक साथ जुटना । प्र० कुछ पूछो मत, वहाँ खूब कचहरी हो रही थी !

(2) खूब बातचीत होना । प्र० देखिए प्रयोग (1) ।

कचाई—दुर्बलता, अस्थिरता । प्र० क्यों बचाई जा सकेगी पत बची, जब कचाई है कलेजे में कसी (चोखे०—हरिऔध, 170) ।

कचाई निकालना—किसी कमी को दूर कर देना । प्र० पहले कचाई निकाल दो, इसका रहना ठीक नहीं ।

कचालू—लाल । प्र० आजकल आप एकदम कचालू हो रहे हैं ।

कचालू करना, -बनाना—खूब मारना । प्र० सिपाही जी तुम्हारा खूब कचालू बनाएँगे, चलो तो ।

कचालू बनाना—दे० कचालू करना ।

कची काटना—दृष्टि बचाकर जाना । प्र० वह तो कची काटकर निकल गयी ।

कचीची बँटना—दाँत पीसना । प्र० जरा-जरा-सी बात पर तुम कचीची क्यों बँटते हो ?

कचीची बँधना—दाँत बैठ जाना । प्र० देखो न, इसकी कचीची बँध गई है, डाक्टर को बुलाओ ।

कचीची लेना—(1) मरणासन्न होना । प्र० ताई कचीची ले रही हैं, अब ज्यादा नहीं चलेंगी ।

(2) मरने के समय दाँत बैठ जाना । प्र० देखिए प्रयोग (1) ।

कचूमर करना, -निकालना—(1) इतना मारना कि बेदम हो जाय । प्र० बाप रे बाप, आज तो जालिम ने कचूमर निकाल दिया ।

(2) असावधानी या इस्तेमाल के कारण किसी चीज का नष्ट हो जाना । प्र० लड़कों ने मिलकर सोफे का कचूमर कर दिया ।

कचूमर निकलना—बहुत परिश्रम पड़ना । प्र० दौड़ते-दौड़ते कचूमर निकल गया (कर्म०—प्रेमचंद, 320) ।

कचूमर निकालना—(1) बहुत मेहनत करवाना । प्र० आज तो माँ ने कचूमर निकलवा दिया ।

(2) कूट कर महीन करना; तोड़ डालना । प्र० इसके हाथ से शीशे का गिलास ले लो नहीं तो यह कचूमर निकाल देगा ।

(3) दे० कचूमर करना ।

कचूर—कचूर की तरह खूब हरा । प्र० आज का आम तो एकदम कचूर है ।

कचौड़ी काटना, -झोरना—अच्छा स्वादिष्ट भोजन करना । प्र० हाँ भाई, तुम मौज में कचौड़ी काटो ।

कचौड़ी झोरना—दे० कचौड़ी काटना ।

कचौड़ी-कचौड़ी खा जाना पूड़ी छोड़ देना—विशिष्ट और अच्छी चीज ले लेना, बाकी छोड़ देना ।

कचौड़ी-सा—गोल-गोल फूला हुआ । प्र० बच्चे का गाल तो कचौड़ी-सा है ।

कच्चा—(1) पूरी तरह विश्वास न करने वाला । प्र० पन-पन ताकौ जो हो काचो सो तौ आहि पाकौ, आनंद के घन प्रीति-साकौ न बिगारियै (घन० कवित्त—घना०; 225); तब तो आप कच्चे हिन्दू हैं (सगरा० —यादव, 153) ।

(2) अननुभवी, गलत, अपरिपक्व । प्र० मास्टर जी को प्रेस के काम का अनुभव जरूर नहीं था परन्तु इतने कच्चे भी नहीं थे कि रहस्य न समझ जाते (झूठा० (2)—यशपाल, 353) ।

(3) नरम दिल ।

(4) वह वस्तु या काम जो अभी पूरा न हुआ हो । प्र० वहाँ सम्मेलन में सेफ से निकलवा कर सत्यनारायण जी की जीवनी देखी । उसमें तो अभी कच्चा मसाला संगृहीत है, प्रेस में देने लायक नहीं (पद्म० के पत्र—पद्म० शर्मा, 57) ।

(5) हतोत्साह होना । प्र० तुम इस तरह कच्चे मत हो बेटा, धीरज धरो ।

(6) कच्ची सिलाई । प्र० कोट अभी कच्चा है, आप नाप लें तो पक्का करूँ !

कच्चा असामी—अपनी बात पर दृढ़ न रहने वाला । प्र० मैं कभी कच्चा असामी नहीं फाँसता ।

कच्चा करना—(1) किसी वस्तु या काम को अन्तिम रूप देने के पहले उसका सामान्य ढाँचा खड़ा करना । प्र० फाक पहले कच्चा करके ले आओ ।

(2) डराना, झूठा साबित करना । प्र० तुम जब तक उसे सबके बीच कच्चा नहीं करोगे, वह नहीं मानेगा ।

(3) ठीक तरह से न बैठे हुए पत्थर को फिर से ठीक करने के लिए अपने स्थान से उठाना ।

कच्चा कागज—वह दस्तावेज जिसकी रजिस्ट्री न हुई हो । प्र० कच्चे कागज की क्या कीमत ? आदमी कल को पलट भी जा सकता है ।

कच्चा काम—झूठे गोटे आदि से किया हुआ काम । प्र० कच्चे काम में बहुत कम पैसा लगेगा, वही करवा लो ।

कच्चा कोढ़—गरमी (आतशक) ।

कच्चा खा जाना—चबा जाना; अत्यन्त क्रुद्ध होना; दुःख देना; सजा देना । प्र० मिसेज टंडन धीरे से बोलीं—तुम्हें कच्चा ही खा जायंगी (मान० (1)—प्रेमचंद, 270) ।

कच्चा खाना, कच्ची रसोई—उबालकर पकाया हुआ अन्न । प्र० बाबूजी, रसोई कैसी बनवाई जाय—कच्ची या पक्की ? (भिखा०—कौशिक, 126) ।

कच्चा खिलाड़ी—अननुभवी । प्र० अरे वह अभी कच्चा खिलाड़ी है, उसे इन दाँव-पेंचों का क्या पता ?

कच्चा खेल—मामूली; साधारण खेल । प्र० यह काचा खेल न होई, जन परतर खेलै कोई (कबीर ग्रंथा०—कबीर, 146); उसे अपने से कच्चा खेलने वाला साथी चाहिए था (सत्य के प्रयोग—मो० क० गाँधी, 136) ।

कच्चा गिरना, -जाना—समय से पूर्व ही गर्भस्थ बालक का बाहर आ जाना । प्र० सीता के परसों कच्चा गिर गया, पर वह ठीक है ।

कच्चा गोला चलाना—व्यर्थ, दिखावटी या असफल काम करना । प्र० तुम हमेशा कच्चा गोला चलाया करो और लोग तुम्हें देख-देखकर हँसा करें ।

कच्चा घड़ा—(1) ऐसा व्यक्ति जिसे इच्छानुसार बदला जा सके । प्र० राम तो कच्चा घड़ा है, उसे जैसा चाहें, बना लेंगे ।

(2) ऐसी वस्तु जिसे दुबारा काम में न लिया जा सके । प्र० इक रांम नांम निज साचा, चित चेति चतुर घट काचा (कबीर ग्रंथा०–कबीर, 188) ।

कच्चा चबा जाना—दे० कच्चा खा जाना ।

कच्चा चिट्ठा, कच्ची पोल—सारा भेद । प्र० भाई-बहिन दोनों एक-दूसरे की कच्ची पोलें जानते थे मगर जबान पर नहीं ला सकते थे (बूंद०–नागर, 165) ।

कच्चा चिट्ठा कहना, -खोलना, -बयान करना, -सुनाना—(1) भेद कह देना । प्र० कहिए तो आपका कच्चा चिट्ठा कह डालूं ? (आज़ाद०–प्रेमचंद, 245) ।

(2) रोना रोना । प्र० तुम सारी रात अपना कच्चा-चिट्ठा ही कहते रहोगे क्या ?

(3) पुरानी बातें विस्तार से कहना । प्र० देखिए प्रयोग (2) ।

कच्चा चिट्ठा खुलना—भेद प्रकट होना । प्र० आज नहीं तो कल, आपका कच्चा चिट्ठा खुलेगा ही ।

कच्चा चिट्ठा खोलना—दे० कच्चा चिट्ठा कहना ।

कच्चा चिट्ठा बयान करना—दे० कच्चा चिट्ठा कहना ।

कच्चा चिट्ठा सुनाना—दे० कच्चा चिट्ठा कहना ।

कच्चा चित्त, -जी, -दिल—विचलित होने वाला दिल । प्र० ऐसा कच्चा चित्त लेकर चलोगे तो कैसे चलेगा भाई ।

कच्चा चूना—बिना पानी में भिगाया चूना ।

कच्चा जाना—दे० कच्चा गिरना ।

कच्चा जिन—किसी बात के पीछे पड़ जाने वाला; हठीला । प्र० यह लड़का तो एकदम कच्चा जिन है, इससे कोई पार नहीं पा सकता ।

कच्चा जी—दे० कच्चा चित्त ।

कच्चा जोड़—रांगे से जोड़ा हुआ । प्र० कच्चा जोड़ मत लगाना नहीं तो गरम होते ही गल जायगा ।

कच्चा ठहरना या ठहराना—(1) झूठा होना या बनाना । प्र० चार आदमियों के बीच आपने मुझे बिना मतलब कच्चा ठहरा दिया ।

(2) धैर्य खोना । प्र० मैं कच्चा ठहरने वाला नहीं हूँ, आप परीक्षा ले लीजिए ।

कच्चा तागा, -धागा—(1) वह सम्बन्ध जो सहज टूट जाय । प्र० हिन्दू धर्म एक कच्चा धागा, छुई-मुई का पौदा या मकड़ी का जाला बना हुआ था कि ज़रा किसी ने छुआ, अँगुली उठाई और फूंक मारी नहीं कि वह टूट गया और मुरझा गया (पद्म पराग–पद्म० शर्मा, 14) ।

(2) क्षीण सहारा । प्र० आशा का कच्चा धागा मुझे अब भी जीवन से बाँधे हुए है (मान० (7)–प्रेमचंद, 15) ।

कच्चा दिल—दे० कच्चा चित्त ।

कच्चा धागा—दे० कच्चा तागा ।

कच्चा पड़ना—(1) सिटपिटाना, संकुचित होना । प्र० उन्हें हिम्मत हुई । एजाज़ मुसलमान हैं । इससे काम निकल सकता है । फिर कच्चे पड़े (चोटी०–निराला, 18) ।

(2) अप्रामाणिक या गलत साबित होना । प्र० मेरी हर नक्शेबन्दी मराठों की इस हार से कच्ची पड़ गई (सात०–नागर, 37) ।

कच्चा पथ—गलत रास्ता । प्र० इस देश की धर्म्मनीति और समाजनीति में वह बड़े कच्चे पथ पर चलता है (गु० नि०–बा० मु० गु०, 281) ।

कच्चा पैसा—खोटा सिक्का । प्र० नहीं, मैं कच्चा पैसा तो दूंगा नहीं (आज़ाद–प्रेमचंद, 119) ।

कच्चा बाना—(1) बिना कलफ का रेशमी कपड़ा ।

(2) झूठा गोटा-पट्ठा ।

कच्चा बैठना—(1) आँख का फूट जाना । प्र० कच्चा बैठा है क्या जो राह चलते ठोकर खा जाते हो ।

(2) दाँत बैठ जाना । प्र० मुँह से बकार नहीं फूटती, कच्चा बैठा है क्या ?

कच्चा मकान—मिट्टी का घर । प्र० गाँव में जमींदार की हवेली को छोड़कर सभी कच्चे मकान थे ।

कच्चा मन—(1) दुर्बल मन । प्र० मंगल महुँ भय मन अति काचा (राम० (सुं)–तुलसी, 833); जपमाला छापैं तिलक सरै न एकौ कामु । मन-काँचै नाचै बृथा, साँचै राँचै रामु (बिहारी रत्ना०–बिहारी, 141); कच्चे मन-सा काँच पात्र, जिसमें क्रोटन की टहनी (स्वर्णधूलि, –पंत, 57) ।

(2) अननुभवी । प्र० वेश्या के सम्बन्ध में दोहरे भाव मेरे कच्चे मन में समा गए (ये कोठे०–नागर, 13) ।

कच्चा माल—वह माल जिससे और दूसरी चीजें तैयार की जायें । प्र० मुझे तो भय है कि यहाँ कच्चा माल मिलने में कठिनाई होगी (रंग० (1)–प्रेमचंद, 16) ।

कच्चा हाथ—बिना मंजा हुआ हाथ । प्र० अभी कच्चा हाथ है, कुछ दिनों में यह भी मंज जायगा ।

कच्चा हाल—पूरा किस्सा । प्र० सुजानगढ़ का कच्चा हाल मुझे पहले सुनाओ ।

कच्चा हिसाब—वह हिसाब जो एकदम अन्तिम रूप न पा सका हो, रफ रूप-रेखा । प्र० कच्चा हिसाब लेकर शाम को घर पर आ जाना ।

कच्चा-पक्का—(1) जो पूरा मजबूत न हो । प्र० देखो, कच्ची-पक्की जोड़ाई मत कर देना ।

(2) किसी प्रकार बनाया गया कच्चा-पक्का भोजन । प्र० बारह बरस की लड़की है । कच्चा-पक्का जो सामने रख देती है, खा लेता हूँ ।

कच्चा-पक्का करना या होना—(1) निश्चित न करना। प्र० हमारे बीच अभी कच्चा-पक्का चल रहा है, पूरा तै नहीं हुआ है।
(2) अधूरा छोड़ देना। प्र० काम को कच्चा-पक्का करके मैं नहीं छोड़ता।
(3) खराब कर देना। प्र० तुमसे किसने हाथ लगाने को कहा था? सब कच्चा-पक्का कर दिया।

कच्चापन—अपरिपक्वता, अनुभवीपन। प्र० ×× उसकी बातों में कच्चापन है, पर बचपना नहीं ×× (कम०—कम०, 104)।

कच्ची—(1) भोली, अननुभवी। प्र० बातनि ही उड़ि जाहिं और ज्यौं, त्यौं नाहीं हम कांची (सू० सा०—सूर, 4304); चण्डि क्या कहूँ तुमसे मेरी ममता कितनी कच्ची है (पंच०—गुप्त, 24); मैं ऐसी कच्ची नहीं कि थोड़े में बहुत उबल पड़ूँ (भा० ग्रं० (1)—भारतेन्दु, 444)।
(2) अदृढ़, अस्थायी। प्र० देखिए प्रयोग (1)।

कच्ची आँखें—अनुभवहीन दृष्टि; लड़कपन का रुख। प्र० अभी कच्ची आँख है, उससे और क्या उम्मीद की जा सकती है।

कच्ची आवाज़ देना—धीमे से पुकारना। प्र० जरा कच्ची आवाज़ देना, देखो जग रहा है या सो गया।

कच्ची उम्र, -जवानी—कम उम्र, अनुभवहीन। प्र० कच्ची उम्र तो नहीं मेरी कि व्यर्थ धौंस सहूँ (दूधगाछ—दे० स०, 254)।

कच्ची कली—कम उम्र। प्र० अभी वह कच्ची कली है, उसे मत छेड़ना।

कच्ची कली जोड़ना—कम उम्र की लड़की का पुरुष-समागम।

कच्ची कली टूटना—कम उम्र में मृत्यु हो जाना। प्र० ऐसी कच्ची कली टूट गयी कि जी कचोट कर रह गया।

कच्ची कली तोड़ना—कम उम्र की लड़की का सतीत्व नष्ट करना।

कच्ची कुर्की—मुकदमे का फैसला होने से पहले निकलवाई जाने वाली कुर्की।

कच्ची खा जाना या खाना—(1) धोखे में आना। प्र० भाई, इस बार तुम कैसे कच्ची खा गये?
(2) हिम्मत पस्त हो जाना। प्र० देखिए प्रयोग (1)।

कच्ची गगरी—क्षणभंगुर। प्र० अमर जानि संचो इहि काया इह मिथ्या काची गगरी (कबीर ग्रंथा०—कबीर, 319)।

कच्ची गृहस्थी—गृहस्थी में केवल छोटे बच्चों का ही रह जाना; किसी अनुभवी का न होना। प्र० बड़ी कच्ची गृहस्थी छोड़कर माँ चली गयी।

कच्ची गोटी खेलना, -गोली खेलना—अननुभवी होना। प्र० मगर चौधरी कच्ची गोलियाँ न खेला था (गोदान—प्रेमचंद, 33)।

कच्ची गोली खेलना—दे० कच्ची गोटी खेलना।

कच्ची जबान निकालना—अशिष्ट भाषा का प्रयोग करना। प्र० हर वक्त तुम कच्ची जबान क्यों निकालते हो?

कच्ची ज़मीन पर खड़े होना—दुर्बल स्थिति में होना, अपरिपक्व या दुर्बल होना। प्र० जो लोग इतनी कच्ची ज़मीन पर खड़े हैं कि कोई भी लड़की उनकी तरफ अपनी उँगली बढ़ाए, तो वे उसे पकड़कर चल सकते हैं उनके साथ कुछ खिलवाड़ करने में अच्छा नहीं लगता? (अंधेरे०—राकेश, 408)।

कच्ची जवानी—दे० कच्ची उम्र।

कच्ची टूटना—कम उम्र में सतीत्व नष्ट होना।

कच्ची नींद—अधूरी नींद। प्र० कच्ची नींद उठाकर तुमको कितना कष्ट दिया है (नूर०—भक्त, 57)।

कच्ची पेशी—मुकदमे की पहली सुनवाई जिसमें फैसला नहीं होता।

कच्ची पोल—दे० कच्चा चिट्ठा।

कच्ची बही—रफ बही। प्र० प्रेमकुमार दीवाना ने दलित नाटक मंडली की कच्ची बही पर नाम दर्ज करना शुरू किया (परती०—रेणु, 244)।

कच्ची बात—(1) गलत या अप्रामाणिक बात। प्र० कहैं बनै छांडी चतुराई, बात नहीं यह कांची (सू० सा०—सूर, 2478); श्री जगतसिंघ महाराज मान सिंघावत, बात यह सांची कछू कांची न कहत हौं (जग०—पद्माकर, 1); क्यों भला बात हम सुनें कच्ची, हैं न बच्चे न कान के कच्चे (चुभते०—हरिऔध, 13)।
(2) अश्लील बात। प्र० फिर निकलीं कच्ची बातें मुँह से तो मुँह तोड़ दूंगा।

कच्ची बात सुनना—डाँट-फटकार सुनना, अपशब्द सुनना। प्र० मैं दुनिया भर की कच्ची बातें सुनने क्यों जाऊँ।

कच्ची बुद्धि, -मति—अपरिपक्व व्यक्ति। प्र० हरि चरनारबिन्द तजि लागत अनत कहूँ, तिनकी मति कांची (सूर—ब्र० सू० को०)।

कच्ची मति—दे० कच्ची बुद्धि।

कच्ची रसोई—दे० कच्चा खाना।

कच्ची रैय्यत—ऐसा काश्तकार जिससे जब चाहें खेत छुड़ा लिया जाय। प्र० सरकार, हम तो कच्ची रैय्यत हैं, हमारी क्या बिसात कि आपके मुँह लगें।

कच्ची रोकड़—हिसाब का पहला प्रारूप। प्र० कच्ची रोकड़ एक बार बाबूजी को दिखा लेना।

कच्ची सिलाई—बड़े-बड़े टाँके जिन्हें पक्की सिलाई हो जाने पर खोल दिया जाय। प्र० पहले कच्ची सिलाई करके मुझे दिखाओ।

कच्ची-पक्की कहना, -मुँह से निकालना, -सुनाना—भली-बुरी बात कहना। प्र० इस पर बहुत बिगड़े। कच्ची-पक्की मुँह से निकालने लगे (रंग० (2)—प्रेमचंद, 237)।

कच्ची-पक्की जोड़ाई—पक्की ईंट और मिट्टी के गारे की जोड़ाई।

कच्ची-पक्की मुँह से निकालना—दे० कच्ची-पक्की कहना।

कच्ची-पक्की सुनाना—दे० कच्ची-पक्की कहना।

कच्चे घड़े की चढ़ी होना—बहुत घमंड होना। प्र० इनको तो कच्चे घड़े की चढ़ी थी, कब मानते थे ××(आज़ाद, प्रेमचंद, 6)।

कच्चे घड़े की छनना, पीना—(1) नशा करना, शराब पीना। प्र० कहिए, मुंशीजी, आजकल तो कच्चे घड़े की खूब छनती होगी (प्रेमा०

–प्रेमचंद, 148)।

(2) नशे में अनाड़ीपन या घमंड करना। प्र० आज तुमने कच्चे घड़े की पी रखी है क्या ?

कच्चे घड़े की पीना—दे० कच्चे घड़े की छनना।

कच्चे घड़े चढ़ना—ताड़ी पीना।

कच्चे घड़े पानी भरना या भरवाना—कठिन काम करना या करवाना। प्र० आप तो कच्चे घड़े पानी भरवाना चाहते हैं सो कैसे हो।

कच्चे दिन, कच्चे-पक्के दिन—गर्भ का तीसरा-चौथा महीना। प्र० बहू के कच्चे दिन हैं, सम्हलकर रहने को कह देना।

कच्चे दिल का—सुकोमल भावनाओंवाला, दुर्बल मनवाला। प्र० भैया को मैं इतना कच्चे दिल का आदमी नहीं समझता था (ग़बन–प्रेमचंद, 271)।

कच्चे धागे से बंधा—अत्यन्त दुर्बल सम्बन्ध सूत्र में बंधा। प्र० बड़ी बेबसी यह है कि कच्चे धागे में बँधे घिसटते चले आते हैं (अमृत०–नागर, 438)।

कच्चे शीशे भरना—नादान से दोस्ती करना। प्र० तुम जान-बूझकर कच्चे शीशे भरने क्यों गये ?

कच्चे सूत-सा तोड़ देना—आसानी से सम्बन्ध तोड़ देना। प्र० काँचौ सूत तोरि सो डार्‍यौ। उरग केंचुरी फिरि न निहार्‍यौ (सू० सा०–सूर, 2834)।

कच्चे-पक्के दिन—दे० कच्चे दिन।

कच्चे-बच्चे—छोटे-छोटे बच्चे। प्र० पंडित जी कच्चे-बच्चे सबको लेकर ठीक नौ बजे धमक गये।

कच्छ की उखेड़—कुश्ती में नीचे वाले का ऊपर के पहलवान द्वारा विशिष्ट रीति से चित्त किया जाना।

कच्छ के मच्छ—जैसा बाप वैसा बेटा। प्र० अरे भाई, कच्छ के मच्छ ही तो होगा, तुमने कुछ और होने की बात ही क्यों मान रखी थी ?

कच्छप चाल चलना—सुस्ती से काम करना। प्र० तुम इसी तरह कच्छप चाल चलते रहे तो हो गया काम।

कच्छा पाटना—कई कच्छों (नाव) को बाँध कर पाटना। प्र० बुढ़वा मंगल के मेले में न जाने कितने कच्छे पाटे जाते थे, दृश्य देखते ही बनता था।

कछनी काछना—घुटनों तक धोती पहनना; धोती उठाकर फेंटे में खोंस लेना। प्र० क्या कछनी काछे घूमा करते हो, धोती नीची करो।

कछुआ का साझा करना—एक बैल की हिस्सेदारी हल में करना।

कछुआ-खरगोश की दौड़ होना—असमान व्यक्तियों में मुकाबला होना। प्र० कछुए-खरगोश की दौड़ थी सो परिणाम निश्चित था।

कछुए की तरह मूंड़ी बाहर-भीतर करना—किसी बात को स्पष्ट न करना, मन आगे-पीछे होना। प्र० ठीक है, आप कछुए की तरह मूंड़ी बाहर-भीतर करते रहिए, मैं चला।

कछोटा मारना—लांघ खोस कर साड़ी पहनना। प्र० महाराष्ट्र की औरतें कछोटा मारकर साड़ी पहनती हैं।

कज निकालना—(1) दोष दिखाना। प्र० आदमी को हर किसी का कज नहीं निकालना चाहिए।

(2) दोष दूर करना। प्र० तुम्हीं क्यों नहीं पहले अपना कज निकालते, मुझे कहने चले हो ?

(3) टेढ़ापन दूर करना। प्र० मुझसे छड़ी का कज नहीं निकलेगा, समझे।

कजमज—अस्पष्ट, जो सहज बोधगम्य न हो। प्र० ऐसी कजमज लिखावट कैसे पढ़ी जाय, बोलो।

कजरी खेलना—कजरी गाना। प्र० हम तो खेले जइबे सावन में कजरिया, बदरिया घिरी आई ननदी।

कज़ा कर जाना—मर जाना। प्र० अरे, वे कब कज़ा कर गये ?

कज़ा का दिन आना—शामत आना, मृत्यु निकट होना। प्र० आज दुश्मनों सालों की कज़ा का दिन आया है खुदा-खुदा करके (सात०–नागर, 75)।

कज़ा से खेलना—जान हथेली पर लिए काम करना। प्र० वह तो सदा कज़ा से खेलता रहा है।

कज़िया चुकाना—झगड़ा मिटाना। प्र० जनाब, आप खत पढ़ते हैं कि मेरे घर का कज़िया चुकाते हैं ? (आज़ाद०–प्रेमचंद, 47)।

कज़िया पाक होना—झगड़ा मिटना। प्र० किसी तरह यह कज़िया पाक हो तो जान बचे।

कट जाना—(1) लज्जित होना, झेंपना। प्र० चन्द्र इस बात से कट गया था पर उसने प्रगट नहीं होने दिया (नदी०–अज्ञेय, 45)।

(2) लड़ाई में मरना। प्र० वह यही चित्तौर है जिसके लिये हज़ारों राजपूत कट गए परन्तु स्वाधीनता कभी न छोड़ी (राधा० ग्रंथा०–राधा० दास, 595)।

(3) समय बीतना, रास्ता खत्म होना। प्र० अच्छा, यह तो बताओ, यहाँ कैसे कटती है ? (कंकाल–प्रसाद, 29)।

(4) खिसक जाना, दूर-दूर रहना। प्र० जिसे देता हूँ, वही उसके चक्के में पड़ जाता है, और फिर परिश्रम से कटता और जी चुराता है (धन के लिए कहा गया है) (परख–जैनेन्द्र, 141)।

(5) छीजना, नष्ट होना। प्र० तो अब तुम्हारी विपत्ति कट जायगी।

(6) कतरा जाना, ब्योंता जाना। प्र० दोनों ब्लाउज़ कट गये हैं, कल सिल दूँगी।

(7) धोखा देकर साथ छोड़ देना। प्र० इतनी दूर तक साथ-साथ आया फिर न जाने कब कट गया।

(8) ईर्ष्या करना। प्र० मेरी उन्नति देख-देखकर वे कटी जाती हैं।

(9) किसी लिस्ट से नाम हट जाना, खारिज होना। प्र० परसों तक फीस जमा न कर दी तो रजिस्टर से नाम कट जायगा।

(10) निकल जाना, चोरी जाना। प्र० हर बार बैंगन से कुछ माल कट जाता है।

(11) खंडन होना। प्र० शंकराचार्य के सिद्धान्तों का कटना आसान न था।

(12) अलग होना, दो भागों में बंट जाना, रेल के डिब्बों का अलग होना । प्र० मोगलसराय में गाड़ी कट गयी ।

(13) कुपित होना, बुरा मानना । प्र० देखकर घर-घर की गोतनी-दयादिन कट जाती हैं, तानें मारने लगती हैं × × (दे० दु०—शिव०, 131) ।

कट मरना—(1) युद्ध में लिप्त होना । प्र० मिस्र और इज्रायल दोनों ही कट मरने पर उतारू हैं ।

(2) जबरदस्त लड़ाई-झगड़ा होना । प्र० घरवाले ही सब कट मरने पर कमर कसे हैं तो कोई क्या करे ।

कट मारू होना—बड़ा मोहक चेहरा होना । प्र० कट बड़ा मारू है, आँखें बड़ी गजब की हैं (अमृत०—नागर, 138) ।

कट-कटकर मरना—(1) जान देना । प्र० उस दिन के युद्ध में न जाने कितने लोग कट-कटकर मरे ।

(2) आपस में झगड़ा करना । प्र० स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद के वे कुछ महीने—भाई-भाई आपस में कट-कटकर मरे ।

कट-कटकर लड़ना—जी-जान से लड़ना । प्र० उस दिन की लड़ाई में आगे वाली टुकड़ी कट-कटकर लड़ी ।

कटकटाकर चढ़ बैठना—बहुत नाराज़ होकर टूट पड़ना । प्र० वानर-सेना कटकटाकर चढ़ बैठी ।

कटका भरना—(1) चिकोटी काटना । प्र० माँ, देखो मुन्नी कटका भरती है ।

(2) चोंच मारना । प्र० चारों ओर से कौए उस लाश को घेरे कटका भर रहे थे ।

कटखना कुत्ता—बहुत लड़ाका आदमी । प्र० इस कटखने कुत्ते के मुंह कौन लगे ।

कटखने जानना—उपचार जानना, उपचार करने में कुशल होना । प्र० मैं भी बहुत से कटखने जानता हूँ, मुझे एक मौका दीजिए ।

कटखने में आना—चक्कर में पड़ना । प्र० बिना मतलब मैं भी कटखने में आ गया ।

कटती कहना—मर्म-भेदी बात कहना । प्र० जब देखो तब, माँ कटती कहती रहती है, कोई कहाँ तक बरदाश्त करे ।

कटती नाक बच जाना—इज्जत जाते-जाते बनी रह जाना । प्र० वेद में रेल, तार, कमेटी, कचहरी दिखाकर आर्यों की कटती हुई नाक बचा ली (भा० ग्रं० (3)—भारतेन्दु, 834) ।

कटनी काटना—इधर से उधर, उधर से इधर भागना । प्र० देखो तो सही, खरगोश कैसा कटनी काट रहा है ।

कटनी मारना—जोतने से पहले खेत की घास काटना ।

कटवाँ ब्याज, कटुआँ ब्याज—वह ब्याज जो थोड़ा कर्ज चुका देने पर शेष पर लगे ।

कटवाना—पैसा वसूलना; खर्च करवाना । प्र० आशिक को तरह-तरह से कटवाती ही रहती है (ये कोठे०—नागर, 207) ।

कटहल फोड़ना—बहुत जरूरी काम करना । प्र० ठीक है, आप कटहल फोड़ रहे हैं तो फोड़िए ।

कट-फटा होना—उदासीन होना; विमुख होना । प्र० वे तो हम लोगों से कुछ कटी-कटी-सी जान पड़ती हैं (झाँसी०—वृं० वर्मा, 260) ।

कटाकटी की चलना—झगड़ा चलना । प्र० तभी से दोनों में कटाकटी की चल रही है ।

कटाकटी होना—झगड़ा हो जाना । प्र० उस दिन बाप-बेटे में खूब कटाकटी हुई, हम सबने तमाशा देखा ।

कटाक्ष-बाण—मोहक कटीली चितवन । प्र० है कोई ऐसा धीर जो इस मोहिनी के कटाक्ष-बाण से घायल न हुआ हो ?

कटारी खाकर मरना—कटारी के घाव से मरना । प्र० राजकुमार कटारी खाकर मरा ।

कटावन पड़ना, -लगना—(1) किसी दूसरे के कारण अपनी वस्तु नष्ट होना । प्र० उसके कारण मुझे बिना मतलब कटावन पड़ गया ।

(2) दूसरों की नजर में खटकने वाली चीज का निकल जाना । प्र० मैं किताब लेकर आया और यहाँ कटावन लग गया । मुझे पहले ही डर था ।

कटावन लगना—दे० कटावन पड़ना ।

कटिबद्ध होना—पूरी तरह तैयार होना । प्र० पर छिनकी तो आज कटिबद्ध होकर आई थी (भूले०—भग० वर्मा, 149) ।

कटी उँगली पर न मूतना—तनिक भी भला न करना । प्र० वे × × × सदा कहते रहे जहाँ तेरा पसीना गिरेगा वहाँ हमारा मृत शरीर पहिले गिर लेगा, पर जब समय आया कि गैरों के सामने हमारी इज्जत न रहे, तो उन्हीं महाशयों ने कटी उँगली पर न मूता (प्र० पी०—प्र० ना० मि०, 71) ।

कटी हुई नाक की जगह नकली बैठाना—एक बार बेइज्जती हो जाने पर, स्थिति को सँभालने का प्रयत्न करना । प्र० आप कटी हुई नाक की जगह नकली बैठाने की व्यर्थ चेष्टा मत कीजिए, कोई लाभ न होगा ।

कटी हुई पतंग—(1) जिसका कोई स्थिर सिद्धांत न हो । प्र० आप तो कटी हुई पतंग हैं, हवा के रुख के साथ मुड़ जाते हैं ।

(2) जिसका कोई आधार या सहारा न हो । प्र० वह बेचारी इस समय कटी हुई पतंग हो रही है ।

कटीली आँख—मोहक चितवन । प्र० उसकी कटीली आँखों का शिकार कौन न हुआ ।

कटी-सी आँख—निराश एवं करुण दृष्टि । प्र० वह एकटक कटी-सी आँखों से मौसी की आँखों की ओर देखता रह गया (शेखर० (2)—अज्ञेय, 32) ।

कटु अनुभव, कड़वा अनुभव—अप्रिय अनुभव । प्र० वे बहुत दुःखी हुए और अपने कड़वे अनुभवों की कहानी सुनाकर मुझे आश्वासन दिया (सत्य के प्रयोग—मो० क० गांधी, 151) ।

कटु सत्य—नग्न सत्य । प्र० कटु सत्य कभी प्रिय नहीं होता महाराज ।

कटुआँ ब्याज—दे० कटवाँ ब्याज ।

कटे पर नमक छिड़कना, -देना, -लगाना—पीड़ित को और पीड़ा पहुँचाना ।

प्र० काटे ऊपर लौन लगावत, लिखि-लिखि पठवत चीठी (सू० सा०—सूर, 4290); तुम कटे पर नमक छिड़कने आई हो बहू ।

कटे पर नमक देना—दे० कटे पर नमक छिड़कना ।

कटे पर नमक लगाना—दे० कटे पर नमक छिड़कना ।

कटे पेड़-सा—हताश या निराश । प्र० सूरदास काटे तरिवर ज्यौं ठाढ़ी रटति रही (सू० सा०—सूर, 3836); कमला कटे पेड़-सी वहीं बैठ गई (बौने०—रां० रा०, 181) ।

कटोरा खनकना—बहुत घनी जगह होना । प्र० जंगल तो ऐसा घना कि कटोरा खनके ।

कटोरा चलाना—मंत्र-बल से कटोरा चलाकर अपराधी का पता लगाना ।

कटोरा बजना—दे० कटोरा खनकना ।

कटोरा (कटोरी)-सी आँखें—गोल-गोल सुन्दर आँखें । प्र० कैसी कटोरी सी आँखें हैं, देखो तो ।

कटौती करना—कमी करना । प्र० खर्च में कुछ-न-कुछ कटौती तो करनी ही पड़ेगी ।

कट्टर दुश्मन—पक्का दुश्मन । प्र० वे मेरे कट्टर दुश्मन हैं, मुझे जड़ से उखाड़ फेंकना चाहते हैं ।

कट्टर नीच—अत्यन्त नीच । प्र० वह तो कट्टर नीच है, मैं उससे बात भी नहीं करना चाहता ।

कट्टी कहना—निन्दा करना । प्र० हर वक्त कट्टी कहने की बड़ी बुरी आदत तुम्हें लग गयी है ।

कट्टी काटना—बचकर निकल भागना । प्र० देखो तुम मत कट्टी काट जाना, पहले से कहे दे रहा हूँ ।

कट्टे लगना—(1) किसी दूसरे के कारण किसी वस्तु का नष्ट होना । प्र० सारे खिलौने तुम्हारे कट्टे लग गये ।
(2) दूसरे के हाथ लगना । प्र० मेरी घड़ी किसी और के कट्टे लगी, कलम किसी और के ।

कठ-करेजा, कठिन करेजा—कठोर हृदयवाला । प्र० सच कहूँ, तुम बड़े कठ-कलेजी हो (मान० (1)—प्रेमचंद, 10) ।

कठपुतली की तरह नचाना या नाचना, -बनना, -होना—दूसरे के कहे अनुसार काम करना । प्र० बनारस के रईस भी कठपुतली बने हुए उसी गत नाचते रहे (भा० ग्रंथा० (3)—भारतेन्दु, 938); यही लोग उन बेचारों को कठपुतली की तरह नचा रहे हैं (गोदान—प्रेमचंद, 290) ।

कठपुतली बनना—दे० कठपुतली की तरह नचाना या नाचना ।

कठपुतली होना—दे० कठपुतली की तरह नचाना या नाचना ।

कठ-प्रेम—एकतरफा प्रेम । प्र० नेह कथै सठ नीर मथै हठ कै कठ प्रेम को नेम निबाहै (घन० कवित्त—घना०, 119) ।

कठ-मुर्री लगना—दे० ठगमूरी लगना ।

कठ-मुल्ला—जड़ मूर्ख । प्र० मुल्ला नहीं कठमुल्ला है । निकाल दो उसको छावनी में से (मृग०—वृं० वर्मा, 265) ।

कठमुल्लापन—बेवकूफी, धर्मान्धता । प्र० मुसलमानों ने भी अपने समाज के कठमुल्लापन को काफी झटका दिया (अमृत०—नागर, 672) ।

कठ-हुज्जती—व्यर्थ तर्क-वितर्क करनेवाला । प्र० बड़े कठहुज्जती हो जी, अब चुप रहो ।

कठहुज्जती करना—व्यर्थ तर्क करना । प्र० अजी, कुछ कठहुज्जती ही करो (सेवा०—प्रेमचन्द, 108) ।

कठिन की कमाई—परिश्रम और मुसीबत सहकर कमाया धन । प्र० मेरी कठिन की कमाई यह लड़का यों उड़ा डाले, यह कैसे देखा जा सकता है ।

कठिन धार होना—दुःखदायी होना । प्र० कठिन विरह की धार सही ना जाय हो ।

कठिन पड़ना—विपत्ति आना । प्र० जब-जब दीननि कठिन परी (सू० सा०—सूर, 16) ।

कठिन परीक्षा का दिन—बड़ी मुसीबत का दिन । प्र० आजकल उसकी कठिन परीक्षा के दिन हैं, देखो, कहाँ तक सही उतर पाता है ।

कठिन समय—मुसीबत के दिन । प्र० ऐसा कठिन समय है, कोई क्या करे, कहाँ जाये ।

कठिनई करके—जी कड़ा करके । प्र० एक बार कठिनई करके कह दो, छुट्टी हुई ।

कठिन-करेजा—दे० कठ-करेजा ।

कठौता-सी होना—खूब मजबूत और स्वस्थ होना । प्र० कुछ कम सत्तर की होने आयीं, अभी खासी कठौता-सी बनी हैं (आजाद०—प्रेमचंद, 286) ।

कड़क दौड़ना—सरपट दौड़ना । प्र० कड़क दौड़कर जाओ ।

कड़क दौड़ाना—पटेबाजी का एक विशेष दाँव ।

कड़क बांका—छैला-छबीला जवान ।

कड़क मारना—पेट में शूल उठना । प्र० सवेरे से ही पेट में कड़क मार रहा है, कोई गोली दे दो बहूजी !

कड़ककर बोलना—(1) क्रोध से बोलना । प्र० बाबूजी कड़ककर बोले तो हम सब दुम दबाकर भागे ।
(2) ज़ोर से बोलना । प्र० देखिए प्रयोग (1) ।

कड़कड़ाता जाड़ा—बहुत जोरों की सर्दी । प्र० पश्चिम की ओर खूब कड़कड़ाता जाड़ा पड़ता है ।

कड़कना—नाराज होना । प्र० इतनी ज़रा-सी बात में इस बुरी तरह कड़कने क्यों लगे ?

कड़खे उड़ाना—जोशीले गीत गाना, दूसरों को उत्तेजित करके खुश होना । प्र० वे दिन याद करके आज भी रोंगटे खड़े हो जाते हैं । नवयुवक स्वयंसेवकों की टोलियाँ कड़खे उड़ाते गली-गली घूमा करती थीं ।

कड़बड़ी दाढ़ी, करबरी दाढ़ी—काले-सफेद बालोंवाली दाढ़ी । प्र० मौलवी साहब भी अपनी कड़बडी दाढ़ी हिलाते-हिलाते पहुँच गये ।

कड़वा—अप्रिय, कटुवाक्य बोलनेवाला । प्र० यह कल का पुतला जो अपने उस खेलाड़ी की सुध रखे तो खटाई में क्यों पड़े और कड़आ कसैला क्यों हो ? (इंशा०—इंशा०, 87); हमारे चौपदं कुछ कड़वे होवें, मगर

वे हित-जल के गडुवे हैं (चुभते० (भू)—हरिऔध, 7); मर्द जरा कड़वा-तीखा न हुआ तो मर्द क्या हुआ (झूठा० (1)—यशपाल, 200)।

कड़वा अनुभव—दे० कटु अनुभव।

कड़वा करना—(1) नष्ट करना। प्र० जलसे का मजा क्यों कड़वा करते हो भाई?

(2) वसूल करना। प्र० पुराना माल है, जो कड़वे कर सकूं वही बहुत होगा।

कड़वा करैला—बुरे मनवाला। प्र० इन कड़वे करैलों से भगवान् ही रक्षा करे।

कड़वा घूंट उतारना, -पीना—किसी कटु या अप्रिय बात को सहने को बाध्य होना। प्र० शेखर इसे कड़वी घूंट करके पी गया (शेखर० (2) —अज्ञेय, 200)।

कड़वा घूंट पीना—दे० कड़वा घूंट उतारना।

कड़बा जहर—अत्यन्त कड़वा। प्र० बाप रे, खीरा तो एकदम कड़वा जहर है।

कड़वा दिल करना—मन में मलिनता लाना। प्र० तुम्हें अपना दिल कड़वा नहीं करना चाहिए।

कड़वा फल—बुरा परिणाम। प्र० तुम जो कुछ करते हो उसका कड़वा फल तुम्हें मिलेगा ही।

कड़वा फल चखना—बुरे काम का बुरा परिणाम भोगना। प्र० पश्चात्ताप के कड़वे फल कभी-न-कभी सभी को चखने पड़ते हैं ×× (सेवा०—प्रेमचंद, 3)।

कड़वा बोल बोलना, -बोलना—दुर्वचन बोलना; कठोर बात कहना। प्र० चेलम्भा पेरियनायकी से कड़वे बोल बोलती, परन्तु माधवी पर जान देती थी (सुहाग०—नागर, 15)।

कड़वा बोलना—दे० कड़वा बोल बोलना।

कड़वा लगना—अप्रिय लगना। प्र० पा लागौं मुख मौन गहौ अब, कटुक लगति है बानी (सू० सा०—सूर, 4558); और जे संवाद घनआनंद बिचारै कौन, बिरह-विपादजुर जीबो करुवौ लगै (घन० कवित्त—घना०, 226), मिठाइयाँ खाते वखत तो मीठी मालूम होती हैं। दाम देते क्यों कड़वा लगता है (रंग०(1)—प्रेमचंद, 372)।

कड़वा वचन—कटु वचन। प्र० करुवौ वचन स्रवन सुनि मेरौ, अतिरिस गही भुवाल (सू० सा०—सूर, 548); बिन स्वारथ कैसे सहै, कोऊ करुवे बैन (वृ० स०—वृन्द, 36)।

कड़वा स्वर—तीखा, व्यंग्यात्मक स्वर। प्र० माँ ने भी उलटकर कड़वे स्वर में कहा—××।

कड़वा-कड़वा थू—परेशानी या झंझट से एकदम भागना। प्र० वाह साहब, यह खूब रही, मीठा-मीठा गप और कड़वा-कड़वा थू।

कड़वा मुंह—कटु बोलनेवाला। प्र० मैं उस कड़वे-मुंह के मुंह नहीं लगना चाहती।

कड़वाहट पैदा होना—मनोमालिन्य हो जाना। प्र० इस समय ज़िद करने से आपस में कड़वाहट पैदा हो जायगी।

कड़वी आंख—सक्रोध दृष्टि। प्र० कुंवर साहब ने उसकी ओर कुछ ऐसी कड़वी आँखों से देखा कि वह सूख-सा गया (मान० (1)—प्रेमचंद, 241)।

कड़वी ज़बान—अप्रिय या टेढ़ी बात। प्र० इस प्रकार अठारह वर्ष की उम्र, डेढ़ महीने की पढ़ाई और नीम से भी कड़वी जबानवाली माँ—इन तीन साधनों के साथ पुजारी गृहस्थी संभालने के काम में लगाये गए (सतमी०—राहुल, 39)।

कड़वी दवा, कड़वे काढ़े का घूंट—कटु किन्तु लाभदायक बात। प्र० मेरा उपदेश कड़वी दवा है बेटा पर ले लो, गुण करेगा।

कड़वी बात—अप्रिय बात। प्र० मुख जो कहीं कटुक सब बानी, हृदय हमारे नाहीं (सू० सा०—सूर, 2230); क्यों सदा ही वह तीखी और कड़वी बात सुजला के सामने कह देता है (ज्ञान०—यशपाल, 51)।

कड़वी बेल—दुष्ट व्यक्ति।

कड़वी-मीठी बात—कड़वी बात। प्र० दुनिया भर की कड़वी-मीठी बातें क्यों सुनाते हो?

कड़वे काढ़े का घूंट—दे० कड़वी दवा।

कड़वे-कसैले दिन—बुरे दिन, कष्ट के दिन। प्र० ज़िन्दगी के कड़वे-कसैले दिन भी कट ही जाते हैं।

कड़ा—(1) मज़बूत। दिलावरी तो जब देखता कि किसी कड़े आदमी से हाथ मिलाते। इस बालक को पीट लिया, तो कौन-सी बहादुरी दिखाई (रंग० (1)—प्रेमचन्द, 91)।

(2) जोर देकर; कड़े पड़कर। प्र० 'सुधा' वालों को मैंने 8–10 दिन हुए एक कड़ा पत्र लिखा था कि लेखकों को यथेष्ट पुरस्कार दो जिनके लेख छप चुके हैं (पद्म० के पत्र—पद्म० शर्मा, 183)।

(3) कठोर; नियम पालन में बहुत दृढ़। प्र० हाकिम जिला इतना कड़ा है कि ज़रा भी रियायत नहीं करता (मान० (1)—प्रेमचन्द, 68)।

कड़ा उत्तर देना—मुंहतोड़ जवाब देना। प्र० मैंने भी पत्र का खूब कड़ा उत्तर दिया।

कड़ा कदम उठाना—कठोर कार्यवाही करना। प्र० यह भी संभव है कि आपके लिए कोई कड़ा कदम भी उठाया जाए (एक म्यान०—नानक०, 202)।

कड़ा करना—(1) हृदय में दया आदि के भाव को स्थान न देना। प्र० उसी दिन से मैंने अपने आप को कड़ा कर लिया है।

(2) हिम्मत करना। प्र० अपने आपको थोड़ा कड़ा करो नहीं तो कैसे चलेगा।

कड़ा कलेजा—दृढ़ और सहनशील। प्र० पर कड़े दिल का यह साहसी आदमी पहले तो जल्दी डरता नहीं और डरता भी है तो संभलकर अपने बचाव के उद्योग में लग जाता है (चिन्ता० (1)—शुक्ल, 125)।

कड़ा पड़ना—कठोर हो जाना। प्र० न जाने क्यों एकाएक कड़े पड़कर

उसने कहा—× × (शेखर० (2)—अज्ञेय, 221)।

कड़ा मुकाबला—जबरदस्त मुकाबला। प्र० आज बड़ा कड़ा मुकाबला है, देखो क्या होता है।

कड़ा मोर्चा लेना—बराबरी से सामना करना। प्र० भारतीय भी कम न थे, उन्होंने कड़ा मोर्चा लिया।

कड़ा रुख अख्तियार करना—कठोर हो जाना। प्र० उसी दिन से बाबू जी ने कड़ा रुख अख्तियार कर लिया है।

कड़ा लगाना—लदाव कड़ी की छत बनाना। प्र० दो कमरों की दीवार उठ गयी है, कड़ा लगाना बाकी है?

कड़ा सौदा—अधिक धन व्ययकर या हानि उठाकर किया जानेवाला काम। प्र० इस बार का मामला जरा कड़ा सौदा हो गया।

कड़ा हाथ रखना—कठोर नियंत्रण में रखना। प्र० सरकार को इन पर कड़ा हाथ रखना चाहिए। जरा भी शह मिली और यह काबू से बाहर हुए (प्रेमा०—प्रेमचन्द, 79)।

कड़ाई करना; -से काम लेना—कठोर व्यवहार करना। प्र० आप ढील क्यों देते हैं, कड़ाई से काम लीजिए।

कड़ाई से काम लेना—दे० कड़ाई करना।

कड़ाई से कुचल देना—बिना किसी मुलाहिज़े के दमन करना। प्र० इन दुष्टों को कड़ाई से कुचल दिया जायेगा।

कड़ाका कर जाना या होना—उपवास कर जाना। प्र० यार लोग तो रोजै कड़ाका करथैं ऐ पैंजामा (भा० ग्रं० (1)—भारतेन्दु, 332); प्रायः एक जून तो चबैने पर ही कटता था, दूसरे जून भी कभी आधा पेट भोजन मिला, कभी कड़ाका हो गया (गोदान—प्रेमचन्द, 203)।

कड़ाका गुजरना, -बीतना—गरीबी में उपवास करके दिन बिताना। प्र० इन गरीबों के तो रोज ही कड़ाका गुजरता है।

कड़ाका बीतना—दे० कड़ाका गुजरना।

कड़ाके का—ज़ोरदार; बहुत तेज़। प्र० ऐसा कड़ाके का झापड़ दूंगा कि होश दुरुस्त हो जायेगा। बड़ा कड़ाके का जाड़ा था, हाथ-पैर ठिठुरे जा रहे थे।

कड़ा-मिज़ाज—क्रोधी। प्र० आप चाहें कैसे कड़े मिज़ाज हों × × जहाँ हम चार दिन झुक-झुक के सलाम करेंगे × × बतलाइए तो आप कब तक राह पर न आवेंगे? (प्र० पी०—प्र० ना० मिश्र, 58)।

कड़ाही करना—मनौती पूरी करने के लिए किसी देवता के निमित्त हलुआ बनाना।

कड़ाही के बैंगन होना—अत्यन्त कुपित होना। प्र० क्या मजा आया, लालू साव एकदम कड़ाही के बैंगन हो रहे थे।

कड़ाही चढ़ना या चढ़ाना—पकवान आदि बनना। प्र० आज सवेरे से ही कड़ाही चढ़ी है, कल भी चढ़ेगी।

कड़ाही चाटना—चटोरपन करना। प्र० चाट, तू कड़ाही चाट।

कड़ाही बांधना—मंत्र के प्रभाव से कड़ाही गरम न होने देना।

कड़ाही में हाथ डालना—कड़ी परीक्षा लेना या देना। प्र० लगता है इसका हाथ कड़ाही में डलवाना ही होगा, ऐसे न मानेगा।

कड़ियल जवान, कड़ैल जवान—हट्टा-कट्टा जवान। प्र० ऐसा कड़ियल जवान, दो दिन की बीमारी में उठ गया।

कड़ियां उठाना, -झेलना, -पड़ना, -सहना—कठिनाई झेलना। प्र० मैंने क्या-क्या कड़ी नहीं उठाई है जिन्दगी में।

कड़ियाँ झेलना—दे० कड़ियाँ उठाना।

कड़ियाँ पड़ना—दे० कड़ियाँ उठाना।

कड़ियाँ सहना—दे० कड़ियाँ उठाना।

कड़ी—तेज़। प्र० बड़ी कड़ी धूप पड़ रही है, जी बेचैन हो रहा है।

कड़ी आँख रखना या होना, -दृष्टि होना, -नजर रखना, -निगाह रखना—पूरी निगरानी रखना; बड़ी सतर्कता रखना। प्र० इतनी कड़ी आँख रखने के बावजूद वह घड़ी लेकर चम्पत हो गया।

कड़ी आँख से देखना, -नजर से देखना—सक्रोध देखना। प्र० जिन बच्चों को मैं डाँटता था, उन्हें आज कड़ी आँखों से भी नहीं देख सकता (मान० (1)—प्रेमचंद, 15); सिया को कड़ी दृष्टि से देख पूछता था यह बारम्बार (वैदेही०—हरिऔध, 16)।

कड़ी कहना, -जबान कहना, -बात कहना, -बात मुंह से निकालना, -बात सुनाना, -सुनाना, कड़ी-कड़ी कहना, -बात सुनाना, -सुनाना—अप्रिय और कटु बात कहना। प्र० ऐसी कड़ी-कड़ी बातें सुनाय, सोच संकोच छोड़, हरि का रथ पकड़ आपस में कहने लगीं—······(प्रेम०—ल० ला०, 102); न निकले कड़ी बात मुंह से, किसी से कभी नहीं अकड़ें (मर्म०—हरिऔध, 90); मैं भगवान को बीच में डालकर कहता हूँ, अब मैं कभी उसे कोई कड़ी बात तक न कहूँगा (रंग० (2)—प्रेमचंद, 156-157)।

कड़ी चुटकी लेना—करारा व्यंग्य करना। प्र० उन्होंने छोड़ा थोड़े ही कड़ी चुटकी ली।

कड़ी छत—बिना शहतीर की छत। प्र० उस मकान में तो कड़ी छत है।

कड़ी जबान कहना—दे० कड़ी कहना।

कड़ी जुड़ना—क्रम या सम्बन्ध बनना। प्र० जो कड़ी बशीर खाँ के साथ टूटी थी वही लवसूल के साथ जुड़ गई है (सात०—नागर, 91)।

कड़ी जोड़ना—कविता में चरण बैठाना। प्र० तीन कड़ी मैंने जोड़ ली है, चौथी नहीं बैठ रही है।

कड़ी टूटना—क्रम या सम्बन्ध टूटना। प्र० जो कड़ी बशीर खाँ के साथ टूटी थी वही लवसूल के साथ जुड़ गई है (सात०—नागर, 91)।

कड़ी डाँट पड़ना—ज़ोर से डाँट पड़ना। प्र० घर चलो, देखो कैसी कड़ी डाँट पड़ती है।

कड़ी डालना—मुसीबत या कष्ट पहुँचाना। प्र० अपने ही बेटे ऐसी कड़ी डालेंगे, यह जानता तो जन्मते ही इन्हें खत्म कर देता।

कड़ी दृष्टि होना—दे० कड़ी आँख रखना या होना।

कड़ी धरती—(1) ऐसा स्थान जहाँ के लोग हट्टे-कट्टे हों। प्र० पंजाब की कड़ी धरती के निवासियों का क्या कहना।
(2) भूत के रहने का स्थान।

कड़ी नज़र रखना—दे० कड़ी आँख रखना या होना।

कड़ी नज़र रहना या होना—पूरा ध्यान रहना। प्र० कम्यूनिस्टों पर सरकार की कड़ी नज़र है।

कड़ी नज़र से देखना—दे० कड़ी आँख से देखना।

कड़ी निगाह—रोषपूर्ण रुख। प्र० ×× मेरी एक कड़ी निगाह इसके पति के सम्मान और अधिकार को खाक में मिला सकती है (रंग०—प्रेमचंद, 175)।

कड़ी निगाह रखना—दे० कड़ी आँख रखना या होना।

कड़ी निगाह से देखना—दे० कड़ी नज़र से देखना।

कड़ी पाटना—बिना शहतीर की छत बनाना। प्र० कड़ी कब पाटोगे मिस्त्री, कल या परसों?

कड़ी बनना—दो वस्तुओं या व्यक्तियों को जोड़ने या पास लाने का साधन या माध्यम होना। प्र० इस बार हमारे मनोमालिन्य को दूर करने में यह लड़की ही कड़ी बनी।

कड़ी बात कहना—दे० कड़ी कहना।

कड़ी बात मुंह से निकालना—दे० कड़ी कहना।

कड़ी बात सुनाना—दे० कड़ी कहना।

कड़ी बीतना—बहुत कठिन या विपत्ति की स्थिति से गुज़रना। प्र० बापुरे बटोही पर बड़ी कड़ी बीती (ठेठ०—हरिऔध, 27)।

कड़ी बोलना—धरन चटकने की आवाज़ जो अपशकुन मानी जाती है।

कड़ी मंज़िल—मुश्किल काम। प्र० यह बड़ी कड़ी मंज़िल है, कैसे पार पड़ेगी?

कड़ी मंज़िल मारना—घोर परिश्रम करना; कठिन काम करना। प्र० बड़ी कड़ी मंज़िल मारकर आ रहा हूँ मालिक!

कड़ी सुनाना—दे० कड़ी कहना।

कड़ी-कड़ी कहना—दे० कड़ी कहना।

कड़ी-कड़ी बात सुनाना—दे० कड़ी कहना।

कड़ी-कड़ी सुनाना—दे० कड़ी कहना।

कड़े खाँ—कठोर या मज़बूत व्यक्ति। प्र० बेजा-बेजा के भरोसे न रहिएगा, मैं किसी दिन हाथ-पाँव ढीले कर दूँगा। कहाँ के बड़े कड़े खाँ हैं आप (आज़ाद०—प्रेमचंद, 307)।

कड़े दिन—कष्ट एवं मुसीबत का समय। प्र० ये कड़े दिन भी धीरे-धीरे गुज़र जायेंगे, सब दिन थोड़े ही रहेंगे।

कड़े मुहरे आना—टेढ़ा व्यवहार करना। प्र० हम से जो आने लगी हैं आप यों मुहरे कड़े (इंशा०—इंशा०, 125)।

कड़े शब्द कहना—दुर्वचन कहना। प्र० आप कड़े शब्द कहेंगे तो वह कौन बरदाश्त करेगा।

कड़े हाथों—कठोरतापूर्वक; जोर से। प्र० रियासत का प्रबन्ध उन्होंने कड़े हाथों से किया था (गोली०—चतुर, 126)।

कड़े-दम—मज़बूत; शक्तिशाली। प्र० वह ज़रा था भी कड़े-दम, कुश्ती लड़ता था (रंग० (1)—प्रेमचंद, 162)।

कड़ैल जवान—दे० कड़ियल जवान।

कढ़ जाना—किसी के साथ भाग जाना। प्र० अच्छा, उनकी लड़की कल रात कढ़ गयी? किसके साथ?

कढ़ी का उबाल—क्षणिक जोश। प्र० मुझे पता है, यह सब कढ़ी का उबाल है।

कढ़ी में कोयला होना—(1) बहुत-से गुणों के साथ थोड़ा दोष भी होना। प्र० यह तो कढ़ी में कोयला हुई, इसकी चिन्ता क्यों करते हो? (2) दाल में काला होना; कोई भेद होना। प्र० मुझे तो कढ़ी में कोयला लगता है।

कण-कण में—हर स्थान पर। प्र० इस सृष्टि के कण-कण में वही परमात्मा व्याप्त है।

कत लगाना—चाकू से कलम की नोक ठीक करना। प्र० कत लगा लो तो लिखावट सुन्दर बने।

कतरनी सी जबान चलना—एकदम भला-बुरा कहे जाना; बहुत बोलना या बकवास करना। प्र० हर समय कतरनी सी तेरी जबान चलती रहती है, क्यों?

कतरब्योंत करना, काटब्योंत करना या दिखाना—(1) खर्च में इधर-उधर कमी करना। प्र० ×× जब बहुत कतरब्योंत करने पर भी काम न चलता तो अपनी कोई-न-कोई चीज़ निकाल देती (मान०—(1)—प्रेमचंद, 119)।
(2) छल-कपट करना। प्र० शत्रु-संहार और निज कार्य साधन निमित्त व्यास ने महाभारत में ×× राजनीति की काटब्योंत जैसी-जैसी दिखाई है उसे सुन बिस्मार्क सरीखे इस समय के राजनीति के मर्म में कुशल राजपुरुषों की अक्ल भी चरने चली जाती होगी (सा० सु०—बा० भट्ट, 7)।
(3) कम करना। प्र० पर कुछ समय हुआ, सरकार ने एक मंतव्य ×× प्रकाशित करके इस अधिकार में बहुत कुछ करत-ब्योंत कर दिया (सा० सी०—महा० द्वि०, 141)।

कतरब्योंत में रहना, -लगा रहना—नए-नए उपाय सोचते रहना; इधर-उधर कम बेशी करके अपने लाभ के फेर में लगे रहना। प्र० वह तो हर समय किसी-न-किसी कतरब्योंत में लगा रहता है।

कतरब्योंत में लगा रहना—दे० कतरब्योंत में रहना।

कतर-ब्योंत से—हिसाब से। प्र० बहुत कतर-ब्योंत से चलाती हूँ तब कहीं गुजारा हो पाता है।

कतरा जाना—(1) आँख बचा कर निकल जाना। प्र० हमैं लखि आवत क्यों कतराये (भा० ग्रं० (2)—भारतेन्दु, 378); शोहदे उसे देखकर क्यों कतरा जाते हैं ××× इसका रहस्य वह नहीं समझता (मान० (7)—प्रेमचंद, 44)।
(2) किसी काम से जान बचाना। प्र० जब कि करतूत से गये कतरा नाक कैसे न तब कतर जाती (बोल०—हरिऔध, 73)।

कतराई-कतराई रहना—उदासीन या विमुख होना। प्र० हम कहें कि आजकल तुम कतराई-कतराई काहे रहती हो? (कम०—कम०, 124)।

कतरा कर जाना, -निकल जाना—इस तरह जाना कि कोई देख न पाये; बचकर निकल जाना। प्र० वह मार्ग में सुभागी को देख लेता तो कतराकर निकल जाता (रंग० (2)–प्रेमचंद, 110)।

कतरा कर निकल जाना—दे० कतरा कर जाना।

कता करना—छोड़ देना। प्र० अजी हुजूर, मुझसे दोस्ती क्यों कता करते हैं?

कता कलाम करना—बात काटकर बीच में बोलना। प्र० तुमसे कता कलाम करने को किसने कहा था?

कतार बंधना या बांधना—(1) बहुत-से लोगों का जुट जाना। प्र० पूछो मत, उम्मीदवारों की कतार बँध गयी।

(2) एक पंक्ति में खड़े होना। प्र० सब लोग कतार बाँधकर खड़े हो, समझे।

कत्तल का बघार—तपाये हुए ईंट या पत्थर के टुकड़े से किसी तरल चीज को छौंकना।

कत्ल की रात—कठिन मुसीबत की घड़ी। प्र० आज तो कत्ल की रात है, बोलो मत।

कथक्कड़—वाचाल। प्र० सूरे बड़ा कथक्कड़ है, किसी को छोड़ता नहीं।

कथनी कथना—कहना। प्र० कथनी कथियै ब्रह्म गियान (कबीर ग्रंथा०–कबीर, 304)।

कथनी काथना—अपनी बात कहे जाना। प्र० अब बस भी करोगे या कथनी काथते ही जाओगे?

कथा उठ जाना या उठना—(1) कथा समाप्त होना। प्र० छह दिन से कथा हो रही है, कल उठ जायगी।

(2) चर्चा शेष होना। प्र० वे सब पुरानी बातें अब कहाँ, उनकी तो कथा तक उठ गयी।

(3) कथा या चर्चा शुरू होना। प्र० चारों ओर यह कथा उठ गयी है कि राम प्रसाद घर से अलग होना चाहता है।

कथा के बैंगन—केवल दूसरों को उपदेश देने वाला।

कथा चलाना—प्रारम्भ करना; चर्चा छेड़ना। प्र० बचन परगट करन लागे प्रेम कथा चलाय (सूर)।

कथा चुकाना, -मुकाना—(1) झगड़ा मिटाना। प्र० किसी तरह इस कथा को चुकाओगे भी या नहीं?

(2) मार डालना। प्र० यदि वह ऐसे नहीं मानेगा तो कथा चुकानी पड़ेगी।

कथा बैठना या बैठाना—कथा प्रारम्भ होना या करवाना। प्र० कल से मेरे यहाँ भी कथा बैठेगी।

कथा मुकाना—दे० कथा चुकाना।

कथा रह जाना, कहानी रह जाना—केवल मात्र चर्चा रह जाना। प्र० कहं सुरूप पदुमावति रानी। कोइ न रहा जग रही कहानी (पद०–जायसी, 58/1); कल जिस सुख का अहर्निश हम लोग अनुभव करते थे वह आज कहानी मात्र रह गया (राधा० ग्रंथा०–राधा० दास, 103); अब बाबूजी की कथा भर रह गयी है।

कथा-वार्त्ता—बहुत तरह की बातें। प्र० आज न जाने कहाँ-कहाँ की कथा-वार्त्ता हुई।

कद करना—हठ करना। प्र० तुम फिर कद करने लगे?

कद निकालना—बढ़ जाना। प्र० अब तो लड़के ने कद निकाला है, जल्दी ही स्कूल जाने लायक हो जायेगा।

कदम आगे बढ़ना या बढ़ाना, -रखना, -उठाना, -बढ़ाना—प्रगति होना या करना; किसी काम को आगे बढ़ाना। प्र० मुझे जिस परिस्थिति में यह कदम उठाना पड़ रहा है मैं उसे ही महत्त्व दे रहा हूँ, अपने को नहीं (बूंद०–नागर, 586)।

कदम आगे रखना—दे० कदम आगे बढ़ाना।

कदम आना—आना; पौरा आना। प्र० बहू के तो ऐसे कदम आये घर में कि घर का सत्यानाश हो गया।

कदम उखड़ जाना—(1) मुकाबले में न ठहर पाना। प्र० हरिधन ने देखा, इन दोनों के कदम उखड़ गए हैं (मान० (1)–प्रेमचंद, 140)।

(2) लड़ाई के मैदान से भागना; हार होना। प्र० दोपहर ढलते-ढलते शत्रुओं के कदम उखड़ गये।

कदम उठाकर चलना—जल्दी-जल्दी चलना। प्र० जरा कदम उठाकर चलो, देर हो रही है।

कदम उठाना—दे० कदम आगे बढ़ाना।

कदम को हाथ लगाना—(1) विनय करना। प्र० मैं आपके कदमों को हाथ लगाता हूं, इस बार सहायता कर दीजिए।

(2) कसम खाना। प्र० मेरे कदमों को हाथ लगाकर कह।

कदम गलत पड़ना—गलत काम कर बैठना। प्र० इतना समझ लो कि एक भी कदम गलत पड़ा और सब बंटाधार हुआ।

कदम गाड़ देना—जमकर खड़े हो जाना। प्र० एक बार हमने कदम गाड़ दिया तो फिर कोई हमें हिला न सकेगा।

कदम गाड़कर बैठना—धरना देना। प्र० सब सुबह से ही कदम गाड़कर बैठे हैं।

कदम गिन-गिनकर चलना—धीरे चलना। प्र० जरा जल्दी चलो भाई, क्या कदम गिन-गिनकर चल रहे हो।

कदम चूमना—(1) खुशामद करना। प्र० हमारी मर्यादा को धूल में मिलाना चाहती है। चाहती है कि मैं उसके कदम चूमूं (रंग० (1)–प्रेमचंद, 366)।

(2) अत्यन्त आदर करना। प्र० सारा समाज आपके कदम चूमता है, और क्या चाहिए।

कदम छूना—(1) प्रणाम करना। प्र० महन्तजी के कदम छूकर सब लोग एक ओर बैठ गए।

(2) कसम खाना। प्र० उसे जोर से धमकाया गया तो वह कदम छूने लगा।

कदम जमाना—(1) अपनी स्थिति मजबूत कर लेना। प्र० धीरे-धीरे करके उसने रोजगार में कदम जमा लिया है।

(2) जमकर खड़े होना । प्र० सारे लड़के कदम जमाकर खड़े हो गये ।

कदम देखना—(1) प्रतीक्षा करना । प्र० सुबह से ही हम लोग आपका कदम देख रहे हैं ।
(2) घोड़े की चाल देखना । प्र० खाली घोड़े के रंग पर मत्त जाओ, कदम भी देखो ।

कदम धरना—आना । प्र० मेरी कुटिया में आप कब कदम धरेंगे, यह बतलाइए ।

कदम धो-धोकर पीना—अत्यन्त आदर करना । प्र० ख्वाजा साहब के कदम धो-धो कर पीओ × × (आजाद०—प्रेमचंद, 420) ।

कदम न निकालना—(1) परदे में रहना । प्र० नवाब साहब के घर की औरतें कदम नहीं निकालतीं ।
(2) किसी की कही बात का अतिक्रमण न करना । प्र० भले आदमी की जबान एक, वह आपकी बात से कदम न निकालेगा ।

कदम न पड़ना—चल न पाना । प्र० भाई, मेरे तो किसी तरह कदम ही नहीं पड़ रहे हैं ।

कदम न रखने देना—आने को मना कर देना । प्र० उसे अब से कोठी में कदम न रखने दिया जायेगा ।

कदम नापकर रखना—सम्हलकर चलना । प्र० कहाँ तक कदम नाप-नाप कर रखा जाय, कहीं-न-कहीं चूक हो ही जाती है ।

कदम निकालना—चलना शुरू करना । प्र० अभी तो घोड़े ने कदम निकाला है, अभी कैसे दौड़ाऊँ ।

कदम पकड़ना—आश्रय लेना; विनत होना । प्र० जब हुजूर के कदमों को पकड़े हुए हूँ, तो किसी से क्यों डरूँ ! (गोदान—प्रेमचंद, 321) ।

कदम पड़ना, -लेना—(1) प्रणाम करना । प्र० शाहजी मस्त हो गये, समझे कि यह तो कोई फकीर है × × मियाँ आजाद के कदम लिये । उन्होंने पीठ ठोंकी (आजाद०—प्रेमचंद, 36) ।
(2) विनय करना । प्र० मैं आपके कदम पडता हूँ, माफ कर दीजिए ।

कदम पर कदम रखना—(1) अनुकरण या अनुसरण करना । प्र० जी, हम सब आपके कदमों पर कदम रखने का निश्चय कर चुके हैं ।
(2) चलने में एक पैर से दूसरे पैर तक का अन्तर । प्र० सब लोग कदम पर कदम रखकर चलो ।
(3) घोड़े की एक चाल जिसमें केवल पैरों में गति होती है और बदन नहीं हिलता ।

कदम (मों) पर चलना—अनुसरण करना । प्र० बजा है हुजूर ! आपके कदमों पर चलकर मैंने भी आज कुछ नहीं खाया (सात०—नागर, 109) ।

कदम पीछे पड़ना, -हटाना—किसी काम को करने का आश्वासन देकर पीछे हटना । प्र० रात के वक्त बदला चुकाना । पीछे कदम न पड़े (चोटी०—निराला, 50) ।

कदम पीछे हटाना—दे० कदम पीछे पड़ना ।

कदम फिसलना—कोई गलत या बुरा काम कर बैठना । प्र० कदम फिसला और गये, समझे ।

कदम ब कदम चलना—(1) ठीक पीछे-पीछे चलना । प्र० सब लोग कदम ब कदम चले चलें ।
(2) अनुकरण या अनुसरण करना । प्र० हम सब आपके साथ हैं, आपके कदम ब कदम चले चलेंगे ।

कदम बढ़ाना—(1) प्रगति के पथ पर आगे बढ़ना । प्र० डरकर ही जीवन की गति को समझा जा सकता है । डरते हुए, संभलते हुए कदम बढ़ाओ (भोर०—जग० माथुर, 18) ।
(2) तेज चलना । प्र० मिर्जा ने भी कदम बढ़ाया × × (गोदान—प्रेमचंद, 97) ।
(3) ज्यादती करना । प्र० बस, अब और कदम न बढ़ाओ मियाँ ।

कदम भरना—आगे बढ़ना । प्र० रुको मत, कदम भरते रहो ।

कदम भारी होना—मनहूस आदमी होना । प्र० मिर्जा का कदम भारी है, उसे मत बुलाना ।

कदम मारना—(1) दौड़धूप करना । प्र० इतना कदम मारा गया पर सब व्यर्थ ।
(2) व्यस्त रहना । प्र० कई दिनों से इसी के लिए कदम मार रहा हूँ ।
(3) तेज चलना । प्र० देखा, तो गया प्रसाद कदम मारता आ रहा था ।

कदम मिलाकर चलना, -से कदम मिलाकर चलना—साथ-साथ चलना; सहयोग देना । प्र० चार आदमी कदम मिलाकर चलें तो क्या कुछ होने को बाकी रहता है ।

कदम रंजा फरमाना—पधारने की कृपा करना । प्र० कभी मेरे यहाँ भी कदम रंजा फरमाएं ।

कदम रखना—प्रवेश करना । प्र० खुर्शीद ने कदम रखा नहीं कि कमरे में हँसी का फव्वारा छूट पड़ा ।

कदम रोककर चलना—धीरे चलना । प्र० आजाद तो डबल चाल चलने लगे, पर मियाँ पीर बख्श पीछे रह गये । तब बोले—अजी, जरा कदम रोके हुए चलिए (आजाद०—प्रेमचंद, 170) ।

कदम लगना—अधीन होना । प्र० सारी रियाया आपके ही कदम लगी है हुजूर, उसकी फिक्र आप न करेंगे तो कौन करेगा !

कदम लेना—दे० कदम पड़ना ।

कदम लेने आना—प्रणाम करने आना । प्र० हुजूर, प्रजा आपके कदम लेने आयी है ।

कदम से कदम मिलाकर चलना—दे० कदम मिलाकर चलना ।

कदम-कदम चलना, -जाना—(1) धीरे-धीरे आगे बढ़ना । प्र० हम सब बहुत थक गये थे पर कदम-कदम चले जा रहे थे ।
(2) पैदल चलना । प्र० गाड़ी-सवारी की क्या जरूरत है, कदम-कदम चले जायेंगे ।
(3) बहुत सुस्ती से काम करना । प्र० तुम हटो, तुम्हारे कदम-कदम चलने से काम न जाने कब पूरा होगा ।

कदम-कदम जाना—दे० कदम-कदम चलना ।

कदम-कदम पर—बराबर; हर समय । प्र० और देखो अगर अपना भाग्य जगाना है तो जिम्मेदारी को तौल-तौलकर कदम-कदम पर निभाते रहना (अमृत०—नागर, 633) ।

कदम-बोसी करना—अधीनता स्वीकार करना; पास तक पहुँचना । प्र० हम चाहते हैं कि ऐसी ही दिलकश आवाज़ें ग़ज़नी के महलात की क़दमबोसी करें (अंधेरे०—राकेश, 313) ।

कदमों का साया—किसी की छत्रच्छाया । प्र० आपके कदमों का साया छोड़-कर ये बेचारे कहाँ जायें, आप ही बतलाइए ।

कदमों पर चढ़ाना—अर्पण करना । प्र० वे अपना सर्वस्व आपके कदमों पर चढ़ाने को तत्पर हैं ।

कदमों पर झुकना या झुकाना—श्रद्धालु बनना या बनाना; महत्ता स्वीकार करना या करवाना । प्र० तुम्हारे आदर्श ने मुझे तुम्हारे कदमों पर झुकाया (रंग० (2)—प्रेमचंद, 90) ।

कदमों पर पड़ जाना, -लोटना—अत्यन्त विनीत हो जाना; शरण में आना । प्र० वह तो आकर ऐसा कदमों पर पड़ गया कि क्या कहूँ ।

कदमों पर लोटना—दे० कदमों पर पड़ जाना ।

कदमों पर सिर रखना—आदर करना; विनती करना । प्र० लाला परमेसरी भी दौड़े-दौड़े गए और कदमों पे सिर रख दिया (अमृत०—नागर, 353) ।

कदमों में, -बैठकर—किसी के आज्ञाधीन या निर्देशन में । प्र० आप जैसे नुक्तारस डायरेक्टर के कदमों में काम करने का मौका मिल जाय तो बस बम्बई की ज़िन्दगी सफल हो जाय (पैंतरे—अश्क, 75) ।

कदमों में बैठकर—दे० कदमों में ।

कदमों से लगे रहना—हमेशा साथ रहना । प्र० वह तो हमेशा आपके कदमों से लगा रहता है ।

कदु करना—तकाज़ा करना । प्र० रोज-रोज कदु करके तंग मत करो ।

कद्दू की खैर माँगना—अपना भला चाहना । प्र० कद्दू की खैर माँगते हो तो यहाँ से फौरन रफूचक्कर हो जाओ ।

कद्दू में तीर मारना—(1) व्यर्थ काम, चेष्टा या परिश्रम करना । प्र० ठीक है, तू कद्दू में तीर मारकर ही ज़िन्दगी बिताना चाहता है तो वही कर ।

(2) सरल काम करना । प्र० जी हाँ, आप तो पहाड़ ढकेल रहे हैं और मैं कद्दू में तीर मार रहा हूँ, यही कहना चाहते हैं न ?

कद्र खोना—इज़्ज़त न रहना । प्र० आदमी खुद अपनी कद्र बनाता है और खुद उसे खोता है ।

कन आँखों से देखना—नीची नज़र से देखना । प्र० वह वैसे ही बैठी कन आँखों से देखती रही ।

कन करना—अन्दाज़ लगाना । प्र० तुम बेकार बहुत-सा कन मत करो ।

कनकनाना—अरुचिकर लगना । प्र० इतनी ज़रा-सी बात तुम्हें कनकनाती क्यों है ?

कनकौआ काटना—सम्बन्ध-विच्छेद करना । प्र० वह कनकौआ ही काटना चाहता है तो काट ले ।

कनकौआ फँसाना, -लड़ाना—(1) दाँव-पेंच लगाना । प्र० रुहेलों और जाटों से अलग-अलग अपने राजनीतिक कनकौवे लड़ा रहा है (सात०—नागर, 18) ।

(2) दो पतंगों की डोरी को लड़ाना ।

कनकौआ बढ़ाना—पतंग को ढीलना । प्र० कनकौआ बढ़ाकर पेंच लगाओ, समझे ।

कनकौआ लड़ाना—दे० कनकौआ फँसाना ।

कनखियाँ लगना, कनखी देना, -से देखना—आँख की कोर से देखना । प्र० एकन कों तकि घूंघट में मुख मोरि कनैखिन दै चलै दै चलै (जग०—पद्माकर, 15); ज़रा इधर देखो, कैसी कनखियाँ लगी हैं ।

कनखियाना, कनखी चलाना, -देना, -मारना, -लगाना—आँख से इशारा करना । प्र० मुझे देखते ही उन्होंने कनखियाया और मैं नौ-दो-ग्यारह हो गया ।

कनखी चलाना—दे० कनखियाना ।

कनखी देना—(1) दे० कनखियाना ।

(2) दे० कनखियाँ लगना ।

कनखी मारना—दे० कनखियाना ।

कनखी लगाना—दे० कनखियाना ।

कनखी से देखना—दे० कनखियाँ लगना ।

कनखैंयन लगना—छिपकर देखना । प्र० इस तरह कोठे पर चढ़कर कन-खैंयन लगना कोई भली बात है ?

कनफुसकियाँ लेना, -सुनना, कनसुआ लेना, कनसुइयाँ लेना—छिपकर किसी की बात सुनना; भेद लेना । प्र० जी चाहता है, महिलाओं की कन-फुसकियाँ सुनती (मान० (1)—प्रेमचंद, 273) ।

कनफुसकियाँ सुनना—दे० कनफुसकियाँ लेना ।

कनफुसकी कान्फ्रेन्स—चुपचाप कोई सलाह करना; गुप्त मीटिंग । प्र० बड़ों के खीझकर जाते ही रमेश आदि की कनफुसकी कान्फ्रेन्स बैठी (अमृत०—नागर, 364) ।

कनबतियाँ—कानाफूसी; गुप-चुप बातें । प्र० लोग बड़ी उत्सुकता से फैसला सुनने के लिए और सिमट गये × × और कनबतियाँ भी बन्द हो गयी (गबन—प्रेमचंद, 321) ।

कन-रसिया—संगीत-प्रेमी । प्र० अचानक एक सुरीली गाने की आवाज़ ने चौंका दिया । कन-रसिया शिवशम्भु खटिया पर उठ बैठे (गु० नि०—बा० मु० गु०, 204) ।

कनसुआ लेना—दे० कनफुसकियाँ लेना ।

कनसुइयाँ लेना—दे० कनफुसकियाँ लेना ।

कनाई काटना—(1) चालबाजी करना । प्र० अरे यार, तू मुझसे ही कनाई काटता है ?

(2) रास्ता काटकर दूसरे रास्ते निकल जाना । प्र० तुम निश्चिन्त रहो, वह कनाई काटकर निकल जायगा ।

कनागत लगना—श्राद्ध का भोज होना । प्र० सप्तमी के दिन दादाजी की

कनागत लगेगी।

कनाटेरी देकर सुनना—ध्यान से सुनना। प्र० काम-केलि कथा कनाटेरी दै सुनन लागी, जउ अनुरागी बाल केलि के रसन है (क० र०—सेनापति, 47)।

कनी खाना, -चाटना—हीरे की कनी निगल कर प्राण देना।

कनी चाटना—दे० कनी खाना।

कनेव छेदना—चारपाई के पायों में टेढ़ा छेद करना जिससे वह टेढ़ी न हो।

कनौड़त करना—दबना; परवाह करना। प्र० मादिक रूप रसीले सुजान को पान कियें छिनुकौ न छकैं को भूल कों सौंपि तवै जु मवै सुधि, काहू की कानि कनौड़त कै को (घन० कवित्त—घना०, 135)।

कनौड़ा करना—(1) प्रेमी या अनुगत बनाना। प्र० भगवान् किसी को किसी की कनौड़ी न करें, देखो मुझको इसकी कैसी बातें सहनी पड़ती हैं (भा० ग्रं० (1)—भारतेन्दु, 438)।

(2) नीचा दिखाना। प्र० वे उसे हर तरह से कनौड़ा करके रखना चाहते हैं।

कनौती उठाना, -खड़ी करना, -बदलना—होशियार होना; चौकन्ना होना। प्र० कोचवान और बारगीरों ने लाख-लाख जोर लगाया, मगर उन्होंने जरा कान तक न हिलाये, कनौती तक न बदली (आज़ाद०—प्रेमचंद, 135); आवाज़ सुनते साथ हिरनों ने कनौती उठाई, पल भर इधर-उधर देखा और फिर चौकड़ी भरते हुए लोप हो गये।

कनौती खड़ी करना—दे० कनौती उठाना।

कनौती बदलना—दे० कनौती उठाना।

कन्ना छूटना न भूसी—स्थिति ज्यों-की-त्यों रह गयी, कोई परिवर्तन न होना। प्र० इतना सब करके भी क्या हुआ? कन्ना छूटा न भूसी, बात वहीं-की-वहीं रह गयी।

कन्ना निकालना—अपमान करना। प्र० आपको उसका कन्ना निकालने का हक नहीं है।

कन्ना-खुद्दी—तुच्छ वस्तु। प्र० मुझे कन्ना-खुद्दी जो भी जुड़ेगा, जरूर दूंगा।

कन्नी कटाना या काटना, -दबाना—किसी काम से बहाना करके निकल जाना; बचना। प्र० कानून भी तो बंधन है, उसे क्यों नहीं तोड़ते? उससे क्यों कन्नी कटाते हो (गोदान—प्रेमचंद, 76)।

कन्नी खाना, -मारना—पतंग का झुकना। प्र० देखो, पतंग कन्नी खा रही हैं, सम्हालो।

कन्नी दबना—(1) पराधीन होना; दबाव में होना। प्र० अपनी कन्नी दबी है इसीलिए मुंह नहीं खोल पाता।

(2) शर्मिन्दा होना। प्र० यह तो ऐसी बेशर्म है कि पूछो मत, तनिक इसकी कन्नी नहीं दबती।

कन्नी दबाना—दे० कन्नी कटाना या काटना।

कन्नी मारना—दे० कन्नी खाना।

कन्ने ढीले पड़ना या होना—(1) थक जाना। प्र० भई, अब तो मेरे कन्ने भी ढीले पड़ गये हैं।

(2) जोश ठंडा होना। प्र० दे० प्रयोग (1)।

(3) अपमान होना। प्र० एक बार उसके कन्ने ढीले हो जायें तो अच्छा हो।

कन्ने से कटना या काटना—जड़ से नष्ट होना या करना। प्र० आप मुझे ही कन्ने से काटने पर उतारु हो गये हैं?

कन्नों से उखड़ना—नाराज हो जाना। प्र० आप कन्नों से क्यों उखड़े जा रहे हैं?

कन्या-राशी—दुर्बल; निकम्मा; स्त्री स्वभाववाला व्यक्ति। प्र० इस कन्या-राशी को किसी तरह यहाँ से टरकाओ।

कपट का जामा पहनना—कपटी होना। प्र० तुमने तो एकदम कपट का जामा पहन रखा है।

कपट की खान, कपटियों की चटसार—महा कपटी। प्र० उधरि आए कान्ह कपट की खानि (सू० सा०-सूर, 4475); भंवर कुरंग काक अरु कोकिल, कपटिन की चटसार (सू० सा०—सूर, 4367)।

कपट में डूबी हुई, -बोरी हुई—कपटपूर्ण। प्र० कपट बोरि बानी मृदुल बोलेउ जुगुति समेत (राम० (बाल)—तुलसी, 171)।

कपट में बोरी हुई—दे० कपट में डूबी हुई।

कपट-जाल—छल-कपट का प्रपंच। प्र० अब और कपट-जाल मत फैलाओ भाई।

कपटियों की चटसार—दे० कपट की खान।

कपड़कोट करना—चारों ओर कपड़े लपेटना। प्र० डण्डे पर कपड़कोट करके लाना।

कपड़छान करना—खूब महीन छानना; कपड़े में छानना। प्र० मिर्च कपड़छान करके शीशी में भरना।

कपड़ा-लत्ता—पहनने के कपड़े। प्र० कपड़ा-लत्ता लेकर कल सुबह से काम पर आ जाना।

कपड़े आना—रजस्वला होना।

कपड़े उतरवाना या उतारना—(1) सब कुछ ले लेना। प्र० चोर तो इसके कपड़े तक उतरवा ले गये; घर में कुछ न छोड़ा।

(2) बेइज्जत करना। प्र० चार आदमियों के बीच भाई के कपड़े उतारकर तुम्हें क्या सुख मिला?

कपड़े छानना, -छीनना, छुड़ाना—पिण्ड छुड़ाना; पीछा छुड़ाना। प्र० तुम कोशिश करके किसी तरह कपड़े छान लो।

कपड़े छीनना—दे० कपड़े छानना।

कपड़े छुड़ाना—दे० कपड़े छीनना।

कपड़े छोड़ना—कपड़ा उतारना, बदलना। प्र० मैं कपड़े छोड़ने भीतर गया (कुल्ली०—निराला, 53)।

कपड़े पछाई देना—कपड़े भाड़े पर देना (धोबियों द्वारा)। प्र० निदान स्त्री ने बेचू की नजर बचाकर गाहकों के कपड़े पछाई देने शुरू किये (मान० (7)—प्रेमचंद, 282)।

कपड़े बिक जाना—दिवाला निकल जाना। प्र० इस सौदे में मेरे तो कपड़े तक बिक गये।

कपड़े रंगना या रंगाना—संन्यास ले लेना। प्र० मन न रंगाये, रंगाये जोगी कपड़ा।

कपड़े से होना, कपड़ों में होना—मासिक धर्म से होना। प्र० एक दिन कपड़ों से भई तो पति की आज्ञा ले सखी सहेली को साथ कर रथ में चढ़ बन में खेलने को गई (प्रेम०-ल० ला०; 7)।

कपड़ों में न समाना—बहुत खुश होना या जोश में होना। प्र० आज तो तुम कपड़ों में नहीं समा रहे हो, क्या बात है?

कपड़ों में होना—दे० कपड़े से होना।

कपाट खुलना—(1) अज्ञान दूर होना। प्र० गुर मिलि जिनके खुल कपाट, बहुरि न आवै जोनी बाट (कबीर ग्रंथा०—कबीर, 205)।
(2) बुद्धि का जागरूक हो जाना। प्र० मालूम होता है थोड़ी-सी पी ली थी, जिससे कपाट खुल गये (पद्म० के पत्र—पद्म० शर्मा, 37)।

कपार खाना, -चाटना—बहुत परेशान करना; किसी बात को बार-बार कहकर हैरान कर देना। प्र० बाप रे बाप, यह लड़की तो कपार खा गयी।

कपार घिसना–साबुन आदि लगाकर बाल धोना। प्र० कल हमें कपार घिसना है, सुबह-सुबह न चल सकेंगी।

कपार चाटना—दे० कपार खाना।

कपार चीरना—जबरदस्ती किसी से कुछ ऐंठना। प्र० अरे, तो क्या तुम उसका कपार चीरोगे?

कपार छूना—माथा छूकर कसम खाना। प्र० हम तुम्हारा कपार छूकर कहते हैं भैया कि हम वहाँ नहीं गये थे।

कपार झन्नाना—सर चकरा जाना। प्र० इतना जोर का धक्का लगा कि कपार झन्ना गया।

कपार ठोंकना, -पीटना—भाग्य को रोना; पछताना। प्र० इतनी मेहनत से पढ़ाई-लिखाई की पर परीक्षा के समय बुखार आ गया, कपार ठोंककर रह गये।

कपार नोचना—परेशान करना। प्र० दे दो बाबा इसे नहीं तो हमारा कपार नोच डालेगा।

कपार पर चढ़ना या चढ़ाना—(1) शोख होना या बनाना। प्र० देख रहे हैं कि तुम दिन-पर-दिन कपार पर चढ़े आ रहे हो।
(2) एकदम सट कर बैठना या बैठाना। प्र० कहाँ कपार पर चढ़े आ रहे हो, दूर बैठो न।

कपार पर पटक देना—सामने लाकर रख देना; उपेक्षा से झल्लाकर दे देना। प्र० साड़ी ले आओ, लाकर इसके कपार पर पटक दो।

कपार पर सनीचर चढ़ना—अभागा होना। प्र० इसके कपार पर तो सनीचर चढ़ा है, यह क्या करेगा।

कपार पीटना—दे० कपार ठोंकना।

कपार फोड़ना-अत्यन्त हठ करना। प्र० ऊपर के कमरे के लिए बड़का कपार फोड़ रहे हैं।

कपार भुकाना—एक ही बात को बार-बार समझाने पर भी न समझना। प्र० आज तो तुमने बड़ा कपार भुका डाला।

कपाल काला करना—मुर्दे की खोपड़ी को शवदाह के बाद बाँस से फोड़ना।

कपाल खुलना—(1) सिर फट जाना। प्र० लाठी का भरपूर हाथ पड़ता तो कपाल खुल जाता।
(2) भाग्योदय होना। प्र० बहू घर में क्या आई, उनका कपाल खुल गया।

कपाल फूटना—(1) सिर फट जाना। प्र० दौड़ा-दौड़ा जा रहा था, गिर पड़ा और कपाल फूट गया।
(2) दुर्भाग्य होना। प्र० उसका कपाल ही फूट गया है तो क्या किया जाय।

कपाल में लिखा होना—भाग्य में होना। प्र० कपाल में जो लिखा होगा सो तो भोगना ही पड़ेगा।

कपाल-क्रिया कर देना—(1) मार डालना। प्र० इधर लहना की हैनरी मर्टिनी के दो फायरों ने साहब की कपाल क्रिया कर दी (गु० कहा० —गुलेरी, 57)।
(2) नष्ट कर देना। प्र० वाह जी, तुमने टेबुल लैम्प की कपाल-क्रिया कर दी?
(3) दे० कपाल काला करना।

कपास ओटना—संसार में फंसना। प्र० न जाने क्यों मैं अभी तक इस कपास ओटने में पड़ा हूँ।

कपास तौलना—मूर्ख होना। प्र० तुम कपास तौलो, इसी लायक हो।

कपूर खाना—ज़हर खाना। प्र० उसके भाई ने कल कपूर खा लिया।

कपोत-व्रत लेना—अन्याय-अत्याचार को चुपचाप सह लेना।

कफन का भी ठिकाना न होना—एकदम निर्धन होना। प्र० सदैव गर्दन उठाकर चले; और अब यह नौबत कि कफन का भी ठिकाना नहीं (मान० (7)—प्रेमचंद, 259)।

कफन की ओर पैर बढ़ाना—मृत्यु के निकट होना। प्र० रंग-बिरंगे पट की जगह जब सादा श्वेत वस्त्र भाये, तब जान लो—आदमी ने कफन की ओर पैर बढ़ा दिये (अम्ब०—रा० बे०, 46)।

कफन को कौड़ी न छोड़ना, -रखना—जो कमाना वह सब खर्च कर देना। प्र० उन्होंने तो कफन को कौड़ी तक न छोड़ा, उनकी क्या चलाते हो।

कफन को कौड़ी न रखना—दे० कफन को कौड़ी न छोड़ना।

कफ़न को कौड़ी न होना—अत्यन्त दरिद्र होना। प्र० फिर क्यों हमारे पास कफन को कौड़ी नहीं और उनके घर नयी गाय आती है (गोदान —प्रेमचंद, 41)।

कफन फाड़कर उठ खड़े होना—(1) मरते-मरते बच जाना। प्र० बस यही समझो कि ये कफन फाड़कर उठ खड़े हुए हैं।
(2) एकदम चिल्ला पड़ना। प्र० अरे, यह कौन कफन फाड़कर उठ खड़ा हुआ?

कफन फाड़कर चिल्लाना, -चीखना, -बोलना—ज़ोर से चिल्लाना। प्र० यह सुनते ही बाँके ने दर्जी को इतना पीटा कि वह बेचारा बेदम हो

गया। आखिर कफन फाड़कर चीखा, दोहाई मियाँ आज़ाद की, दोहाई मेरे उस्ताद की (आज़ाद०–प्रेमचन्द, 9)।

कफन फाड़कर चीखना—दे० कफन फाड़कर चिल्लाना।

कफन फाड़कर बोलना—दे० कफन फाड़कर चिल्लाना।

कफन में अंतिम कील ठुकना—पूरा सर्वनाश होना। प्र० × × हर कोई जानता था कि 'दादा' का पकड़ा जाना पार्टी के कफन में अंतिम कील ठुकने के बराबर होगा (एक म्यान०–नानक०, 90)।

कफन मैला न होना—थोड़े दिनों पहले ही मृत्यु होना। प्र० अभी तो उसका कफन भी मैला नहीं हुआ है।

कफन सिर से बांधना, -बांधे फिरना, लपेटना—मरने को तैयार होना। प्र० हम डटे मैदान में, बाँधे हुए सिर से कफ़न।

कफन सिर से बांधे फिरना—दे० कफन सिर से बांधना।

कफन सिर से लपेटना—कफन सिर से बांधना।

कफन-खसोट—अत्यन्त लोभी और तुच्छ। प्र० ऐसा कफन-खसोट तो मैंने देखा ही नहीं।

कफन-खसोटी करना—(1) बुरे ढंग से पैसा कमाना। प्र० कफन-खसौटी माँहि जात यह जन्म वितायौ (हरिऔध)।
(2) बहुत कंजूसी करना। प्र० ताऊजी तो ऐसा कफन-खसोटी करते हैं कि उनसे दो रुपये भी ले पाना मुश्किल है।

क़फ़स में जान फंसना—मुश्किल में पड़ना। प्र० अच्छी क़फ़स में जान फंस गयी है।

कब का—(1) कभी न्हीं। प्र० जित्तन बाबू ने कब्र का रोज़गार किया है जो आज करके निहाल करेंगे।
(2) काफी अरसे से। प्र० वह तो कब का आया बैठा है।

कब से—काफी देर से। प्र० मैं तो कबसे यहाँ खड़ा हूँ, कोई आया ही नहीं।

कब नहीं—बराबर; सदा। प्र० वह कब नहीं आया है, यह बतलाओ।

कबड्डी खेलते फिरना, -खेलना—अवारागर्दी करना; बेकार फिरना। प्र० तुम्हें कुछ करना-धरना तो है नहीं, दिन भर कबड्डी खेलते फिरो।

कबड्डी खेलना—दे० कबड्डी खेलते फिरना।

कबाब करना या होना—(1) दुःख देना। प्र० सास तो बेचारी को कबाब किये रहती हैं।
(2) बहुत मारना। प्र० तू इधर आ, तुझे अभी कबाब करता हूँ।
(3) ईर्षा से जलना। प्र० रमोला तो मुझे देख-देखकर कबाब हुई जाती है।

कबाब लगना—कबाब पकाया जाना। प्र० कबाब लगा है, दस मिनिट में तैयार हो जायगा।

कबाब होना—(1) जले जाना; कुढ़े जाना। प्र० बख्तावर सिंह बादशाह के मुंह से ऐसी बातें सुनकर कबाब हुए जाते थे (मान० (6)–प्रेमचंद, 253)।
(2) क्रुद्ध होना। प्र० राजा बहादुर यह सुन-सुनकर कबाब हुए जा रहे थे पर मुंह न खोल सकते थे।

कबाबी-शराबी—मद्यमांस खाने वाला अधर्मी। प्र० ऐसे कबाबी-शराबी को अपनी बेटी कौन देगा!

कबाला आगे धरना—अधिकार छोड़ देना। प्र० उन्होंने तो पहले ही कबाला आगे धर दिया है।

कबाला लिखना या लिखाना, -लेना—लिखा-पढ़ी करके अधिकार पाना। प्र० तुम अब सीख दे रहे हो, मैं बहुत पहले ही कबाला लिख चुका हूँ।

कबाला लेना, कबाले ढीले कर डालना—(1) वश में करना। प्र० [illegible] ने कबाला ले लिया न, बस, अब ठीक रहेगा।
(2) दे० कबाला लिखाना।

कबाले ढीले कर डालना—दे० कबाला लेना।

कबाहट उठ खड़ी होना, -निकलना या निकालना—झंझट शुरू होना या करना। प्र० मुझसे अब नहीं होता, रोज एक-न-एक कबाहट उठ खड़ी होती है।

कबाहट निकलना या निकालना—दे० कबाहट उठ खड़ी होना।

कबाहट में डालना—झंझट में डालना। प्र० तुम उसे बेकार क्यों कबाहट में डाल रहे हो?

कबाहट मोल लेना—जान-बूझकर झंझट का काम सिर लेना। प्र० न जाने कहाँ की कबाहट तुमने मोल ले ली है।

कबूतर उड़ाना—व्यर्थ काम करना।

कबूतर का सूतक—कभी न शेष होने वाला काम। प्र० तुम्हारी पढ़ाई तो जैसे कबूतर का सूतक हो गयी है।

कबूतर की तरह लोटना—बेतरह तड़पना। प्र० बन्दूक की गोली छाती में लगी और वह कबूतर की तरह लोटने लगा।

कबूल सूरत—सुन्दर। प्र० वह नाज़नीन ऐसी कबूल सूरत कि पूछो मत।

कब्जा उठना—अधिकार न रहना। प्र० चाचाजी ने अपना कब्जा उठा लिया है पर भैया नहीं मानते।

कब्जे पर हाथ डालना, -रखना—तलवार खींचने के लिये मूठ पर हाथ ले जाना। प्र० सरकार, कब्जे पर हाथ मत डालिए, इस समय खतरा है।

कब्जे पर हाथ रखना—दे० कब्जे पर हाथ डालना।

कब्जे से बाहर होना—वश में न होना। प्र० लड़का-लड़की दोनों ही उसके कब्जे से बाहर हो गये हैं।

कब्र का मुंह झांक आना या झांकना, -में से निकलना, -से उठकर आना—मरते-मरते बच जाना। प्र० मौलवी साहब इस बार कब्र का मुंह झांक आये हैं।

कब्र के मुर्दे उखाड़ना—(1) बीती बातों को फिर से उठाना। प्र० कब तक कब्र के मुर्दे उखाड़ोगे छोड़ो भी!
(2) रिसर्च करना। प्र० इन कब्र के मुर्दों को उखाड़कर क्या करोगे?

कब्र खोदकर लाना—कहीं से भी लाना या पता लगाना। प्र० चाहे कब्र खोदकर ही लाना पड़े तो भी तुम्हें लाना ही होगा।

कब्र खोदना—मरने या मारने की तैयारी करना। प्र० क्यों अपनी या उसकी कब्र खोद रहे हो बेटा ?

कब्र तक से वाक़िफ़ होना—सब कुछ जानना; न जाननेवाली बात भी जानना। प्र० मैं ऐसे मक्कारों की कब्र तक से वाक़िफ़ हूँ (आज़ाद०–प्रेमचंद, 92)।

कब्र पर कब्र होना—दो व्यक्तियों का एक मत होना। प्र० लो भाई, यहाँ तो कब्र पर कब्र है, कुछ और कहना ही बेकार है।

कब्र में कीड़े पड़ना—मरने के बाद भी दुःख झेलना। प्र० तेरी तो कब्र में भी कीड़े पड़ेंगे देखना।

कब्र में पाँव या पैर लटकाना—मरने को होना; मरने के करीब होना। प्र० एक पाँव तो कब्र में लटकाया है और खयाल यह गुदगुदाया कि दूल्हा बनें, दुलहिन लायें (आज़ाद०–प्रेमचंद, 47-48)।

कब्र में साथ ले जाना—हमेशा साथ रखना; कभी न भूलना। प्र० यह कोट क्या वे कब्र में भी साथ ले जायेंगे ?

कब्र में से उठा लेना—किसी तरह पीछा न छोड़ना। प्र० उसे तो मैं कब्र में से भी उठाकर अपने रुपये वसूल कर लूँगा।

कब्र में से निकलना—(1) मुर्दों की-सी सूरत हो जाना। प्र० कैसी सूरत हो गयी है; लगता है कब्र में से निकलकर चले आ रहे हो।
(2) दे० कब्र का मुँह झांक आना।

कब्र से उठकर आना—दे० कब्र का मुँह झाँक आना या झाँकना।

कभी—बहुत पहले। प्र० हाँ, कभी गाया करता था, इधर तो बरसों से सब छूट गया है।

कभी का—दे० कब से।

कभी कुछ कभी कुछ—बदलते रहना। प्र० आज के राजनीतिक नेता लोग मेरुदण्डविहीन हैं, कभी कुछ कभी कुछ।

कभी ज़मीन कभी आसमान पर होना—अस्थिर चित्त होना। प्र० कुमुदिनी कभी ज़मीन और कभी आसमान पर रहती है तो कैसे चले।

कभी तोला कभी माशा—कभी कुछ, कभी कुछ; कभी ज्यादा, कभी कम। प्र० इनके मिज़ाज का हाल मत पूछो, कभी तोला कभी माशा।

कभी न कभी—आगे चलकर कभी अवश्य। प्र० न सही आज, कभी न कभी ता आयेगा ही।

कभी नाम न लेना—किसी बात, वस्तु या व्यक्ति को हमेशा के लिए छोड़ देना। प्र० मेरे सामने सरला का नाम कभी न लेना।

कभी-कभी—अक्सर, प्रायः। प्र० चाचाजी कभी-कभी आ जाते हैं।

कमंद डालना, -फेंकना, -लगाना—रस्सी के सहारे चढ़ना। प्र० पूरब की ओर कमंद डालकर तीन आदमियों को पार कर देना।

कमंद फेंकना—कमंद डालना।

कमंद लगाना—दे० कमंद डालना।

कम खर्च बालानशीं होना—थोड़े खर्च में शान शौकत व इज्जत से रहना। प्र० छोटे भैया हैं कम खर्च बालानशीं। हम लोग उनसे ज्यादा खर्च भी करते हैं और फटीचर ही बने रहते हैं।

कम लहना—नाप में छोटी (लकड़ी पत्थर)। प्र० यह पत्थर कम लहता है, दूसरा दो।

कम से कम—अधिक नहीं तो इतना अवश्य। प्र० सब लोग नहीं तो कम से कम आप तो आइए ही।

कम-औकात—कम पैसेवाला। प्र० ऐसे कम-औकात के यहाँ बेटी कैसे ब्याह दूँ।

कमची तानना—डराना-धमकाना। प्र० जब देखो तब ये कमची ताने खड़े रहते हैं।

कमज़ोर की जोड़ू—ऐसी स्त्री जिसका पति निकम्मा या कुछ बोलने की स्थिति में न हो। प्र० मैं ठहरी कमजोर की जोड़ू, जिसकी जो मर्जी आती है, कह जाता है।

कमबख्ती आना—दुर्भाग्य आना। प्र० मेरी कमबख्ती आयी है क्या जो इस वक्त चाचाजी के सामने जाऊँगा।

कमबख्ती का मारा—अभागा। प्र० कमबख्ती का मारा बेचारा कहाँ जाय !

कमबख्ती की मार—दुर्भाग्य का प्रहार। प्र० क्या कहूं, कमबख्ती की मार कि उसी दिन रात को चोरी भी हो गयी।

कमर कटना—कमर से रुपये निकल जाना। प्र० भीड़ में होशियार रहना, कहीं कमर न कट जाये।

कमर कमान करना—दृढ़तापूर्वक रहना। प्र० कितने कर्मवीर दलिया खाते हुए कमर कमान किए जान पर खेल रहे हैं (कुल्ली०–निराला, 10)।

कमर कमान होना—कमर झुक जाना। प्र० लालाजी की कमर एकदम कमान हो गयी है।

कमर करना—(1) कबूतर का कलाबाज़ी करना। प्र० तो कमरबन्द क्यों हुआ ढीला हैं कबूतर अगर कमर करते (बोल०–हरिऔध, 229)।
(2) घोड़ों का इस प्रकार कमर उछालना कि सवार का आसन उखड़ जाय।

कमर कसकर बाँधना, -कसना, -बाँधना—(1) लड़ने के लिए उद्यत होना। प्र० परिकर बाँधि उठे अकुलाई। चले इष्टदेवन्ह सिर नाई (राम० (बाल)–तुलसी, 258); कसे रहैं कटि रात-दिवस सब बीर हमारे (भा० ग्रं० (1)–भारतेन्दु, 524)।
(2) दृढ़ निश्चय करना। प्र० जिस कमलावती ने इनके मूल पुरुष गोह की रक्षा की थी उसी के वंश के लोगों ने इसकी रक्षा पर भी कमर बांधी (राधा० ग्रंथा०–राधा० दास, 158); वे रोज जाने के लिए कमर कसते, लेकिन फिर रह जाते (मान० (4)–प्रेमचंद, 125)।

कमर कसना—दे० कमर कसकर बाँधना।

कमर का ढीला—कमजोर; सुस्त। प्र० ऐसे कमर के ढीले मजदूर से तो सात दिन में भी काम पूरा न पड़ेगा।

कमर की टंगड़ी—कुश्ती का एक पेंच।

कमर खोलना—(1) अपने दृढ़ निश्चय को बदलना। प्र० बन अमर देस-हित रहें करते। मर मिटें पर कमर न हम खोलें (चुभते०–हरिऔध, 37)।
(2) हिम्मत हारना। प्र० देखिए प्रयोग (1)।

(3) विश्राम करने को प्रस्तुत होना। प्र० कमर तो खोलने दो, अफीम घोलूँ, चुस्की लगाऊँ तो होश आये (आज़ाद–प्रेमचंद, 400)।
(4) कमरबन्द खोलना। प्र० देखिए प्रयोग (3)।

कमर झुककर कमान होना—कमर बहुत झुक जाना। प्र० अब उन पर चौथापन आ गया था कमर झुककर कमान हो गई थी × × (जिन्दगी–निर्गुण, 60)।

कमर झुकना—(1) थक जाना; हार जाना। प्र० इसमें सहज गति है, अहंकार नहीं, वैसे जीवन का बोझा ढोते हुए किसकी कमर नहीं झुकती (बौने०–रां० रा०, 207)।
(2) वृद्ध होना। प्र० अरे बेटा, कमर झुकी, अब वह पहलेवाली बात कहाँ।

कमर टूटना, -बैठना—(1) कमर में दर्द होना। प्र० छोटे लोग इन ऊँचे फ्लैटों के दड़वों में रहते हैं, जहाँ चढ़ते-चढ़ते कमर टूट जाती है (पैंतरे–अश्क, 140)।
(2) निराशा होना; उत्साह का न होना। प्र० टूट में जाय पड़ नहीं कोई टूट कर भी कमर न टूट सके (चुभते०–हरिऔध, 37)।
(3) जोर में कमी आना। प्र० देखिए प्रयोग (2)।
(4) बेसहारा हो जाना। प्र० फूलमती अपने कमरे में जाकर लेटी, तो उसे मालूम हुआ उसकी कमर टूट गयी है (मान० (1)–प्रेमचंद, 73); मेरे कर युग हैं टूट चुके, कटि टूट चुकी, सुख छूट चुके (साकेत–गुप्त, 161)।

कमर टेढ़ी होना—(1) दुर्बल पड़ना। प्र० थी कमर मेरी कभी टेढ़ी नहीं दैव के टेढ़े हुए टेढ़ी हुई (बोल०–हरिऔध, 230)।
(2) बुढ़ापा आना। प्र० कमर टेढ़ी हो गयी पर मन वैसा-का-वैसा ही है।

कमर ठोंकना—(1) प्रशंसा करना, पीठ ठोंकना। प्र० बधाई के उपलक्ष्य में उनकी कमर ठोंक दीजिए (पद्म० के पत्र–पद्म० शर्मा, 101)।
(2) हिम्मत बाँधना। प्र० वैसा भी बड़ा काम करना हो, वे कमर ठोंकने को तैयार रहते हैं।

कमर तोड़ना—सहारा छीन लेना; बहुत बड़ी विपत्ति डालना; निःशक्त कर देना। प्र० यदि उसकी हानियों की ओर जो इधर थोड़ी देर में उसके ऊपर फट पड़ी है ध्यान दिया जाय तो वही इतने बड़े व्यापारी की कमर तोड़ देने के लिए बहुत हैं (भा० ग्रं० (1)–भारतेन्दु, 624); भविष्य की चिन्ता हमें कायर बना देती है, भूत का भार हमारी कमर तोड़ देता है (गोदान–प्रेमचंद, 202)।

कमर तोड़नेवाली—शक्तिहीन कर देनेवाली; निराश कर देनेवाली। प्र० इतनी भागदौड़ और इस सीमा तक कमर तोड़नेवाली हार होने पर भी यदि सराभा की कमर खाट पर टिक सकती थी तो इसके दो कारण थे × × (एक म्यान०–नानकं०, 91)।

कमर थामना, -पकड़ना—सहायता करना। प्र० आप ही तनिक कमर थाम लें तो कोई हर्ज है।

कमर पकड़कर उठना—बहुत निर्बल होना। प्र० बीमारी के बाद से बेचारे कमर पकड़कर उठने लगे हैं।

कमर पकड़कर बैठ जाना—बहुत दुःखी होना; विपत्तियों का मारा होना। प्र० चारों ओर की मुसीबतों से हैरान आकर वह कमर पकड़कर बैठ गया।

कमर पकड़ना—(1) कमर में ऐसा दर्द होना जिसके कारण उठा-बैठा न जा सके। प्र० आपकी कमर पकड़े है तो कड़ुआ तेल गरम करवाके मालिश करवाइए।
(2) दे० कमर थामना।

कमर पर हाथ रखना—निर्बल होना।

कमर बँधना—चलने को तैयार होना। प्र० उनकी कमर हर समय बँधी ही रहती है।

कमर बँधवाना, -बँधाना—हिम्मत दिलाना। प्र० तनिक आप जाकर कमर बँधवा दीजिए तो तसल्ली हो जायगी।

कमर बँधाना—दे० कमर बँधवाना।

कमर बल खाना—पतली कमर होना। प्र० अहा! क्या रूप था, क्या डील-डौल था! छरहरा बदन, कमर बल खाये जा रही थी।

कमर बाँधना—दे० कमर कसकर बाँधना।

कमर बैठना—दे० कमर टूटना।

कमर मजबूत होना—स्थिति दृढ़ होना। प्र० काफी अरसे के बाद अब कहीं जाकर कमर मजबूत हुई है।

कमर मटकाना—भोंड़ा नाच करना। प्र० नाचता है? हुंह, नाचता नहीं कमर मटकाता है।

कमर मारना—कमर झुकाना। प्र० कमर मारकर मत चलो, सीधे होकर चलो।

कमर रह जाना—कमर थक जाना। प्र० दूकान पर दिन-भर बैठे-बैठे कमर रह जाती है (मा–कौशिक, 165)।

कमर लगना—(1) चारपाई पर बहुत दिनों तक पड़े रहने के कारण कमर में दर्द या घाव होना। प्र० डेढ़ महीने से पड़े हैं, कमर लग गयी है।
(2) घोड़े की पीठ पर घाव होना। प्र० खयाल रखना, घोड़े को कमर न लग जाय।

कमर लचकाना—नाच में कमर-संचालन करना। प्र० गुलब्बोजान ऐसा कमर लचकाती थीं कि लोगों के दिल बल खा जाते थे।

कमर लपेटे की उलटी—मालखम्भ की एक कसरत।

कमर सीधी करना—(1) थोड़ा विश्राम करना। प्र० लोग खा-पीकर चले गये, तो प्यारी दिन भर की थकी-माँदी आँगन में एक टाट का टुकड़ा बिछाकर कमर सीधी करने लगी (मान० (1)–प्रेमचंद, 119)।
(2) मुकाबिला करने को प्रस्तुत होना। प्र० जोश में आकर भैया, मैं उठकर बैठ गया। कमर सीधी कर ली (बल०–नागा०, 85)।

कमर सीधी होना—विश्राम या राहत मिलना। प्र० साध पूरी हुई न काम सधा हो न सीधी सकी कमर मेरी (बोल०–हरिऔध, 230)।

कमर-कमर गड़ जाना—बहुत लज्जित होना। प्र० मौसी को देखते ही वह कमर-कमर गड़ गया। पर मौसी ने ही उसे इस लज्जा से उबारा।

कमरबन्द ढीला होना—साहस छूटना। प्र० तो कमरबन्द क्यों हुआ ढीला हैं ॰धूतर अगर कमर करते (बोल०—हरिऔध, 229)।

कमल उलटना—गर्भाशय का मुँह उलटना।

कमल के पत्ते की तरह पानी से अलग रहना—सर्वथा अलिप्त रहना।

कमल खिलना—प्रसन्न होना। प्र० वाह, क्या कमल खिला था आप लोगों का।

कमली भींगकर भारी होना—कोई बोझ दिन-पर-दिन बढ़ता जाना। प्र० अंगरेज-कम्पनी का ऋण दिन-दिन बढ़ता जाता था। कमली दिन-दिन भींगकर भारी होती जाती थी (मान० (3)–प्रेमचंद, 271)।

कमा खाना—मेहनत-मजदूरी करके जीविका चलाना। प्र० शहर जाता हूँ, कुछ-न-कुछ कर लूँगा, कमा-खाऊँगा।

कमा खाने लायक होना—आत्म-निर्भर होने लायक होना; वयस्क होना। प्र० लड़के कमा खाने लायक हो गये हैं, अब कोई चिन्ता नहीं रही।

कमाई करना—(1) महत्त्वपूर्ण काम करना। प्र० वहाँ से ऐसी क्या कमाई करके आ रहा है? (बौने०—रां० रा०, 33)।

(2) धनोपार्जन न करना; व्यर्थ का काम करना (व्यंग्य में)। प्र० तुम भी वहाँ से कमाई करके लौटे तो खेत में पहुँच गये (गोदान–प्रेमचंद, 18)।

(3) धनोपार्जन करना। प्र० ता पर भी नहीं करी कमाई फिर पाछे पछताते हैं।

कमाई खाना—आश्रित रहना। प्र० मैं किसी की कमाई खाती हूँ क्या जो किसी से दबूँ।

कमाई खो बैठना—जीविका का साधन खो बैठना। प्र० पन्द्रह दिनों से कमाई भी खो बैठा हूँ।

कमाऊ धन—बेटा। प्र० कमाऊ धन किसे प्यारा नहीं होता।

कमान उतारना—कमान का चिल्ला उतारना।

कमान कराना—झुकाना। प्र० इन दुष्टों को कमान करा दो, घंटे भर में ठीक हो जायेंगे!

कमान चढ़ना—त्योरी चढ़ना; क्रोध में होना। प्र० आज मेम साहब की कमान चढ़ी हुई है, सम्हलकर रहना।

कमान खींचना, -चढ़ाना, -तानना—कमान का चिल्ला चढ़ाना।

कमान चढ़ाना—दे० कमान खींचना।

कमान तानना—दे० कमान खींचना।

कमान पर जाना—(1) लड़ाई पर जाना। प्र० अगले महीने कमान पर चला जाऊँगा।

(2) नौकरी पर जाना। प्र० देखिए प्रयोग (1)।

कमान पर होना—(1) काम पर होना। प्र० इस समय दोनों बेटे कमान पर हैं।

(2) लड़ाई पर होना। प्र० देखिए प्रयोग (1)।

कमान बोलना, -बोला जाना—सिपाही को नौकरी या लड़ाई पर जाने की आज्ञा देना। प्र० कोई कमान बोलेगा तब न लोग तैयार होंगे।

कमान बोला जाना—दे० कमान बोलना।

कमान हाथ में लेना—लड़ने को प्रस्तुत होना। प्र० तू तो हर समय कमान हाथ में लिए रहता है।

कमाना—(1) शरीर को सुडौल बनाना। प्र० मलखम्भ, कुश्ती इत्यादि से शरीर को खूब कमाओ (झाँसी०—वृ० वर्मा, 38)।

(2) अर्जित करना, प्राप्त करना। प्र० कहति मंदोदरि सुनि पिय रावन, तैं कह्यो कुमति कमाई।

(3) पत्थर इत्यादि को थोड़ा छीलकर सुडौल बनाना। प्र० पत्थर ठीक से कमाकर लगाना यों ही नहीं।

कमाया साँप—वह साँप जिसके विषैले दाँत निकाल दिये गये हों।

कमाल करना—(1) अद्भुत काम करना या अटपटा काम। प्र० उस दिन झूलेवाले खिलाड़ियों ने तो कमाल कर दिया।

(2) बुरा या अटपटा काम करना (व्यंग्य)। प्र० यार, तुम तो कमाल करते हो, मैं वहाँ कैसे जा सकता हूँ?

कमाल का, -वर्जे का—गजब का; सर्वोत्तम। प्र० उस दिन तो सिद्धेश्वरी देवी ने कमाल का गाया, तबीयत खुश हो गयी।

कमाल को पहुँचाना—पराकाष्ठा कर देना; स्थिति बहुत अच्छी या बुरी बना देना। प्र० वाह साहब, आपने तो परिवार की आर्थिक स्थिति कमाल को पहुँचा दी।

कमाल वर्जे का—दे० कमाल का।

कमाल दिखाना—करतब दिखाना। प्र० बाजीगर ने ऐसे-ऐसे कमाल दिखाए कि लोग दाँतों तले उँगली दबाये बैठे रहे।

कमाल रखना—उस्ताद होना; बहुत कुशल होना। प्र० छोटी मोती बाई गाने में कमाल रखती हैं।

कमाल हासिल करना—बहुत कुशलता प्राप्त करना। प्र० चित्रकला में उसने कमाल हासिल कर लिया है।

कमेला करना—मार डालना। प्र० तुमसे कमेला करने को किसने कहा था।

कयामत आना या होना—बहुत बड़ा संकट आना। प्र० घर में जगार होने से पहले ही कयामत आ गयी (अमृत०—नागर, 661)।

कयामत उठाना—झगड़ा करना। प्र० जब देखो तब यह कयामत उठाये रहता है।

कयामत करना—जुल्म करना। प्र० बहुत हुआ, अब और कयामत न करो।

कयामत का—अलौकिक, गजब का। प्र० भाई, कयामत का रूप पाया है उसने; आज तो कयामत की गर्मी है।

कयामत का दिन, -की घड़ी—घोर संकट का समय, ईश्वरी न्याय का दिन।

कयामत का सामना होना—बड़ी कठिन स्थिति होना। प्र० अभी कुछ बोलो मत, इस समय कयामत का सामना है।

कयामत की घड़ी—दे० कयामत का दिन।

कयामत टूट पड़ना—भयंकर मुसीबत आ पड़ना। प्र० कौन-सी कयामत टूट पड़ी है तुम पर, जरा मैं भी तो सुनूँ।

कयामत ढाना—गजब करना। प्र० यार, ऐसी कयामत ढाना तो उचित

नहीं ।

कयामत तक—अन्त तक । प्र० शमसुद्दीन कयामत तक आपका पीछा छोड़नेवाला नहीं है ।

कयामत तोड़ना—आफत लाना । प्र० कयामत तोड़ने को मैं ही था !

कयामत बरपा करना—(1) विचित्र काम कर देना । प्र० वाह, आपने तो बिलकुल कयामत बरपा कर दी ।

(2) बहुत बड़ा परिवर्तन कर देना । प्र० देखिए प्रयोग (1) ।

कयास के बाहर होना—समझ में न आनेवाली बात, ध्यान से परे । प्र० यह तो मेरे कयास के एकदम बाहर था कि वह यहाँ भी आ सकती है ।

कयास दौड़ाना, -लगाना, -लड़ाना—अनुमान करना । प्र० जरा कयास दौड़ाओ कि कौन हो सकता है ।

कयास लगाना—दे० कयास दौड़ाना ।

कयास लड़ाना—दे० कयास दौड़ाना ।

कर उठाना—किसी कार्य को करने की भरसक पूरी चेष्टा करना । प्र० मैंने अपनी ओर से सब कुछ कर उठाया पर व्यर्थ ।

कर के नीचे कर रखना, -तले कर रखना—माँगना । प्र० लाज न आती तुझको रे नर, कर के नीचे कर धरते !

कर गुजरना—किसी काम को कर डालना । प्र० मैंने भी सोचा, चलो इस बार कर ही गुजरो ।

कर तले कर रखना—दे० कर के नीचे कर रखना ।

कर दिखाना—प्रमाणित करना । प्र० उसने जो कहा था सो कर दिखाया ।

कर देखना—स्वयं करके अनुभव पाना । प्र० मेरी बात नहीं समझ में आती तो ठीक है, खुद कर देखो ।

कर बैठना—कुछ कर डालना (अच्छा-बुरा) । प्र० मुझे डर है कि कहीं वे कुछ कर न बैठें ।

(किसी को) कर रहना—किसी को खसम करना । प्र० देखना, वह उन्हें ही कर रहेगी ।

कर-कर करना, -लगाना—झगड़ा करना । प्र० चौबीस घंटा यह कर-कर करती रहती है, इसे निकाल बाहर करो ।

कर-कर लगाना—दे० कर-कर करना ।

करत की होना—काम की होना । प्र० यह आलमारी मेरे करत की है, मैं ले लूंगा ।

करतब उलटे होना—विपरीत या प्रतिकूल गति होना । प्र० विधि करतब उलटे सब अहहीं (राम० (अ)—तुलसी, 482) ।

करतब दिखाना—हुनर दिखाना । प्र० ऐसे-ऐसे करतब उस छोकरे ने दिखाये कि तबियत खुश हो गयी ।

करतल होना, करतलगत होना—प्राप्त होना, वश में होना । प्र० कृपासिंधु मुनि दरसन तोरें । चारि पदारथ करतल मोरें (राम० (बाल) —तुलसी, 174); सारा देश अकबर के करतलगत है (राधा० ग्रंथा० —राधा० दास, 765) ।

करतलगत होना—दे० करतल होना ।

करता उस्ताद—काम करते-करते होशियार हो जाने वाला व्यक्ति । प्र० मिट्ठू साव हो गये हैं करते उस्ताद, उनकी मत चलाओ ।

करतार रूठना—बुरे दिन होना । प्र० जब करतार रूठ गये हों तो फिर क्या कहा जाय !

करती विद्या—वह जानकारी जो किसी काम को करने के दौरान ही मिले । प्र० पहले कुछ दिन तो लुटियाचोर रहे, मगर यह तो करती विद्या है, थोड़े ही दिनों में हम चोरों के गुरु-घंटाल हो गये (आजाद०—प्रेमचंद, 37) ।

करतूत पर आना—अपनी असलियत दिखा देना । प्र० आ गया न वह अपनी करतूत पर ।

करधन टूट जाना—हिम्मत न रहना । प्र० भैया, मेरी करधन टूट गयी, अब मैं कुछ करने लायक न रहा ।

करधन ढीली होना—(1) दुर्बल होना । प्र० इस बार बेचारे की करधन एकदम ढीली हो गयी है ।

(2) दुर्दशा होना । प्र० देखिए प्रयोग (1) ।

करधन में बूता होना—शरीर में शक्ति होना । प्र० करधन में बूता हो तो उनसे लड़ने जाओ ।

करना· (1) विवाह करना । प्र० तेरा सुमुख तो तुझे देखकर निहाल होता है । वह दूसरी क्यों नहीं करता ? (देवकी०—रां० रा०, 3) ।

(2) अवैध सम्बन्ध रखना । प्र० तेरी लड़की पटने में एक-दो-तीन-चार, एक-दो-तीन-चार कर रही है—हम अपनी आँखों देख आए हैं (कुल्ली०—निराला, 43) ।

(3) टोना आदि करना । प्र० मेरे लड़कों को किसी के घर मत भेजा करो । किसी ने कुछ कर-करा दिया, तो मैं तुम्हें लेकर चाटूंगी ? (गोदान—प्रेमचंद, 40) ।

करनी करना—विवाह आदि में देने-लेने की रस्म पूरी करना । प्र० यहाँ करनी करते-करते दिवाला निकल गया पर लड़केवालों का मुँह फूला ही रहा ।

करबरी दाढ़ी—दे० कड़बरी दाढ़ी ।

करम कमाना—कर्म करना और फल पाना । प्र० जित को लाया तितही लागा तैसे करम कमावै (कबीर ग्रंथा०—कबीर, 282) ।

करम का अक्षर मेटना—होनी को टालना । प्र० करम का अक्षर कोई मेट सका है कि मैं ही मेटूंगी ।

करम का ओछा, -खोटा, -हीन, -हेठा—भाग्यहीन । प्र० ऐसे जनम-करम के ओछे ओछनि हूँ ब्योहारत (ब्र० सू० को०) ।

करम का खोटा—दे० करम का ओछा ।

करम का धनी, -बली—भाग्यवान् । प्र० करम के धनी का भूत भी हल जोतता है ।

करम का फेर—दुर्भाग्य । प्र० सब कुछ करमों का फेर है ।

करम का बली—दे० करम का धनी ।

करम का लेख, -की रेख, करम में लिखा होना, कर्म-रेख, कर्म-लेख—भाग्य में जो हो । प्र० सूर करम की रेख मिटै नहिं यहै कह्यौ जदुराई (सू०

सा०–सूर, 4058); अब दया कर मेरा दोष जी में मत रक्खो क्योंकि कर्म का लिखा कोई मेट नहीं सकता (प्रेम० सा०–ल० ला०, 21)।

करम का हीन—दे० करम का ओछा।

करम का हेठा—दे० करम का ओछा।

करम की निगाह होना—सहारा होना; दया होना। प्र० तनख्वाह में गुजर नहीं होता सेठजी, आप लोगों की करम की निगाह न हो तो एक दिन भी निवाह न हो (मान० (7)–प्रेमचंद, 32)।

करम की रेख—दे० करम का लेख।

करम की रेख पर मेख मारना—भाग्य में लिखे को बदलना। प्र० संसार में भरमने वालों पर दया कैसी, मुक्ति के मार्ग में अग्रसर होनेवालों को आराम कहाँ, करम की रेख पर मेख न मार सका तो संत कैसा (कबीर–ह० प्र० द्वि०, 155)।

करम को रोना—भाग्य को दोष देना। प्र० किसके लिए अपने करम पकड़कर रो रही है (सुहाग०–अ० ना०, 16)।

करम जगना—भाग्य अच्छा होना। प्र० इस वक्त तुम्हारे करम जगे हैं, जो चाहो कर लो।

करम टेढ़ा होना, -तिरछा होना—भाग्य बुरा होना। प्र० मेरा करम टेढ़ा न होता तो इतना उल्टा-सीधा सुनना पड़ता?

करम ठोंककर बैठना—किसी दुर्घटना पर पछताकर सन्तोष कर लेना; भाग्य का खेल समझ कर सन्तोष कर लेना। प्र० करना क्या था, करम ठोंककर बैठ गया।

करम ठोंकना—किसी अप्रत्याशित घटना के हो जाने पर पछताना या दुःख करना। प्र० दामाद के गुजरने का समाचार सुनकर उसने करम ठोंक लिया।

करम तिरछा होना—दे० करम टेढ़ा होना।

करम पकड़कर रोना—दे० करम को रोना।

करम फूटना—भाग्य मन्द होना। प्र० बस, बात की बात में सब के करम फूट गए (प्र० पी०–प्र० ना० मि०, 153); फूटा करम! धरम भी लूटा, शीश हिला रोते सब परिजन (स्वर्णधूलि–पंत, 2)।

करम भोगना—अपने किये का फल पाना। प्र० तुम अपना करम भोग रहे हो और क्या।

करम में थूकना—बदनाम करना; भाग्य को बुरा बतलाना। प्र० जो देखै है सो हमारे करम में थूकै (सारा०–यादव, 66)।

करम में लिखा होना—दे० करम का लेख।

करमकल्ला बना देना—मार-मारकर देह के चीथड़े कर देना। प्र० ज्यादा बें-ते मत कर नहीं तो तेरा करमकल्ला बना दूँगा।

करम-रेख—किस्मत। प्र० अपनी-अपनी करम-रेख सबके साथ रहती है न!

करम-रेख मुट्ठियों में रखना या होना—अपने प्रयत्नों से भाग्य बनाने वाला व्यक्ति, कर्मठ व्यक्ति। प्र० वे अपनी करम-रेख अपनी मुट्ठियों में रखते हैं।

करवट खाना, -बदलना, -लेना, -होना—(1) उलट जाना या फिर जाना। प्र० बच्चा अभी से करवट खाने लगा?

(2) और का और हो जाना। प्र० मेरे बचपन में सदियों से सोता हुआ राष्ट्र फिर से करवटें बदलने लगा था।

करवट न बदलना—अपने पूर्व मत से न टलना। प्र० मैंने बहुत कहा पर उन्होंने करवट न बदली।

करवट न लेना—किसी कर्तव्य का ध्यान न रखना, सन्नाटा खींचना। प्र० कितना भी कहो, कुछ भी कहो, वह तनिक करवट ही नहीं लेता।

करवट बदलना—दे० करवट खाना।

करवट बैठना—कोई रुख या रूप लेना। प्र० देखें, मामला किस करवट बैठता है।

करवट लेना—(1) कोई नयी दिशा या रुख लेना। प्र० रात बीरी ने बड़ी अशान्ति से गुजारी और दिन निकलते ही उसके विचारों ने नई करवट ली ×× (एक म्यान०–नानक०, 46)।

(2) दे० करवट खाना।

करवट होना—दे० करवट खाना।

करवटें बदलते रात काटना—बहुत बेचैनी में रात बिताना। प्र० लोगों ने करवटें बदलते रात काटी (मान० (6)–प्रेमचंद, 15)।

करवटें बदलते रात बीतना—बहुत बेचैनी होना। प्र० द्यौस कछु न सुहाय सखी, अरु रैन विहाय न हाय करौटनि (घन० कवित्त–घना०, 101)।

करवटें बदलना—(1) बेचैन होना, छटपट करना। प्र० घंटों वह करवटें बदलता रहा।

(2) परिवर्तन होना। भारतीय राजनीति करवटें बदल रही है।

करवटों में कटना या काटना, -बिताना या बीतना—दुःख और बेचैनी में दिन बिताना या बीतना। प्र० लगता है अपनी सारी जिन्दगी इसी तरह करवटों में कटेगी।

करवटों में बिताना या बीतना—दे० करवटों में कटना या काटना।

करार आना, -धरना—चैन मिलना। प्र० पल भर को भी जी को करार नहीं आता।

करार धरना—दे० करार आना।

करार हमल पाना—गर्भ रहना।

करारा जवाब देना—तीखा उत्तर देना। प्र० आने दो मेरे पास, ऐसा करारा जवाब दूँगी कि वे सारी जिन्दगी याद रखेंगे।

करारा थप्पड़ लगना या लगाना—जोरदार मुँहतोड़ जवाब मिलना या देना। प्र० एक बार करारा थप्पड़ लग जायगा तो उसका दिमाग दुरुस्त हो जायगा।

करारा दाम—बहुत अधिक कीमत। प्र० इतना करारा दाम कौन देगा?

करारी हार—जबर्दस्त हार। प्र० इस बार क्रिकेट में भारतीय टीम की करारी हार हुई।

करारे दम—(1) बहुत तेज। प्र० नशा जब तक करारे दम न हो तब तक क्या मजा।

(2) जो शिथिल न हो। प्र० नानाजी अभी भी करारे दम हैं, चले चलेंगे।

करारे पर का वृक्ष—शीघ्र नष्ट होने वाला; मरणासन्न। प्र० मैं करारे पर का वृक्ष हो रहा हूँ, न मालूम कब गिर पड़ूँ (मान० (8)–प्रेमचंद, 271)।

करारे पर खड़े होना—(1) मृत्यु के निकट होना। प्र० मैं तो भाई, करारे पर खड़ा हूँ, न जाने कब गिर पड़ूँ।
(2) आपद्‌जनक स्थिति में होना। प्र० दे० प्रयोग (1)।

करारे होना—मजबूत होना। प्र० सम्पत बाबू अभी काफी करारे हैं, जल्दी कुछ न होगा।

कराह कर रह जाना—मन की वेदना की हल्की-सी अभिव्यक्ति करके रह जाना। प्र० जिन्दगी में बहुत कुछ देखा, सहा, और कराह कर रह गयी।

करिया अच्छर भैंस बराबर होना—दे० काला अक्षर भैंस बराबर।

करिश्मे दिखाना—नये-नये काम करना। प्र० कब तक और करिश्मे दिखाते रहोगे, बोलो।

करीब-करीब, -करीबतर—प्रायः। प्र० मकान करीब-करीब पूरा हो चुका है।

करीबतर—दे० करीब-करीब।

करीम लेना—मालू का नाखून काटना।

करुणा के घर—करुणामय। जौ पै प्रभु करुना के आलै तौ कत कठिन कठोर होत मन, मोहिं बहुत दुख सालै (सू० सा०–सूर, 4772)।

करेला और नीम चढ़ा होना—बहुत कटु या बुरा होना। प्र० इस प्रकार मैं करेला और नीम चढ़ा ही नहीं, वरन् विधाशुद्ध 'अहिंसा परमोधर्मः' का अनुयायी हूँ (मेरे०–गुलाब०, 32)।

करोड़ की (में) एक—अमूल्य, बेजोड़। प्र० वह लड़की करोड़ों में एक है।

कर्ज उठाना, -काढ़ना, निकालना—ऋण लेना। प्र० कर्ज उठाये बिना धंधा कैसे चलेगा?

कर्ज उतरना या उतारना, पटाना या पाटना—कर्ज चुकाना। प्र० उमेश से बड़ी अरुणा का विवाह छह वर्ष पहले कर चुका, अब तक उसका कर्ज पाट रहा है (अमृत०–नागर, 44)।

कर्ज का बोझ सिर पर लदा होना, -के बोझ से दबे जाना, -में गर्क होना—बहुत अधिक कर्ज में डूबे होना। प्र० कर्ज का बोझ सिर पर लदा जा रहा है, रोज डिग्रियाँ हो रही हैं (गोदान–प्रेमचंद, 88)।

कर्ज काढ़ना—दे० कर्ज उठाना।

कर्ज के बोझ से दबे जाना—दे० कर्ज का बोझ सिर पर लदा होना।

कर्ज खाए बैठना—(1) ऋणी होना। प्र० मैं क्या किसी का कर्ज खाए बैठा हूँ जो दबूँ।
(2) एहसानमन्द होना। प्र० देखिए प्रयोग (1)।

कर्ज खाना—दे० उधार खाना।

कर्ज चढ़ना—कर्ज का बढ़ना। प्र० दिन-पर-दिन कर्ज चढ़ता जा रहा है, बड़ी चिन्ता में हूँ।

कर्ज निकलवाना—गिरवी रखना। प्र० इस बार कर्ज निकलवाना पड़ेगा, यों कोई न देगा।

कर्ज निकालना—दे० कर्ज उठाना।

कर्ज पटाना या पाटना—दे० कर्ज उतरना या उतारना।

कर्ज में गर्क होना—दे० कर्ज का बोझ सिर पर लदा होना।

कर्ण का पहरा—प्रभात काल, दान-पुण्य का समय।

कर्णधार—मार्गदर्शक, संचालक। यद्यपि डाक्टर इर्फान अली इस मंडल के मुख पात्र थे, पर खुला हुआ भेद था कि प्रेमशंकर ही उसके कर्णधार हैं (प्रेमा०–प्रेमचंद, 435)।

कर्णपात करना—सुनना। प्र० युवती के उत्तर पर कर्णपात न कर, हम लोग गाड़ी पर आ बैठ (राधा०–ब्र० स०, 60)।

कर्त्ता-धर्त्ता—वह व्यक्ति जिसके हुक्म से ही सब काम होता हो। प्र० दादी का नाम लेती है, कर्त्ता-धर्त्ता तो तू ही है। उन्हें तो आँखों से नहीं सूझता (भिखा०–कौशिक, 210)।

कर्म काटना—कर्मफल से मुक्ति देना। प्र० बालापनैं के करम हमारे, काटे जांनि दई (कबीर ग्रंथा०–कबीर, 191)।

कर्म-रेख—दे० करम का लेख।

कर्म-लेख—दे० करम का लेख।

कर्रा करना—(1) बहुत शोर करना। प्र० बड़ा कर्रा कर रखा है तुम लोगों ने, जरा शान्ति से बैठो।
(2) इमारती।

कलंक का चाँदी से धुलना—धन के द्वारा कलंक का मार्जन होना। प्र० आदमी जूठा तभी खाता है जब मीठा हो। कलंक चाँदी से ही धुलता है (गोदान–प्रेमचंद, 261)।

कलंक का टीका—अपयश। प्र० इज्जत के बिना प्रेम कलंक का टीका बन जाता है (रंग० (2)–प्रेमचन्द, 92)।

कलंक का टीका लगना या लगाना, -चढ़ना या चढ़ाना, -देना, -पुतना या पोतना, -लाना—बदनाम करना या होना। प्र० यह कलंक तुमही कौं चढ़िहै, जैसैं रंग मजीठी (सू० सा०–सूर, 4110); हीन भएं जल मीन अधीन, कहा कुछु मो अकुलानि समानै। नीर-सनेही कों लाय कलंक निरास ह्वै कायर त्यागत प्रानै (घन० कवित्त–घना०, 5)।

कलंक की कोठरी बनना या होना—घोर कलंक का भागी होना। प्र० अस विचारि उर छाड़हु कोहू, सोक कलंक कोठि जनि होहू (राम–(अ)–तुलसी, 418)।

कलंक चढ़ना या चढ़ाना—दे० कलंक का टीका लगना या लगाना।

कलंक देना—दे० कलंक का टीका लगना या लगाना।

कलंक धोना—अपवाद को दूर करना। प्र० तेरी माँ को एक ही आशा थी कि पुत्र × × भारत भूमि का उद्धार करके मेरा कलंक धो डालेगा (स्कंद०–प्रसाद, 76)।

कलंक पुतना या पोतना—दे० कलंक का टीका लगना या लगाना।

कलंक लाना—दे० कलंक का टीका लगना या लगाना।

कलंक होना—अपमान करानेवाला। प्र० यह लड़का हम लोगों के लिए कलंक हो रहा है।

कल आना—कुछ आराम मिलना। प्र० रात भर कल हमें नहीं आई।

है कलाई मुरुक गई तेरी (बोल०–हरिऔध, 149)।

कल ऐंठना, -घुमाना—किसी के मन को सब तरफ से फेरकर अपने वश में कर लेना, किसी के चित्त को किसी ओर फेरना। प्र० वह गुप्त रूप से तो राजा महेन्द्र कुमार सिंह की कल घुमाते रहते थे, पर प्रकट रूप से मिस्टर क्लार्क के आदर-सत्कार में कोई बात उठा न रखते थे (रंग०(1)–प्रेमचन्द, 401)।

कल का, -अंडा, -छोकरा, -लड़का—कम पुराना, अल्पायु, अपरिपक्व। प्र० अभी कल का लड़का—यह क्या जानें कि धामपुर के असली मालिक × × कौन हैं (तितली–प्रसाद, 51)।

कल का अंडा—दे० कल का।

कल का आदमी, -पुतला—दूसरों की इच्छानुसार काम करने वाला। प्र० वह ठहरा कल का आदमी, उस पर क्या भरोसा किया जाय।

कल का छोकरा—दे० कल का।

कल का पुतला—(1) बहुत मेहनती। प्र० वह कल का पुतला है, रात-दिन काम में लगा रह सकता है।

(2) दे० कल का आदमी।

कल का लड़का—दे० कल का।

कल की कल से—कल जो होगा उसकी चिन्ता कल की जाएगी। प्र० कल की कल से, पहले आज का काम तो पूरा करो।

कल की बात—(1) थोड़े दिनों पहले की ही बात। प्र० कालि की बात बालि की सुधि करि समुझि हिताहित खोलि झरोखें (गीता०(सुं)–तुलसी, 12)।

(2) बीती बात। प्र० कल की बातों को कब तक मन में रखोगे, उन सबको भूल जाओ अब।

कल, -को—भविष्य में। प्र० तुम जो कर रहे हो अपनी मर्जी से, कल को न कहना कि मैंने तुम्हें भड़काया था।

कल घुमाना—दे० कल ऐंठना।

कल धरना—शान्त होना। प्र० लड़का तनिक कल नहीं धर रहा है, रोये ही जा रहा है।

कल पकड़ना—चैन होना; शान्ति से बैठ पाना। भाई मुझे बहुत जल्दी है, मैं कल नहीं पकड़ सकता, आज चले ही जाना होगा मुझे।

कल पड़ना, -होना—(1) चैन मिलना। प्र० माँ के लाख यत्न करने पर भी भूखे बच्चे को कल नहीं पड़ती थी (कठ०–दे० स०, 17)।

(2) संतोष होना। प्र० तुम लोगों को तो जितना दो किसी तरह कल ही नहीं होता।

कल पर काम न रखना—हाथ का हाथ काम कर लेना। प्र० जो करना है आज पूरा कर दूंगा, कल पर काम नहीं रख सकता मैं।

कल पाना—(1) चैन मिलना। प्र० यह तो किसी तरह कल नहीं पा रहा है, समझ में नहीं आता कि क्या करूँ।

(2) रंग-ढंग मालूम होना। प्र० उसकी कल पाना बड़ा मुश्किल है।

कल बिगड़ जाना—क्रम गड़बड़ हो जाना। प्र० बेवक्त खाने से कल बिलकुल बिगड़ जाता है।

कल बेकल होना, कल से बेकल होना—(1) पुरजा ढीला होना, जोड़ आदि का शिथिल होना। प्र० फेंको इस मशीन को, कल बेकल हो गई है एकदम।

(2) क्रम बिगड़ना। प्र० काम शुरू करते ही कल से बेकल हो गया।

कल लेना—विश्राम करना। प्र० थोड़ा कल ले लो फिर काम पर जाना नहीं तो तबियत बिलकुल खराब हो जायेगी।

कल से—चैन से। प्र० मुझे तो कोई भी काम कल से करना नसीब नहीं है।

कल से बेकल होना—दे० कल बेकल होना।

कल से बैठना—शान्ति से स्थिर होकर बैठना। प्र० तुम लोग दो मिनट के लिये कल से क्यों नहीं बैठते, इतना हल्ला कर रखा है कि बस!

(किसी की) कल हाथ में होना—कोई वश में होना। प्र० अरे भैया की कल तो भाभी के हाथ में है, उनकी इजाजत बिना कोई काम नहीं होगा।

कल होना—दे० कल पड़ना।

कलई उखड़ना, -उघरना, -उड़ना, -खुलना या खोलना—वास्तविकता या भेद प्रकट होना या करना। प्र० आई उघरि प्रीति कलईसी, जैसी खाटी आमी (सू० सा०–सूर, 4247); सब गुणों में पूरा अकेला परमात्मा है, अतः ठीक परीक्षा पर जिसकी कलई न खुल जाय उसी के धन्य भाग (प्र० मी०–प्र० ना० मि०, 71), कलई खुली तब जब किसी बनिये ने दावा किया (अपनी०–उग्र, 84); मैं मिस मालती से आपकी कलई खोलूंगा (गोदान–प्रेमचंद, 94)।

कलई उघरना—दे० कलई उखड़ना।

कलई उड़ना—दे० कलई उखड़ना।

कलई करना, -पोतना—असलियत को छिपाना। प्र० कलई करने से कुछ न होगा मैं आपकी सारी आदतें अच्छी तरह जानता हूँ।

कलई खुलना या खोलना—दे० कलई उखड़ना।

कलई चढ़ना—प्रभाव होना, आवरण की तरह होना। प्र० जीवन अनुभूतियों की वास्तविकता के साथ कल्पना की कलई घटनाओं पर चढ़ती चली गई होगी और कथा पर रोचकता का रंग गहरा हो गया होगा (सा० जि०–ल० प्र० सु०, 18)।

कलई न चलना, -लगना—युक्ति न चलना। प्र० किसी तरह कलई नहीं चल रही है, क्या करूँ समझ में नहीं आता।

कलई न लगना—दे० कलई न चलना।

कलई पोतना—दे० कलई करना।

कलक गुजरना, -रहना या होना—कष्ट या दुःख होना। प्र० इन लोगों की दुर्दशा देखकर मुझे बड़ी कलक होती है।

कलक रहना या होना—दे० कलक गुजरना।

कल-कल करना—(1) किसी काम को टालना। प्र० कल-कल करते आज कितने दिन हो गये हैं, तुमसे एक स्वेटर नहीं बुनी गई।

(2) जल का मधुर स्वर। प्र० कल-कल करता हुआ झरने का पानी कैसा अच्छा लग रहा था।

(3) बहुत शोर करना। प्र० बच्चों की कल-कल के मारे जी हैरान हो गया।

कल-कल तोड़ना, जोड़-जोड़ तोड़ना—बहुत मारना। प्र० आगे से ऐसी बदतमीज़ी की तो कल-कल तोड़कर रख दूंगा, समझे?

कल-कल लगाना—दे० कल-कल करना (1) एवं (3)।

कलक्टर का साला—जबरदस्त का रिश्तेदार। प्र० बड़ा कलक्टर का साला बनता है, मैं भी दिखा दूंगा बच्चू को।

कलजिभा—दुर्वचन बोलनेवाला। प्र० यह न हुआ कि मुए कलजिभे की ज़बान तालू से खींच लें (आज़ाद०—प्रेमचंद, 77)।

कल-पुर्जा जानना—पूरी स्थिति या मनोवृत्ति जानना। प्र० वह उनके कल-पुरजे खूब जानते थे (प्रेमा०—प्रेमचंद, 107)।

कल-पुर्जा ढीला होना—शरीर का शिथिल होना। प्र० तुम लोग अपने से उनकी बराबरी क्यों करते हो, उनकी उमर हुई अब तो कल-पुर्जे तो ढीले होंगे ही।

कलम अंदाज़ करना—लिखे हुए को बाद देना या काट देना। प्र० उसका लिखा हुआ ध्यान से देख लेने को कहा था, कलम अंदाज़ करने को नहीं।

कलम उठना या उठाना—लिखने का प्रयास करना, लिखना। प्र० ×× इन्होंने पूर्ण स्वाधीन भाव से राजकीय विषयों पर कलम उठाया (राधा० ग्रंथा०—राधा० दास, 497); उत्तरी ध्रुव अथवा विकास सिद्धान्त पर लेख लिखने के लिए चाहे कोई-कोई बरसों विज्ञापन दिया करे ×× कोई उसके लिये कलम न उठावेगा (सा० सी०—महा० द्वि०, 100)।

कलम उठाकर लिखना—जल्दी-जल्दी लिखना। प्र० वह तो ऐसा कलम उठाकर लिखता है कि उसका लिखा मेरी समझ में ही नहीं आता है।

कलम करना—काटना-छाँटना। प्र० पौधा एक बार कलम कर दो, अगली बार बहुत अच्छे फूल निकलेंगे।

कलम का ज़ोर—सशक्त लेखन। प्र० उनकी कलम का ज़ोर तो सबका मन मोह लेता है।

कलम का धनी—श्रेष्ठ लेखक। प्र० प्रसिद्ध 'चन्द्रगुप्त' नाटक के लेखक कला और कलम के धनी प्रसाद जी उपर्युक्त नाटक में चन्द्रगुप्त को ही तो नायक बनाना चाहते थे (सा० जि०—ल० प्र० सु०, 133)।

कलम का पक्का—लिखने में भूल न करनेवाला। प्र० भैया जी कलम के बड़े पक्के हैं।

कलम का बादशाह—लिखने-पढ़ने के काम में होशियार। प्र० ×× पटेश्वरी को भी घमंड था कि हम कायस्थ हैं, कलम के बादशाह, इस मैदान में कोई हमसे क्या बाज़ी ले जायगा (गोदान—प्रेमचन्द, 264)।

कलम का मज़दूर—लिखने का पेशा करनेवाला। प्र० मैं हूँ कलम का मज़दूर (बुद्ध०—बच्चन, 67)।

कलम की कोर के मारे हुए—लिखा-पढ़ी के कारण दाब में आनेवाले। प्र० उनकी कलम के कोर के मारे हुए कितने चौधरी लोग टूट गये थे (दे० दु०—शिव०, 122)।

कलम की जीभ—कलम का अगला भाग।

कलम की नोक—लिखा-पढ़ी। प्र० परानपुर इस्टेट के इन दो कर्मचारियों ने मिलकर कलम की नोक और लाठी के जोर से ज़मींदारी की रक्षा की (परती०—रेणु, 23)।

कलम के बल पर जीना—लेखन द्वारा जीविका अर्जित करना। प्र० आज तो काफी लोग कलम के बल पर जी रहे हैं।

कलम खींचना, -फेरना, -मारना—लिखे हुए को काटना। प्र० मैं जो भी लिखता हूँ आपको पसन्द नहीं आता, आप हमेशा उस पर कलम फेर देते हैं।

कलम गर्म पड़ना—उत्तेजनापूर्ण बातें लिखी जाना। प्र० कलम ज़रा भी गर्म पड़ जाय, तो गर्दन नापी जाय (मान० (2)—प्रेमचंद, 230)।

कलम घिसना—(1) अत्यन्त साधारण लिखने का काम करना। प्र० पर अब मालूम हो गया कि कलम घिसना और बात है, मनुष्य की नाड़ी पहचानना और बात (मान० (4)—प्रेमचंद, 55)।

(2) बराबर लिखते रहना। प्र० खाने-पीने की सुध थोड़े ही रहती है इसे, कब से बैठा कलम घिस रहा है।

कलम चलना—(1) लिखना। प्र० इनकी कलम तो सारे दिन चलती है।

(2) कलम का कागज़ पर अच्छी तरह खिसकना। प्र० यह कलम तो बहुत अच्छी चलती है।

कलम चलाना—(1) लिखना। प्र० आज हमने लेख में भी आँसू ही पर कलम चला दी (सा० सु०—बा० भट्ट, 109); क्या आप समझती हैं, वोटों से मानव जाति का उद्धार होगा या दफ्तरों में और अदालतों में ज़बान और कलम चलाने से (गोदान—प्रेमचंद, 161)।

(2) दे० कलम खींचना।

कलम चूम लेना—किसी लेखन की बहुत प्रशंसा करना। प्र० काश विनय यहाँ होते, तो मेरी कलम चूम लेते (रंग० (2)—प्रेमचंद, 170)।

कलम छेंकना—लिखे हुए को काट देना। प्र० मेरे लिखे हुए पर कलम छेंकते आपको शर्म नहीं आती?

कलम जारी रहना—(1) लिखते रहना। प्र० आपकी कलम तो सारे दिन जारी रहती है।

(2) अधिकार बना रहना। प्र० आज भी उनकी कलम जारी है।

कलम तेज़ होना—तीखी और खरी बातें लिखना। प्र० कांग्रेस के विरुद्ध सेन साहब की कलम तेज़ हुई, चारों ओर आग लग गयी।

कलम तोड़ना—लिखने की हद कर देना; अनूठी उक्ति कहना। प्र० आपने कलम तोड़ दी है, कमाल किया है (पद्म० के पत्र—पद्म० शर्मा, 89); मिर्ज़ा रज्जब अली बेग सरूर ने वह नस्र लिखी कि कलम तोड़ दिये (आज़ाद०—प्रेमचन्द, 31)।

कलम न रुकना—लिखते ही रहना। प्र० वे एक बार लिखना शुरू करते हैं तो उनकी कलम रुकने का नाम नहीं लेती है।

कलम पकड़ लेना—लिखने से रोक देना। प्र० मेहरा बाबू की आजकल खूब चल रही है। हाकिम की कलम पकड़ लेते हैं (मान० (5)—

प्रेमचंद, 248)।

कलम पकड़ना—लिखने की शिक्षा लेना प्रारम्भ करना। प्र० अभी ही तो उसने कलम पकड़नी शुरू की है, उससे और क्या आशा करते हो?

कलम पकड़ना आना—थोड़ा ज्ञान होना। प्र० हर एक व्यक्ति, जिसे कलम पकड़ना आ गया है × × संसार के नेतृत्व का अपने को ही एकमात्र दावेदार समझने लगा है (सा० जि०–ल० प्र० सु०, 43)।

कलम पकड़ने का शहूर न होना—बिलकुल मूढ़ होना। प्र० कलम पकड़ने का शहूर नहीं है और बात दुनिया भर की बनाते हैं।

कलम फेरना—दे० कलम खींचना।

कलम बनाना—कलम को छील-छीलकर ठीक करना।

कलम मारना—दे० कलम खींचना।

कलम में जादू होना—प्रभावशाली लेखन होना। प्र० जिसकी कलम में यह जादू है, उसकी वाणी में क्या कुछ चमत्कार न होगा (रंग० (2)–प्रेमचंद, 244)।

कलम में ज़ोर होना—सशक्त रचना होना। प्र० तुम्हारे कलम में तुम्हारे सब साथियों से अधिक ज़ोर था (पैंतरे–अश्क, 90)।

कलम में ताकत होना—खूब गठा मजमून लिखना; ओजपूर्ण लेखन। प्र० भई मान गये, उनकी कलम में ताकत है।

कलम संभालना—लिखने के लिए प्रस्तुत होना। प्र० हम सब कलम संभालकर बैठे थे, तभी ज़ोर का धमाका हुआ।

कलम से निकलना—लिखा जाना। प्र० ऐसे पवित्र, कोमल और ओजस्वी भाव तुम्हारी कलम से कैसे निकल आते हैं? (रंग०–प्रेमचंद, 219)।

कलम हाथ में उठाना—लिखने का इरादा होना या लिखना। प्र० वैसे वह लिखता बहुत अच्छा है पर किसी तरह कलम ही हाथ में नहीं उठाता है।

कलम कसाई—घूसखोर। प्र० बड़े कलम कसाई हैं ये लोग। घूस लेकर जो बोलोगे कर देंगे।

कलम-घसीट नौकरी—साधारण क्लर्की। प्र० × × मैं अभी तक उन कलम-घसीट नौकरियों के चक्कर में ही हूँ (अँधेरे०–राकेश, 171)।

कलम-तोड़—बेजोड़, लाजवाब। प्र० इस घटना पर कोई कविता आप अवश्य लिखें। कविता कलम-तोड़ होनी चाहिए (पद्म० के पत्र–पद्म० शर्मा, 241)।

कलम-दान देना—लिखने की नौकरी देना। प्र० कलम-दान देकर उन्होंने जैसे बड़ा भारी उपकार कर दिया है!

कलमदारी देना—लिखने का काम करके जिन्दगी बसर करना। प्र० वे तो हमेशा कलमदारी ही देते रहे हैं।

कलमबन्द करना या होना—नोट कर लेना। प्र० फिर भी उनकी तमाम कहानियाँ और उपन्यास × × × × इतने सजीव और यथार्थ लगते हैं मानो उन्होंने मौके पर बैठकर ही तमाम बयान कलमबन्द किया हो (अमृत०–नागर, 164)।

कलमबन्द लगाना—गिनकर पूरे-पूरे लगाना। प्र० कलमबन्द सौ जूते लगाओ इस बदमाश को।

कलमबन्द सुनाना—भला-बुरा कहना। प्र० आप हर वक्त दूसरों को कलमबन्द सुनाते हैं यह अच्छी बात नहीं है।

कलमबद्ध होना—लिखा होना। प्र० ये सारी बातें उनके ग्रंथ में कलमबद्ध हैं।

कलमा पढ़ना—(1) गुणगान करना। प्र० अपनी तकदीर सराहिए कि जिसने आज तक किसी को मुँह नहीं लगाया, वह आपका कलमा पढ़ रही है (गोदान–प्रेमचंद, 164)।

(2) मुसलमान होना। प्र० वह तो कलमा पढ़ने वाला है, वह हमारे मन्दिर में नहीं आयेगा।

कलमा पढ़ाना—(1) मुसलमान बनाना। प्र० अपने घर में शादी करने के लिये तो उसे कलमा पढ़ाना पड़ेगा।

(2) सबक सिखाना। प्र० ठहर तो, देख मैं तुझे कैसा कलमा पढ़ाता हूँ।

कल-मुहाँ—बदचलन; कलंकित। प्र० कत करमुखे नैन भए जीव हरा जेहि बाट (पद०–जायसी, 38/9)।

कलमें छोड़ना—गलमुच्छा रखना।

कलश थापना, -धराना—पूजन के लिए कलश इत्यादि रखकर तैयारी करना। प्र० बहू, तुम अभी तक नहायी नहीं? जल्दी करो कलसा थापना है।

कलश धराना—दे० कलश थापना।

कलह पर पानी छिड़कना—कलह को शान्त करना। प्र० नृप चाहिए नरों को, जो समझे उनकी नादानी रहे छींटता पल-पल पारस्परिक कलह पर पानी (कुरु०–दिनकर, 116)।

कलह बैठना—बराबर कलह होना। प्र० घर में आठ पहर की कलह बैठ गयी (अमृत०–नागर, 33)।

कला—असाधारण शक्ति। प्र० कालका देवी में बड़ी कला है।

कला दिखाना—गुणों को प्रकट करना (अधिकतर व्यंग्यात्मक प्रयोग)। प्र० बहुत कला दिखला चुके, अब बैठो चुपचाप।

कला न लगना—उपाय कारगर न होना। प्र० वहाँ तुम्हारी एक कला न लगेगी, बेकार हाथ-पैर मत फेंको।

कला बजाना—बन्दरों का मजीरा बजाना (मदारियों द्वारा प्रयुक्त)।

कलाई पकड़ना—बलात्कार के उद्देश्य से किसी स्त्री का हाथ पकड़ना।

कलाबट्टू—महा मूर्ख। प्र० बड़े कलाबट्टू हो यार तुम भी।

कलाबाजी करना, -खाना, -दिखाना—उछल-कूद करना। प्र० हम भी उस टाट के बिछौने पर कलाबाजियाँ खाया करते थे (मान० (6)–प्रेमचंद, 8)।

कलाबाजी खाना—दे० कलाबाजी करना।

कलाबाजी दिखाना—दे० कलाबाजी करना।

कलाम होना—शुबहा होना। प्र० उसे तो शुरू से ही कलाम था।

कलासी लेना—छीलकर या मसाला भरकर पत्थर या काठ बराबर करना या बैठाना। प्र० मिस्त्री, कलासी लेने में पूरी सावधानी रखना, पत्थर ऊँचा-नीचा न रह जाय।

कली खिलना, कली-कली खिलना—अत्यन्त प्रसन्न होना। प्र० वाह क्या कली खिली है आपकी।

कली मुरझाना—मुख उदास हो जाना। प्र० वेचारी तब से मुंह ढाके पड़ी है, कली मुरझा गयी है।

कली-कली खिलना—दे० कली खिलना।

कलेजा—(1) हिम्मत। प्र० जब तेरी उमिर थी तो हम भी आकाश पर दिया जलाते थे, पर अब वह कलेजा कहाँ से लायें? (प्रेमा०–प्रेमचंद, 100)।

(2) दया, करुणा आदि का भाव; सहृदयता। प्र० पास जिनके नहीं कलेजा है बेटियाँ बेंच जो अघाते हैं (चुभते०–हरिऔध, 164)।

कलेजा उछलना—(1) घबराहट होना। प्र० तो कभी क्यों न हाथ रख देखें हम उछलते हुए कलेजे पर (चुभते०–हरिऔध, 155)।

(2) मुग्ध होना; हर्षित होना। प्र० जिन पदों में छलक रहा है रस क्यों कलेजा न सुन उसे उछले (चोखे०–हरिऔध, 6)।

कलेजा उड़ना, -उड़ा जाना—होश उड़ा जाना। प्र० बेतरह जाति जो उड़ा देखे जो कलेजा उड़ा नहीं मेरा (चुभते०–हरिऔध, 105)।

कलेजा उड़ा जाना—दे० कलेजा उड़ना।

कलेजा उमड़ा पड़ना—आनन्द या दुःख से मन भरा आना। प्र० जब से तुमने यह खुश खबरी दी कलेजा उमड़ा पड़ता है (राधा० ग्रंथा०–राधा० दास, 721)।

कलेजा उलटना—(1) वमन करते-करते जी घबराना। प्र० सुबह से उलटी करते-करते कलेजा उलट गया।

(2) घबराहट होना। प्र० मेरा कलेजा उलट रहा है, मैं वहाँ न जाऊँगी।

कलेजा कंपाना—भयभीत कराना। प्र० विदार देता शिर था प्रहार से। कंपा कलेजा दृग फोड़ डालता (प्रिय०–हरिऔध, 182)।

कलेजा कचोटना, -करोना, -कसकना—मन में कसक होना। प्र० चोट पर चोट देख कर खाते है कलेजा कचोटता मेरा (बोल०–हरिऔध, 184)।

कलेजा कटना—(1) बहुत बड़ा दुःख पड़ना। प्र० देख कर कटता कलेजा जाति का। फूटती हैं आँख, छाती टूटती (चुभते०–हरिऔध, 78)।

(2) अत्यन्त प्रिय व्यक्ति से विछोह होना। प्र० भाई क्या गया, मेरा तो कलेजा कटकर रह गया।

कलेजा कड़ा करना—हिम्मत करना। प्र० तुम अपने कलेजे को कड़ा करो, यह आघात तुम्हें सहना ही पड़ेगा (सौं०–ब्र० स०, 137)।

कलेजा कबाब होना—जी ऊब जाना; बहुत दुःखी हो जाना। प्र० बहुत हुआ। कान भर गए, कलेजा कबाब हो चुका (राधा० ग्रंथा०–राधा० दास, 636)।

कलेजा करोना—दे० कलेजा कचोटना।

कलेजा कसकना—दे० कलेजा कचोटना।

कलेजा कांपना, -थर-थर करना, -थर्राना—जी दहलना; डर लगना। प्र० तभी से तेंतर का नाम सुनते ही मेरा कलेजा काँप उठता है (मान० (3)–प्रेमचंद, 109)।

कलेजा काठ (का) होना—निष्ठुर या कड़ा होना। प्र० उन लोगों का काठ का कलेजा होगा जो इतने गरीबों को बेकसूर फाँसी पर चढ़वाये देते हैं (प्रेमा०–प्रेमचंद, 232); काठ का बना देती है जी की जी में गाँठ पड़ी (मर्म०–हरिऔध, 136)।

कलेजा काढ़कर देना—सबसे प्रिय वस्तु दे देना। प्र० मैंने अपना कलेजा काढ़कर दे दिया फिर भी उसे सन्तोष नहीं।

कलेजा काढ़ना—(1) बहुत दुःख देना। प्र० घूटँ घटा चहुँधा घिरि कै, गहि काढ़ें करे जो कलापिन कूकें (घन० कवित्त–घना०, 217)।

(2) सबसे प्रिय वस्तु ले लेना। प्र० आँख तो आप काढ़ते ही थे अब लगे काढ़ने कलेजा क्यों (चोखे०–हरिऔध, 50)।

(3) सब-कुछ ले लेना। प्र० इतना कुछ तो तुम्हें मिल गया, अब क्या उसका कलेजा काढ़ लोगे?

कलेजा कूटना—बहुत दुःख करना। प्र० जब तक जीयेंगी, इसी भाँति कलेजा कूटती रहेंगी (ठेठ०–हरिऔध, 30)।

कलेजा खाना—बहुत तंग करना। प्र० आज है खा रहा कलेजा वह है कलेजा खिला जिसे पाला (चोखे०–हरिऔध, 194)।

कलेजा खिलना—प्रसन्न होना। प्र० तुम्हें देखकर उनका कलेजा खिल गया।

कलेजा खिलाना—प्यार से या कष्ट सहकर पालन-पोषण करना। प्र० आज है खा रहा कलेजा वह है कलेजा खिला जिसे पाला (चोखे०–हरिऔध, 194)।

कलेजा खुरचना—(1) जी बहुत कष्ट पाना। प्र० खुरचते देख कर उसे खुरचन, क्यों कलेजा खुरच नहीं जाता (बोल०–हरिऔध, 187)।

(2) बहुत भूख लगना। प्र० कलेजा खुरच रहा है, आखिर खाना कब दोगी?

कलेजा खोलकर—खूब जोरों से; हार्दिकता से। प्र० जित्तन बाबू कलेजा खोलकर ठहाका लगाते हैं (परती०–रेणु, 50)।

कलेजा खोलना—मन की बात कहना। प्र० तुम अपना कलेजा कभी क्यों नहीं खोलतीं?

कलेजा गोदना, -चलनी या छलनी करना, -बनाना, -छेदना, -छोलना, -बींधना, कलेजे में चुटकियाँ लेना—कटु बातें कह कर किसी का जी दुखाना। प्र० पर जो कुछ कहो, नरमी और हमदर्दी के साथ। यह नहीं कि जहर उगलने लगो, कलेजे को चलनी बना डालो (रंग० (1)–प्रेमचंद, 209)।

कलेजा चलनी या छलनी करना—दे० कलेजा गोदना।

कलेजा चलनी या छलनी बनाना—दे० कलेजा गोदना।

कलेजा चलनी होना, -चाक-चाक होना—किसी के हाथों कष्ट पाते-पाते अत्यन्त दुःखी हो जाना। प्र० तुमसे सच कहता हूँ बिरादरी के अन्याय से कलेजा चलनी हो गया है (मान० (3)–प्रेमचंद, 143)।

कलेजा चाक-चाक होना—दे० कलेजा चलनी होना।

कलेजा चिरना—जी को बहुत कष्ट होना। प्र० आज दिन तो हैं कलेजे

चिर गये (चुभते०–हरिऔध, 87)।

कलेजा चीरकर दिखाना, -रखना—मन के वास्तविक भाव को स्पष्ट बतलाना। प्र० तुम कहो तो मैं अपना कलेजा चीरकर दिखला दूं कि मैं तुम्हें कितना चाहती हूँ।

कलेजा चीरकर देखना—मन के वास्तविक भाव की जाँच करना। प्र० तुम कलेजा चीरकर देख लो न कि मैं क्या करता-सोचता हूँ।

कलेजा चीरकर रखना—दे० कलेजा चीरकर दिखाना।

कलेजा छिदना, -छिलना, -बिंधना—बहुत दुःख पहुँचना। प्र० किसका नहीं कलेजा उसको सुन छिला (वैदेही०–हरिऔध, 167)।

कलेजा छिलना—दे० कलेजा छिदना।

कलेजा छूटना—मन का आवेग फूट पड़ना। प्र० विन्दा से कहा, जब कहा तो कलेजा छूट गया, फफक-फफक के रो पड़ी (अमृत०–नागर, 622)।

कलेजा छेदना—दे० कलेजा गोदना।

कलेजा छोटा करना—हतोत्साह होना या अपने को तुच्छ स्थिति में पाकर दुःखी होना। प्र० मलारी किस बात में कम है, उससे ? कलेजा मत छोटा करो कोई (परती०–रेणु, 266)।

कलेजा छोलना—दे० कलेजा गोदना।

कलेजा जलना—(1) दुःख होना। प्र० वेतरह जल रहा कलेजा है ऊबते हैं मलार हैं गाते (बोल०–हरिऔध, 144)।

(2) पाचन ठीक न होने से कलेजे में एक प्रकार की जलन होना। प्र० मैं इस वक्त कुछ न खाऊँगी, कलेजा जल रहा है।

(3) अत्यन्त क्रोध या ईर्ष्या होना। प्र० मेरी बढ़ती से सबसे अधिक उन्हीं का कलेजा जलता है।

कलेजा जलाना—दुःख देना। प्र० क्या अजब, कवि जला भुना कोई है कलेजा जला-जला देता (चोखे०–हरिऔध, 8)।

कलेजा टूक-टूक होना—शोक से हृदय विदीर्ण होना। प्र० अब मेरा कलेजा टुकड़े-टुकड़े हुआ जाता है (इंशा०–इंशा०, 99); विस्नाथ भैया ! कलेजा टूक-टूक हो रहा है (मैला०–रेणु, 264)।

कलेजा टूटना—(1) हिम्मत पस्त होना। प्र० हाथ की पूँजी गँवा, पड़ टूट में है कलेजा टूटता किसका नहीं (चोखे०–हरिऔध, 18)।

(2) दुःख से चूर-चूर हो जाना। प्र० कोई प्राणी कब तक भला खिन्न होता रहेगा ढालेगा अश्रु कब तक क्यों थाम टूटा-कलेजा (प्रिय०–हरिऔध, 262)।

(3) कमजोर हो जाना। प्र० अभी वह कौन काम करने लायक है। इसी उमिर में मजूरी करने लगेगा, तो कलेजा टूट जायगा (रंग (2)–प्रेमचंद, 106)।

कलेजा ठंडा करना, -पड़ना, -होना—सन्तोष पहुँचाना या होना। प्र० आज तो तुम्हारे आत्माराम ने हमारा और रुप्पन का घर फुंकवा के अपना कलेजा ठंडा कर लिया (अमृत०–नागर, 659)।

कलेजा ठंडा पड़ना—दे० कलेजा ठंडा करना।

कलेजा ठंडा होना—दे० कलेजा ठंडा करना।

कलेजा डोलना—मन में कुछ अन्य विचार उठना; मन अस्थिर होना। प्र० जाति-प्रथा की सताई मुन्ना का कलेजा डोला (चोटी०–निराला, 123)।

कलेजा तर होना—(1) अत्यन्त प्रसन्नता होना। प्र० आज का संगीत सुनकर कलेजा तर हो गया।

(2) तरावट आना। प्र० ऐसा ठंडा पानी था कि कलेजा तर हो गया।

कलेजा तोड़कर, -तोड़-तोड़ कर—बड़ी मेहनत से। प्र० कोई तो कलेजा तोड़-तोड़कर कमाये × × और कोई सुख की नींद सोये × × (मान० (7)–प्रेमचंद, 168)।

कलेजा तोड़-तोड़कर—दे० कलेजा तोड़कर।

कलेजा थर-थर करना—दे० कलेजा काँपना।

कलेजा थर्राना—दे० कलेजा काँपना।

कलेजा थाम लेना—(1) दिल कड़ा करना। प्र० थाम कलेजा बार-बार कैसे मन को समझाऊँगी (वैदेही०–हरिऔध, 59)।

(2) किसी प्रकार विपत्ति को सहना। प्र० देखिये प्रयोग (1)।

(3) कायल होना। प्र० अमर ने कलेजा थाम लिया—गजब का दर्द है भाई ! दिल मसोस उठा (कर्म०–प्रेमचंद, 93)।

कलेजा थामकर—(1) डरते-डरते। प्र० सभी ऊपर कलेजा थामे खड़ी थीं (एक चादर०–बेदी, 19)।

(2) बहुत दुःखपूर्वक। प्र० मैंने कलेजा थामकर हामी भर दी।

कलेजा थामकर बैठना, -रह जाना, -पकड़कर बैठ जाना, -रह जाना—शोक के वेग को दबाकर रह जाना; मन मसोसकर रह जाना। प्र० देख यह जाति की बड़ी सुबुकी रह गये थाम कर कलेजा हम (चुभते०–हरिऔध, 73)।

कलेजा थामकर रह जाना—दे० कलेजा थामकर बैठना।

कलेजा थामकर रोना—बहुत दुःख करके रोना। प्र० देख करके सिरधरों का सिर फिरा हैं कलेजा थाम कर हम रो रहे (चुभते०–हरिऔध, 118)।

कलेजा दरकना—मन को बहुत कष्ट होना। प्र० दलकि उठेउ सुनि हृदय कठोरू (राम० (अ)–तुलसी, 397)।

कलेजा दहकना—हृदय क्रोध से भर जाना। हिन्दू-मुसलमान स्त्रियों के भी कलेजे दहक उठे (झाँसी०–वृं० वर्मा, 272)।

कलेजा दहलना या दहलाना—बहुत भयभीत होना या बना देना। प्र० वह शोरगुल, चारों ओर की मार-काट, हम लोगों के कलेजे दहल गये।

कलेजा दूना होना—और उत्साह पाना। प्र० धनिया का कलेजा दूना हो गया (गोदान–प्रेमचंद, 45)।

कलेजा दो टूक होना—अत्यन्त द्रवित होना। प्र० उसका विलखना देखकर कलेजा दो टूक हुआ जाता था।

कलेजा धंसा जाना—जी डूबा जाना; अशक्त हुए जाना। प्र० न जाने क्यों आज सबेरे से ही कलेजा धंसा जा रहा है।

कलेजा धक् से होना—डर से सहम जाना। प्र० बाबू रामनाथ का कलेजा

धक् से हुआ (भिखा०—कौशिक, 17)।

कलेजा धक्-धक् करना,-धड़कना,-धसकना,-धुकुर-पुकुर करना, -हुकुर-पुकुर करना—(1) भयभीत हो उठना। प्र० डर के मारे कलेजा धसकने लगा है (मृग०—वृं० वर्मा, 351); रमा का कलेजा धक्-धक् करने लगा (गबन—प्रेमचंद, 211); जाति को देख बेधड़क जाते कलेजा धड़क रहा मेरा (चुभते०—हरिऔध, 72)।

कलेजा धड़कना—दे० कलेजा धक्-धक् करना।

कलेजा धड़-धड़ करना—बहुत डरना। प्र० उनके पाँव ही न उठते थे। कलेजा धड़-धड़ कर रहा था (निर्मला—प्रेमचंद, 53)।

कलेजा धड़काना—डरा देना। प्र० वाह जी, तुमने नाहक मेरा कलेजा धड़का दिया।

कलेजा धसकना—दे० कलेजा धक्-धक् करना।

कलेजा धुकुर-पुकुर करना या होना—दे० कलेजा धक्-धक् करना।

कलेजा निकलना—(1) बहुत दुःख होना। प्र० जाति का देख बेकलेजापन है कलेजा निकल पड़ा मेरा (चुभते०—हरिऔध, 73)।

(2) बहुत प्रिय चीज का चली जाना। प्र० वह नेकलेस क्या चोरी गयी, मेरा कलेजा ही निकल गया।

(3) बहुत परिश्रम या कष्ट होना। प्र० सुबह से फावडा चलाते-चलाते कलेजा निकल गया पर आपको सन्तोष न हुआ।

कलेजा निकाल कर देना, -रख देना—अत्यन्त प्रिय वस्तु समर्पण करना। प्र० निज कलेजा निकाल देवें जो वे कलेजा कभी कंपायें क्यों (चुभते०—हरिऔध, 146), हम स्त्रियाँ अपना कलेजा निकालकर रख दें, लेकिन पुरुषों का दिल न पसीजेगा (मान० (2)—प्रेमचंद, 287)।

कलेजा निकालकर रख देना—दे० कलेजा निकालकर देना।

कलेजा निकालकर ले लेना—किसी का माल या प्रिय चीज चुराकर ले लेना। प्र० तूने तो उस बेबस का कलेजा ही निकालकर ले लिया।

कलेजा निकालना—(1) बहुत प्रिय चीज ले लेना। प्र० वाह भाई, तुम मेरा कलेजा ही निकालना चाहते हो?

(2) बहुत कष्ट देना। प्र० क्यों उस बेचारी का कलेजा निकालते हो?

(3) मोहित करना। प्र० उस नाजनीन ने मेरा कलेजा ही निकाल लिया।

कलेजा नुचना—मन को पीड़ा होना। प्र० है कलेजा नुच रहा बेचैन हूँ हो रहे हैं रोंगटे फिर-फिर खड़े (चुभते०—हरिऔध, 137)।

कलेजा पक जाना—दुःख सहते-सहते तंग आ जाना। प्र० पर जब खता पर खता देखी तो उनका कलेजा पक गया (गु० नि०—बा० मु० गु०, 456); × × हमारा तो × × इत्ता कलेजा पक गया है कि जी चाहता है जिन दम इनका ब्याह होय उसी दम जाके कुएँ में डूब मरें (अमृत०—नागर, 458)।

कलेजा पकड़कर बैठ जाना—दे० कलेजा थामकर बैठना।

कलेजा पकड़कर रह जाना—दे० कलेजा थामकर बैठना।

कलेजा पकड़ना—(1) दुःख करना। प्र० कलेजा अहह क्यों न पकड़े? वह क्या करे शीश पर जिसके चढ़ विपत्ति अकड़े? (मर्म०—हरिऔध, 123)।

(2) विपत्ति के समय धैर्य धारण करना। प्र० ऐसे में कलेजा पकड़ना ही पड़ेगा बेटा।

कलेजा पकाना—इतना दुःख देना कि जी ऊब जाय, हैरान करना। प्र० बहुत कलेजा न पकाओ। हमारे दिल पर जो गुजर रही है, हमीं जानते हैं (आजाद०—प्रेमचंद, 171)।

कलेजा पत्थर का करना—भारी दुःख सहने के लिये चित्त को दृढ़ करना। प्र० अपने कलेजे को पत्थर-सा करके अब तू मुझे विष दे (राधा० ग्रंथा०—राधा० दास, 566); पर, तुमने जब पत्थर का किया कलेजा असली माता के पास भाग्य ने भेजा (चक्र०—दिनकर, 272)।

कलेजा पत्थर का होना—बहुत कठोर हृदय होना। प्र० रानी मैं जानी अयानी महा, पबि पाहनहू तें कठोर हियो है (कवि०—तुलसी, 33); आजकल की औरतों का कलेजा सचमुच पत्थर का होता है (रंग० (1)—प्रेमचंद, 167)।

कलेजा पसीजना, -पानी होना—करुणा होना। प्र० किस तरह तब पसीजता कोई जब कलेजा नहीं पसीजा ही (चोखे०—हरिऔध, 50)।

कलेजा पानी होना—दे० कलेजा पसीजना।

कलेजा पिघलना—किसी के प्रति कठोरता के बाद थोड़ा मुलायम या सहृदय होना। प्र० क्या अभी तक माँ का कलेजा नहीं पिघला?

कलेजा पुदीना के पत्ता बराबर होना—कमजोर दिल का होना। प्र० मनका के बाप को तो जानती ही हो × × कलेजा तो पुदीना के पत्ता बराबर है (परती०—रेणु, 142)।

कलेजा पोढ़ होना—हिम्मत होना; मन में भरोसा होना। प्र० तब भला कैसे कलेजा पोढ़ हो जब कलेजे में किसी पानी लगे (बोल०—हरिऔध, 185)।

कलेजा फटना या फटा जाना—(1) मन को बहुत कष्ट होना। प्र० न जाने क्यों इसके रोने पर मेरा कलेजा फटा जाता है (भा० ग्रं० (1)—भारतेन्दु, 310); लूट देख माल की हैं लट रहे फूट देखे है कलेजा फट रहा (चुभते०—हरिऔध, 108)।

(2) किसी के दुर्व्यवहार से मन का उसकी ओर से खिन्न हो जाना। प्र० मेरा कलेजा अब मामी की ओर से फट गया है।

(3) ईर्ष्या होना। प्र० तुम्हारा कलेजा तो जरूर फटता होगा।

कलेजा फाड़कर—दिल खोलकर; जी जान से; कठोर परिश्रम के साथ। प्र० यहाँ कलेजा फाड़कर काम करो पर किसी के आँख ही नहीं लगता।

कलेजा फाड़ना—दुःख देना। प्र० जब कलेजा और का हैं फाड़ते और कहते बात हैं ताड़ी हुई (चोखे०—हरिऔध, 122); इसी प्रकार सुलोचना सुननेवालों का कलेजा फाड़ रही थी (मा०—कौशिक, 416)।

कलेजा फुंकना—जी को कष्ट होना। प्र० सचाई वही ठीक है जिसमें कलेजा न फुंके (बौने०—रां० रा०, 143)।

कलेजा फूल उठना—अत्यन्त प्रसन्न होना। प्र० फूल मुंह से झड़े किसी कवि के है कलेजा न फूलता किसका (चोखे०—हरिऔध, 7)।

कलेजा बड़ा होना—उदार-हृदय होना। प्र० बहुत बड़ा कलेजा चाहिए किसी का करने को सम्मान (बुद्ध०—बच्चन, 105)।

कलेजा बढ़ जाना—उत्साह होना। प्र० चढ़ गये चाव चित गया चढ़ बढ़ बढ़ गये बढ़ गया कलेजा है (चोखे०—हरिऔध, 18)।

कलेजा बल्लियों उछलना, -बाँसों उछलना, -हाथों उछलना—आनन्द से चित्त प्रफुल्ल होना; भय या आशंका से जी धक्-धक् करना। प्र० सो आज अचानक, अकस्मात् साक्षात् अन्नदाता ने जो मुझसे दारू माँगी और उन संक्षिप्त दो शब्दों की आज्ञा के साथ उनके नेत्रों से जो चमक निकली, उससे तो मेरा कलेजा बाँसों उछलने लगा और मैं पसीने से नहा गई (गोली—चतुर०, 40-41); सब बला टाल देस के सिर की जो कलेजा न बल्लियों उछला (चुभते०—हरिऔध, 35)।

कलेजा बाँसों उछलना—दे० कलेजा बल्लियों उछलना।

कलेजा बिंधना—दे० कलेजा छिदना।

कलेजा बिछा देना—सहायता करना; त्याग करना। प्र० जिस जगह कांटा मिला बिखरा हुआ, निज कलेजा थे बिछा देते वहाँ (चुभते०—हरिऔध, 144)।

कलेजा बींधना—दे० कलेजा गोदना।

कलेजा बैठा जाना—(1) बहुत घबराहट होना। प्र० बैठ सुख से किस तरह कोई सके जब कलेजा जा रहा हो बैठता (बोल०—हरिऔध, 184)।
(2) जोश का कम होना। प्र० अब मुझसे और नहीं होता, मेरा कलेजा बैठ गया है।

कलेजा मजबूत करना—हिम्मत बांधना। प्र० कलेजा मजबूत करके बोली —इस फेर में न रहिएगा पंडित जी (गोदान—प्रेमचन्द, 48)।

कलेजा मरोड़ना—दुःख से हृदय का कचोटना। प्र० घर की हालत देख-देखकर उसका कलेजा मरोड़ता रहता था।

कलेजा मलना, -मसलना—जी दुखाना। प्र० कोई कलेजे में बैठा उसे मल रहा है (सु० सु०—सुदर्शन, 148)।

कलेजा मसकना—मन में अत्यन्त कष्ट होना। प्र० बे-तरह भर गये मसोसों से है कलेजा मसक-मसक जाता (बोल०—हरिऔध, 185)।

कलेजा मसलना—दे० कलेजा मलना।

कलेजा मसोसकर रह जाना, -मसोसना—मन के दुःख को मन में ही दवा कर रह जाना। प्र० रमानाथ का कलेजा मसोस उठा (गबन—प्रेमचंद, 23)।

कलेजा मसोसना—दे० कलेजा मसोसकर रह जाना।

कलेजा मुंह को आना, -तक आना—(1) जी घबराना; संताप होना। प्र० अपनी व्यथा कहूँ मैं कैसे, आह कलेजा मुंह को आया (वैदेही० —हरिऔध, 72)।
(2) खुशी होना। इन सब बातों को सुनकर मेरा कलेजा मुंह को आने लगा (गोली—चतुर०, 251)।

कलेजा मुंह तक आना—दे० कलेजा मुंह को आना।

कलेजा रखना—साहस होना। प्र० कलेजा रखते हो तो चले जाओ।

कलेजा सन्न (से) होना—जी धक् से हो जाना। प्र० नादिर का कलेजा सन्न से हो गया (मान० (3)—प्रेमचंद, 170)।

कलेजा सम्हालना—शान्त और स्थिर रहना; दुःख को सहना। प्र० कलेजा सम्हालो बेटी, ऐसे अधीर न हो।

कलेजा सालना—जी को दुःख होना। प्र० इस बात को लेकर उनका कलेजा बराबर सालता रहता है।

कलेजा सुलगना या सुलगाना—क्रोधित होना या करना; मन को कष्ट होना या पहुँचाना। प्र० मुद्दतें हो गईं सुलगते ही अब कलेजा न जाय सुलगाया (चुभते०—हरिऔध, 111)।

कलेजा सूख जाना—भयभीत होना; आशंकित होना। प्र० बेटे की बातें सुन उसका कलेजा सूख गया।

कलेजा हाथ भर का होना—(1) उत्साह होना। प्र० आपने पीठ ठोंक दी, हम लोगों का कलेजा हाथ भर का हो गया।
(2) सहनशील या उदार होना। प्र० मेरा कलेजा हाथ भर का नहीं है कि सब कुछ चुप-चाप पी जाऊँ।

कलेजा हाथों उछलना—दे० कलेजा बल्लियों उछलना।

कलेजा हिलना या हिला देना—(1) अत्यन्त भय या आशंका होना या पैदा करना। प्र० पाप किये जो भय विह्वल हो तुरत कलेजा हिलता (मर्म०—हरिऔध, 7)।
(2) बहुत दुःख होना या पहुँचाना। प्र० वहीं आपकी मृत्यु हुई। इस खबर ने कलेजा हिला दिया (गु० नि०—बा० मु० गु०, 35); श्यामू का नाम सुनकर सुलोचना का कलेजा हिल गया (मा०—कौशिक, 90)।

कलेजा हुकुर-पुकुर करना—दे० कलेजा धक्-धक् करना।

कलेजा जली—दुखिया। प्र० उस कलेजा-जली की भी कोई चिन्ता करता है?

कलेजे का आदमी, कलेजे वाला आदमी—हिम्मतवाला आदमी। प्र० मुन्शी रामसेवक बड़े हौसले और कलेजे के आदमी थे (मान०(8)—प्रेमचंद, 20)।

कलेजे का घाव—आन्तरिक कष्ट। प्र० यह व्यंग्य करके वशीर खाँ ने महबूबा के कलेजे के घाव पर मानो नमक छिड़क दिया (सात०—नागर, 146)।

कलेजे का छाला छिलना—घोर यातना होना। प्र० मेरे तो कलेजे के छाले छिले हुऐ हैं (बूंद०—नागर, 32)।

कलेजे का टुकड़ा, -की कोर—(1) अत्यन्त प्यारा। प्र० कर न दे टुकड़े कलेजे के वही है जिसे टुकड़ा कलेजे का कहा (चोखे०—हरिऔध, 194)।
(2) पुत्र या सहोदर। प्र० तो मिलाने से मिलें क्यों दूसरे जो न टुकड़े हों कलेजे के मिले (चोखे०—हरिऔध, 164)।

कलेजे का टुकड़ा-टुकड़ा करना—बहुत दुःख देना। प्र० कर न दे टुकड़े

कलेजे के वही है जिसे टुकड़ा कलेजे का कहा (चोखे०—हरिऔध, 194)।

कलेजे की कोर—दे० कलेजे का टुकड़ा।

(किसी के) कलेजे की सुई (किसी के) कलेजे से फार बनकर निकलना—किसी को पहुँचायी गयी थोड़ी पीड़ा का बहुत बड़ा दुष्परिणाम भोगना। प्र० बेचारे सूरदास के कलेजे की सुई इनके कलेजे से फार होकर निकलेगी (दे० दु०—शिव०, 159)।

कलेजे के छिलके उतारना—जी को कष्ट पहुँचाना। प्र० अपनी बात जरूर कहो गुइयाँ, पर यों मेरे कलेजे के छिलके तो न उतारो (सात० —नागर, 132)।

कलेजे के पार होना—गहरा असर करना। प्र० तुम्हारी बातें माँ के कलेजे के पार हो गयी हैं।

कलेजे को चोट लगना, -पर (में) घूंसा लगना, -पर (में) घूंसे-सा लगना—किसी बात या घटना से हृदय को पीड़ा पहुँचना। प्र० होरी लाल ने देखा तो कलेजे पर घूंसा-सा लगा (जिन्दगी—निर्गुण, 105)।

कलेजे को ठंडक पड़ना, -पहुँचना, -पर मक्खन मला जाना—मन को शान्ति मिलना। प्र० ×× शायद वह दिलाराम की उन्नति से पीड़ित होकर उसे पराजित करने की इच्छा से ही लवसूल को यहाँ छोड़ गया है और अब उसके कलेजे को ठंडक पड़ेगी (सात०—नागर, 130)।

कलेजे को ठंडक पहुँचना—दे० कलेजे को ठंडक पड़ना।

कलेजे को मसलना—दिल को चोट पहुँचना। प्र० तुम्हारी ये ही बातें उसके कलेजे को मसल देती हैं।

कलेजे पर घाव होना—मन को पीड़ा पहुँचना। प्र० क्षमाशील के कलेजे पर ऐसा घाव क्यों होने लगा है? (प्रीक्षा०—श्री० दास, 131)।

कलेजे पर घूंसा लगना—दे० कलेजे को चोट लगना।

कलेजे पर घूंसे-सा लगना—दे० कलेजे को चोट लगना।

कलेजे पर चढ़ बैठना—सामने वाले को एकदम दबा देना; मुंह बन्द कर देना; अत्यन्त क्रोध प्रकट करना। प्र० वे तो बात करते कलेजे पर चढ़ बैठते हैं।

कलेजे पर चोट आना, -चलना, लगना—मार्मिक चोट पहुँचना। प्र० जाति के पाँचवे सवारों में और उनमें जिन्हें कहें बरतर देखकर चोट बेतरह चलती चोट है लग रही कलेजे पर (चुभते०—हरिऔध, 73)।

कलेजे पर चोट चलना—दे० कलेजे पर चोट आना।

कलेजे पर चोट देना—हृदय को पीड़ा पहुँचाना। प्र० तुम क्यों बार-बार माँ के कलेजे पर चोट दे रही हो?

कलेजे पर चोट लगना—दे० कलेजे पर चोट आना।

कलेजे पर छाना—पूरा असर होना। प्र० एक न पीड़ परीति की, रही कलेजे छाइ (कबीर ग्रंथा०—कबीर, 8)।

कलेजे पर छुरी चलना या चलाना, -फिरना या फेरना—प्रेम या आसक्ति का गहरा असर होना या डालना; कष्ट होना या देना। प्र० है मोहिनी, देखते ही कलेजे पर छुरी चल जाती है (मान० (2)—प्रेमचंद, 54)।

कलेजे पर छुरी फिरना या फेरना—दे० कलेजे पर छुरी चलना या चलाना।

कलेजे पर पत्थर की सिल रखना, -पत्थर रखना—हृदय बहुत कठोर बनाना। प्र० मैं तो चाहे कलेजे पर पत्थर की सिल रख कर बैठा भी रहता, पर तुम्हारी चाची को कैसे समझाऊँ? (प्रेमा०—प्रेमचंद, 411)।

कलेजे पर पत्थर रखना—दे० कलेजे पर पत्थर की सिल रखना।

कलेजे पर बिजली गिरना—मन को गहरी चोट पहुँचना। प्र० बिजलियाँ जिससे कलेजों पर गिरें इस तरह से भौंह कोई क्यों चले (बोल० —हरिऔध, 30)।

कलेजे पर मक्खन मला जाना—दे० कलेजे को ठंडक पहुँचना।

कलेजे पर मुक्का लगना—मन को बड़ा आघात पहुँचना। प्र० सुमित्रो के कलेजे पर सत्य का मुक्का लगा कि ओह, ये अपना स्वारथ सोचते हैं (अमृत०—नागर, 441)।

कलेजे पर रखा रहना—(1) किसी बात की स्मृति सर्वदा बनी रहना। प्र० तुम्हारी वे बातें, गमगीन सूरत आज भी कलेजे पर रखी है। (2) भोजन का न पचने के कारण ऐसा लगना मानो ऊपर चला आ रहा हो। प्र० सुबह का खाना अभी तक कलेजे पर रखा है।

कलेजे पर (में) लकीर खिंच जाना—किसी अपमान या बात का हृदय में गहरे लग जाना। प्र० उनकी वे कटु बातें मैं कभी नहीं भूल सकता, मेरे कलेजे पर लकीर खिंच गयी है।

कलेजे पर लिखा होना—स्मृति बनी होना। प्र० तुम्हारी एक-एक बातें मेरे कलेजे पर लिखी हैं।

कलेजे पर साँप लोटना—चित्त में किसी बात का स्मरण आ जाने से एक बारगी भय या शोक छा जाना। प्र० हा! हा! मेरे हृदय पर यों साँप क्यों लोटता है? (प्रिय०—हरिऔध, 87); किन्तु वे सामर्थ्यवान होकर हमें न पूछें, हमारे यहाँ तीज और चौथ न भेजें, तो हमारे कलेजे पर साँप लोटने लगता है (मान० (4)—प्रेमचंद, 207)।

कलेजे पर सिल रखकर, -हाथ रखकर—अत्यन्त कठोर बनकर। प्र० चलो कलेजे पर सिल रखकर अब रोहिताश्व की क्रिया करो (भा० ग्रं० (1)—भारतेन्दु, 315); मनुष्य अपने वर्तमान संताप दुःख ××को दम साधकर कलेजे पर हाथ दिये सह लेता है (सौं०—ब्र० स०, 142)।

कलेजे पर सोना—अत्यन्त प्यारा होना। प्र० कमाऊ पूत कलेजे मूत।

कलेजे पर हाथ धरना, -हाथ रखकर देखना, -हाथ रखना—ठंडे दिल से सोचना; सचाई स्वीकार करना। प्र० तुम खुद अपने कलेजे पर हाथ रखकर देखो कि तुम क्या चाहते हो।

कलेजे पर हाथ रखकर—(1) अपने दिल से। प्र० जाति पत कब रखी गई पत खो हाथ रखकर कहें कलेजे पर (चुभते०—हरिऔध, 98)। (2) दे० कलेजे पर सिल रखकर।

कलेजे पर हाथ रखकर देखना—दे० कलेजे पर हाथ धरना।

कलेजे पर हाथ रखना—दे० कलेजे पर हाथ धरना।

कलेजे में आग लगना या लगाना—(1) कष्ट होना या देना । प्र० आग बल उठने कलेजे में लगे आँख से चिनगारियाँ कढ़ती रहें । देख उसको जी अगर जलता रहे तो हँसी को चाँदनी कैसे कहें (चोखे० –हरिऔध, 120) ।

(2) ईर्ष्या होना । प्र० बेतरह जलभुन लगाई लाग से क्यों कलेजे में लगावें आग हम (बोल०–हरिऔध, 186) ।

(3) प्रेम जागरित होना या करना । प्र० गई आगि उर लाय, आगि लैन आई जु तिय (रहीम कवि०–रहीम, 32) ।

कलेजे में उतरना—मन को प्रभावित करना । प्र० कण्ठ-स्वर भी इतना मधुर है कि उनके पद बाण की तरह सीधे कलेजे में उतर जाते हैं (मान० (7)–प्रेमचन्द, 5) ।

कलेजे में कटार उतार लेना—कटार से आत्महत्या कर लेना । प्र० रानी पद्मावती कटार कलेजे में उतार लेने को प्रस्तुत हो गयीं ।

कलेजे में करक होना, -काँटा खटकना—हृदय में पीड़ा होना । प्र० हरि रस जे जन वेधिया, सतगुण सों गणि नाहि लागी चोट सरीर मैं, करक कलेजे मांहि (कबीर ग्रंथा०–कबीर, 63); मेरे कलेजे में यही काँटा खटका करता है (भिखा०–कौशिक, 60) ।

कलेजे में कसकना, -कोंचना, -खरकना—हृदय को कष्ट देना । प्र० कंचन अटा पर जराऊ परजंक, तऊ कुंजन की सेजैं वे करेजे खटकत्ति हैं (क० र०–सेनापति, 45) ।

कलेजे में काँटा खटकना—दे० कलेजे में करक होना ।

कलेजे में काँटे-सा चुभना, -घाव करना, -तीर सा चुभना, -लगना, -बर्छी की अनी की तरह चुभना, -चुभना, -भाला चुभना, -भाले-सा चुभना, -शूल चुभना—हृदय को बहुत कष्ट होना । प्र० जबहूँ मार्‌या खैंचि करि, तब मैं पाई जांणि । लागि चोट मरम्म की गई कलेजा छांणि (कबीर ग्रंथा०–कबीर, 8); बिनु पिय सूल करेजवा, लखि तुव फूल (रहीम कवि०–रहीम, 40); फिर कोवलन की बात उसके कलेजे में घाव कर गई (सुहाग०–नागर, 143); इस वक्त तो गुलाम कादिर खाँ के बोल हमारे कलेजे में बर्छी की अनी-से चुभ रहे हैं (सात०–नागर, 139) ।

कलेजे में कोंचना—दे० कलेजे में कसकना ।

कलेजे में खटकने वाला काँटा—अत्यन्त अप्रिय एवं दुःखदायी । प्र० लेकिन मेरे लिए यह शब्द क्या है? हृदय में उठने वाला शूल, कलेजे में खटकने-वाला काँटा, आँखों में गड़ने वाली किरकिरी × × (मान० (3)–प्रेमचंद, 24) ।

कलेजे में खरकना—दे० कलेजे में कसकना ।

कलेजे में गाँठ पड़ना—मनोमालिन्य होना । प्र० तब सके गाँठ हम कहाँ मतलब पड़ गई गाँठ जब कलेजे में (चोखे०–हरिऔध, 29) ।

कलेजे में घाव करना—दे० कलेजे में काँटे-सा चुभना ।

कलेजे में घुसना, -पैठना—(1) विश्वास जमाना; प्रभाव डालना । प्र० किस कलेजे में कवि नहीं पैठता (चोखे०–हरिऔध, 7) ।

(2) किसी का भेद लेने के लिए उससे मेल-जोल बढ़ाना । प्र० किसी के कलेजे में मैं आखिर कहाँ तक बैठूं ।

कलेजे में चुटकियाँ लेना—दे० कलेजा गोदना ।

कलेजे में छाले पड़ना—मर्मान्तक पीड़ा होना । प्र० देखिये आप आ कलेजे में पड़ गये कुछ अजीब छाले हैं (चुभते०–हरिऔध, 3) ।

कलेजे में छेद करना या होना—बहुत जी दुखाना या दुखना । प्र० ऊधौ कमल नयन की बतियाँ छिदि-छिदि जाति करेजैं (सू० सा०–सूर, 4465); बात से छेद-छेदकर के क्यों, छेद कर दे किसी कलेजे में (चोखे०–हरिऔध, 18) ।

कलेजे में जख्म होना—दे० कलेजा जलना ।

कलेजे में ठंडक पड़ना—सुखी होना । प्र० इन बातों से तेरे कलेजे में ठंडक पड़ती है (मा–कौशिक, 50) ।

कलेजे में ठेस लगना—मन को पीड़ा पहुँचना । प्र० जो कलेजा है कलप जाता नहीं ठेस लड़की के कलेजे में लगे (चुभते०–हरिऔध, 156) ।

कलेजे में डालना—(1) पास रखना । प्र० जी करता है इसे कलेजे में डाल लूं !

(2) बहुत प्यार करना । प्र० ताऊजी मुझे कलेजे में डालकर रखते हैं ।

कलेजे में तीर-सा चुभना—दे० कलेजे में काँटे-सा चुभना ।

कलेजे में तीर-सा लगना—दे० कलेजे में काँटे-सा चुभना ।

कलेजे में दम होना—हिम्मत होना । प्र० उसके कलेजे में दम हो तो आ जाए मैदान में ।

कलेजे में पानी लगना—पानी पीने पर कलेजे में एक प्रकार का दर्द होना । प्र० तब भला कैसे कलेजा पोढ़ हो जब कलेजे में किसी पानी लगे (बोल०–हरिऔध, 185) ।

कलेजे में पीर (सी) उठना—हूक-सी उठना; हृदय को पीड़ा होना । प्र० उसकी याद किसी तरह भुलाए नहीं भूलती, रह-रहकर कलेजे में पीर-सी उठती है ।

कलेजे में पैठना—दे० कलेजे में घुसना ।

कलेजे में बर्छी की अनी की तरह चुभना—दे० कलेजे में काँटे-सा चुभना ।

कलेजे में बर्छी चुभना—दे० कलेजे में काँटे-सा चुभना ।

कलेजे में बिठाना—प्रेम करना; हर समय मन में रखना । प्र० तुम्हें देखकर तो यही जी चाहता है कि कलेजे में बिठा लें (गोदान–प्रेमचन्द, 50) ।

कलेजे में भाला चुभना—दे० कलेजे में काँटे-सा चुभना ।

कलेजे में भाले-सा चुभना—दे० कलेजे में काँटे-सा चुभना ।

कलेजे में रखना—प्रिय होना । प्र० क्या हुआ प्यार-पालने में पल जो नहीं है कमाल भेजे में । वे रख जायँ कालिजों में भी जो गये हैं रखे कलेजे में (चोखे०–हरिऔध, 28) ।

कलेजे में लगना—(1) कलेजे पर भारी मालूम होना । प्र० तुम्हारी यह उदासीनता कलेजे में लगती है, पीड़ा देती है ।

(2) कलेजे या पेट में विकार उत्पन्न करना । प्र० नैनीताल का पानी कलेजे में लगता है ।

कलेजे में बाण लगना—किसी बात का हृदय को बहुत ही बुरा लगना या उससे पीड़ा पहुँचना । प्र० उसकी हर बात से तुम्हारे कलेजे में बाण क्यों लगता है ?

कलेजे में शूल चुभना—दे० कलेजे में काँटे-सा चुभना ।

कलेजे में सनाका होना—जी धक् से हो जाना । प्र० जगन्नाथ के कलेजे में सनाका हो गया (जिन्दगी–निर्गुण, 25) ।

कलेजे में सुई चुभना या चुभाना—मर्मान्तिक पीड़ा होना या देना । प्र० बेटियों को वेंच बेवों को सता क्या कलेजे में नहीं चुभती सुई (चुभते० –हरिऔध, 163) ।

कलेजे से चिपकाए रहना, -लगाकर रखना—हर समय, यत्नपूर्वक पास रखना; बहुत प्रेम करना । प्र० तो क्या तुम इसे जिन्दगी भर कलेजे से चिपकाए रहोगी ?

कलेजे से धुआँ उठना—आह निकलना । प्र० मेरे कलेजे से उठते धुएँ की ओर किसी की नजर क्यों नहीं जाती ।

कलेजे से लगाकर रखना—दे० कलेजे से चिपकाए रहना ।

कलेजे से लगाना—(1) अत्यन्त प्रिय वस्तु को सदैव पास रखना । प्र० रस-रसिक पागल सलोने भाव का कौन कवि-सा है लुनाई का सगा लोक-हित गजरा लगन-फूलों बना है रखा किसने कलेजे से लगा (चोखे०–हरिऔध, 8) ।
(2) आलिंगन करना, सहर्ष अंगीकार करना । प्र० दुख कलेजा गया जिन्हें देखे क्यों लगाये उन्हें कलेजे से (चोखे०–हरिऔध, 50) ।

कलेजे-खाई—डाइन, बच्चों पर टोना करनेवाली ।

कलेजेवाला आदमी—दे० कलेजे का आदमी ।

कलेवर चढ़ाना—मूर्ति पर सिन्दूर और घी का लेप करना ।

कलेवर बदलना—(1) एक शरीर त्याग कर दूसरा शरीर धारण करना । प्र० चौरासी लाख योनि में भटकता हुआ मनुष्य एक के बाद एक कलेवर बदलता चलता है ।
(2) एक रूप से दूसरे रूप में जाना । प्र० अरे, आपने तो अपना कलेवर ही बदल डाला, सूट-बूट पहनकर तो पंडितों से एकदम साहब बन गये ।
(3) जगन्नाथ जी की पुरानी मूर्ति के स्थान पर नई मूर्ति स्थापित करना ।

कलेवा करना—खा जाना । प्र० रुक तो खरहे, मैं अभी तेरा कलेवा करता हूँ ।
(2) विवाह की एक रस्म जिसमें वर कन्यापक्ष के यहाँ खाना खाने जाता है ।

कलेस करना, -मचाना—पीड़ा देना, झंझट खड़ा किये रहना । प्र० बड़ी बहू न जाने क्यों रोज कलेस किये रहती हैं ।

कलेस मचाना—दे० कलेस करना ।

कलेसहाया—झगड़ालू । प्र० उस कलेसहाया को कौन मुँह लगायेगा ।

कल्पना की दौड़—काल्पनिक मनसूबे । प्र० उनकी कल्पना की दौड़ यहीं तक पहुँच पाई न ?

कल्पना के घोड़े दौड़ाना, -को पंख लगना—नयी-नयी कल्पनाएँ करना । प्र० मेरी कल्पना को तो पंख लग गए थे (सारा०–यादव, 179) ।

कल्पना के परों पर उड़ना—कल्पना में डूबे रहना । प्र० तुम आखिर कब तक कल्पना के परों पर उड़ते रहोगे ?

कल्पना के बाहर की बात—ऐसी बात जिसे कभी सोचा भी न हो । प्र० उसका नौकरी छोड़कर बैठ जाना हम सब की कल्पना के बाहर की बात थी ।

कल्पना को पंख लगना—दे० कल्पना के घोड़े दौड़ाना ।

कल्प-वृक्ष—इच्छा पूरी करनेवाला । प्र० मैं क्या कल्प-वृक्ष हूँ भाई ?

कल्याण होना—अनिष्ट होना (व्यंग्य) । प्र० जी हाँ, आप तो जरा-सा चले गये, यहाँ हम सबका कल्याण हो गया ।

कल्लर लगना—बंजर होना ।

कल्ला चलना या चलाना—खाना । प्र० देखो तो सही, कैसे कल्ला चला रहा है ।

कल्ला दबाना—(1) मार डालना । प्र० और एक भी बात कही तो कल्ला दबा दूंगा ।
(2) अपने सामने दूसरे को न बोलने देना । प्र० तुम हर समय उसका कल्ला क्यों दबाये रहते हो ?

कल्ला फुलाना—(1) रूठना । प्र० रानी जी कल्ला फुलाये हैं तो फुलाये रहें ।
(2) घमंड के मारे मुंह फुलाना । प्र० देखिए प्रयोग (1) ।

कल्ला भर आना—पुष्ट हो जाना । प्र० आर्थिक चिन्ताओं से मुक्त होकर आपके कल्ले भर गये हैं (पैंतरे–अश्क, 143) ।

कल्ला मारना—डींग मारना । प्र० आखिर कल्ला मारना बन्द भी करोगे या नहीं ?

कल्ला-दराज, गल्ले-दराज—बहुत बढ़-बढ़कर बोलनेवाला, धृष्ट, बातूनी । प्र० बड़ी कल्ला-दराज छोकरी है (आज़ाद०–प्रेमचंद, 444) ।

कल्ले तले दबाना—चीख-चिल्लाकर किसी को दबाना । प्र० इस तरह कल्ले तले दबाने का तो कोई मतलब न था ।

कल्ले पर सवार होना—सिर पर सवार होना, पीछे पड़ना । प्र० सिपाही अलग ललकार रहा है और थानेदार अलग कल्ले पर सवार (आजाद०–प्रेमचंद, 255) ।

कल्ले-पाये से—सिर-पैर से । प्र० सिपाही क्या थे, कल्ले-पाये से लकलक, एक फूंक मारो तो उड़ जायें ।

कश खींचना—तम्बाकू सेवन करते समय हुक्के सिगरेट आदि का धुआँ लेना ।

कश्ती पार लगाना—दे० नाव किनारे लगाना ।

कस का—जिस पर अपना अख्तियार हो । प्र० रामदेव अपने कस का आदमी है, उससे काम करवा दूंगा ।

कस में करना या होना, -रखना, -रहना या होना—वश में रखना या होना । प्र० मन हमारा रहा नहीं बस में और कस में रही नहीं काया (चुभते०–हरिऔध, 72); बहू को शुरू से ही कस में रखना नहीं

तो बाद में बात नहीं सुनेगी।

कस में रखना—दे० कस में करना।

कस में रहना या होना—दे० कस में करना या होना।

कस लेना—कमी करना। प्र० कुछ सरकार छीज-छाज, गलन-सड़न के लिये छूट देती है और कुछ तौल में भी कस लिया जाता है (मेरे० —गुलाब०, 80)।

कसक काढ़ना, -निकालना, -मिटाना—पुराने वैर का बदला लेना। प्र० यह तुमने कब की कसक निकाली बेटा!

कसक निकालना—दे० कसक काढ़ना।

कसक मिटना—तकलीफ दूर होना। प्र० मेरी कसक तो कभी न मिटेगी।

कसक मिटाना—दे० कसक काढ़ना।

कसक होना—दर्द या टीस होना। प्र० जिसे अपना खून-पसीना एक करके पाला, वही यूँ मुँह फेरकर चला गया यही कसक मन में है।

कसकर—(1) भली भाँति। प्र० अभी कुछ महीने हैं—कसकर पढ़ लो। (जिन्दगी०—उषा० 26)।

(2) धूमधाम से। प्र० वहाँ तो कसकर शादी की तैयारियाँ हो रही हैं।

(3) जोरों से। प्र० ऐसा कसकर चाँटा दूँगा कि तुम्हारा दिमाग दुरुस्त हो जायगा।

कसकर भरना—किसी वस्तु को कंटर इत्यादि में खूब दबा-दबाकर भरना। प्र० दे० अचार खूब कसकर भरना।

कसकर रखना—(1) रोक लेना, न जाने देना। प्र० यह तो घंटा भर पहले ही चला जा रहा था, किसी तरह कसकर रखा है।

(2) नियन्त्रण में रखना। प्र० लड़के को कसकर रखना नहीं तो हाथ से बेहाथ हो जायगा।

कसना—(1) सोने को कसौटी पर रगड़कर जाँच करना। प्र० कंचन जौं कसिअै कै ताता। तब जानिअ दहुँ पीत की राता (पद०—जायसी, 19/5)।

(2) नियंत्रण में रखना। प्र० लालाजी कामकाज में किसी की भी ढीलढाल नहीं सह पाते थे। उन्होंने कसना शुरू कर दिया (अमृत० —नागर, 28)।

(3) खूब मोल-भाव करके दाम ठीक करना। प्र० मैंने अच्छी तरह कस लिया है, वह पाँच रुपये से नीचे जाने को राजी नहीं है।

कसब कमाना, -करना—वेश्यावृत्ति करना।

कसब करना—दे० कसब कमाना।

कसम उतारना—(1) शपथ का प्रभाव दूर करना। प्र० तुम्हारी कसम उतारने के लिए मुझे वहाँ जाना ही पड़ेगा।

(2) किसी काम को नाम मात्र के लिये करना। प्र० इसे आना थोड़े ही कहते हैं आप तो कसम उतारने भर को आ गये हैं।

कसम खाना—किसी काम को करने या न करने की प्रतिज्ञा करना। प्र० जब-जब मोहन झूठी सौंहैं खात (रहीम कवि०—रहीम, 58); मैं इस बात के लिये कसम खाता हूँ कि उस रानी को जरूर-जरूर अपनी बेगम बनाऊँगा (राधा० ग्रंथा०—राधा० दास, 584); चौधरी कसमें खा-खाकर अपनी सफाई देने लगा (गोदान—प्रेमचन्द, 30)।

कसम खाने को—नाम मात्र को, कोई एक भी। प्र० घर में कसम खाने को भी अफीम हो तब न तुम्हें दूँ। लड़की के ब्याह में कोई कसम खाने को भी न आया।

कसम खिलाना, -दिलाना, -देना, -धराना, -रखाना—किसी को किसी शपथ द्वारा बाध्य करना। प्र० बाबूजी ने मुझे पहले ही कसम दिला दी थी कि मैं शराब को हाथ भी न लगाऊँगा।

कसम टूटना—प्रतिज्ञा पूरी न होना। प्र० उसकी कसम टूट जाय, यह वह कैसे बरदाश्त कर सकता है।

कसम तोड़ना—प्रतिज्ञा के अनुसार काम न करना। प्र० और जो चाहे हो, वे अपनी कसम न तोड़ेंगे।

कसम दिलाना—दे० कसम खिलाना।

कसम देना—दे० कसम खिलाना।

कसम धराना—दे० कसम खिलाना।

कसम रखाना—दे० कसम खिलाना।

कसम लगना—कसम खानेवाले व्यक्ति पर ही उलटकर कसम का असर होना। प्र० झट बेटे की कसम खाने को तुमसे किसने कहा था? कहीं कसम तुम्हीं को लग गयी तो?

कसम हो जाना—बिलकुल न रह जाना। प्र० खालिस दूध-घी तो अब जैसे कसम हो गया है।

कसमा-कसमी—परस्पर प्रतिज्ञा। प्र० ठीक है, तुम दोनों कसमा-कसमी कर लो, फिर मुझे खबर कर देना।

कसर (इमारती)—थोड़ी जगह। प्र० इधर भी थोड़ी कसर छूट गयी है। कैसा काम किया है?

कसर करना या होना, -छोड़ना, -रखना, -लगाना—कमी करना या होना। प्र० भगवान ने मुश्किलों से यह दिन दिखलाया, फिर कसर क्यों लगाई जाय? (मृग०—वृं० वर्मा, 4)।

कसर काटना, -निकालना—बदला लेना, कमी पूरी करना। प्र० हम चाहते हैं जाति की कसर निकालना, मगर हमारे जी की कसर निकाले भी नहीं निकलती (चुभते० (भू०)—हरिऔध, 5)।

कसर काढ़ना—(1) बदला लेना। प्र० बाल से बेतरह बिगड़ करके किस जनम की कसर गई काढ़ी (चोखे०—हरिऔध, 190)।

(2) क्षतिपूर्ति करना। प्र० आप बिलकुल निश्चिन्त रहिए, मैं किसी-न-किसी तरह अपनी कसर काढ़ ही लूँगा।

कसर खाना, -सहना—नुकसान उठाना। प्र० इनके निकट प्रीति और मित्रता कोई ऐसी चीज है जो दस पाँच रुपे की कसर खानें सै बातों मैं हाथ आ सकती है (परीक्षा०—श्री० दास, 28-29)।

कसर छोड़ना—दे० कसर करना।

कसर देना, -भरना—घाटा पूरा करना। प्र० इतनी हाय-हाय मत करो, तुम्हारी कसर देने का जिम्मेदार मैं हूँ।

कसर न उठा रखना, -न रखना—कोई प्रयत्न बाकी न छोड़ना। प्र० बाबू बैजनाथ वग़ैरै ने इनको हिम्मत बंधाने में कसर नहीं रक्खी (परीक्षा०—श्री० दास, 116)।

कसर न रखना—दे० कसर न उठा रखना।

कसर निकलना—दण्ड मिलना, करनी का फल मिलना। प्र० बहुत मत उछलो-कूदो, एक दिन सब कसर निकल जायगी।

कसर निकालना—दे० कसर काटना।

कसर पड़ना—(1) नुकसान होना। प्र० इस बार के सौदे में गहरी कसर पड़ गयी।

(2) मनमुटाव होना। प्र० पिछले कुछ दिनों से दोनों बहनों में कसर पड़ गयी है।

कसर भरना—दे० कसर देना।

कसर रखना—(1) दुश्मनी करना या होना। प्र० तुम अपनी ओर से कसर मत रखो, आगे वे जानें और उनका काम जाने।

(2) दे० कसर करना।

कसर रहना या होना—किसी काम में कुछ कमी रहना; दोषपूर्ण होना। प्र० क्यों कढ़ेगी बुरी डकार न तब जब रहेंगी कसर भरी आँतें (बोल०—हरिऔध, 90)।

कसर लगाना—दे० कसर करना।

कसर सहना—दे० कसर खाना।

कसा—पूरा-पूरा; बहुत अधिक; एकदम भरा हुआ। प्र० कंटर एकदम कसा हुआ है, इसमें और नहीं आयेगा; कोट बदन में कसा हुआ है, जरा ढीला करवा लो।

कसा तौलना—कम तौलना। प्र० देखो भाई, कसा मत तौलना, हाँ।

कसा शरीर—पुष्ट और मजबूत शरीर। प्र० शरीर कसा हुआ था और चाहे जहाँ भी अकेले जाने में उन्हे तनिक भी हिचक न होती थी (सत्य के प्रयोग—मो० क० गांधी, 587)।

कसाई का पिल्ला, -बिल्ला—मोटा-ताजा आदमी।

कसाई का बिल्ला—दे० कसाई का पिल्ला।

कसाई की नजर से देखना—क्रूरता या दुश्मनी के भाव से देखना।

कसाई के खूंटे बंधना या बांधना—निर्दयी व्यक्ति के पाला पड़ना। प्र० माँ-बाप ने उसे ऐसे कसाई के खूंटे से बाँध दिया है कि रोते ही उसके दिन गुज़रते हैं।

कसाई के खूंटे बंधी गाय—निर्दयी के वश में होना। प्र० वह बेचारी तो कसाई के खूंटे बंधी गाय है, वह क्या करे।

कसा-कसाया—चलने के लिए बिलकुल तैयार। प्र० मैं पहुँचा तो वह कसा-कसाया तैयार था।

कसाला करना—मेहनत करना। प्र० अरे, तो कौन-सा कसाला करके आ रहे हो?

कसाला पड़ना—(1) कष्ट होना। प्र० है न कल मिल रही कसाले सह। घिस गये पाँव कोस काले चल (चुभते०—हरिऔध, 76)।

(2) कमी होना। प्र० आजकल तो हर चीज का कसाला पड़ा हुआ है।

कसौटी—जाँच का मापदण्ड। प्र० कौन प्राकृत पहले की, और कौन पीछे की यह बात जानने की अच्छी कसौटी इन दोनों की तुलना ही है (सा० सी०—महा० द्वि०, 20)।

कसौटी पर कसना, -तौलना—खूब छानबीन करना; परीक्षा लेना। प्र० उर आनन्द बढ़ाई प्रेम-कसौटी कसि पियहिं अवगुन मन बिसराइ, मिली प्रिया उठि स्याम सौं (सू० सा०—सूर, 3446); यूरोप में तो प्रायः रंगमंच की कसौटी पर कसे जाने के उपरान्त ही नाटक प्रकाशित किये जाते हैं (भोर०—जग० माथुर, 149)।

कसौटी पर खरा उतरना—खूब जांच-पड़ताल के बाद भी सच्चा प्रमाणित होना। प्र० समझते क्यों नहीं × × पुराने सती वाले सिद्धान्त की कसौटी पर तो मैं खरी नहीं उतर सकती (अमृत०—नागर, 556)।

कसौटी पर चढ़ना या चढ़ाना—जाँच-पड़ताल होना या करना। प्र० न जाने कितनी बार तुम्हें अनुभव की परीक्षा की कसौटी पर चढ़ना पड़ेगा।

कसौटी पर तौलना—दे० कसौटी पर कसना।

कस्तूरी—महँगी या कम मिलनेवाली चीज। प्र० क्यों भाई, हींग क्या आजकल कस्तूरी हो गई है?

कस्तूरी के भाव बिकना, -मोल बिकना—बहुत महँगी होना। प्र० आजकल तो हींग भी कस्तूरी के भाव बिकने लगी है।

कस्तूरी के मोल बिकना—दे० कस्तूरी के भाव बिकना।

कह आना—कहते बनना। प्र० तुम परवीन सबै जानत हौ, तातैं यह कहि आई (सू० सा०—सूर, 4155)।

कह गुज़रना—कह डालना। प्र० वे चुप थोड़े ही रहे, जो उन्हें कहना था सो कह गुजरे।

कह बैठना—(1) मुंह-तोड़ उत्तर देना; अनुचित कहना। प्र० मुझसे व्यर्थ बातें मत करो नहीं तो मैं कुछ कह बैठूंगा।

(2) भेद खोल देना। प्र० भाभी को सब मालूम है, कहीं वे कह बैठीं तो?

(3) ताना देना। प्र० आपको यह कह बैठने को किसने कहा था?

कहकहा उड़ना या उड़ाना, -पड़ना, -मारना, -लगना या लगाना—हँसी होना। प्र० चारों तरफ कहकहे पड़ने लगे (मान० (1)—प्रेमचंद, 279); इस पर ज़ीनत ने कहकहा लगाया (कठ०—दे० स०, 97)।

कहकहा पड़ना—दे० कहकहा उड़ना या उड़ाना।

कहकहा मारकर हँसना, -लगाकर हँसना—खूब ज़ोरों से हँसना। प्र० तब कैसा कहकहे मार-मार हँसा करते थे और बिना कारण हँसी आती थी (सा० सु०—बा० भट्ट, 50)।

कहकहा मारना—दे० कहकहा उड़ना या उड़ाना।

कहकहा लगाकर हंसना—दे० कहकहा मारकर हँसना।

कहकहा लगाना—दे० कहकहा उड़ाना।

कहकहे बटोरना—लोगों को हँसाने के लिए कुछ कहना और हँसी पाना। प्र० इन्हें सुना-सुनाकर अक्सर वह महफ़िलों में कहकहे बटोरता है

×× (कु०—कम०, 9)।

कहत पड़ना—कमी होना (अकाल)। प्र० मैंने देख लिया है, कोई कहत न पड़ेगी।

कहते चले आना—परम्परा के वर्णन करते रहना। प्र० चकोर और चन्द्रमा की प्रीति की बात तो कविगण न जाने कब से कहते चले आ रहे हैं।

कहते न आना, -न पड़ना, -न बनना—(1) अपूर्व होना; अवर्णनीय होना। प्र० कहै कबीर कछू कहत न आवै, परचै बिनां मरम को पावै (कबीर ग्रंथा०—कबीर, 162); कहि न जाइ कछु नगर बिभूती जनु एतनिअ बिरंचि करतूती (राम० (अयो)—तुलसी, 372); सुन्दर सरस लोनो ललित रंगीलो मुख, जोवन झलक क्यों हूँ कही न परति है (घन० कबित्त—घना०, 185)।

(2) उत्तर न दे पाना। प्र० गयेउ सहमि नहिं कछु कहि आवा (राम० (अयो)—तुलसी, 399)।

कहते न थकना—बहुत बखान करना। प्र० आपकी बातें करते तो वे थकतीं नहीं।

कहते न पड़ना—दे० कहते न आना।

कहते न बनना—दे० कहते न आना।

कहते फिरना—सबसे कहना। प्र० इतने विश्वास से कही गयी बात को तुम यहाँ-वहाँ कहते फिरे?

कहते साथ—तुरन्त; झटपट। प्र० कहते साथ चाय-नाश्ता सब तैयार था।

कहना—कड़ी बात कहना; गुस्सा होना। प्र० रमेश को कुछ कहिएगा मत, मैंने ही उसे रोक लिया था।

कहना न आना—कुछ बोल न पाना। प्र० राय साहब के सामने मुझे कहना न आयेगा।

कहना-बदना, कह-बदकर—(1) निश्चय करना; प्रतिज्ञा करना। प्र० वहाँ कहना-बदना सब हो गया है।

(2) ललकार कर कहना। प्र० मैं जो भी करूँगा, कह-बदकर करूँगा।

कहना मानना—बात मानना। प्र० जो बड़ों का कहना नहीं मानेगा उसकी यही गति होगी।

कहना-सुनना—(1) समझाना-बुझाना; प्रार्थना करना; सिफारिश करना। प्र० किसी से कहना-सुनना पड़े तो—×× (अमृत०—नागर, 112)।

(2) गाली-गलौज करना। प्र० देखो, मुझे बहुत-सा कहना-सुनना पसन्द नहीं है।

(3) बातचीत करना। प्र० आप लोगों ने आपस में क्या कहा-सुना, यह तो पता चले।

कहनी-अनकहनी कहना—ऐसी बातें भी कहना जिनका कहना उचित नहीं। प्र० आज यहाँ आए तो मुझको और चुन्नीलाल को सैंकड़ों कहनी न कहनी सुना गए (परीक्षा०—श्री० दास, 118)।

कहने का मुंह तो न रहता—कुछ बुरा-भला तो न कह पाते। प्र० तुम अपना काम पूरा करते तो किसी का कुछ कहने का मुंह तो न रहता।

कहने की बात, कहने-सुनने की बात—वह बात जिसका वास्तव में होना अनिश्चित हो; अनुमान या गप्प। प्र० ये सब कहने की बातें हैं कि दीदी वहाँ होतीं तो कुछ न होता।

कहने को, कहने-सुनने के लिए (को)—(1) नाम मात्र को। प्र० खाया क्या, कहने को बरफी का एक टुकड़ा मुंह में डाला।

(2) भविष्य में स्मरण के लिये। प्र० आज चली जाओगी तो सदा को कहने-सुनने को तो रहेगा।

कहने को बात रह जाना, -रह जाना, कहने-सुनने को रह जाना—केवल मात्र चर्चा करना भर रह जाना। प्र० देना-लेना क्या महत्त्व रखता है, बस कहने को बात रह जाती है।

कहने को मुंह रहना—कहने लायक स्थिति में होना। प्र० मेरा तो कुछ कहने को मुंह ही नहीं रहा, मैं इसीलिए चुप हूँ।

कहने को रह जाना—दे० कहने को बात रह जाना।

कहने पर चलना, -लगना—कहा मानना। प्र० जौ नहिं लगिहहु कहें हमारे। नहिं लागिहि कछु हाथ तुम्हारे (राम० (अ)—तुलसी, 419)।

कहने पर जाना—विश्वास करना। प्र० तुम किसी के कहे पर जाते ही क्यों हो, यह बतलाओ।

कहने पर लगना—दे० कहने पर चलना।

कहने भर का—ऊपरी, दिखावटी। प्र० ये सब कहने भर की बातें हैं, मुझे पता है।

कहने में आना, -सुनने में आना—दूसरे के कहने के भुलावे में आना। प्र० वह उस दो कौड़ी की बदजात बाँदी के कहने में इस कदर आ गये थे कि अक्ल गँवा बैठे (सात०—नागर, 93)।

(किसी के) कहने में होना—किसी की बात मानना। प्र० जब तू हमारे कहने ही में नहीं, तो जहाँ चाहे, रह (मान० (6)—प्रेमचंद, 186)।

कहने से धोबी का गदहे पर न चढ़ना—रोज करने वाला काम भी किसी के कहने से न करना।

कहने-सुनने की बात—दे० कहने की बात।

कहने-सुनने के लिए (को)—दे० कहने को।

कहने-सुनने को रह जाना—दे० कहने को बात रह जाना।

कहने-सुनने में आना—दे० कहने में आना।

कह-बदकर—दे० कहना-बदना।

कहर करना—जुल्म करना, गजब करना। प्र० अय हय, ऐसा कहर तो न करो बेगम!

कहर का—(1) बहुत अधिक। प्र० ऐसा कहर का गजब तो न ढाओ मालकिन।

(2) बहुत कठिन। प्र० ऐसा कौन-सा कहर का काम करने को कह दिया है जो तुम शोर किये हो।

कहर का सामना—कठिन परिस्थिति का मुकाबला। प्र० कहर का सामना तो उसे ही करना होगा, आप तो रहेंगे नहीं।

कहर की आँखों से देखना—बहुत रुष्ट होना। प्र० आप ऐसे कहर की आँखों से क्यों देख रहे हैं ?

कहर गिरना, -टूटना, -ढहना, -पड़ना, -बरपा होना—बड़ी मुसीबत का आना। प्र० खुदा का क़हर ग़रीबों ही पर गिरता है (रंग० (1) –प्रेमचंद, 119); हीरोशीमा नागासाकी पर ढहा क़हर (सो०–बच्चन, 269)।

कहर टूटना—दे० कहर गिरना।

कहर ढहना—दे० कहर गिरना।

कहर ढाना, -तोड़ना, -बरपा करना—गजब करना; बहुत अत्याचार करना। प्र० किसी की लाड़ प्यार से पली इकलौती को लाकर मैंने ×× कौन-कौन से क़हर उस पर नहीं तोड़े (सारा०–यादव, 101)।

कहर तोड़ना—दे० कहर ढाना।

कहर पड़ना—दे० कहर गिरना।

कहर बरपा करना या होना—दे० कहर गिरना, दे० कहर ढाना।

कहर बरसना या बरसाना—गजब होना या करना। प्र० तुर्की और गुजरात की ताक़त पुर्तगालियों पर बेपनाह कहर बरसावेगी (मृग०–वृ० वर्मा, 78)।

कह-सुन लेना—जवाब-सवाल करना। प्र० ठीक है, तुम भी जो चाहो कह-सुन लेना।

कह-सुनकर—समझा-बुझा कर। प्र० वह तो जा ही नहीं रहा था, किसी तरह कह-सुनकर भेजा।

कहाँ का—(1) न जाने कहाँ का। प्र० कहाँ का फरनीचर तुम उठा लाये हो ?

(2) असाधारण, बड़ा भारी। प्र० तू कहाँ का ईमानदार है, वह भी तो सुनूँ।

कहाँ की बात—(1) व्यर्थ बात। प्र० तुम भी आज कहाँ की बात ले बैठीं भाभी !

(2) झूठी या गलत बात। प्र० कहाँ की बात, वह यहाँ है ही नहीं।

कहाँ के कहाँ—(1) बहुत आगे। प्र० वे इतनी देर में कहाँ के कहाँ पहुंच गये होंगे।

(2) व्यर्थ में। प्र० कहाँ के कहाँ तुम उनसे कहने गये, न जाते तो बात इतनी न बढ़ती।

कहाँ के मारे—न जाने क्यों। प्र० कहाँ के मारे वे तुम लोगों से कुछ कहने गये और उन्हें इतनी बातें सुननी पड़ीं।

कहाँ तक—कितना। प्र० आखिर कोई कहाँ तक बरदाश्त करता रहे।

कहाँ यह कहाँ वह—इनमें बड़ा अन्तर है। प्र० तुम भी क्या कहते हो ! कहाँ यह कहाँ वह। दोनों में कोई मेल ही नहीं है।

कहाँ राम-राम कहाँ टें-टें होना—अप्रासंगिक चर्चा छेड़ बैठना। प्र० वे लगे मजे में आकर कहने—अजी वाह ! कहाँ राम-राम और कहाँ टें-टें (दिल०–जी०, 24)।

कहाँ सिर फोड़ना—कुछ समझ में न आना; क्या कहूँ, क्या करूँ। प्र० सब जगह देख लिया पर वह मिला ही नहीं। अब कहाँ सिर फोड़ूँ।

कहाँ से—(1) क्यों। प्र० तुम आज कहाँ से आ गये !

(2) व्यर्थ। प्र० न जाने कहाँ से मैं उनके पास गया। न जाता तो इतना सुनने को तो न मिलता।

कहाँ से कहाँ—प्रारम्भ से बहुत दूर या भिन्न दिशा में पहुँच जाना; काफी भिन्न। प्र० तुम तो कहाँ से कहाँ पहुँच गये—बात को मूल की ओर मोड़ो।

कहाँ से टपक पड़े—कहाँ से अचानक आ गये ?

कहा करना, -मानना—कहा काम करना या बात मानना। प्र० मेरा कहा करोगे तो तुम्हारा कोई नुकसान न होगा।

कहा मानना—दे० कहा करना।

कहा-कही—बातचीत। प्र० बस कहा-कही में वहाँ तो अच्छा खासा हंगामा हो गया।

कहानी कहना—बीती घटना सुनाना। प्र० अब आप भी अपनी कहानी कह डालिए।

कहानी खत्म होना—जीवनगाथा का अन्त होना। प्र० बस यहीं आकर उनकी कहानी खत्म होती है।

कहानी गढ़ना—झूठी कहानी बनाना। प्र० असल बात यह है कि आर्यों ने दक्षिण में जाकर अपनी धौंस जमाई और इसे ठीक करने के लिए वामन और महाबलि की कहानी गढ़ ली (दूधगाछ–दे० स०, 71)।

कहानी चलना—चर्चा होना; बराबर स्मरण किया जाना। प्र० ह्वै है पुत्र भक्त अति ज्ञानी। जाकी जग मैं चले कहानी (सू० सा०–सूर, 226); हेत-खेत धूरि चूर-चूर ह्वै मिलैंगो, तब चलैंगी कहानी घन आनंद तिहारे की (व्यंग्यात्मक प्रयोग) (घन० कवित्त–घना०, 31)।

कहानी जोड़ना—कहानी बनाना। प्र० अब इसी में तुम भी कहानी जोड़ो।

कहानी बन जाना—पुरानी बात हो जाना। प्र० पुराने दिनों की वह शान-शौकत, रईसी सब अब कहानी बन गयी है।

कहानी रह जाना—दे० कथा रह जाना।

कहा-सुना—अच्छी-बुरी कही गयी बात। प्र० मेरा कहा-सुना माफ कीजिएगा बाबूजी।

कहा-सुना माफ करना—बीती बातों को भूल जाना। प्र० दे० कहा-सुना।

कहा-सुनी होना—मौखिक झगड़ा होना। प्र० वहाँ से लौट कर गुरुजी से मुझसे कहा-सुनी हो गई (तितली–प्रसाद, 57)।

कहीं—दैवात्, संयोग से। प्र० कहीं रामनाथ इस वर्ष भी पास न हुआ तो बड़ा बुरा होगा।

कहीं आकर—बहुत दिनों बाद। प्र० बार-बार तगादा करने पर अब कहीं आकर उन्होंने रुपये लौटाये हैं।

कहीं ऐसा तो नहीं—ऐसा न हो कि। प्र० कहीं ऐसा तो नहीं कि वे कुछ देना ही न चाहते हों ?

कहीं और—दूसरी जगह; अन्यत्र। प्र० तुम लोग कहीं और जाकर क्यों नहीं खेलते ?

कहीं का—न जाने कहां का; बड़ा भारी। प्र० वह अपने आपको कहीं का धन्ना सेठ समझता है?

कहीं का कहीं—बिलकुल दूसरी ओर; भिन्न जगह पर। प्र० तांगेवाला कहीं का कहीं लिये चला गया और तुम्हारी समझ में न आया?

कहीं का न छोड़ना—किसी योग्य न रहने देना। प्र० मैं इसका सब रवैया देख रही हूँ, लगता है यह मुझे कहीं का न छोड़ेगा।

कहीं का न रखना, -न रहना या होना—(1) हर तरह से क्षति करना या होना। प्र० आपने सारी जायदाद चौपट कर दी, हम लोगों को कहीं का न रखा (प्रेमा०—प्रेमचंद, 10)।
(2) किसी लायक न रहना। प्र० मैं क्या कहूँ, तुमने तो मुझे कहीं का नहीं रखा।

कहीं का न रहना या होना—दे० कहीं का न रखना।

कहीं की कहीं—(1) एक दूसरे से; यहाँ की बात वहाँ (कहना)। प्र० देखो, कहीं की कहीं बात लगाने की यह बुरी आदत छोड़ दो।
(2) दे० कहाँ से कहाँ।

कहीं की कहीं लगाना—(1) किसी बात को दूसरे अर्थ में लेना। प्र० कहा करौं तुम बात, कहूँ की कहूँ लगावति तरुनिनि यहै सुहाति, मोहि कैसें यह भावति (सू० सा०—सूर, 2109)।
(2) एक की दूसरे से शिकायत करना। प्र० कहीं की कहीं लगाने की तुम्हारी यह बड़ी बुरी आदत है।

कहीं ठौर न मिलना—कोई आश्रय या सहारा न होना। प्र० सुशील का यही रवैया रहा तो देख लेना, उसे कहीं ठौर न मिलेगा।

कहीं धूप कहीं छाया होना—विपरीत स्थिति का होना।

कहीं न कहीं—किसी स्थान पर अवश्य। प्र० ठीक से खोजो, घर में ही कहीं न कहीं होगी।

कहीं नाम को भी न होना, -नाम न होना—बिलकुल न होना। प्र० भलमनसाहत तो उसमें कहीं नाम को भी नहीं है।

कहीं नाम न होना—दे० कहीं नाम को भी न होना।

कहीं-कहीं—(1) बहुत कम; बीच-बीच में। प्र० कहीं-कहीं स्वर कम लगा है, वैसे तो ठीक ही गाया।
(2) किसी-किसी स्थान पर। प्र० कहीं-कहीं पर आम के पेड़ भी दिखे पर ज्यादातर नीम के ही थे।

कहे अनुसार चलना—बतलाए तरीके से काम करना। प्र० जौं न चलब हम कहे तुम्हारे (राम० (बाल)—तुलसी, 176)।

कहे जाना—(1) एक ही बात को बार-बार कहना। प्र० आप वही क्यों कहे जा रहे हैं? कोई सुनता है?
(2) चेतावनी देना। प्र० मैं तो कहे गया पर किसी ने ध्यान ही न दिया।

कहे में होना—कहा मानने वाला होना; वश में होना। प्र० यदि माधवी कहे में होती तो वह कठिन अवसर पड़ने पर पान्सा का साथ छोड़ भी सकती थी (सुहाग०—नागर, 119)।

कांकरी चुनना—चिन्ता या वियोग के दुःख से किसी काम में मन न लगना। प्र० बैठी दिन रात सखी कांकरी चुना करे।

कांख में कतरनी रखना—कपट करके हानि पहुँचाना। प्र० उससे होशियार रहना, वह कांख में कतरनी रखे घूमता है।

कांख में दबाए रहना—(1) हर समय साथ रखना। प्र० चांपे कांख फिरत निरगुन गुन, इहां न गाहक कोई (सू० सा०—सूर, 4160)।
(2) वश में रखना। प्र० बेटे को क्या तुम कांख में दबाए रख सकते हो?

कांख सूंघना—मुँह छिपाना; लज्जा के कारण मुँह छिपाना। प्र० आँख नीची कुबान है करती क्या करें कांख सूंघनेवाले (बोल०—हरिऔध, 175)।

कांख-कूंखकर—बड़ी मुश्किल से। प्र० बड़ा कांख-कूंखकर उन्होंने पाँच रुपये निकाले।

कांखना—किसी काम को करने में पस्त हो जाना। प्र० बीत पाते नहीं दुःखों के दिन कब तलक दुःख सहें कुढ़ें कांखें (चुभते०—हरिऔध, 17)।

कांगड़ा—बेकार; मूर्ख। प्र० इस कांगड़े को मेरी नजर से दूर करो।

कांच की भट्ठी—दुःखपूर्ण। प्र० क्यों बने तन न कांच की भट्ठी कोख की आंच है बुरी होती (बोल०—हरिऔध, 225)।

कांच खोलना—(1) हिम्मत हारना। प्र० यूं कांच मत खोलो भाई।
(2) प्रसंग करना।

कांच निकलना या निकालना—किसी आघात या परिश्रम से बुरी दशा होना या करना। प्र० इस बार बहुत मेहनत पड़ी है, बेचारे के कांच निकल आई है।

कांछी देना—टाल-मटोल करना। प्र० मेरी किताबें लौटाने में वह बराबर कांछी दिये जा रहा है।

कांटा कर देना—दुबला कर देना। प्र० इस कड़ी मेहनत ने लड़के को कांटा कर दिया है।

कांटा करना—तौलना। प्र० पूरी बोरी कांटा करो।

कांटा खटकना—(1) बुरा लगना; दुःख होना। प्र० मुझे अत्यन्त खेद है कि आपके मुरादाबाद आने की मुझे सूचना न मिली, वर्ना मैं उड़कर वहाँ पहुँचता, यह कांटा सदा खटकता रहेगा (पद्म० के पत्र—पद्म० शर्मा, 177)।
(2) सन्देह होना। प्र० मुझे तो पहले ही कांटा खटका था।

कांटा गड़ना या गड़ाना, -चुभना या चुभाना—(1) हृदय को पीड़ा होना या पहुँचना। प्र० कमला के कांटा गड़ा (बौने०—रां० रा०, 33)।
(2) मन में शंका होना या पैदा करना। प्र० कन्नगी के सुखी मन में एक कांटा चुभ ही गया (सुहाग०—नागर, 117)।

कांटा चुभना या चुभाना—दे० कांटा गड़ना या गड़ाना।

कांटा छाना—बाधाओं को दूर करना। प्र० आखिर खलीफा ने 'फ़ज़ल' का कांटा छाकर ही छोड़ा—कण्टकोद्धार करके न्यायमार्ग को निष्कंटक बनाकर ही दम लिया (पद्म पराग—पद्म० शर्मा, 160)।

कांटा डालना, -लगाना—मछली फंसाने के लिए बंसी पानी में डालना।

कांटा दूर करना या होना—दुश्मन को नष्ट करना या होना। प्र० मुझे एक-एक करके सब कांटे दूर करने ही हैं।

कांटा निकलना या निकालना—बाधा या कष्ट दूर होना या करना; आशंका मिटना या मिटाना। प्र० वह मगन था कि आज वह कांटा निकल गया जो बरसों से हृदय में चुभा हुआ था (मान० (6)–प्रेमचंद, 256)।

कांटा पड़ना—मनोमालिन्य होना। प्र० तब से भाई बहिन में एक अजीब कांटा पड़ गया था (बूंद०–नागर, 165)।

कांटा बिखेरना, -बिछना या बिछाना—बाधा डालना या पड़ना। प्र० × ×तुम्हारी माशूका जब सेन के सेक्रेटरी की बीवी बन जायगी तब सारसलेक में तुम्हारे लिए पग-पग पर कांटे जरूर बिछ जायेंगे (अमृत०–नागर, 433)।

कांटा बिछना या बिछाना—दे० कांटा बिखेरना।

कांटा बोना—(1) अड़चन डालना, उपद्रव मचाना। प्र० आखिर तुमने क्या समझकर ये कांटे बोए (रंग० (1)–प्रेमचंद, 351)।
(2) बुराई करना, अनिष्ट करना। प्र० क्यों अपने लिए कांटे बो रही हो ? (निर्मला–प्रेमचंद, 79)।

कांटा मारना—और तीखा व्यंग्य करना, पीड़ा पहुंचाना। प्र० अम्मा ने हमें देखकर और भी जोश में कांटा मारा—× × × (सारा० –यादव, 95)।

कांटा लगना—(1) कांटा गड़ जाना। प्र० सम्हालकर चलना, पैर में कांटे न लग जायें।
(2) पक्षी को कांटे का रोग होना।

कांटा लगाना—दे० कांटा डालना।

कांटा होना—(1) बहुत दुबला होना या सूख जाना। प्र० तन हुआ सूख-सूख कर कांटा भूख से नाच हैं रही आंखें (बोल०–हरिऔध, 35)।
(2) दुःखदायी या अप्रिय होना। प्र० पर मुझे ऐसा लगा कि उनकी आंखों में अब भी मैं कांटा हूं (त्याग०–जैनेन्द्र, 63)।
(3) बाधा होना। प्र० प्राणनाथ! तुम्हारे सुख में कांटा हुई (राधा० ग्रंथा०–राधा० दास, 594); अब उनके साम्राज्य के विस्तार में अवन्ती का चण्ड प्रद्योत ही, एक कांटा था (वैशाली० (1)–चतुर०, 313)।

कांटी खाना, कांटे खाना—जेल का दंड भोगना। प्र० अभी कांटी खाकर लौटे हो, फिर वही रवैया ?

कांटी लड़ाना—लंगर लड़ाना। प्र० खबरदार, तुम कांटी मत लड़ाना नहीं तो ठीक न होगा।

कांटे उठना—अप्रिय लगना। प्र० इनकी भीड़-भाड़ को देखते ही मेरे तो कांटे उठ आते हैं (मृग०– वृं० वर्मा, 316)।

कांटे का मुकाबला होना—बराबर का मुकाबला होना। प्र० इस बार कांटे का मुकाबला होगा, मज़ा आयेगा।

कांटे का होना—कैंड़े का होना, हिम्मतवाला। प्र० उसने जान दे दी, पर आन न छोड़ी। ऐसे कांटे का था तुम्हारा पति (गोली–चतुर०, 342)।

कांटे की—(1) नपी-तुली। प्र० घर में कांटे की चीज आती है, बचे कहां से।
(2) अप्रिय। प्र० आखिर कोई कहां तक उसकी कांटे की बातें सुने ?

कांटे की तरह चुभना—किसी बात का बार-बार कष्ट देते रहना, अत्यन्त कष्टदायी होना। प्र० उनकी धर्मपत्नी ने रात में उन्हें कुछ ऐसी बातें कह डाली थीं जो अभी तक कांटों की तरह चुभ रही थीं (गोदान–प्रेमचंद, 170।)

कांटे की तौल, -सुई बराबर—वजन में एकदम ठीक। प्र० देख लीजिए मालिक, तनिक कम नहीं है, कांटे की तौल है।

कांटे की बात—नपी-तुली प्रामाणिक बात। प्र० वे तो कांटे की बात करते हैं फालतू नहीं बोलते।

कांटे की सुई बराबर—दे० कांटे की तौल।

कांटे के पलड़े सा—बिलकुल बराबर। प्र० मेरे लिए तो दोनों ही कांटे के पलड़े से हैं।

कांटे खाना—दे० कांटी खाना।

कांटे चुनना—अहित के कारणों को दूर करना। प्र० चुन सकें तो चाहिये चुन लें उन्हें आज तक कांटे न कम हैं बो गये (चुभते०–हरिऔध, 98)।

कांटे पर की ओस—क्षणभंगुर वस्तु।

कांटे में तुलना या तौलना—महंगा होना। प्र० गुड़ भी अब कांटे में तुलता है बोलो।

कांटे से कांटा निकालना—जैसे के साथ तैसा व्यवहार करना। प्र० कंटक सें कंटक लै काढ्यो अपने हाथ सुभाय (सूर); मेरे सामने सिवाय इसके और कोई उपाय न था कि कांटे से कांटा निकालता।

कांटे-तौल बराबर, -होना—न कम न ज्यादा, ठीक-ठीक। प्र० एकदम कांटे-तौल बराबर है, चलो, कोई बात नहीं।

कांटे-तौल होना—दे० कांटे-तौल बराबर।

कांटेबाजी—तनाव; किसी को परास्त करने का भाव; छल-कपट। प्र० सूरज जी और उनके बीच में जो एक कांटेबाजी चलती है वह आखिर क्या है ? (उखड़े०–यादव, 115)।

कांटेमार—बेईमानी करके कम तौलने वाला। प्र० यार, तुम तो बड़े कांटेमार हो। इतनी सफाई से तुमने डांडी मार दी।

कांटे-सा—(1) बहुत तेज और नुकीला। प्र० इसका बाल तो एकदम कांटे-सा है।
(2) दुर्बल। प्र० लड़का तो कांटे-सा है ; लम्बी बीमारी ने उसे कांटे-सा कर दिया है।

कांटे-सा खटकना, -चुभना—अच्छा न लगना, दुःखदायी होना। प्र० तुम्हारी बेरुखी कांटे-सी खटक गयी।

कांटे-सा चुभना—दे० कांटे-सा खटकना।

कांटों का ताज—मुसीबतों से भरा दायित्व। प्र० यानी कांटों का ताज

पहनूं ? (तात०—नागर, 55) ।

कांटों की राह, -सेज या शय्या—(1) अत्यन्त दुःखदायी । प्र० अब वह घर उसे कांटों की सेज हो रहा था (मान०—(1)—प्रेमचंद, 73); कांटों की राह भी आह भर पार की (परि०—निराला, 223) ।
(2) कठिन कार्य । प्र० कांटों की सेज पर मुझसे न सोया जायगा ।

कांटों की सेज या शय्या—दे० कांटों की राह ।

कांटों पर चलना, -पांव रखना—मुसीबतों से गुजरना । प्र० जिस पर लोगों की अश्रद्धा होती है उसके लिए व्यवहार के सब सीधे और सुगम मार्ग बन्द हो जाते हैं—उसे या तो कांटों पर या ढाई कोस नौ दिन में चलना पड़ता है (चिन्ता०(1)—शुक्ल, 27) ।

कांटों पर पांव रखना—दे० कांटों पर चलना ।

कांटों पर (में) लोटना या लोटाना—दुःख या ईर्ष्या से तड़पना या बेचैन होना या बेचैन बनाना । प्र० तुम क्यों कांटों पर लोटती हो शीला ?

कांटों पर सुलाना—दुःखदायी स्थिति में डालना । प्र० रानी तूने तो रुला दिया पहले ही यह कह कांटों पर सुला दिया पहले ही (साकेत—गुप्त, 239) ।

कांटों में उलझना—संकट में पड़ना । प्र० कहाँ-कहाँ तुम कांटों में उलझते रहोगे, बोलो !

कांटों में गिरना—विपत्ति में फंसना । प्र० मैं जान-बूझकर कांटों में क्यों गिरूं ?

कांटों में खींचना, -घसीटना, -लथराना—(1) मुसीबतों में डालना । प्र० तेजकौर को दीपाली पर गुस्सा आ रहा था—ख्वाह-म-ख्वाह मुझे कांटों में घसीट रही है (कठ०—दे० स०; 343) ।
(2) बहुत अधिक आदर करके लज्जित करना । प्र० आप तो कांटों में घसीटते हैं (मा—कौशिक, 334) ।

कांटों में घसीटना—दे० कांटों में खींचना ।

कांटों में तौलकर बिकना—बहुत महंगा बिकना । प्र० क्या भाई, अब साग-पात भी कांटों में तौलकर बिकेगा ?

कांटों में दौड़ाना—प्रतिकूल या कष्टदायक स्थिति में डालना । प्र० कितना कहती थी कि मुझे इस बहस में न घसीटिये, इन कांटों में न दौड़ाइए, पर न माना (रंग०—प्रेमचन्द, 177) ।

कांटों में पड़ना—कष्ट सहना । प्र० काटने से कट न दुख के दिन सके । यों पड़े कब तक रहें कांटों में हम (चुभते०—हरिऔध, 67) ।

कांटों में फंसना, -हाथ पड़ना—झंझट में फंसना । प्र० न जाने कहाँ का मारा मैं कांटों में फंस गया ।

कांटों में लथराना—दे० कांटों में खींचना ।

कांटों में हाथ पड़ना—दे० कांटों में फंसना ।

कांटों-भरा—दुःखदायी । प्र० सज्जन के लिये कल की पूरी शाम और रात, और आज का सबेरा भी कांटों-भरा हो गया है (बूंद०—नागर, 169) ।

कांटों-भरा रास्ता—कठिन पथ; मुसीबतों भरा रास्ता । प्र० जाति हित की राह है कांटों भरी (बोल०—हरिऔध, 9) ।

कांड होना—कोई घटना या किस्सा हो जाना । प्र० तुमने सुना, वहाँ तो बहुत बड़ा कांड हो गया है ।

कांडी-कफन—मुर्दा की अरथी का सामान ।

कांध देना—दे० कंधा देना ।

कांध मारना—वक्त पर काम न आना । प्र० जो कांध मारे वह मित्र कैसा !

कांध लेना—उठाना, ऊपर लेना । प्र० हर काम तुम्हीं क्यों कांध लेते हो, दूसरों को करने दो ।

कांधी देना—टालमटोल करना । प्र० अंत तक वे राजी न हुए, कांधी दिये गये ।

कांधी मारना—घोड़े का अपनी गर्दन इस प्रकार झटकना कि सवार का आसन हिल जाए ।

कांपना—बहुत डरना । प्र० काल बली तैं सब जग कांप्यौ, ब्रह्मादिक हूँ रोए (सू० सा०—सूर, 52); बुरी तरह डाँटता है, लोग उसके सामने जाते हुए काँपते हैं (गबन—प्रेमचन्द, 37) ।

कांपता स्वर—भावोच्छ्वास के कारण अस्पष्ट हुई ध्वनि । प्र० पिताजी काँपते स्वर में बोले—× × !

कांय-कांय करना या होना, कांव-कांव करना या होना, -मचना या मचाना—(1) आलोचना करना या होना; झगड़ा करना या होना; प्र० बिरादरी का झंझट जो है । सारा गाँव कांव-कांव करने लगेगा (गोदान-प्रेमचन्द, 47) ।
(2) शोर करना या होना । प्र० बाप रे, बच्चे बड़ी कांय-कांय कर रहे हैं, तनिक चुप कराओ न ।

कांय-कांय लगाए रखना—कलह करना, हल्ला करना । प्र० वह क्या है आफत है । दिन भर कांय-कांय लगाए रहती है ।

कांव-कांव—लड़ाई, शोर । प्र० गुन्नो पुरतानी की छत पर होने वाली सास-बहू की कांव-कांव से कान पक गए (बूंद०—नागर, 4) ।

कांव-कांव करना या होना—दे० कांय-कांय करना या होना ।

कांव-कांव मचना या मचाना—दे० कांय-कांय करना या होना ।

कांस में तैरना—असमंजस में पड़ना । प्र० वह अभी तक कांस में ही तैर रहा है ?

कांस में फंसना—संकट में फंसना । प्र० बैठे-बिठाये मैं कांस में फंस गया ।

काई छुड़ाना—(1) मैल दूर करना । प्र० कितना गन्दा पैर हो रहा है, पहले काई छुड़ाकर आओ ।
(2) दुःख-दारिद्र्य दूर करना । प्र० मेरी काई छुड़ाने वाला भी तो कोई चाहिए ।

काई लगना—आवरण आ जाना, मैल आ जाना, आवरण के कारण प्रकाश का छिप जाना । प्र० कब तक व्यक्ति तरह दे; कभी-न-कभी मन पर काई लगती ही है । शीशे पर कैसी काई लग गयी है, साफ करो ।

काई-सा फट जाना—तितर-बितर हो जाना । प्र० देखते-देखते बादल काई-सा फट गये ।

काक-चेष्टा—अत्यन्त सतर्कता । प्र० इस छोकरे की काक-चेष्टा के आगे

किसी की एक न चली।

काक-तालीय—आकस्मिक संयोग।

काक-दंत—असंभव वस्तु। प्र० अब तुम काक-दन्त की चर्चा करो तो कैसे विश्वास किया जाय।

काकुल छोड़ना—बालों की लटें निकालकर बाल बनाना। प्र० दोनों बाँके पान खाय, काकुल छोड़े टहल रहे थे।

काकुल झाड़ना—कंघी-चोटी करना। प्र० अब उठोगी भी या सारा दिन काकुल ही झाड़ती रहोगी?

काग उठाना—दे० कौआ उठाना।

काग उड़ाना—दे० कौआ उड़ाना।

काग छिटकाना—दे० कौआ छिटकाना।

काग बोलना—दे० कौआ बोलना।

कागज़ आ जाना—कहीं जाने का न्यौता या आदेश आ जाना। प्र० मेरा कागज़ आ गया है बेटा, अब कब तक यहाँ रहूँगा।

कागज़ करना—दस्तावेज लिखकर अधिकार दे देना। प्र० मैंने लड़के-लड़कियों सबके नाम कागज़ कर दिया है।

कागज़ का घर, -का पुतला, -महल, -की नाव, -की पुड़िया—अस्थायी वस्तु। प्र० नस्वर तन जिनि भूलु पूतरा कागद को सो (राधा० ग्रंथा०–राधा० दास, 50)।

कागज़ का घर बनाना, -महल बनाना—हवाई किला बनाना। प्र० पीठि दियें सब दीठि परें निमुहैं, जग ईठिनि कौन सकेरैं। दौरि थक्यौं जित ही तित ही तिनहीं चितयौ न कहूँ हित हेरैं। कागर-भौन लै आगर मौन दै बात बसी पै सुजानहिं टेरैं। नैननि काननि सौं हीं सदा घन आनंद औरनि सों मुख फेरैं (घन० कवित्त–घना०, 166)।

कागज़ का पुतला—दे० कागज़ का घर।

कागज़ का महल—दे० कागज़ का घर।

कागज़ का महल बनाना—दे० कागज़ का घर बनाना।

कागज़ काले करना, -रंगना, -स्याह करना—व्यर्थ लिखना। प्र० व्यर्थ कागज़ काले करने की मुझे आदत नहीं, अवकाश भी नहीं (पद्म० के पत्र–पद्म० शर्मा, 67); हफ्तों सरकारी कर्मचारियों में लिखा-पढ़ी होती रही। मानों कागज़ स्याह कर दिये गये (गवन–प्रेमचंद, 313)।

कागज़ की नाव—(1) असफल प्रयत्न। प्र० भए कागद-नाव उपाव सबै घनआनंद नेह-नदी गहरैं (घन० कवित्त–घना०, 31)।

(2) दे० कागज़ का घर।

कागज़ की नाव पर बैठकर संसार-सागर पार करना—असम्भव कार्य करने का प्रयत्न करना।

कागज़ की पुड़िया—दे० कागज़ का घर।

कागज़ के घोड़े दौड़ाना—दे० कागज़ी घोड़े दौड़ाना।

कागज़ खोलना—दोष दिखाना। प्र० तुमने क्या कागज़ खोलने का ठेका ले रखा है।

कागज़ गुम हो जाना—मृत्यु न आना। प्र० लगता है यमराज के यहाँ उनका कागज़ गुम हो गया है।

कागज़ झूठा होना—इकरारनामा झूठा होना। प्र० बहुत दिना हूँ जाय कहै तो कागद झूठा (कुण्ड०–गिरधरदास, 7)।

कागज़ पर चढ़ना या चढ़ाना—(1) लिखा जाना या लिखना। प्र० पूरा ब्यौरा कागज़ पर चढ़ा दीजिए बाबूजी।

(2) दस्तावेज पर नाम लिखा जाना। प्र० अगले महीने इन दोनों का नाम भी कागज़ पर चढ़ जायेगा।

कागज़ पूरा होना—जीवन के दिन पूरे होना। प्र० लगता है अब माँ का कागज़ पूरा हो रहा है।

कगाज़ मिलाना—हिसाब मिलाना। प्र० दोनों कागज़ मिलाकर देख लो।

कागज़ रंगना—दे० कागज़ काले करना।

कागज़ लिखना या लिखवाना—(1) कागज़ पर लिखकर और हस्ताक्षर करके किसी बात को स्वीकार करना और वादा करना। प्र० वह पक्का कागज़ लिखाते थे, नजराना अलग लेते थे ×× (गोदान–प्रेमचंद, 102)।

(2) पुस्तक लिखना। प्र० जप तप संजम पूजा अरचा, जोतिग जग बौरानां। कागद लिखि लिखि जगत भुलानां, मनहीं मन न समाना (कबीर ग्रंथा०–कबीर, 99)।

कागज़ स्याह करना—दे० कागज़ काले करना।

कागज़-सा—बहुत पतला। प्र० पंकज रेस्ट्रांवाला बिलकुल कागज़-सा दोशा बनाता है।

कागज़ी कार्रवाई—लिखा-पढ़ी। प्र० कागज़ी कार्रवाई में भी काफी दिन निकल जाते हैं।

कागज़ी घोड़ा दौड़ाना—(1) लिखा-पढ़ी करना। प्र० आजकल भी कागज़ी घोड़े दौड़ाने और खानापूरी करने की प्रवृत्ति अधिक है (मेरे०–गुलाब०, 197)।

(2) हुंडी-पुर्जे के बल पर व्यापार करना। प्र० जब तक कागज़ के घोड़े दौड़ाते हैं रुपे की क्या कमी है? (परीक्षा०–श्री० दास, 6)।

कागज़ी जोंक—बहुत पतली और छोटी जोंक।

कागज़ी पहलवान—बहुत दुर्बल व्यक्ति। प्र० ज़रा इस कागज़ी पहलवान की हेकड़ी देखो।

कागज़ी योजना—वह योजना जिसके बारे में केवल लिखित कार्यवाही हुई हो। प्र० अभी तो कागज़ी योजना बनी है, काम शुरू होने में देर है।

कागज़ी समर्थन—लिखित समर्थन। प्र० आप लोगों को कागज़ी समर्थन चाहिए?

कागज़ी सबूत—लिखित सबूत। प्र० कागज़ी सबूत के अभाव में अपना पक्ष कमजोर पड़ेगा।

काग-भुसुंड—मोटा-ताजा काला आदमी।

कागा उड़ाना—व्यर्थ ही जीवन नष्ट करना। प्र० तुम क्या सारी जिन्दगी कागा उड़ाती रहोगी?

कागावासी—सुबह तड़के छानी जानेवाली भाँग। प्र० सुबह चार बजे उनकी कागावासी छनती है (अमृत०–नागर, 237)।

कागा-रौर (रौल) करना या होना, -मचना या मचाना, कागा-हौल करना या होना, -मचना या मचाना—शोरगुल करना। प्र० बाप रे बाप, कैसा कागा रोर मचा रखा है इन लड़कों ने।

कागा-रौर (रौल) मचना या मचाना—दे० कागा-रौर करना या होना।

कागा-हौल करना या होना—दे० कागा-रौर करना या होना।

कागा-हौल मचना या मचाना—दे० कागा-रौर करना या होना।

काछ कसना, -बांधना—लड़ने को तैयार होना। प्र० यह लड़की हर समय काछ कसे तैयार रहती है।

काछ (काछा) काछना—(1) वेष बनाना। प्र० बहुरूपियों की तरह काछ ही काछते रहोगे?

(2) लांघ खोंसकर धोती पहनना। प्र० महाराष्ट्र की स्त्रियां काछ काछकर साड़ी पहनती हैं।

काछ (काछा) खोलना—निर्लज्ज होना। प्र० तो तू क्या काछ खोलकर नाचेगी?

काछ (काछा) बांधना—दे० काछ कसना।

काछ लगना—चलने में रानों का रगड़ना।

काज निबाहना—कार्य पूरा होना। प्र० जौं दिधि कुसल निबाहइ काजू (राम० (अ)–तुलसी, 380)।

काज संवारना—दे० काम संवारना।

काज सरना—दे० काम सरना।

काजल का तिल—काजल की छोटी-सी विन्दी जो स्त्रियां शोभा के लिए लगाती हैं।

काजल की कोठरी—कलंक से भरा हुआ। प्र० काजल केरी कोठरी मसि के कर्म कपाट (कबीर ग्रंथा०–कबीर, 43); वह मथुरा काजर की ओवरी, जे आवैं ते कारे (सू० सा०–सूर, 4380); इस काजल की कोठरी में वेधव्वा कौन रह सकता है? (कला०–उग्र, 29)।

काजल घुलाना, -घोलना, -छालना, -डालना, -देना, -सारना—आंखों में काजल लगाना।

काजल घोलना—दे० काजल घुलाना।

काजल छालना—दे० काजल घुलाना।

काजल डालना—दे० काजल घुलाना।

काजल देना—दे० काजल घुलाना।

काजल पारना—दीपक के धुएँ की कालिख को किसी बरतन में जमाना।

काजल लगना—कलंकित होना। प्र० तुम्हारे कारण जबरदस्ती उसे काजल लगा।

काजल सारना—दे० काजल घुलाना।

काजल से भी काला होना—अत्यन्त कलुपित होना। प्र० तीनोंपन मैं भक्ति न कीन्हीं, काजर हूँ तैं कारो (सू० सा०–सूर, 178)।

काजिये दल्लाल—लड़ाई लगानेवाला। प्र० मेरे सामने उस काजिये दल्लाल का नाम भी मत लो।

काजी की सुलह—दोनों पक्षों को खुश करना, दोनों ओर से अपना स्वार्थ साधना। प्र० मंत्री महोदय ने ऐसी काजी की सुलह करवाई कि हम सब देखते ही रह गये।

काजी होना—(1) मनमानी करनेवाला, स्वयं निर्णय करनेवाला। प्र० इन सौं तुम परतीति बढ़ावत, ये हैं अपने काजी (सू० सा०–सूर, 2875)।

(2) जबरदस्ती टांग अड़ानेवाला।

काजू-भोजू—(1) ऐसी दिखाऊ चीज जिसे इस्तेमाल में न लिया जा सके। प्र० ऐसी काजू-भोजू चीज लेकर क्या करोगे, काम लायक अच्छी चीज लो।

(2) कम कीमत की पर दिखौवा चीज। प्र० वाह यार, बड़ी काजू-भोजू साड़ी लाये।

(3) कामचलाऊ। प्र० देखिए प्रयोग (1)।

काट करना—(1) बुराई करना, धोखा देना। प्र० बड़े बाबू हमेशा काट करते हैं। क्यों?

(2) घाव करना। प्र० चाकू से उसने गहरा काट कर दिया है।

(3) रास्ता बनाना। प्र० पानी अपने आप काट कर लेगा, नाली बनाने की जरूरत नहीं है।

काट की—चुस्त और तीखी। प्र० हाँ, काफी पढ़ी-लिखी जान पड़ती हैं। अंगरेजी बड़े काट की लिखती हैं (लिली०–निराला, 118)।

काट खाना—(1) बुरा लगना, अप्रिय लगना। प्र० नहीं अपनी भाषा भाती, भेस भी काटे खाता है (मर्म०–हरिऔध, 110)।

(2) हानि पहुँचाना। प्र० लगता है यह लड़का काट खायेगा, इससे सावधान रहना।

काट खाने दौड़ना—(1) मकान आदि का सूनेपन के कारण बहुत भयावना लगना। प्र० गए सुमंत्र तब राउर माहीं। देखि भयानक जात डेराहीं। धाइ खाइ, जनु जाइ न हेरा। मानहुँ विपति विपाद बसेरा (राम० (अ)–तुलसी, 407)।

(2) हर बात पर बिगड़ना, रूखेपन से जवाब देना। प्र० कोई भी अक्ल की बात कहो तो नास्तिक कह-कह कर काट खाने को दौड़े (सारा०–यादव, 203)।

काट घाट आना—धोखे में आना। प्र० तुम बेवकूफ हो, हर किसी के काट घाट में आ जाते हो।

काट जाना—तलवार का एक हाथ, वार बचा जाना। प्र० राणा बड़ी होशियारी से काट गये।

काट डालना—तलवार के घाट उतारना।

काट पर रहना—विरुद्ध रहना। प्र० न जाने क्यों चाची हमेशा काट पर रहती हैं।

काट रखना—दुश्मनी रखना, बुरा मानना। प्र० इसलिए वह उनसे काट रखता था (सात०–नागर, 63)।

काट कपट करना—छिपाकर काट-छांट करना; चोरी-चोरी कोई काम करना; बचाना। प्र० उसने मजूरी से एक-एक पैसा काट-कपट कर तीन रुपये कम्बल के लिए जमा किए थे (मान० (1)–प्रेमचंद, 147)।

काट-कूट में रहना—अनिष्ट करना। प्र० वे क्या सदा काट-कूट में ही रहेंगे ?

काट-छांट—छल-कपट। प्र० है कपट से भरा हुआ कपटी है भरी काट-छांट भेजे में (चोखे०–हरिऔध, 169)।

काट-छांट आना, -करना—कमी करना, चुनकर कम करना। प्र० उसके विवाह के लिए मैंने जो-जो तैयारियाँ की थीं, उनमें कुछ काट-छांट मत करना (मान० (4)–प्रेमचंद, 179)।

काट-छांट करना—दे– काट-छांट आना।

काटना—(1) दूर करना, मुक्त होना। प्र० जब चारों ओर पैसे का राज हो तब उसके आकर्षण को काट सकना कठिन है (अशोक०–ह० प्र० द्वि०, 33)।

(2) बिताना। प्र० रात तो रेवती ने घर में काटी (मान० (4)–प्रेमचंद, 174)।

(3) प्रतिवाद करना, रोकना। प्र० संयोजक जी जो कहेंगे उसे काली टोपी वाले नौजवान प्राण रहते नहीं काट सकते हैं (मैला०–रेणु, 220)।

(4) बुरा लगना। प्र० लछमी दादा को तो खर्च करना जैसे काटता हो (भूले०–भग० वर्मा, 271)।

(5) हानि पहुँचाना; मारना-पीटना। प्र० भैया से कहो तो। काट थोड़े ही लेंगे। बहुत होगा ना कर देंगे।

काटना और गुर्राना भी—नुकसान करना और ऊपर से लड़ना। प्र० वाह भाई वाह, यह खूब रही, काटना भी और गुर्राना भी।

काटना और पलट जाना—कहकर बदल जाना। प्र० देखो भाई, काटना और फिर पलट जाना, यह मत करना।

काटना-छांटना, -तराशना—(1) गढ़कर या काट-छांटकर तैयार करना। प्र० काट-छांटकर क्या खूबसूरत मूर्ति गढ़ी है कारीगर ने।

(2) कम-बेशी करना। प्र० भाषण को काट-छांटकर तैयार कर दीजिएगा।

काटना-तराशना—दे० काटना-छांटना।

काटने को आना, -दौड़ना, काटे खाना—(1) चिड़चिड़ाना, खीझना। प्र० प्यार और स्नेह का उत्तर देती है, जली-कटी बात और ताने के रूप में। काटने को दौड़ती है (ज्ञान०–यशपाल, 107)।

(2) क्रुद्ध होकर सामनेवाले को भला-बुरा कहना। प्र० कुछ कहता हूँ तो काटने दौड़ती है (गोदान–प्रेमचंद, 298)।

(3) दुःख देना, अप्रिय लगना। प्र० खाली वक्त भारी हो जाता है। काम में काटो तो कट जाय, यों काटने को आता है (सुनीता–जैनेन्द्र, 86)।

काटने दौड़ना—दे० काटने को आना।

काटने पर फलना—दुष्ट को दण्ड देने पर ही उससे काम ले पाना। प्र० तुम जानते नहीं, यह काटने पर फलनेवाला जीव है, यूँ सहज ही वश में नहीं आता।

काटने लायक, काटने-बिराने लायक—बुरा या आपत्तिजनक। प्र० लड़का तो मिला और घर-बार एक भी काटने योग्य नहीं, पर कठिनाई यह है कि × × (मान० (3)–प्रेमचंद, 39)।

काटने-बिराने लायक—दे० काटने लायक।

काट-पीट—बुराई, छल-कपट। प्र० है भरी काटपीट रग-रग में, क्यों न कपटी कपट भरा होगा (चुभते०–हरिऔध, 129)।

काट-फांस करना—(1) चुगली करना। प्र० यह काट-फांस करने की आदत तुम छोड़ दो।

(2) चालाकी करना। प्र० वाह जी, मैं क्यों किसी से काट-फांस करूँ।

(3) बेईमानी करना। प्र० देखिए प्रयोग (2)।

काट-ब्योंत करना—दे० कतर-ब्योंत करना।

काट-ब्योंत दिखाना—दे० कतर-ब्योंत करना।

काटे कटे न मारे मरे—कोई असर न होना। प्र० यह तो ऐसा बेहया है कि न काटे कटे न मारे मरे।

काटे का मंत्र न होना—अत्यन्त भयानक या अनिष्टकर होना। प्र० बुड्ढा काला सांप है—जिसके काटे का मन्तर नहीं (गोदान–प्रेमचंद, 211)।

काटे खाना—दे० काटने को आना।

काटे तो लहर न चढ़े—ऐसा तीखा प्रहार करना कि आहत व्यक्ति उठ भी न सके। प्र० मैं तो इसमें विश्वास करता हूँ कि काटे तो लहर न चढ़े।

काटो तो बदन में खून न होना, -लहू न होना—अत्यन्त डर जाना, एकबारगी सन्न हो जाना। प्र० जासूस बग़लें झांकने लगा। काटो तो खून नहीं (मृग०–वृं० वर्मा, 77)।

काटो तो बदन में लहू न होना—दे० काटो तो बदन में खून न होना।

काठ का उल्लू—जड़-मूर्ख। प्र० वैसे ही अंगरेजों के राज्य में भी हम जो कुएँ के मेंढक काठ के उल्लू, पिंजड़े के गंगाराम ही रहें तो हमारी कमबख्त कमबख्ती फिर कमबख्ती है (भा० ग्रं० (3)–भारतेन्दु, 897); बिलकुल गधे थे वे सब। निरे काठ के उल्लू (मृग०–वृं० वर्मा, 165)।

काठ का कलेजा—निष्ठुर। प्र० लजाते क्यों हो, गोद में ले लो, प्यार करो, कैसा काठ का कलेजा है तुम्हारा (गोदान–प्रेमचंद, 346)।

काठ का घोड़ा—(1) मूर्ख। प्र० तू ठहरा काठ का घोड़ा, तुझसे कौन उलझे ?

(2) लंगड़े की लकड़ी। प्र० उसका काठ का घोड़ा मत छीनो बेटा, उसे तकलीफ होगी।

काठ का पुतला (पुतली)—अनजान या भोला। प्र० सदन तो उनके विचार में काठ का पुतला था (सेवा०–प्रेमचंद, 208)।

काठ की सौत भी न सुहाना—सौत किसी रूप में भी स्वीकार न होना। प्र० मसल है, काठ की सौत भी नहीं सुहाती (दे० दु०–शिव०, 27)।

काठ की हांड़ी—ऐसी दिखाऊ वस्तु जिसका धोखा या उपयोग एक बार से अधिक न चले, अस्थायी, क्षणभंगुर। प्र० काया हाड़ी काठ की न

ओह चढ़ै बहोरि (कबीर ग्रंथा०–कबीर, 259); यह अंधेर, याद रहे, काठ की हंड़िया दुबारा नहीं चढ़ा करती (पद्म० के पत्र–पद्म० शर्मा, 183)।

काठ चबाना—रूखा-सूखा खाना; दुःख से निर्वाह करना। प्र० क्या सारी जिन्दगी इसी तरह काठ चबाते बीतेगी ?

काठ मारना—सन्न हो जाना; स्तब्ध होना। प्र० सज्जन को कमरे में प्रवेश करते ही मानो काठ मार गया (बूंद०–नागर, 403)।

काठ में पांव ठोंकना—बन्दी करना। प्र० इन सबके पांव काठ में ठोंक दो।

काठ में पांव डालना, -देना, -पड़ना—(1) विपत्ति में फंसना। प्र० वीर्य उनके शरीर में पुष्ट होने दीजिए, विद्या कुछ पढ़ लेने दीजिए, नोन, तेल, लकड़ी की फिक्र करने की बुद्धि सीख लेने दीजिए तब उनका पैर काठ में डालिए (भा० ग्रं० (3)–भारतेन्दु, 901); भई यह उन लोगों में नहीं हैं जो गा-बजाकर काठ में पांव देते हैं (भिखा०–कौशिक, 205)।

(2) अपराधी को काठ की बेड़ी पहनाना।

काठ में पांव देना—दे० काठ में पांव डालना।

काठ में पांव पड़ना—दे० काठ में पांव डालना।

काठ होना—(1) चेतनारहित होना, स्तब्ध होना। प्र० कल्याणी पति की सूरत देखते ही काठ हो गई (बूंद०–नागर, 293)।

(2) सूखकर कड़ा होना। प्र० रबर तो एकदम सूखकर काठ हो गया है।

काठ-कठोर—निष्ठुर। प्र० ऐसे काठ-कठोर से कौन विवाह करेगा (गोदान –प्रेमचंद, 81)।

काठ-कबाड़—टूटी-फूटी चीज़ें। प्र० नीचे की मंजिल में दुनिया भर का काठ-कबाड़ भर रखा है।

काठ-कोड़ा चलना—काठ में पैर देने और कोड़ा मारने का अधिकार होना; दंड देने का अधिकार होना; हुकूमत चलना।

काठ-सी बात—कठोर बात। प्र० माखन सो मेरे मोहन को मन काठ-सी तेरी कठेठी ये बातैं (केशव०–केशव, 61)।

काठी अच्छी होना—शरीर स्वस्थ-पुष्ट एवं लम्बा-चौड़ा होना। प्र० वह तो कहो सुभागी की काठी अच्छी है, नहीं बाल-बच्चे हुए होते तो घीसू से जेठे होते (रंग०(2)–प्रेमचंद, 278)।

काठी कसना—घोड़े पर जीन रखना।

कातिक की कुतिया—बदचलन स्त्री।

कान आ लगना—कानों में गुप्त संवाद देना। प्र० इतने में सुक्खू नवाब साहब के कान आ लगा।

कान आना—सुनाई पड़ना। प्र० ऐसा कुछ मेरे कान भी आया था।

कान उखाड़ना—कान उमेठकर दंड देना। प्र० पांव उखड़े न जब भले पथ से कान कैसे उखाड़ तब लेंगे (बोल०–हरिऔध, 76)।

कान उठाना, -ऊंचा करना या होना—(1) सुनने के लिये तैयार होना। प्र० जाति की लान तान सुनने को कान जब है उठा नहीं रहता (चुभते०–हरिऔध, 102)।

(2) चौकन्ना होना, सचेत होना। प्र० बगल के मकान से चीख-पुकार सुनकर सबके कान ऊंचे हुए।

कान उड़ना या उड़ाना—(1) कान का सन्न हो जाना या करना। प्र० हवाई जहाज में बैठा कि लगा कान उड़ा जा रहा है।

(2) बहुत शोर से हैरान आ जाना या कर देना। प्र० लगता है अब तो कान उड़ जायेगा।

(3) कान कट जाना या काट लेना। प्र० वह न माना तो उसके कान उड़ा दिये जायेंगे।

कान उमेठना, -ऐंठना, -गोशमाली करना, -मलना—(1) दंड देने के हेतु कान मरोड़ना। प्र० दूर करता ठसक-ठसक की है ऐंठ का कान ऐंठ देता है (चुभते०–हरिऔध, 176)।

(2) सावधान करना। प्र० कान कब ऐंठे जाते नहीं, पर कान कहां हो सके खड़े ? (मर्म०–हरिऔध, 83)।

(3) किसी काम के न करने की प्रतिज्ञा करना। प्र० मैं कान उमेठती हूं, अब आगे से कभी वहां न जाऊंगी।

कान ऊंचा करना—दे० कान उठाना।

कान ऐंठना—दे० कान उमेठना।

कान कटाना—(1) हार मान लेना। प्र० यदि मेरी बात झूठ निकली तो कान कटा दूंगा।

(2) स्थिति में घटकर होना, तुच्छता प्रमाणित करना। प्र० मैं क्या वहां अपना कान कटाने जाऊं ?

कान कतरना, -काटना—(1) बेवकूफ बनाना, ठगना। प्र० ×× बनिये के कान कतर लूं, तो सही (आज़ाद०–प्रेमचंद, 97)।

(2) सबसे आगे रहना, बढ़कर होना। प्र० यहां भंगेड़िनें रेडियो के भी कान काटती हैं (भा० ग्रं०–भारतेन्दु, 947); जोगीड़ा गा लेने के बाद कबीर गाते हैं जो अश्लीलता में जोगीड़ों के भी कान काटने वाले होते हैं (कबीर–ह० प्र० द्वि०, 39)।

कान करना—(1) सुनना। प्र० झनकत झिल्ली रट रहे दादुर कियो जात नहिं कान (भा० ग्रं० (2)–भारतेन्दु, 112)।

(2) ध्यान देना, महत्त्व देना। प्र० जब तोसौं सुमुझाइ कही नृप, तब तैं करी न कान (सू० सा०–सूर, 269); सुनहु नाथ तुम सहज सुजाना। बालक बचन करिअ नहिं काना (राम० (बा)–तुलसी, 284); दीन बंधु दीन के न बचन करत कान मौन ह्वै रहे हो कछू भांति मन माखे हो (क० र०–सेनापति, 122); महाराज, अब आप किसकी कान करते हैं, बात बिगड़ चुकी, जो कुछ करना हो सो कीजै (प्रेम०–ल० ला०, 211); तुही कहा ब्रज में अनोखी भई। कान नहिं काहू की करत दई (भा० ग्रं० (2)–भारतेन्दु, 364); बातें मेरी कमलिनिपते ! कान की भी न तूने (प्रिय०–हरिऔध, 44)।

कान कसना, -खींचना—दंड देना। प्र० मैं कान खींचूं तुम्हारे ?

कान कच्चा होना, -का कच्चा, -पतला, -हलका—सुनी बात पर झट विश्वास कर लेनेवाला। प्र० खरी पातरी कान की, कौन बहाऊ बानि

आक-कली न रली करै, अली अली जिय जानि (बिहारी रत्ना०–बिहारी, 14); क्यों भला वात हम सुनें कच्ची हैं न बच्चे न कान के कच्चे (चुभते०–हरिऔध, 13)।

कान का कच्चा—दे० कान कच्चा होना।

कान का ढोलना फटना—दे० कान का पर्दा फटना।

कान का पतला—दे० कान कच्चा होना।

कान का पर्दा फटना—(1) बहुत शोर होना। प्र० गरज से कान के परदे फटे जाते थे (मान० (8)–प्रेमचंद, 80); जब ढोल के पास बैठे हुए लोगों के कान के पर्दे फटते रहते हैं, तब दूर किसी नदी के तट पर, संध्या समय, किसी दूसरे के कान में वही शब्द मधुरता का संचार कर देते हैं (कुछ–प० पु० बख्शी, 6)।

(2) कोई बात बहुत अप्रिय लगना। प्र० आपकी बेतुकी सुनते-सुनते कानों के पर्दे फट चले (गु० नि०–बा० मु० गु०, 445)।

कान का पर्दा फाड़ना—बहुत ज़ोरों से चिल्लाकर कहना। प्र० इस दुष्ट की चीख ने तो कान के परदे फाड़ डाले (रंग०–प्रेमचंद, 3)।

कान का बहरा—प्रार्थना पर ध्यान न देनेवाला। प्र० सुन सके बात हित-भरी वे ही हैं न जो लोग कान के बहरे (चुभते०–हरिऔध, 45)।

कान का बहरापन—प्रार्थना पर ध्यान देने के प्रति उदासीनता। प्र० आ हरापन सका न चेहरे पर जा सका कान का न बहरापन (चुभते०–हरिऔध, 59)।

कान का मैल कढ़ना, -निकलना—अनसुनी दूर होना; ध्यान देना; सुनना। प्र० थक गये काढ़ काढ़ने वाले कान का मैल कढ़ नहीं पाता (चुभते०–हरिऔध 101)।

कान का मैल निकलना—दे० कान का मैल कढ़ना।

कान का मैल निकलवाना, -की ठेंठी निकलवाना या निकालना—प्र० आप ज़रा अपने कान का मैल निकलवाइए तो काम बने।

कान का भारी—ऊँचा सुननेवाला। प्र० ×× यहाँ प्रोफेसर साहब का लेक्चर सुनाई नहीं देता। मैं कानों का जरा भारी हूँ (मान० (3)–प्रेमचंद, 323)।

कान का हलका—दे० कान कच्चा होना।

कान काटना—दे० कान कतरना।

कान की चैली खाना, -झारना—बहुत शोरगुल करना, शोर करके तंग कर डालना। प्र० इससे अब भी हठ छोड़ सीधी राह पर आइये धर्म-धर्म पुकार कान की चैलियाँ मत झारिये (भट्ट नि०–बा० भट्ट, 25)।

कान की चैली झारना—दे० कान की चैली खाना।

कान की झिल्ली फटना, कान फटना—तेज़ आवाज से हैरान आ जाना। प्र० वहाँ के कोलाहल से कानों की झिल्लियाँ फटती थीं (राधा०–ब्र० स०, 41-42)।

कान (कानों) की ठेंठी निकलवाना—दे० कान का मैल निकलवाना।

कान (कानों) की रुई निकालना—सुनना; प्रार्थना आदि पर ध्यान देना। प्र० तूँ पुनि मरव होव जरि भुई। अबहूँ उघेलु कान कै रुई (पद०–जायसी, 38/10)।

कान के कीड़े झड़ना, -मरना—सुनने में अत्यन्त कटु एवं अप्रिय होना। प्र० देखिये तो ×× कैसी-कैसी गालियाँ सुनाती हैं कि कान के कीड़े मर जायं (आज़ाद०–प्रेमचंद, 29)।

कान के कीड़े मरना—दे० कान के कीड़े झड़ना।

कान के पीछे मारना—कोई ध्यान न देना। प्र० आप मेरी हर बात को कान के पीछे क्यों मार देते हैं?

कान को खटकना—बेसुरा लगना, सुनने में अप्रिय लगना। प्र० तुम्हारी ये बातें कानों को खटकती हैं।

कान को न देख कौए को देखना—अपने पास की वस्तु को देखे बिना ही किसी के बहकावे में आ जाना।

कान खड़े करना या होना—(1) सचेत होना। प्र० बाहर से मोटर का हार्न सुनाई दिया। सुखदा के कान खड़े हो गये (कर्म०–प्रेमचंद, 272)।

(2) लज्जित होना। प्र० वहाँ की मलीनता देख मलीनता के भी कान खड़े होते हैं।

(3) सावधान करना। प्र० मैंने तो पहले ही तुम्हारे कान खड़े कर दिये थे।

कान खर करना—कान ऐंठकर दंड देना। प्र० ठहर तो, अभी तेरे कान खर करता हूँ।

कान खा जाना या खाना—(1) बहुत शोर करना। प्र० बैंड के इस शोर से ये लड़के कान खा जायेंगे।

(2) एक ही बात को बार-बार कहे जाना, कह-कहकर परेशान कर डालना। प्र० हाँ हाँ, ले चलूंगी, क्यों कान खाये जा रहे हो? (मोहल्ले०–बिन्दु अग्र०, 38)।

कान खींचना—दे० कान कसना।

कान खुजलाना—सुनने की उत्सुकता होना। प्र० वहाँ क्या-क्या हुआ, जल्दी बतलाओ। मेरे कान खुजला रहे हैं।

कान खुजलाने की फुर्सत न होना—बहुत व्यस्त होना।

कान खुलना—भविष्य के लिए सावधान होना। प्र० कब खुला कान आँख भी न खुली खुल किवाड़े सके न छाती के (बोल०–हरिऔध, 183)।

कान खोल रखना—सचेत रहना। प्र० ऐसी स्थिति है तो बराबर कान खोल रखना।

कान खोलकर कहना—अच्छी तरह सुनाकर कहना। प्र० और उनसे भी कान खोल के कह देना कि बहुत चल न निकलें (आज़ाद०–प्रेमचंद, 279)।

कान खोलकर सुनना—ध्यानपूर्वक सुनना। प्र० हृदय! पत्थर के होकर तुम यह सब कान खोल के सुन लो (भा० ग्रं० (1)–भारतेन्दु, 265); देखो खोलकर आँखें सुनो खोलकर कान (बुद्ध०–बच्चन, 44)।

कान खोलना—(1) सचेत करना। प्र० आनन्द के घन हौ सुजान कान खोलि कहौं, आरस जग्यौ है कैसें सोई है कृपा ढरक (घन० कवित्त–घना०, 179); तुम्हारे अनुमान की बात हम कल डाक्टर साहब से कह कर उनके भी कान खोल देंगे (मा० मा० (1)–कि० गो०,

161); खोलते तो कान कैसे खोलते एक सुर से बोलते ही जब नहीं (चुभते०–हरिऔध, 110)।

(2) किसी बात को किसी तक पहुँचा देना, कह देना। प्र० रुइ दियें रहौगे कहा लौं बहरायबे की, कबहूँ तौ मेरियैं पुकार कान खोलिहै (घन० कबित्त–घना०, 59)।

कान गरम करना—(1) सजा देना, शासन करना। प्र० और समाज में दो-चार ऐसी स्त्रियाँ बनी रहें, तो अच्छा, पुरुषों के कान तो गर्म करती रहें (गोदान–प्रेमचंद, 197)।

(2) कान उमेठना। प्र० अरे सम्भाल कर, अभी माला सुनेगी तो कान गरम कर देगी (नये हाथ–वि० रस्तोगी, 13)।

(3) दबाव डालना। प्र० भाई का कान गरम किये बिना वह कुछ न देगा।

कान गूंजा होना—कान बहरा हो जाना, सुनायी न पड़ना। प्र० तेरा कान क्या गूँजा हो गया है?

कान गोशमाली करना—दे० कान उमेठना।

कान चपड़ियाना—कान को पीछे की ओर दबाकर काटने या चोट करने की तैयारी करना।

कान चिपकाये होना—बहुत ध्यान से छिपकर सुनना। प्र० उर्मिला दरवाजे के एक किवाड़ के साथ कान चिपकाये खड़ी थी (झूठा०(2)–यशपाल, 301)।

कान चीरना—बहुत तेज सुनाई पड़ना। प्र० उसकी प्रतिध्वनि × × जाती है कान चीर (बुद्ध०–बच्चन, 49–50)।

कान छूना—कान छूकर बड़ों का या गुरु का नाम लेने के दोष का मार्जन करना।

कान छोड़ना—निर्लज्ज या ढीठ होना, किसी की बात न सुनना। प्र० इसने कान छोड़ दिया है, इससे कह-सुनकर क्या करोगे।

कान जाना—बहरा हो जाना। प्र० टायफाइड में दीदी का कान चला गया।

कान झन्नाना, -भन्नाना—बहुत शोरगुल से कान सुन्न हो जाना। प्र० अब बन्द भी करो, कान भन्ना गया।

कान झाड़कर निकल जाना—उपेक्षा करना, परवाह न करना। प्र० पाँव की धूल झाड़ने वाला किस तरह जाय कान झाड़ निकल (चोखे०–हरिऔध, 190)।

कान झुकाना—(1) ध्यान देना। प्र० उस समय तो मेरी बातों पर कान तक न झुकाया, क्यों?

(2) शर्मिन्दा होना। प्र० वह क्या करता, कान झुकाए चला गया।

कान ठनकना—भावी विपत्ति की आशंका होना। प्र० कन्नगी के कान ठनक गए (सुहाग०–नागर, 239)।

कान ढलकाना—दबकर रहना। प्र० फल यह होता था कि उसी पोथी को लेकर मुसलमान लड़के हिन्दुओं को छेड़ते थे और हिन्दू लड़के कान ढलका कर चुपके हो जाते थे (गु० नि०–बा० मु० गु०, 304)।

कान तक आना, -पहुंचना या पहुंचाना—किसी बात का सुनाई पड़ना, जानकारी में आना। प्र० जब यह वृद्ध हो गए थे और श्री गोकुल में रहा करते थे, धीरे-धीरे इनके गुण शाहनशाह अकबर के कानों तक पहुँचे (भा० ग्रं० (3)–भारतेन्दु, 73); लेकिन मरने के करीब के ज़माने की कोई शिकायत मेरे कान तक नहीं आई (झाँसी०–वृं० वर्मा, 144)।

कान तक जल उठना—बहुत कुढ़ जाना। प्र० पहले और आगे लाखों नहीं सोच सकी × × कान तक जल उठी (मृग०–वृं० वर्मा, 320)।

कान तक पहुंचना या पहुंचाना—दे० कान तक आना।

कान दबना—दबाव पड़ना। प्र० कान दबेगा तो सब कुछ करना पड़ेगा।

कान दबाकर चले जाना—चुपचाप चले जाना। प्र० बेचारे यहाँ से भी निराश हुए, चुपके से कान दबाये चल खड़े हुए (आज़ाद०–प्रेमचन्द, 23)।

कान दबाना—(1) हिचकिचाना। प्र० ऐसी बात थी तो तुम्हें कान नहीं दबाना चाहिए था, चले आना चाहिए था।

(2) दबाव डालना। प्र० कान दबाओ तो काम बने।

(3) दबना, सहमना (हिं० श० सा०)।

कान देकर सुनना, -धरकर सुनना—बड़े ध्यान से सुनना। प्र० और उपाई नहीं रे बौरे, सुनि तू यह दै कान (सू० सा०–सूर, 304); सुनो भैया भूप सकल दै कान (गीता० (बा०)–तुलसी, 89); घनआनंद प्यारी सुजान दै कान अहा सुनियै हित-बात हहा (घन० कबित्त–घना०, 151); यह बहुत अच्छी कथा है इसे कान दे सुनो (स० ग्रंथा० –स० मिश्र, 7); बात के अर्थ से अलग और भी अर्थ है मुझमें, अकथित, अकथ्य अभिप्राय, ज़रा कान देकर सुनो (नदी०–अज्ञेय, 106)।

कान देखे बिना कौए के पीछे दौड़ना—किसी के बहकावे में आना, बात को स्वयं जाने-समझे बिना किसी के कहे में आ जाना। प्र० दौड़ पीछे पड़ें न कौवे के कान अपना न किस लिये टोवें (चुभते०–हरिऔध, 102)।

कान देना—(1) ध्यान देना। प्र० खेलत कान तहाँ दै रहै। जहँ कोउ काम कथा कुछु कहै (नंद०ग्रंथा०–नंद०, 106); भावती तिहारी वह काल्हि ही तें 'केसौराइ' काम की कथानि कछु कान देन लागी है (केशव०–केशव, 73); कान नहीं देती थी कभी पगले प्रेमी के गीत पर (दूधगाछ–दे० स०, 250)।

(2) ध्यान से सुनना। प्र० वह कान देकर सुनने लगा (शेखर० (2)–अज्ञेय, 67)।

(3) विनती सुनना। प्र० हाकिमों से जो कुछ कहना-सुनना था कह-सुन चुके, किसी ने भी कान न दिया (कर्म०–प्रेमचंद, 262)।

कान धरकर सुनना—दे० कान देकर सुनना।

कान धरना—(1) सुनना। प्र० गग्गा गुरु के वचन पछाना, दूजी बात न धरई काना (कबीर ग्रन्था०–कबीर, 310); बात न धरति कान, तानति भौंह बान, तऊ न चलति बाम अंखिया फरकि रही (सू० सा०–सूर, 3405)।

(2) सजा देना। प्र० आप बड़े हैं, आपको कान धरने का भी

अधिकार है।

कान न खड़खड़ाना—कुछ न कहना; सीधा बन जाना। प्र० उसे सब कुछ भला-बुरा सुनाया गया पर उसने कान तक न खड़खड़ाया।

कान न खड़ा करना—चुपचाप सुन लेना, कोई प्रतिवाद न करना।

कान न दिया जाना—(1) शोर के कारण कुछ न सुनाई देना। प्र० और गारे कोलाहल के कान नहीं दिया जाता (भा० ग्रं० (1)–भारतेन्दु, 287)।

(2) न सुन सकना; सह न पाना। प्र० कोलाहल के मारे कान नहीं दिया जाता था (वैशाली० (2)–चतुर०, 6)।

कान न हिलना या हिलाना—(1) कुछ न कहना, कोई विरोध न करना। प्र० इतने दिनों तक कान न हिलाये, जब मैंने जमीन सोना बना लिया तब हिस्सा बाँटने चले हो? (मान० (7)–प्रेमचंद, 207)।

(2) टस से मस न होना। प्र० कोचवान और बारगीरों ने लाख ज़ोर लगाया, मगर उन्होंने ज़रा कान तक न हिलाया (आज़ाद–प्रेमचंद, 135)।

कान न होना—कोई असर न होना। प्र० मैंने बहुत समझाया पर उन्हें कान न हुआ।

कान पकड़कर—अपमान के साथ; जबरदस्ती। प्र० आप मेरा कान पकड़कर ले जाइएगा (सेवा०–प्रेमचंद, 171)।

कान पकड़कर उठाना-बैठाना, -उठा-बैठी करना या कराना—अपनी भूल को स्वीकार करना और प्रायश्चित्त स्वरूप कान पकड़ कर उठना-बैठना या उठाना-बैठाना।

कान पकड़कर उठा-बैठी करना—दे० कान पकड़कर उठाना-बैठाना।

कान पकड़ना—(1) किसी काम को न करने की प्रतिज्ञा करना। प्र० और आज से कान पकड़ो कि किसी पत्र में एक शब्द भी न लिखोगे (मान० (1)–प्रेमचंद, 68)।

(2) तुलना में परास्त करना। प्र० घोड़े की सवारी में पुरुषों के कान पकड़ती है (झाँसी०–वृं० वर्मा, 27)।

(3) किसी का कान पकड़कर दंड देना। प्र० आप मुझे झिड़कें, घुड़कें, कोसें, इच्छा हो तो मेरे कान भी पकड़ें (मान० (2)–प्रेमचंद, 9)।

(4) किसी बड़े का नाम लेने का दोष मार्जन करना। प्र० यह दोनों डाकू दूर-दूर तक मशहूर थे, अच्छे-अच्छे डकैत उनके नाम सुनकर अपने कान पकड़ते थे (आज़ाद०–प्रेमचंद, 473)।

कान पकड़ने का काम करना—ऐसा काम करना जिसके लिए दंड मिले; बुरा काम करना। प्र० काम कर कान पकड़ने का, मान क्यों अपना हैं खोते? (मर्म०–हरिऔध, 69)।

कान पकना—किसी बात को बार-बार सुनते-सुनते उकता जाना। प्र० भगतजी की तीर्थ-यात्रा की कथाएँ सुनते-सुनते तो हमारे कान पक गये (ब्रह्म०–दे० स०, 145)।

कान पड़ना—सुनाई पड़ना। प्र० जब ते कुंवर कान्ह, रावरी कला-निधान, कान परी वाके कहूँ, सुजस कहानी सी (शब्द०–देव, 32); परिगौ कानन सखिआ, पिअ को गौन (रहीम कवि०-रहीम, 47)।

कान पड़ी आवाज़ न सुनाई देना, -बात न सुनाई देना—बहुत शोर होना। प्र० कान परी सुनियै नाहीं बहु बाजत ताल मृदंग (सू० सा०–सूर, 3525); गुल-गपाड़े की आवाज़ ऐसी बुलन्द है कि × × कान-पड़ी आवाज़ नहीं सुनायी देती (आज़ाद०–प्रेमचंद, 45)।

कान पड़ी बात न सुनाई देना—दे० कान पड़ी आवाज़ न सुनाई देना।

कान (कानों) पर जूं न चलना, -फिरना, -भरना, -रेंगना—कुछ भी परवाह न होना, कुछ भी ध्यान न होना। प्र० सब गांधी जी की जै बोलते हैं, पर अपने पर आती है तो कान पर जूं भी नहीं रेंगती (बौने०–रां० रा०, 23)।

कान (कानों) पर जूं न फिरना—दे० कान (कानों) पर जूं न चलना।

कान (कानों) पर जूं न भरना—दे० कान (कानों) पर जूं न चलना।

कान (कानों) पर जूं न रेंगना—दे० कान (कानों) पर जूं न चलना।

कान (कानों) पर जूं रेंगना—स्थिति का ज्ञान होना, होश होना। प्र० सब कुछ खो दिया तब कानों पर जूं रेंगी।

कान (कानों) पर (में) रखना—स्मरण रखना। प्र० मेरी बात सदा कानों में रखना।

कान (कानों) पर विश्वास न होना—सुनी हुई बात पर विश्वास न होना। प्र० मुंशी शिवलाल को अपने कानों पर विश्वास नहीं हुआ (भूले०–भग० वर्मा, 8)।

कान (कानों) पर से गोली जाना, -निकल जाना—किसी मुसीबत से साफ बच जाना। प्र० यही समझो दादी कि कानों पर से गोली चली गयी और हम लोग बच गये।

कान पर से गोली निकल जाना—दे० कान (कानों) पर से गोली जाना।

कान (कानों) पर हाथ धरना, -रखना—(1) भय या आश्चर्य से सहम जाना। प्र० कोल, भील, भर, पासी × × जिन बुराइयों का नाम सुनकर कान पर हाथ रखते हैं (ठेठ०–हरिऔध, 53)।

(2) अनजान बनना, साफ इन्कार करना। प्र० दूसरे की दया सब लोग खोजते हैं और स्वयं करनी पड़े तो कान पर हाथ रख लेते हैं (तितली–प्रसाद, 186)।

कान (कानों) पर हाथ रखना—दे० कान पर हाथ धरना।

कान पारना—ध्यान से सुनना। प्र० काननि पारि न सुनत याहि ते नेको बैन हमारो (ठेठ०–हरिऔध, 13)।

कान फटना—दे० कान की झिल्ली फटना।

कान फटफटाना—पैंतरा बदलना; डींग मारना। प्र० ए भाईजान, अब बहुत कान न फटफटाओ नहीं तो ठीक न होगा।

कान फड़फड़ाना, -मारना—होशियार या सचेत हो जाना (कुत्तों के ऐसा करने के कारण मुहावरा चल पड़ा है)। प्र० पहले तुमने क्यों नहीं कान फड़फड़ाया?

कान फाड़ना—बहुत शोर करना। प्र० यह गीत बन्द ही नहीं होता। कान फाड़े दे रहा है (घूम०–उ० भट्ट, 5)।

कान फुंकवाना—गुरु-मंत्र लेना, दीक्षा लेना। प्र० तो तू भी किसी सिद्ध से

कान फुंकवाकर तुमड़ी तोड़वा ले (भा० ग्रं० (1)–भारतेन्दु, 445)।

कान फूंकना—(1) बहकाना, कान भरना। प्र० तब रखें पाँव फूंक-फूंक न क्यों और के कान फूंकने वाले (चुभते०–हरिऔध, 119)। (2) मंत्र देना, दीक्षा देना। प्र० फूंकते कान क्यों नहीं अपना और के कान फूंकने वाले (चुभते०–हरिऔध, 122)।

कान फूटना—बहुत शोर होना। प्र० गरजनि तरजनि अनु अनु भाँती। फूटें कान अरु फाटै छाती (नंद० ग्रंथा०–नंद०, 168)।

कान फेर लेना—किसी की बात सुनने से इन्कार कर देना। प्र० आप तो सदा कान ही फेर लेते हैं, मेरी विपदा सुनते कब हैं।

कान फोड़ना—बहुत शोर करना। प्र० दादुर झींगुर कानन फोरै (नंद० ग्रंथा०–नंद, 116); लवंग—अरे कान न फोड़े डाल, इधर आ (भा० ग्रं० (1)–भारतेन्दु, 643); कां कां रव कर था न कान को फोड़ता (वैदेही०–हरिऔध, 45)।

कान बन्द करना, -बहरे करना, -मूंद बैठना—सुनी को अनसुनी करना। प्र० हम सकें मूंद मुंह भला कैसे आप तो कान मूंद बैठे हैं (चोखे०–हरिऔध, 43)।

कान बचाकर—दूसरे न सुनें, इस रूप में। प्र० छिप-छिप के जो की जाती है बात, एक की बचा के आँख, दूसरे का बचा के कान उसमें भी होती है जान? (बुद्ध०–बच्चन, 88)।

कान बजना, -सनसनाना—कान में सांय-सांय की आवाज़ होना। प्र० न जाने क्या बात है, सुबह से ही मेरा कान बज रहा है।

कान बहना—कान से पस निकलना। प्र० जब निराला रस तुझसे वहा नहीं कान तू ही सोच तब तू क्या वहा (बोल०–हरिऔध, 78)।

कान बहरे करना—दे० कान बन्द करना।

कान बहरे होना—जान-बूझकर किसी बात को न सुनना। प्र० आपके कान बहरे हैं और इसका मेरे पास कोई इलाज नहीं है।

कान बिछाना—ध्यान से सुनना। प्र० सब लोग कान बिछाए बातें सुन रहे थे।

कान भन्नाना—दे० कान झन्नाना।

कान भर जाना—(1) किसी बात को पर्याप्त सुन लेना। प्र० मधुकर मोर कोकिला चातक, सुनि-सुनि श्रवन भरे (सू० सा०–सूर, 4385)। (2) किसी बात को सुनते-सुनते ऊब जाना। प्र० बहुत हुआ। कान भर गये (राधा० ग्रंथा०–राधा० दास, 636)।

कान भर लेना—कान में बसा लेना। प्र० अलाउद्दीन खाँ साहब के सरोद की स्वर-लहरी मैंने अपने कानों में भर ली है।

कान भर जाना, -में गरम मसाला भरना, -फूंकना—चुगली खाना, धारणा बिगाड़ना। प्र० इधर हाकिमों के कान भरे जाने लगे (राधा० ग्रंथा० –राधा० दास, 368); यह सारी आग भैरो की लगाई हुई है। उसने रास्ते ही में साहब के कान भर दिए थे (रंग० (1)-प्रेमचंद, 217)।

कान भारी करना—बात पहुँचाना, शिकायत करना। प्र० दरकार हो तो कर दूं लाटों के कान भारी (गु० नि०–बा० मु० गु०, 672)।

कान मलना—दे० कान उमेठना।

कान मारना—दे० कान फड़फड़ाना।

कान मूंद बैठना या मूंदना—दे० कान बन्द करना।

कान (कानों) में आना—(1) खबर मिलना। प्र० शायद उनकी यह पहली शिकायत है, जो मेरे कान में आई है (रंग० (1)–प्रेमचंद, 336)। (2) सुनाई पड़ना। प्र० सहसा धनिया का कर्कश स्वर कान में आया (गोदान–प्रेमचंद, 43)।

कान (कानों) में उंगली डालना, -दबाना, -देना, -रखना—सुनने से इनकार करना। प्र० सुनें सीखें आँखें खोलें, न उंगली कानों में दे लें (मर्म० –हरिऔध, 74)।

कान (नों) में उंगली दबाना—दे० कान (कानों) में उंगली डालना।

कान (नों) में उंगली देना—दे० कान (कानों) में उंगली डालना।

कान (नों) में उंगली रखना—दे० कान (कानों) में उंगली डालना।

कान में उड़ती बात पड़ना—यों ही मालूम पड़ जाना। प्र० बात को दें उड़ा न यह कहकर पड़ गई बात कान में उड़ती (बोल०–हरिऔध, 109)।

कान में कहना, -कान लगाना—चोरी से कहना ताकि दूसरे न सुन सकें। प्र० प्रभाकर उठने को था कि दिलावर भीतर आया; राजा साहब के कान में कान लगाया (चोटी०–निराला, 132)।

कान में कान लगाना—दे० कान में कहना।

कान में कौड़ी डालना—गुलाम बनाना।

कान (नों) में गरम मसाला भरना—दे० कान भरना।

कानों में घर करना—किसी सुनी बात पर पूरा विश्वास करना। प्र० संत-महात्मा की बातें उसके कानों में घर ही नहीं करतीं।

कान में जहर के बुझाए बाण लगना—अत्यन्त अप्रिय बात सुनना। प्र० अपनी कटूक्तियाँ बन्द कर सखी, कानों में ज़हर के बुझाये बाण लग रहे हैं।

कान में ठीठे ठोंकना, -में ठेंठड़ खोंसना, -में ठेंठी डालकर बैठना, -में ठेंठी लगाना, -में तेल डालकर बैठना, -में तेल डालकर सो जाना, -में तेल डालना, -में रूई डालकर बैठना, -में रूई डालकर सो जाना—बात सुनकर भी उस ओर कुछ ध्यान न देना। प्र० अन्त को आँखों पर पट्टी बाँधकर, कानों में ठीठे ठोंककर, नाक में नकेल डालकर आदमी को जिधर तिधर घसीटे फिरता है (गु० नि०–बा० मु० गुप्त, 201); इत्ती-इत्ती खुशामद करी, की बहुआ तनो उठाय देओ—उठाय देओ—और कान में ठेंठड़ खोंस के बहुआ चली गई (बूंद०–नागर, 23)।

कान में ठेंठड़ खोंसना—दे० कान में ठीठे ठोंकना।

कान (नों) में ठेंठी डालकर बैठना—दे० कान में ठीठे ठोंकना।

कान में ठेंठी लगाना—दे० कान में ठीठे ठोंकना।

कान (नों) में डाल देना, -फूंकना—सुना देना; सूचित कर देना। प्र० उसने परमानन्द के कान में डाल दी बात (परती०–रेणु, 419)।

कान में तीर-सा लगना—सुनने में अत्यन्त अप्रिय लगना। प्र० तुम्हारे ये

वाक्य कानों में तीर-सा लग रहे हैं, अब बस करो।

कान (नों) में तेल डालकर बैठना—दे० कान में ठीठे ठोंकना।

कान (नों) में तेल डालकर सो जाना—दे० कान में ठीठे ठोंकना।

कान (नों) में तेल डालना—दे० कान में ठीठे ठोंकना।

कान में पड़ना—(1) सुनाई पड़ना। प्र० स्याम नाम स्रवननि पर्‌यौ, हरषी मुख जोई (सू० सा०—सूर, 3338); छठें श्रवन यह परत कहानी (राम० (बाल)—तुलसी, 175); "हम बुरे हैं" दूसरों के कान में पड़ते ही इसका अर्थ उलट जाता है (चिन्ता० (1)—शुक्ल, 59)। (2) सूचित होना। प्र० राजा के कान में बात पड़ जायगी तो बांसें पानी चढ़ेगा (चोटी०—निराला, 120)।

कान (नों) में पारा भरना—बहरा बन जाना। प्र० आप तो उसकी ओर से कानों में पारा भरकर बैठे हैं।

कान में फुसफुसाहट घोलना—कान के पास मुंह ले जाकर बहुत धीरे-धीरे बातें करना। प्र० चौधरी का यह रुख देख, लवसूल उत्साहित होकर और उसके पास आकर कान में फुसफुसाहट घोलने लगा (सात०—नागर, 72)।

कान (नों) में फूंक मारना—कुमंत्रणा देना। प्र० अपनी इच्छा की पूर्ति के लिए वह उसे आठों पहर बेसुध बनाए रखती और इस बेसुधी में वह निरन्तर मीठे-मीठे शब्दों में अपना स्वार्थ बांध कर कोवलन के कानों में फूंका करती (सुहाग०—नागर, 181)।

कान (नों) में फूंकना—(1) दे० कान भरना। (2) दे० कान में डालना।

कान (नों) में बात करना या होना—चुप-चुप बात करना या होना। प्र० भैरो ने तो पहुंचते ही ताड़ी नापनी शुरू की, और इधर मिस्त्री ने गवाहों को तैयार करना शुरू किया। कानों में बातें होने लगीं (रंग० —प्रेमचंद, 342)।

कान में बात डालना, -पिरोना—कहना। प्र० ये फिर झट उसके कान में जाकर बात पिरो देंगी (सारा०—यादव, 22)।

कान में बात पड़ना—चर्चा सुनाई पड़ना। प्र० भला सोचो तो डिप्टी साहब के कानों में यह बात पड़ जाय तो तुम्हारा क्या हाल हो? (प्रेमा०—प्रेमचंद, 57)।

कान में बात पिरोना—दे० कान में बात डालना।

कान में बात मारना, -बोल मारना—सुनकर टाल जाना। प्र० वे तो कान में बात मारकर चलता बने।

कान में बोल मारना—दे० कान में बात मारना।

कान में भनक डाल देना—किसी को किसी बात की सूचना दे देना। प्र० इन लोगों के कानों में भी भनक डालनी थी, सो डाल दी (मा—कौशिक, 34)।

कान में भनक पड़ना—किसी बात की जानकारी हो जाना; उड़ती-उड़ती खबर मिलना। प्र० होरी के कानों में भी इस बात की भनक पड़ी (गोदान—प्रेमचंद, 107)।

कान में मंत्र पढ़ना—सलाह देना; कहना। प्र० इस बार श्री मुंशी मिट्ठन लाल ने ×× महाराजा साहब के कान में न जाने क्या मंत्र पढ़ दिया कि वह एकदम बिलकुल शान्त हो गए (एक०—मुल्क०, 71)।

कान (नों) में रूई डालकर बैठना—दे० कान में ठीठे ठोंकना।

कान (नों) में रूई डालकर सो जाना—दे० कान में ठीठे ठोंकना।

कान रखना—सुनने या जानने को उत्सुक रहना। प्र० अब आप कान रख के, आंख मिला के, सन्मुख हो के टुक इधर रखिए (इंशा०—इंशा०, 90)।

कान रोपना—ध्यान से सुनना। प्र० सब ग्वालबाल कान रोपकर श्रीदामा की बात सुनने को खड़े हो गये।

कान लम्बे होना—खोज-खोजकर बात सुनना। प्र० हां बहू, दुखिया के कान बड़े लम्बे होते हैं (निशि०—वि० प्र०, 139)।

कान लगना—(1) चुपके से कहना। प्र० पवन स्रवन राजा के लागा। लरहिं दुऔ पदमावति नागा (पद०—जायसी, 36/13); कान लागि कह्यौ जननि जसोदा, वा घर मैं बलराम (सू० सा०—सूर, 858); लगि लगि कान कहहिं धुनि माथा अब सुर काज भरत के हाथा (राम० (अ)—तुलसी, 623); तब कानों में उसके लग कर कुछ नमक मिरच भी लगा-लगा। शहजादे और मेहर के उसने गुप्त प्रेम का हाल कहा (नूर०—भक्त, 54)।
(2) कानों के पास जाना। प्र० बोलहिं सबद सहेली कान लागि गहि माथ (पद०—जायसी, 27/13); भौंर एक चहुँदिसि तैं उड़ि-उड़ि कानन लगि लगि-गावै (सू० सा०—सूर, 4073)।
(3) ध्यान से सुनने की चेष्टा करना। प्र० कान उधर लगा गये (अमृत०—नागर, 507)।
(4) कान के पीछे घाव होना। प्र० चश्मे के कारण कान लग गया है तो चश्मा उतार दो।

कान लगाकर सुनना, -लगाना—ध्यानपूर्वक सुनना। प्र० कन-रसिया शिव शम्भु खटिया पर उठ बैठे। कान लगाकर सुनने लगे (गु० नि०—बा० मु० गु०, 204); राज्यश्री दरवाजे के बाहर कान लगाए खड़ी थी (बूंद०—नागर, 294)।

कान लगाना—दे० कान लगाकर सुनना।

कान लाल करना—कान पकड़कर दंड देना। प्र० ठहर तो, अभी तेरा कान लाल करती हूँ।

कान सनसनाना—दे० कान बजना।

कान सिराना—सुनकर तृप्ति होना। प्र० अब याहू के गुन सुनि नेहु न. जातैं स्रवन सिराई (सू० सा०—सूर, 1876)।

कान सुन्न होना—कुछ सुनाई न पड़ना। प्र० मेरा तो कान सुन्न हो रहा है।

कान से निकल जाना—सुनी बात भूल जाना। प्र० उसने कहा था तो फिर बात कान से क्यों निकल गयी?

(किसी के) कान से निकाल देना—कह देना; सूचित कर देना। प्र० तुम बाबू साहब के कान से यह बात निकाल देना, तुम्हारी जिम्मेदारी पूरी हो जायेगी।

कान से लगना—गुप्त रूप से, धीरे से कान में कुछ कहना। प्र० कह लंकेस

मंत्र लगि काना (रश्म० (ल')–तुलसी, 871); दूसरे कान से लगे जब हैं क्यों सुनें बात कान के हलके (बोल०–हरिऔध, 75)।

कान हिलाना—तनिक भी चेष्टा करना या ध्यान देना। प्र० हम भला कान क्या हिलायें कान पर रेंगती नहीं जूं तक (चुभते०–हरिऔध, 112)।

कान होना—(1) सचेत होना। प्र० यदि ऐसी दो-चार घटनायें हर महीने हो जाएँ तो बदमाशों को भी कान हो जाये (सु० सु०–सुदर्शन, 200)।

(2) ध्यान होना। प्र० आशा तो नहीं है कि वक्त पर जवाब दोगे फिर भी मुमकिन है इधर कान हो जायं, जवाब मिल जाय (पद्म० के पत्र–पद्म० शर्मा, 45)।

(3) केवल सुनी बात पर विश्वास करना। प्र० अधिकारियों को आप जानते ही हैं, आँखें नहीं, केवल कान होते हैं (सेवा०–प्रेमचंद, 73)।

कान-आँख खोलकर—सचेत होकर। प्र० रानी—यही कि कान और आँखें खोलकर समय की प्रतीक्षा करें (झांसी०–वृं० वर्मा, 117)।

कान कटाई होना—मूर्ख बनना; उपहास होना या बदनामी होना। प्र० सूरदास के प्रभु सो करियै, होइ न कान कटाई (सू० सा०–सूर, 185)।

कान-तले को छोड़ना—(1) झूठी बात उड़ाना। प्र० तुम भी खूब कान तले की छोड़ते रहते हो।

(2) चुभती बात कहना।

कान-पकड़ी छेरी, -छोरी, -लौंडी—आज्ञाकारिणी।

कान-पकड़ी छोरी—दे० कान-पकड़ी छेरी।

कान-पकड़ी लौंडी—दे० कान-पकड़ी छेरी।

कान-पूंछ झारकर चला जाना, -दबाकर चला जाना, -दबाकर भागना—चुपचाप चले जाना; बिना विरोध किये टल जाना। प्र० तुम्हारा कल्याण इसी में है कि चुपचाप कान-पूंछ दबाकर चले जाओ।

कान-पूंछ दबाकर चला जाना—दे० कान-पूंछ झारकर चला जाना।

कान-पूंछ दबाकर भागना—दे० कान-पूंछ झारकर चला जाना।

कान-पूंछ फटकारना—होशियार होना। प्र० ऐसी होशियारी से काम करना कि उसे कान-पूंछ फटकारने का मौका न मिले।

कान-रस—बात सुनने की इच्छा। प्र० उधर से सब सुन रही थी। इसे कान-रस बहुत है (अंधेरे०–राकेश, 353)।

काना करना—तिरछा बना देना। प्र० ठीक से काटना, कपड़ा काना मत कर देना।

काना-कानी होना, काना-फूसी होना—गुप-चुप चर्चा होना; टीका-टिप्पणी होना। प्र० जब जाना कि अब लोगों में यही बात काना-कानी हो रही है, तब भय से डरती कांपती ×× कहने लगी (स० ग्रंथा०–स० मिश्र, 9); जालपा की सिसकियाँ, पिता की झिड़कियाँ, पड़ोसियों की कानाफूसियाँ सुनने की अपेक्षा मर जाना कहीं आसान होगा (गबन–प्रेमचंद, 131)।

कानाफुस्की करना, कानाफूसी करना, काना बाती करना—(1) गुप्त रूप से राय करना। प्र० लोग उतपाती, कानाबाती हैं करत घाती, जब गली बाकी नैंक पाउँ धरियत है (क० र०–सेनापति, 36); लाला मदन मोहन को सुनाकर चुन्नी लाल और शिम्भू दयाल आपस में कानाफूसी करने लगे (परीक्षा०–श्री० दास, 18)।

(2) बहुत धीरे-धीरे बात करना। प्र० पूछने पर लड़के कानाफूसी करने का या एक साथ सभी उसकी अनुपस्थिति का कारण सुनाने को आतुर होने लगे (अतीत०–महादेवी, 75)।

कानाफूसी करना—दे० कानाफुस्की करना।

कानाफूसी की आग फैलना—कानाफूसियों में खूब चर्चा होना। प्र० कमरों-कमरों में कानाफूसियों की आग फैल गयी (अमृत०–नागर, 507)।

कानाफूसी होना—दे० काना-कानी होना।

काना-बाती करना—दे० कानाफुस्की करना।

कानि करना—मर्यादा का ध्यान रखना। प्र० एक गाउं कैं बसत कहाँ लौं, करैं नन्द की कानी (सू० सा०–सूर, 929)।

कानि तोड़ना, -बहाना—लोक-मर्यादा का ध्यान न रखना। प्र० अबलनि सौं न कही परै जु पै, बात तोरि करि कानि (सू० सा०–सूर, 4745); लोक बेद कुल-कानि बहाई सुख न रह्यो खोयो (भा० ग्रं० (2)–भारतेन्दु, 116)।

कानि बहाना—दे० कानि तोड़ना।

कानी उँगली के नाखून पर न्यौछावर होना, -पर न्यौछावर होना—पूर्ण अनुगत होना। प्र० एक ओर उसका इतना बड़ा राज-पाट और वह स्वयं भी मेरे चरण की इस कानी अँगुली के नाखून पर न्यौछावर था (गोली–चतुर०, 10)।

कानी उँगली पर न्यौछावर होना—दे० कानी उँगली के नाखून पर न्यौछावर होना।

कानी उँगली भी न हिला पाना—कोई प्रतिवाद न कर पाना; कुछ न कर पाना। प्र० उनके खिलाफ तुम अपनी कानी उँगली तक न हिला सकते थे (बल०–नागा०, 68)।

कानी का ब्याह होना—किसी बड़े मुश्किल काम का होना। प्र० कानी का ब्याह जब हो जाये तभी समझो।

कानी कौड़ी—(1) बहुत थोड़ा धन। प्र० मैंने कहा–कानी कौड़ी भी कभी नहीं देता (मान० (1)–प्रेमचंद, 266)।

(2) वह कौड़ी जो टूटी हो।

कानी कौड़ी का—अत्यन्त तुच्छ; महत्त्वहीन। प्र० यह तर्क उन दिनों हमें सारे हिन्दू धर्म को कानी कौड़ी का बतलाने के लिए अपार बल दिया करता था (अमृत०–नागर, 173)।

कानी कौड़ी की कीमत न होना—कोई कीमत न होना। प्र० मेरी नजरों से इसकी कीमत कानी कौड़ी भी नहीं है।

कानून करना—तर्क-वितर्क करना। प्र० देखो, मुझसे व्यर्थ कानून मत करो।

कानून का पुतला—कानून जानने वाला। प्र० वह कानून का पुतला था

(मान० (7)–प्रेमचंद, 165)।

क़ानून की लपेट में आना—ग़ैर क़ानूनी काम करने के कारण क़ानूनी तौर पर फंस जाना। प्र० और वह कहीं क़ानून की लपेट में आ गया तो?

क़ानून की लपेट से बचना—ग़ैर क़ानूनी काम करके क़ानूनी शिकंजे से बचना। प्र० लेकिन क़ानून की लपेट से कब तक बचेगा? (कम०–कम०, 67)।

क़ानून के बाहर जाना—ग़ैर क़ानूनी काम करना। प्र० मैं कभी क़ानून के बाहर नहीं जाता (मान० (3)–प्रेमचंद, 131)।

क़ानून के साथ मज़ाक़ करना—क़ानून का उपहास करना; क़ानून को तुच्छ समझना। प्र० तुम क़ानून के साथ मज़ाक़ करते हो?

क़ानून छांटना, -बघारना—तर्क-वितर्क करना। प्र० इन्हें तो बस घर में क़ानून बघारना आता है (ग़बन–प्रेमचंद, 53)।

क़ानून तोड़ना—क़ानून न मानना। प्र० गांधी जी के नेतृत्व में भारत की जनता नमक क़ानून तोड़ने के लिए डांडी चल पड़ी।

क़ानून पढ़ाना, -सिखाना—अक्ल सिखाना। प्र० वाह यार, तुम मुझे ही क़ानून पढ़ाने लगे?

क़ानून पर चलना—नियमानुसार काम करना। प्र० क़ानून पर चलोगे तो कोई क्यों तुम्हें कुछ कहेगा?

क़ानून बघारना—दे० क़ानून छाँटना।

क़ानून सिखाना—दे० क़ानून पढ़ाना।

क़ानून हाथ में लेना—जनता का नियम-क़ानून को न मानकर स्वेच्छा से काम लेना। प्र० तुम लोग ख़ुद क़ानून हाथ में ले लोगे तो फिर सरकार क्या करेगी?

क़ानूनी शिकंजे में खींचना—अभियोग चलाना। प्र० देखना, वे कैसे विपक्षियों को क़ानूनी शिकंजे में खींचते हैं।

काने को काना कहना—अप्रिय सत्य कहना। प्र० बात सच है, जल मरेगा वह मगर लोग काना को अगर काना कहें (चोखे०–हरिऔध, 22)।

कानों को न लगना—विश्वास न आना। प्र० उसने तो ऐसी-ऐसी बातें बताईं जो मेरे कानों को न लगीं।

कानों को मज़ा पड़ना—सुनने का चसका पड़ना। प्र० देखना, कुछ दिनों में तुम्हारे कानों को भी शास्त्रीय संगीत का मज़ा पड़ने लगेगा।

कानों को मज़ा देना—सुनने में अच्छा लगना। प्र० एक बार चलकर देखो, मुन्नी बाई का गाना कानों को मज़ा देगा।

कानों को हाथ लगाना—तौबा करना। प्र० उनकी हरकतें देखकर अब्दुल मियां ने कानों को हाथ लगा लिया।

कानों पर उँगलियां रखना—किसी बात को सुनने से अस्वीकार करना। प्र० मैंने उसे कितना ही समझाया पर उसने तो अपने कानों पर उँगली रख ली।

कानों पर उड़ा देना—अनसुनी करना। प्र० मैं तो जितनी बातें कहता हूँ ये लोग कानों पर उड़ा देते हैं, अब तुम्हीं इन लोगों को समझाओ।

कानों में अमृत टपकना, -डालना, -ढालना—सुनने में अत्यन्त प्रिय लगना। प्र० डालता था कानों में सुधा, कभी वह तुतली बोली बोल (मर्म०–हरिऔध, 116); ढालते हैं शब्द श्रुतियों में सुधा। स्वाद निज पाती नहीं रसना-क्षुधा (साकेत–गुप्त, 4)।

कानों में अमृत डालना—दे० कानों में अमृत टपकना।

कानों में अमृत ढालना—दे० कानों में अमृत टपकना।

कानों में खटकना—सुनने में बुरा मालूम होना या शंका होना। प्र० मुझे तो उसकी बातें उसी समय कानों में खटकी थीं।

कानों में गूंजना—किसी सुनी हुई प्रभावशाली बात का बार-बार ध्यान आना। प्र० उसकी कड़वी बातों की ध्वनि क्यों कानों में गूंजी (मर्म०–हरिऔध, 150)।

कानों में बसा होना, -समाना—सुनी ध्वनि या बात हर समय जैसे सुनाई पड़ना। प्र० रह-रह कर उसकी आंखों के सामने वह बन्दूक घूम रही थी और कानों में चिड़ियों का शोर समाया हुआ था (कम०–कम०, 117)।

कानों में रस पड़ना—मधुर गीत सुनाई पड़ना। प्र० हम लोग बैठे बातें कर रहे थे कि अचानक कानों में रस पड़ने से सब का ध्यान उस ओर चला गया जिधर से वह आवाज़ आ रही थी।

कानों में समाना—दे० कानों में बसा होना।

कानों में सीसा उड़ेल लेना—किसी बात को सुनने से इनकार करना। प्र० तुम तो हमेशा कानों में सीसा उड़ेले बैठे रहते हो मैं जो कहता हूँ उसे कभी सुना भी करो।

कानों सुना—स्वयं सुना हुआ। प्र० मैंने कानों सुनी हैं ये सब बातें, अब तुम्हें विश्वास न हो तो मैं क्या करूँ?

कानों से काम लेना—सबकी बातें सुनकर तब निर्णय करना। प्र० तुम चाहो तो मनमानी करो, पर भई मैं तो कानों से काम लूंगा।

कानों-कान ख़बर न होना, -न जानना, -पता न होना—रहस्य प्रकट न होने देना। प्र० मजूरों को कानों-कान ख़बर न थी (गोदान–प्रेमचंद, 285)।

कानों-कान ख़बर फैलना, -फैलना—किसी गुप्त बात का फैलना। प्र० बाबा की बीमारी की ख़बर कानों-कान फैल गई थी (शेखर० (2)–अज्ञेय, 96)।

कानों-कान न जानना—दे० कानों-कान ख़बर न होना।

कानों-कान पता न होना—दे० कानों-कान ख़बर न होना।

कानों-कान फैलना—दे० कानों-कान ख़बर फैलना।

कानों-कान बात पहुँचना या पहुँचाना—चुपचाप सूचित कर देना या हो जाना। प्र० दूर बैठे हुए लोगों को पास बैठे हुओं ने बात कानों-कान पहुँचा दी (अमृत०–नागर, 473)।

कापी का गोला या कापी-गोली—वह ढांचा जिसमें जहाज़ की चरखी या गड़ारी बैठायी जाती है।

कापी काली करना—व्यर्थ लिखते रहना। प्र० माँ ने लिखा था कि काम-धन्धा छोड़कर सारा दिन बैठी कापियां काली करती रहती है × × × (चेतन–अश्क, 147)।

क़ाफ़िया ढीला होना—बेदम होना। प्र० मार खाते-खाते तो बेचारे का क़ाफ़िया ढीला हो गया।

क़ाफ़िया तंग करना या होना—बहुत हैरान करना या होना। प्र० इधर भी [illegible] इस साल बेहद पड़ रही है, क़ाफ़िया तंग है (पद्० के पत्र—पद्म० शर्मा, 43)।

क़ाफ़िया मिलाना—(1) मित्र बनाना। प्र० नई जगह में आ गये हो, कुछ लोगों से क़ाफ़िया मिला लो तो तुम्हें भी आराम हो जायेगा।

(2) तुकबन्दी करना। प्र० कविता क्या करता हूँ, बस क़ाफ़िया मिला लेता हूँ।

काफ़ूर होना—गायब होना। प्र० वह तो मेरे रुपये लेकर उस दिन से ऐसा काफ़ूर हुआ कि अभी तक उसका कुछ पता ही न चला।

काबा-काशी होना—अत्यन्त प्रिय और आदरणीय तथा पवित्र होना। प्र० भैया के लिये तो, चाचाजी का घर बिल्कुल काबा-काशी है, सारे दिन वहीं जमे रहते हैं।

काबुल में भी गधे होना—सभी जगह अच्छे-बुरे व्यक्तियों या वस्तुओं का होना। प्र० दिल्ली-दरवाजे मकान बनाने वाले सभी लोग सम्पन्न गिने जाते हैं किन्तु ठेकेदार यह भूल जाता है कि काबुल में भी गधे होते हैं (मेरे०—गुलाब०, 21)।

काबुली तकाज़ा—सख्त या कड़ा तकाज़ा। प्र० काबुली तकाज़ा करने पर भी उसकी हिमाकत देखिये कि उसने रुपये समय पर वापिस नहीं किये।

काबू—ताकत; क्षमता। प्र० खुद में ही जब काबू नहीं है तो दूसरों को किस मुँह से बोलेंगे ?

काबू चढ़ना—अधिकार में आना। प्र० आपको क्या कमी है, आधे से अधिक लोग तो आपके काबू चढ़ गये हैं, सारा काम उनसे करवाइयेगा !

काबू चलना—कोई काम करने के योग्य होना। प्र० मुझसे क्या बोलते हो, इन सब मामलों में मेरा कभी काबू नहीं चला है।

काबू चलाना—हुक्म चलाना। प्र० देखो जी, तुम और जो चाहे कर सकते हो, मुझ पर काबू नहीं चला सकते, समझे ?

काबू पर चढ़ना या चढ़ाना—चालबाजी से अधिकार में आना या करना। प्र० काबू पर चढ़ाने में लालाजी बहुत होशियार हैं, उनसे जरा सावधान ही रहना।

काम अटकना—किसी अड़चन के कारण होते हुए काम का बीच में रुक जाना। प्र० अच्छा खासा कारोबार चल रहा था, इस छोटी-सी बात को लेकर जो काम अटका तो फिर आगे बढ़ा ही नहीं।

काम आख़िर करना या होना—प्राण जाना या लेना; अत्यन्त कष्ट होना या देना। प्र० मैं उसका काम आखिर करके ही दम लूँगा, उसने समझ क्या रखा है अपने आप को !

काम आना—(1) युद्ध में मृत्यु पाना। प्र० अपने चार सौ वीर काम आए (राधा० ग्रंथा०—राधा० दास, 582); काम आ गये जो शव उनके ठंडी-ठंडी आहें भरकर दफन किये उन बेचारों ने छाती पर पत्थर रखकर (नूर०—भक्त, 16)।

(2) सहारा देना; सहायक होना। प्र० धन-सुत-दारा काम न आवें, जिनहिं लागि आपुन पौ हारी (सू० सा०—सूर, 80); प्रभु के एकहु काज न आयउं (राम० (लं)—तुलसी, 926); अभी इस तरह पाल-पोस रहे हो कि एक दिन काम में आएगा, मगर देख लेना, जो चुल्लू-भर पानी को भी पूछे (रंग० (1)—प्रेमचंद, 26)।

(3) व्यवहार में आना; उपयोगी होना। प्र० यह सब तुम क्या खरीद लाये हो, कुछ काम भी आयेगा ?

(4) खर्च हो जाना। प्र० मैंने पिछली बार जितना कमाया था, सब काम आ गया, अब आगे की तुम लोग जानो।

काम उठाना—काम को प्रारम्भ करना; काम करने का दायित्व लेना। प्र० उसने कई बड़ी-बड़ी कोठियों में पत्र-व्यवहार करने का काम उठा लिया (कर्म०—प्रेमचंद, 16)।

(2) व्यापार बन्द करना। प्र० बाबूजी ने सराफे का काम उठा दिया है।

काम उतरना या उतारना—काम पूरा होना या करना। प्र० अपना काम उतार लूँ फिर तुम्हारी बात सुनूँगा।

काम ऊँचा जाना—काम में उन्नति होना। प्र० फ़कीर मुहम्मद राधे लाल का काम भी बहुत ऊँचा जा रहा था (अमृत०—नागर, 20)।

काम कर जाना या करना—(1) प्रभाव डालना या होना। प्र० देखो मेरी बात काम कर गई न, मैं शुरू से ही कह रहा था; यह दवा तो किसी तरह काम ही नहीं कर रही है।

काम कर देना—मार डालना। प्र० लाखा सिंह एक ही हाथ में उसका काम कर देगा।

काम का (की)—व्यवहार योग्य; उपयोगी वस्तु; सहायक। प्र० उसे अपने पक्ष में ही रखो, बड़े काम का आदमी है वह।

काम की चक्की में पिसना—रात-दिन काम में लगे रहना। प्र० × × लेकिन यहाँ भी उस छोटी उम्र में उसे दिन-रात काम की चक्की में पिसना पड़ता था (सतमी०—राहुल, 85)।

काम की बात—उपयोगी बात। प्र० इतने दिनों बाद आज तुमने एक काम की बात कही है।

काम के सिर रहना या होना, काम सिर होना—काम में व्यस्त होना। प्र० वह बिचारा तो हर समय काम के सिर रहता है, उसे कभी फुर्सत नहीं है।

काम खराब होना—रोज़गार की स्थिति बिगड़ जाना। प्र० काम तो कितने दिनों से खराब हुआ पड़ा है, अब तो उसे कोई देखने वाला भी नहीं है।

काम खुलना या खोलना—काम शुरू होना या करना। प्र० एक बार काम खुल जाये फिर देखना, मैं कैसे पैसा कमाता हूँ !

काम गिर जाना—व्यवसाय बिगड़ जाना। प्र० पर मालूम हुआ कि इससे कुछ ही दिनों में काम बहुत गिर गया है (कल्याणी—जैनेन्द्र, 33)।

काम गीला होना—काम बिगड़ जाना। प्र० एक बार काम गीला हो जाय तो उसे फिर चलाना बड़ा मुश्किल हो जाता है।

काम घंप जाना—अत्यधिक काम आ जाना। प्र० अरे पूछो मत भाई,

मेरे ऊपर तो काम ऐसा चंप गया है कि दम मारने की फुर्सत नहीं रहती।

काम चढ़ना—(1) किसी वस्तु का काम के लिए खराद या मशीन पर फिट किया जाना। प्र० काम चढ़ गया है, बस दस-पंद्रह मिनट में आपका माल आपको मिल जायगा।
(2) अधिक काम होना। प्र० आजकल काम चढ़ा हुआ है इसीलिये मुझे बिल्कुल समय ही नहीं मिलता।

काम चमकना—व्यापार में उन्नति होना। प्र० उनका काम आजकल चमक गया है इसीलिये लम्बी-चौड़ी बातें करना सीख गये हैं।

काम चल जाना—उपयोग में आ जाना। प्र० मेरा तो इतने से ही काम चल जायगा, आप मुझे और क्यों देना चाहते हैं?

काम चल निकलना—व्यापार में प्रगति होना। प्र० उसका काम आजकल खूब चल निकला है।

काम चलता करना—काम शुरू कर देना। प्र० कब तक हाथ पर हाथ धरे बैठे रहोगे, काम चलता करो अब!

काम चलना या चलाना—(1) काम आगे बढ़ना या बढ़ाना। प्र० जहाँ रहे, लीडर बन कर रहे; और जो काम उठाया उसे चला कर दिखा दिया (पद्म पराग—पद्म० शर्मा, 74)।
(2) किसी प्रकार आवश्यकता पूरी करना या होना। प्र० इतने वेतन में तो बस किसी तरह काम चल पायेगा, थोड़ा बढा देते तो बहुत अच्छा होना।

काम छत्तीस होना—प्रयोजन पूरा न होना। प्र० तुम्हारा काम तो छत्तीस हुआ, अब मेरा भी क्यों बिगाड़ना चाहते हो?

काम जमाना—रोज़गार में प्रगति करना। प्र० लाला राधेलाल ने तेजी से अपना काम जमाया और बढ़ाया (अमृत०—नागर, 27)।

काम ठप पड़ना—रोज़गार बन्द हो जाना। प्र० इनके चौपहिये जब मेरठ तक दौड़ने लगे, तो मेरठ वाले गंगाराम का काम ठप पड़ गया (अमृत०—नागर, 27)।

काम डगमगाना, -ढीला पड़ना, -होना—व्यापार का मंद पड़ जाना। प्र० वह दिन गए अब लाला मदन मोहन का काम डिगमिगा रहा है (परीक्षा०—श्री० दास, 184)।

काम ढीला पड़ना—दे० काम डगमगाना।

काम ढीला होना—दे० काम डगमगाना।

काम तमाम करना या होना—(1) सब कुछ नष्ट कर देना या हो जाना। प्र० अगर समाचार-पत्रों में एक छोटा-सा पत्र भी लिख देगी तो मेरा काम तमाम हो जायेगा (रंग०—प्रेमचन्द, 176)।
(2) मार डालना; मृत्यु होना। प्र० इस जंग में प्रताप का तो काम तमाम हो चुका था (राधा० ग्रन्था०—राधा० दास, 742); शिकारी ने एक और गोली लगायी तो शेर का काम तमाम हो गया (आजाद०—प्रेमचन्द, 501)।

काम तीन-तेरह होना—काम बिगड़ जाना। प्र० काम तो तीन-तेरह हो गया, अब क्या करूंगा, मालूम नहीं।

काम देखना—(1) व्यापार की देख-भाल करना। प्र० अष्टम वर्ष से घर के काम काज देखने पड़े (राधा० ग्रंथा०—राधा० दास, 250)।
(2) अपने काम से मतलब रखना। प्र० तुम अपना काम देखो, दूसरों के चक्कर में मत पड़ो।

काम देना—व्यवहार में आना; उपयोगी होना। प्र० इस अटैची ने मेरी सारी यात्रा में बहुत काम दिया।

काम न आना, -न करना—अवसर पड़ने पर सहायक न होना। प्र० हरि बिनु कोऊ काम न आयौ (सू० सा०—सूर, 373)।

काम न करना—दे० काम न आना।

काम न डालना—वास्ता न रखना। प्र० मैं उनसे काम नहीं डालता इसलिये मुझसे उनकी सिफारिश के लिये मत कहिए।

काम न देना—निकम्मा हो जाना। प्र० उसके तो हाथ पैर कुछ काम नहीं देते, दिन भर निठल्लों की तरह घर में बैठा रहता है।

काम निकलना या निकालना—उद्देश्य पूरा होना; मतलब गंठना; कार्य-निर्वाह होना। प्र० कियैं नर की स्तुती कौन कारज सरै करै सो आपनौ जन्म हारै (सू० सा०—सूर, 405); काम काढ़ि चुप रहै फेरि तिहि नाहिं पछानै (कुण्ड०—गिरधरदास, 29); जब मेरे ऊपर नालिश हो गई और मेरी साख जाती रही तो फिर रूपे मिलने से मेरा क्या काम निकला? (परीक्षा०—श्री० दास, 89); तुम बड़े चकमेबाज हो, बातें बनाकर काम निकालना चाहते हो (मान० (4)—प्रेमचन्द, 285)।

काम पड़ना—अवसर आना; आवश्यकता होना। प्र० कायर बहुत पमाँवहीं, बहकि न बोलैं सूर। काम पड़्यां हीं जाँणिये, किसके मुख परि नूर (कबीर ग्रंथा०—कबीर, 69); काम गंवारी सौं पर्‌यौ (सू० सा०—सूर, 4264)।

काम पर जाना—काम करने जाना। प्र० मिस्त्री तो काम पर गये हैं, पाँच बजे लौटेंगे।

काम पर तुल जाना—काम करने में पूरी तरह से जुट जाना। प्र० यह तो अपने काम पर ऐसा तुल जाता है कि इसे खाने पीने तक का होश नहीं रहता।

काम पर लगना या लगाना—(1) नौकरी करना या दिलवाना। प्र० बेचारा काम पर लगा ही था कि बाप गुजर गये। छुट्टी लेनी पड़ी।
(2) किसी काम को करने या सीखने में लगना या लगाना। प्र० इसको किसी भी छोटे-मोटे काम में लगाकर रखना चाहिये।

काम पूरा डालना—काम पूरा करना। प्र० हम सब जी-जान से काम पूरा डालने की कोशिश में हैं।

काम पूरा होना—मृत्यु का समय आना। प्र० फर्माइए तो किस नाकाम का काम आज पूरा होने वाला है (राधा० ग्रन्था०—राधा० दास, 714)।

काम फेल होना—रोज़गार फेल हो जाना। प्र० जब से काम फेल हुआ है मैं बेकार बैठा हूँ।

काम बंटाना—काम में सहयोग देना। प्र० काम बंटाना तो दूर, तुम लोग

हमेशा हुकुम चलाते रहते हो, ऐसे कहीं काम होता है ?

काम बन्द हो जाना—व्यापार ठप हो जाना। प्र० मेरा काम तो कितने दिनों से ही बन्द है।

काम बढ़ाना—(1) व्यापार बढ़ाना। प्र० लाला राधेलाल ने तेजी से काम जमाया और बढ़ाया (अमृत०—नागर, 27)।
(2) काम समाप्त करना। प्र० मैं काम बढ़ा लूं फिर इत्मीनान से तुमसे बातें करूंगा।

काम बनना या बना लेना—(1) स्वार्थ सिद्ध होना या करना। प्र० हाँ ज्वाला दादा, अगर श्यामू दादा की इस जालसाजी में आप भी शामिल हो जायं तब काम बड़े मजे में बन जायगा (भूले०—भग० वर्मा, 157)।
(2) सहयोग देकर या लेकर काम होना या करवाना। प्र० लोगों को जुटा कर काम बना लेने की उसकी क्षमता वास्तव में सराहनीय है।

काम बना रहना—काम में उन्नति बनी रहना। प्र० तुम्हारा काम बना रहे इससे अच्छा और क्या हो सकता है।

काम बिगड़ना—(1) व्यापार का ठप हो जाना। प्र० उसका काम तो दो साल से बिगड़ा पड़ा है।
(2) कोई काम या बात ठीक से न हो पाना। प्र० मैंने सारी व्यवस्था कर रखी थी पर ऐन मौके पर काम बिगड़ गया।

काम बैठना—किसी काम के लिए लोगों का बैठना; काम का होना। प्र० घनघोर वृष्टि के कारण दर्जी के यहाँ आज काम नहीं बैठ सका।

काम भुगतना या भुगताना—काम पूरा होना या करना। प्र० तुम लोग काम तो भुगताने नहीं देते, बीच में पचासों अड़ंगा लगा देते हो।

काम मन्दा होना—रोजगार में विशेष लाभ न होना। प्र० उस समय नेटाल में काम-काज मन्दा था (सत्य के प्रयोग—मो० क० गांधी, 245)।

काम मिलना—रोजी लगना। प्र० इतने दिनों की कोशिश के बाद आज जाकर मुझे काम मिला है।

काम में आना—उपयोग में आना। प्र० यह खाने की पोटली साथ में रख लो, रास्ते भर काम में आयेगी।

काम में काम निकलना या निकालना—एक काम करते समय उसी में से दूसरा काम और सामने आ जाना या कर डालना। प्र० काम में काम निकलता आ रहा है किसी तरह फुर्सत ही नहीं मिलती है आजकल।

काम में डूबा होना—बहुत व्यस्त होना। प्र० सीता कमरे में आयी तो तारा काम में बहुत ही डूबी हुई थी (झूठा० (3)—यशपाल, 340)।

काम में नाधना—काम में लगाना। प्र० दिन भर तुम उसको काम में नाधे रहते हो शाम को तो उसे छुट्टी दे दिया करो।

काम में पैर डालना, -हाथ डालना—काम शुरू करना। प्र० मनुष्य को उचित है कि × × जो काम करे तिसमें पहले अपना भला-बुरा विचार ले, पीछे उस काज में पाँव दे (प्रेम०—ल० ला०, 199); तुम लोगों के भरोसे हम बड़े-बड़े कामों में हाथ डाल देते हैं (राधा० ग्रन्था०—राधा० दास, 585)।

(किसी) काम में पैरा हुआ आदमी—(किसी काम में) अनुभवी आदमी। प्र० गाँवों से आने वाली गाड़ियों को, इस कार-बार में पैरे हुए आदमियों की मदद से मोल-तोल करवा के वहाँ गिरवा दिया गया (कम०—कम०, 37–38)।

काम में लगना—रोजगार या नौकरी शुरू कर देना। प्र० अब तो वह भी काम में लग गया है इसलिये मेरी चिन्ता मिटी।

काम में लाना—बरतना; व्यवहार करना। प्र० जब यह मशीन इतने शौक से खरीदी गई है तो इसे काम में भी लाओ।

काम में हाथ डालना—दे० काम में पैर डालना।

काम रखना—(1) बड़ा कठिन काम होना। प्र० दो दिन में पूरी स्वेटर तैयार करना तो काम रखता है।
(2) कोई वास्ता रखना। प्र० तुम उनसे काम रखते हो इसीलिये बढ़-बढ़कर उनकी बड़ाई करते हो।

काम रास्ते पर आना—(1) व्यापार का ठीक ढंग पकड़ना। प्र० इतनी कोशिशों के बाद अब जाकर काम रास्ते पर आया है।
(2) किसी कठिन कार्य का सुचारु रूप से होने लगना। प्र० देखिए प्रयोग (1)।

काम लगना या लगाना—(1) रोजी का निश्चित हो जाना या कर देना। प्र० इसका काम लग जाये तो मेरी चिन्ता मिटे।
(2) कार्य प्रारम्भ होना या करना। प्र० अभी मिस्त्री आ जायेंगे तो मैं काम लगवाकर आपके पास आऊँगा।
(3) काम होना, व्यस्त रहना। प्र० यहाँ तो रोज कोई-न-कोई काम लग जाता है।

काम लेना—(1) प्रयोग में लेना। प्र० इतनी बड़ी मशीन लाकर रखे हो, उससे काम क्यों नहीं लेते ?
(2) काम कराना। प्र० वह कुछ काबिल हो तो मैं उससे काम भी लूं।

काम संवारना—किसी बिगड़ते काम को बना लेना। प्र० कबहूँ न सोवै काज सँवारे, पांण तिहारी माती (कबीर० ग्रंथा०—कबीर, 161); जे पद-पदुम रमत पांडव-दल दूत भए, सब काज संवारे (सू० सा०—सूर, 94); सब बिधि तोर संवारब काजा (राम० (बाल)—तुलसी, 178)।

काम समेटना—व्यापार बन्द करना। प्र० मैं सोचता हूँ, मैं भी अब काम समेटकर संन्यास ले लूं।

काम सर करना या होना—काम पूरा करना या होना। प्र० तुम पहले अपना काम सर कर डालो, फिर दूसरों की चिन्ता करना।

काम सरना—इष्ट-पूर्ति होना। प्र० इहिं बिधि भ्रमत सकल निसि-दिन गत, कछू न काज सरत (सू० सा०—सूर, 55)।

काम सिर होना—दे० काम के सिर होना।

काम से काम रखना या होना—अपने प्रयोजन पर ध्यान रखना; व्यर्थ की

बातों में न पड़ना। प्र० देखो जी तुम अपने काम से काम रखा करो, मेरे काम में अड़ंगा मत लगाया करो।

काम से जाता रहना—(1) नौकरी से छूट जाना। प्र० बेचारा दूसरे को नौकरी दिलवाने के फेर में अपने ही काम से जाता रहा।
(2) उपयोग लायक न रहना। प्र० मेरा एक बैल तो मर गया था दूसरा भी अब काम से जाता रहा।

काम से लगाना—काम करने में लगाना। प्र० तो सम्हालिए इसे मुंशी शिवलाल साहेब और किसी काम से लगाइए (भूले०–भग० वर्मा, 134)।

काम होना—(1) जरूरत पूरी होना। प्र० मेरा काम हो गया है, अब तुम मशीन ले जा सकते हो।
(2) मृत्यु होना। प्र० शिवप्रसाद बाबू का तो कई दिन हुए काम हो गया।
(3) बहुत कष्ट होना। प्र० बेचारे का काम हो रहा है और तुम लोग उसे तंग किये जा रहे हो।

काम-काज करना—(1) शादी-विवाह आदि सामाजिक रीति-रिवाज करना। प्र० रामनाथ की बहू के लिए कुछ भेंट भी ले जायगा या यों ही हाथ हिलाता जा बैठेगा? नंदराम बोल उठा—"हाँ यह तो तुमने ठीक कहा, इसका तो मुझे ध्यान ही नहीं था।" "तुझे ध्यान कैसे रहे, तूने कभी अपने हाथ से कोई काम-काज किया हो तो ध्यान रहे" (भिखा०–कौशिक, 194)।
(2) मृतक संस्कार सम्बन्धी कार्य करना। प्र० भई जब बेटा यहाँ है तो वही सारा काम-काज करेगा।

कामकाजी—(1) परिश्रमी। प्र० लालाजी तो बड़े काम-काजी आदमी हैं।
(2) काम-काज करनेवाला। प्र० भई वे लोग तो काम-काजी आदमी हैं, उन्हें फुर्सत कहाँ।

काम-चलाऊ—किसी प्रकार उपयोग में आ जाने योग्य। प्र० अच्छा तो क्या है, काम-चलाऊ है।

काम-चोर—काम करने से जी बचानेवाला। प्र० उसके ऊपर जरा कड़ी निगाह रखियेगा, बड़ा काम-चोर है।

काम-धाम–काम, व्यापार। प्र० मेरा काम-धाम इधर तो काफी अच्छा ही चल रहा है।

काम-धेनु—धनिक व्यक्ति; इच्छा पूरी करने की सामर्थ्य रखनेवाला। प्र० तुमने लालाजी को कामधेनु समझ रखा है क्या जो रोज एक-न-एक फरमाइश करते रहते हो?

कायथ की खोपड़ी—चालबाज और धूर्त मनुष्य। प्र० कायथ की खोपड़ी है यह, इसके लिये ऐसे काम करना कोई असाधारण बात नहीं।

कायदा बाँधना—(1) नियम बना देना। प्र० तुम जब तक कायदा नहीं बाँधोगे, कोई तुम्हारी बात नहीं सुनेगा।
(2) आदत डालना। प्र० कुछ चीजों के बारे में अगर बचपन से कायदा न बाँधा जाय तो फिर उसकी आदत नहीं पड़ सकती।

कायम उठाना—शतरंज के खेल में निर्णय न होना।

कायम-मिजाज—वायदा का पक्का। प्र० बड़ा कायम-मिजाज आदमी है यह, एक बार जो कह देता है उसे पूरा करके ही रहता है।

कायल करना या होना—(1) श्रेष्ठता को स्वीकार करना या होना। प्र० भाई, मैं तो पंडितजी की विद्वत्ता का कायल हूँ।
(2) निरुत्तर कर देना या होना। प्र० उसकी बातों ने तो मुझे कायल कर दिया।

कायल-माकूल करना, कायली-माकूली करना—किसी को निरुत्तर कर देना। प्र० यार तुमने तो आज उनको खूब कायल-माकूल किया।

कायली-माकूली करना—दे० कायल-माकूल करना।

काया पलट जाना या होना—रूपान्तर हो जाना, और से और हो जाना। प्र० धूर्त, कायर, रंगा हुआ सियार, राष्ट्रीयता का दम भरता है, जाति की सेवा करेगा। एक व्याख्यान ने काया पलट कर दी (रंग० (2)–प्रेमचन्द, 246)।

काया पलट देना—रूप एकदम बदल देना। प्र० विनय ने उनकी काया ही पलट दी (रंग०–प्रेमचंद, 85)।

कायाकल्प करना या होना—आमूल परिवर्तन होना या करना। प्र० आर्य-समाज का कायाकल्प इसी ने किया है (पद्म० के पत्र–पद्म० शर्मा, 157)।

काया-छाया का सम्बन्ध—हर समय बना रहनेवाला सम्बन्ध। प्र० उन दोनों बहनों का तो काया-छाया का सम्बन्ध है।

कारखाना—रवैया। प्र० मियाँ, दुनिया के यही कारखाने हैं, इनसान को चाहिए कि किसी से न झगड़े × × (आज़ाद०–प्रेमचंद, 457)।

कारखाना करना, -खोलना—किसी व्यापार के लिए कोई कारखाना बैठाना। प्र० मैं एक छोटा-सा कारखाना करने की सोच रहा हूँ, सहारे के लिये उतना ही बहुत होगा।

कारखाना खोलना—दे० कारखाना करना।

कारखाना फैलाना—बहुत-सा सामान बिखेरे रहना। प्र० तुम भी क्या कारखाना फैलाये बैठे हो, घर जरा साफ-सुथरा रखा करो।

कारखाना लगा रहना—लोगों की भीड़ जुटी रहना। प्र० इस घर में तो दिन-रात कारखाना लगा रहता है, दम मारने की फुर्सत नहीं रहती।

कारज रचना—उत्सव करना। प्र० घर में खाने को पैसा नहीं है, इन्हें कारज रचने को चाहिये।

कारबन्द होना—काम पर लगा रहना। प्र० अभी तुम्हारी उमर ही क्या है जो रिटायर होने की सोच रहे हो, तुम्हें तो कारबन्द होना चाहिये।

कारबार ढीला पड़ना—रोजगार में मन्दी आना। प्र० मेरा तो कारबार आजकल ढीला ही पड़ा है, बस किसी तरह खाने भर को जुट पाता है।

कारस्तानी करना—(1) शरारत करना। प्र० तुम फिर कारस्तानी करने लगे? ठहरो मैं आती हूँ अभी!
(2) चालाकी करना। प्र० इसकी तो पूछो मत, कारस्तानी करने में बहुत तेज है यह।

कारी लगना—गहरी चोट पहुँचना। प्र० शिकार खेलते उसे ऐसी कारी लगी कि वह महीनों बिस्तर से उठ न पाया।

कारूं—काम-काजी। प्र० जी हां, एक आप ही कारूं हैं, हम सब तो बेकार हैं।

कारूं का खजाना—बहुत अधिक धन। प्र० वह कोई ऐसा काम उठाना चाहते हैं, जिसमें चटपट कारूं का खजाना मिल जाय (मान० (4) –प्रेमचंद, 75)।

कारूरा मिलना, -में (से) कारूरा मिलाना—गहरी दोस्ती होना। प्र० तुमसे कभी किसी का कारूरा नहीं मिल सकता, तुम्हारा स्वभाव ही ऐसा है।

कारूरा में (से) कारूरा मिलना—दे० कारूरा मिलना।

कार्य-क्षेत्र में उतरना—कार्य करने में लगना। प्र० हम सभी को एक-एक करके कार्य-क्षेत्र में उतरना पड़ा।

कार्य-भार लादना—काम का दायित्व देना। प्र० आपने मेरे कंधों पर तो सारा कार्य-भार लाद दिया, अब मैं उसे पूरा करूं तो कैसे?

काल—काल के समान घातक। प्र० एइं विख चारैं सब बुधि ठगी। औ भा काल हाथ लै लगी (पद०–जायसी, 5/5); मोहि बिलोकु तोर मैं कालू (राम० (लं)–तुलसी, 956); कौन हैं रंग ढंग से लें सोच संत हैं या कि संतपन के काल (चुभते०–हरिऔध, 122)।

काल आना—मृत्यु निकट होना। प्र० सूरदास प्रभु क्यौं नहिं चेतत, जब लगि काल न आयौ (सू० सा०–सूर, 301); सीता देइ मिलहु न त आवा काल तुम्हार (राम० (सुं)–तुलसी, 848)।

काल कर जाना—मर जाना। प्र० बेचारे ऐसी कच्ची उम्र में ही काल कर गये।

काल का कंठ गहना—मृत्यु के पंजे में होना। प्र० लूटि सकै तौ लूटियौ, राम नाम भंडार। काल कंठ तैं गहैगा, रूंधै दसूं दुवार (कबीर ग्रंथा० –कबीर, 7)।

काल का कलेवा होना, -कौर होना, -के गाल में जाना, -के गाल में समाना, -मुंह में जाना, -खा जाना, -कवलित होना—मरना। प्र० निसि बासुर जो सोवैं नांहीं, ता नरि काल न खाई (कबीर ग्रंथा०– कबीर, 160); काल कवलु होइहि छन माहीं (राम० (बाल)– तुलसी, 280); जो कलेवा काल का है बन रहा वह बने खिलती कली का भौंर क्यों (चुभते०–हरिऔध, 160)।

काल का केश पकड़ना, -चोटी पकड़ना, -सामने नाचना, -सिर पर खड़ा होना, -सिर पर नाचना, -सिर पर खेलना, -फिरना—मृत्यु निकट होना। प्र० कबीर कहा गरबियौ, काल गहै कर केस (कबीर ग्रंथा० –कबीर, 74); अजहूं चेति, भजन करि हरि कौ, काल फिरत सिर ऊपर भारौ (सू० सा०–सूर, 80); अब तव काल सीसु पर नाच्यो (राम० (लं)–तुलसी, 972); क्या तेरा काल ही तेरे सिर पर नाच रहा है? (राधा० ग्रंथा०–राधा० दास, 690); तब खुली आंख और सुध आई जब कि ली काल ने पकड़ चोटी (बोल०–हरिऔध, 7); काल उसके सिर पर खेल रहा है (रंग० (2)–प्रेमचंद, 186)।

काल का कौर होना—दे० काल का कलेवा होना।

काल का गाल, -पाश—मृत्यु। प्र० भगवंत भीर सकति सुमिरण की, काटि काल की पासी (कबीर ग्रंथा०–कबीर, 208); मुझे क्या मालूम था कि काल के गाल से मुझे निकाल कर, वह अपनी मैत्री का ज्वलंत तथा प्रत्यक्ष प्रमाण देगा? (राधा०–ब्र० स०, 182); काल के गाल में न कौन गया (चुभते०–हरिऔध, 91)।

काल का चबैना होना—काल के वश में होना। प्र० खलक चबीणां काल का, कुछ मुख मैं कुछ गोद (कबीर० ग्रंथा०–कबीर, 71)।

काल का चोटी पकड़ना—दे० काल का केश पकड़ना।

काल का पाश—दे० काल का गाल।

काल का फंदा पड़ना—मृत्यु होना। प्र० सूरदास तैं कछू सरी नहिं, परी काल फंसरी (सू० सा०–सूर, 71)।

काल का सर साधना—मृत्यु का निकट होना। प्र० आपन नगर आपहें बांध्या, मोह कै फाधि काल सरु साध्या (कबीर ग्रंथा०–कबीर, 324)।

काल का सिर पर चढ़ना—मृत्यु निकट होना। प्र० कूच विचारे फूए फाल, या मुंडिया सिर चढ़िवो काल (कबीर ग्रंथा०–कबीर, 296)।

काल काटना—कठिनाई से समय बिताना। प्र० बेचारा बड़ी मुसीबत में पड़ा है, काल काट रहा है किसी तरह।

काल के गाल में जाना—दे० काल का कलेवा होना।

काल के गाल में डालना, -मुंह में डालना—नष्ट करना। प्र० जाति को डाल काल के मुंह में बेतरह मुंह किया गया काला (चुभते०–हरिऔध, 95)।

काल के गाल में समाना—दे० काल का कलेवा होना।

काल के मुंह में जाना—दे० काल का कलेवा होना।

काल के मुंह में डालना—दे० काल के गाल में डालना।

काल के मुंह से निकलना, -लौट आना—मृत्यु से बच निकलना, अत्यन्त आपद्जनक स्थिति से छुटकारा पाना। प्र० बस इतना ही समझो कि इस बार मैं काल के मुंह से निकल आया।

काल के मुंह से लौट आना—दे० काल के मुंह से निकलना।

काल के वश होना—मृत्यु के निकट होना। प्र० रामु सत्यसंकल्प प्रभु सभा काल बस तोरि (राम० (सुं)–तुलसी, 838)।

काल खा जाना—दे० काल का कलेवा होना।

काल गंवाना—समय नष्ट करना, किसी प्रकार जीवन-यापन करना। प्र० इहि विधि सूर अयोध्या-बासी, दिन-दिन काल गंवायौ (सू० सा०– सूर, 494)।

काल चढ़ आना—घोर विपत्ति आना। प्र० आप चढ़े ब्रज ऊपर काल (सू० सा०–सूर, 1146)।

काल न व्यापना—मृत्यु को न प्राप्त होना। प्र० कबहुं काल न ब्यापिहि तोही। सुमिरेसु भजेसु निरंतर मोही (राम० (उ)–तुलसी, 1115)।

काल पड़ना—कमी होना। प्र० शुद्ध दूध-घी का तो जैसे काल पड़ गया है।

काल पाकर—(1) कुछ दिनों पीछे। प्र० काल पाकर इसकी अक्ल अपने आप ठिकाने आ जायेगी।
(2) अन्तिम काल, नाश का समय। प्र० अरे नादान, तू काल पाकर भी नहीं चेतता ?
(3) मृत्यु। प्र० एक-न-एक दिन काल पाकर सभी को इस संसार से गमन करना होता है।

काल बन जाना—घोर अनिष्ट करनेवाला। प्र० यह आदमी तो बिलकुल काल बन गया है, मैं इसकी छाया से भी दूर रहना चाहता हूँ।

काल बली है—काल का बड़ा प्रबल होना; मृत्यु से किसी का न बच पाना।

काल सामने नाचना—दे० काल का केश पकड़ना।

काल सिर पर खड़ा होना—दे० काल का केश पकड़ना

काल सिर पर खेलना—दे० काल का केश पकड़ना।

काल सिर पर नाचना—दे० काल का केश पकड़ना।

काल सिर पर फिरना—दे० काल का केश पकड़ना।

काल हाँक लाना—जबरदस्ती मृत्यु बुलाना। प्र० तुम्ह तौं कालु हाँकि जनु लाना (राम० (बा)–तुलसी, 280)।

काल-कवलित होना—दे० काल का कलेवा होना।

काल-कूट मुँह—अत्यन्त कटु-भाषी। प्र० गौर सरीर स्याम मन माहीं। कालकूट मुख पयमुख नाहीं (राम० (बा)–तुलसी, 283)।

काल-कोठरी—दुःखमयी स्थान। प्र० ले जाकर उसी काल-कोठरी में डाल दो (कर्म०–प्रेमचंद, 179)।

काल-क्षेप करना—देर करना, समय बिताना। प्र० अरे आपके अन्न से पला हुआ यह शरीर सुख से काल-क्षेप करे और आप वन-वन की लकड़ी चुनें ? (राधा० ग्रन्था०–राधा० दास, 777)।

काल-गूदड़ी सीना—कालक्षेप करना। प्र० करना क्या है, बस काल-गूदड़ी सी रहा हूँ।

काल-चक्र—जमाने की गर्दिश, समय का हेर-फेर। प्र० काल-चक्र की गति ही यही है, आज कुछ तो कल कुछ और।

काल-चक्र में पड़ना—विपत्ति में फंसना। प्र० मैं तो ऐसे काल-चक्र में पड़ा हूँ कि आपसे क्या कहूँ ?

काल-जुआरी—घोर जुआरी। प्र० अरे वह ठहरा काल-जुआरी, तुम्हारी और उसकी दोस्ती कैसे निभेगी ?

काल-सा लगना—अत्यन्त अप्रिय लगना। प्र० कारो जल जमुना को काल सो लगत आली छाइ रह्यो मानो यह विष काली नाग को (भूषण ग्रन्था०–भूषण, 241)।

काला—बुरा और दुष्ट। प्र० सुफलक-सुत कारे नख-सिख तैं, कारे तुम अरु ओऊ (सू० सा०–सूर, 4597)।

काला अक्षर भैंस बराबर होना—अनपढ़ होना। प्र० मैं उससे कहने लगा, पढ़ने-लिखने के नाम काला अक्षर भैंस बराबर, और आगे जाकर प्रोफ़ेसरनी कहलाओगी (सारा०–यादव, 179)।

काला कंबल धोने से सफेद न होना—बुरे व्यक्ति को अच्छा बनाना या आमूल परिवर्तन करना कठिन होता है। प्र० साकत कारी कांवरी धोए होइ न सेतु (कबीर)।

काला करइत, -नाग, -साँप—(1) बहुत काला। प्र० बाप रे, कैसा काला करइत है यह आदमी, देखते ही डर लगता है।
(2) अत्यन्त अहितकर। प्र० बुड्ढा काला साँप है जिसके काटे का मंतर नहीं (गोदान–प्रेमचंद, 216); ऊपर से भला मानस, अन्दर से काला नाग (कठ०–दे० स०, 314)।

काला करना—(1) कलंक लगाना। प्र० उसने ही मेरे बेटे के बारे में झूठी-झूठी बातें कहकर उसे काला किया है।
(2) दोष देना। प्र० तुम बिना मतलब ही मुझे काला कर रहे हो।
(3) गन्दा कर देना। प्र० बच्चों के सामने तो कुछ भी छोड़ दो, काला कर देते हैं।

काला करार देना—बदनाम करना। प्र० चर्चा अगर बुराइयों पर चल पड़ी तो देवा और उसकी माँ को एकदम काला करार दे दिया जाता × × × × (कम०–कम०, 104)।

काला काटना, -खाना—साँप काटना। प्र० देखहु महरि सुता अपनी कौं, कहुँ इहिं कारैं खाई (सू० सा०–सूर, 1361)।

काला कानून—अविवेकपूर्ण विधान। प्र० इन काले कानूनों के युग में वह और कर ही क्या सकते हैं (गोदान–प्रेमचंद, 175)।

काला खाना—दे० काला काटना।

काला घर—जेल, थाना। प्र० अभी तो पैंतरे बदलता फिरता है, जब हाथ में हथकड़ी भरकर लाल पगड़ी वाला काले घर की ओर ले चलेगा, तब सब चौकड़ी भूल जायेगी (दे० दु०–शिव०, 36)।

काला चोर—पक्का चोर, कोई भी। प्र० मैं अपने मावजे का दावा जरूर करूँगा, चाहे साहब दें, चाहे सरकार दे, चाहे काला चोर दे, मुझे तो अपने रुपए से काम है (रंग० (2)–प्रेमचंद, 388)।

काला जमींदार—जोर-जुल्म करने वाला जमींदार। प्र० उस इलाके भर में एक वही ऐसा काला जमींदार है, बाकी सब तो बहुत ही अच्छे हैं।

काला डसना—घोर बेचैनी होना। प्र० सखि, इसको तो काला डस गया है, कैसे इसे ढाढ़स बँधाया जाय ?

काला दिल—कुटिल स्वभाव। प्र० लाक्षणिक अर्थ में जो काले दिल के आदमी का अर्थ होता है वही काले बाजार का अर्थ होता है (मेरे०–गुलाब०, 78)।

काला देव—(1) बहुत बुरा व्यक्ति। प्र० ज्ञान शंकर के रचना कौशल ने उनके मनोमालिन्य के साथ मिलकर ज्वाला सिंह को अत्याचार और अविचार का काला देव बना दिया (प्रेमा०–प्रेमचंद, 157)।
(2) लम्बा-तगड़ा काला व्यक्ति। प्र० उसका आदमी तो एकदम काला देव है।

काला धब्बा—कलंक। प्र० यह लड़का हमारे कुल का काला धब्बा हो गया है।

काला नाग—दे० काला करइत।

काला नाग छूना—विषैले साँप का काटना। प्र० × × × दादा सुन्दरिया

को क्या ही गया ? काले नाग ने छू लिया ? (गोदान–प्रेमचंद, 106) ।

काला पल्ला डालना—किसी को कलंकित करना । प्र० बच्ची, तेरी माँ को इस घर में कोई कमी नहीं, पर जो अपनी पिछली ड्योढ़ी काला पल्ला डाल आए वह किस मुँह अपने वीरों को उलाहना दे (अर०–कु० सो०, 27) ।

काला पहाड़—(1) दुःखदायी और न बीतनेवाला । प्र० उनके चले जाने से दिन तो आजकल काला पहाड़ हो गया है ।

(2) लम्बा-तगड़ा काला आदमी । प्र० आदमी क्या है काला पहाड़ है वह !

काला बाजार—चोर-बाजार, चोरी से किया व्यापार । प्र० लाक्षणिक अर्थ में जो काले दिल के आदमी का अर्थ होता है वही काले बाजार का अर्थ होता है (मेरे९–गुलाब०, 78) ।

काला बाल जानना, -समझना—अत्यन्त तुच्छ समझना । प्र० वह दूसरों को तो काला बाल जानता है और अपने को न जाने क्या समझता है ?

काला बाल समझना—दे० काला बाल जानना ।

काला भुजंग—बहुत काला । प्र० वह चाहे काला भुजंग हो पर चेहरे पर पानी है ।

काला साँप—दे० काला करइत ।

काला साँप जिसके काटे का मंतर न होना—अत्यन्त कुटिल होना । प्र० बुड्ढा काला साँप है—जिसके काटे का मंतर नहीं (गोदान–प्रेमचंद, 211) ।

काला हो जाना—कलंकित या कलुषित होना । प्र० तत छन प्रान पलटि गयौ मेरौ तन-मन ह्वै गयौ कारौ री (सू० सा०–सूर, 753) ।

काला-कलूटा—बहुत काला । प्र० ऐसे काले-कलूटे आदमी से तुम शादी की बात सोच भी कैसे सकती हो ?

काला-कलेजा—दुष्ट; कुटिल । प्र० रमचनमा ऐसा काला-कलेजा निकलेगा, यह किसने सोचा था ।

कालापानी—(1) आजीवन कारावास । प्र० महन्त जी सात वर्ष के लिए गये और दोनों चेलों को काले पानी का दण्ड मिला (सेवा०–प्रेमचंद, 17) ।

(2) इतनी दूर जहाँ से आना कठिन या असम्भव हो । प्र० बेटा तो कालेपानी जाकर बैठ गया है । पता नहीं उसका मुँह भी देख पाऊँगी या नहीं ।

कालिख का टीका लगना या लगाना, लगना या लगाना—बदनाम होना या करना । प्र० जे मसि लागी सबै छुड़ावौ, अब मोहि जिनि बहु रूपक छावौ (कबीर० ग्रंथा०–कबीर, 113); जो भागे सत छांड़ि कै मसि मुख चढ़ी परात (पद०–जायसी, 43/3); लगी कालिमा अहह आज तक धोखे में पड़ धुली नहीं (मर्म०–हरिऔध, 146) ।

कालिख का हाथ लगाना—किसी को बदनाम करना । प्र० बहुत दुष्ट है यह, दूसरों को कालिख के हाथ लगाकर खुद तमाशा देखता है ।

कालिख पोतना—अपमानित या कलंकित करना । प्र० मैं भी तुम्हारी इस करतूत का बदला लेकर रहूँगा, चार आदमियों के बीच तुम्हारे ऊपर कालिख न पोती तो मेरा नाम नहीं ।

कालिख लगना या लगाना—दे० कालिख का टीका लगना या लगाना ।

कालिब करना—ढांचा तैयार करना । प्र० तुम पहले कालिब कर लो फिर मुझे बुलाना ।

कालिमा धुलना या धोना—लगा कलंक अच्छे कामों द्वारा दूर होना या करना । प्र० लगी कालिमा अहह आजतक धोखे में पड़ धुली नहीं (मर्म०–हरिऔध, 146) ।

कालिमा पुतना—अपयश मिलना । प्र० अगर देर की, और ओंकारनाथ ने वह संवाद छाप दिया, तो उनके सारे यश में कालिमा पुत जायेगी (गोदान–प्रेमचंद, 169) ।

काली आंधी—धूलभरी आंधी । प्र० आज कैसी काली आंधी चल रही है ।

काली कमली पर दूसरा रंग न चढ़ना—अपरिवर्तनीय प्रभाव । प्र० सूरदास कारी कामरि पै, चढ़त न दूजौ रंग (सू० सा०–सूर, 332) ।

काली कमाई—गलत ढंग से अर्जित धन । प्र० रेवती रमन के पास उनकी काली कमाई की कुंजी है (अमृत०–नागर, 632) ।

काली करतूत—दुष्कर्म । प्र० विपरीत फल देखकर दुष्ट आततायी अपनी काली करतूत पर पछताते होंगे (पद्म० के पत्र–पद्म० शर्मा, 241) ।

काली किताब में नाम दर्ज होना—बुरे लोगों में गिनती होना । प्र० कांग्रेस में शरीक हुआ, उसका तावान अभी तक देता जाता हूँ । काली किताब में नाम दर्ज हो गया (गोदान–प्रेमचंद, 177) ।

काली घटा—(1) विपत्ति के दिन । प्र० सबके ही जीवन में काली घटा आती है, इससे घबराते क्यों हो ?

(2) गहरे जल भरे बादल । प्र० आज कैसी काली घटा घिरी है, लगता है खूब जोरों में पानी बरसेगा ।

काली घटा उमड़ना, -छाना—बुरे दिन आना । प्र० पश्चिम और उत्तर से काली घटाएँ उमड़ रही हैं, यह समय बल-नाश करने का नहीं है (स्कंद०–प्रसाद, 34) ।

काली घटा छाना—दे० काली घटा उमड़ना ।

काली छाया—अनिष्ट का आभास । प्र० एक काली छाया घर पर मंडराती रहती है (शेखर० (1)–अज्ञेय, 18) ।

काली छाया पड़ना—अकाल या दुर्दिन आना । प्र० इस देश में ऐसी काली छाया कभी नहीं पड़ी थी ; उनके जीवन में भी अब काली छाया पड़ गई है, देखो क्या होता है ।

काली बला—(1) भयानक संकट । प्र० यह कैसी काली बला मेरे सिर आ पड़ी ।

(2) भूतनी ।

काली माई खेलने लगना, -सिर पर खेलने लगना—भय से काँपना । प्र० बड़ी बहादुरी लगाते थे पर सामने एक काली छाया देखने ही सिर पर काली माई खेलने लगीं ।

काली माई सिर पर खेलने लगना—दे० काली माई खेलने लगना ।

काली रात—दुःखद रात । प्र० यह काली रात जाने कैसे बीतेगी ?

काली हरकत—कुकर्म । प्र० तू समझती है कि दुनिया की नजरों से अपनी काली हरकतों को बचा सकती हूँ ? (सात०–नागर, 84) ।

काली हांड़ी सिर पर रखना—कलंक लेना । प्र० तुमने खुद ही काली हांड़ी सिर पर रखी, मैं तो तुम्हें इस मुसीबत से बचा रहा था ।

काली-पीली आँखें करना, -दिखाना—गुस्सा करना । प्र० देखिये जी, काली-पीली आँखें करने से कुछ नहीं बनेगा, जो कहना है ठीक से कहिए ।

काली-पीली आँखें दिखाना—दे० काली-पीली आँखें करना ।

काले कारनामे—दुष्कर्म । प्र० पीय प्यारी, कृत्य काबे, करत नाहिं नमी (सू० सा०–सूर, 1846) ।

काले के आगे चिराग न जलना—बड़े आदमी के सामने छोटे की कोई कद्र न होना । प्र० तुम भी क्या बात ले बैठे, अरे, काले के आगे चिराग कभी नहीं जलता ।

काले के काटे का पानी न मांगना—काले सांप के काटने पर आदमी बचता नहीं ।

काले के काटे का मंत्र न होना—जबर्दस्त लोगों से बचने का कोई उपाय न होना । प्र० मैं तो इसीलिये उनके मुंह नहीं लगता; काले के काटे का मंत्र नहीं होता ।

काले कोसों—बहुत दूर । प्र० मथुरा हू है गए सखी री- अब हरि कारे कोसनि (सू० सा०–सूर, 4876); मैं चाहे यहाँ रहूँ, चाहे काले कोसों चला जाऊँ, लेकिन तुमने मेरे हृदय में जो दीपक जला दिया, उसकी ज्योति जरा भी मन्द न पड़ेगी (कर्म०–प्रेमचंद, 98) ।

काले कौवे खाना—दीर्घायु होना । प्र० लगता है उन्होंने तो काले कौवे खाये हैं जाने का नाम ही नहीं लेते ।

काले तिल चबाना—(1) बहुत जीना । प्र० दादाजी तो काले तिल चबाकर बैठे हैं । गद्दी छोड़ते ही नहीं ।

(2) कष्ट में रहना । प्र० काले तिल चबाना मेरे लिये कोई नई बात नहीं है ।

(3) पराधीन होना । प्र० कितने दिनों तक आखिर काले तिल चबाते हुए जिन्दगी बिताओगे ?

काले दिन—बुरे दिन । प्र० अब तो सभी के काले दिन आ गये हैं, देश की हालत ही खराब हो गई है ।

काले बादल छँटना—दुर्दिन का दूर होना, विपत्ति दूर होना । प्र० हे भगवान्, ये काले बादल कब छंटेंगे ?

काले बादल छा जाना—दुर्दिन या निराशा का आना । प्र० लगता है मेरे जीवन पर छाये ये काले बादल अब नहीं हटेंगे ।

काले बादल मंडराना—बहुत बड़ी मुसीबत का आना । प्र० इधर सर पर काले बादल मंडरा रहे थे और उधर चौधरी का कुछ पता ही नहीं था ।

काले बाल सफेद होना—बुढ़ापा आना । प्र० अब तो काले बाल सफेद हो गये, कितने दिनों की जिन्दगी और है, कौन जानता है ? (ब्र० सू० को०) ।

काले रंग में रंगना—बदनाम करना । प्र० पंची ने तारा का सारा वृत्तान्त कह सुनाया और विमल को जितने काले रंगों में रंग सकी, रंगा— × × (मान० (2)–प्रेमचंद, 104) ।

काले सिर का एक न छोड़ना—बदचलन स्त्री जो सबके साथ सम्बन्ध रखे । प्र० उसकी बात मत पूछो, उसने काले सिर के एक को न छोड़ा ।

काले सिर वाली—कुलक्षणी । प्र० देखो कोई, उस काले सिर वाली के लिए भाई पर हाथ उठा रहा है (सात०–यादव, 158) ।

काले-गोरे दिन देखना—भले-बुरे दिनों का अनुभव होना । प्र० तुम मुझे क्या सीख दे रहे हो ? मैंने भी काले-गोरे दिन देखे हैं ।

काले-पीले होना—गुस्सा होना । प्र० बहियाँ बहुत कीन पर मनवरी उंगरी कौन पै होत पीरी कारी (ब्र० सू० को०) ।

कावा काटना, -देना, -पर लगाना—(1) चक्कर खाना । प्र० भीड़ में ऐसे कावा काटते-काटते कहीं तुम पकड़े न जाओ ।

(2) आँख बचाकर चले जाना । प्र० मुझे देखते ही वह कावा देकर खिसक गया ।

कावा देना—दे० कावा काटना ।

कावा पर लगाना—दे० कावा काटना ।

काशी-करवट लेना—(1) काशी में गला कटवाना, आत्महत्या करना । प्र० सूरदास प्रभु तुम्हरे दरस कों, करवत लैहौं कासी (सू० सा०–सूर, 4176) ।

(2) बहुत दुःख सहना । प्र० मैंने कैसी-कैसी काशी-करवट ली है, वह मैं ही जानता हूँ ।

कास्त लगना—वह अवधि पूरी होनी जिसके बाद किसी काश्तकार को खेत पर दखलकारी का हक हो जाय ।

कास में तैरना—असमंजस में फंसना । प्र० मैं तो कास में तैरने लगा, मुझे समझ ही नहीं आया क्या करूं ।

कास में फंसना—संकट में फंसना । प्र० मैं तो उस दिन अच्छा कास में फंसा ।

काला देना—भोजन देना । प्र० पहले नब्बू मियाँ को काला दे दो फिर दूसरा काम करना ।

किचकिची बाँधना—क्रोध से दाँत पीसना । प्र० किचकिची बांधने से कोई फायदा नहीं, आप बिना मतलब ही गुस्सा करते हैं ।

कितना कुछ—बहुत अधिक । प्र० कितना कुछ कहा, वह सुनती ही नहीं ।

कितने एक—कितने । प्र० मुझे यह भी तो नहीं मालूम कि कितने एक आदमी बारात में आ रहे हैं ।

कितने पानी में होना—कैसी स्थिति होना । प्र० सम्भव है, ईश्वरी ने समझ लिया हो कि यह कितने पानी में है (मान० (1)–प्रेमचन्द, 107) ।

किताब का कीड़ा, किताबी कीड़ा—(1) हर समय पढ़नेवाला व्यक्ति । प्र० मेरे जैसे किताब के कीड़ों को कौन औरत पसंद करेगी, देवी जी ? (गोदान–प्रेमचन्द, 170) ।

(2) केवल पुस्तकी ज्ञानवाला व्यक्ति । प्र० वह तो केवल किताबी

कीड़ा है, उसे कुछ अक्ल थोड़े ही है।

किताब खोलकर बैठना—किताब पढ़ना। प्र० इसी का यह फल है कि लड़के बे-नकेल के ऊँट बने हुए हैं। कोई एक मिनट भी किताब खोलकर नहीं बैठता (मान० (1)–प्रेमचन्द, 319)।

किताब घोंटकर पी जाना, -घोलकर पी जाना—रट डालना। प्र० करना क्या है, परीक्षा के समय किताब घोंटकर पी जाऊँगा और क्या?

किताब घोलकर पी जाना—दे० किताब घोंटकर पी जाना।

किताब चर जाना, -चाट जाना—पूरी किताब को अच्छी तरह पढ़ डालना। प्र० हमारे बाबू साहब ने बरसों स्कूल की खाक छानी है × × विलायत भर के ग्रंथ चरे बैठे हैं (प्र० पी०–प्र० ना० मि०, 157); हाँ, विद्वान क्यों नहीं हैं, दुनिया भर की किताब चाटे बैठे हैं (सेवा०–प्रेमचन्द, 255)।

किताब चाट जाना या चाटना—दे० किताब चर जाना।

किताब देखना—किताब पढ़ना। प्र० बाजार-हाट के मारे उसे किताबें देखने का समय ही न मिलता था (निर्मला–प्रेमचन्द, 179)।

किताब पर चढ़ाना—बही में नोट करना। प्र० कल का सारा खर्चा किताब पर चढ़ाकर मुझे दिखाओ।

किताबी कीड़ा—दे० किताब का कीड़ा।

किताबी चेहरा—(1) वह चेहरा जिसकी आकृति लम्बाई लिये हो। प्र० नरगिस का चेहरा बिलकुल किताबी है।

(2) बहुत सुन्दर चेहरा। प्र० कैसा किताबी चेहरा है उसका।

किताबी ज्ञान—केवल सैद्धांतिक ज्ञान। प्र० केवल किताबी ज्ञान से कोई फायदा नहीं थोड़ा व्यावहारिक ज्ञान भी होना चाहिये।

किधर आता किधर जाना—क्या करता है या क्या होता है इसका पता न चलना। प्र० अम्मा का रुपया किधर आता है किधर जाता है, कुछ मालूम ही नहीं पड़ता है।

किधर का चाँद निकला है—आज क्या अनहोनी बात हुई जो आप दिखाई पड़े।

किधर जाना क्या करना—कठिन समस्या में पड़ना, कोई उपाय न समझ पड़ना। प्र० मैं तो ऐसी मुसीबत में पड़ गया कि समझ में ही नहीं आया किधर जाऊँ क्या करूँ?

किनारा करना, -कसना, -खींचना, -कशी करना—किसी काम से दूर ही रहना, विमुख होना। प्र० जिस लोक-ख्याति के पीछे ये हाथ जोड़े नहीं फिरे, उसने इनसे कैसा किनारा कसा (गुलेरी ग्रन्थ (1)–गुलेरी, 278); सुगों से हमीं कर रहे हैं किनारा (चुभते०–हरिऔध, 186)।

किनारा कसना—दे० किनारा करना।

किनारा काटना—(1) दिये हुए आश्वासन से मुकर जाना। प्र० उस समय तो आपने मुझे कितना आश्वासन दिया था और आज जब मौका पड़ा तो आप किनारा काट गये।

(2) दगा देना। प्र० उसका इस तरह किनारा काटना बहुत ही बुरी बात है।

किनारा खींचना—दे० किनारा करना।

किनारा तोड़कर बह चलना—मर्यादा के विपरीत कार्य करना। प्र० किनारा तोड़कर बह चलने वाले का कहीं आदर नहीं होता।

किनारा पकड़ना—किसी काम से अलग रहना। प्र० उनके स्वभाव को जानता हूँ इसीलिए मैंने तो पहले ही किनारा पकड़ लिया था।

किनारा पाना—सहारा मिलना, युक्ति समझ में आना। प्र० मुसीबत के समय किनारा पाना कितना मुश्किल हो जाता है।

किनारा मिलना—मुक्ति मिलना, सहारा मिलना। प्र० ख्यात् दुःख से तुम्हें कहीं निर्जन में मिले किनारा। शरण कहाँ पायेगा पर, यह दह्यमान जग सारा (कुरु०–दिनकर, 121)।

किनारा साफ नजर आना—अड़चन दूर होना, निर्विघ्न जान पड़ना। प्र० मुन्ना ने कहा—अब किनारा साफ़ नजर आ रहा है (चोटी०–निराला, 151)।

किनारा सूझना—कोई उपाय सूझना। प्र० बड़ी मुसीबत ने आ घेरा है, मुझे तो किनारा ही नहीं सूझता।

किनाराकश होना—सबसे अलग होना। प्र० जब भी काम पड़ता है, आप किनाराकश हो जाते हैं।

किनाराकशी करना—दे० किनारा करना।

किनारे करना—दूर करना। प्र० यह क्या बखेड़ा कर रखा है, किनारे करो।

किनारे का तृण—किसी प्रवाह में किसी भी क्षण बह जाने वाला। प्र० ताही प्रेम प्रवाह मैं ऊधौ चले बहाय। भले ग्यान की मेड़ ह्वाँ ब्रज मैं प्रगट्यौ आय। कूल के तृन भये (नन्द० ग्रन्था०–नन्द०, 163)।

किनारे का पेड़—विनाश के निकट, मृतप्राय। प्र० शंकर जी अद्भुत पुरुष हैं, आप मिलेंगे तो अत्यन्त प्रसन्न होंगे। वह अब 'कूलद्रुम' हो रहे हैं। जल्दी मिल लीजिए (पद्म० के पत्र–पद्म० शर्मा, 56)।

किनारे खड़े होना—अलग हो जाना, कोई मतलब न रखना। प्र० तू तो दूसरा भरतार करके किनारे खड़ी हो जायेगी (गोदान–प्रेमचंद, 31)।

किनारे डाल देना—किसी काम को करके, भलाई करके दूसरे काम में लग जाना। प्र० मैंने रसोई का सारा काम पूरा करके किनारे डाल दिया है, अब जिसकी जो इच्छा हो, करे।

किनारे न जाना—अलग रहना, बचना। प्र० उस दिन के बाद से तो मैं उसके किनारे भी नहीं जाता।

किनारे न लगना—पास न आना। प्र० यह लड़का तो किसी तरह किनारे ही नहीं लगता, हम क्या करें?

किनारे पहुँचना या पहुँचाना, -लगना या लगाना—(1) समाप्ति पर पहुँचना या पहुँचाना। प्र० धीरे-धीरे कवि के हाथों यह सब भी किनारे लगने लगा (भारती०–रां० रा०, 117)।

(2) किसी स्थिति में या किसी परिणाम पर पहुँचना या होना। प्र० पता नहीं मैं किस किनारे लगूँ, भूखा रहूँ या मर जाऊँ (कम०–कम०, 85)।

(3) किनारे तक पहुँचना या पहुँचाना। प्र० भैया, जरा जल्दी से किनारे लगा दो नाव को, मुझे बहुत देरी हो रही है।

किनारे बैठना—अलग होना, छोड़कर दूर हटना। प्र० किनारे बैठो, हाथ लगाया तो चपत खाओगे।

किनारे रख देना—अलग रख देना। प्र० वह पूजा का सामान है, उसे किनारे रख दो।

किनारे रहना या होना—(1) दूर रहना। प्र० जब तो हम गुल थे मियाँ लगते हजारों के गले! अब तो हम खार हुए सब से किनारे ही भले (परीक्षा०–श्री० दास, 89)।

(2) कोई मतलब न होना; कोई काम या बात से एकदम परे रहना। प्र० नित को मिलनो तो किनारे रह्यो, मुख देखत ही दुरि भाजत हो (भा० ग्रन्थ० (1)–भारतेन्दु, 429); आवभगत करना तो किनारे रहा, उसने मेरी ओर आँख उठाकर देखा तक नहीं।

किनारे लगना या लगाना—दे० किनारे पहुँचना या पहुँचाना।

किनारे-किनारे रहना या होना—विमुख होना; कोई सम्बन्ध न रखना; दूर-दूर रहना। प्र० आजकल वे न जाने क्यों मुझसे किनारे-किनारे हो गये हैं।

किनारे-किनारे चलना—बचकर चलना। प्र० जरा किनारे-किनारे चलो नहीं तो सब कीचड़ तुम्हारे जूतों में लग जायेगा।

किया आगे आना—कर्म का फल मिलना। प्र० अभी तुम्हें जितनी धूर्तता करनी है कर लो, किया आगे आयेगा तो अपने आप अकल ठिकाने आ जायेगी।

किया-कराया—किया हुआ काम। प्र० उसके एक धक्के से ही हमारा सारा किया-कराया बिगड़ गया।

किया-कराया नष्ट करना या होना, -बराबर करना या होना, -मिट्टी में मिलना या मिलाना, किये-कराये पर पानी फेरना या फिरना, किये-धरे पर पानी फेरना या फिरना—सब परिश्रम या प्रयत्न नष्ट कर देना। प्र० हा! सारा किया-कराया मिट्टी में मिल गया (मान०(1)–प्रेमचन्द, 62); लेकिन उस दिन रामनाथ ने प्रभानाथ से मिलकर मेरे किये-धरे पर पानी फेर दिया (टेढ़े०–भग० वर्मा, 508)।

किया-कराया बराबर करना या होना—दे० किया-कराया नष्ट करना या होना।

किया-कराया मिट्टी में मिलना या मिलाना—दे० किया-कराया नष्ट करना या होना।

किये को पाना—करनी के अनुरूप फल मिलना। प्र० अब भी वह न सम्हले तो कोई क्या कर सकता है। अपने किये को पायेगा।

किये-कराये पर पानी फेरना या फिरना—दे० किया-कराया नष्ट करना या होना।

किये-धरे पर पानी फेर देना—दे० किया-कराया नष्ट करना या होना।

किये-धरे पर स्याही फिर जाना—सब किया-धरा नष्ट हो जाना। प्र० ××तुम्हारे ज़िन्दगी-भर के किये-धरे पर स्याही फिर गयी (रंग०–प्रेमचन्द, 529)।

किरकिरा होना—काम खराब हो जाना। प्र० उनको घर में घुसते देख ही हम लोगों का मजा किरकिरा हो गया।

किरकिरी उठना—पेट में दर्द होना। प्र० जाने कैसी किरकिरी उठ रही है, जल्दी से डाक्टर को बुलाओ।

किरकिरी होना—(1) अप्रतिष्ठा होना। प्र० इंस्पेक्टर साहब ने फैक्रिश्त में लिखा डिसिप्लिन बहुत खराब है। प्रिंसिपल साहब की किरकिरी हुई (मान० (4)–प्रेमचंद, 6)।

(2) आनन्द में विघ्न पड़ना। प्र० कहीं चाचाजी भी आ गये तो सब किरकिरी हो जायेगी।

किरण उगना, -फूटना—(1) आशा, मंगल आदि का उन्मेष होना। प्र० नये वर्ष की नव किरणें फूट रही हैं।

(2) सूर्योदय होना। प्र० किरण फूट जाये तब हम लोग घर से निकलेंगे।

किरण डूबना—सायंकाल होना। प्र० किरण डूब गई, अभी तक मोहन घर लौटकर नहीं आया, क्या बात है?

किरण फूटना—दे० किरण उगना।

किराया उतारना—(1) किराया वसूल करना। प्र० तीन आदमियों को किराया उतारने के लिए लगा दो।

(2) किराया दे देना। प्र० मैं पहले पिछले तीन महीनों का किराया उतार दूँ फिर और कोई बात करूँगा।

किराये करना—भाड़े पर लेना। प्र० हम लोग एक गाड़ी किराये कर लेंगे और चले जायेंगे आप घबड़ाइये मत।

किराये का टट्टू—भाड़े का आदमी। प्र० यह पेट के भक्तों, किराये के टट्टुओं का दल न था (मान० (7)–प्रेमचंद, 52)।

किराये पर उठना—मकान आदि का किराये पर लगना। प्र० बस, एक वही मकान रह गया है यह भी किराये पर उठ जाये तो मेरी चिन्ता खत्म हो।

किराये पर चलना या चलाना—भाड़ा लेकर उपयोग के लिए देना। प्र० मेरी सारी लारियाँ किराये पर चलती हैं।

किरिया खाना—प्रतिज्ञा करना। प्र० मैं किरिया खाता हूँ, आगे से कभी झूठ नहीं बोलूँगा।

किरिया-करम करना—श्राद्ध करना। प्र० जैसा हमेशा से होता आ रहा है वैसे ही इनका भी किरिया-करम किया जायेगा।

किलकारी मारना—(1) बहुत प्रसन्न होना। प्र० क्या बात है, आज बड़ा किलकारी मार रहे हो?

(2) बन्दरों या लड़कों का खेलना। प्र० देखो तो मुन्ना कैसे किलकारी मार रहा है।

किलकिल करना—शोरगुल करना। प्र० ये बच्चे बड़ा किलकिल कर रहे हैं, इनको बाहर खेलने को भेज दो तो जरा शान्ति मिले।

किल किल चुकाना—सब झंझट से मुक्त होना। प्र० कहै कबीर भाग बयरी को, किलि-किलि सबै चुकाई (कबीर ग्रंथा०–कबीर, 96)।

किला जीतना—किसी मुश्किल काम को पूरा करना। प्र० चलो तुमने भी

इस बार किला जीत लिया—वास्तव में यह काम प्रशंसा के योग्य है।

किला टूटना, -ध्वस्त होना—(1) किसी मुश्किल कार्य का पूरा होना। प्र० इतने दिनों की मेहनत के बाद अब जाकर वह किला टूटा है।
(2) किसी बन्धन का टूटना। प्र० पूंजी और शिक्षा, × × × इनका किला जितनी जल्दी टूट जाय, उतना ही अच्छा (गोदान–प्रेमचंद, 54)।

किला तोड़ देना—बन्धन तोड़ देना। प्र० तोड़ दिया, नमक का कानून तोड़ दिया, धर्म का किला तोड़ दिया, नेम का घड़ा फोड़ दिया (गोदान–प्रेमचंद, 68)।

किला ध्वस्त होना—दे० किला टूटना।

किला फतह करना या होना—किसी मुश्किल काम को पूरा करना या होना। प्र० यह किला भी फतह हो जाय तो मेरा काम पूरा हो जाय।

किला बांधना—शतरंज के खेल में बादशाह को बचाने के लिए चारों ओर से गोटियों से सुरक्षित करना।

किलेबन्दी करना—मोर्चेबन्दी करना। प्र० सब सिपाही मुस्तैदी से किलेबन्दी कर रहे थे।

किल्ला गाड़कर बैठना—जमकर बैठना। प्र० वे तो जहाँ जाते हैं किल्ला गाड़कर बैठ जाते हैं।

किल्ली ऐंठना, -घुमाना, -दबाना—(1) दांव चलाना या युक्ति लगाना। प्र० आप देखते रहिये, मैं ऐसी किल्ली ऐंठूंगा कि काम भी बन जायेगा और किसी पर आंच भी नहीं आयेगी।
(2) उत्तेजित करना, प्रवृत्त करना। प्र० तुम देखते रहो मैं कैसा किल्ली घुमाता हूँ।

किल्ली घुमाना—दे० किल्ली ऐंठना।

किल्ली दबाना—दे० किल्ली ऐंठना।

किल्ली हाथ में होना—कब्जे में होना। प्र० अरे, इनकी किल्ली तो चौधरी साहब के हाथ में रहती है।

किवाड़ के ओझल—किवाड़ की आड़ में। प्र० तुम लोग किवाड़ के ओझल रहना, समझीं।

किवाड़ खटखटाना—याचना के लिए कहीं जाना। प्र० शर्म नहीं आती तुम्हें, हर समय दूसरों के किवाड़ खटखटाते हो।

किवाड़ खुलना—किसी गरीब का विवाह होना। प्र० किसी तरह उसके किवाड़ खुल जायं तो बड़ा अच्छा हो।

(किसी के लिए) किवाड़ खुला रहना—किसी का हर समय स्वागत होना। प्र० मेरे लिए उनके किवाड़ हमेशा खुले हैं।

किवाड़ तोड़-तोड़कर खाना—बहुत कष्ट में दिन बिताना। प्र० उसकी हालत मत पूछो, बेचारा किवाड़ तोड़-तोड़कर खा रहा है।

किवाड़ देना, -भिड़ाना या भेड़ना, -मूंदना, -लगाना, -लाना—किवाड़ बन्द कर देना। प्र० गढ़वै भयो नरकपति मोसौं दीन्हे रहत किबार (सू० सा०–सूर, 141); आया अपने द्वार तप, तू दे रही किवाड़? (साकेत–गुप्त, 270); धीरे-धीरे उठकर भीतर से किवाड़ लगा दिये (दे० दु०–शिव०, 52)।

किवाड़ बन्द हो जाना—घर में कोई न बचना सबका मृत्यु को प्राप्त होना। प्र० उनके खानदान का तो अब किवाड़ ही बन्द हो गया, कोई नहीं रहा।

किवाड़ भिड़ाना या भेड़ना—दे० किवाड़ देना।

किवाड़ मूंदना—दे० किवाड़ देना।

किवाड़ लगाना—दे० किवाड़ देना।

किवाड़ लाना—दे० किवाड़ देना।

किश्त देना—संकट डालना। प्र० उसने मुझे ऐसी किश्त दी कि मैं उसे जिन्दगी भर नहीं भूलूंगा।

किस खेत का बथुआ हो?, -की मूली हो?, -गली के भंड़ुए हो?, -गली के हो?, -गिनती में हो?, -बाग का बथुआ हो?, -बाग की मूली हो?, -बात में हो?—अत्यन्त तुच्छ हो, कुछ नहीं हो। प्र० दूसरे किस खेत की मूली हैं, खुशामद वह चीज है कि पत्थर को मोम बनाती है, बैल को दुह के दूध निकालती है (प्र० पी०–प्र० ना० मि०, 59); उन्होंने तो रावन-जैसे प्रतापी को न छोड़ा, यह किस खेत की मूली है (रंग०–प्रेमचंद, 348)।

किस खेत की मूली हो?—दे० किस खेत का बथुआ हो?

किस गली के भंड़ुए हो?—दे० किस खेत का बथुआ हो?

किस गली के हो?—दे० किस खेत का बथुआ हो?

किस गिनती में हो?—दे० किस खेत का बथुआ हो?

किस चक्की का पीसा खाते हो?—कौन-सा पुष्टकर भोजन करते हो? प्र० किस चक्की का पीसा खाते हो जो ऐसी काया बनी है?

किस चिड़िया का नाम है—बिलकुल परिचित न होना। प्र० अब यह प्रश्न होगा कि भाई हम तो जानते ही नहीं कि उन्नति और सुधारना किस चिड़िया का नाम है? (भा० ग्रं० (3)–भारतेन्दु, 900); वह तो जानते भी न थे कि लड़ाई किस चिड़िया का नाम है (आजाद०–प्रेमचंद, 560)।

किस जानवर का नाम है—बिलकुल परिचित न होना। प्र० तुम्हें क्या पता कि अंग्रेजी किस जानवर का नाम है।

किस दर्द की दवा है, -मर्ज की दवा है?—किस काम का है? प्र० यह तुम क्या उठा लाये—यह किस दर्द की दवा है? तो आखिर तुम किस मरज की दवा हो (रंग०–प्रेमचंद, 291)।

किस बाग का बथुआ हो—दे० किस खेत का बथुआ हो?

किस बाग की मूली हो—दे० किस खेत का बथुआ हो?

किस बात पर फूला है—किस गुमान में है? प्र० पता नहीं किस बात पर फूला है, समझता क्या है अपने को वह।

किस बात में हो—दे० किस खेत का बथुआ हो?

किस बिरते पर तत्ता पानी होना—किस बात पर इतना घमंड होना। प्र० पता नहीं क्या समझता है वह अपने आपको! किस बिरते पर तत्ता पानी है?

किस मर्ज की दवा हो—दे० किस दर्द की दवा है।

किस मुंह से—(1) लज्जाजनक स्थिति के कारण किसी व्यक्ति या बात

का सामना करने का साहस न होना। प्र० सध्यौ नहि धर्म सुचि, सील, तप, ब्रत कछू, कहा मुख लें तुम्हें विनै करिऐ (सू० सा०—सूर, 110); मैं कल किस मुंह से कचहरी जाऊँगा (सिन्दूर०—ल० मिश्र, 160)।

(2) कैसे। प्र० ब्याहता न सही, पर उसकी बांह तो पकड़ी है मेरे बेटे ने ही। किस मुँह से निकाल देती (गोदान—प्रेमचंद, 124)।

किस-किस दुख को रोवें—कौन-कौन सा दुःख कहें? प्र० आप तो सब जानते ही हैं, अब हम किस-किस दुख को रोवें।

किसी और की आँख से देखना—(1) किसी की देखी बात को खुद भी सच मानना। प्र० तैमूर उसी की आँखों से देखता है (मान० (1)—प्रेमचंद, 192)।

(2) किसी दूसरे के दृष्टिकोण से विचार करना। प्र० अरे मेरी आँखों से देख, तेरी आँखें खुल जायंगी, कुत्सित हृदय सौन्दर्यपूर्ण हो जायगा (कामना—प्रसाद, 39)।

किसी और के कान से सुनना—किसी की सुनी बात को खुद भी सच मानना। प्र० तैमूर उसी की आँखों से देखता है, उसी के कानों से सुनता है ×× (मान० (1)—प्रेमचंद, 192)।

किसी का कुछ जानना—किसी से कोई सहायता पाना। प्र० भाई-भौजाई सब हैं पर मैंने कभी किसी का कुछ नहीं जाना।

किसी काम का न होना—व्यर्थ होना। प्र० तुम किसी काम के नहीं हो, इतना नहीं कि उठकर दूसरों का हाथ बंटाओ।

किसी की खोदी खंदक में गिरना—किसी के कुकर्म के कारण कष्ट पाना। प्र० उन्होंने कमा-कमाकर दूसरों का घर भरा है। मैं क्यों उनकी खोदी हुई खंदक में गिरूँ?

किसी की नींद सोना-जागना—रात-दिन किसी की इच्छानुसार कार्य में लगे रहना। प्र० वह तो बस अपने बेटे की नींद सोती-जागती है।

किसी की पत्तल में खाना—किसी के साथ खान-पान आदि का सम्बन्ध करना या रखना, किसी के आश्रित रहना। प्र० आप खुद तो उनकी पत्तल में खाते हैं फिर दूसरों के बारे में ऐसी बातें क्यों करते हैं?

किसी की होकर रहना—किसी स्त्री का किसी के साथ रह जाना। प्र० वह तो नब्बू मियाँ की होकर रहती है, आपको मालूम नहीं?

किसी की-सी कहना—किसी के पक्ष में कहना। प्र० मियाँ अगर बीवी की-सी कहें तो अम्मां की घुड़कियाँ सहें, अम्मां की-सी कहें, तो बीवी की बातें सुनें (आज़ाद०—प्रेमचंद, 291)।

किसी के आगे—(1) किसी की इच्छा के सामने। प्र० उनके आगे तो किसी की कुछ नहीं चलती है, वे जो कहते हैं वही होता है।

(2) तुलना में। प्र० सुषमा के आगे मैं क्या हूँ, कुछ नहीं।

किसी के कहे अनुसार उठना-बैठना—किसी के पूरी तरह वश में होना। प्र० बहू की बात पर उठने-बैठने वाले बेटे को फूटी निगाह से नहीं देख सकती वह (परती०—रेणु, 256)।

किसी के किये में घी, किसी के किये में पत्थर पड़ना—किसी को अपने काम का अच्छा फल मिलता है, किसी को बुरा। प्र० विधि का यही नियम है, किसी के किये में घी, किसी के किये में पत्थर पड़ता है।

किसी के चुल्लू पानी पीना—किसी के वशीभूत होना। प्र० मुझे सब मालूम है आप किसके चुल्लू पानी पीते हैं।

किसी के जोर पर कूदना—किसी का सहारा पाकर बढ़-बढ़कर काम या बात करना। प्र० अभी तुम चाचाजी के जोर पर कूद रहे हो, पता है। पर कब तक, वह भी देखेंगे।

किसी के नाम का—किसी के हिस्से का। प्र० मेरे नाम का नाश्ता भी इसे करा दो।

किसी के नाम पर कुत्ते पोसना—किसी के हित के लिए कुछ करना। प्र० वह तो चाचा के नाम पर कुत्ते पोस रहा है।

किसी के नाम पर मर मिटना—किसी व्यक्ति या काम के लिए सब कुछ कर डालना। प्र० वह तो अपने लीडर के नाम पर मर मिट सकता है।

किसी के नीचे बैठना—किसी के साथ घर कर लेना। प्र० तुझे क्या, वह मर जायगा, किसी और के नीचे बैठ जाना (मान० (4)—प्रेमचंद, 141)।

किसी के बल पर कूदना—किसी का सहारा पाकर बढ़-बढ़कर बोलना। प्र० आप दूसरों के बल पर कूदते होंगे, यहाँ अपने हाथों के बल का भरोसा करते हैं (रंग०—प्रेमचंद, 129)।

किसी के बाप का इजारा होना—किसी की परवाह होना। प्र० मानिहौं एक गुपालहि को नहि और के बाप को यामें इजारो (भा० ग्रं० (2)—भारतेन्दु, 545)।

किसी के रास्ते पानी न पीना—कोई सम्बन्ध न रखना। प्र० मैं अब अपनैं मन यह ठानी, उनकैं पंथ न पीवौं पानी (सू० सा०—सूर, 3446)।

किसी के हक में काँटे बोना—अहित करना। प्र० अपने ही बेटे के हक में कांटे बोते आपको शरम नहीं आती?

किसी के हाथों तंग आना—किसी के कारण तंग होना। प्र० मैं तो उसके हाथों तंग आ गया हूँ, इसीलिये उससे अब कोई सम्पर्क नहीं रखता।

किसी जन्म का काला तिल खाये होना—किसी से उपकृत हुए होना, किसी का उधार खाये होना। प्र० बाबूजी न जाने तुम्हारा किस जन्म का काला तिल खाये बैठे हैं जो तुम्हारी इतनी बातें सुनते हैं।

किसी तरफ होना—किसी के पक्ष में होना। प्र० मैं किसी तरफ नहीं हूँ यह जानकर आप लोगों को आश्चर्य होगा।

किसी तरह बाहर न करना या न होना—किसी बात को किसी प्रकार न प्रकट करना या न होना। प्र० आप निश्चिन्त रहिये—आपने जो कुछ कहा है, मैं किसी तरह बाहर नहीं करूँगा।

किसी दम का मेहमान—अत्यन्त वृद्ध, मृत्यु-शय्या पर पड़ा हुआ। प्र० वे तो बस किसी दम के मेहमान हैं पता नहीं कब क्या हो जाय।

किसी धुन में—किसी खयाल में डूबे। प्र० लगता था किसी धुन में चले जा रहे थे, मैंने पुकारा पर उन्होंने सुना ही नहीं।

किसी न किसी—कोई अवश्य। प्र० किसी न किसी ने तो यह बात उनसे जरूर कही होगी नहीं तो उन्हें पता कैसे चलता।

किसी भी कीमत पर—किसी भी शर्त या स्थिति में। प्र० मैं किसी भी

कीमत पर उसके साथ अपनी लड़की की शादी नहीं कर सकता।

किसी मर्ज की दवा न होना—निकम्मा या बेकार होना। प्र० वह तो किसी मर्ज की दवा नहीं—दिन भर निठल्लों की तरह घर पर बैठा रहता है।

किसी में दम रहना—किसी में जी लगा होना। प्र० देवा की माँ का सहारा वह लड़का ही था, उसी में उसका दम रहता था।

किस्मत आजमाना—एक बार प्रयत्न करना। प्र० मैंने सोचा एक बार मैं भी व्यापार में अपनी किस्मत आजमा लूँ।

किस्मत उलटना, -चक्कर में होना, -बिगड़ना, -सो जाना—बुरे दिन आना, दुर्भाग्य होना। प्र० मेरी किस्मत है चक्कर में, बिगड़े भाग्य-सितारे हैं (नूर०—भक्त, 4)।

किस्मत का खेल—जो भाग्य में हो। प्र० किस्मत का खेल है बाबूजी, एक जमाना था जब हमारे पास कितने खेत और जमीन थी।

किस्मत का धनी—भाग्यवान्। प्र० जूते चटखाता आया था यहाँ × × लेकिन किसमत का धनी है। डायरेक्टर हो गया (पैंतरे—अश्क, 86–87)।

किस्मत का पलटा खाना—भाग्य फिरना। प्र० देखो, किस्मत ने पलटा खाया और कल का ग़रीब आज कैसा लखपती बन गया।

किस्मत का फेर—भाग्य की प्रतिकूलता। प्र० यह सब किस्मत का फेर है, एक-एक करके सभी चले गये।

किस्मत का फैसला करना या होना—अपने भाग्य को आजमा लेना। प्र० चलो, मैं उससे बातें करूँगा, एक बार मेरी किस्मत का भी फैसला हो जाये।

किस्मत का लिखा—जो भाग्य में हो। प्र० किस्मत का लिखा तो हो के ही रहेगा उसे हम या आप मिटा नहीं सकते।

किस्मत का सिकन्दर—भाग्यशाली। प्र० किस्मत का सिकन्दर है वह। उसने जब जो व्यापार किया, उसमें सफलता ही मिली।

किस्मत का सितारा खुलना—सौभाग्य के दिन आना। प्र० चलूँ सारस लेक ही। मेरी किस्मत का सितारा वहीं खुलेगा (अमृत०—नागर, 683)।

किस्मत का हेठा—अभागा। प्र० किस्मत का हेंठा है बेचारा अब उसको क्या कहा जाय।

किस्मत की मार—बुरे दिन। प्र० किस्मत की मार थी, एक-एक करके हमारा सब कुछ छिन गया।

(किसी के) किस्मत के पत्थर पर अपने नसीब का उस्तरा तेज करना—किसी दूसरे के भरोसे अपनी किस्मत तेज़ करना। प्र० और अब जाटों और रुहेला सरदार झपेटा खाँ की किस्मत के पत्थरों पर अपने नसीब का उस्तरा सफ़ाई से पैना कर रहे हैं × × × (सात० —नागर, 10–11)।

किस्मत खुलना, -चमकना, -जगना या जागना—अच्छे दिन आना। प्र० हम भी × × भाँति-भाँति की चतुराई दिखाया चाहते हैं कि ग्राहक बढ़ें पर इस पत्र (हिन्दी प्रदीप) की फूटी किस्मत नहीं जागती, लाचारी है (सा० सु०—बा० भट्ट, 90); तुम्हारी किस्मत खुल गई (चोटी०—निराला, 110)।

किस्मत गवाही देना—भाग्य का साथ देना। प्र० मैं तो कितनी कोशिश कर रहा हूँ पर किस्मत ही गवाही नहीं दे रही है तो मैं क्या करूँ।

किस्मत चक्कर में होना—दे० किस्मत उलटना।

किस्मत चमकना—दे० किस्मत खुलना।

किस्मत जगना या जागना—दे० किस्मत खुलना।

किस्मत झूलती रहना—अच्छे-बुरे परिणाम का निश्चय न होना। प्र० मेरी किस्मत तो अभी तक झूल ही रही है, न जाने कब फैसला होगा।

किस्मत ठोंककर कुछ करना—अपने भाग्य पर भरोसा करके करना। प्र० किस्मत ठोंककर काम करना चाहिये, नहीं तो कभी हिम्मत नहीं खुलेगी।

किस्मत ठोंकना—किसी काम या स्थिति के बिगड़ जाने पर पछताना। प्र० अब किस्मत ठोंकने से क्या फायदा, आगे के काम की तैयारी शुरू कर दो।

(किसी की) किस्मत दफना देना—कोई भारी अपकार करना, ऐसा कुछ करना जिससे किसी की बड़ी क्षति हो जाये। प्र० तुमने तो लालाजी की किस्मत ही दफना दी—यह क्या किया?

किस्मत पलटना, -फिरना—भाग्य की अच्छी या बुरी स्थिति में परिवर्तन होना। प्र० बाबूजी की किस्मत पलट गई—हम सब फिर से अच्छा खाने-पहनने लगे।

किस्मत पीटना—किस्मत को रोना। प्र० पीटेगी तो अपनी किस्मत वह पीटेगी (सारा०—यादव, 203)।

किस्मत फिरना—दे० किस्मत पलटना।

किस्मत फूटना—बुरे दिन आना। प्र० किस्मत फूट गई मेरी तो! आज एक-एक पैसे को मोहताज हो रहे हैं हम।

किस्मत बिगड़ना—दे० किस्मत उलटना।

किस्मत में दो हाथ की रस्सी होना—फाँसी होना। प्र० भगत सिंह की किस्मत में तो दो हाथ की रस्सी ही थी।

किस्मत लड़ना—भाग्य अनुकूल होना, संयोग बैठ जाना। प्र० शंकर को मालूम हो गया कि या तो कल इनकी क़िस्मत दर अस्ल लड़ गई, या आज अब फिर चिट्ठी में कल कहीं मिलने की आज्ञा पहुँची है (लिली—निराला, 124)।

किस्मत साथ देना—समय और स्थिति का अनुकूल होना। प्र० किस्मत ने साथ दिया तो देखना मैं तुम्हारे लिये क्या-क्या करता हूँ।

किस्मत से बाजी लगाना—प्रतिकूल परिस्थिति को अनुकूल बनाने के लिए कोशिश करना। प्र० वह किस्मत से बाजी लगाकर गुंडों से लड़ने के लिये चल पड़ा।

किस्मत सो जाना—दे० किस्मत उलटना।

किस्सा उठाना, -खड़ा करना—(1) झगड़ा खड़ा करना। प्र० देखो रोज-रोज का तुम्हारा यह किस्सा उठाना मुझे बिलकुल नापसंद है।

(2) कोई लम्बी चर्चा शुरू करना। प्र० उन्होंने जो पांडे जी का किस्सा उठाया तो बोलते ही चले गये।

किस्सा कोताह करना—थोड़े में मतलब की बातें कहना। प्र० बहुत बोल चुके तुम, अब किस्सा कोताह करो।

किस्सा खड़ा करना—दे० किस्सा उठाना।

किस्सा खत्म करना या होना, किस्सा चुकना या चुकाना, -तमाम करना या होना, -पाक करना या होना—(1) झगड़ा समाप्त करना या होना। प्र० यह किस्सा तुम खत्म भी करोगे या नहीं?

(2) मार डालना या मरना। प्र० किस्सा खतम कर दो साले का सारी मुसीबत टल जायेगी।

(3) बात खत्म करना या होना। प्र० आप भी जाने कहाँ का किस्सा ले बैठे, अब खत्म भी कीजिये।

किस्सा चुकाना या चुकना—दे० किस्सा खत्म करना या होना।

किस्सा तमाम करना या होना—दे० किस्सा खत्म करना या होना।

किस्सा नाँधना—आप-बीती सुनाना। प्र० बैठे-बैठे घंटे भर से किस्सा नांध रहे थे इतना खयाल नहीं कि दूसरों का वक्त जाया हो रहा है।

किस्सा पाक करना या होना—दे० किस्सा खत्म करना या होना।

किस्सा बढ़ाना—किसी बात को तूल देना। प्र० अब किस्सा बढ़ाने से क्या फायदा, तुम इस बारे में आगे कुछ न कहना।

किस्सा मोल लेना—(1) जबरदस्ती झगड़े में पड़ना। प्र० तुमने भी बिना मतलब का किस्सा मोल लिया।

(2) झंझट में पड़ना। प्र० देखिए प्रयोग (1)।

किस्सा-तलब बात—ऐसी बात जिसके पीछे लम्बा किस्सा हो। प्र० तुम्हारी समझ में न आयेगा। यह किस्सा-तलब बात है (आजाद०-प्रेमचन्द, 256)।

कीच उछालना, -फेंकना, कीचड़ उछालना, -फेंकना—बदनामी करना। प्र० दिखाकर मन का मैलापन, नीच बन कीच क्यों उछालें (मर्म०—हरिऔध, 73); तब तो वह और भी निडर होकर कीचड़ फेंकेगी (मान० (1)-प्रेमचन्द, 269)।

कीच उड़ाना—गंदगी फैलाना, दुर्भावना फैलाना, बुराई का प्रचार करना। प्र० द्विजिह्वे, रस में विष मत घोल उड़ाती है तू घर में कीच (साकेत—गुप्त, 30)।

कीच फेंकना—दे० कीच उछालना।

कीच में ढेला फेंकना, -पत्थर फेंकना—(1) ऐसा कार्य करना जिससे अपने ही ऊपर आक्षेप आए। प्र० कीच में ढेला फेंकोगे तो और क्या होगा।

(2) नीच व्यक्ति को छेड़ना। प्र० देखिए प्रयोग (1)।

कीच में पत्थर फेंकना—दे० कीच में ढेला फेंकना।

कीचड़—(1) दुर्दशाग्रस्त स्थिति, गंदी स्थिति। प्र० मैं तुम्हें कीचड़ में छोड़कर नहीं जा सकता (बाण०-हृ० प्र० द्वि०, 14)।

(2) बहुत गंदा। प्र० उसके कपड़े एकदम कीचड़ हो रहे थे।

कीचड़ उछालना—दे० कीच उछालना।

कीचड़ का कीड़ा—अत्यन्त तुच्छ एवं घृण्य। प्र० × × × वह कीचड़ का एक कीड़ा है, मैं बस इतना ही उसके बारे में कह सकता हूँ (अंधेरे०—राकेश, 183)।

कीचड़ फेंकना—दे० कीच उछालना।

कीचड़ में कमल पैदा होना—गंदे एवं अनुपयुक्त वातावरण में पैदा होना। प्र० कीचड़ में कमल पैदा हुआ है, ऐसा अच्छा लड़का कम ही देखने को मिलता है।

कीचड़ में घसीटना—बुराई में भागी बनाना। प्र० नहीं, रहने दो मेरे भाई, मुझे कीचड़ में न घसीटो (विष०-प्रेमी, 17)।

कीचड़ में पड़ना, -फंसना—मुसीबत में फंसना। प्र० उन लोगों के चक्कर में मैं तो ऐसा कीचड़ में पड़ा कि क्या बताऊँ।

कीचड़ में फंसना—दे० कीचड़ में पड़ना।

कीचड़ में लथपथ होना—बुरे कर्म में रत होना। प्र० वहाँ सभी मुझे कीचड़ में लथपथ देखना चाहते हैं, मेरे विलासासक्त रहने में ही उनका स्वार्थ है (मान० (1)-प्रेमचंद, 16)।

कीचड़ में हाथ सानना—कुकर्म करना या उसके साथ युक्त होना। प्र० × × उसे भागने में मदद देना, उसे गंदा काम जंच रहा था, वह कीचड़ में हाथ नहीं सानेगा (अमृत०—नागर, 552)।

कीचड़ से ऊपर उठना—किसी बुराई से मुक्त हो पाना। प्र० अपने स्वार्थ में तुम्हारी आत्मा को कीचड़ नहीं लगता, दूसरे के काम में वह एकदम महान् होकर कीचड़ से ऊपर उठ जाती है (अंधेरे०—राकेश, 386)।

कीट के समान भी न मानना—अत्यन्त तुच्छ समझना। प्र० जे जे तुव सूर सुभट, कीट सम न लेखौं (सू० सा०—सूर, 541)।

कीड़ा—(1) किसी स्थिति, काम या बात में पूरी तरह लिप्त होना। प्र० जो कि सुख के बने रहे कीड़े वे पड़े देख दुःख उठाते भी (चोखे०—हरिऔध, 58); रद्घू सिंह जब से × × × बारीक धोती, इत्र फुलेल खिजाब के कीड़े बनकर जुए के पत्ते चाटने लगे हैं × × × × (अमृत०—नागर, 620)।

(2) साँप। प्र० आज मैंने इतना बड़ा कीड़ा देखा कि क्या बताऊँ।

कीड़ा काटना, -कुलबुलाना—चचंल होना; स्थिर न बैठ पाना। प्र० इसको तो जैसे हमेशा कीड़ा काटता है, एक जगह टिक कर बैठ नहीं सकती।

कीड़ा कुलबुलाना—दे० कीड़ा काटना।

कीड़ा छूना—साँप काटना, किसी कीड़े का काटना। प्र० उनके लड़के का हाल तो तुमने सुना होगा, कीड़े ने छू लिया है (मान० (5)-प्रेमचंद, 290)।

कीड़े पड़ना—(1) कीड़े उत्पन्न होना, दोष होना। प्र० उसके घाव में तो कीड़े पड़ गये हैं देखकर जाने कैसा-कैसा लगता है। फल में कीड़े पड़ जायेंगे तब किसी को दोगी?

(2) बुरा फल मिलना। प्र० कीड़े पड़ें तुम्हारे कर्मों में।

कीड़े लगना—कपड़े या दूसरी वस्तुओं का कीड़ों द्वारा नष्ट किया जाना। प्र० ऐसा कीमती दुशाला था, कीड़े लग गये।

कीना निकलना—मन का आक्रोश दूर होना। प्र० किस तरह तब निकल सके कीना जब कसर ही निकल न पाती है (चोखे०—हरिऔध, 127)।

कीमत गिरना—दाम में कमी होना। प्र० कीमत तो गिरी नहीं और चीजें पहले से भी रद्दी हो गई हैं।

कीमत ठहरना या ठहराना—मूल्य निश्चित करना (मोल भाव करके) या होना। प्र० इस खिलौने की ठीक कीमत ठहराइये तो मैं खरीदूं।

कीमत न रखना—महत्त्व न होना। प्र० मेरे विचार तो जैसे कोई कीमत ही नहीं रखते।

कीमत लगाना—दाम तै करना; मूल्यांकन करना। प्र० कई अनर्थ रत्न ऐसे अछूते हाथ लगे जिनकी कीमतें अभी जौहरियों के बाजार में कूती न गई थीं (पद्म पराग—पद्म० शर्मा, 274)।

कीमा बनाना—बहुत मारना। प्र० ठहर, मैं अभी कीमा बनाता हूं तेरा।

कीमियागीरी करना—भड़कीला बनाना। प्र० अब आखिर तुम कब तक कीमियागीरी करते रहोगे, छोड़ो भी।

कीर्ति छाना—प्रशंसा होना। प्र० उनकी तो आजकल खूब कीर्ति छाई है, बहुत अच्छा गाते हैं।

कीर्ति थापना—प्रशंसा करना। प्र० मैंने आजतक इन्हें दूसरों की कीर्ति थापते ही सुना है।

कील घुमाना—प्रेरित करना, रुख फेरना। प्र० वह धूर्त था और जानता था कि जनता की कील क्योंकर घुमाई जा सकती है (मान० (3)—प्रेमचंद, 151)।

कील जड़ना—मंत्र से भूत-प्रेत को भगाना।

कील देना—किसी चीज का मुंह बन्द करना। प्र० टिन का ढक्कन लगाकर डब्बे का मुंह कील दो।

कील निकालना—खूब पीटना। प्र० ज्यादा जवाब-सवाल किया तो कील निकाल दूंगा।

कील-कांटा—किसी काम के लिए आवश्यक उपकरण। प्र० सब कील-कांटा जुटाकर मुझे बुलाना।

कील-कांटा ढीला होना—चुस्ती में कमी आना, सुस्त होना। प्र० दादा जी का कील-कांटा ढीला हो रहा है, अब बेचारे कितना करेंगे।

कील-कांटा दुरुस्त रखना—सब चीजें ठीक रखना। प्र० इतनी बड़ी हो गई हो तुम लोग पर इतना नहीं कि गृहस्थी का कील-कांटा दुरुस्त रखो।

कील-कांटे से दुरुस्त—हर प्रकार से दुरुस्त। प्र० बंदा भी कील-कांटे से दुरुस्त है (आजाद०—प्रेमचंद, 267)।

कुंजड़ा-कसाई—नीच जाति का आदमी। प्र० तुम लोगों को इस तरह कुंजड़े-कसाइयों जैसा काम करते शर्म आनी चाहिये।

कुंजड़े का गल्ला—(1) बे सिर-पैर का लेखा, गोलमाल, गड़बड़। प्र० यह तुम्हारा हिसाब है कि कुंजड़े का गल्ला?
(2) वह धन या गल्ला जिसके लेन-देन का लेखा-जोखा न हो।

कुंजड़े की दुकान—वह स्थान जहां बहुत भीड़भाड़ हो या जहां बड़े-छोटे सब जा सकें। प्र० उनका घर क्या है कुंजड़े की दुकान है, जब देखो भीड़ लगी रहती है।

कुंजरो वा नरो वा—अनिश्चित या दुविधा की बात। प्र० मो हौं सुमिरत नाम सुधारस परवत परसि धरो। स्वारथ हू परमारथ हू को नहिं कुंजरो नरो (तुलसी)।

कुंजी—कारण; आधार या साधन; जानकारी। प्र० उसकी उपस्थिति किसी जलसे की सफलता की कुंजी है (कर्म०—प्रेमचंद, 216)।

कुंजी हाथ में होना—किसी के वश में होना। प्र० कुंजी बहुमत के हाथों में रहेगी (गोदान—प्रेमचंद, 172); अफसरों और हाकिमों की कुंजी तो मेरे हाथ में है (दे० दु०—शिव०, 42)।

कुंठित छुरी से गला रेतना—बड़ी हानि पहुंचाना। प्र० उसने तो इस बार कुंठित छुरी से किसानों का गला रेता है।

कुंड पड़ना—नदी के बहाव में किसी स्थान का अत्यन्त गहरा हो जाना।

कुंडल करना, -डालना, -मारना—सूर्य या चन्द्रमा के चारों ओर मंडल पड़ना।

कुंडल डालना—दे० कुंडल करना।

कुंडल मारना—दे० कुंडल करना।

कुंडा—बहुत मोटा। प्र० ज़रा खाने-पीने पर ध्यान दिया करो, कुंडा हो गये हो आजकल।

कुंडा करना, -देना, -भेजना—सौगात देना। प्र० उसके लड़के की शादी में कम-से-कम तुम्हें तो कुंडा करना ही चाहिये।

कुंडा का कुंडा—बहुत अधिक। प्र० तुम लोग उन लोगों से दान क्यों नहीं मांगते जिनके पास कुंडा का कुंडा धन पड़ा रहता है।

कुंडा देना—दे० कुंडा करना।

कुंडा भेजना—दे० कुंडा करना।

कुंडा लाना—(1) सौगात लाना। प्र० वे तो हर शादी में कुंडा लाते हैं।
(2) धन ले आना। प्र० बहू तो शादी में कुंडा लाई है।

कुंडी खटखटाना, -खड़खड़ाना—(1) खुशामद करने जाना। प्र० जरूरत पड़ने पर सब हमारी कुंडी खटखटाने आते हैं।
(2) मांगना। प्र० तुम अपने पैरों पर क्यों नहीं खड़े होते, हमेशा दूसरों की कुंडी खटखटाते हो।
(3) दरवाजा खुलवाना। प्र० इतनी देर से कुंडी खड़खड़ा रहा था, किसी ने दरवाज़ा क्यों नहीं खोला?

कुंडी खड़खड़ाना—दे० कुंडी खटखटाना।

कुंडी देना, -मारना, -लगाना—कुंडी लगाकर दरवाज़ा बन्द करना। प्र० सब लोग आ गये हों तो कुंडी दे दो और जाकर सो जाओ।

कुंडी बजाना—दरवाज़ा खुलवाना, दरवाजे की कुंडी से आवाज करके दरवाज़ा खोलने को कहना। प्र० ××× इसलिये नाई बाड़े जाकर चाहे घर-घर की कुण्डी बजानी पड़े, फिर भी ×××× रम्मो दाई का घर खोज ही निकालेंगे (अमृत०—नागर, 162)।

कुंडी मारना—दे० कुंडी देना।

कुंडी लगाना—दे० कुंडी देना।

कुंडी-सोंटा—भांग घोंटने का सामान। प्र० कुंडी-सोंटा आप ला दीजिये तो बाकी का काम मैं कर दूंगा।

कुंडे जैसा मुंह फुलाना या होना—नाराज़ होना; रूठना। प्र० तुम्हें तो कुछ कहो सही कि कुंडे जैसा मुंह फुला लेती हो।

कुंद छुरी से गरदन या गला रेतना, -हलाल करना—(1) बड़ी हानि पहुंचाना। प्र० हमारी मुसीबत के समय सहायता करना तो दूर, ये लोग कुंद छुरी से गला रेतने को तैयार रहते थे।

(2) बहुत दुःख देना। प्र० देखिए प्रयोग (1)।

कुंद छुरी से हलाल करना—दे० कुंद छुरी से गला रेतना।

कुंदन बनना, -होना—निर्मल होना, अच्छा और भला होना। प्र० उनका लड़का तो कुंदन है मुझे वह बहुत ही पसन्द है।

कुंदन-सा चमकना, -दमकना—खूब दीप्तिमान होना। प्र० उसका चेहरा तो बिलकुल कुंदन-सा चमकता है।

कुंदन-सा दमकना—दे० कुंदन-सा चमकना।

कुंदा कसना, -भूनना—दूध से खोआ तैयार करना।

कुंदा चढ़ाना—बन्दूक की नली में लकड़ी चढ़ाना।

कुंदा भूनना—दे० कुंदा कसना।

कुंदी करना—(1) बहुत पीटना। प्र० रूपट सिंह सोच रहे थे कि भगवान करे मार-पीट हो जाय तो इन लोगों की खूब कुन्दी की जाय (प्रेमा० —प्रेमचंद, 97)।

(2) पीटकर फैलाना। प्र० तुमने तो चांदी की बिल्कुल कुंदी कर दी।

कुंदे जोड़कर उतरना, -तौलकर उतरना, -बांधकर उतरना—पक्षियों का पंख समेट कर नीचे उतरना। प्र० कुंदे जोड़ कर उतरते हुए पक्षी कैसे अच्छे लग रहे हैं।

कुंदे तौलकर उतरना—दे० कुंदे जोड़कर उतरना।

कुंदे तौलना—पक्षी का डैने फैलाकर उड़ने की चेष्टा करना। प्र० अभी तो यह बच्चा है, कुंदे तौलता है पर उड़ नहीं पाता।

कुंदे बांधकर उतरना—दे० कुंदे जोड़ कर उतरना।

कुंभकर्णी निद्रा—ऐसी नींद जो सहज ही न खुले। प्र० उनकी कुंभकर्णी निद्रा ऐसे नहीं टूटेगी, दो लोटा पानी डालो तब उठेंगे।

कुआं—(1) बहुत गहरा और अंधकारमय। प्र० उनका घर क्या है कुआं है, मुझे तो वहां जाते डर लगता है।

(2) ऐसा बर्त्तन या पेट जो किसी प्रकार भरे ही नहीं। प्र० तुम्हारा पेट है कि कुआं, अब बन्द भी करो।

कुआं खोदना—(1) नुकसान पहुंचाना। प्र० जोइ जोइ कूप खनैगो पर कहं, सो सठ फिरि तेहि कूप परै (विनय०—तुलसी, 137); उलझनें डालता फिरे न कभी और की राह में कुआं न खने (बोल०—हरिऔध, 40)।

(2) प्रयत्न करना। प्र० यह हमारा परम सौभाग्य रहा कि हमें पग-पग पर अपने लिये नये कुएं न खोदने पड़े (सा० जि०—ल० प्र० सु०, 52)।

(3) जीविका के लिये प्रयत्न करना। प्र० अपना कुआं खुद खोदो, हमेशा दूसरों पर आश्रित रहना ठीक नहीं।

कुआं खोदना और पानी पीना—स्वयं प्रयत्न करके काम चलाना। प्र० बेटी घर देखकर खर्च करो। अब कोई कमाने वाला नहीं बैठा है। आप ही कुआं खोदना और पानी पीना है (मान० (1)—प्रेमचंद, 255)।

कुआं चलाना, -जोतना—खेत को कुएं के पानी से सींचना।

कुआं छोड़ना—किसी कुएं से पानी लेना बन्द कर देना। प्र० वहां औरतें बहुत झगड़ा करती हैं इसलिये मैंने वह कुआं छोड़ दिया है।

कुआं जोतना—दे० कुआं चलाना।

कुआं झंकाना या झांकना—हैरान करना या होना। प्र० तुम अगर झांकी दिखा देते हमें किस तरह से तो कुआं हम झांकते (बोल०—हरिऔध, 141)।

कुआं टूटना—कुएं में पानी कम हो जाना। प्र० यह कुआं तो टूट गया है, बहुत पुराना है न।

कुआं दिखाना, -बताना—धता बताना। प्र० अपनो काज संवारि सूर सुनि हमैं बतावत कूप (सू० सा०—सूर, 4388)।

कुआं देखते फिरना—मरने की इच्छा करना। प्र० तुम हर वक्त कुआं देखते फिरते हो, माजरा क्या है?

कुआं बताना—दे० कुआं दिखाना।

कुआं-पोखर ढूंढ़ना—बहुत खोज करना। प्र० कुआं-पोखर सब ढूंढ़ा, पर यह तो कहीं नहीं मिला।

कुएं का बेंग, -मेढक, -कूपमंडूक—संकुचित विचारवाला। प्र० रोकि विलायत-गमन कूपमंडूक बनायो (भा० ग्रंथा० (1)—भारतेन्दु, 475); कब तक पोखर के मेढक बने रहोगे? (ब्रह्म०—दे० स०, 33); हम कूप के बेंग हैं × × हमारा कसूर माफ कर दो (मैला०—रेणु, 12)।

कुएं का प्यासे के पास जाना—जिस वस्तु की चाह हो, उस वस्तु का चाह करनेवाले के पास जाना। प्र० कांग्रेस के नेताओं ने यह तै किया कि कुआं प्यासे के पास चले, यानी जुलूस सिविल लाइन्स चले (इंस्टा०—भग० वर्मा, 38)।

कुएं का मेढक—दे० कुएं का बेंग।

कुएं की मिट्टी कुएं में लगना—जहां की कमाई हो वहीं लगना। प्र० भाई, कुएं की मिट्टी तो कुएं में ही लगती है; नहीं तो मेरे पास पैसा कहां से आयेगा?

कुएं में खड़े गिरना—बड़ा अनिष्ट करना या होना। प्र० छिः छिः! बाप जीता होता, तो आज इतने पर कुएं में ठाढ़े गिर पड़ता (दे० दु०—शिव०, 229)।

कुएं में गिरना, -पड़ना—(1) अनिष्ट को प्राप्त होना। प्र० जाका गुर भी अंधला, चेला खरा निरंध। अंधै अंधा ठेलिया, दून्यूं कूप पड़ंत (कबीर ग्रंथा०—कबीर, 2); जौ कोउ परहित कूप खनावै, परै सु कूपहि माहीं (सू० सा०—सूर, 4305); जोइ जोइ कूप खनैगो पर कहं, सो सठ

फिरि तेहि कूप परै (विनय०—तुलसी, 137); आप आँखों से देख रहे हैं कि एक हिन्दू जाति की स्त्री कुएं में गिरी हुई है (सेवा०—प्रेमचंद, 92)।

(2) बड़ा से बड़ा त्याग करना, प्राण तक दे देना।

कुएं में जाने देना—छोड़ देना, नष्ट होने देना। प्र० सुनो, इस सब को जाने दो कुएं में। कहना मानो (सारा०—यादव, 112)।

कुएं में झोंकना, -डालना—(1) उपेक्षा भाव से छोड़ देना। प्र० अब तो किसी भाँति ×× लड़की को पार लगाना था, उसे कुएं में झोंकना था (निर्मला—प्रेमचंद, 36)।

(2) नष्ट कर देना; बड़ा अहित करना। प्र० तुमने पहले ही मेरी सारी कमाई कुएं में झोंक दी, अब और पैसा मांगते शर्म नहीं आती तुम्हें ?

कुएं में डालना—दे० कुएं में झोंकना।

कुएं में ढकेलना—बहुत अहित करना, कष्ट देना। प्र० हौं कै नेहु आनि कुंव मेली। सींचैं लाग झुरानी वेली (पद०—जायसी, 35/10); जे तुमको अवलंबई तिनकौं मेलौ कूप (नंद० ग्रंथा०—नंद०, 165); तुमने मुझे कुएं में ढकेल दिया और क्या कहूँ (कर्म०—प्रेमचंद, 20)।

कुएं में पड़ना—दे० कुएं में गिरना।

कुएं में पड़ा व्यक्ति—अज्ञान में पड़ा व्यक्ति। प्र० हमको तो ये मूर्ख लोग कुएं में गिरा बतलाते हैं (राधा० ग्रंथा०—राधा० दास, 637)।

कुएं में फंसना—दुःखदायी स्थिति में होना। प्र० सोचती होगी, अच्छी कुएं में आ फंसी (सारा०—यादव, 83)।

कुएं में फेंकना—(1) जाने देना। प्र० ××× और साथ ही अपनी लाखों रुपयों की आय तथा करोड़ों की जायदाद को कुएं में फेंक आये (एक म्यान०—नानक०, 3)।

(2) बर्बाद करना। प्र० मैंने तुम्हें तुम्हारा हिस्सा दे दिया है अब चाहे तुम इसे रखो या कुएं में फेंको मुझसे कोई मतलब नहीं।

कुएं में बांस डालना, -पड़ना—बहुत ढूंढ़ना या ढूंढ़ा जाना। प्र० राम प्यारी का पता लगाने के लिए कुएं में बांस तक डाला गया पर सब व्यर्थ।

कुएं में बांस पड़ना—दे० कुएं में बांस डालना।

कुएं में बोलना, -से बोलना—बहुत धीरे बोलना। प्र० अरे क्या कुएं में बोल रहे हो, ठीक से बोलो तो कुछ समझ में भी आये।

कुएं में भांग पड़ना—सबकी बुद्धि खराब होना। प्र० पर यहाँ तो कुएं में भांग पड़ी है। लोक-परलोक की सब सुधि छोड़ बैठे (मिश्र निबंध०)।

कुएं में से बोलना—दे० कुएं में बोलना।

कुएं से प्यासे आना—जहाँ कोई चीज सहज मिलती हो वहाँ से भी खाली हाथ लौटना। प्र० आज तो कुएं से प्यासे आये हैं—जब लालाजी ने ही नहीं दिया तो दूसरों से क्या आशा कर सकता था।

कुकड़ी होना—सूख जाना; भमहर जैसा हो जाना। प्र० क्या बात है, आजकल तो तुम सूखकर कुकड़ी हो रही हो।

कुकुर झौं-झौं करना—कहा-सुनी करना। प्र० रोज तो दोनों मियाँ-बीबी में कुकुर-झौं-झौं होती है।

कुक्कुर-काट—पारस्परिक कलह। प्र० बाप-बेटे में तो कुक्कुर-काट है, एक दूसरे से बात नहीं करते।

कुक्कुर-गति—दुर्दशा। प्र० एक जमाना था जब बेशुमार पैसा था इनके पास, आज यह कुक्कुर-गति हो रही है।

कुचलना—(1) जड़ से नाश कर देना। प्र० ××× सरकार लड़कों की हर चुनौती को स्वीकार करेगी और उनके किसी भी आन्दोलन को कुचलने से न हिचकिचायेगी (अमृत०—नागर, 395)।

(2) दुर्बल कर देना, तेजी या तीखेपन को कम कर देना। प्र० इस बीमारी ने होरी को तो कुचल डाला ही, पर धनिया पर भी विजय पा गयी (गोदान—प्रेमचंद, 117)।

कुचला जाना—दुर्गति होना। प्र० जब बुरे कूंचे तुम्हें रुचते रहे सिर ! तभी तुम बेतरह कूंचे गये (चोखे०—हरिऔध, 72)।

कुचला हुआ साँप, कुचली हुई नागिन—अपमान से क्षुब्ध व्यक्ति की जो बदला लेने की ताक में हो। प्र० वह तो कुचला हुआ साँप था, मौका देखते ही उसने राजा साहब से बदला ले लिया।

कुचली हुई धूल—तुच्छातितुच्छ। प्र० आपके लिए तो पत्नी कुचली हुई धूल है, क्यों ?

कुचली हुई नागिन—दे० कुचला हुआ साँप।

कुछ उठा न रखना, -बाकी न रखना—कोई उद्योग बाकी न छोड़ना। प्र० अपने भरसक उसने कुछ उठा न रखा फिर भी बात बनी नहीं।

कुछ एक—थोड़ा-सा। प्र० अभी उनको गये कुछ एक दिन ही बीते होंगे कि माताजी का देहान्त हो गया।

कुछ ऐसा—विलक्षण; असाधारण। प्र० उसने कुछ ऐसा जादू कर दिखाया कि हम सब देखते ही रह गये।

कुछ ऐसा-वैसा—(1) साधारण। प्र० उन्हें कुछ ऐसी-वैसी चीज तो नहीं दी जा सकती न !

(2) गड़बड़। प्र० वहाँ जाकर कुछ ऐसा-वैसा मत कह बैठना !

(3) असाधारण। प्र० अरे तो आपने कौन-सा कुछ ऐसा-वैसा कर दिया है जिसके लिए आपकी बहुत तारीफ की जाय !

कुछ और गाना—अप्रासंगिक बात करना। प्र० मैंने उनसे पूरी घटना सुनाने को कहा तो वे कुछ और ही गाने लगे।

कुछ और होना—सर्वथा भिन्न होना। प्र० कहाँ की बात, वह चीज ही कुछ और थी।

कुछ कर लेना—कुछ अच्छा काम कर लेना। प्र० चार दिन की जिन्दगी है, कुछ कर लो ताकि दोनों लोक सुधरे।

कुछ-का-कुछ—और-का-और; उलटा। प्र० ठीक से संदेशा सुन लो, कुछ-का-कुछ मत कह आना।

कुछ तुम समझे कुछ हम समझे—किसी ने कुछ नहीं समझा।

कुछ दिनों का मेहमान—(1) अस्थायी। प्र० मुझे भय हो रहा है कि यह आदर, प्यार, आनन्द के दिन कुछ ही दिनों के मेहमान हैं (सु० सु०—सुदर्शन, 260)।

(2) मरणासन्न ।

कुछ न उखाड़ना—हानि न कर सकना ।

कुछ-न-कुछ—थोड़ा बहुत, कम या ज्यादा; कुछ अवश्य । प्र० कुछ-न-कुछ तो लड़की को देंगे ही, ऐसे थोड़े ही व्याह कर देंगे ।

कुछ न लगना—कहने-सुनने का कोई प्रभाव न पड़ना । प्र० हजार कहो पर इसे जैसे कुछ लगता ही नहीं ।

कुछ बाकी न रखना—दे० कुछ उठा न रखना ।

कुछ मूल्य न समझना—तुच्छ समझना । प्र० आप मेरे कहने का कुछ मूल्य ही नहीं समझते ।

कुछ रत्ती, तोला, माशा अक्ल भी है ?—जरा भी अक्ल है ?

कुछ सुनना, -सुनने पर उतारू होना, -सुनने पर लगे होना—भला-बुरा सुनना । प्र० तुम कुछ सुनना ही चाहते हो तो उनके पास जाओ ।

कुछ सुनने पर उतारू होना—दे० कुछ सुनना ।

कुछ सुनने पर लगे होना—दे० कुछ सुनना ।

कुछ-से-कुछ हो जाना—बहुत बड़ा परिवर्तन हो जाना । प्र० वहां तो मामला ही कुछ-से-कुछ हो गया था ।

कुछ हो—चाहे जो हो । प्र० कुछ हो, मैं वहाँ जाने वाला नहीं हूँ ।

कुछ हो जाना—(1) कोई रोग या भूत-प्रेत की बाधा हो जाना । प्र० इस लड़की को कुछ हो गया है, ओझा जी को बुलाओ ।

(2) कुछ अनिष्ट होना । प्र० इसे कुछ हो गया तो मैं मुंह दिखाने लायक न रह जाऊँगा ।

(3) किसी योग्य बनना । प्र० तुम कुछ होने से रहे, ऐसे ही मारे-मारे फिरोगे ।

कुछ हो रहना, -होकर रहना—(1) किसी योग्य हो जाना । प्र० इसी तरह मेहनत करता रहा तो यह कुछ हो रहेगा ।

(2) विशेष घटित होना । प्र० लगता है इस वार कुछ होकर रहेगा ।

कुछ होकर रहना—दे० कुछ हो रहना ।

कुछ होना—कुछ महत्त्वपूर्ण होना । प्र० कोई दिन था कि हम कुछ थे, कुछ नहीं, बहुत कुछ थे (चुभते० (भू०)—हरिऔध, 1) ।

कुछ-कुछ—थोड़ा । प्र० कुछ-कुछ अंदाज़ तो मुझे भी था पर पूरी बात नहीं पता थी ।

कुजगह का फोड़ा—ऐसा फोड़ा जो जोड़ आदि पर होने के कारण बहुत कष्ट दे ।

कुट करना, कुट्टी करना—झगड़ा करना; दोस्ती समाप्त करना । प्र० तुमने अपनी ओर से कुट क्यों की ?

कुटविधा करना—दण्ड देना । प्र० लगता है इसकी कुटविधा करनी पड़ेगी ।

कुटकी देना, -लगाना—प्रतिद्वन्द्वी की पतंग काटना ।

कुटकी लगाना—दे० कुटकी देना ।

कुटुंब जिलाना, -पालना—कुटुंब के भरण-पोषण की व्यवस्था करना । प्र० दुःख सुख करिकै कुटंब जिवाया (कबीर ग्रंथा०—कबीर, 267) ।

कुटुंब डुबाना—कुटुंब का नाश करना । प्र० सदा सदा फिरहिं अभिमानी सकल कुटुंब डुबावहि (कबीर ग्रंथा०—कबीर, 282) ।

कुटुंब पालना—दे० कुटुंब जिलाना ।

कुटौनी-पिसौनी—कूटने-पीसने का काम । प्र० मतारी करे कुटौनी-पिसौनी, बेटवा का नाम दुर्गादास ।

कुट्टी करना—दे० कुट करना ।

कुठला होना—बहुत मोटा होना । प्र० लड़का तो बिलकुल कुठला हो रहा है, इसकी सम्हाल करो ।

कुठांव की चोट—मर्मान्तिक आघात, बड़ी हानि । प्र० कुठांव की चोट मारना भले आदमियों का काम नहीं है ।

कुठांव मारना—(1) बहुत अहित करना । प्र० सिर धुनि लीन्हि उसास असि मारेसि मोहि कुठायं (राम० (अ)—तुलसी, 400) ।

(2) ऐसे स्थान पर मारना जहाँ बहुत कष्ट हो । प्र० लड़कों पर कुठांव मत मारना ।

कुठांव में हाथ पकड़ना—दुर्दिन के समय सहारा देना; ठीक समय पर सही मार्ग दिखलाना । प्र० जौ हरि-व्रत निज उर न धरैगौ । तौ को अस त्राता जु अपुन करि, कर कुठांव पकरैगौ (सू० ना०—सूर, 75) ।

कुठार चलाना—अहित करना । प्र० अपना ही आदमी यदि कुठार चलावे तो क्या किया जाय ?

कुठाराघात करना या होना—(1) व्यंग्य करना; आघात करना या होना । प्र० मेरे तथा जस्सो के प्रेम पर तुम सदैव कुठाराघात करते रहे हो (भिखा०—कौशिक, 207) ।

(2) बड़ा अहित करना या होना । प्र० कम-से-कम तुम तो उस पर कुठाराघात न करो ।

कुठारी—अनिष्ट करनेवाला । प्र० गहि पद विनय कीन्ह बैठारी, जनि दिनकर कुल होसि कुठारी (राम० (अ)—तुलसी, 404) ।

कुठारी (कुठाली) करना—पिघलाना । प्र० क्या इस कड़े को भी कुठाली करना होगा ?

कुड़ककर बोलना—कड़े शब्दों में बोलना । प्र० जरा कुड़ककर बोलने से काम हो जायेगा ।

कुड़कुड़ी उठना, -होना—(1) किसी बात को जानने के लिये आकुलता होना । प्र० आप लोगों को इतनी कुड़कुड़ी क्यों उठ रही है ?

(2) पेट में चूहे कूदना । प्र० जल्दी से खाने को दो, पेट में कुड़कुड़ी हो रही है ।

कुड़कुड़ी होना—दे० कुड़कुड़ी उठना ।

कुढ़कर खाक होना—बहुत कुढ़ना । प्र० तबीयत कुढ़कर खाक हो जाती थी (उखड़े०—यादव, 241) ।

कुढ़-कुढ़कर मरना—ईर्ष्या के मारे जले जाना । प्र० भाभी तो कुढ़-कुढ़कर मरी जा रही हैं ।

कुतका दिखलाना—साफ इन्कार कर देना; अंगूठा दिखला देना । प्र० और उन्होंने कुतका दिखला दिया तो ?

कुतार होना—दे० तार कुतार होना ।

कुत्ता—(1) तुच्छ।
(2) वफादार।
कुत्ता उठना—अचानक किसी चीज के लिए आतुर हो जाना। प्र० बैठे-बैठे हठात् तुम्हें यह कुत्ता क्यों उठ गया?
कुत्ता काटना—बुद्धि भ्रष्ट होना। प्र० मैंने तो समझा था, सहज में पाँच रुपये मिल जायेंगे; नहीं तो क्या कुत्ते ने काटा था कि उससे भिड़ने जाता (रंग०–प्रेमचन्द, 115)।
कुत्ता घसीटना—नीच और तुच्छ काम करना। प्र० वह यह कुत्ता घसीटने को क्यों राजी होगा?
कुत्ता रोना—भावी अनिष्ट का पूर्वाभ्यास होना; कुत्ते का रोना जो अपशकुन माना जाता है।
कुत्ते का कफन—बहुत रद्दी सस्ता कपड़ा। प्र० तुम्हें यह कुत्ते का कफन ही जुड़ा था?
कुत्ते का कौर—तुच्छ भोजन।
कुत्ते का गंगा नहाना—किसी दुष्ट और पापी का भला बनने का ढोंग करना।
कुत्ते का दिमाग होना, -भेजा खाना, -भेजा होना, -मगज खाना—बहुत अधिक बकवास करने की शक्ति होना। प्र० इस लड़के में तो कुत्ते का दिमाग है, जो घबड़ा जाता है।
कुत्ते का भी मुंह चाटना—(1) बहुत तुच्छ व्यक्ति का भी अपमान कर जाना। प्र० आदमी का बहुत सीधा होना भी बुरा है। उसके सीधेपन का फल यही होता है कि कुत्ते भी मुँह चाटने लगते हैं (गोदान–प्रेमचंद, 130)।
(2) बहुत आलसी होना।
कुत्ते का भी अपना पेट पाल लेना—तुच्छ-से-तुच्छ व्यक्ति का भी अपने खाने भर को जुटा लेना।
कुत्ते का भेजा खाना—दे० कुत्ते का दिमाग होना।
कुत्ते का भेजा होना—दे० कुत्ते का दिमाग होना।
कुत्ते का मगज खाना—दे० कुत्ते का दिमाग होना।
कुत्ते की चाल जाना, -के पाँव जाना—बहुत तेजी से जाना। प्र० मैं कुत्ते की चाल जाऊँगा, आप बेफिक्र रहें।
कुत्ते की चाल जाना, बिल्ली की चाल आना—बहुत तेजी से जाना और आना; ऐसा पलक मारते जाना-आना कि पता भी न चले। प्र० हाँ, हाँ भेज दीजिए; कहिए, कुत्ते की चाल जायें और बिल्ली की चाल आयें (आज़ाद०–प्रेमचंद, 14)।
कुत्ते की जात पहचानना—किसी व्यक्ति के वंश, स्वभाव, प्रकृति आदि की जानकारी करना। प्र० धक्के तो चपरासियों के खाते हैं, इसकी क्या चिन्ता। कुत्ते की जात पहचानी जायेगी (प्रेमा०–प्रेमचंद, 61)।
कुत्ते की तरह चढ़ बैठना—नाराज होकर गुर्रा कर टूट पड़ना। प्र० बात-बात में तुम कुत्ते की तरह चढ़ क्यों बैठते हो?
कुत्ते की तरह दुम हिलाना, -पूंछ हिलाना—हर समय खुशामद करना; किसी के पीछे-पीछे घूमना। प्र० मैंने सब देखा है! उनके सामने कैसा तुम कुत्ते की तरह दुम हिलाते हो।
कुत्ते की तरह पूंछ हिलाना—दे० कुत्ते की तरह दुम हिलाना।
कुत्ते की दुम—कभी न बदलने वाली वस्तु या व्यक्ति। प्र० तुम्हारा हठ तो कुत्ते की दुम है, वह बदल कैसे सकता है।
कुत्ते की दुम टेढ़ी की टेढ़ी रहना, -पूंछ टेढ़ी की टेढ़ी रहना, -पूंछ सीधी न होना—स्वभाव में परिवर्तन न आना। प्र० स्वान पूंछ कोटिक जो लागैं सूधि न काहू करी (सूर); कुत्ते की दुम को सौ वर्षों तक गाड़ रखो, तो भी टेढ़ी की टेढ़ी (रंग०–प्रेमचंद, 170)।
कुत्ते की नींद सोना—जरा-सा खटके से खुल जाने वाली नींद। प्र० क्या कुत्ते की नींद सोते हो? आराम से निश्चिन्त होकर सोओ।
कुत्ते की पूंछ टेढ़ी की टेढ़ी रहना—दे० कुत्ते की दुम टेढ़ी की टेढ़ी रहना।
कुत्ते की पूंछ सीधी न होना—दे० कुत्ते की दुम टेढ़ी की टेढ़ी रहना।
कुत्ते की मौत मरना या मारना—बहुत बुरी तरह मरना या मारना। प्र० है अगर जीना जियें जीवट दिखा या कि अब हम मौत कुत्ते की मरें (चुभते०–हरिऔध, 25)।
कुत्ते की हुड़ुक उठना—(1) पागल कुत्ते के काटने की लहर उठना। प्र० रह-रहकर कुत्ते की हुड़ुक उठ रही है।
(2) अचानक या कुसमय में किसी चीज के लिए आतुर होना। प्र० बैठे-बैठे कैमरे के लिए कुत्ते की हुड़ुक क्यों?
कुत्ते के पाँव जाना—दे० कुत्ते की चाल जाना।
कुत्ते के भूंकने से हाथी का न डरना—शक्तिशाली व्यक्ति किसी की धमकी से नहीं डरता।
कुत्ते को घी न पचना, -हजम होना—जिसे कभी कोई अच्छी चीज न मिली हो, उसका उस चीज का ढंग से उपभोग न कर पाना; ओछे व्यक्ति का धन न पचा पाना। प्र० क्या कहते हैं, कुर्सी पर बैठते ही दिमाग बिगड़ गये। कुत्ते को घी थोड़े ही पचता है (झूठा० (2)–यशपाल, 282)।
कुत्ते को घी न हजम होना—दे० कुत्ते को घी न पचना।
कुत्ते लोटना—सुनसान, वीरान होना। प्र० परियों के झुंड, हसीनों के जमघट, रात को दिन का समां रहता था। अब यहाँ क्या रह गया! गली कूचों में कुत्ते लोटते हैं (आज़ाद०–प्रेमचंद, 30)।
कुत्ते-खसी में आ फंसना—झंझट, मुसीबत में फंसना। प्र० मज़े से जिन्दगी गुजरती थी, यहाँ कुत्ते-खसी में आ फंसा (कर्म०–प्रेमचंद, 310)।
कुत्ते बिल्ली भी नहीं पूछते—बिलकुल बेकार होना; अत्यन्त निकृष्ट समझा जाना। प्र० ऐसी मिठाई को मेरे यहाँ कुत्ते-बिल्ली भी नहीं पूछते।
कुदक्का मारना—लम्बी छलांग मारना; कूदना; खेल-कूद में रहना। प्र० इस लड़की को दिन भर कुदक्का मारने के सिवा और कोई काम नहीं है?
कुदाल बजना—कुदाल की चोट खाना; मकान गिराया जाना। प्र० पिछली सप्तमी से बड़ी कोठी में कुदाल बज रही है।
कुनबा जोड़ना—(1) सम्बन्ध स्थापित करना। प्र० वे आजकल मुख्य मंत्री से कुनबा जोड़ने की चिन्ता में लगे हैं।

(2) सम्बन्धियों को एकत्र करना । प्र० इस अवसर पर सारे कुनबे को जोड़ना पड़ेगा ।

कुपथ पर पैर रखना—बुरा कार्य करने की ओर प्रवृत्त होना । प्र० रघुबंसिन्ह कर सहज सुभाऊ । मनु कुपंथ पगु धरइ न काऊ (राम० (बाल)–तुलसी, 239) ।

कुप्पा लुढ़कना, -लुढ़ना—(1) किसी बड़े आदमी का मरना । प्र० वह कुप्पा लुढ़का तो लुढ़का, उसके नाम को कौन रोते बैठेगा !

(2) अधिक खर्च होना । प्र० भैया, कुप्पा लुढ़काने की सामर्थ्य तो मुझमें नहीं है ।

कुप्पा लुढ़ना—दे० कुप्पा लुढ़कना ।

कुप्पा होना—(1) सूजना; मोटा होना । प्र० अरे, यह तो एकदम कुप्पा हो रहा है !

(2) रूठना; मुंह फुलाना । प्र० कल से ही माँ कुप्पा हुई बैठी हैं ।

(3) खूब खुश होना । प्र० आज बाबूजी तो कुप्पा हो रहे हैं; उनके लाड़ले उमेश बाबू प्रथम श्रेणी में पास हुए हैं न, इसीलिए ।

कुप्पा-सा मुंह करना, फुलाना या फूलना, कुप्पे की तरह मुंह करना—नाराज होना; रूठना । प्र० दूसरों के साथ वह हंस रही थी और मुझे देखा तो कुप्पे-सा मुंह फुला लिया ।

कुप्पा-सा मुंह फुलाना या फूलना—दे० कुप्पा-सा मुंह करना ।

कुप्पे की तरह मुंह करना—दे० कुप्पा-सा मुंह करना ।

कुफेर—बुरे दिन; बुरी दशा । प्र० मैं कुफेर में पड़ा हूं, किसी के ऊपर भरोसा नहीं कर पा रहा हूँ ।

कुफ्र का फतवा देना—विधर्मी बतलाना । प्र० उसे कुफ्र का फतवा क्यों दे रहे हैं ? उसने क्या गुनाह किया है ?

कुफ्र टूटना—हठ छूटना । प्र० चलो, किसी तरह उनका कुफ्र तो टूटा ।

कुफ्र बकना—बेहूदा बातें करना । प्र० खबरदार जो मेरे सामने यह सब कुफ्र बका ।

कुबेर का खजाना—बहुत अधिक धन । उनके पास क्या कुबेर का खजाना रखा है जो तुम्हें हर बार दिये चले जायेंगे ?

कुमक पर होना—पक्ष लेना; मददगार होना । प्र० मैं किसी की कुमक पर नहीं रहता, समझे ?

कुम्हलाना—उदास या दुःखी होना; मुरझाना । प्र० आजु राधिका मान कर्‌यौ है, स्याम गए कुम्हलाइ (सू० सा०–सूर, 3043); हैं कहाँ वे आप कुम्हला जायें जो जाति का मुंह देख कुम्हलाया हुआ (चुभते० हरिऔध, 6०) ।

कुम्हड़े की बतिया होना—सुकुमार होना; अशक्त होना । प्र० इहाँ कुम्हड़-बतिया कोउ नाहीं । जे तरजनी देखि मरि जाहीं (राम० (बाल)–तुलसी, 279) ।

कुम्हार का गदहा—दूसरों के लिये परिश्रम करनेवाला । प्र० वह ठहरा कुम्हार का गदहा, तुम लोग जैसे चाहो इसे लादो ।

कु-रस्ते डालना—बुरे काम के लिए प्रेरित करना । प्र० ·········आदमी में वैसे भी खोट नहीं होती, उसे कु-रस्ता तो औरत ही डालती है (कम०–कम०, 102) ।

कुराड़ा पिटना या पीटना—बहुत बड़ी हानि पहुँचना या पहुँचाना । प्र० इस बार तुम लोगों ने मेरा कुराड़ा पीट दिया ।

कुरान उठाना, -पर हाथ रखना, -सिर पर रखना—हाथ में कुरान लेकर कसम खाना । प्र० तुम कुरान उठाकर कहो तो भी मैं तुम्हारी बात पर विश्वास न करूँ ।

कुरान का जामा पहनना—बहुत धर्मनिष्ठ होना । प्र० आपने यह कुरान का जामा कबसे पहन लिया है ?

कुरान का दौरा करना—कुरान का पाठ करना ।

कुरान ठंडी करना—कुरान जमीन पर गिर जाने पर उसकी तौल भर अन्न दान देना ।

कुरान पर हाथ रखना—दे० कुरान उठाना ।

कुरान सिर पर रखना—दे० कुरान उठाना ।

कुराह चलना—अनुचित कार्य करना । प्र० तुम कुराह चलते ही क्यों हो ?

कुरियाल में आना—चिड़ियों का आनन्द में होना; मौज में आना । प्र० देखो, चिड़िया कैसा कुरियाल में आ गयी है ।

कुरियाल में गुल्ला लगना—रंग में भंग होना । प्र० धत्तेरे की, यह कुरियाल में गुल्ला कहाँ से लग गया ?

कुरी-कुरी होना—टुकड़े-टुकड़े होना । प्र० शीशा कुरी-कुरी कैसे हो गया ?

कुरुक्षेत्र बन जाना—झगड़ा होना । प्र० पहुँचने पर पता चला कि वहाँ तो कुरुक्षेत्र बना हुआ है (दे० दु०–शिव०) ।

कुरेदना—तंग करना । प्र० बीच-बीच में खामोश हो जाते थे, लगता था कि अपने किए पर उन्हें दुःख हो रहा है, ऐसे में क्या कुरेदती ? (कम०–कम०, 101) ।

कुर्की उठना या उठाना—जब्त किया माल छोड़ दिया जाना । प्र० कोशिश में हूँ कि किसी तरह कुर्की उठा ली जाये ।

कुर्की बैठाना—कुर्क कराना । प्र० तो क्या उनके यहाँ कुर्की बैठाओगे ?

कुर्सी का मोह—पद का मोह । प्र० कुर्सी का मोह किसे नहीं होता ? तुम्हें नहीं है ?

कुर्सी खाली करना—जिस पद पर हों, उसे छोड़ना । प्र० जो कुर्सी पर एक बार बैठ जाता है वह उसे किसी तरह खाली ही नहीं करना चाहता ।

कुर्सी तोड़ना—व्यर्थ बैठे रहना । प्र० गया तो था । दिन-भर खाली बैठा कुरसी तोड़ता रहा (चित्र०–कौशिक, 120) ।

कुर्सी देना—(1) आदर करना, बैठने को आसन देना । प्र० ओंकारनाथ ने न उनका स्वागत किया, न कुशल-क्षेम पूछा, न कुरसी दी (गोदान –प्रेमचन्द, 170) ।

(2) मकान को जमीन से ऊँचा करके बनाना । प्र० मकान में कम-से-कम तीन फीट की कुर्सी जरूर देना ।

कुर्सी पर बैठना, -मिलना—(1) अधिकार मिलना । प्र० क्या कहते हैं, कुर्सी पर बैठते ही दिमाग बिगड़ गये (झूठा० (2)–यशपाल, 282) ।

(2) सम्मान होना, स्थान होना । प्र० बड़े-बड़े अंगरेज हाकिम उनसे

यहाँ आते थे, लाट साहेब के यहाँ उन्हें कुरसी मिलती थी (बूंद०—नागर, 44)।

(3) पद मिलना। प्र० एक दिन तुम मुझे प्रोड्यूसर की कुर्सी पर बैठे देखोगी (पैंतरे—अश्क, 55)।

कुर्सी मिलना—दे० कुरसी पर बैठना।

कुर्सी से उछल पड़ना—बहुत आनन्द और प्रशंसा व्यक्त करना। प्र० उसने वह शेर पढ़ा तो लोग कुर्सियों से उछल पड़े (चेतन—अश्क, 41)।

कुल उछालना—वंश को बदनाम करना। प्र० सब ठीक है, पर तुझे कुल को उछालने को किसने कहा था?

कुल का दीपक—वंश का व्यक्ति। प्र० दाह के लिए कुल्ली-वंश के कोई दीपक बुलाए गए हैं (कुल्ली०—निराला, 137)।

कुल का दीपक बुझना या बुझाना—निर्वंश करना या होना। प्र० हाय न-जाने किस बड़े कुल का दीपक आज इसने बुझाया है (भा० ग्रं० (1)—भारतेन्दु, 311)।

कुल का नाम उज्ज्वल करना, -रोशन करना—कुल की ख्याति बढ़ाना। प्र० × × फूले न समाते थे कि लड़की ने कुल का नाम उज्ज्वल कर दिया (मान० (3)—प्रेमचन्द, 60)।

कुल का नाम रोशन करना—दे० कुल का नाम उज्ज्वल करना।

कुल का नाम हंसाना, -बोरना—कुल की मर्यादा नष्ट करना। प्र० तासु दूत होइ हम कुल बोरा (राम० (लं)—तुलसी, 883); या तुच्छ जगत सुख कारनै जिनि कुल नाम हँसाइयो (राधा०ग्रंथा०—राधा० दास, 784)।

कुल का लाल—सुसंतान, वंश की प्रतिष्ठा बढ़ानेवाला। प्र० जो न मुख में लगायेंगे कालिख, लाल कुल के कहायेंगे कैसे? (व्यंग्यात्मक प्रयोग) (मर्म०—हरिऔध, 81)।

कुल की कानि तोड़ना—कुल परम्परा का उल्लंघन करना। प्र० कोई एक जन ऊबरै, जिन तोड़ी कुल की कांणि (कबीर)।

कुल की नाक—कुल की मान-प्रतिष्ठा बनाये रखनेवाला व्यक्ति। प्र० वे सुनें जो कि नाक कुल की हैं रह सकी नाक नाक रखने से (बोल०—हरिऔध, 73)।

कुल को गाली आना—कुल की बदनामी होना। प्र० जातैं निन्दा होइ आपनी, जातैं कुल कौं गारी आवति (सू० सा०—सूर, 2329)।

कुल को बट्टा लगाना—वंश को कलंकित करना। प्र० यह लड़का कुल को बट्टा लगायेगा ही।

कुल को रखना—कुल की मान-मर्यादा बनाए रखना। प्र० जोवन चंचल ढीठ है करै निकाजहि काज। धनि कुलवंति जो कुल धरै करि जोवन महं लाज (पद०—जायसी, 18/7)।

कुल गुड़ गोबर करना या होना, -माटी करना या होना—सब काम चौपट करना या होना। प्र० चलो तुमने कुल गुड़ गोबर करके चैन लिया न!

कुल गुड़ माटी करना या होना—दे० कुल गुड़ गोबर करना या होना।

कुल जमा—बिलकुल; सब मिलाकर। प्र० अब कुल जमा एक कमीज बची है, धोबी कब आयेगा।

कुल डुबाना या डूबना—कुल कलंकित करना या होना। × × गजाधर तुमने मेरे कुल को डुबो दिया (सेवा०—प्रेमचंद, 157)।

कुल बखानना—(1) वंश के पूर्वजों को नाम ले-लेकर गाली देना। प्र० बात-बात में ये देवी जी मेरा कुल बखानने लगती हैं।

(2) कुल के यश का वर्णन करना। प्र० चारण और भाट राजाओं का कुल बखान रहे थे।

कुल बोरना—दे० कुल का नाम हँसाना।

कुल में कलंक लगाना, -कालिख लगाना, -दाग लगाना—कोई ऐसा काम करना जिससे कुल की बदनामी हो। प्र० छत्रिय तनु धरि समर सकाना कुल कलंकु तेहिं पांवर आना (राम० (बाल)—तुलसी, 289); ब्राह्मन होकर कुल में कालिख लगा दी (गोनं०—रां० रा०, 27)।

कुल में कालिख लगाना—दे० कुल में कलंक लगाना।

कुल में चली आना— वंश में परम्परा होना। प्र० जाकै कुल जैसी चलि आई, तैसी रीति चलावै (सू० सा०—सूर, 4459)।

कुल में दाग लगाना—दे० कुल में कलंक लगाना।

कुल में रोनेवाला होना—वंशज होना। प्र० राम विमुख अस हाल तुम्हारा, रहा न कुल कोउ रोवनहारा (राम० (ल)—तुलसी, 88)।

कुल रखना—कुल के सम्मान की रक्षा करना। प्र० धनि कुलवति जो कुल धरै करि जोबन महं लाज (पद०—जायसी, 18/7)।

कुल-कलंक, कुल-खोवन, -घाती, -घालक, -नासी, -बोरन—कुल की मर्यादा को नष्ट करनेवाला। प्र० कौसिक सुनहु मन्द यह बालक। कुटिल काल बस निज कुल घालक (राम० (बाल)—तुलसी, 279); सुता बड़े वृषभानु को, कुल खोवनहारी (सू० सा०—सूर, 2324); कुल बोरिन सब कहत गांव में और नाम का धरिहै? (राधा० ग्रंथा०—राधा० दास, 64)।

कुल-खोवन—दे० कुल-कलंक।

कुल-घाती—दे० कुल-कलंक।

कुल-घालक—दे० कुल-कलंक।

कुल-टीका, -तिलक, -दीपक—वंश की प्रतिष्ठा बढ़ानेवाला। प्र० समाधानु करि सो सबही का गयउ जहाँ दिनकर कुल टीका (राम० (अ)—तुलसी 408); साहस अपार हिन्दुआन कौ अधार धीर, सकल सिसोदिया सपूत कुल कौ दिया (भूषण ग्रंथा०—भूषण, 130); जो कुल दीपक बनना है तो, बान भली बातों की डालो (मर्म०—हरिऔध, 106); वह तो तभी घर जायगा जब × × दादा और अम्मा उसे कुल का कलंक न समझकर कुल का तिलक समझें (गोदान—प्रेमचन्द, 137)।

कुल-तिलक—दे० कुल-टीका।

कुल-दीपक—दे० कुल-टीका।

कुल-नासी—दे० कुल-कलंक।

कुलबुला उठना—घबरा जाना; अस्थिर हो उठना। प्र० बहुत धीरज रखने के बावजूद वह रह-रहकर कुलबुला उठती थी।

कुल-बोरन—दे० कुल-कलंक ।

कुलांगार—वंश को विध्वंस करनेवाला । प्र० इस कुलांगार को फौरन मेरी आँखों से दूर करो ।

कुलांच भरना, -मारना, -लेना—(1) चौकड़ी भरना । प्र० हिरन कुलाँचे भरता हुआ निकल गया ।
(2) बड़ी पहुँच होना । प्र० राव साहब बहुत कुलाँचे लेते हैं, उनकी न पूछो ।

कुलांच मारना—दे० कुलाँच भरना ।

कुलांच लेना—दे० कुलाँच भरना ।

कुलाबा भिड़ाना, -मारना, -मिलाना—कल्पना करना । प्र० और 'स्वर्ग की देवी' का मन उस समय नये-नये कुलाबे भिड़ा रहा था (सात०—नागर, 79) ।

कुलाबा मारना—दे० कुलाबा भिड़ाना ।

कुलाबा मिलाना—दे० कुलाबा भिड़ाना ।

कुली-कबाड़ी—तुच्छ आदमी । प्र० किन-किन कुली-कबाड़ियों को तुमने जुटा रखा है ?

कुल्हड़ में गुड़ पकना या पकाना, -फोड़ना,-कुल्हिया में गुड़ पकना या पकाना, -फूटना या फोड़ना—गुप-चुप काम होना या करना । प्र० उनके यहाँ तो हर मौके पर कुल्हड़ में गुड़ पकता है किसी को कानों-कान खबर ही नहीं होती ।

कुल्हड़ में गुड़ फोड़ना—दे० कुल्हड़ में गुड़ पकना या पकाना ।

कुल्हिया भरना—देवता को शर्बत चढ़ाना ।

कुल्हिया में गुड़ पकना या पकाना—दे० कुल्हड़ में गुड़ पकना या पकाना ।

कुल्हिया में गुड़ फूटना या फोड़ना—दे० कुल्हड़ में गुड़ पकना या पकाना ।

कुल्हिया-सा—छोटा-सा । प्र० कैसा कुल्हिया-सा मुँह है, देखो तो ।

कुश्तम-कुश्ता—लड़ाई-झगड़ा, मार-पीट । प्र० आज कई दिनों से वहाँ कुश्तम-कुश्ता चल रही है ।

कुश्ती का जोड़—वे दो व्यक्ति जिनके बीच कुश्ती होनेवाली हो । प्र० कुश्ती का जोड़ बदल गया । राय साहब किनारे खड़े हो गये । सम्पादक जी मैदान में उतरे (गोदान—प्रेमचंद, 55) ।

कुश्ती खाना—कुश्ती में हार जाना । प्र० दामू साव के साथ मत लड़ना, कुश्ती खा जाओगे ।

कुश्ती बदना, -मांगना—कुश्ती लड़ने का निश्चय करना या ललकारना ।

कुश्ती बराबर छूटना, -पर रहना, -रहना—कुश्ती में किसी की हार न होना ।

कुश्ती बराबर पर रहना—दे० कुश्ती बराबर छूटना ।

कुश्ती बराबर रहना—दे० कुश्ती बराबर छूटना ।

कुश्ती मांगना—दे० कुश्ती बदना ।

कुश्ती मारना, -में बढ़ा रहना—कुश्ती में दूसरे को पछाड़ना । प्र० आज के दंगल में किंग कांग कुश्ती मार ले गया ।

कुश्ती में बढ़ा रहना—दे० कुश्ती मारना ।

कुश्ती लड़ाने के लिए—कुश्ती लड़ना सिखाने के लिए । प्र० इन दोनों को कुश्ती लड़ाने के लिए तैयार कर रहा हूँ ।

कुसुम का रोग—रजस्राव का रोग ।

कुहनी उड़ान की टांग—कुश्ती का पेंच ।

कुहराम डालना, -पड़ना, -मचना या मचाना, -होना—रोना-पीटना करना या होना; बहुत शोर-गुल करना या होना । प्र० घर में तभी से कुहराम पड़ा हुआ है ।

कुहराम पड़ना—दे० कुहराम डालना ।

कुहराम मचना या मचाना—दे० कुहराम डालना ।

कुहराम होना—दे० कुहराम डालना ।

कूंची देना—(1) कूँची से रंग चढ़ाना या साफ करना । प्र० एक कूँची और दिलवाओ, अभी सफेदी नहीं आई है; कितने दिनों से कमरे में कूँची नहीं दी गयी है ? कैसी धूल जमी है ?
(2) खेत को एक कोने से दूसरे कोने तक जोतना । प्र० आज तो सभी खेतों में कूँची देनी होगी ।

कूंची फेरना—(1) सफेदी करना । प्र० इस कोठरी में भी कूंची फेर देना ।
(2) खराब कर देना; नष्ट कर देना । प्र० बाप की गाढ़ी कमाई पर तुम कूंची फेरकर ही चैन लोगे ।

कूंचे काटना—घोड़े की नसें काटकर उसे बेकाम कर देना ।

कूक करना, -मारना—चीखना-चिल्लाना; बोलना । प्र० देखो जरा, बड़े-छोटे सभी कूक कर रहे हैं ।

कूक मारना—दे० कूक करना ।

कूच करना या होना—(1) मर जाना; मरने की-सी स्थिति का हो जाना । प्र० बाबा तो अब तक जाने कब का कूच कर गये होते ।
(2) रवाना होना । प्र० दीया बलते ही हम लोगों ने कूच कर दिया ।

कूच का डंका बजना या बजाना, -नक्कारा बजना या बजाना—(1) मरणासन्न होना । प्र० अब क्या, कूच का नगारा बजना ही चाहता है × × (दे० दु०—शिव०, 62) ।
(2) प्रस्थान की सूचना मिल जाना या देना । प्र० कूच का डंका बजा, काफिला मुस्तैदी से आगे बढ़ा ।

कूच का नक्कारा बजना या बजाना—दे० कूच का डंका बजना या बजाना ।

कूच बोलना—प्रस्थान करना । प्र० मैं तो आज रात ही चढ़ाई के लिये कूच बोल देता, लेकिन रास्ते में बेहिसाब कीचड़ × × × जान खा जायेंगे (मृग०—वृं० वर्मा, 69) ।

कूचा झांकना—इधर-उधर मारा-मारा फिरना । प्र० आप क्या चाहती हैं कि मैं इसी तरह कूचा झांकता फिरूँ ?

कूजे में दरिया भरना—थोड़े में बहुत कहना । प्र० हुजूर की क्या बात है, कूजे में दरिया भर देते हैं ।

कूट-कूट कर भरना—कसकर दबाकर भरना । प्र० क्या कूट-कूटकर बक्स भरा गया है कि वाह !

कूट-कूटकर भरा रहना—अधिक मात्रा में होना । प्र० इस दुष्ट में तो हंसोड़पन कूट-कूटकर भरा है (भा० ग्रं० (1)—भारतेन्दु, 622); वह जानते थे कि इसमें आत्मसम्मान कूट-कूटकर भरा हुआ है (रंग०

(1)–प्रेमचंद, 223)।

कूट-जाल में फंसना—किसी के छल-कपट में फंस जाना। प्र० खूब सावधान रहना, उस कुटनी के कूट-जाल में मत फंस जाना।

कूट-पीसकर—मेहनत-मजदूरी करके। प्र० किस-किस मुसीबत से कूट-पीसकर मैंने इस लड़के को पाला है, इसे मैं ही जानती हूँ।

कूट-पीसकर पेट चलाना, -पालना, पोसना—बहुत मेहनत करके किसी प्रकार जीवन निर्वाह करना। प्र० बेचारी किसी तरह कूट-पीसकर अपना और लड़की का पेट चला रही है।

कूट-पीसकर पेट पालना—दे० कूट-पीसकर पेट चलाना।

कूट-पीसकर पेट पोसना—दे० कूट-पीसकर पेट चलाना।

कूड़ा कर देना—नष्ट या बर्बाद कर देना। प्र० अब वह दरिद्र है, उसकी सारी जायदाद को इन्हीं लोगों ने कूड़ा कर दिया (मान० (1)–प्रेमचंद, 135)।

कूड़ा-करकट समझना—बेकार समझना; तुच्छ समझना। प्र० आप तो मेरी हर चीज को कूड़ा-करकट समझते हैं।

कूड़ी कर देना—हिस्सा कर देना। प्र० सबकी कूड़ी कर दो नहीं तो झगड़ा होगा।

कूड़े पर गुलाल डालना, -फुलेल डालना—कृतघ्न के साथ नेकी करना; किसी ऐसे को कुछ देना जो व्यर्थ जाय। प्र० ठीक कह रहे हैं भाई साहब, कूड़े पर गुलाल डालने की भूल मैंने ही की थी।

कूड़े पर फुलेल डालना—दे० कूड़े पर गुलाल डालना।

कूड़े में रत्न खोजना—असार वस्तुओं या व्यक्तियों में से किसी योग्य को खोज निकालना। प्र० पं० महावीर प्रसाद जी द्विवेदी कूड़े में रत्न खोजा करते थे।

कूढ़मग्ज़—महामूर्ख। प्र० क्या करेंगे तीर पत्थर पर चला कूढ़ से सिर मारते कब तक रहें (बोल०–हरिऔध, 16)।

कूनकात सौदा करना—जो कुछ बचा हो सबका एक साथ सौदा करना। प्र० कूतकात सौदा करो तो मैं राज़ी हूँ।

कूद कूदना—(व्यंग्य में) बड़ा भारी काम करना। प्र० जी हाँ, आप कूद कूदने में व्यस्त हैं, आपसे बातें न की जाय, यही तो?

कूद पड़ना—एकाएक आ जाना। प्र० आप कहाँ से कूद पड़े, एं?

कूद कर बीच में आना—दूसरों की बात या काम में जबरदस्ती आ टपकना। प्र० तुमको कूदकर बीच में आने को किसने कहा था?

कूदते फिरना—बेकाम घूमना। प्र० न कोई काम न धंधा, सारे दिन कूदता फिरता है।

कूदना—(1) बढ़-चढ़कर बातें और काम करना। प्र० वह तो हम लोगों के बल पर ही कूदते थे (मैला०–रेणु, 208); मेम साहब के भरोसे कूद रहे हो न! (तितली–प्रसाद, 49)।

(2) प्रसन्न होना। प्र० खिलौने देखते ही वह कूदने लगा।

कूप मंडूक—दे० कुएं का बेंग।

कूमल देना—सेंद लगाना।

कूल्हा मटकाना—नाज़-नखरा करना। प्र० अरी गुइयाँ, खाली कूल्हे मटकाकर साजन को बस में नहीं किया जा सकता।

कृत-कृत्य होना—धन्य होना। प्र० अब कृत-कृत्य भयेउं मैं ताता (राम० (सुं)–तुलसी, 812)।

कृपण का धन—बहुत सहेजकर यत्नपूर्वक रखी वस्तु। प्र० क्रिपन को धन कौनें काजा (कबीर); कृपन को गथ भयौ तुमकौं, सरस अमृत बैन (सू० सा०–सूर, 1648)।

कृपा के किवाड़ खुलना—कृपा प्राप्त होने का उपक्रम होना। प्र० बाबाजी को अफसरों ने आश्वासन दे रखा था कि भर्ती और चन्दे के काम में यदि वे बाजी मार ले जाएंगे तो अवश्य ही अंग्रेजी सरकार के कृपा के किवाड़ उनके लिए खुल जाएंगे (एक म्यान०–नानक०, 32)।

कृपा-कटाक्ष—कृपापूर्ण रुख। प्र० जासु कृपा कटाच्छु सुर चाहत चितव न सोइ राम पदारबिन्द रति करति सुभावहिं खोइ (राम०(3) तुलसी, 1049); रानियों से लेकर अदना बाँदी तक उसके कृपा-कटाक्ष की मुहताज रहती थी (गोली–चतुर०, 136)।

कृपा-दृष्टि बरसना, -होना—अनुकूलता होना। प्र० कब सुदिस्टि कै बरिसै तन तरिवर होइ जाय (पद०–जायसी, 46/10); उनकी आप पर कृपा-दृष्टि हो जाय तो कल ही रुपए का ढेर लग जाय (प्रेमा०–प्रेमचन्द, 131)।

कृपा-दृष्टि होना—दे० कृपा-दृष्टि बरसना।

कृपा-पात्र, -भाजन—किसी का अनुग्रह प्राप्त करनेवाला। प्र० मैं उनका कृपा-भाजन था ×× (रंग०–प्रेमचंद, 66)।

कृपा-भाजन—दे० कृपा-पात्र।

कृष्णमुख करना या होना—कलंकित करना या होना। प्र० तुम कृष्णमुख हो गये न, अब ठीक हुआ।

कृष्णार्पण करना—धर्मादय दान कर देना। प्र० तुम्हारी इन बातों से ऐसा जी जलता है, कि सारी जायदाद कृष्णार्पण कर दूं (कर्म०–प्रेमचंद, 43)।

केंचुल छोड़ना, -झाड़ना—बाह्य आवरण को त्यागना। प्र० आप लोग अपनी-अपनी केंचुल छोड़कर वास्तविकता पर उतर आये न?

केंचुल झाड़ना—दे० केंचुल छोड़ना।

केंचुल (कंचुली) बदलना—स्थिति में पूर्ण परिवर्तन होना। प्र० अजी साहब, आपने तो बिलकुल केंचुल ही बदल डाला।

केंचुल भरना, -केंचुल में आना—केंचुल छोड़ने पर होना। प्र० साँप केंचुल भर रहा है।

केंचुल में आना—दे० केंचुल भरना।

केकड़े की चाल चलना—टेढ़ी-तिरछी चाल चलना; सही रास्ते काम न करना। प्र० तुम फिर वही केकड़े की चाल चलने लगे?

केन्द्र-बिन्दु—वह व्यक्ति या वस्तु जिसे केन्द्र मानकर काम हो रहा हो। प्र० आम जनता की उन्नति ही हमारे आदर्श का केन्द्र-बिन्दु है।

केन्द्रित करना या होना—किसी व्यक्ति या विचार पर मन एकाग्र करना। प्र० तुम अपने मन को भगवान में केन्द्रित करो, तुम्हें शांति मिलेगी।

केले का तना बनाना—ऐसी स्थिति होना जिसमें एक के भीतर से एक

विचार उठते चलें। प्र० दिन की चन्द घड़ियाँ केले का तना बन गई (वीने०–रां० रा०, 84)।

केले के बगल में बेर—अच्छे के पास में बुरा। प्र० कहियो जाय सूर के प्रभु सों केरा पास ज्यों बेरि (सू० सा०–सूर, 148)।

केले के लिए ठीकरा तेज़ होना—नरम या निर्बल पर सब का अन्याय करना। प्र० अच्छा! दादा भी बिगड़ रहे हैं। केले के लिए आज ठीकरा भी तेज़ हो गया (गोदान–प्रेमचंद, 136)।

केश न टाल सकना—कुछ भी क्षति न पहुँचा सकना। प्र० कोई मेरे बच्चे का केश भी नहीं टाल सकेगा, कहे देती हूँ।

केश पकड़कर पछाड़ना—पूरी तरह परास्त करना। प्र० मथुरापतिहिं सुनौगी तुमहीं, जब धरि केश पछारौं (सू० सा०–सूर, 2131)।

केसर की क्यारी—दूसरों को सुख पहुँचानेवाली श्रेष्ठ और सुन्दर वस्तु। प्र० जो न केसर की कियारी जी बना तो न केसर के तिलक कुछ कर सके (चुभते०–हरिऔध, 119)।

केसरिया बाना पहनना—युद्ध के लिए प्रस्तुत होना। प्र० जिनको अपने प्राण प्यारे हों जा सोवें, जिनको तोमर, भदोरिया और गूजर नाम प्यारा हो केसरिया बाने पहिन लें (मृग०–वृं० वर्मा, 467)।

कैंची करना—(1) बाल काटना। प्र० नाई को बुला लो, जरा कैंची कर देगा।

(2) काटना। प्र० माली ने बाड़ कैंची नहीं की?

कैंची कसना—(1) किसी को बेकाबू कर देना। प्र० इस वक्त तो बाबू-लाल ने ऐसी कैंची कसी है कि पूछो मत।

(2) कुश्ती का एक दाँव।

कैंची काटना—(1) वचन देकर इनकार कर देना। प्र० आप यूं कैंची काट जायेंगे, यह मैंने न सोचा था।

(2) सामने न आना। प्र० वह तो जब भी बाबूजी को देखता है, कैंची काटकर निकल जाता है।

कैंची की तरह (सी) ज़बान चलना या चलाना—प्रिय-अप्रिय बात बिना रुके ही कहे जाना। प्र० एक तो तवा-सा मुँह खोले डोलती फिरे, कोई आए कोई जाए, किसी की चिन्ता ही नहीं, और कैंची-जैसी ज़बान चलावे (सारा०–यादव, 70)।

कैंची चलना या चलाना—अहितकर बात कहना या होना; षड्यंत्र होना या करना। प्र० आप हर वक्त कैंची ही क्यों चलाते रहते हैं? यह भी कोई बात है।

कैंची दिखाना—कैंची से बाल काटना। प्र० नाई को बुलाओ, मुन्ना को जरा कैंची दिखा दे, बाल बहुत बढ़ गये हैं।

कैंची बाँधना—दोनों रानों से दबाना। प्र० बहुत बकबक मत करो, अभी कैंची बाँध लूंगा तो छटपटाओगे।

कैंची लगाना—(1) छाँटना। प्र० उत्तर की ओर की बाड़ को कैंची मत लगाना, यों ही रहने देना।

(2) एक के ऊपर एक कैंची की तरह तिरछी रखना। प्र० तख्तों को कैंची लगाकर रखना, नहीं तो गिर पड़ेंगे।

कैंड़ा करना—सरसरी तौर से नापना या अन्दाज कर लेना। प्र० यों ही जरा कैंड़ा कर लेना और क्या?

कैंड़ा बदलना—रंग-ढंग या रुख बदलना। प्र० मैंने तो भाई, अपना कैंड़ा बदल दिया (मान० (2)–प्रेमचंद, 38)।

कैंड़ा लेना—खाका बनाना। प्र० पहले कैंड़ा ले लूँ बादुगी, तब आपको दिखलाऊँ।

कैंड़े का होना—बड़ा हिम्मती होना; अपनी बात पर दृढ़ रहनेवाला। प्र० विष्णु दयाल जी कैंड़े के आदमी हैं, वे पीछे नहीं हटेंगे।

कैंड़े पर आना—ठीक रास्ते पर आना। प्र० आयेगा, यह भी धीरे-धीरे कैंड़े पर आयेगा।

कैंड़े पर लाना—ठीक रास्ते पर लाना। प्र० इसे तो कैंड़े पर मैं लाऊँगा।

कैंड़े से—होशियारी या ढंग से। प्र० कभी-कभी मंगल से उससे मुठभेड़ हो जाती; परन्तु मंगल ऐसे कैंड़े से बात करता कि वह मान गया (कंकाल–प्रसाद, 30)।

कैद काटना, -भरना, -भुगतना—जेल में सजा भुगतना। प्र० मैंने मन ही मन अपनी ओर से पक्का कर लिया कि कैद काटूंगा, फांसी चढ़ूंगा × × पर इस शैतान के आगे सपने में भी सिर नहीं झुकाऊँगा (वल०–नागा०, 85)।

कैद भरना—दे० कैद काटना।

कैद भुगतना—दे० कैद काटना।

कैद लगाना—शर्त या बन्धन लगाना। प्र० अजी साहब, मेरे ऊपर आप यह कैद क्यों लगा रहे हैं?

कैदखाना—बन्धनवाला स्थान। प्र० यह घर अब मेरे लिए कैदखाना हो गया है।

कैफ़ियत अर्ज़ करना—अपनी सफाई देना; किसी विषय का खुलासा करना। प्र० मैं तो आपके पास कैफ़ियत अर्ज़ करने ही आया हूँ, आप सुनें भी तो।

कैसे-कैसे—विचित्र-विचित्र। प्र० कैसे-कैसे लोगों से दुनिया भरी है कि क्या कहूँ?

कोंचना—कष्ट देना। प्र० प्रभा मेरे लिए इतनी देर भूखी बैठी रहे, यह बात मुझे कोंचती थी (सारा०–यादव, 189)।

कोंचा करेला—शीतला के दागवाला चेहरा।

कोंछ भरना—गोद भरना।

कोंछ भरी रहना—पुत्रवती रहना।

कोंपर चाटना, कोपिलास चाटना—कुछ न मिलना, ठेंगा पाना। प्र० हाँ, तुम बैठकर कोंपर चाटो, माल तो सब गया।

कोंपल निकलना, -फूटना—प्रारम्भ होना। प्र० अभी तो कोंपल फूटी है, धीरे-धीरे करके ही काम बढ़ेगा।

कोंपल फूटना—दे० कोंपल निकलना।

कोई आगे न पीछे—कोई सहायक न होना। प्र० बच्चा कमजोर, खुद बीमार, कोई आगे, न पीछे × × (मान० (6)–प्रेमचंद, 42)।

कोई कल सीधी न होना—हर तौर-तरीका बेढंगा होना। प्र० किसी ने सच

कहा है हिन्दुस्तानियों को न अक्ल आयी है न आयेगी । कोई कल भी तो सीधी नहीं (मान० (7)–प्रेमचंद, 18) ।

कोई गिनती न होना—अत्यन्त तुच्छ होना । प्र० इन्द्र समान हैं जाके सेवक, नर बपुरे की कहा गनी (सू० सा०–सूर, 39) ।

कोई दकीका उठा न रखना, -छोड़ न रखना, -बाकी न रखना—सब उपाय कर लेना । प्र० इसने तो अपने भरसक कोई दकीका उठा न रखा फिर भी सफलता न मिली ।

कोई दकीका छोड़ न रखना—दे० कोई दकीका उठा न रखना ।

कोई दकीका बाकी न रखना—दे० कोई दकीका उठा न रखना ।

कोई दम का मेहमान, -में बुझ जाना, -दिन का मेहमान—किसी भी दिन मृत्यु को प्राप्त होनेवाली स्थिति होना; मरणासन्न । प्र० ये तो अब कोई दम के मेहमान हैं, साफ दिख रहा है ।

कोई दम में बुझ जाना—दे० कोई दम का मेहमान ।

कोई दिन का मेहमान—दे० कोई दम का मेहमान ।

कोई-न-कोई—एक नहीं तो दूसरा; यह नहीं तो वह । प्र० आप जाइए, कोई-न-कोई मुझे लेने आवेगा ही ।

कोई मूल्य न होना—तुच्छ होना । प्र० तुम्हारी इन उलटी-सीधी बातों का मेरे लिए कोई मूल्य नहीं है ।

कोख उजड़ना—(1) निःसन्तान हो जाना । प्र० बेचारी की दो बार कोख उजड़ चुकी है ।
(2) गर्भ गिर जाना । प्र० देखिए प्रयोग (1) ।

कोख का चिराग बुझ जाना—सन्तान मर जाना । प्र० × × मेरे मरने से मेरी माता निपूती हो जायगी, उसकी कोख का चिराग ही बुझ जायगा (दे० दु०–शिव०, 166) ।

कोख का रोग, -की बीमारी—सन्तान न होने या होकर मर जाने का रोग ।

कोख का हीरा—सपूत । प्र० यह बेटा मेरी कोख का हीरा है बहन !

कोख की आंच—सन्तान का वियोग । प्र० क्यों बने तन न कांच की भट्ठी कोख की आंच है बुरी होती (बोल०–हरिऔध, 225) ।

कोख की बीमारी—दे० कोख का रोग ।

कोख खुलना—पहली सन्तान का होना । प्र० क्या मिला पूत जो सपूत नहीं क्या खुली कोख जो न भाग खुला (चोखे०–हरिऔध, 32) ।

कोख जागना, -भरना—सन्तान का होना । प्र० दुबारा बहू की कोख जागी ही नहीं ।

कोख ठंडी होना, -से भरी-पूरी होना—पुत्र से सुख मिलना; पुत्रवती होना । प्र० सदा सोहागिन रहो बेटी कोख ठंडी रहे ।

कोख बन्द होना—बन्ध्या होना । प्र० जो लहे वे-कहे कपूतों को क्यों न तो बंद कोख बन्द रहे (बोल०–हरिऔध, 225) ।

कोख भरना—दे० कोख जागना ।

कोख मारी जाना—सन्तान न होना । प्र० मर गया वह न क्यों जनमते ही क्यों गई कोख वह नहीं मारी (चुभते०–हरिऔध, 90) ।

कोख में आग लगना—सन्तान का उत्पन्न न होना या होकर मर जाना । प्र० इस कुलक्षणी की कोख में आग लगी हुई है, इसे मैं घर में न रहने दूंगी ।

कोख में दाग लगाना—अवैध सन्तान पैदा करना । प्र० इसने अपनी कोख में दाग लगाकर मुझे कहीं का न रखा ।

कोख में पत्थर पड़ना—कपूत पैदा होना ।

कोख लगना, -सटना—भूख या और किसी कारण से पेट का अन्दर धंस जाना । प्र० बेचारे को कुछ खाने को दो, देखो कोख लग गयी है ।

कोख लजाना—माँ की मान-प्रतिष्ठा को अपने कर्म से नष्ट या लांछित करना । प्र० बेटा, देश की लाज तुम लोगों के हाथों है, तुम मेरी कोख मत लजाना ।

कोख सटना—दे० कोख लगना ।

कोख से भरी-पूरी होना—दे० कोख ठंडी होना ।

कोख-जली—सन्तानहीना । प्र० भाग में ही लिखा गया जलना क्यों जले सब दिनों न कोख-जली (बोल०–हरिऔध, 224) ।

कोख-बन्द—बन्ध्या ।

कोख-मांग से ठंडी रहना, -भरी रहना—पुत्र तथा पति का सदैव सुख बना रहना । प्र० है बड़ी भागवान वह, जो हो कोख औ मांग से भरी पूरी (बोल०–हरिऔध, 225) ।

कोख-मांग से भरी रहना—दे० कोख-मांग से ठंडी रहना ।

कोट उठाना—किला बनाना । प्र० आगरे में कोट उठाने का हुक्म दिया गया ।

कोठला भरना, कोढ़ला भरना—पेट भरना । प्र० खास कुछ नहीं पर कोठला तो भरना ही पड़ता है ।

कोठा कड़ा होना—जल्दी पाखाना न होना । प्र० छोटे मुन्ने का कोठा कड़ा है, बराबर जुलाब दे दिया करो ।

कोठा खींचना—लकीरों से खाना बनाना । प्र० पहले कोठा खींचो तब न खेल शुरू किया जाय ।

कोठा न होना—मन में कुटिलता न होना । प्र० जहाँ तक मेरी जानकारी है, उसमें कोठा नहीं है ।

कोठा बिगड़ना—(1) अपच आदि रोग होना । प्र० कई दिनों से कोठा बिगड़ा है तो डाक्टर साहब को दिखाते क्यों नहीं ?
(2) गर्भाशय में किसी प्रकार का रोग होना ।

कोठा भरना—एक प्रकार का दान जिसमें 35 खाने खींच कर उसमें कोई वस्तु रखकर दान की जाती है ।

कोठा लेकर बैठना, -लेना—वेश्यागीरी करना ।

कोठा लेना—दे० कोठा लेकर बैठना ।

कोठा साफ होना—(1) साफ दस्त होना । प्र० इसका कोठा साफ होना बहुत जरूरी है, नहीं तो तबीयत खराब ही जायगी ।
(2) विकाररहित मन होना । प्र० लालजी का कोठा साफ है, इतना मैं कह सकता हूँ ।

कोठी उतरना या उतारना, -गलना या गलाना, -डालना, -बैठाना—कुएं या पुल आदि के खंभे के गोले की जुड़ाई को नीचे उतारना ।

कोठी करना, -खुलना या खोलना—(1) थोक बिक्री का काम करना या

होना। प्र० कलकत्ता का काम खराब होने पर उन्होंने बनारस में आकर कोठी कर ली।

(2) रुपये के लेन-देन का काम करना या होना। प्र० करहु यह जस प्रगट त्रिभुवन निठुर कोठी खोलि (ब्र० सू० को०)।

कोठी खुलना या खोलना—दे० कोठी करना।

कोठी गलना या गलाना—दे० कोठी उतरना या उतारना।

कोठी चलना—लेन-देन का काम चलना। प्र० बाप की कोठी चलती है (आज़ाद०–प्रेमचंद, 41)।

कोठी डालना—दे० कोठी उतरना या उतारना।

कोठी बैठना—दिवाला होना। प्र० कुछ बरसों पहले जमनालाल जी की कोठी भी बैठ गयी।

कोठी बैठाना—दे० कोठी उतरना या उतारना।

कोठी लगना—कोठी में काम शुरू होना; कोठी खुलना। प्र० रामलाल की कोठी शाम को 4 बजे लगती है।

कोठे पर चढ़ना, -बैठना—वेश्या बनना। प्र० यदि ऐसा ही करना होगा, तो मैं किसी कोठे पर जा बैठूंगी (कंकाल–प्रसाद, 57)।

कोठे पर बैठना—दे० कोठे पर चढ़ना।

कोठों में चित्त करना, -जाना, -भरमना—कोई प्रवृत्ति, वासना या आशंका होना। प्र० एक बार चित्त कोठों में किया नहीं कि फिर और कुछ नहीं हो पाता।

कोठों में चित्त जाना—दे० कोठों में चित्त करना।

कोठों में चित्त भरमना—दे० कोठों में चित्त जाना।

कोड़ा—उत्साहित या उत्तेजित करनेवाला। प्र० मैं तो खुद ही वह काम करने जा रहा था, इस पर तुम्हारा कहना और भी एक कोड़ा हुआ।

कोड़ा फटकारना, -बरसाना—चाबुक से मारना। प्र० घुड़सवार भीड़ के ऊपर कोड़े फटकार रहे थे।

कोड़ा बरसाना—दे० कोड़ा फटकारना।

कोढ़—अप्रिय; अनिष्टकारी। प्र० इसकी पढ़ाई-लिखाई नहीं वरन् इसकी बुरी आदतें हमारे लिए कोढ़ हो गयी हैं।

कोढ़ की खाज, -में खाज—दुःख पर दुःख। प्र० नीच जन, मन ऊँच, जैसी कोढ़ में की खाजु (विनय०–तुलसी, 351); ऐसे में कोढ़ की खाज ज्यों 'केसव' मारत काम के बान निनारे (केशव० (2)–केशव, 354); इस पर भी जो कहीं मालिक कड़े मिजाज का हुवा तो और भी कोढ़ में खाज है (प्र० पी०–प्र० ना० मि०, 159)।

कोढ़ चूना, -टपकना—कोढ़ के कारण अंगों का गल-गलकर खत्म होना।

कोढ़ टपकना—दे० कोढ़ चूना।

कोढ़ फैलना—किसी बुरी चलन का प्रसार होना। प्र० झूठ और बेईमानी का कोढ़ सारे समाज में फैल गया है।

कोढ़ में खाज—दे० कोढ़ की खाज।

कोढ़ला भरना—दे० कोठला भरना।

कोढ़ी—अलहदी। प्र० इस कोढ़ी को नजरों से दूर करो, इसके किए कुछ न पूरा पड़ेगा।

कोतल घोड़ा—बिना काम के, खाली रहनेवाला। प्र० घर वालों से सहायता की कोई आशा न थी, और मुझे तो तुम जानती ही हो कि सदा कोतल घोड़ा बना रहा (सेवा०–प्रेमचंद, 202)।

कोतवाली चढ़ना—फौजदारी का मुकदमा दायर करना। प्र० लगता है इस बार वे कोतवाली चढ़कर रहेंगे।

कोताह गरदन होना—धूर्त होना।

कोयला या कोयली भरना—खूब डटकर भोजन करना।

कोथियाना—दीवार में जहाँ कहीं ईंट निकल गई हो वहाँ ईंट भरकर मरम्मत करना।

कोदों का भात—बहुत सामान्य चीज। प्र० सरकार, इस महंगी के जमाने में कोदों का भात जुट जाये, यही बहुत है।

कोदों दरना या दलना—(1) बहुत मेहनत का काम करना। प्र० क्यों भाई, कोदों दलने को मैं ही हूँ क्या?

(2) किसी को सताना, चिढ़ाना या जलाना। प्र० कोदों दलने को आप पहुँच गये?

कोदों दरवाना—कठिन काम करवाना। प्र० आप मुझसे कोदों दरवाना चाहते हैं तो वही सही।

कोदों देकर पढ़ना, -सीखना—(1) अधूरी या बेढंगी शिक्षा पाना। प्र० यह तो कोई जवाब नहीं, कोदों देकर वकालत पास की थी क्या (मान० (3)–प्रेमचंद, 188)।

(2) बिना कुछ खर्च किए पढ़ना। प्र० देखिए प्रयोग (1)।

कोदों देकर सीखना—दे० कोदों देकर पढ़ना।

कोदों-सावां समझना—बहुत तुच्छ समझना। प्र० मेरी इस भेंट को आप कोदों-सावां समझकर ही स्वीकार करें।

कोन देना—कोने पर से हल को घुमाना।

कोन मारना—जोतने में छूटे हुए कोनों को गोड़ना।

कोना अंतरा—कोना-कोना, घर के भीतर हर जगह। प्र० कोना अंतरा अच्छी तरह देखो, कहीं पड़ी होगी।

कोना खाली होना—भीड़-भाड़ में थोड़ी जगह मिल जाना। प्र० कोई कोना खाली हो तो मैं भी आ जाऊँ।

कोना घिस जाना—निर्लज्ज हो जाना। प्र० व्यूढोरा और पलेटिका के सारे कोने घिस चुके थे। उन्हें लज्जा ही नहीं रही थी (देवकी०–रां० रा०, 38)।

कोना छांटना, -मारना, कोर छांटना, -मारना—(1) सिलाई में दबाना या छांटना। प्र० जरा कोर छांट दो, ठीक हो जायगा।

(2) किसी कोने या तेज धार को कम या बराबर करना। प्र० टेबुल का कोना मार दो मिस्त्री, चोट लगती है।

कोना झांकना—भय या लज्जा से जी चुराना या बचने का उपाय करना। प्र० करती क्या? इधर-उधर कोना झांकती फिरती रही।

कोना थामकर बैठना—एक जगह अड़कर बैठ जाना। प्र० बड़े चाचा तो कोना थामकर बैठ गये हैं कि शहर की दूकान उन्हें ही चाहिए।

कोना दबना या दबाना, कोर दबना या दबाना—किसी प्रकार के दबाव व

वश में होना या करना। प्र० यह बेचारे अपनी बेगम साहब से मजबूर हैं × × उनसे इनकी कोर दबती है (ग़बन–प्रेमचंद, 284); और की कोर ही रही दबती आंख तेरी कभी न कोर दबी (चोखं०–हरिऔध, 77)।

कोना निकालना, कोर निकालना—कोना बनना। प्र० रूमाल का कोना ठीक से निकालना।

कोना मारना—दे० कोना छांटना।

कोना-कोना छानना, -झांकना—सब स्थान देख लेना। प्र० वन का कोना-कोना छान डाला गया (वैशाली० (2)–चतुर०, 15)।

कोना-कोना झांकना—दे० कोना-कोना छानना।

कोने में पड़ा रहना—(1) कहीं थोड़ी-सी जगह में अलग पड़ा रहना। प्र० दादी का क्या है, कहीं कोने में पड़ी रहेंगी।
(2) लोगों की नजर से दूर पड़ा रहना। प्र० ठीक से देखो, कहीं कोने में पड़ी होगी।

कोने में होना—एक चौथाई अंश का भागीदार होना। प्र० अरे भाई, एक कोने में मैं भी हूँ, मुझे क्यों भूले जा रहे हो?

कोने से—चार आने फी रुपए के हिसाब से (दलाली)। प्र० उसे कोने से दलाली दे दो।

कोने-कोने में—हर कहीं; पूरे में। प्र० तुम हरदम मेरे दिल के कोने-कोने में घूमती ही रहती हो (सात०–नागर, 33)।

कोने-कोने से—हर देश या स्थान से। प्र० जब युगों के थपेड़ों ने इस महान नगरी के धुर्रे उड़ा दिये होंगे, तब भी इसकी मिट्टी के दर्शन के लिए जम्बू द्वीप के कोने-कोने से लोग आवेंगे (अम्न०–रा० वे०, 43)।

कोपिलास चाटना—दे० कोंपर चाटना।

कोपीन लेना—संन्यास लेना।

कोयल का कौए से जोड़ होना, तूती का कौए से जोड़ होना—बेमेल वस्तुओं का साथ होना। प्र० खुद ही विचारकर देखो कि तूती और कौए का जोड़ कितने दिनों निभेगा।

कोयला चबाना—तुच्छ काम करना। प्र० कोयला चबाने को मैं ही हूँ क्या?

कोयला-पानी लेना—आगे कार्य करने के लिए आहार-विश्राम लेना। प्र० रानीगंज में कोयला-पानी लेकर हम लोग आगे बढ़े।

कोयले की दलाली करना—ऐसा काम करना जिसमें अपना नुकसान हो। प्र० 'अजन्ता प्रकाशन' के प्रोप्राइटर उल्टे यह शिकायत करने लगते कि डायरी छापकर उन्होंने कोयले की दलाली के सिवा और कुछ नहीं किया (कठ०–दे० स०, 345)।

कोयले की दलाली में हाथ काला होना—बुरी संगत का प्रभाव बुरा ही होना। प्र० कोयलों की दलाली में हाथ काले करते रहना मुझे एक आंख नहीं भाता (दूधगाछ–दे० स०, 360)।

कोयलों पर छाप और मुहरों की लूट होना—बड़े-बड़े खर्चों को न रोकना और छोटे खर्चों में कंजूसी करना। प्र० कोयलों पर हम लगाते हैं मुहर पर मुहर लुट जा रही है हर घड़ी (चुभते०–हरिऔध, 100)।

कोयलों पर छाप पड़ना, -लगना या लगाना, -मुहर पड़ना, -मुहर लगना या लगाना, -मुहर होना—मामूली खर्चों में कंजूसी करना या होना। प्र० कोयलों पर हम लगाते हैं मुहर पर मुहर लुट जा रही है हर घड़ी (चुभते०–हरिऔध, 100)।

कोयलों पर छाप लगना या लगाना—दे० कोयलों पर छाप पड़ना।

कोयलों पर मुहर पड़ना—दे० कोयलों पर छाप पड़ना।

कोयलों पर मुहर लगना या लगाना—दे० कोयलों पर छाप पड़ना।

कोयलों पर मुहर होना—दे० कोयलों पर छाप पड़ना।

कोर छांटना—दे० कोना छांटना।

कोर दबना या दबाना—दे० कोना दबना या दबाना।

कोर निकालना—दे० कोना निकालना।

कोर मानना—द्वेष रखना। प्र० न जाने क्यों वह इससे कोर मानता है।

कोर मारना—दे० कोना छांटना।

कोर-कसर न उठा रखना—कुछ बाकी न रखना; कोई कमी न रखना। प्र० सनातनी और आर्य समाजी एक दूसरे को नीचा दिखाने के लिए कोई कोर-कसर न उठा रखते थे (अमृत०–नागर, 174)।

कोर-कसर निकालना—खामी दूर करना। प्र० देख लीजिएगा, कोई कोर-कसर होगी तो निकाल दीजिएगा।

कोर-कसर रखना—खामी रहना। प्र० वे अपनी ओर से करनी-करतूत में कोई कोर-कसर नहीं रखतीं।

कोरट करना या होना—बर्बाद कर देना या होना। प्र० घर का सब कुछ कोरट करके वह माना।

कोरट छूटना—किसी जायदाद पर से कोर्ट का प्रबन्ध उठना।

कोरट बैठना—किसी जायदाद का प्रबन्ध कोर्ट ऑफ वार्ड्स के अन्तर्गत आना।

कोरम कोर चवाल सौ—एकदम बेवकूफ। प्र० तू ठहरा कोरम कोर चवाल सौ, तू क्या करेगा।

कोरमा-पुलाव—स्वादिष्ट भोजन। प्र० हमें रूखी रोटी भी नसीब न हो, और आप कोरमा-पुलाव उड़ावें?

कोरा, कोरा का कोरा—(1) सर्वथा अनजान। प्र० भुवन इन मामलों में बिल्कुल कोरा होने की दुहाई देता तो वह कहती, "और सब भी तो कोरे हैं ········(नदी०–अज्ञेय, 63); तू कोरी है न, कुछ तुझमें प्यार का रंग भी है (प्रिय०–हरिऔध, 217)।
(2) बिना किसी प्रभाव के। प्र० उस इन्द्र के अखाड़े से कोरे निकल आओ, तो टांग की राह निकल जाऊँ (आजाद०–प्रेमचंद, 31)।
(3) केवल, मात्र। प्र० मतलब यह कि कोरे "हास्य-रसावतार" ही नहीं हैं (पद्म० के पत्र–पद्म० शर्मा, 189)।

कोरा उस्तरा, -छुरा—तुरन्त सान दिया हुआ छुरा। प्र० कोरे उस्तरे से हजामत मत बनाना।

कोरा का कोरा—दे० कोरा।

कोरा कागज थमा देना—कोई वचन न देना। प्र० वाह जनाब, आपने तो

कोरा कागज थमा दिया। कुछ तो कहते।

कोरा घड़ा—निर्लज्ज; जिस पर किसी बात का असर न हो। प्र० कोरा घड़ा जानिए मुझको मुझे न आती लाज (गिरीश)।

कोरा छुरा—दे० कोरा उस्तरा।

कोरा जवाब देना, -टाल देना—साफ इन्कार करना; स्पष्ट अस्वीकार करना। प्र० ऐसा आज तक कभी न हुआ था कि इतना दौड़ाकर किसी ने कोरा जवाब दे दिया हो (रंग० (1)-प्रेमचंद, 22)।

कोरा टाल देना—दे० कोरा जवाब देना।

कोरा पिण्डा—अब्याहा पुरुष या स्त्री।

कोरा बच जाना या बचना—किसी विपत्ति से साफ बच जाना। प्र० यही समझो कि आज वह कोरा बच गया।

कोरा बर्त्तन—(1) अछूती कुमारी।

(2) मिट्टी का वह बर्त्तन जिसमें पानी न डाला गया हो।

कोरा मुल्ला—(1) पुस्तकी ज्ञानवाला। प्र० इन कोरे मुल्लाओं से मैं बहुत घबराता हूं।

(2) बिना ज्ञानवाला। प्र० देखिए प्रयोग (1)।

कोरा रखना—कुछ न सिखाना। प्र० लड़की को आपने एकदम कोरी रख छोड़ा है? ब्याह कैसे होगा?

कोरा रहना, कोरा-कोरा रहना—(1) कुछ न सीख पाना। प्र० इन सब मामलों में वह कोरी ही रह गयी।

(2) दे० कोरा लौटना।

कोरा लौटना या लौटाना—बिना कुछ लिए, खाली हाथ लौटना या लौटा देना; कुछ न पाना। प्र० सैकड़ों ही जंग इन्हीं हाथों फतह किए मगर जनाब, यह मायूसी, यह कोरा-कोरा रहना तो कहीं भी नसीब न हुआ (राधा० ग्रंथा०—राधा० दास, 755)।

कोरा सिर—(1) वह सिर जिस पर उस्तरा न लगा हो—पेट के बालों वाला सिर। प्र० पांच बरस का हो गया, मुन्ना अभी तक कोरे सिर ही है?

(2) बिना तेल लगाये बाल। प्र० कोरे सिर से मंदिर में पूजा करने जाना।

कोरा-कोरा रहना—दे० कोरा रहना।

कोरी आंख से देखना—निर्लज्जता से देखना। प्र० देखो तो सही, कैसे कोरी आंखों से देखे जा रही है।

कोरी धार, -बाढ़—हथियार की धार जिस पर अभी सान न रखी गई हो। प्र० कोरी धार की चाकू लाना, मैं सान धरवा लूंगी।

कोरी पटिया पर लिखना—नया काम प्रारम्भ करना। प्र० लगता है इतने बरसों के बाद फिर से कोरी पटिया पर लिखना पड़ेगा।

कोरी बाढ़—दे० कोरी धार।

कोरी बातें करना—केवल मात्र बातें करना काम नहीं। प्र० तुम कुछ काम करना भी जानते हो या कोरी बातें करना जानते हो?

कोरी सुनाना—गाली देना। प्र० आप हर वक्त इतनी कोरी सुनायेंगे तो कैसे बरदाश्त होगा?

कोरी-कोरी सुनाना—खूब डांट बताना। प्र० मतलब अपना है, वरना इन लड़कों और इनके बापों को ऐसी कोरी-कोरी सुनाता कि ये भी...... (मोर०—जग० माथुर, 108)।

कोरे उस्तरे से मूंड़ना, -छुरे से मूंड़ना—(1) बेवकूफ बनाकर अपना काम निकालना। प्र० वाह यार, तुम मुझे ही कोरे उस्तरे से मूंड़ने चले हो?

(2) बिना पानी लगाए मूंड़ना। प्र० कोरे उस्तरे से मत मूंड़ना, पानी लगा लेना।

कोरे कागज पर लिखकर—शपथपूर्वक। प्र० कवित विवेक एक नहिं मोरें, सत्य कहउं लिखि कागद कोरें (राम० (बाल)—तुलसी, 16)।

कोरे छुरे से मूंड़ना—दे० कोरे उस्तरे से मूंड़ना।

कोल्हू—बहुत मोटा। प्र० देखना, दो-चार दिन में मुटाकर कोल्हू हो जाता हूं कि नहीं (निर्मला—प्रेमचंद, 93)।

कोल्हू का बैल—घोर परिश्रम करनेवाला। प्र० यह मुझे कोल्हू का बैल बनाना चाहते हैं (रंग० (1) —प्रेमचंद, 206)।

कोल्हू का बैल बनाना, -में जोतना—बहुत परिश्रम करवाना। प्र० रात-दिन कोल्हू में जोते रहेंगी फिर भी मुंह चढ़ा रहता है।

कोल्हू काटकर मुंगरा बनाना—काम की वस्तु खराब करके बेकार चीज बनाना। प्र० तुम्हें कोल्हू काटकर मुंगरा बनाने की अक्ल किसने दी?

कोल्हू के बैल की तरह जुटे रहना, -पिसना—कठिन परिश्रम करना। प्र० दिन को बारह से छह बजे तक और रात को नौ बजे से दो बजे तक दैनिक पत्रों के सम्पादक कोल्हू के बैल की तरह जुटे रहते हैं (चेतन—अश्क, 72)।

कोल्हू के बैल की तरह पिसना—दे० कोल्हू के बैल की तरह जुटे रहना।

कोल्हू ढकेलना—(1) बहुत मेहनत का काम करना। प्र० कौन-सा कोल्हू ढकेलकर चले आ रहे हो जो इतना थक गये हो?

(2) बहुत जरूरी काम करना। प्र० तुम्हें कौन-सा कोल्हू ढकेलना है जो शाम को फिर नहीं जा सकते?

कोल्हू में जोतना—दे० कोल्हू का बैल बनाना।

कोल्हू में डालकर पीसना, -पेरना—बहुत अधिक कष्ट पहुंचाना। प्र० बहू को कोल्हू में डालकर पीस दिया, अब भी करने को कुछ और बाकी बचा है क्या?

कोल्हू में डालकर पेरना—दे० कोल्हू में डालकर पीसना।

कोल्हू में पेरवा देना—सर्वनाश कर देना। प्र० ठीक है, इस बार मुझे कोल्हू में पेरवा ही दीजिए उसके बिना आपको चैन न मिलेगा।

कोष देखना—आर्थिक स्थिति देखना। प्र० अपना कोष देखकर ही खर्च करने का प्रोग्राम बनाना चाहिए।

कोसना-काटना—शाप और गाली देना। प्र० रात-दिन का कोसना-काटना, और नहीं बर्दाश्त होता।

कोसों—बहुत दूर। प्र० जड़ाऊ कंगन और मोतियों के हारों की भी तो कमी न थी, पर जालपा अपने सादे आवरण में उनसे कोसों आगे थी (गबन—प्रेमचंद, 73)।

कोसों तक—दूर-दूर तक। प्र० चारों ओर सूना, वीरान, कोसों तक मकान का नामों निशान न था।

कोसों दूर भागना, -रहना या होना, -भागना—बिलकुल अलग रहना; कोई सम्बन्ध न होना। प्र० संसार के कठोर व्यवहार ने उन्हें विरक्त कर दिया था, उसके प्रलोभन से कोसों भागते थे (मान० (3)–प्रेमचंद, 164)।

कोसों दूर रहना या होना—दे० कोसों दूर भागना।

कोसों भागना—दे० कोसों दूर भागना।

कोहनी मारना—(1) ढकेलना। प्र० कोहनी क्यों मारते हैं, ठीक से खड़े रहिए।

(2) कोहनी से मारकर इशारा करना। प्र० मुझे उस ओर एकटक देखता देख शांति ने कोहनी मारा।

कौआ—धूर्त, मक्कार। प्र० बड़ा कौआ आदमी है, मैं तो उससे कोई वास्ता ही नहीं रखता।

कौआ उठाना—बढ़ी हुई घंटी को दबाना।

कौआ उड़ाते बांह थकना—बहुत समय से प्रतीक्षारत होना। प्र० बांह थकी बायसहिं उड़ावत, कब देखौं उनहारि (सू० सा०–सूर, 3861)।

कौआ उड़ाना—(1) किसी की प्रतीक्षा में होने पर स्त्रियां कौआ उड़ाकर यह जानना चाहती हैं कि वह व्यक्ति आयेगा या नहीं। प्र० कउआ उड़ावत मेरी बंहियाँ पिरानी, कहै कबीर मेरी कथा सिरांनीं (कबीर ग्रंथा०–कबीर, 208) बांह थकी बायसहिं उड़ावत, कब देखौं उनहारि (सू० सा०–सूर, 3861); पर्यो उड़ावन मोकों सब दिन काग (रहीम कवि०–रहीम, 59)।

(2) बेकार काम करना। प्र० कुछ ढंग का काम क्यों नहीं करतीं, दिन भर कौआ उड़ाती रहती हो।

कौआ को कपूर चुगाना—अयोग्य व्यक्ति का आदर करना।

कौआ छिटकना—गले की घंटी बढ़ना।

कौआ धोने से बगुला न होना—बुरे का बुरा ही रहना। प्र० सच कहा है, कौआ धोने से बगला नहीं होता (रंग०–(2) प्रेमचंद, 314)।

कौआ फंसाना—चालाक आदमी को चकमा देना। प्र० अरे कौआ फंसाना इतना आसान नहीं है जितना तुम इसे समझ रहे हो।

कौआ बोलना—(1) सवेरा हो जाना। प्र० आखिरी नक़ल समाप्त हुई तो कौवे बोल रहे थे (गोदान–प्रेमचंद, 222)।

(2) शुभ शकुन होना, किसी के आने का शकुन होना। प्र० सगुन संदेसौ हौं सुन्यौं, तेरें आंगन बोलै काग री (सू० सा०–सूर, 3477)।

(3) उजाड़ होना। प्र० वहाँ तो कौआ बोलता है, मैं वहाँ नहीं रहूँगी।

कौआ होकर हंस बनने की कोशिश करना—बुरा होकर अच्छा बनने या दिखने की कोशिश करना। प्र० मैं उनके साथ बैठता हूँ × × जो कौए होकर हंस बनने की चेष्टा नहीं करते (सेवा०–प्रेमचंद, 113)।

कौआ-उड़ानी, -हंकनी—नीच स्त्री। प्र० अरे कौआ-उड़ानी, तू चुप रहा कर, मैं तेरी नस-नस पहचानती हूँ।

कौआ-गुहार में पड़ना, -फंसना—बेकार के झगड़े में पड़ना। प्र० तुम लोग भी बेकार की कौआ-गुहार में पड़ गये, इससे क्या फायदा?

कौआ-गुहार में फंसना—दे० कौआ-गुहार में पड़ना।

कौआ-परी—बदसूरत स्त्री। प्र० बिलकुल कौआ-परी है पर पता नहीं समझती क्या है अपने आपको।

कौआ-फंसान की चाल—होशियार आदमी को धोखा देने का तरीका। प्र० मैं ऐसी कौआ-फंसान की चाल चलूंगा कि तुम लोग सब देखते रह जाओगे।

कौआ-रोर मचाना या होना—बहुत शोरगुल करना या होना। प्र० × × × पानी भरने वालों ने 'जल्दी भरो जल्दी करो' की कौआ-रोर मचा दी (अमृत०–नागर, 400)।

कौआ-हंकनी—दे० कौआ-उड़ानी।

कौए का कोयल हो जाना—अयोग्य व्यक्ति का योग्य बन जाना। प्र० मज्जन फल पेखिअ ततकाला काक होहिं पिक बकउ मराला (राम० (बाल)–तुलसी, 6)।

कौए की-सी नज़र रखना—बहुत तेज़ नज़र रखना। प्र० मैं कौआ की-सी नज़र रखता हूँ और आस-पास क्या-क्या होता है उसकी खबर भी रखता हूँ।

कौए के बच्चे—अधिक समय तक जीनेवाला। प्र० सब कौए के बच्चे हैं साले......ऐसे मरने के नहीं।

कौए खाना—दीर्घायु होना। प्र० बेटा, कौए खाकर आया हूँ तो क्या हुआ, एक-न-एक दिन तो जाऊँगा ही।

कौओं में हंस होना—मूर्खों या अयोग्यों में बुद्धिमान या योग्य होना।

कौड़िया गुलाम—तुच्छ नौकर, अत्यंत आज्ञाकारी। प्र० सरकार, यह लड़का आपका कौड़िया गुलाम होकर रहेगा।

कौड़ियों का गुलाम—धन का बड़ा लोभी। प्र० अब मालूम हुआ कि आप भी कौड़ियों के गुलाम हैं (मान० (2)–प्रेमचंद, 103)।

कौड़ियों के पीछे ईमान बेचना, -पर ईमान बेचना—थोड़े-थोड़े पैसे के लिए ईमान खोना। प्र० हम उन नमकहरामों में नहीं हैं जो कौड़ियों पर अपना ईमान बेचते फिरते हैं (मान० (8)–प्रेमचंद, 274)।

कौड़ियों के बदले, -मोल—बहुत कम दाम पर। प्र० जब गुण कूं गाहक मिलै, तब गुण लाख बिकाइ। जब गुण कौ गाहक नहीं, तब कौड़ी बदलै जाइ (कबीर ग्रंथा०–कबीर, 78); छोटे-छोटे किसानों की ज़मीनें कौड़ी के मोल बिक रही हैं (मैला०–रेणु, 149)।

कौड़ियों के मोल—दे० कौड़ियों के बदले।

कौड़ियों के लिए—थोड़े-से लाभ के लिए। प्र० कौड़ी लागि लोभ बस करहिं बिप्र गुर घात (राम० (उ)–तुलसी, 1128); परम कुबुद्धि तुच्छ रस-लोभी, कौड़ी लगि मग की रज छानत (सू० सा०–सूर, 114)।

कौड़ियों के लिए रास्ते की धूल छानना—थोड़े-से लाभ के लिए बहुत चेष्टा करना या तुच्छ काम करना। प्र० परम कुबुद्धि, तुच्छ रस लोभी, कौड़ी लगि मग की रज छानत (सू० सा०—सूर, 114)।

कौड़ियों पर ईमान बेचना—दे० कौड़ियों के पीछे ईमान बेचना।

कौड़ियों पर ऊँट बिकना—बहुत सस्ते मूल्य पर बिकना। प्र० आजकल तो कौड़ियों पर ऊँट बिक रहा है, पापलिन को कौन पूछता है।

कौड़ियों पर जान देना—पैसे-पैसे के लिए व्याकुल होना। प्र० उस प्राणी को तुच्छ समझो, जो त्याग और निवृत्ति का राग अलापता हो, पर स्वयं कौड़ियों पर जान देता हो (रंग० (1)—प्रेमचंद, 356)।

कौड़ियों पर बिकना—बिना मूल्य बिकना। प्र० इस वार तो सारा माल कौड़ियों पर बिक रहा था।

कौड़ी उसकना—नस का कौड़ी की शक्ल में फूल आना।

कौड़ी कम न होना—जरा भी कम न होना। प्र० चीजों का दाम तो कौड़ी कम नहीं होता, हर साल बढ़ता ही जाता है।

कौड़ी का—(1) बेकार। प्र० कौड़ियों का सामान लाकर दिया तो और न दिया तो, क्या फर्क पड़ता है।

(2) बेइज्जत; तुच्छ। प्र० बिलकुल कौड़ी का आदमी है वह, उसके साथ इतनी दोस्ती ठीक नहीं।

कौड़ी का एक दाँत भी फोड़कर न देना—बहुत साधारण, तुच्छ एवं नगण्य चीज भी न देना। प्र० लेकिन अधिकार के नाम पर वह कौड़ी का एक दाँत भी फोड़कर देना न चाहते थे (गोदान—प्रेमचंद, 53)।

कौड़ी का एक दाँत भी बाकी न रहना—अत्यन्त तुच्छ पावना भी बाकी न रहना। प्र० किसी का मेरे यहाँ कौड़ी का एक दाँत भी बाकी नहीं है (दे० दु०—शिव०, 117)।

कौड़ी का बल न पड़ना या न होना—हिसाब पाई-पाई ठीक होना। प्र० आज तक मेरे हिसाब-किताब में कौड़ी का बल नहीं पड़ा है।

कौड़ी का भी नहीं, -काम का नहीं—निकम्मा, निकृष्ट। प्र० जब हुत जीव रतन सब कहा। जौं भा बिनं जिय कौड़ि न लहा (पद०—जायसी, 56/1)।

कौड़ी काम का नहीं—दे० कौड़ी का भी नहीं।

कौड़ी के तीन बनना या बनाना, -होना, -तीन-तीन होना—(1) तुच्छ होना। प्र० कौड़ी के भये तीन छुटे थल भागी महिमा (राधा० ग्रंथा० —राधा० दास, 53); क्यों नहीं लक्ष्मी रूठेगी, जब कि कौड़ी के तीन बने? (मर्म०—हरिऔध, 98)।

(2) बहुत सस्ता होना। प्र० अरे कौन पूछता है आम को आजकल, कौड़ी के तीन-तीन तो मिलते हैं।

कौड़ी के तीन बिकना, -मोल बिकना—बहुत सस्ता होना। प्र० जितना चाहे उतना ले लो बाबूजी, कौड़ी के तीन बिक रहे हैं अमरूद।

कौड़ी के तीन होना—दे० कौड़ी के तीन बनना।

कौड़ी के तीन-तीन होना—दे० कौड़ी के तीन बनना।

कौड़ी के मोल बिकना—दे० कौड़ी के तीन बिकना।

कौड़ी के लिए—सामान्य लाभ के लिए। प्र० कौड़ी लागि लोभ बस, करहिं विप्र गुर घात (राम० (उ)—तुलसी, 1128)।

कौड़ी को न पूछना, -लेना—(1) बिलकुल तुच्छ, महत्त्वहीन समझना। प्र० बड़े-बड़े इण्टर और बी० ए० घूमते हैं, कोई कौड़ी को भी नहीं पूछता (सारा०—यादव, 128)।

(2) बहुत सस्ते दामों में भी न लेना। प्र० ऐसे रद्दी आम को कोई कौड़ी को न पूछेगा।

कौड़ी को न लेना—दे० कौड़ी को न पूछना।

कौड़ी को भी महंगा होना—बिलकुल तुच्छ एवं व्यर्थ होना। प्र० यह ऊन तो कौड़ी को भी महंगा है, इसे कौन लेगा।

कौड़ी कोस दौड़ना—थोड़े लाभ के लिए बहुत परिश्रम करना। प्र० मेरी समझ में नहीं आता कि तुम कौड़ी कोस दौड़ क्यों रहे हो?

कौड़ी गलत पड़ना—बात या युक्ति का प्रतिकूल असर होना। प्र० नीलिमा ऐसे बैठी थी जैसे कौड़ी गलत पड़ी (बौने०—रां० रा०, 113)।

कौड़ी चलना—(1) जुआ खेला जाना। प्र० रात के सात बजते-बजते वहाँ कौड़ी चलने लगती।

(2) मंत्र के द्वारा कौड़ी चलना जिससे चोर का पता लगता है। प्र० पीपल-तले वाले बाबा के यहाँ जाओ, कौड़ी चले बिना चोर का पता न लगेगा।

कौड़ी चित्त पड़ना—स्थिति अपने अनुकूल होना। प्र० अपनी कौड़ी चित्त पड़ गयी है, अब कोई चिन्ता नहीं है।

कौड़ी जलना—भूख-क्रोध आदि से शरीर में ताप होना। प्र० इसकी कौड़ी जल रही है, पहले इसे कुछ खाने को दो।

कौड़ी पास न होना—पास में बिलकुल धन न होना। प्र० पास जिसके न रही कौड़ी, कब बना वह पैसे वाला? (मर्म०—हरिऔध, 99)।

कौड़ी फाड़कर न देना—कुछ भी न देना; बहुत कंजूस होना। प्र० वे कौड़ी फाड़कर तो तुम्हें देंगे नहीं, देखना।

कौड़ी फिरना—(1) जुए में किसी का दाँव पड़ने लगना।

(2) लोगों का मत लेने के लिए कौड़ी बाँटना-जो सहमत होते हैं वे कौड़ी ले लेते हैं (सिपाहियों के बीच प्रचलित एक पुराना तरीका)।

कौड़ी फेंकना—जुए का दाँव फेंकना। प्र० मैंने भी कौड़ी फेंकी पर दाँव फिर व्यर्थ गया।

कौड़ी बढ़ना—गिल्टी उभड़ना। प्र० लगता है जाँघ की कौड़ी बढ़ आई है।

कौड़ी बराबर भी नहीं—बिलकुल तुच्छ; तनिक भी नहीं। प्र० सूरदास स्वामी बिछुरें, कौड़ी भर न बिकात (सू० सा०—सूर, 3619)।

कौड़ी भर—बहुत थोड़ा-सा, जरा-सा। प्र० कौड़ी भर गुड़ इसे भी दे दो।

कौड़ी भर का—बहुत छोटा। प्र० यह क्या कौड़ी भर का डब्बा ले आये, इसमें क्या आयेगा?

कौड़ी भी न लगना—अत्यन्त तुच्छ लगना। प्र० सूरदास स्वामी बिनु गोकुल, कौड़ी हू न लहै (सू० सा०—सूर, 3798)।

कौड़ी मोल का होना—बहुत सस्ता होना, बेकद्र होना। प्र० एक भारतीय लेखक और वह भी हिन्दी का लेखक उसकी दृष्टि में कौड़ी मोल भी

नहीं है (अमृत०–नागर, 321)।

कौड़ी लेना—मस्तूल के चारों ओर रस्सी लपेटना।

कौड़ी-कौड़ी—(1) एक-एक पाई। प्र० दान लेहुँ कौड़ी-कौड़ी करि बैर आपने लैहों (सूर–ब्र० सू० को०); परगने-परगने के अधिकारी तहसीलदार अधिकृत यक्ष के समान नियत समय पर कौड़ी-कौड़ी उगाह कर यक्षराज कलक्टर के पास भेज देते हैं (भट्ट नि०–बा० भट्ट, 11)।
(2) अत्यन्त सामान्य एवं तुच्छ धनराशि। प्र० कौड़ी-कौड़ी पर लोग बेईमानी करने लग गये हैं (इंस्टा०–भग० वर्मा, 76)।

कौड़ी-कौड़ी अदा करना, -चुकाना, -देना, -भरना, -भरपाई करना—कर्ज की पूरी रकम चुका देना। प्र० बाबूजी, मुझे एक महीने का समय और दे दीजिए, मैं आपकी कौड़ी-कौड़ी अदा कर दूंगा।

कौड़ी-कौड़ी को तंग होना, -हैरान होना—बहुत तंगिश में होना। प्र० इधर बरसों से सुरेश कौड़ी-कौड़ी को तंग हो रहा है।

कौड़ी-कौड़ी को मुहताज करना या होना—एकदम निर्धन कर देना या होना। प्र० कौड़ी-कौड़ी को करूँ, मैं सब को मुहताज (भा० ग्रं० (1) –भारतेन्दु, 472); उसके पीछे ऐसे दीवाने हुए कि कौड़ी-कौड़ी को मुहताज हो गये × × (अमृत०–नागर, 25)।

कौड़ी-कौड़ी को हैरान होना—दे० कौड़ी-कौड़ी को तंग होना।

कौड़ी-कौड़ी चुकाना—दे० कौड़ी-कौड़ी अदा करना।

कौड़ी-कौड़ी जोड़ना—थोड़ा-थोड़ा करके संग्रह करना। प्र० कौड़ी-कौड़ी जारि कै जोरें लाख करोरि (कबीर ग्रंथा०–कबीर, 251); लंपट, धूत, पूत दमरी कौ, कौड़ी-कौड़ी जोरै (सू० सा०–सूर, 186)।

कौड़ी-कौड़ी दांत से उठाना, -पकड़ना—बहुत कंजूस होना। प्र० नाली में गिरी हुई कौड़ी को दाँत से उठाने वाले मक्खीचूसों की हिजो किया चाहें तो भी लिखते-लिखते थक जायं (प्र० पी०–प्र० ना० मि०, 77); हजारों रुपये महीने की आमदनी है मिस साहब, मगर एक-एक कौड़ी दाँत से पकड़ती हैं (मान० (1)–प्रेमचंद, 275)।

कौड़ी-कौड़ी दांत से पकड़ना—दे० कौड़ी-कौड़ी दाँत से उठाना।

कौड़ी-कौड़ी देखना—ज़रा-ज़रा से खर्च पर ध्यान देना। प्र० मैं तो कौड़ी-कौड़ी देखूं पर किसी को कोई गम ही नहीं, जितना चाहे उतना खर्च हो जाये।

कौड़ी-कौड़ी देना—दे० कौड़ी-कौड़ी अदा करना।

कौड़ी-कौड़ी भरना—दे० कौड़ी-कौड़ी अदा करना।

कौड़ी-कौड़ी भर पाई करना—दे० कौड़ी-कौड़ी अदा करना।

कौड़ी-कौड़ी मलना—एक-एक कौड़ी की चिन्ता करना।

कौड़ी-कौड़ी लेना—पूरा लेना। प्र० वह अपनी कौड़ी-कौड़ी लेकर रहेगा, कुछ न छोड़ेगा।

कौड़ी-फेरा करना, -लगाना—बार-बार आना-जाना। प्र० आज तीन दिनों से रामेश्वर न जाने क्यों कौड़ी-फेरा कर रहा है।

कौड़ी-फेरा लगाना—दे० कौड़ी-फेरा करना।

कौड़े करना—कोई चीज बेचकर नगद दाम वसूल करना। प्र० मैं तो इन पेटियों को बेचकर कौड़े करना चाहता हूँ।

कौन किसका होता है—कोई किसी का सहायक नहीं होता। प्र० सब देख लिया। दुनिया में कौन किसका होता है?

कौन मुंह दिखाना—लज्जा के मारे सामने न जाना। प्र० यदि कलंकिता हुई कीर्ति तो मुँह कैसे दिखलाऊँगी (वैदेही०–हरिऔध, 60)।

कौन मुंह लेकर—किस साहस पर, किस भरोसे। प्र० ग्रीखम जरत छाँड़ि जो जाई। पावस आव कवन मुख लाई (पद०–जायसी, 35/7); देहउं उतरु कौनु मुहु लाई, आयउँ कुसल कुअंर पहुँचाई (राम० (अ)–तुलसी, 510); अब वह कौन मुंह लेकर उसके पास जाय (मान० (1)–प्रेमचंद, 173)।

कौन-सी चक्की का पीसा खाते हो—किस पौष्टिक भोजन के कारण शरीर ऐसा स्वस्थ और पुष्ट है? प्र० अरे भाई तुम कौन-सी चक्की का पीसा खाते हो, ज़रा मुझे भी तो बताना।

कौन होना—अनधिकारी होना। प्र० तुम मंत्रीजी से मिलोगे या नहीं, यह आदेश देने वाले वे कौन होने हैं?

कौर उठाना—खाना। प्र० इस लौंडे की जीभ तुमने ऐसी बिगाड़ दी है कि बिना दूध के कौर ही नहीं उठाता (रंग०–प्रेमचंद, 11)।

कौर का मारा—भोजन को तरसनेवाला; भूखा। प्र० यह बेचारा कौर का मारा है, दो रोटियाँ दे दो।

कौर छीनना—किसी का अंश दबा लेना। प्र० अब क्या आप मेरा कौर भी छीन लेंगे?

कौर बनना—शिकार होना; किसी के कब्जे या कुप्रभाव में आना। प्र० मैंने अपना जीवन इन्हीं पर समर्पण कर दिया था और अब इन्हें मझधार में छोड़े जाता हूँ। इसलिए कि वे विपत्ति भंवर के कौर बन जायं (मान० (7)–प्रेमचंद, 259)।

कौर-कौर के लिए—जीविका के लिए; थोड़े-थोड़े से लाभ के लिए। प्र० कौर-कौर कारन कुबुद्धि, जड़, किते सहत अपमान (सू० सा०–सूर, 103)।

कौर-ग्रास न करना—भूखा रह जाना। प्र० कल से ही इस लड़की ने कौर-ग्रास नहीं किया है।

कौरा खाना—आश्रित होना। प्र० वह क्या किसी का कौरा खाता है जो इतनी बातें सुनेगा?

कौरा लगना, कौले लगना या लगाना—(1) दरवाज़े के पास छिपकर बात सुनना; किसी घात में खड़े रहना। प्र० कौरैं लग्यौ कितहूँ कहि दैहै सो जाई (सूर–ब्र० सू० को०); कब से वह कौरा लगी बाहर बैठके में होने वाली बात सुन रही है।
(2) रूठकर कोने में खड़ा होना। प्र० लड़का कब से कौरे लगा खड़ा है, फुसला लो।

कौरी देना—फसल कटने के बाद मजदूरों को अंकवार भर अनाज देना।

कौरी भर कर मिलना—आलिंगन करना।

कौल का छल्ला—व्याह की अंगूठी।

कौल का धनी, -पक्का, -पूरा, -सच्चा—कही बात को पूरी करनेवाला। प्र० मालवीय जी कौल के धनी थे।

कौल का पक्का—दे० कौल का धनी।

कौल का पूरा—दे० कौल का धनी।

कौल का सच्चा—दे० कौल का धनी।

कौल तोड़ना, -से फिरना—वायदा पूरा न करना। प्र० पहले कौल तुमने तोड़ा, उसने नहीं।

कौल देना—किसी को वचन देना। प्र० किसी ने तुम्हें कौल दिया था?

कौल पर जमना—कही बात पर अड़े रहना। प्र० चाचा तो कौल पर जमे हैं कि बायीं ओर वाला हिस्सा ही लेंगे।

कौल लेना—वचन-बद्ध कर लेना। प्र० उसने माँ से कौल ले लिया है।

कौल से फिरना—दे० कौल तोड़ना।

कौल हारना—वचन-बद्ध होना। प्र० हमारे बुजुर्गों से जब यह कहा गया, तब उन्होंने कुछ करना मुनासिब न समझा; क्योंकि शाहंशाह शाहजहाँ अपना कौल हार चुके हैं (इंस्टा०—भग० वर्मा, 83)।

कौल करार करना या होना—परस्पर प्रतिज्ञा करना। प्र० यह सब कौल-करार तो मुझसे न होगा।

कौला सींचना—पूजा आदि के अवसर पर द्वार के इधर-उधर पानी छिड़कना।

कौली भरना—(1) आलिंगन में भर लेना। प्र० इतने बरसों बाद भेंट हुई थी, माँ-बेटी कौली भर कर मिलीं।
(2) लालच करना। प्र० हर चीज़ के लिए कौली न भरो तो कोई हर्ज़ है।

कौले लगना या लगाना—दे० कौरा लगना।

क्या—(1) नहीं; कुछ नहीं। प्र० शीतल क्या गाता है, तुम राम प्रसाद को सुनो तो तबीयत खुश हो जाये।
(2) बहुत अच्छा। प्र० शीतल क्या गाता है। सुनो तो तबीयत खुश हो जाए।

क्या उन्हीं के सिर टीका है?—क्यों वे ही कर सकते हैं, और कोई नहीं?

क्या करते क्या हो जाना—कुछ और करते कुछ और ही हो जाना। प्र० मैंने ऐसा कभी सोचा भी न था, क्या करते क्या हो गया।

क्या कहना है, क्या खूब, क्या बात है—प्रशंसासूचक वाक्य, वाह वाह, बहुत अच्छा। प्र० वाह! क्या कहना है! पंडित रविशंकर के सितार वादन का मुकाबला और कोई नहीं कर सकता।

क्या का क्या—कुछ सर्वथा भिन्न। प्र० देखो तो सही, इस लड़की ने क्या का क्या बना दिया।

क्या कुछ, क्या-क्या कुछ—सब कुछ; बहुत कुछ। प्र० उस दिन भाभी ने क्या कुछ नहीं कह डाला।

क्या खाकर—किस हिम्मत से? प्र० इसमें क्या संदेह है भाई। मालिक क्या खाके लेंगे (गोदान—प्रेमचंद, 8); मैया की बातें, राम भजो, इन बातों में क्या धरा है, हमें क्या खा के रास्ता बताएंगे (मा—कौशिक, 118)।

क्या खूब—दे० क्या कहना है।

क्या चीज़ है—(1) नाचीज़ है, तुच्छ है। प्र० हंह, यह भी क्या चीज़ है, इसे कौन लेगा!
(2) श्रेष्ठ है। प्र० वाह, क्या चीज़ है, तबीयत खुश हो गयी।

क्या जानना?—कुछ न समझना। प्र० मुझे उसकी रत्ती भर परवाह नहीं है मैं उसे क्या जानता हूँ?

क्या जाने—पता नहीं। प्र० क्या जाने वह आज आयेगा भी या नहीं।

क्या ठिकाना—कोई भरोसा नहीं। प्र० बल्ली साव का क्या ठिकाना, माल पहुँचायें न पहुँचायें, तुम खुद जाकर ले आओ।

***क्या थे और क्या हो गये**—स्थिति में बहुत बड़ा परिवर्तन हो गया है।

क्या पड़ी है?—कोई गरज़ नहीं होना। प्र० किसी के जी को दर्द नहीं तो मुझे ही क्या पड़ी है?

क्या पूछना है?—(1) बहुत खूब। प्र० क्या यह चित्र तुमने बनाया है? वाह, क्या पूछना है, बहुत अच्छा।
(2) भर्त्सना करना (व्यंग्य में)। प्र० वाह क्या पूछना है, आपका तो हर काम तो ऐसे ही कमाल का होता है।

क्या बात है—दे० क्या कहना है।

क्या मुंह लेकर, -है—ऐसी हिम्मत या स्थिति नहीं है। प्र० मगर करें क्या, मजबूरी है, क्या मुंह लेकर आवें? (राधा० ग्रंथा०—राधा० दास, 720)।

क्या मुंह है—दे० क्या मुंह लेकर।

क्या में क्या हो जाना—सर्वथा विपरीत कुछ हो जाना। प्र० कहाँ ब्याह की तैयारियाँ हो रही थीं, कहाँ क्या का क्या हो गया।

क्या यह और क्या वह—दोनों बराबर। प्र० क्या यह और क्या वह, मेरे लिये तो दोनों ही बराबर हैं।

क्या से क्या हो गया—बिलकुल बदल गया। प्र० दो दिन के अन्दर यह शहर क्या से क्या हो गया, बिलकुल खंडहर हो गया है अब।*

क्या-क्या कुछ—दे० क्या कुछ।

क्या-क्या न करना या होना—सब कुछ करना या होना। प्र० मैंने इस लड़के के लिए क्या-क्या नहीं किया पर इसने कभी उसे न माना।

क्या-क्या नहीं कहा—सब कुछ कहा। प्र० उस कल के छोकरे ने क्या-क्या नहीं कहा!

क्यों नहीं—ऐसा ही है, ठीक कहते हो; निःसन्देह। प्र० क्यों नहीं, आप बिल्कुल ठीक फरमा रहे हैं, मैं भी ऐसा ही समझता हूँ।

क्रम-क्रम करके, -से—धीरे-धीरे। प्र० क्रम-क्रम करके उसने आज इतना धन कमा लिया है कि भविष्य की उसे कोई चिन्ता नहीं है।

क्रम-क्रम से—दे० क्रम-क्रम करके।

क्रिया बिगड़ना—धर्म-कर्म से नष्ट होना। प्र० जिसकी क्रिया बिगड़ी, उसका सब कुछ चला गया।

क्रोध का रस्सी तुड़ाना—बहुत देर से रोके हुए क्रोध का निकल पड़ने को आतुर होना या निकल पड़ना। प्र० होरी बिगड़ा। क्रोध अब रस्सियाँ तुड़ा रहा था—तू आज मार खाने पर तुली हुई है (गोदान—प्रेमचंद, 34)।

क्रोध की अटारी पर चढ़ना—बहुत गुस्सा होना। प्र० बाबू सत्यनारायण

अब आबरू-भय से मुक्त होकर क्रोध की अटारी पर चढ़ चुके थे (अमृत०—नागर, 582)।

क्रोध थूकना—क्रोध दूर करना। प्र० उसने जैसे क्रोध को थूकते हुए कहा—मुझे गुस्सा आ गया था (ब्रह्म०—दे० स०, 292)।

क्रोध पचा लेना—क्रोध को ऊपर प्रकट न होने देना। प्र० × × × बहुत जब्र करके उसने अपने क्रोध को पचा लिया (अमृत०—नागर, 303)।

क्रोध पानी होना—क्रोध एकदम गायब हो जाना। प्र० पर ज्यों हीं झुनिया लोटे का पानी लाकर रख देती और उसके पाँव दबाने लगती, उसका क्रोध पानी हो जाता (गोदान—प्रेमचन्द, 124)।

क्रोध पी जाना, -मारना—क्रोध दबा जाना। प्र० बीर सो रिस मारैं मन गहा (पद०—जायसी, 38/1); क्रोध पी-पी कर रह जाती थी। रक्त खौलने लगता था कि दुष्ट के कान उखाड़ लूँ (मान० (1)—प्रेमचन्द, 312)।

क्रोध मारना—दे० क्रोध पी जाना।

क्रोध में अंधा होना—बहुत क्रोधित होना; क्रोध में विवेक खो बैठना। प्र० मैंने तुम्हें जो भला-बुरा कहा है, उसकी माफ़ी दे दो भाई! क्रोध में आदमी अंधा हो जाता है (गोदान—प्रेमचंद, 136)।

क्रोध में आहुति डालना—क्रोध को बढ़ाना। प्र० बुलाकी की नखरे भरी हाय-हाय ने रसिक बाबू के क्रोध में आहुतियाँ डालीं × × × × (अमृत०—नागर, 391)।

क्रोध में भरा होना—अत्यन्त क्रोधित होना। प्र० वह पहले ही क्रोध में भरा हुआ था, ऊपर से तुमने उससे जाकर यह सब बातें कर दीं तो और क्या होना था।

क्रोध से जलना, -लाल होना—बहुत क्रोधित होना। प्र० राजा रिसि न होहि अस राता। सुनि होइ जूड़ न जरि कहु वाता (पद०—जायसी, 42/2); भृगुपति पुनि-सुनि निरभय वानी। रिस तन जरइ होइ बल हानी (राम० (वाल)—तुलसी, 284); श्रीकृष्ण के सुन वचन अर्जुन क्रोध से जलने लगे (जय०—गुप्त, 36)।

क्रोध से लाल होना—दे० क्रोध से जलना।

क्रोध-भाजन बनना—किसी के क्रोध का शिकार बनना। प्र० तुम ऐसे काम ही क्यों करते हो जिससे बड़ों के क्रोध-भाजन बनो।

क्वारछल उतरना या उतारना, क्वारपन उतरना या उतारना—(1) विवाह होना।

(2) प्रथम समागम होना।

क्वारपन उतरना या उतारना—दे० क्वारछल उतरना या उतारना।

क्ष

क्षण भर में, -मात्र में—बहुत कम समय में; जल्दी ही। प्र० छन महुँ सब कें प्रसंसि गे चतुर सुआर बिनीत (राम (वाल) तुलसी, 338); नहीं-नहीं; छन भर में आता हूँ, तू चल तो (गोदान—प्रेमचंद, 131)।

क्षण मात्र में—दे० क्षण भर में।

क्षण-क्षण—हर समय। प्र० क्षण-क्षण उनको अपने बेटे की याद आती रहती है।

क्षण-भंगुर—अस्थायी। प्र० यह जीवन तो क्षण-भंगुर है, उससे अपनी माया न बढ़ाओ।

क्षीण-वृत्ति होना—बिना काम के होना। प्र० पंडित जी तो आजकल क्षीण वृत्ति हो रहे हैं, आपकी नज़र में कोई काम हो तो बताइयेगा।

क्षीर-शर्करा होना—अत्यन्त घनिष्ठ मेल होना। प्र० इनकी मित्रता तो क्षीर-शर्करा है।

क्षेत्र संन्यास लेना—किसी निश्चित सीमा के भीतर रहने का प्रण करना।

(किसी) क्षेत्र से अलग होना—किसी कार्य से अपने आप को असंबद्ध करना। प्र० इसके बाद मुस्तफा साहब सार्वजनिक क्षेत्र से अलग हो गये।

ख

खंक होना, खंग होना—(1) दुर्बल होना। प्र० क्या बात है आजकल बहुत खंक हो रहे हो।

(2) हलका होना। प्र० यह लोटा तो बड़ा खंक है।

(3) लालची या भुक्खड़ होना। प्र० बड़ा खंक है यह आदमी।

खंग होना—दे० खंक होना।

खंगर लगना—कमज़ोरी या सूखने का रोग होना। प्र० तुम्हें खंगर लगा है तो उसका इलाज तो करवाना चाहिये तुम्हें।

खंगाल डालना—चोरी से मार डालना। प्र० सिपाहियों ने चुपके से तंबू में घुसकर सेनापति को खंगाल डाला।

खंगाल ले जाना—सब कुछ ले जाना। प्र० कल रात चोर मेरे घर में घुसकर सब खंगाल ले गये।

खंजन देखना—शुभ शकुन होना। प्र० आज खंजन देखा है कुछ अच्छा घटना चाहिये।

खंड-खंड करना—चकनाचूर कर देना, नष्ट कर देना। प्र० शंकर देव ने मेरी सारी आशाओं को खंड-खंड कर दिया।

खंडहर के भाग्य जगना—उपेक्षित वस्तु की चाह होना। प्र० आज मेरी पूछ कैसे हो गई, खंडहर के भाग जगे हैं लगता है।

खंडी करना—किस्त बाँधना। प्र० मैं खंडी कर देता हूँ, तुम महीने-महीने अपना रुपया चुका दिया करना।

खंडे उस्तरे से सिर मूड़ना—सताना। प्र० तुम लोग तो हमेशा खंडे उस्तरे से सिर मूड़ने पर उतारू रहते हो।

खंदक तैयार करना—अपने या दूसरे के अहित के लिए कार्य करना। प्र० तुमने अपनी खंदक खुद तैयार की है, फिर दूसरों को दोष क्यों देते हो?

खंदक भरना—पेट भरना। प्र० खंदक भरे तब तो काम आगे भी बढ़े।

खंदक में कूद पड़ना—कठिन परिस्थिति में जान-बूझकर पड़ना। प्र० उसने तो आगा देखा न पीछा, खंदक में कूद पड़ा।

खचाखच कसना, -भरना—खूब कस-कस कर भरना । प्र० आज तो हॉल खचाखच भरा है ।

खचाखच भरना—दे० खचाखच कसना ।

खचाखच भरा होना—बहुत भरा होना । प्र० उस दिन मंडुवा दर्शकों से खचाखच भर गया (पैंतरे-अश्क, 18) ।

खचाखच मचना—मारकाट होना । प्र० है खचाखच मची हुई तो क्या खींच लें पाँव हम न खाल खिंचे (चुभते०–हरिऔध, 12) ।

खजाना—(1) भंडार; किसी विषय का बड़ा जानकार । प्र० किस्से कहानियों का तो मैं खजाना हूँ (आज़ाद०–प्रेमचंद, 97) ।
(2) मालगुजारी की रकम ।

खजाना मारना—बहुत धन लूटना । प्र० आज तो खजाना मारा है बच्चू ने ।

खजाने का मुँह खोल देना—उदारतापूर्वक दान करना । प्र० पोते के जन्म पर राजा साहब ने खजाने का मुँह खोल दिया ।

खजाने का साँप—धन को बिलकुल न खर्च करनेवाला व्यक्ति । प्र० मैं तो खजाने का साँप हो रहा (मान० (3)–प्रेमचंद, 185) ।

खट से—तुरन्त, तत्काल । प्र० बात तो तुम समझते नहीं, खट से बीच में बोल देते हो ।

खटक जाना—मनमुटाव हो जाना; झगड़ा हो जाना । प्र० रामदीन और सुखलाल में आजकल खटक गयी है, दोनों एक-दूसरे से कन्नी काटते हैं ।

खटकना—(1) प्रिय लगना । प्र० अरे हाँ, बड़े दिल की बात चलाई तुमने । कोई खटक गई है क्या मन में ? (भारती०–रां० रा०, 90) ।
(2) अप्रिय लगना; आशंका होना; मनमुटाव होना । प्र० मुझे उसका यह आचरण बहुत खटकता है ।
(3) अलग-अलग रहना । प्र० जब देखो तब तुम दोनों में खटकती रहती है ।

खटकरमी बनना या होना—(1) ऊपरी दिखावा करनेवाला । प्र० ऐसा खटकरमी तो मैंने कहीं नहीं देखा ।
(2) बहुत तरह के धंधे करनेवाला । प्र० बड़ा खटकरमी है यह, जाने क्या-क्या धंधा करता रहता है यह ।

खटका छूटना—अंदेशा न रह जाना । प्र० वह आ जाय तो मेरा खटका छूटे ।

खटका बाँधना—चिड़ियों को भगाने के लिए घंटी बाँधना । प्र० अनारों में खटका बाँध दो नहीं तो कुछ न बचेगा ।

खटके पर होना—खटके के सहारे रहना । प्र० तुम्हारे ये कान के बुंदे खटके पर हैं क्या ?

खटखट करना या होना, -चलना, खटपट करना या होना—झगड़ा करना या होना । प्र० कुछ पिय यों खटपट भई टपटप टपकत नैन (राधा० ग्रंथा०–राधा० दास, 706); दो रोज से घर में पति-पत्नी की खटखट चल रही है (बूंद०–नागर, 102) ।

खटखट चलना—दे० खटखट करना या होना ।

खटखटाना—याद दिलाना । प्र० उन्हें कल आने के लिये एक बार फिर खटखटा देना ।

खटपट करना या होना—दे० खटखट करना या होना ।

खटपाटी लगना, -लेना, खटबाटू लगना, -लेना—रूठकर खाना-पीना तथा काम-धंधा छोड़कर लेट रहना । प्र० मैं तोहि लागि लेब खटबाटू (पद०–जायसी, 34/7); लौटि-लौटि परत करोट खटपाटी लै-लै, सूखे जल सफरी ज्यों सेज पै फरफराति (शब्द०–देव, 98) ।

खटपाटी लेना—दे० खटपाटी लगना ।

खटबाटू लगना—दे० खटपाटी लगना ।

खटबाटू लेना—दे० खटपाटी लगना ।

खटमिट्ठा, खट्टा-मीठा—प्रिय-अप्रिय; परस्पर प्रतिकूल । प्र० × × थोड़ा अन्तर-प्रादेशिकता का अलगाव और एकता का खटमिट्ठा मजा मैं × × × लिया करता था (अमृत०–नागर, 225); दारोगा जी ने तमंचे को अपने जेब में रखते हुए एक विचित्र खटमिठे सुर में कहा– × × (दे० दु०–शिव०, 97) ।

खटराग—झंझट । प्र० अपने मिलने वालों में से एक कोई बड़े पढ़े लिखे × × बूढ़े लाग यह खटराग लाए (इंशा०–इंशा०, 89); हम राग अलापते हैं मेल जोल का, मगर न जाने कहाँ का खटराग पेट में भरा पड़ा है (चुभते० (भू०)–हरिऔध, 5) ।

खटराग करना, -फैलाना, -मचाना—(1) बाहरी आडंबर फैलाना । प्र० कुछ न छुआछूत से बचकर हुआ किस लिये खटराग फैलाये बड़े (चुभते०–हरिऔध, 122) ।
(2) झंझट का काम शुरू करना । प्र० तुमने भी यह क्या खटराग फैला लिया ?

खटराग फैलाना—दे० खटराग करना ।

खटराग मचाना—दे० खटराग करना ।

खटराग में पड़ना—झंझट में पड़ना । प्र० मैं बड़े खटराग में पड़ गया हूँ इधर ।

खटराग लाना—झगड़ा-झंझट खड़ा करना । प्र० तुम हमेशा बड़ा खटराग ले आते हो ।

खटाई में डालना, -देना—(1) दुविधा में छोड़ देना । प्र० तुमने यह सवाल पैदा करके मुझे तो खटाई में डाल दिया ।
(2) अधूरा काम छोड़ देना । प्र० तुम हमेशा काम में खटाई डालकर खुद तो हट जाते हो और दूसरों के लिये झंझट खड़ी कर देते हो ।
(3) काम के बीच में झंझट खड़ी करना । प्र० देखिये प्रयोग (2)

खटाई में देना—दे० खटाई में डालना ।

खटाई में पड़ना, -फूलना, -सीझना—दुविधा में पड़ना । प्र० यह कल का पुतला जो अपने उस खेलाड़ी की सुध रखे तो खटाई में क्यों पड़े ? (इंशा०–इंशा०, 87); पड़ गया किस लिये खटाई में क्यों चढ़ी रूप रंग की बाई (चुभते०–हरिऔध, 162) ।

खटाई में फूलना—दे० खटाई में पड़ना ।

खटाई में सीझना—दे० खटाई में पड़ना ।

खटापटी रहना या होना—झगड़ा तकरार होना। प्र० उन दोनों में तो हमेशा ही खटापटी रहती है।

खटिया तोड़ना—(1) निश्चिन्त होकर आराम करना। प्र० बहुत दिनां लग खटिया तोड़िन हिन्दुन का काहें जगाय नाहीं देत्यो (भा० ग्रं० (3)–भारतेन्दु, 863)।

(2) बेकार होना। प्र० देखिए प्रयोग (1)।

खटिया निकलना—मर जाना। प्र० अल्लाह करे, अठवारे ही में खटिया मचमचाती निकले (आज़ाद०–प्रेमचंद, 416)।

खटिया मचमचाती जाना—दे० खटिया हचकती जाना।

खटिया सेना—बीमारी के कारण खाट पर ही पड़े रहना। प्र० करूँगा क्या, दिन भर पड़े खटिया सेता हूँ।

खटिया हचकती जाना—मर कर टिकठी पर जाना (स्त्रियों द्वारा प्रयुक्त एक गाली)।

खट्टा अंगूर होना—(1) ऐसी वस्तु जिससे संतोष न होने वाला हो। प्र० भ्रमर, इधर मत भटकना, ये खट्टे अंगूर, लेना चम्पक-गंध तुम, किन्तु दूर ही दूर (साकेत–गुप्त, 295)।

(2) वह वस्तु जो सहज ही प्राप्य न हो।

खट्टा कर देना, -बना देना—(1) खिन्न या दुःखी बना देना। प्र० पर उन बुआ की याद जैसे मेरे सब कुछ को खट्टा बना देती है (त्याग०–जैनेन्द्र, 5)।

(2) नष्ट कर देना, बिगाड़ देना। प्र० मैं इसके प्रेम ही को खट्टा किए देता हूँ, ताकि इधर से हमेशा के लिए डर छूट जाय (लाल०–जी०, 62)।

खट्टा खाना, -रहना—नाराज़ रहना। प्र० यात्रा के समय दधि और मिष्टान्न खाते हैं, खटाई नहीं, इसलिये कि शायद खट्टा खाने का मुहावरा सार्थक न हो जाय (मेरे०–गुलाब०, 125)।

खट्टा बना देना—दे० खट्टा कर देना।

खट्टा रहना—दे० खट्टा खाना।

खट्टा होना—(1) अप्रसन्न होना। प्र० सलीम ने खट्टे होकर कहा—पंडित जी के बस की बात थोड़े ही है (कर्म०–प्रेमचंद, 4)।

(2) स्वभाव में कड़ुवाहट और असंतोष होना। प्र० बहुत से लोग जेल जाकर खट्टे हो जाते हैं—उनका किसी में विश्वास नहीं रहता (शेखर० (2)–अज्ञेय, 110)।

खट्टा-मीठा—दे० खटमिट्ठा।

खट्टी छाछ से भी जाना—कोई लाभ न होना। प्र० अच्छा बेटा ब्याहा; मैं तो खट्टी छाछ से भी गया।

खट्टी डकार आना—अपच होना; पित्त बिगड़ने के कारण डकार के साथ पित्त का स्वाद आना।

खट्टी-मीठी कहना, -बातें कहना—भला या बुरा कहना। प्र० सूर निरखि नंदरानि भ्रमित भई, कहति न मीठी-खाटी (सू० सा०–सूर, 872); रहि गए कहत न खाटी मीठी (राम० (बाल)–तुलसी, 294); कई तरह की खट्टी-मीठी कहानियाँ उस झुरमुट के बारे में मैं बचपन से ही सुनता आया था (बल०–नागा०, 137)।

खट्टी-मीठी बातें कहना—दे० खट्टी-मीठी कहना।

खट्टी-मीठी बातें सुनना या सुनाना—भली-बुरी बातें बरदाश्त करना या कहना। प्र० उनकी इतनी खट्टी-मीठी बातें कौन सुनेगा?

खट्टे मन से—कुढ़कर, क्षुब्ध होकर। प्र० मैंने खट्टे मन से कहा—इसी तरह अगर तुम अपने नौकरों को भी आठ आने रोज़ इनाम दिया करो तो शायद इससे ज्यादा तमीज़दार हो जायं (मान० (1) प्रेमचंद, 106)।

खट्टे-मीठे दिन—दुःख-सुख के दिन। प्र० जिन्दगी में खट्टे-मीठे दिन लगे ही रहते हैं।

खड़खड़उआ—कलदार चाँदी का रुपया। प्र० कुछ खड़खड़उआ भी देंगे या खाली बातों में भुलाएंगे?

खड़खड़ाना—आड़ें हाथों लेना; झकझोरना। प्र० वह बहुत बकबक करता रहता है, एक दिन जरा उसे खड़खड़ाओ।

खड़-पेंच निकालना—दोष दिखलाते रहना। प्र० तुम बैठे-बैठे एक न एक खड़-पेंच निकालते रहो।

खड़मंडल करना या होना—(1) कोई काम को बीच में गड़बड़ करना या होना। प्र० कैसी बढ़िया गोष्ठी जमी हुई थी, इसने बीच में जाकर खड़मंडल कर दिया।

(2) उपद्रव करना या होना। प्र० तुम लोग इतना खड़मंडल क्यों किये हो जी?

खड़ा करके दिखाना—साफ इन्कार करना, अंगूठा दिखा देना। प्र० तुम जाना चाहते हो जाओ, पर वे कुछ न देंगे, खड़ा करके दिखा देंगे।

खड़ा (खड़ी) करना—(1) कच्ची सिलाई करके कपड़ा तैयार कर लेना। प्र० पहले कुर्त्ता खड़ा कर लो, फिर मशीन चलाना।

(2) चुनाव आदि में उम्मीदवार को चुनाव लड़ाना। प्र० इस बार क्या लालबहादुर शास्त्री के लड़के को खड़ा कर रहे हैं?

(3) बना लेना, तैयार करना, संगठित करना। प्र० ज्वाला का जो रवैया है उससे तो यह उम्मीद नहीं की जा सकती कि ज्वाला कभी जमीन-जायदाद खड़ी कर सकेगा या कुछ जमा कर सकेगा (भूले०–भग० वर्मा, 159)।

(4) परिस्थिति उत्पन्न करना। प्र० यह तुमने एक और झमेला खड़ा कर दिया।

(5) प्रेरित करना। प्र० बड़ी मुश्किल से मैं उसे खड़ा कर पाया हूँ, तुम बीच में विघ्न मत डालना।

खड़ा खेत, खड़ी फसल—फसल लगा खेत। प्र० खड़ा खेत कोई तहस-नहस कर दे तो किसान पर क्या बीतेगी, सोचो तो।

खड़ा जवाब—साफ इन्कार। प्र० ऐसा खड़ा जवाब न दो मालिक।

खड़ा दाँव—आखिरी दाँव जो जुआरी उठते-उठते लगाता है।

खड़ा दोना—किसी पीर को चढ़ाई जाने वाली मिठाई आदि।

खड़ा नक्शा—इमारत के खड़े रूप का नक्शा।

खड़ा रह सकना—तुलना या मुकाबिले में टिकना। प्र० जवाहर लाल के

सामने कोई खड़ा नहीं रह सकता था।

खड़ा रहना—(1) मौजूद रहना। प्र० इधर जाति का झगड़ा अभी खड़ा ही था।

(2) प्रतीक्षा करना; रुकना। प्र० आखिर कोई कब तक आपके आसरे खड़ा रहे।

खड़ा रुपया—पूरा रुपया। प्र० मेरे पास खड़ा रुपया है, उसे न तुड़ाऊँगा।

खड़ा सियापा—किसी की मृत्यु के बाद खड़े होकर रोने की रस्म।

खड़ा होना—(1) सहायक होना। प्र० कृष्ण प्रसाद के खड़े होने से, सारा ब्याह निबट गया।

(2) किसी वस्तु का बनकर तैयार होना। प्र० देखते-देखते दुमंजिला मकान बनकर खड़ा हो गया।

(3) स्थित होना। प्र० जब तक भारत विश्व के स्वतंत्र देशों में सर ऊँचा करके खड़ा नहीं होता, तब तक कुछ मतलब नहीं बन सकता।

(4) उम्मीदवार होना। प्र० ताल्लुकेदारों को महाजनों से कर्ज दिलाना, चुनाव के अवसर पर उम्मीदवार खड़े करना, यही उनका व्यवसाय था (गोदान–प्रेमचंद, 94)।

(5) बीमारी के बाद स्वास्थ्य लाभ करना। प्र० भगवान् से यही प्रार्थना है कि किसी तरह जल्दी से ये खड़े हो जायें।

खड़ा-पड़ा पीटना—दुःख के कारण हर समय रोते रहना।

खड़िया में कोयला—बेमेल वस्तु या बात। प्र० क्या खड़िया में कोयला डाल रहे हो, चुप बैठो।

खड़ींच रखना—शत्रुता रखना। प्र० घर में बुआ की किसी से नहीं पटती, सबसे खड़ींच रखती हैं।

खड़ी खाट पर सोना—बहुत गुस्सा होना। प्र० लो, ये महारानी तो खड़ी खाट पर सो रही हैं।

खड़ी खेती चुगवाना—बहुत बड़ा नुकसान करवाना। प्र० बस यह समझ लो कि कैलास ने मेरी खड़ी खेती चुगवा दी।

खड़ी जवानी—पूर्ण यौवन। प्र० क्षत्रिय महाराज की कृपा से खड़ी जवानी हाथ लगी है (गंगा०–उग्र, 29)।

खड़ी दोपहर—तेज धूप का समय। प्र० इस खड़ी दोपहर में कौन उतनी दूर जायेगा।

खड़ी पछाड़ें खाना—दुःख के मारे रोते-रोते गिर पड़ना। प्र० बेचारी माँ खड़ी पछाड़ें खाती रहीं और हम सब निरुपाय देखते रहे।

खड़ी फसल—दे० खड़ा खेत।

खड़ी राग—ऐसी राग जिसमें परुषता या ज़ोर अधिक हो। प्र० शंकरा और भूपाली खड़ी रागों में ही आती हैं।

खड़ी लगाना—खड़े-खड़े गोता लगाना। प्र० × × बजरे को देखते ही हिम्मत बंध गयी। जोर से खड़ी लगानी शुरू की (आज़ाद०–प्रेमचंद, 157)।

खड़ी सवारी आना—तुरन्त लौटने को तैयार आना। प्र० वह तो खड़ी सवारी आया था, मुश्किल से दस मिनट रुका।

खड़ी हुंडी—वह हुंडी जिसका भुगतान रोक दिया गया हो।

खड़े आए और खड़े-खड़े चले गये—तुरन्त वापस चले गये। प्र० मदन बाबू उस दिन खड़े आये और खड़े-खड़े चले गये।

खड़े का खड़ा—समूचा। प्र० अरे, तो क्या खड़े का खड़ा केला निगल जाओगे।

खड़े को भी जगह न मिलना—खड़े रहने का स्थान भी न होना। प्र० नेहरू जी की मीटिंग में खड़े को भी जगह न मिलती थी।

खड़े घाट कपड़े धुलवाना या धोना, -धोना—बिना भट्ठी चढ़वाए जल्दी से कपड़े धुलवा लेना या धोना। प्र० ये कपड़े खड़े घाट धुलवाने होंगे।

खड़े घाट धोना- दे० खड़े घाट कपड़े धुलवाना या धोना।

खड़े निगल जाना, -लील जाना—क्रोध में कुछ भी न बाकी छोड़ना। प्र० लगता था कि वे मुझे खड़े निगल जायेंगे।

खड़े पांव—(1) तुरन्त। प्र० बेटी, ऐसी बातों के फैसले खड़े पैरों थोड़े ही किये जाते हैं (झूठा० (1)–यशपाल, 434)।

(2) खड़ा होकर। प्र० कितनी दूर तक खड़े पाँव जाओगे सीट तो है बैठ जाओ।

खड़े पानी भी न पीना—तुरन्त लौट जाना। प्र० उसने तो खड़े पानी भी न पीया, तुरन्त चला गया।

खड़े पीर का रोज़ा रखना—एकदम न बैठना। प्र० तुमने क्या खड़े पीर का रोज़ा रख रखा है?

खड़े बाल निगलना—अप्रिय या अनुचित काम करना। प्र० हमीं में × × आँख में उँगली करने वाले हैं, खड़े बाल निगलने वाले हैं (चुभते० (5)–हरिऔध, 4)।

खड़े रखना—ठीक से न तौलना। प्र० साहू की दुकान पर मत जाना, वह खड़े रखता है।

खड़े लील जाना—दे० खड़े निगल जाना।

खड़े सिर डुबाना—बहुत प्रभाव में रखना। प्र० चिन्ता हमें खड़े सिर डुबा रही थी (ये कोठे०–नागर, 39)।

खड़े-खड़े—(1) तुरन्त, झटपट। प्र० कर्ज की अदायगी के लिए ही × × वे अपनी तमाम जायदाद खड़े-खड़े औने-पौने करने लगे (बूंद०–नागर, 578); और खड़े-खड़े उनसे कई लेख पं० रामशंकर त्रिपाठी ने लिखा लिये (पद्म० के पत्र–पद्म० शर्मा, 143)।

(2) ज़रा देर के लिए; बात की बात में। प्र० कमलाकांत जी खड़े-खड़े आये थे, तुरन्त ही चले गये।

खड़े-खड़े बेच लाना—बड़ा चालाक होना। प्र० यह चाहें हमको तुमको खड़े-खड़े बेच लायें (कर्म०–प्रेमचंद, 152)।

खड्ग उठाना, -सम्हालना—लड़ने को प्रस्तुत होना। प्र० छत्री ह्वै करि खड्ग संभालूं, जोग जुगति दोउ साधूं (कबीर ग्रंथा०–कबीर, 217); पाशविकता खड्ग जब लेती उठा आत्मबल एक बस चलता नहीं (कुरु०–दिनकर, 20)।

खड्ग खड़कना—लड़ाई होना। प्र० देवलोक हू में अजौं मुगल पठानन के सरजा के सूरन के खग्ग खरकत हैं (भूषण ग्रंथा०–भूषण, 208)।

खड्ग सम्हालना—दे० खड्ग उठाना ।

खड्ग-हस्त होना—लड़ने के लिए प्रस्तुत होना । प्र० राणा, इस समय दुर्बल होने से काम नहीं चलेगा, आप खड्ग-हस्त होइए ।

ख़त आना, -निकलना—मुँह पर बाल जमना ।

ख़त कटना या काटना, -धरना, -बनाना, -लगना या लगाना—(1) कलम कटना या काटना ।

(2) कान के पास का बाल सीधा काटना ।

ख़त करना—घाव इत्यादि को चीरना (संस्कृत क्षत करना) । प्र० डाक्टर साहब कल फोड़ा ख़त करेंगे ।

ख़त धरना—दे० ख़त कटना ।

ख़त निकलना—दे० ख़त आना ।

ख़त बनाना—दे० ख़त कटना ।

ख़त में (से) ख़त मिलाना—जाली दस्तखत बनाना । प्र० अच्छा, तो कहने का मतलब यह कि ख़त में ख़त मिलाया गया है ।

ख़त लगना या लगाना—(1) बहुत सही-सही निशान लगाना । प्र० ठीक से ख़त लगाकर छेनी चलाना ।

(2) दे० ख़त करना ।

ख़त-किताबत करना या होना—पत्र व्यवहार करना या होना । प्र० तभी से उन दोनों के बीच खत-किताबत होती है ।

खतरा उठाना, -खतरे में पड़ना—खतरे के काम में पड़ना । प्र० भाई साहब, मैं इतना बड़ा खतरा उठाने को राजी नहीं हूँ ।

खतरा पैदा होना—खतरे की स्थिति होना । प्र० अच्छा, तो अब तुम लोगों के लिए भी खतरा पैदा हो गया है ?

खतरा मोल लेना—जानबूझकर झंझट और खतरे में पड़ना । प्र० तुम्हारा इंतजाम किए बगैर खतरा मोल लेना ठीक नहीं (कम०—कम०, 76) ।

ख़तरे का घंटा या घंटी, -बिगुल—खतरे की सूचना । प्र० आज जो कुछ हुआ, वह हमारे लिए खतरे की घंटी है (अम्ब०—रा० वे०, 68) ।

खतरे का बिगुल—दे० खतरे का घंटा या घंटी ।

खतरे की जंजीर खींचना—खतरे की सूचना देना । प्र० तो कहने का मतलब कि आपने खतरे को जंजीर खींच दी है ।

खतरे के मुँह में उंगली डालना, -हाथ डालना—जान-बूझकर विपत्ति में पड़ना । प्र० खतरे से नहीं डरता लेकिन खतरे के मुंह में उंगली डालना हिमाक़त है (गोदान—प्रेमचंद, 94) ।

खतरे के मुँह में हाथ डालना—दे० खतरे के मुँह में उंगली डालना ।

खतरे में पड़ना—दे० खतरा उठाना ।

खतरे से खाली न होना—खतरा होना । प्र० ऐसी नाजुक स्थिति में तुम्हारा वहाँ जाना खतरे से खाली नहीं है ।

ख़ता खाना—(1) धोखे में पड़ना । प्र० आश्चर्य तो इस बात का है कि तुम कैसे खता खा गये ।

(2) भूल करना । प्र० देखिए प्रयोग (1) ।

खत्ती भरना—बखार में अनाज भरना ।

खत्म करना या होना—(1) मार डालना या मर जाना । प्र० शेर ने तुम्हें खत्म कर दिया तो ?

(2) कार्य पूरा करना या होना । प्र० मैं चिट्ठी लिखना खत्म करके आता हूँ ।

खदशा में डालना—सोच-विचार में डालना । प्र० उसने आपको ऐसा क्या खदशा में डाल दिया ?

खप जाना—(1) बर्बाद हो जाना । प्र० अब क्या बचा है, घर का सब कुछ इनके भोग-विलास में खप गया ।

(2) मर जाना । प्र० प्लेग में घर के सभी लोग खप गये ।

(3) किसी व्यक्ति या वस्तु के साथ निभ जाना । प्र० इनके साथ किसी की नहीं खप सकती, तुम खुद देख लना ।

खपच्ची भरना—गोद भरना: संतान होना । प्र० न जाने कब बहू की खपच्ची भरेगी ?

खपत होना—साथ निभ सकना । प्र० उस घर में मेरी बेटी की खपत नहीं हो सकती ।

खपरैल डालना—खपरैल से छत छाना ।

खपाना—(1) उपयोग में लेना; किसी काम में लगा देना । प्र० उन्हीं के आदमी अधिकतर नौकर रक्खे गये । एक हर्रो को लच्छू ने अवश्य खपा लिया (अमृत०—नागर, 577) ।

(2) किसी वस्तु को समाप्त कर देना । प्र० यह मिठाई कई दिन की हो गयी है, आज खपा डालनी चाहिए ।

(3) मार डालना । प्र० दस-बीस को तो वही अकेला खपा देगा ।

खप्पर भरना—खप्पर में मदिरा आदि भरकर देवी को चढ़ाना । प्र० कल सुबह खप्पर भरने के लिए आ जाना बच्चा !

खफगी की नजर से देखना—गुस्सा होना । प्र० ऐसी खफगी की नजर से क्यों देखती हो ? मैंने क्या कुसूर किया है ?

खबर आ जाना—मृत्यु समीप होना । प्र० लगता है मेरी खबर आ गयी है, ज्यादा दिन नहीं बचूंगा ।

खबर उड़ना या उड़ाना, -चलना या चलाना—चर्चा फैलना या फैलाना, अफवाह होना । प्र० सवा क़बीलए लैला में उड़ गयी यह खबर (इंशा०—इंशा०, 59); बाजार में बेतार की खबरें चला करती हैं (ग़बन—प्रेमचन्द, 89) ।

खबर गरम होना—चारों ओर चर्चा होना । प्र० उसकी चर्चा रामलीला-मंडली वालों में भी कम गरम नहीं रही (अपनी०—उग्र, 61) ।

खबर चलना या चलाना—दे० खबर उड़ना या उड़ाना ।

खबर न पाना, -होना—ज्ञान न होना, कुछ पता न होना । प्र० लंका सा कोट समुंद सी खाई । तिह्र रावन घर खबरि न पाई (कबीर ग्रन्था०—कबीर, 321) ।

खबर न लेना—हाल न लेना । प्र० प्राय: साहित्य-सेवी, कवि, उपदेशक और लीडर सेवा-धर्म की डींग मारते हैं । पर घर में कोई बीमार पड़ जाय तो उसकी खबर तक नहीं लेते (पद्म० के पत्र—पद्म० शर्मा, 153) ।

खबर न होना—दे० खबर न पाना ।

खबर पड़ना—मालूम होना, होश आना । प्र० जब सब चौपट हो गया तब तुम्हें खबर पड़ी है ?

खबर फिरना—लोगों को मृत्यु की सूचना देना । प्र० जल्दी से नाऊ को बुलवाकर खबर फिरवा दो ।

खबर फैलना या फैलाना—अफवाह होना या फैलाना । प्र० तुम किसी से कहना मत नहीं तो बेकार चारों ओर खबर फैल जायगी ।

खबर लेना—(1) मारना-फटकारना । प्र० 'मरसिया' नाम का एक लेख उक्त पत्र में छपा था, यार लोगों ने छोटे लाट सर विलियम म्योर को समझाया कि यह आप ही की खबर ली गई है (गु० नि०—बा० मु० गु०; 316); मैं आज ही मुरादाबाद जाऊंगा और उस लौंडे की इस बुरी तरह खबर लूंगा कि वह भी याद करेगा (फटकारना) (मान० (2)—प्रेमचंद, 7) ।

(2) पता लगाना । प्र० खबरि लेन हम पठए नाथा (राम० (अ)—तुलसी, 630) ।

(3) खोज-पूछ करना । प्र० पर धीरे-धीरे उन लोगों ने भी खबर लेना छोड़ दिया (कम०—कम० 24) ।

खबर-गीरी करना—रखवाली करना ।

खबरदार करना या होना—सावधान करना या होना । प्र० तुमने अपनी ओर से खबरदार कर दिया, बहुत अच्छा किया ।

खब्त उछलना—पागलपन का काम करना । प्र० बैठे-विठाये उन्हें यह क्या नयी खब्त उछली ?

खब्त सवार होना—(1) सनक होना । प्र० आपको शायद अभी मालूम न हो, मैंने यहाँ एक सेवा-समिति खोल रक्खी है । कुछ दिनों से यही खब्त सवार है (रंग० (1)—प्रेमचंद, 81) ।

(2) जिद्द चढ़ जाना । प्र० इसे खब्त सवार हो गयी है, अब किसी की न सुनेगा ।

खब्त हो जाना, -खब्बत हो जाना—पागल हो जाना । प्र० खब्त हुए बिना कोई ऐसी बात नहीं कर सकता ।

खब्बत हो जाना—दे० खब्त हो जाना ।

ख़म खाना—(1) मुड़ना; झुकना । प्र० लोहे की पट्टी भी ख़म खा गयी, ताज्जुब है ।

(2) दबना, हारना । प्र० वह ख़म खाने वाली औरत नहीं है, इतना मैं कहे देती हूँ ।

ख़म ठोकना, -बजाना, -मारना—(1) लड़ने को प्रस्तुत होना । प्र० इतनी बात के सुनते ही प्रद्युम्न जी ने अति क्रोध कर कहा कि मैं बालक हूँ बैरी तेरा, अब तू लड़कर देख बल मेरा, यों सुनाय खंभ ठोंक सनमुख हुआ (प्रेम०—ल० ला०, 186); आ तो डंट जा अभी खम ठोंक के मैदान जे है (भा० ग्रं० (3) भारतेन्दु, 864) ।

(2) दृढ़ता दिखाना ।

ख़म बजाना—दे० ख़म ठोंकना ।

ख़म मारना—दे० ख़म ठोंकना ।

ख़म लेना—गाने को सुमधुर बनाने के लिए गायकों का बीच-बीच में रुककर गाना ।

ख़मीर खट्टा होना, -बिगड़ना—स्वभाव या व्यवहार में भेद पड़ना । प्र० जब एक बार खमीर खट्टा हो जाता है तो उसे ठीक करना बड़ा मुश्किल होता है ।

ख़मीर बिगड़ना—दे० ख़मीर खट्टा होना ।

ख़मीरी रोटी की तरह फूलना—(1) बहुत खुश होना । प्र० निकाह का नाम सुनते ही मौलाना खमीरी रोटी की तरह फूल गये (आज़ाद०—प्रेमचंद, 64) ।

(2) बहुत घमंड करना । प्र० बड़ी बी आजकल खमीरी रोटी की तरह फूली हुई हैं ।

खयाल करना—(1) रिआयत करना, कृपा करना । प्र० आप जरा मेरा खयाल भी कीजिएगा, भूल मत जाइएगा ।

(2) आज्ञा मानना, परवाह करना । प्र० घर में बहू है तो पर तनिक मेरा खयाल नहीं करती ।

(3) याद करना । प्र० आप कभी मेरा खयाल भी करते हैं या सामने देखकर ही प्रेम दिखलाते हैं ?

खयाल गुदगुदाना—अच्छी, मीठी बात मन में आना । प्र० एक पाँव तो कब्र में लटकाया है और खयाल यह गुदगुदाया कि दूल्हा बनें, दुलहिन लायें (आज़ाद०—प्रेमचन्द, 47–48) ।

खयाल जानना—संकोच करना । प्र० तुम पौढ़ौ मैं चरन पलोटौं, पिय जनि जानौ ख्याल (सू० सा०—सूर, 3268) ।

खयाल दौड़ना या दौड़ाना—(1) खयाल आना या करना । प्र० सोचते-सोचते खयाल दौड़ा, नहीं-नहीं बड़े लोग जो लिख गये हैं वह व्यर्थ नहीं है (भट्ट नि०—बा० भट्ट, 9) ।

(2) इरादा होना या करना । प्र० मगर उस जमाने के हुनरों की नकल करने की तरफ खयाल नहीं दौड़ाते क्योंकि वह टेढ़ी खीर है (गु० नि०—बा० मु० गु०, 248) ।

खयाल (में) पड़ना—(1) दिक करने पर उतारू होना । प्र० निपट हमारैं ख्याल परे हरि, बन मैं नितहिं खिझावत (सू० सा०—सूर, 2186) ।

(2) याद आना । प्र० देखो तो, बाजार तक गयी थी, ऊन लाने का खयाल ही नहीं पड़ा ।

खयाल पर (में) चढ़ना या चढ़ा रहना—हमेशा ध्यान में बना रहना । प्र० वह लड़का हर समय मेरे खयाल पर चढ़ा रहता है ।

ख़याल बंधना या बाँधना—कल्पना या विचार करना । प्र० बैठे-बैठे खयाल बंधा कि क्यों न एक कविता लिख डाली जाय ।

खयाल में मस्त होना—किसी विचार या भाव में लीन होना; अपने में लीन या मस्त होना । प्र० आप आज किस खयाल में मस्त हो रहे हैं ?; आप तो सदा अपने ही खयाल में मस्त रहते हैं ।

ख़याल में रहना, -पड़ना—(1) याद में रहना । प्र० काम की कोई बात तुम्हारे खयाल में नहीं रहती ?

(2) ताक में रहना । प्र० मैं इसी खयाल में हूँ कि किसी तरह वह

किताब हाथ लग जाये।

खयाल में लाना—(1) रिआयत करना; कृपा करना। प्र० आप कभी मुझे क्यों नहीं खयाल में लाते ?
(2) महत्त्वपूर्ण समझना। प्र० देखिए प्रयोग (1)।

खयाल रखना—ध्यान रखना; देखते-भालते रहना। प्र० इस लड़की का भी खयाल रखिएगा बहन जी।

खयाल रहना—ध्यान रहना; याद रहना। प्र० आपको किसी बात का खयाल नहीं रहता ?; मुझे खयाल तो था पर कहने का मौका न था।

खयाल शरीफ में आना—ध्यान में आना; याद आना। प्र० आपके खयाल शरीफ में यह बात क्यों न आयी ?

खयाल से उतरना—भूल जाना। प्र० नोट कर लो, कहीं दिमाग से उतर गया तो मुश्किल होगी।

खयाल से बाहर—अनुमान से परे। प्र० उसका ऐसा बर्ताव तो मेरे खयाल से भी बाहर था।

खयाली घोड़े की बाग ढीली करना, -दौड़ाना—दूर-दूर की कल्पनाएं करना। प्र० नारंगी के रस में जाफरानी बसन्ती बूटी छानकर शिव सम्भु शर्मा खटिया पर पड़े मौजों का आनन्द ले रहे थे। खयाली घोड़े की बागें ढीली कर दी थीं (गु० नि०—बा० मु० गु०, 203)।

खयाली घोड़े दौड़ाना—दे० खयाली घोड़े की बाग ढीली करना।

खयाली दुनिया—कल्पना-लोक। प्र० छायावादी कवि खयाली दुनिया में विचरण करने वाले भावुक कवि ही नहीं वरन् अपने युग की समस्याओं के प्रति सजग सामाजिक भी हैं।

खयाली पुलाव पकाना या होना—असंभव बातें सोचना या होना; बड़ी-बड़ी कल्पनाएँ करना। प्र० यद्यपि ऐसे दृढ़ और स्थितप्रज्ञ, इन ज्ञानियों का केवल खयाली पोलाव मात्र हैं (भट्ट नि०—बा० भट्ट, 84); भजना के मन में आशा कहे—अब से आपको खयाली पुलाव पकाने का शौक हुआ (सुकुल०—निराला, 82)।

खयालों के खंभे खड़े करना—बड़ी-बड़ी कल्पनाएँ करना। प्र० यहाँ बैठे-बैठे तूफानी नजारे का लुत्फ उठाइये और खयालों के खम्भे खड़े कीजिए ऊँचे-ऊँचे (अमृत०—नागर, 310)।

खरंड बाँधना—घाव पर पपड़ी पड़ना।

खर उसकाना—तनिक भी किसी काम में योग देना या करना। प्र० इतनी बड़ी लड़की है, तनिक खर उसकाने तक का नाम नहीं लेती।

खर का दो टूक कहना—स्पष्ट रूप से नकारात्मक उत्तर देना। प्र० मुझसे लल्लो-चप्पो नहीं होती, मैंने खर का दो टूक कह दिया।

खर मारना, खराई मारना—सुबह-सुबह कुछ खाकर पानी पीना जिससे भूख के कारण अस्वस्थता न हो। प्र० मुह में कुछ डालकर खर मार लो बेटा, खाने में न जाने कितनी देर हो।

खर-कतवार—कूड़ा-कर्कट। प्र० हटाओ यह सब खर-कतवार मेरे सामने से।

खरका करना—खरके से दाँत साफ करना। प्र० हल्ला मत करो, खरका करके आती हूँ।

खरतल आदमी—(1) स्पष्ट वक्ता।
(2) टेढ़ी-मेढ़ी बातें या काम करनेवाला आदमी।

खरतल कहना—साफ-साफ कहना। प्र० आप गोलमाल उत्तर क्यों देते हैं ? जो कहना है, खरतल कहिए।

खरतल रहना—(1) खरा और साफ रहना। प्र० वे सदा ही खरतल रहे, कभी किसी के लेने-देने में नहीं पड़े।
(2) अलग और आजाद रहना। प्र० देखिए प्रयोग (1)।

खर-दिमाग—दुष्ट प्रकृति का। प्र० अशोक बड़ा खर-दिमाग है, उससे सावधान रहना।

खरबूजे को देखकर खरबूजे का रंग पकड़ना, -रंग बदलना—किसी की देखा देखी किसी काम को करना। प्र० यह कभी न भूलिएगा कि खरबूजे को देखकर खरबूजा रंग बदल देता है (बूंद०—नागर, 567)।

खरबूजे को देखकर खरबूजे का रंग बदलना—दे० खरबूजे को देखकर खरबूजे का रंग पकड़ना।

खरल करना, खरल करना—किसी औषधि को घोटकर महीन करना। प्र० सब जड़ी-बूटी अच्छी तरह कूट करके और खरल करके लाना।

खरमस्ती सूझना—दुष्टता या शरारत सूझना। प्र० इन लड़कों को चौबीस घंटा खरमस्ती सूझती रहती है।

खरहे की सींग—असंभव वस्तु।

खरा—नीयत का साफ; निर्दोष। प्र० राम सों बड़ो है कौन, मोसों कौन छोटो। राम सों खरो है कौन, मोसों कौन खोटो (विनय०—तुलसी, 72); वह लेन-देन में बड़े खरे हैं (परीक्षा०—श्री० दास, 172); लेन-देन में खरा था। इसलिए उसकी साख जम गयी (गोदान—प्रेमचंद, 204)।
(2) स्पष्ट। प्र० मैं तो खरी बात करता हूँ, हाँ।

खरा आदमी—(1) ईमानदार आदमी। प्र० खरे आदमी आजकल देखने को कहाँ मिलते हैं ?
(2) साफ-साफ कहनेवाला। प्र० उनके जैसा खरा आदमी तो मैंने देखा नहीं।

खरा आसामी—(1) तुरन्त दाम देनेवाला। प्र० मैं खरे आसामी की खोज में हूँ ताकि पैसे मिलने में किसी तरह की झंझट न हो।
(2) ईमानदार व्यक्ति। प्र० देखिए प्रयोग (1)।

खरा उतरना—(1) ठीक जान पड़ना। प्र० इसी प्रकार भक्तिकाल, रीतिकाल और गद्यकाल के दिए गए नाम भी उक्तकालीन साहित्य की समीक्षा पर खरे नहीं उतरते (सा० जि०—ल० प्र० सु०, 136)।
(2) सच्चा होना। प्र० लड़का अपनी बात पर अंत तक अड़ा रहा, एकदम खरा उतरा।

खरा करना—(1) बहुत गरम करना। प्र० घी खरा करके ले आओ।
(2) नगद वसूलना। प्र० मैंने अपने रुपये खरे कर लिए, तुम लोग अपनी-अपनी चिन्ता करो।
(3) निश्चित करना, सब ठीक करना। प्र० तुम वहाँ जाकर सब-

कुछ खरा करके मुझे खबर देना।

खरा खेल—शुद्ध व्यवहार। प्र० मुझे लवड़-सवड़ बिलकुल नहीं पसंद है, मैं खरा खेल खेलता हूँ।

खरा खेल फरुखाबादी—खरा और साफ व्यवहार। प्र० जरा भी मन माफ़िक काम न हुआ तो वे सचमुच ही खड़ा खेल फरक्काबादी दिखला देंगे (अमृत०–नागर, 75)।

खरा दाम—नगद दाम; ठीक दाम; अधिक दाम। प्र० शहर में खरे दाम लगते हैं, यहाँ जी में आया दिया न दिया (प्रेमा०–प्रेमचंद, 55)।

खराई मारना—दे० खर मारना।

खरा-खोटा—भला-बुरा। प्र० बहन, खरा-खोटा सभी सोचना पड़ता है न।

खरा-खोटा देखना, -परखना, -पहचानना—भले-बुरे को पहचानना। प्र० आदमी को और कुछ नहीं तो खरा-खोटा परखने की अक्ल तो रखनी ही चाहिए।

खरा-खोटा परखना—दे० खरा-खोटा देखना।

खरा-खोटा पहचानना—दे० खरा-खोटा देखना।

खराद उतरना, -चढ़ना, -पर उतरना, -पर चढ़ना—(1) काबू में आना। प्र० तुम अभी उनकी खराद चढ़े नहीं हो इसीलिए बहक रहे हो।

(2) बिलकुल ठीक होना। प्र० हीरा तो एकदम खराद पर उतरा हुआ है।

(3) व्यावहारिक होना। प्र० खुद खराद पर उतरे हुए को मैं क्या सिखाऊँ।

खराद चढ़ना—दे० खराद उतरना।

खराद पर उतरना—दे० खराद उतरना।

खराद पर चढ़ना—दे० खराद उतरना।

खराद पर चढ़ाना—(1) सुधारना। प्र० इस लड़के को खराद पर चढ़ाना ही होगा।

(2) काट-छाँटकर ठीक करना। प्र० मैं भी सोचता हूँ कि इसे खराद पर चढ़ा देना चाहिए।

(3) बहकाना। तुम्हीं ने इसे खराद पर चढ़ाया है।

खरापन बघारना—अपनी सच्चाई की बड़ाई करना। प्र० बस-बस, बहुत खरापन मत बघारो।

खराब करना या होना—(1) कुकर्म करना। प्र० वे लोग भले घरों की बहू-बेटियाँ खराब करने की कोशिश करेंगे (मा–कौशिक, 293)।

(2) बर्बाद करना। प्र० अरे इन सबके घरन में तो चैन की बंसी बजत हैगी। बंधी तनखायें आइत हैंगी, औ हमरे गरीबन के लड़कन का खराब करत फिरत हैंगे (अमृत०–नागर, 356)।

खराबी में डालना—हानि पहुँचाना, दुःख में डालना। प्र० इन सबने मिलकर मुझे ऐसी खराबी में डाल दिया कि पूछो मत।

खराबी में पड़ना—बुरी दशा होना। प्र० आजकल सचमुच बड़ी खराबी में पड़ा हुआ हूँ।

खरी बात कहना—सच्ची और स्पष्ट बात कहना। प्र० माफ करना, छोटा बनकर ऊपर से कह रहा हूँ, मगर खरी बात मुंह पर कह रहा हूँ (सात०–नागर, 72)।

खरी सुनाना—(1) साफ-साफ बातें कहना। प्र० खरी सुनाने में मैं पीछे रहने वाली नहीं हूँ।

(2) फटकारना। प्र० देखिए प्रयोग (1)।

खरी-खरी बात करना—स्पष्ट बेलाग बात करना। प्र० लेकिन एक बार पति से मिलकर उनसे खरी-खरी बात करने के प्रलोभन को वह न रोक सकी (मान० (1)–प्रेमचंद, 239)।

खरी-खरी बात सुनाना, -सुनाना, खरी-खोटी कहना, -सुनाना—भली-बुरी कहना; स्पष्ट बेलाग बातें कहना। प्र० रोसें करि पकरि परोस तें लियाई घरै पी कों प्रानप्यारी भुजलतनि भरै-भरै। कहै पद्माकर न ऐसो दोस कीज्यो फिरि सखिन समीप यौं सुनावति खरै-खरै (जग०–पद्माकर, 10); लड़का ही तो है, उसे दो बात खरी-खोटी सुनाकर डाँट-डपटकर न रखेंगे से काम नहीं चलेगा। (तितली प्रसाद, 40-41)।

खरी-खरी सुनाना—दे० खरी-खरी बात सुनाना।

खरी-खोटी कहना—दे० खरी-खरी बात सुनाना।

खरी-खोटी सुनना—भला-बुरा सुन लेना; स्पष्ट बेलाग बातें सुनना। प्र० पर किसी की अच्छी चीज देखते ही जिसके मुंह में पानी आ जाता है, वे बराबर खरी-खोटी सुना करते हैं (चिन्ता० (1)–शुक्ल, 75)।

खरी-खोटी सुनाना—दे० खरी-खरी बात सुनाना।

खरीद लेना—घूस या प्रलोभन देकर अपनी ओर कर लेना। प्र० कुछ असमिया और नेपाली लोगों को भी सरकार ने खरीद लिया था (ब्रह्म० दे० स०, 370)।

खरीददार की आँख से देखना—मूल्य का अनुमान लगाना। प्र० हीरा तुम भी खरीददार की आँख से देखो।

खरीद गुलाम होना—आज्ञाकारी; पूरे वश में होना। प्र० जान कै रूप लुभाय कै नैननि बेंचि करी अध बीच ही लौंड़ी (घन० कवित्त–घना०, 14)।

खरे आना—व्यंग्य में "अच्छे आए" के अर्थ में प्रयुक्त।

खरे होना—वसूल हो जाना। प्र० राम-राम करके किसी तरह मेरे रुपये तो खरे हुए।

खरे-खुरे—ले-देकर; काट-कूटकर। प्र० पचास कहाँ मिले, खरे-खुरे 35 रुपये हाथ लगे।

खरोंचकर धूल फांकना—बहुत अपमानित होना; दर-दर घूमना। प्र० इसकी जिन्दगी तो इसी तरह खरोंचकर धूल फांकने में बीती है।

खर्च उजला होना—खर्च काफी होना। प्र० खर्च तो उजला है, या कंजूस है? (आजाद०–प्रेमचंद, 287)।

खर्च उठाना—व्यय-भार वहन करना। प्र० सात समुद्र पार कर इंगलैंड वाले यहाँ आते हैं और न जाने कितना परिश्रम और खर्च उठाकर यहाँ की भाषाएँ सीखते हैं (सा० सी०–महा० द्वि०, 39); मैंने कितने

मुखतारों का खर्चा उठा लिया है (दे० दु०–शिव०, 41)।

खर्च का पलड़ा भारी होना—बहुत खर्च होना। प्र० कभी-कभी खर्च का पलड़ा भारी हो जाता; लेकिन किफायत करने की कोई विधि समझ में न आती थी (मान० (7)–प्रेमचंद, 282)।

खर्चा चलना या चलाना—गृहस्थी का खर्च पूरा पड़ना या खर्च करना। प्र० इस महंगाई में खर्च चलना ही मुश्किल है, कोई बचायेगा कहाँ से।

खर्च तोड़ना—खर्च कम करना। प्र० बिजली का खर्च तोड़ दूंगा, 10) यों निकल आवेंगे (सेवा०–प्रेमचन्द, 116)।

खर्च निकलना—खर्च भर मिल जाना। प्र० तीन साढ़े तीन सौ की आमदनी का ब्योंत बैठ जायगा, उससे मन्दिर धरमशाला का खर्चा निकलता रहेगा (अमृत०–नागर, 340)।

खर्च पीट लेना—खर्च भर कमा लेना। प्र० खास तो क्या हाँ, खर्च भर पीट लेता हूँ।

खर्च बैठना—खर्च पड़ना। प्र० इधर की ओर एक तल्ला और उठाने में कोई बीस हज़ार खर्च बैठेगा।

खर्च में डालना—(1) खर्च खाते लिखना। प्र० ये दस रुपये भी फुटकर खर्च में डाल दो।

(2) जबरदस्ती खर्च करवाना। प्र० जबरदस्ती उन्होंने मुझे साठ रुपये के खर्च में डाल दिया।

खर्च में पड़ना—लाचारी से खर्च करना। प्र० देखो न, पंद्रह रुपये के खर्च में मैं भी पड़ गया।

खर्ची कमाना—कुकर्म से रोजी कमाना। प्र० तुम्हारी तरह मैं खर्ची नहीं कमाता, मेहनत की रोटी खाता हूँ।

खर्ची खोटाना—खर्च की रकम में कमी पड़ना। प्र० अपने राम की तो खर्चा खोटा रहो है।

खर्ची चलना—किसी तरह पालन-पोषण होना। प्र० किसी तरह खर्ची चल रही है, और क्या?

खर्ची पर चलना, -जाना—धन के लिए किसी स्त्री का संसर्ग पर-पुरुष से कराना।

खर्ची पर जाना—दे० खर्ची पर चलना।

खर्राटा भरना, -मारना, -लेना—बेखबर सोना। प्र० कभी किसी महात्मा के झंझोड़ने पर आँखें खुलीं भी तो उसके हटते ही फिर खुर्राटे लेने लगे (पद्म पराग–पद्म० शर्मा, 11)।

खर्राटा मारना—दे० खर्राटा भरना।

खर्राटा लेना—दे० खर्राटा भरना।

खल करना—दे० खरल करना।

खल होना—चूर-चूर होना; नष्ट होना। प्र० खल भई लोक लाज कुल कानि (सूरदास)।

खलबली पड़ना, -पैदा होना, -मचना—(1) उत्सुकता या चिन्ता होना। प्र० गाइ बच्छ कोऊ न संभारैं जिसकी सब कौं परी खंभारैं (सू० सा०–सूर, 1550); इन सब बातों को खयाल कर दिल में बड़ी खलबली पैदा हो गई (भट्ट नि०–बा० भट्ट, 9); खलबली उनमें कभी पड़ती नहीं धर्म-बल जिनको बनाता है बली (चुभते०-हरिऔध, 183)।

(2) हलचल होना। प्र० धमाके की आवज़ सुनने के साथ सभा में खलबली मच गयी।

खलबली पैदा होना—दे० खलबली पड़ना।

खलबली मचना या मचाना—दे० खलबली पड़ना।

खलियान करना—(1) जमा करना। प्र० मैंने भरपूर धान खलियान कर लिया है।

(2) मार डालना। प्र० तीन को तो उसी ने खलियान किया।

(3) इधर-उधर बिखेरना। प्र० क्यों सारा अनाज खलियान कर रहे हो?

खलियान लगाना—ढेर करना। प्र० लो तुमने यहीं खलियान लगा दिया?

खली-गुड़ एक भाव करना—भले-बुरे का अंतर न रखना। प्र० तुम्हारी यही बात मुझे बुरी लगती है, खली-गुड़ एक भाव क्यों करते हो?

ख़वे से ख़वा छिलना—बहुत भीड़ होना। प्र० दुर्गा पूजा के मेले में ख़वे से ख़वा छिलता है।

खसम करना—स्त्री का दूसरे पुरुष से सम्बन्ध करना।

खसम-पीटी—विधवा।

खसरा बही—कच्ची बही, रफ बही। प्र० अभी हिसाब खसरा बही में ही लिखा है, आपको दिखाकर पक्की बही में उतारूँगा।

खसी करना—(1) बधिया करना। प्र० आज एक ही बैल की खसी करो।

(2) बलिदान करना। प्र० देवी के सामने खसी तो करना ही पड़ेगा।

खसी चढ़ाना—बकरे की बलि देना।

खसी जान से जाय पर खानेवाले को स्वाद न आना—किसी के लिए बहुत अधिक श्रम और त्याग करने पर भी उसका संतुष्ट न होना।

ख़स्ता (हालत) होना—(1) बुरा हाल होना। प्र० पुराने शाही खंडहरों से लगे हुए एक खस्ता महल के फाटक पर गाड़ी रुकी (अमृत०–नागर, 476)।

(2) बहुत थक जाना। प्र० इस समय मैं खस्ता हो रहा हूँ, मुझसे बात मत करो।

(3) आर्थिक स्थिति खराब होना। प्र० आजकल उनकी हालत काफी खस्ता है।

खांड़ की रोटी—हर तरह से लाभप्रद। प्र० यह विवाह तुम्हारे लिए खाँड़ की रोटी है आराम से करो।

खांड़ा टुकड़ा—बहुत थोड़ा; आधा चौथाई टुकड़ा रोटी। प्र० कुछ खांडा टुकड़ा मुझे भी मिल जाय।

खांड़ा फेंकना—एक विशेष ढंग से लकड़ी चलाना या वार करना।

खांडा बजना या बजाना—युद्ध होना या करना। प्र० वह दिन शीघ्र ही आने वाला है जब अपने ही भाइयों के साथ हमें खांडा बजाना

होगा।

खांड़े की धार पर चलना—महा कठिन कार्य करना।

खा जाना, -पका डालना—(1) लेकर न लौटाना। प्र० कोई नौकर एक पैसा भी खा जाय, तो उसे निकाल देते हैं (रंग० (1)–प्रेमचंद, 142)।

(2) खर्च कर डालना। प्र० जो रुपये आपने दिये वे तो हम खा बैठे हैं (कठ०–दे० स०, 346)।

(3) बरबाद कर देना। प्र० मीठी-मीठी माया तजी न जाई अग्यानीं पुरिष कौं भोलि-भोलि खाई (कबीर ग्रंथा०–कबीर, 166); ये तुम्हारा उल्टा तवा, उसकी बीबी, उसके तमाम घर वाले मिलकर खा गये उसे, वरना बहोत बड़ा आर्टिस्ट होता महिपाल (बूंद०–नागर, 29)।

(4) बिताना। प्र० नहीं बाबू साहब! पूरे सौ साल खा चुका हूँ (खाना खाने के अर्थ में) (सु० सु०–सुदर्शन, 1)।

(5) बहुत तंग करना। प्र० तुम्हें यह बात खा जाती है कि लोग तुम्हारी चर्चा नीलिमा के पति के रूप में करते हैं (अंधेरे०–राकेश, 384)।

(6) मार डालना (आरोप के रूप में प्रयुक्त)। प्र० चुड़ैल! मेरे बेटे को खा गयी और अब हम सब को खाने के लिए मुँह फाड़े हुए है (एक चादर०–बेदी, 35)।

(7) बीच में छोड़ देना (शब्द या बात)। प्र० टाइप करने में ये कई शब्द तुम खा गये?

खाई—दूरी, भेद-भाव, अन्तर। प्र० वे राजकीय सत्ता के अधिकार से शासन करें जिसमें शासित को शासन का भार न अखरे और उनके बीच की खाई कम हो (मेरे०–गुलाब०, 181)।

खाई खुदना या खोदना—(1) दूरी होना या करना। प्र० हाँ केवल चौबीस घण्टों के पश्चात् मेरे और लस्सो के बीच में एक ऐसी गहरी खाई खुद जावेगी कि मेरा और उसका विवाह सम्बन्ध सदैव के लिए असम्भव हो जायगा (भिखा०–कौशिक, 205)।

(2) अहित करना या होना। प्र० मैं अपनी ओर से खाई नहीं खोदूंगा, इतना कह सकता हूँ।

खाई चौड़ी करना—भेद-भाव को और बढ़ाना। प्र० तुम्हीं इस खाई को चौड़ी करनेवाले हो न या और कोई?

खाई पाटना—मतभेद मिटाना। प्र० इस भेदभाव की खाई को नहीं पाटा जा सकता (भूले०–भग० वर्मा, 477)।

खाई बढ़ना—मतभेद बढ़ना। प्र० मैं अनुभव कर रहा हूँ कि हमारे बीच की यह खाई बढ़ती जा रही है।

खाई में कूद पड़ना—मुसीबत में जानबूझकर पड़ना। प्र० बिना सोचे-समझे खाई में कूदने को तुमसे किसने कहा था?

खाई में गिरना—बुरे रास्ते जाना; अपना अहित करना। प्र० ठीक है, तुम खाई में गिरना ही चाहते हो तो गिरो।

खाई से निकल कर खंदक में गिरना—एक बुरे काम या स्थिति से छूटकर उससे भी बुरी स्थिति में पड़ना।

खा-उड़ाकर—ऐश-आराम में खर्च करके। प्र० जायदाद खा-उड़ाकर अब उन्होंने अपने निवास स्थान को विभक्त कर, उसमें किरायेदार बसा लिए हैं (चेतन–अश्क, 152)।

खाऊ-मीत—स्वार्थी दोस्त।

खाए जाना—(1) दुःखदायी होना। प्र० यह घर तो अब हमें खाए जाता है (भूले०–भग० वर्मा, 212); यह पुत्र-अभाव उन्हें खाए जाता था (सु० सु०–सुदर्शन, 237)।

(2) तंग करना। प्र० यह तो रोटी के लिए मुझे खाए जा रहा है, एक दे दूं डाक्टर साहब?

खाक—नगण्य या कुछ नहीं। प्र० वह जानेगा तुम्हें खाक जो जाने न तुम्हारी परम्परा (बुद्ध०–बच्चन, 72)।

खाक उड़ना या उड़ाना—(1) सूना पड़ा रहना। प्र० जहाँ आठों पहर कचहरी-सी लगी रहती थी वहाँ अब खाक उड़ती है (निर्मला–प्रेमचंद, 18)।

(2) नष्ट होना या करना। प्र० घर में इतना कुछ था, इसने सब पर खाक उड़ा दी।

(3) बदनाम होना या करना। प्र० तुम पर जब खाक उड़ेगी, तब तुझे समझ में आयेगा।

खाक उड़ाते फिरना, -फाँकना—मारे-मारे फिरना। प्र० तुम क्या इसी तरह सदा खाक उड़ाते फिरोगे?

खाक करना—(1) नष्ट करना। प्र० कितने अरमानों को करके खाक, बना पाया प्याला (मधु०–बच्चन, पद 133)।

(2) जला देना। प्र० उस भीषण अग्नि ने पूरे मुहल्ले को खाक कर दिया।

खाक का खाक में मिलना—मृत्यु को प्राप्त होना। प्र० एक दिन तो इस खाक को खाक में मिलना ही है।

खाक का घर लाख का बना देना—निर्धन को अमीर बना देना।

खाक का पुतला—आदमी। प्र० हम ठहरे खाक के पुतले, हमारा क्या भरोसा।

खाक का पैबंद होना—मर जाना।

खाक चाटकर कहना—अत्यन्त दीनता दिखाना। प्र० मैं खाक चाटकर कहता हूँ हुजूर, मेरे पास फूटी कौड़ी भी नहीं है।

खाक चाटना—अनुनय-विनय करना। प्र० मैं कहाँ-कहाँ जाकर खाक चाटूं, तुम्हीं कहो।

खाक छानना—(1) परेशान होना। प्र० हमारे बाबू साहब ने बरसों स्कूल की खाक छानी है, बीसियों मास्टरों का दिमाग चाट डाला है (प्र० पी०–प्र० ना० मि०, 157)।

(2) मारा-मारा फिरना। प्र० जब आपकी मर्जी है कि गाँव-गाँव की खाक छानता फिरूँ, तो वही सही (मान० (1) प्रेमचंद, 50)।

(3) बहुत तलाश करना। प्र० नौकरी की तलाश में बंबई की खाक छान डाली मगर भाग्य ने अब तक कहीं साथ नहीं दिया था (ये कोठे०–नागर, 23)।

(4) जगह-जगह घूम-घूमकर खूब अनुभव प्राप्त करना। प्र० × × वाल्टर रेनाल्ड ने इन सत्तावन बरसों में यूरोप से लेकर हिन्दुस्तान की खाक छानी है (सात०—नागर, 83)।

खाक डालना—(1) क्षमा कर देना, भूल जाना। प्र० अच्छा, खैर, जो कुछ हुआ, उस पर खाक डालो (मा—कौशिक, 344)।

(2) किसी दोष या बात को छिपाना। प्र० उसमें कुछ कमियाँ हैं, यह सही है पर उन पर खाक डालने से ही तो बनेगा :

(3) भूल जाना। प्र० उन बातों पर खाक डालो यार, कब तक उनके नाम को रोते रहोगे।

खाक न समझना—कुछ न समझना। प्र० तुम समझती तो खाक नहीं हो, और बस अपनी-अपनी गाए जाती हो (सारा०—यादव, 86)।

खाक फाँकना—दे० खाक उड़ाते फिरना।

खाक बरसना या बरसाना—बुरी दशा होना या बना देना। प्र० तू तो खाक बरसाने पर ही उतारू हो गया लगता है।

खाक भी नहीं—कुछ भी नहीं। प्र० तुम समझती तो खाक नहीं हो, और बस अपनी-अपनी गाए जाती हो (सारा०—यादव, 86)।

खाक में मिलना या मिलाना—(1) नष्ट होना या करना, बर्बाद होना या करना। प्र० छत्रधार देखत ढहि जाइ, अधिक गरू थैं खाक मिलाइ (कबीर ग्रंथा०—कबीर, 209); दोनों तरफ के दस-बारह हजार रुपए खाक में मिल गए और उनके साथ मेरी अभिलाषाएँ खाक में मिल गयीं (मान० (7)—प्रेमचंद, 22)।

(2) मरना या मारना। प्र० तुम उसे खाक में मिलाकर ही छोड़ोगे क्या ?

खाक समझना, -धूल समझना—एकदम तुच्छ मानना। प्र० हाँ, हमसे सुनो, आप वेद-शास्त्र-पुराणादि पर राय देने में स्वतंत्र हैं, संस्कृत का काला अक्षर नहीं जानते, हिन्दी के भी साहित्य को खाक धूल नहीं समझते (प्र० पी०—प्र० ना० मि०, 165)।

खाक सियाह करना या होना—जलाकर राख करना या होना। प्र० इस आग ने सारे घर को खाक सियाह कर दिया।

खाक सिर पर उड़ना, -पर (में) डालना—शोक से पागल होना। प्र० बेचारी माँ खाक सिर पर उड़ा रही है, क्या करे।

खाक सिर पर (में) पर डालना—दे० खाक सिर पर उड़ाना।

खाक हो जाना या होना—(1) एकदम नष्ट हो जाना। प्र० मेरी सारी अभिलाषाएँ कब की खाक हो चुकी हैं।

(2) कुछ न होना। प्र० अब पढ़ाई क्या खाक होगी।

खाक-धूल, -पत्थर—(1) एकदम नहीं। प्र० अब इसमें क्या फायदा कि किताबें तो तुमने लाखों पढ़ लीं, आने के नाम खाक-धूल कुछ नहीं (सारा०—यादव, 33); आज भी पांडेय बेचन शर्मा 'उग्र' को लिखना खाक-पत्थर आता है, आप जानते हैं (अपनी०—उग्र, 103)।

(2) एकदम तुच्छ। प्र० इस काम में क्या रखा है, मैं इसे खाक-धूल समझता हूँ।

खाक-धूल समझना—दे० खाक समझना।

खाक-पत्थर—दे० खाक-धूल।

खाका उड़ाना—मजाक उड़ाना; बदनामी करना। प्र० राय साहब ने इस प्रहसन में एक मुकदमेबाज देहाती-जमींदार का खाका उड़ाया था (गोदान—प्रेमचद, 75)।

खाका उतारना—(1) नकल उतारना। प्र० ठहरो तो, देखो मैं उनका कैसा खाका उतारता हूँ।

(2) ढांचा बनाना। प्र० इस मशीन का खाका उतार लो, फिर बातें करेंगे।

खाका करना—ढाँचा बनाना। प्र० डिज़ाइन का खाका तो कर लो फिर देखेंगे कि क्या करना है।

खाका खींचना, -बाँधना—(1) मज़ाक उड़ाना। प्र० जो लोग बात-बात में तुकबन्दी करते हैं और कवि होने का आत्मगौरव वहन करने लगते हैं उन लोगों का श्री अन्नपूर्णा नंद ने 'महाकवि चच्चा' में बहुत अच्छा खाका खींचा है (मेरे०—गुलाब०, 151)।

(2) वर्णन करना। प्र० देखिए प्रयोग (1)।

खाका बाँधना—दे० खाका खींचना।

खाकी अंडा—(1) हरामज़ादा।

(2) वह अंडा जिससे बच्चा न निकले।

खाज उठना, -होना, खुजली उठना, -होना—इच्छा होना। प्र० कहने का मतलब कि तुम्हें भी वहाँ जाने की खाज उठ रही है।

खाज मिटना, खुजली मिटना—इच्छा मिटनी। प्र० भाई, मैंने भर पाया, मेरी खाज मिट गयी।

खाज होना—दे० खाज उठना।

खाजी खाना—मुँह की खाना; बुरी तरह परास्त होना। प्र० इस बार तुम ज़रूर खाजी खाओगे।

खाट कट जाना—इतना अधिक बीमार होना कि उठा-बैठा न जा सके और पाखाना-पेशाब भी खाट बीच से काट कर करवाया जाय। प्र० ठीक उसी दिन बाबू साहब की खाट भी कटी थी (दे० दु०—शिव०, 125)।

खाट तोड़ना—निष्क्रिय पड़े रहना। प्र० आपके यहाँ नित्य दो-चार निठल्ले नातेदार पड़े खाट तोड़ा किये × × पर आपने कभी इशारे से भी उनकी अवहेलना नहीं की (प्रेमा०—प्रेमचंद, 44)।

खाट निकलना—अर्थी निकलना।

खाट पकड़ना, -पड़ना, -पर गिरना, -पर पड़ना—बीमार होना। प्र० इसका नतीजा यह हुआ कि अन्त में मुझे खाट पकड़नी पड़ी (सत्य के प्रयोग—मो० क० गांधी, 433); वैद्यक की कमाई से अपने पैरों खड़े होने की आशा निष्फल हुई और खटिया पर पड़ गए (गुलेरी ग्रंथ (1)—गुलेरी, 277)।

खाट पड़ना—दे० खाट पकड़ना।

खाट पर गिरना—दे० खाट पकड़ना।

खाट पर पड़ना—दे० खाट पकड़ना।

खाट पर पड़े खाना—(1) बिना कमाए खर्च करना। प्र० सारा जीवन

खाट पर पड़े-पड़े पूर्वजों की कमाई खाने में काट दिया (प्रेमा०–प्रेमचंद, 10)।

(2) बीमारी की हालत में खर्च करना। प्र० लगता है अब शेष दिन इसी तरह खाट पर पड़े खाने में ही गुज़ारना होगा।

खाट पर पड़े-पड़े दिन बिताना—बेकार पड़े रहना। प्र० दिन पड़े खाट पर बिताते हैं काहिली बाँट में पड़ी मेरे (चुभते०–हरिऔध, 126)।

खाट लग जाना, -से लगना—बहुत दुर्बल हो जाना (बीमारी के कारण)। प्र० शीघ्र ही मैं खाट से लग गई (गोली–चतुर०, 344)।

खाट से उठना—स्वस्थ होना, बीमारी से मुक्ति पाना। प्र० बाबू राम बचता थोड़े ही, शेरू की माँ ने जात बोली, माई को बकरा चढ़ाया तो खाट से उठा (जिन्दगी–निर्गुण, 54)।

खाट से उतारना—मरने के करीब आदमी को ज़मीन पर उतारना।

खाट से लगना—दे० खाट लगना।

खाट सेना—बीमारी के कारण खाट पर ही पड़े रहना। प्र० हाँ गैर तो हूँ ही, गैर न होता, तो रानी जी के इशारे पर यहाँ कैसे दौड़ा आता, जेहल में जाकर कैसे बाहर निकाल लाता, और साल-भर तक खाट क्यों सेता (रंग० (2)–प्रेमचंद, 68)।

खाट-खटोला—गृहस्थी का सामान। प्र० जाने से पहले खाट-खटोला सभी तो समेटना होगा।

खातमा करना—(1) समाप्त करना। प्र० तुमने सब लड्डुओं का खातमा कर दिया।

(2) मार डालना। प्र० सुलतान सिंह अब तक बीस-पच्चीस आदमियों का खातमा कर चुका है।

खातमे तक पहुँचाना—पूरा करना, अन्त तक पहुँचाना। प्र० अब तो इस किस्से को मैं खातमे तक पहुँचाकर ही रहूँगी।

खाता खोलना—नया लेन-देन प्रारम्भ करना। प्र० नेशनल सिटी बैंक में तुम खाता खोल लो।

खाता डालना—हर एक मद का हिसाब रखने के लिये अलग-अलग लिखना।

खाता ड्योढ़ा न करना—किसी को खर्च के लिए दी गयी रकम को पुनः जमा करके उसका खर्च लिखकर खाता बराबर करना।

खाता पड़ना—लेन-देन का व्यवहार शुरू होना। प्र० तुम्हारे नाम का भी खाता पड़ गया है, अब कोई असुविधा न होगी।

खाता बन्द होना—जमा-खर्च बराबर होना। प्र० बैंक का खाता बन्द हो चुका है, अब नहीं हो सकता।

खाता-कमाता, -पीता—साधारण रूप से जीविका अर्जित करनेवाला। प्र० दो-तीन घरों को छोड़कर बाकी सभी ब्राह्मण खाते-पीते खासे (अपनी०–उग्र, 19)।

खाता-पीता—दे० खाता-कमाता।

खातिर की लेना—तरफदारी करना। प्र० क्या बात है, आप उसकी इतनी खातिर की क्यों ले रहे हैं?

ख़ातिर जमा रखना—निश्चिन्त रहना; विश्वास करना। प्र० भोज-भात जो लगेगा, वह हम सब दे लेंगे, तू खातिर जमा रख (गोदान–प्रेमचंद, 125)।

खातिर में आना—कद्र होना। प्र० अजी साहब, आजकल आप खातिर में आ गये हैं तभी ऐसी बातें कर रहे हैं।

खातिर में रखना—खयाल में रखना। प्र० आप ज़रा खातिर में रखिएगा तो काम जरूर हो जायगा।

खातिर में लाना—कुछ समझना; इज्जत करना। प्र० तुम यदि उसे खातिर में ही न लाओगी तो वह क्यों तुम्हारी परवाह करेगा?

खाती करना—झगड़ा करना या मोल लेना। प्र० कान्ह के बल मोसों करी खाती (नन्द० ग्रंथा०–नन्द०, 168)।

खाती रकम—खर्च की रकम; वह रकम जो घर-गृहस्थी वगैरह में खर्च की जाय। प्र० साल में 5–6 हजार रुपये तो खाती रकम में निकल जाते हैं।

(किसी के) खाते बाकी होना—किसी के ऊपर कर्ज़ होना। प्र० पंद्रह सौ रुपये तो अभी फरनिचर खाते ही बाकी हैं।

खाते में चढ़ाना—खाते में लिखना। प्र० जो रुपया अब तक वसूल हो चुका है, वह बीज और ऋण के खाते में चढ़ा लीजिए (मान० (6)–प्रेमचन्द, 233)।

खाते में लिखना—लिखित रूप में ब्योरा रखना। प्र० चित्रगुप्त औं बदि हमरे गुन, निज खातन लिखि लेहों; ये चीजें खाते में लिख लीजिए नहीं तो भूल जाइएगा।

खाते-पीते लात चलाना, -लात मारना—सम्पन्न होते हुए भी अपनी दशा के नाम हमेशा रोते रहना।

खाते-पीते लात मारना—दे० खाते-पीते लात चलाना।

खादर लगना—चरने लायक घास उग आना। प्र० आठ दिन में खादर लग जाने पर कोई चिन्ता न रहेगी।

खान—(1) अत्यधिक, बहुतायत में। प्र० रस समुद्र मानो उछलित भयो, सुन्दरता की खानि (सू० सा०–सूर०, 1678); मन्दिर महं सब राजहि रानी। सोभा सील तेज की खानीं (राम० (बाल)–तुलसी, 199); नागर विदेस मैं बिताइ बहु द्यौस आयो, नागरि कै हिये मैं हुलासनि की खानि की (मति० मक०–मतिराम, 127); बन गये हैं औगुनों की खान वे (चुभते०–हरिऔध, 23)।

(2) रुपया वसूल करने में बहुत ही कठोर। प्र० हरप्रसाद पक्का खान है, वह एक कौड़ी न छोड़ेगा।

खान खुलना—प्रचुर होना। प्र० मेरे यहाँ क्या रुपयों की खान खुल गयी है कि तुम्हें सदा देता जाऊँगा?

खानदान को बट्टा लगना—खानदान के सुनाम को क्षति पहुँचना; बदनामी होना। प्र० तुम्हारे कारण हमारे खानदान को बट्टा लगा। तुम्हें इसका तनिक खयाल नहीं।

खानदानी—अच्छे कुलवाला; वंश परम्परा से श्रेष्ठ। प्र० रामलालजी खानदानी हैं, उनकी बात कुछ और है।

खान-पान करना या होना—खाने-पीने का सम्बन्ध स्थापित करना या

होना । प्र० इधर कुछ दिनों से दोनों परिवारों में खान-पान हो रहा है ।

खान-पान चला आना, -जारी रहना—सम्बन्ध बना रहना । प्र० कई पीढ़ियों से हम लोगों के परिवार के बीच खान-पान चला आ रहा है ।

खान-पान जारी रहना—दे० खान-पान चला आना ।

खाना—(1) घूस लेना । प्र० दो चार सौ पान सौ खाने के फेर में जहाँ सुई नहीं समा सकती वहाँ फावड़ा चला रहे हैं (बूंद०—नागर, 87) ।
(2) रकम हड़पना । प्र० अरे एक दो सौ क्या, वे न जाने कितने दो सौ खाएंगी (मा—कौशिक, 300) ।
(3) अपना लाभ करना । प्र० आपके चार पैसे खाता हूँ, तो आपको आँखों से देख कर गढ़े में न गिरने दूंगा (रंग०(1)—प्रेमचंद, 377) ।

खाना आबाद होना—शादी होना । प्र० कभी तुम्हारा भी तो खाना आबाद होगा या नहीं ?

खाना और गुर्राना—किसी से उपकृत भी होना और मिज़ाज भी दिखाना । प्र० वाह भाई तुम तो खाते भी हो और गुर्राते भी हो ।

खाना और डकार तक न लेना—(1) भर पेट खाने के बाद इस बात का कोई आभास न देना कि काफी खाया है । प्र० ऐसे-ऐसे महान पुरुष पड़े हुए हैं जो पसेरी भर मिठाई खा जायं और डकार तक न लें (निर्मला—प्रेमचंद, 33) ।
(2) भोजन या धन ऐसा हड़प जाना कि पता ही न चले । प्र० वाह यार, तुम बड़े उस्ताद निकले । मेरे रुपये ले लिये और अब खाकर डकार तक नहीं ले रहे हो ।

खाना और फाग गाना—मौज-मस्ती में रहना । प्र० लोग मजे से खा रहे हैं और फाग गा रहे हैं (कर्म०—प्रेमचंद, 370) ।

खाना न पचना—चैन न पड़ना; जी न मानना । प्र० पर निन्दा सुने बिना तुम्हें खाना नहीं पचता ?

खाना वहाँ, पानी पीना यहाँ—बहुत जल्दी करना । प्र० तुम खाना वहाँ पानी यहाँ करना चाहते हो तो सो कैसे हो ।

खाना वहाँ, हाथ धोना यहाँ—दे० खाना वहाँ, पानी पीना यहाँ ।

खाना हराम कर देना—(1) खाने न देना । प्र० इस लड़के ने तो खाना हराम कर दिया है ।
(2) बहुत हैरान करना । प्र० देखिए प्रयोग (1) ।

खाना-उड़ाना—खर्च कर डालना; मौज मस्ती में खर्च कर देना; बाँट देना । प्र० बाप बहुत छोड़ गये थे, सब लड़कों ने खाने-उड़ाने में खत्म कर डाला ।

खाना-कमाना—मेहनत मजदूरी करके पेट भरना । प्र० आज के ज़माने में आदमी खाना-कमाना कर ले, यही बहुत है ।

खाना-खराब करना या होना—बुरे रास्ते पर ले जाना या होना; लफंगापन करना । प्र० जमादार खाना-खराब न करे । हमारी तरक्की होने वाली है (चोटी०—निराला, 62) ।

खाना-तलाशी लेना—अच्छी तरह कोना-कोना तलाश करना । प्र० दरोगा जी खाना-तलाशी लेने आ रहे हैं ।

खाना-दाना चलना—(1) खाया-पीया जाना । प्र० जब से यह तुम्हारे यहाँ से आई तब से इसका यही हाल होता चला जा रहा है । न अच्छी तरह खाना चले न दाना (भिखा०—कौशिक, 129) ।
(2) जीविका चलना । प्र० किसी तरह खाना-दाना चल जाता है बस ।

खाना-पीना—दैनन्दिन जीवन; दैनन्दिन जीवन का खर्च । प्र० मैं इतने के लिए जिम्मेदार हूँ कि बिसेसर बाबू का खाना-पीना चल जाय ।

खाना-पीना छूटना—सम्बन्ध टूट जाना । प्र० कई बरसों से उनके यहाँ का खाना-पीना भी छूट गया है ।

खाना-पीना लहू करना या होना, -लहू-मिट्टी करना या होना—घर का सारा वातावरण चौपट कर देना या होना; बहुत तंग कर रखना । प्र० इस कुलांगार के कारण खाना-पीना लहू हो गया है ।

खाना-पीना लहू-मिट्टी करना या होना—दे० खाना-पीना लहू करना या होना ।

खाना-पूरी करना—सब खानों को पूरा-पूरा भरना; औपचारिक कार्यवाही करना । प्र० सरकारी अनुदान लेने के लिए खाना-पूरी करते-करते मुसीबत हो जाती है ।

खाने के दाँत और दिखाने के और होना—बाहर और भीतर की स्थिति में बहुत अंतर होना ।

खाने के लाले पड़ना—खाने का अभाव होना । प्र० ताई जब ब्याह कर आईं उस समय द्वारका दास के घर में खाने के लाले पड़े हुए थे (बूंद०—नागर, 11) ।

खाने (को) दौड़ना—(1) दुःखदायी लगना । प्र० घर की हर दीवार हाय-हाय करके खाने दौड़ती थी (सारा०—यादव, 90) ।
(2) चिड़चिड़ाना, क्रुद्ध होना । प्र० बात करते बीबीजी खाने को दौड़ती हैं ।

खाने पर—खाना खाने के लिए । प्र० उसका ख़याल था कि प्रेस के कुछ लोगों और दूतावास के जिन महत्त्वपूर्ण व्यक्तियों से हरबंस का परिचय हो, उन्हें खाने पर बुलाना ज़्यादा उपयोगी होगा (अंधेरे०—राकेश, 380) ।

खाने भर को देना—(1) भरपेट भोजन देना । प्र० और कुछ नहीं तो आदमी को खाने भर को तो देना ही होगा ।
(2) अच्छा सबक सिखाना । प्र० ठहरो, मैं अभी आकर तुम्हें खाने भर को देती हूँ ।

खाने-कमाने का ठीकरा—रोज़ी का साधन; वह लड़की जिसे वेश्यावृत्ति में लगाकर रोज़ी कमायी जाय । प्र० यह लड़की ही मेरे खाने-कमाने का ठीकरा है, इसे कैसे जाने दूँ ?

खाने-खेलने के दिन—बचपन के दिन, मौज-मस्ती की अवस्था । प्र० खाने-खेलने के दिन कहाँ रहे, अब तो गृहस्थी का भारी जुआ कंधों पर रख दिया गया है ।

खाने-पीने को अच्छा होना, -से खुश होना—खुशहाल होना। प्र० बहुत बड़े रईस तो नहीं हैं पर हाँ, खाने-पीने को अच्छे हैं।

खाने-पीने को देना—घूस देना। प्र० कुछ खाने-पीने को देकर काम निकलवा लेना आसान होता है।

खाने-पीने से खुश होना—दे० खाने-पीने को अच्छा होना।

खाने-पूर होना—जितनी वस्तु की आवश्यकता हो उतनी पूरी होना। प्र० मिठाई एकदम खाने-पूर हो गयी, गनीमत है।

खानेवाला—(1) घूस लेनेवाला। प्र० सरकारी आफिस में तो और भी गोलमाल है, ऊपर से नीचे तक सभी खानेवाले भरे हैं।
(2) आश्रित; ऐसा व्यक्ति जिसके भोजन आदि का दायित्व उठाया जाता हो ! प्र० इस महंगी के जमाने में डेढ़ सौ रुपए में क्या होता है बाबूजी। घर में नौ प्राणी खाने वाले हैं।

खा-पक्का डालना—दे० खा जाना।

खा-पी जाना—उड़ा देना। प्र० घर का जो कुछ था सब ये खा-पी गये।

खाविन्द करना—नया पति करना। प्र० तो कर लो खाविन्द, किसने रोका है।

खाम आमदनी—कुल आमदनी। प्र० यहाँ की खाम आमदनी का तो मुझे ठीक-ठीक नहीं पता पर हाँ, हालत अच्छी है।

खाम पड़ना—कमी होना। प्र० देखो, दावत में किसी चीज की खाम न पड़े।

खाम लगाना—टाँका लगाना, जोड़ लगाना। प्र० कहने का मतलब खाम लगाना ही पड़ेगा।

खाम-खयाली—कल्पना। प्र० आप अपनी खाम-खयाली में डूबे रहते हैं, वे अपनी में तो फिर घर का कल्याण हुआ ही समझिए।

खामोशी का ताला तोड़ना—खामोशी दूर करना, बोलने को बाध्य होना या करना। प्र० वह आज मैया की इस रहस्यमयी खामोशी का ताला तोड़कर ही दम लेगी (एक म्यान०—नानक०, 43)।

खामोशी नीमरजा—चुप रहने का मतलब स्वीकृति है; मौनं स्वीकृति लक्षणम्।

खाया सहलाना, खाया-बरदारी करना—बहुत चापलूसी करना।

खाया-बरदारी करना—दे० खाया सहलाना।

खाया-पीया अंग लगना—भोजन का पचना और स्वास्थ्यप्रद होना। प्र० न जाने क्या बात है, इसे खाया-पीया कुछ अंग लगता ही नहीं।

खाया-पीया निकाल देना—अच्छा सबक देना, सारी शरारत भुला देना। प्र० ठीक है, मैं तुम्हारा सब खाया-पीया निकाल दूंगा।

खाये जाना—बहुत भारी मालूम होना, दुःखदायी होना। प्र० अकेलापन मानो उसको खाये जा रहा था।

खार—ईर्ष्या। प्र० उन्हें सदा से मुझसे खार रही है।

खार खाना—द्वेष रखना, बदले की भावना रखना। प्र० उस रात को जो झगड़ा हुआ था, उसी दिन से वह खार खाये बैठा था (गोदान—प्रेमचंद, 112)।

खार गुजरना—बुरा लगना। प्र० तुम्हारे आचरण से उन्हें खार जरूर गुजरी थी।

खार देना—कष्ट देना। प्र० उस भोली-भाली लड़की को तुम क्यों खार देते हो ?

खार निकलना या निकालना—बदला लेने की भावना की तुष्टि होना या करना। प्र० इस बार वह खार निकाल कर ही रहेगा।

खार लगना—छरछराना। प्र० हाथ धो लो, खार लगेगी।

खार-खूर करना—छोटा-मोटा काम करना। प्र० कुछ खास नहीं, यों ही खार-खूर कर लेता हूँ।

खारा पानी—सोडा। प्र० दो बोतल खारा पानी इधर भी देना।

खारा-खूरी—परस्पर द्वेष या प्रतिशोध का भाव। प्र० काफी दिनों से उन दोनों में खारा-खूरी चल रही थी।

खारी कुएं में डालना, -ढकेलना—बर्बाद कर देना, बहुत बड़ा अनिष्ट करना। प्र० उस बेचारी को चचाजान ने जान-बूझकर खारी कुएँ में ढकेल दिया (आज़ाद०—प्रेमचंद, 191)।

खारी कुएं में ढकेलना—दे० खारी कुएँ में डालना।

खारी लगना—अप्रिय लगना। प्र० होली पिया बिन लागे खारी।

खाल उड़ाना—बहुत मारना। प्र० अच्छा जाओ, ई दफा छोड़े देइत हैं, आगे कबहूँ ऐसी गफलत करिहौ तो खाल उड़ाय दीन जाई (भिखा०—कौशिक, 138)।

खाल उदारना, -उधेड़ना, -उपाड़ना, -खींचना—कठोर दंड देना। प्र० मैं इसकी खाल उधेड़े बिना नहीं मानूंगा, आप छोड़ दीजिए।

खाल उधेड़ना—किसी विषय पर खूब चर्चा करना। प्र० जिस समय तुम लोग सभ्यता और संस्कृति की खाल उधेड़ रहे थे, मैंने तुम्हारी समस्या का एक हल खोज निकाला (सारा०—यादव, 173)।
(2) दे० खाल उदारना।

खाल उपाड़ना—(1) चमड़ा खींच लेना। प्र० हाय-हाय, दरवाजे ने हाथ की खाल ही उपाड़ ली।
(2) दे० खाल उदारना।

खाल ओढ़ना—यथार्थ को छिपाकर भला बनना। प्र० भलमनसाहत और शिष्टता की खाल ओढ़कर समाज में सम्मान पाने वाले लोग समाज के शत्रु हैं।

खाल कढ़ना या काढ़ना—कड़ा दंड मिलना या देना। प्र० तौ मैं जो बाही सों कहिकै इनकी खाल कढ़ाइ (सूर—ब्र० सू० को०)।

खाल खिंचना—दंडित किया जाना। प्र० सदाचारी की खिंचती खाल, कदाचारी पर चढ़ते फूल (वैदेही०—हरिऔध, 34)।

खाल खिंचवाकर भूसी भरवाना—कठोर-से-कठोर दंड देना।

खाल खींचना—दे० खाल उदारना।

खाल बिगड़ना—शामत आना; पिटने को जी चाहना। प्र० लगता है आज तुम्हारी खाल बिगड रही है।

खाल में मस्त होना—अपने आप में मस्त होना। प्र० इन्हें घर-गृहस्थी की क्या चिन्ता ये अपनी खाल में मस्त हैं।

खाल से लगाना—निकट रखना। प्र० तुम आखिर इसे कब तक खाल से

लगाकर रखोगे ?

खाल खिंचाई करना—जवाब-तलब करना; कठोर दंड देना । प्र० कमरे में पहुँचकर रमेश और लच्छू ने जयकिशोर के सामने हरों की खाल खिंचाई शुरू की (अमृत०–नागर, 608) ।

खालसा करना—(1) बरबाद करना । प्र० वाह साहब, यह खूब रही, आपने सब कुछ खालसा कर दिया ?

(2) अपने कब्जे में करना । प्र० देखिये प्रयोग (1) ।

खालसे लगना—राज्य या शासन के अधिकार में चला जाना । प्र० अंग्रेजों की चालबाजी से झाँसी का राज्य खालसे लग गया ।

खाला का घर—(1) सहज काम । प्र० जमींदार से आँखें बदलना खाला जी का घर नहीं है (प्रेमा०–प्रेमचंद, 16) ।

(2) ऐसा स्थान जहाँ कोई रुकावट या बंधन न हो । प्र० कबीर यहु घर प्रेम का, खाला का घर नाहिं (कबीर ग्रंथा०–कबीर, 69) ।

खाला-ऊँचा—भला-बुरा, हानि-लाभ । प्र० आदमी कुछ नया करने से पहले खाला-ऊँचा भी तो सोचता है ।

खाली का चांद, खाली महीना—ऐसा महीना जिसमें कोई शुभ काम न होता हो । प्र० उतरते चैत खाली का चाँद होगा, उसमें विदाई न हो सकेगी ।

खाली गगरी छलकना—थोड़ा हो पर ऐसा दिखलाना कि बहुत है । प्र० अधजल गगरी छलकत जाय; मैं क्या जानती नहीं, खाली गगरी छलकती है ।

खाली जाना—(1) ठीक न बैठना, लक्ष्य पर न बैठना । प्र० नवाब साहब ने फौरन गोली सर की, वह खाली गयी (आज़ाद०–प्रेमचंद, 495) ।

(2) निष्फल होना । प्र० पर मेरी बात खाली जाय, यह कैसे बरदाश्त कर सकता हूँ ।

खाली जेब, खाली हाथ—बिना कुछ अर्जन किए या बिना कुछ लिए; पास में पैसे बिना । प्र० घर कैसे पैठब मैं छूंछे । कौन उतर देबेऊँ तिन्ह पूंछे (पद०–जायसी, 7/2); घरवालों ने समझा था कि जब यह पढ़के तैयार होंगे सारा दुख दारिद्र्य दूर हो जायगा, पर जब आप खाली पाकेट घर लौटकर आए, विचारिए उन बेचारों पर क्या गुजरी होगी (राधा० ग्रंथा०–राधा० दास, 77); आदमी खाली हाथ लौट आया (मान०(1)–प्रेमचंद, 61) ।

खाली ढोल—व्यर्थ की बड़ी-बड़ी बातें करनेवाला । प्र० कलम तेज थी, वाणी कठोर, साफ गोई की जगह उच्छृंखलता कर बैठते थे, इसलिए लोग उन्हें खाली ढोल समझते थे (गोदान–प्रेमचंद, 65) ।

खाली दिन—ज्योतिष के अनुसार अशुभ दिन । प्र० बुधवार खाली दिन है उस दिन मुँहदेखाई कैसे होगी ?

खाली दिमाग—बुद्धिहीन, मूढ़ । प्र० यह ठहरा खाली दिमाग, इसे कुछ न समझ में आयेगा ।

खाली देना—वार को बचा जाना । प्र० आज़ाद ने खाली दी (आज़ाद० –प्रेमचंद, 349) ।

खाली पेट—बिना कुछ खाये । प्र० वैद्यजी के पास सुबह खाली पेट जाना ।

खाली पेट कटारी मारना—विपत्ति के समय कठिन बदला चुकाना या अहित करना । प्र० ऐसे में वह खाली पेट कटारी मारेगा, यह सोचा न था ।

खाली बैठना—बेकार होना, बेरोजगार होना । प्र० वह काफी दिनों से खाली बैठा है ।

खाली बैठे का काम—फजूल काम । प्र० उनका प्रयोग खाली बैठे का काम-सा दिखाई पड़ता है ।

खाली महीना—दे० खाली का चाँद ।

खाली हाथ—(1) बिना चूड़ी का हाथ । प्र० अरे बहू खाली हाथ क्यों घूम रही हो ?

(2) कोई काम न होना । प्र० इधर काफी दिनों से खाली हाथ हूँ, कोई काम हो तो बतलाइए न ।

(3) दे० खाली जेब ।

खाली हाथ लौटना—असफल वापिस आना । प्र० अरे, तुम खाली हाथ लौट आये ? कैसे ?

खाली होना—(1) बेकार होना । प्र० लड़का भी खाली है मालकिन, इसे भी कहीं काम पर लगवा दीजिए ।

(2) पास में रुपया-पैसा न होना । प्र० जब आदमी खुद खाली हो तो करनी-करतूत कैसे करे ।

खाली-खाली—(1) सूना-सूना । प्र० सब बच्चे सुबह हॉस्टल चले गये, घर एकदम खाली-खाली लग रहा है ।

(2) बिना कुछ लिये । प्र० उनकी लड़की का जन्मदिन है, खाली-खाली मत जाना ।

ख़ास-कलम—प्राइवेट सेक्रेटरी । प्र० संतोष बाबू बड़े साहब के खास-कलम हैं ।

ख़ास-ख़ास—अच्छे प्रतिष्ठित; चुने हुए । प्र० रोहतगी जी के यहाँ विवाह में बड़े ख़ास-ख़ास लोग आये थे ।; सबको बड़ी डायरी न दे पाऊँगा, ख़ास-ख़ास लोगों को दूंगा ।

ख़ास-महल—बादशाह के रहने का निजी महल ।

खासा करना—ज़मीन को धोकर स्वच्छ करना । प्र० ज़मीन खासा करके पंडित जी के लिए आसन लगाना ।

खासा चुनना—बादशाही दस्तरख़ान पर अच्छा-अच्छा खाना लगाना ।

खासुल खास—खास; विशेष विश्वासपात्र । प्र० वे हम लोगों के खासुल खास हैं ।

खासे का—खास । प्र० देखो, खासे का लड्डू भीतर बहूजी को दे देना ।

खिंच जाना—(1) प्रतिकूल होना, उदासीन होना । प्र० लोग तो कैसे खिंच जाते, जो नहीं खींचतान होती (मर्म०–हरिऔध, 86) ।

(2) किसी दृश्य या व्यक्ति का स्वरूप आँखों के सम्मुख आ जाना । प्र० प्रकृति की वह छटा आज भी सामने खिंच जाती है ।

(3) आकर्षित होना । प्र० आपने किसी को देखा नहीं कि उसकी ओर खिंच जाते हैं ।

(4) दूर हो जाना। प्र० अमृतांजन लगा लो, सब दर्द खिंच जायेगा।

खिंचा रहना या होना, खिंचा-खिंचा रहना—विरक्त रहना, दूर-दूर रहना। प्र० यह बतलाइए कि इधर आप मुझसे खिंचे-खिंचे क्यों रहते हैं? (अजय०–देवराज, 240)।

खिंचाई करना (किसी की)—किसी की चुटकी लेना; मज़ाक बनाना। प्र० इन्हें सुना-सुनाकर अक्सर वह महफिलों में कहकहे बटोरता है और 'खिंचाई करने' का आनन्द पाता है × × (कम०–कम०, 9)।

खिंचा-खिंचा रहना——दे० खिंचा रहना या होना।

खिंचे हाथों—कंजूसी से, कम खर्च करने की नीयत से। प्र० एक-एक बालूशाही खिंचे हाथों लबसूल और अपने शागिर्दों को देकर खलीफा खुद ही भोग लगाने लगे (सात०–नागर, 74)।

खिचड़ी—पौष संक्रांति या अन्य किसी अवसर पर दी जाने वाली खिचड़ी की भेंट (जिसके साथ और भी बहुत-सा सामान रहता है)। प्र० आज तो संक्रांति है, बहू के मैके से खिचड़ी आवेगी न!; छोटी बहू के लड़का हुआ था तो उसके मैके वालों ने तीन हजार रुपये की खिचड़ी दी थी।

खिचड़ी कर देना—एकाधिक चीज़ को एक में मिला देना। प्र० देखो, इसने सब अनाज खिचड़ी कर दिया।

खिचड़ी का घी—आपस में खप जानेवाली वस्तु। प्र० अरे यह तो खिचड़ी का घी है, इससे क्या परेशानी है।

खिचड़ी खाते पहुँचा उतरना—बहुत नाजुक होना। प्र० बहू तो ऐसी है कि खिचड़ी खाते उसका पहुँचा उतरता है।

खिचड़ी खाना—चांटा खाना। प्र० खिचड़ी खाने का मन हो तो इधर आओ।

खिचड़ी खिलाना, खीर खिलाना—विवाह की एक रस्म जिसमें वर को उसके नाते-रिश्तेदारों के साथ खिचड़ी खिलाई जाती है।

खिचड़ी चुरना, -पकना या पकाना—गुप्त रूप से सलाह या षड्यंत्र होना या करना। प्र० वह क्या जानता था। इनके बीच में क्या खिचड़ी पक रही है (गोदान–प्रेमचंद, 124)।

खिचड़ी छुआना—नव वधू का पहले-पहल कच्ची रसोई बनाना।

खिचड़ी पकना—दे० खिचड़ी चुरना।

खिचड़ी बाल—काले-सफेद बाल। प्र० उसका ठिंगना स्थूल शरीर, सिर के खिचड़ी बाल, × × छोटी-छोटी आँखें उसके स्वभाव की प्रखरता और तेजी पर परदा-सा डाले रहती थीं (मान० (1)–प्रेमचंद, 267)।

खिचड़ी बोली, -भाषा—मिश्रित भाषा। प्र० यही कारण है कि आज-कल की खड़ीबोली खिचड़ी-बोली बन गई है (पद्म पराग–पद्म० शर्मा, 319)।

खिचड़ी भाषा—दे० खिचड़ी बोली।

खिचड़ी होना—(1) बालों का सफेद होना शुरू होना। प्र० पांडे के साथ तनकर खड़े, खिचड़ी हो गई दाढ़ी को बट कर ठोढ़ी पर बांधे × × सर्दार जी ने अपना ह्विस्की सोडा का गिलास होंठों से हटाया (झूठा० (1)–यशपाल, 377)।

(2) मिल जाना। प्र० यह लो, तिल चावल सब खिचड़ी हो गया।

खिचरी रखना—मनोमालिन्य रखना। प्र० पिया सों खिचरी क्यों तू राखत (भा० ग्रं० (2)–भारतेन्दु, 459)।

खिजाब करना—खिजाब लगाना। प्र० शमसुद्दीन मियां बरसों से खिजाब कर रहे थे।

खिड़की निकालना—खिड़की फोड़ना या बनाना। प्र० पश्चिम की ओर भी खिड़की निकालनी होगी।

खिड़कीदार अंगरखा—एक प्रकार का अंगरखा जो आगे ऊपर की ओर खुला रहता है।

खिड़कीदार पगड़ी—एक तरह की पगड़ी जिसमें ऊपर का कुछ भाग खुला रहता है।

खिड़की-बंद—पूरा मकान; वह मकान जो केवल एक ही मनुष्य के अधीन हो।

खिताब करना—सम्बोधन करना। प्र० आप किसे खिताब कर रहे थे?

खिदमत बजाना—सेवा करना। प्र० वह सारे दिन सबकी खिदमत भी बजाती है पर कोई उससे खुश नहीं है।

खिदमत में बजा लाना—सेवा में उपस्थित करना। प्र० उस नामाकूल को अभी हुजूर की खिदमत में बजा लाता हूँ।

खिन-खिन करना—नाक सिकोड़ना। प्र० क्या हर बात में तू खिन-खिन किया करती है?

खिलकर मुरझा जाना—विकास होकर पुनः नष्ट होना; प्रसन्नता के बाद खिन्नता का आना। प्र० उसने ध्यान से ताई की बातें सुनीं। पल भर के लिए चेहरा खिलकर फिर मुरझा गया।

खिलखिला उठना, खिलखिलाकर हँसना—ऐसा हँसना जिसमें दांत दिखें और आवाज़ हो। प्र० सारी क्लास खिलखिला उठी (शेखर० (1)–अज्ञेय, 92); और तुम खिलखिलाकर भीतर हँस रहे हो (कला०–पंत, 59)।

खिलखिलाकर हँसना—दे० खिलखिला उठना।

खिलना—(1) शोभान्वित होना। प्र० पहनावा अंगरेज़ी था, जो उन पर खूब खिलता था (रंग० (1)–प्रेमचंद, 11)।

(2) प्रसन्न होना। प्र० इहि लायक हौ वहो नायक हौ सुखदायक हौ, पुनि पाय खिलो (घन० कवित्त–घना०, 99); यों तो मुझे देखते ही खिल उठते थे, दौड़कर छाती से लगा लेते थे, आज मुखातिब ही नहीं होते (रंग० (2)–प्रेमचंद, 175)।

खिलवत करना—एकांत में बातें करना। प्र० तनिक खिलवत कर लिया जाय, कुछ ज़रूरी बातें हैं।

खिलवाड़ करना—मज़ाक समझकर किसी काम को करना। प्र० यह वक्त खिलवाड़ करने का नहीं है।

खिलवाड़ समझना—मामूली समझना। प्र० बी० ए०, एम० ए० करना तुम खिलवाड़ समझते हो?

खिलाई-पिलाई—खाना-पीना। प्र० खिलाई-पिलाई में सारा दिन निकल

गया।

खिलाना, खिलाना-पिलाना—(1) घूस देना। प्र० तुम्हारे यहाँ आता तो कुछ खिला दिया जाता (सिन्दूर०—ल० मिश्र, 17)।
(2) कोई काम करवाने के लिए किसी की खातिर करना। प्र० तुम कुछ खिलाओ-पिलाओ तो तुम्हारे साथ चलूं।

खिलाना-पिलाना—दे० खिलाना।

खिलौना टूट जाना—मनोरंजन का साधन नष्ट हो जाना। प्र० मेरा खिलौना टूट गया, उसका अफसोस होगा ही।

खिलौना बनना या बनाना, -होना—(1) पूरी तरह वश में होना या रखना। प्र० चुन्नी लाल और शिम्भूदयाल आदि की कटती कहने मैं कसर न रखते परन्तु अक़्ल मोटी थी इसलिए उन्होंने इन्हें खिलौना बना रक्खा था (परीक्षा०—श्री० दास, 65); भट्टिनी को मैं राजनीति का खिलौना नहीं बनने दूंगा (बाण०—ह० प्र० द्वि०, 257)।
(2) अत्यन्त प्रिय होना या मानना। प्र० यमुना की भावज यमुना को खिलौना बनाये थीं (मिश्र निबन्ध०)।

खिलौना होना—दे० खिलौना बनना या बनाना।

खिल्लियों में उड़ाना—मूर्ख बनाना। प्र० तुम उसे खिल्लियों में उड़ाना चाहते हो? पर सावधान रहना, कहीं लेने के देने न पड़ जायं।

खिल्ली उड़ाना—उपहास करना। प्र० मनोज सारी वस्तुस्थिति की खिल्ली उड़ाता है मन ही मन (दूधगाछ—दे० स०, 298)।

खिल्ली में उड़ाना—यों ही हँसी में बात टाल देना। प्र० आप हमेशा मेरी बात खिल्ली में क्यों उड़ा देते हैं?

खिल्ली में लेना—हँसी-मज़ाक में तंग करना। प्र० तुम लोग क्यों बेचारे को खिल्ली में ले रहे हो?

खिसक जाना, -देना—चुपचाप चल देना। प्र० कुछ लोग बोर होकर खिसकने की तैयारी करने लगे (अमृत०—नागर, 94)।

खिसक देना—दे० खिसक जाना।

खिसियाना करना—नीचा दिखाना। प्र० चार आदमियों के सामने किसी को खिसियाना नहीं करना चाहिए।

खिसियानी बिल्ली का खंभा नोचना—खिसियाए हुए आदमी का अपनी खीझ निकालना।

खिसियानी हँसी—खिसियाहट की स्थिति में हँसी गई हँसी। प्र० वेनीप्रसाद खिसियानी हँसी हँसकर रह गये।

खींच—माँग, खपत। प्र० बाजार में बरफ की खींच थी, दाम आठ आना सेर तक चढ़ गया था।

खींच बुलाना—आकर्षित करना, पास बुलाना। प्र० तुम्हारी याद मुझे खींच बुलायेगी, यह जानती हो?

खींचकर पानी पीना—स्वयं परिश्रम करके तब फल भोगना। प्र० चाचा ने तो सारी जिन्दगी खुद खींचकर पानी पीया, किसने उनकी सहायता की?

खींचकर मारना—ज़ोर से चांटा मारना। प्र० मुझसे हुरिया ने "नौआ" कहा था, इसी पर तो मारा उसने खींच कर मुन्ना के (जिन्दगी—निर्गुण, 69)।

खींच-खांच—नोंक-झोंक। प्र० दोस्तों में ऐसी खींच-खांच चलती ही रहती है।

खींच-खांचकर—किसी प्रकार। प्र० रुपये कम तो पड़े ही, किसी तरह खींच-खांचकर काम चलाया।

खींच-तान—वैमनस्य। प्र० दिन अगर लाग-डांट में बीतें तो कटें खींचतान में रातें (चुभते०—हरिऔध, 69)।

खींच-तान करना—(1) कम-बेशी करके किसी तरह काम चलना। प्र० उनका कहना था—जब रोजगार में कुछ मिलता नहीं, दैनिक कार्यों में खींच-तान करनी पड़ती है × × तो फिर तीजे में क्यों इतनी उदारता की जाय (मान० (1)—प्रेमचंद, 153)।
(2) व्यर्थ विवाद करना। प्र० यही सीधी-सीधी बातों को विचार ही विचार मैं खेंच-तान कर ऐसी पेचीदा बना लेते हैं कि उन्का सुलझाना मुश्किल पड़ जाता है (परीक्षा०—श्री० दास, 9)।

खींच-तान में पड़ना—झगड़े में पड़ना। प्र० यहां आकर व्यर्थ खींच-तान में पड़ गयी।

खींचना—(1) आकृष्ट करना; किसी पक्ष में करना। प्र० वे लोग इस प्रस्ताव को हिन्दू-मुसलिम विवाद का रंग देकर प्रभाकर राव को भी अपनी ओर खींचना चाहते थे (सेवा०—प्रेमचंद, 120–121)।
(2) दूर करना (दर्द खींचना)। प्र० पीमी लौंग के लेप ने पल भर में दर्द खींच लिया।
(3) अलग रहना; कोई योग न देना। प्र० समझाने की तो बात क्या है पर तुमने जिस तरह अपने को संसार से अलग खींच लिया है, इस तरह आदमी बहुत काम का रहेगा, इसमें मुझे संदेह है (शेखर० (2)—अज्ञेय, 155)।

खींचा-खींचा पड़ना, -फिरना—दोनों ओर से दबाव में पड़ना, परेशान होना। प्र० खींचा-खींचा वह पड़े, जो पराए बीच पड़े।

खींचा-खींचा फिरना—दे० खींचा-खींचा पड़ना।

खींचातानी करना या होना—एक ही वस्तु को लेने के लिए छीना-झपटी करना या होना। प्र० कहै कबीर भजि सारंग पानी, नहीं तर ह्वै है खैंचा तानी (कबीर ग्रंथा०—कबीर, 117); छोड़ दें पेचपाच की आदत बीच की खींचतान कर दें कम (चुभते०—हरिऔध, 27)।

खीझ निकालना—चिढ़ाना। प्र० तुम क्यों इनको खीझ निकाल रहे हो?

खीर का दलिया हो जाना—अच्छी चीज का खराब हो जाना; भाग्य प्रतिकूल हो जाना। प्र० अपने राम की खीर का तो दलिया हो गया, क्या कहूँ?

खीर खिलाना—दे० खिचड़ी खिलाना।

खीर चटाना, -खीर चढ़ाना—बच्चे को पहले-पहल अन्न चटाना।

खीर चढ़ाना—दे० खीर चटाना।

खीर-सी खाकर रह जाना—कुछ वश न चलना। प्र० वह तो खीर-सी खाकर रह गयी, कुछ न कर पायी।

खीरा के मोल बिकना—बहुत सस्ता होना। प्र० अनार आजकल खीरा के

मोल बिक रहा है।

खीरा ककड़ी—साधारण या तुच्छ। प्र० तुमने इसे खीरा-ककड़ी समझ रखा था जो फेंक दिया?

खीरा-ककड़ी की तरह काटना—बिना परिश्रम या बिना परेशानी के काटना। प्र० ऐसा निर्दय था कि आदमियों को खीरा-ककड़ी की तरह काट देता था।

खील बरसाना—धान का लावा बरसाकर आनन्द प्रकट करना। प्र० राजा के ऊपर खिड़कियों से खील बरसाई जा रही थी।

खीस काढ़ना, -निकालना, -निपोरना—(1) दीनता दिखलाना। प्र० फिर खीसें काढ़कर (बोले)—पर आप जानते हैं, हमारी परिस्थिति केवल पत्रं पुष्पम्'' (शेखर० (2)—अज्ञेय, 158)।
(2) दांत निकालकर हँसना। प्र० मूढ़ वे हैं काढ़ते जो खीस हैं (बोल०—हरिऔध, 243)।
(3) मर जाना। प्र० एक दिन जब खीस निपोर दोगे तब क्या करने को रह जायगा?

खीस खलाना, -जाना—नष्ट होना। प्र० कान्ह कृपाल बड़े नतपाल गये खल खेचर खीस खलाई (तुलसी)।

खीस जाना—दे० खीस खलाना।

खीस डालना—नष्ट करना। प्र० काहे को निर्गुन ज्ञान गनत हो. जित तित डारत खीस (सूर)।

खीस निकालना—दे० खीस काढ़ना।

खीस निपोरना—दे० खीस काढ़ना।

खुजली उठना—दे० खाज उठना।

खुजली मिटना—दे० खाज मिटना।

खुजली होना—दे० खाज उठना।

खुड़ेंच निकालना—झगड़े के लिए उसकाना। प्र० बिना बात की बात तुम क्यों खुड़ेंच निकालते रहते हो?

खुतबा पढ़ना—सिंहासनारूढ़ होने की घोषणा होना। प्र० कल शाम को खुतबा पढ़ा जायगा।

खुद-ब-खुद—आप से आप; बिना किसी दूसरे के प्रयास के। प्र० वे खुद-ब-खुद आ जायेंगे, चिन्ता मत करो।

खुदा का नक्कारा—जनता की मांग। प्र० खुदा के नक्कारे की ओर से तुम आँखें कैसे मूंदोगे, सो बोलो।

खुदा का गजब—बहुत बड़ा गजब। प्र० अरे भाई, यह तो खुदा का गजब हुआ।

खुदा का घर—मसजिद।

खुदा की मार—दुर्भाग्य; कोई नष्ट हो—इस अर्थ में कोसना। प्र० भाई, इन काफिरों पर खुदा की मार है (राधा० ग्रंथा०—राधा० दास, 600); इस झूठ पर खुदा की मार, हम बरसों रहे, एक देव भी न देखा (आजाद०—प्रेमचंद, 571)।

खुदा की राह पर—भगवान् के नाम पर। प्र० खुदा की राह पर इस गरीब को भी कुछ मिल जाय।

खुदा के घर से बच आना—मौत के मुंह से बच आना। प्र० हुजूर, यह लड़का खुदा के घर से बचकर आया है।

खुदा को हाजिर व नाजिर करके—खुदा को साक्षी करके। प्र० खुदा को हाजिर व नाजिर मानकर मैं कहता हूँ कि × ×।

खुदा दिखाई देना—भगवान् याद आना; अपना वश न चलने पर भगवान् को याद करना। प्र० अब तुम्हें खुदा दिखाई दे रहे हैं? पहले उसे क्यों नहीं याद किया?

खुदा लगती कहना, -बोलना—सच्ची बात कहना। प्र० उनका तो उसूल है कि खुदा लगती कहो चाहे किसी को अच्छी लगे चाहे न लगे।

खुदा लगती न कहना, मुंह देखी कहना—सच्ची बात न कहना; चापलूसी करना। प्र० तुम तो खुदा लगती नहीं मुंह देखी कहते हो।

खुदा लगती बोलना—दे० खुदा लगती कहना।

खुदा लगाना—खुदा जैसा समझना; बहुत बुद्धिमान और श्रेष्ठ मानना। प्र० दीक्षित साहब अपने को लाख खुदा लगाते रहें, इस आदमी से बातें करें, तो नानी याद आ जाए (प्रतीक्षा—यादव, 43)।

खुदाई फिरना—बोलबाला होना। प्र० आजकल तो राजनीति में भी औरतों की खुदाई फिरने लगी है।

खुदाई फौजदार—अत्यन्त नेक, उदार या धर्मपरायण। प्र० मैं कोई खुदाई फौजदार नहीं हूँ, कि दूसरों की नादानी का फल भोगूं (मान० (7) —प्रेमचंद, 111)।

खुदाई भर की खाक छानना—बहुत खोजना। प्र० अब की खुदाई भर की खाक छानकर वह ढूंढ़ निकालूं, जो लाखों में एक हो (आजाद०—प्रेमचंद, 50)।

खुदाई में ढेले फेंकना—खुदा के प्रति कृतघ्न होना।

खुदाई सवार—बेकद्र, बदनाम। प्र० इस खुदाई सवार को कोई न पूछेगा, देख लेना।

खुदाई होना—अन्तिम सीमा होना। प्र० तो आप क्या समझते हैं खुदाई आप तक ही है?

खुदा-खुदा करके—किसी प्रकार, कठिनाई से। प्र० आज दुश्मनों सालों की कजा का दिन आया है खुदा-खुदा करके (सात०—नागर, 75)।

खुदी को मिटाना—अपने अहं को, अस्तित्व को मिटा देना। प्र० इसकी खातिर उसने अपनी खुदी तक को मिटा दिया।

खुफियाखाना—वेश्यालय।

खुब जाना—गड़ जाना; गहरा असर डालना। प्र० उसकी छवि मेरे मन में खुब गयी है।

खुमार तोड़ना—नशे के अवसाद को दूर करने के लिए थोड़ी और पीना। प्र० इस वक्त खुमार तोड़ना जरूरी हो गया है।

खुमारी उतरना या उतारना, -टूटना—आलस्य दूर होना या करना। प्र० नौ बज रहे हैं, तुम्हारी खुमारी कब उतरेगी?

खुमारी चढ़ना—किसी बात का असर बाद तक बना रहना; मस्ती का भाव बना रहना। प्र० बिसर्यौ भोजन पान-खान सुख-चैन री। रही खुमारी चढ़ी रहत दिन-रैन री (भा० ग्रंथा० (2)—भारतेन्दु,

371) ।

खुमारी टूटना -दे० खुमारी उतरना या उतारना ।

खुरखार करना—छोटा-मोटा काम करना । प्र० खास कुछ नहीं, यों ही खुरखार कर लेता है ।

खुरपी-जाली संभालना—साईस का पेशा शुरू करना ।

खुरी करना, खूंद करना—(1) बहुत जल्दी करना । प्र० आखिर इतनी खुरी क्यों कर रहे हो, क्या बात है ?

(2) जानवरों का खुर से ज़मीन खोदना ।

खुरी खोदना—खुर से जमीन खोदना; चंचल होना ।

खुर्दा करना—बेचना । प्र० इस ज़रा-सा अंगूठी को खुर्दा करने के लिए बाजार जाना होगा ?

खुर्दा पकड़ना, खुर्दागिरी करना—ऐब निकालना । प्र० आपके सामने कोई चीज़ आई और आप खुर्दा पकड़ने लगते हैं ।

खुर्दागिरी करना—दे० खुर्दा पकड़ना ।

खुर्रे चने बन जाना—बे-मुरव्वत हो जाना । प्र० वे तो आजकल एकदम खुर्रे चने बन गये हैं ।

खुल खेलना, खुलकर खेलना—(1) मनमानी करना । प्र० इन दिनों तो है विपत खुल खेलती (चुभते०–हरिऔध, 1); इच्छा और वासना खुलकर रही हैं खेल (बुद्ध०–बच्चन, 175) ।

(2) उच्छृंखल होना । प्र० तब ठीक है । अब मेरा सुख देखना । खुल खेलूंगा (सुहाग०–नागर, 139) ।

खुलकर—(1) बिना रुकावट के, अच्छी तरह । प्र० मलिकाइन का हाथ छोटा है । खुलकर जब परोसती ही नहीं तो बेचारा मेहमान क्या खायेगा और क्या छोड़ेगा ? (बल०–नागा०, 20) ।

(2) खुलेआम । प्र० अगर मांस खाना अच्छा समझते हो तो खुलकर खाओ (गोदान–प्रेमचंद, 53) ।

(3) बिना किसी हिचक के; स्पष्ट । प्र० इसका प्रबन्ध करने को उन्होंने मुझसे कहा था तो हम साफ-साफ यह नहीं कहना चाहते थे, लेकिन जब तुम समझते ही नहीं तब तुमसे खुलकर यह कहना पड़ रहा है (भूले०–भग० वर्मा, 199); खुल कहें और बार-बार कहें बात वाजिब सदा कही जावे (चुभते०–हरिऔध, 41) ।

(4) आराम से । प्र० सब लोग खुलकर बैठो, यों घुस-घुसकर क्यों बैठे हो ?

(5) अच्छी तरह । प्र० आज कई दिनों बाद मुन्ना को खुलकर दस्त हुआ है ।

(6) दिल खोलकर । प्र० खुलकर हँसना तो कोई शास्त्रीजी से सीखे ।

खुलकर खेलना—दे० खुल खेलना ।

खुलता रंग—(1) हलका सुहावना रंग । प्र० शीला ने एक हलकी-सी खुलते रंग की साड़ी पहन रखी थी ।

(2) तुलना में अधिक साफ या चटकीला रंग । प्र० सीता का रंग उर्मिला से खुलता है ।

खुलना—(1) मन की बात कहना । प्र० पूछिए, लेकिन मुझे भय है कि राजा साहब आसानी से न खुलेंगे (रंग० (2)–प्रेमचंद, 139) ।

(2) शोभायमान होना । प्र० सुठि सुन्दर भाल पै भौंहनि बीच गुलाल की कैसी खुली टिकुली (घन० कवित्त–घना०, 190) ।

(3) संकोच दूर होना । प्र० कितनी जल्दी यह हर्ष उसके सामने खुल गया है, वरना उसे याद है, पहली बार उसकी हिम्मत गीता के सामने सिगरेट पीने की नहीं पड़ी थी (प्रतीक्षा–यादव, 8) ।

(4) प्रकट होना । प्र० ज्यों-ज्यों आजाद के गुण नवाब पर खुलते जाते थे, और मुसाहबों की किरकिरी होती जाती थी (आजाद०–प्रेमचंद, 18) ।

खुला अधिवेशन—आम-अधिवेशन । प्र० 22 अगस्त से कांग्रेस का खुला अधिवेशन शुरू होगा ।

खुला खेल—ऐसा काम जिसमें सब कुछ स्पष्ट और सामने हो । प्र० अपने पास कोई दुराव-छिपाव नहीं है, सब खुला खेल है ।

खुला पृष्ठ—अत्यन्त स्पष्ट । प्र० गायत्री उन स्त्रियों में न थी, जिनके लिए पुरुषों का हृदय एक खुला हुआ पृष्ठ होता है (प्रेमा०–प्रेमचंद, 73) ।

खुला बिल्ला लगाना—किसी काम या बात को खुलेआम करना । प्र० उन्होंने तो आर्य समाज का खुला बिल्ला लगा लिया है ।

खुला भेद, -रहस्य—छिपी बात का प्रकट रूप । प्र० यद्यपि डाक्टर इर्फान अली इस मंडल के मुखपात्र थे, पर खुला हुआ भेद था कि प्रेमशंकर ही उसके कर्णधार हैं (प्रेमा०–प्रेमचंद, 435) ।

खुला रहस्य—दे० खुला भेद ।

खुला हाथ—खूब खर्च करने की प्रवृत्ति । प्र० सेठ अमीचंद का खुला हाथ कौन नहीं जानता (भारती०–रां० रा०, 60) ।

खुला होना—(1) सहज मिल जानेवाला । प्र० मैं राजनेता नहीं हूँ और सदा खुला हूँ । कभी कोई मुझसे मिल सकता है (मान० (3)–प्रेमचंद, 14); नौकरियां सभी दलों के लोगों के लिये खुली हुई हैं (मेरे०–गुलाब०, 202) ।

(2) साफ-साफ बात करनेवाला । प्र० वह खुला हुआ है, उससे पीड़ा भी पहुँच सकती है ।

(3) व्यक्ति या विषय का विचार-विमर्श के लिए निराग्रह होना । प्र० हम सभी खुले हुए हैं अतः समस्या पर निष्पक्ष रूप से विचार कर सकेंगे ।

(4) साफ; हवा-रोशनीवाला । प्र० कोई खुला-खुला मकान हो तो मैं भी लूं ।

खुला-खुला फिरना—बेरोक-टोक घूमना । प्र० उस पर कब बन्धन था, सदा खुला-खुला फिरा है ।

खुली अदालत—ऐसी अदालत जिसमें जनता कार्यवाही देख-सुन सकती हो । प्र० आज़ाद हिन्द फौज के सिपाहियों के लिए खुली अदालत की व्यवस्था की गयी ।

खुली चोट—स्पष्ट आक्षेप । प्र० उसमें ऐसा संशोधन कर दीजिए, जिससे

कोई खुली चोट किसी पर न रह जाय (पद्म० के पत्र-पद्म० शर्मा, 15)।

खुली छूट देना—पूरी छूट देना। प्र० आपने लड़के को ऐसी खुली छूट क्यों दे रखी है?

खुली छूट मिलना—कोई प्रतिबन्ध न होना। प्र० नवाब साहब, इंडिविजुअल (व्यक्ति) की आजादी के माने दरअसल यही हैं कि पैसे वालों और शक्ति-शालियों को अपनी मनमानी करने की छूट मिलती रहे (अमृत०-नागर, 666)।

खुली जगह—ऐसा स्थान जहां वायु के आने-जाने में कोई रुकावट न हो। प्र० मकान में कुछ खुली जगह भी तो छोड़ोगे?

खुली जांच—प्रकट जाँच। प्र० इस मामले की तो खुली जाँच होगी।

खुली तबीयत—जिन्दादिल, मस्त। प्र० पर जिस घर में इंसान बसते हों और वे कुछ खुली तबीयत के लोग हों × × वहाँ चीज़ों का × × इधर-उधर हो जाना कोई असाधारण बात नहीं (पैंतरे-अश्क, 46)।

खुली थाप देना—तबले पर पूरी हथेली से थाप देना।

खुली धमकी देना—स्पष्ट रूप से धमकाना। प्र०, × × सोफिया ने जाकर उसके सामने राजा साहब पर सूरदास के साथ अन्याय करने का अपराध लगाया, खुली हुई धमकी दे गयी (रंग०-प्रेमचंद, 225)।

खुली नज़र से देखना—(1) अच्छी तरह देखना। प्र० मारे शर्म के मैं तो खुली नज़र से देख भी न पायी।

(2) विस्तृत दृष्टिकोण से देखना। प्र० भाई साहब इतने सीमित मत बनिए, एक बार खुली नज़र से देखिए।

खुली पुस्तक—ऐसा व्यक्ति जिसमें कोई दुराव-छिपाव न हो। प्र० मैं तो खुली हुई पुस्तक के समान हूँ (नये हाथ-वि० रस्तोगी, 87)।

खुली बात—स्पष्ट बात। प्र० खुल सकें या न खुल सके आँखें क्या खुली बात को भला खोलें (चुभते०-हरिऔध, 45)।

खुली भाषा में—स्पष्ट रूप से। प्र० सासु जी × × मेरे पिताजी की बर्बरता की खुली भाषा में आलोचना करने लगीं (कुल्ली०-निराला, 25)।

खुली मुट्ठी का होना या खुली मुट्ठी होना—उदार होना। प्र० लालाजी खुली मुट्ठी के हैं, उनके पास जाने से निराश नहीं होना होगा।

खुली-मुट्ठी खर्च करना—बिना किसी हिचक के खर्च करना। प्र० अभी खुली मुट्ठी खर्च किये जाता हूँ, आगे की देखी जायगी।

खुली सोढ़ कहना, -गाना, -सोरठ कहना—खुल्लम-खुल्ला कहना। प्र० मैं तुम्हारे कारनामे खुली सोढ़ कहूँगा।

खुली सोढ़ गाना—दे० खुली सोढ़ कहना।

खुली सोरठ कहना—दे० खुली सोढ़ कहना।

खुली हवा—शुद्ध हवा। प्र० जाओ-जाओ, ज़रा खुली हवा में टहल आओ (सारा०-यादव, 204)।

खुली हवा में सांस लेना—किसी बड़ी झंझट के बाद राहत मिलना। प्र० बरसों की परेशानी के बाद अब रामलाल खुली हवा में सांस ले पाये हैं।

खुली-खुली गाली देना—स्पष्ट रूप से गाली देना। प्र० विचारशील पुरुष हैं, उनके लिए इशारा काफी है लेकिन मैंने गुस्से में आकर खुली खुली गालियां दीं (प्रेमा०-प्रेमचंद, 275)।

खुले आम, -खजाने, -बाजार, -मैदान—प्रकट रूप से। प्र० क्या कहें बात बेहयाई की हैं खुले आम बेटियां निकतीं (चुभते०-हरिऔध, 149); बड़े-बड़े हुक्काम खुले खजाने कमीशन लिया करते हैं (मान० (7) -प्रेमचंद, 70); न्याय, किस्मत और मन की शक्ति का जो फैसला हो वह खुले मैदान होने दे (बुद्ध०-बच्चन, 92)।

खुले खजाने—दे० खुले आम।

खुले तौर से—प्रत्यक्ष। प्र० मैं सदा खुले तौर से काम करने के पक्ष में हूँ।

खुले दरवाज़े न शरमाना—कोई लज्जा न होना। प्र० 'भाभी तो'—नीलिमा ने कहा—खुले दरवाज़े नहीं शरमातीं। जाओ भइया यह तो पढ़ लीं (बोने०-रां० रा०, 172)।

खुले दिल से—बिना किसी दुराव या भेद के, बिना किसी पूर्वाग्रह के। प्र० और महाराणा प्रतापसिंह ने भी उन्हें खुले दिल से गले लगाया (विष०-प्रेमी, 10)।

खुले बंदों—बेधड़क। प्र० लोग उन्हें आते-जाते देख कर खुले बन्दों उनका उपहास करते थे (प्रेमा०-प्रेमचंद, 157)।

खुले बाजार—दे० खुले आम।

खुले मैदान—दे० खुले आम।

खुले हाथ—बिना किसी रोक या दुराव के। प्र० खिलाने-पिलाने में खुले हाथ रुपया खर्च करता था (ग़बन-प्रेमचंद, 89)।

खुल्लमखुल्ला—प्रत्यक्ष। प्र० जब तू खुल्लमखुल्ला मेरे घर में रहेगी तब तो अनरथ ही हो जायेगा (रंग०-प्रेमचंद, 329)।

खुश-हाल होना—खाने-पीने का कष्ट न होना। प्र० परिवार खुशहाल है, लड़की सुख में रहेगी।

खुशामद से आमद होना—खुशामद करके ही आदमी आगे बढ़ पाता है।

खुशामदी टट्टू—खुशामद करनेवाला। प्र० खुशामदी टट्टू कहीं का, चाल से विलियम को उल्लू बनाना चाहता था (रंग० (1)-प्रेमचंद 348)।

खुशी का ठिकाना न होना, -के मारे नाचने लगना, -फूल उठना, -से ज़मीन पर पांव न पड़ना, -से नाच उठना, -से मुंह फूलना—अत्यधिक खुशी होना। प्र० दीपाली की मां के पैर तो जैसे खुशी से धरती पर टिकते ही न थे (कठ०-दे० म०, 47)।

खुशी का सौदा—स्वेच्छा से किया जानेवाला काम। प्र० महाराज, दान-पुण्य तो खुशी का सौदा होता है।

खुशी के मारे नाचने लगना—दे० खुशी का ठिकाना न होना।

खुशी के मारे फूल उठना—दे० खुशी का ठिकाना न होना।

खुशी से ज़मीन पर पांव न पड़ना—दे० खुशी का ठिकाना न होना।

खुशी से नाच उठना—दे० खुशी का ठिकाना न होना।

खुशी से मुंह फूलना—दे० खुशी का ठिकाना न होना।

खुशी-खुशी—बिना किसी विरोध के, आनन्द से। प्र० आप हमारी पुस्तक

खुशी-खुशी ले जा सकते हैं।

खुश्की का रास्ता, खुश्की-खुश्की—(1) स्थल मार्ग। प्र० खुश्की-खुश्की चलो तो भई मैं चलूंगा। समुद्र में जाते पांव डगमगाता है (आज़ाद –प्रेमचंद, 257)।

(2) ऐसा रास्ता जहां रास्ते में सूखा पड़े। प्र० अफगानिस्तान पहुँचने के लिए खुश्की का रास्ता पार करना होगा।

खुश्की देना—ताना मारना। प्र० बहू रानी, यों खुश्की क्यों दे रही हो?

खुश्की-खुश्की—दे० खुश्की का रास्ता।

खुस-फुस होना—धीरे-धीरे चर्चा होना। प्र० इसी पर थोड़ी देर चख-चख चला की, मुंह फूले पटके, निन्दा-कटूक्तियां खुश-फुस हुईं (अमृत०–नागर, 89)।

खुसियाबरदारी करना या होना—खुशामद करना या होना। प्र० ए भाई, तो इतनी खुसियाबरदारी किससे होगी?

खुसुर-पुसुर या खुसुर-फुसुर करना या होना—(1) धीरे-धीरे बात करना। प्र० ×× उनमें न जाने क्या खुसुर-पुसुर चलती रही (अधेरे०–राकेश, 121)।

(2) जालसाज़ी करना। प्र० खबरदार, मेरे साथ खुसुर-फुसुर मत करना।

खूंट छुड़ाना—पीछा छुड़ाना। प्र० गारी देत बहू बेटिन कौं, वै धाई ह्यां आवति। हा हा करति सबनि सौं मैं हीं, कैसेहुं खूंट छुड़ावति (सू० सा०–सूर, 2045)।

खूंट में गांठ देना—किसी बात को याद रखने के लिए साड़ी की कोर में गांठ बांधना। प्र० खूंट में गांठ दे ली है, अब नहीं भूलूंगी।

खूंट में बांध रखना—अपने ही अधिकार में रखना। प्र० खोट कैसे न खूंट में बँधती मन गया है खुटाइयों में सन (चुभते०–हरिऔध, 128)।

खूंटा करना—कहीं जमकर रहना। प्र० कहने का मतलब यह कि तुमने वहां खूंटा कर लिया है।

खूंटा गड़ना या गाड़ना—(1) सीमा निर्धारित होना या करना। प्र० जमीन में चारों ओर खूंटा गड़ गया है।

(2) शर्त बदना। प्र० अरे भाई, मैंने कोई खूंटा गाड़ रखा है क्या?

(3) जमकर बैठ जाना। प्र० लीजिए भला, आपने तो यहाँ खूंटा ही गाड़ दिया।

खूंटा होना—(1) घर; आश्रय स्थल। प्र० अपने राम का खूंटा है, वहीं जाऊंगा।

(2) चुपचाप बैठा रहना। प्र० क्या खूंटा हो रहे हो उठो कुछ करो-धरो।

खूंटा-सा बैठना—दे० खूंटा होना (2)।

खूंटी तानकर सोना—निश्चिन्त होकर सोना। प्र० थरहरी थूंनी पर्‌यो मंदिर, सूतौ खूंटी तांनि (कबीर ग्रंथा०–कबीर, 194)।

खूंटी न छोड़ना—पूरी तरह लूट लेना। प्र० इस बार तो डाकुओं ने खूंटी तक न छोड़ी।

खूंटी निकलना—दाढ़ी का थोड़ी बढ़ना जिसमें बाल कड़े और खड़े हों। प्र० खूंटी निकल आई है, हजामत क्यों नहीं बनाते?

खूंटी निकालना—ऐसी अच्छी तरह हजामत बना देना कि एकाध छूटे हुए बाल भी साफ हो जायें।

खूंटी या खूंटे के बल कूदना, -सहारे उछलना—किसी आश्रय या सहारा को पाकर कूदना। प्र० जी हां, जिस खूंटे के बल आप उछल रहे हैं उसका मुझे पता है।

खूंटी या खूंटे के सहारे उछलना—दे० खूंटी या खूंटे के बल कूदना।

खूंटी पर टांग देना—एक ओर रख देना। प्र० अपनी यह आदर्शवादिता आप खूंटी पर टांग दीजिए।

खूंटे पर मारना—(1) अपमान करना। प्र० पर इस तरह खूंटे पर मारना क्या उचित था?

(2) बांध कर मारना। प्र० लगता है वह इसे खूंटे पर मारेंगे।

खूंटे से बंधना या बांधना—शादी होना। प्र० अरे यार, अब खूंटे से बंध गया हूँ न, अब वह बात कहाँ।

खूंटे-बंधी गाय—सीधा व्यक्ति; पालित व्यक्ति।

खूंद करना—दे० खुरी करना।

खून उतरना, -उबलना, -खौलना, -में आग लगना—गुस्सा चढ़ना। प्र० आपने अपने लड़कों के रोने की आवाज़ सुनी, और आपका खून उबलने लगा (रंग० (1)–प्रेमचंद, 208); खौलता है मेरा लोहू, क्रोध से मैं हूँ भर जाता (वैदेही०–हरिऔध, 36)।

खून उबलना—दे० खून उतरना।

खून एक करना—मरना और मारना। प्र० हम आज या तो मातादीन को चमार बना के छोड़ेंगे या उनका और अपना रकत एक कर देंगे (गोदान–प्रेमचंद, 253)।

खून एक होना—एक वंश के होना। प्र० हम लोगों का खून एक ही है।

खून करना—(1) हत्या करना। प्र० मगर वहां तो उनके दोनों लड़के खून करने को उतारू हो रहे हैं (गोदान–प्रेमचंद, 125)।

(2) नष्ट करना। प्र० आत्मस्वातंत्र्य का खून करके अगर जीवन की चिन्ताओं से निवृत्ति हुई, तो क्या? (रंग०–प्रेमचंद, 25)।

(3) किसी के विचारों का उल्टा अर्थ करना। प्र० इस तरह की बातें कहकर तुम मेरे ईमान और एहसास का खून-ए-नाहक न करो (सात०–नागर, 32)।

खून का आखिरी कतरा तक बहा देना—प्राण-पण से चेष्टा करना। प्र० मातृभूमि की रक्षा के लिए हम खून का आखिरी कतरा तक बहा देंगे।

खून का घूंट—अपमानजनक स्थिति। प्र० इस सारी झुंझलाहट-बेचैनी के खून के घूंट के बावजूद, हर्ष और नंदा का उन्मुक्त व्यवहार और तन्मय विसर्जन देखकर कहीं बहुत गहरे उसे एक तृप्ति जैसी क्यों होती है, यह गीता की समझ में न पहले दिन आया था, न आज आता है (प्रतीक्षा–यादव, 15)।

खून का घूंट पीकर रह जाना, -पीना, -घूंटना—क्रोध या अपमान को चुपचाप सह लेना। प्र० फूलमती खून का घूंट पीकर रह गयी (मान० (1)–प्रेमचंद, 60)।

खून का घूंट पीना—दे० खून का घूंट पी कर रह जाना।

खून का जोश—अपने वंशवालों के लिए प्रकट किया गया प्रेम का जोश। प्र० होरी ने समझा, चौधरी ने पुनिया को मारा है। खून ने जोश मारा × × (गोदान–प्रेमचंद, 30)।

खून का दरिया बहना या बहाना, -की नदी बहाना—बहुत मार-काट होना या करना। प्र० त्यागि प्राण बरु देहिं सबै मिलि नदी रक्त की बहिहैं (राधा० ग्रंथा०–राधा० दास, 612); वहाँ आकर देखा तो खून के दरिये बह रहे थे (आजाद०–प्रेमचंद, 328)।

खून का पानी करना—(1) बहुत परिश्रम करना। प्र० जवानी में दूध किसी ने पीया हो, पर बुढ़ापे में, गाय के लिए अपना खून पानी करने वाली हैं, तो गुलाबो अम्मा (कला०–उग्र, 157)।
(2) मरने को उतारू होना। प्र० वह तो आपकी खातिर खून को पानी करने को प्रस्तुत है।

खून का प्यासा—(1) जानी दुश्मन। प्र० चारों ओर लोहू के प्यासे भील-ही-भील दिखाई पड़ते थे (राधा० ग्रंथा०–राधा० दास, 158)।
(2) मारकाट के लिए उत्सुक। प्र० लोहू के प्यासे भेड़ियो, तुम जब बर्बर थे, तब क्या इससे बुरे थे? (कामना–प्रसाद, 62)।

खून का रिश्ता, -सम्बन्ध, खून-मांस का सम्बन्ध—सगोती होना। प्र० लक्ष्मणदास जी से हम लोगों का खून का सम्बन्ध है।

खून का सम्बन्ध—दे० खून का रिश्ता।

खून की कमाई—बहुत ही परिश्रम से अर्जित धन। प्र० औरों की कमाई पसीने की होती होगी, तुम्हारी कमाई तो खून की है (रंग०(1)–प्रेमचंद, 32)।

खून की नदी बहना या बहाना—दे० खून का दरिया बहना या बहाना।

खून की होली खेलना—रक्तपात करना। प्र० मैं बचे हुए शक्तावतों को एकत्रित कर एक बार फिर जबर्दस्त खून की होली खेलूंगा (विष० प्रेमी, 68)।

खून के आँसू बहाना, -रोना—मर्मान्तिक पीड़ा होना। प्र० कभी तुम इस निर्दयता पर खून के आँसू बहाओगी (रंग०(2)–प्रेमचंद, 214)।

खून के आँसू रोना—दे० खून के आँसू बहाना।

खून खुश्क होना, -सूखना—बहुत डर जाना। प्र० किस तरह पिछले आठ-दस दिनों से दिलीप सिंह का खून सूख रहा था जब से उसे गदर की योजना असफल होने की खबर मिली (एक म्यान०–नानक, 126)।

खून खौलना—दे० खून उतरना।

खून गरदन पर चढ़ना, -सवार होना, -होना, खून सवार होना, खून सिर पर चढ़ना, -सवार होना—खून करने का पाप लगना। प्र० एक अधरम के दण्ड से बचने के लिए गुनाहों का खून तो सिर पर न चढ़ेगा (ग़बन–प्रेमचंद, 226); फिर बेगुनाहों का खून किसकी गर्दन पर होगा (ग़बन–प्रेमचंद, 238)।

खून गरदन पर सवार होना—दे० खून गरदन पर चढ़ना।

खून गरदन पर होना—दे० खून गरदन पर चढ़ना।

खून गर्म होना—(1) जवानी के जोश में झट उत्तेजित हो जाना। प्र० तुम्हारा भी खून गरम है और वह भी अभी बच्ची है (सारा०–यादव, 24)।
(2) अत्यन्त क्रोधित होना। प्र० झट बड़ा गर्म हो जाता है तुम्हारा खून, ऐसे कैसे चलेगा।

खून घूंटना—दे० खून का घूंट पीकर रह जाना।

खून चढ़ना—हत्या करने को उद्यत होना। प्र० उसे खून चढ़ गया, वह किसी तरह रोके नहीं रुक रहा था।

खून चूसना—घोर कष्ट देना; कष्ट देकर रुपया ऐंठना। प्र० तुम खून चूस-कर उनका पापों से कोष बढ़ाओ (नूर०–भक्त, 94)।

खून चूसने वाला—घोर अन्यायी और पर-पीड़क। प्र० ये खून चूसनेवाले लोग मौज करें और कटें मरें मजदूर, यह नहीं हो सकता (टेढ़े०–भग० वर्मा, 26)।

खून जम जाना—(1) बहुत डर जाना। प्र० घर के सामने ही मारकाट होती देख हम लोगों का खून जम गया।
(2) किसी अंग-विशेष में खून का संचार बन्द हो जाना।

खून जलना या जलाना—दुःख या कष्ट देना या पाना। प्र० आपने अपना खून जलाकर कौन-सा तीर मार लिया? (मान० (1)–प्रेमचंद, 81)।

खून जोर करना—रक्त सम्बन्ध के कारण किसी की रक्षा या सहायता के लिए उद्यत होना। प्र० लगता है खून जोर कर रहा है, क्यों?

खून ठंडा होना, -बरफ होना, -सर्द होना—(1) जोश ठंडा होना। प्र० दिल हुआ ठंडा, लहू ठंडा हुआ। देख ठंडे आँख की ठंडक बढ़ी.(चुभते०–हरिऔध, 63)।
(2) बहुत डर जाना। प्र० इस ठाठने से ऐसी आसुरिक उद्दण्डता × × टपकती थी कि रात को सुनकर लोगों का खून ठंडा हो जाता था (मान० (8)–प्रेमचंद, 20)।
(3) बुढ़ापा आना। प्र० अरे बेटा, मेरा खून ठंडा हुआ, अब वह पहले वाली बात कहाँ?

खून देना—प्राण देना, युद्ध में काम आना। प्र० हम सब अपना खून देने को राजी हैं।

खून निकलवाना—आपरेशन या अन्य उपाय द्वारा शरीर का दूषित रक्त निकलवाना।

खून पानी हो जाना—जोश का न रहना। प्र० हो गया पानी जब किसी का लहू पेट कैसे तब भला पानी न हो (बोल०–हरिऔध, 220)।

खून पीना—(1) मार डालना। प्र० मैं तेरा खून पीऊँगा रे, खून पीऊँगा।
(2) तंग करना, कष्ट देना। प्र० यह लड़का तो खून पीये जा रहा है, तनिक चैन नहीं लेता।

खून पुकारना—हत्या का आप से आप प्रकट होना। प्र० तुम बच न सकोगे, एक न एक दिन खून पुकारेगा ही।
(2) पारिवारिक सम्बन्ध के कारण किसी ओर मन आकृष्ट होना। प्र० मेरा खून पुकार रहा है, मैं जाती हूँ।

खून बरफ हो जाना—दे॰ खून ठंडा होना ।

खून बहना या बहाना—(1) रक्तपात होना । प्र॰ दमन-चक्र यदि चलता तो बहता लोहू (वैदेही॰—हरिऔध, 116) ।
(2) युद्ध में मारना या मारा जाना । प्र॰ भजन करने पर भी दिल्ली के सुलतान ने इतना खून बहा दिया (मृग॰—वृं॰ वर्मा, 30) ।
(3) अपनी जान खपाना, मेहनत करना । प्र॰ हमारा जनम इसीलिए हुआ है कि अपना रक्त बहायें और बड़ों का घर भरें (गोदान—प्रेमचंद, 23) ।

खून बिगड़ना—खून में कोई दोष आ जाना ।

खून मुंह लगना—किसी वस्तु का चसका लग जाना । प्र॰ दयानाथ—कम-से-कम एक हजार तो वहाँ मिल ही जायेंगे ? जागेश्वरी—खून मुंह लग गया क्या ? (ग़बन—प्रेमचंद, 7) ।

खून में आग लगना—दे॰ खून उबलना ।

खून में उबाल पैदा करना—जोश दिलाना । प्र॰ मुलाकात के समय जब सोहन सिह और कर्तार सिह सराभा ने गुरदित सिह से यह घटना सुनी तो भाइयों की हालत ने उनके खून में उबाल पैदा कर दिया (एक म्यान॰—नानक॰, 69) ।

खून में गर्मी आना, -होना, -जोश आना—जोश होना । प्र॰ बीस मर्दों के होते एक उजड्ड पठान मेरी इतनी दुर्गति कर रहा है और आप लोगों के खून में ज़रा भी गर्मी नहीं आती (गोदान—प्रेमचंद, 72) ।

खून में गर्मी होना—दे॰ खून में गर्मी आना ।

खून में जोश आना—दे॰ खून में गर्मी आना ।

खून में होना—स्वभाव में होना । प्र॰ झुकना, पछताना, समझौता करना उसके खून में ही नहीं है (प्रतीक्षा—यादव, 77–78) ।

खून रुलाना—बहुत क्लेश देना । प्र॰ क्यों खून रुलाता है तू, बोल ?

खून लगाकर शहीद बनना या होना, -शहीदों में दाखिल होना—बिना कुछ किये ही यश पाने का प्रयत्न करना । प्र॰ वाह भाई, तुम तो अच्छा खून लगाकर शहीद बनना चाहते हो ।

खून लगा कर शहीदों में दाखिल होना—दे॰ खून लगाकर शहीद बनना ।

खून सफेद होना—क्रूर बनना, दया-ममता न होना । प्र॰ जिनका खून सफेद है, उनके बीच में रहना व्यर्थ है (मान॰ (8)—प्रेमचंद, 15) ।

खून सर्द होना—दे॰ खून ठंडा होना ।

खून सवार होना—मरने-मारने पर उतारू होना । प्र॰ रामू की बहू पर खून सवार हो गया (इंस्टा॰—भग॰ वर्मा, 92) ।
(2) दे॰ खून गरदन पर चढ़ना ।

खून सिर पर चढ़कर बोलना—हत्या का पाप छिपा न रह पाना । प्र॰ खून तो हीरा के सिर पर चढ़कर बोलेगा ही ।

खून सिर पर चढ़ना—दे॰ खून गरदन पर चढ़ना ।

खून सिर पर सवार होना—दे॰ खून गरदन पर चढ़ना ।

खून सुखाना—दुःख या चिन्ता से कमजोर होते जाना । प्र॰ वह बेचारी अपना खून सुखाती रहती है और तुम्हें गम नहीं ।

खून सूखना—दे॰ खून खुश्क होना ।

खून से तलवार रंगना, -हाथ रंगना—(1) हत्या करना । प्र॰ आज तो शत्रुओं के खून से तलवार रंगी ही जायगी ।
(2) अहित करना । प्र॰ इस दलाली के लिए हम एक-दूसरे के खून से हाथ रंगते हैं (प्रेमा॰—प्रेमचंद, 305-306) ।

खून से नहला देना—मार डालना । प्र॰ तो क्या तुम सबको खून से नहला दोगे ?

खून से प्यास बुझाना—किसी को मारकर मन की इच्छा पूरी करना । प्र॰ मैं उस नराधम के खून से अपनी प्यास बुझाऊँगा, अपनी आत्मा को तृप्त करूँगा ।

खून से रंगना या रंगवाना—भीषण रक्तपात करना । प्र॰ जिस झालवाड़ की गोद में पली हूँ, क्या उसे रक्त से रंगवा दूं ? (मान॰ (6)—प्रेमचंद, 101) ।

खून से सना गारा—भीषण हत्याकांड के द्वारा किया गया काम । प्र॰ यह सारा वैभव और ऐशो आराम खून से सना गारा है ।

खून से सींचना—घोर परिश्रम से किसी वस्तु को बनाना । प्र॰ इस रोजगार को मैंने अपने खून से सींचा है; इसे यूं बरबाद कैसे हो जाने दूं ?

खून से हाथ रंगना—दे॰ खून से तलवार रंगना ।

खून से होली खेलना—रक्तपात करना । प्र॰ आज तो मैं खून से होली खेलूंगा ।

खून होना—(1) नष्ट होना, व्यर्थ जाना । प्र॰ संवाद को इस विधि में अक्सर अभिनय और उसके प्रभाव का खून हो जाता था (अपनी॰—उग्र, 30) ।
(2) हत्या होना । प्र॰ सरदार, अपने एक साथी का खून हो गया ।

खून-खच्चर करना या होना, -खराब करना या होना, -खराबा बरपा होना, -खराबी करना या होना—ऐसी मारपीट जिसमें मारकाट हो जाय । प्र॰ बस, इतना बहाना पाकर सब खून-खच्चर पर उद्यत हो गये (प्रेमा॰—प्रेमचंद, 203) ।

खून-खराबा करना या होना—दे॰ खून-खच्चर करना या होना ।

खून-खराबा बरपा होना—दे॰ खून-खच्चर करना या होना ।

खून-खराबी करना या होना—दे॰ खून-खच्चर करना या होना ।

खून-पसीना एक करना, -पानी एक करना—घोर परिश्रम करना । प्र॰ तै तुझे करना अगर है तो तुझे, होगा लगाना जोर एड़ी और चोटी का बराबर और करना एक लोहू से पसीना (बुद्ध॰—बच्चन, 130); रात-दिन खून-पसीना एक करके जी-जान से पढ़ने में जुटा रहता (मा—कौशिक, 130) ।

खून-पसीना बहाना—घोर कष्ट सहना । प्र॰ खून-पसीना मैं बहाऊँ और मौज वे मारें, वाह !

खून-पसीने की कमाई—घोर परिश्रम से कमाया धन । प्र॰ मेरी खून-पसीने की कमाई को तुम यूं नष्ट नहीं कर सकते ।

खून-पानी एक करना—दे॰ खून-पसीना एक करना ।

खून-भरी आंखों से देखना—क्रोध-भरी आंखों से देखना । प्र॰ उमादत्त

खून-भरी आँखों से उसे देखता है (अंधेरे०—राकेश, 239)।

खून-मांस का सम्बन्ध—दे० खून का रिश्ता।

खूने जिगर पीना—बहुत कष्ट पाना। प्र० नाटक खेलना खेलाना बच्चों का खेल नहीं हैं, खूने जिगर पीना पड़ता है (मान० (4)—प्रेमचंद, 79)।

खूब आए—नहीं आए (व्यंग्य में प्रयोग)। प्र० वाह साहब, आप तो उस दिन खूब आए।

खूब कही—ठीक कहा, अच्छा कहा। प्र० यह तुमने खूब कही, बहुत अच्छे।

खूब रही—बड़े मजे की बात हुई। प्र० यह खूब रही कि आप उनसे मिलने यहाँ आये और वे आपके यहाँ पहुँचे होंगे।

खूब सूझी—बड़ी अच्छी बात सूझी। प्र० बैठे-बिठाये आपको यह खूब सूझी।

खूब होना—अच्छा होना। प्र० भाई, मकान तो तुम्हारा खूब है, मुझे पसंद आया।

खूबखूबी होना—बड़ाई होना। प्र० आजकल तो चारों ओर आपकी ही खूबखूबी है।

खे जाना—किसी काम को किसी प्रकार पूरा कर डालना। प्र० जब काम एक बार शुरू कर दिया है तो किसी-न-किसी तरह खे जाना ही होगा।

खेड़े की दूब—दुर्बल। प्र० सूर स्याम तजि औरै सूझै ज्यों खेड़े की दूब (सूर—ब्र० सू० को०)।

खेत आना, -जाना, -पड़ना, -रहना—लड़ाई में मारा जाना। प्र० शत्रुओं के कई हजार मनुष्य खेत रहे (राधा० ग्रंथा०—राधा० दास, 582); × × वह सिंह-स्वरूप सूरमा अपने दोनों भाइयों समेत पिछली लड़ाई खेत गया (डार०—कृ० सो०, 102)।

खेत उबरना—उद्धार हो जाना। प्र० हरि भजन की वारि करि लै, उबरै तेरौ खेत (सू० सा०—सूर, 311)।

खेत कमाना—ज़ोताई करके और खाद डालकर खेत को उपजाऊ बनाना।

खेत करना—(1) समथल करना। प्र० सोखि कै, खेत कै, बांधि सेतु करि, उतरिबो उदधि, न बोहित चहिबो (गीता० (सुं)—तुलसी, 14)।

(2) लड़ना, मार डालना। प्र० उसने एक आह भरी और मिर्ज़े की आवाज़ में गुनगुनाने लगा—तूने बुरा किया साहिबां! जो मेरी बक्की की अगाड़ी बांध दी, मेरे तीर तर्कश टांग दिये, वरना एक तीर से तेरे भाइयों को खेत कर देता और दूसरे से उसे जिसकी तू मंगेतर है (एक चादर०—बेदी, 85)।

(3) उदय के समय चन्द्रमा का पहले पहल प्रकाश फैलाना।

खेत (क्षेत्र) का घोड़ा—अच्छी जाति का घोड़ा।

खेत का धोखा—निष्प्राण, मूढ़। प्र० कुंवर चढ़ाईं भौंहैं, अब को बिलोकै सोहैं, जहं तहं भे अचेत, खेत के से धोखे हैं (गीता० (बा०)—तुलसी, 95); हमें आशा है कि इतने लिखने से आप धोखे का तत्त्व—यदि निरे खेत के धोखे न हों, मनुष्य हों तो—समझ गये होंगे (प्र० पी०—प्र० ना० मि०, 68); हम इससे इन्कार नहीं कर सकते कि देहली का बादशाह अब महज़ खेतों में खड़ा किया जाने वाला धोखा भर ही रह गया है (मात०—नागर, 118)।

खेत का लिखा-पढ़ा—बेवकूफ किसान।

खेत काटना—खेत में उपजी फसल काटना।

खेत क्यारी करना—खेत जोतना-बोना।

खेत चढ़ना—युद्ध में लड़ने के लिए आगे बढ़ना। प्र० जैसे सुभट खेत चढ़ि धावै। जैसे सती बहुरि नहिं आवै (सू० सा०—सूर, 2834)।

खेत चर जाना—सब नष्ट कर देना, काम बिगाड़ देना। प्र० खेत चरे जाने के बाद तुम चेतो चाहे मत चेतो, क्या फर्क पड़ता है।

खेत चुग जाना—अवसर चूक जाना। प्र० तुम पहले तो चेतते नहीं; खेत चुग जाने पर सजग होते हो।

खेत छोड़ना—रणभूमि से भागना। प्र० सूरा तबहीं परखिये, लड़ै धणी कै हैत पुरिजा-पुरिजा ह्वै पड़ै, तऊ न छाड़ै खेत (कबीर ग्रंथा०—कबीर, 69); सूर सुभट दोउ खेत न छांडत मनहु आइ ठाढ़े दल जोरी (सू० सा० (परि०)—सूर, 57)।

खेत जलाना—घोर अनिष्ट करना। प्र० तुझे यूं खेत जलाकर क्या मिला?

खेत जाना—दे० खेत आना।

खेत देखना—विजयी होना। प्र० चित्तौड़ की लड़ाई में राणा ने खेत देखा और सहर्ष लौट पड़े।

खेत नलाना—कूड़ा-कचरा निकालकर खेत साफ करना।

खेत पड़ना—दे० खेत आना।

खेत पर ओले पड़ना—बनी-बनाई बात बिगड़ जाना, सुख नष्ट होना। प्र० संभलकर अन्त में इस भांति बोले—कि "आये खेत पर हो दैव, ओले!" (साकेत—गुप्त, 73)।

खेत पाटना—खेत में पानी भरना।

खेत बदना—लड़ना निश्चित होना। प्र० उसने कल ही खेत बद दिया है, जो होना होगा, होगा।

खेत मांड़ना—युद्ध ठानना। प्र० कबीर मेरे संसा को नहीं, हरि रं लागा हेत। काम क्रोध सं झूझणा, चौड़े मांड्या खेत (कबीर ग्रंथा०—कबीर, 68)।

खेत में पछाड़ना—युद्ध में हराना। प्र० तैसेहि भरतहि सेन समेता। सानुज निदरि निपातउँ खेता (राम० (अ)—तुलसी, 590)।

खेत रखना—(1) समर में विजय प्राप्त करना, परास्त करना। प्र० पहुला—हारु हियैं लसै, सन की बेंदी भाल। राखति खेत खरे खरे, खरे-उरोजनु बाल (बिहारी रत्ना०—बिहारी, 258)।

(2) खेत अगोरना। प्र० देखिए प्रयोग (1)।

खेत रखाना—खेत अगोरना। प्र० दो आदमी खेत रखाने के लिए भी तो चाहिए!

खेत रहना—दे० खेत आना।

खेत सुहाना—शुभ शकुन होना; विजय होना। प्र० एतना कहत छींक भइ

बाएं। कहेउ सगुनिअन्ह खेत सुहाए (राम० (अ)–तुलसी, 552)।

खेत हाथ (में) रहना, -होना—युद्ध में विजयी होना। प्र० उस दिन खेत शत्रुपक्ष के हाथ में रहा।

खेत हाथ होना—दे० खेत हाथ (में) रहना।

खेती काटना—करनी का फल भोगना। प्र० तुमने पहले तो सुना नहीं, अब जैसा किया है उसके अनुरूप खेती काटो।

खेती मारी जाना—पैदावार नष्ट होना। प्र० गांव में कुल तीन ही कुएं थे, बहुत-से खेतों में पानी न पहुँचता था, खेती मारी जाती थी (मान० (5)–प्रेमचंद, 178)।

खेती लोट जाना—आंधी-पानी या ओले के कारण खेत की फसल का गिर जाना। प्र० हाय-हाय, मटर और चने की खेती एकदम लोट गयी।

खेती सूखे पर पानी बरसना—काम बिगड़ जाने पर आवश्यकता पूरी होना। प्र० का बरषा सब कृषी सुखानें (राम० (बाल)–तुलसी, 268)।

खेदजनक परिच्छेद—दुःखपूर्ण कथा या घटना। प्र० हमारे सम्बन्धों का यह एक खेदजनक परिच्छेद है।

खेना—निभाना। प्र० वह तो मैं हूँ कि किसी तरह खेये चल रही हूँ।

खेप डालना—बिताना। प्र० अच्छे-बुरे सब दिन किसी न किसी तरह खेप ही डाले।

खेप भरना—बोझ लादना। प्र० दूसरी खेप जल्दी से भरो, देर हो रही है।

खेप हारना—माल में घाटा उठाना। प्र० लो भाई, इस बार भी खेप हार गया।

खेमा गड़ना या गाड़ना, -डालना—डेरा डालना, अस्थायी रूप से रहना। प्र० नगर के बाहर एक बगीचे में कलक्टर साहब ने खेमा डाला।

खेमा डालना—दे० खेमा गड़ना या गाड़ना।

खेरे के देवता—निर्जन के देवी-देवता। प्र० जो ऊजर खेरे के देवन को पूजै को मानै (सूर–ब्र० सू० को०)।

खेल—साधारण काम। प्र० इत काहू सों मेल रह्यौ न कछू, उत खेल सी ह्वै सब बात टरी (घन० कवित्त–घना०, 157); वह तो मर्मान्तक वेदना की वह टीस होती है जिस पर खरा उतर जाना खेल नहीं (सा० जि०–ल० प्र० सु०, 110)।

खेल करना—ठीक से काम न करना। प्र० यह क्या खेल कर रही हो, ठीक से रोटी बनाओ।

खेल खरमंडल होना—किसी काम या बात का बीच में ही किसी विघ्न के कारण रुक जाना। प्र० इसी बीच दादाजी आ पहुँचे और हम लोगों का खेल खरमंडल हो गया।

खेल खराब करना या होना, -बिगड़ जाना या बिगाड़ना—युक्ति सफल न होना, होता हुआ काम बिगड़ जाना। प्र० हरि-इच्छा भी अवश्य कोई प्रबल वस्तु है, नहीं तो क्या मेरे सारे खेल यों बिगड़ जाते? (प्रेमा०–प्रेमचंद, 379)।

खेल खेलना—(1) चाल चलना। प्र० वाह भाई, तुम मुझी से खेल खेलने लगे? (2) मजाक करना। प्र० अरे यार, खेल मत खेलो, चलो।

खेल खेलाना—बहुत तंग करना। प्र० वह तुम्हें ऐसा-ऐसा खेल खेलायेगी कि तुम भी मान जाओगे।

खेल जमना—खेल में पूरी सरगर्मी और मजा आना। प्र० आपु अपनी घात निरखत, खेल जम्यौ बनाइ (सू० सा०–सूर, 862)।

खेल जानना, -समझ रखना—मामूली काम समझ रखना। प्र० कालेज की पढ़ाई को तुमने खेल जान रखा है?

खेल निकालना—चालाकी प्रकट करना। प्र० तुम रोज एक नया-नया खेल निकाल रहे हो?

खेल बनाना—मतलब सिद्ध करना। प्र० तुम बड़े होशियार हो भाई, अपना खेल बनाना खूब जानते हो।

खेल बिगड़ना या बिगाड़ना—दे० खेल खराब करना या होना।

खेल रचना—षड्यंत्र करना। प्र० इसे यही काम है, बैठे-बैठे एक न एक खेल रचा करता है।

खेल समझ रखना या समझना—दे० खेल जानना।

खेल-खेल में, खेलते-खेलते—बिना किसी प्रयास के। प्र० इस कमरे को तो लड़के खेल-खेल में सर्जा देंगे।

खेलता रुपया, खेलती रकम—व्यापार में सक्रिय रूप से लगी रकम, वह रकम जिसका बराबर आदान-प्रदान हो रहा हो। प्र० उनका रुपया तो खेलती रकम है, कभी खाली नहीं रहता।

खेलती रकम—दे० खेलता रुपया।

खेलते-खेलते—दे० खेल-खेल में।

खेलना-खाना—आनन्द में दिन बिताना। प्र० खेलत खात रहे ब्रज भीतर (सूर–ब्र० सू० को०)।

खेलना-बोलना—मेल-जोल रखना। प्र० मौन रहत मो पर रिस पाए, हरि सौं खेलत-बोलत हैं (आंखों के लिए प्रयुक्त) (सू० सा०–सूर, 2872)।

खेलने के दिन, -खाने के दिन—बेफिक्री या बचपन के दिन। प्र० अभी खेलने-खाने के दिन हैं, इसी समय जोत दोगी तो कलेजा सूख जायगा (बल०–नागा०, 4)।

खेलने-खाने के दिन—दे० खेलने के दिन।

खेला हुआ खेल—बिताया हुआ, अनुभव किया हुआ। प्र० जीवन को हमें इस ढंग से व्यतीत करना ही चाहिए ताकि अन्त में जाकर हम इसे ईमानदारी से खेला हुआ खेल समझ सकें।

खेला-खाया—पूरा जानकार, चालाक। प्र० इसे सीधा न समझो, यह पूरा खेला-खाया है।

खेला-खेलाकर मारना—किसी को खूब तंग करके मारना या पूरी तरह परास्त करना। प्र० हतौं न खेत खेलाइ खेलाई। तोहि अबहिं का करौं बड़ाई (राम० (लं)–तुलसी, 900); वे अगर हाथ का खेलौना हैं तो न उनको खेला-खेला मारें (चुभते०–हरिऔध, 157)।

खेलाना—बहुत तंग करना। प्र० लछिमन मन अस मंत्र दृढ़ावा एहि पापिहि मैं बहुत खेलावा (राम० (लं)–तुलसी, 947)।

खेली-खाई, -खिलाई—(1) हर प्रकार का अनुभव प्राप्त किये हुए (विशेषकर बुरे अर्थ में प्रयुक्त)। प्र० लछमी तो पुरानी है, खेली-खिलाई है (मैला०—रेणु, 75); चेली पहले से ही काफी खेली-खाई पड़ी है (उखड़े०—यादव, 140)।

(2) पुरुष समागम से परिचित। प्र० देखिए प्रयोग (1)।

खेली-खिलाई—दे० खेली-खाई।

खेवा देना और बहे जाना—खर्च करना और बदले में क्षति उठाना। प्र० उलटी न्यावु सूर के प्रभु कौ बही जाति मांगत उतराई (सू० सा०—सूर, 4217); भैया, अपनी तो वही गति हुई कि खेवा देकर बहे जा रहे हैं।

खेह खाना—धूल फांकना, बेकार समय बिताना। प्र० खेह खा रहा मूरख जग, हरि नाम भजे ना कोय।

खैंच लगना—इच्छा होना। (श्रद्धाराम फुल्लौरी द्वारा प्रयुक्त)।

खैर मनाना, -मांगना—खैरियत चाहना। प्र० मैं परमात्मा से सदा आपकी खैर मनाती हूँ।

खैर मांगना—दे० खैर मनाना।

खैर-खबर लेना—कुशल-क्षेम पूछना। प्र० इसलिए डा० आत्माराम के पत्र से सम्बन्धित खैर-खबर लेने में उन्हें कोई भी दिलचस्पी न थी (अमृत०—नागर, 323)।

खैरबाद कहना—विदा करना। प्र० मैं अभी उनसे खैरबाद कहकर आता हूँ।

खैरात का टुकड़ा खाना—भीख पर जीवन निर्वाह करना। प्र० खैरात का टुकड़ा खा-खाकर आखिर कब तक जिन्दगी चलाओगे?

खेला पावंचा—बौड़म स्त्री।

खो जाना, -सो जाना—किसी विचार में डूब जाना। प्र० थोड़ी देर बाद पिता फिर बोले—'तुम भी पागल हो जाओगे'—और फिर खो-से गए (शेखर० (2)—अज्ञेय, 140)।

खोआ कूटना—इधर-उधर का काम करना। प्र० बस, तुम सारे दिन यहाँ-वहाँ खोआ कूटते फिरो।

खोइछा भरना, -देना—किसी शुभ कार्य में सौभाग्यवती स्त्री के आंचल में आशीर्वाद स्वरूप रोली-चावल सुपारी आदि डालना।

खोइछा भरना—दे० खोइछा देना।

खोकर—हानि उठाकर। प्र० इसे मैंने यूं ही नहीं, बहुत कुछ खोकर पाया है।

खोखला—निस्सार, महत्त्वहीन, झूठा और आडम्बरपूर्ण। प्र० क्यों खले खोखले बना कोई क्या खुलेगी न आँख अब खोले (चुभते०—हरिऔध, 18); × × खोखले सामन्तवाद के जिस माहौल में मैं पला हूँ, उसमें क्या-क्या बुराइयां नहीं थीं × × (कम०—कम०, 13)।

खोखला स्वर, खोखली आवाज—बात या स्वर जो आंतरिक न हो। प्र० गूंज धीरे-धीरे शान्त हो जाती फिर अनुगूंज में हठात् एक खोखला-सा स्वर आ जाता (शेखर (2)—अज्ञेय, 206)।

खोखली आवाज—दे० खोखला स्वर।

खोखली हँसी—बिना मतलब की हँसी। प्र० टी हाउस में बेपनाह शोर है। खोखली हँसी के ठहाके हैं और दीवार पर एक घड़ी है जो हमेशा वक्त से आगे चलती है (कम०—कम०, 85)।

खोगीर की भर्ती—बेकार लोगों या चीजों का जमाव। प्र० कमरे में क्या खोगीर की भर्ती कर रखी है?

खोज खोना—नष्ट करना, सर्वथा मिटा देना। प्र० तुम क्या बेटी को खोज खोना चाहती हो जो उस लड़के से उसके ब्याह की बात सोच रही हो?

खोज पड़ना—पीछे पड़ना। प्र० कोउ बरषत, कोउ अगिनि जरावत, दई पर्‌यौ है खोज हमारे (सू० सा०—सूर, 1213)।

खोज मारना—(1) रथ के पहियों का निशान मिटाना। प्र० खोज मारि रथ हांकहु ताता आन उपायं बनिहि नहिं बाता (राम० (अ)—तुलसी, 452)।

(2) सब जगह खोज कर लेना। प्र० सारे घर खोज मारा पर वह न जाने कहाँ जाकर छिप गया है।

खोज मटियामेट करना, -मिटना या मिटाना—निशान मिटा देना, सर्वथा नष्ट करना। प्र० तुम क्या विगत जीवन की खोज तक मिटा देना चाहते हो?

खोज मिटना या मिटाना—दे० खोज मटियामेट करना।

खोज मिलना—पता मिलना। प्र० तुम्हें इस बारे में कोई खोज मिले तो बताना।

खोज लेना, खोज-खबर लेना—हाल-चाल पूछना। प्र० सूर हमहिं पहुँचाइ मधुपुरी, बहुरि न सोधौ लीन्ही (सू० सा०—सूर, 4091); खोजहू न लीनो फेरि नैन-बान मारि कै (भा० ग्रं० (2)—भारतेन्दु, 285)।

खोज-खबर लेना—दे० खोज लेना।

खोजड़ा जाना—सत्यानाश होना।

खोजड़ा-पिटी—शैतान की बच्ची।

खोट पड़ना—काम में रुकावट आना। प्र० देखो न, अब इसमें भी खोट पड़ गयी।

खोट मिलाना—(सोने-चाँदी आदि में) सस्ती व खराब धातु मिलाना। प्र० लगता है सुनार ने ज्यादा खोट मिला दी है।

खोटा उतरना—झूठा प्रमाणित होना। प्र० आज प्रेम परीक्षा के समय तेरी वह सब बातें खोटी उतरीं (मान० (8)—प्रेमचंद, 44)।

खोटा खाना—बेईमानी की कमाई पर निर्भर करना। प्र० न जाने क्यों लोग जैसे-जैसे सभ्य होते जा रहे हैं वैसे ही वैसे खोटा खाने पर उतारू हुए जाते हैं।

खोटा पैसा—(1) बेईमानी से कमाया धन। प्र० खोटे पैसे पर जिन्दगी बितानेवाले को धिक्कार है।

(2) बुरी चीज। प्र० यह खोटा पैसा किसी और के गले मढ़ दूँगा।

(3) न चलनेवाला सिक्का। प्र० यह देखो, खटिक ने खोटा पैसा दे दिया।

खोटा समय—दुर्दिन। प्र० आदमी का जब खोटा समय आता है तो सोना

छूते मिट्टी हो जाता है ।

खोटा सिक्का—झूठा, बेकार । प्र० उनकी दुआएं खोटे सिक्के सिद्ध हुईं (दूधगाछ—दे० स०, 251) ।

खोटा सिक्का चलना—धोखा दे सकना । प्र० समझ गये कि × × इस बाजार में अब खोटे सिक्के न चलेंगे (प्रेमा०—प्रेमचंद, 370) ।

खोटाई करना, खोटी करना—दुष्टता करना । प्र० उसे मुझसे ही सारी खोटाई करनी रहती है ?

खोटा-खरा के लिए खरा-खोटा व खरी-खोटी के मुहावरे देखिए ।

खोटी करना—दे० खोटाई करना ।

खोटी कहना—शिकायत करना, चुगली खाना । प्र० उसके बारे में जब देखो तब तुम खोटी कहते रहते हो ।

खोटी बोलना—बुरी बात बोलना, दुर्वचन कहना । प्र० हर समय खोटी बोलेगी तो कौन उसकी इज्जत करेगा ।

खोटे को खोटा कहना—जो जैसा है उसे वैसा कहना; बुरे को बुरा कहना ।

खोदकर—बरबस छेड़कर, कुछ जानने या कहने की तीव्र इच्छापूर्वक । प्र० एक दफे वे मुझे खोदकर बोल उठे— × ×(दिल०—जी०, 59) ।

खोदकर गाड़ देना—बहुत कठोर दण्ड देना, जान ले लेना । प्र० अगर तुमने उधर पैर रखा, तो याद रखना, वहीं खोदकर गाड़ दूंगा (रंग० —प्रेमचंद, 133) ।

खोद-कुरेल करना—छान-बीन करना । प्र० वह तो उसी दिन से खोद-कुरेल कर रहा है ।

खोद-खोदकर खाना—गड़ी रकम या संचित रकम के भरोसे जीवन-यापन करना । प्र० आखिर कब तक खोद-खोदकर खाएंगे, मैं भी तो सुनूं ?

खोद-खोदकर पूछना—घुमा-फिराकर एक ही बात को पूछे जाना चाहे सामने वाला नहीं ही बताना चाहे; पूरी जानकारी करना । प्र० फिर हमने बहुत खोद-खादकर पूछा तो यह साफ मालूम हुआ कि इसी मत से यह मत निकला है (भा० ग्रं० (3)—भारतेन्दु, 956); मेरी के खोद-खोदकर पूछने पर महबूबा उससे कुछ ·ो न छिपा सकी (सात० —नागर, 134) ।

खोदना—उकसाना । प्र० जब देखो तब वे लड़कों को खोदते रहते हैं ।

खोद-पूछ—छानबीन, जाँच । प्र० क्या सारी जिन्दगी उसके बारे में खोद-पूछ ही करती रहोगी ?

खोद-विनोद करना—नुक्स निकालना, बार-बार पूछे जाना । प्र० मौसी, तुम बड़ा खोद-विनोद करती हो, अब बस भी करो ।

खोपड़ी—बुद्धि । प्र० सूरदास, आज राजा साहब भी तुम्हारी खोपड़ी को मान गए (रंग० (1)—प्रेमचंद, 130) ।

खोपड़ी उल्टी होना—कुबुद्धि आना । प्र० क्या रुका है ऐसी पढ़ाई के बिना, जिससे लड़कों की खोपड़ी ही उल्टी हो जाती है(एक म्यान०—नानक०, 35) ।

खोपड़ी के पिल्लू कुलबुला उठना—कुछ औंधी बात कहने को आतुर होना या कहना । प्र० पर गुदरी को देखकर उसका दिल बैठ जाता था, उसके रोएं गिर जाते थे, उसकी नाक सिकुड़ जाती—खोपड़ी के पिल्लू कुलबुला उठते थे (दे० दु०—शिव०, 105) ।

खोपड़ी खाना, -खाली करना या होना—बहुत बकवास करके परेशान करना । प्र० कुछ अजब है खोपड़ी उनकी बनी जो कि खा जाते हैं सबकी खोपड़ी (बोल०—हरिऔध, 22) ।

खोपड़ी खाली करना या होना—दे० खोपड़ी खाना ।

खोपड़ी खुजलाना—(1) मार खाने की इच्छा होना । प्र० क्यों खिजाते खीजने वालों को हो । खोपड़ी तो है नहीं खुजला रही (बोल०—हरिऔध, 21) ।

(2) शामत आना । प्र० तुम्हारी खोपड़ी खुजला रही हो तो उनके पास जाना ।

(3) कोई उपाय सोचना । प्र० बस, इतने में ही तुम खोपड़ी खुजलाने लगे ?

खोपड़ी खुल जाना—माथा फट जाना । प्र० जमकर थोड़ी ही देर लाठी चली होगी कि बाबू साहब के एक भजीजे की खोपड़ी खुल गई (दे० दु०—शिव०, 170) ।

खोपड़ी गंजी करना या होना—खूब दुर्गति करना या मारना, खूब नुकसान करना या होना । प्र० मारे चपतों के खोपड़ी गंजी कर दी थी (आज़ाद०—प्रेमचंद, 239) ।

खोपड़ी गढ़ना—(1) बुद्धि देना । प्र० खुदा मियां ने भी क्या खोपड़ी गढ़ी है तुम्हारी कि वाह !

(2) दे० खोपड़ी चाटना ।

खोपड़ी चटकना—अधिक धूप या प्यास के कारण जी घबराना । प्र० कहीं जरा देर रुक कर ठंडे हो लिया जाय, खोपड़ी चटक रही है ।

खोपड़ी चलना—पागल होना । प्र० क्यों, तुम्हारी खोपड़ी चल गयी है क्या ?

खोपड़ी चाटना—बहुत बोल-बोलकर तंग कर डालना; एक ही बात को बार-बार पूछने पर भी न समझ पाना । प्र० इन डाइनों ने तो खोपड़ी चाट डाली (मान० (4)—प्रेमचंद, 26) ।

खोपड़ी जगाना—तांत्रिक साधना करना । प्र० हो जगाते खोपड़ी क्यों मर मिटी छोड़ जीती जागती निज खोपड़ी (बोल०—हरिऔध, 21) ।

खोपड़ी पर खड़ा होना, -पहुँच जाना, -सवार होना—(1) बिलकुल पास होना । प्र० हरद्वारी तो बाबू साहब की खोपड़ी पर ही खड़ा था (भिखा०—कौशिक, 7) ।

(2) खूब मुस्तैदी करना । प्र० सुबह से ही बाबू साहब खोपड़ी पर सवार हो गये ।

खोपड़ी पर (किसी की) ठेंगा नाचना—अच्छा सबक सिखाना । प्र० एक दिन इन सबकी खोपड़ी पर मेरा ठेंगा न नाचा तो हरामी माँ-बाप की औलाद होकर मेरा पैदा होना अकारथ ही जायेगा (अमृत०—नागर, 689) ।

खोपड़ी पर पहुँच जाना—(1) किसी से जवाब-सवाल करने के लिए उसके पास पहुँचना । प्र० अगर मैंने जरा-सा पुचारा दे दिया होता, तो रात ही को वह सासजी की खोपड़ी पर जा पहुँचते (मान० (4)

—प्रेमचंद, 251)।

(2) दे० खोपड़ी पर खड़ा होना।

खोपड़ी पर बोलना—सिर पर बोझ मालूम होना। प्र० नवम्बर-दिसम्बर की स्ट्राइक अब साली खोपड़ी पर बोल रही है, समझ में नहीं आता कोर्स कैसे पूरा होगा (अमृत०—नागर, 334)।

खोपड़ी पर सवार होना—दे० खोपड़ी पर खड़ा होना।

खोपड़ी पिल-पिली करना, -शुद्ध करना, -सुहलाना—सर पर बहुत मारना।

खोपड़ी बजाना, -रंग देना, -लाल होना—सिर फोड़ देना या फूटना। प्र० किन्तु कितनी ही बार दोनों ओर की कुछ खोपड़ियाँ लाल हुए बिना नहीं रहती थीं (सतमी०—राहुल, 73)।

खोपड़ी रंग देना—दे० खोपड़ी बजाना।

खोपड़ी लाल होना—दे० खोपड़ी बजाना।

खोपड़ी शुद्ध करना—दे० खोपड़ी पिल-पिली करना।

खोपड़ी सुहलाना—दे० खोपड़ी पिल-पिली करना।

खोमचा लगाना—खोमचे में सामान रखकर बेचना। प्र० रोज शाम को चाटवाला यहीं खोमचा लगाता है।

खोय छूटना—हिम्मत छूटना। प्र० अब तो मेरी खोय छूट रही है भैया।

खोया हुआ (सा), खोया-खोया सा—अनमना, अपने में ही डूबा हुआ। प्र० राजा साहब और ब्राउन, दोनों खोए हुए-से खड़े थे (रंग (2)—प्रेमचंद, 338)।

खोया-खोया सा—दे० खोया हुआ (सा)।

खोलकर—स्पष्ट रूप से; बिना किसी दुराव-छिपाव के। प्र० सूर बिनती करे, सुनहु नंदनंद तुम, कहा कहौं खोलि कै अंतरजामी (सू० सा०—सूर, 214); तब इक द्विज वर बोलि खोलि निज बात कही सब (नंद० ग्रंथा०—नंद०, 177); तुझे जब तक सारी बातें खोलकर न सुनाऊँगी, तब तक तेरी समझ में मेरी बात नहीं आवेगी (मा—कौशिक, 10)।

खोलना—(1) मन की बात कहना। प्र० आपने मुझे सौ-सौ रूप से खोला और बहुत-सा टटोला (इंशा०—इंशा०, 97)।

(2) चालू करना। प्र० आज हमारे लच्छू ने रेस्टोरां खोला (अमृत० —नागर, 580)।

खो-सा जाना—दे० खो जाना।

खौरी करना—राख में मिला देना (सुनारों की बोली में); सोने व चाँदी को राख कर देना।

खौरू खोदकर—पूरे साहस से। प्र० यह याद रक्खो और वहाँ दुम दबाने से काम नहीं चलेगा। "खौरू खोदकर" भिड़ना पड़ेगा (पद्म० के पत्र—पद्म० शर्मा, 41)।

खौरू लाना—झगड़ा करना। प्र० क्यों यार, क्यों सबसे खौरू लाया करते हो?

खौलन होना—गुस्सा होना, कुढ़ना, बुरा लगना। प्र० मुनीम जी को यह सब देख-देखकर खौलन होती थी ×× (अमृत०—नागर, 23)।

खौलना या खौलाना—क्रोध या आवेग से भीतर-ही-भीतर बहुत बेचैन होना या कर देना। प्र० आँगन की दीवार से पीठ लगाये वह इसी प्रकार खौलता रहा था (चेतन—अश्क, 420); ननियाँ को भी धन-हानि और अपमान—दोनों की ही तड़प खौला रही थी (बूंद०—नागर, 27)।

ख्वाब की दुनिया—कल्पनालोक। प्र० लेकिन कुछ ख्वाबी दुनिया में रहता जान पड़ता है (भोर०—जग० माथुर, 14)।

ख्वाब की बात—काल्पनिक बात। प्र० तुम उसकी इन ख्वाब की बातों पर जाती ही क्यों हो।

ख्वाब देखना—कल्पना करना। प्र० मैंने भी अपने समय में बहुत ख्वाब देखे थे।

ख्वाब पूरा होना—कल्पना पूरी होना। प्र० चलो, अब जाकर तुम्हारा ख्वाब पूरा हुआ।

ख्वाब में भी नहीं—कभी नहीं। प्र० मगर इस वक्त तुमने जो गलती की है वह जुआनर के होने वाले शौहर को ख्वाब में भी नहीं करनी चाहिए थी (सात०—नागर, 104)।

ख्वाब होना या हो जाना—स्वप्नदोष होना।

ग

गंगई की तरह बोलना—बहुत बोलना।

गंगा उठाना, -जल उठाना, -जली उठाना—गंगाजल हाथ में लेकर कसम खाना। प्र० इसको पैसा मिल जाय, तो झूठी गंगा उठा ले (गोदान —प्रेमचंद, 259); मगर यह हम तुम्हारे आगे गंगाजली उठाय के कह सकते हैं कि जो सील और खान्दानी सुभाव, मुरव्वत—मुलाहजा तुम में हैं वह न नगीनचंद में है और न ×× महिपाल जी में (बूंद०—नागर, 399)।

गंगा की गोद में सौंप देना—मृतक का गंगा-प्रवाह कर देना। प्र० साल भर के भीतर दो बालक गंगा की गोद में सौंप चुकी थी (मान० (5)—प्रेमचंद)।

गंगा नहाना—(1) दाह संस्कार के बाद नहाना। प्र० अच्छा, यह बताओ कि सूरदास मर गए, तो गंगा नहाने चलोगे कि नहीं (रंग० (2)—प्रेमचंद, 401)।

(2) किसी झंझट के काम से छुटकारा मिलना, किसी कठिन कार्य का पूरा होना। प्र० तू यह काम करा दे तो मैं गंगा नहा लूं (झूठा० (2)—यशपाल, 465)।

गंगा पार उतरना, -कर देना—(1) देश से निकाल देना। प्र० मैं तो उसे गंगा पार उतारकर ही चैन लूंगा।

(2) झंझट से मुक्त कर देना। प्र० तुम इस लड़के को कहीं ठौर-ठिकाने से लगा दो तो मैं गंगा पार उतर जाऊँ।

गंगा पार कर देना—दे० गंगा पार उतरना।

गंगा बहना—बहुतायत होना। प्र० मेरे यहाँ क्या दौलत की गंगा बहती है जो तुम्हारी माँग पूरी कर सकूँगा।

गंगा-जमुना में जब तक जल रहे—चिर काल तक। प्र० सब पिरथिमी असीसइ जोरि-जोरि कै हाथ गांग जउंन जौ लहि जल तौ लहि अम्मर माथ (पद०–जायसी, 1/15)।

गंगा-जमुनी—दो भिन्न वस्तुओं के मेल से बना। प्र० सम्राट गंगा-जमुनी काम के सिंहासन पर विराजमान हुए (वैशाली० (2)–चतुर०, 177)।

गंगाजल—पवित्र या निर्दोष। प्र० तुम जो कहति हौ, मेरौ कन्हैया गंगा कैसो पानी (सू० सा०–सूर, 929); संसार में कौन है, जो कहे कि मैं गंगाजल हूँ (रंग० (2)–प्रेमचंद, 157)।

गंगाजल उठाना—दे० गंगा उठाना।

गंगाजली उठाना—दे० गंगा उठाना।

गंगा-तुलसी देना—मरने के पूर्व व्यक्ति के मुंह में गंगाजल और तुलसी की पत्ती डालना। प्र० दादाजी तो ऐसा चटपट चले गये कि हम उनके मुंह में गंगा-तुलसी तक न दे सके।

गंगा-दुहाई—गंगा-कसम। प्र० गंगा-दुहाई, मुझे उनके साथ जाने को मत कहिए।

गंगा-लाभ होना—मर जाना। प्र० एकादशी के दिन ब्राह्म-मुहूर्त में स्वामी जी ने गंगा-लाभ किया (दे० दु०–शिव०, 68)।

गंज डालना—बाजार लगाना। प्र० फैक्टरी के आस-पास गंज डाल दो तो खूब लाभ होगा।

गंजे को पंजा न देना—जिसमें सहने की सामर्थ्य न हो उसे आक्रमण करने की शक्ति न देना। प्र० खुदा गंजे को पंजा नहीं देता (आज़ाद–प्रेमचंद, 178)।

गंजेड़ी यार—मतलबी दोस्त। प्र० यार, तुम तो गंजेड़ी यार हो, तुम पर मुझे रत्ती भर भरोसा नहीं।

गंठछोरा—गिरहकट; गाँठ खोलकर पैसा निकाल लेनेवाला चोर। प्र० चरपट चोर घूत गंठिछोरा मिले रहहिं तेहि नांच (पद०–जायसी, 2/15)।

गंठजोड़ा करना या होना—(1) सम्बन्ध स्थापित होना। प्र० कहैं कबीर तन मन का ओरा, भाव भगति हरि सूं गठ जोरा (कबीर ग्रंथा०–कबीर; 160); आपस में जो गंठजोड़ हो जाय तो कुछ अनोखी अचरज और अचम्भे की बात नहीं (इंशा०–इंशा, 94–95)।
(2) विवाह होना। प्र० अब तो दोनों का गंठजोड़ा हो गया है, तुम्हारे चीखने-चिल्लाने से कुछ न होगा।

गंठना—मैत्री होना। प्र० आजकल रमेश और सुदर्शन में खूब गंठ रही है।

गंठबंधन करना या होना—विवाह के निमित्त गाँठ बाँधना। प्र० मित्र, हम गंठबंधन करते हैं तुम कर्पूर मंजरी का हाथ पकड़ो (भा० ग्रं० (1)–भारतेन्दु, 407); मैं हूँ वही जिसका हुआ था ग्रंथि-बंधन साथ में (जय०–गुप्त, 25)।

गंडा पड़ना—गाँठ होना। प्र० डोरी में गंडा पड़ गया है, जरा खोलो तो।

गंडा बाँधना या बंधवाना—शिष्य बनना या बनाना। प्र० उन्होंने पंडित ओंकारनाथ जी से गंडा भी बंधवाया था।

गंडा-ताबीज करना—मंत्र-यंत्र या टोटका करना। प्र० मैं तो गंडा-ताबीज सब करके हार गया, बीमारी किसी तरह वश में ही नहीं आ रही है।

गंदगी—अपवित्रता, दुर्बलता या अविचार-अन्याय; अहितकर सिद्धान्त। प्र० × × हर वक्ता ने यह राय जाहिर की कि हिन्दू समाज में छुआछूत, अशिक्षा और कुशिक्षा इतनी अधिक है कि उसके कारण हमारे यहाँ गंदगी बहुत रहती है (अमृत०–नागर, 64)।

गंदगी उछालना—किसी दूसरे की निन्दा करना, किसी की गंदी बातों को कहना-सुनना। प्र० हर समय गंदगी उछालने की तुम्हारी बड़ी बुरी आदत है।

गंदा करना या होना—कलंकित या दूषित करना या होना। प्र० वह तो सारे वातावरण को गंदा कर रहा है।

गंदा काम—अनुचित या बेईमानी का काम। प्र० रमा ने अरुचि प्रकट करते हुए कहा—गंदा काम है, मैं सफाई से काम करना चाहता हूँ (गबन–प्रेमचंद, 43)।

गंध आना, -खिलना, -पाई जाना, -मिलना, -रहना—भास होना, मालूम पड़ना, पता चलना। प्र० इक तो जग-मांझ सनेही कहाँ, मैं कहूँ जौ मिलाप की बास खिलै (घन० कबित्त–घना०; 170); वह इतनी सरल और स्वाभाविक है कि प्रकाण्ड पाण्डित्य की गन्ध उससे जरा भी नहीं आती (सा० सी०–महा० द्वि०, 59)।

गंध खिलना—दे० गंध आना।

गंध न सुहाना—तनिक भी पसंद न होना। प्र० मुझे तो उस व्यक्ति की गंध तक नहीं सुहाती।

गंध पाई जाना—दे० गंध आना।

गंध मिलना—दे० गंध आना।

गंध रहना—दे० गंध आना।

गंध होना—लेश मात्र होना, तनिक भी आभास मिलना। प्र० घन आनंद जीवन-रूप सुजान ह्वै पावत क्यौं दृग-प्यास नहीं अरु फूलि रहे कुसुमाकर से सु कहूँ पहचान की बास नहीं (घन० कवित्त–घना०, 63)।

गंधक और शोरे का साथ—दो खतरनाक व्यक्तियों का साथ (गंधक, शोरा और कोयले से बम बनाते हैं, इसीलिए यह प्रयोग चल पड़ा—शोरा शोर करे, गंधक जोर करे, कोयला ले उड़े)। प्र० वह भी तुम लोगों के दल में आ मिला इसका मतलब यह कि गंधक और शोरे का साथ हो गया।

गंधा जाना—खराब या विकृत हो जाना। प्र० धीरे-धीरे यह यहाँ तक पक गई कि सामयिक जीवन और विचार दोनों ही इससे गंधा उठे (सा० जि०–ल० प्र० सु०, 67)।

गंवर-मसला—गंवारों की कहावत।

गंवार का लट्ठ—महामूर्ख और उजड्ड । प्र० तुम तो गंवार के लट्ठ हो, तुम में बात करने की भी तमीज़ नहीं ।

गई बात—(1) बीती बात । प्र० गई बात को सारी जिन्दगी याद रखने से क्या लाभ है ?
(2) पूर्व प्रतिष्ठा, मान । प्र० अरे, वह सब गई बात अब कहाँ ? अब तो दर-दर की ठोकरें खा रहा है ।

गई-गुजरी—(1) बीती हुई बात । प्र० अब गई-गुजरी को भूल जाओ, उसे याद रखने में न तुम्हारा भला है न मेरा ।
(2) निकृष्ट । प्र० रधिया तो ऐसी गई-गुजरी हालत को पहुँच गई है कि क्या कहूँ ?

गऊ—बहुत सीधा । प्र० अपने भाग बखानो कि ऐसी गऊ औरत पा गये हो (गोदान–प्रेमचंद, 285) ।

गऊपन—सिधाई । प्र० × × पर जब से उन्होंने अपनी माँ से साहब के गऊपन की प्रशंसा सुनी थी, उनका डर जाता रहा (जिन्दगी०–उपा०, 43) ।

गगन खेलना—बहते हुए पानी या नदी आदि का उछलना ।

गगन झूलना—खूब प्रशंसा होना । प्र० मालाएँ, फूल, मोटर······जय–जयकार······और वह गर्व से देखेगी······लोगों के हाथों से तालियाँ बजेंगी······और तब······गगन झूल जाएगा······घर-घर में चर्चा होगी (बौने०–सु० रा०, 21) ।

गगन होना—पक्षी आदि का बहुत ऊपर उड़ना । प्र० देखो न, कबूतर कैसा गगन हो गया ।

गगन-भेदी—(1) बहुत उच्च स्वर में । प्र० किन्तु पहली बार ही जब वह स्टेज पर आया तो दर्शकों ने × × गगन-भेदी ठहाके से उसका स्वागत किया (पैंतरे–अश्क, 17) ।
(2) बहुत ऊँचा । प्र० हिमालय के गगन-भेदी हिमधौत- शिखर मन को बरबस खींच रहे थे ।

गगन-भेदी पताका फहाराना—प्रभावशाली शासन होना । प्र० चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य की गगन-भेदी पताका सगौरव फहराने लगी ।

गचक्का खाना, गच्चा खाना—धोखा खाना । प्र० चौंधरी उसे धक्का देकर नारी-जाति पर बल का प्रयोग करके—गच्चा खा चुका था (गोदान–प्रेमचंद, 30) ।

गच-पच—झंझट-झमेला । प्र० चारों ओर ऐसा गच-पच हो रहा है कि क्या कहूँ ।

गचागच—भरपूर । प्र० वह तो विलास के पक में गचागच डूबा हुआ है ।

गच्चा खाना—दे० गचक्का खाना ।

गच्चे में डालना—हैरानी में डालना । प्र० दूसरे उग्र शब्द ने हीरा को गच्चे में डाल दिया (गोदान–प्रेमचंद, 45) ।

गज करना—बन्दूक में गज से बारूद कसना ।

गज भर की छाती करना या होना—बहुत साहस करना या होना । प्र० गज भर की छाती किये बिना इतना बड़ा खर्च कौन उठा सकता है ।

गज भर की जबान होना, -जीभ होना—(1) बहुत जवाब-सवाल करने वाला होना; टेढ़ी बात बोलनेवाला । प्र० वे आजकल देशभक्त हैं और मुझे कम्युनिस्ट और नास्तिक कहने लायक गज भर की जबान रखते हैं (अमृत०–नागर, 69) ।
(2) खाने-पीने के लिए लालायित व्यक्ति । प्र० उसे तो रोज दोना चाटने को चाहिए, माल उड़ाने को चाहिए । गज भर की जीभ है उसकी ।

गज भर की जीभ होना—दे० गज भर की जबान होना ।

गजट करना या कराना या होना—(1) बहुत मशहूर करना । प्र० अरे भाई, तुमने तो उसे गजट करा दिया ! भाई खूब !
(2) सरकारी गजट द्वारा जन-साधारण को सूचित करना । प्र० इस कानून को तो जल्दी ही गजट करवाना होगा ।

गजब का—अपूर्व, विचित्र । प्र० कुछ पूछो मत, उसका वह चित्र तो गजब का है, देखकर तबीयत खुश हो गयी ।

गजब की पुड़िया—बड़ा आश्चर्यजनक; बड़ा शैतान । प्र० बाप रे बाप, यह लड़की तो गजब की पुड़िया है !

गजब गिरना, -टूटना, -पड़ना, -पाना—आफ़त आना । प्र० जवान बेटे के गुज़र जाने से उनके ऊपर तो गजब टूट पड़ा है ।

गजब गुजारना, -ढाना, -तोड़ना—(1) जबरदस्त प्रभाव डालना । प्र० तुम्हारे इस शबाबे हुस्न ने वह गजब ढाया कि पूछो मत ।
(2) विचित्र या साहसपूर्ण काम करना । प्र० उस लड़के ने तो गजब ढा दिया, सीधे पुलिस-कप्तान पर गोली चला दी ।
(3) बहुत बड़ी मुसीबत में डालना । प्र० सरकार, ऐसा गजब मत तोड़िए नहीं तो हम गरीब मर जायेंगे ।

गजब टूटना—दे० गजब गिरना ।

गजब ढाना—दे० गजब गुजारना ।

गजब तोड़ना—दे० गजब गुजारना ।

गजब पड़ना—दे० गजब गिरना ।

गजब पाना—दे० गजब गिरना ।

गजब में पड़ना—विपत्ति में फँसना । प्र० आजकल तो मैं बड़े गजब में पड़ा हुआ हूँ, कोई रास्ता नहीं सूझ रहा है ।

गजब-इलाही—ईश्वरीय प्रकोप । प्र० इस गजब-इलाही से कौन हमारी रक्षा कर सकता है ?

गजर का वक्त, गजर-दम, गजर-बजे—तड़के-सवेरे । प्र० तुम गजर के वक्त ही आ धमके ?

गजर मारना—चार-चार घंटे के बाद जितना बजा हो उतने घंटे बजाकर समय सूचित करना । प्र० बोले तमचुर, चार्‌यौ जाम को गजर मार्‌यौ, पौन भयौ सीतल, तमि तें तमता गई (नू० सा०–सूर, 2656) ।

गजर-दम—दे० गजर का वक्त ।

गजर दम करना—खूब पीटना । प्र० उस दिन उसका वह गजरदम किया गया कि वह जिन्दगी भर याद रखेगा ।

गजर-बजर करना या होना—इधर-उधर या गड़बड़ करना या होना । प्र० वह हर बात में गजर-बजर क्यों करता है ?

गजर-बजर खाना—इधर-उधर की गड़बड़ चीजें खाना । प्र० कल मैंने बहुत गजर-बजर खा लिया था, इसीलिए तबीयत गड़बड़ा गयी है ।

गजर-बजे—दे० गजर का वक्त ।

गज-स्नान कराना—दुर्गति करना । प्र० खैर, उस पत्र को भी द्विवेदी जी ने गज-स्नान करा दिया है (गु० नि०–बा० मु० गु०, 473) ।

गजी गाढ़ा—मोटा-झोटा कपड़ा । प्र० मुझे क्या, मैं तो गजी-गाढ़ा पहनकर भी गुजारा कर सकता हूँ, तुम्हीं लोगों को महीन तनजेब चाहिए ।

गज्झा छोड़ना, -देना—पानी के भीतर से बाहर बुल-बुला फेंकना । प्र० ढेरों मछलियां तालाब में गज्झा छोड़ रही थीं ।

गज्झा देना—दे० गज्झा छोड़ना ।

गज्झा दबाना, -मारना—माल हड़पना । प्र० तुम इस तरह गज्झा दबाकर चैन से बैठ न पाओगे, यह समझ रखना ।

गज्झा मारना—दे० गज्झा दबाना ।

गट करना, गटकना, गट्ट करना—हड़प जाना । प्र० पैंबैंना का इन गोरन खों जानती नइयां ? झांसी खों गुटकन चाउत (झांसी०–वृं० वर्मा, 152) ।

गटई काटना—घोर अहित करना । प्र० वह मेरी गटई काटना चाहता है, यह मैं कैसे बरदाश्त कर लूं ।

गटकना—दे० गट करना ।

गट-गट सुनना—बिना प्रतिवाद चुपचाप सुनना । प्र० एक बार भी तो उसके मुंह से न निकला, अम्मां तुम क्यों इनका अपमान कर रही हो ? बैठी गट-गट सुनती रही (मान० (1)–प्रेमचंद, 134) ।

गट-पट करना या होना—(1) गड़बड़ी करना या होना; घाल-मेल करना या होना । प्र० शंकर देव ने सब कुछ गट-पट करके रख दिया ।
(2) प्रेम करना या होना । प्र० दोनों में गट-पट हो गयी है । तुम ज़रा कड़ी नज़र रखना ।

गटर-गों करना—हड़प जाना । प्र० आप तो उस गरीब का सब कुछ गटर-गों कर जाना चाहते हैं ।

गट्ट करना—दे० गट करना ।

गट्टा उखड़ना—कलाई की हड्डी सरक या टूट जाना । प्र० उसे रोकने में मेरा तो गट्टा ही उखड़ गया ।

गट्टा उखाड़ना—हरा देना । प्र० अब एक दिन तुम्हारा गट्टा उखाड़ना होगा, तभी तुम रास्ते पर आओगे ।

गट्टा पकड़ लेना—किसी काम के करने वाले को बीच में ही रोक लेना । प्र० तब करेंगे क्यों न ठट्ठा लोग अब जाय गट्टे के लिये गट्टा पकड़ (चोखे०–हरिऔध, 112) ।

गट्टा पाक होना—पवित्र होना; ऐसा व्यक्ति जिसके हाथ का खाने-पीने में ऊँची जाति वालों को आपत्ति न हो । प्र० हमारा तो गट्टा पाक है । हमारा छुआ पानी तो ब्राह्मण पीते हैं (दे० दु०–शिव०, 31) ।

गट्टा-सी सुनाना—स्पष्ट कहना । प्र० मैं तो गट्टा-सी सुनाने में विश्वास रखता हूँ ।

गट्ठर भर—अत्यधिक । प्र० गट्ठर भर पाप जमा कर रखे हैं, कब तक इनसे छुटकारा मिलेगा ?

गट्ठर साधना, -गठरी साधना—घुटनों को छाती से लगाकर और हाथ बांधकर पानी में कूदना ।

गठ जाना—(1) अपने स्वार्थ के लिए दो व्यक्तियों का मिल जाना । प्र० असामी से गठ गये । आकर मालिक से कह दिया, घर पर है नहीं × × (गोदान–प्रेमचंद, 213) ।
(2) बदना (लड़ने को) । प्र० इतना कहना था कि दोनों पहलवान गठ गये ।

गठरी—अच्छी रकम । प्र० जालपा–कितने बाकी होंगे, कुछ हिसाब-किताब लिखते हो ? रमा–हाँ, लिखता क्यों नहीं । सात सौ से कुछ कम ही होंगे । जालपा–तब तो पूरी गठरी है (ग़बन–प्रेमचंद, 92) ।

गठरी उड़ाना—रकम बनाना । प्र० पटवारी सैकड़े-हज़ार की गठरी थोड़े ही उड़ाता है (प्रेमा०–प्रेमचंद, 6) ।

गठरी करना—(1) बचाकर रखना, जमा करके रखना । प्र० बाबूजी से मिले सारे रुपये उन्होंने गठरी कर रखे हैं, एक पाई भी नहीं खर्च की है ।
(2) मारकर गिरा देना । प्र० वह तो इन्हें सहज ही गठरी कर सकता है ।

गठरी काटना—लाभ करना (अनुचित तरीके से) । प्र० रोज गठरी काट-काटकर रखते हो, उस पर कहते हो रुपये नहीं हैं (ग़बन–प्रेमचंद, 107) ।

गठरी घूम जाना—रकम गायब हो जाना । प्र० क्या मज़े से माशूक के पास बैठे हुए गटगट उड़ा रहे थे । गठरी घूम गई न ? (आज़ाद०–प्रेमचंद, 125) ।

गठरी बनना—पैर को छाती के साथ करके गठरी-सा बन जाना । प्र० × × पर पूस के कड़कड़ाते जाड़े लिहाफ या कम्बल के बग़ैर कैसे कटते । बेचारा रात-भर गठरी बना पड़ा रहता (ग़बन–प्रेमचंद, 158) ।

गठरी बांधना—(1) दे० गठरी बनना ।
(2) जाने को तैयार होना; अपना छोटा-मोटा सामान बांध लेना । प्र० उसने तो गठरी वगैरह बांध ली है, वह अब एक पल भी नहीं रुकना चाहती ।

गठरी मारना—(1) ठगना; अनुचित तरह से लाभ करना । प्र० और भी न जाने कहाँ-कहाँ की गठरी मार लाया निगोड़ा (बूँद०–नागर, 7) ।
(2) कुश्ती में विपक्षी को इस प्रकार दोहरा कर देना कि जिसमें उसकी आकृति गठरी-सी हो जाए ।

गठरी मिलना, -हाथ आना—रकम मिलना । प्र० आज भारी गठरी हाथ आएगी (राधा० ग्रंथा०–राधा० दास, 685) ।

गठरी साधना—दे० गट्ठर साधना ।

गठरी सिर पर लदी होना—कर्ज का या आर्थिक दायित्व का बोझ सिर

पर होना । प्र० अभी तो पहले ही की गठरी सिर पर लदी है, और किस मुंह से मांगूं × × (गोदान—प्रेमचंद, 112) ।

गठरी हाथ आना—दे० गठरी मिलना ।

गठा बदन—चुस्त शरीर । प्र० सच, बुढ़िया ने अपनी जवानी में सेर भर सोने की हंसली और सब मिलाकर पक्की पसेरी भर की तौल का सोना अपनी भारी गठी हुई देह पर अलंकारों के रूप में ढोया है (अमृत०—नागर, 159) ।

गठाव गोठना—उपाय निकालना । प्र० अब आप ही कोई गठाव गोठिए तो हाथ-पैर चले ।

गठियाना—हमेशा ध्यान में रखना । प्र० मेरी बात को अच्छी तरह गठिया लो नहीं तो पछताओगे ।

गठौत गांठना—साजिश करना । प्र० ये सभी मेरे दुश्मन हो रहे हैं, मेरे विरुद्ध गठौत गांठ रहे हैं ।

गडंग मारना, -हांकना—(1) डींग हांकना । प्र० प्रदीप तो इतनी गडंग मारता है कि उसके पास बैठना मुश्किल हो जाता है ।
(2) गप्प मारना । प्र० बहुत हुआ, अब यह गडंग हांकना बन्द करो ।

गडंग हांकना—दे० गडंग मारना ।

गडमगड करना या होना—एक में मिलाना या मिलना । प्र० लो, मुन्ना ने तो मारा दाल-चावल गडमगड कर दिया ।

गड़ जाना—झेंपना, लज्जित होना । प्र० सचमुच, चन्द्र, मेरे लिए तुम जो कुछ करते रहे हो, जब सोचती हूँ तो गड़ जाती हूँ (नदी०—अज्ञेय, 87) ।

गड़पंख बनाना—बेवकूफ बनाना ।

गड़प से—एक बारगी । प्र० मेरे देखते-देखते वह गड़प से पानी में कूद पड़ी ।

गड़प होना—पानी, दलदल आदि में एकदम से डूब जाना । प्र० देखते-देखते लड़का गड़प से भीतर चला गया ।

गड़बड़ झाला, गड़बड़ाध्याय—गड़बड़ । प्र० वहां तो सब गड़बड़ झाला हो गया है ।

गड़बड़ झाला मचाना—गड़बड़ करना, झगड़ा करना । प्र० सुशील ने तो ऐसा गड़बड़ झाला मचा रखा है कि मेरे लिए उसे सलटाना मुश्किल है ।

गड़बड़ाध्याय—दे० गड़बड़ झाला ।

गड़रिया पुरान—मूर्खों की बात ।

"ड़हा" के लिये देखिये "गड्ढा" ।

गड़ही में मुंह छिपाना—लज्जित होना । प्र० उसे तो गड़ही में मुंह छिपाने को भी जगह नहीं रही ।

गड़ही में मुंह धो आना—किसी वस्तु को पाने या किसी काम को करने की सामर्थ्य है या नहीं, इसे देखना । प्र० पहले गड़ही में मुंह धो आओ, तब मेरे पास यह मांग लेकर आना ।

गड़ागप्प होना—ज्वर या नींद में एकदम बेसुध होना । प्र० पिछले दो दिनों से वह तेज ज्वर में गड़ागप्प है ।

गड़ी लय—विलम्बित लय । प्र० उस्ताद अमीर खां ने गड़ी लय में खयाल उठाया ।

गड़े कोयले उखाड़ना, -मुर्दे उखाड़ना—गई बीती बात को फिर से उठाना । प्र० 'रहने दे बेटी'—वृद्धा ने कहा, गड़े मुर्दे उखाड़ कर क्या होगा ? (बौने०—रां० रा०, 141) ।

गड़े मुर्दे उखाड़ना—दे० गड़े कोयले उखाड़ना ।

गड्ड का गड्ड—बहुत-सा; पूरा बंडल । प्र० गड्ड का गड्ड रुपया वह उड़ा ले गया ।

गड्ड में—छोटी-बड़ी चीज एक साथ लेने में । प्र० मंगला हाट से गड्ड में कपड़े लेने से बड़ा सुभीता रहता है ।

गड्ड-मड्ड करना—मिलाना । प्र० कहीं-कहीं उक्त दोनों नमूनों की भाषा को गड्ड-मड्ड करके कविता की है (गु० नि०—बा० मु० गु०, 119) ।

गड्डो देना—धोखा देना, चकमा देना । प्र० वह मुझे गड्डो देकर साफ भाग गया ।

गड्ढा खोदना—अनिष्ट का प्रयत्न करना, बुराई करना । प्र० जो दूसरे को गड्ढा खोदेगा, उसके लिए कुआं तैयार है (प्रेमा०—प्रेमचंद, 315) ।

गड्ढा खोदने वाले के लिए कुआं तैयार होना—जो थोड़ा अहित करे उसका बड़ा अहित होना । प्र० जो किसी के लिए गढ़ा खोदेगा, उसके लिए कुआं तैयार है (रंग० (2)—प्रेमचंद, 135) ।

गढ्ढा पड़ना—गड्ढा हो जाना; दब जाना । प्र० उसके दोनों गालों में गड्ढे पड़ गये थे ।

गड्ढा पाटना, -भरना—(1) कमी को पूरी करना । प्र० मैं कहां तक गृहस्थी के गड्ढे को भरता रहूं, यह तो जैसा का तैसा बना रहता है ।
(2) किसी प्रकार पेट भरना । प्र० किसी तरह इस गड्ढे को भर सकूं, यही बहुत है ।
(3) विरोध दूर करना । प्र० केवल मेरे किये तो गड्ढा भरेगा नहीं । उधर से भी कोशिश होनी चाहिए ।

गड्ढा भरना—दे० गड्ढा पाटना ।

गड्ढे में गिरना, -पड़ना, -पैर पड़ना—पतन होना, बुरे काम में पड़ना । प्र० गुरु पितु मातु स्वामि सिख पालें चलेहुँ कु मग पग परहिं न खालें (राम० (अ)—तुलसी, 672); मेरी बुद्धि भ्रष्ट हो गई है, मैं आँखें खोलकर गढ़े में गिर रहा हूं (रंग० (1)—प्रेमचंद, 139) ।

गड्ढे में धकेलना—घोर अहित करना । प्र० उसे तो गड्ढे में धकेलकर उसके मुंह पर पत्थर लगा दिया है (सारा०—यादव, 108) ।

गड्ढे में पड़ना—दे० गड्ढे में गिरना ।

गड्ढे में पैर पड़ना—दे० गड्ढे में गिरना ।

गढ़—केन्द्र; अड्डा । प्र० काशी तो एक-से-एक गुणियों और विद्वानों का गढ़ रही है ।

गढ़ छेंकना—सेना से चारों ओर से गढ़ को घेरना । प्र० सुना साहि गढ़ छेंका आई (पद०—जायसी, 1/24) ।

गढ़ जीतना, -तोड़ना, गढ़ी फतह करना या होना—(1) बहुत कठिन काम

करना। प्र० तुमने यह चित्र बना दिया तो कौन-सा बड़ा भारी गढ़ जीत लिया जो गर्व से अपना बखान किये जा रहे हो।

(2) सफलता प्राप्त करना। प्र० आप तनिक देखते रहिए, गढ़ी अभी फतह होती है।

गढ़ ढह जाना, -ध्वस्त होना—हार जाना, स्थिति कमजोर हो जाना। प्र० मेरा गढ़ तो ढहता जा रहा है, मैं क्या कहूँ।

गढ़ तोड़ना—दे० गढ़ जीतना।

गढ़ ध्वस्त होना—दे० गढ़ ढह जाना।

गढ़-गढ़कर छोलना, -बातें करना, -बनाना—एक-एक बात बनाना; झूठी काल्पनिक बात करना। प्र० गढ़ि गढ़ि छोलत लाड़िले, भली नहीं यह स्याम (सू० सा०–सूर, 2236); गढ़ि गढ़ि छोलैं भली भांति बोलैं आदर सौं तपति हरन हिय बीच सियरात हैं (क० र०–सेनापति, 29); बातें गढ़-गढ़ बहक-बहक क्यों बना बड़े मे बड़ा (मर्म०–हरिऔध, 25)।

गढ़-छोलकर—खूब बना संवारकर। प्र० इनहीं बातनि भए स्याम तनु, मिलवत हौ गढ़ि छोलि (सू० सा०–सूर, 4304); सजि प्रतीति बहु बिधि गढ़ि छोली (राम० (अ)–तुलसी, 387)।

गढ़-गढ़ कर बातें करना—दे० गढ़-गढ़ कर छोलना।

गढ़-गढ़ कर बातें बनाना—दे० गढ़-गढ़ कर छोलना।

गढ़ना—पीटना। प्र० ठहरो, मैं अभी तुम्हें गढ़ता हूँ।

गढ़ी फतह करना—दे० गढ जीतना।

गढ़े बैठना—घात में रहना। प्र० मैं तो कब से ही गढ़े बैठा हूँ, मौका मिलते ही उसे दबोचूंगा।

गण—हिमायती; अनुयायी। प्र० ये सब लोग मनमोहन जी के गण हैं, इनके सामने उन्हें कुछ मत कहो।

गणना करना या होना—मानना या माना जाना। प्र० इन लोगों में राम प्रसाद जी की मैं गणना नहीं करता, वे बिलकुल भिन्न हैं।

गणेश बैठना—विवाह आदि के अवसर पर गणेश स्थापित होना। प्र० बाबू देवीदयाल के यहाँ गणेश बैठ चुके हैं, अब लगन नहीं टल सकती।

गत करना, -बनाना—(1) दुर्गति करना, पीटना। प्र० गत हमारी बना रहे हो क्यों (चुभते०–हरिऔध, 2)।

(2) हँसी-ठट्ठे में लज्जित करना। प्र० देखिए प्रयोग (1)।

गत का—अच्छा, काम का। प्र० कोई गत की चीज हो तब न उन्हें भेंट दूं, इसमें से क्या दूं।

गत नाचना—नाचने का कोई ठाट दिखाना।

गत बनाना—दे० गत करना।

गत भरना—बाजे के स्वर के साथ-साथ नाचना।

गत होना—(1) बुरी गति होना। प्र० रामघन की तो उस दिन वह गत हुई कि पूछो मत।

(2) मरना। प्र० रघुवंश जी तो पिछले महीने गत हो गये।

गत-कुगत करना—बरबाद करना। प्र० उसने सारी जायदाद की गत-कुगत कर डाली।

गताल खाता होना, -खाते में जाना, -खाते लिखना, -खाते समझना, गयाल खाता होना—व्यर्थ होना। प्र० मेरा सब किया-धरा गताल-खाते में गया और क्या।

गताल खाते में जाना—दे० गताल खाता होना।

गताल खाते लिखना—दे० गताल खाता होना।

गताल खाते समझना—दे० गताल खाता होना।

गति पाना—मुक्ति पाना। प्र० रांम कह्यां दुनियां गति पावै, षांड कह्यां मुख मीठा (कबीर ग्रंथा०–कबीर, 101)।

गति होना—योग्यता होना, पैठ होना। प्र० पर धर्मशास्त्र में उनकी विशेष गति न थी (सा० सी०–महा० द्वि०, 44)।

गदर मचाना—विद्रोह करना। प्र० सन् 1857 में सिपाहियों के गदर मचाने के पीछे बड़े गहरे कारण थे।

गदरा जाना—थोड़ा मोटा होना; भरा-भरा होना। प्र० भाभी जी आजकल खूब गदरा गयी हैं।

गदराया फिरना—मस्ती में फिरना। प्र० वह तो आजकल गदराया फिरता है।

गदह-पचीसी—कच्ची उम्र। प्र० वह अभी गदह-पचीसी में है न? उससे इससे अधिक बुद्धिमानी की आशा करना व्यर्थ है।

गदहाचंद—महा मूर्ख।

गदहों बुखार चढ़ना—बहुत तेज़ बुखार चढ़ना। प्र० उन्हें तो कई दिनों से गदहों बुखार चढ़ा हुआ है।

गदाका सुनाना—फटकारना। प्र० मैं उसे ऐसा गदाका सुनाऊँगा कि याद रखेगा।

गदागद—एक के ऊपर एक। प्र० रस्सी हाथ से छूट गयी और सब एक के ऊपर एक गदागद गिर पड़े।

गद्द धरना—बदहज़मी होना। प्र० उसे गद्द धर गया है, इस वक्त खाने को कुछ मत दो।

गद्द मारना—अपने वश में करना। प्र० उसने रमोला को पूरी तरह गद्द मार रखा है।

गद्द मारा जाना—बेवकूफ हो जाना। प्र० तुम्हें तो गद्द मारा गया है, तुम चुप रहो।

गद्दी का बालक—नादान बालक।

गद्दी चलाना—गद्दी पर बैठना; वंश या शिष्य क्रम चालू रखना। प्र० गद्दी चलानेवाला भी तो कोई चाहिए, तुम विवाह नहीं करोगे तो कैसे चलेगा।

गद्दी छोड़ना—पद छोड़ना, अधिकार छोड़ना। प्र० उस दुर्घटना के बाद उसने गद्दी छोड़ दी।

गद्दी पर बैठना या बैठाना—सिंहासनारूढ़ होना; उत्तराधिकारी होना या बनाया जाना। प्र० राजिक भागा और विक्रमादित्य अपने बाप की गद्दी पर बैठा (भा० ग्रं० (3)–भारतेन्दु, 19)।

गद्दी पाना—उत्तराधिकार पाना। प्र० पिता की मृत्यु के बाद ज्येष्ठ पुत्र ही गद्दी पा सकता है।

गद्दी मारना—किसी का अधिकार छीन लेना। प्र० मैं भाई की गद्दी मारकर कभी भी चैन नहीं पा सकूंगा।

गद्दी लगाकर बैठना—अधिकार जताते हुए आराम से बैठना।

गद्दी लगाना—घोड़े को हथेली या कुहनी से मलना।

गद्दी सम्हालना—गद्दी पर अधिकार कर लेना; कार्यभार हाथ में लेना। प्र० बड़े भाई के बन्दी होने की खबर पाकर छोटे भाई ने गद्दी सम्हाल ली।

गद्दी से उतरना या उतारना—पदच्युत होना या करना। प्र० यदि कोई राजा कोई अपराध करे या कोई दुर्व्यवहार करे तो सर्वोपरि सत्ता की तरफ से वाइसराय को यह अधिकार है कि वह उसे गद्दी से उतार दे (एक०–मुल्क०, 335)।

गद्दीनशीन होना—किसी पद या पीठ पर आसीन होना; राज्य पाना। प्र० शहंशाह अकबर की मृत्यु के बाद जहांगीर गद्दीनशीन हुए।

गधा—महा मूर्ख। प्र० हिन्दुस्तान के खुफिया वाले कितने बड़े गधे होते हैं, इसको भी तुम अच्छी तरह जानते होगे (भूले०–भग० वर्मा, 425)।

गधा चराना—निरा मूर्ख रहना। प्र० तुम कुछ न कर सकोगे। बस, गधे चरा सकते हो, चराओ।

गधा बनाना—बेवकूफ बनाना। प्र० हैं साले बड़े चंट, अभी तो उसे गधा बना रक्खा है इन्होंने (जिन्दगी–निर्गुण, 71)।

गधा-घोड़ा एक भाव होना—भला-बुरा सब एक-सा समझा जाना।

गधे का हल चलना या चलवाना, -फिरना—खंडहर या उजाड़ होना या करना। प्र० अब तो उस सारे प्रदेश में गधे का हल फिर गया था, चारों ओर वीरान पड़ा था।

गधे का हल फिरना—दे० गधे का हल चलना।

गधे की लादी—बड़ा बोझा। प्र० बाप रे, यह गधे की लादी मुझसे नहीं ढोयी जायेगी।

गधे को आदमी बनाना—मूर्ख आदमी को समझदार बनाना। प्र० तुम गधे को आदमी बनाने की व्यर्थ चेष्टा मत करो।

गधे को बाप बनाना—गरज पड़ने पर मूर्ख का आदर करना। प्र० रुपये कमाने ही के लिए नौकरी के चक्कर में अब तक मैं खाक छानता रहा। न जाने कितने गदहों को बाप भी बनाया (दिल०–जी०, 7)।

गधे को सींग होना—मूर्ख को भी ताव आना। प्र० तो यह बात है! अब गधे को भी सींग हो गयी है।

गधे को हलुआ खिलाकर लातें खाना—मूर्ख को सिर चढ़ाकर खुद दुःख पाना।

गधे को हलुआ खिलाना—मूर्ख का सम्मान करना।

गधे पर किताबें लदना या लादना—मूर्ख व्यक्ति का पढ़ना या उसे पढ़ाने की कोशिश करना।

गधे पर चन्दन का बोझ होना—बिना महत्त्व समझे किसी काम को करना। प्र० वेद पुरान पढ़त अस पांड़े, खर चंदन जैसे भारा (कबीर ग्रंथा० –कबीर, 100)।

गधे पर चढ़ना या चढ़ाना, -सवार करना—बहुत बेइज्जती या बदनाम करना या होना।

गधे पर झूल डालना—अयोग्य या कुरूप आदमी को सम्मान देना या अच्छी वस्तु देना।

गधे पर झूल पड़ना—अयोग्य या कुरूप व्यक्ति को सम्मान मिलना या अच्छी वस्तु मिलना।

गधे पर वेद लादना—मूर्ख को ज्ञान का पाठ पढ़ाना।

गधे पर सवार करना—दे० गधे पर चढ़ना या चढ़ाना।

गधैया चीं-पों—बकवाद। प्र० अपनी यह गधैया चीं-पों बंद करो, मैं ऊब गया हूं।

ग़नीमत जानना, -समझना, -होना—जितना या जैसा है वही पर्याप्त है; इतना है यही बहुत है! प्र० तुम आ गये मैं इसे ही ग़नीमत जानती हूं।

ग़नीमत समझना—दे० ग़नीमत जानना।

गनीमत होना—दे० ग़नीमत जानना।

गप-गप खाना, गपागप खाना—जल्दी-जल्दी निगल जाना। प्र० थाली सामने आते ही वह गप-गप खाने में जुट गया।

गपड़चौथ—बेकार की बातें, गप्प। प्र० गपड़चौथ करने को तो सारी रात पड़ी है (गोदान–प्रेमचंद, 257)।

गपड़-शपड़—अंड-बंड। प्र० वह न जाने क्या-क्या गपड़-शपड़ बकता रहा।

गपागप खाना—दे० गप-गप खाना।

गपोड़बाजी—गप्प। प्र० तुम्हारी गपोड़बाजी कभी खत्म होगी या नहीं?

गप्प उड़ना—झूठी चर्चा का फैलना। प्र० न जाने कहां से यह गप्प उड़ गयी कि मैं सुपरिण्टेण्डेण्ट बना दिया गया हूं।

गप्प उड़ाना, -करना, -मारना, -लड़ाना, -हांकना, गप्प-शप हांकना, -गप्प सड़ाका करना—व्यर्थ की बातें करना। प्र० यहां उतनी देर कोचवान हुक्का पीएगा या गप्प करेगा (भा० ग्रं० (3)–भारतेन्दु, 898); घर पर भी रहते, तो अधिकतर लम्पट रईसजादों के साथ गप्पें उड़ाया करते (मान० (1)–प्रेमचंद, 236)।

गप्प करना—दे० गप्प उड़ाना।

गप्प मारना—दे० गप्प उड़ाना।

गप्प लड़ाना—दे० गप्प उड़ाना।

गप्प हांकना—दे० गप्प उड़ाना।

गप्प-शप हांकना—दे० गप्प उड़ाना।

गप्प सड़ाका करना—दे० गप्प उड़ाना।

गप्पा देना—चकमा देना। प्र० हुजूर ने भी अच्छा गप्पा दिया और खुदा जानता है, मैं सच समझा था (मा–कौशिक, 265)।

गफलत का पर्दा पड़ना, -की पट्टी बंधी होना—बेहोशी और बादहवासी में होना; ठीक-ठीक स्थिति को न समझ पाना। प्र० ऐ हुजूर, उस पर तो गफलत का पर्दा पड़ा है।

गफलत की पट्टी बंधी होना—दे० गफलत का पर्दा पड़ना।

गप्फा मारना, गब्बा मारना—बड़े-बड़े कौर खाना।

गब-गब, गबर-गबर—जल्दी-जल्दी । प्र० वह तो गब-गब खाने में जुट गया ।

गबर-गबर—दे० गब-गब ।

गबरहा करना—बरतन के साँचे पर गोबर और मिट्टी चढ़ाना ।

गब्बा मारना—दे० गप्फा मारना ।

गम उठाना—रंज सहना । प्र० ठीक ही कहते हो भाई, गम उठाना ही पड़ेगा ।

गम करना—खा जाना । प्र० चारि वृक्ष छ शाखा वाके पत्र अठारह भाई। एतिक लै गैया गम कीन्हों गैया अति हरहाई (कबीर—हिं० श० सा०) ।

गम का मारा—दुःखी । प्र० मामी तो आप ही गम की मारी हैं ।

गम खाना—(1) सब्र करना, प्रतीक्षा करना । प्र० हजारों वाले तो बच्चा गुरु को ब्राह्मण जान ग़म खाकर रह गए लेकिन एक कोई बनिया ऐसा भी था जिसने सौ-पचास रुपये के लिए केस चला × × गुरु को घर पकड़ा था (अपनी०—उग्र, 85) ।

(2) क्षमा करना । प्र० नारी का धरम है कि गम खाय (गोदान—प्रेमचंद, 44) ।

ग़म ग़लत करना या होना—दुःख को भुला देना या भूलना । प्र० तो चचा, लोग-बाग अपना ग़म ग़लत कर रहे हैं (भूले०—भग० वर्मा, 445) ।

गमखोर—सब्र करनेवाला । प्र० मैं तो थर-थर काँप रही थी कि कहीं तुम्हारे ऊपर हाथ न चला दें । मगर है बड़ा गमखोर (ग़बन—प्रेमचंद, 277) ।

गमख़ोरी करना—किसी को दुःख न पहुँचे इसलिए कुछ बरदाश्त कर जाना । प्र० मैं गमखोरी करता हूँ उसी का यह नतीजा भुगतना पड़ता है ।

गमख्वारी करना—सहानुभूति प्रकट करना । प्र० ऐसी ऊपरी गमख्वारी मत कीजिए, मुझे इसकी जरूरत नहीं है ।

गया करना—गया में जाकर पिण्डदान करना । प्र० तुमको इसलिये बुलाया है कि मर जाऊँ, तो मेरा किरिया-करम करना × × और हो सके, तो गया कर आना (रंग०(2)—प्रेमचंद, 386) ।

गया घर—दुर्दशा को प्राप्त परिवार । प्र० उस गये घर में बेटी को ब्याह कर पछताओगे ।

गया वक्त हाथ न आना—अवसर चूक जाने पर फिर न मिलना ।

गया-गुजरा, -बीता—बुरा; तुच्छ, दुरवस्था को प्राप्त । प्र० यह मौलिक रसमयी रचना इस बात का प्रमाण है कि इस गये गुजरे जमाने में भी अच्छी कविता हो सकती है (पद्म पराग—पद्म० शर्मा, 309) ।

गया-बीता—दे० गया-गुजरा ।

गयाल खाता होना—दे० गताल खाता होना ।

गयी करना—गयी-गुजरी बात पर ध्यान न देना । प्र० क्या सारी जिन्दगी उस एक बात को पकड़े बैठे रहोगे ? उसे गयी करो और क्या ?

गयी लक्ष्मी न लौटना—पास से चले गये धन का फिर न मिलना । प्र० थाने में इत्तलाय की, थानेदारों की खुशामद की । मुदा गयी हुई लच्छमी कहीं लौटती हैं (रंग०—प्रेमचंद, 233) ।

गये दिन लौटना—पहले की-सी अच्छी स्थिति को पुनः प्राप्त करना । प्र० दस वर्षों के बाद मेरा उजड़ा हुआ घर बसा, गये हुए दिन लौटे (मान० (6)—प्रेमचन्द, 97) ।

गरकी आना—बाढ़ आना । प्र० उत्तरी बिहार में हर साल गरकी आती है, चारों ओर बर्बादी छा जाती है ।

ग़रकी देना, -में डालना—दुःख देना । प्र० उसने मुझे ऐसा गरकी में डाल दिया है कि क्या कहूँ ?

ग़रकी में डालना—दे० ग़रकी देना ।

गरगज लगाना—ढेर लगाना । प्र० उसने साड़ियों का गरगज लगा दिया, मैं तो देखता ही रह गया ।

गरज़ अंधी होना—गरजमन्द आदमी सर्वथा विवेक-शून्य हो जाता है । प्र० गरज बावली होती है, पर आज मालूम हुआ कि वह अंधी भी होती है (रंग०—प्रेमचन्द, 314) ।

गरज़ अटकना—अपना स्वार्थ होना । प्र० जब गरज़ अटकी है तब शक्ल दिखने आये हो, क्यों ? ऐसे कभी नहीं आते ।

गरज़ करना—खुशामद करना । प्र० सम्पत बहुत गरज़ करने लगा तो जाना ही पड़ा ।

गरज़ का बंदा, -यार—स्वार्थी व्यक्ति ।

गरज़ का बावला, -में अंधा बावला, -में बावला, -गरज़मन्द का बावला—अपने स्वार्थ के लिए सब कुछ करने को तैयार । प्र० यहाँ कोई किसी का भाई नहीं, कोई किसी का दोस्त नहीं । सब अपनी गर्ज़ में अंधे बावले ········(पैंतरे—अश्क, 65) ।

गरज़ का यार—दे० गरज़ का बन्दा ।

गरज़ गांठना—अपना मतलब निकालना ।

गरज़ पड़ना—स्वार्थ होना ।

गरज पड़े पर गधे को भी बाप कहना—अपना मतलब होने पर सब की खुशामद करने को तैयार रहना ।

गरज़ बावली होना—गरजमन्द आदमी पागलों जैसा आचरण करता है । प्र० गरज़ बावली होती है, पर आज मालूम हुआ कि वह अंधी भी होती है (रंग०—प्रेमचन्द, 314) ।

गरज़ में अंधा बावला—दे० गरज़ का बावला ।

गरज़ में बावला—दे० गरज़ का बावला ।

गरज़ रखना या होना—मतलब रखना या होना । प्र० गरज़ रखे बिना तो कोई किसी की बात नहीं पूछता ।

गरज़कर बोलना—ज़ोर से बोलना ।

गरजना, -बरसना—गुस्से में ज़ोर से बोलना, गुस्सा होना । प्र० ता ऊपर काहें गरजति है, मनु आई चढ़ि घोरे (सू० सा०—सूर, 939); छिन भरे माँ तुमका तेहा चढ़ी तौ गरजैं-बरसैं लगिहौ (बूंद०—नागर, 112) ।

गरजना-बरसना—दे० गरजना ।

गरज़मंद का बावला—दे० गरज़ का बावला ।

गरद झर जाना—विष का असर दूर हो जाना। प्र० तेरो सुत गारुड़ी, सुन्यौ है धात री महरि। सूरदास देखें प्रभु, जैहै री गरद झरि (सू० सा०–सूर, 1370)।

गरदन उठना—ध्यान देना। प्र० कब न गरदन रहे झुकाते हम आपकी उठ सकी नहीं गरदन (बोल०–हरिऔध, 137)।

गरदन उठाकर, -ऊंची करके—सगर्व। प्र० हमने किसी के सामने सिर नहीं झुकाया × × सदैव गर्दन उठाकर चले (मान० (7)–प्रेमचंद, 259)।

गरदन उठाना—(1) गर्व करना। प्र० बड़ा आदमी कुल्ली को कोई नहीं मिला, जिसे मित्र समझकर गर्दन उठाते (कुल्ली०–निराला, 13)।
(2) विरोध करना। प्र० तुमने ज़रा भी गरदन उठाई तो मैं तुम्हें मसल कर रख दूंगा।

गरदन उठाने की फुर्सत न होना—बहुत व्यस्त होना।

गरदन उड़ना या उड़ाना, -उतरना या उतारना—मार डाला जाना या मारना। प्र० क्यों न गरदन फंसे, नपे, उतरे है नहूसत सवार गरदन पर (बोल०–हरिऔध, 135); यवनों का पक्ष लेने वाले हिन्दुओं की तो गर्दन उड़ा देने को जी करता है (मैला०–रेणु, 151)।

गरदन उतरना या उतारना—दे० गरदन उड़ना या उड़ाना।

गरदन उतरवा लेना—गरदन कटवा लेना।

गरदन ऊंची करके—दे० गरदन उठाकर।

गरदन ऐंठना—(1) गला दबाना। प्र० उसने खरगोश को धर दबोचा और गरदन ऐंठने लगा।
(2) कष्ट पहुँचाना। प्र० इस तरह मेरी गरदन मत ऐंठो, मालिक।

गरदन ऐंठी रखना या रहना—(1) घमंड में चूर रहना। प्र० विष्णु की गरदन हर समय ऐंठी ही रहती है।
(2) नाराज़ होना। प्र० देखिए प्र० (1)।

गरदन कटना—बुराई होना, हानि होना। प्र० इस मामले में नाहक मेरी गरदन कटी।

गरदन कांपना, -हिलने लगना या हिलना—बुढ़ापा आना। प्र० अब तो गरदन कांपने लगी है, शरीर में दम नहीं रहा।

गरदन का डोरा—गरदन की नसें जो सिर हिलाने से हिलती नज़र आती हैं (हिं० श० सा०)।

गरदन का बोझ उतरना, -भार उतरना—किसी कठिन कार्य के भार से मुक्ति पाना। प्र० राम-राम करके किसी तरह गरदन का बोझ उतरा।

गरदन का भार उतरना—दे० गरदन का बोझ उतरना।

गरदन का मनका ढलना—मरने के निकट होना। प्र० उनकी गरदन का मनका ढल गया है, घड़ी दो घड़ी और हैं।

गरदन काटना—(1) हानि पहुँचना या पहुँचाना। प्र० ओ हो—तो यानी आप गर्दन कटवाना चाहते हैं (शेखर० (2)–अज्ञेय, 199)।
(2) अपमानित होना या करना।

गरदन चलाना—गरदन हिला-हिलाकर समर्थन करना, मत व्यक्त करना। प्र० पानी को दूध के नाम पर बेचने वाला ग्वाला × × जाली दस्तावेज बनाने वाले सेठ और माहूकार यह सब-के-सब देवताओं की भाँति गर्दनें चला रहे थे (मान० (8)–प्रेमचन्द, 275)।

गरदन छूटना—किसी दायित्व से छुट्टी पाना। प्र० इसके लिए कोई उन पर अपराध नहीं लगा सकता, मगर नोखेराम की गर्दन इतनी आसानी से न छूट सकती थी (गोदान–प्रेमचंद, 174)।

गरदन झाड़कर निकल जाना—हाथ न आना; कोई दायित्व न समझना या न लेना। प्र० उससे क्या मतलब! वह गरदन झाड़कर निकल गया।

गरदन झाड़ना—मारना-पीटना। प्र० बस, अब एक शब्द भी और नहीं, नहीं तो गरदन झाड़ दूंगा।

गरदन झुकना या झुकाना—(1) अधीन होना। प्र० जियत न नाई नारि, चातक धन तजि दूसरेहि सुरसरिहू की बारि, मरत न माँगेउ अरध जल (दोहा०–तुलसी, 305); देखि कै लिबास नीची सबन की नारि होति मोहि कै बिकच करें मन धन ध्यान ही (क० र०–सेनापति, 15)।
(2) शर्मिन्दा होना, लजाना। प्र० जब वे दाग उखल सौं बाँधे, बदन नवाइ रहे (सू० सा०–सूर, 4405)।
(3) बेहोश होना।
(4) मरना।

गरदन टीपना—गला दबाकर मार डालना।

गरदन टूटना—बहुत बोझ के कारण गरदन दर्द करना। प्र० ज़रा बोझ तो उतारो, गर्दन टूट गयी (ग़बन–प्रेमचंद, 176)।

गरदन टेढ़ी करना—विमुख होना या उपेक्षा करना। प्र० आँख टेढ़ी और टेढ़ी हैं भवें क्यों भला टेढ़ी न वे गरदन करें (बोल०–हरिऔध, 137)।

गरदन ढलकना, -ढलना—मरना, मृत्यु के समय गरदन का निढाल हो जाना। प्र० चढ़ गई आँखें, पलक थिर हो गई, ढल पड़ा आँसू ढलक गरदन पड़ी (बोल०–हरिऔध, 136)।

गरदन ढलना—दे० गरदन ढलकना।

गरदन ढीली करना—तंग करना; दुर्गति करना; गर्व चूर कर देना। प्र० मैं बुरा आदमी हूँ, मुझे दिक मत करो। मैंने इसी जेल में बड़े-बड़ों की गरदनें ढीली कर दी हैं (रंग० (2)–प्रेमचन्द, 12)।

गरदन तक डूबे रहना—पूरी तरह डूबे रहना या लिप्त होना। प्र० मैं तो कर्ज में गरदन तक डूबा हुआ हूँ।

गरदन तोड़ना, -मरोड़ना—गरदन मरोड़कर मार डालना। प्र० देखो तो, बिल्ली ने चिड़िया की गरदन तोड़ दी।

गरदन दबना—फंसे होना; अपनी स्थिति कमज़ोर होना। प्र० अमरकान्त को तसल्ली तो हुई पर अनुग्रह के बोझ से उसकी गर्दन दब गयी (कर्म०–प्रेमचंद, 4)।

गरदन दबाना—ज़ोर डालना; बाध्य करना। प्र० आप तो हर समय मेरी

ही गरदन दवाते हैं।

गरदन दबानेवाला—ज़बरदस्त; सबक सिखानेवाला। प्र० उसी ने वालेश्वर के नम्बर चुपचाप बढ़ा दिए……निकल आया कोई ताऊ, उसकी गरदन दबाने वाला (सारा०–यादव, 186)।

गरदन दूसरों के पैरों के नीचे दबी होना—पूरी तरह से दूसरों के वश में होना। प्र० × × पर अब मालूम हुआ कि हमारी गरदन दूसरों के पैरों के नीचे दबी हुई है, अकड़ कर निबाह नहीं हो सकता (गोदान–प्रेमचंद, 17)।

गरदन देना—मृत्यु के लिए समर्पित होना। प्र० बहुतन्हं दीन्ह नाइ कै गीवा। उतरु न देइ मार पै जीवा (पद०–जायसी, 38/10)।

गरदन न उठाना—(1) लज्जित होना। प्र० खन्ना बोले—मालती की तो गर्दन नहीं उठती (गोदान–प्रेमचन्द, 164)।

(2) किसी अत्याचार को चुपचाप सह जाना। प्र० वह तो अब तक चुप रहा, उसने गरदन तक न उठायी पर धैर्य की भी सीमा होती है।

(3) बहुत व्यस्त होना। प्र० पिछले एक सप्ताह से मैं गरदन तक नहीं उठा सका हूँ।

(4) बहुत अस्वस्थ होना। प्र० तीन दिनों से सुशीला ने गरदन तक नहीं उठाई है, बुखार में बेसुध पड़ी है।

गरदन नपना—दण्डित होना; मार डाला जाना। प्र० गला घोंटने वाले की यदि गरदन नपी दिखाती (मर्म०–हरिऔध, 7); कलम ज़रा भी गर्म पड़ जाय तो गर्दन नापी जाय (मान० (2)–प्रेमचंद, 230)।

गरदन नाचीज़ होना—जान का कोई मूल्य न होना। प्र० जी हाँ, आपके लिए उसकी गरदन नाचीज़ है तभी न आप ऐसी बातें करते हैं।

गरदन नापना—(1) अपमान के साथ निकाल देना। प्र० मैं गर्दन उसकी नापूंगी जो कतर ब्योंत दिखलायेगा (नूर०–भक्त, 53)।

(2) अहित करना। प्र० लेकिन कल को म्युनिसिपैलिटी मेरी गर्दन नापे तो मैं किसे पुकारूंगा? (ग़बन–प्रेमचंद, 219)।

गरदन नीची करना या होना—शर्मिन्दा होना। प्र० कत हौ रही नारि नीची करि, देखति लोचन झूले (सू० सा०–सूर, 3444); इस पुस्तक के पढ़ने से आपकी गर्दन नीची होती है या ऊँची? (गु० नि०–बा० मु० गु०, 546)।

गरदन पकड़कर करा लेना—ज़बरदस्ती करवा लेना। प्र० मैं यह काम उसकी गरदन पकड़कर करवा लूंगा।

गरदन पकड़कर निकालना—बेइज्ज़ती से निकाल देना। प्र० उन्होंने उसकी गरदन पकड़कर घर से निकाल दिया, तनिक मुरव्वत न की।

गरदन पकड़ना—(1) दण्ड देना। प्र० जगधर ने चूं तक न की। जानते हैं न कि ज़रा भी गरम हुए कि बजरंगी ने गरदन पकड़ी (रंग० (1)–प्रेमचंद, 93)।

(2) पकड़कर बात करना या काम करवाना। प्र० मैं भवानी को किसी के गले बांध दूं लेकिन पीछे इन्होंने कहीं हाथ लपकाया तो वह तो मेरी गर्दन पकड़ेगा (गोदान–प्रेमचंद, 215)।

(3) चंगुल में करना। प्र० मैंने उसकी गरदन पकड़ रखी है, वह अब सहज ही नहीं छूट सकता।

गरदन पर—जिम्मे। प्र० अज़ाब तो मेरी गरदन पर पड़ेगा न। मैं उसका बोझ उठा सकता हूँ (रंग० (1)–प्रेमचंद, 119)।

गरदन पर एहसान लेना—एहसानमन्द होना। प्र० तुम्हीं अपनी गरदन पर एहसान क्यों लेती हो?

गरदन पर कटार चलाना, -कुठार चलाना—घोर अहित करना। प्र० जिसकी गर्दन पर कटार चलाई है, ज़रा उसे तड़पते भी तो देखो (निर्मला–प्रेमचंद, 118)।

गरदन पर कुठार चलाना—दे० गरदन पर कटार चलाना।

गरदन पर खून रहना या होना—हत्या के अपराध का दोषी होना। प्र० इन्हीं की गरदन पर इन बेगुनाहों का खून है (प्रेमा०–प्रेमचंद, 307)।

गरदन पर खून लेना—हत्या का अपराध अपने ऊपर लेना। प्र० तुम मेरी खातिर अपनी गरदन पर यह खून क्यों ले रहे हो?

गरदन पर चढ़ना, -सवार रहना या होना—(1) किसी काम को जल्दी करने के लिए आग्रह करना। प्र० वाह, मैं बुआ की गर्दन पर जहाँ चढ़ा, सीधे से थाली परस देंगी (तितली–प्रसाद, 272)।

(2) जबरदस्ती करना। प्र० इस तरह किसी की गर्दन पर सवार होकर, अपना आत्मसम्मान बेच कर गये तो क्या गये? (मान० (7)–प्रेमचंद, 22)।

(3) भला-बुरा कहना। प्र० ज़रा-सा कोई काम बिगड़ जाय, तो गरदन पर सवार हो जाते हो (गोदान–प्रेमचंद, 33)।

गरदन पर छुरी चलना या चलाना, -फिरना या फेरना, -तलवार चलना या चलाना—बड़ा नुकसान करना, बहुत कष्ट पहुँचाना। प्र० मैंने तो देखा है, दो टैकनीशियन मिलकर बैठ जायेंगे पर दो कलाकार हमेशा एक दूसरे की गर्दन पर छुरी चलाने की सोचेंगे (दूधगाछ–दे० स०, 283)।

गरदन पर छुरी फिरना या फेरना—दे० गरदन पर छुरी चलना या चलाना।

गरदन पर जूआ पड़ना, -रखना या रखा जाना—दायित्व का बोझ पड़ना। प्र० क्या न सिर पर बोझ भारी है लदा क्या न गरदन पर गया जूआ रखा (बोल०–हरिऔध, 135)।

गरदन पर जूआ रखना या रखा जाना—दे० गरदन पर जूआ पड़ना।

गरदन पर तलवार चलना या चलाना—दे० गरदन पर छुरी चलना या चलाना।

गरदन पर बोझ रखना या होना—(1) दायित्व देना या होना। प्र० मेरी गरदन पर इस बोझ को रख दिया गया है तो इसे ढोने के सिवा और उपाय भी क्या है।

(2) अप्रिय लगना। प्र० इस समय यह काम मेरी गरदन का बोझ हो गया है।

गरदन पर लेना—अपने ऊपर दायित्व लेना। प्र० इस काम का भार जब गरदन पर ले लिया है तब उसे निभाना तो पड़ेगा ही।

गरदन पर वार आना—दोष या परेशानी आना। प्र० मैं रुपये दे देता हूँ पर फिर मेरी गर्दन पर वार आयेगा तो! (भारती०–रां० रा०, 61)।

गरदन पर सवार रहना या होना—दे० गरदन पर चढ़ना।

गरदन पर हाथ डालना—गरदनिया देकर निकालना या निकाला जाना। प्र० तो लगेगी हाथ मलने आबरू हाथ गरदन पर अगर डाला गया (चोखे०–हरिऔध, 16)।

गरदन फंसना या फंसाना—किसी के पंजे में आ जाना या किसी को फंसाना; मुसीबत में फंसना या फंसाना। प्र० क्यों न गरदन फंसे, नपे, उतरे है नहूसत सवार गरदन पर (बोल०–हरिऔध, 135)।

गरदन फटना—गरदन में बहुत दर्द होना। प्र० × × मगर मुश्किल से पचास कदम चले होंगे कि गर्दन फटने लगी (गोदान–प्रेमचंद, 98)।

गरदन फिरना—रुख परिवर्तित होना। प्र० आज गरदन बेतरह है नप रही पर हमारी फिर सकी गरदन कहाँ (चुभते०–हरिऔध, 64)।

गरदन फेरना—बात न मानना; बेरुखा हो जाना। प्र० विष्णु स्वरूप जी ने गरदन ही फेर ली है।

गरदन मरवाना—मरना। प्र० उस दंगे-फसाद में अपनी गरदन मरवाने कौन जायेगा।

गरदन मरोड़ना—(1) नाश करना। प्र० जब मरोड़ी न ऐंठ की गरदन मूंछ तब हम मरोड़ते क्या हैं (चुभते०–हरिऔध, 108)।
(2) दबाव डालना। प्र० आपने यदि मेरी ही गरदन मरोड़ने का फैसला कर लिया है तो ठीक है।
(3) दे० गरदन तोड़ना।

गरदन मारना—अहित करना या होना। प्र० जेहि राखहिं रहु घर रखवारी, सो जानइ जनु गरदनि मारी (राम० (अ)–तुलसी, 546); बेतरह गरदन हमारी है दबी मार लें गरदन अगर हैं मारते (बोल० –हरिऔध, 137)।

गरदन (किसी की) मुट्ठी में होना—वश में होना। प्र० हमारी गर्दन तो सरकार की मुट्ठी में है (मान० (6)–प्रेमचंद, 231)।

गरदन में खम आना—रुष्ट होना; असन्तोष प्रकट करना। प्र० × × उनके हज़ार खीझने पर भी उसकी गरदन में खम नहीं आता था (अंधेरे०–राकेश, 25)।

गरदन में हाथ डालना, -देना—(1) गरदनिया देना; अपमान करना। प्र० कहार के धृष्टतापूर्ण व्यवहार से उसे यह भय हुआ कि अधिक बात-चीत करने से कहीं यह गर्दन में हाथ न दे बैठे (मा–कौशिक, 196)।
(2) स्नेह दिखलाना। प्र० बांह गरदन में पड़े तब किस तरह बन गये जब आँख की हम किरकिरी (बोल०–हरिऔध, 137)।

गरदन में हाथ देकर निकाल देना—बेइज्जती के साथ निकाल देना। प्र० तुम किसी दिन गरदन में हाथ देकर निकाले जाओगे।

गरदन में हाथ देना—दे० गरदन में हाथ डालना।

गरदन रेतना—अहित करना। प्र० यहाँ जो दो-एक बनिये लेन-देन करते हैं वे तो असामियों की गरदन ही रेतते हैं (मान० (3)–प्रेमचंद, 175)।

गरदन सही करना—गरदन पर थप्पड़ मारना। प्र० मुंह बन्द करो नहीं तो गरदन सही कर दूंगा।

गरदन से उतार देना—दूर करना, दायित्व से मुक्त होना। प्र० हाकिमों का ऐसा हलका बर्ताव देखकर निर्भीक हरिश्चन्द्र ने आनरेरी मजिस्ट्रेटी का भार उसी दम अपनी गर्दन पर से उतार कर फेंक दिया (गु० नि०–बा० मु० गु०, 317)।

गरदन से जुआ उतरना या उतारना—स्वतंत्र या दायित्वमुक्त होना या करना। प्र० मैंने उसी दिन गरदन से जुआ उतार दिया।

गरदन हिलने लगना या हिलना—दे० गरदन कांपना।

गरदन हिलाना—ना करना। प्र० जान कर भी आज तक जाना नहीं हो तुम्हीं गरदन हिलाना जानते (बोल०–हरिऔध, 136)।

गरदना देना, -रसीद करना, -सही करना—गरदन पर मारना। प्र० इस तरह गरदना देना ठीक नहीं।

गरदना रसीद करना—दे० गरदना देना।

गरदना सही करना—दे० गरदना देना।

गरदनिया खाना—गरदन में हाथ देकर निकाला जाना। प्र० वह उनके यहाँ से गरदनिया खाकर चुपचाप चला आया।

गरदनिया या गरदनी देना—गरदन पकड़कर निकाल बाहर कर देना। प्र० किस तरह गरदन भला नीची न हो जब कि गरदनिया किसी को दी गई (बोल०–हरिऔध, 135)।

गरम आह—दुःखपूर्ण उद्गार। प्र० जब हमीं में न रह गई गरमी क्या करेंगी गरम गरम आहें (चुभते०–हरिऔध, 63)।

गरम कपड़ा—शरीर को गरम रखनेवाला कपड़ा; ऊनी कपड़ा। प्र० आज मजे की ठंड है, गरम कपड़े पहन लो।

गरम करना—(1) नाराज़ करना। प्र० तुम ताऊजी को क्यों गरम कर रहे हो?
(2) उत्तेजित करना। प्र० संतोष बाबू को पहले गरम करो फिर काम बनेगा।
(3) खाने की किसी वस्तु का शरीर में ताप उत्पन्न करना। प्र० उस दिन की आदी की चाय ने गरम कर दिया।

गरम खबर—ऐसी नयी खबर जिसकी बड़ी चर्चा हो। प्र० मगर मिस मालती से तो आपकी शादी होने वाली थी, बड़ी गर्म खबर थी (गोदान–प्रेमचंद, 331)।

गरम खून—जवानी का जोश। प्र० गोबर का गरम खून, वह भला कब चुप रहनेवाला था।

गरम चर्चा चलना—काफी चर्चा होना। प्र० × × गांव वालों में आजकल इस तरह की बड़ी गरम चर्चा चल रही है (दे० दु०–शिव०, 28)।

गरम चोट—तुरन्त की लगी चोट। प्र० गरम चोट मालूम नहीं हुई थी (दे० दु०–शिव०, 83)।

गरम तवा—(1) बहुत क्रोधपूर्ण । प्र० बहुत रोकने पर भी वह सरस्वती के 22 पृष्ठों में फैल गई है और उक्त पृष्ठ एक-एक तप्ता तवा बन गए हैं (गु० नि०—वा० मु० गु०, 497) ।

(2) बहुत गरम । प्र० अब न तप्त-तावा थी बनी वसुन्धरा (वैदेही०—हरिऔध, 217) ।

गरम तवे पर तली जाना—घोर कष्ट पाना । प्र० जो अभी कुछ भी न खिल पाई रही क्यों गई तत्ते तवे पर वह तली (बोल०—हरिऔध, 172) ।

गरम दल—कांग्रेस का उग्र दल । प्र० उस समय कांग्रेस के गरम दल के नेता बाल गंगाधर तिलक थे ।

गरम पड़ना—गुस्सा होना । प्र० ज़रा-ज़रा-सी बात पर आप गरम पड़ेंगे तो कैसे काम होगा ।

गरम पर चोट लगाना—उपयुक्त अवसर पर काम बनाना । प्र० देखो, अभी तो सारा मामला गरम है, गरम पर चोट लगाने से ही काम बनेगा ।

गरम पानी—वीर्य ।

गरम बहस—उत्तेजनापूर्ण बहस । प्र० उस दिन राज भाई के घर पर ज़ोरों में गरम बहस हुई ।

गरम बाजारी—अत्यधिक मांग । प्र० इस गरम बाजारी में सब माल खप जायगा ।

गरम बात—(1) उत्तेजनापूर्ण बात । प्र० कुवेर सिंह × × खद्दर पहनते थे, गर्म-गर्म बातें करते थे (परती०—रेणु, 106–107) ।

(2) अप्रिय अरुचिकर बात । प्र० इस तरह का बना कलेजा है जो कि सारी मुसीबतें सह ले । बेधड़क आग मुंह उगल लेवे जीभ बातें गरम-गरम कह ले (चोखे०—हरिऔध, 45) ।

गरम मसाला—सनसनी पैदा करनेवाली बातें । प्र० यह गरम मसाला तुम अपने पास ही रखो, यहां छोड़ने की जरूरत नहीं है ।

गरम मामला—(1) नयी खबर या बात । प्र० इस बारे में चुप मत रहो, अभी तो गरम मामला है, हाथ के हाथ सलट जायगा ।

(2) संगीन मामला । प्र० यह साधारण कांड नहीं है, मामला गरम है, देखो क्या होता है ?

गरम मिलना—चलते-चलते भेंट होना । प्र० इस तरह गरम मिलने से कहीं जी भरता है ? एक दिन घर आओ न !

(कुछ) गरम रहना—ज़ोरों पर होना; जोश में होना । प्र० ऐ खुदावंद, कल तो एक बजे तक यहां दरबार गरम रहा (आज़ाद०—प्रेमचंद, 214) ।

गरम लगना—दुःखदायी प्रतीत होना । प्र० सीतलता उर कहूं न दीसति, सब ब्रज लागत तातौ (सू० सा०—सूर, 4552) ।

गरम हवा लगना—तनिक भी कष्ट होना । प्र० गोकुल बसत नंद नंदन के, कबहुं बयार न लागी ताती (सू० सा०—सूर, 4105); ऐसा काम करना चाहिए, जिससे उन दोनों को गरम हवा भी न लग पाये (कठ०—दे० स०, 303) ।

गरम होना—(1) क्रोध आना । प्र० भली भांति पहिचाने-जाने साहिब जहां लौं जग, जूड़े होत थोरे, थोरे ही गरम (विनय०—तुलसी, 249); अच्छा, अच्छा, गरम मत होओ मेरे दोस्त (नदी०—अज्ञेय, 28) ।

(2) तेज़ी पर होना । प्र० आजकल हिन्दू-मुसलमान का झगड़ा गरम है (झूठा० (1)—यशपाल, 89) ।

गरम-मिजाज़—तुनुक-मिजाज़, जल्दी ही गुस्सा होने वाला । प्र० कामता नाथ बड़ा गरम-मिजाज़ है, मैं उससे बात तक नहीं करना चाहता ।

गरम-सर्द उठाना, -देखना, -सहना—भले-बुरे दिल काटना । प्र० मैंने ज़िन्दगी में बहुत गरम-सर्द उठाया है, बहुत कुछ भोगा है ।

गरम-सर्द देखना—दे० गरम-सर्द उठाना ।

गरम-सर्द सहना—दे० गरम-सर्द उठाना ।

गरमागरम—(1) उत्तेजनापूर्ण । प्र० बात बढ़ते-बढ़ते गरमागरम बहस में परिणत हो गई (जहाज०—इ० जोशी, 12) ।

(2) सबसे ताज़ा (खबर) । प्र० आज की गरमागरम खबर क्या है, सो तो बतलाओ । ,

गरमा-गरमी—उत्तेजना; झगड़ा । प्र० अली रज़ा ने इस गरमा-गरमी को देखा (भूले०—भग० वर्मा, 461) ।

गरमाना—(1) गुस्सा आ जाना । प्र० दुनिया का उनको अनुभव है वह कभी नहीं गरमाते हैं (नूर०—भक्त, 107) ।

(2) तेज़ी पर होना । प्र० तीसरे दिन लड़ाई को गरमाए हुए एक घड़ी भी न गुजरी थी कि शहर में शोर मच गया × × (सात०—नागर, 143) ।

(3) घूस देना । प्र० दरोगा जी को गरमाना पड़ेगा, उसके बिना काम न बनेगा ।

गरमाये हुए—किसी काम को करते रहने के दौरान । प्र० गरमाये कंधे से ही बरात दरवाजे लगाते हुए जनवासे में जाकर ठंडायेंगे (दे० दु०—शिव०, 215) ।

गरमियां जताना—दिखावे के लिए मुहब्बत जताना । प्र० बहुत हुआ, और गरमियां न जताओ । हम सब समझते हैं ।

गरमी—(1) घमंड । प्र० न जाने कैसे इतने रुपये जमा हो गए । बचा को इन्हीं रुपयों की गरमी थी (रंग० (1)—प्रेमचंद, 198) ।

(2) जोश-उत्साह । प्र० जब हमीं में न रह गई गरमी क्या करेंगी गरम-गरम आहें (चुभते०—हरिऔध, 63) ।

गरमी आना—(1) उत्साह और रंग आना । प्र० हसीना और कानपुर-वाली की लाग-डांट हो गई और जब लाग-डांट हो जाती है तब महफ़िल में बड़ी गरमी आ जाती है (ये कोठे०—नागर, 113) ।

(2) तीव्रता आना । प्र० आजकल चुनाव के काम में खूब गरमी आ गई है ।

गरमी उतरना या उतारना, -छंटना या छांटना, निकलना या निकालना—उत्साह, घमंड या क्रोध दूर होना या करना । प्र० इसे लश्कर ले चलो तो गरमी उतर जाय (प्रेमा०—प्रेमचंद, 57); वह निरंजन की

ओर चला, क्योंकि उसकी सब गर्मी निकालने का यही अवसर था (कंकाल–प्रसाद, 78)।

गरमी करना—(1) उष्ण प्रभाव होना। प्र० इतनी मिर्च मत खाओ, गरम करेगी।
(2) शोख या शरारती बनाना, गर्व पैदा करना। प्र० तो यह बात है, धन ने गरमी की है।

गरमी छंटना या छांटना—दे० गरमी उतरना या उतारना।

गरमी निकलना या निकालना—(1) उष्णता दूर करना या होना। प्र० बोतल की गरमी निकालकर हाथ में लेना नहीं तो हाथ जल जायगा।
(2) प्रसंग करना।
(3) दे० गरमी उतरना या उतारना।

गरमी बरसना—बहुत गरमी होना। प्र० गरमी इतनी बरस रही है कि फोउण्टेनपेन की स्याही सूखकर जमने लगती है (पद्म० के पत्र–पद्म० शर्मा, 101)।

गरमी लाना—लोगों में उत्साह या उत्तेजना पैदा करना। प्र० कहीं ये धार्मिक वाद-विवाद आपस में तूल पकड़कर हम लोगों में गर्मी लाया करते थे (अमृत०–नागर, 174)।

गरमी से—उत्साह-जोश से। प्र० जिस गर्मी से उसने अपना परिचय अपने-आप दे दिया था, वह चाय के गर्म प्याले के सामने ठंडी हो चली थी (तितली–प्रसाद, 27)।

गरियार बैल—अड़ियल टट्टू।

गरीब—बड़ा ही सीधा-सादा और भला। प्र० मुझे तो वह बड़ा गरीब और बहुत ही विचारशील मालूम होता है (कर्म०–प्रेमचंद, 20)।

गरीब की घरवाली का गांव भर की भावज होना—दूसरे की गरीबी का सभी बेजा फायदा उठाते हैं। प्र० सरकार, गरीब की घरवाली गांव-भर की भावज होती है (रंग० (1)–प्रेमचंद, 128)।

गरीब की बीबी होना—निरीह, दीन-हीन होना। प्र० मैं गरीब की बीबी थी, मुझे ही सबकी भाभी बनना पड़ा (मान० (4)–प्रेमचंद, 9)।

गरीब-गुरबा—निर्धन, कंगाल। प्र० न जाने कितने गरीब-गुरबा पड़े हैं, उन्हीं के लिए कुछ करो।

गरीबामऊ—गरीबों के योग्य; गरीबी की स्थिति में। प्र० ये कोठरियां गरीबामऊ काम चलाने लायक हैं और क्या?

गरीबी का मारा—गरीबी के दुःख से दुःखी।

गरीबी में आटा गीला होना—दे० महंगी में आटा गीला होना।

गरीबों का खून होना—गरीबों को सताया जाना। प्र० आपको कुछ खबर है × × कितने गरीबों का खून हो रहा है, कितनी देवियां भ्रष्ट हो रही हैं (गोदान–प्रेमचंद, 172)।

गरीबों की गरदन पर कलम देना—किसी लिखा-पढ़ी के द्वारा गरीबों को सताना। प्र० पेशकार साहब, गरीबों की गरदन पर कलम देकर आप बड़े आदमी हो भी गये तो क्या हुए?

गरीबों की गरदन पर कलम देनेवाला—किसी लिखा-पढ़ी के द्वारा गरीबों को सतानेवाला। प्र० उनके पिता पटवारी थे। पटवारी भी कैसे? गरीबों की गरदन पर अपनी कलम देनेवाले (दे० दु०–शिव, 94–95)।

गरुड़ बायें होना—समय अनुकूल होना।

गरेबां चाक करना—प्रेमोन्मत्त होना।

गरेबां में मुंह छिपाना—लज्जित होना। प्र० वह बेचारा तभी से गरेबां में मुंह छिपाये पड़ा है।

गरेबां में मुंह डालना—असलियत देखना। प्र० दूसरों को दोष देने से पहले अपने गरेबां में मुंह डालकर देखो।

गर्क होना—(1) लीन होना। प्र० संगीत में वह ऐसा गर्क हुआ कि उसे तन-बदन का होश न रहा।
(2) नष्ट होना। प्र० उस लड़की के चक्कर में वह एकदम गर्क हो गया।

गर्जन-तर्जन करना—डांट-डपट करना; क्रुद्ध होना। प्र० सम्भोग सम्पत्ति की आईन बनने के समय भी उन्होंने वर्तमान समय की तरह खूब गर्जन-तर्जन किया था (मिश्र निबंध०)।

गर्त के मुख पर—अनिष्टकर स्थिति के बहुत पास, पतन के निकट। प्र० वह गर्त के मुख पर खड़ा है, किसी भी समय सन्तुलन खोकर नीचे पहुंच जा सकता है।

गर्त में गिरना—पतन होना। प्र० यदि राजनीतिक दलों की यही प्रवृत्ति रही तो देश के गर्त में गिरने में देर न लगेगी।

गर्त में ढकेलना—अनिष्ट करना। प्र० वह तो आप ही सतायी हुई है, उसे और गर्त में मत ढकेलो।

गर्द आबाद करना—बर्बाद करना। प्र० अपने सारे परिवार को गर्द आबाद किये बिना उसे चैन नहीं मिलेगा।

गर्द उठना—धूल उड़ना। प्र० देखते-देखते चारों ओर से गर्द उठने लगी और सब कुछ उसमें डूबने लगा।

गर्द उड़ना या उड़ाना, -करना—नष्ट हो जाना या कर देना। प्र० ठीक है, तुम सब पर गर्द उड़ाकर ही चैन लेना।

गर्द करना—दे० गर्द उड़ना या उड़ाना।

गर्द को न पहुंचना, -न पाना, -न लगना—(1) कोई मुकाबला न होना। प्र० यथार्थ तो यह है कि तुम अपनी रचनाओं की गर्द को भी नहीं पहुंचते (रंग०–प्रेमचंद, 357)।
(2) निकट न पहुंच पाना; दूर रह जाना। प्र० लोगों ने उनका पीछा किया, पर कोई उनकी गर्द को भी न पहुंचा (प्रेमा०–प्रेमचंद, 154)।

गर्द को न पाना—दे० गर्द को न पहुंचना।

गर्द को न लगना—दे० गर्द को न पहुंचना।

गर्द झड़ना या झाड़ना—मामूली मार पड़ना या मारना। प्र० अभी तो केवल गर्द झाड़ी गयी है अच्छी तरह मरम्मत होनी बाकी है।

गर्द तक न पाना—बिलकुल पता न पाना। प्र० वह तो चोरी का माल ऐसा गायब कर देता है कि पुलिस उसकी गर्द तक नहीं पा सकती।

गर्द फांकना—इधर-उधर मारा-मारा फिरना। प्र० तुम ऐसे ही मारी ज़िन्दगी ज़माने की गर्द फांकते रहो।

गर्द में मिलाना, -समोना—नाश करना। प्र० मर्दि गर्द मिलवहिं दससीसा (राम० (सुं०)–तुलसी, 851)।

गर्द में समोना—दे० गर्द में मिलाना।

गर्द से अटना—गर्द भर जाना। प्र० सारा बिस्तर गर्द से अटा पड़ा है। तुम लोगों से झाड़ा तक न गया।

गर्द होना—(1) चौपट हो जाना। प्र० उस धोखेबाज के चक्कर में मेरी सारी जमीन-जायदाद गर्द हो गयी।

(2) तुलना में तुच्छ होना। प्र० उस नेकलेस के सामने यह कुछ भी नहीं, गर्द है।

गर्दभ स्वर—बहुत बेसुरा स्वर। प्र० अपना यह गर्दभ स्वर बन्द भी करो यार, कान नहीं दिया जाता।

गर्दिश की मार—बुरे दिन; दुर्भाग्य। प्र० गर्दिश की मार और क्या कहूँ कि जिस काम में हाथ डालता हूँ वही गड़बड़ हो जाता है।

गर्भ में आना—प्रारम्भिक अवस्था में होना। प्र० अभी तक योजना गर्भ में भी नहीं आई है और तुमने हल्ला करना शुरू कर दिया।

गर्भ में होना—गुप्त रूप से होना; छिपा होना। प्र० अभी तो न जाने क्या-क्या भविष्य के गर्भ में है?

गर्म राख पर बिस्तर होना—दुःखदायक या खतरनाक स्थिति होना। प्र० इस बार आपने अपना बिस्तर गर्म राख पर रखा है और भारत-वासियों को गर्म तवे पर पानी की बूँदों की भांति नचाया है (गु० नि०–बा० मु० गु०, 212)।

गर्म सांस छोड़ना—लम्बी निराशा भरी सांस छोड़ना। प्र० कुल्ली भावस्थ हो गए, फिर एक गर्म सांस छोड़ी, कहा—अच्छा चलो (कुल्ली०–निराला, 51)।

गर्रा ढहना—अभिमान चूर होना। प्र० उनका गर्रा तो ऐसा ढहेगा कि पूछो मत, देखते चलो।

गर्व के मारे फूल जाना, -हिंडोरे में झूलना—बहुत घमंड करना। प्र० सूर-दास रति पाइं पलोटति, हुती जो गरब हिंडोरे झूली (सू० सा०–सूर, 3359); और झुनिया तो मारे गर्व के फूल जाय (गोदान–प्रेमचंद, 133)।

गर्व के हिंडोरे में झूलना—दे० गर्व के मारे फूल जाना।

गर्व गलना, -गिरना, -चूर होना—गर्व दूर हो जाना। प्र० स्रवन हीन मुनि भए अष्ट कुल नाग गरब भय चूरि (सू० सा०–सूर, 470); देख्यो सुन्यो प्रभाउ जु प्रभु को गिरि गयौ गर्व जु लोक तिहूँ को (नंद० ग्रंथा०–नंद, 269); पगपान चांदी को चरन पहिरन लागी सोभा देखि रंभा-रति गर्वहू गरत सो (भा० ग्रं० (2)–भारतेन्दु, 824)।

गर्व गारना, -चूर-चूर करना, -झाड़ देना, -तोड़ना, -नवाना, -प्रहारना—गर्व मिटाना। प्र० राखे सुखी सकल ब्रज वासी, सुरपति गरब नवायो (सू० सा०–सूर, 1486); हद्द हिन्दुवान की विहद्द तरवारि राखि कैयो बार दिल्ली के गुमान झारि डारे हैं (भूषण ग्रंथा०–भूषण, 208); कहता होगा, जब मैंने राजा महेन्द्र कुमार सिंह ×× का गर्व चूर-चूर कर दिया, तो ये लोग किस खेत की मूली हैं (रंग० (1) –प्रेमचंद, 381)।

गर्व गिरना—दे० गर्व गलना।

गर्व चूर होना—दे० गर्व गलना।

गर्व चूर-चूर करना—दे० गर्व गारना।

गर्व झाड़ देना—दे० गर्व गारना।

गर्व तोड़ना—दे० गर्व गारना।

गर्व नवाना—दे० गर्व गारना।

गर्व प्रहारना—दे० गर्व गारना।

गर्व से छाती फूल उठना—बहुत गर्व होना। प्र० पुत्र की सफलता के कारण पिता की छाती गर्व से फूल उठी।

गल गाजना—हर्षित होना प्र० ध्वजा बैठि हनुमत गल गाजै, प्रभु हांकै रथ-यान (सू० सा०–सूर, 275)।

गल देना, -लगना या लगाना—फांसी होना या देना।

गल लगना या लगाना—दे० गल देना।

गलकर बह जाना—एकदम दूर हो जाना। प्र० धीरे-धीरे करके बाबूजी का क्रोध भी गलकर बहने लगा।

गल-गर्दनी करना—बेमतलब चिल्लाना। प्र० क्यों इतनी गल-गर्दनी कर रही हो जी, चुप क्यों नहीं होती?

गलगल चौथ मनाना—आनन्द उड़ाना। प्र० अजी साहब, आप आनन्द से गलगल चौथ मनाइए।

गलचौर करना, -मारना—खूब गप्प करना; खूब हँस-हँसकर बातें करना। प्र० सब लोग यहाँ बैठे गलचौड़ कर रहे हो, कुछ लश्कर की भी खबर है? (प्रेमा०–प्रेमचंद, 57)।

गलचौर मारना—दे० गलचौर करना।

गलटुआ देना—गला घोंटना। प्र० तो क्या तुम मुझे गलटुआ दे दोगे?

गलत नक्शा सामने आना—स्थिति का गलत रूप में सामने आना। प्र० इसका मतलब यह है कि एकदम गलत नक्शा मेरे सामने आया था।

गलत मार्ग पर चलना—गलत काम करना। प्र० कलक्टर साहब ने यह आशा प्रकट की थी कि रामनाथ अपने बड़े पुत्र दयानाथ को गलत मार्ग पर चलने से रोकेंगे (टेढ़े०–भग० वर्मा, 3)।

गलत रास्ता—हानिकर व अनुचित कार्य; काम करने का गलत तरीका। प्र० यदि वह अपने लिए गलत रास्ता चुनेगा तो उसका दुष्परिणाम उसे भोगना ही होगा।

गलती खाना—भूल जाना। प्र० वह तो गलती खा गया पर यहाँ इतना बड़ा नुकसान हो गया, सो?

गलती में पड़ना—भ्रम में पड़ना। प्र० इस बार मैं ऐसी गलती में पड़ गया कि क्या कहूँ?

गलती रात—बीतती रात। प्र० घड़ी टिक्-टिक् करके एक-एक सैकिण्ड आगे बढ़ी जा रही थी, गलती रात की ओर (गोली–चतुर०, 51)।

गलदब करना—ग़बन करना। प्र० वह बहुत बड़ी रकम गलदब करके चल दिया।

गलना—(1) युक्ति चल पाना। प्र० उन्होंने 13 वर्ष की ही अवस्था में अपना कार्य आप संभाल लिया और फिर किसी की कुछ न गलने पाई (राधा० ग्रंथा०–राधा० दास, 328)।
(2) दुर्बल होना; दुःख पाना! प्र० हाय कौन वेदनि विरंचि मेरे वांट कीनी, निघटि परौं न घर्यौं हूँ, ऐसी विधि हौं गरौं (घन० कवित्त–घना०, 27)।
(3) खर्च होना। प्र० बाबू लोगों के आदर सत्कार में उसे बहुत कुछ गलना पड़ता था (ग़बन–प्रेमचंद, 46)।
(4) दूर होना; समाप्त होना। प्र० उसकी शक्ल देखते ही माँ का सारा क्रोध गल गया।

गलना-पचना—नष्ट होना। प्र० पांच सालों से घर बन्द पड़ा था। न जाने कितनी चीजें गल-पच गई।

गलफटाकी करना—अपनी बड़ाई करना। प्र० बहुत गलफटाकी कर चुकीं, अब बस करो।

गलफेर करना, गला फूलना—(1) दम फूलना।
(2) उकता जाना।

गलबांहीं डालना, -देना—प्रेम में गले में हाथ देना, अनुरक्त होना। प्र० बोरो खात, दिये गरबांहीं। डोलत फूलन कुंजन मांहीं (नंद० ग्रंथा०–नंद०, 277); धन्य हैं वे जो ऐसे समय में ×× पीतम के संग ×× बगीचों, पहाड़ों और मैदानों में गलबांहीं डाले फिरती हैं (भा० ग्रंथा० (1)–भारतेन्दु, 445); ×× रात में बीस बाइस बरस के नौजवान लड़के लड़कियों को गलबहियां डाले मजे से जाते हुए देखा ×× (अमृत०–नागर, 547)।

गलबांहीं देना—दे० गलबांहीं डालना।

गला—आवाज़। प्र० सबके सब सिर धुनते थे, क्या प्यारा गला पाया है (आज़ाद०–प्रेमचंद, 56)।

गला आना—गले के अन्दर छाला या सूजन होना।

गला उठाना, -करना—गले की घंटी ऊपर करना। प्र० कोई गला उठा देता तो इसे आराम मिल जाता।

गला उतरना—गरदन काटना; मार डाला जाना। प्र० एक की तो है उतरती आरती दूसरे का है उतर जाता गला (चोखे०–हरिऔध, 199)।

गला ऐंठना, -मरोड़ना—(1) हानि पहुँचाना। प्र० कर बुरी बेकार बेजा ऐंठ क्यों जाति का हम ऐंठ देते हैं गला (चुभते०–हरिऔध, 115); बिसेसर की एक बार मरम्मत हो जाती तो अच्छा होता। गांव भर का गला मरोड़ता है, यह उसकी सजा है (प्रेमा०–प्रेमचंद, 55)।
(2) गला दबाकर मार डालना। प्र० दोनों को जल्दी छुड़ाओ नहीं तो दोनों एक दूसरे का गला मरोड़ देंगे।

गला कटना या काटना—(1) हानि पहुँचना या पहुँचाना। प्र० आज एक ओर तरक्की की बातें सुनने में आई हैं, दूसरी ओर पहले से कहीं ज्यादा अमीरों के हाथों से गरीबों के गले कट रहे हैं (जहाज०–इ० जोशी, 145)।
(2) सूरन आदि का गले में खाज पैदा करना।

गला कटवाना—जान देना; मुसीबत में पड़ना। प्र० हेरा रोटी कारने गला कटावै कौन (कबीर ग्रंथा०–कबीर, 251)।

गला कतरना, -रेतना—अहित करना। प्र० कर कतरब्योंत बेतरह उसमें क्यों भला जाति का गला कतरे (चुभते०–हरिऔध, 109); अब भी आप मौके पर चलकर जाँच नहीं करते कि ठीक-ठीक तख़मीना हो जाय, गरीबों के गले रेत रहे हैं (रंग० (2)–प्रेमचंद, 319)।

गला करना–दे० गला उठाना।

गला खलास करना—बहुत हानि पहुँचाना। प्र० उसने तो मेरा गला ही खलास कर दिया।

गला खुलना—(1) मुँह से बात निकलना। प्र० जब कि वह खुल सका न पहले ही तब भला क्यों गला खुले खोले (चोखे०–हरिऔध, 101)।
(2) गले की आवाज़ का साफ होना। प्र० मिश्री और मिर्च का काढ़ा पी लो तो गला खुल जायगा।

गला गरमाना—गाना गाने या भाषण आदि देते समय थोड़ी देर तक गा लेने या भाषण देने के बाद गले की आवाज़ खुलना, जोश और प्रवाह आना। प्र० शास्त्रीय संगीत के लिए दो-तीन घंटा समय हुए बिना बात नहीं बनती। आधा-पौन घंटा तो गला गरमाने में लग जाता है।

गला घुटना—दम रुकना, अच्छी तरह साँस न लिया जाना। प्र० उसकी पकड़ कसती गयी, मेरा गला घुटने लगा और मैं निढाल होती गयी।

गला घोंटना, -मसोसना, मींचना—(1) रोकना, दबाना, नाश करना। प्र० मुझको थोड़ा-सा खटका लाला ब्रजकिशोर की तरफ़ का है, यह हर बात में मेरा गला घोटते हैं (परीक्षा०–श्री० दास, 108); वे सारे टीमटाम, नाच-तमाशे, जिनकी कल्पना का गला उन्होंने घोंट दिया था वृहद् रूप धारण करके सामने आ गये (गबन–प्रेमचन्द, 6–7)।
(2) गला दबाकर हत्या करना। प्र० वह आदमखोर अब तक सात आदमियों का गला घोंट चुका है।
(3) बहुत हानि पहुँचाना।

गला घोंटनेवाला—(1) दबाव डालनेवाला। प्र० उन आर्यों का धर्म अब के समान गला घोंटने वाला न था (सा० सु०–बा० भट्ट, 3)।
(2) हानिकारक। प्र० यह तो गला घोंटनेवाला काम है, मैं न करूँगी।

गला चटकना, -तड़कना—गला खुश्क होना (प्यास या भाँग पीने के कारण)। प्र० सूखी भाँग छानते हैं, गला तड़क रहा होगा (अमृत०–नागर, 84)।

गला चलना—गले से आवाज निकलना; गा सकना। प्र० आज जब वह बहुत रहा चलता तब भला क्यों गला न पड़ जाता (चोखे०–हरिऔध, 101); अब और गला नहीं चल रहा है, आज रहने दीजिए फिर

किसी दिन सुना दूंगा।

गला चांपना—(1) अहित करना। प्र० जो गला चांप-चांप देते हैं पांव हम चांप रहे हैं उनका (चुभते०—हरिऔध, 107)।

(2) किसी से उसकी इच्छा के विरुद्ध काम लेना। प्र० ब्रजकिशोर ने उसका गला चांप रखा है, वह किसी तरह छूट नहीं पा रहा है।

गला छुड़ाना या छोड़ना, -छूटना—छुटकारा पाना या देना। प्र० वह समझते हैं कि मैं अपना गला छुड़ाना चाहता हूं (मान० (2)—प्रेमचंद, 8)।

गला छूटना—दे० गला छुड़ाना या छोड़ना।

गला जकड़ना—गले की ऐसी हालत होना कि खाना-पीना या बोलना तक न हो सके। प्र० पिछले कई दिनों से गला जकड़े है। खाना-पीना हराम हो रहा है।

गला जलना—पित्त के विकार के कारण गले में जलन होना। प्र० ज्यादा खा जाता हूं, तो गला जलने लगता है, खट्टी डकारें आने लगती हैं (निर्मला—प्रेमचद, 66)।

गला जोड़ना—मैत्री करना; साथ देना। प्र० आजकल दोनों खूब गला जोड़कर बैठे हैं।

गला टीप देना—गला दबाकर मार डालना। प्र० मुंह से एक शब्द भी निकाला तो गला टीप दूंगा।

गला तड़कना—दे० गला चटकना।

गला तर करना—तरल पेय पीना; शराब पीना। प्र० ऐसे खुशी के मौके पर गला भी न तर किया जाय (पैंतरे—अश्क, 81)।

गला दबाकर बोलना—धीरे-धीरे बोलना। प्र० बाबू साहेब, जरा गला दाब कर बोलिए (परती०—रेणु, 395)।

गला दबाना, -दबोचना—(1) अन्याय करना; अनुचित दबाव डालना। प्र० किसी ने कोई देश हितैषी काम में आय गला दबाया तो लाचार हो नाक-भौं सिकोड़ते उसमें भी कुछ लिख देना पड़ा (भट्ट नि०—बा० भट्ट, 145); अपना धरम यह नहीं है कि मित्रों का गला दबायें (गोदान—प्रेमचंद, 9)।

(2) रोकना, दबाना। प्र० बनो वीर वीरता दिखाओ। कायरता का गला दबाओ (मर्म०—हरिऔध, 16)।

गला दबोचना—दे० गला दबाना।

गला दे देना—कंठ न्योछावर कर देना। प्र० जिनके कोमल कंठ पर गला दे देना साधारण बात थी, उन्होंने तीसरी सप्तक की कितनी मर्म-भेदी तानें लगाईं, किन्तु वे सर्वग्रासी आकाश के खोखले में विलीन होती गईं (कामना—प्रसाद, 46)।

गला पकड़कर—खूब कड़ाई से। प्र० तुम निश्चिन्त रहो, मैं उसका गला पकड़कर अपने रुपये वसूल कर लूंगा।

गला पकड़ना या पकड़ा जाना—(1) उलझन में डालना या फंसना। प्र० है कुदिन ने बुरी पकड़ पकड़ी है गया बेतरह गला पकड़ा (चुभते० —हरिऔध, 69)।

(2) कैफियत मांगना; जिम्मेवार ठहराना। प्र० उन्होंने यदि बाद में मेरा गला पकड़ा तो मैं क्या जवाब दूंगा, सो बतलाओ।

(3) किसी खाई हुई चीज का गले में चिपकना या लगना। प्र० लड्डू का घी अच्छा नहीं है, गला पकड़ता है।

(4) गले से साफ आवाज न निकलना। प्र० आज गला पकड़े हुए है नहीं तो जरूर सुना देती।

गला पकना—गला दर्द करना। प्र० इन डाइनों ने तो खोपड़ी चाट डाली, सभों का गला भी नहीं पकता (मान० (4)—प्रेमचंद, 26)।

गला पड़ना, -बैठना—गले से साफ आवाज न निकलना। प्र० और फिर मेरा जी भी आज अच्छा नहीं है, गला बैठा हुआ है (भा० ग्र० (1) —भारतेन्दु, 460); आठ-दस महीने की छोटी-सी बच्ची का रोते-रोते गला पड़ गया था (बूंद०—नागर, 320)।

गला पाक होना—जान छूटना। प्र० मैं तो खुदा का शुक्र मनाता हूं कि किसी तरह मेरा गला पाक हुआ।

गला फंसना—(1) मुसीबत में पड़ना। प्र० तब हमारा गला फंसेगा ही जब कि जाति का गला फंसता (चुभते०—हरिऔध, 28)।

(2) किसी ऐसी वस्तु या कार्य का जिम्मे पड़ जाना जिसमें हानि हो। प्र० ट्रान्सपोर्ट के काम में ऐसा गला फंस गया है कि न तो उसे छोड़ते बनता है और न ही करते बनता है।

(3) कफ से स्वांस लेने में कष्ट होना। प्र० उसका गला भी तो फंस रहा है, पूरा खयाल करो।

गला फंसाना या फांसना, -बंधाना या बांधना—(1) झंझट में पड़ना या डालना। प्र० जान बूझ कर बश चलते जंजाल में कोई नहीं फंसाता है अपना गला (वैदेही०—हरिऔध, 113)।

(2) बंधन में डालना; दायित्व देना या पड़ना। प्र० रानो के ब्याह में बाबूजी ने इस बुरी तरह मेरा गला बांध दिया है कि छुट्टी का कोई उपाय ही नहीं है।

गला फटना—आवाज़ का विकृत होना। प्र० तब भला किस तरह न फट जाता × × तब भला क्यों गला न पड़ जाता (चोखे०—हरिऔध, 101)।

गला फाड़कर, -फाड़-फाड़कर—ज़ोर से चिल्लाकर। प्र० माँ को बाहर जाते देखा तो गला फाड़कर रो पड़ी (झूठा० (2)—यशपाल, 517);

गला फाड़ना—बहुत ज़ोर से चिल्ला-चिल्लाकर बोलना। प्र० देशहित कह-कह के नाहक फाड़ते हो क्यों गला (गु० नि०—बा० मु० गु०, 693); जबरा अपना गला फाड़े डालता था, नील गायें खेत का सफाया किए डालती थीं (मान० (1)—प्रेमचंद, 151)।

गला फाड़-फाड़कर—दे० गला फाड़कर।

गला फिरना—गले का तान-लय पर चलना। प्र० मृदंग की तान-लय पर उनका गला फिरने लगा।

गला फूटना—बारह-तेरह वर्ष की उम्र में लड़कों की आवाज़ बदलना।

गला फूलना—दे० गलफेर करना।

गला बंद होना—(1) गले से पानी आदि न उतरना। प्र० नानाजी की हालत बहुत खराब है, कल से गला भी बन्द हो गया है।

(2) गले से आवाज़ न निकलना । प्र० यह क्या, तुम्हारा तो गला ही बन्द हो गया है । कुछ दवा करो भाई ।

गला बंधना—बन्धन में पड़ना । प्र० बेतरह है गला बंधा अब भी है न रस्सी कमर बंधी छूटी (चुभते०—हरिऔध, 71) ।

गला बंधाना या बांधना—दे० गला फंसाना या फांसना ।

गला बांधकर धन जोड़ना—खाने-पीने तक की कंजूसी करके पैसा जमा करना ।

गला बैठना—दे० गला पड़ना ।

गला भर आना, -भर्राना—भावातिरेक के कारण आवाज़ का भारी हो जाना । प्र० बिलखी डभकौं हैं चखनु तिय लखि, गवनु बराइ । पिय गहबरि आऐं गरैं राखी गरैं लगाइ (बिहारी रत्ना०—बिहारी, 166); सुमिरत गर भरि आवत मौपैं कह्यो न जाय (भा० ग्रं० (2)—भारतेन्दु, 296); मालती का गला भर्रा गया और उसने मुंह फेरकर रूमाल से आँसू पोंछे (गोदान—प्रेमचंद, 172) ।

गला भर्राना—दे० गला भर आना ।

गला भांजना—(1) गाने में गले की कारसाजी दिखलाने का प्रयत्न करना । प्र० नव सिखू छौड़ियों से कह दो । बेकार गला न भांजे (परती०—रेणु, 262) ।

(2) ज़ोर से बोलना । प्र० मानिकपुर का उदयानन्द हाट में गला भांज कर सुना रहा था (परती०—रेणु, 512) ।

गला भारी होना—(1) आवाज़ भारी होना । प्र० तब उभारी न जा सकी बोली जब कभी हो गया गला भारी (चोखे०—हरिऔध, 102) ।

(2) भावातिरेक के कारण स्वर भारी होना । प्र० × × सहसा उसका गला भारी हो आया (नदी०—अज्ञेय, 242) ।

गला भिंचना, -रुंधना, -रुकना—(1) भावातिरेक के कारण बोल न पाना । प्र० जान प्यारी हौं तौ अपराधनि सों पूरन हौं, कहा कहौं ऐसी गति, आवत गरौ रुक्यौ (घन० कवित्त—घना०, 32); देस का दुख बखानती बेला । किस तरह रुंध गला नहीं जाता (चुभते०—हरिऔध, 79) ।

(2) गले से आवाज़ न निकलना । प्र० अम्मां का गला भिंचा हुआ था कि कहीं स्वर बैठक तक न पहुँच जाए (सारा०—यादव. 85) ।

गला मधुर होना, -मीठा होना—मधुर स्वर होना । प्र० वहाँ सभी हिन्दी बोलती थीं, पर जो मधुरता उसके गले में थी, वह दूसरे में न थी (लिली—निराला, 139) ।

गला मरोड़ना—दे० गला ऐंठना ।

गला मसोसना—दे० गला घोंटना ।

गला मींचना—दे० गला घोंटना ।

गला मीठा होना—दे० गला मधुर होना ।

गला मूसना—ठगना ।

गला रुंधना—दे० गला भिंचना ।

गला रुकना—दे० गला भिंचना ।

गला रेतना—दे० गला कतरना ।

गला रोककर हंसना—ऐसे हंसना कि तेज़ आवाज़ न निकले । प्र० फिर भी न जाने क्यों हंसते वक्त मुझे यह याद नहीं रहता था कि आदमी की हंसी में भी एक सभ्यता होनी चाहिए और आदमी को गला रोककर हंसना चाहिए (अंधेर०—राकेश, 39) ।

गला साफ होना—गले से बिना रुकावट के आवाज़ निकलना । प्र० पिछले पंद्रह दिनों से गला खराब था, आज जाकर साफ हुआ है ।

गला सींचना—(1) थोड़ा-थोड़ा पानी देकर गले को तर रखना । प्र० ज़रा-ज़रा देर पर गला सींचती चलो, तेज़ बुखार के कारण गला चटकता होगा ।

(2) शराब से गले को तर करना । प्र० बस, ज़रा गला भर सींचूंगा, इसे पीना थोड़े ही कहते हैं ।

गला सूखना—(1) प्यास के कारण गले में एक प्रकार का तनाव होना । प्र० गला बड़ा सूख रहा है, ज़रा एक घूंट दे दो न ।

(2) शराब की तलब होना । प्र० देखिए प्रयोग (1) ।

गली कमाना—(1) गली साफ करना । प्र० हुजूर, मेरी क्या हस्ती है । मैं तो गली कमाकर बाल बच्चों की परवरिश करता हूँ ।

(2) पाखाना साफ करना । प्र० देखिए प्रयोग (1) ।

गली का भिखारी बनाकर छोड़ना—सब कुछ नष्ट कर देना; बर्बाद कर डालना । प्र० आपने तो मुझे गली का भिखारी बनाकर छोड़ दिया, अब मेरा हाल क्या पूछते हैं ।

गली झंकाना या झांकना—व्यर्थ परेशान करना । प्र० मैं तो उसे वह गली झंकाऊंगी कि वह जिन्दगी भर याद रखेगी ।

गली-कूचों की हवा खाना—इधर-उधर मारे-मारे फिरना । प्र० आपने इस शब्द का अर्थ समझा होता, तो इस वक्त आप अपने पति से अलग न होतीं और न वह गली-कूचों की हवा खाते होते (कर्म०—प्रेमचन्द, 246–247) ।

गली-गली—इधर-उधर हर जगह । प्र० हम कुल-बधुन कलंकिनि कुलटा डगरैं डगर कहायो (भा० ग्र० (2)—भारतेन्दु, 278); राजा साहब ने उसकी ज़मीन पापा को दे दी है । बेचारा आजकल गली-गली दुहाई देता फिरता है (रंग० (1)—प्रेमचंद, 336) ।

गली-गली की ठोकरें खाना, -मारे-मारे फिरना—(1) अपमानित होना, लांछित होना । प्र० कभी बारह बजे रात को सोना नसीब होता है, कभी रतजगा करना पड़ जाता है । सारे दिन गली-गली की ठोकरें खानी पड़ती हैं (मान० (1)—प्रेमचन्द, 282) ।

(2) जीविका के लिए इधर-उधर भटकना । प्र० पिछले छह महीनों से गली-गली की ठोकरें खा रहा हूं, कोई काम देता है ?

(3) इधर-उधर व्यर्थ घूमना । प्र० करता क्या हूँ, गली-गली मारा-मारा फिरता हूँ ।

गली-गली छानना, -फिरना—(1) सर्वत्र खोजना । प्र० वह तो गली-गली छान आया, कहीं नहीं दिखे ।

(2) दे० गली-गली की ठोकरें खाना ।

गली-गली फिरना—दे० गली-गली छानना ।

गली-गली मारे-मारे फिरना—दे० गली-गली की ठोकरें खाना ।

गली-गली में मिलना—आसानी से, हर जगह मिलना । प्र० ऐसी नारियाँ यहाँ आपको गली-गली में मिलेंगी और मैं तो उन सबसे गयी बीती हूँ (गोदान–प्रेमचंद, 200) ।

गलीज उछालना—छिपी-छिपाई गन्दी बातों की चर्चा करना । प्र० इस तरह गलीज उछालकर क्यों अपनी जबान खराब करते हो ?

गले (से) उतरना या उतारना, -के नीचे उतरना या उतारना—कोई बात मन में ठीक जंच जाना और/या स्वीकार होना । प्र० पर यह चालीस की नौकरी तो गले से नहीं उतरती (रेशमी०–राम० वर्मा, 137) ।

गले का गोलापन—भावातिरेक के कारण आवाज में आया भारीपन । प्र० स्वर में नाराजी थी और गले में गोलापन (सारा०–यादव, 124) ।

गले का जवाल होना—मुसीबत गले आ पड़ना । प्र० यह लड़का तो गले का जवाल हो गया है, किसी तरह राह पर लग जाये तो मैं गंगा नहाऊँ ।

गले का ढोल, -ढोलना—व्यर्थ की झंझट । प्र० इसको रखने से नाहक झंझट में पड़ोगे । गले का ढोल बन जायगा (वल०–नागा०, 52) ।

गले का ढोलना—दे० गले का ढोल ।

गले का बोझ—व्यर्थ भार । प्र० जमाने भर का लोकाचार अब गले का बोझ लगता है ।

गले का हार—(1) अत्यन्त प्रिय । प्र० अब आपकी आज्ञा से और भी अपना जाल फैलाऊँगी और छोटे-बड़े सबके गले का हार बन जाऊँगी (भा० ग्रं० (1)–भारतेन्दु, 483) ।
(2) सदा साथ रहनेवाला । प्र० किसी तरह न जाने दूँगी, जहाँ जाओगे, मैं भी चलूँगी तुम्हारे गले का हार बनी रहूँगी (रंग० (2)–प्रेमचंद, 259) ।

गले की जंजीर बनाना—बड़ा बंधन बनाना । प्र० तुमने जबरदस्ती इसे गले की जंजीर बना रखा है ।

गले की फाँसी—अनिष्टकर, संकट का कारण । प्र० मैं मैं मेरी जिनि करै, मेरी मूल विनास मेरी पग का पैंषड़ा, मेरी गल की पास (कबीर ग्रंथा०–कबीर, 27); जो स्वाभिमान अपने देश के गले की फाँसी बनता हो, उसे भुला ही देना चाहिए (विष०–प्रेमी, 10) ।

गले की फाँसी छुड़ाना—किसी झंझट से मुक्ति पाना या दिलाना । प्र० हमने तो आज तुम लोगों के गले की फाँसी छुड़ा दी (मान० (8)–प्रेमचंद, 84) ।

गले की रगें फुलाना या फूलना—गुस्सा होना । प्र० बात-बात में वह गले की रगें क्यों फुला लेता है ?

गले के नीचे उतरना या उतारना—दे० गले (से) उतरना या उतारना ।

गले चपेकना, -डालना, -बाँधना, -मढ़ना, -में बाँध देना—जबरदस्ती जिम्मे लगाना । प्र० ऐसे ही वृथा पुष्ट पोथे हिन्दी का इतिहास कहकर पब्लिक के गले मढ़े जाते हैं (पद्म० के पत्र–पद्म० शर्मा, 62); हाय भगवान् यह जाने किसको मेरे गले बाँधा जा रहा है ? (सारा०–यादव, 10) ।

गले डालना—दे० गले चपेकना ।

गले तक आना—सहन करने की सीमा आ जाना । प्र० अंग्रेजों का अन्याय गले तक आ गया है, अब और नहीं बर्दाश्त होगा ।

गले तक भरना—(1) कस-कसकर खाना । प्र० माले मुफ्त, दिले बेरहम, खूब गले तक भरा । बाद में तबीयत खराब हुई तो अपनी आदत को रोये ।
(2) थोड़ी जगह छोड़कर बाकी भर देना । प्र० अचार का कण्टर गले तक भरना ।

गले पड़कर सौदा करना—जबरदस्ती बेचना । प्र० इस तरह गले पड़कर सौदा करने में क्या सुख है ?

गले पड़ना, -लगना—(1) इच्छा के विरुद्ध जिम्मे आना । प्र० जो-जो कर्म कियो लालच स्यों ते फिरि गरहि पर्‌यो (कबीर ग्रथा०–कबीर, 294); सूरदास गाहक नहिं कोऊ, देखियत गरे परी (सू० सा०–सूर, 4281); यामैं न और को दोष कछू सखि चूक हमारी हमारे गरें परी (भा० ग्रं० (2)–भारतेन्दु, 151) ।
(2) तंग करना, पीछे लग जाना । प्र० हो तो जो अजान, तौ न जानतो इतेक विद्या, मेरे जिय जानि तेरो जानिबो गरे पर्‌यो (शब्द०–देव, 66); अतुल चाहता तो बुरी तरह भगतजी के गले पड़ जाता पर वह चुपचाप चलता गया (ब्रह्म०–दे० स०, 139) ।
(3) जबरदस्ती किसी पर आश्रित होना । प्र० मेहनत-मजूरी करते हुए अपने दिन बिता लेना, किसी के गले पड़ने से अच्छा है (तितली–प्रसाद, 36) ।

गले पर का जुआ कोई दायित्व या बोझ । प्र० न जुआ जो छूटा तो क्यों, गले पर का जुआ उतरे ? (मर्म०–हरिऔध, 99) ।

गले पर कुठार देना—तलवार आदि से मार डालना । प्र० एहि के कंठ कुठार न दीन्हा । तौ मैं काह कोपु कर कीन्हा (राम० (बाल)–तुलसी, 285) ।

गले पर खांडा चलाना, -छुरी चलना या चलाना, -छुरी देना, -छुरी फिरना या फेरना, -छुरी रेतना—घोर हानि करना या होना; अत्याचार करना या होना; बहुत दुःख देना या पाना । प्र० प्रीति करि दीन्हीं गरैं छुरी (सू० सा०–सूर, 3803); ब्रजभाषा भी नागरी-देवी की सगी बहिन है, उसका निज स्वत्व दूसरी बहिन को सौंपना सहृदयता के गले पर छुरी फेरना है (प्र० पी०–प्र० ना० मि०, 97); संसार के गले पर खांड़ा चलाते जाओ और भगवान् का नाम लेते जाओ, तो क्या इस मार्ग से भी मोक्ष मिल जायेगा ? (मृग०–वृं० वर्मा, 45) ।

गले पर छुरी चलना या चलाना—दे० गले पर खांडा चलाना ।

गले पर छुरी देना—दे० गले पर खांडा चलाना ।

गले पर छुरी फिरना या फेरना—दे० गले पर खांडा चलाना ।

गले पर छुरी रेतना—दे० गले पर खांडा चलाना ।

गले फाँसी लगना—जबरदस्ती किसी झंझट का आ लगना । प्र० यह

लड़की बेवा होकर यहां क्या आयी मेरे गले तो फांसी लग गयी।

गले बंधना—संग लगना। प्र० कमला के यहां मिलने गयी और यह लड़की गले बंध गयी।

गले बांधकर रखना—अपने पास रखना। प्र० आपको बेटी बहुत प्यारी है, तो उसे गले बांधकर रखिए (मान० (1)–प्रेमचंद, 251)।

गले बांधना—दे० गले चपेकना।

गले मढ़ना—दे० गले चपेकना।

गले मिलना—(1) अंगीकार करना। प्र० कबीर गुरु गर्‌या मिल्या, रलि गया आंटै लूण (कबीर ग्रंथा०–कबीर, 2)।
(2) आलिंगन करना। प्र० दोनों बहनें गले मिलीं और देर तक वैसे ही आलिंगनबद्ध खड़ी रहीं।

गले में अटकना, -खटकना—आसानी से स्वीकार न कर पाना। प्र० भाई साहब, आपकी बातें मेरे गले में अटक रही हैं, किसी तरह नीचे नहीं उतर रही हैं।

गले में उंगली डालकर निकाल लेना—(1) जबरदस्ती निकाल लेना। प्र० हमारे मुंह की रोटी कोई छीन ले तो उसके गले में उंगली डालकर निकालना हमारा धर्म हो जाता है (गोदान–प्रेमचंद, 14)।
(2) बड़ी होशियारी से किसी से कोई बात कबूल करवा लेना। प्र० तुम देखते चलो, मैं उसके गले में उंगली डालकर निकलवा लूंगा—बड़ा होशियार बनता है।

गले में कपड़ा डालकर, -चादर डालकर—अधीनता स्वीकार करके, अत्यन्त विनम्र होकर। प्र० जब श्रीकृष्णचंद उसे दूर से दिखाई दिये तब गज से उतर, नंगे पाओं, गले में कपड़ा डाले, थर-थर कांपता आ श्रीकृष्ण के चरनों पर गिरा (प्रेम०–ल० ला०, 70)।

गले में कफ अटकना—मरने को होना, अंत समय निकट होना। प्र० सूरदास सठ तब हरि सुमिर्‌यौ, जब कफ कंठ गह्यौ (सू० सा०–सूर, 327)।

गले में कांटा पड़ना—बीमारी में गले में रूक्षता होना जिससे पानी आदि निगलने में बड़ा कष्ट होता है।

गले में खटकना—दे० गले में अटकना।

गले में घड़ा बांधकर डूब मरना—लज्जा से अत्यन्त दीन होना। प्र० सरे आम उन्होंने मेरा अपमान किया, गले में घड़ा बांधकर डूब मरने के सिवा अब और क्या चारा है?

गले में चक्की का पाट होना—बहुत भारी या दुःखदायी लगना। प्र० वही हसरत खाली चक्की का पाट बनकर गले में पड़ गयी है (पैंतरे–अश्क, 110)।

गले में चादर डालकर—दे० गले में कपड़ा डालकर।

गले में जंजीर पड़ना—वैवाहिक बन्धन में बंधना। प्र० कुछ दिनों और मौज मार लो, फिर तो गले में जंजीर पड़नी ही है।

गले में जुआ डालना, -पड़ना—(1) विवाह के कारण दायित्व और बोझा आ पड़ना। प्र० जब तक गले में जूआ नहीं पड़ा है, तभी तक यह कुलेलें हैं (ग़बन–प्रेमचंद, 6)।
(2) किसी काम में लगना। प्र० गले में जुआ पड़ने की देर है तब सब मस्ती निकल जायगी।

गले में जुआ पड़ना—दे० गले में जुआ डालना।

गले में ढोल डालकर डंका बजाना—स्वयं ज़ोर-ज़ोर से अपना प्रचार करना। प्र० जान लेंगे कि विद्वान् को अपने गले में ढोल डालकर अपनी विद्या का डंका बजाने की कोई जरूरत नहीं है (गु० नि०–बा० मु० गु०, 499)।

गले में तागा डालना—कंठी या जनेऊ लेकर दीक्षित होना। प्र० हम क्यों नीच हैं और ये लोग क्यों ऊँच हैं? इसलिए कि ये लोग गले में तागा डाल लेते हैं? (मान० (1)–प्रेमचंद, 131)।

गले में तौक पड़ना—बन्धन में पड़ना। प्र० तेरे गलहि तौक पगबेरी, तू घर-घर रमिए फेरी (कबीर ग्रंथा०–कबीर, 288)।

गले में थूक अटकना—कुछ कह न पाना। प्र० मेरे गले में तो जैसे थूक अटक गया, मैं ताई का मुंह देखती रह गयी।

गले में दर्द होना—गले में मिठास होना; गीतों को भाव के अनुरूप प्रभावपूर्ण ढंग से गाने की क्षमता होना। प्र० सहगल के गले में ऐसा दर्द था कि उनके गीत सुनकर तबीयत प्रसन्न हो जाती थी।

गले में धन का जोर होना—धन के ज़ोर से टेढ़ी-सीधी बातें करना।

गले में नमक का डला होना—बोल न पाना। प्र० शांति कुमार ने कुछ बोलना चाहा पर शब्दों की जगह कंठ में जैसे नमक का डला पड़ा हुआ था (कर्म०–प्रेमचंद, 260); चुप क्यों हो? गले में नमक का डला है क्या?

गले में पगड़ी डालना—किसी के गले में पगड़ी डालकर अतिथि का सम्मान करना। प्र० बिनती कीन्ह घालि गियं पागा। ऐ जग सूर सोउ मोहि लागा (पद०–जायसी, 46/14)।

गले में पड़ा ढोल—जबरदस्ती साथ लग गई कोई चीज़ या व्यक्ति। प्र० जीवन क्या है, गले में पड़ा हुआ एक ढोल है (मान० (2)–प्रेमचंद, 319)।

गले में पत्थर लटका देना—बहुत बड़ी झंझट या मुसीबत साथ लगा देना। प्र० पहली बात तो यह कि मुझे शादी अभी करनी ही नहीं थी। जबरदस्ती मेरे गले में यह पत्थर लटका दिया गया (सारा०–यादव, 60)।

गले में पाप की हड्डी बन अटकना—पाप का दुष्परिणाम भोगना। प्र० यह रुपया तो मेरे गले में पाप की हड्डी बनकर अटक गया है।

गले में पाश पड़ना, -फंदा पड़ना, -फांसी का फंदा पड़ना, -फांसी पड़ना, -फांसी लगना, -बंधन पड़ना—(1) जबरदस्ती जिम्मे आ पड़ना। प्र० हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन के सभापति का पाश मेरे गले में पड़ ही गया (पद्म० के पत्र–पद्म० शर्मा, 242)।
(2) घोर अहित होना। प्र० जब गले फंस गये कुफंदे में क्या गले में न तब लगी फांसी (चुभते०–हरिऔध, 28); सो तत नांवन जाणियां, गल मैं पड़िया फंध (कबीर); पर तब तो तुम्हें भी जिद चढ़ी थी कि उसके गले में भी फांसी का फंदा क्यों न पड़े (सारा०–यादव, 23–

24)।

गले में फंदा पड़ना—दे० गले में पाश पड़ना।

गले में फांसी का फंदा पड़ना—दे० गले में पाश पड़ना।

गले में फांसी देना—बहुत दुःख देना। प्र० आए उधो फिरि गए आंगन, डारि गए गर फांसी (सू० सा०–सूर, 4176)।

गले में फांसी पड़ना—दे० गले में पाश पड़ना।

गले में फांसी लगना—दे० गले में पाश पड़ना।

गले में बंधन पड़ना—दे० गले में पाश पड़ना।

गले में बांध देना—दे० गले चपेकना।

गले में बांध लेना—(1) आदर करना; प्यार करना। प्र० आपको बेटी बहुत प्यारी है तो उसे गले बांध रखिए (मान० (1)–प्रेमचंद, 251)।

(2) किसी वस्तु या काम की जिम्मेदारी ले लेना। प्र० इस आयोजन को गले में बांध लिया है तो निभाना तो पड़ेगा ही।

गले में बांस जाना—आवाज बहुत तेज होना। प्र० तुम्हारे गले में तो बांस गया हुआ है, धीरे नहीं बोला जाता?

गले में बांह डालना—विवाह कर देना। प्र० जब राजा ने इस बात से क्रुद्ध होकर बिल्हण को फांसी की आज्ञा दिया, रास्ते में इसने चौर पचाशिका बनाई, जिससे प्रसन्न होकर राजा ने फांसी के बदले अपनी कन्या की बांह उसके गले में डाली (भा० ग्रं० (3)–भारतेन्दु, 15)।

गले में बात उतरना—बात स्वीकार कर पाना। प्र० तुम्हारे गले में मेरी बात नहीं उतर रही है न? ठीक है, न उतरे बाद में तुम्हीं भोगोगे।

गले में रस होना—सरस गाना गाना। प्र० ये मेरे मित्र सतीश हैं, बड़े अच्छे कवि हैं। गले में रस है और कलम में जादू (पैंतरे–अश्क, 149)।

गले में लकीर पड़ना—गले में खराश होना। प्र० न जाने क्यों गले में लकीर पड़ गयी है।

गले में हाथ डालना, -पड़ना—मैत्री करना या होना। प्र० जब भले बन थे भला करते नहीं तब गले में हाथ क्या पड़ते रहे (चोखे०–हरिऔध, 111)।

गले में हाथ पड़ना—दे० गले में हाथ डालना।

गले में होना—किसी बात का ध्यान मन में होना पर कहने के लिए याद न पड़ना। प्र० क्या करूं, बात गले में है मुंह तक नहीं आ रही है।

गले रोग मढ़ना—किसी बुरे और झंझट के काम में फंसा देना। प्र० मैं क्या जानती थी, तुम मेरे गले यह रोग मढ़ दोगे (गोदान–प्रेमचंद, 130–132)।

गले लगना—(1) भेंटना। प्र० सुनि निस्वै नैहर कै कोई। गरें लागि पदुमावति रोई (पद०–जायसी, 49/5)।

(2) दे० गले पड़ना।

गले लगाना, -लाना—(1) आलिंगन करना। प्र० बिलखी डभकौं हैं चखनु तिय लखि, गवनु बराइ। पिय गहबरि आएँ गरैं राखी गरैं लगाइ (बिहारी रत्ना०–बिहारी, 166); लाइये मोहि गरे हंसि कै उर ग्रीषमैं प्यारे हिमन्त बनाइये (भा० ग्रं० (2)–भारतेन्दु, 820)।

(2) दूसरे की इच्छा के विरुद्ध उसे देना। प्र० रमा ने देखा कि बिना मांगे एक चीज मिल रही है, जबरदस्ती गले लगायी जा रही है, तो वह दो बार और नहीं-नहीं करके मुनीम जी के साथ अन्दर चला गया (ग़बन–प्रेमचंद, 159)।

(3) स्वीकार करना। प्र० पर सुख निमित्त कब किसने दुःख को यों गले लगाया (वैदेही०–हरिऔध, 138)।

गले लाना—दे० गले लगाना।

गले से उतरना या उतारना—(1) खायी जाना या खाना। प्र० तुम्हारे गले से रोटी थोड़े ही उतरेगी, तुम्हें तो मोहनभोग चाहिए।

(2) स्वीकार होना या करना। प्र० तुम्हारा प्रस्ताव मेरे गले से नहीं उतरता।

गले से गला बांधकर डूब मरना—(1) एक साथ दोनों का लज्जित होना। प्र० तुम दोनों गले से गला बांधकर डूब मरो, इसी लायक हो।

(2) एक साथ डूब मरना। प्र० देखिए प्रयोग (1)।

गले से गला मिलाना—(1) दो आदमियों का एक साथ गाना। प्र० जाति रंग में ढले पदों को भी कब गले से गला मिला गाया (चुभते० हरिऔध, 110)।

(2) समर्थन करना। प्र० देखिए प्रयोग (1)।

गले से लगाना—छाती से लगाना। प्र० राय साहब ने दौड़कर भाई को गले से लगाया और रो पड़े।

गले से लगाये रहना—अत्यन्त प्रेम के कारण अपने से दूर न करना, पास रखना। प्र० बेटे को वह गले से ही लगाये रहती थीं।

गले-गले से फिरना—मित्र होना। प्र० ऐसे गुणों से बाबू प्रेमकुमार छात्रों की आंख-आंख पर रहते, गले-गले से फिरते हैं (लिली–निराला, 109)।

गले पड़ा ढोल बजाना, गले-पड़ी बजाना—विवश होकर करना। प्र० ये गले पड़ा ढोल बजाना ही पड़ेगा (पद्म० के पत्र–पद्म० शर्मा, 7)।

गले-पड़ी बजाना—दे० गले पड़ा ढोल बजाना।

गलेबाज—(1) ऐसे तान-पलटे लेनेवाला जिसमें मात्र कला हो, रस नहीं, गायक। प्र० बड़ी गलेबाज़ हैं आप ×× ! (आज़ाद०–प्रेमचंद, 508)।

(2) ज़ोर-ज़ोर से झगड़ा करनेवाला। प्र० पुन्नो की चाची बड़ी गलेबाज हैं, उनसे कौन पार पा सकता है।

गले-बाज़ी—गाने की कुशलता। प्र० गाने के बाद अपनी लड़की की गलेबाज़ी पर मुझसे राय लेने वाली थीं, एकाएक हौसला जाता रहा (कुल्ली०–निराला, 73)।

गलेला देना—जबरदस्ती गले के नीचे किसी पेय को उतरवाना। प्र० बच्चे को इस तरह गलेला देकर दूध क्यों पिला रही हो?

गल्ले-दराज़—दे० कल्ले-दराज़।

गश खाना—बेहोश होना। प्र० दुर्घटना का समाचार सुनते ही सुशीला गश खाकर गिर पड़ी।

गश्त जाना, -मारना, -लगाना—घूम-घूमकर पहरा देना। प्र० चार सिपाही सारी रात गश्त लगाते रहे।

गश्त मारना—दे० गश्त जाना ।

गश्त लगाना—दे० गश्त जाना ।

गश्ती चिट्ठी—कई आदमियों के पास भेजा गया एक ही मजमून का ख़त । प्र० मुंशीजी की गश्ती चिट्ठी मेरे पास भी आयी थी ।

गस्सा मारना—कौर खाना । प्र० इतने बड़े-बड़े गस्से मारने की क्या जरूरत है, ठीक़ से आराम से खाओ !

गह बैठना—मूठ पर हाथ भरपूर बैठना । प्र० जब गह बैठे तब न भरपूर हाथ पड़े ।

गहक-कर बोलना—खुश होकर बोलना । प्र० वाह, आज तो तुम खूब गहककर बोल रही हो !

गहकी काटना—ग्राहक को बहकाकर सौदा न होने देना । प्र० तुम मेरी गहकी काटकर चैन से नहीं बैठ सकोगे, इतना मैं कहे देता हूं ।

गहकी पटना या पटाना—सौदा तय होना या करना । प्र० यह गहकी पट जाय तो फिर पौ-बारह ।

गहगह नौबत झरना—आनन्दोत्सव होना । प्र० राजा साहब के यहाँ तो आज गहगह नौबत झर रही है, दान-पुण्य इनाम-बख्शीश लुटाई जा रही है ।

गहना चढ़ाना—दुलहन को विवाह में गहना देना । प्र० भीखमपुर वाले तीन हज़ार के गहने चढ़ाने को कहते हैं ।

गहने धरना—रेहन रखना । प्र० तू हमें एक वर्ष के लिये गहने धर और इनका मनोरथ पूरा करूं (प्रेम०–ल० ला०, 292) ।

गहने-कपड़े को रोना—गहने-कपड़े की इच्छा करना या उसके अभाव में दु:खी होना । प्र० यहाँ तो रोटियां चलनी मुश्किल है, गहने-कपड़े को कौन रोये (मान० (7)–प्रेमचंद, 61) ।

गहनों से मढ़ देना—बहुत अधिक गहने देना । प्र० मैं तुम्हें गहनों से मढ़ दूंगा, दुनिया की हर खुशी तुम्हारे कदमों में चढ़ा दूंगा ।

गहरा असामी—मालदार व्यक्ति । प्र० इस बार एक गहरा असामी फांसा है ।

गहरा घाव करना या होना—बहुत पीड़ा पहुंचाना या पहुंचना । प्र० कांति की कटु बातें मन पर गहरा घाव कर गयी हैं ।

गहरा दोस्त—घनिष्ठ मित्र । प्र० दीन मुहम्मद भी अपना जोड़ीदार पाकर ऐसे रीझे कि उस दिन से दोनों आपस में गहरे दोस्त हो गये (अमृत०–नागर, 25) ।

गहरा पेट होना—सुनकर किसी बात को पी जाना; प्रकट न करना । प्र० ओफ्फोह ! बड़ा गहरा पेट है तुम्हारा (निर्मला–प्रेमचंद, 136) ।

गहरा रंग चढ़ना, -जमना या जमाना—बड़ा प्रभाव होना या डालना । प्र० आजकल उन पर मोहनानंद जी का गहरा रंग चढ़ा हुआ है ।; यार काकी पर बड़ा रंग जमा रखा है तूने ।

गहरा रंग जमना या जमाना—दे० गहरा रंग चढ़ना ।

गहरा रंग पकड़ना—बात का और बढ़ती ही जाना । प्र० दोनों का लगाव धीरे-धीरे गहरा रंग पकड़ रहा है ।

गहरा से गहरा—घनिष्ठ । प्र० × × दूसरी ओर बड़ों का बहुत कुछ बड़प्पन निकल जाय, गहरे-गहरे साथी बहरे हो जायं या सूखा जवाब देने लगें (चिन्ता० (1)–शुक्ल, 66) ।

गहरा हाथ जमाना, -लगाना—हथियार का भरपूर वार करना जिससे खूब चोट लगे । प्र० उसने लाठी का ऐसा गहरा हाथ जमाया कि भोला वहीं निढाल हो गया ।

गहरा हाथ पड़ना, -मारना, -लगना—(1) भारी रकम हाथ लगना । प्र० कहीं गहरा हाथ मारा है (मान० (4) प्रेमचंद, 137) ।
(2) हथियार का भरपूर वार जिससे खूब चोट पहुँचे । प्र० तलवार का ऐसा गहरा हाथ लगा कि जिया राव के टुकड़े हो गये ।

गहरा हाथ मारना—दे० गहरा हाथ पड़ना ।

गहरा हाथ लगना—दे० गहरा हाथ पड़ना ।

गहरा हाथ लगाना—दे० गहरा हाथ जमाना ।

गहरा होना—(1) धन बढ़ना; लाभ होना । प्र० आजकल तो बड़े गहरों में हो हम पर भी थोड़ी कृपा दृष्टि रक्खा करो (परीक्षा०–श्री० दास, 114) ।
(2) छिछला न होना, गंभीर होना । प्र० मैं चाहता हूं डाक्टर कि तुम परीक्षा करके देख लो, चाहे जिस तरह । मुझे इतमीनान हो जायगा कि वे जो कुछ हैं, कहाँ तक हैं, कितनी गहरी हैं (रेशमी०–राम० वर्मा, 45) ।
(3) बात को अपने तईं रखना । प्र० मैंने प्रोफेसर को लिखा था, लज्जावती से मेरी बीमारी का जिक्र न करें, लेकिन प्रोफ़ेसर साहब इतने गहरे न थे (मान० (8)–प्रेमचंद, 167) ।

गहरा हाथ होना—बहुत योग होना । प्र० पति-पत्नी के वर्तमान मनमुटाव में सन्तोषी का गहरा हाथ है ।

गहराई और ऊँचाई तक पहुँच पाना—विषय की गहरी जानकारी कर पाना । प्र० किसी भी क्षेत्र में गहराई और ऊँचाई तक पहुँचना आसान नहीं होता ।

गहराई तक (में) जाना, -पहुँचना—गंभीरतापूर्वक सोचना या जांचना; किसी विषय का सूक्ष्मता से ज्ञान प्राप्त करना । प्र० गहरे जाकर देखें तो ये क्या हैं, तीन बड़े निषेध (शेखर० (2)–अज्ञेय, 206) ।

गहराई तक पहुँचना—दे० गहराई तक जाना ।

गहराई नापना—कितने गहरे में कोई है, इसका पता लगाना । प्र० मदन के दिमाग की गहराई नापना बड़ा मुश्किल था ।

गहराई से—अच्छी तरह; सूक्ष्मतापूर्वक । प्र० किसी भी बात पर गहराई से विचार किये बिना उसके विभिन्न पहलू कैसे स्पष्ट हो सकते हैं ।

गहरी छनना, -घुटना—(1) खूब मेल होना । प्र० मंगल और टामी में गहरी छनती थी (मान० (2)–प्रेमचंद, 204) ।
(2) खूब भांग पीना । प्र० रोज शाम को चकाचक घुटती और ऐसी गहरी छनती कि पीने के पहले ही पिता झूमते, पीकर मस्त हो जाते (भारती०–रां० रा०, 35) ।

गहरी घोंटना, -छानना—अत्यधिक भंग आदि का सेवन करना । प्र० नायर जी महाराज को गहरी छानकर परम सुख की प्राप्ति होती है ।

गहरी चाल चलना—बड़ा छल करना। प्र० तो चलें चाल किस लिये गहरी बात देवे संभाल जो लटके (चुभते०–हरिऔध, 43)।

गहरी चिन्ता—बड़ी चिन्ता। प्र० मनोहर को नौकरी की गहरी चिन्ता लगी हुई है।

गहरी चोट करना—ऐसा प्रहार करना या बात कहना जिसका गहरा प्रभाव पड़े। प्र० पिताजी के दिल पर इतनी गहरी चोट करने की क्या जरूरत थी।

गहरी चोट लगना—मर्मान्तक पीड़ा होना। प्र० तुम्हारी बातों से मां को गहरी चोट लगी है।

गहरी छनना—दे० गहरी घुटना।

गहरी छानना—दे० गहरी घोंटना।

गहरी जड़ पकड़ना—(1) गहरा प्रभाव होना। प्र० उसकी बीमारी ने गहरी जड़ पकड़ रखी है, किसी तरह छूटने का नाम ही नहीं लेती।
(2) दृढ़ स्थिति होना। प्र० अब तो ए० बी० कंपनी में मैंने गहरी जड़ें पकड़ ली हैं, कोई डर नहीं है।

गहरी निगाह—सूक्ष्म दृष्टि, पैनी दृष्टि। प्र० जान गहराई गुनाहों की सके काम जब गहरी निगाहों से लिया (चोखे०–हरिऔध, 132)।

गहरी नींद आना, -सोना—निश्चिन्त सोना। प्र० भाई, आप मजे में हैं, गहरी नींद सोते हैं। मुझे यह निश्चिन्ती कहां नसीब।

गहरी नींद सोना—दे० गहरी नींद आना।

गहरी पैठ—सूक्ष्म समझ एवं ज्ञान। प्र० मैंने साहित्य-सेवा अवश्य की, किन्तु मुझमें गहरी पैठ का अभाव रहा (मेरे०–गुलाब०, 10)।

गहरी बात—महत्त्वपूर्ण बात। प्र० पर वह बातें गहरी थीं, ज्वाला प्रसाद को अब यह अनुभव हुआ (भूले०–भग० वर्मा, 46)।

गहरी रकम हाथ लगना—काफी लाभ होना। प्र० मुमकिन, गहरी रकम हाथ आये (चोटी०–निराला, 110)।

गहरी सांस भरना, -लेना, ठंडी सांस लेना—दु:ख या निराशा के कारण लम्बी सांस लेना। प्र० बेटे की मौत ने उसे स्तब्ध कर दिया था। घर के एकांत कोने में बैठी वह गहरी सांसें लेती रहती थी।

गहरी सांस लेना—दे० गहरी सांस भरना।

गहरे—(1) चतुर; भारी उस्ताद; घोर धूर्त। प्र० तुम जानते नहीं, शिवकुमार वगैरह बड़े गहरे लोग हैं।
(2) गंभीर विद्वत्तावाला। प्र० पंडित हजारीप्रसाद जी बड़े गहरे विद्वान् हैं।

गहरे उतरना, -पैठना—किसी विषय या बात के सम्बन्ध में गंभीरता से सोचना। प्र० हर विषय अपने आप में रोचक होता है बशर्ते कि उसमें गहरे उतरा जाय।

गहरे करना—खूब लाभ उठाना। प्र० वाह साहब, आप तो खूब गहरे कर रहे हैं।

गहरे घाव को सुखाना—मर्मान्तक पीड़ा को दूर करना। प्र० इस गहरे घाव को सुखाना उतना आसान नहीं है मनोज!

गहरे चलना—(1) घात में होना, चालाकी करना। प्र० मुझसे ही गहरे चलने की कोशिश मत करो यार!
(2) घोड़े की सवारी में तेजी से चलाना। प्र० तुम्हारा घोड़ा गहरे चले तब तो मैं तुम्हारे इक्के पर बैठूं।
(3) रास्ते में पथिक को मार डालना।

गहरे डूबना—किसी विचार या काम में लीन हो जाना। प्र० कमलाकांत जी न जाने किन विचारों में गहरे डूबे हुए थे।

गहरे पानी पैठना—यथेष्ट प्रयत्न करना; किसी विषय पर बहुत सूक्ष्मता से विचार करना। प्र० अच्छे विज्ञापनों के लिये लोग गहरे पानी पैठकर दूर की कौड़ी लाते हैं (मेरे०–गुलाब०, 65)।

गहरे पानी में होना—गंभीर या गहराई की स्थिति में होना। प्र० लेकिन वास्तव में तुम उससे बहुत गहरे पानी में हो, जितना तुम समझते हो (रंग० (1)–प्रेमचंद, 138)।

गहरे पेट का—बात को अपने तईं छिपाकर रखनेवाला। प्र० मृणालिनी गहरे पेट की है, वह किसी से कुछ न कहेगी।

गहरे पेट में समा जाना—किसी बात या वस्तु का ऐसे व्यक्ति के पास पहुंच जाना जहां से उसका प्रकट हो पाना मुश्किल हो। प्र० वह माल गहरे पेट में समा गया है, तुम उसकी उम्मीद छोड़ दो।

गहरे पैठना—दे० गहरे उतरना।

गहरे में—बहुत अधिक। प्र० कुछ पूछो मत, दोनों गहरे में धुलते हैं।

गहरे में होना—(1) पास में बहुत धन होना। प्र० आजकल तो बड़े गहरों में हो हम पर भी कृपा दृष्टि रक्खा करो (परीक्षा०–श्री० दास, 114)।
(2) किसी भाव या स्थिति में लीन होना। प्र० निशिकांत की बात न चलाओ, वह आजकल बड़े गहरों में है।

गहरे समुद्र में गोते लगाना—बहुत गहराई तक जाना; डूबे रहना, लीन रहना। प्र० सुवीरा इस समय प्रेम के गहरे समुद्र में गोते लगा रही है।

गहरेबाज—बहुत तेज़ दौड़नेवाला (तांगा या इक्का)। प्र० विजयादशमी के दिन काशी में गहरेबाज इक्कों में होड़ लगती है।

गांगू—प्रत्येक काम में देरी करनेवाला। प्र० वह तो गांगू है, उसके भरोसे रहे तो आज रसोई बन चुकी।

गांगू का हेंगा—बहुत देर में होनेवाला काम। प्र० तुम्हारी रसोई तो आज गांगू का हेंगा हो गयी, कब तक बनेगी?

गांजे का दम लगना या लगाना—चिलम पर गांजा रखकर जोर से धुआं खींचा जाना। प्र० गांजे का दम लगाकर आंखें लाल किये साधु जी महाराज सिंहासन पर आ डटे।

गांठ उखड़ना—शरीर के किसी अंग का जोड़ से हट जाना। प्र० हाथ की गांठ उखड़ी है या हड्डी टूट गयी है?

गांठ उलझना—स्थिति और पेचीदा होना। प्र० परिणाम यह हुआ कि गांठ सुलझने की अपेक्षा और अधिक उलझ गई (चित्र०–कौशिक, 70)।

गांठ कटना या काटना, -कतरना, -मारना—(1) गांठ में बंधी या पाकेट की चीज चोरी हो जाना। प्र० जैसे किसी गांठ काटने वाले की

अकिल और चालाकी पर हमें तअज्जुब और कभी-कभी एक प्रकार का दिल-लगाव भी उससे है पर उसकी यह चालाकी चतुराई और अकिल संसार के उपकार के लिए है, कोई इसे न मानेगा (भट्ट नि०–बा० भट्ट०, 33)।

(2) ठग लेना। प्र० साहूजी, इस तरह सरे आम गांठ मत काटो, वजन में तो ठीक दो।

गांठ कतरना—दे० गांठ कटना या काटना।

गांठ करना—(1) अच्छी तरह याद रखना।

(2) मनमुटाव करना। प्र० तुम दोनों आपस में गांठ मत करो नहीं तो काम कैसे होगा।

(3) इकट्ठा करना, ले लेना। प्र० दूसरों का हिस्सा गांठ कर-करके आज तुम बड़े आदमी बन गये हो।

(4) गांठ में बाँधना। प्र० यह सती जी का चावल है, गांठ कर लो बहू।

(5) मन में अच्छी तरह बैठ जाना। प्र० मैंने तुमसे बात को गांठ करने को कहा था पर तब तुमने ध्यान ही न दिया।

गांठ का, गिरह का—अपने पास का। प्र० रहां नहीं कोई यार दोस्त, गांठि गरथ न दाम (कबीर ग्रंथा०–कबीर, 168); सबहीं लीन्ह बेसाहना और घर कीन्ह बहोर। बांभन तहां लेइ का गांठि सांठि सुठि थोर (पद०–जायसी, 7/1); हौं तौ गयो गुपालहिं भेंटन, और खरच तंदुल गांठी कौ (सू० सा०–सूर, 4857); फौज पठाई हुती गढ़ लैन कौं गांठिहु के गढ़-कोट गंवाए (भूषण ग्रंथा०–भूषण, 166); गई कमाई दूर सबै छन रहे गांठ को खोअत (भा० ग्रं० (2)–भारतेन्दु, 542); उसमें गांठ की अक्ल और मौके पर स्वयं अपना निर्णय करने की शक्ति होनी चाहिए (मेरे०–गुलाब०, 58)।

गांठ का खोना—अपनी वस्तु नष्ट करना, नुकसान उठाना। प्र० तुम गांठ का सब कुछ खोकर दर-दर की ठोकरें खाओगे।

गांठ का गोपीचंदन घिस जाना—अपना नुकसान होना। प्र० लेकिन उसकी गांठ का गोपीचंदन घिसा चला जा रहा था (अमृत०–नागर, 574)।

गांठ का पक्का—कंजूस, सावधान।

गांठ का पूरा—मालदार, पैसे वाला। प्र० सारे जीवन कोई-न-कोई मतिमन्द गांठ का पूरा, उनके हत्थे बराबर चढ़ता ही रहा (अपनी०–उग्र, 85)।

गांठ का पूरा आँख का अंधा—धनी पर मूर्ख। प्र० अगर हम तुम सलामत रहेंगे तो बहुतेरे गांठ के पूरे आँख के अंधे फंसेंगे ही (राधा० ग्रंथा०–राधा० दास, 720)।

गांठ का पैसा—अपना धन। प्र० तुम्हारी गांठ का पैसा जा रहा है क्या जो तुम्हें इतनी तकलीफ हो रही है?

गांठ का पोढ़ा—बड़ा धनवान। प्र० राय साहब गांठ के पोढ़े हैं, तुम उनकी क्या बराबरी करोगे?

गांठ काटना—धोखे से धन ले लेना। प्र० रामभरोसे अपने को बहुत होशियार समझता था पर किसी ने उसकी गांठ भी काट ली।

गांठ खाली होना—पास में कुछ न होना। प्र० यदि उसकी गांठ खाली हो, तो कब मिलती है दुलहन? (ब्रह्म०-दे० स०, 29)।

गांठ खुलना, गिरह खुलना—अड़चन दूर होना, दिल की बुराई दूर होना। प्र० इतने बरसों बाद दोनों की गांठ खुल सकी है।

गांठ खोना—नुकसान उठाना। प्र० इस सौदे में मैं अपनी गांठ क्यों खोऊं?

गांठ खोलना, गिरह खोलना—(1) मन का दुर्भाव या शंका दूर करना। प्र० ऐसी जे उपजै या जीव कै, कुटिल गांठि सब खोलै (कबीर ग्रंथा०–कबीर, 212); जब सुलझना उन्हें नहीं आता तब गिरह खोल किस तरह सुलझें (चोखे०–हरिऔध, 47)।

(2) जी खोलकर कोई बात कहना। प्र० तुम अपनी गांठ खोल डालो, हम सबका भला इसी में है।

(3) खूब खर्च करना। प्र० बेटी के ब्याह में उन्होंने गांठ खोल दी थी, कहीं कोई कसर न थी।

गांठ जोड़ना—(1) विवाह के समय वर-वधू के दुपट्टों को एक में बाँधने की रस्म। प्र० नांनां रंगै भांवरि फेरी, गांठि जोरि बावै पति ताई (कबीर ग्रंथा०–कबीर, 165); हौं जो गई मढ़ मंडप भोरी। तहंवा तू न गांठ गहि जोरी (पद०–जायसी, 23/16); करि होमु विधिवत गांठि जोरी होन लागीं भांवरी (राम० (बाल)–तुलसी, 330); मैं तो तुमसे कब से कह रही हूँ कि कोई अच्छी सायत देखकर गांठें जोड़ लो (जिन्दगी–निर्गुण, 41)।

(2) हर समय साथ रहना। प्र० तुम दोनों हर समय गांठें जोड़े फिरा करो।

गांठ जोड़ी होना—विवाह होना; हर समय साथ रहना। प्र० शर्मिला और नयना की तो गांठें जोड़ी हुई हैं, जब चाहे, जहाँ चाहे साथ देख लो।

गांठ देकर रखना—छिपाकर, बन्द करके रखना। प्र० दधि माखन गांठी दै राखति, करत फिरत सुत चोरी (सू० सा०–सूर, 942)।

गांठ देना—प्रतिज्ञा करना। प्र० मैंने तो गांठ दे रखी है कि उनके दरवाजे पर पैर नहीं रखूंगा।

गांठ पकड़ना—(1) वैर मानना। प्र० दोनों भाइयों के बीच ऐसी गांठ पकड़ गयी है कि पूछो मत।

(2) बुरा लगना। प्र० उसने कुछ कह ही दिया तो उसके लिए इतना गांठ पकड़ने से कैसे चलेगा।

(3) जम जाना, मन में अच्छी तरह बैठ जाना। प्र० तुम्हारी बातों ने उसके मन में गांठ पकड़ ली है।

गांठ पक्की होना—सम्बन्ध में दृढ़ता आना। प्र० हमारे बीच की प्रेम-गांठ इस प्रसंग से और पक्की हो गई (सत्य के प्रयोग–मो० क० गांधी, 225)।

गांठ पड़ना, गिरह पड़ना—(1) सम्बन्ध अप्रिय हो जाना, मनोमालिन्य होना। प्र० दोनों में क्या बात हुई, यह कौन जान सकता है, लेकिन दोनों में कोई गांठ पड़ गयी है (मान० (1)–प्रेमचंद, 96)।

(2) कुछ अप्रिय घटना। प्र० इसके जीवन में कहाँ गांठ पड़ी है, यही सोच रहा हूँ (अशोक०–ह० प्र० द्वि०, 145)।

(3) उलझन होना; रुकावट आना। प्र० शेखर की बुद्धि में मानो गांठ पड़ गई (शेखर० (2)–अज्ञेय, 70)।

गांठ पर गांठ पड़ना, गिरह पर गिरह पड़ना—(1) उलझन पर उलझन होना। प्र० वहाँ तो गांठ पर गांठ पड़ती जा रही है। इसे सम्हालना बहुत जरूरी है।

(2) मनमुटाव बढ़ना। प्र० देखिए प्रयोग (1)।

गांठ बांधना, गिरह बांधना—(1) यत्नपूर्वक रखना। प्र० बांधौ गांठि छूटि परिहै कहुं, फिरि पाछैं पछिताहु (सू० सा०–सूर, 4427)।

(2) दृढ़ धारणा बनाना; बात पकड़ लेना। प्र० मैंने नदी के तट वाली तुम्हारी बातें गांठ बांध ली (गोदान–प्रेमचन्द, 341)।

(3) दे० गांठ जोड़ना।

गांठ मजबूत होना—(1) मित्रता दृढ़ होना। प्र० पहले दोनों की गांठ तो मजबूत होने दो।

(2) पास में पैसा होना। प्र० गांठ जरा मजबूत हो जाये तब नया काम शुरू करूँ।

गांठ मारना—दे० गांठ कटना या काटना।

गांठ में चोर पैठना—पास से रुपया चला जाना। प्र० अपने राम की तो गांठ में चोर पैठकर सब कुछ ले गया।

गांठ में जर होना—पास में पैसा होना। प्र० राजैं पदुमावति सौं कहा। सांठ नाठि किछु गांठि न रहा (पद०–जायसी, 34/27); जब लगि पैसा गांठ में तब लग यार हजार (कुण्ड०–गिरधरदास, 12); क्या मुँह लेकर आवें, न गिरह में दाम है और न कहीं किसी उम्रा के यहाँ तार लगता है (राधा० ग्रंथा०–राधा० दास, 720); लेकिन घी खाने योग्य पैसे तब अपनी गिरह में थे ही नहीं (अपनी०–उग्र, 47)।

गांठ में जर बांधकर रखना—धन को बहुत बचाकर, छिपाकर रखना।

गांठ में बांधना, गिरह में बांधना—(1) मान लेना। प्र० हमरे गुनहिं गांठि किन बांधौ, हम कह कियौ बिगार (सू० सा०–सूर, 4161); इसे गांठ में बांधते हुए शेखर ने पूछा—वहाँ कैसे आता है (शेखर० (1)–अज्ञेय, 154)।

(2) सीखना या सिखाना। प्र० बड़ी रानी यदि आज यहाँ आतीं तो गांठ में बांध कर यहाँ से कुछ ले जातीं (मृग०–वृं० वर्मा, 417)।

गांठ में रखना, -रहना—धनी होना। प्र० गांठ में कुछ रखता है तभी न इतना रुआब लगाता है।

गांठ में रहना—दे० गांठ में रखना।

गांठ रखना—(1) मन में ईर्ष्या या दुर्भाव होना। प्र० वह तो हर किसी के प्रति मन में गांठ रखता है।

(2) अपने अनुकूल बना लेना। प्र० तुमने उसे गांठ रखा है तो लाभ ही होगा।

गांठ सुलझना—स्थिति स्पष्ट होना; मनोमालिन्य या दुविधा दूर होना। प्र० परिणाम यह हुआ कि गांठ सुलझने की अपेक्षा और अधिक उलझ गई (चित्र०–कौशिक, 70)।

गांठ से—पास से। प्र० रुपए खत्म हो चुके थे। वह अपनी गांठ से नहीं मंगा सकता था (कुल्ली०–निराला, 68)।

गांठ से जाना, गिरह से जाना—अपनी हानि होना। प्र० उनकी गांठ से क्या जाता है? (सारा०–यादव, 79)।

गांठ-गिरह में होना—पास में होना। प्र० गांठ-गिरह में कुछ है भी या यों ही यात्रा करने निकल पड़े हो?

देखिए गिरह के मुहावरे भी।

गांठना—(1) वश में करना; फंसाना; कुछ वसूल लेना। प्र० ईसाइन है न! किसी अंगरेज को गांठेगी (रंग० (2)–प्रेमचंद, 188)।

(2) परवाह करना; कुछ समझना। प्र० अपने सामने वह किसी को गांठती ही नहीं।

गांधी बनना—सच्चा और अहिंसक बनना। प्र० जी हाँ, वह आजकल गांधी बना फिरता है।

गांव मारना—डाका मारना। प्र० दस सशस्त्र डाकुओं का दल गांव मार कर चल दिया।

गांस करना—मन में याद रखना; गांठ बांध रखना। प्र० तुम वह बात गांस करि राखी, हसकौं गई भुलाई (सू० सा०–सूर, 2366)।

गांस की फांस—वैर-भाव। प्र० बात में है मिठास मिसरी-सी गांस की फांस है कलेजे में (चोखे०–हरिऔध, 169)।

गांस निकालना—पुराने वैर का बदला लेना। प्र० तुम उससे किस जमाने की गाँस निकाल रहे हो?

गाउंज-माउंज करना—एक में मिला देना, उथल-पुथल कर देना। प्र० आलमारी का सारा सामान तुमने गाउंज-माउंज कर दिया।

गागर में सागर—थोड़े में बहुत कुछ। प्र० प्रथम तो "सर्वदर्शन संग्रह" का विचार ही बहुत गंभीर और क्लिष्ट है, तिस पर महा विद्वान् माधवाचार्य की भाषा जिसके दो-दो चार-चार शब्द विस्तृत अर्थ को समेट 'गागर में सागर' की कहावत को चरितार्थ करते हैं (मिश्र निबन्ध०)।

गाज गिरना, -पड़ना, -मारना—आफत आना, ध्वंस होना, वज्रपात होना। प्र० देव कहा सुनु बौरे राजा। देवहिं अगुमन मारा गाजा (पद०–जायसी, 21/5); औधपुरी मंह गाज परै। कै अब राज भरथ्थ करै (केशव० (2)–केशव, 274); अरी सखी गाज परौ ऐसी लोक-लाज पैं, मदन मोहन संग जान न पाई (भा० ग्रं० (2)–भारतेन्दु, 47); उसी हत्तियारी के कुनबे पै गाज गिरिहै (बूंद०–नागर, 22)।

गाज पड़ना—दे० गाज गिरना।

गाज मारना—दे० गाज गिरना।

गाजर बेचना—कोलाहल करना। प्र० तुम लोग जरा देर चुप रहोगी या इसी तरह गाजर बेचती रहोगी?

गाजर-मूली की तरह कटना—बिना परिश्रम के आसानी से कटना या मरना। प्र० धर्म्म मन्दिरों पर राजा की दनादन तोप चलती थी और गाजर-मूली की तरह इतने मनुष्य कट रहे थे जिनकी गणना करनी अति कठिन था (मिश्र निबन्ध०)।

गाजर-मूली समझना—तुच्छ समझना। प्र० आप उसे गाजर-मूल ही समझते हैं, उससे अधिक नहीं।

गाड़ में बैठना, गाड़े बैठना—ताक में रहना। प्र० वह तो न जाने कब से गाड़ में बैठा है कि मौका मिले और हरकिशन को सबक सिखाये।

गाड़ा बैठना या बैठाना, गाड़े बैठना—पहरा बैठना या बैठाना। प्र० राय साहब की कोठी पर गाड़ा बैठा दिया गया है।

गाड़ी आगे बढ़ाना—काम को आगे बढ़ाना। प्र० बहुत सोच-विचार हो चुका। अब तुम गाड़ी आगे बढ़ाओ।

गाड़ी कटना या काटना—(1) चलती गाड़ी में से कुछ चोरी जाना या चुरा लेना। प्र० मेल गाड़ी में खजाना जा रहा था। बिलासपुर के पास गाड़ी कट गयी।

(2) चलती गाड़ी से डब्बा अलग होना या करना। प्र० हमें तो पता ही नहीं था। हम गाड़ी में बैठे ही रह गये और गाड़ी कट गयी।

गाड़ी कड़खा खाना—चलता काम रुक जाना। प्र० खबरदार, तुम वहाँ पैर भी मत रखना। तुम पहुँचे नहीं कि गाड़ी ने कड़खा खाया।

गाड़ी का इंजन—अगुआ। प्र० राम सुभग जी तो गाड़ी के इंजन हैं, उनके बिना काम आगे कैसे बढ़ेगा।

गाड़ी के आगे काठ अटकाना—होते हुए काम में अड़चन डालना। प्र० तुम हर समय गाड़ी के आगे काठ क्यों अटकाया करते हो? यह तो बड़ी बुरी बात है।

गाड़ी को देखकर पांव फूलना—(1) सहारा मिलने से हिम्मत छोड़ना। प्र० उसकी पुरानी आदत है, गाड़ी देखी और पाँव फूला।

(2) सवारी देखकर थकने लगना। प्र० देखिए प्रयोग (1)।

गाड़ी खिंचना—काम चलना; गृहस्थी का काम चलना। प्र० एक-डेढ़ साल तक तो गाड़ी रोते-झींकते खिंचती रही, लेकिन सास के मरते ही मुसीबतों का पहाड़ अर्राकर टूट पड़ा (सारा०—यादव, 31)।

गाड़ी खींचे चलना, -चलाये चलना, -ढकेलना—शक्ति से बाहर काम को किसी प्रकार किये जाना। प्र० जितने दिन होगा मैं गाड़ी खींचे चलूंगा पर जब एकदम पस्त हो जाऊँगा तब भगवान् मालिक होगा।

गाड़ी चल निकलना—काम शुरू होना; प्रगति होना। प्र० सन् इकसठ के अंत तक लच्छू की गाड़ी चल निकली (अमृत०—नागर, 577)।

गाड़ी चलती होना—रुका हुआ काम चलने लगना; रुकावट दूर होना। प्र० इतने महीनों बाद तो गाड़ी चलती हुई है, तुम फिर रोड़ा मत अटकाओ।

गाड़ी चलना या चलाना—(1) किराये पर या ठीके पर गाड़ी देना। प्र० नराटा सिंह की पांच गाड़ियां चलती हैं।

(2) किसी तरह घर-खर्च चलना या चलाना। प्र० किसी तरह गाड़ी चल रही है, और क्या?

(3) दे० गाड़ी चलती होना।

गाड़ी चलाये चलना—दे० गाड़ी खींचे चलना।

गाड़ी छूटना—(1) विलम्ब हो जाना। प्र० इस बार तो गाड़ी छूट गयी, अब अगले मौके की प्रतीक्षा करो।

(2) गाड़ी न पकड़ पाना। प्र० मैं दौड़ा-दौड़ा गया पर तब तक गाड़ी छूट गयी थी।

गाड़ी जोतना—गाड़ी में घोड़े जोतना।

गाड़ी ठीक रास्ते लगाना—काम को ठीक रास्ते पर लाना। प्र० बहुत चेष्टाओं के बाद किसी तरह गाड़ी ठीक रास्ते पर लगा सका हूँ।

गाड़ी ठेल ले जाना—काम पूरा कर ले जाना। प्र० शांताराम कैसे नामी सितारों के बिना ही अपनी गाड़ी ठेल ले जाता है? (दूधगाछ—दे० स०, 255)।

गाड़ी ढकेलना—दे० गाड़ी खींचे चलना।

गाड़ी ढील देना—गाड़ी से पशुओं को खोल देना या उनके बन्धन ढीले कर देना ताकि वे आराम से खा-पी सकें। प्र० गाड़ीवानों ने उनके नीचे गाड़ियाँ ढील दीं (रंग०—प्रेमचंद, 1–2)।

गाड़ी पकड़ना—रेल या अन्य सवारी में सवार होना। प्र० यही सोच कर मैंने सुबह की गाड़ी पकड़ी (पैंतरे—अश्क, 123)।

गाड़ी पटरी से न उतरना—काम का ठीक रास्ते से इधर-उधर न होना। प्र० बहुत ध्यान रखना, गाड़ी पटरी से न उतरने पाये नहीं तो फिर उसे रास्ते पर लाना कठिन होगा।

गाड़ी भर—बहुत अधिक। प्र० गाड़ी भर सामान मेरे साथ कर दिया, मुझे मुसीबत में डाल दिया।

गाड़ी भर रास्ता—गाड़ी के आने-जाने भर रास्ता। प्र० गाड़ी भर रास्ता छोड़कर दीवाल उठाना।

गाड़ी में जुते रहना—किसी काम में लगे रहना। प्र० इस गृहस्थी की गाड़ी में जुते हुए मुझे सोलह वर्ष हो गए।

गाड़ी रुकना—चलते हुए काम में रुकावट पड़ना। प्र० इस बात का खयाल रखना कि मेरी गाड़ी न रुकने पाये।

गाड़े बैठना—(1) दे० गाड़ में बैठना।

(2) दे० गाड़ा बैठना।

गाढ़ पड़ना, -गाढ़ा पड़ना—मुसीबत पड़ना। प्र० लै नग मोर समुन्द भा बटा। गाढ़ परै तौ पै परगटा (पद० जायसी, 34/10); जब-जब गाढ़ परति है हमकौं, तब करि लेत सहैया (सू० सा०—सूर, 2011); कटु कहिये गाढ़े परे, सुनि समुझि सुसाईं। करहिं अनभलेउ को भलो, आपनी भलाई (विनय०—तुलसी, 35); नामी बेचारी पर तो ऐसी गाढ़ पड़ गयी है कि पूछो मत।

गाढ़ा अंधेरा—घोर अंधकार। प्र० अमावस्या की रात-चारों ओर गाढ़ा अंधकार छाया हुआ था।

गाढ़ा काम पड़ना—कठिन काम का अवसर आना। प्र० जब तो बानि

परयौ है गाढ़ौ सूर पतित सौं काम (सू० सा०–सूर, 179)।

गाढ़ा धीरज धरना—बहुत धैर्य रखना। प्र० कह सीता धरि धीरजु गाढ़ा (राम० (अ)–तुलसी, 728)।

गाढ़ा पड़ना—दे० गाढ़ पड़ना।

गाढ़ा प्रेम—दृढ़ प्रेम। प्र० देखी प्रीति गाढ़ो, पैंथे तनसुख ठाढ़ी, जोर जोबन की बाढ़ी खिन-खिन और होति है (क० र०–सेनापति, 49)।

गाढ़ा रंग—गहरा प्रभाव। प्र० × × चेहरे पर गंभीरता और विचार का गाढ़ा रंग नजर आता था (रंग०–प्रेमचन्द, 2)।

गाढ़ा रंग चढ़ना—गहरा प्रभाव होना। प्र० गायत्री पर इस प्रेम-भक्ति का रंग और भी गाढ़ा चढ़ गया था (प्रेमा०–प्रेमचन्द, 279)।

गाढ़ा संदेह—बहुत संदेह। प्र० बहुरि सखी सुफलक सुत आयौ, पर्यौ संदेह जिह गाढ़ौ (सू० सा०–सूर, 4099)।

गाढ़ा समय—दुर्दिन। प्र० मेवाड़ के गाढ़े समय में काम आने वाले वीर योद्धा व्यर्थ ही मौत के शिकार होंगे (विष०–प्रेमी, 31)।

गाढ़ी कमाई, गाढ़े की कमाई—बहुत मेहनत से कमाया हुआ धन। प्र० दादा की गाढ़ी कमाई के रुपये क्यों बरबाद करते हो? (मान० (1) –प्रेमचन्द, 79)।

गाढ़ी छनना—(1) गहरी दोस्ती होना। प्र० नीलमणि और कल्याण भगत की नल एक ही जगह दवाई गई होगी तभी तो उनमें इतनी गाढ़ी छनती है (ब्रह्म०–दे० स०, 19)।

(2) खूब गहरी भाँग छनना। प्र० भाँग-भाँग रटते रहने से किसी समय गाढ़ी न छनेगी (मर्म०–हरिऔध, 5)।

गाढ़ी नींद—गहरी नींद। प्र० मैं तो कल रात खूब गाढ़ी नींद सोयी।

गाढ़ी मेहनत—कठिन परिश्रम। प्र० विलाइत में बहुत से ऐसे लोग हो गये और अब भी मौजूद हैं जिन्होंने शुरू में मोची चमार की नौकरी तथा पेशा इखतियार कर गाढ़ी मेहनत के द्वारा × × अंत में ऊँचे-से-ऊँचे पद पर पहुँचे (भट्ट नि०–बा० भट्ट, 40–41)।

गाढ़ी विपत्ति—बहुत बड़ी विपत्ति। प्र० सूरदास अक्रूर कृपा तैं, सहीं विपति तन गाढ़ो (सू० सा०–सूर, 3612)।

गाढ़े का संगी या साथी—विपत्ति में सहारा देनेवाला। प्र० कासुं पुकारौं का पहं जाऊं। गाढ़ें मीत होइ एहि ठाऊं (पद०–जायसी, 34/10); गोविन्द गाढ़े दिन के मीत (सू० सा०–सूर, 31); क्यों रहीम खोजत नहीं, गाढ़े दिन को मित्त (रहीम कवि०–रहीम, 13); गाढ़े दिन को मित्त चित्त में क्यों नहिं राखहु (राधा० ग्रंथा०–राधा० दास, 57)।

गाढ़े काम आना, -वक्त काम आना—मुसीबत के समय सहायक होना। प्र० चोर न लेत, घटत नहिं कबहूँ, आवत गाढ़ैं काम (सू० सा०–सूर, 92)।

गाढ़े की कमाई—दे० गाढ़ी कमाई।

गाढ़े दिन—विपत्ति के दिन। प्र० गोविन्द गाढ़े दिन के मीत (सू० सा० –सूर, 31); आरत के हित, नाथु अनाथ के रामु सहाय सही दिन गाढ़ें (कवि०–तुलसी, 135); बाढ़े दिन के मीत हौ, गाढ़े दिन रघुबीर (रहीम कवि०- रहीम, 9); कभी वह जानना चाहती है कि अलोपी ने गाढ़े दिन के लिए कुछ बचा रखा है या नहीं (अतीत०–महादेवी, 98)।

गाढ़े पड़ना, -में पड़ना—विपत्ति में पड़ना। प्र० एक परे गाढ़े, एक डाढ़त हीं काढ़े, एक देखत हैं ठाढ़े, कहैं, पावकु भयावनो (कवि०–तुलसी, 53); ऐसा न कहो जीजी, बड़े गाढ़े में पड़कर आयी हूँ (मान० (1)–प्रेमचन्द, 115)।

गाढ़े बैठना—मौके की ताक में छिपकर बैठना। प्र० वह तो गाढ़े बैठा है कि कब मौका मिले और कब पत्नी को नीचा दिखाये।

गाढ़े बोलना—जोर से बोलना। प्र० बरजति है घर के जोगनि कौं, हसएँ लै लै नामहिं गाढ़ैं बोलि न पावत कोऊ, डर मोहन बलरामहिं (सू० सा०–सूर, 1133)।

गाढ़े मित्र—घनिष्ठ मित्र। प्र० पर पंडितजी के मधुर भाषण, सद्व्यवहार और पांडित्य का पादरी साहब पर ऐसा प्रभाव पड़ा कि वह उनके गाढ़े मित्र बन गये (पद्म पराग–पद्म० शर्मा, 43)।

गाढ़े में—विपत्ति के दिनों में। प्र० चोर न लेत, घटत नहिं छवि कवहूं, आवत गाढ़ैं काम (सू० सा०–सूर, 92)।

गाढ़े में पड़ना—दे० गाढ़े पड़ना।

गाढ़े वक्त काम आना—दे० गाढ़े काम आना।

गाढ़े हैं—बढ़कर हैं। प्र० आप सब एक से एक गाढ़े हैं, मुझे पता है।

गाढ़े रण में—घोर संग्राम में। प्र० कबहुं न मिला सुभट रण गाढ़े। द्विज देवता घरहिं के बाढ़े (राम० (बाल)–तुलसी, 282)।

गात उमगना—स्तन का उभार आना।

गात शीतल करना या होना—पूर्ण रूप से शांति पहुँचाना। प्र० कहि-कहि कथा श्याम सुंदर की, सीतल करि सब गात (सू० सा०–सूर, 4311); देखि गोसाइहिं पूछिउं माता। सुनि प्रसंगु भये सीतल गाता (राम० (अ)–तुलसी, 414)।

गात से होना—गर्भ रहना।

गाती मारना, -लगाना—सर्दी से बचाने के लिए बच्चों के गले में छोटा दुपट्टा बाँधना।

गाती लगाना—दे० गाती मारना।

गाथा गाना—किसी के बुरे या अच्छे कर्मों को कहना। प्र० अब कहाँ तक उनकी गाथा गाओगे, बस भी करो।

गाद बैठना—नीचे तलछट जमा होना। प्र० अभी सिरका बोतल में मत भरो। गाद बैठ जाय तब छानकर भरना।

गाना—(1) स्मरण करना। प्र० कलि-मल-हरन, कालिमा-टारन, रसना स्याम न गायौ (सू० सा०–सूर, 58)।

(2) अपनी बात कहना। प्र० तुम अपनी ही गाते रहोगे या मेरी भी सुनोगे?

(3) यश वर्णन करना। प्र० यह गाना बन्द करो सरमा, बहुत हुआ।

गाना उखड़ जाना—गाने का प्रभावहीन हो जाना । प्र० सुन जिसे पग सुपंथ से उखड़ें क्यों नहीं वह उखड़ गया गाना (चोखे०–हरिऔध, 196) ।

गाना गाना—प्रशंसा करना; चर्चा करना । प्र० हाँ सारे दिन बस तुम्हारा ही गाना गाती रहती है (प्रतीक्षा–यादव, 34) ।

गाना जमना—गाने का प्रभावपूर्ण होना जिससे लोग मुग्ध हो जायँ । प्र० ताल आता ताल पर होवे मगर, जब जमा तब जी जमे गाना जमा (बोल०–हरिऔध, 142) ।

गाना-बजाना होना—आनन्द मनाया जाना । प्र० मैं वहाँ पहुँची तो देखा खूब गाना-बजाना हो रहा था ।

गाने को चूल में बैठाना—गाने को ठीक ताल में बाँध लेना । प्र० मास्टर जी को पहले गाने को चूल में बैठा लेने दो ।

गा-बजाकर—हँसी-खुशी के साथ । प्र० भई यह उन लोगों में नहीं हैं जो गा-बजाकर काठ में पाँव देते हैं (निशा०–कौशिक, 205) ।

गाभ गिराना, -डालना—गर्भपात करना ।

गाभ डालना—दे० गाभ गिराना ।

गाभा आना—अच्छी फसल होना ।

गामत होना—पानी का टपकना । प्र० छत एकदम छलनी हो रही है, जरा बरसात हुई नहीं कि गामत हुई ।

गामा बनना—पहलवान बनना । प्र० वह तो आजकल गामा बना घूमता है ।

गाय—दे० गऊ ।

गाय की तरह कांपना—बहुत भयभीत होना । प्र० पिताजी की फटकार सुनकर बेचारी भाभी गाय की तरह काँपने लगीं ।

गाय को बछिया तले, बछिया को गाय तले करना—(1) इधर का उधर करना । प्र० तुम्हें और कोई काम तो है नहीं, बस गाय को बछिया तले और बछिया को गाय तले किया करो ।

(2) गड़बड़ करना । प्र० देखिए प्रयोग (1) ।

गाय लगना—गाय का दूध देना । प्र० गायें-भैंसें भी लगती हैं ? (मान० (8)–प्रेमचंद, 240) ।

गाय सूख जाना—गाय का दूध न देना । प्र० पहले वाली गायें सब सूख गयी थीं (गोदान–प्रेमचंद, 8) ।

गायब करना या होना—चुरा लेना या चुराया जाना । प्र० देखते-देखते घर का सारा सामान गायब हो गया ।

गायब खेलना—शतरंज में आँखें बन्द करके खेलना ।

गायबगुल्ला करना—दे० गायब करना ।

गार पड़ना—नासूर पड़ना ।

गारद करना, -में छोड़ना, -में डालना, -में देना, -में रखना—जेल में डालना । प्र० मैं उसे गारद में डालकर ही दम लूँगा ।

गारद बैठना या बैठाना—पहरे के लिए पुलिस बैठना या बैठाना । प्र० जेल के चारों ओर गारद बैठा दी गयी और कैदियों पर कड़ी नजर रखने का हुक्म हो गया ।

गारद में छोड़ना—दे० गारद करना ।

गारद में डालना—दे० गारद करना ।

गारद में देना—दे० गारद करना ।

गारद में रखना—दे० गारद करना ।

गारना (तन)—शरीर गलाना; शरीर को कष्ट देना । प्र० सारी जिन्दगी मैंने न कभी भरपेट खाया न पहना, सबके लिए अपना तन गारती रही ।

गारा करना—दीवाल में मिट्टी लीपना । प्र० दीवाल में पहले गारा कर लो फिर रंग करना ।

गारा गाना—बहुत बड़ा किस्सा कहना । प्र० तुम तो गारा ही गाने लगे ।

गारा मालूम होना—सारहीन मालूम होना ।

'गारी' के लिए देखिए 'गाली' ।

गाल कर रखना (बात को)—मन में रखना । प्र० मैंने तुम्हारी सब टेढ़ी-सीधी बातें गाल कर रखी हैं ।

गाल करना—मुँहजोरी करना; मुंह से अंडबंड कहना । प्र० आई हँसति कहति हरि येई, बहुत करत हे गाल (सू० सा०–सूर, 3516); कत-सिख देइ हमहि कोउ माई, गालु करब केहि कर बलु पाई (राम० (अ)–तुलसी, 384) ।

गाल काटना, -तोड़ना—जबरदस्ती चुम्बन लेना ।

गाल काढ़ना—गाली देना । प्र० खबरदार जो तुमने गाल काढ़ा ।

गाल चलना—आत्म प्रशंसा करना; बड़ी-बड़ी बातें करना । प्र० तब कि चलहि अस गाल तुम्हारा (राम० (लं)–तुलसी, 890) ।

गाल चीरना—बोलने न देना । प्र० पाजियों को गाल क्यों दे मारने, सामने दुःख फिरकियाँ फिरती रहें, जिस तरह हो चीर देंगे गाल हम, चिर गई तो उँगलियाँ चिरती रहें (चुभते०–हरिऔध, 7) ।

गाल तमतमा उठना—क्रुद्ध होना । प्र० हो न जावें तमाम हम कैसे, आपका गाल तमतमा आया (चोखे०–हरिऔध, 43) ।

गाल तोड़ना—दे० गाल काटना ।

गाल पर गाल चढ़ना—खूब मोटा-ताजा होना ।

गाल पिचकना, -बैठना—दुर्बलता के कारण गाल में गड्ढे पड़ना ।

गाल फुलाना, -सुजाना—(1) रूठकर न बोलना । प्र० हुई कि होइ एक समय भुआला, हँसब ठठाइ फुलाउब गाला (राम० (अ)–तुलसी, 405) ।

(2) बढ़-बढ़कर बातें करना । प्र० सो मनु मनुज खाब हम भाई बचन कहहिं सब गाल फुलाई (राम० (लं)–तुलसी, 869) ।

गाल फूलना—(1) गुस्सा करना । प्र० मेरी खरी बातें सुनते ही उनका गाल फूल गया ।

(2) मोटा-ताजा होना । प्र० अरे आजकल तो खूब गाल फूल गया है ।

गाल बजाना, -मारना—(1) डींग मारना; बढ़-बढ़कर बातें करना । प्र० व्यर्थ मरहु जनि गाल बजाई, मन मोदकन्हि कि भूख बुताई (राम० (बाल)–तुलसी, 253); केवल उन्हीं की चाह और उन्हीं की बात है जिन्हें झूठी खैरख्वाही दिखाना वा लम्बा-चौड़ा गाल बजाना आता

है (भा० ग्रं० (1)–भारतेन्दु, 258); पाजियों को गाल क्यों दे मारने (चुभते०–हरिऔध, 7)।

(2) भला-बुरा कहना। प्र० अपनौ भेद तुम्हें नहिं कैहे। देखहु जाइ चरित तुम वाके जैसे गाल बजैहै (सू० सा०–सूर, 2342)।

गाल बैठना—दे० गाल पिचकना।

गाल भर खाना—मुंह भरकर खाना। प्र० दो-चार गाल भर तो खाने दो या उसके पहले ही उठा दोगे?

गाल भरना, -मारना—खाने का कौर मुंह में रखना; खाना। प्र० झटपट दो-चार गाल भर लो और चलो।

गाल मारना—दे० गाल बजाना, गाल भरना।

गाल में चावल भरना—बात बनाना; मुंह बनाना; चबा-चबाकर बातें करना। प्र० वह एक दिन था कि मेरे आगे फरिश्तों की भी न दाल गलती, भरे हैं गालों में अब जो चावल, करें वह बातें चबा-चबा के।

गाल में जाना—(1) हड़प लिया जाना। प्र० सारी धन सम्पत्ति तुम्हारे नहीं तो किसके गाल में गयी?

(2) मुंह में जाना। प्र० सावधान रहना, कहीं शेर के गाल में खुद ही न चले जाओ।

गाल लाल होना—लज्जा या क्रोध से गालों पर लालिमा आना; चेहरा तमतमा जाना। प्र० जब हुईं लाल-लाल आँखें तब, गाल कैसे न लाल-लाल बनें (चोखे०–हरिऔध, 43)।

गाल सुजाना—दे० गाल फुलाना।

गाल सेंकना—(1) गाल पर मारना। प्र० मैं ऐसा तुम्हारे गाल सेंकूंगा कि तुम भी याद रखोगी।

(2) बधाई देना। प्र० पहले तो खूब बुराइयाँ कीं और अब चले हैं गाल सेंकने।

गालिब आना, -रहना या होना—छा जाना; किसी के ऊपर गहरा प्रभाव डालना। प्र० मुझे नहीं पता था कि वह अभी भी तुम पर गालिब है।

गालिब रहना या होना—दे० गालिब आना।

गालियों का झाड़ बांधना, -का मेह बरसाना, -की बौछार करना—बहुत गालियाँ देना। प्र० बाप रे बाप, उसे देखते ही भैया ने गालियों का झाड़ बांध दिया।

गालियों का मेह बरसाना—दे० गालियों का झाड़ बांधना।

गालियों की बौछार करना—दे० गालियों का झाड़ बांधना।

गालियों पर उतरना, -जबान खोलना, -मुंह खोलना—गालियां देना। प्र० बिशन बाबू अब गालियों पर उतर आये हैं।

गालियों पर जबान खोलना—दे० गालियों पर उतरना।

गालियों पर मुंह खोलना—दे० गालियों पर उतरना।

गाली आना, -पड़ना, -लगना—कलंक लगना। प्र० जो बुरा काम करेगा उसे गाली तो आएगी ही।

गाली उठना—गाली दी जाना; बदनामी होना। प्र० पहले भी गाली उठ चुकी है। जब तू खुल्लमखुल्ला मेरे घर में रहेगी, तब तो अनर्थ ही हो जायेगा (रंग०–प्रेमचंद, 329)।

गाली खाना—दुर्वचन, निन्दा या गाली सहना। प्र० तुम घर जाइ बैठि सुख करिहौ, नृप-गारी को खैहै (सू० सा०–सूर, 2193); इस नई और समाज-विरुद्ध बात कहने के लिये उन्हें बड़ी-बड़ी गालियाँ खानी पड़ीं (राधा० ग्रंथा०–राधा० दास, 284)।

गाली देना—दुर्वचन कहना; भला-बुरा कहना। प्र० कह करौं कृत कर्म अपनौ, काहु दीजै गारी (सू० सा०–सूर, 3785); एहि विधि निलपहिं पुर नर नारी, देहिं कुचालिहि कोटिक गारी (राम० (अ)–तुलसी, 420); जब लोगों का कुछ बनता है तो उसको धन्यवाद तो थोड़े लोग देते हैं पर जो कुछ काम बिगड़ता है तो गाली सभी देते हैं (भा० ग्रं० (3)–भारतेन्दु, 859)।

गाली पड़ना—(1) गाली का सच्ची होना। प्र० तुम्हारी ही गाली उस पर पड़ी है और उसी का यह फल है।

(2) दे० गाली आना।

गाली लगना—दे० गाली आना।

गाली लाना—कलंकित करना। प्र० वह मुझ पर गाली लाना चाहती है तो वह भी करके देख ले।

गाली हाथ रहना—गाली देकर व्यर्थ पछतावा हाथ रहना। प्र० ठीक है, जी भरकर गालियाँ दो पर इतना समझ रखो कि इससे तुम्हारा कोई लाभ नहीं होने का, बस गालियाँ ही हाथ रहेंगी।

गाली-गलौज करना या होना—परस्पर गालियाँ देना; लड़ाई-झगड़ा होना। प्र० अक्सर ही दोनों देवरानी-जेठानी में गाली-गलौज हुआ करती है।

गाली-गलौज पर उतारू होना—आपस में एक-दूसरे को गाली देना। प्र० वे दोनों ही जब गाली-गलौज पर उतारू हो गये तो मैं वहाँ से हट आई।

गाली-गलौज से पेश आना—भला-बुरा कहना। प्र० खबरदार, तुम गाली-गलौज से पेश आये तो ठीक न होगा।

गाले करना, -बनाना—कपास की गद्दी बनाना।

गाले बनाना—दे० गाले करना।

गावगप करना—हड़प जाना। प्र० इतना ही नहीं, मेरे हिस्से के रुपयों में से भी वह गावगप कर गया।

गाही के गाही—बहुत अधिक। प्र० गाही के गाही आम उसने लाकर पटक दिये।

गाहे ब गाहे—वक्त बे वक्त; कभी-कभी। प्र० गाहे बे गाहे वे टपक पड़ते हैं।

गिज्झा छोड़ना, -देना, -मारना—मछली का पानी के भीतर से बाहर की ओर बुलबुला फेंकना।

गिज्झा देना—दे० गिज्झा छोड़ना।

गिज्झा मारना—दे० गिज्झा छोड़ना।

गिटकरी भरना, -लेना—गाते-गाते आवाज को लहरा देना। प्र० वह ऐसी गिटकरी लेता है कि तबीयत खुश हो जाती है।

गिटकरी लेना—दे० गिटकरी भरना।

गिटपिट करना—अंग्रेजी बोलना; टूटी-फूटी साधारण अंग्रेजी बोलना। प्र० बन्द भी करो, क्या चौबीस घंटा गिटपिट किया करते हो।

गिन-गिनकर—(1) एक-एक करके। प्र० मैं गिन-गिनकर सबकी खबर लूंगा।

(2) सावधानी से। प्र० इतना गिन-गिनकर कदम रखने पर भी धोखा हो गया?

(3) अच्छी तरह। प्र० देखिए प्रयोग (1)।

गिन-गिनकर गालियाँ देना, -सुनाना—बहुत गालियाँ देना। प्र० बुधिया तो बाबू साहब पर पहले से ही जली हुई थी, सोनिया की बातें सुनकर वह लगी उन्हें गिन-गिनकर सुनाने (दे० दु०–शिव, 33)।

गिन-गिनकर दिन काटना—दुःख से दिन बिताना। प्र० बेचारी किसी तरह गिन-गिनकर दिन काट रही है और क्या?

गिन-गिनकर देना—बहुत भला-बुरा कहना। प्र० उसने ऐसा गिन-गिनकर दिया कि हम लोग देखते ही रह गये।

गिन-गिनकर पैर रखना—बहुत समझ-बूझकर काम करना। प्र० सोभा की बिसाति चीरे धरति वहु भाँति चतुर है मुख गनि गनि डग धारी है (क० र०–सेनापति, 8)।

गिन-गिनकर बदले लेना—तमाम बदला चुका लेना। प्र० वह तो अब गिन-गिनकर बदला लिए बिना चैन न लेगा।

गिन-गिनकर मारना, -लगाना—खूब मारना। प्र० भैया ने उस दुष्ट को खूब गिन-गिनकर लगाया।

गिन-गिनकर लगाना—दे० गिन-गिनकर मारना।

गिन-गिनकर सुनाना—दे० गिन-गिनकर गालियाँ देना।

गिनती करने या कराने के लिए, -गिनने या गिनाने के लिए—नाम को, कहने भर को। प्र० जी हाँ, गिनती करने भर के लिए आप लोग आ गये थे और क्या?

गिनती का होना—सबके हिसाब से एक-एक होना। प्र० चमचम गिनती की है, सब को एक-एक ही देना नहीं तो कम पड़ जायगी।

गिनती के—बहुत थोड़े। प्र० उस दिन मीटिंग में गिनती के लोग थे (एक म्यान०–नानक०, 26); व्याह सिर पर आ गया, अब तो गिनती के दिन रह गये हैं।

गिनती गिनना, गिनना—महत्त्व मानना; परवाह करना। प्र० कंसहिं को गनती गने, जाको हमहिं कहाहु। दिये दान पै बांचिहौ, नातरु नहीं निब्राहु (सू० सा०–सूर, 2079); वामदेव-मारीचहु तो संग, प्रबल सकल खल अरु सुबाहु काहू न गने (केशव० (2)–केशव, 263); अपने कामों में कट्टो की गिनती मत करो, वह गिनने लायक नहीं है (परख–जैनेन्द्र, 97)।

गिनती गिनने या गिनाने के लिए—दे० गिनती करने या कराने के लिए।

गिनती गिनवाना—हाजिरी लिखवाना; नाम दर्ज करना। प्र० वह गिनती गिनवाकर आयेगा, हम लोग चलें।

गिनती न होना—बेशुमार होना। प्र० इसी तरह कई छोटी-मोटी आस-पास की जमींदारी भी उनके हाथ आ गई थी। खेतों की तो गिनती न थी (तितली–प्रसाद, 182)।

गिनती पर जाना—(1) हाजिरी या नाम दर्ज कराना। प्र० तुम रोज गिनती पर क्यों नही जाते हो? तुम्हारी हाजिरी नोट नहीं होती।

(2) गिनना। प्र० मैं गिनती पर नहीं जाता कि दस आये या पंद्रह पर हाँ मेरे डेढ़ सौ खर्च हुए इतना जानता हूँ।

गिनती में आना या होना, -में गिना जाना—कुछ महत्त्व समझा जाना। प्र० तुमहीं कहौ कृपानिधि रघुपति, किहिं गिनती मैं आऊं (सू० सा०–सूर, 616); ××और ये शादी लगाई किसने की? रा०–अब सरकार, बापै लगाईन, हमार काहे माँ गिनती? (रेशमी०–राम० वर्मा, 178)।

गिनती में गिना जाना—दे० गिनती में आना।

गिनती में लाना, -समझना—आदर करने या महत्त्व देने योग्य समझना। प्र० तुम्हारे भैया तो मुझे कोई गिनती में लाते ही नहीं।

गिनती में समझना—दे० गिनती में लाना।

गिनती लेना—गिनना। प्र० एक बार सबकी गिनती तो ले लो।

गिनती होना—(1) गण्यमान्य होना। प्र० मैं सब समझता हूँ। अब तुम्हारी भी गिनती होने लगी है, मुझ जैसे गरीब को अब क्यों पूछोगे?

(2) विशेष वर्ग या सम्प्रदाय का समझा जाना। प्र० तुमने यदि अपनी आदत नहीं सुधारी तो शीघ्र ही तुम्हारी गिनती धूर्तों में होने लगेगी।

गिनना—दे० गिनती गिनना।

गिना जाना—माना जाना। प्र० तुम्हें पता नहीं, वे बड़े विद्वानों में गिने जाते हैं।

गिनाना—मानना; मान्यता देना। प्र० उनके व्यवहार इत्यादि से उसे लगा शायद ये लोग बहुत निचले वर्ग से आये हैं और ईसाई होने के बाद ही एकदम साहबी गुण ग्रहण करके अपने को ऊपर वालों में गिनना चाहते हैं (उखड़े०–यादव, 2)।

गिने गन्ने—आवश्यकता भर। प्र० भाई जान, अपने पास तो गिने गन्ने हैं, न लुटाने को इफरात है और न किसी के सामने हाथ पसारने की मजबूरी।

गिने-गिनाए, -चुने, -मिने—थोड़े से। प्र० भारतमित्र अकेला पत्र था और उस समय हिन्दी लेखक भी गिने-मिने थे (गु० नि०–बा० मु० गु०, 338)।

गिने-चुने—दे० गिने-गिनाए।

गिने-मिने—दे० गिने-गिनाए।

गिन्नी खाना या खिलाना—पतंग का चक्कर काटना या कटाना।

गिरगिट की तरह रंग बदलना, गिरगिटपन—बहुत जल्दी सिद्धान्त बदलना। प्र० ज्ञान के गिरगिटपन के ऐसे-ऐसे शत-शत उदाहरण सहज ही पेश किये जा सकते हैं (अपनी०–उग्र, 51); दरोगा जी आज पल-पल बाद गिरगिट के समान रंग क्यों बदल रहे थे? (ब्रह्म०–दे० स०, 95)।

गिरगिट की तरह होना—बहुत दुर्बल होना। प्र० एक तो आप ही गिरगिट

की तरह हो, दूसरे कलेजे पर जोर पड़ने से सूखकर अंठई हो जाओगे (दे० हु.-प्रभाव०, 114)।

गिरगिटपन—दे० गिरगिट की तरह रंग बदलना।

गिरता-पड़ता—ज्यों-त्यों; किसी तरह। प्र० वह गिरिस्ती और प्रैक्टिस गिरती-पड़ती चलने भी लगी है (सुनीता-जैनेन्द्र, 5)।

गिरती का जमाना—खराब आर्थिक स्थितिवाला जमाना। प्र० इस गिरती के जमाने में, थोड़ी बहुत किताबें लोग जरूर ही खरीदते हैं (बूंद०-नागर, 220)।

गिरती हालत, गिरते दिन—बुरे दिन। प्र० बड़े कष्ट की दशा में पड़कर भी ऐसे लोग धीरज के साथ चुपचाप अपने गिरे दिन की दुर्गति भोग लेते हैं (भट्ट नि०-बा० भट्ट, 26); गिरती हालत के होने पर भी थे तो आखिर वे मालिक ही ना? (बल०-नागा०, 69)।

गिरते दिन—दे० गिरती हालत।

गिरना—(1) पतन होना। प्र० एक बार इसके ग्राहक भी दो डेढ़ हजार के लगभग हो गये थे × × इतने पर भी यह पत्र गिरा (गु० नि०-बा० मु० गु०, 335); मैं डर रहा था कि मैं गिर रहा हूँ (चेतन-अश्क, 212)।

(2) तुच्छ प्रमाणित होना। प्र० दिग्गज विद्वानों के साथ पत्र-व्यवहार में आर्य-समाज के पक्ष को पंडित जी ने गिरने न दिया (पद्म पराग-पद्म० शर्मा, 89)।

(3) लालायित होना। प्र० मजदूरों को पैसे की पकड़ नहीं होती, काम से जरा फ़ुरसत मिली कि कोई पान पर गिरा, कोई सिगरेट पर दौड़ा (रंग० (1)-प्रेमचंद, 229)।

(4) दाम में कमी होना। प्र० नतीजा ई भया कि चाँदी ससुरी रुपै तोले से नीचे गिर गयी है (अमृत०-नागर, 34)।

गिरफ्त करना—दोष निकालना। प्र० तुम हर काम, हर चीज़ में गिरफ्त क्यों करते हो?

गिरफ्त में आना—वश में आना। प्र० एक बार उसे मेरी गिरफ्त में आने दो फिर देखना, छठी का दूध याद आ जायेगा।

गिरफ्त में लेना—वश में करना। प्र० मैंने उसे पूरी तरह अपनी गिरफ्त में ले लिया है।

गिरफ्तारी निकलना या निकलवाना—गिरफ्तार करने का वारंट निकलना या निकलवाना। प्र० पिछले तीन महीनों से उसके नाम गिरफ्तारी निकली हुई है पर उसका पता ही नहीं है।

गिरवी पड़ना—किसी के अधीन होना। प्र० मैं क्या उनके गिरवी पड़ा हूँ कि वे जो कहेंगे, करता ही जाऊँगा?

गिरवी रखना—किसी के अधीन करना। प्र० उसने तो जैसे अपने आप को गिरवी रख दिया है।

गिरह कटना या काटना—जेब से पैसा निकलना या निकाल लेना। प्र० क्या बतलाऊँ, उस दिन बस में मेरी गिरह कट गयी, सैंतीस रुपये निकल गये।

गिरह का—दे० गांठ का।

गिरह का दाम—पास का पैसा। प्र० तुम्हारी गिरह का दाम तो लग नहीं रहा है फिर तुम क्यों इतनी हाय-हाय कर रहे हो?

गिरह का बल होना—धन-दौलत का अभिमान या सहारा होना। प्र० उन्हें अपनी गिरह का बल है, उसी के भरोसे वे इतनी अकड़ दिखलाते हैं।

गिरह खाना—किसी बात का उलझ जाना। प्र० साफ बात यह है कि अब तुम दोनों में बात गिरह खा गयी है। पहले उसे सुलझाने की कोशिश करो।

गिरह खुलना—दे० गांठ खुलना।

गिरह खोलना—दे० गांठ खोलना।

गिरह टटोलना—किसी की सामर्थ्य देखना। प्र० पहले मैं उनको गिरह टटोल लूँ फिर उसी के अनुसार अपनी मांग पेश करूँगा।

गिरह पड़ना—दे० गांठ पड़ना।

गिरह पर गिरह पड़ना—दे० गांठ पर गांठ पड़ना।

गिरह बांधना—दे० गांठ बांधना।

गिरह में कौड़ी न होना—पास में एकदम पैसा न होना। प्र० गिरह में कौड़ी तो है नहीं और चाहते हो मौज करना।

गिरह में दम होना, -दाम होना—पास में पैसा होना। प्र० गिरह में दम हो तो चलो मेरे साथ।

गिरह में दाम होना—दे० गिरह में दम होना।

गिरह में बांधना—दे० गांठ में बांधना।

गिरह लगाना—प्रण करना; निश्चित करना। प्र० मैंने तो गिरह लगा ली है कि अब उनके यहाँ भूलकर भी न जाऊँगा।

गिरह से जाना—दे० गांठ से जाना।

गिरहकट—ठग; धोखा देकर अपना लाभ करनेवाला। प्र० शिवराम तो नामी गिरहकट है, तुम्हें नहीं पता?

देखिए "**गांठ**" के मुहावरे भी।

गिरा मन—उदास और निरुत्साहित मन। प्र० बालक ने गिरे हुए मन से कहा—× × (मान० (2) प्रेमचंद, 246)।

गिरा हुआ—पतित; तुच्छ; आदर्श से च्युत। प्र० शायद तुमने गिरे हुए आदमी पर ठोकर मारना मुनासिब न समझा (ग़बन-प्रेमचन्द, 290)।

गिराना—भ्रष्ट करना। प्र० मेरे मीत तुम किसी को उठाने में असमर्थ, गिराने में ही कमाओ नाम (बुद्ध०-बच्चन, 105)।

(भाव में) गिरावट आना—दाम में कमी होना। प्र० चावल और चीनी में आजकल कुछ गिरावट आ गयी है।

गिरी आवाज़—धीमी निष्प्राण-सी आवाज़। प्र० उत्तर में मास्टर ने उससे भी गिरी हुई आवाज़ में कहा— × × (एक म्यान०-नानक, 151)।

गिरी दशा—हीनावस्था। प्र० मान लीजिए मेरी स्थिति आर्थिक दृष्टि से बहुत गिरी होती (जहाज०-इ० जोशी, 375)।

गिरी-पड़ी—(1) व्यर्थ पड़ी हुई। प्र० मुझे ये सब गिरी-पड़ी चीजें नहीं

लेनी हैं।

(2) बेसहारा; तुच्छ। प्र० अच्छा आपने क्या मुझे ऐसी गिरी-पड़ी मान रखा है कि मैं आपके हर उचित-अनुचित प्रस्ताव को मान लूँगी।

गिरे दिन—बुरे दिन; आर्थिक दृष्टि से खराब दिन। प्र० ऐसे गिरे दिन में कौन किसकी सहायता कर सकता है।

गिरे पड़ना—किसी चीज को पाने के लिये अत्यन्त लालायित होना। प्र० तुम्हारी यह बड़ी बुरी आदत है कि हर चीज पर गिरे पड़ते हो चाहे वह तुम्हारे काम की हो या न हो।

गिर्दा बांधना, -लगाना—चारों ओर से घेरना। प्र० गिर्दा बांध दो ताकि जानवर इधर-उधर न भागें।

गिर्दा लगाना—दे० गिर्दा बांधना।

गिलहरी का रंग लाना—उपयुक्त स्थिति को प्राप्त होना। प्र० अब रंग लाई गिलहरी—अरे भई, अब तो आ ही गए हो, ऐब देख लेना और समझ लेना (मा—कौशिक, 184)।

गिल्लियाँ गढ़ना—व्यर्थ बकवाद करना। प्र० तुम्हारा यह गिल्लियाँ गढ़ना मुझे बिलकुल अच्छा नहीं लगता।

गिल्ली-डंडा खेलना—बेकार समय नष्ट करना। प्र० अब तक का सारा समय मैंने गिल्ली-डंडा खेलने में ही लगा दिया।

गीत गाना—(1) प्रशंसा करना। प्र० गालियाँ हैं आज उनको मिल रहीं। गीत जिनका देवते थे गा रहे (चुभते०—हरिऔध, 83)।

(2) अपनी बात कहे जाना। प्र० तुम अपना ही गीत गाओगे या किसी और की भी सुनोगे?

गीत गाना खुशी मनाना—मौज-मस्ती में दिन बिताना।

गीदड़—कायर। प्र० भैरो—मुहल्ले वाले समझते थे, मुझे गवाह ही न मिलेंगे। एक—सब गीदड़ हैं, गीदड़ (रंग० (2)—प्रेमचंद, 131)।

गीदड़ का शेर बनना—कायर का बहादुरी दिखाना। प्र० देख शेर गीदड़ का बनना हँसते-हँसते लोट गए हम (बोल०—हरिऔध, 106)।

गीदड़ बोलना, -रोना—(1) निर्जन होना; वेरौनक होना। प्र० सरेशाम द्वार पर गीदड़ रोने लगते हैं पर किसी को गम नहीं (गोदान—प्रेमचंद, 353)।

(2) अपशकुन होना। प्र० कई दिनों से गीदड़ बोल रहे थे। माँ का मन किसी आशंका से कांप-कांप जाता था।

गीदड़ रोना—दे० गीदड़ बोलना।

गीदड़-भभकी—झूठा भय। प्र० यहाँ चाहे जो कह लो परन्तु अदालत में तुम्हारी गीदड़ भपकी नहीं चल सकती (परीक्षा०—श्री० दास, 91); जनता इतनी समझदार तो है नहीं कि इन रहस्यों को समझे। गीदड़-भवकी में आ जायगी (मान० (3)—प्रेमचंद, 294)।

गीदड़ों के बताये बेर—(1) न मिलनेवाली वस्तु। प्र० तुम भी किस चक्कर में पड़ गये। यह गीदड़ों के बताये बेर हैं, इनकी आशा मत करो।

(2) धोखा। प्र० तुम भी गीदड़ों के बताये बेर पर विश्वास कर बैठे।

गीली आँख—अश्रुपूर्ण नेत्र। प्र० जो बालिका एक दिन छै दम्म के कंचुक के लिए लालायित हो गीली आँखों से पिता से याचना कर चुकी थी, आज जीवन के ऐसे संघर्ष में आ पड़ी थी, जिसकी कदाचित् ही कोई युवती संभावना कर सकती है (वैशाली० (1)—चतुर०, 29)।

गीली कहानी—करुणापूर्ण जीवन-गाथा। प्र० रानी की सब दिन गीली रही कथा है (चक्र०—दिनकर, 23)।

गुंचा खिलना—खूब नाच-रंग होना। प्र० आजकल उनके यहाँ खूब गुंचा खिल रहा है।

गुंजलक की बातें—पेचदार बातें। प्र० रामनिवास जी की गुंजलक की बातों में तुम मत आ जाना।

गुंजा-माणिक एक समान करना—अच्छे और बुरे को एक समान समझना।

गुंमी बांधना—पाल की डोर खींचकर ठीक से बाँधना (हि० श० सा०)।

गुजर जाना—मृत्यु होना। प्र० जब की बात है, तब पं० भगवानदीन गुजर चुके थे (कुल्ली०—निराला, 36)।

गुजरना—संकट या विपत्ति पड़ना। प्र० ठीक है, जो कुछ गुजरेगी उसे सहना तो पड़ेगा ही।

गुजरी लगना या लगाना—हाट लगना या लगाना।

गुजारा—खर्च भर या गुजर करने भर को। प्र० ×× उनकी दोनों बेगमों और बेटों को सिर्फ गुजारा मिलेगा (सात०—नागर, 99)।

गुजारा लेना—खर्च के लिए रुपए लेना। प्र० सात फेरों के बल पर गुजारा लेना भी उसे अत्यन्त लज्जा-जनक प्रतीत होता था।

गुजारे की शक्ल निकलना या निकालना, -सूरत निकलना या निकालना—जीविका का कोई उपाय होना या करना। प्र० गुजारे की कोई सूरत निकलती दिख नहीं रही है।

गुजारे की सूरत निकलना या निकालना—दे० गुजारे की शक्ल निकलना या निकालना।

गुटबंदी करना या होना—किसी के विरुद्ध दल बनाना। प्र० मुझे उनके खिलाफ़ गुटबंदी करनी पड़ेगी (गोदान—प्रेमचन्द, 234)।

गुट्ट करना—दल बनाना। प्र० आफिस में बहुतों ने अपना-अपना गुट्ट कर रखा है।

गुट्ट बांधना—एक साथ; दल बांधकर। प्र० तुम लोग तो हर कहीं गुट्ट बांधकर चलती हो।

गुट्टी पड़ना—दुर्भाव होना। प्र० उन लोगों में आपस में गुट्टी पड़ गयी है।

गुड़ का गुड़ और चीनी का चीनी होना—सब वस्तु का अपना-अपना महत्त्व है। प्र० अरे भाई गुड़ गुड़ है, चीनी चीनी है। तुम सबके एक-सा होने का आग्रह क्यों करते हो?

गुड़ के बाप कोल्हू—जन्म देनेवाला; उत्तम संतान का जड़ पिता। प्र० इनके गुड़ के बाप कोल्हू ही, खुदा के फजल से जिन्दा हैं (रंग०—प्रेमचन्द, 229)।

गुड़ खाकर गूंगा होना—अनुभव करना पर कह न पाना। प्र० नैनन्ह

ढरहिं मोति औ मूंगा । जस गुर खाइ रहा होइ गूंगा (पद०–जायसी, 11/7) ।

गुड़ खाना गुलगुले से घिनाना, -परहेज करना—एक ही प्रकार का एक काम तो करना पर दूसरे से बचना । प्र० इसका अर्थ यह है कि आप गुड़ खाते हैं, गुलगुले से परहेज करते हैं (कर्म०–प्रेमचंद, 104) ।

गुड़ खाना गुलगुले से परहेज करना—दे० गुड़ खाना गुलगुले से घिनाना ।

गुड़ खायेगा सो अंधेरे में जायेगा, -कान छेदावेगा—किसी लाभ के लिए कष्ट सहना । प्र० इन बातों में क्या रखा है ? गुड़ खाया है तो कान छिदाने पड़ेंगे (प्रेमा०–प्रेमचंद, 179) ।

गुड़ खायेगा सो कान छेदावेगा—दे० गुड़ खायेगा सो अंधेरे में जायेगा ।

गुड़ गोंइठा करना या होना, गुड़ गोबर करना या होना—बना हुआ काम बिगाड़ देना । प्र० यह डम्फास भाई मेरा जो है न, सब गुड़ गोबर करनेवाला निकला (परती०–रेणु, 322) ।

गुड़ गोबर करना या होना—दे० गुड़ गोंइठा करना या होना ।

गुड़ दिखाकर ढेला मारना—लोभ दिखलाकर काम करा लेना फिर उपेक्षा करना ।

गुड़ दिये (से) मरनेवाले को जहर न देना—आसानी से काम निकलनेवाला हो तो सख्ती न करना । प्र० जो मधु मरै, न मारिये माहुर देइ सो काउ । जग जिति हारे परसुधर, हारि जिते रघुराउ (दोहा०–तुलसी, 433); मगर फिर सोचे कि गुड़ से जो मरे तो ज़हर क्यों दें (आज़ाद०–प्रेमचन्द, 222) ।

गुड़ न तीता होना न मीठा—कोई असर न होना; व्यर्थ होना । प्र० एक शीशी गोली खा डाली । न गुड़ तीता न मीठा-सच मानिये मेम साहब ! आपकी दवा मेरे-जैसे उजड्डों के लिए नहीं (तितली–प्रसाद, 23–24) ।

गुड़ भरा हंसिया—असमंजस का काम जिसे न करते बने न छोड़ते । प्र० मैं तय नहीं कर पा रहा हूं कि इस गुड़ भरे हंसिये को उठाऊं या नहीं ।

(बहुत) गुड़ में कीड़े पड़ना—अत्यधिक प्रेम या सुख में बाधा या वैमनस्य होना । प्र० कभी-कभी गुड़ में भी कीड़े पड़ते ही हैं, उसके लिए भी तैयार रहना ।

गुड़ होने से चींटियों का आना, -मक्खियों का आना—लाभ के स्थान पर बहुतों का जुटे रहना । प्र० तुमने यह न सोचा था कि गुड़ होने से मक्खियां आयेंगी ही ?

गुड़ होने से मक्खियों का आना—दे० गुड़ होने से चींटियों का आना ।

गुड़-चींटा होना—किसी काम या चीज़ से एकदम चिपटे रहना । प्र० सूरदास अबला हम भोरी, गुर चींटी ज्यौं पागी (सू० सा०–सूर, 4576); और उस याज्ञवल्क्य को देखो, इन विदेहों के पीछे कैसे गुड़ का चिऊंटा बनकर चिपटा है (वैशाली० (1)–चतुर०, 144) ।

गुड़-दूध से नहाना—ऐश्वर्य में रहना । प्र० अभी तक खाने को नहीं जुड़ता था, अब गुड़-दूध से नहावेगी (मृग०–वृं० वर्मा, 202) ।

गुड़िया का खेल, -ब्याह—खेलवाड़; मामूली काम । प्र० तुम हर काम को गुड़िया का ब्याह समझती हो क्या ?

गुड़िया का ब्याह—दे० गुड़िया का खेल ।

गुड़िया खेलना—बच्ची होना । प्र० अभी कल दोनों साथ-साथ गुड़िया खेलती थीं (निर्मला–प्रेमचन्द, 3) ।

गुड़िया संवारना—वित्त अनुसार लड़की का विवाह करना । प्र० अपनी-अपनी गुड़िया तो सभी को संवारनी पड़ती है ।

गुड़िया-सरकार—जनानी हुकूमत । प्र० अरे बंधु, आजकल तो हमारी गुड़िया सरकार ने भी वह जोर दिखलाया है कि हम-तुम सब पस्त हो गये ।

गुड़िया-सी—छोटी और सुन्दर । प्र० कैसी गुड़िया-सी लग रही थी कि पूछो मत ।

गुड़ी कट जाना, गुड्डी कन्ने से कट जाना—किसी काम या व्यक्ति का हाथ से निकल जाना । प्र० प्यारे, अब तुम्हारी गुड़ी कट गयी है, चुपा कर बैठ जाओ ।

गुड़ी (गुड्डी) की डोर काट देना, -तोड़ देना—कोई सम्बन्ध न रखना । प्र० सूरदास करि काज आपनौ, गुडी डोर ज्यौं तोरी (सू० सा०–सूर, 3979) ।

गुड़ी की डोर तोड़ देना—दे० गुड़ी की डोर काट देना ।

गुड्डा बांधना—निन्दा करते फिरना । प्र० तुम्हें और कोई काम तो है नहीं, चारों ओर उसका गुड्डा बांधते फिरो ।

गुड्डी कन्ने से कट जाना—दे० गुड़ी कट जाना ।

गुड्डी चढ़ना—ख्याति होना; बोलवाला होना । प्र० पिछले एक-डेढ़ साल में उसकी काफी गुड्डी चढ़ी हुई है (अंधेरे०–राकेश, 172) ।

गुड्डी ढील देना—नियन्त्रण कम कर देना । प्र० मैंने तो बरसों से गुड्डी ढील दी है, जिसकी जो मर्जी आये, करे ।

गुण करना, -देना—फायदा करना; असर डालना । प्र० काढ़ा पी लो, गुण करेगा ।

गुण की खान, -के धाम—अनेक गुणोंवाला । प्र० मायाधीस ज्ञान गुन धामू (राम० (बाल)–तुलसी, 130); सिसौदिया राजवंश क्षत्रिय-कुल का अभिमान है, तिस पर हमारी कृष्णा रूप और गुण की खान है (विष०–प्रेमी, 15) ।

गुण के धाम—दे० गुण की खान ।

गुण गाना—प्रशंसा करना; सद्गुणों का स्मरण करना । प्र० कबीर सूता क्या करे, गुण गोविन्द के गाइ (कबीर ग्रंथा०–कबीर, 6), रहति रसना नाम रटि-रटि, कंठ करि गुन गान (सू० सा०–सूर, 4196); नेति-नेति कह जासु गुन करहिं निरन्तर गान (राम० (बाल)–तुलसी, 20); यह भी तो उसी का गुण गाते हैं (भा० ग्रंथा० (1)–भारतेन्दु, 263) ।

गुण छांदना—गुण और महत्त्व को समझना । प्र० तुम किसी के भी गुण को छांदने में सर्वथा असमर्थ हो ।

गुण देना—दे० गुण करना ।

गुण न भूलना—उपकार को न भूलना । प्र० मैं कभी किसी के गुण को नहीं भूलता ।

गुण मानना—एहसान मानना । प्र० मैं आपका बहुत गुण मानता हूँ कि आपने मेरे लिए इतना किया ।

गुण में अटक जाना—गुणों से मोहित हो जाना । प्र० लोला लाल ललित गुन अटक्यो चित नहि चलत चलाया (ठाकुर) ।

गुण-ग्राहक—गुण की कद्र करनेवाला । प्र० जब गुण कूं गाहक मिलै, तब गुण लाख बिकाइ (कबीर ग्रंथा०—कबीर, 78); समरथ सरनागत हितकारी । गुण गाहकु अवगुण अघ हारी (राम० (अ)—तुलसी, 655); सूरदास गुन के गाहक हरि, रसना गाइ अनेक गए तरि (सू० सा०—सूर, 1010); बिनु गुन लहै न कोइ सहस नर गाहक गुन के (कुण्ड०—गिरधरदास, 9) ।

गुण-ग्राहकता—गुणों की कद्र करने की क्षमता । प्र० ईर्ष्या में गुण-ग्राहकता नहीं होती (रंग० (1)—प्रेमचंद, 76) ।

गुणों की पंक्ति—गुणावली; विभिन्न गुण । प्र० जासु बिरहं सोचहु दिन राती । रटहु निरन्तर गुन गन पांती (राम० (लं)—तुलसी, 1018) ।

गुत्थमगुत्था होना—आपस में लपटना; झगड़े में पटका-पटकी होना; लड़ना । प्र० बाबू सत्यनारायण का झपाटेदार हाथ उठा, सुमेसरदीन ने लपककर रोका और दोनों में गुत्थम-गुत्था हो गयी (अमृत०—नागर, 582) ।

गुत्थी खुलना या खोलना, -सुलझना या सुलझाना—किसी समस्या, उलझन या दुर्भाव को दूर करना या होना । प्र० किसी ने राष्ट्रभाषा के महत्त्व को समझाया और किसी ने राजनीति की गुत्थी को सुलझाया (पद्म पराग—पद्म० शर्मा); गुत्थियाँ किस तरह सुलझ सकतीं जब रहे हम उलझ-उलझ जाते (चुभते०—हरिऔध, 127) ।

गुत्थी पड़ना—(1) दुराव होना । प्र० अब तो ऐसी गुत्थी पड़ गयी है कि क्या करूँ, समझ में नहीं आता ।

(2) उलझन होना । प्र० देखिए प्र० (1) ।

गुत्थी सुलझना या सुलझाना—दे० गुत्थी खुलना या खोलना ।

गुथ पड़ना—झगड़ पड़ना । प्र० बात करते-करते दोनों अचानक गुथ पड़े ।

गुदगुदाना उतना जहाँ तक हंसी आए—मज़ाक वहीं तक करना कि वह अप्रिय न हो जाय ।

गुदगुदी होना—आनन्द से सिहरन होना । प्र० बूढ़े महंगू के मन में भी गुदगुदी होने लगी (तितली—प्रसाद, 137) ।

गुदड़ी—हिम्मत । प्र० उनकी क्या गुदड़ी है जो मेरे लड़के से शादी करें (सरहिन्दी; हिं० श० सा०) ।

गुदड़ी का (में) लाल, गूदड़ का गिंदौरा—किसी श्रेष्ठ वस्तु का ऐसी साधारण जगह होना जहाँ उसके होने की कभी आशा न की जाती हो । प्र० लाल बहादुर शास्त्री तो गुदड़ी के लाल निकले ।

गुदड़ी बाजार—पुराने सामान का बाजार । प्र० ये कुर्सियाँ और टेबुल गुदड़ी बाजार से लाया हूँ ।

गुदारे लगना—(1) काम पूरा होना । प्र० इसका काम किसी तरह गुदारे लगे तब न ।

(2) किनारे लगना । प्र० देखते-देखते नाव गुदारे लग गयी ।

गुद्दी की नागिन—गुद्दी में बालों की भौंरी जो अशुभ मानी जाती है । प्र० यह गुद्दी की नागिन कहाँ डसेगी, कौन कहे ।

गुद्दी नापना—सिर के पीछे थप्पड़ मारना । प्र० मैं तुम्हारी ऐसी गुद्दी नापूंगा कि याद रखोगे ।

गुद्दी पर बुद्धि होना, -पीछे मति होना—मूर्ख होना; अवसर पर ठीक काम या बात न करना । प्र० तुम्हारी बुद्धि तो गुद्दी पर है, तुम कभी कोई सीधी बात सोच सकते हो ?

गुद्दी पीछे मति होना—दे० गुद्दी पर बुद्धि होना ।

गुद्दी में आँखें होना—(1) बिना देखे काम करना । प्र० तुम्हारी आँखें तो गुद्दी में हैं, सामने की चीज तुम्हें दिखे कैसे ।

(2) दे० गुद्दी पर बुद्धि होना ।

गुद्दी से जीभ खींचना, -निकालना—कड़ी सजा देना । प्र० अब तुमने एक शब्द भी और कहा तो गुद्दी से तुम्हारी जीभ खींच लूंगा ।

गुद्दी से जीभ निकालना—दे० गुद्दी से जीभ खींचना ।

गुन-पूरी—गुणवती । प्र० ताई की पतोहू बड़ी गुन-पूरी है ।

गुनाह-बेलज्जत होना—मुफ्त में बदनाम होना । प्र० अगर आप होशियार हैं तो उसे लेकर फायदा उठायेंगे, नहीं इधर-उधर के धक्के खायेंगे । आपके ऊपर गुनाह-बेलज्जत की मसल साबिक़ आयेगी (ग़बन—प्रेमचंद, 285) ।

गुपचुप की बात—गुप्त बात । प्र० कोई युवती इतनी सती नहीं हो सकती । कुछ गुपचुप की बात अवश्य है (मान० (2)—प्रेमचंद, 331) ।

गुपुत बूझना—भेद जानना; मतलब समझना । प्र० ऊधो ! बूझति गुपुत तुम्हारी (सू० सा०—सूर, 137) ।

गुप्ती चलाना—छिपकर वार करना ।

गुफा में बैठना—संन्यास लेना । प्र० आप जाकर गुफा में बैठ जाइए, मैं तो घर-गृहस्थी सम्हालने के लिए हूँ ही ।

गुबार उतारना, -निकालना—मन की खीझ प्रकट करना । प्र० मैं गुस्से में भभक लेता हूँ और बस, मन का गुबार निकल जाता है (कल्याणी —जैनेन्द्र, 121) ।

गुबार निकालना—दे० गुबार उतारना ।

गुबार भड़कना—गुस्सा तेज़ होना । प्र० ×× बाबू सत्यनारायण का गुबार दुबारा भड़का (अमृत०—नागर, 585) ।

गुमराह—गलत तरीके से जीवन जीनेवाला । प्र० तुम तो शुरू से ही गुमराह रहे हो, तुम्हें क्या कहूँ ।

गुमसुम बैठना, -रहना—चुप रहना । प्र० मैं क्या करती ? गुमसुम बैठी सब कुछ सुनती रही ।

गुम-सुम रहना—दे० गुम-सुम बैठना ।

गुमान और टिमाक तेलहंडे तर चला जाना—सब घमंड चूर हो जाना । प्र० मगर जब ब्रह्म-पिसाच नाच नचाने लगेगा, तब सब गुमान और टिमाक तेलहंडे तर चला जायगा (दे० दु०—शिव०, 34) ।

गुर निकलना, -हाथ लगना—तरीका पता चल जाना। प्र० उसे अपनी प्रतिष्ठा का गुर हाथ लग गया? (मान० (8)–प्रेमचंद, 242)।

गुर हाथ लगना—दे० गुर निकलना।

गुरिल्ला युद्ध—खुलेआम लड़ाई न करके छिपकर वार करना। प्र० चीन वाले गुरिल्ला युद्ध करने में माहिर हैं।

गुरु करना—गुरु बनाना। प्र० सूर कहाँ गुरु कौन करै अलि, कौन सुनै मत फीको (सू० सा०–सूर, 4148)।

गुरु गुड़ चेला चीनी होना, -सेर भर तो चेला सवा सेर होना—गुरु से चेला बढ़कर होना। प्र० गुरु गुड़ ही रहे, चेला शक्कर हो गये (मान० (6)–प्रेमचंद, 249)।

गुरु से कान फुंकवाना—गुरुमंत्र लेना। प्र० गुरु से कान फुंकवाये बिना निस्तार नहीं है।

गुरु सेर भर तो चेला सवा सेर होना—दे० गुरु गुड़ चेला चीनी होना।

गुरु होना—(1) बढ़कर होना। प्र० तुम्हारे लाला साहब के गुरु हैं (सु० सु०–सुदर्शन, 153)।

(2) चालबाज़ या धूर्त होना। प्र० तुम उन्हें जानते नहीं, वे बड़े गुरु हैं।

गुरु-घंटाल—अत्यन्त चालाक। प्र० अर्वाचीन राष्ट्रनीति के गुरु-घंटाल जिस समय अपनी किसी गहरी चाल से किसी देश की निरपराध जनता का सर्वनाश करते हैं, उस समय वे दया आदि दुर्बलताओं से निर्लिप्त, केवल बुद्धि के कठपुतले दिखाई पड़ते हैं (चिन्ता० (1)–शुक्ल, 157)।

गुरु-दक्षिणा देना—अच्छी सीख देनेवाले को बदले में कुछ देना। प्र० इस नेक सलाह के बदले में गुरु-दक्षिणा क्या दोगे, यह तो सुनूं।

गुरु-मंत्र देना—पक्की और लाभदायक सलाह देना। प्र० उन्होंने तो मुझे ऐसा गुरु-मंत्र दे दिया है कि अब लालाजी को खुश करना बड़ा आसान होगा।

गुरु-मुख होना—गुरु की ओर उन्मुख होना; गुरु का कहा मानना। प्र० कहै कबीर एकै करि करना, गुरु मुखि होइ बहुरि नहिं मरना (कबीर ग्रंथा०–कबीर, 293)।

गुरेरकर देखना—गुस्से से देखना। प्र० वह तो मेरी ओर ऐसा गुरेरकर देखने लगा कि मैं घबड़ा गया।

गुर्गे छूटना या छोड़ना, -लगना या लगाना, -होना—खुफिया पुलिस पीछे लगना या लगाना। प्र० पिछले 15 दिनों से गुर्गे छूटे हैं पर उसका पता ही नहीं चला है।

गुर्गे लगना या लगाना—दे० गुर्गे छूटना या छोड़ना।

गुर्गे होना—दे० गुर्गे छूटना या छोड़ना।

गुर्दा—हिम्मत। प्र० यह तुम्हीं लोगों का गुर्दा है कि अंजुली भर रुपये तकदीर के भरोसे गिन देते हो (गोदान–प्रेमचंद, 8)।

गुर्दा तोड़ना—घमंड चूर करना। प्र० उसका रवैया दिन पर दिन खराब होता जा रहा है, उसका गुर्दा तोड़ना ज़रूरी हो गया है।

गुर्दे का काम—साहस और शक्ति का काम। प्र० बीबी-बच्चा रखने चला है, यह नहीं जानता कि बीबी-बच्चों का पालना बड़े गुर्दे का काम है (गोदान–प्रेमचंद, 280)।

गुर्रा करना, -देना, -बताना—(1) टालमटोल करना। प्र० पिछले सप्ताह भर से वह गुर्रा दे रहा है, बात क्या है।

(2) नागा करना। प्र० रोज-रोज गुर्रा करोगे तो कैसे काम चलेगा?

(3) छुट्टी कर देना, तातील करना। प्र० उसे कल ही गुर्रा कर दो नहीं झंझट खड़ा हो जायगा।

गुर्रा देना—दे० गुर्रा करना।

गुर्रा बताना—दे० गुर्रा करना।

गुल कतरना, -काटना—(1) कोई अनोखा काम करना। प्र० तुम तो ऐसा उछल-कूद रहे हो मानो गुल कतरने ही जा रहे हो।

(2) कागज या कपड़े के बेलबूटे बनाना। प्र० सुशीला बड़े अच्छे गुल कतरती है।

(3) दीये का गुल झाड़ना। प्र० गुल कतर दो तो रोशनी तेज़ हो जाय।

गुल काटना—दे० गुल कतरना।

गुल खाना—शरीर पर गरम धातु से दगवाना। प्र० तुम्हारी खातिर वह गुल खाने तक को तैयार है, और क्या चाहिए।

गुल खिलना या खिलाना—विचित्र घटना घटना या घटाना; बखेड़ा खड़ा होना या करना। प्र० ये रियासती मामले हैं, तू देखती रह। क्या-क्या गुल खिलते हैं (गोली–चतुर०, 206)।

गुल खोदना, -बनाना—पत्थर पर खुदाई करके चित्र बनाना। प्र० दक्षिण भारत के कारीगरों ने गुल खोदने का काम बड़ी कुशलतापूर्वक किया है।

गुल दिखाना—नये-नये करिश्मे दिखाना। प्र० चुपचाप देखते चलो कि वह क्या-क्या गुल दिखाती है।

गुल देना—गरम बत्ती करके शरीर के किसी पीड़ावाले अंग को दाग देना। प्र० लगता है गुल देना ही पड़ेगा, उसके बिना दर्द न जायेगा।

गुल पड़ना—बत्ती के आगे का हिस्सा एकदम जल जाना। प्र० बत्ती में गुल पड़ गया है, जरा काट दो।

गुल फंसना या फंसाना—ताश के खिलाड़ी को दो बादशाहों या बेगमों के बीच एक एक्का मिलना।

गुल फूलना—कोई नयी बात होना। प्र० लगता है फिर कोई गुल फूला है।

गुल बंधना—(1) आग का अच्छी तरह जलना। प्र० अब गुल बंध गया है, कड़ाही चढ़ा दो।

(2) पास में कुछ धन हो जाना। प्र० कुछ गुल बंध जाय तो एक बार यात्रा कर लूं, बड़े दिनों की साध है।

गुल बनाना—दे० गुल खोदना।

गुल बांधना—तोप के मुंह में आग लगाना।

गुल मचना—शोर होना। प्र० पड़ोसियों के यहाँ आज सुबह-सुबह से बड़ा

गुल मचा हुआ है।

गुल लेना—जली वत्ती का सिरा काटना। प्र० रोशनी इतनी कम हो गयी है गुल क्यों नहीं लेते?

गुल होना—अंत होना। प्र० उसके मरने से वह वंश ही गुल हो गया।

गुल-गपाड़ा—व्यर्थ की वातें; व्यर्थ शोर। प्र० आपकी लम्वी चौड़ी फूं फां और हू-हुल्लड़ देखकर तो यही प्रतीत होने लगता है कि न जाने कैसी भारी वात आप कहेंगे पर पास जाते ही मालूम हो जाता है कि देहाती गुल-गप्पाड़े से वढ़कर कुछ नहीं है (गु० नि०–वा० मु० गु०, 452)।

गुल-गपाड़ा करना या होना, -मचना या मचाना—शोरगुल करना या होना। प्र० वड़ा गुल-गपाड़ा मचा रखा है तुम लोगों ने।

गुल-गपाड़ा मचना या मचाना—दे० गुल गपाड़ा करना या होना।

गुल-गोथना—मोटा-ताजा। प्र० वचपन में यह ऐसा प्यारा गुलगोथना-सा था कि जो देखता वही गोद में लेकर दो मिनिट खेलाना चाहता।

गुलछर्रे उड़ाना, -करना—मौज करना। प्र० हुजूर खुश हो जायें और वन्दे की आमद हो, यारों के गुलछर्रे उड़ें (प्र० पी०–प्र० ना० मिश्र, 58); यह तो नहीं होता कि पुरुष तो गुलछर्रे उड़ाये और स्त्री उसके नाम को रोती रहे (कर्म०–प्रेमचन्द, 200)।

गुलछर्रे करना—दे० गुलछर्रे उड़ाना।

गुलझट (टी) निकलना या निकालना—मनमुटाव दूर होना या करना। प्र० अव इस गुलझट को किसी तरह निकाल दो भाई।

गुलझट (टी) पड़ना—मनमुटाव होना। प्र० दोनों वहुओं में वड़ा गहरा गुलझट पड़ गया है।

गुलसट्टा मारना—मजे से वैठकर गप्प लगाना। प्र० तुम्हें और कुछ काम तो है नहीं, सारे दिन गुलसट्टा मारते रहो।

गुलाव या गुलाव का फूल—वहुत सुन्दर और सुकुमार। प्र० कहते थे, लड़का हीरे का टुकड़ा, गुलाव का फूल है (लिली–निराला, 11)।

गुलाव चटकना—(1) गुलाव का खिलना। प्र० वसन्त ऋतु! प्रकृति ने नया रूप धारण किया, आमों में मौर लगी, गुलाव चटके।

(2) लड़की का युवती होना। प्र० अव तो गुलाव चटक रहा है, पूरा ध्यान रखना।

गुलाव छिड़कना—गुलावजल छिड़कना; गुलावजल छिड़कने की रस्म करना।

गुलाव में कांटा होना—अच्छे व्यक्ति में भी कुछ ऐव होना। प्र० यह नहीं भूलना चाहिए कि गुलाव में भी कांटे होते हैं।

गुलावी—न अधिक, न न्यून; हल्का। प्र० गुलावी नशे में विचारों का तार वंधा (गु० नि०–वा० मु० गु०, 234); गर्मी समाप्त हो चुकी थी और गुलावी जाड़ा पड़ने लगा था (इंस्टा०–भग० वर्मा, 48)।

गुलावी आँखें—नशे से लाल आँखें।

गुलावी आना—चेहरे पर लाली आना। प्र० उनके विदेश से लौटने पर एक वार मैं मिला था। खूव प्रसन्न दिखलाई पड़ते थे। चेहरे पर भी गुलावी आ गयी थी।

गुलाम करना या होना, -वनना या वनाना—अपने वश में करना या होना। प्र० नैना भए वजाइ गुलाम (सू० सा०–सूर, 2857); मेरे तमाम एहसानों के वदले में तुम्हारा यह एक एहसान मुझे जिन्दगी भर तुम्हारा गुलाम वनाए रख सकेगा (सात०–नागर, 16); वह वेचारे भी तो उसी व्यवस्था के गुलाम थे (गोदान–प्रेमचंद, 12)।

गुलाम का तिलाम—वहुत छोटा नौकर; तुच्छ। प्र० हुजूर, मैं तो गुलाम का भी तिलाम ठहरा, मेरी क्या हस्ती।

गुलाम वनना या वनाना—दे० गुलाम करना या होना।

गुलामी करना—पूरी तरह वश में होना। प्र० श्रीहरि-चरण छांड़ि विमुखनि की निसि-दिन करत गुलामी (सू० सा०–सूर, 148)।

गुलामी का खत लिखना, -पट्टा लिखना—गुलाम रहने का वचन देना। प्र० मैं पूछ सकता हूँ कि मैंने आपकी गुलामी का पट्टा कव लिखा? (टेढ़े०–भग० वर्मा, 425)।

गुलामी का पट्टा लिखना—दे० गुलामी का खत लिखना।

गुलामी की कड़ियां, -जंजीर, -वेड़ी—दासता। प्र० उसका दृढ़ विश्वास था कि गुलामी की कड़ियां कठोर होती हुई भी टूटने को ही हैं (सा० जि०–ल० प्र० सु०, 13)।

गुलामी की जंजीर—दे० गुलामी की कड़ियाँ।

गुलामी की वेड़ी—दे० गुलामी की कड़ियाँ।

गुलामी-पट्टा—गुलाम रहने की प्रतिश्रुति। प्र० मैंने तुम्हारा गुलामी-पट्टा तो लिखाया नहीं है कि जो तुम कहोगी, करना ही होगा।

गुल्ली ठोंकना—गुल्ली ठोंककर मुंह वन्द कर देना। प्र० वड़े कमरे की पाइप में गुल्ली ठोंकवा दो।

गुल्ली थमाना—रुपये देना; घूस देना।

गुल्ली वंधना—(1) जवानी आना। प्र० गुल्ली वंधे विना विवाह करना उचित नहीं।

(2) प्रौढ़ता आना।

गुल्ली-डंडा खेलना—व्यर्थ समय वर्वाद करना। प्र० तुमने अव तक सारा समय गुल्ली-डंडा खेलने में विता दिया।

गुल्ली-डंडा भूल जाना—खेल के दिनों का अंत हो जाना। प्र० जिम्मेदारी पड़ेगी न तो सव गुल्ली-डंडा भूल जायगा।

गुस्सा उड़ना, -उतरना, -काफूर होना, -ठण्डा करना या होना, -पड़ना, -निकलना, -वुझना या वुझाना, -हवा हो जाना—गुस्सा दूर करना या होना। प्र० मुख तन चितै, विहंसि हरि दीन्हो, रिस तव गई वुझाइ (सू० सा०–सूर, 297); क्या कहकर वहाँ से आये थे और यहाँ आकर मौज में आ गये? सारा गुस्सा हवा हो गया (ग़वन–प्रेमचंद, 310); साहव के सामने आते ही डिप्टी साहव का सारा गुस्सा उड़ गया (रंग० (1)–प्रेमचंद, 344); गंगाधर राव के क्रोध ने कुछ ठण्डक पाई (झांसी०–वृं० वर्मा, 49)।

गुस्सा उतरना—दे० गुस्सा उड़ना।

गुस्सा उतारना, -निकालना—(1) दूसरे के क्रोध का वदला लेना; मन की वातें कहकर अपना गुस्सा शांत करना। प्र० पिता पर अपना

क्रोध उतारकर गोबर कुछ शांत हो गया ×× (गोदान–प्रेमचंद, 17)।

(2) क्रोध में मारना या कड़ी बात कहना। प्र० अपना गुस्सा उस पर क्यों निकाल रहे हो?

गुस्सा उबलना, -चढ़ना, -बल खाना—क्रोध का आवेश होना। प्र० सत्यधन का गुस्सा उबल रहा था और बल खा रहा था (परख–जैनेन्द्र, 9)।

गुस्सा एक सौ बीस दरजे पर पहुँचना—बहुत गुस्सा होना। प्र० ख़ोजी का लफ्ज सुनना था कि ख्वाजा साहब का गुस्सा एक सौ बीस दरजे पर जा पहुँचा (आज़ाद०–प्रेमचंद, 308)।

गुस्सा काफ़ूर होना—दे० गुस्सा उड़ना।

गुस्सा खाना—गुस्सा होना। प्र० तुम बात-बात में गुस्सा क्यों खा जाते हो?

गुस्सा चढ़ना—दे० गुस्सा उबलना।

गुस्सा ठंडा करना या होना—दे० गुस्सा उड़ना।

गुस्सा ठंडा पड़ना—दे० गुस्सा उड़ना।

गुस्सा थूक देना—क्रोध दूर करना। प्र० थूक डालो इस गुस्से को, माफी माँगता हूँ (भूले०–भग० वर्मा, 444)।

गुस्सा दिलाना—ऐसा कार्य करना जिससे गुस्सा आ जाय। प्र० अब इस समय मुझे गुस्सा न दिलवाओ नहीं तो अनर्थ हो जायगा।

गुस्सा नाक पर रहना या होना—जल्दी गुस्सा होना या चिड़चिड़ाना। प्र० हर समय गुस्सा उनकी नाक पर रखा रहता है तो मैं क्या करूँ।

गुस्सा निकलना—दे० गुस्सा उड़ना।

गुस्सा निकालना—दे० गुस्सा उतारना।

गुस्सा पिघलना—गुस्सा कम होना। प्र० भोले हरों का गुस्सा पिघलने लगा (अमृत०–नागर, 373)।

गुस्सा पी जाना, -मारना—गुस्से को भीतर ही भीतर दबा जाना। प्र० बिरस बिरोध रिसिहि पै होई। रिसि मारै तेहि मार न कोई (पद०–जायसी, 8/8); राजा पर इस व्यंग्य की चोट पड़ गई, पर वे गुस्से को पीने लगे (झांसी०–वृं० वर्मा, 80)।

गुस्सा बल खाना—दे० गुस्सा उबलना।

गुस्सा बलना—बहुत गुस्सा होना। प्र० इस समय हेडमास्टर साहब का गुस्सा बल रहा है, उनके सामने न पड़ा जाय।

गुस्सा बुझना या बुझाना—दे० गुस्सा उड़ना।

गुस्सा भड़कना—दबा गुस्सा बढ़ जाना। प्र० मैं बाबूजी के सामने पड़ा तो उनका गुस्सा भड़क जायेगा।

गुस्सा मारना—दे० गुस्सा पी जाना।

गुस्सा हवा हो जाना—दे० गुस्सा उड़ना।

गुस्से के उबाल पर उबाल आना—अत्यधिक गुस्सा होना। प्र० ×× अन्दर ही अन्दर नफ़रत और गुस्से के उबाल पर उबाल और ×× ×× (चेतन–अश्क, 3)।

गुस्से के मारे भूत होना, -लाल होना, -में पगना, -में भरा होना, -से जलना, -से बोटियाँ काटना, -से भरे बैठना—बहुत अधिक क्रोधित होना। प्र० सुनहु सूर वह यहई चाहै, तापर यह रिस पागै री (सू० सा०–सूर, 1907); रंग से तो ज़रा भी लाल होना अनुचित समझा पर गुस्से से एकदम लाल हो गये (मिश्र निबन्ध०); मिश्रजी गुस्से से जल रहे हैं, जानती हो? (परती०–रेणु, 464)।

गुस्से के मारे (में) (से) लाल होना—दे० गुस्से के मारे भूत होना।

गुस्से में पगना—दे० गुस्से के मारे भूत होना।

गुस्से में भरा होना—दे० गुस्से के मारे भूत होना।

गुस्से से जलना—दे० गुस्से के मारे भूत होना।

गुस्से से बोटियाँ काटना—दे० गुस्से के मारे भूत होना।

गुस्से से भरे बैठना—दे० गुस्से के मारे भूत होना।

गुहा छी-छी होना—तकरार होना; एक-दूसरे पर कीचड़ उछालना। प्र० वहाँ तीसों दिन गुहा छी-छी होती रहती है।

गुहार लगना—पुकार पर ध्यान देना। प्र० जान प्यारे लागौ न गुहार तौ जुहार करि, जूझिहै निकसि टेक गहें पनधारे की (घन० कबित्त–घना०, 31)।

गूंगा—प्रतिवाद न करनेवाला। प्र० वह आपकी गूंगी प्रजा का एक वकील है जिसके शिक्षित होकर मुंह खोलने तक आप कुछ करना नहीं चाहते (गु० नि०–बा० मु० गु०, 210)।

गूंगी पहेली—इशारों से कही जानेवाली पहेली।

गूंगे का गुड़, -सपना—अकथनीय अनुभूति। प्र० अकथ कहांणी, प्रेम की, कछू कही न जाई। गूंगे केरी सरकरा, बैठे मुसकाई (कबीर ग्रंथा०–कबीर, 139); गूंगे कौ गुर कियौ सबनि मिलि, अबलनि कौं जु भुलावौं (सू० सा०–सूर, 4109); एक फ़ारसी का कवि यह वाक्य कह के कितनी रसज्ञता का अधिकारी है कि रसिकगण को गूंगे का गुड़ हो रहा है (प्र० पी०–प्र० ना० मिश्र, 56); बेहोशी का होश गूंगे का गुड़ है जो खानेवाला चख तो लेता है पर बखान नहीं पाता (सात०–नागर, 124)।

गूंगे का गुड़ खाना—अपना अनुभव न बता सकना। प्र० कहि न जाइ या सुख की महिमा, ज्यौं गूंगैं गुर खायौ (सू० सा०–सूर, 407)।

गूंगे का पिंगल पढ़ना—असम्भव काम होना। प्र० ज्यों गुरु गिरिधर देवकी, सुंदर दया दहेर। गुंग सकल पिंगल पढ़ै, पंगु चढ़ै गिरि मेर (नंद० ग्रंथा०–नंद, 189)।

गूंगे का सपना—दे० गूंगे का गुड़।

गूंगे की वाणी—अप्रत्याशित किन्तु अति वांछित लाभ होना। प्र० मुखु प्रसन्न मन मिटा बिषादू भा जनु गूँगेहि गिरा प्रसादू (राम० (अ)–तुलसी, 664)।

गूंगे-बहरे का संदेश—ऐसा सन्देश जिसे कहने-सुनने वाले दोनों गड़बड़ करें। प्र० तुम दोनों ने मिलकर तो गूंगे-बहरे का संदेशा कर दिया—उसने कुछ का कुछ कहा और तुमने कुछ का कुछ सुना।

गूज—प्रतिध्वनि; बाद में बना रह जानेवाला प्रभाव। प्र० महात्मा गांधी के उस भाषण की गूंज आज तक छायी हुई है।

गूंजती रहना—बाद में प्रभाव बना रहना। प्र० संगीत की वह मधुर

लहरी अब भी मेरे कानों में गूँजती रहती है।

गूदड़ का गिंदौरा—दे० गुदड़ी का लाल।

गूदा निकालना—बहुत मारना। प्र० मैं तुम्हारा गूदा निकाल कर रख दूंगा।

गूलर का कीड़ा, -भुनगा—अनुभवहीन। प्र० वह ठहरा गूलर का कीड़ा, वह क्या समझेगा।

गूलर का पेट फाड़कर जीव उड़ाना, -पेट फाड़ना, -का फल फोड़कर जीव उड़ाना, -का फल फोड़ना—गुप्त रहस्य को प्रकट करना। प्र० सूर मु बहुत कहे न रहै रस, गूलर को फल फोरे (सू० सा०–सूर, 4218)।

गूलर का पेट फाड़ना—दे० गूलर का पेट फाड़कर जीव उड़ाना।

गूलर का फल फोड़कर जीव उड़ाना—दे० गूलर का पेट फाड़कर जीव उड़ाना।

गूलर का फल फोड़ना—दे० गूलर का पेट फाड़कर जीव उड़ाना।

गूलर का फूल—दुर्लभ व्यक्ति या वस्तु। प्र० आप तो गूलर के फूल हो गये, आपके दर्शन कहाँ।

गूलर का भुनगा—दे० गूलर का कीड़ा।

गूलर गपकना—चबा-चबाकर बातें करना। प्र० तुम बस गूलर गपकते रहो।

गृद्ध-दृष्टि होना—लेने की लालसा होना; आँख लगी होना। प्र० रोरुक सौवीर पर उनकी गृद्ध-दृष्टि थी ही (वैशाली० (1)–चतुर०, 313)।

गृह-युद्ध—(1) पारिवारिक झगड़ा। प्र० लेकिन उसकी माता × × उसे समझाती रहती थीं; इसलिए गृह-युद्ध न होने पाता था (गोदान–प्रेमचंद, 155)।

(2) किसी देश या संस्था का अंदरूनी झगड़ा। प्र० हमारे देश में भी संभवतः शीघ्र ही गृह-युद्ध छिड़ेगा।

गृहस्थी का चरखा, -की चक्की—गृहस्थी की झंझटें। प्र० गृहस्थी के चरखे में पड़कर बड़े-बड़ों की नीति भी स्खलित हो जाती है (कर्म०–प्रेमचंद, 46)।

गृहस्थी का बोझ—परिवार के भरण-पोषण का खर्च। प्र० बेचारे पर अपनी ही गृहस्थी का बोझ कुछ कम नहीं × × (अमृत०–नागर, 43)।

गृहस्थी की चक्की—दे० गृहस्थी का चरखा।

गृहस्थी की बेड़ियाँ—गृहस्थी का दायित्व एवं बंधन। प्र० अभी गृहस्थी की बेड़ियाँ नहीं पड़ी हैं इसीलिए इतना उछल रहा है।

गृहस्थी चलाना—(1) गृहस्थी की व्यवस्था करना। प्र० अपने कपड़े लत्ते तक तो जतन से रख नहीं सकती, चली है गृहस्थी चलाने (मान० (1)–प्रेमचंद, 60)।

(2) गृहस्थी का खर्च चलाना। प्र० तुम्हारी गृहस्थी चलाने के लिए आज ही दिल्ली के दो प्रकाशकों को कोई अनुवाद का काम भेजने के लिए पत्र लिखता हूँ (अमृत०–नागर, 57)।

गृहस्थी जोड़ना—कमाकर गृहस्थी को भरापूरा करना। प्र० मैंने ही पेट और तन काटकर यह गृहस्थी जोड़ी है (मान० (1)–प्रेमचंद, 71)।

गृहस्थी बसाना—विवाह करना। प्र० अब तुम भी गृहस्थी बसाओ, कब तक ऐसे रहोगे?

गृहस्थी बांधना—गृहस्थी लेकर रहना; खर्च वगैरह की व्यवस्था करना। प्र० वे अपना अलग कमाते-खाते हैं, अपनी गृहस्थी बांध रहे हैं, उन्हें बुरा मानने से मतलब? (मा–कौशिक, 20)।

गृहस्थी संभालना—घर का काम-काज और देख-रेख करना। प्र० बहुओं को अपने ही सिंगार-पटार से फुर्सत नहीं मिलती, गृहस्थी क्या संभालेंगी।

गेहुँआ रंग—न बहुत गोरा न सांवला; तपा हुआ-सा रंग। प्र० खिलता गेहुँआ रंग, भारी देह, पोपला मुँह, बैठा हुआ गला और रोबीला व्यक्तित्व उनकी विशेषता है (ये कोठे०–नागर, 105)।

गेहूँ के साथ घुन पिसना—बड़ों के साथ छोटों का नाश होना। प्र० मुनि बसिठन्ह मन उपनी रीसा। जौ पीसत घुन जाइहि पीसा (पद०–जायसी, 23/4); गेहूँ संग घुन पिसैं बुरे संग दुखि भले जन (राधा० ग्रंथा०–राधा० दास, 39)।

गैर करना—पराया मानना; शत्रु मानना। प्र० आप उसे क्यों गैर किये बैठे हैं?

गैब में तलाश नहीं—जो सामने हो उसमें हुज्जत न करना और जो न हो उसके लिए व्याकुल न होना। प्र० हाजिर में हुज्जत न गैब की तलाश।

गैरत खाकर मर जाना, -से मर जाना—अत्यन्त लज्जित होना। प्र० तुमको तो गैरत खाकर मर जाना चाहिए।

गैरत खाना—लज्जित होना। प्र० वह तनिक गैरत तक नहीं खाता, कैसा बेहया है।

गैरत से मर जाना—दे० गैरत खाकर मर जाना।

गैरहाजिर दिमाग—ऐसा व्यक्ति जिसका ध्यान कहीं और हो। प्र० हुजूर, वह तो गैर-हाजिर दिमाग है, उसका क्या भरोसा।

गैर-हालत—मरणासन्न। प्र० उन दिनों पंडित जी गैर-हालत हो रहे थे।

गैल करना—साथ करना। प्र० इतनी रात को अकेली मत जाओ, मैं किसी को गैल किये देती हूँ।

गैल छोड़ना—जाने देना। प्र० गैल न छांड़ै सांवरो, क्यों करि पनघट जाउं (सू० सा०–सूर, 2061)।

गैल जाना—(1) नकल करना; अनुसरण करना। प्र० अब एक बात तो स्पष्ट दीख रही है कि समाजवाद की गैल गये ही कल्याण है।

(2) साथ जाना। प्र० कोई आपके गैल जा रहा है या आप अकेली हैं?

गैल पड़ना—छेड़-छाड़ करना। प्र० गैल मेरी पर्यो सखि री, कान्ह जाको नाउं (सू० सा०–सूर, 2071)।

गैल बताना—रास्ता दिखाना; आगे बढ़ो ऐसा कह देना; उपेक्षा करना। प्र० घायल करि अब गैल बतावै।

गैल लगे फिरना—पीछे-पीछे फिरना । प्र० तुम उनकी गैल लगे फिरो, तुम्हारा [illegible] बन जायगा ।

गैल लेना—साथ में लेना । प्र० किसी को गैल ले लो मौसी, अकेली मत जाओ ।

गोंड़ा सींजना—बारात आने पर कन्यापक्ष का न्योछावर करके रुपये-पैसे लुटाना ।

गोंदनी या गोंदी-सा लगना—(1) फलों से लद जाना । प्र० इस साल आम के पेड़ गोंदनी-सा लद गये हैं ।

(2) शरीर पर चेचक-फुंसी आदि के बहुत अधिक दानों का निकल आना । प्र० मुन्ना का पूरा शरीर फुंसियों से गोंदनी-सा लद गया है ।

गोंदा दिखाना—(1) बुलबुल लड़ाने के लिए गोलियां फेंकना । प्र० गोंदा दिखाओ तो बुलबुल आ जायेंगे ।

(2) दो आदमियों को लड़वाने का काम करना । प्र० उसे तो गोंदा दिखाने में मजा मिलता है ।

गोकुल के कन्हैया—सर्वप्रिय; मौज में रहनेवाला ।

गोज उड़ाना, -मारना—अपान वायु छोड़ना; पादना ।

गोज मारना—दे० गोज उड़ाना ।

गोज शुतर समझना—तुच्छ समझना । प्र० वह मेरी हर बात को न जाने क्यों गोज शुतर समझता है ।

गोजी की बदौलत, -के बल, -के सहारे—जबरदस्ती । प्र० अब तुम गोजी की बदौलत जो चाहे सो करवा लो, तुम्हारी मर्ज़ी ।

गोजी की रोटी खाना—दरबान का काम करना ।

गोजी के बल—दे० गोजी की बदौलत ।

गोजी के सहारे—दे० गोजी की बदौलत ।

गोजी चलना या चलाना—लाठियों से मारपीट होना या करना । प्र० वहाँ तो गोजी चल रही है, मैं क्या करता ।

गोजी सम्हालना—लड़ने को तैयार होना । प्र० वहाँ तो सभी गोजी सम्हाले बैठे हैं ।

गोझा भरना—अपना लाभ देखना । प्र० वह अपना गोझा भरने में लगा है, दूसरे की ओर नज़र डालने की फ़ुर्सत कहाँ ।

गोटियाचाली करना—षड्यंत्र करना । प्र० हर कहीं तुम गोटियाचाली करने लगते हो, यह क्या अच्छी बात है ?

गोटी उखड़ जाना—चौपड़ के खेल वगैरह में गोटी स्थान से विचलित हो जाना या मर जाना ।

गोटी करना—चाँदी के तारवाले कपड़े को जलाकर चाँदी निकालना ।

गोटी चित्त पड़ना—युक्ति सफल होना । प्र० गुट्टा जी की गोटी चित्त पड़ी (त्रीने०—रां० रा०, 158) ।

गोटी जमना या जमाना—(1) युक्ति सफल होना या करना । प्र० मैं तो इस चिन्ता में हूँ कि किसी तरह अपनी गोटी जम जाये तो चैन पाऊँ ।

(2) आमदनी की सूरत होना । प्र० देखिये प्रयोग (1) ।

गोटी पक्की होना—अपना काम पूरा होना । प्र० मुझे विश्वास है कि मेरी गोटी पक्की है ।

गोटी पड़ना—पक्ष में निर्णय होना । प्र० प्रतिरोध के प्रत्येक अवसर पर उन्हीं के नाम नेतृत्व की गोटी पड़ जाती थी (मान० (6)—प्रेमचंद, 115) ।

गोटी पिट जाना—किसी कार्य का असफल होना या समाप्त होना । प्र० अब जब सारी गोटियाँ पिट गयीं × × × तो चले हो वहाँ से मुझसे सलाह लेने (सेवा०—प्रेमचंद, 211) ।

गोटी बैठना या बैठाना, -लाल होना—(1) जीतना । प्र० लाल गोटी हो जाती है, दाँव के पड़ पाये पासे (मर्म०—हरिऔध, 88) ।

(2) युक्ति सफल होना या बैठना; मामला पटना या पटाना । प्र० गोटी बैठ गई······सोमा और बासुदेव को कालीचरन ने पटिया लिया है (मैला०—रेणु, 363) ।

गोटी मरना, -मारी जाना—(1) काम में असफल होना । प्र० मैं तो मानता हूँ कि मेरी गोटी मर गयी ।

(2) खेल में गोटी का अलग कर दिया जाना । प्र० तुम्हारी तीन गोटियाँ मर गयीं, केवल एक बची है ।

गोटी मारना—(1) गोटी वाले किसी खेल में प्रतिपक्षी की गोटी को बेकाम कर देना । प्र० एक ने दूसरे की ग़लत गोटी मार ली और महाभारत शुरू हो गया (एक चादर०—वेदी, 14) ।

(2) हराना । प्र० तुमने उसकी गोटियाँ मार लीं तो वह बेचारा क्या करता ?

गोटी मारी जाना—दे० गोटी मरना ।

गोटी लाल होना—दे० गोटी बैठना या बैठाना ।

गोटी सर करना—जीत होना । प्र० दरबार से सम्बद्ध बड़े-बड़े अमीरो-उमरा अपनी-अपनी गोटी सर करने के लिए अलग-अलग स्वार्थ चक्रों में नाच रहे थे (सात०—नागर, 127) ।

गोटी हाथ लगना—युक्ति सफल होना; लाभ होना । प्र० जी हाँ, मुबारक हो । 50 हजार की गोटी हाथ लगी (रंग०—प्रेमचंद, 50) ।

गोटी हाथ से जाना, -निकल जाना—युक्ति में असफल होना । प्र० मैं जानता हूँ कि इस बार भी गोटी मेरे हाथ से निकल गयी है ।

गोटी हाथ से निकल जाना—दे० गोटी हाथ से जाना ।

गोड़ आँसू आना—दुःख होना ।

गोड़ गिरना, -धरना, -पड़ना, -लगना—(1) अनुनय-विनय करना । प्र० जब मैं करीम चाचा के गोड़ गिरी तब अब इंतज़ाम हो सका है, इसे हिन्दी पढ़ाने का (जहाज०—इ० जोशी, 130) ।

(2) प्रणाम करना । प्र० चाचा हैं बचवा, गोड़ धर ले ।

गोड़ टूटना—असहाय होना; निराश होना । प्र० उस बेचारे का तो गोड़ टूट गया ।

गोड़ धरना—दे० गोड़ गिरना ।

गोड़ धो-धोकर पीना—सेवक बना रहना । प्र० सरकार, हम आपका गोड़ धो-धोकर पीवेंगे, इस बार माफ कर दिया जाय ।

गोड़ निकालना—घर के बाहर घूमना-फिरना आरम्भ करना । प्र० अब

तो बड़ी बहू ने भी गोड़ निकाला है।

गोड़ पड़ना—दे० गोड़ गिरना।

गोड़ पसारना—(1) मर जाना। प्र० जब मैं गोड़ पसार दूँगी तब कौन तुम्हारी देख-रेख करेगा, जरा मैं भी तो सुनूँ।

(2) उन्नति के साधन बढ़ना। प्र० इतने बरसों के कठिन परिश्रम के बाद अब कहीं जाकर गोड़ पसारने का मौका मिला है।

(3) पहले से अधिक जगह घेरना। प्र० तुमने रोका नहीं तो भाभी तो गोड़ पसारती ही जायेंगी और ऊपर की पूरी मंजिल अपने कब्जे में कर लेंगी।

(4) हिम्मत हार जाना। प्र० आपने तो अच्छा गोड़ पसार दीं।

गोड़ भरना या भराना—पैर में महावर लगाना या लगवाना। प्र० बहू, गोड़ भरवा लो, नाउन आ गयी है।

गोड़ लगना—दे० गोड़ गिरना।

गोड़धरिया करना—आरजू-मिन्नत करना। प्र० तहसीलदार साहब की बहुत गोड़धरिया की पर कोई नतीजा न हुआ।

गोड़ी आना, -पड़ना—चरण पड़ना। प्र० आपके गोड़ी आने से हम कृतार्थ हुए प्रभु।

गोड़ी करना—आमदनी करना; लाभ करना। प्र० यह खूब रही ! गोड़ी तुम लोगों ने की और बदनाम मैं हुआ।

गोड़ी जमना, -बैठना, -लगना—काम में सफल होना। प्र० भाई, मेरी गोड़ी तो जम गयी, तुम अपनी चिन्ता करो।

गोड़ी जमाना—युक्ति भिड़ाना। प्र० तुम भी अपनी गोड़ी जमाओ न।

गोड़ी टूटना—चलने की ताकत न होना; थक जाना। प्र० मेरी गोड़ी तो टूट गयी, मुझसे अब नहीं चला जायगा।

गोड़ी तोड़ना—थकना। प्र० तुम क्यों बेकार गोड़ी तोड़ते हो ? उनके पास जाने से कोई लाभ नहीं होगा।

गोड़ी पड़ना—दे० गोड़ी आना।

गोड़ी बैठना—दे० गोड़ी जमना।

गोड़ी लगना—दे० गोड़ी जमना।

गोड़ी हाथ से जाना—कुछ हाथ न लगना। प्र० बेटा, मेरे हाथ से तो गोड़ी गयी, मैं तो बरबाद हो गया।

गोत की लाज रखना—वंश की मर्यादा का खयाल रखना। प्र० बेटा, अपने गोत की लाज रखना, इसी की खातिर मैंने अपने आपको मिटा दिया।

गोत में पड़ना—बेहोश होना। प्र० वह तो तभी से गोत में पड़ा है।

गोता खाना—(1) लीन होना। प्र० मैं यों ही बैठा-बैठा अपने सोच-विचारों में गोते खा रहा था (मा० मा० (1)–कि० गो०, 12)।

(2) धोखा खाना। प्र० मैं तो बिना मतलब इस किस्से में गोता खा गया।

गोता देना—चक्कर में फँसाना; धोखा देना। प्र० उस कमबख्त ने मुझे अच्छा गोता दे दिया।

गोता मारना, -लगाना—(1) एकदम सन्नाटा खींच लेना। प्र० मुखिया, भितरिया, जलघड़िया तो यह सुनकर एकदम गोता मार गये (बूंद०–नागर, 160)।

(2) बहुत दिनों बाद दिखाई पड़ना। प्र० वाह, उस दिन के बाद तुम दिखे ही नहीं, कहाँ गोता लगा गये थे।

(3) स्त्री-प्रसंग करना।

गोता लगाना—दे० गोता मारना।

गोतिया जाना—किसी दवा या मादक द्रव्य के प्रभाव से नशे में डूब-सा जाना। प्र० जरा-सी गोली में ही वे गोतिया गये।

गोद का—(1) दत्तक लिया हुआ। प्र० ऐसा लड़का लो कि चित्त प्रसन्न हो जाय। यह जान हो न पड़े कि गोद का है या पेट का (मा–कौशिक, 35)।

(2) सबसे छोटा बच्चा। प्र० उन्नीस वर्ष की आयु में लाला राधेलाल खाली हाथ और खाली मन से अपनी माता, छोटी बहन, पत्नी और गोदी के बच्चे को लेकर आगरा आ बसे (अमृत०–नागर, 26)।

(3) पास का; अपना। प्र० गोद की चीज की पहले चिन्ता करो, दूर वाली की बात बाद में सोचना।

गोद के खेलाए—बचपन से जिसे देखते चले आए हों।

गोद खाली होना, -सूनी होना—(1) सन्तान की मृत्यु होना। प्र० सालिगराम स्वामी, तुमने मेरी गोद सूनी न होने दी (जिन्दगी–निर्गुण, 52)।

(2) सन्तान न होना। प्र० बेचारी बहू की गोद तो खाली ही रह गयी।

गोद जुड़ाना—सन्तान प्राप्त होना या जीवित रहना। प्र० हे गाँव की सती-देई, बाजे-गाजे के साथ तुम्हारे सती-स्थान पर चुनरी चढ़ाने आऊँगी, मेरी गोद जुड़ाओ (दे० दु०–शिव०, 195)।

गोद देना—दत्तक बनाने के लिए पुत्र देना। प्र० तुम अपने छोटे लड़के को गोद दे दो, वहाँ राज करेगा।

गोद पसारना, -फैलाना—विनयपूर्वक माँगना; प्रार्थना करना। प्र० दियौ फल यह गिरि गोवरधन लेहु गोद पसारि (सू० सा०–सूर, 1477)।

गोद फलना—सन्तान-प्राप्ति होना। प्र० पुत्री, तू पति-परायण हो, तेरी गोद फले (रंग० (1)–प्रेमचंद, 149)।

गोद फैलाना—दे० गोद पसारना।

गोद बैठना या बैठाना—दत्तक बनना या लेना। प्र० ऐं, या तो घर बिठाते थे, या गोद बिठाने लगे (आज़ाद०–प्रेमचन्द, 471)।

गोद भरना—(1) सन्तान होना। प्र० कुछ एक के घर, भगवान की कृपा से, गोद भी भर चुकी है (ज्ञान०–यशपाल, 138)।

(2) सौभाग्यवती स्त्री के आँचल में नारियल इत्यादि देने की एक रस्म। प्र० पहले गौरी पूजन कर लेने दो फिर बहू की गोद भरो।

गोद भरी रहे—पुत्रवती बनी रहो। प्र० तुम सदा सोहागिन रहो, तुम्हारी गोद भरी रहे बहू।

गोद में—सबसे छोटी सन्तान। प्र० उसकी गोद में तीन महीने की लड़की है।

गोद में छिपना—किसी का आश्रय लेना। प्र० तुम माँ की गोद में छिपे

रहो ।

गोद में झूला झूलना—किसी की छत्रच्छाया में खूब आनन्दपूर्वक रहना । प्र० मैंने तो शुरू से ही अम्मा जी की गोद में झूला झूला है ।

गोद में डालना—आश्रित छोड़ना । प्र० मरती बेर नाथ मोहि बाली । गयउ तुम्हारेहि कोंछें घाली (राम० (उ)—तुलसी, 1042) ।

गोद में पड़ना—सौभाग्यवती स्त्री के आँचल में फल-मिठाई नारियल आदि दिया जाना ।

गोद में पनपना—आश्रय में विकास करना । प्र० बाबू शम्भुदयाल जी की गोद में ही मैं पला और पनपा हूँ ।

गोद में पलना—आश्रय में रहना । प्र० बाबू शम्भुदयाल जी की गोद में ही मैं पला हूँ ।

गोद में बैठकर आँखों में उँगली करना—आश्रय में रहकर धोखा देना । प्र० यह तो खूब रही ! मेरी गोदी में बैठकर मेरी ही आँखों में उँगली करते हो ।

गोद में बैठना—आश्रय या लाड़-दुलार में रहना । प्र० तुम क्या सारी जिन्दगी माँ की गोद में ही बैठी रहोगी ?

गोद में समा लेना—डुबा देना; नष्ट कर देना । प्र० माता गंगा ने हस्तिना-पुर को अपनी गोद में समा लिया ।

गोद में सोना—आश्रय में सुखपूर्वक रहना । प्र० आपकी गोद में मैं चैन से सो सकूंगा ।

गोद लेना—दत्तक लेना । प्र० उन्होंने बे-बोले ही मानो मुझे गोद ले लिया (अपनी०—उग्र, 108) ।

गोद सबके लिए खुली रहना—सबको आश्रय देने के लिए तत्पर रहना । प्र० मेरी गोद तुम सबके लिए खुली है ।

गोद सूनी होना—दे० गोद खाली होना ।

गोदान करना—(1) मृत्यु के समय का अन्तिम दान (जिसमें आमतौर पर गाय शामिल होती है) । प्र० बेटा, अब ये थोड़ी देर के ही मेहमान हैं, गोदान करवा दो ।

(2) सर्वथा त्याग देना; दे देना । प्र० मैंने तो पहले ही आपकी धन-सम्पत्ति का गोदान कर दिया ।.

गोनिया बस होना—गोनिया में शुद्ध होना; ठीक मापवाला होना । प्र० किसी तरह गोनिया बस हो तो काम आगे बढ़े ।

गोपिया चलाना, -पटखाना, -फिराना—ढेलवांस से ढेला चलाकर खेत से चिड़िया भगाना ।

गोपिया पटखाना—दे० गोपिया चलाना ।

गोपिया फिराना—दे० गोपिया चलाना ।

गोपियों में कन्हैया होना—सबका प्रिय होना; अपने जैसा ही अनूठा होना । प्र० वह नालायक और अनाड़ी रमजान, जिसकी मुंशी जी हँसी उड़ाते थे और जिसे शुद्ध लिखना भी न आता था, आज गोपियों में कन्हैया बना हुआ था (मान० (8)—प्रेमचंद, 27) ।

गोबर, -गणेश—मूर्ख । प्र० गोबर-गनेश ! तू कुछ कर सकता है ? (स्कंद० —प्रसाद, 29); तुम तो एकदम गोबर हो, तुम्हें कुछ थोड़े ही समझ आयेगा ।

गोबर करना, -बढ़ाना—(1) गाय-बैल आदि का मल त्याग करना । प्र० पूंछ उठाय डकारतु फिरै । रहि रहि मूतत गोबर करै (प्रेम०—ल० ला०, 90) ।

(2) सब काम बिगाड़ देना । प्र० तुमको वहाँ जाने के लिए किसने कहा था ? जाकर सब गोबर कर दिया ।

(3) गोबर के उपले बनाना ।

गोबर का चोंथ—(1) एकदम मूढ़ । प्र० तुम तो एकदम गोबर के चोंथ हो ।

(2) भद्दा और बेडौल । प्र० यह क्या गोबर का चोंथ बना डाला है ? इसे भला कोई मूर्ति कहेगा ?

गोबर खाना—पवित्र होना; प्रायश्चित्त करना । प्र० भैया, तुम गोबर खा लो तो बिरादरी तुम्हें स्वीकार कर लेगी ।

गोबर पाथना—व्यर्थ का काम करना; मूर्खता का काम करना । प्र० ये पग-पग में धर्म-भ्रष्ट होने की डर से व्याकुल गोबर ही पाथते रहे (भट्ट नि०—बा० भट्ट, 108) ।

गोबर बढ़ाना—दे० गोबर करना ।

गोबर बीनना—ईंधन के लिए सूखा हुआ गोबर इकट्ठा करना ।

गोबर में फूल खिलना—गंदी या अनुपयुक्त जगह में किसी सुंदर व्यक्ति या वस्तु का होना । प्र० भाई, यहाँ तो गोबर में फूल खिला है । यह लड़की क्या इस वातावरण में रहने लायक है ?

गोबर-गणेश—दे० गोबर ।

गोबरी निकालना—जहाज के पेंदे में छेद करना ।

गोबरी फेरना—अन्न की राशि के चारों ओर गोबर का चिह्न डालना ।

गोमड़ा बढ़ना—चोट के कारण फूल जाना । प्र० अरे, इतना गोमड़ा बढ़ गया है ? जल्दी हल्दी-चूना लगाओ ।

गोमुख नाहर, -व्याघ्र—(1) वह मनुष्य जो देखने में सीधा पर वास्तव में बड़ा क्रूर और अत्याचारी हो ।

(2) वह शंख जिसका आकार गौ के मुख-सा हो ।

गोमुख व्याघ्र—दे० गोमुख नाहर ।

गोमुखी गंगा—सबके लिए मंगलमयी । प्र० मेरी छोटी बहन तो गोमुखी गंगा है । वह जहाँ रही, वहीं सुख-समृद्धि की वृद्धि हुई ।

गोर गढ़ा करना—गाड़ने की रीति पूरी करना (शव) । प्र० गोर गढ़ा करके अभी तो लौटा हूँ ।

गोर में लात मारकर खड़ा होना—मरते-मरते बचना । प्र० वह तो गोर में लात मारकर खड़ा हो गया है । जिन्दगी होती है तो ऐसे ही आदमी बच जाता है ।

गोरखधंधा—उलझी हुई या उलझा लेनेवाली । प्र० तुम्हारी व्याख्या का द्राविणी प्राणायाम तो पूरा गोरखधंधा हो गया है (पद्म० के पत्र—पद्म० शर्मा, 131) ।

गोरखधंधे में पड़ना, -फंसना—ऐसे जाल में फंसना जिससे छुटकारा पाना कठिन हो । प्र० अब तो मैं ऐसे गोरखधंधे में फंस गया हूँ कि क्या

कहूँ।

गोरखधंधे में फंसना—दे० गोरखधंधे में पड़ना।

गोरखपुरिया पैसा—एक तरह का ताँबे का मोटा पैसा। प्र० ×× तब हर सनीचर को—धोये हुए चावल, पैसा-भर गुड़ और एक गोरखपुरिये पैसे से—पाठ पूजते थे (दे० दु०—शिव०, 116)।

गोर-भभूका—एकदम गोरा। प्र० वह एकदम गोर-भभूका है।

गोल करना—(1) जिक्र न करना। प्र० लेकिन दीपाली की चिट्ठी उसके पास पहुँचाने का प्रबन्ध किया जा सका था या नहीं, इस सम्बन्ध में बात को गोल किये जा रही थी (कठ०—दे० स०, 294)।

(2) चोरी-चोरी हटा देना। प्र० जरा-सा मेरी नजर हटी और उसने टेबुल पर से घड़ी गोल कर दी।

(3) किसी काम को न करना। प्र० मैंने तुम्हें कितनी बार सहेजा था फिर भी तुम वहाँ जाना गोल कर ही गये।

गोल डालना, -मारना—(1) झंझट डालना। प्र० ल्याए हरि कुसलात धन्य तुम घर-घर पार्‌यो गोल (सू० सा०—सूर, 4488)।

(2) गिरोह बनाना। प्र० होली के दिन सबके सब गोल मारकर आपके यहाँ पहुँच गये?

गोल मारना—दे० गोल डालना।

गोल बदन—अच्छा तन्दुरुस्त शरीर। प्र० लड़की गोल बदन की है तो क्या हुआ, इतनी सुशील इतनी समझदार है।

गोल बाँधना—दल जुटाना। प्र० तुम भी अपना गोल बाँधो तब न बात बने।

गोल बात, -गाल बात, -मटोल बात, -मोल बात—ऐसी बात जो स्पष्ट न हो। प्र० चौबेजी की उखड़ी हुई गोल-मटोल बातें सुनकर वह और भी उद्विग्न हो गई (तितली—प्रसाद, 168)।

गोल मारना—चकमा देना। प्र० वाह यार, तुम तो खूब गोल मार गये।

गोल रकम—दस, बीस, सौ रुपये आदि के रूप में बंधी कोई इकाई। प्र० मुझे एक गोल रकम दे दो, बाकी का पक्का हिसाब बाद में करते रहना।

गोल हो जाना—गायब हो जाना; अनुपस्थित होना। प्र० मैं तो उसके लिए किताब ढूँढ़ने गयी और वह उस बीच गोल हो गया।

गोल-गाल, -मटोल, -गोल—गोल; पुष्ट। प्र० अरे, पिट्टो का लड़का एकदम गोल-मटोल है।

गोल-गाल बात—दे० गोल बात।

गोल-गोल—दे० गोल-गाल।

गोल-मटोल—दे० गोल-गाल।

गोलमटोल बात—दे० गोल बात।

गोलमाल करना या होना—(1) मिलावट करना या होना। प्र० तुम करो गोलमाल मत ऐसा (चुभते०—हरिऔध, 121)।

(2) गड़बड़ करना या होना। प्र० मुझे पता था कि तुम गोलमाल करोगे ही।

(3) इधर-उधर हटाना। प्र० पिताजी की वसीयत वगैरह सब उसने गोलमाल कर दी।

गोल-मोल बात—दे० गोल बात।

गोल-मोल हो रहना—कोई उत्तर न देना। प्र० उन्होंने मेरी सारी बातें सुन लीं और गोल-मोल हो रहे।

गोला उठाना—एक पुरानी प्रथा जिसमें लोग अपनी सत्यता प्रमाणित करने के लिए लोहे का जलता गोला हाथ में लेते थे।

गोला चढ़ाना—भांग का गोला खाना। प्र० लागत चूंकि पराई लगी थी, और उसके बाद भोजन भी रुप्पन लाला के यहाँ ही करना था इसलिए गुरु ने डबल गोला चढ़ाया (अमृत०—नागर, 320)।

गोला छानना—भांग की गोली ठंडई में छानकर पीना या ऐसे ही खाना। प्र० ×× सरोज के ससुर हमारे फादर से भी जादा तगड़ा गोला छानते हैं (अमृत०—नागर, 75)।

गोलाधार बरसना—बहुत जोरों से पानी बरसना। प्र० तीन दिन से गोलाधार पानी बरस रहा है, चारों ओर जल ही जल हो रहा है।

गोलाबारी होना—बम बरसना। प्र० उस दिन तेजपुर के मोर्चे पर भयंकर गोलाबारी हुई।

गोला-लाठी करना—लड़कों का हाथ-पैर बांधकर दोनों घुटनों के बीच डंडा लगाना।

गोलियों की बौछार—बहुत-सी गोलियों का एक साथ पड़ना। प्र० सामने से गोलियों की तगड़ी बौछार शुरू हुई और सिपाहियों का टिकना मुश्किल हो गया।

गोली का टप्पा—एक गोली की मार जितना फैसला। प्र० हल्कू के खेत से कोई एक गोली के टप्पे पर आमों का एक बाग था (मान० (1)—प्रेमचंद, 149)।

गोली का शिकार होना—गोली से मरना। प्र० शेर मेरी पहली ही गोली का शिकार हुआ।

गोली खाना—बन्दूक के छर्रे से मारा जाना। प्र० मैं तुम्हारी गोली खाने को तैयार हूँ।

गोली खेलना—खेलवाड़ करते रहना; बचपना करना। प्र० तुम इसी तरह गोली खेलते रहो, भगवान् जाने कैसे बेड़ा पार होगा।

गोली चलना या चलाना—बन्दूक से गोली दागना। प्र० तुमने गोली चलाने में पल भर की भी देर की होती तो शेर सिर पर आ जाता।

गोली पिलाना—(1) बन्दूक में गोली भरना। प्र० छहों गोली पिलाकर तैयार रहो।

(2) गोली मारना। प्र० सामने से हट जाओ नहीं तो गोली पिला दूंगा।

गोली बचाना—किसी संकट या आपत्ति से अपना बचाव कर लेना। प्र० इस बार किसी तरह गोली बचा गया पर हर बार कहाँ तक बचाव कर पाऊँगा।

गोली मारना—(1) बहुत तुच्छ समझना; तुच्छ समझकर छोड़ देना। प्र० मेरी तो सलाह है, आप एलेक्शन को गोली मारें और अपने सालों पर मुकदमा दायर कर दें (गोदान—प्रेमचंद, 237)।

(2) बन्दूक से मार देना; जान ले लेना। प्र० इस समय मेरे सामने से हट जाओ नहीं तो तुम्हें गोली मार दूँगा।

गोली लगना—निशाना बैठना। प्र० मैंने ऐसा निशाना साधकर मारा कि गोली ठीक लगी।

गोली सर करना—खेल में जीत जाना। प्र० वाह भाई, हर बार क्या तुम्हीं गोली सर करोगे।

गोली से उड़ा देना—बन्दूक से मार डालना। प्र० इन सब बदमाशों को गोलियों से उड़ा दो।

गोली-बारूद—लड़ाई का सामान। प्र० गोली-बारूद सबसे लैस होकर सिपाही आगे बढ़े।

गोली-सी लगना—तीखी लगना (बात)। प्र० तुम्हारी बातें उसे गोली-सी लगीं।

गोलोकवास होना—मृत्यु होना। प्र० संवत् 1680 में गोस्वामी जी का गोलोकवास हुआ।

गोश गुजार करना या होना—सूचित करना या होना। प्र० तुझे तो किसी ने भी गोश गुजार नहीं किया कि इतना बड़ा कांड हो गया।

गोशमाली करना—डांटना-फटकारना। प्र० हर समय गोशमाली करने से ही काम नहीं चलता।

गोहार पड़ना, -होना—सहायता के लिए पुकार होना। प्र० राजा के दरवाजे पर उस दिन गोहार पड़ी।

गोहार मारना, -लगाना—सहायता के लिए पुकारना। प्र० जाओ, तुम सब मालिक के पास जाकर गोहार लगाओ, वे जरूर ध्यान देंगे।

गोहार लगना—पुकार की सुनवाई होना। प्र० ना कोइ बरज न लाग गोहारी। अस एहि नगर होइ बटवारी (पद०—जायसी, 38/8); रिषि की यह गति देखि, रेनुका रोइ पुकारी, परसुराम, तुम आइ लगत क्यों नहीं गोहारी (सू० सा०—सूर, 450)।

गोहार लगाना—दे० गोहार मारना।

गोहार लड़ना—अकेले कई आदमियों से लड़ना।

गोहार होना—दे० गोहार पड़ना।

गौं करना—खुशामद करना। प्र० हर किसी की कहाँ तक गौं करता फिरूँ?

गौं का—(1) मतलबी, खुदगर्ज। प्र० उसे मैं अच्छी तरह जानता हूँ। वह पक्का गौं का है।

(2) मौके का; अपने लायक। प्र० गौं की जगह मिले तो जरूर ले लूँ।

गौं का टेकी, -यार—मतलबी, स्वार्थी। प्र० एतौ अलि उनही के संगी, अपनी गौं के टेकी (सू० सा०—सूर, 4516)।

गौं का यार—दे० गौं का टेकी।

गौं गांठना—अपना मतलब साधना। प्र० तुम तो हर समय अपनी ही गौं गांठने की चिन्ता में रहते हो।

गौं ताकना, -देखना—अवसर की खोज में होना। प्र० देखि लागि मधु कुटिल किराती, जिमि गवँ तकइ लेउं केहि भांति (राम० (अ)—तुलसी, 383)।

गौं देखना—दे० गौं ताकना।

गौं निकलना या निकालना—काम निकलना; स्वार्थ-साधन होना या करना। प्र० वह तो अपनी गौं निकालने की चिन्ता में है।

गौं पड़ना—गरज होना। प्र० मुझे कौन-सी गौं पड़ी है कि मैं उनके पास जाऊँ।

गौं मिलना—मौका मिलना; उपाय समझ में आना। प्र० कहीं गौं मिले तो तुम भी कोशिश करना।

गौं से—(1) ढंग से। प्र० ×× भगवान कहीं गौं से बरखा कर दें और डांड़ी भी सुभीते से रहे, तो एक गाय जरूर लेगा (गोदान—प्रेमचंद, 6)।

(2) धीरे से। प्र० तुम मौका पाकर गौं से बात करना।

(3) घात देखकर। प्र० मैं गौं से काम करूँगा। अनाड़ी थोड़े ही हूँ।

गौं-घात—दांवपेंच। प्र० भाई, मुझे बहुत-सा गौं-घात नहीं आता।

गौंजें लड़ाना—गप्प मारना।

गौना देना—वधू को विवाह के बाद दूसरी बार वर के साथ ससुराल भेजना।

गौना लाना—गौने की रस्म के सिलसिले में बहू को घर लाना।

गौने आना या जाना—गौने की रस्म के बाद पति के घर आना या जाना।

ग्रंथ करना, -रंगना—ग्रंथ लिखना। प्र० यदि दांतों के सम्बन्ध का वर्णन किया चाहें तो बड़े-बड़े ग्रंथ रंग डालें और पूरा न पड़े (प्र० पी०—प्र० ना० मि०, 77)।

ग्रंथ रंगना—दे० ग्रंथ करना।

ग्रंथियां खोलना—जटिल समस्याएँ हल करना। प्र० ये ग्रंथियाँ तो आप ही खोल सकते हैं प्रभु।

ग्रस लेना—गहरा प्रभाव डालना; नुकसान पहुँचना। प्र० सट्टेबाजी की बुरी आदत ने उन्हें ऐसा ग्रस लिया है कि कैसे छुटकारा मिलेगा, पता नहीं।

ग्रसित होना—पीड़ित होना। प्र० दारिद्र्य से वह ऐसा ग्रसित है कि उसे सब ओर अंधकार ही अंधकार दिखलाई पड़ रहा है।

ग्रह अच्छे होना—अच्छा समय होना; अनुकूल ग्रह होना। प्र० आजकल तुम्हारे ग्रह अच्छे हैं, जो करना है, कर डालो।

ग्रह आना—बुरे दिन आना। प्र० मेरे तो आजकल ग्रह आए हैं, होम करते हाथ जलता है।

ग्रह का फेर होना, -की छाया पड़ना, -के फेर में होना, -बुरे होना, ग्रह-दशा होना—बुरे दिन होना। प्र० यह सब ग्रहों का फेर, करम का पाप है और कुछ नहीं।; हरषि हृदय दसरथ पुर आई जनु ग्रह दसा दुसह दुखदाई (राम० (अ)—तुलसी, 383)।

ग्रह की छाया पड़ना—दे० ग्रह का फेर होना।

ग्रह के फेर में होना—दे० ग्रह का फेर होना।

ग्रह बुरे होना—दे० ग्रह का फेर होना ।

ग्रहण पड़ना, -लगना—(1) कलंक लगना । प्र० तुम्हारे इस पचड़े में मुझे व्यर्थ ही ग्रहण लगा ।

(2) विघ्न पड़ना । प्र० न जाने क्यों मेरे हर काम में ग्रहण पड़ता ही है ।

ग्रहण लगना—दे० ग्रहण पड़ना ।

ग्रह-दशा होना—दे० ग्रह का फेर होना ।

ग्रास बन जाना—शिकंजे में आ जाना; शिकार होना । प्र० इस तरह उनकी चालाकियों और धूर्तता का ग्रास बनने को मैं मजबूर हुआ ।

ग्रामोफोन—लगातार बोलनेवाला व्यक्ति । प्र० पुन्नो चाची तो एकदम ग्रामोफोन हैं ।

ग्राहक—कद्र करनेवाला; चाहनेवाला । प्र० होउ मन राम नाम को गाहक (सू० सा०–सूर, 310); क्योंकि, उसकी कविता का ग्राहक होता कौन ? (सा० जि०–ल० प्र० सु०, 9) ।

ग्राहक टूटना—ग्राहकों का कम हो जाना । प्र० धीरे-धीरे कारखाना टूट गया, जमीन टूट गयी, ग्राहक टूट गये और वह भी टूट गया (मान० (8)–प्रेमचंद, 65) ।

ग्राहक पटाना—ग्राहक को राजी कर लेना । प्र० दूकानदार का बेटा भी दूकान पर बैठते ही ग्राहक पटाना सीख जाता है (मेरे०–गुलाब०, 49) ।

ग्लानि से गलना—अत्यन्त ग्लानि का अनुभव करना । प्र० सब सेवक गन गरहिं गलानी (राम० (अ)–तुलसी, 563); मैं ग्लानि से गल गई, यह सोचकर कि आपने मुझ-जैसी शक्तिमान अप्सरा का उपयोग किस निकृष्ट कर्म के लिए किया है (जैसे०–परसाई, 65) ।

घ

घंट बंधना—घर में किसी की मृत्यु होना । प्र० रामनाथ जी के यहाँ तगादे के लिए मत जाना, उनके यहाँ घंट बंधा है ।

घंटा चटाना, -दिखाना—अंगूठा दिखा देना; कुछ न देना । प्र० वह उन्हें एक कौड़ी भी नहीं देने का । घंटा चटा देगा, मैं जानता हूँ ।

घंटा ठोंकना, -देना, -मारना—(1) घड़ियाल बजाना । प्र० चार बजे का घंटा कोई नहीं ठोंकेगा ।

(2) संकट में डालना । प्र० जब वे घंटा ठोंक देंगे न तब तुम्हें होश आवेगा ।

घंटा दिखाना—दे० घंटा चटाना ।

घंटा देना—दे० घंटा ठोंकना ।

घंटा पर के गरुड़—(1) निष्क्रिय । प्र० फूट, डाह, लोभ ×× इन एक दरजन दूती और दूतों को शत्रुओं की फौज में हिला मिलाकर ऐसा पंचामृत बनाया कि सारे शत्रु बिना मारे घंटा पर के गरुड़ हो गए (भा० ग्रं० (1)–भारतेन्दु, 477) ।

(2) पूज्य । प्र० अजी साहब, आप ठहरे घंटा पर के गरुड़, आपकी उपेक्षा कैसे कर सकता हूँ ।

घंटा मारना—घंटा ठोंकना ।

घंटा मिलना—कुछ न मिलना । प्र० तुम्हें मकान नहीं घंटा मिलेगा ।

घंटा हिलाना—(1) व्यर्थ का काम करना । प्र० करते क्या हैं, बैठे घंटा हिलाते हैं ।

(2) दुःख करना । प्र० समय पर तो तुम चेते नहीं, अब बैठे घंटा हिलाते रहो ।

(3) पूजा करना । प्र० सुबह से उठकर तीन घंटा तक तो जीजी घंटा हिलाती रहती हैं ।

घंटी उठाना, -बैठाना—गले की घंटी दबाकर गले की सूजन मिटाना ।

घंटी बैठाना—दे० घंटी उठाना ।

घंटे पर मारना, -रखना या होना—तुच्छ समझना । प्र० मुझे उसकी रत्ती भर भी परवाह नहीं है, मैं उसे घंटे पर मारता हूँ ।

घंटे पर रखना या होना—दे० घंटे पर मारना ।

घंटे-मोरछल से उठाना—वृद्ध का शव बाजे-गाजे के साथ श्मशान पर ले जाना । प्र० नाती-पोतों ने मिलकर घंटे-मोरछल से शिवनाथ जी को उठाया और उनका क्रिया-कर्म सम्पन्न किया ।

घट का पट खोलना—अज्ञान को दूर करना; अंतर्चक्षु खोलना । प्र० तू घट का पट खोल रे तुझे पिया मिलेंगे ।

घट फूटना—मृत्यु होना । प्र० घट फूटे केउ बात न पूछै काढ़हु-काढ़हु होई (कबीर ग्रंथा०—कबीर, 287) ।

घट में बसना, -बैठना, -रमना, -व्यापना, घट-घट बोलना—मन में बसना; ध्यान पर चढ़ा रहना । प्र० सेवक सो सेवा भले जिह घट बसै मुरारि (कबीर) ।

घट में बैठना—दे० घट में बसना ।

घट में रमना—दे० घट में बसना ।

घट में व्यापना—दे० घट में बसना ।

घटका या घटकी लगना—मरते समय कफ से गला रुंध जाना ।

घट-घट के वासी होना—अंतर्यामी होना । प्र० हे प्रभु तुम तो घट-घट के वासी हो, तुमसे क्या छिपाऊँ ?

घट-घट डोलना—दे० घट में बसना ।

घट-घट में—हर व्यक्ति के अंतर में । प्र० घट-घट में वह साईं रमता, कटुक वचन मत बोल रे ।

घट-घट में समाना—हर हृदय में स्थित होना; सर्वव्यापक होना । प्र० मात पिता न दारा भाई, जल थल घट-घट रह्यो समाई (सू० सा० –सूर, 4712) ।

घटती का पहरा—अवनति का समय । प्र० घटती का पहरा होता है तो सभी ऐसा व्यवहार करते हैं ।

घटती के पहर चढ़ना—अवनति के दिन आना । प्र० आज कल उसके घटती के पहर चढ़े हुए हैं, जो चाहे कह लो ।

घटना—हानि या अप्रतिष्ठा होना । प्र० आह ! घाटा पर हमें घाटा हुआ मान बेवों का घटा कर हम घटे (चुभते०–हरिऔध, 153);

गांधीजी भीख माँगते थे तो क्या घट जाते थे ।

घटनाचक्र घूमना—एक के बाद एक घटना होना । प्र० घटनाचक्र कुछ इस तरह घूमता रहा कि मैं सर्वथा निरुपाय होता गया ।

घटपट करना—वाद-विवाद करना । प्र० तुम लोग तो चौबीसों घंटा घटपट किया करते हो ।

घटाएँ घिरना, -छाना—दुर्दिन आना; निराशा या चिन्ता की स्थिति होना । प्र० मुझे तो घटाएँ घिरती दिखलाई पड़ रही हैं ! क्या करूँ, समझ नहीं आता ।

घटाएं छाना—दे० घटाएँ घिरना ।

घटाटोप अंधेरा—बहुत गहरा अंधकार । प्र० चारों ओर घटाटोप अंधेरा छाया हुआ था ।

घटाटोप बादल छाना—आकाश में बादलों का घना होना । प्र० देखते-देखते घटाटोप बादल छा गये ।

घटा-बढ़ाकर—कुछ कम-ज्यादा करके । प्र० कुछ घटा-बढ़ाकर सौदा कर डालो ।

घटाव पर होना—पानी की बाढ़ कमी पर होना । प्र० तिस्ता का पानी अब घटाव पर है ।

घटिकाशतक—थोड़े समय में बहुत अधिक काम करनेवाला व्यक्ति । प्र० अरे भाई आप ठहरे घटिकाशतक ! आपकी बराबरी हम लोग कहाँ कर सकते हैं ।

घटिकास्थान तलाश करना—रहने की जगह का पता लगाना । प्र० पहले घटिकास्थान का पता लगा लो फिर सामान उठवाया जाय ।

घटी (टूटी) आना, -पड़ना—हानि होना । प्र० इस सौदे में तुम्हें तो घटी नहीं आ रही है फिर तुम क्यों पीछे हटते हो ?

घटी पड़ना—दे० घटी आना ।

घट्टा खुलना—छेद होना । प्र० तुम ध्यान तो देते नहीं हो । सारी छत में घट्टे खुल गये हैं ।

घट्टा (ट्ठा) पड़ना—अभ्यस्त हो जाना । प्र० अब तो मुझे भी घट्टा पड़ गया है, बुरा नहीं लगता ।

घड़ा छलकना—अति होना; आवश्यकता और उचित से अधिक होना । प्र० बहुत दिनों से उसने परेशान कर रखा है पर हर चीज की एक सीमा होती है । अब घड़ा छलकने ही वाला है ।

घड़ा फूटना—भेद खुलना । प्र० तुम चिन्ता मत करो । जल्दी ही घड़ा फूटेगा ।

घड़ा भर जाना—सीमा पर पहुँच जाना । प्र० हिरण्यकश्यप के जुल्म का घड़ा भर चुका था ।

घड़ियाल के आंसू या घड़ियाली आंसू—दिखावटी आँसू । प्र० ये सब घड़ियाली आँसू अपने पास रखो, मेरे ऊपर इनका कोई असर नहीं पड़नेवाला है ।

घड़ी आना—अवसर उपस्थित होना । प्र० वह शुभ घड़ी भी शीघ्र ही आएगी ।

घड़ी का खटका—एक गति से हिलनेवाली चीज़ (विशेष-गरदन) । प्र० सबके सब सिर धुनते थे, क्या प्यारा गला पाया है । मियाँ आज़ाद की बाँछें खिली जाती थीं और गरदन तो घड़ी का खटका हो गयी थीं (आज़ाद०—प्रेमचंद, 56) ।

घड़ी की सूई देखते रहना—प्रतीक्षा करना । प्र० मैं तो कब से घड़ी की सूई देख रही हूँ ।

घड़ी की सूई बराबर—बिलकुल ठीक समय पर; ठीक-ठीक समय साधना । प्र० तुम घडी की सूई बराबर पाँच बजे पहुँच जाना ।

घड़ी कूकना—घड़ी में चाभी भरना । प्र० आज घड़ी नहीं कूकी गयी है ।

घड़ी गिनना—(1) मरने के निकट होना । प्र० सरुष समीप दीखि कैकेई, मानहुँ मीचु घरीं गनि लेई (राम० (अ)—तुलसी, 409) ।
(2) उत्सुकता से आसरा देखना । प्र० मैं तो न जाने कब से आपके आने की घड़ी गिन रही हूँ ।

घड़ी टलना—अवसर का निकल जाना । प्र० एक बार तो संकट की घड़ी टल गयी है, आगे की देखी जायगी ।

घड़ी तोला घड़ी माशा करना—ज़रा-ज़रा देर में स्थिति या मत बदलना । प्र० उनकी बात का क्या भरोसा, घड़ी तोला घड़ी माशा करते रहते हैं ।

घड़ी देखकर—ठीक समय पर । प्र० घड़ी देखकर पाँच बजे पहुँच जाना ।

घड़ी देखते रहना—(1) बार-बार देखना कितना समय बाकी है; घड़ी में देखते रहना । प्र० तुम काम बाद में शुरू करते हो घड़ी देखना पहले शुरू करते हो ।
(2) बहुत जल्दी में होना । प्र० आप तो हर समय घड़ी ही देखते रहते हैं ।
(3) प्रतीक्षा करना । प्र० मैं तो कब से घड़ी देख रही हूँ ।
(4) समय का पाबंद होना । प्र० उन्हें आने में देर न होगी । वे तो घड़ी ही देखते रहते हैं ।

घड़ी देखना, घड़ी-मुहूर्त्त देखना, घड़ी-सायत देखना—किसी काम को करने के लिए शुभ समय देखना । प्र० घड़ी-मुहूर्त्त देखकर दूकान खोलना, ऐसे ही नहीं ।

घड़ी देना—मुहूर्त बतलाना । प्र० पंडित जी घड़ी दें तो आयोजन की तिथि निश्चित करूँ ।

घड़ी दो में मुरलिया बजेगी—जरा देर में पुकार होगी (प्रिय द्वारा) ! प्र० मुझे सब पता है । घड़ी दो में मुरलिया बजेगी और बीबी रानी कोठे पर ।

घड़ी पूरी होना—अंतिम समय आ जाना । प्र० अब उनकी घड़ी पूरी हो गयी है, उसे कौन टाल सकता है ।

घड़ी भर—जरा देर.। प्र० श्री जल तिरण चरण चिन्तामणि, ता चित्त घड़ी न लाया (कबीर ग्रंथा०—कबीर, 152); घड़ी भर रुक जाओ बेटा, दो रोटियाँ और हैं, सेंक कर आती हूँ ।

घड़ी मिलाना—घड़ी का समय ठीक करना । प्र० नौ का भोंपा बजा है, घड़ी मिला लो ।

घड़ी में कुछ घड़ी में कुछ—ज़रा-ज़रा देर में स्थिति या विचार बदलना। प्र० वहाँ तो घड़ी में कुछ घड़ी में कुछ। मैं कैसे निश्चित रूप से कुछ भी कहूँ।

घड़ी में घड़ियाल बजना या होना—(1) थोड़े समय में महान् परिवर्तन होना। प्र० तो ऐसा कौन-सा घड़ी में घड़ियाल बजने वाला है जो तुम इतने उत्तेजित हो रहे हो?
(2) जिन्दगी का कोई ठिकाना न होना। प्र० क्या भरोसा, घड़ी में घड़ियाल बज जायेगा और जानेवाला उठ जायगा।

घड़ी-घड़ी—बार-बार; थोड़ी-थोड़ी देर पर। प्र० अपनैं ओगुन कह लौं बरनौं, पल-पल घरी-घरी (सू० सा०–सूर, 184)।

घड़ी-घड़ी भर पर, -में—थोड़ी-थोड़ी देर बाद। प्र० घड़ी-घड़ी भर पर वे कराह उठते हैं।

घड़ी-घड़ी में—दे० घड़ी-घड़ी भर पर।

घड़ी-पल, घड़ी-पल-छिन—हर समय; हर क्षण। प्र० घड़ी-पल-छिन वह तो तुम्हारे नाम की ही माला जपती रहती है।

घड़ी-पल-छिन—दे० घड़ी-पल।

घड़ी-मुहूर्त देखना—दे० घड़ी देखना।

घड़ी-सायत का मेहमान होना, -पर होना, -लगना—मौत का दिन पास होना। प्र० मैं तो अब घड़ी-सायत का मेहमान हूँ, मेरा क्या।

घड़ी-सायत देखना—दे० घड़ी देखना।

घड़ी-सायत पर होना—दे० घड़ी-सायत का मेहमान होना।

घड़ी-सायत लगना—दे० घड़ी-सायत का मेहमान होना।

घड़े का चोट खाकर भी बच जाना—आशंका होने पर भी बड़ा नुकसान न होना, बच जाना। प्र० आचार्य महाशय के प्राण सूखे जाते थे कि अब बात खुली, अब खुली, दम रुका हुआ था × × ×। बारे, कुशल हुई, घड़ा चोट खाकर भी बच गया (मान० (3)–प्रेमचन्द, 225)।

घड़े को ठोंकना—परखना; परीक्षा करना। प्र० मेहता ने घड़े को ठोंका—मुझे संदेह है कि हमारे सभापति जी स्वयं खान-पान की एकता में विश्वास नहीं रखते हैं (गोदान–प्रेमचंद, 68)।

घड़ों नशा चढ़ना—गहरा प्रभाव होना; जादू-सा असर होना। प्र० कमबख्त कैसी प्रेमभरी बातें करती थी कि मुझ पर घड़ों नशा चढ़ जाता था (मान० (2)–प्रेमचन्द, 54)।

घड़ों पानी पड़ना—अत्यन्त लज्जित होना। प्र० रानी माहवा पर जैसे घड़ों पानी पड़ा (चोटी०–निराला, 8)।

घत करना—उपाय करना। प्र० कोई घत करो तब न दिल्ली चला जाय।

घन का होना—बहुत घना होना। प्र० जंगल तो बड़ा घन का है।

घनघोर घटा—काली घटा। प्र० उस दिन तो ऐसी घनघोर घटा छाई कि हाथ को हाथ नहीं सूझता था।

घनघोर वृष्टि होना—बहुत जोर वृष्टि होना। प्र० ऐसी घनघोर वृष्टि हुई कि पूछो मत, हम सब बुरी तरह फंस गये।

घनचक्कर—बेवकूफ। प्र० क्या इश्क में अकिल घनचक्कर हो जाती है (रंग० (2)–प्रेमचंद, 83)।

घनचक्कर में आना, -पड़ना—संकट में पड़ना; कष्ट में फंसना। प्र० उनका पूरा परिवार ही ऐसे घनचक्कर में आ गया है कि बचाव का रास्ता नहीं नजर आता।

घनचक्कर में पड़ना—दे० घनचक्कर में आना।

घना अंधकार होना—बहुत गहरा अंधकार होना।

घपची बांधकर पानी में कूदना—कमर कसकर काम में लगना। प्र० उन्होंने घपची बाँधकर पानी में कूदने का निर्णय कर लिया और भविष्य को भगवान भरोसे छोड़ दिया।

घपले में डालना—दुविधा या झंझट में डालना। प्र० तुमने मुझे अच्छा घपले में डाल दिया नहीं तो कब का मैं काम पूरा कर डालता।

घपले में पड़ना—चक्कर में पड़ना; रुकावट या बाधा में पड़ना। प्र० सारा काम घपले में पड़ गया और वह भी तुम्हारे कारण।

घपलेबाजी करना—गोलमाल करना। प्र० देखो, मुझसे घपलेबाजी मत करो नहीं तो ठीक न होगा।

घपलेबाजी में—यों ही; अनायास; किसी होशियारी या नादानी से। प्र० यह पुस्तक तो मुझे घपलेबाजी में मिल गयी।

घमंड के थान फाड़ना, -में चूर होना—अत्यन्त घमंड करना। प्र० आजकल तो देवीजी घमंड के थान फाड़ रही हैं।

घमंड चकनाचूर करना या होना, -चूर करना या होना, -टूटना, -निकलना या निकालना—घमंड दूर हो जाना। प्र० उसका सारा घमंड जल्दी ही दूर हो जायगा।

घमंड चूर करना या होना—दे० घमंड चकनाचूर करना या होना।

घमंड टूटना—दे० घमंड चकनाचूर करना या होना।

घमंड निकलना या निकालना—दे० घमंड चकनाचूर करना या होना।

घमंड पर आना या होना—घमंड करना। प्र० अब वे घमंड पर आ गयी हैं तो ठीक है, वह भी देख लूंगा।

घमंड में चूर होना—दे० घमंड के थान फाड़ना।

घमंड रखना—घमंड को बनाये रखना। प्र० भगवान किसी का घमंड नहीं रखते (रंग०–प्रेमचंद, 130)।

घमक्का खाना—(1) मुक्के की मार खाना। प्र० चुपचाप बैठ जाओ नहीं तो मुझसे घमक्का खा जाओगे।
(2) हानि उठाना। प्र० इतना बड़ा घमक्का खाकर कोई कैसे शांत बैठ सकता है।

घमक्का देना—घूंसा मारना। प्र० सीधे से चले जाओ नहीं तो ऐसा घमक्का दूंगा कि जिन्दगी भर याद रखोगे।

घमसान कटना—लड़ाई होना। प्र० वहाँ तो घमसान कट रही है, उसे रोकना सम्भव नहीं।

घमसान या घमासान करना, -ठानना, -मचाना—लड़ाई-झगड़ा करना। प्र० जब तुम सभी घमसान करने पर उतारू हो तो करो।

घमसान (घमासान) ठानना—दे० घमसान करना।

घमसान (घमासान) मचाना—दे० घमसान करना ।

घर—(1) घर के व्यक्ति । प्र० फाटक के पास आते ही मालूम हुआ, सारा घर सांस साधे हुए है (कुल्ली०–निराला, 45) ।
(2) घर का सामान । प्र० तो सारा घर उठाकर दे दीजिए (सु० सु०–सुदर्शन, 99) ।

घर आकर पड़ना—किसी माल का, रेल भाड़ा इत्यादि खर्च जोड़कर लागत मूल्य । प्र० सात रुपये बीस पैसे तो घर आकर पड़ा है, आपको सात रुपये में कैसे दे दूं ?

घर आपका है—कोई संकोच करने की आवश्यकता नहीं है । प्र० घर आपका है, जब तक मर्जी हो रहिए ।

घर आबाद करना या होना—विवाह करना या होना । प्र० अब घर आबाद करो, कब तक अकेले रहोगे ?

घर उजड़ना—(1) बसी गृहस्थी उजड़ जाना । प्र० नारद बचन न मैं परिहरऊँ, बसउ भवनु उजरउ नहिं डरऊँ (राम० (बा)–तुलसी, 91) ।
(2) पत्नी या पुत्र की मृत्यु होना । प्र० मेरा तो घर उजड़ गया महतो, कोई एक लोटा पानी देनेवाला भी नहीं (गोदान–प्रेमचंद, 8) ।
(3) परिवार की हालत बिगड़ जाना । प्र० अब वह पहले की बात कहाँ, सारा घर ही उजड़ गया ।
(4) परिवार के लोगों का अलग-अलग रहना । प्र० देखिए प्रयोग (3) ।

घर उजाड़ना—(1) घर की स्थिति बिगाड़ना । प्र० ना जी यह तो हमसे न हो सकेगा जो महाराज जगत परकास और महारानी कामलता का हम जानबूझ कर घर उजाड़ें (इंशा०–इंशा०, 109) ।
(2) किसी की बीबी या पति को बहकाना या उससे अनुचित सम्बन्ध करना । प्र० इन्होंने नवाब 'खिन्नीचोर' का घर उजाड़ा, उनकी छोटी बेगम को अपने बस में किया × × (अमृत०–नागर, 592) ।

घर उठना या उठाना—घर बनना । प्र० अब तो वहाँ भी बहुतेरे घर उठ गये हैं ।

घर उठाकर दे देना—पास का सब कुछ दे देना । प्र० मुरौवत मुरौवत की तरह की जाती है, अपना घर उठाकर नहीं दे दिया जाता (गोदान–प्रेमचंद, 22) ।

घर करना—(1) प्रिय होना; प्रभाव डालना । प्र० डनलप ने सोचा—उसकी बात घर कर रही है (झांसी०–वृं० वर्मा, 240) ।
(2) बसना । प्र० आसा एक जु राम की, दूजी आस निरास । पांणी मांहैं घर करैं, ते भी मरैं पियास (कबीर ग्रंथा०–कबीर, 19); मरने के समय जो गोविन्द स्वामी ने मातंगी से वर्षकार के विवाह का निषेध किया—इससे लोगों में यह शंका और घर कर गई (वैशाली० (1)–चतुर०, 100) ।
(3) ब्याह करना । प्र० घर कीन्हें घर जात है, घर छोड़े घर जाइ । तुलसी घर-बन बीच ही, राम प्रेमपुर छाइ (दोहा०–तुलसी, 256) ।
(4) घुसने के लिए स्थान निकालना; घुसना । प्र० पीपल को यहाँ से उखाड़ फेंको, यह अब दीवाल में घर करने लगा है ।
(5) अच्छी तरह बैठ जाना । प्र० रानी के मन में रमेश के प्रति आदर की भावना ने तो उसी दिन से घर कर लिया था × × (अमृत०–नागर, 186) ।

घर का, -की—(1) आपस का; सम्बन्धियों का; आपस के लोगों के बीच का । प्र० बैंक इससे कम सूद पर किसी तरह राजी न होगा और यह रिआयत भी मैंने आपके साथ की है; क्योंकि आपके साथ घर का मुआमला है (गोदान–प्रेमचंद, 141) ।
(2) अपना । प्र० कहा भयौ जौ घर कै ढोटा, चोरी माखन खायौ (सू० सा०–सूर, 964) ।
(3) पारिवारिक; पैतृक । प्र० सदानंद सिर झुकाए सुनते रहे, फिर उठे, कहा कि हमें इस घर की फूटी कौड़ी भी हराम है (अमृत०–नागर, 34) ।

घर का अच्छा—मालदार । प्र० राकेश घर का अच्छा है । उससे बेटी का ब्याह करने में कोई हर्ज नहीं है ।

घर का आंगन हो जाना—(1) घर का टूटकर खंडहर हो जाना । प्र० बड़ी बुरी दशा हो गयी है, घर का आंगन हो गया है, खाने का ठिकाना नहीं रहा ।
(2) घर में लड़का पैदा होना । प्र० अच्छा ! चलो घर आंगन तो हुआ ।

घर का आदमी—नजदीकी इष्टमित्र; रिश्तेदार; ऐसा व्यक्ति जिससे कोई दुराव न हो । प्र० तुम घर के आदमी हो, तुमसे क्या मोल-भाव करना (गोदान–प्रेमचंद, 28) ।

घर का उजाला, -चिराग—(1) सपूत । प्र० सतीश तो चाचाजी के घर का उजाला है ।
(2) मान प्रतिष्ठा बढ़ानेवाला । प्र० देखिए प्रयोग (1) ।
(3) सुन्दर ।

घर का घर—निज का घर; अपना घर । प्र० गाड़ी-मोटर, घर का घर सब तो है !

घर का घर में रहना—हानि-लाभ बराबर रहना । प्र० इस बार के सौदे में कोई लाभ नहीं हुआ पर हाँ, घाटा भी नहीं हुआ, घर का घर में रहा ।

घर का घरवा करना, -घरौंदा करना—घर बर्बाद करना । प्र० उसने तो घर का घरौंदा कर दिया, अब क्या बचा है ?

घर का घरौंदा करना—दे० घर का घरवा करना ।

घर का चक्कर काटना, -लगाना—घर के आसपास बने रहना । प्र० जब से यह आई है, गाँव के लुच्चे घर का चक्कर काटने लगे हैं (बौने०–रां० रा०, 204) ।

घर का चक्कर लगाना—दे० घर का चक्कर काटना ।

घर का चिराग—दे० घर का उजाला ।

घर का चिराग गुल कर देना या हो जाना—किसी का घोर अनिष्ट करना। प्र० मेरे कारण आपने रियासत में अंधेर मचा दिया × × × कितने ही घरों के चिराग गुल कर दिये (रंग० (2)–प्रेमचंद, 320)।

घर का दीपक बुझ जाना—निर्वंश हो जाना। प्र० वह घर उजड़ गया, उस घर का दीपक बुझ गया (प्रेमा०–प्रेमचंद, 71)।

घर का न घाट का—कहीं का भी न रहना, हर ओर से जाना। प्र० मारे तें सहेलनि, बिडारे तें बुंदेलनि के, बहादुरखान ह्वै है घाट को न घर को (भूषण ग्रंथा०–भूषण, 225); क्या कहूँ, बस यही समझ लो कि इसके कारण मैं न घर की रह गयी, न घाट की (मान० (2)–प्रेमचंद, 338)।

घर का नाम उछालना—(1) परिवार की कीर्त्ति फैलाना। प्र० मैं जानता हूँ कि तुम परिवार का नाम उछालोगे।
(2) परिवार की अपकीर्त्ति कराना। प्र० देखिए प्रयोग (1)।

घर का नाम डुबाना—परिवार की बदनामी कराना। प्र० तू घर का नाम डुबाने पर उतारू हो गया है?

घर का परदा खुलना—पारिवारिक बातों का सबको पता चलना। प्र० घर का पर्दा खुल जायेगा, सम्बन्धियों में घर-घर चर्चा होगी (प्रेमा०–प्रेमचंद, 42)।

घर का बबर, -बहादुर, -मर्द, -वीर, -शेर—अपने ही घर में बहादुर लगानेवाला पर यों कायर और डरपोक व्यक्ति।

घर का बहादुर—दे० घर का बबर।

घर का बोझ उठाना, -संभालना—गृहस्थी की जिम्मेदारी लेना। प्र० अब तो सुशील ने घर का बोझ उठा लिया है, मुझे थोड़ी राहत मिल गयी है।

घर का बोझ संभालना—दे० घर का बोझ उठाना।

घर का भाग्य फलना—परिवार के लिए सौभाग्य की स्थिति होना। प्र० फूली है जसोदा रानी, सुत जायौ सारंगपानी, भूपति उदार फूले भाग फरे घर के (सू० सा०–सूर, 652)।

घर का भार आ पड़ना—परिवार के भरण-पोषण का दायित्व आ पड़ना। प्र० पर उसकी माँ मर गई और इस पर घर का भार आ पड़ा (दूधगाछ–दे० स०, 75)।

घर का भेदी—रहस्य जाननेवाला। प्र० यह घर के भेदिया ने लंका डाह किया है (परती०–रेणु, 495)।

घर का भेदी लंका दाहे—घर का भेद बतानेवाला घर का नाश करता है। प्र० यह न कहो, घर का भेदी लंका दाहे (रंग०–प्रेमचंद, 131)।

घर का भोला—बहुत सीधा-सादा। प्र० वह ठहरा घर का भोला, वह इतना छल-प्रपंच क्या जाने।

घर का मर्द—दे० घर का बबर।

घर का माल—अपनी चीज। प्र० कोई घर का माल ऐसे औने-पौने करता है?

घर का मामला—आपस की बात। प्र० यह तो घर का मामला है, हम लोग बैठकर तै कर लेंगे।

घर का रास्ता जानना, -समझना—बहुत साधारण और आसान काम समझना। प्र० आप इसे घर का रास्ता समझ रहे हैं सो यह काम इतना आसान नहीं है।

घर का रास्ता नापना, -पकड़ना, -लेना—(1) चुपचाप चले जाना। प्र० लेकिन जब रुपये उसकी जेब में डाल दिये जाते हैं तो हर्ष से मुस्कराता हुआ घर की राह लेता है (सेवा०–प्रेमचंद, 41)।
(2) अपने काम से काम रखना। प्र० बस-बस, बहुत हुआ, अब घर का रास्ता पकड़ो।

घर का रास्ता पकड़ना—दे० घर का रास्ता नापना।

घर का रास्ता लेना—दे० घर का रास्ता नापना।

घर का रास्ता समझना—दे० घर का रास्ता जानना।

घर का वीर—दे० घर का बबर।

घर का शेर—दे० घर का बबर।

घर का हिसाब—(1) निजी हिसाब-किताब। प्र० घर का हिसाब-किताब तो देखता नहीं, मेरा देखेगा।
(2) अपनी इच्छानुसार किया हिसाब। प्र० आपका यह घर का हिसाब कौन मानेगा?

घर काट खाना, -काटना, -काटने दौड़ना, -खाये जाना, -फाड़े खाना—घर बहुत सूना लगना। प्र० उसके चले जाने के बाद तो मुझे वह घर काटने लगा (सेवा०–प्रेमचंद, 110)।

घर काटना—दे० घर काट खाना।

घर काटने दौड़ना—दे० घर काट खाना।

घर की—दे० घर का।

घर की अक्ल, -आंत, -समझ—अपनी अक्ल। प्र० घर की अक्ल भी कुछ है या सब गिरवी रख दी है?

घर की आंत—दे० घर की अक्ल।

घर की इज्जत धुली जाना—परिवार के मुनाम में बट्टा लगना। प्र० ऊपर के कोठे में सोते हुए प्रेमू और उसकी पत्नी माया को लगा कि बाबू के कारण घर की इज्जत धुली जा रही है (अमृत०–नागर, 589)।

घर की खेती—(1) मनमानी करनेवाली स्थिति। प्र० जी हाँ, यह घर की खेती है न जब काम कर लूँगा तब आना होगा (उखड़े०–यादव, 137)।
(2) ऐसी वस्तु जिस पर अपना अधिकार हो; आसानी से मिल जाने वाली वस्तु। प्र० आपके लिए तो यह सब घर की खेती है, जैसे चाहे कीजिए।

घर की खोज मिटना—घर का नामोनिशान भी न रहना। प्र० पिछली बाढ़ में न जाने कितने घरों की खोज तक मिट गयी।

घर की चहारदीवारी के अंदर कैद कर रखना—किसी के सामने न आने देना। प्र० तुमने तो लड़के को घर की चहारदीवारी में कैद कर रखा है, ऐसे कहीं वह पनप पायेगा?

घर की चांदनी—घर के सुख-आनन्द का आधार। प्र० पर बेटी, अब तो एक यही लड़की है। जो यह यहाँ रहेगी तो हमारा घर अंधेरा पड़ा

रहेगा। हमारे घर की चाँदनी तो अब यही लड़की है (भिखा०—कौशिक, 97)।

घर की तरह बैठना, -रहना—आराम से बैठना या रहना। प्र० वाह, तुम तो यहाँ बिलकुल घर की तरह बैठ गये ?

घर की तरह रहना—दे० घर की तरह बैठना।

घर की देहली छोड़कर बाहर का पहाड़ पूजना—अपनी चीज का निरादर करना और दूसरों की चीज का सम्मान करना। प्र० साली घर की देहली छोड़कर बाहर का पहाड़ पूजने क्यों जाऊँ (अमृत०—नागर, 156)।

घर की पुटकी बासी साग होना—अपनी चीज की कोई कद्र न होना।

घर की पूंजी, -रकम—पास का रुपया; मूलधन। प्र० का मैं बोवा जरम ओहि भूंजी। खोइ चलेऊँ घरहूँ कै पूंजी (पद०—जायसी, 7/2)।

घर की फूट—आपस का विग्रह। प्र० घर की यह फूट हमारे हाथ-पाँव ढीले किए डाल रही है (सात०—नागर, 115)।

घर की बछिया, -मुर्गी—अपनी वस्तु। प्र० दुनिया का कायदा है, घर की बछिया की कद्र नहीं होती।

घर की बरक्कत उठ जाना—घर में हर समय हर चीज का अभाव ही बना रहना। प्र० जब से इसकी माँ मरी है, जैसे घर की बरक्कत ही उठ गयी (गोदान—प्रेमचंद, 25)।

घर की बात—निजी बात; गुप्त बात; पारिवारिक बात। प्र० घर की बात हर किसी से कहने-फिरने की क्या जरूरत थी ?

घर की मुर्गी—दे० घर की बछिया।

घर की मुर्गी दाल बराबर होना, -साग बराबर होना, -होना—अपनी चीज की कोई कद्र न होना। प्र० मियां, घर की मुर्गी तो दाल बराबर होती है जायक़ा बाहर की ही मुर्गी में आता है (मा—कौशिक, 179)।

घर की मुर्गी साग बराबर होना—दे० घर की मुर्गी दाल बराबर होना।

घर की मुर्गी होना—दे० घर की मुर्गी दाल बराबर होना।

घर की मूंछें ही मूंछें होना—झूठा घमंड करना। प्र० रमाकांत क्या करके निहाल करेगा, घर की मूंछें ही मूंछें हैं।

घर की रकम—दे० घर की पूंजी।

घर की लक्ष्मी—भाग्यवती; कुशल भाग्यवती गृहिणी। प्र० कोई इस तरह घर की लक्ष्मी पर हाथ छोड़ता है (गोदान—प्रेमचन्द, 111)।

घर की लौंडी—पूरी तरह वश में रहनेवाली। प्र० दौलत उसके घर की लौंडी है (प्रेमा०—प्रेमचंद, 261)।

घर की शोभा—स्त्री; ऐसी स्त्री जिसके कारण घर की श्री-सम्पन्नता बढ़े। प्र० सुशीला तो मेरे घर की शोभा है।

घर की समझ—दे० घर की अक्ल।

घर के—पति; घरवाला। प्र० उनके घर के अभी बाहर गये हैं।

घर के आले लेते फिरना—घर के हर स्थान पर खोजना। प्र० तुम घर के आले लेते फिरो पर वह कलम गई सो गई, अब नहीं मिलने की।

घर के घर—(1) गुप्त रीति से। प्र० देखो घर के घर सब काम कर डालो, बाहरवालों को कानोंकान खबर न हो।

(2) बहुत से घर। प्र० इस बार महामारी में घर के घर बर्बाद हो गये।

(3) परिवार के सब लोग। प्र० दावत में घर के घर सब लोग आये थे।

घर के घर बन्द होना, -के घर साफ होना—परिवार में बहुत-से लोगों का एक साथ मर जाना। प्र० पिछली बाढ़ में जलपाईगुड़ी में न जाने कितने घर के घर साफ हो गये।

घर के घर रहना—न हानि उठाना न लाभ; बराबर रहना। प्र० इस सौदे में तो घर के घर ही रहे, कुछ बचा नहीं।

घर के घर साफ होना—दे० घर के घर बन्द होना।

घर के जाले बुहारना—घर-घर फिरना। प्र० तुम घर के जाले ही बुहारना चाहते हो तो वही करो।

घर के बाहर पैर न निकालना—घर में ही रहना; बाहर न जाना। प्र० वह बेचारी तो जल्दी घर से बाहर पैर ही नहीं निकालती फिर भी लोग दुनिया भर की बातें बनाये बिना नहीं मानते।

घर के भरे-पूरे होना—धन-जन से सम्पन्न होना। प्र० इतने नेता हैं...... घर के भरे-पूरे हैं (बौने०—रां० रा०, 25)।

घर के भीतर का कुआं—ऐसी वस्तु जिसका उपयोग और कोई न कर सके। प्र० सूरदास प्रभु तुम बिन जोबन घर भीतर को कूप (सूर—हिं० श० सा०)।

घर के लोग—परिवार के व्यक्ति। प्र० शादी के मौके पर घर के लोग तो जुटेंगे ही।

घर के ही बड़े होना, -बाढ़े होना—घर में ही बढ़-बढ़कर बातें करनेवाला होना। प्र० ग्वालिनि हैं घरहीं की बाढ़ी (सू० सा०—सूर, 1392); द्विज देवता घरहि के बाढ़े (राम० (बा)—तुलसी, 282)।

घर के ही बाढ़े होना—दे० घर के ही बड़े होना।

घर को सिर पर उठाना—(1) सबको परेशान कर डालना। प्र० श्रीकांत ने घर को सिर पर उठा रखा है, किसी तरह रास्ते पर नहीं आ रहा है।

(2) शोरगुल मचाना। प्र० इन लड़कों ने घर सिर पर उठा रखा है, जरा चुप कराओ न ?

घर खड़ा करना—घर बनाना। प्र० देखते-देखते उन्होंने इतना बड़ा घर खड़ा कर लिया।

घर खराब करना—पारिवारिक स्थिति बिगाड़ देना। प्र० उस नालायक ने तो सारा घर खराब कर दिया।

घर खा जाना—घर का सत्यानाश कर डालना। प्र० वह चुड़ैल सारा घर खा गयी।

घर खाये जाना—दे० घर काट खाना।

घर खाली छोड़ देना या छोड़ना—(1) कोई उपाय बाक़ी न छोड़ना। प्र० बेटे के लिए तो तुमने कोई घर खाली नहीं छोड़ा।

(2) वार चूक जाना। प्र० इस बार घर खाली छूट गया, अब कोई उपाय नहीं।

(3) गोटी के खेल में आगे का घर खाली छोड़ देना।

घर खोकर तमाशा देखना—व्यर्थ धन बर्बाद करना। प्र० तुम तो घर खोकर तमाशा देखना चाहते हो, देखो।

घर खोद डालना—बार-बार किसी काम या बात के लिए कहीं जाना। प्र० जब तक सगायी न हुई, उसका घर खोद डाला (गोदान–प्रेमचंद, 267)।

घर खोना, घर-खोना—(1) घर की मान-मर्यादा नष्ट करना या करनेवाला। प्र० सूर स्याम गारी कह दीजै, यह बुधि है घर-खोना (सू० सा०–सूर, 2088); कबहूँ बातनि हीं घर खोवति कबहुँ उठति दै गारिनि (सू० सा०–सूर, 2091)।

(2) घर की सारी सम्पत्ति नष्ट करना या करनेवाला। प्र० लाख समझाया, पर उसने सुना थोड़े ही। सारा घर खोकर ही माना।

घर घलना या घालना—घर नष्ट होना या करना; कलंकित होना या करना। प्र० इनि अहकार घणें घर घाले, नाचत कूदत जमपुरि चाले (कबीर ग्रंथा०–कबीर, 177); करु सेवा सिर नाई कै घर न घालु बुधि खोइ (पद०–जायसी, 44/2); सूर स्याम-संग ही संग डोलत, औरनि के घर घालत (सू० सा०–सूर, 2849); चित्रकेतु कर घर उन घाला (राम० (बा)–तुलसी, 90); काको घर घालिवे कौं बसे कहाँ घनस्याम, घूघू ज्यों घुसन प्रात मेरे गृह आए हौ (केशव०–केशव, 42); प्रास बाज़ार में कोठे पर बैठती है तो सब जानते हैं कि रंडी है, और ये लोग भली बनकर सत्तर घर घालती हैं डायनें (बूंद०–नागर, 63)।

घर घाम में छवाना—बहुत क्षति पहुँचाना। प्र० मैं तुम्हारा घर घाम में छवा दूंगा, तुम्हें दर-दर का भिखारी बनाकर ही चैन लूंगा।

घर चढ़कर लड़ने आना—झगड़ा करने के लिए किसी के घर जाना। प्र० वह तो हर समय घर चढ़कर लड़ने को आ खड़ी होती है।

घर चढ़ना—अपने से ऊँची स्थितिवाले के यहाँ जाना। प्र० शेखजी से सुनकर, कि बहना तुम दिवानों के घर जा चढ़ी, बड़े मामू ने गीली आंखों साफा छू शेखजी के आगे सिर नवा दिया—× × ×(डार०–कृ० सो०, 48)।

घर चलना या चलाना—घर का काम या खर्च चलना या चलाना। प्र० जब से देवकान्त का पिता लम्बी बीमारी में एड़ियाँ रगड़-रगड़ कर चल बसा था, माँ ने अपने हाथों के परिश्रम से ही घर चलाया था (ब्रह्म०–दे० स०, 187)।

घर छोड़कर घूरा बुझाना—अपने अहित के प्रति अचेत रहते हुए दूसरा काम करना; अपने अहित की ओर ध्यान न देना। प्र० पग तर जरत न जानै मूरख, घर तजि घूर बुझावै (सू० सा०–सूर, 356)।

घर छोड़ना—(1) संसार से विरक्त होना; वैराग्य लेना। प्र० स्पष्ट ही मालूम होता है कि यह घर छोड़ने की माया बड़ी प्रबल है और संसार का विरला ही कोई इसका शिकार होने से बच सकता है (अशोक०–ह० प्र० द्वि०, 33)।

(2) परिवार से सम्बन्ध तोड़ लेना। प्र० आप लोगों ने यदि मेरी इतनी-सी बात भी नहीं मानी तो मैं घर छोड़कर चला जाऊँगा।

घर जमना या जमाना—घर का सब सामान यथास्थान रखा जाना या रखना। प्र० अभी नया घर जमने में महीनों लग जायेंगे।

घर जाना—घर का नष्ट हो जाना। प्र० घर जाउ अपजसु होउ जग जीवत बिबाहु न हौं करौं (राम० (बा)–तुलसी, 108)।

घर जोड़ना—संसारी बनना। प्र० घर जोड़ने की अभिलाषा इस प्रवृत्ति का मूल कारण है (अशोक०–ह० प्र० द्वि०, 32)।

घर डाल लेना, -में डालना—रखैल रखना या बनाना। प्र० यह स्थिर हो गया कि सूरदास ने उसे घर डाल लिया (रंग० (2)–प्रेमचंद, 108)।

घर डुबाना या डूबना—(1) परिवार की मर्यादा नष्ट करना या होना। प्र० तुम घर डुबाने पर क्यों उतारू हो गये हो?

(2) घर का धन बर्बाद कर देना या होना। प्र० देखिए प्रयोग (1)।

घर तक पहुँचना—(1) घर के आदमियों की जानकारी में आना। प्र० उसकी करनी अब घर तक पहुँच गयी है, पिताजी उसकी अच्छी धुलाई करेंगे।

(2) बाप-दादों तक चढ़ जाना; गाली देना। प्र० वह तो इतना बदजबान है कि बात करते घर तक पहुंच जाता है।

घर तक पहुँचाना—(1) खत्म करना। प्र० अब तो इस काम को घर तक पहुँचा दूं तो चैन मिले।

(2) समझ ठिकाने करना। प्र० वह तो उसे मार-मारकर घर तक पहुँचा देगा, तुम निश्चिन्त रहो।

घर तोड़ना—पति-पत्नी में विच्छेद कराना। प्र० लोग कहते थे कि 'नुपमा'— लोगों के घर तोड़ती है (अंधेरे०–राकेश, 408)।

घर दिखाना—किसी को घर ले जाकर परिचय करवा देना। प्र० तुमने उसे मेरा घर दिखा दिया और अब वह रोज धमका रहता है।

घर देखना—(1) घर-गृहस्थी की देखभाल करना। प्र० पूछो, घर देखने वाला भी कोई चाहिए कि नहीं (गोदान–प्रेमचंद, 23)।

(2) बार-बार घर आना। प्र० कामेश्वर ने अब घर देख लिया है रोज पहुँचा रहता है।

(3) अपनी या किसी और की स्थिति देखना। प्र० अपना घर देखकर खर्च का हिसाब बांधना चाहिए।

(4) किसी के घर कुछ माँगने जाना। प्र० यह तुमने अच्छा घर देख लिया है कि जब देखो तब एक न एक चीज की माँग लिए आ पहुँचते हो।

घर नखास हो जाना—घर नष्ट होना; घर की सुख-शान्ति नष्ट होना। प्र० चौबीसों घंटे इन्हीं की 'हांजी-हांजी' में लगे रहो तो ठीक, नहीं तो घर नखास हो जाता है—एक-एक को खड़े-खड़े बेचने लगती हैं (अमृत०–नागर, 506)।

घर पकड़ना—जड़ पकड़ना; गोटी जमना। प्र० तुम्हारे प्रस्ताव ने मेरे मन में घर पकड़ लिया है, मैं जल्दी ही उस पर गम्भीरता से विचार करने वाला हूँ।

घर पड़ना, -में पड़ना—(1) किसी स्त्री का किसी पुरुष के साथ उसकी होकर रहना। प्र० आखिर क्या देखकर सुभागी ने भैरो को छोड़ दिया, और सूरे के घर पड़ गई ? (रंग० (2)-प्रेमचंद, 121)।
(2) किसी वस्तु की लागत मात्र। प्र० यह टेबुल लैम्प बारह रुपये में तो घर पड़ा है।

घर पर गंगा आना—बिना मेहनत काम पूरा होना। प्र० लो, तुम्हारे तो घर पर गंगा आ गयीं, अब क्या।

घर पर हाथी झूमना—खूब सम्पन्न होना। प्र० तुम्हारे घर हाथी झूमता था तो अब वह तुम्हारे किस काम का (गोदान-प्रेमचंद, 273)।

घर पाट देना—बहुत देना। प्र० किसी मुखबिर ने सारी खबरें पहुँचा दी थीं कि लड़की वालों ने दयाराम का घर सोने-चांदी से पाट दिया है (कम०-कम०, 23)।

घर पूछते चले आना—बिना निमंत्रण के किसी के यहाँ जाना। प्र० बीसों पंडित घर पूछते चले आये।

घर फटना—(1) घर में बच्चा उत्पन्न होना।
(2) छाती फटना; बुरा लगना।

घर फाड़े खाना—दे० घर काट खाना।

घर फूंककर तमाशा देखना, -फूंक तमाशा देखना—घर का रुपया-पैसा गंवाकर, घर बरबाद करके मौज करना। प्र० हाथी घोड़े भीड़ भड़ाका, देखें सब घर फूंक तमाशा (गु० नि०-बा० मु० गु०, 698)।

घर फूंककर तापना, -हाथ सेंकना, -में आग लगाकर हाथ सेंकना—घर की तबाही करके ऐश करना। प्र० उन्होंने सारी जिन्दगी घर फूंककर तप्पा।

घर फूंककर हाथ सेंकना—दे० घर फूंककर तापना।

घर फूंकना—(1) घर का सब कुछ खर्च कर डालना। प्र० वह तो घर फूंककर ही चैन लेगा (भारती०-रां० रा०, 97)।
(2) घर की प्रतिष्ठा नष्ट करना। प्र० तुम घर को फूंकने पर तुले हुए हो तो ठीक है, वही करो।

घर फूटना—परिवार के व्यक्तियों में झगड़ा होना। प्र० राय साहब का घर तो कब का फूट गया, सब अलग-अलग हो गये हैं।

घर फोड़ना—परिवार में झगड़ा लगाना। प्र० फोड़ पायें तो रहें घर फोड़ते, बैठ कर या उँगलियाँ फोड़ा करें (चुभते०-हरिऔध, 88)।

घर बन्द होना—(1) किसी के यहाँ जाना-आना बन्द होना। प्र० रामेश्वर प्रसाद के लिए मेरा घर बन्द है, यह निश्चित है।
(2) घर में किसी का न होना। प्र० पिछले छह महीनों से उनका घर बन्द है।
(3) गोटी चलने का रास्ता न होना। प्र० लो, अब तो सब घर बंद हो गये, आगे कहाँ चलूं ?

घर बनना—(1) धनी होना। प्र० अब तो शिवप्रसाद जी का घर बन गया है, खूब मजे में हैं।
(2) मकान तैयार होना। प्र० अभी पूरा घर कहाँ बना है, दो कमरे तैयार हुए हैं।
(3) घर के लोगों में मेल बना रहना। प्र० मेरी यही चेष्टा है कि घर किसी तरह बन जाए तो अच्छा हो।
(4) गृहस्थ बनना। प्र० देखूं, भाई का घर कब बनता है ?

घर बनाए रखना—सम्बन्ध बनाए रखना। प्र० तुम कोई घर नहीं बनाए रखोगे तो कैसे कोई तुम्हारे लिए कुछ करेगा ?

घर बनाना—(1) विवाह करना। प्र० आखिर घर बनाने का ख्याल तुम कब करोगे (कला०-उग्र, 24)।
(2) कहीं जमकर रहना। प्र० क्या आपने वहीं घर बना लिया है ?
(3) गलत तरीके से रुपये जमा करना। प्र० पिछली लड़ाई में ठेकेदारों ने खूब घर बनाये।
(4) मन में स्थान बनाना। प्र० देखो भाई, उसने तो मन में घर बना लिया है, यह सही है।
(5) घर की स्थिति सुधारना। प्र० मैं घर बनाने की चिन्ता में लगा हूँ और तुम बिगाड़ने पर तुले हो ?

घर बर्बाद होना, -बिगड़ना—(1) घर के लोगों का कुमार्ग पर चलना; मर्यादा नष्ट होना। प्र० किसी का घर बिगड़े, इन्हें क्या—इन्हें तो रंडी मिलती हैं—भले घर की, जवान और मुफ्त (शेखर० (2)-अज्ञेय, 178)।
(2) घर की स्थिति खराब होना। प्र० राम बाबू का घर अब एकदम बर्बाद हो गया।

घर बसना या बसाना—घर में स्त्री या बहू आना; विवाह होना। प्र० नारद कर उपदेसु सुनि कहहु बसेउ किसु गेह (राम० (बा)-तुलसी, 89); मैंने सोचा, इतनी पढ़ी लिखी स्त्री को लेकर क्या घर बसेगा (गु० नि०-बा० मु० गु०, 51); इससे तो लड़की हुए होते तो अच्छा था, किसी भले मानस का घर बसता (भिखा०-कौशिक, 38)।

घर बहाना—घर नष्ट करना; मान-मर्यादा नष्ट करना। प्र० संसकीरत छांटथी, घर बहैयें (राधा० ग्रंथा०-राधा० दास, 560)।

घर बिगड़ना—दे० घर बर्बाद होना।

घर बिगाड़ना—घर की स्थिति खराब करना; घर के लोगों को बुरे मार्ग पर ले जाना। प्र० लगता है घर बिगाड़े बिना इसे चैन नहीं मिलेगा।

घर बिलाना—विषय सम्पत्ति का नाश हो जाना। प्र० देखते-देखते रामू जी का घर ही बिला गया।

घर बे-चिराग हो जाना—निर्वंश हो जाना। प्र० किसने सोचा था विचारों का घर ही बे-चिराग हो जाएगा।

घर बैठना—(1) बिना किसी उद्यम के होना। प्र० इधर दो-तीन महीने से घर बैठे थे (बल०-नागा०, 73)।
(2) मकान धंस जाना। प्र० शाम को पांच बजे के लगभग खबर आई कि नाले के पास दो-एक पुराने घर पानी में बैठ गये हैं (अमृत०-नागर, 270)।
(3) रखैल होना। प्र० सुमन किसी के घर बैठने को राजी न थी।

घर बैठा लेना, -में बैठा लेना—रखैल रखना। प्र० उसने अपनी भाभी को घर में बैठा लिया था (झूठा० (2)–यशपाल, 435)।

घर भर—(1) घर के सब प्राणी। प्र० वाह, आज तो घर भर हाजिर है।
(2) इतनी संख्या जिससे सारा घर भर जाये। प्र० मर न जाते तो घर भर होते।

घर भरना—(1) लाभ करना या कराना; धन देना या लेना। प्र० कोई वेश्या तो थी नहीं, कि तुम्हें नोच-खसोट कर अपना घर भरना मेरा काम होता (ग़बन–प्रेमचंद, 115)।
(2) बहुतायत कर देना। प्र० देखने गये थे तो खा आए होंगे, तभी से तारीफ के मारे घर भरे दे रहे हैं (सारा०–यादव, 24)।

घर भरा होना—बहुत होना; आवश्यकता से अधिक होना। प्र० माखन दधि तेरैं घर नाहीं, धाम भर्‌यौ, चोरी करि खाही (सू० सा०–सूर, 1009)।

घर भांय-भांय करना—सूनापन लगना या होना। प्र० घर भांय-भांय कर रहा था (मान० (8)–प्रेमचन्द, 177)।

घर मसान बना देना—घर उजाड़ देना; बहुत बड़ी बर्बादी करना। प्र० अपनी आर्या मेरे घर भेजकर मुए ने मेरा घर तो मसान कर दिया और आप पाव भर गोश्त रोज खाने के लिए आज भी बचा हुआ है (अंधेरे०–राकेश, 345)।

घर मिट जाना—(1) परिवार की आर्थिक स्थिति खराब हो जाना। प्र० क्या बतलाऊं विन्दा प्रसाद जी का तो घर ही मिट गया।
(2) परिवार में किसी का भी शेष न बचना। प्र० दे० प्रयोग (1)।

घर मूसना—घर का सामान चुराना। प्र० गाफिल होइ बसत मति खोवै, चोर मुसै घर जाई (कबीर ग्रंथा०–कबीर, 96); इस तरह मेरा घर मूसकर यह चुड़ैल अपने धींगड़ों का घर भरती है (रंग० (1)–प्रेमचन्द, 396)।

घर में—(1) स्त्री; पत्नी। प्र० मेरे घर में पांच-छ: महीने से बीमार हैं (पद्‌म० के पत्र–पद्‌म० शर्मा, 163)।
(2) घर का कोई व्यक्ति। प्र० मैंने घर में कह दिया है, तुम जाकर रुपये ले लेना।

घर में आग लगने पर कुआं खोदना—अनिष्ट हो जाने पर उससे बचने का उपाय करना; पहले से न चेतना। प्र० कूप खनि कत जाइ रे नर, जरत भवन बुझाइ (सू० सा०–सूर, 315)।

घर में आग लगाकर हाथ सेंकना—दे० घर फूंककर तापना।

घर में आग लगाना—(1) परिवार में लड़ाई लगाना। प्र० ताहिर अली इन बातों पर स्त्री से रूठ जाते। उसे घर में आग लगानेवाली, विष की गाँठ कहकर रुलाते (रंग० (1)–प्रेमचंद, 121)।
(2) गृहस्थी नष्ट करना; घर की धन-सम्पत्ति नष्ट कर देना। प्र० लगा दे घर में आग, मुझे क्या करना है (गोदान–प्रेमचंद, 31)।
(3) अपनी ही क्षति करना। प्र० वह खुद समष्टिवाद के पुजारी थे, पर सीधे घर में आग न लगाना चाहते थे (गोदान-प्रेमचंद, 53)।

घर में आना—अपना लाभ होना। प्र० यह सौदा हो जाये तो अच्छी रकम घर में आ जाये।

घर में गंगा बहना, -होना—भरा-पूरा घर होना। प्र० बाबू [illegible] जी के घर में तो गंगा बहती हैं, हर तरह की सम्पन्नता है।

घर में गंगा होना—दे० घर में गंगा बहना।

घर में घाम आना, -धूप आना—विपत्ति और कठिनाई का समय होना। प्र० घर में घाम आ ही गयी हो तो उसे धीरज से सहना होता है।

घर में चांदना होना—संतान से घर में खुशी होना; आनन्द होना। प्र० बहन, तुम्हारी बदौलत हमारे घर में भी चांदना हो जाता, तो अच्छा था (मा–कौशिक, 69)।

घर में चूल्हा न जलना—(1) घर में खाद्यसामग्री का अभाव होना। प्र० आप न आयें तो हमारे घर चूल्हा भी न जले (कठ०–दे० स०, 64)।
(2) किसी कारण से खाना न बनना। प्र० दे० प्रयोग (1)।

घर में चूहे का कलाबाजी खाना, -का दंड पेलना, -कूदना, -लोटना, -भूंजी भांग न होना—घर में भोजन सामग्री का बिलकुल अभाव होना; घोर दरिद्रता होना। प्र० घर में भूंजी भांग नहीं है तौ भी न हिम्मत पस्त (भा० ग्रं० (2)–भारतेन्दु, 396); जिसके घर में चूहे लोटें, वह भी इज्जत वाला है (गोदान–प्रेमचन्द, 116)।

घर में चूहे का दंड पेलना—दे० घर में चूहे का कलाबाजी खाना।

घर में चूहे कूदना—दे० घर में चूहे का कलाबाजी खाना।

घर में चूहे लोटना—दे० घर में चूहे का कलाबाजी खाना।

घर में छदाम भी न होना—पास में कुछ न होना। प्र० बाबूजी, दो रुपये ही दे दीजिए। मेरे घर में तो छदाम भी नहीं है, बाल-बच्चे भूखों मर रहे हैं।

घर में झाड़ू फिरी होना—घर से सब कुछ चोरी चला जाना; घर में कुछ न बचना। प्र० देखो, तो × × घर में झाड़ू फिरी हुई थी, एक टूटी हांड़ी भी न मिली (रंग०–प्रेमचन्द, 469)।

घर में डालना—दे० घर डाल लेना।

घर में दिया जलाकर मस्जिद में जलाना—अपना हित करके दूसरों का हित करना। प्र० पहले घर में दिया जलाकर तब मसजिद में जलाते (मान० (1)–प्रेमचन्द, 153)।

घर में दिया जलानेवाला—वंशज होना। प्र० इक लष पूत सवा लष नाती, ता रावन घरि दीवा न बाती (कबीर० ग्रंथा०–कबीर, 119); वंस में कोई चिल्लू भर पानी देनेवाला घर में दिया जलानेवाला भी नहीं रहता (गोदान–प्रेमचन्द, 224)।

घर में धूप आना—दे० घर में घाम आना।

घर में पड़ना—(1) किसी के घर पत्नी रूप में जाना। प्र० महादेई ऐसे घर में पड़ी कि शुरू में भी उंगलियां घी में रहीं और आगे के... (दे० दु०–शिव०, 28)।
(2) दे० घर पड़ना।

घर में पांव रखना—घर में आना। प्र० खबरदार जो कभी फिर इस घर में पांव रखा (सारा०–यादव, 233)।

घर में बैठा लेना—दे० घर बैठा लेना।

घर में बैठे शिकार खेलना—घर-बैठे रुपया कमाना; लाभ करना। प्र० आज तो राजनीति में घुस पड़ो और फिर घर में बैठे शिकार खेलो।

घर में भूंजी भांग न होना—दे० घर में चूहे का कलाबाजी खाना।

घर में रख लेना—अपने अधिकार में कर लेना। प्र० बाबूजी की फोटो देखने के लिए मुझसे माँग कर ले गये और घर में रख ली। अब तक नहीं लौटाई।

घर में सोना—मौज करना। प्र० किया चाहे नौकरी सोया चाहे घर।

घर रखना—(1) घर की रक्षा करना। प्र० घर जालौं घर उबरैं, घर राखौं घर जाइ (कबीर ग्रंथा०–कबीर, 64)।

(2) सांसारिकता में लिप्त रहना। प्र० दे० प्रयोग (1)।

घर रहना—घर की मान-मर्यादा बनी रहना। प्र० किसी तरह घर रह जाये, मैं यही चाहती हूँ।

घर लुटाना—सम्पत्ति लुटाना। प्र० ये वही महाशय थे जिनके पितामह ने बाबू हर्षचंद्र की नाबालगी में इनके घर को लुटाया (राधा० ग्रंथा०–राधा० दास, 354)।

घर संभालना—(1) मान-मर्यादा रखना; घर की आर्थिक स्थिति को संभालना। प्र० अच्छा कमाने तो लगा, आज नहीं कल घर संभालेगा ही (गोदान–प्रेमचंद, 244)।

(2) घर का काम-काज देखना। प्र० सोभा की औरत घर संभाल लेती कि हीरा की औरत में यह सलीका था (गोदान–प्रेमचन्द, 24)।

घर समझना—कोई संकोच न करना। प्र० तुम इसे घर ही समझो, जो इच्छा हो माँग लेना।

घर सिर पर उठा लेना—(1) बहुत अधिक असंतुष्ट होकर विरोध प्रकट करना। प्र० एक गिलास क्या टूट गया, घर ही सिर पर उठा लिया (मोहल्ले०–बिन्दु अग्र०, 6)।

(2) बहुत अधिक शोरगुल करना। प्र० इन बच्चों ने तो घर सिर पर उठा लिया है। जरा चुप कराओ।

घर से—(1) पत्नी। प्र० हाँ, है तो कपिल साहब हिम्मत का ही काम—बीच बाजार में यह कहना कि मैं देशबन्धु जी के घर-से हूँ (उखड़े०–यादव, 133)।

(2) पास से; पल्ले से। प्र० तुम्हारे घर से तो कुछ जाता नहीं फिर तुम क्यों परेशान हो?

घर से खोना—अपना नुकसान करना। प्र० वह समझता था, यह जहाँ जाते हैं, वहीं कुछ-न-कुछ घर से खो आते हैं (गोदान–प्रेमचंद, 22)।

घर से छींकते चलना—घर से असगुन करते चलना। प्र० तुम घर से छींकते चलोगे तो और क्या होता, यही होना था।

घर से देना—(1) अपने पास से देना। प्र० घर से देकर कोई काम कैसे और कितने दिनों किया जा सकता है?

(2) हानि उठाना। प्र० दे० प्रयोग (1)।

घर से निकाल देना—विवाह करके लड़की को बिदा कर देना। प्र० वह बड़ी को जल्दी-से-जल्दी घर से निकाल देने की सोच में लग जाती (एक चादर०–बेदी, 27)।

घर से पैर निकालना, -बाहर पैर निकालना, -रखना—(1) बाहर जाना। प्र० घर से बाहर पांव नहीं धरता (इंशा०–इंशा०, 96)।

(2) अपनी शक्ति से बाहर काम करना। प्र० तुम घर से बाहर पांव क्यों निकालती हो?

(3) मर्यादा तोड़ना। प्र० देखो, इस तरह घर से बाहर पैर मत रखो।

घर से बाहर न निकलना, -पैर न निकालना—कोई अनुभव न होना। प्र० मैं तो घर से बाहर निकलती नहीं, मैं क्या जानूं।

घर से बाहर पैर न निकालना—दे० घर से बाहर न निकलना।

घर से बाहर पैर निकालना—दे० घर से पैर निकालना।

घर से बाहर पैर रखना—दे० घर से पैर निकालना।

घर से बाहर मुंह निकालना—घर से जरा भी निकल सकना। प्र० वह बेचारी तो घर से बाहर मुंह भी नहीं निकाल पाती। ऐसा गृहस्थी के चक्कर में फंस गयी है कि बस।

घर से बेघर करना—निकाल देना; निराश्रय कर देना। प्र० आप मुझे घर से बेघर कर देना चाहते हैं?

घर से मढ़ी अच्छी होना—गृहस्थाश्रम से संन्यास ले लेना ही अच्छा होना। प्र० सूरदास प्रभु हरि न मिलैं तो, घर तैं भली मढ़ी (सू० सा०–सूर, 3887)।

घर सेना—घर में ही बैठे रहना; कुछ काम धाम न करके घर पर बैठे रहना। प्र० तुम आराम से घर सेते रहो, तुम्हारे किये-धरे कुछ न होगा।

घर हिला देना—बहुत अधिक शोर करना। प्र० बाप रे बाप, तुम लोगों ने तो घर हिला दिया।

घर होना—(1) प्रांत या देश के अर्थ में प्रयुक्त। प्र० बंगाल जादू का घर है।

(2) गृहस्थी चलना; निर्वाह होना। प्र० ऐसी करतूतों से कहीं घर होता है।

घर-आंगन एक करना—बहुत सक्रिय होना; चेष्टा करना; दौड़ धूप करना। प्र० वे बेचारे तो कब से ही घर-आंगन एक किये हैं।

घर-आंगन होना—घर के समान परिचित होना। प्र० मैं तो पच्चीस बार आया हूँ, पच्चीस बार गया हूँ। अब जहाज मेरे लिए घर-आंगन हो गया है (बल०–नागा०, 48)।

घर-उजाड़ होना—घर की धन-सम्पत्ति नष्ट करनेवाला होना। प्र० वालिद घर उजाड़ थे (अमृत०–नागर, 528)।

घर-खर्च—गृहस्थी का खर्च। प्र० सवा सौ रुपये में घर-खर्च कैसे पूरा होगा।

घर-खोना—दे० घर खोना।

घर-गई—घर-उजड़ी; निगोड़ी (स्त्रियों की गाली)।

घर-गृहस्थ—परिवारवाला व्यक्ति । प्र० घर-गृहस्थ के यहाँ ऐसी अनीति कैसे चल सकती है ?

घर-घमंडी—बहुत घमंडी । प्र० सचमुच जिस भाषा के ठेकेदार आप जैसे घर-घमण्डी हों, उस अभागी का विनाश ही होता है (गु० नि०—बा० मु० गु०, 435) ।

घर-घर—हर जगह; हर घर । प्र० कालिहिंहि घर-घर डोलते, खाते दही चुराई (सू० सा०—सूर, 2079); तुम घर-घर मंडरात अति बलिभुक से नंदलाल (केशव०—केशव, 221); × × महल्ले बिरादरी में घर-घर चर्चे उठे (अमृत०—नागर, 59) ।

घर-घर ईद होना—हर कहीं आनन्द होना । प्र० आज तो घर-घर ईद है सिवा तुम्हारे ।

घर-घर का कर देना—बिलकुल बेकार कर देना; किसी लायक न छोड़ना। प्र० ऐसी रिस आवति है उन पर करें उनहिं घर-घर के री (सू० सा०—सूर, 2862) ।

घर-घर का भौंरा—लोभी व्यक्ति । प्र० हरीचन्द घर-घर के भौंरा तुम मतलब के मीत (भा० ग्रं० (2)—भारतेन्दु, 73) ।

घर-घर की मौसी—सबकी प्रिय और आदर-पात्री । प्र० जब जांगर में दम था, तब मैं 'घर-घर की मौसी' थी । अब जांगर थक गया, तो दर-दर की भिखारिन हूँ (दे० दु०—शिव०, 33) ।

घर-घर के होना—(1) मारे-मारे फिरना । प्र० ऐसा पतन भी कम दिखलाई पड़ता है, वे घर-घर के हुए डोलते हैं ।

(2) सब जगह आदर पाना । प्र० वे तो घर-घर के हो रहे हैं, सभी हाथों-हाथ लिए रहते हैं ।

घर-घर चूल्हा-हांड़ी होना, -मिट्टी का चूल्हा होना—सबकी एक-सी ही दशा होना । प्र० घर-घर मिट्टी के चूल्हे हैं, समझे (सारा०—यादव, 200) ।

घर-घर तक पहुँचना, -फैलना—सबको पता हो जाना । प्र० सबेरा होते ही यह बात घर-घर फैल जायेगी (ग़बन—प्रेमचन्द, 123) ।

घर-घर ताकते फिरना, -मांगते फिरना—भीख मांगना । प्र० तुम घर-घर ताकते फिरो, और क्या कर सकते हो ।

घर-घर नाचना—इधर-उधर घूमना । प्र० छूटन को संसा पर्‌या मन बौरारे नाच्यो घर-घर बारि (कबीर ग्रंथा०—कबीर, 276) ।

घर-घर पूंछ डुलाते फिरना—हर जगह दीनता दिखाते हुए पहुँच जाना ।

घर-घर पूजा होना—बहुत आदर होना । प्र० स्वामी रामकृष्ण परमहंस की घर-घर पूजा होती है ।

घर-घर फैलना—दे० घर-घर तक पहुँचना ।

घर-घर मांगते फिरना—दे० घर-घर ताकते फिरना ।

घर-घर मिट्टी का चूल्हा होना—दे० घर-घर चूल्हा-हांड़ी होना ।

घर-घाट—(1) रंग-ढंग । प्र० उनका तो घर-घाट कुछ समझ नहीं आता ।

(2) ठौर-ठिकाना । प्र० तुम्हारा कोई घर-घाट भी है कि यों ही उठल्लू के चूल्हा बने घूमते हो ?

घर-घाट एक करना—उद्योगशील होना । प्र० बेटी के ब्याह के लिए बेचारे घर-घाट एक किये हैं पर अभी तक कोई उपयुक्त वर नहीं मिला ।

घर-घाट का—ढंग का । प्र० कोई घर-घाट का काम हो तब तो किया जाय ।

घर-घाट जानना, -मालूम होना—सभी भेद जानना; स्थिति की पूरी जानकारी होना । प्र० मैं वहाँ का घर-घाट जानता हूँ, कुछ छिपा है क्या ।

घर-घाट देखना—(1) घर की हालत देखना । प्र० घर-घाट सब देख लो, फिर आगे बात करो ।

(2) सब बातें अच्छी तरह देखना । प्र० दे० प्रयोग (1) ।

घर-घाट न पाना—कोई ओर-छोर न समझ पाना । प्र० किसी को कुछ न समझता था पर किसी बात के सोच का घर-घाट न पाया था (इंशा०—इंशा, 91) ।

घर-घाट बराबर होना—(1) नफा-नुकसान बराबर होना । प्र० इस सौदे में घर-घाट बराबर हुआ लगता है ?

(2) घर बाहर एक-सा होना । प्र० अपने तो घर-घाट बराबर है, कोई खास फर्क नहीं पड़ता ।

घर-घाट बसना—विवाह होना । प्र० अब यह बताओ कि तुम्हारा घर-घाट कब बसेगा ? (दूधगाछ—दे० स०, 368) ।

घर-घाट मालूम होना—दे० घर-घाट जानना ।

घर-घाट से खोना—सब प्रकार से नष्ट-भ्रष्ट करना । प्र० उसने तो घर-घाट से सब खो दिया ।

घर-घुमनी, -झंकनी—रोज दूसरों के यहाँ घर-घर घूमनेवाली स्त्री ।

घर-घुस, -घुसड़, -घुसना, -घुसा, -घुस्सू—वह मर्द जो बराबर घर में ही बैठा रहे । प्र० शेखर ने विनोदपूर्वक कहा—यह क्यों नहीं पूछा कि घर-घुसना आदमी किस कमरे में रहता है (शेखर० (2)—अज्ञेय, 123); तीसरा घर-घुस्सू है और बिलकुल निखट्टू (ग़बन—प्रेमचंद, 110) ।

घर-घुसड़—दे० घर-घुस ।

घर-घुसना—दे० घर-घुस ।

घर-घुसा—दे० घर-घुस ।

घर-घुस्सू—दे० घर-घुस ।

घर-जुगुत—घर-गृहस्थी का प्रबन्ध । प्र० कुछ घर-जुगुत भी करोगे या यों ही हाथ पर हाथ धरे बैठे रहोगे ?

घर-झंकनी—दे० घर-घुमनी ।

घर-दामाद लेना—दामाद को अपने घर रखना ।

घर-द्वार देखना—घर के कामकाज की देखभाल करना । प्र० अब उन्हें बुलाकर घर में रक्खो । अपना घर द्वार देखें (भिखा०—कौशिक, 65) ।

घर-पीछे—एक-एक घर में या से । प्र० घर-पीछे एक-एक बाल्टी दी जायगी ।

घर-फूंक—ऐसा काम या व्यक्ति जिससे अपना ही नुकसान हो; अपने घर का नुकसान करनेवाला; बहुत खर्चीला । प्र० क्या ऐसा खर्चीला, घर-फूंक व्यक्ति, जिसका सम्बन्ध वेश्याओं से जोड़ा जाता है, वह सचमुच

भारती का सपूत हो सकता है ? (भारती०–रां० रा०, 8) ।

घर-फूंक तमाशा देखना—दे० घर फूंककर तमाशा देखना ।

घर-फूंक सौदा—ऐसा सौदा जिसमें बहुत घाटा हो ।

घर-फोड़ी—लड़ाई लगवानेवाली । प्र० पुनि अस कबहुँ कहसि घरफोरी. तव धरि जीभ कढ़ावउं तोरी (राम० (अ)–तुलसी, 385) ।

घर-बसा—उपपति । प्र० भोर भएं आए भांतिभांति मेरे मन भाए, ए हो घरबसे आज कौन घर बसे हौ (घन० कबित्त–घना०, 141) ।

घरबार आबाद करना या होना—विवाह करना या होना ।

घर-बार को होना—(1) घर की मालकिन होना । प्र० ब्याह के बाद लड़कियां घर-बार की हो जाती हैं फिर कहाँ फुर्सत मिलती है कि पन्द्रह दिन भी पीहर आकर रहें ।

(2) विवाह होना । प्र० सुशीला भी अब अपने घर-बार की हो गयी है ।

घरबारी होना—विवाह करके घर बसाना । प्र० जब तक विद्रोही व्यक्ति या दल समाज से बाहर रहकर मठों और विहारों में अविवाहित जीवन व्यतीत करते रहे तब तक वे सम्मान पाते रहे, पर ज्योंही वे घरबारी हुए कि उनकी सामाजिक मर्यादा अत्यन्त हीन हो गयी (अशोक०–ह० प्र० द्वि०, 27) ।

घरबारू—घरेलू । प्र० कोई घरबारू काम कर लो तो कुछ तो सहारा हो जाय ।

घर-बाहर—हर जगह । प्र० फैलि गई घर-बाहिर बात सु नीकें भई इन काज कनौंड़ी (घन० कवित्त–घना०, 14) ।

घर-बैठा करना—विधवा का किसी के साथ रहने लगना । प्र० सास है, उसने घर-बैठा कर लिया है (लिली–निराला, 78) ।

घर-बैठी रोटी—बिना मेहनत के अर्जित जीविका । प्र० घर-बैठी रोटी मिल जाती है तो फिर कोई काम क्यों करे ।

घर-बैठे—(1) बिना कुछ किए या कहीं गए । प्र० बहुत दिनन थैं मैं प्रीतम पाये, भाग बड़े घरि बैठें आये (कबीर ग्रंथा०–कबीर, 67); अस कहि अट्टहास सठ कीन्हा, गृह बैठें अहार विधि दीन्हा (राम० (लं)–तुलसी, 906) ।

(2) बिना मतलब; जबरदस्ती । प्र० घर बैठे बैर कियौ, कोपि राम आयौ (सू० सा०–सूर, 562) ।

घर बैठे अंडा सेना—बेकार घर में पड़े रहना ।

घर-बैठे की तनख्वाह, -नौकरी—बिना परिश्रम के रुपये ।

घर-बैठे की नौकरी—दे० घर बैठे की तनख्वाह ।

घर-बैठे की शीरनी—बहुत आसान । प्र० मर्दों के हजार काम, घर बैठे की शीरनी नहीं है जो (बौने०–रां० रा०, 164) ।

घर-बैठे गंगा आना—बिना परिश्रम के लाभ होना ।

घर-बैठे माल मारना, -शिकार खेलना—बिना परिश्रम रुपये कमाना ।

घर-बैठे रोटी मिलना—बिना परिश्रम के जीवन-निर्वाह की व्यवस्था होना । प्र० घर-बैठे रोटी मिल जाय तो कोई मेहनत क्यों करे ।

घर-बैठे शिकार खेलना—दे० घर-बैठे माल मारना ।

घरवा करना या घरौवा करना—घर सत्यानाश करना । प्र० अन्त में वह घरवा करके ही रहा ।

घरवाला या घरवाली—पति या पत्नी । प्र० उसके बाप ने न-जाने कहाँ से लूटकर, न जाने कितनी हत्याओं के बाद यह मोती-माणिक और आभूषण अपनी घरवाली के लिए कमाए होंगे (सात०–नागर, 21) ।

घरवाली बात—दुराव या औपचारिकताहीन बात या स्थिति । प्र० देखिए सुनील जी, आपके साथ तो अब घरवाली बात हो गई है (कठ०–दे० स०, 219) ।

घरों में ताला पड़ना—वीरान होना । प्र० सारा नगर सूना हो गया था, घरों में ताले पड़े थे ।

घरौंदा ढह जाना—मकान या परिवार का नष्ट हो जाना । प्र० वहाँ तो घरौंदा ढह गया, अब तुम जाकर क्या करोगे ?

घर्रा चलना, -लगना—अन्त समय कफ के आधिक्य के कारण श्वास घर्र-घर्र कर चलना । प्र० दादी जी के घर्रा चल रहा है, कुछ घंटों की और मेहमान हैं ।

घर्रा लगना—दे० घर्रा चलना ।

घर्राटा भरना, -मारना, -लेना—(1) गहरी नींद सोना । प्र० आप आराम से घर्राटे भरिए, आपको क्या ।

(2) निश्चिन्त होना । प्र० देखिए प्रयोग (1) ।

घर्राटा मारना—दे० घर्राटा भरना ।

घर्राटा लेना—दे० घर्राटा भरना ।

घलुए का लाभ—मुफ्त का लाभ । प्र० चीज का लाभ तो मुझे पहले ही मिल गया था, यह रहा घलुए का लाभ ।

घस-खोदा—मूर्ख; अनुभवशून्य । प्र० इस घसखोदे के किए कुछ न होगा ।

घस-गढ़ा—गरीब आदमी । प्र० उस घसगढ़े की लड़की कौन लेगा ।

घसरी कटाना—किसी काम को बेगारी से करके किसी तरह निपटाना । प्र० देखो, घसरी कटाना हो तो काम में हाथ मत लगाना ।

घसीटना—(1) ले आना; जबरदस्ती ले आना । प्र० विद्या को भी घसीट लाये, तो क्या कहना (प्रेमा०–प्रेमचंद, 189) ।

(2) जल्दी-जल्दी में लिखना । प्र० जल्दी-जल्दी पत्र घसीट रहा हूँ कि एक महाशय के हाथ, जो चांदपुर जा रहे हैं, इसे डाक में भेज दूं (पद्भ० के पत्र–पद्म० शर्मा, 33) ।

घसीटा जाना—किसी काम में जबरदस्ती लगा दिया जाना । प्र० मैं तो जबरदस्ती इस आयोजन में घसीटा जा रहा हूँ ।

घस्से पिलाना—धोखा देना । प्र० वह सरे आम घस्से पिलाकर चल दिया ।

घहरा पड़ना—(1) क्रोध करना । प्र० इतना सुनते ही वे घहरा पड़े ।

(2) चारों ओर से घिर आना । प्र० इतने बन्दर कहाँ से अचानक घहरा पड़े ?

घांइयां बताना—धोखा देना; बहकाना; टालमटूल करना । प्र० यार, तुम मुझे तो घांइयां न बताओ ।

घांख—चालाक; उद्दंड । प्र० यह लड़की तो बड़ी घांख हो गयी है ।

घाईं-माईं करना या होना, घाऊँ-माऊँ करना या होना—उलट-पुलट करना या होना। प्र० इसकी करतूत देखो, सारी आलमारी घाईं-माईं कर दी।

घाऊँ-माऊँ करना या होना—दे० घाईं-माईं करना या होना।

घाऊघप्प होना—चुपचाप अधिक चीजें ले लेनेवाला। प्र० बाँके लाल को मैं खूब जानती हूँ। उससे सावधान रहना, वह बड़ा घाऊघप्प है।

घाट—धोखा। प्र० रुपये-पैसे का काम लगता है, तो मैं ही काम आता हूँ और मेरे साथ घाट (रंग०—प्रेमचंद, 341)।

घाट उतारना—(1) कोई गलत काम या अनुभव कराना। प्र० चुनार ही में एक-दो बार सीता बनाकर मुझे भी बड़े भाई ने इस घाट पर उतार रखा था (अपनी०—उग्र, 28)।
(2) तबले के चढ़े स्वर को नीचा करना। प्र० दाहिना घाट उतारो, चढ़ा हुआ है।
(3) नाव से घाट तक पहुँचाना। प्र० सामने वाले घाट उतारना है भाई, क्या लोगे?

घाट का पत्थर समझना—खुले उपयोग की वस्तु समझना। प्र० नीलिमा की आँखें गम्भीर थीं परन्तु तरुणों की आँखें धोबी के कपड़ों की तरह उसे घाट का पत्थर समझकर उस पर पछारें खा जाती थीं (बौने०—रां० रा०, 86)।

घाट का मुर्दा घाट पर छोड़ देना—किसी बात को व्यर्थ न दुहराना; बीती बात को भूल जाना। प्र० तुम सारी जिन्दगी क्या इस एक बात को घोंटती ही रहोगी? अरे घाट का मुर्दा घाट पर ही छोड़ देना चाहिए।

घाट गहना—नदी पार करने का रास्ता रोकना। प्र० निषाद राज को कुछ सन्देह हुआ और उसने झट अपने आदमियों को घाट गहने का आदेश दे दिया।

घाट चढ़ाना—तबले को ऊपर के स्वर में मिलाना। प्र० घाट उतर गया है, पहले चढ़ा लो फिर बजाओ।

घाट धरना—राह छेंकना। प्र० घाट धरैया तुम यहै जानि कै, करत ठगनि के छंद (सू० सा०—सूर, 2159)।

घाट नहाना—किसी के मरने पर गंगा-स्नान करना। प्र० घाट नहाने नहीं चलोगे चाचा? झगड़ा था तो क्या हुआ, थे तो तुम्हारे भाई ही।

घाट बांधना—घाट बनाना। प्र० बाँधे घाट मनोहर चारी (राम० (अ)—तुलसी, 744)।

घाट मारना—घाट-कर दिए बिना चोरी से नाव निकाल ले जाना। प्र० आजकल घाट मारना बन्द हो गया है, पुलिस की कड़ी निगरानी है।

घाट में आना—चक्कर में फंसना। प्र० वह तो ऐसी आसानी से मेरे घाट में आएगा कि देखना।

घाट रोकना—घाट से किसी को आने-जाने न देना। प्र० जल भरन जुवति न पावैं, घाट रोकत जाई (सू० सा०—सूर, 2044); होहु संजोइल रोकहु घाटा (राम० (अ)—तुलसी, 250)।

घाट लगना—(1) किनारे पर पहुँचना। प्र० कहेसि सहेलिहु देखहु पाटा। मूरति एक लागि एहि घाटा (पद०—जायसी, 34/1)।
(2) ठिकाना पाना। प्र० तुम कोई तरह से घाट लगो तो सुख पाऊँ।
(3) किसी काम का पूरा होना। प्र० अब तो यही इच्छा है कि जल्दी से यह ब्याह घाट लगे।
(4) गति होना, भोगना। प्र० ईश्वर ही जाने अब तक मेरी क्या गति हुई होती, किस घाट लगा होता (ग़बन—प्रेमचंद, 168)।

घाट-कुघाट फिरना—अनुचित या असंगत काम करते रहना। प्र० तुम क्या सारी जिन्दगी घाट-कुघाट ही फिरते रहोगे?

घाट-घाट का पानी पिए होना—(1) हर तरह का भला-बुरा अनुभव किये होना। प्र० उन्हीं दिनों एक अंगरेज घूमता-घामता दिल्ली आया। दुनिया देखे हुए, घाट-घाट का पानी पिये हुए, पूरा चालाक और मक्कार (इंस्टा०—भग० वर्मा, 78)।
(2) भ्रमण से अनुभव प्राप्त किये होना। प्र० कई महीने दौरा किया। घाट-घाट का पानी पिया (गु० नि०—बा० मु० गु०, 719)।
(3) इधर-उधर मारा-मारा फिरनेवाला। प्र० घाट-घाट का पानी पीना ही उसे पसन्द था (कठ०—दे० स०, 126)।

घाटा आना, -पड़ना, -बैठना—व्यापार में नुकसान होना। प्र० कह गिरिधर कविराय बैठिहै तुमरे घाटा (कुण्ड०—गिरधरदास, 7)।

घाटा उठाना, -खाना—व्यापार में नुकसान सहना। प्र० कला-निकेत वालों को अगर इस बार घाटा उठाना पड़ा, तो वे आगे कभी मेरी बात पूछेंगे? (अंधेरे०—राकेश, 377)।

घाटा खाना—दे० घाटा उठाना।

घाटा पड़ना—दे० घाटा आना।

घाटा बैठना—दे० घाटा आना।

घाटा भरना—क्षतिपूर्ति करना। प्र० न जाने कब तक घाटा भरना होगा।

घाटे का सौदा—ऐसा लेन-देन जिसमें घाटा ही हो। प्र० तुम तो हमेशा घाटे का ही सौदा करते हो।

घात करना—(1) धोखा देना। प्र० चीन ने हमारे विश्वास का अनुचित लाभ उठाकर ऐसा घात किया।
(2) वार करना; मार डालना। प्र० सावधान रहना, कहीं भैंसा घात न कर बैठे।

घात चलाना—टोना करना।

घात देखना, -लगाना—मौका देखते रहना। प्र० आपु अपनी घात निरखत, खेल जम्यौ बनाइ (सू० सा०—सूर, 862); केलि की रात अघाने नहीं, दिन में ही लला पुनि घात लगाई (मति० मक०—मतिराम, 94)।

घात पर चढ़ना—वश में आना। प्र० यदि वह हाथ न बटाते, तो बुधिया इतनी जल्दी मनबहाल सिंह के घात पर नहीं चढ़ती (दे० दु०—शिव०, 38)।

घात बताना—(1) चालाकी सिखाना। प्र० तुम मुझे ही घात बताने की कोशिश कर रहे हो।

(2) चाल चलना । प्र० देखिए प्रयोग (1) ।

घात में—ताक में । प्र० वह तो न जाने कब से इसी घात में बैठी है ।

घात में आना—अभिप्राय-सिद्धि के अनुकूल होना; दांव पर चढ़ना; हत्थे चढ़ना । प्र० बहुत दिवस मैं का" लागी, मेरी घात न आयौ (सू० सा०—सूर, 906) ।

घात में पाना—किसी को ऐसी स्थिति में पाना जो अपने अनुकूल हो । प्र० इतने दिनों बाद मैंने उसे घात में पाया है ।

घात में फिरना, -बैठना, -रहना या होना—अवसर की खोज में रहना । प्र० रमाकान्त तो इसी घात में फिर रहा है ।

घात में बैठना—दे० घात में फिरना ।

घात में रहना या होना—दे० घात में फिरना ।

घात लगना—मौका मिलना । प्र० घात लगे तो मैं भी अमेरिका का चक्कर लगा आऊँ ।

घात लगाना—दे० घात देखना ।

घातें याद होना—दांव जानना । प्र० मुझे सब घातें याद हैं, तुम्हारे बतलाने की जरूरत नहीं है ।

घाते में—मुफ्त में; नफे में । प्र० नाटक तो किया ही, बम्बई घूमना घाते में रहा ।

घान उतरना या उतारना, -निकलना—किसी चक्की, मशीन या कड़ाही में एक बार डाली गई चीज का तैयार होकर निकलना । प्र० समोसा की पहली घान उतर जाये तो बतलाना ।

घान डालना, -पड़ना, -लगना—चक्की, मशीन, कड़ाही आदि में एक बार डालने लायक परिमाण की चीज डालना । प्र० गेहूँ की अगली घान कितनी देर में पड़ेगी ?

घान निकलना—दे० घान उतरना ।

घान पड़ना—दे० घान डालना ।

घान लगना—दे० घान डालना ।

घानी करना—पेरना । प्र० मेरा तिल कब घानी करोगे, महतो ?

घाम आना, -छाना—बड़ी कठिनाई या आफत आना । प्र० ऐसी क्या घाम आ गयी कि तुम इतने चिन्तित हो गये हो ?

घाम खाना, -लेना, -सेना—धूप का सेवन करना । प्र० चाचाजी इस समय बरामदे में बैठे घाम खा रहे हैं ।

घाम छाना—दे० घाम आना ।

घाम बचाना, -बराना—कष्ट और परेशानियों से बचाना । प्र० अपनी घाम बचाने की कोशिश तो दुनिया करती है ।

घाम बराना—दे० घाम बचाना ।

घाम लगना—लू लगना । प्र० बच्चा को घाम लग गयी है, जल्दी से आम का पना बनाकर दो ।

घाम लेना—दे० घाम खाना ।

घाम सेना—दे० घाम खाना ।

घाम-छांह सहना—दुःख-सुख के दिन झेलना । प्र० जिन्दगी क्या कभी एक रंग रहती है ? घाम-छांह तो सभी को सहना पड़ता है ।

घायं-मायं कर देना—इधर-उधर कर देना; गायब कर देना । प्र० मैं तुम्हारी नस-नस पहचानती हूँ । घायं-मायं किये बिना तुम मान ही नहीं सकते ।

घाय बताना—धोखा देना । प्र० तुम इस तरह घाय बताकर नहीं निकल सकते ।

घायल नागिन—प्रतिहिंसा के भाव से विक्षुब्ध नारी । प्र० बेगम समरू घायल नागिन हो रही थीं, किसी तरह उन्हें चैन नहीं मिल रहा था ।

घायल सांप की तरह बल खाना—भीतर ही भीतर तड़पकर रह जाना । प्र० एक बेबस क्रोध से पीड़ित होकर वह मन-ही-मन घायल सांप की तरह बल खाने लगता (चेतन—अश्क, 235) ।

घायल-दिल—दुःखी दिलवाला । प्र० मैं तो आप ही घायल-दिल हूँ, मुझसे क्या कहते हो ?

घास न गिनना—तुच्छ समझना । प्र० मैं उसे घास नहीं गिनता, उससे बात करने का सवाल ही नहीं है ।

घाल-मेल करना—मिला देना; गड़बड़ करना । प्र० मुझे पता था कि तुम घाल-मेल करोगे ही ।

घाल-मेल रखना—मित्रता रखना । प्र० अरे, वे तीनों खूब घाल-मेल रखते हैं ।

घाव आना, -खाना—(1) मन को पीड़ा पहुँचना । प्र० रघुसिंह करारा घाव खाकर वहाँ से लौटे × × (अमृत०—नागर, 194) ।

(2) जख्मी होना । प्र० सुवर्ण सिंह को उस दिन की लड़ाई में गहरे घाव आये ।

घाव करना, देना—बहुत पीड़ा पहुँचाना । प्र० माँ की बातों ने मेरे मन पर गहरा घाव किया, उस पीड़ा से मैं अब तक मुक्त नहीं हो पाया हूँ ।

घाव खाना—दे० घाव आना ।

घाव गहरा होना—मर्मान्तक पीड़ा होना । प्र० नहीं, इस बार का घाव गहरा है, वह सहज ही नहीं भरेगा ।

घाव छीलना—तकलीफ को और बढ़ाना; पीड़ा पहुँचाना । प्र० वह जानती है कि वह जान-बूझ कर उसके घाव को छील रही है, मगर वह उसे और छीलती जाना चाहती है (अंधेरे०—राकेश, 274) ।

घाव ताजा होना, -हरा होना—(1) भूली बात या दुःख फिर से तीव्र होना । प्र० हाँ, इरा ! मेरे अपमानित जीवन के घाव फिर से हरे हुए हैं (परती०—रेणु, 473) ।

(2) किसी दुःख या पीड़ा के कारण को घटे थोड़ा ही दिन होना । प्र० पुत्र-शोक का घाव अभी ताजा ही था कि पत्नी चल बसी ।

घाव देना—दे० घाव करना ।

घाव पर घाव खाना—एक के बाद एक हृदय को पीड़ा पहुँचानेवाली घटनाओं का होना । प्र० उनकी दशा क्या कहूँ ? एक पर एक बेचारे घाव खाते ही जा रहे हैं ।

घाव पर नमक (नोन) छिड़कना, -सींचना—दुःख के समय और दुःख

देना । प्र० जीवन अधार जान सुनियै पुकार नेकु, अनाकानी दैबो दैया घाय कैसो लौन है (घन० कवित्त–घना०, 43); तिस पर रोग टैक्स आदिक का लोगों को रहता है त्रास, सींचा जाता निर्दयता से, नमक घाव पर बारह मास (मिश्र निबन्ध०); रग्घू ने ठंडी सांस खींच कर कहा–धुलिया, घाव पर नोन न छिड़क (मान० (1)–प्रेमचंद, 15) ।

घाव पर नमक पड़ना या होना—दुःखी को और दुःख मिलना । प्र० फूलमती के घाव पर जैसे मनों नमक पड़ गया (मान० (1)–प्रेमचंद, 75) ।

घाव पर नमक सींचना—दे० घाव पर नमक छिड़कना ।

घाव पर फाहा रखना, -मरहम रखना, -लगाना, -मरहम-पट्टी करना—कष्ट में सांत्वना देना । प्र० कोई घाव पर फाहा रखनेवाला भी तो नहीं दिखता, किसके आगे दुखड़ा रोऊँ ?

घाव पर मरहम रखना—दे० घाव पर फाहा रखना ।

घाव पर मरहम लगाना—दे० घाव पर फाहा रखना ।

घाव पर मरहम-पट्टी करना—दे० घाव पर फाहा रखना ।

घाव पालना—किसी पीड़ा को दूर न होने देना; मन में बनाये रखना । प्र० × × वह उस घाव को धीरे-धीरे पाल रहा था (चेतन–अश्क, 213) ।

घाव पूजना, -पूरा होना, -भरना—(1) घाव भरना; घाव अच्छा होना । प्र० कृष्ण की अमिलताई (न मिलना) हृदय के घाव में भी भर गई है जिससे उसका मुंह नहीं मिलता और वह नहीं पूजता (चिन्ता० (1) –शुक्ल, 269) ।

(2) शोक आदि का वेग कम होना । प्र० दूसरा कोई उपाय हमारे लिये नहीं है, हमारे कलेजे का घाव पूरा नहीं हो सकता (ठेठ०–हरिऔध, 30); करुणतम भग्नहृदय, नहीं भरता है जिसका घाव (पल्लव–पंत, 18) ।

(3) मनोमालिन्य मिटना । प्र० उनके विचार में इस घाव का भरना दुस्तर था (प्रेमा०–प्रेमचंद, 179) ।

घाव पूरा होना—दे० घाव पूजना ।

घाव बजना—घाव या चोट लगना । प्र० उठि बहोरि मारुति जुबराजा । हतहिं कोपि तेहि घाउ न बाजा (राम० (लं)–तुलसी, 946) ।

घाव भरना—दे० घाव पूजना ।

घाव मथना—(1) किसी शोक के वेग का मन को और भी उद्वेलित करना । प्र० पति-वियोग का घाव निरन्तर मथ रहा था ।

(2) फोड़े में बहुत पीड़ा होना । प्र० पैर का घाव बड़ा मथ रहा है मां ।

घाव में जहर देना—और अनिष्ट करना । प्र० मनहु घाव महं माहुर देई (राम० (अ)–तुलसी, 404) ।

घाव लगना—हृदय को आघात पहुँचना । प्र० मेरे हृदय में लगे घाव का तुम अनुमान भी नहीं कर सकते ।

घाव सूखना—व्यथा का धीरे-धीरे दूर होना । प्र० जस्सो के आने से हृदय का घाव, जो सूख चला था, फिर हरा हो गया है (भिखा०–कौशिक, 199) ।

घाव हरा करना—किसी दुःख की बात का स्मरण कराना । प्र० बीत शोक की याद दिलाकर सूखे घाव को हरा न कीजिए (भोर०–जग० माथुर, 42) ।

घाव हरा होना—दे० घाव ताजा होना ।

घास—तुच्छ वस्तु । प्र० सब या व्रज के लोग चिकनियाँ, मेरे भाएँ घास (सू० सा०–सूर, 2282) ।

घास काटना, -खोदना, -गढ़ना, -छीलना—(1) व्यर्थ काम करना । प्र० तुमसौं प्रेम कथा करै कहिबौ, मनौ काटिबौ घास (सू० सा०–सूर, 4577); यह भी संपादक ही हैं, कोई घास नहीं छीलते (मान० (1) –प्रेमचन्द, 323)

(2) हड़बड़ी में किसी तरह काम करना । प्र० काम करना है तो ढंग से करो, इस तरह घास मत काटो ।

घास खाना—मूर्ख होना । प्र० विनोदबिहारी ने कहा–आप तो घास खा गये हैं (मान० (4)–प्रेमचंद, 76) ।

घास खोदना—दे० घास काटना ।

घास गढ़ना—दे० घास काटना ।

घास चरे हो क्या—महामूर्ख हो क्या ? प्र० तुम कैसी नादानी की बातें कर रहे हो, घास चर गये हो क्या ?

घास छीलना—दे० घास काटना ।

घास बराबर न समझना—अत्यन्त तुच्छ समझना । प्र० मैं तो उसे घास बराबर भी नहीं समझती ।

घास बेचकर खाना—बहुत साधारण काम करके जीविका अर्जित करना । प्र० कहि रहीम धन बढ़ि घटै, जात धनिन की बात । घटै-बढ़े उनको कहा, घास बेंचि जे खात (रहीम कवि०–रहीम, 4) ।

घास-फूस उठा लाना—बेकार की वस्तु उठा लाना । प्र० यह तुम क्या घास-फूस उठा लाये ? एक भी ढंग की चीज नहीं है ।

घास-फूस समझ रखना—तुच्छ समझ रखना । प्र० तुमने क्या इसे घास-फूस समझ रखा है ?

घिग्घी बंधना—(1) रोते-रोते हिचकी आने लगना । प्र० इन लोगों की घिग्घी बंध गई (मृग०–वृं० वर्मा, 399) ।

(2) भय के कारण न बोल पाना । प्र० पिताजी के सामने बोलते तो घिग्घी बंधती है (भिखा०–कौशिक, 208) ।

घिन खाना—घृणा करना । प्र० मैं उससे घिन खाती हूँ, उसका नाम मत लो ।

घिन बरना—घृणा होना । प्र० उसके नाम से मुझे घिन बरने लगती है ।

घिया-तरोई समझना या होना—दुर्बल या तुच्छ समझना या होना । प्र० वह तो सबको घिया-तरोई ही समझता है ।

घिर आना—छा जाना । प्र० देखते-देखते बादल घिर आये ।

घिरनी खाना, घिर्री खाना—घूम जाना । प्र० पहलवान ने इसे ऐसा चक्कर दिया कि वह घिर्री खाकर रह गया ।

घिरिया में घिरना—दुविधा में पड़ना । प्र० भैया, मैं तो घिरिया में घिरा

हूँ, क्या करूँ, तुम्हीं बतलाओ।

घिर्री खाना—दे० घिरनी खाना।

घिस देना—धता बताना। प्र० वह तुम सबको घिस देगा, देखना।

घिस लगाने को भी न होना—ज़रा भी न होना। प्र० आजकल बढ़िया घी घिसकर लगाने को भी नसीब नहीं होता।

घिस-घिस करना, -लगाना—हीला-हवाली करना; ठीक से काम न करना। प्र० यह तो हर दिन घिस-घिस करता है। ऐसे कैसे काम चलेगा।

घिस-घिस लगाना—दे० घिस-घिस करना।

घिस-घिसकर चलना—खूब काम में आना या चलना। प्र० यह साड़ी तो खूब घिस-घिसकर चली।

घिसटे-घिसटे फिरना—मारे-मारे फिरना। प्र० आखिर कब तक तुम घिसटे-घिसटे फिरोगे।

घिसनी चलना—बच्चों का घुटनों के बल चलना; खिसक-खिसककर चलना। प्र० छह महीने का हो गया, अभी तक यह घिसनी नहीं चला?

घिस-पिस करना—कानाफूसी करना। प्र० न जाने क्या घिस-पिस वे लोग कर रहे थे?

घिस-पिसकर उतरना या उतारना—एकदम जीर्ण हो जाना। प्र० इस कमीज को तो मैंने एकदम घिस-पिसकर उतारा है।

घिसा होना—अनुभवी होना। प्र० पहले दिन इसे देखते ही मैं समझ गया था कि यह घिसा हुआ गिरहकट है (जहाज०—इला० जोशी, 16)।

घिसी-घिसाई, -पिटी—पुरानी; अनेक बार प्रयोग में आई हुई। प्र० वर-कला को इन घिसी-घिसाई कथाओं से बचाओ (दूधगाछ—दे० स०, 55); ऐसी घिसी-घिसाई धोती उन्हें क्या दूं?

घिसी-पिटी—दे० घिसी-घिसाई।

घिस्सा देना—चकमा देना। प्र० वह ऐसी होशियारी से मुझे घिस्सा देकर निकल जायेगा, यह नहीं सोचा था।

घी कड़कड़ाना—घी गरम करना। प्र० आधा पाव घी कड़कड़ा लो बेटी।

घी का कुप्पा—बड़ा धनी। प्र० लालाजी तो घी के कुप्पा हैं, उनकी क्या बात है।

घी का कुप्पा ढरकना या ढरकाना, -लुढ़कना या लुढ़काना, -घड़ा ढरकना या ढरकाना, -लुढ़कना या लुढ़काना—बहुत हानि होना या उठाना; किसी के लिए बहुत कुछ करना। प्र० फूट है घर में हमारे पड़ रही हैं लुढ़कते जा रहे घी के घड़े (चुभते०—हरिऔध, 133); मैंने तो समझा डाक्टर साहब और बीसों आदमी हैं, मेरे न रहने से ऐसा क्या घी का घड़ा लुढ़का जाता है? (कर्म०—प्रेमचंद, 80)।

घी का कुप्पा लुढ़कना या लुढ़काना—दे० घी का कुप्पा ढरकना या ढरकाना।

घी का कुप्पा लुढ़ना—किसी अमीर या राजा का मर जाना।

घी का घड़ा ढरकना या ढरकाना—दे० घी का कुप्पा ढरकना या ढरकाना।

घी का घड़ा लुढ़कना या लुढ़काना—दे० घी का कुप्पा ढरकना या ढरकाना।

घी का डोरा—घी की धार। प्र० घी का डोरा दो तब न खिचड़ी का मज़ा आये।

घी का लड्डू—लाभदायक या मूल्यवान वस्तु। प्र० अरे भाई, यह घी का लड्डू है, इसे चुपचाप रख लो।

घी का लड्डू टेढ़ा भी भला होता है—लाभदायक या मूल्यवान वस्तु का रूप-आकार गौण होता है।

घी की आहुति देना—(1) मूल्यवान वस्तु को नष्ट करना। प्र० मैंने घी की आहुति देकर वर्तमान स्थान प्राप्त किया है, यूँ ही नहीं।

(2) बड़ा त्याग करना। प्र० देखिए प्रयोग (1)।

घी की मक्खी—(1) तुरन्त मर जानेवाला। प्र० तुलसी तिहारो, तुमहीं पै तुलसी के हित, राखि कहौं हौं तो जो पै ह्वैहों माखी घीय की (विनय०—तुलसी, 263)।

(2) त्याज्य। प्र० मेरे लिए वह घी की मक्खी है।

घी के कुप्पे से जा लगना—लाभ वाले स्थान पर पहुँच जाना। प्र० बाबू साहब को देखा! झट घी के कुप्पे से जा लगे।

घी के चिराग जलना या जलाना, घी के जलना या जलाना, -दीये जलना या जलाना—मनोरथ सफल होने पर खुशी होना। प्र० कहु कैसे बसुदेव देवकी, बरत दीवला घी के (सू० सा० (परि—1)—सूर, 185); मैं जानता हूँ, बापू ने गांव-बूढ़ा का पद छोड़ दिया तो साधन मीरी के घर घी के दीये जलेंगे (ब्रह्म०—दे० स०, 320)।

घी के जलना या जलाना—दे० घी के चिराग जलना या जलाना।

घी के दीये जलना या जलाना—दे० घी के चिराग जलना या जलाना।

घी के दीये भरना—खुशी मनाना; मौज उड़ाना। प्र० तुम्हें यदि यह नौकरी मिल गयी तो मैं घी के दीये भरूँगी।

घी खिचड़ी में ही गिरना—(1) एक ओर से नुकसान तो दूसरी ओर से लाभ ही होना। प्र० रुपये बेटे को मिल गये तो क्या नुकसान हुआ, घी खिचड़ी में ही तो गिरा।

(2) नष्ट न होना। प्र० तुम चिन्ता मत करो, घी खिचड़ी में ही गिरा है।

घी में पांचों उंगली होना, -में पांचों होना, -में होना—खूब लाभ या सुख होना। प्र० अपने राम की तो घी में पांचों उंगली है, परम सुख में हूँ।

घी में पांचों होना—दे० घी में पांचों उंगली होना।

घी में होना—दे० घी में पांचों उंगली होना।

घी लगे बिना सोहाली होना—बिना खर्च के बढ़िया काम या चीज होना। प्र० आप तो चाहती हैं कि घी लगे बिना सोहाली हो जाय, सो कैसे होगा।

घी-खिचड़ी होना—(1) बहुत प्रसन्न होना। प्र० क्या बात है, आज तो आप घी-खिचड़ी हो रहे हैं?

(2) गहरी दोस्ती होना। प्र० वे दोनों तो एकदम घी-खिचड़ी हैं।

घी-दूध की नदी बहना—बहुत सम्पन्न होना। प्र० वह रहा है सोत दुःख का अब वहाँ, थी जहाँ घी दूध की बहती नदी (चुभते०—हरिऔध, 82)।

घुंघरू बांधना—(1) नाचने में चेला बनाना। प्र० शुभ घड़ी देखकर उस्ताद ने उसे घुंघरू बांधा।
(2) नाचने के लिए तैयार होना। प्र० बाई जी घुंघरू बांध चुकी हैं, अब जैसा हुक्म हो।

घुंघरू बोलना—(1) नाच होना। प्र० रात के ग्यारह बजे थे, दीवानखाने में घुंघरू बोल रहे थे।
(2) मरते समय गले में कफ अटकने के कारण आवाज होना। प्र० सुबह से घुंघरू बोल रहा है, अब उम्मीद नहीं है।

घुंघरूबंद भाई—नाच के पेशेवाले।

घुंघरू-सा लदना—(1) देह पर बहुत-सी फुंसियां या दाना निकलना। प्र० चेचक के मारे बेचारे की देह घुंघरू-सी लद गयी है।
(2) पेड़ का फल से लद जाना। प्र० छोटी नारंगी पेड़ पर घुंघरू-सी लदी थी।

घुंडी खोलना—मन की रंजिश दूर करना; दिल साफ रखना। प्र० मन की घुंडी खोलो तब न बात समझ में आये।

घुघुनियां (घुनघुनियां) मुंह में डालकर बैठना, -भरकर बैठना—एकदम चुपचाप बैठना।

घुघुनियां (घुनघुनियां) मुंह में भरकर बैठना—दे० घुघुनियां मुंह में डालकर बैठना।

घुटकी लगना—प्राण कंठगत होना। प्र० अब तो घुटकी लग गयी है, जो दान-पुण्य करवाना है करवा दो।

घुट-घुटकर बातें करना या होना—बड़े प्रेमपूर्वक बातें करना या होना। प्र० मैं वहाँ पहुँची उस समय दोनों में न जाने क्या घुट-घुटकर बातें हो रही थीं।

घुट-घुटकर मर जाना—अत्यन्त चिन्ता करते-करते प्राण दे देना; अत्यन्त कष्ट से मरना। प्र० हाय, मेरी वे सारी महत्त्वाकांक्षाएं, वह कुछ बनकर दिखाने के सपने, अब यों ही घुट-घुटकर मर जाएंगे × × × (सारा०—यादव, 10)।

घुट-घुटकर रह जाना—जी मसोसकर रह जाना। प्र० मैं तो घुट-घुटकर रह गया पर किसी ने सुना ही नहीं।

घुटता गला—भावातिरेक के कारण रुंधा हुआ सा गला। प्र० शेखर ने मुंह फेरकर घुटते गले से निकाला—सरस......(शेखर० (1)—अज्ञेय, 143)।

घुटना—(1) भंग पीसी जाना। प्र० रोज शाम को चकाचक घुटती (भारती० —रां०, रा०, 35)।
(2) प्रेमपूर्वक घुल-घुलकर बातें होना। प्र० उसको आशा थी कि जैसे ही बैजू का ध्यान इस ओर बटा कि उसने भीतर बुलाया और खूब घुटेगी दो कलाकारों के बीच में (मृग०—वृं० वर्मा, 427)।
(3) प्रेम होना। प्र० दोनों में तो न जाने कितने पहले से घुट रही है, तुम्हें पता नहीं ?

घुटना टेक देना—अधीनता स्वीकार करना; हार मान लेना। प्र० जब तक मेरे पास यह रिवाल्वर है, तुम मेरा क्या कर सकते हो। तुम्हारे सामने तो घुटना न टेकूंगा (मान०—(2)—प्रेमचंद, 239)।

घुटनियां धोती—घुटने तक ऊँची धोती। प्र० गो पहने वे सूट ही थे मगर इस फैशन से कि लोग बाग उन्हें मिर्जई और घुटनियाँ धोती ही समझें (अमृत०—नागर, 487)।

घुटने का पेट की ही ओर मुड़ना—अपने निकट के व्यक्ति के ही प्रति अनुकूलता होना। प्र० फिर बोले—घुटना पेट को ही मुड़ता है। वहाँ नौकरी चली गई तो (बौने०—रां० रा०, 162)।

घुटने के बल बैठकर—बहुत विनीत होकर। प्र० वह तो घुटने के बल बैठकर प्रार्थना करता रहा पर वे बेरुखी से चल दिये।

घुटने तोड़ना—अहित करना। प्र० वही तोड़ता है क्यों घुटने, जो घुटनों से लगकर बैठा (बोल०—हरिऔध, 232)।

घुटनों के बल चलना, -रेंगना, घुटनों चलना—(1) प्रारम्भिक अवस्था में होना। प्र० चल सके हम लोग घुटनों मुद्दतों, अब हमें घुटनों न चलना चाहिए (बोल०—हरिऔध, 232)।
(2) बच्चों का चारों हाथ-पैर से चलना। प्र० दे० प्रयोग (1)।

घुटनों के बल रेंगना—दे० घुटनों के बल चलना।

घुटनों चलना—दे० घुटनों के बल चलना।

घुटनों में सिर दबाना, -देकर बैठना, -देना—अत्यन्त उदास या लज्जित होना। प्र० घोंट-घोंटकर गला जाति का, घुटनों में सिर देना होगा (बोल०—हरिऔध, 232)।

घुटनों में सिर देकर बैठना—दे० घुटनों में सिर दबाना।

घुटनों में सिर देना—दे० घुटनों में सिर दबाना।

घुटनों से लगकर बैठना या बैठाना—हर समय साथ रहना या रखना। प्र० वही तोड़ता है क्यों घुटने, जो घुटनों से लगकर बैठा (बोल०—हरिऔध, 232)।

घुटा मन—खिन्न और उदास। प्र० उनका घुटा हुआ मन इस अंधेरे में घुटनेवाले जंगल की तरह ही था जिसमें सिसकियां भय और मन-हूसियत झंकार रही थी—चीख रही थी (अमृत०—नागर, 493)।

घुटा हुआ, घुटा-घुटाया—पक्का चालाक। प्र० यार पण्डत, तुम भी बड़े घुटे हुए आदमी हो (भूले०—भग० वर्मा, 264)।

घुटा-घुटाया—दे० घुटा हुआ।

घुटी रकम—घुटी हुई; चालाक। प्र० वह सीधी नहीं है, बड़ी घुटी रकम है (सारा०—यादव, 131)।

घुट्टी के साथ पिलाना—जन्म से ही सिखाना। प्र० मां ने पाप-पुण्य, भलाई-बुराई के जो विचार उसे घुट्टी के साथ पिलाये थे, वे उसे हवा होते दिखाई देते थे (चेतन—अश्क, 199)।

घुट्टी में पड़ना, घूंटी में पड़ना, -होना—जन्म से स्वभाव में होना। प्र० खोट घुट्टी में किसी की जो पड़ी, वह बंटाने से कभी बंटती नहीं (चोखे०—हरिऔध, 121); दबने और दबाने का सिद्धान्त हमारी

घुट्टी में पड़ता है (बूंद०—नागर, 95)।

घुड़कियां जमाना—डाँटना। प्र० भाग्य-वाग्य तो कहीं नहीं सराहते, घुड़कियां जमाया करते हैं (ग़बन—प्रेमचन्द, 79)।

घुड़की खाना—डांट खाना। प्र० इस परिस्थिति से उसका मन बराबर विद्रोह किया करता था और दो चार घुड़कियां खा लेने पर ही उसे यथार्थ का ज्ञान होता था (गोदान—प्रेमचन्द, 5)।

घुणाक्षर न्याय—संयोगवशात् किसी काम या बात का होना। प्र० मैं उसे बुलाने के लिए चिट्ठी लिखने का इरादा कर रहा था और वह अचानक टपक पड़ा—इसे ही घुणाक्षर न्याय कहते हैं।

घुन झड़ना—घुन की खाई हुई लकड़ी का चूर झड़ना। प्र० अरे, इस आलमारी में भी घुन झड़ रहा है।

घुन लगना—(1) चिन्ता आदि के कारण शरीर का कृश होना। प्र० मोहन को बोल सुनें धुनैं सीस, मन ही मैं धुनैं सोच भारी, गुनैं गहि बूड़े सोक हैं (घन०कवित्त—घना०, 193)।
(2) अंदर-अंदर किसी वस्तु का क्षीण होना। प्र० वंस में घुन लगा दिया उसने, औ नई पौध की कमर तोड़ी, जाति को है तबाह कर देती, एक बेजोड़ ब्याह की जोड़ी (चुभते०—हरिऔध, 158)।
(3) घुन का अनाज या लकड़ी खाना। प्र० कनस्तर के गेहूँ में घुन लग गया है, इसे अलग रखो।

घुनी बात—निस्सार, खोखली बात। प्र० सार को जो प्यार नहीं करते, क्यों न रुचतीं उन्हें घुनी बातें (चुभते०—हरिऔध, 45)।

घुन्ना—सूरत से सीधा मगर भीतर से चालाक।

घुन्नी साधना—चुप होकर बैठ जाना।

घुमाकर नाक पकड़ना—काम या बात को सीधे के बदले टेढ़े तरीके से करना। प्र० बात तो वही है। तुम घुमाकर नाक पकड़ रहे हो बस।

घुमाकर नैना मारना—तिरछी चितवन से देखना। प्र० अरे यार, क्या उसने घुमाकर नैना मारा कि मैं तो वहीं चित्त हो गया।

घुमा देना—गायब कर देना; चोरी करना। प्र० तुमने मेरी घड़ी भी घुमा दी और ऊपर से जवाब-सवाल कर रहे हो?

घुमा-घुमाकर पूछना, -बातें करना, घुमा-फिराकर पूछना, -बातें करना—खोद-विनोद करना; घुमा-फिराकर एक ही बात पूछना। प्र० ओह! तो यों क्यों नहीं कहता कि बहू के लिए चाहिए? घुमा-फिरा के क्यों पूछ रहा है (सारा०—यादव, 130)।

घुमा-घुमाकर बातें करना—दे० घुमा-घुमाकर पूछना।

घुमा-फिराकर पूछना—दे० घुमा-घुमाकर पूछना।

घुमा-फिराकर बातें करना—दे० घुमा-घुमाकर पूछना।

घुमाव-फिराव की बातें करना—पेंचीली बातें करना, हेर-फेर की बातें करना। प्र० मुझसे ये सब घुमाव-फिराव की बातें मत करो।

घुरबिनिया करना—दर-दर मारे-मारे फिरना। प्र० आप और क्या कीजिएगा, घुरबिनिया करते रहिए।

घुरहू-कतवारू, -पेबारू—तुच्छ व्यक्ति। प्र० मैं उस जैसे घुरहू-कतवारू के यहाँ हरगिज नहीं जाने का।

घुरहू-पेबारू—दे० घुरहू-कतवारू।

घुल जाना—अत्यन्त दुर्बल हो जाना। प्र० दुख पड़े घुल गया बदन सारा (चुभते०—हरिऔध, 60)।

घुलकर कांटा होना, घुल-घुलकर कांटा होना—बहुत दुर्बल हो जाना। प्र० आती होगी, देखना, कैसी घुल के काँटा हो गयी है (आज़ाद०—प्रेमचंद, 191)।

घुल-घुलकर कांटा होना—दे० घुलकर कांटा होना।

घुल-घुलकर जान देना, -मरना—बहुत दिनों तक कष्ट भोगकर मरना। प्र० बेचारी ने बहुत दिनों तक घुल-घुलकर जान दे दी।

घुल-घुलकर बातें करना—खूब मिल-जुलकर बातें करना। प्र० मान लीजिए, दो नागरिक बड़े दोस्त हैं, आपस में घुल-घुलकर बातें कर रहे हैं (अम्ब०—रां० बे०, 69)।

घुल-घुलकर मरना—दे० घुल-घुलकर जान देना।

घुलना—दुःख पाना; दुर्बल और क्षीण होना। प्र० मैंने इस दुनिया में आराम न देखा, तकलीफ और दर्द मेरी किस्मत में था, घुलना, टुकड़े हो जाना, मेरे नसीब में था (पद्म पराग-पद्म० शर्मा, 393); पति के यह रंग-ढंग देखकर वसुधा मन-ही-मन कुढ़ती और घुलती जाती थी (मान० (1)—प्रेमचन्द, 236)।

घुलना-मिलना, घुल-मिल जाना—एकरूप हो जाना। प्र० और असल बात यह थी चाची कि मैं उनसे घुलमिल ही नहीं पाई थी (कम०—कम०, 102)।

घुल-मिल जाना—दे० घुलना-मिलना।

घुल-मिलकर—बड़े मेल-जोल से। प्र० उनके यहाँ बड़ा एका है, सब लोग घुल-मिलकर रहते हैं।

घुलवां गांठ—आधी गांठ या डेढ़ गांठ। प्र० इस कमरबंद पर धोती के छोर की फूलदार घुलवां गांठ है जिससे गुलाईदार पल्ले लटके हुए हैं (गुलेरी ग्रंथ० (1)—गुलेरी, 144)।

घुला हुआ—(1) वृद्ध। प्र० मैं घुला हुआ आदमी, मेरा क्या भरोसा।
(2) खूब पका हुआ। प्र० खूब घुला हुआ आम देना।

घुला-घुलाकर मारना—बड़ा कष्ट देना; बहुत परेशान करना। प्र० नहीं, मैं उसे घुला-घुलाकर और रटा-रटाकर मारूंगी (प्रेमा०—प्रेमचन्द, 340)।

घुलाना—परेशान करना। प्र० आप दैनिक-पत्र 'बिजली' के यशस्वी संपादक हैं, जिन्हें देश-चिन्ता ने घुला डाला है (गोदान-प्रेमचंद, 51)।

घुला-मिला—आपस में मिला हुआ; एक। प्र० यह सब दिखावा है, दर-असल सब आपस में घुले-मिले हैं।

घुस जाना—(1) गायब हो जाना; न रह जाना। प्र० मामा की सारी जुआचोरी घुस गई (दे० दु०—शिव० 165)।
(2) पहुँच जाना। प्र० ज़रा मौका मिलते ही चाचाजी वहाँ जरूर घुस जायेंगे।

घुसकर तमाशा देखना—जबरदस्ती हर काम में टाँग अड़ाना; हर बात को जानने की कोशिश करना। प्र० सौ-सौ जूता खायं तमाशा घुसकर

देखें—मैं तो ऐसे ही लोगों में हूँ भाई।

घुसकर बैठना—(1) छिपकर रहना। प्र० आज होली के दिन क्या घुसकर बैठे हो, बाहर निकलो।
(2) बहुत पास-पास बैठना। प्र० बड़ा घुसकर बैठी हो सब लोग। क्या बात है?

घुसकर मारना—आगे बढ़कर वार करना। प्र० मैं तो घुसकर मारने में विश्वास करता हूँ।

घुसनी के घुसघुस होना—घर-घुस्सू होना। प्र० वाह जी, तुम तो एकदम घुसनी के घुसघुस निकले।

घुस-पैठ होना—पहुँच होना। प्र० यह कथा जैसी सुनी, वैसी लिख दी है। मालूम नहीं कि यह सही थी या लक्खा जी ने बादशाह को हिन्दुओं के धर्म की तरफ झुका हुआ देखकर वहाँ घुसपैठ होने के वास्ते गढ़ ली थी (गुलेरी ग्रंथ (1)—गुलेरी, 253)।

घुसुर-पुसुर करना—धीरे-धीरे गुपचुप करके कहना; चुपचाप सलाह करना। प्र० भाभी ने इधर-उधर शंकित निगाहों से देखते हुए धीरे से घुसुर-पुसुर करके कहा—× × (सारा०—यादव, 23)।

घूंघट उठाना, -उलटना, -खोलना, -छोड़ना—पर्दा हटाना। प्र० बहू का घूंघट तो उठाओ, मुंह देखूं।

घूंघट उलटना—दे० घूंघट उठाना।

घूंघट करना, -काढ़ना, -डालना, -निकालना, -मारना—मुंह छिपाना; शर्माना। प्र० रहु-रहु री बहुरिया घूंघट जिनि काढ़ै, अंत की बार लहैगीं न आढ़ै (कबीर ग्रंथा०—कबीर, 319); घूंघट काढ़ि जौ लाज सकेलति लाजहि लाजति है बिन काजनि (घन० कवित्त०—घना०, 143); घूंघट करो बहू, चाचाजी आ रहे हैं।

घूंघट का पट खोलना—अज्ञान दूर करना। प्र० घूंघट का पट खोलो साधो, प्रीतम तभी मिलेंगे।

घूंघट काढ़ना—दे० घूंघट करना।

घूंघट की लेना—शर्म करना। प्र० खुदा झूठ न बोलाये तो बातचीत तक नौबत आ चुकी होगी और हमारे सामने घूंघट की लेती हैं (आज़ाद०—प्रेमचन्द, 613)।

घूंघट खाना—युद्ध में पीठ दिखाना। प्र० मेरी टुकड़ी के सिपाही घूंघट खाने से मर जाना बेहतर समझते हैं।

घूंघट खोलकर खड़ा होना—पर्दा छोड़कर खड़ा होना।

घूंघट खोलना—दे० घूंघट उठाना।

घूंघट छोड़ना—दे० घूंघट उठाना।

घूंघट डालना—दे० घूंघट करना।

घूंघट निकालना—दे० घूंघट करना।

घूंघट मारना—दे० घूंघट करना।

घूंट पीना—अपने आक्रोश आदि को जब्त किए रहना। प्र० मैं मानों घूंट पीता हुआ खड़ा था (त्याग०—जैनेन्द्र, 42)।

घूंट फेंकना—नजर न लगे इसलिए कुछ पीने से पहले एक घूंट थूक देना।

घूंट भरना, -लेना, घूंट-घूंट पीना—थोड़ा-थोड़ा करके पीना। प्र० भाई शरबत का मजा तो घूंट-घूंट पीने में ही है।

घूंट लेना—दे० घूंट भरना।

घूंट-घूंट पीना—दे० घूंट भरना।

घूंट-घूंटकर मारना—बहुत तकलीफ देकर मारना। प्र० सास ने उसे घूंट-घूंटकर मारा है।

घूंटी पिलाना—जन्म से ही कुछ सिखा देना। प्र० मां ने तुम्हें यही घूंटी पिलाई है क्या?

घूंटी में पड़ना—दे० घुट्टी में पड़ना।

घूंटी में पीकर आना—दे० घुट्टी में पड़ना।

घूंटी में होना—दे० घुट्टी में पड़ना।

घूंसम-घूंसा—घूंसों की मार। प्र० उस दिन पहले तो जोरों में वाक्युद्ध चलता रहा फिर घूंसम-घूंसा शुरू हुआ।

घूंसा तानना—धमकाना। प्र० वह घूंसा ताने बिना थोड़े ही चुप होगा, मैं जानती हूँ।

घूंसा पिलाना, -लगाना—मुक्के से मारना। प्र० मैंने वह जोर का घूंसा पिलाया कि बेटा को छठी का दूध याद आ गया।

घूंसा लगाना—दे० घूंसा पिलाना।

घूंसे का जवाब घूंसे से देना—जैसे से तैसा व्यवहार करना। प्र० यदि ब्रिटेन ने बल प्रयोग किया तो मिस्रवाले भी घूंसे का जवाब घूंसे से देंगे (बूंद०—नागर, 141)।

घूंसेबाजी करना—मारपीट करना। प्र० तुम हर समय घूंसेबाजी क्यों करने लगते हो?

घूंसों का क्या उधार—मारपीट का बदला तुरन्त लेना चाहिए।

घूंसों लड़ना—घूंसों की मार से लड़ाई होना।

घूम घुमाना—हीला-हवाला करके बार-बार दौड़ाना। प्र० लाला, और घूम न घुमाओ, मेरे रुपये दे दो।

घूम जाना—गायब हो जाना। प्र० अचानक आप कहाँ घूम गये श्रीमन्?

घूम पड़ना—सहसा क्रुद्ध हो जाना। प्र० बहुत देर तक वे उसकी अनर्गल बातें सुनते रहे। फिर सब्र न कर सकने के कारण घूम पड़े।

घूम-घूमकर घटा आना—चारों ओर से बादल छाना। प्र० घूम-घूमकर घटाएँ आने लगीं, ठंडी-ठंडी हवा के झोंके साड़ियों के पल्लों को उड़ा ले जाने लगे।

घूम-फिरकर—बार-बार। प्र० फिर घूम-फिरकर तुम उसी बात पर आ रही हो।

घूरकर देखना, घूर-घूरकर देखना—एकटक देखना। प्र० ऐसे घूरकर मुझे क्यों देख रहे हो?

घूर-घूरकर देखना—दे० घूरकर देखना।

घूरे के दिन फिरना—बुरे या तुच्छ व्यक्ति या वस्तु की हालत में भी परिवर्तन आना। प्र० कूड़े से भी आगे पहुँचा अपना अदृष्ट गिरते-गिरते, दिन बारह वर्षों में घूरे के भी सुने गये हैं फिरते (साकेत—गुप्त, 311)।

घूरे को पलटकर हीरा खोजना—बुरी और गंदी चीज में से सार वस्तु ढूंढ़

निकालना। प्र० यों इन्सान और मुर्गे की एक आदत पुरानी है, कि दोनों घूरे पलटकर हीरा या दाना खोजते हैं (बौने०–रां० रा०, 19)।

घूरे पर दाने चुनना—एकदम दरिद्र हो जाना; दाने-दाने को मुहताज होना। प्र० × × लेकिन आज उसे भीख़ माँगते और घूर पर दाने चुनते देखकर मेरी छाती सीतल हो जायगी (गोदान-प्रेमचंद, 152)।

घूस खाना—रिश्वत लेना। प्र० आजकल तो बड़े छोटे सभी घूस खाने को मुंह बाये बैठे रहते हैं।

घूस-पच्चड़—रिश्वत।

घेर लेना या घेरना—(1) किसी काम को करने के लिए किसी से बहुत आग्रह करना। प्र० और ये जो परसों मेरा षष्ठिपूर्ति समारोह ये लोग धूमधाम से मनाने जा रहे हैं, उमेशो के द्वारा जिसके लिए मुझे इतना-इतना घेरा गया है (अमृत०–नागर, 17)।
(2) आक्रांत करना; पूरी तरह वश में करना। प्र० आखिर उन्हें मृत्यु ने घेर ही लिया।

घेर-घारकर—किसी प्रकार जोर-दबाव डालकर। प्र० आखिर तुमने घेर-घारकर विवाह करा ही दिया (भिखा०–कौशिक, 197)।

घेरा उठा देना—कर्मचारियों या सेना के द्वारा डाला घेराव उठा लेना। प्र० मुगल सेना ने 15 दिनों बाद घेरा उठा लिया।

घेरा डालना—चारों तरफ से घेर लेना। प्र० अलाउद्दीन खिलजी की सेना ने गढ़ के चारों ओर घेरा डाल दिया।

घेरा तोड़ना—किसी बन्धन या प्रतिरोध को मिटाना। प्र० अब तो इस घेरे को तोड़ना ही पड़ेगा नहीं तो जिन्दा रहना मुश्किल होगा।

घेरा पड़ना—सेना का चारों ओर से घेर लेना। प्र० पिछले डेढ़ महीने से गढ़ के चारों ओर घेरा पड़ा है।

घेरा-घेरी—किसी तरह फंसाना; अपने अनुकूल बनाना। प्र० धन्नो की वह घेरा-घेरी, वह कामपीड़ित आक्रामक हलचल मुझे बहुत आंदोलित करती थी (अमृत०–नागर, 222)।

घेरे में पड़ना, -फंसना—फंदे में पड़ना; चारों ओर से घिर जाना।

घेरे में फंसना—दे० घेरे में पड़ना।

घोंघा, घोंघा के घोंघा, घोंघा-बसंत—मूर्ख; जड़; आत्मसीमित। प्र० निस्सन्देह जो लोग चतुर और सयाने होते वे ही कुछ करते बाकी सब लोग घोंघा बने रहते (भट्ट नि०–बा० भट्ट, 30)।

घोंघा की तरह मुंह बाना—बेमीके हँस देना। प्र० तुम क्या हर समय घोंघा की तरह मुंह बा देते हो?

घोंघा के घोंघा—दे० घोंघा।

घोंघा-बसंत—दे० घोंघा।

घोंघा-सुतुही समझना—अत्यन्त तुच्छ समझना। प्र० मेरी तसवीरों को आपने घोंघा-सुतुही समझ रखा है?

घोंचवा बैल—ऊपर से सीधा पर भीतर से वार करनेवाला।

घोंट डालना, घोंटकर पी जाना—अच्छी तरह रटना। प्र० वह तो आधी पुस्तक घोंटकर पी गया है।

घोंटकर पी जाना—दे० घोंट डालना।

घोंट-घोंटकर उतारना, -पीना—थोड़ा-थोड़ा करके पी जाना। प्र० उसने किसी तरह घोंट-घोंटकर आधा पाव दूध गले के नीचे उतारा।

घोंट-घोंटकर पीना—दे० घोंट-घोंटकर उतारना।

घोंट-घोंटकर मारना—दे० घूंट-घूंटकर मारना।

घोंटना—(1) पाठ को कंठाग्र करना। प्र० लड़के रात-रात और दिन-दिन भर घोंटते थे (उखड़े०–यादव, 44)।
(2) किसी बात को बार-बार कहना। प्र० एक ही बात तुम बार-बार क्यों घोंटे जा रहे हो?
(3) रंग चमकाने के लिए कलम से रगड़ना।

घोंटी देना—बच्चे को हींग-घी आदि पिलाना।

घोंसला बनाना—छोटा-सा घर बनाना। प्र० वह भी अपना छोटा-सा घोंसला बना ले, इतना ही चाहता है।

घोटाले में पड़ना—झमेले में पड़ना। प्र० मेरा तो सारा कारबार ही घोटाले में पड़ गया है।

घोड़ा उठाना, -उड़ाना—घोड़े को तेज दौड़ाना। प्र० वह ताँगेवाला कौवालों की तान—'जिस-जिस को दिया चाहें' को दुहराता हुआ चाबुक लगाता घोड़े को उड़ा ले चला (कंकाल–प्रसाद, 32)।

घोड़ा उड़ाना—दे० घोड़ा उठाना।

घोड़ा उलांगना—किसी नए घोड़े पर पहले-पहल सवारी करना।

घोड़ा कड़कड़ाना—घोड़ा दौड़ाना। प्र० थोड़ी देर में दस-बारह जवान घोड़े कड़कड़ाते हुए मैदान में आये (आजाद०–प्रेमचंद, 208)।

घोड़ा कसना—घोड़े पर सवारी के लिए साज, जीन या चारजामा चढ़ाना।

घोड़ा खोलना—(1) घोड़े का साज उतारना। प्र० अस्तबल में पहुँचने के साथ घोड़ा खोल देना।
(2) घोड़े को चुराना। प्र० मौका देखते ही घोड़ा खोल लेना।

घोड़ा चढ़ाना—बन्दूक का घोड़ा उठाकर मारने को तैयार होना।

घोड़ा छोड़ना—(1) घोड़े को दौड़ा देना। प्र० घोड़े छोड़ दिये गये, जैसे भी हो चोर का पता लगाकर ही आओ।
(2) घोड़े का साज उतार देना। प्र० घोड़ों को छोड़ दो, सुबह से कसे-कसाये खड़े हैं।
(3) घोड़े का घोड़ी से समागम कराना।

घोड़ा ठोंकना, -मारना—घोड़े को एड़ मारकर चलाना। प्र० उन्होंने झट घोड़ा ठोंका, और देखते-देखते कई कोस उड़ गये (दे० दु०–शिव०, 80)।

घोड़ा डालना—किसी ओर वेग से घोड़ा दौड़ाना। प्र० एक हिरन के पीछे आपने घोड़ा डाला (राधा० ग्रंथा०–राधा० दास, 186)।

घोड़ा देना—घोड़े का घोड़ी से समागम कराना।

घोड़ा दौड़ाना—खोज के लिए घुड़सवारों को भेजना। प्र० अभी तक घोड़े दौड़ाये या नहीं?

घोड़ा निकालना—(1) घोड़े को सिखलाकर सवारी के योग्य बनाना। प्र० अभी घोड़ा निकालने लायक नहीं है, पन्द्रह दिन बाद ले जाइएगा

मालिक।

(2) मूर्ख मनुष्य को योग्य बनाना। प्र० तो तुम भी घोड़ा निकालने में लगे हो?

(3) एक घोड़े को दूसरे से आगे बढ़ा लेना। प्र० उस टमटम से आगे घोड़ा निकालो।

घोड़ा पलाना—घोड़े पर जीन आदि कसना।

घोड़ा पाय पर चढ़ाना—बन्दूक की चाप दागने की तैयारी करना।

घोड़ा फेंकना—खूब वेग से घोड़ा दौड़ाना। प्र० उस हिरनी के पीछे सबको छोड़-छाड़ कर घोड़ा फेंका (इंशा०–इंशा०, 91); ठीक ऐसे ही समय एक मनुष्य एक हिरन के पीछे उन्मत्त भाव से घोड़ा फेंके चला आता था (मान० (8)–प्रेमचन्द, 56)।

घोड़ा फेरना—(1) घोड़े का मुंह दूसरी दिशा की ओर करना। प्र० कुछ परवाह नहीं, फौरन घोड़े फेर दो (रंग०–प्रेमचन्द, 166)।

(2) घोड़े को सवारी के योग्य बनाना।

घोड़ा बेचकर सोना—निश्चिन्त होकर सोना। प्र० और सोये तो घोड़ा बेचकर मुर्दों से शर्त लगाकर? (मान० (1)–प्रेमचंद, 156); लेटते ही मैं जैसे घोड़े बेचकर सो गया (जहाज०–इ० जोशी, 152)।

घोड़ा भर जाना—बहुत तेज दौड़ने के कारण घोड़े की सांस फूल जाना। प्र० घोड़ा भर गया है सरकार, अब मत दौड़ाइए।

घोड़ा मारना—दे० घोड़ा ठोंकना।

घोड़ी चढ़ना—विवाह की एक रस्म जिसमें वर घोड़ी पर चढ़कर कन्या के यहाँ जाता है।

घोड़े का थान से खुल जाना—बन्धन या मर्यादाहीन हो जाना। प्र० बंधा हुआ घोड़ा थान से खुल गया, उसे कौन रोक सकता है (ग़बन–प्रेमचंद, 7)।

घोड़े का रोग बंदर के सिर पड़ना—किसी का दोष किसी दूसरे पर पड़ना। प्र० मकु एहि खोज होइ निसि आई। तुरै रोग हरि माथें जाई (पद०–जायसी, 8/4)।

घोड़े की पीठ पर सोना—युद्ध में ऐसा लिप्त होना कि जरा भी विश्राम करने का अवसर न मिले।

घोड़े की शादी करना—घोड़ा बेचना।

घोड़े के आगे गाड़ी रखना—उलटा काम करना। प्र० तुम तो घोड़े के आगे गाड़ी रख रहे हो, यह भी कोई बात हुई।

घोड़े चढ़कर आना, -सवार होना, घोड़े-सवार आना—बहुत जल्दी में होना। प्र० ता ऊपर काहैं गरजति है, मनु आई चढ़ि घोरे (सू० सा० –सूर, 939); तुम तो हर बार घोड़े पर चढ़कर ही आते हो। जरा देर बैठो न।

घोड़े पर चढ़कर गदहे पर चढ़ना—ऊँचे उठकर फिर नीचे उतरना।

घोड़े पर सवार होना—दे० घोड़े पर चढ़कर आना।

घोड़े पर से सवार उतारना—बहुत चालाक होना। प्र० वह घोड़े पर से सवार उतार ले, उसकी बात मत करो।

घोड़े-जोड़े की खैर—मियां-बीवी और सवारी का घोड़ा बना रहे।

घोड़े-सवार—(1) जल्दी में। प्र० वह तो जब देखो तब घोड़े-सवार रहता है।

(2) नशे में चूर। प्र० देखिए प्रयोग (1)।

घोड़े-सवार आना—दे० घोड़े पर चढ़कर आना।

घोर-मंठा करना, घोल-मट्ठा करना—किसी बात को लेकर अति सोच-विचार या तर्क करना। प्र० तुम घोरमंठा करते रहना चाहते हो तो करो।

घोरुआं देना—पतला घोलकर मसाला लगाना। प्र० जोड़ों पर घोरुआं दे देना।

घोल पीना—(1) कुछ न समझना। प्र० वह तुम्हें घोल पी जाय, तुम समझते क्या हो?

(2) सहज में ही मार डालना। प्र० दारासिंह उसे सहज ही घोल पी जाए।

(3) शरबत पीना। प्र० सब लोग पहले घोल पी लो फिर चलें।

घोल में डालना, घोले में डालना—(1) दुविधा में डालना। प्र० तुमने मुझे अच्छा घोल में डाल रखा है।

(2) हीलाहवाला करना। प्र० अब फैसला कर डालो, और घोल में मत डालो।

घोल में पड़ना—झंझट में पड़ना। प्र० वह बेचारा घोल में पड़ गया, क्या करे।

घोल पिला देना—जबरदस्ती कुछ सिखाना। प्र० पढ़ना-लिखना कोई घोलकर नहीं पिला सकता।

घोलकर पी जाना—परवाह न करना; तुच्छ समझना। प्र० अरे, तुम क्या मनुष्यता को भी मदिरा के साथ घोलकर पी गये हो (कामना–प्रसाद, 93)।

घोल-मट्ठा करना—दे० घोरमंठा करना।

घोलुआ घोलना—किसी काम में बहुत समय लगाना। प्र० तुम घोलुआ घोलते रहो, मैं चला।

घोलुआ पीना—तीखी चीज पीना। प्र० यह घोलुआ क्यों पीते हो?

घोले में डालना—दे० घोल में डालना।

घोले में पड़ना—दे० घोल में पड़ना।

घोह देना, -बांधना—(1) धोखा देने के लिए आडम्बर करना। प्र० उसने मुझे ऐसा घोह दिया कि मैं देखता रह गया।

(2) व्यर्थ रोब दिखाना। प्र० अब बहुत घोह मत बांधो यार।

घोह बांधना—दे० घोह देना।

च

चंक्रमन करना—बहुत घूमना। प्र० बहुत चंक्रमन कर चुके, अब कुछ दिन शान्ति से बैठो।

चंग उमहना, -चढ़ना—(1) प्रसिद्धि होना। प्र० अरे साहब, आजकल तो आपकी चंग उमह रही है, आपकी क्या बात।

(2) रोब होना। प्र० देखिए प्रयोग (1)।

चंग चढ़ना—दे० चंग उमहना।

चंग पर आना, -चढ़ना—उत्साह का होना। प्र० रमेश ने सोचा कि ग्राहकों की भीड़ में नाव वाला उसकी चंग पर न चढ़ सकेगा × × (अमृत० —नागर, 273)।

चंग पर चढ़ना—दे० चंग पर आना।

चंग पर चढ़ाना, -लाना—(1) जोश पैदा करना। प्र० विधवा भावज बड़ी तवियतदार है, इनके और अपने बुढ़ापे को सदा चंग पर चढ़ाए रहती है (अमृत०—नागर, 76)।

(2) खूब प्रशंसा करके दिमाग फुला देना। प्र० तुम्हीं ने उसे चंग पर चढ़ाया है, अब भोगो?

चंग पर लाना—दे० चंग पर चढ़ाना।

चंगुल में आना, -पड़ना, -फंसना—काबू या पकड़ में आना। प्र० इक दिन सभी हमारे चंगुल में फंसेंगे (राधा० ग्रंथा०—राधा० दास, 812); अब भले आदमी को न जाने क्या सूझी कि अघोर भैरव और वेंकटेश भट्ट के चंगुल में आ फंसा (बाण०—ह० प्र० द्विवेदी, 210)।

चंगुल में पड़ना—दे० चंगुल में आना।

चंगुल में फंसना—दे० चंगुल में आना।

चंगुल से छूटना, -निकलना, -बचना—किसी के अनुचित दवाव या फंसाव से मुक्त होना। प्र० इससे × × अनेक चालाक और धोखेबाज लोगों के चंगुल से हम बच जायेंगे (मेरे०—गुलाव, 47)।

चंगुल से निकलना—दे० चंगुल से छूटना।

चंगुल से बचना—दे० चंगुल से छूटना।

चंगुल से मुक्त करना—छुड़ाना; रक्षा करना। प्र० जिसकी एक बात देश के लिए आज्ञा हो; जो भारत माता को इन विदेशी म्लेच्छों के चंगुल से मुक्त कर सके (सारा०—यादव, 11)।

चंडमुंड लड़ाना—दो आदमियों में लड़ाई-झगड़ा करवा देना।

चंडासा चढ़ाना—जल्दी मचाना; कोई ऐसी युक्ति करना कि किसी को विवश होकर जल्दी कोई काम करना पड़े। प्र० तुम तो ऐसा चंडासा चढ़ा रहे हो जिसका कोई हिसाब नहीं।

चंडी—खूब रुष्ट होकर मरने-मारने पर उतारू; उग्र। प्र० पुन्नी चंडी बनी हुई थी (गोदान—प्रेमचंद, 30)।

चंडू उड़ाना—चंडू का सेवन करना। प्र० गोल में दुनिया भर के बेफिक्रे जमा हैं, कोई चंडू उड़ाता है, कोई चरस के दम लगाता है (आज़ाद० —प्रेमचंद, 37)।

चंडूखाना बना रखना—बेसिलसिले, बेमतलब बातें करते जाना; गप्पें मारना। प्र० वाह भाई, तुम लोगों ने अच्छा चंडूखाना बना रखा है।

चंडूखाने की गप्प—व्यर्थ की बातें; ऐसी झूठी बात जिस पर विश्वास न किया जा सके। प्र० अखबारी दुनिया की सैर, चलती मछली, चंडूखाने की गप, सभी अच्छा है (पद्म० के पत्र—पद्म० शर्मा, 182)।

चंडूखाने की गप्प हांकना—व्यर्थ की बातें करना। प्र० यह चंडूखाने की गप्प हांकना बन्द भी करो।

चंडूल—(1) बहुत झगड़ालू। प्र० अरे यार, इस चंडूल से कैसे काम बनेगा।

(2) बे डील-डौल का। प्र० देखिए प्रयोग (1)।

चंदन उतारना—पानी देकर चंदन घिसना। प्र० शिवजी की पूजा के लिए चंदन उतार लो बेटा।

चंदन चढ़ाना—घिसा हुआ चंदन लगाना। प्र० चंदन चढ़ाइ चारु सुंदर सरीर सव, राखी शुभ्र सोभा सुनि वसन बसाई सी (केशव०—केशव, 110)।

चंदिया खाना—(1) बात से हैरान कर डालना। प्र० किशना तो चंदिया खा जाता है, उसका मुंह किसी तरह नहीं बन्द किया जा सकता।

(2) निर्धन कर देना। प्र० जमींदार ने गरीब किसानों की चंदिया खा ली कुछ न छोड़ा।

चंदिया खुजलाना—मार खाने की इच्छा होना। प्र० चंदिया खुजला रही हो तो बोलो, उसका इन्तजाम करवा दूं।

चंदिया पर बाल न छोड़ना, -मूड़ना—(1) सब कुछ छीन लेना। प्र० खबरदार मुंह से एक शब्द भी निकाला तो मैं चंदिया पर बाल तक न छोड़ूंगा।

(2) बुरी तरह मारना। प्र० देखिए प्रयोग (1)।

चंदिया मूड़ना—दे० चंदिया पर बाल न छोड़ना।

चंदिया से परे सरकना—दूर हटना। प्र० जरा चंदिया से सरककर खड़े हो तो कोई हर्ज है, एकदम सिर पर आ गये।

चंद्रमा पर थूकने से थूक अपने ही मुंह पर पड़ता है, -धूल डालने से धूल अपने ही मुंह पर पड़ती है—समर्थ या श्रेष्ठ व्यक्ति को दोष देने से अपना ही छोटापन सिद्ध होता है या स्वयं अपमानित होना पड़ता है। प्र० ससि-सन्मुख जो धूरि उड़ावैं, उलटि ताहि कैं मुख परैं (सू० सा०—सूर, 234); चंद्रमा पर थूकने से थूक अपने ही मुंह पर पड़ता है (मान० (5)—प्रेमचंद, 30)।

चंद्रमा पर धूल डालने से अपने ही मुंह पर पड़ती है—दे० चंद्रमा पर थूकने से थूक अपने ही मुंह पर पड़ता है।

चंद्रमा बलवान होना, -बली होना—भाग्य बलवान होना। प्र० इन्दिरा गांधी के चंद्रमा बली हैं नहीं तो इस उठा-पटक में उनकी गद्दी चली जाती।

चंद्रमा बली होना—दे० चंद्रमा बलवान होना।

चंद्रमा में कलंक होना—गुणियों में भी कोई दोष या कमी होना। प्र० उनकी यह बुरी लत तो चंद्रमा में कलंक है।

चंद्रा लगना—कफ के कारण गला रुंध जाना। प्र० इधर बाप को चंद्रा लग रही थी उधर बेटे का ब्याह हो रहा था।

चंपत बनना, -होना—गायब हो जाना। प्र० आप अचानक कहाँ चम्पत हो गये, मैं बैठा इन्तजार करता रहा।

चंपत होना—दे० चंपत बनना।

चंवल लगना—बाढ़ आना। प्र० पद्मा नदी में तो हर साल चंवल लगता है।

चंवर डुलाना, -ढुराना—चंवर से हवा करना; बहुत खातिर करना । प्र० बारहि बार आरती करहीं, व्यजन चारु चामर सिर ढरहीं (राम० (बा)—तुलसी, 357) ।

चंवर ढरना या ढुरना—ऐश्वर्य या प्रतिष्ठा की स्थिति में होना । प्र० छत्र सिंघासण चंवर ढुलंता, राग रंग बहु आगी (कबीर ग्रंथा०—कबीर, 189); छत्र चंवर नित ढुरत जौन मुख तहं मनु छुटत हवाई (भा० ग्रं० (1)—भारतेन्दु, 502) ।

चंवर ढुराना—दे० चंवर डुलाना ।

चक काटना—जमीन का भाग करना । प्र० जल्दी ही नये तरीके से चक काटने की बातचीत हो रही है ।

चक जमना या जमाना, -बैठना—रंग जमना या जमाना । प्र० एक बार उन लोगों के बीच चक जम जाय तो फिर कोई चिन्ता न रह जायेगी ।

चक बंधना या बांधना—दिन पर दिन बढ़ता जाना; एक पर एक योग होता जाना । प्र० हाथ-पैर हिलाये बिना कुछ कैसे होगा । आओ, काम करो, फिर देखो चक बंधता है या नहीं ।

चक बैठना—दे० चक जमना ।

चक होना—भरपूर पैसा होना । प्र० बाबू बिशन प्रसाद आजकल खूब चक हो रहे हैं ।

चकचुहिया बोलना—सवेरा होना । प्र० अभी चकचुहिया भी नहीं बोली और तुमने शोर-गुल चालू कर दिया ।

चकती लगाना—(1) अनहोनी करना । प्र० ऐसी चकती मत लगाओ बेटा जो असह्य हो ।

(2) बहुत बढ़-बढ़ कर बातें करना । प्र० देखिए प्रयोग (1) ।

चकता पड़ना—खाल पर उभरा हुआ धब्बा पड़ना ।

चकत्ता भरना, -मारना—दांतों से काटना । प्र० मुन्ना ने कैसा चकत्ता भरा है, देखो तो ।

चकत्ता मारना—दे० चकत्ता भरना ।

चकनाचूर करना या होना—नष्ट करना या होना । प्र० चोट खा वह ठाट चकनाचूर हो । चाट से जिसकी कि चोटी कट गई (चुभते०—हरिऔध, 117) ।

चकफेरी देना—चारों ओर घूमना ।

चकमा उठाना, -खाना—(1) धोखा खाना । प्र० मैं इस तरह का चकमा खानेवाला नहीं हूँ, समझ रखना ।

(2) हानि सहना । प्र० मैं क्यों चकमा उठाऊँ ? भूल उसकी है, वह भोगे ।

चकमा खाना—दे० चकमा उठाना ।

चकमा चलना या चलाना—धोखा दे पाना । प्र० इन सब बातों का अंजाम यह हुआ कि हमीं पर चकमे चलने लगे (आज़ाद०—प्रेमचंद, 549) ।

चकर-मकर—धोखा; भुलावा । प्र० अपना चकर-मकर अपने पास रखिए बाबूजी, मैं इनमें भूलनेवाला नहीं हूँ ।

चकरवा मचाना—गोलमाल करना । प्र० बड़ा चकरवा मचा रखा है तुम लोगों ने, क्या बात है ?

चकरवा में पड़ना—ऐसी झंझट में फंस जाना जिससे निकलने का कोई रास्ता न सूझ पड़े । प्र० क्या बताऊँ, इस लड़के का ब्याह करके तो बड़े चकरवे में पड़ गयी हूँ ।

चकल उठाना—दूसरी जगह रोपने के लिए पौधे को मिट्टी सहित उठाना ।

चकले में बैठना—वेश्यावृत्ति अपनाना ।

चकल्लस होना—परेशानी होना । प्र० आजकल बड़ी चकल्लस है भाई, दिमाग ठिकाने नहीं है ।

चकाचक घुटना—मौज से भांग घुटना और पीयी जाना । प्र० रोज शाम को चकाचक घुटती (भारती०—रां० रा०, 35) ।

चकाचौंध होना—(1) तेज प्रकाश के कारण देख न पाना । प्र० खिड़की का पर्दा गिरा दो भाई, आँखें चकाचौंध हो रही हैं ।

(2) किसी व्यक्ति या वस्तु का रोबदाब-शानशौकत देखकर स्तंभित रह जाना । प्र० द्वारका में श्रीकृष्ण का ऐश्वर्य देखकर बेचारे सुदामा चकाचौंध हो गये ।

चकाचौंधी आना, -लगना—तेज प्रकाश के कारण देख न पाना । प्र० मुझे तो चकाचौंधी लगती है, उस ओर नहीं देख सकता ।

चकाचौंधी लगना—दे० चकाचौंधी आना ।

चकाबू का जाल—जटिल; फंसा लेनेवाली स्थिति । प्र० लाला ब्रजकिशोर की बातें क्या हैं चकाबू का जाल है (परीक्षा०—श्री० दास, 8) ।

चकाबू में पड़ना, -फंसना—फेर में पड़ना । प्र० बस, जरा गफलत हुई और उसके चकाबू में फंस गया ।

चकाबू में फंसना—दे० चकाबू में पड़ना ।

चकोर—प्रेमी । प्र० सतीश तो इस समय निष्ठावान चकोर हो रहा है ।

चुकौता चुकना या चुकाना—हिसाब-किताब साफ होना या करना ।

चक्कर आना—(1) सिर चकराना या घूम जाना । प्र० इधर देखो मेरे रोयें फूट गये हैं......जैसे सिर में चक्कर आ रहा है (सिन्दूर०—ल० मिश्र, 35) ।

(2) विपत्ति पड़ना । प्र० उस बेचारे पर ऐसा चक्कर आया हुआ है, कि क्या कहूँ ।

चक्कर काटना—परिक्रमा करना; मंडराना; घूमना । प्र० बगल में रद्दी कागजों का पुलिन्दा दबाये हुए पगला मार्टिन दिन भर पूर्णिया कचहरी में चक्कर काटता फिरता था (मैला०—रेणु, 8) ।

चक्कर खाना—(1) पहिये की तरह घूमना । प्र० रोकते-रोकते भी वह तीन-चार चक्कर तो खा ही गया ।

(2) घुमाव-फिराव के साथ जाना; भटकना; हैरान होना । प्र० इतना चक्कर खाकर क्यों आये ? सीधा रास्ता छोड़कर उस ओर से आने की क्या जरूरत थी ?

चक्कर देना—(1) घुमा देना । प्र० एक दो चक्कर और दे दो तो कस जायेगा ।

(2) परिक्रमा करना । प्र० संकटमोचन का चक्कर देकर अभी आता हूँ ।

(3) धोखा देना । प्र० तुम मुझे ही चक्कर देना चाहते हो, क्यों ?

चक्कर पड़ना—(1) घुमाव पड़ना । प्र० पहले आपके यहाँ आऊँगा नहीं तो बहुत चक्कर पड़ जायेगा ।

(2) बहुत बड़ी विपत्ति पड़ना । प्र० पिछले तीन महीनों से मुझ पर ऐसा चक्कर पड़ा है कि परेशान हो गया हूं ।

चक्कर पर चढ़ना—किसी के फेर में पड़े रहना । प्र० सारा दिन जाने कहाँ-कहाँ के चक्कर पर चढ़ी रहती है, छिनाल (अंधेरे०—राकेश, 25) ।

चक्कर बांधना—(1) गोल घेरा करना । प्र० चारों ओर चक्कर बांधकर पौध लगाना ।

(2) आना-जाना । प्र० जरा-सा रुख पाया और चक्कर बांधना चालू कर दिया ।

चक्कर मारना—(1) बार-बार आना । प्र० रोज-रोज चक्कर मारने की जरूरत नहीं है, काम होने पर मैं खुद खबर कर दूंगा ।

(2) गोलाकार घूमना । प्र० उस पेड़ का 7 चक्कर मारकर इस घाई को छूओ ।

चक्कर में आना, -फंसना—(1) दंग रह जाना । प्र० उसकी बातें सुनकर मैं तो चक्कर में आ गयी ।

(2) धोखे में आना । प्र० ऊपर से ऐसी मीठी-मीठी बातें कीं कि मैं भी उसके चक्कर में आ गयी ।

(3) काम या झंझट में पड़ना । प्र० बाबू जी आजकल बड़े चक्कर में आ गये हैं ।

चक्कर में डालना—परेशानी या दुविधा में डालना । प्र० छोटे बच्चे कभी-कभी चक्कर में डाल देने वाले सवाल कर बैठते हैं (अशोक०—ह० प्र० द्वि०, 191) ।

चक्कर में पड़ना, -होना—(1) फेर में पड़ना । प्र० इरा तो आजकल शंख के चक्कर में है (दूधगाछ—दे० स०, 194) ।

(2) झंझट या काम में फंसना । प्र० इस घटना का पता जब गुरु गंगादत्त जी को लगा, तो उन्होंने नवनीत जी को धमकाया कि खबरदार, इस चक्कर में अभी से मत पड़ो (पद्म पराग—पद्म० शर्मा, 134) ।

चक्कर में फंसना—दे० चक्कर में आना ।

चक्कर में होना—दे० चक्कर में पड़ना ।

चक्कर लगाना—(1) किसी का बार-बार आना । प्र० कई बार चक्कर तो लगा गया है पर अभी तक पूरी तरह खुला नहीं ।

(2) परिक्रमा करना । प्र० मैं कालीजी के चक्कर लगाकर आता हूं ।

चक्की का पाट—बदसूरत; शीतला-मुंह-दागवाला व्यक्ति ।

चक्की का बैल बनाना—बन्धन में रखकर इच्छानुसार काम करवाना । प्र० तुमने मुझे कभी अपने घर को वर न समझने दिया—तुम मुझे चक्की का बैल बनाना चाहते हो (कर्म०—प्रेमचंद, 136) ।

चक्की के दो पाटों में आना, -पिसना, -फंसना—दोनों ओर से मुसीबत होना । प्र० चक्की के दो पाट में गरीब लोग ही पीसे जायेंगे (मैला०—रेणु, 154); ऐन मौके पर जर्मन दो चक्की के पाटों के बीच में आ गये (गु० कहा०—गुलेरी, 57) ।

चक्की के दो पाटों में पिसना—दे० चक्की के दो पाटों में आना ।

चक्की के दो पाटों में फंसना—दे० चक्की के दो पाटों में आना ।

चक्की छूना, -झोना, -फेरना, -में हाथ लगाना—चक्की चलाना । प्र० बड़ी बहू तो ऐसी नखरैली है कि चक्की छूना तक नहीं चाहती ।

चक्की छेड़ना, -झोना—अपनी कथा छेड़ना । प्र० सैयद साहब ने अपनी चक्की छेड़ी तो रात का सवेरा हो जायगा ।

चक्की झोना—दे० चक्की छूना और चक्की छेड़ना ।

चक्की पकड़ना—घुटनों में दर्द होना । प्र० अब तो अक्सर चक्की पकड़ लेती है, बड़ा कष्ट है ।

चक्की पिसवाना—जेल भिजवाना । प्र० तुम जानते होगे, इन धमकियों से ये लोग डर जायेंगे, मगर एक-एक से चक्की न पिसवाई, तो कहना कि कोई कहता था (रंग० (1)—प्रेमचन्द, 209) ।

चक्की पीसना—(1) कड़ा परिश्रम करना । प्र० चलो भोजन करो और चक्की पीसो—जो तुम्हारे भाग्य में लिखा है (गोदान—प्रेमचंद, 181) ।

(2) जेल की सजा भुगतना । प्र० अभी तुम मधुवन के बहकाने में आ गये हो, जब चक्की पीसनी होगी, तब हेंकड़ी भूल जायेगी (तितली—प्रसाद, 180) ।

चक्की फेरना—दे० चक्की छूना ।

चक्की में जुटना, -जुतना—अत्यन्त परिश्रम करना; काम में लगना । प्र० माँ के आते ही चक्की में जुतना पड़ा (मान० (1)—प्रेमचंद, 1) ।

चक्की में जुतना—दे० चक्की में जुटना ।

चक्की में पिसना—(1) रात-दिन काम में लगे रहना । प्र० × × × आज बड़े लाट × × अमुक आफिस में जाकर काम की चक्की में पिसते हुए क्लर्कों की दशा देख रहे थे (गु० नि०—बा० मु० गु०, 198) ।

(2) चक्की पीसने का कठिन काम करना । प्र० बेचारी चम्पा को चूल्हे में जलना और चक्की में पिसना पडता (मान० (7)—प्रेमचंद, 215–216) ।

(3) दोनों ओर के दबाव में हैरान होना । प्र० मैं तो माँ-बेटे की चक्की में इस बुरी तरह पिस रही हूँ कि तबियत पस्त हो गयी है ।

चक्की में हाथ लगाना—दे० चक्की छूना ।

चक्की रहाना—चक्की कुटवाना ।

चक्की-चूल्हे की चिन्ता करना, -में रहना—आजीविका की चिन्ता में रहना ।

चक्की-चूल्हे की चिन्ता में रहना—दे० चक्की-चूल्हे की चिन्ता करना ।

चक्खी पड़ना—आदत पड़ जाना ।

चक्र गिरना, -पड़ना—वज्रपात होना । प्र० भगवान ऐसा प्रतिकूल होगा, मुझ पर इतना बड़ा चक्र गिरेगा, यह सपने में भी नहीं सोचा था ।

चक्र चलना—क्रम चलना; एक के बाद एक होता जाना। प्र० क्या बताऊँ, आजकल यही चक्र चल रहा है, तबीयत दुःखी हो गयी है।

चक्र पड़ना—दे० चक्र गिरना।

चक्र में फंसना—धोखे में आना।

चक्र रचना—किसी को फंसाने के लिए जाल फैलाना।

चख चलना—झगड़ा होना। प्र० हमने सारी दास्तान सुनी। बड़ी चख चल गयी (आज़ाद०–प्रेमचंद, 132)।

चख डालना—सब कुछ शेष कर देना। प्र० बाप जो थोड़ा बहुत छोड़ गया था, सब छ ही महीनों में चख डाला।

चखचख चलना, -होना—झगड़ा होना; असंतोष होना। प्र० हिसाब में बहुत मीन मेख निकालने के कारण प्रायः ही रिखीराम की मास्टर जी से चखचख हो जाती थी (झूठा० (2)–यशपाल, 353)।

चखचख होना—दे० चखचख चलना।

चख-पुतरी बनाना—अत्यन्त प्यार करना। प्र० मैं उसे चख-पुतरी बनाकर रखूँगी, उसे हाथों-हाथ लिए रहूँगी।

चखाचखी होना—प्रतिद्वंद्विता होना। प्र० दोनों में खूब चखाचखी है, मुझे बड़ा आनन्द आ रहा है।

चखौतियां करना—मौज करना। प्र० दोनों के पास मौरूसी जागीरें थीं; जीविका की कोई चिन्ता न थी, घर में बैठे चखौतियाँ करते थे (मान० (3)–प्रेमचंद, 266)।

च-च करना—दुःख प्रकट करना। प्र० अब च-च करने से क्या लाभ। पहले सोचा होता।

चचा—बहुत चालाक; बढ़कर। प्र० मगर यात्रियों को क्या कहूँ, वे हमारे भी चचा निकले (दिल०–जी०, 27)।

चचा बनकर कुछ न मिलना—बड़प्पन लगाने से कुछ न मिलना। प्र० मेरी बात गांठ बांधो कि चचा बनकर कुछ नहीं मिलता, किसी से कुछ लेना है तो नम्र बनो।

चचा बनना—और होशियार होना। प्र० मगर भतीजा भी कच्चा न था, धीरे-धीरे काम सीखकर इनका चचा बनने लगा (अमृत०–नागर, 125)।

चचा बनाकर छोड़ना, -बनाना—दुर्गति करना। प्र० आज चचा बनाके छोड़ूंगा, रोज़ सुअरिया चरा ले जाते थे, आज बहुत दिन के बाद हत्थे चढ़े हो (आज़ाद०–प्रेमचंद, 85)।

चचा बनाना—दे० चचा बनाकर छोड़ना।

चट कर जाना—(1) समाप्त कर देना। प्र० आज हम हैं चट उसी को कर रहे, जो नहीं दिखला सकी जी की कचट (चुभते०–हरिऔध, 155)।

(2) हड़प लेना। प्र० बहुत-सा हिस्सा तो यह टामस और समरू के खजांची-दीवान ही चटकर जाएंगे। (सात०–नागर, 15)।

(3) खा जाना। प्र० वाह, सारी मलाई तुम्हीं चट कर गये।

चट मंगनी पट ब्याह होना—किसी काम को आनन-फानन कर डालना।

चट से, चट-चट—तुरन्त। प्र० हम लोग सब भोजन के लिए तैयार हैं। तुम भी चट से हाथ-मुंह धोकर आ जाओ।

चटककर बोलना—गुस्सा होकर बोलना। प्र० आप बार-बार चटककर क्यों बोलती हैं ?

चटकन देना—तमाचा देना। प्र० एक चटकन दूंगा और तुम्हारा दिमाग दुरुस्त हो जायेगा।

चटकना—रुष्ट होना। प्र० एक ही संग हम तुम सदा रहति हैं, आजुहीं चटकि तू भई न्यारी (सू० सा०—सूर, 2348)।

चटकना लगना—सचेत होना। प्र० मुझे तो उसी दिन से चटकना लगा कि हो न हो, कुछ दाल में काला है।

चटक-मटक—ठाट-बाट। प्र० जैनब बुआ बड़ी चटक-मटक में थीं।

चटकारा मारना—जीभ चटकाना। प्र० चटकारा मारकर मत खाओ, बुरी आदत है।

चटकारे का—(1) स्वादिष्ट। प्र० भाई वाह, कचौड़ी खूब चटकारे की है।

(2) ज़ोर से; खुलकर; सरस। प्र० क्या मिन-मिन कर रही हो। जरा चटकारे का कोई गीत सुनाओ।

चटकारे भरना—(1) खाने की इच्छा होना; स्वाद से खाना। प्र० उस दिन कचालू ऐसा स्वादिष्ट बना था कि मैं चटकारे भरता ही रह गया।

(2) ज़ोर से गाना। प्र० बड़े चटकारे भर रहे हो ? क्या बात है ?

चट-चट बलैया लेना—किसी की शुभकामना के लिए स्त्रियों का उंगली चटकाकर प्रार्थना करना।

चटनी कर डालना, -बनाना—(1) दुर्गति करना। प्र० मैं इसकी चटनी बना दूंगी (धीने०–रां० रा०, 201)।

(2) बहुत महीन पीस डालना। प्र० कहा था न कि दाल मोटी पीसना। तुमने तो उसको चटनी कर डाला।

(3) बहुत मारना। प्र० मैं अभी आती हूं। तुम्हारी वह चटनी करूंगी कि याद रखोगी।

चटनी चटाना—मारना-पीटना। प्र० अब चटनी चटाना बस भी करो।

चटनी बनाना—दे० चटनी कर डालना।

चटनी हो जाना—(1) बहुत महीन हो जाना। प्र० लो, दाल एकदम चटनी कर दी बहू जी।

(2) समाप्त हो जाना; झटपट खा लिया जाना। प्र० चाट कहाँ बची बेटा, वह तो हाथ का हाथ चटनी हो गयी।

चट-पट—दे० चट से।

चटपट की गिरह—वह फंदा जिसे खींचते फौरन गाँठ पड़ जाय।

चटपट होना—(1) झगड़ा होना। प्र० कोठरी खोलते हैं, तो यहाँ तो लड़कों में चटपट हो रही है, दोनों गुंथे पड़े हैं (आज़ाद०–प्रेमचन्द, 45)।

(2) झटपट मर जाना। प्र० बाबू बिन्दा प्रसाद तो उसी दिन एकदम चटपट हो गये।

चटपटा—(1) सुस्वादु भोजन। प्र० उस दिन भोजन खूब चटपटा बना था,

सबने चटकारे ले-लेकर खाया ।

(2) मनोरंजक । प्र० कोई चटपटा किस्सा सुनाओ कि तबीयत फड़क उठे ।

चटपटी पड़ना, -लगना—बेचैनी होना । प्र० तब तैं तन मन परी चटपटी, गाइ न दुहन दई री (सू० सा०—सूर, 99); लगी चटपटी सबके जिय में सबको मुख कुम्हिलायो (राधा० ग्रंथा०—राधा० दास, 23) ।

चटपटी लगना—दे० चटपटी पड़ना ।

चटर करना—मस्तूल आदि को घुमाना ।

चटसार भेजना—पढ़ने के लिए विद्यालय भेजना । प्र० तिनकैं संग चटसार पठायौ (सू० सा०—सूर, 421) ।

चटाक-पटाक करना—झट से करना । प्र० इसमें क्या रखा है । मैं आधे घंटे में चटाक-पटाक करके आता हूँ ।

चटाके का—बहुत तेज; प्रचंड । प्र० आज तो चटाके की धूप निकली है, सब बिछौना धूप में डाल दो ।

चटाचट—जल्दी-जल्दी; एक के बाद एक । प्र० छह महीने के अन्दर तीनों बेटे चटाचट चले गये, बेचारी पर वज्र टूट पड़ा ।

चटाना—घूस देना; काम निकालने के लिए गुप्त रूप से कुछ देना । प्र० रंडी-भड़वों को तो सेठ जी चटाते ही थे मगर उनका घना लगाव अपने एक निकट सम्बन्धी की पत्नी से था (ये कोठे०—नागर, 53) ।

चटोरी जबान होना—चटपटा खाने का लालची होना । प्र० खायं मिठाइयां, आप मुंह सड़ेगा फोड़े-फुन्सियां निकलेंगी, आप ही ज़बान चटोरी हो जायेगी (मान० (1)—प्रेमचन्द, 31) ।

चट्ट कर जाना—(1) सब खा जाना । प्र० लो, बिल्ली सारा दूध चट्ट कर गयी ।

(2) दूसरे की वस्तु लेकर न देना । प्र० तुम अपने भाई की चीजों का जो चाहे करो पर मेरी चीजें चट्ट करने की कोशिश मत करना ।

चट्टा लगाना, चट्टा-पट्टा भिड़ाना—लड़ाई लगाना । प्र० चट्टा लगाने में नन्दो बुआ एक ही हैं ।

चट्टा-पट्टा भिड़ाना—दे० चट्टा लगाना ।

चट्टी धरना, चड्ढी धरना—दंड लगाना । प्र० इतनी कड़ी चट्टी मत धरिए मालिक, बाल-बच्चे मर जायंगे ।

चट्टी भरना—हानि पूरी करना । प्र० तुम चिन्ता मत करो, चट्टी मैं भर दूंगा ।

चट्टे-बट्टे लगाना, -लड़ाना—इधर की उधर लगाकर लड़ाई कराना । प्र० चट्टे-बट्टे लड़ाने में ताई बड़ी कुशल हैं ।

चट्टे-बट्टे लड़ाना—दे० चट्टे-बट्टे लगाना ।

चट्टे-बट्टे होना—एक-से होना; एक दल या स्वभाव के होना । प्र० कहने की बातें हैं कि दोनों अलग-अलग हैं । मेरी मानो, वे चट्टे-बट्टे हैं ।

चट्टे-मट्टे उड़ाना—चाट खाना । प्र० इसे तो चट्टे-मट्टे उड़ाने की ऐसी आदत पड़ गयी है कि रोज रुपया-आठ आना खर्च कर देता है ।

चड़बड़-चड़बड़ करना—बकवाद करना । प्र० तुम बहुत चड़बड़-चड़बड़ करते हो, अब मुंह बन्द करके बैठो जरा देर ।

चड़ी जमाना—उछलकर लात मारना ।

चड्ढी गठना या गांठना—काम बन जाना या बना लेना । प्र० हुज़ूर का काम हो गया, अब चड्ढी गठ गई (चोटी०—निराला, 19) ।

चड्ढी देना—(1) हारकर पीठ पर चढ़ाना ।

(2) गुदा-मैथुन करना ।

चड्ढी धरना—दे० चट्टी धरना ।

चड्ढी लेना—पीठ पर सवारी लेना । प्र० मैं हार गया हूँ तो चड्ढी लूंगा, तुम घबराते क्यों हो ।

चढ़ आना, -जाना, -दौड़ना—(1) चढ़ाई करना; हमला बोल देना । प्र० पातसाहि कहं अैस न बोलू । चढ़ै तौ परै जगत महं दोलू (पद०—जायसी, 42/2); बेगि न मिलौ जानकी लै कै, रामचन्द्र चढ़ि आयौ (सू० सा०—सूर, 563); देहउँ उतरु तो रिपु चढ़ि आवा (राम० (लं)—तुलसी, 949); जब कंस सब राजाओं का राज ले चुका तब एक दिन अपना दल ले राजा इन्द्र पर चढ़ चला (प्रेम०—ल० ला०, 10) ।

(2) झगड़ा करना । प्र० मोहल्ले के कई लड़के मेरे लड़कों को मार रहे थे । मैंने जाकर उन सबों की गोशमाली कर दी । बस, इतनी जरा-सी बात पर लोग चढ़ आये (रंग० (1)—प्रेमचंद, 208) ।

चढ़ जाना—दे० चढ़ आना ।

चढ़ दौड़ना—दे० चढ़ आना ।

चढ़ बजना—पौ बारह होना । प्र० अब तो उसकी चढ़ बजी है, उसे क्या चिन्ता ।

चढ़ बनना—(1) सुयोग मिलना । प्र० नायक राम की चढ़ बनी । दलाली करने लगे (रंग० (2)—प्रेमचंद, 317) ।

(2) पक्ष सबल होना । प्र० अब तो पंडितजी की खूब चढ़ बनी (परीक्षा०—श्री० दास, 16) ।

(3) धावा करना । प्र० पूस लगते-न-लगते मानसिंह की सेना बंगाल पर चढ़ बनी ।

(4) बहुत से लोगों का दल बांधकर किसी काम के लिए आना । प्र० उस दिन के झगड़े का फैसला करवाने के लिए सारा मुहल्ला चढ़ बना ।

चढ़ बैठना—(1) आक्रमण करना । प्र० जहांपनाह, चढ़ बैठने का यही मौका है (मृग०—वृ० वर्मा, 435) ।

(2) बहुत क्रोध करना । प्र० वे तो बात करते चढ़ बैठते हैं, कैसे कोई उनसे कुछ कहे ।

चढ़कर, चढ़-बढ़कर—तुलना में श्रेष्ठ या अधिक । प्र० धरम धरम बल भीम पैज पथ्य रूप, नकुल अकिल सहदेव तें तूं चढ़िकै (भूषण ग्रंथा०—भूषण, 153) ।

चढ़कर लड़ना—खुद आगे बढ़कर लड़ना । प्र० धनिया पर क्रोध आया । वह क्यों चढ़कर लड़ने गयी (गोदान—प्रेमचंद, 43) ।

चढ़ता यौवन, चढ़ती जवानी—युवावस्था का प्रारम्भ । प्र० जब बुढ़ापे में

यह दशा है तो चढ़ते जोबन में न जाने क्या रही होगी (भा० ग्रं० (1)–भारतेन्दु, 24); तब उसकी चढ़ती जवानी थी (मान० (1) —प्रेमचन्द, 171)।

चढ़ती आयु—युवावस्था। प्र० चढ़ती आयु में ही जिसका रस स्थिर हो जाय उस युवक को रसज्ञ कौन कहेगा (सुहाग०–अ० ना०, 8); चढ़ती आयु की लड़कियां जरूर सलवार-कमीज़ पहने थीं (झूठा० (1)–यशपाल, 61)।

चढ़ती जवानी—दे० चढ़ता यौवन।

चढ़ना—(1) तीव्र असर होना; दिमाग पर असर डालना। प्र० मगर उसे यह विश्वास नहीं था कि शराब उसे चढ़ सकती है।

(2) भेंटस्वरूप दिया जाना। प्र० जब ×× एक-एक वोट पर एक-एक अशर्फी चढ़ने लगेगी तो शायद आप भी उधर वोट देंगे (गोदान–प्रेमचन्द, 142)।

(3) बहू को दिया जाना; चढ़ावा चढ़ना। प्र० इतना सोना नाइयों में आज तक नहीं चढ़ा (जिन्दगी–निर्गुण, 67)।

चढ़ने के लिए उतरना—उन्नति के लिए थोड़ी अवनति भी करना या झुकना।

चढ़-चढ़कर—दे० चढ़कर।

चढ़ा लाना—किसी पर आक्रमण करने के लिए आमंत्रित करना। प्र० यह क्यों नहीं कहती कि तू ही उसे चढ़ाकर लाई है (रंग० (1) —प्रेमचंद, 394)।

चढ़ा स्वर—तीव्र और कठोर आवाज़। प्र० पिताजी के चढ़े स्वर को सुनकर मैं सहम गया।

चढ़ा-उतरी लगाना—बार-बार चढ़ना-उतरना। प्र० छज्जे पर क्यों एक सांस चढ़ा-उतरी लगाये हो? कहीं पैर फिसल गया तो अनर्थ हो जायगा।

चढ़ा-ऊपरी करना, -लगाना—तुलना में अपने आप को ऊँची स्थिति में रखने का प्रयत्न करना। प्र० पड़ोसियों ने उसका पक्ष किया, सच तो है, आपस में यह चढ़ा-ऊपरी नहीं करना चाहिए (मान० (8)– प्रेमचंद, 70)।

चढ़ा-ऊपरी लगाना—दे० चढ़ा-ऊपरी करना।

चढ़ाना—(1) खा जाना; पी जाना। प्र० छाछ का छन्ना एक सांस में चढ़ा गया (कठ०–दे० स०, 271)।

(2) शराब पीना। प्र० किसी दिन कहीं से अधिक चढ़ा आता तो उस दिन तूफान मचा देता (धरती०–वि० प्र०, 146)।

(3) बलिदान या उत्सर्ग करना। प्र० देश की इज्जत बचाने के लिए या चढ़ा जिनने दिए निज लाल हैं (कुरु०–दिनकर, 2)।

चढ़ा-बढ़ा—मशहूर; प्रतिष्ठित। प्र० पंडित बिन्दा महराज तो चढ़े-बढ़े कलाकार थे, सब उनकी इज्जत करते थे।

चढ़ाव-उतार होना—स्थिति में परिवर्तन होना। प्र० हर काम, हर बात में चढ़ाव-उतार तो होता ही है, उससे कैसे बचा जा सकता है।

चढ़ावा चढ़ना या चढ़ाना—(1) विवाह में वधू को गहने-कपड़े देना। प्र० इसके कुछ दिनों पीछे रमानाथ के साथ देवबाला का ब्याह ठीक हो गया, चढ़ावा भी चढ़ गया (ठेठ०–हरिऔध, 16)।

(2) भेंट-पूजा चढ़ाना। प्र० आज सप्ताह की पूर्णाहुति है। व्यासजी को चढ़ावा भी तो चढ़ाना होगा।

चढ़ावा-बढ़ावा देना—उत्साह बढ़ाना; उत्तेजित करना। प्र० किसी तरह चढ़ावा-बढ़ावा देकर उसे स्टेज पर आने को राज़ी किया है।

चढ़ी त्योरी उतर जाना—आया गुस्सा कम होना। प्र० ×× मौलवी साहब से ऐसा बहाना कर देते कि उनकी चढ़ी हुई त्योरियां उतर जातीं (मान० (5)–प्रेमचद, 108)।

चढ़ी हांड़ी उतर जाना—काम के पूरा होते-होते रुकावट पड़ जाना। प्र० पूछो मत, ब्याह की सारी तैयारी हो चुकी थी। यही समझो कि चढ़ी हांड़ी उतर गयी।

चढ़ी होना—अच्छी स्थिति होना। प्र० गाँव में मंगरू साह की आजकल चढ़ी हुई थी। इस साल सन में उसे अच्छा फायदा हुआ था (गोदान –प्रेमचंद, 102)।

चतुरई छांटना, -छीलना, -छोलना, -तौलना—चालाक बनना; अपनी चालाकी की बड़ाई करना। प्र० बहुनायकी आजु मैं जानी, कहा चतुरई तोलत हौ (सू० सा०–सूर, 3174); जाहु चले गुन प्रगट सूर-प्रभु, कहा चतुरई छोलत हौ (सू० सा०–सूर, 3174); मुझसे बहुत चतुरई मत छाँटिये, जाइए, घर का रास्ता लीजिए।

चतुरई छीलना—दे० चतुरई छांटना।

चतुरई छोलना—दे० चतुरई छांटना।

चतुरई झारना—चतुराई दूर कर देना। प्र० ऐसे बचन कहौंगी इन तौं, चतुराई इनकी मैं झारति (सू० सा०—सूर, 2389)।

चतुरई तौलना—दे० चतुरई छांटना।

चतुराई पढ़े होना—चतुर होना। प्र० सूरदास प्रभु मिली अंतर गति, दुहुनि पढ़ी एकै चतुराई (सू० सा०–सूर, 1804)।

चद्दर पड़ना, -बिछना—नदी के बहते पानी के कुछ अंश का एकदम समतल हो जाना; नदी या कुएं में बीच में धरती का आ जाना जिससे पानी रुक जाये। प्र० पटना के पास गंगा में यहाँ से वहाँ तक चद्दर पड़ गयी है।

चद्दर बिछना—दे० चद्दर पड़ना।

चनक पड़ना—दे० चमक पड़ना।

चना डालकर खाने में साझा करना—थोड़ा-सा योग देकर बहुत-सा लाभ पाने की आशा करना। प्र० भाई तुम तो बड़े होशियार निकले–चना डालकर खाने में साझा करना चाहते हो।

चना-चबेना करना—(मजदूरों आदि का) चना-चबेने का नाश्ता करना; चबेना खाना। प्र० अब तो हाथ नहीं चलता! गोला भी छूट गया होगा, चबेना कर लें (मान० (2)—प्रेमचंद, 259)।

चने का भाड़ न फोड़ सकना—दुर्बल एवं असमर्थ व्यक्तियों का समर्थ को परास्त न कर पाना। प्र० ये मुट्ठी-भर पढ़े-लिखे आदमी क्या बना लेंगे, चने कहीं भाड़ फोड़ सकते हैं (मान० (7)–प्रेमचंद, 270)।

चने का मारा मरना—इतना बलहीन होना कि ज़रा-सी चोट लगने से मर जाय।

चने के पेड़ पर चढ़ाना—झूठी तारीफ करना; चंग पर चढ़ाना। प्र० जब तक आपके पास रुपये-पैसे हैं, तभी तक ये लोग आपको चने के पेड़ पर चढ़ाते हैं।

चने-सा खिल पड़ना—प्रसन्न हो उठना। प्र० माँ के मन की बात मत पूछो। मुझे देखते ही चने-सा खिल पड़ीं।

चने-सा भुनना—तेज बुखार होना। प्र० कल रात से बुखार उतरा ही नहीं है, बेचारा चने-सा भुन रहा है।

चने-सा भून देना—गोलियों से भून देना। प्र० मैं दुश्मनों को चने-सा भून दूंगा, तुमने समझ क्या रखा है।

चपकुलिश में पड़ना—झंझट में पड़ना। प्र० आजकल बड़ी चपकुलिश में पड़ गया हूँ भैया !

चपटी होकर चिमट जाना—एकदम चिपक जाना; किसी तरह न छोड़ना।

चपड़-चपड़ करना—बहुत बोलना।

चपड़ा लेना—मस्तूल के जोड़ पर रस्सी लपेटना।

चपत चलाना—अपमान करना। प्र० थी कभी हम से नहीं जिनकी चली आज दिन वे ही चलाते हैं चपत (चुभते०–हरिऔध, 80)।

चपत जड़ना, -जमाना, -झाड़ना, -धरना—चांटा मारना। प्र० सैंकड़ों ताड़ झाड़ सब दिन कर है चपत झाड़ना हमें आता (बोल०–हरिऔध, 165)।

चपत जमाना—दे० चपत जड़ना।

चपत झाड़ना—दे० चपत जड़ना।

चपत देना—खर्च या नुकसान करवाना। प्र० कम-से-कम 1) की रोज़ चपत दे रहे हैं (मान० (4)–प्रेमचंद, 104)।

चपत धरना—दे० चपत जड़ना।

चपत पड़ना, -लगना—(1) व्यर्थ व्यय होना। प्र० उनके जाने के बाद लालाजी ने अमरकांत को आड़े हाथों लिया—मुफ्त में 100) रु० की चपत पड़ी (कर्म०–प्रेमचंद, 67)।
(2) नुकसान होना। प्र० अंधापन ही क्या थोड़ी विपत थी कि नित ही एक-न-एक चपत पड़ती रहती है (रंग० (1)–प्रेमचंद, 202)।

चपत लगना या लगाना—दे० चपत पड़ना।

चपनी चाटना—बहुत थोड़ा अंश पाकर रह जाना। प्र० बंटवारे में उसे क्या मिला, वह तो चपनी चाटकर रह गया।

चपनी भर पानी में डूब जाना, -डूब मरना—बहुत लज्जित होना। प्र० तुम्हें चपनी भर पानी में डूब मरना नहीं नसीब हुआ जो यहाँ मुँह दिखाने को बचे हो ?

चपनी भर पानी में डूब मरना—दे० चपनी भर पानी में डूब जाना।

चपरकनाती—साधारण; महत्त्वहीन; तुच्छ। प्र० उन सब चपरकनातियों को मैं खूब जानता हूँ।

चपरगट्टू करना, -बनाना—बेवकूफ बनाना। प्र० मैंने बड़े-बड़े काइएँ और घुटे हुए शोहदों और पुलिस अफसरों को चपरगट्टू बनाया है (ग़बन—प्रेमचंद, 303)।

चपरगट्टू बनाना—दे० चपरगट्टू करना।

चपाट होना—महामूर्ख होना। प्र० तुम तो वज्र चपाट हो, तुम क्या करके निहाल करोगे।

चपाती-सा पेट—पिचका पेट। प्र० बच्चे का पेट तो चपाती-सा हो रहा है, दूध पिलाओ न।

चपेट देना—डांट देना; भला-बुरा कहना। प्र० श्रीबाबू ने मुझे सबके सामने ऐसा चपेट दिया कि क्या कहूँ।

चपेट में आना, -पड़ना—घाटे में आना। प्र० इस सौदे में मैं भी चार साढ़े चार सौ की चपेट में आ गया।

चपेट में पड़ना—दे० चपेट में आना।

चप्पा-चप्पा—हर स्थान। प्र० भवरवां के जंगल का चप्पा-चप्पा मेरा जाना हुआ था (एक म्यान०–नानक०, 95)।

चप्पू मारना—चप्पू से नाव खेना। प्र० जल्दी-जल्दी चप्पू मारो माँझी नहीं तो बड़ी रात हो जायगी।

चबा जाना—क्रोध में कुछ भी न उठा रखना; प्राण तक ले लेने को उद्यत होना। प्र० मैं इस समय बाबूजी के सामने नहीं जाऊंगा, वे मुझे चबा जायेंगे।

चबाए कौर चबाना, चबे को चबाना—किए हुए काम को बार-बार करना; पिष्टपेषण करना। प्र० उनके यहाँ भाषा-लालित्य है, पिंगल की कोई भूल नहीं, खोजने पर भी कोई दोष न मिलेगा, लेकिन उपज का नाम नहीं, मौलिकता का निशान नहीं, वही चबाए हुए कौर चबाते हैं, विचारोत्कर्ष का पता नहीं होता (रंग० (2)–प्रेमचंद, 170)।

चबा-चबाकर बातें करना—एक-एक शब्द धीरे-धीरे बोलना; मठार-मठारकर बातें करना। प्र० फिर देखूंगी, तुम मूर्त्ति लेने आई किसी स्त्री से कैसे चबा-चबाकर बातें करते हो (दूधगाछ–दे० स०, 387)।

चबाना—(1) अच्छी तरह विचार करके समझना (तर्क या विचार)। प्र० यह आज के लिए काफी है। इसे (तर्क) चबा लूँ, फिर आगे सही (शेखर० (2)–अज्ञेय, 75)।
(2) कुंठित करना। प्र० श्यामदुलारी का माधुरी के प्रति अकारण पक्षपात और इन्द्रदेव पर सन्देह, उनके कर्त्तव्यज्ञान को चबा रहा था (तितली–प्रसाद, 125)।

चबूतरा बांधना—गर्भवती होना।

चबूतरे चढ़ना—पकड़ा जाना; कोतवाली जाना। प्र० वह जल्दी ही चबूतरे चढ़ेगा, मानेगा नहीं।

चबे को चबाना—दे० चबाए कौर चबाना।

चबेना करना—दे० चना-चबेना करना।

चबेना मांगना—बहुत तुच्छ वस्तु माँगना। प्र० जानेहु लेइहि माँगि चबेना (राम०–तुलसी)।

चभड़-चभड़ करके खाना—मुँह से आवाज करते हुए खाना। प्र० इस तरह चभड़-चभड़ करके मत खाओ, बड़ी बुरी आदत है।

चभ्भो देना—पानी में जबरदस्ती डुबाना; चकमा देना। प्र० तुम मेरे

पास आओ तब न बतलाऊँ कि चभ्भो कैसे दिया जाता है।

चमक उठना—(1) खूब उन्नति होना। प्र० तुम्हारी डाक्टरी ऐसी चमकेगी कि तुम्हारे नाम का डंका पिट जायगा (तितली–प्रसाद, 149)।
(2) आश्चर्य होना। प्र० चाची चमक उठी (कंकाल–प्रसाद, 237)।

चमक देना, -लाना—(1) चमकना। प्र० वाह, यह चूड़ी तो खूब चमक दे रही है।
(2) चमकाना। प्र० ज़रा इस फूलदान पर भी चमक दे देना, गंदा हो गया है।

चमक पकड़ना—चमकने लगना; यश-ख्याति पाना। प्र० खोखा मियाँ देखते-ही-देखते चमक पकड़ने लगे (अमृत०–नागर, 691)।

चमक पड़ना—नस का स्थान से हट जाने के कारण पीड़ा होना। प्र० पिछले सप्ताह भर से कमर में चमक पड़ गयी है, उठना-बैठना मुश्किल हो रहा है।

चमक मारना—(1) चमकना। प्र० आज तो कान की तरकी खूब चमक मार रही है। साफ की है क्या?
(2) चमक को कम कर देना। प्र० इस हैण्डिल की चमक मार दो, बहुत खराब लग रहा है।

चमक लाना—दे० चमक देना।

चमकती तारिकाएं—यशवती अभिनेत्रियां।

चमक-दमक—ऊपरी दिखावा। प्र० मैं इस चमक-दमक में भूलनेवाली नहीं हूँ।

चमकना—(1) यश फैलना; उन्नति होना। प्र० पालिटिक्स के मैदान में उतरे तो चोटी के लीडरों की चोटी पर जा चमके (पद्म पराग—पद्म० शर्मा, 76); शहर के प्रधान राजनीतिक थे, उनकी वकालत खूब चमकी हुई थी (सेवा०–प्रेमचंद, 73)।
(2) चिहुंक जाना। प्र० प्रवन्ध चिन्तामणि में एक जगह ××× म्लेच्छों से युद्ध करते समय बलभी के राजा शिलादित्य के घोड़े के चमकाए जाने का उल्लेख है (गुलेरी ग्रंथ (1)—गुलेरी, 235)।
(3) रोब-दाब होना। प्र० चार दिनों में तुम्हीं तुम चमकोगी (सात०—नागर, 55)।
(4) नस चमकना या स्थानांतरित होना। प्र० कल से ही कमर की नस चमक गयी है, बड़ी तकलीफ है।

चमकाना—उन्नति कराना। प्र० उन्होंने व्यापार को और भी चमका दिया था (मान० (6)–प्रेमचंद, 7)।

चमगादड़—दोनों पक्षवाला। प्र० तुम्हारी बात तो ऐसी ही होगी, चमगादड़ जो ठहरे।

चमगादड़ झूलना—सूना और खाली होना। प्र० बड़े मालिकों के बखारों में भी चमगादड़ झूलेंगे (मैला०–रेणु, 231)।

चमगादड़-गति होना—न इधर का न उधर का; दोनों ओर का। प्र० कहीं ऐसा न हो कि दो बड़े पूंजीपतियों के चक्कर में पड़कर उसकी चमगादड़-गति हो जाय (अमृत०–नागर, 635)।

चमड़ा उधेड़ना, -खींचना, चमड़ी उधेड़ना, -खींचना, चाम उकेलना—बहुत अधिक मारना; चमड़े को शरीर से अलग करना। प्र० तुम अब एक शब्द भी बोले तो मैं तुम्हारी चमड़ी उधेड़ दूंगा, यह समझ रखना।

चमड़ा खींचना—दे० चमड़ा उधेड़ना।

चमड़ा सिझाना—चमड़े को मसाले में देकर मुलायम करना।

चमड़ी उतर जाना—इतनी मार पड़ना कि चमड़ी उधड़ जाय। प्र० मेम जान पाती तो चमड़ी उतर जाती (कम०–कम०, 113)।

चमड़ी उधेड़ना—दे० चमड़ा उधेड़ना।

चमड़ी खींचना—दे० चमड़ा उधेड़ना।

चमड़ी नोचना—बहुत तंग करना विशेषकर लहना वसूली के लिये। प्र० पेशकार साहब का आदमी चमड़ी नोचे डाल रहा है, उसे कुछ-न-कुछ देना ही पड़ेगा।

चमड़ी बांधना—पलस्तर की ऊपरी सतह मजबूत करना या होना।

चमड़े का जहाज चलाना—भंडुआ बनना; औरत की कमाई खाना।

चमर-गदाई होना—बहुत ही हीन और निकृष्ट होना।

चमरचिट्ट—(1) कंजूस। प्र० बड़ा चमरचिट्ट आदमी है, उससे एक पैसा न मिलेगा।
(2) बहुत गंदा। प्र० कैसे चमर-चिट्ट हो, दूर हटकर बैठो।

चमर-सौंजन में पड़ना—फालतू काम में पड़ना। प्र० तुम भी कहां की चमर-सौंजन में पड़े हो।

चमार—कंजूस; छोटे दिलवाला। प्र० ऐसे चमारों से पाला पड़ा है कि क्या कहूँ, कैसे-कैसे जिन्दगी कटेगी, पता नहीं।

चमार-चौदस मचना या मचाना—बहुत हल्ला-गुल्ला करना। प्र० क्या चमार-चौदस मचा रखी है तुम लोगों ने।

चमार-चौदस मनाना—(1) थोड़ा भी धन मिलने से उसे खुशी मनाकर खर्च कर डालना। प्र० तुम तो चार पैसा हाथ में आते ही चमार-चौदस मना डालते हो, एक पैसा कभी बचाकर नहीं रखते।
(2) चमारों का एक त्योहार।

चमार-सियार—नीच प्रवृत्ति का; तुच्छ, छोटा। प्र० ऐसे-ऐसे चमार-सियार बहुत देखे हैं।

चरंदम-खुरंदम करना—भोजन करना।

चरकटा—तुच्छ; बिना हैसियतवाला। प्र० मैं इन टुकड़गदे किसानों से दबता फिरूं? जमींदार न हुआ कोई चरकटा हुआ (प्रेमा०–प्रेमचंद, 225)।

चरका खाना—धोखा होना। प्र० ऐसा चरका उसने कभी न खाया था (मान० (1)–प्रेमचंद, 279)।

चरका चराना, -देना, -पढ़ाना, -बताना—बेवकूफ बनाना; किसी को दूसरी बातों में उलझा कर बहकाना; धोखा देना। प्र० इतने में गाड़ी ने सीटी दी, रमा अधीर हो उठा। समझ गया, जमादार ने चरका दिया (ग़बन–प्रेमचंद, 133)।

चरका देना—दे० चरका चराना।

चरका पढ़ाना—दे० चरका चराना ।

चरका बताना—दे० चरका चराना ।

चरखा ओंटना—एक ही बात को बार-बार घुमा-फिराकर कहे जाना । प्र० दादी तो वही चरखा ओंटे जा रही हैं, जी ऊब गया ।

चरखा चलाना—झंझट-बखेड़े का काम करते रहना । प० क्या करूँ इस चरखे को चलाए बिना छुट्टी नहीं ।

चरखा ढीला हो जाना—बेदम हो जाना; थककर चूर हो जाना । प्र० अब मेरा चरखा एकदम ढीला हो गया है, मुझसे हिला भी न जायेगा ।

चरखा नाधना—व्यर्थ बातें करना । प्र० मैं राकेश बाबू के यहाँ नहीं जाऊँगी । मुझे देखते ही वे वही पुराना चरखा नाध बैठेंगे ।

चरखा शुरू होना—वही काम या झमेला फिर से शुरू होना । प्र० प्रातःकाल फिर वही चरखा शुरू हो जाता था (गोदान—प्रेमचन्द, 139) ।

चरखा हो जाना—(1) घबड़ा जाना । प्र० इस तरह चरखा क्यों होते हो, धीरज से काम लो ।
(2) बूढ़ा या दुर्बल हो जाना । प्र० अब शरीर में दम कहाँ रहा, चरखा हो गया है ।
(3) मतवाला हो जाना । प्र० रमसुभगा तो एक चुल्लू में ही चरखा हो जाता है, वह क्या पीयेगा ।

चरण चूमना, -परसना—(1) अत्यन्त आदर करना । प्र० नाम न सुनकर अविवेकों का जग विवेक का चरण परसता (मर्म०—हरिऔध, 12) ।
(2) सहज उपलब्ध होना । प्र० सभी सम्पदा तो उसी शाक्य श्रवण के चरण चूमेगी ? (वैशाली० (1)—चतुर०, 352) ।

चरण छूना, -पड़ना, -मनाना, -लगना, -लेना, -वंदन करना, -स्पर्श करना, चरण-रज लेना, -सिर पर चढ़ाना, चरणों में झुकना—चरण छूकर सादर प्रणाम करना; किसी को श्रेष्ठ और पूज्य मानना । प्र० चरननि लागि करौं बरियाई, प्रेम प्रीति राखौं उरझाई (कबीर ग्रंथा०—कबीर, 87); चरन लागि करि विनय बिसाला (राम० (वा)—तुलसी, 198); श्री गुरु चरन-सरोज मनावौं (नंद० ग्रंथा०—नंद०, 167); श्री महाप्रभु को मेरा चरण छूना, पांव लगना या पांव लेना पहुँचे और जरूर पहुँचे (पद्म० के पत्र—पद्म० शर्मा, 182) ।

चरण टेकना, -पड़ना—अत्यन्त विनम्र भाव से विनती करना । प्र० चरन टेकि दोउ हाथ जोरि कै, बिनती क्यों नहिं कीजै (सू० सा०—सूर, 570) ।

चरण देना—(1) पैर रखना । प्र० इस शिला पर चरण दे प्रभु तार दें उस नारि को ।
(2) आना । प्र० आपने कृपापूर्वक चरण दिया, मैं धन्य हुई ।

चरण धरना, -पड़ना—आना । प्र० धनि मम गृह, धनि भाग हमारे । जौ तुम चरन कृपा करि धारे (सू० सा०—सूर, 343) ।

चरण धो-धोकर पीना—अत्यन्त आदर करना । प्र० मैं तो कहती हूँ उपेक्षा तो दूर रही × × आप उस नारी के चरण धो-धोकर पियेंगे (गोदान—प्रेमचंद, 172) ।

चरण पड़ना—दे० चरण छूना, चरण टेकना और चरण धरना ।

चरण परसना—दे० चरण चूमना ।

चरण पूजना—आदर करना । प्र० मैं उनका आभारी हूँ, अनुगत हूँ, उनके चरण पूजता हूँ ।

चरण मनाना—दे० चरण छूना ।

चरण में चित्त लगाना—ध्यान करना । प्र० हिरनकश्यप बढ़्यो उदय अरु अस्त लौं, हठी प्रहलाद चित चरन लायौ (सू० सा०—सूर, 5) ।

चरण लगना—दे० चरण छूना ।

चरण लेना—दे० चरण छूना ।

चरण वंदन करना—दे० चरण छूना ।

चरण से लगना—चरण छूकर प्रणाम करना । प्र० वंदे श्याम चरन से लाग ।

चरण सेना—तुच्छ चाकरी बजाना; सेवा करना । प्र० मैं सारे जीवन आपका चरण सेने को राजी हूँ ।

चरण स्पर्श करना—दे० चरण छूना ।

चरण-चिन्हों पर चलना—किसी के दिखलाए मार्ग पर चलना ।

चरण-छाया में—किसी के आश्रम में ।

चरण-जोहारी करना—पैर छूकर प्रणाम करना । प्र० देखि सुरूप सकल कृष्णाकृति, कीनी चरन जुहारी (सू० सा०—सूर, 441) ।

चरण-रज पड़ना—आगमन होना; किसी पूज्य व्यक्ति का आगमन होना । प्र० बड़े भाग्य हमारे जो आप सब महानुभावों की चरण-रज हम दीनों के घर पड़ी—× × (अमृत०—नागर, 92) ।

चरण-रज लेना—दे० चरण छूना ।

चरण-रज सिर पर चढ़ाना—दे० चरण छूना ।

चरण-सेवा करना—सेवा-सुश्रूषा करना ।

चरणामृत लेना—(1) किसी पूज्य या बड़े का पैर धोकर पीना । प्र० ठाकुर जी का चरणामृत पहले ले लो ।
(2) बहुत थोड़ी मात्रा में कुछ लेना । प्र० यह मलाई ले रहे हो या चरणामृत ? ज़रा और लो भाई ।

चरणों का दास होना, -की गुलामी करना—पूर्ण अनुगत होना । प्र० तौ न होउं चरननि कौ चेरौ, जौ न प्रतिज्ञा पारौं (सू० सा०—सूर, 581); करत रहत धन-जन के चरन की गुलामी (भा० ग्रं० (2)—भारतेन्दु, 277); मधुप जो करते अनुनय विनय, बने तेरे चरणों के दास (मुकुल—सु० कु० चौ०, 1) ।

चरणों की गुलामी करना—दे० चरणों का दास होना ।

चरणों की धूलि—(1) अत्यन्त तुच्छ । प्र० मेरी उनकी क्या बराबरी । मैं तो चरणों की धूल भी नहीं हूँ ।
(2) पूर्ण अनुगत । प्र० जिहि घटि राम रहे भरपूरि, ताकी मैं चरनन की धूरि (कबीर ग्रंथा०—कबीर, 128) ।

चरणों की बलि जाना—पूर्णतः अनुरक्त होना; न्यौछावर होना । प्र० सूरदास प्रभु तुम्हरे दरस कौं, चरननि की बलि जैया (सू० सा०—सूर, 773) ।

चरणों के नीचे आंख बिछाना, -पर न्यौछावर होना, -मस्तक रखना, -सिर

झुकाना, -देना, -रखना, -में आंख बिछाना—बहुत आदर करना; पूर्ण अनुगत होना। प्र० अगर कोई स्त्री ×× आपको अपना देवता समझे ×× आपके चरणों के नीचे आँखें बिछाये ×× तो मैं दावे से कह सकती हूँ, आप उसकी उपेक्षा न करेंगे (गोदान–प्रेमचंद, 172); देव कौशाम्बीपति, जब सम्पूर्ण जनपद मेरे चरणों में आँखें बिछाता है ×× तब क्या मैं आपका कुछ भी प्रिय नहीं कर सकती? (वैशाली० (1)–चतुर०, 117)।

चरणों के नीचे रखना—शरण में लेना। प्र० अब मोकौं चरननि तर राखौ, हंसि नंद-नंदन अंग छियौ (सू० सा०–सूर, 2558)।

चरणों के प्रताप से—दया से। प्र० आपके चरणों के प्रताप से अब कोई कमी नहीं रही।

चरणों तक पहुँचना—योग्यता में बहुत घटकर होना; तुलना में बहुत नीचा स्थान होना। प्र० मैं तो उनके चरणों तक ही पहुंचता हूँ (कुल्ली० –निराला, 14)।

चरणों पर (में) गिर पड़ना—(1) अत्यन्त विनम्र हो जाना; पूर्ण अनुगत होना। प्र० ऐसी नारी पाकर मैं उसके चरणों में गिर पड़ूंगा और उस पर अपने को अर्पण कर दूंगा (गोदान–प्रेमचंद, 146)।
(2) चरण छूकर नमस्कार करना। प्र० गुरु जी के चरणों पर गिरो बेटा।

चरणों पर न्यौछावर होना—दे० चरणों के नीचे आंख बिछाना।

चरणों पर मस्तक रखना—दे० चरणों के नीचे आंख बिछाना।

चरणों पर रख देना—सेवा में उपस्थित करना। प्र० वह अभिसार की मीठी स्मृतियाँ याद आयीं जब वह अपने उन्मत्त उसांसों में, अपनी नशीली चितवनों में मानों अपने प्राण निकालकर उसके चरणों पर रख देता था (गोदान–प्रेमचंद, 132)।

चरणों पर लुट जाना—किसी के लिए बड़ा से बड़ा त्याग करना। प्र० वह तो आपके चरणों पर लुट जाने तक को तैयार है।

चरणों पर लोटना—अनुगत होना; अधीन होना। प्र० समस्त भारत हूणों के चरणों में लोट रहा है (स्कंद०–प्रसाद, 143)।

चरणों पर सिर झुकाना—दे० चरणों के नीचे आंख बिछाना।

चरणों पर सिर देना—दे० चरणों के नीचे आँख बिछाना।

चरणों पर सिर रखना—दे० चरणों के नीचे आँख बिछाना।

चरणों में अर्पित करना, -चढ़ाना—सेवा में उत्सर्ग करना। प्र० हृदय चरण में तो मैं चढ़ा ही चुकी हूँ (वैदेही०–हरिऔध, 41)।

चरणों में आंख बिछाना—दे० चरणों के नीचे आंख बिछाना।

चरणों में चढ़ाना—दे० चरणों में अर्पित करना।

चरणों में चित्त देना—ध्यान करना; भक्ति करना। प्र० कृपि-रच्छक भाइनि तब कीन्हौ। उन तह हरि-चरननि चित दीन्हौ (सू० सा०–सूर, 410)।

चरणों में झुकना—दे० चरण छूना।

चरणों में डालना, -लेना—शरण में ले लेना। प्र० सूर कूर की या ही बिनती, लै चरननि मैं डारौ (सू० सा०–सूर, 218)।

चरणों में पड़ रहना—सेवा या आश्रय में पड़े रहना। प्र० अब तौ आय पर्यौ चरनन मैं (भा० ग्रं० (2)–भारतेन्दु, 830)।

चरणों में बैठना—किसी की छत्रछाया में रहना; अध्ययन के लिए किसी के यहाँ आना। प्र० गुरुदेव के चरणों में बैठकर मैंने जो शिक्षा प्राप्त की वही मेरे जीवन को नयी दिशा देनेवाली सिद्ध हुई।

चरबांक—धूर्त; होशियार। प्र० घर में मुलिया नाइन अपनी विधवा बेटी दुलरिया के साथ अक्सर ही आया करती थी। बड़ी चरबांक, पूरी छत्तीसी (अमृत०–नागर, 33)।

चरबांकदीदा—(1) ढीठ; निडर। प्र० तू बड़ी चरबांकदीदा हो गयी है री।
(2) चंचल नेत्रोंवाली।

चरबा उतारना, -करना—(1) उपहास करना। प्र० जायगा चरबा उतारा क्यों नहीं, छा गई है आंख में चरबी अगर (बोल०–हरिऔध, 54)।
(2) चित्र खींचना; नकल करना। प्र० किसका चरबा उतार रहे हो?

चरबा करना—दे० चरबा उतारना।

चरबी चढ़ना, -छाना, -बढ़ना—(1) मोटा होना। प्र० आजकल रमेश पर खूब चरबी चढ़ गयी है।
(2) गर्व करना। प्र० बहुत चरबी चढ़ गयी है न तुम्हें, सब निकालता हूँ।

चरबी छाना—दे० चरबी चढ़ना।

चरबी बढ़ना—दे० चरबी चढ़ना।

चरम काल आना—मृत्यु का समय आना।

चरम सीमा—पराकाष्ठा। प्र० ख्याति की चरम सीमा पर तो तुम पहुंच ही गये हो।

चरम सीमा को पार करना—हद से बाहर हो जाना। प्र० तुम चरम सीमा को पार करके कोई काम करोगे तो उसका नतीजा तो भुगतना ही होगा।

चरसा उड़ा देना—खाल उधेड़ना; दुर्गति करना। प्र० समझेओ, एहि मां फरक न पड़े, नाहीं चरसा उड़ाय दीन जैहैं (भिखा०–कौशिक, 121)।

चरसा भर जमीन—बहुत थोड़ी-सी जमीन।

चराना—बेवकूफ बनाना। प्र० ताहि कहु कैसे कृपानिधि, सकत सूर चराइ (सू० सा०–सूर, 56); मैं उसको अभी पढ़ाऊँगी वह मुझको चली चराने है (नूर०–भक्त, 53)।

चरिंद-परिंद—पशु-पक्षी।

चरित्तर दिखाना—(1) आडम्बर करना। प्र० बहुत चरित्तर मत दिखाओ, उसके बिना भी काम चल जायगा।
(2) धूर्तता का काम करना। प्र० वह बड़ा चरित्तर दिखाता है, उससे होशियार रहना।

चरित्र का दाग—जीवन में किया गया कुकर्म। प्र० ×× उसका बड़े से बड़ा भेदिया दुश्मन भी उसके चरित्र में कहीं एक दाग अब तक नहीं

ढूंढ़ पाया (सात०–नागर, 82)।

चरित्र-चित्रण करना—चरित्र के गुण-दोषों का विवेचन करना।

चर्चा उठना, -चलना या चलाना, -होना—चर्चा होना या करना। प्र० जा दिन ते चलिबे की चरचा चलाई तुम, ता दिन ते वाके तन छाई पियराई है (मति० मक०–मतिराम, 123)।

चर्चा चलना या चलाना—दे० चर्चा उठना।

चर्चा होना—दे० चर्चा उठना।

चर्बी बूकना—लगती बात कहना। प्र० शुहदे की बातचीत सुनकर हमारे बनारस के भैंवा लोगों से कब रहा जाता है, यह भी अपनी चर्बी बूकने लगे (भा० ग्रं० (3)–भारतेन्दु, 865)।

चल जाना—(1) किसी प्रकार काम हो जाना। प्र० इस समय तो इससे काम चल जायगा, आगे की चिन्ता बाद में करेंगे।

(2) प्रचलित होना। प्र० आजकल प्लास्टिक की चीजें खूब चल गयी हैं।

(3) फट जाना। प्र० अब यह कमीज तो चली। दूसरी लेनी ही होगी।

चल देना, -बसना—मर जाना। प्र० सुख भोगना लिखा होता, तो जवान बेटे चल देते? (ग़बन–प्रेमचन्द, 178); पर अभी वे छः मास के गर्भ में ही थे कि उनके पिता चल बसे (दूधगाछ–दे० स०, 201)।

चल निकलना—(1) वृद्धि पर होना। प्र० सुना है चित्ताप्रसाद का कार्य अच्छा चल निकला है (ब्रह्म०–दे० स०, 102)।

(2) मांग बढ़ना। प्र० मेरी बैटरी आजकल बाजार में खूब चल निकली है।

(3) प्रसिद्धि प्राप्त करना। प्र० माल एक बार अपनी धाक बना ले और चल निकले तो फिर काम बढ़ते देरी थोड़े ही लगती है।

चल पड़ना—(1) जाना। प्र० मास्टर साहब वहां से चल पड़े हैं, पहुँचते ही होंगे।

(2) प्रचलित होना। प्र० दे० चल जाना (2)।

चल बसना—दे० चल देना।

चल सम्पत्ति—जमीन जायदाद को छोड़कर और सब सम्पत्ति; ऐसी सम्पत्ति जिसे स्थानांतरित किया जा सके।

चल-चलाव का समय, -लगना—मृत्यु के निकट होना। प्र० आजकल जो समय है, उसके देखते चालीस के ऊपर पहुँच जाने पर आदमी का चल-चलाव लग जाता है (मा–कौशिक, 10)।

चल-चलाव लगना—दे० चल-चलाव का समय।

चलता आदमी, -हुआ, चलता-पुरजा—बहुत होशियार और चालाक। प्र० यह मुन्शी ज्वालासिंह के इजलास के अहलमद थे—बड़े बातूनी, बड़े चलते-पुर्जे (प्रेमा०–प्रेमचंद, 29); ऐसा चलता हुआ आदमी तो मैंने देखा ही नहीं (मा–कौशिक, 269)।

चलता करना—हटाना; भगाना; भेजना। प्र० अब किसी बहाने से लाला साहब को चलता करो।

चलता काम—ऐसा काम जो बहुत ध्यान या कुशलता से न किया गया हो। प्र० आप अधिक परिश्रम न कीजिए। चलता काम कर दीजिए (पद्म० के पत्र–पद्म० शर्मा, 164)।

चलता खाता, -लेखा—खुला खाता जिसमें जमा-खर्च हो रहा हो।

चलता गाना—हल्का-फुल्का गाना; वह गाना जो राग-रागिनियों में न बंधा हो।

चलता धंधा करना—(1) ऐसा काम, पेशा या नौकरी जिसमें बहुत परिश्रम या समझ की जरूरत न हो। प्र० हम भी सोचें कहाँ का झंझट! अलग भी करो, चलता धंधा करो, जिसे देखिए, नौकरी के पीछे पड़ा हुआ है (आज़ाद०–प्रेमचन्द, 41)।

(2) चले जाना। प्र० अब यहां से बोरिया-बंधना उठाओ और चलता धंधा करो (आज़ाद०–प्रेमचंद, 608)।

चलता पहिया, चलती गाड़ी—होता हुआ काम। प्र० चलती गाड़ी को रोककर नया काम करने में कोई तुक है?

चलता बनना, -होना—चले जाना। प्र० मकान की रखवाली के लिए जो नौकर था, वह भी चलता बना (पद्म पराग–पद्म० शर्मा, 81); भैरो भी उसके पीछे चलता हुआ (रंग०–प्रेमचंद, 114)।

चलता रखना—ज़ारी रखना। प्र० काम चलता रखो, बन्द मत करो। आज नहीं तो कल ढर्रे पर आ ही जायगा।

चलता लेखा—दे० चलता खाता।

चलता शब्द—आम बोलचाल का शब्द। प्र० हँसी-मजाक के लिए कुछ अरबी-फारसी के चलते शब्द कभी-कभी कितना अच्छा काम देते हैं, यह हम लोग बराबर देखते हैं (चिन्ता० (1)–शुक्ल, 189)।

चलता सिक्का—मान्य। प्र० गोबिन्दन का संगीत चलता सिक्का है (दूधगाछ–दे० स०, 300)।

चलता हिसाब—लेन-देन या बिक्री आदि का चालू सिलसिला। प्र० अभी तो चलता हिसाब है, जैसे कहोगे कर दूंगा।

चलता हुआ—दे० चलता आदमी।

चलता होना—दे० चलता बनना।

चलता-पुरजा—दे० चलता आदमी।

चलती को गाड़ी कहना—चालू काम ही काम माना जाना।

चलती गाड़ी—दे० चलता पहिया।

चलती गाड़ी के आगे रोड़ा अटकाना—होते हुए काम में विघ्न डालना। प्र० चलती गाड़ी के आगे रोड़ा अटकाने में तुम्हें कुछ विशेष सुख मिलता है?

चलती गाड़ी पर पैर रखे होना—बहुत जल्दी में होना; बिलकुल फुर्सत न होना। प्र० मैं मिलने गया तो ऐसे मिला जैसे चलती गाड़ी पर पांव रखे हुए हो (पैंतरे–अश्क, 64)।

चलती गाड़ी से लड़ना—जबरदस्ती लड़ाई शुरू करना।

चलती चक्की—संसार। प्र० भाई, ये सब इस चलती चक्की के झमेले हैं।

चलती चीज—संगीत में ठुमरी, दादरा इत्यादि हलकी गायकी की चीजें।

चलती तर्ज—हलकी लोकप्रिय तर्ज। प्र० रमजान धीरे-धीरे एक गाना गुनगुनाने लगा। चलती तर्ज थी (जिन्दगी–निर्गुण, 128)।

चलती दूकान—ऐसी दूकान जिसमें खूब बिक्री होती हो। प्र० वह अब लखनऊ की सबसे चलती हुई जूते की दूकान थी (गोदान–प्रेमचंद, 62)।

चलती बेला, चलने की बेला, चलाचली, -की बेला—अन्त में; अन्त समय; मृत्यु के समय। प्र० बड़े साहब की चलाचली है, चर्च को संभालने के लिए आपको बुलाया है (कंकाल–प्रसाद, 250); चलती बेला ऐसी बेरुखी तो मत करो।

चलती भाषा—बोलचाल की भाषा। प्र० अतः भाषा बोलचाल की, महावरेदार, चलती भाषा हो (मेरे०–गुलाब०, 48)।

चलती रकम—चालू, होशियार। प्र० वह तो बड़ी चलती रकम है (दूध-गाछ–दे० स०, 194)।

चलती हवा से लड़ना—बात-बात पर लड़ना। प्र० तुम तो चलती हवा से लड़ती हो, तुमसे भला कोई पार पा सकता है।

चलती रहना—नोंक-झोंक होना। प्र० दोनों बहनों में ऐसे ही चलती रहती है।

चलती होना—(1) वृद्धि पर होना। प्र० वह अब लखनऊ की सबसे चलती हुई जूते की दूकान थी (गोदान–प्रेमचंद, 63)।
(2) बुरी चाल चलनेवाली; अपना काम निकाल लेनेवाली। प्र० वह बड़ी मक्कार है, बड़ी चलती हुई है, वह बिलकुल जादूगरनी है और उसके हाथ में दूसरों पर कुप्रभाव डालने का मंत्र है (एक०–मुल्क०, 34-35)।
(3) प्रभाव होना। प्र० उस घर में तो काकाजी की ही चलता है, जो कह दें वही ठीक है।

चलती-फिरती छांव—बेशुमार दौलत। प्र० चलती-फिरती छांव का घमंड न कर बंदे! आज है तो कल नहीं।

चलतू माल—ऐसा माल जिसकी मांग हो। प्र० ×× चलतू माल लीजिएगा, नहीं तो रुपया फंस जायेगा (मान० (7)–प्रेमचंद, 231)।

चलते घोड़े को चाबुक लगाना, -बैल के अरई करना, -आड़ लगाना, -औंगी देना—(1) किसी के काम करते रहने पर भी उसे ताकीद करके तंग करना। प्र० जा तो रही हूं, लेकिन चलते हुए बैल को औंगी न देना चाहिए (गोदान–प्रेमचंद, 208)।
(2) काम करनेवाले को ताकीद करना या उत्तेजित करना। प्र० सूर प्रभु यह जानि पदवी, चलत बैलहिं आर (सू० सा०–सूर, 199)।

चलते जांगर, -पौरुष—जब तक शक्ति हो। प्र० चलते जांगर मैं चुप नहीं बैठूंगा, जो बनेगा करूंगा ही।

चलते पौरुष—दे० चलते जांगर।

चलते बैल को अरई करना—दे० चलते घोड़े को चाबुक लगाना।

चलते बैल को आड़ लगाना—दे० चलते घोड़े को चाबुक लगाना।

चलते बैल को औंगी देना—दे० चलते घोड़े को चाबुक लगाना।

चलते समय—मृत्यु के समय; मर जाने पर। प्र० चलत न कोऊ संग चलै, मोरि रहै मुख नारि (सू० सा०–सूर, 372)।

चलते हाथ—जब तक सामर्थ्य रहे। प्र० चलते हाथ मैं काम किये जाऊंगा, उसके बाद परमात्मा मालिक है।

चलते हाथ-पांव उठ जाना—बहुत बीमार पड़े बिना चलती-फिरती अवस्था में मृत्यु हो जाना। प्र० चलते हाथ-पांव परमात्मा उठा ले, यही चाहता हूं।

चलते-चलते—जाते-जाते; अन्त में। प्र० सब बात तै हो चुकी थी पर चलते-चलते वे एक नया शिगूफा छोड़ गये।

चलते-चलाते—अन्त में। प्र० सब नुकसान तो हुआ ही था, चलते-चलाते मकान की छत भी बैठ गयी।

चलते-फिरते—(1) हर साधारण व्यक्ति। प्र० फिर भी आवश्यक रूप से पढ़े जाने वाले पृष्ठों तथा कवरों पर विज्ञापन देना अधिक लाभदायक होगा क्योंकि उन पर चलते-फिरते की सहज में दृष्टि पड़ जाती है (मेरे०–गुलाब०, 64)।
(2) किसी दूसरे काम को करते-करते बीच में सहज ही और कोई काम कर डालना। प्र० यह तो मामूली काम है, चलते-फिरते हो जायगा।

चलते-फिरते नजर आना—चले जाना; खिसक जाना। प्र० प्रेत मेरे पीछे लगा है और मुझे बहकाता है कि गोप ×× पांव उठाओ, आगे बढ़ो और चलते-फिरते दिखलाई दो (भा० ग्रं० (1)–भारतेन्दु, 571)।

चलन उठ जाना—रिवाज समाप्त हो जाना। प्र० अब तो मिलनी वगैरह का चलन उठता जा रहा है।

चलन चल पड़ना—रिवाज हो जाना। प्र० ब्याह के समय आजकल लहंगा-ओढ़ना के बदले साड़ी पहनाने का ही चलन चल पड़ा है।

चलन से चलना—कायदे के अनुसार काम करना। प्र० तुम चलन से नहीं चलोगे, हर काम में बेहिसाब करोगे तो कैसे काम चलेगा।

चलनहार—(1) जानेवाला। प्र० चलनहार को कोई कभी रोक सकता है।
(2) मरणासन्न व्यक्ति। प्र० अब तो वे एकदम चलनहार हैं, दो-चार दिन के और मेहमान समझो।

चलना—(1) व्यापार आदि उन्नति पर होना। प्र० वह चालबाजी और वकालत के समस्त दांव-पेंचों से काम ले तो इससे कहीं अधिक चले (भिखा०–कौशिक, 44)।
(2) बात मानी जाना। प्र० सूल-धर हर तैं न ह्वै है धरहरि, कुंभ-करन, प्रहस्त, इन्द्रजीत की कहा चली (क० र०–सेनापति, 90); चोंचलों की चली नहीं सब दिन, काम का ही जहान है खोजी (चुभते०–हरिऔध, 36)।
(3) कोई वश होना। प्र० हिन्दू हरचंद चिल्लाते और सिर धुनते हैं उनकी एक नहीं चलती (भट्ट नि०–बा० भट्ट, 10); रग्घू ने मन में ठान लिया था कि इस विपत्ति को घर में न आने दूंगा मगर होन-हार के सामने उसकी एक न चली (मान० (1)–प्रेमचंद, 9)।
(4) प्रयोग में लिया जाना। प्र० दक्षिण में एक सिक्का 'हुन' नामक

था जो अभी-अभी तक चलता रहा (गुलेरी ग्रंथ० (1)—गुलेरी, 218)।

(5) गुजर होना; निर्वाह होना। प्र० एक की कहु चलै, सत-सत कोटि रहत लजाइ (सू० सा०—सूर, 1763)।

(6) व्यवहार करना। प्र० मातुपिता जैसें चलैं, तैसें चलिये आपु (सू० सा०—सूर, 2236)।

(7) आर्थिक दृष्टि से लाभदायक होना। प्र० इधर से भी मारे जाय, उधर से भी मारे जायं तो पत्र कैसे चले? (गोदान—प्रेमचंद, 59)।

(8) युक्ति या उपाय कारगर होना। प्र० मैंने शिमला जाने के लिए बहुत उछलकूद की पर मेरी एक न चली।

चलनी कर डालना—छेद-छेद कर डालना। प्र० दीमकों ने सारी आलमारी चलनी कर डाली।

चलनी में दूध दुहना—ऐसा काम करना जिसका फल अपने को न मिले; व्यर्थ काम करना। प्र० तेरी अकल पर पत्थर पड़ गया था क्या जो चलनी में दूध दुहने को बैठ गयी?

चलनी में पानी न ठहरना—दुर्बल आधार के भरोसे काम न बनना। प्र० शंका हुई कहीं मैं विचलित न हो जाऊं। चलनी में पानी नहीं ठहरता (रंग०—प्रेमचंद, 149)।

चलने की बेला—दे० चलती बेला।

चल-बिचल पड़ना, -होना—सब कुछ उलट-पुलट हो जाना; अव्यवस्था हो जाना। प्र० मैंने जितना कुछ सोच रखा था, सब चल-विचल हो गया।

चल-बिचल होना—दे० चल-विचल पड़ना।

चला आना—प्रसिद्ध या प्रचलित होना; परम्परा होना। प्र० राजा को परलोक संवारी, जुग-जुग यह चलि आयौ (सू० सा०—सूर, 494); आज तक तो ढाकई मलमल ही चली आई है, अब तुम लोग कुछ और इस्तेमाल करना चाहो तो करो।

चला चलना—किसी प्रकार दिन बिताए जाना। प्र० सुखी तो क्या है, किसी तरह चला चलता है।

चलाचली—दे० चलती बेला।

चलाचली की बेला—दे० चलती बेला।

चलाना—(1) किसी के बारे में कुछ कहना; कहना। प्र० नंद जसोदा हूं कौ बिसर्‌यौ, हमरी कौन चलावै (सू० सा०—सूर, 4028); देह की न खबरि सुगेह की चलावै कौन, गात न सोहात न सोहाती परिचारिका (भूषण ग्रंथा०—भूषण, 225)।

(2) संस्था का संचालन करना। प्र० इनकी चटाई, दरी, किताबों की आलमारी सब अभी मजदूरों से उठवाय के भौरोंवाली गली के मकान में रखवाए देते हैंगे, वहीं अपना संघ चलावैं (अमृत०—नागर, 355)।

(3) बराबरी कर पाना। प्र० मैं लता मंगेशकर की क्यों चलाऊंगी, मेरी क्या बिसात है।

चलाये न चलना—प्रभाव न मानना; विचलित न होना। प्र० मांगहु बर बहु भांति लोभाए। परम धीर नहिं चलहिं चलाए (राम० (बा)—तुलसी, 156)।

चलित-वृत्त—दुर्बल मन; चलायमान व्यक्ति। प्र० यहां संसार में रहकर जो एक बात में भी चलित वृत्त हैं वे अपनी बाकी चाल चलन को भी नहीं सुधरी हुई रख सकते (भट्ट नि०—बा० भट्ट, 34)।

चलित्तर उछलना—गलत या बनावटी व्यवहार होना। प्र० हमारे घर में ही क्या कम चलित्तर उछलते हैं (बूंद०—अ० ना०, 5)।

चले जाना—मर जाना। प्र० उनके सारे सुख-सपने यहीं रह गए और उन्हें यहां से चले जाना पड़ा (विष०—प्रेमी, 22)।

चश्मपोशी करना—(1) नजर बचाना। प्र० तुम इन तरह चश्मपोशी करके नहीं भाग सकते।

(2) चापलूसी करना। प्र० कितनी चश्मपोशी करोगे उनकी?

चश्मा लगना—आंखों की रोशनी कम होने के कारण चश्मा लगाने की जरूरत होना। प्र० लगता है मुझे भी चश्मा लगेगा।

चसका पड़ना, -लगना, -होना—बारम्बार किसी चीज की इच्छा होना; स्वाद पड़ना। प्र० गोफ्नि के रस को चसको जब लौं न लग्यौ तब लौं मन गुंजन (घन० कवित्त—घना०, 232); जब मेरे पिता जीवित थे तभी न जाने कैसे मेरे दोनों बड़े भाइयों को रामलीला में पार्ट करने का चस्का लग गया था (अपनी०—उग्र, 27)।

चसका लगना—दे० चसका पड़ना।

चसका होना—दे० चसका पड़ना।

चहकना—खूब बोलना (खुश हो-होकर)। प्र० पुरुषों की मंडली में खूब चहकते थे; मगर ज्यों ही कोई महिला आई और आपकी ज़बान बंद हुई (गोदान—प्रेमचंद, 56)।

चहका देना, -लगाना—(1) चिढ़ा देना। प्र० मैं तो उन्हें ज़रा चहका देता हूं और फिर मजा लेता हूं।

(2) आग लगाना (गाली)।

चहका लगाना—दे० चहका देना।

चहनकर खाना—बहुत अच्छी तरह खाना। प्र० लुचई पोइ पोइ घी भेईं। पाछे चहन खांड़ सों जेईं (जायसी—हि० श० सा०)।

चहर होना, चहल-पहल मचना, -होना—धूमधाम होना; बहुत से लोगों का आना-जाना होना। प्र० अगले सप्ताह लड़की का ब्याह है न सो खूब चहर है।

चहल-कदमी करना—धीरे-धीरे टहलना। प्र० मिस्टर जोशी ने गहरे विचार में घास पर चहल-कदमी करते हुए पुकारा—सुजला (ज्ञान०—यशपाल, 50)।

चहल-पहल मचना—दे० चहर होना।

चहल-पहल होना—दे० चहर होना।

चहले की भैंस—मोटा भद्दा आदमी।

चहारदीवारी के अंदर—पर्दे में; गुप्त रूप से; घर में। प्र० चहारदीवारी के अंदर क्या-क्या होता रहता है, कौन जाने।

चहारदीवारी तोड़ना—सीमा से बाहर आना; बंधन-मुक्त होना। प्र० चहारदीवारी तोड़ने की हिम्मत सबमें कहां होती है।

चहारदीवारी में सीमित—सीमित और संकुचित दृष्टिवाला। प्र० वे ठहरे चहारदीवारी में सीमित व्यक्ति ! उनसे अधिक उदारता की आशा न करो।

चहारदीवारी से बाहर आना—पर्दे से बाहर आना; सीमित दायरे से बाहर आना। प्र० चहारदीवारी से बाहर निकलो तब न दुनिया का रंग-ढंग समझ में आये।

चहेटकर खाना—खूब खाना। प्र० मैंने तो कल रात खूब चहेटकर खाया।

चहेटकर मारना—खूब मारना। प्र० मैं उसे ऐसा चहेटकर मारूंगा कि वह जिन्दगी भर नहीं भूलेगा।

चांट मारना, चांड मारना—जहाज के बाहरी तख्तों या पाल पर पानी छिड़कना।

चांटना—पीटना। प्र० अब इसे चांटे बिना काम नहीं चलेगा।

चांटा रसीद करना—चांटा मारना। प्र० कान पकड़कर खींचा और एक चांटा रसीद करके कहा ××× (जिन्दगी—निर्गुण, 68)।

चांड मारना—दे० चांट मारना।

चांडाल—क्रूर; नीच। प्र० वह एकदम चांडाल है, उससे मैं बात भी नहीं करना चाहता।

चांडाल-चौकड़ी—(1) दुष्टों का समूह। प्र० भरसक उस चंडाल-चौकड़ी को यहां मत आने देना।

(2) ऊधम करनेवालों का दल। प्र० देखिये प्रयोग (1)।

चांड़ चढ़ाना—किसी काम के लिए किसी पर बड़ा दबाव डालना। प्र० बड़े बाबू बड़ा चांड़ चढ़ा रहे हैं, समझ नहीं आता कि उनकी बात मानूं कि न मानूं।

चांड़ देना, -लगाना—सहारा देकर गिरती हुई इमारत आदि को गिरने से रोकना। प्र० जल्दी से धरन में चांड़ दिलवा दो नहीं तो नीचे आ रहेगी।

चांड़ लगाना—दे० चांड़ देना।

चांड़ सरना या सराना—इच्छा पूरी होना या करना।

चांड़ना—खा जाना। प्र० अरे, पंडित जी पूरी दो सेर रबड़ी चांड़ गये।

चांद का कुंडल बैठना, -मंडल बैठना—बहुत हलकी बदली पर प्रकाश पड़ने के कारण चंद्रमा के चारों ओर एक वृत्त बन जाना।

चांद का खेत करना—चंद्रमा निकलने के पहले आकाश में उसकी आभा दिखलाई पड़ना।

चांद का टुकड़ा—अत्यन्त सुन्दर। प्र० मैं सर्वदा खोजा करती थी कि मेरी बेटी का दूल्हा चांद का टुकड़ा मिले तो मैं सुखी होऊं (भा० ग्रं० (1)—भारतेन्दु, 11)।

चांद का मंडल बैठना—दे० चांद का कुंडल बैठना।

चांद किधर निकला है ?—आज कैसे दिखलाई पड़े ?

चांद को (में) ग्रहण लगना—योग्य एवं गुणी पर मुसीबत आना या उसे कलंक लगना। प्र० अरे, चांद को ग्रहण लग गया समझिए और क्या।

चांद गंजी करना—खूब पीटना। प्र० इसके दो महीने बाद एक दिन गांव में यह खबर फैली कि नोहरी ने मारे जूतों के भोला की चांद गंजी कर दी (गोदान—प्रेमचंद, 296)।

चांद चढ़ना—(1) चंद्रमा निकलना। प्र० चांद कब का चढ़ चुका है, छत पर जाकर देखो तो।

(2) भाग्योदय होना। प्र० आजकल उनका चांद चढ़ा हुआ है।

(3) गर्भ रहना।

चांद ढलना—चांद अस्त होना। प्र० चांद अभी ढला नहीं है पर सूरज निकल आया है।

चांद पर खाक डालना, -थूकना, -धूल उड़ाना, -डालना, -राख डालना—गुणी या योग्य व्यक्ति को अपमानित करने का निष्फल प्रयत्न करना। प्र० चांद पर धूल डालना चाहते हो तो डालो, उससे चांद का कुछ नहीं बिगड़ेगा।

चांद पर थूकना—दे० चांद पर खाक डालना।

चांद पर थूकने से थूक अपने ही ऊपर पड़ना—दे० चंद्रमा पर थूकने से थूक अपने ही ऊपर पड़ता है।

चांद पर धूल उड़ाना—दे० चांद पर खाक डालना।

चांद पर धूल डालना—दे० चांद पर खाक डालना।

चांद पर बाल न छोड़ना, -न रहना—(1) बहुत मारना। प्र० वह चांद पर बाल तो छोड़ेंगे नहीं, तुम समझते क्या हो ?

(2) सब कुछ लूट लेना। प्र० चोरों ने सब सफाया कर दिया, चांद पर बाल तक न छोड़ा।

चांद पर बाल न रहना—दे० चांद पर बाल न छोड़ना।

चांद पर राख डालना—दे० चांद पर खाक डालना।

चांद भर जाना—महीना पूरा होना। प्र० अगला महीना दूर कहां है ? चार दिनों में तो चांद भर जायेगा।

चांद लगाना—इज्जत या सौन्दर्य बढ़ाना। प्र० क्या नाम, कांग्रेस को तुम बड़े चांद लगाओगे (झूठा० (2)—यशपाल, 304)।

चांद-तारा—वह कपड़ा जिस पर चांद-तारे का आकार बना रहता है।

चांद-दीखे—शुक्ल पक्ष की द्वितीया के पीछे। प्र० चांद-दीखे आऊंगा तुम्हारे यहां।

चांदना कर देना—सब उड़ा ले जाना; कुछ न छोड़ना। प्र० देखो न, दो दिनों के लिए बाहर गया, इधर चोर चांदना कर गये।

चांदनी का खेत—चंद्रमा का चारों ओर फैला हुआ प्रकाश।

चांदनी खिलना, -छिटकना—चंद्रमा का स्वच्छ प्रकाश होना। प्र० आज कैसी निर्मल चांदनी छिटकी हुई है।

चांदनी छिटकना—दे० चांदनी खिलना।

चांदनी मारना—(1) चांदनी का बुरा प्रभाव पड़ने से घाव का अच्छा न होना (एक विश्वास)।

(2) घोड़ों का एक रोग जो उन पर चांदनी पड़ने से हुआ माना जाता है।

चांदनी में छिप जाना—बहुत सुकुमार और गोरी होना। प्र० वह है ही ऐसी कि चांदनी में छिप जाय।

चांदमारी—निशाना लगाना। प्र० आओ तो सही तब मैं बताता हूं कि कैसी चांदमारी करता हूं।

चांद-सा—बहुत सुन्दर। प्र० ऐसा प्यारा चांद-सा बच्चा है कि क्या कहूँ।

चांदी कटना या काटना—आराम से दिन बीतना; मोटा लाभ होते रहना। प्र० होटलवाला ईरानी अक्सर हमसे छेड़ में कहा करता कि आजकल आप लोगों की चांदी कटती होगी (ये कोठे०—नागर, 37–38)।

चांदी करना—(1) जलाकर भस्म कर डालना। प्र० एक ही दम में सुल्फा चांदी कर दिया।
(2) सब कुछ बेचकर रुपया कर लेना। प्र० जाने के पहले उसने सब चीजों की चांदी कर डाली ताकि आसानी से ले जा सके।

चांदी का चश्मा—घूस। प्र० चांदी के चश्मे से सबको बस में किया जा सकता है।

चांदी का चश्मा लगाना—घूस लेना। प्र० तुमने जब चांदी का चश्मा लगाने का फैसला कर लिया है तो फिर क्या।

चांदी का जूता, -की मार—द्रव्य का प्रभाव। प्र० चांदी के जूते से सबको ठीक किया जा सकता है।

चांदी का जूता मारना, -लगाना—रुपए देना। प्र० चांदी का जूता मारने से सब वशीभूत हो जाते हैं।

चांदी का जूता लगाना—दे० चांदी का जूता मारना।

चांदी का पहरा (प्रहर)—सुख के दिन। प्र० अब चांदी के पहरे गये, सब सपना हो गया।

चांदी की मार—दे० चांदी का जूता।

चांदी के टुकड़े—रुपए। प्र० मैं मानता हूं कि एक खास जाति की औरतों को उस जमाने में जो चन्द चांदी के टुकड़ों के लिए किसी भी मर्द के हाथ अपनी अस्मत बेचने को एक तरह से मजबूर किया जाता था, वह बात इन्सानियत के एकदम खिलाफ थी (जहाज०—इ० जोशी, 145)।

चांदी के बटखरों से तौलना—रुपये-पैसे की दृष्टि से विचार करना। प्र० लेकिन 'आज' की वजह से मेरी वह प्रचण्ड पब्लिसिटी हुई, नगर में, प्रदेश में, हिन्दी हद तक सारे देश में कि ज्ञानमंडल के वरदानों को मैं चांदी के बटखरों से क्यों तोलूं? (अपनी०—उग्र, 110)।

चांदी खोलवाना—चांद के बाल बीच में मुड़वा देना। प्र० यह चांदी क्यों खुलवा रखी है?

चांदी गलना—खूब खर्च होना। प्र० इस मकान में बड़ी चांदी गल गयी।

चांदी बनना, -होना—खूब बन आना; लाभ ही लाभ होना। प्र० जेठ में दशहरा को गंगा पुत्रों की चांदी है (प्र० पी०—प्र० ना० मि०, 104); तब तो चांदी है। इन मछलियों के खूब दाम मिलेंगे (विष०—प्रेमी, 43)।

चांदी बरसना—बहुत लाभ होना। प्र० आजकल लालाजी के यहाँ चांदी बरस रही है।

चांदी ही चांदी होना—खूब लाभ होना। प्र० और वहाँ तो एक मंत्र भी सिद्ध हो गया तो फिर चांदी-ही-चांदी है (प्रेमा०—प्रेमचंद, 126)।

चांदी होना—दे० चांदी बनना।

चांप चढ़ाना, -देना—किसी कार्य के लिए अत्यधिक जोर डालना। प्र० चारों ओर से सब लोग ऐसा चांप चढ़ा रहे हैं कि लगता है कि जाना ही पड़ेगा।

चांप देना—दे० चांप चढ़ाना।

चांप में होना—किसी के दबाव में होना। प्र० वह बेचारा इस समय भाइयों के चांप में है, वे जो कहेंगे सो करना होगा।

चांय-चांय मचाना—शोर-गुल करना। प्र० बड़ी चांय-चांय मचा रखी है तुम लोगों ने।

चांव-चांव होना—वादविवाद या कहासुनी होना। प्र० इसी बात पर हम लोगों में बड़ी चांव-चांव हो गयी।

चांस आना, -पड़ना, -बैठना, -भिड़ना, -लगना—अनुकूल परिस्थिति होना। प्र० एक भी चांस ढंग से भिड़ जाय तो अपनी चांदी-ही-चांदी है।

चांस पड़ना—दे० चांस आना।

चांस बैठना—दे० चांस आना।

चांस भिड़ना—दे० चांस आना।

चांस लगना—दे० चांस आना।

चाक करना या होना, -देना—चीरना-फाड़ना। प्र० पेट चाककर बच्चा निकालना पड़ा है।

चाक चढ़ना—चाक पर रखकर बनाया जाना; रूप-आकार पाना। प्र० तुम्ह तेइ चाक चढ़े होइ कांचे। आएहु फिरै न थिर होई बांचे (पद० —जायसी, 2/18)।

चाक देना—दे० चाक करना।

चाक पर चढ़ी मिट्टी—ऐसी चीज जिसे इच्छानुसार रूप दिया जा सके। प्र० अरविन्दजी, कानून चाक पर चढ़ी मिट्टी है, पैसे वाला उसे जैसा रूप देना चाहेगा, दे देगा, और आप कुछ न कर पायेंगे (अमृत०—नागर, 47)।

चाक-चौबंद—हृष्ट-पुष्ट; तगड़ा। प्र० किशन बाबू का लड़का एकदम चाक-चौबंद है।

चाक-चौबंद होना—सावधान होना। प्र० अब भी तुम लोग चाक-चौबंद नहीं होगे तो कब होगे।

चाकर—सेवा में उपस्थित रहनेवाला; अनुवर्ती; आज्ञाकारी। प्र० जो न चित का नित बना चाकर रहा, बान चितवन के नहीं जिस पर चले (चोखे०—हरिऔध, 14)।

चाकरी करना—(1) अनुवर्तन करना। प्र० मैं तो आपकी चाकरी करता हूं, आप जो कहेंगे, करूंगा।
(2) कुछ महत्त्व न रखना। प्र० मेरी क्या हस्ती है, मैं तो चाकरी करता हूं, आप लोग जो कहेंगे, करूंगा।

चाकरी बजाना—सेवा करना। प्र० जी हां, मैं तो आप सबकी चाकरी बजाने को हूं ही।

चाट—आदत । प्र० यह ऊपरी आमदनी की चाट आदमी को खराब कर देती है ठाकुर (गोदान–प्रेमचंद. 210) ।

चाट चाटना—उत्तम पदार्थों का भोजन करना; चटपटी चीजें खाना । प्र० रामू की बहू को चाट चाटने की बड़ी बुरी आदत है ।

चाट जाना—(1) समाप्त कर देना; नष्ट कर देना । प्र० वैरियों को न चाट जब पाया, तब रहे होंठ चाटते हम क्या (चुभते०–हरिऔध, 97) ।

(2) खूब अच्छी तरह पढ़ना । प्र० साहित्य के उस महान कोष को चाट जाने पर भी वे दीमक की ही भांति कोरे के कोरे थे (चेतन–अश्क, 42); कोर्स का एक-एक शब्द चाट गए थे मगर बेचारे फेल हो गये (मान० (1)–प्रेमचंद, 84) ।

(3) खा जाना । प्र० तुम देखती रहो, लड़के सब चाट जायेंगे ।

चाट देना—आदत डाल देना । प्र० उसे तुम काफी पीने की चाट दे दो, फिर पछताना ।

चाट पड़ना, -लगना या लगाना—चस्का पड़ना; आदत पड़ना या डालना । प्र० यह तो खुला जुआ है और बिहारी बाबू आपको चाट लगाने के लिये प्रथम यह सब्ज बाग दिखाते हैं (परीक्षा०–श्री० दास, 104); शिकारों का वृत्तान्त सुनने की वसुधा को चाट-सी पड़ गयी (मान० (1)–प्रेमचन्द, 244) ।

चाट लगना या लगाना—दे० चाट पड़ना ।

चाटकर थूकना—पहले काम करना और फिर उपेक्षा करना । प्र० तुम चाटकर थूको, तुम्हें यह अच्छा लगता है । पर मुझे यह तरीका बहुत नापसन्द है ।

चाटना—पास रखना; महत्त्व देना । प्र० जिस बहू ने मेरे बेटे से उसका घर-परिवार छुड़ा दिया, उसे लेके क्या चाटूंगी ? (अमृत०–नागर, 623) ।

चाटना-चूमना—प्यार करना ।

चाट-पोंछ डालना—पूरी तरह समाप्त कर देना । प्र० अरे, श्रीकान्त सब चाट-पोंछ डालेगा, मैं उसे अच्छी तरह जानता हूं ।

चाट-पोंछकर—पूरी तरह से । प्र० लो, तुम तो सब चाट-पोंछकर ले गये, दूसरों के लिए तुमने कुछ छोड़ा ही नहीं ।

चादर उतारना—बेपर्द करना; बेइज्जत करना । प्र० इस तरह चादर उतारने की कोई जरूरत थी क्या ?

चादर ओढ़ाना, -डालना—विधवा को रख लेना । प्र० मंगल से शादी कर ले, चादर डाल ले उस पर (एक चादर०–बेदी, 43) ।

चादर की लाज रखना, -रहना, चादर रहना—इज्जत बनाये रखना या बनी रहना । प्र० भैया, अब तो मेरी चादर की लाज रखना तुम्हारे ही हाथ है ।

चादर की लाज रहना—दे० चादर की लाज रखना ।

चादर की शिकन गिनना—बेकार समय बर्बाद करना । प्र० आप पड़े-पड़े चादर की शिकन गिनते रहिए ।

चादर के बराबर पैर फैलाना—सामर्थ्य के अनुसार काम करना । प्र० देखो चंदा, चादर के बराबर ही पैर फैलाए जा सकते हैं (कम०–कम०, 27) ।

चादर चढ़ाना—किसी समाधि या मजार पर श्रद्धावश चादर ओढ़ाना । प्र० खुदा मेरे बेटे को चंगा कर दे मैं ख्वाजा की मजार पर चादर चढ़ाऊँगी ।

चादर डालना—दे० चादर ओढ़ाना ।

चादर तानकर सोना—निश्चिन्त हो जाना । प्र० रचनहार कूं चीन्हि लै, खैबे कूं कहा रोइ । दिल मंदिर में पैसि करि, तांणि पछेवड़ा सोइ (कबीर ग्रंथा०–कबीर, 58) ।

चादर देखकर पांव पसारना, -फैलाना—अपनी सामर्थ्य के अनुसार काम करना । प्र० हम तन हेरि, चितै अपनो पट, देखि पसारहिं लात (सू० सा०–सूर, 4511); अपनी पहुंच विचार के, करतब करिये दौर । तेते पांव पसारिये, जेती लाम्बी सौर (वृं० स०–वृन्द, 5); जालपा ने बनावटी कांपते हुए कण्ठ से कहा—अपनी चादर देखकर ही पांव फैलाने चाहिए (ग़बन प्रेमचंद, 69) ।

चादर देखकर पांव फैलाना—दे० चादर देखकर पांव पसारना ।

चादर फिराना, -हिलाना, -दुपट्टा हिलाना—आत्मसमर्पण करने को तैयार होना । प्र० सरदार हम लोग कब तक घेरा डाले पड़े रहेंगे ? शत्रु के चादर हिलाने के तो कोई लक्षण नहीं दीखते ।

चादर फैलाना—भीख मांगना । प्र० सरकार मैं चादर फैलाये बैठी हूं; कुछ इधर भी डाल दीजिए ।

चादर रहना—दे० चादर की लाज रखना ।

चादर से बाहर पैर निकालना, -फैलाना—(1) अपनी सामर्थ्य से बाहर काम करना । प्र० फिर वह नये सिरे से जीवन-संग्राम में प्रवेश करेगा, हाथ-पांव बचाकर काम करेगा, अपनी चादर के बाहर जौ भर भी पांव न फैलायेगा (ग़बन–प्रेमचंद, 158) ।

(2) मर्यादा का उल्लंघन करना । प्र० बेटी, कभी चादर से बाहर पैर मत निकालना, घर की लाज बचाये रखना ।

चादर से बाहर पैर फैलाना—दे० चादर से बाहर पैर निकालना ।

चादर हिलाना—दे० चादर फिराना

चादर-चूड़ी रख लेना—विधवा होने से बचा लेना । प्र० घर-घर तुरकिनि, हिन्दुनी देंति असीस सराहि । पतिनु राखि, चादर चुरी तैं राखी, जय साहि (बिहारी रत्ना०–बिहारी, 712) ।

चादर-छिपौवल या बिछौवल—लड़कों का एक खेल ।

चाबुक खाकर भी दुम हिलाना—अपमानित होकर भी खुशामद करना । प्र० आप चाबुक खाकर भी उसके आगे दुम हिला सकते हैं और उसके बताये हुए करतब कर सकते हैं, तो ठीक है (अंग्रेर०–राकेश, 332) ।

चाबुक खाना—अपमानित होना । प्र० आप चाबुक खाकर भी उसके आगे दुम हिला सकते हैं × × तो ठीक है (अंग्रेर०–राकेश, 332) ।

चाबुक जमाना—प्रभावपूर्ण बात करना । प्र० चौधरी ने होरी का आसन पाकर चाबुक जमाया—हमारा-तुम्हारा पुराना भाई-चारा है महतो

ऐसी बात है भला (गोदान—प्रेमचंद, 29)।

चाबुक फटकारना—कोड़ा चलाना। प्र० क्रोधित सवार ने ज़ोरों में चाबुक फटकारना शुरू किया।

चाबुक लगना—सबक मिलना; दंड मिलना। प्र० उस मामले में उसे अच्छी चाबुक लगी।

चाभी—प्रेरणा देनेवाला। प्र० रूपे का लालच बड़ा प्रबल है और निर्धनों को तो उनके काम निकालने की चाबी होने के कारण बहुत ही ललचाता है (परीक्षा०—श्री० दास, 150); भई, रामदयालजी की चाभी मैं जानता हूं तुम श्रीकांत से कहो, वह सब ठीक करवा देगा।

चाभी उमेठना, -घुमाना, -देना, -भरना—(1) परिस्थिति को रुख देना या प्रभावित करना। देखूं, गुप्त-साम्राज्य के भाग्य की कुंजी यह किधर घुमाती है (स्कंद०—प्रसाद, 27); ठीक समय पर चाभी उमेठ दी जायगी न तो काम बन जायगा।

(2) किसी काम के लिए किसी को तैयार करना। प्र० तुम चुप बैठे देखते रहो मैं कैसी चाभी उमेठता हूं।

चाभी घुमाना—दे० चाभी उमेठना।

चाभी देना—दे० चाभी उमेठना।

चाभी भरना—दे० चाभी उमेठना।

चाभी हाथ में होना—किसी से काम करवाने की क्षमता या अधिकार होना। प्र० हमारी सफलता की चाबी तो डिस्ट्रीब्यूटर के हाथ में रहती है (दूधगाछ—दे० स०, 255)।

चाम उकेलना—दे० चमड़ा उधेड़ना।

चाम के दाम—चमड़े के सिक्के; बहुत सस्ता। प्र० तो तुमने क्या समझ रखा था कि सिल्क की कमीजें चाम के दाम मिल जायेंगी।

चाम के दाम चलाना—अपनी चलती में अन्याय करना; अन्धेर करना। प्र० चाम के दाम चलावत तुम तौ, कुबिजा के अधिकारी (सू०सा०—सूर, 4654); चाम को जीभ चामपन दिखला, चाम के दाम क्यों चलाती है (बोल०—हरिऔध, 97)।

चाम खींचना—दे० चमडा उधेड़ना।

चाम चोरी करना—गुप्त रूप से पर-स्त्री गमन करना।

चाय पर आना—चाय पीने के लिए निमंत्रित होकर कहीं आना। प्र० डायरेक्टर कादिर चाय पर आ रहे हैं (पैंतरे—अश्क, 58)।

चाय-पानी करना—नाश्ता करना। प्र० चाय-पानी कर लो फिर घूमने चला जाय।

चार—(1) कुछ थोड़ा। बार-बार ध्यान दिलाने और प्रार्थना करने पर भी उन्हें 'पद्मपराग' पर चार पंक्तियां लिखकर किसी पत्र में भेजने की फुरसत आज तक न मिली (पद्म० के पत्र—पद्म० शर्मा, 143)।

(2) सब। प्र० आज के उत्सव में चार स्त्रियों के सामने क्या पहन कर जाऊंगी?

चार अंगुल अधिक—तुलना में बढ़कर। प्र० तुम तो उससे काम क्यों, चार अंगुल बढ़कर हो।

चार अक्षर घसीटना—जल्दी से कुछ लिख देना। प्र० ज़रा चार अक्षर घसीट दीजिए तो मेरा काम बन जाय।

चार अक्षर पढ़ना—थोड़ा पढ़ना। प्र० चार अक्षर क्या पढ़ गया उसका तो दिमाग ही फिर गया (झूठा० (1)—यशपाल, 498)।

चार आंखें करना या होना—(1) समझ आना; ज्ञान-वृद्धि होना। प्र० मैं तो फिर भी अंगरेजी की प्रशंसा करूंगा। इसके पढ़ने से आदमी के चार आंखें हो जाती हैं (मा—कौशिक, 37)।

(2) नज़र से नज़र मिलाना। प्र० उनसे आंखें चार होते ही आंखों-आंखों में दुआ-सलाम हुआ।

चार आंसू गिराना, -बहाना—शोक करना। प्र० मुहल्ले की स्त्रियां श्रद्धा के पास आकर चार आंसू बहा जातीं (प्रेमा०—प्रेमचंद, 365)।

चार आंसू बहाना—दे० चार आंसू गिराना।

चार आदमी—(1) कुछ लोग। प्र० चार पठै इनको मत लीजिय। ऐसेंहि कैसे विदा कर दीजिय (केशव० (2)—केशव, 310)।

(2) सब लोग। प्र० सांचहूं ताको न होत भलो जो न मानत है कही चार जनै की (जग०—पद्माकर, 23); चार आदमी की राय से किए हुए काम का, अच्छा होता है अंजाम (बुद्ध०—बच्चन, 76)।

चार उंगलियां तक सिर पर न रखना—बिलकुल खयाल न करना। प्र० सामने दिख जाता हूं तो इतना प्रेम दर्शाते हो और नहीं तो चार उंगलियां तक सिर पर नहीं रखते।

चार कदम, -पग—ज़रा-सी दूर। प्र० ससुराल चार कदम पर थी, पर छः महीने से पहले आने का अवसर न मिला (कर्म०—प्रेमचन्द, 251)।

चार कदम आगे होना—बढ़कर होना। प्र० मेरी घरेलू समस्याएं मेरी कल्पना से भी चार कदम आगे रहती हैं (मेरे०—गुलाब०, 5)।

चार कान होना—श्रवण-शक्ति तीव्र होना। प्र० आपने जरूर सुना होगा, आपके तो दो नहीं चार कान हैं।

चार के आदर की चादर पड़ना—लोगों द्वारा आदर पाना; मरने के बाद लोगों द्वारा आदर पाना। प्र० सोचती हूं कि यदि सती विधवा होती तो मेरे बुढ़ापे पर चार के आदर की चादर तो पड़ी रहती ×·× (सुहाग०—नागर, 31)।

चार के कंधों पर चढ़ना, -चलना, -जाना—शवयात्रा। प्र० आंख पर कितनी चढ़े तब किसलिये चल पड़े जब चार कंधों पर चढ़े (बोल० —हरिऔध, 146)।

चार के कंधों पर चलना—दे० चार के कंधों पर चढ़ना।

चार के कंधों पर जाना—दे० चार के कंधों पर चढ़ना।

चार के कंधों पर लदने के दिन—मरने के दिन। प्र० सौ बरस का सिन, चार के कंधों पर लदने के दिन, मगर जवानी ही के दम भरते हैं (आज़ाद०—प्रेमचंद, 33)।

चार के कान पड़ना—बात फैलना। प्र० देखो, इसे अपने तक रखना। चार के कान पड़ते ही बात का बतंगड़ हो जाता है।

चार के सामने—सबकी उपस्थिति में। प्र० × × जो बात सत्य हो गयी तो तुम्हें मानेंगे अन्यथा कल तुम्हारे पोथी पत्रे और ये पगड़ी चार के सामने हम तुमसे छीन लेवेंगे (अमृत०—नागर, 321)।

चार गाल हंसना-बोलना—हंसी-मज़ाक करना; आनन्द लेना। प्र० बस चुप रहो, मैं तुम्हें खूब समझती हूं। तुम भी जाकर चार गाल हंस-बोल आते हो न, क्या इतनी यारी भी न निभाओगे (रंग० (2)–प्रेमचंद, 116)।

चार गुरदेवाला—बहुत साहसी। प्र० रमजान मियां कौन चार गुरदेवाले हैं जो आगे बढ़ेंगे।

चार घर का भौंरा—घर-घर घूमनेवाला व्यक्ति। प्र० रमदेइया ठहरी चार घर की भौंरा, दुनिया की खबर रखती है।

चार चांद लगना या लगाना—महत्त्व, सौन्दर्य या प्रभाव और बढ़ना या बढ़ाना। प्र० वैशाली की कीर्त्ति में अम्बा की कीर्त्ति चार चांद लगा देगी, ऐसा मुझे स्पष्ट भास हो रहा है (अम्ब०–रा० बे०, 44)।

चार चोर की तरह मार पड़ना—कठिन दंड देना। प्र० तुम्हें तो चार चोर की तरह मार पड़ेगी, तुम किस खयाल में हो।

चार जानू बैठना—पैर पर पैर रखकर बैठना। प्र० ज़रा-सा बच्चा, कितनी अच्छी तरह चार जानू बैठा है।

चार जामा कसना—पूरे कपड़े पहनकर तैयार होना। प्र० लो साहब, आप तो चार जामा कसकर तैयार हो गये।

चार तग चलना—सरपट दौड़ना। प्र० चाबुक लगते ही घोड़ा चार तग चलने लगा।

चार तार—कुछ कपड़े-लत्ते और जेवर। प्र० सब तुम्हीं लोग ले लोगे या चार तार मेरे लिए भी छोड़ोगे।

चार दांतवाला—चार वर्ष का बैल या घोड़ा। प्र० चार दांतवाला है तो डेढ़ सौ रुपया ठीक ही मांग रहा है।

चार दिन—कुछ दिन; अल्प काल। प्र० ऐ रानी मन देखु विचारी। एहि नैहर रहना दिन चारी (पद०–जायसी, 4/2); जोबन धन है दिवस चारि कौ, ज्यौं बदरी की छाहीं (सू० सा०–सूर, 3363); रथ चढ़ाइ देखराइ बनु फिरेहु गएं दिन चारि (राम० (अ)–तुलसी, 448); चार दिन का हौसला यहां होता है, फिर तो कोई ध्यान भी नहीं रहता (राधा० ग्रंथा०–राधा० दास, 419); यदि सब की धड़क एकबारगी खुल जाय तो एक ओर छोटे मुंह से बड़ी-बड़ी बातें निकलने लगें, चार दिन के मेहमान तरह-तरह की फरमाइशें करने लगें × × (चिन्ता० (1)–शुक्ल, 65-66)।

चार दिन का बसेरा—थोड़े दिनों का निवास। प्र० मैं यहां सब दिन थोड़े ही रहनेवाला हूं, चार दिन का बसेरा है, फिर तो चला जाऊंगा।

चार दिन का मेला—थोड़े दिनों की मौज-मस्ती। प्र० चार दिन का मेला है, जैसे चाहे सुख कर लो।

चार दिन का मेहमान—(1) थोड़े दिनों जीनेवाला। प्र० चारि दिवस के पाहुने बड़ बड़ रूंधहिं ठाउ (कबीर ग्रंथा०–कबीर, 257)।
(2) कुछ दिनों रहनेवाला। प्र० नहीं, सो मैं चार दिन की मेहमान, किसी को कुछ कहने का मौका ही क्यों देने लगी (बौने०–रां० रा०, 106)।

चार दिन की चांदनी—थोड़े दिनों का सुख। प्र० परन्तु प्राणनाथ, ये दिन सर्वदा न रहेंगे, चार दिन की चांदनी है (भा० ग्रं० (1)–भारतेन्दु, 25)।

चार दिन की ज़िन्दगी—थोड़े दिनों की ज़िन्दगी। प्र० चार दिन की ज़िन्दगी है, खाओ-पीओ मौज करो।

चार पग—दे० चार कदम।

चार पगड़ी करना—जहाज़ का लंगर डालना।

चार पैसा—थोड़ा धन। प्र० बस्ती में कौन ऐसा था जिसे वक्त-बे-वक्त चार पैसे की जरूरत नहीं पड़ती (क्रम०–क्रम०, 120)।

चार पैसा कमाना—थोड़ा अर्जन करना। प्र० सारी बात तो चार पैसे कमा सकने की है (दूधगाछ–दे० स०, 46)।

चार पैसा खाना—किसी के कारण थोड़ा लाभ करना। प्र० आपके चार पैसे खाता हूं, तो आपको आंखों से देखकर गढ़े में न गिरने दूंगा (रंग०–प्रेमचंद, 233)।

चार पैसा देखना—पास में थोड़ा धन होना। प्र० यही तो इनमें बुराई है कि चार पैसे देखे और आंखें बदलीं (गोदान–प्रेमचंद, 126)।

चार पैसे का आदमी—थोड़ा धनवान। प्र० अभी चार दिन पहले घर में भूंजी भांग न थी, अब चार पैसे के आदमी हो गये हैं (रंग०–प्रेमचंद, 52)।

चार पैसे हाथ में होना—आर्थिक स्थिति अच्छी होना। प्र० इसी कमाई में खुदा ने कुछ ऐसी बरक्कत दी, कि घर-द्वार बना, बाल-बच्चों का ब्याह-गौना हुआ, चार पैसे हाथ में हुए (कर्म०–प्रेमचंद, 35)।

चार बरतन होने से खटकना—जहां चार आदमी होंगे वहां थोड़ी-बहुत कहासुनी होगी ही। प्र० शादी-ब्याह तो सभी के होते हैं भाई, लेकिन इसके लिए कोई अपने भाई-बहन मां-बाप को थोड़े ही छोड़ देता है? जहां चार बरतन होते हैं, खटकते ही हैं (सारा०–यादव, 199)।

चार बातें कहना, -सुनना या सुनाना—भला-बुरा कहना या सुनना। प्र० उन्हें चार बातें तुम कह दो या अपने ही सिर को धुन लो (बोल०–हरिऔध, 108); चार बातें सुनकर गम खा जाना इससे कहीं अच्छा है कि आपस में तनाज़ा हो (गोदान–प्रेमचंद, 43)।

चार बातें सुनना या सुनाना—दे० चार बातें कहना।

चार बूंद आंसू बहाना—तनिक भी दुःख करना। प्र० यह है उसका जीवन, जिसके लिए कोई चार बूंद आंसू बहानेवाला भी नहीं (गोदान–प्रेमचंद, 192)।

चार सौ बीस—बहुत धूर्त। प्र० मुझे कोई लालची भले ही समझे × × स्वार्थी और चार सौ बीस भी हूं किसी सीमा तक, पर मैं देशद्रोही बिलकुल नहीं हूं (ब्रह्म०–दे० स०, 404)।

चार सौ बीसी—धोखा-छल। प्र० कानपुर वाली के भाई भी मुझे समझाने आये: कहा कि × × अगर तुम उसे खुश करके पटा लोगी तो तुम्हारे साथ निकाह भी हो जाएगा। मैं इस चार सौ बीसी में आ गई (ये कोठे०–नागर, 166)।

चार हरफ भेजना, तीन हरफ भेजना—लानत करना। प्र० तेरी ऐसी ज़िन्दगी पर चार हरफ भेजूं।

चार-चार आठ सुनना—जो कहा जाय उसे मानना। प्र० मेरी तो क्या, वे होते तो वे भी तुम्हारी बातें चार-चार आठ सुनते, बीवी (बौने०–रां० रा०, 102)।

चार-पांच करना, -लगाना, -लाना—(1) इधर-उधर की बात करना। प्र० मुझसे चार-पांच मत करो, सीधी-सीधी बात कहो।
(2) हुज्जत-तकरार करना। प्र० खबरदार जो मुझसे चार-पांच की।

चार-पांच लगाना—दे० चार-पांच करना।

चार-पांच लाना—दे० चार-पांच करना।

चारपाई कटना—बहुत बीमार होना। प्र० अरे उनकी तो चारपाई कट गयी है, छ महीने से पड़े हैं।

चारपाई तोड़ना—अकर्मण्य होना; चुपचाप पड़े रहना; मौज करना। प्र० मैं सारे दिन पसीना बहाऊं, मुझे नैनसुख का कुरता भी न मिले, यह अपाहिज सारे दिन चारपाई तोड़े और यों बन-ठनकर निकले (मान० (7)–प्रेमचंद, 167)।

चारपाई धरना, -न छोड़ना, -पकड़ना, -पर पड़ना, -लेना, -से पीठ लगना, -से लगना, -से सट जाना, -सेना—बहुत बीमार होना; अशक्त हो जाना। प्र० उसकी प्रेमिका उसके विरह में चारपाई पकड़ लेगी (चेतन–अश्क, 245); पिछले तीन महीने से वे बीमार हैं, चारपाई से पीठ लग गयी है

चारपाई न छोड़ना—दे० चारपाई धरना।

चारपाई पकड़ना—(1) चारपाई पर लेट जाना। प्र० उधर एक्कावान एक्का लेकर रवाना हुआ, इधर दरोगा जी ने चारपाई पकड़ी (दे० दु०–शिव०, 84)।
(2) दे० चारपाई धरना।

चारपाई पर पड़ना—दे० चारपाई धरना।

चारपाई में कान निकलना—चारपाई टेढ़ी होना। प्र० चारपाई बाहर छोड़ दी, सारी रात भीगी। लो, कान निकल आया। अब सीधी करो।

चारपाई लेना—दे० चारपाई धरना।

चारपाई से पीठ लगना—दे० चारपाई धरना।

चारपाई से लगना—दे० चारपाई धरना।

चारपाई से सट जाना—दे० चारपाई धरना।

चारपाई सेना—दे० चारपाई धरना।

चारपाया होना—शादी होना। प्र० अब यह भी जल्दी ही चारपाया होने-वाला है।

चारमेखा करना—लिटाकर हाथ-पांव खंभे से बांध देना। प्र० अरे, चार-मेखा किए बिना यह रास्ते पर नहीं आयेगा। रस्सी लाओ तो।

चारा क्या—कोई वश न होना। प्र० वह बात नहीं सुनता तो फिर चारा भी क्या है?

चारा डालना, -दिखाना, -फेंकना, -बिखेरना—किसी को फंसाने के लिए कुछ प्रलोभन देना। प्र० लेकिन एक महीना भी न गुजरने पाया था कि लालाजी के मित्रों ने चारा डालना शुरू कर दिया (मान० (2) –प्रेमचंद, 318)।

चारा दिखाना—दे० चारा डालना।

चारा न चलना, -पास न होना—कोई वश न होना। प्र० भाई मेरा कोई चारा नहीं चलता तो मैं क्या करूं।

चारा न होना—कोई युक्ति न रह जाना। प्र० तौ अब बहुत देखिबै, सुनिबै; कहा करम सौं चारौ (सू० सा०–सूर, 4137); मसक बिरंचि, बिरंचि मसक सम, करहु प्रभाउ तुम्हारो। यह सामरथ अछत मोहि त्यागहु, नाथ तहां कछु चारो (विनय०–तुलसी, 94); वह बने आस छोड़ बेचारा, पास जिसके रहा न चारा है (चुभते०–हरिऔध, 8)।

चारा पास न होना—दे० चारा न चलना।

चारा फेंकना—दे० चारा डालना।

चारा बदलना, चारा बदलौवल करना—प्रेमालाप करना। प्र० अब यह चारा बदलना बंद करके उधर चलो।

चारा बदलौवल करना—दे० चारा बदलना।

चारा बिखेरना—दे० चारा डालना।

चारों ओर, -तरफ—हर जगह; सब ओर। प्र० नगरु संवारहुं चारिहुं पासा (राम० (बा)–तुलसी, 292); कैसे करि जीजै, बसि कीजै कहा, महा सोच, चार्‌यो ओर चलत चवाव लघु-गुर मैं (घन० कवित्त–घना०, 186)।

चारों ओर अंधकार दिखाई देना—कहीं कोई सहारा न होना; चारों ओर निराशा ही निराशा होना। प्र० पन्ना को चारों ओर अंधेरा ही अंधेरा दिखाई देता था (मान० (1)–प्रेमचंद, 1)।

चारों ओर से बौछारें पड़ना—सभी के द्वारा लांछित या तिरस्कृत होना। प्र० बलराज पर भी चारों ओर से बौछारें पड़ती होंगी, सुन-सुनकर कलेजा फटता होगा (प्रेमा०–प्रेमचंद, 235)।

चारों ओर हरा ही दिखना—सब कुछ अच्छा और अनुकूल नजर आना। प्र० होरी हंसा, मानो कह रहा हो, तुम्हें चारों ओर हरा दिखायी देता होगा; यहां तो सूखा ही पड़ा हुआ है (गोदान–प्रेमचंद, 271)।

चारों खाने चित्त आना, -गिरना या गिराना, -पड़ना, -होना, -खाने पड़ना, -शाने चित्त पड़ना—पूरी तरह हारना या हराना। प्र० चारों खाने चित्त गिरा है जितेन्द्र, राजनीतिक लंगी खाकर (परती०–रेणु, 479); लेकिन पैंतरे देखना हाशिम भाई के। कैसे चारों खाने चित्त गिराता है इन सबको (पैंतरे–अश्क, 97)।

चारों खाने चित्त गिरना या गिराना—दे० चारों खाने चित्त आना।

चारों खाने चित्त पड़ना—दे० चारों खाने चित्त आना।

चारों खाने चित्त होना—दे० चारों खाने चित्त आना।

चारों खाने पड़ना—दे० चारों खाने चित्त आना।

चारों जाना, -फूटना—हर तरह से मूढ़ होना; भीतर और बाहर दोनों दृष्टि से अंधा होना। प्र० निसि-दिन विषय-बिलसानि बिलसत, फूटि गईं तव चार्‌यौ (सू० सा०–सूर, 101); तुम्हारी तो चारों गयीं, तुम कुछ मत कहो।

चारों तरफ—दे० चारों ओर।

चारों तरफ से जकड़ जाना—पूरी तरह से किसी बात में फंस जाना। प्र० मैं तो इस बार चारों तरफ से जकड़ गया हूं।

चारों पदारथ पाना, -हाथ में होना, -फल पाना—सब सुख पाना; धर्म-अर्थ-काम-मोक्ष सब मिलना। प्र० होइ अटल जगदीस-भजन मैं, अनायास चारिहुं फल पावै (सू० सा०–सूर, 233); कृपासिंधु मुनि दरसन तोरें। चारि पदारथ करतल मोरे (राम० (बा)–तुलसी, 174); चिट्ठी पढ़कर पुन्नी गुरु ने मगन मन कटोरा खोला, पिसी हुई ठण्डई भांग, गुलकंद और बादाम के चार गोले देखकर वे चारों पदारथ पा गये (अमृत०–नागर, 468)।

चारों पदारथ हाथ में होना—दे० चारों पदारथ पाना।

चारों फल पाना—दे० चारों पदारथ पाना।

चारों फल हथेली पर होना—धर्म-अर्थ-काम-मोक्ष सब सहज उपलब्ध होना। प्र० तुलसी फल चारों करतल जस गावत गई बहोर को (विनय०–तुलसी, 56)।

चारों फूटना—दे० चारों जाना।

चारों खाने चित्त पड़ना—दे० चारों खाने चित्त आना।

चारों हाथ सर करना या होना—पूर्ण विजय होना। प्र० आप तो हमेशा चारों हाथ सर करना चाहते हैं, सो कैसे होगा।

चारों हाथ-पांव से दौड़े आना—बड़े उत्साह या तत्परता से आना। प्र० किसी इंस्टिट्यूशन की तरफ से बुलाओ ×× फिर देखो, चारों हाथ-पांव से दौड़े आते हैं या नहीं (कर्म०–प्रेमचंद, 310)।

चाल—(1) (मशीन में) किसी प्रकार का नुक्स। प्र० खूब अच्छी तरह से देख लेना, मशीन में चाल न हो।

(2) रेलगाड़ी इत्यादि की गति। प्र० गाड़ी की बड़ी अच्छी चाल है, जल्दी ही पहुंच जायेंगे।

(3) षड्यंत्र। प्र० तुम समझती क्यों नहीं हो, यह सब उसकी चाल है।

चाल उड़ाना—किसी की नकल करना। प्र० बड़े आदमियों की चाल उड़ाकर क्या करोगे, रहोगे तो वही न जो हो।

चाल उलटी पड़ना—युक्ति अनुकूल न पड़ना। प्र० मैंने होशियारी तो बहुत लगायी थी पर चाल उलटी पड़ गयी।

चाल करना—षड्यंत्र रचना। प्र० उसने मेरे साथ बहुतेरी चालें कीं पर कुछ ऐसा संयोग बना कि वह एक में भी कामयाब न हुआ।

चाल खा जाना—युक्ति सफल न होना। प्र० इस बार चाल खा गया तो क्या हुआ, अगली बार देखना।

चाल खेलना—(1) युक्ति लगाना। प्र० कितनी चालें खेलोगे? अब बस करो।

(2) धोखा देना। प्र० और सब तो ठीक है पर मुझसे चालें खेलीं तो ठीक न होगा।

चाल चलना—(1) छल करना। प्र० इन लोगों ने मुझे भोग-विलास में फंसाने के लिए कम चालें नहीं चलीं (गोदान–प्रेमचंद, 14)।

(2) युक्ति सफल होना। प्र० जहां खुदा की नहीं गली दाल, वहां बुद्ध की क्या चलती चाल (बुद्ध०–बच्चन, 173)।

(3) आचरण करना। प्र० जैसी मुख तैं नीकसै, तैसी चालै चाल (कबीर ग्रंथा०–कबीर, 38); चलै न ऐसी चाल लखत जग आंख चढ़ै जेहि (राधा० ग्रंथा०–राधा० दास, 53)।

(4) रिवाज होना। प्र० अब तो बिना पर्दे के ब्याह की चाल चल गयी है।

(5) तलवार का वार करना। प्र० तुम भी ऐसी चाल चलो कि दुश्मन की हिम्मत पस्त हो जाय।

(6) किसी खेल में अपनी बारी में चलना। प्र० तुम अपनी चाल चलने में इतनी देरी क्यों लगाते हो?

चाल चूकना—गलती करना। प्र० बहुत सावधान रहना, एक भी चाल चूके कि मामला हाथ से गया।

चाल जमना—समान गति से चलना। प्र० इतनी देर बाद अब जाकर घोड़े की चाल जमी है।

चाल ठीक करना—(1) आदत सुधारना। प्र० अब भी तुम अपनी चाल ठीक नहीं करोगे तो पछताओगे।

(2) गति या लय ठीक करना। प्र० पहले घोड़े की चाल ठीक करो फिर सवारी के लिए निकालना।

चाल डालना—(1) जर्जर कर देना; खोखला कर देना। प्र० देखो न, दीमकों ने सारी आलमारी चाल डाली।

(2) बड़ी तत्परता से देखना। प्र० मैंने सारा मकान चाल डाला पर धोती कहीं न मिली।

चाल दिखाकर चला जाना—अपनी योग्यता का परिचय देना; इस प्रयत्न में बहुत कामयाब न होना। प्र० यहां तो न जाने कितने आये और चाल दिखाकर चले गये।

चाल देखना—गतिविधि का निरीक्षण करना। प्र० इन लड़कों की चाल मैं देख रहा हूं, समय आने पर रोक-टोक करूंगा।

चाल देना—मशीन इत्यादि की गति बढ़ाना। प्र० मशीन में जरा चाल दो तो झट से सिलाई पूरी हो।

चाल धरना, -पकड़ना, -पर आना—गति पकड़ना; ठीक गति पर आना। प्र० मशीन ने अब चाल धर ली है।

चाल पकड़ना—दे० चाल धरना।

चाल पट पड़ना—(1) युक्ति न लगना। प्र० मगर आपके दुर्भाग्य से वह चाल पट पड़ गयी (गोदान–प्रेमचंद, 235)।

(2) अच्छे दिनों का न रहना। प्र० अब अपनी चाल पट पड़ गयी है, जो हो सो थोड़ा है।

चाल पड़ना—(1) खराबी आना। प्र० इस पुर्जे में चाल पड़ गयी है।

(2) प्रचलित होना। प्र० आजकल शराब पीने की ऐसी चाल पड़ गयी है कि पूछो मत।

(3) दांव लगाना। प्र० चाल ठीक-ठीक पड़ जाय तो अपनी जीत निश्चित है।

चाल पर आना—दे० चाल धरना।

चाल पर चलना—पक्ष में होना; अनुसरण करना। प्र० मुझे पता है कि तुम भी भाई की चाल पर ही चलोगी।

चाल फंसना—अपनी होशियारी में खुद ही फंस जाना। प्र० क्या करूं यार, चाल फंस गयी।

चाल बैठ जाना—युक्ति कारगर होना। प्र० इस बार मेरी चाल बैठ जाय तो बस, पौ-बारह।

चाल मिलना—(1) आहट मिलना। प्र० मैं खिड़की के पास बैठा पढ़ रहा था कि दरवाजे के बाहर किसी की चाल मिली।

(2) एक-सा होना। प्र० तुम दोनों की चाल मिलती है, मैं जानता हूं।

(3) चालाकी को पहचानना। प्र० उसकी चाल मिलते ही मैं सम्हल गया।

चाल में आना, -फंसना—धोखा खा जाना। प्र० सब कुछ जानते-समझते हुए भी तुम उसकी चाल में कैसे आ गये।

चाल में फंसना—दे० चाल में आना।

चाल सुधरना या सुधारना—आचरण ठीक करना। प्र० तुम अपनी चाल न सुधारोगे तो बहुत पछताओगे।

चाल-चूल करना—शरारत करना। प्र० दिन भर मुन्ना कुछ-न-कुछ चाल-चूल करता रहता है।

चालबाज़ी चलना—(1) धोखा देने की तैयारी करना। प्र० बड़े होशियार निकले भाई, मुझसे ही चालबाज़ी चलने लगे।

(2) धोखा सफल होना। प्र० मेरी ज़रा गफलत हुई और उसकी चालबाज़ी चल गयी।

चाला देखना, -निकालना, -होना—यात्रा का शुभ मुहूर्त देखना या होना। प्र० चाला देखकर यात्रा करना, ऐसे ही मत रवाना हो जाना।

चाला निकालना—दे० चाला देखना।

चाला होना—दे० चाला देखना।

चालाकी खेलना, -दिखाना—(1) चालाकी करना। प्र० यह खूब रही, वह नालायक मुझसे ही चालाकी खेलने लगा।

(2) धोखा देना। प्र० देखिए प्रयोग नं० (1)।

चालाकी दिखाना—चालाकी खेलना।

चालान करना—किसी को दोषी ठहराकर अदालत के सामने लाना। प्र० काज़ी अपना-सा मुंह लेकर रह गया, इस जुर्म पर चालान न कर सका (पद्म पराग—पद्म० शर्मा, 232-233)।

चालीस सेर—पक्का; सारवान; भरपूर होना। प्र० आप भरोसा रखिए, मेरी बात चालीस सेर सही है।

चालीस-सेरा ऊत—निरा मूर्ख। प्र० वह तो चालीस-सेरा ऊत है, मुझे उस पर एक पाई भरोसा नहीं।

चालीस-सेरी बात—उचित बात। प्र० और जो चाहे सो हो, मेरी बात पूरी चालीस-सेरी होती है।

चालीसी—बहुत धूर्त और मक्कार। प्र० हिन्दुस्तानी तवायफ़ें भले ही अपने को बड़ी छत्तीसी समझा करें, मगर ये अंग्रेज कौमवाली पूरी चालीसी होती हैं (अमृत०—नागर, 317)।

चालू—हर जगह घुस जानेवाला आदमी। प्र० सुभाष बड़ा चालू लड़का है, हर कहीं घुस जाता है।

चालू भाव—बाज़ारी भाव। प्र० जो चालू भाव होगा सो मुझसे भी ले लेना।

चालू भाषा—बोल-चाल की भाषा।

चालू माल—ऐसा माल जिसकी बाज़ार में मांग हो। प्र० चालू माल हो तो बिकने में क्या दिक्कत होगी।

चालों से भरा होना—धूर्त होना। प्र० उनका बड़ा लड़का तो चालों से भरा है।

चाव निकलना या निकालना—इच्छा पूरी होना। प्र० मेरा चाव भी तो निकलना चाहिए, इसे तुम लोग क्यों भूल जाते हो?

चाव में आना—मौज में आना। प्र० बस, चाव में आकर वे जो चाहें, कर देंगे।

चाव-चोंचला करना—बहुत दुलार करना। प्र० इतना चाव-चोंचला करके लड़की की आदत मत बिगाड़ो।

चावल चबवाना—मंत्र पढ़कर फूंके हुए चावलों को चोरी का पता लगाने के लिए चबवाना।

चावल भर—थोड़ा-सा। प्र० बस, चावल भर केसर की पत्ती डाल दीजिए, कहने को हो जायगा।

चावल में घुन—क्षति करनेवाला। प्र० वह तो चावल में घुन हो गया है, घर को खोखला किये जा रहा है।

चाशनी चटाना—मज़ा चखाना। प्र० मैं तो उसे ऐसी चाशनी चटाऊंगा कि जिन्दगी भर याद रखेगा।

चाशनी देखना—नमूना रखना (धातु वगैरह का)। प्र० सोने का टुकड़ा रख लो, गहना बनकर आयेगा तो चाशनी देख लेना।

चाशनी देखो, चाशनी का तार देखो—पूरी तरह से जांच करना कि काम लायक है या नहीं।

चाशनी देना—पुट देना। प्र० रंगीन मिजाज पंडितजी ने अपना फिसाना अंग्रेज़ी की चाशनी देकर एशियाई ढंग पर लिखा (गु० नि०—बा० मु० गु०, 262)।

चाशनी पकाना—किसी भाव को मन में गहरा स्थान देना। प्र० हलवा बनाया, चाय बनाई और मन ही मन खुशी की चाशनी पकाती रही (अमृत०—नागर, 532)।

चाशनी में पगा—बहुत मीठा। प्र० नाशपाती तो एकदम चाशनी में पगी हुई है।

चाह का रंग—प्रेम का भाव। प्र० चाह के रंग मैं भीज्यौ हियो, बिछुरें-मिलें प्रीतम सांति न मानै (घन० कवित्त—घना०, 1)।

चाह की आंख से देखना—प्रेम करना।

चाह भरी आंख—प्रेमपूर्ण दृष्टि।

चाहनेवाला—प्रेम करनेवाला। प्र० प्यारे! मेरे पीछे कोई ऐसा चाहनेवाला

न मिलेगा (भा० ग्रं० (1)–भारतेन्दु, 447)।

चाहे आसमान टूटकर पृथ्वी पर आ जाय—कितनी ही बड़ी विपत्ति क्यों न आये। प्र० चाहे आसमान टूटकर पृथ्वी पर आ जाय पर मैं अपनी बात से पीछे नहीं हटूंगा।

चाहे इधर की दुनिया उधर हो जाय—किसी भी परिस्थिति में। प्र० चाहे इधर की दुनिया उधर हो जाय पर वे अपना मत नहीं बदलेंगे।

चाहे भी जो हो—हर हालत में। प्र० चाहे भी जो हो, मैं तो उनके यहां जाऊंगा ही।

चिउटा-गुड़ होना—(1) गुत्थमगुत्था होना। प्र० बातें करते-करते न जाने क्या हुआ कि दोनों चिउटा-गुड़ हो गये।

(2) हर समय साथ रहना। प्र० कुसुम और शीला तो चींटा-गुड़ हैं, एक दूसरे का साथ छोड़ती ही नहीं।

चिउटियां लगना—(1) किसी अप्रिय बात से तिलमिलाहट होना। प्र० राजा के चिऊंटी लगी परन्तु उसने उपेक्षा की (मृग०–वृं० वर्मा, 309)।

(2) गर्मी ने शरीर में चुनचुनी होना।

चिउटियां-रेंगान—बहुत धीरे-धीरे। प्र० इस चिउटिया-रेंगान चाल से तो आप लोग समय से पहुंच चुकीं।

चिउटे की गिरह में पेट होना, चींटी की गिरह में पेट होना—बहुत थोड़ा खाना। प्र० बस, खाना हो गया, अरे भाई, क्या चिउटे की गिरह में पेट है?

चिंता का टांगे रहना—बराबर चिंता बनी रहना। प्र० नित न टांगे रहे उसे चिंता, जो बिना ही टंगे टंगा न रहे (चोखे०–हरिऔध, 182)।

चिंता खाये जाना, -घेरना, -माथे लगना, -माथे सवार होना, -मारे डालना, -में डूबना, -सवार होना—बहुत चिंतित होना। प्र० अब्दुल कादिर है कि उसे एक ही चिंता खाये जा रही है (ब्रह्म०–दे० स०, 21); कुछ ऋण भी हो गया था। वह चिंता और भी मारे डालती थी (मान० (1)–प्रेमचंद, 17)।

चिंता घेरना—दे० चिंता खाये जाना।

चिंता माथे लगना—दे० चिंता खाये जाना।

चिंता माथे सवार होना—दे० चिंता खाये जाना।

चिंता मारे डालना—दे० चिंता खाये जाना।

चिंता में डूबना—दे० चिंता खाये जाना।

चिंता में डूबना-उतराना—किसी दुविधा के कारण चिंतित रहना। प्र० वह इसी चिंता में डूब-उतरा रहा था कि विलायती कपड़े का एक गाहक मिल गया जो एक-मुश्त दस रुपये का माल लेना चाहता था (मान० (1)–प्रेमचंद, 288)।

चिंता सवार होना—दे० चिंता खाये जाना।

चिंता-सागर में गोते खाना, -लगाना—अत्यन्त चिंतामग्न होना। प्र० तारा द्वारकादास के पास बैठी चिंता-सागर में गोते खा रही थी (सु० सु० –सुदर्शन, 105)।

चिंता-सागर में गोते लगाना—दे० चिंता-सागर में गोते खाना।

चिंदी उड़ाना—मखौल उड़ाना। प्र० वहां बैठे-बैठे कमल बाबू ने उनकी वह चिंदी उड़ायी कि हम सब स्तंभित रह गये।

चिंदी नापना और थान नापने की डींग हांकना—ज़रा-सा काम करके बहुत अधिक करने की डींग हांकना। प्र० यही तो मुसीबत है हमारे राष्ट्र में, चिंदी नापेंगे और थान नापने की डींग हांकेंगे (अमृत०–नागर, 284)।

चिंदी-चिंदी करना—टुकड़े-टुकड़े कर डालना। प्र० × × गुस्से में उसने खत की चिंदी-चिंदी कर दी (कम०–कम०, 74)।

चिकना खाना, चिकना पहनना—अच्छा खाना-पहनना। प्र० वहां रुपये-पैसे हाथ में आयेंगे, मजे से चिकना खायगी, चिकना पहनेगी और टांग फैलाकर सोयेगी (गोदान–प्रेमचंद, 225)।

चिकना घड़ा—ऐसा आदमी जिस पर कहने-सुनने का कोई असर न हो। प्र० क्यों बनता है मनुज गंवाकर पानी चिकना घड़ा (मर्म०–हरिऔध, 25)।

चिकना देख फिसल पड़ना—(1) किसी सुंदर स्त्री या अच्छी वस्तु को देखते ही मोहित हो जाना। प्र० बाबू रामटहल सिंह चिकना देख फिसल पड़े (दे० दु०–शिव०, 25)।

(2) थोड़े से लाभ की गुंजाइश होने से ही पतन की ओर झुक जाना। प्र० सुदर्शन की यह बुरी आदत है कि चिकना देखा और फिसल पड़े।

चिकना मुंह—(1) सुंदर मुंह। प्र० बड़ा भोला-भाला चिकना-सा मुंह देखते ही रह जाओ।

(2) मीठी बातें करनेवाला। प्र० वे बड़े चिकने मुंहवाली हैं, तुम उनसे बातें करके खुश हुए बिना रह ही नहीं सकते।

चिकना स्वर—भावशून्य स्वर। प्र० संपादक ने शांत और चिकने स्वर में कहा—साहित्य तो बड़ी साधना चाहता है (शेखर० (2)–अज्ञेय, 158)।

चिकना-चुपड़ा—बना-ठना; साफ-सुथरा। प्र० ऐसे चिकने-चुपडे आदमी से अपना काम नहीं चलेगा।

चिकना-चुपड़ा बनना—(1) बनना-ठनना। प्र० आप चिकने-चुपड़े बने घूमिए, आपको क्या।

(2) साफ-सुथरा रहना। प्र० देखिए प्रयोग नं० (1)।

चिकनियां—बना-ठना। प्र० सब या ब्रज के लोग चिकनियां, मेरे भाएँ घास (सू० सा०–सूर, 2282)।

चिकनी जवान—चटोरी आदत। प्र० उनकी बड़ी चिकनी जबान है, रोज रुपये-आठ आने का दोना चाटने को चाहिए।

चिकनी-चुपड़ी बातें करना, -बनाना—बनावटी स्नेह से भरी बातें करना; खुशामद करना। प्र० मैं चिकनी-चुपड़ी बातें और दुष्ट अंतःकरण नहीं पसन्द करता (भा० ग्रं० (1)–भारतेन्दु, 568); उसे विश्वास था कि मैं उससे चिकनी-चुपड़ी बातें करके राजी कर लूंगा (गबन–प्रेमचंद, 94)।

चिकनी-चुपड़ी बातें बनाना—दे० चिकनी-चुपड़ी बातें करना ।

चिकने घड़े पर पानी न ठहरना, चिकने घड़े पर पानी न रुकना, -पड़ना—कोई असर न होना । प्र० इसे समझाने में क्यों समय बरबाद करते हो ? चिकने घड़े पर पानी नहीं ठहरता ।

चिकने घड़े पर पानी न रुकना—दे० चिकने घड़े पर पानी न ठहरना ।

चिकने घड़े पर पानी पड़ना—दे० चिकने घड़े पर पानी न ठहरना ।

चिकने मुंह का ठग—मीठी-मीठी बातें बनाकर धोखा देनेवाला ।

चिकने मुंह को चूमना—धनी-मानी व्यक्ति का आदर करना ।

चिकने शब्द—मीठी, स्निग्ध बात । प्र० इसी तरह तो सब कहते हैं गोबर ! बल्कि इससे भी मीठे, चिकने शब्दों में (गोदान—प्रेमचंद, 47) ।

चिकोटी काटना—चुभती बात कहकर किसी को छेड़ना । प्र० अच्छा, तुम्हें हर वक्त चिकोटी काटने में क्या मजा मिलता है ?

चिचड़ी-सा चिमटना—पीछा न छोड़ना । प्र० वह तो ऐसा चिचड़ी-सा चिमट जाता है कि तबीयत परेशान आ जाती है ।

चिट उखड़ना या उखाड़ना—टुकड़े-टुकड़े होना या करना; चप्पड़ उखड़ना । प्र० न जाने कैसा रंग किया था, अभी से चिट उखड़ने लगी ।

चिट लगना—बदनाम होना । प्र० × × यह बात भाग चलने की अच्छी नहीं । इसमें एक बाप-दादे को चिट लग जाती है (इंशा०—इंशा०, 100) ।

चिटकना—झगड़ा हो जाना; मनोमालिन्य होना । प्र० फिर तुम चिटकीं तो क्यों चिटकीं (आज़ाद०—प्रेमचंद, 371); आजकल माधव से चिटक गई है तो कन्नगी को उभारने आई हो (सुहाग०—अ० ना०, 200) ।

चिट्टा देकर लड़ाना—जान-बूझकर लड़वा देना । प्र० वह चिट्टा देकर दो लड़कों को लड़ा देता था, और अलग बैठा हंसा करता था (दे० दु०—शिव०, 59) ।

चिट्टा लड़ाना—लड़ाई लगाना; दो व्यक्तियों में झगड़ा करवा देना । प्र० चिट्टा लड़ाने में तुम बड़े होशियार हो ।

चिट्ठा उतारना—चिट्ठे पर लिखी रकम वसूलना । प्र० आज चिट्ठा उतारने किसे भेज रहे हो ?

चिट्ठा करना—चन्दे के लिए लिस्ट बनाना । प्र० पहले चिट्ठा कर लो तब फिर उन लोगों के पास चला जाय ।

चिट्ठा खोलना—पोल खोलना । प्र० मैं उसका सब चिट्ठा खोलता हूं, तुम घबराओ मत ।

चिट्ठा तैयार करना—(1) हिसाब तैयार करना । प्र० मैं दान नहीं लेता । मैं चिट्ठा तैयार करा रया हूं (अमृत०—नागर, 30) ।
(2) पंचायती सभा का लेखा-जोखा तैयार करना । प्र० चिट्ठा तैयार हो रहा है, हो जाये तो पंचायत बुलाई जाय ।

चिट्ठा पेश करना—ब्यौरा प्रस्तुत करना । प्र० जब तक पूरा चिट्ठा पेश न करोगे, तब तक स्थिति की पूरी जानकारी कैसे होगी ?

चिट्ठा बंटना—भुगतान होना । प्र० मजदूरों का चिट्ठा एक महीनें से नहीं बंटा इसलिये वह मेरी इज्जत लिया चाहते हैं (परीक्षा०—श्री० दास, 96) ।

चिट्ठा बांधना—आय-व्यय तथा देना-पावना का हिसाब तैयार करना । प्र० चिट्ठा बांधकर एक बार मेरे पास भेज दो, मैं देखकर हिसाब-परीक्षक के पास भेज दूंगा ।

चिट्ठा भरना—धर्मादे की रकम लिखना । प्र० सब महाजन लोग इसमें चिट्ठा भरते थे (राधा० ग्रंथा०—राधा० दास, 320) ।

चिट्ठा मिलान करना—आय-व्यय का हिसाब मिलाना ।

चिट्ठा लगना—मजदूरों की मजदूरी बांटना । प्र० आज चिट्ठा लगेगा, आज तो नहीं आ सकूंगा ।

चिट्ठी आ जाना, -कटना—मृत्यु का समय समीप होना । प्र० मंगलाप्रसाद जी की चिट्ठी आ गयी है, अब कुछ दिनों के ही मेहमान हैं ।

चिट्ठी कटना—दे० चिट्ठी आ जाना ।

चिट्ठी करना—किसी को रुपया देने के लिए लिखित आज्ञा देना । प्र० मैं चिट्ठी कर देता हूं, तुम आफिस से रुपये ले लेना ।

चिट्ठी खो जाना—दे० कागज खो जाना ।

चिट्ठी डालना—लाटरी निकालना । प्र० गहनों का हिस्सा करके चिट्ठी डाल दी जायगी, जिसके नाम जो हिस्सा निकलेगा, वह उसका होगा ।

चिट्ठी देना—आज्ञा, आदेश या परवाना देना । प्र० नाम की लाज राम करुनाकर केहि न दिये कर चीठे (विनय०—तुलसी, 276) ।

चिट्ठी भरना—किसी के लिखे पत्र के अनुसार किसी को कुछ देना । प्र० किस-किस की चिट्ठी मैं भरता रहूं, बोलिए ?

चिट्ठी भूल जाना—दे० कागज खो जाना ।

चिट्ठी लगाना—चिट्ठी पहुंचा आना । प्र० ये सब चिट्ठियां कल दोपहर के पहले लगा आना ।

चिट्ठी-पत्री करना—पत्र-लिखना । प्र० नानाजी से कभी चिट्ठी-पत्री करते हो या नहीं ?

चिट्ठे पर चढ़ाया जाना—सूची में नाम लिखा जाना । प्र० व्याध, गीध, गनिका, जिहिं कागर, हौं तिहिं चिठि न चढ़ायौ (सू० सा०—सूर, 193) ।

चिढ़ निकालना—तंग करना; चिढ़ाना ।

चिड़िया—लड़की । प्र० एक बूढ़ा खुर्राट, जिसका पेशा हिमालय की परियों को फंसा कर राजाओं को लूटना था, और जो इसी पेशे की बदौलत राज-दरबारों में पूजा जाता था, इस विभाग का अध्यक्ष बना दिया गया । नयी-नयी चिड़ियां आने लगीं (मान० (2)—प्रेमचंद, 178) ।

चिड़िया उड़ जाना—(1) मृत्यु हो जाना । प्र० देखते-देखते आंखें टंग गयीं, चिड़िया उड़ गयी ।
(2) अपने वश में रहनेवाले किसी व्यक्ति या स्त्री का चली जाना । प्र० मैं मुंह ही देखता रह गया, चिड़िया उड़ गयी ।

चिड़िया का चूं न करना, -बोलना—एकदम खामोशी होना; किसी का कुछ न कहना । प्र० उसके बाद वह पठान उनकी कोठी के आगे बिसेसर लाला और उनकी लपेट में हिन्दू कौम को गली में खड़े-खड़े

लाखों बातें सुना गया और कहीं चिड़िया चूं भी न बोली । (अमृत० –नागर, 517) ।

चिड़िया का चूं न बोलना—दे० चिड़िया का चूं न करना ।

चिड़िया का दाने पर आना—फुसलाने पर धोखे में आ जाना । प्र० चिड़िया दाने पर आ जाय तो ठीक है ।

चिड़िया का दूध—असंभव वस्तु । प्र० तुम चिड़िया का दूध चाहोगे तो वह कहां से मिलेगा ।

चिड़िया का नाम न होना, -पूत न होना—कोई भी न होना; एकदम सूना होना । प्र० देखा, तो वहां चिड़िया का पूत भी न था, घर में झाड़ू फिरी हुई थी (रंग० (2)–प्रेमचंद, 323) ।

चिड़िया का पर काटकर उसे उड़ाना चाहना—व्यक्ति को पहले ही अशक्त करके उससे कुछ करवाने की इच्छा रखना । प्र० यह चिड़िया के पर काटकर उसे उड़ाना था (रंग०–प्रेमचंद, 165) ।

चिड़िया का पर न मार सकना—किसी का भी न आ सकना । प्र० क्या मजाल । चिड़िया तक तो पर नहीं मार सकती (आज़ाद०–प्रेमचंद, 379) ।

चिड़िया का पूत न होना—दे० चिड़िया का नाम न होना ।

चिड़िया की चाल भी पहचानना—(1) औरतों की चाल से उनके गर्भवती होने का आभास पाना । प्र० तुम जानो हम लोग तो चिड़िया की भी चाल पहचानती हैं (अंधेरे०–राकेश, 349) ।
(2) देखते ही सब कुछ समझ लेना; बहुत सूक्ष्म बात होने पर भी समझ लेना । प्र० उनकी नज़रों मे कुछ भी छिपा नहीं रह सकता, वे चिड़ियों की चाल भी पहचानती हैं ।

चिड़िया के खेत चुन लेने पर हांक लगाना—पहले करनेवाला काम, बाद में काम खराब हो जाने पर करना । प्र० जब चिड़िया खेत चुन गयी तो यह हांक लगाने चले हैं (प्रेमा०–प्रेमचंद, 233) ।

चिड़िया के छिनाले में पकड़ा जाना—व्यर्थ के झमेले में फंसना । प्र० क्या मुसीबत है । मैं भी कहां चिड़िया के छिनाले में पकड़ा गया ।

चिड़िया चुगाना—किसी को फुसलाना (विशेषकर स्त्री को) । प्र० उसे चिड़िया चुगाने से फुर्सत कहां ?

चिड़िया फंसना या फंसाना, -हाथ आना—किसी के बहकावे या धोखे में फंसना या फंसाना । प्र० मेरी न कहिए, मैंने ऐसी कितनी चिड़ियां फंसाकर छोड़ दी हैं ।

चिड़िया रैन बसेरा—अस्थायी निवासस्थान ।

चिड़िया लड़ाना—कान भरना । प्र० तुम चिड़िया लड़ाते रहो पर यह आदत अच्छी नहीं है, कभी अपने पर भी पड़ सकती है ।

चिड़िया से दूध निकालना—असंभव काम करना । प्र० यहां के न्यायालयों से न्याय की आशा रखना चिड़िया से दूध निकालना है (रंग० (1)–प्रेमचंद, 309) ।

चिड़िया हाथ आना—दे० चिड़िया फंसना या फंसाना ।

चिड़िया हाथ से निकल जाना—अपने कब्जे से निकल जाना । प्र० अब क्या करने होगा, खां साहब ! चिड़िया हाथ से निकल गया (ग़बन –प्रेमचंद, 221) ।

चिड़िया-चोथन होना, -नोचन होना—चारों ओर से तकाज़ा होना । प्र० क्या करूं, ऐसी चिड़िया-चोथन हो रही है कि पूछो मत ।

चिड़िया-नोचन होना—दे० चिड़िया-चोथन होना ।

चिड़िया-बोलती बेला—सबेरा; पौ फटने की बेला । प्र० वह तो चिड़िया-बोलती बेला में ही उठ जाती है ।

चिढ़ निकालना—ढूंढ़-ढूंढ़कर ऐसी बात कहना जिससे कोई चिढ़े । प्र० हर समय चिढ़ क्यों निकालते रहते हो ?

चित पड़ना या पट पड़ना—कोई बात अनुकूल या प्रतिकूल होना । प्र० मैं इस बारे में कुछ नहीं कह सकता बहू जी । हाकिम का वास्ता । न जाने चित पड़े या पट (ग़बन–प्रेमचंद, 269) ।

चित होना—बेहोश होना । प्र० ऐसा झापड़ दूंगा कि चित हो जाओगे ।

चित-चेता होना—मनोवांछा पूर्ण होना । प्र० कनक सिंघासन सीय समेता । बैठहिं रामु होइ चित चेता (राम० (अ)–तुलसी, 382) ।

चित-चोर—मन को वश में करनेवाला । प्र० स्याम–सुभग-सरोज-आनन, चारु, चित के चोर (सू० सा०–सूर, 1999); कोऊ उठै तान गाय, प्रान बान पैठि जाय हाय चित-बीच पै न पाऊं चित चोर को (घन० कबित्त–घना०, 46) ।

चित-पट करना—(1) हैरान करना । प्र० बेबसों को लपेट चित पट कर, पालना पेट मुंह पिटाना है (चोखे०–हरिऔध, 23) ।
(2) सिक्का उछालकर या कौड़ी फेंककर बात का निर्णय करना । प्र० लाख-लाख कहा किये कि भई, हम अपने माल का भाव तुम्हारे सामने न बतायेंगे; मुल इन्होंने हारी मानी न जीती, और उल्टे पंजे झाड़ के चित-पट की ठहरायी (आज़ाद०–प्रेमचंद, 223); चित-पट कर लो और जो तुम्हारे हिस्से आये, ले लो ।

चित-पट होना, चित्त-पट—सिक्का उछालकर निर्णय होना । प्र० चित-पट हो गया, सब हो गया तब फिर तुम क्यों दुविधा कर रहे हो ?

चितवन का वार करना, -बाण चलना या चलाना, -लगाना—तिरछी नज़रों से घायल करना । प्र० चितवन बान लगाए मधुकर, निकसि गए दुहुं ओर (सू० सा०–सूर, 4252); जो न चित का नित बना चाकर रहा, बान चितवन के नहीं जिस पर चले (चोखे०–हरिऔध, 14) ।

चितवन चढ़ना या चढ़ाना—नाराज़ होना । बस, ज़रा-सी कोई बात कही और देवीजी की चितवन चढ़ी ।

चितवन डालना—देखना । प्र० चिर परिचित चितवन डाल, सहज मुखड़ा मरोर (अना०–निराला, 88) ।

चितवन-बाण चलना या चलाना—दे० चितवन का वार करना ।

चितवन-बाण लगाना—दे० चितवन का वार करना ।

चिता चुनना—चिता में लकड़ियां लगाना; चिता सजाना । प्र० सूर्य डूब रहा था । चिता चुन दी गयी और मंत्रोच्चार के बीच उस पर गांधी-जी का शव रख दिया गया ।

चिता पर चढ़ना, -बैठना—(1) मरना । प्र० वे चेताये क्यों नहीं हैं चेतते, जो चिता पर आज कल में चढ़ेंगे (चुभते०–हरिऔध, 160) ।

(2) बहुत खतरनाक काम करना। प्र० तुम चिता पर चढ़ने को उतारू हो तो तुम्हें कौन रोक सकता है।

(3) सती होना। प्र० पद्मिनी के साथ चित्तौर की सैकड़ों स्त्रियां चिता पर हंसते-हंसते चढ़ गयीं।

चिता पर चेतना—अंत समय चेतना। प्र० हां, तुम चेतोगे, पर चिता पर, उसके पहले नहीं।

चिता पर छूटना—मरकर छूटना; जीते जी न छूटना। प्र० शराब पीने की यह लत तो अब चिता पर ही छूटेगी।

चिता पर पैर रखना—मरने के निकट होना। प्र० चिता पर पैर रखे हैं पर पैसे की हाय-हाय न गयी।

चिता में बैठना—दे० चिता पर चढ़ना।

चिता सजाना—समूल नष्ट करना। प्र० मैंने अपने अरमानों की चिता सजा दी है, अब कोई इच्छा शेष नहीं।

चिता साधना—श्मशान में बैठकर मंत्र साधना। प्र० तांत्रिक मत में चिता साधने का बड़ा महत्त्व है।

चित्त अटकना—(1) मन कहीं और लग जाना। प्र० चले थे हरि मिलन को बीचै अटक्यो चीतु (कबीर ग्रंथा०—कबीर, 261)।

(2) मन अनुरक्त होना। प्र० सूरदास प्रभु सौं चित अटक्यौ, आवत नहिं इत–उतहिं पतीनौ (सू० सा०—सूर, 2068)।

(3) मन आशंकित होना। प्र० तुम कुछ भी कहो, मेरा जी तो तभी से अटका है।

चित्त आना, -में आना—(1) स्मरण होना, ध्यान में आना। प्र० पूरब जनम कथा चित आई (राम० (बा)—तुलसी, 120)।

(2) पसंद होना; अच्छा जंचना। प्र० चिरंजीवी कौं देखि कह्यौ निडर ये, लोक तिहुं माहिं कोउ चित न आयौ (सू० सा०—सूर, 435)।

चित्त उचटना—जी न लगना; मन अस्थिर होना। प्र० चितहि उचाटि मेलि गए रावल मन हरि-हरि जु लए (भ्र० सा०—सूर, 254)।

चित्त उड़ाना—मन को विवश कर देना। प्र० उड़त पराग न चित्त उड़ावत। भ्रमर-भ्रमत नहिं जीव भ्रमावत (केशव० (2)—केशव, 232)।

चित्त उतरना—मन प्रतिकूल या विमुख होना। प्र० तोहि देखे पिउ पलुहै काया। उतरा चित्त फेरि करु माया (पद०—जायसी, 30/7)।

चित्त करना—(1) परास्त करना। प्र० तब भला कैसे ठिकाने चित रहे, जब हमें चित की पुतलियां चित करें (चुभते०—हरिऔध, 147)।

(2) याद करना। प्र० जद्यपि ब्रज अनाथ करि छाड़्यो तदपि बारहक चितकरि रहियो (भ्र० सा०—सूर, 190)।

(3) इच्छा करना। प्र० अब तो यही चित्त करता है कि सब छोड़-छाड़कर यहां से कहीं दूर चला जाऊं।

चित्त खींचना—(1) मन को मोहित करना। प्र० कोई अच्छी सूरत जो नेत्र को सुहावनी मालूम हुई तो कहते हैं इसकी रूप-माधुरी चित्त को खींचे लेती है (सा० सु०—बा० भट्ट, 96)।

(2) मन हटा लेना। प्र० मैंने तो लम्बे अरसे से उस ओर से चित्त खींच लिया है।

चित्त चढ़ना—(1) मन को ठीक लग जाना। प्र० तब चित्त चढ़ेउ जो संकर कहेऊ (राम० (बा)—तुलसी, 76)।

(2) मन में बस जाना। प्र० मेरे चित्त में तो वही लड़की चढ़ी हुई है, उसी से शादी करूंगा।

(3) किसी काम या बात को करने की धुन सवार होना। प्र० बस आजकल चित्रकला चित्त चढ़ी हुई है सो उसी में लगी है।

चित्त चाक पर चढ़ा होना—मन अस्थिर होना; मन भ्रमित होना। प्र० सदा रहत चित चाक चढ़्यौ सो, गृह अंगना न सुहाई (सू० सा०—सूर, 3818); को करै साज बजावै को बीनहिं वाको कछू चित चाक चढ़्यौ सो (केशव०—केशव, 50); चाह बढ़्यौ चित चाक-चढ़्यौ सो फिरै तित ही इत नेकु न धीजै (घन० कवित्त—घना०, 207)।

चित्त चिहुंटना—(1) लिप्त होना; लगन लगना। प्र० जब लगि गगन जोति नहिं पलटै, अबिनासी सूं चित नहीं चिहुंटै (कबीर ग्रंथा०—कबीर, 157)।

(2) मर्म स्पर्श करना।

चित्त चुराना—(1) मन मोहना; मोहित करना। प्र० राम-बिरचि मुख-भौंह-छवि लै चलति चित्त चुराइ (सू० सा०—सूर, 56), स्याम गौर मृदु बयस किसोरा, लोचन सुखद विस्व चित चोरा (राम० (बा)—तुलसी, 225); माखन के चोर मधु-चोर दधि-दूध-चोर, देखै नाहिं देखत ही चित चोर लेत हैं (केशव० (1)—केशव, 88); लाज भरी चितवन चित चोरति जब मुसुकाइ जंभात (भा० ग्रं० (1)—भारतेन्दु, 8)।

(2) पूरे मन से नहीं। प्र० हौं तब संग जरौंगी, यौं कहि, तिया धूति धन खायौ, चलत रही चित चोरि, मोरि मुख एक न पग पहुंचायौ (सू० सा०—सूर, 373)।

चित्त चूर होना, -चूर-चूर होना—मन का बहुत दुःखी होना। प्र० चूर भयौ चित पूरि परेखनि एहो कठोर अजौं दख पीसत (घन० कवित्त—घना०; 66)।

चित्त चूर-चूर होना—दे० चित्त चूर होना।

चित्त चेतना—मन में विचार करना। प्र० काकी भूख गई मन लाडू सो देखहु चित चेती (सू० सा०—सूर, 4479)।

चित्त छीलना—मन को कष्ट देना। प्र० घन आनन्द जान महा कपटी चित काहें परेखनि छोलियै री (घन० कबित्त—घना०, 157)।

चित्त जोड़ना—अनुरक्त होना। प्र० उस एक सैं जोड़ कैं चित्त अहो, सब ओर से तोड़ मैं चित्त लई।

चित्त टूटना—मनोमालिन्य होना। प्र० मनोज बाबू से तुम्हारा चित्त टूट गया है क्या (सिन्दूर०—ल० मिश्र, 49)।

चित्त डिगना, -डोलना—मन विचलित या विमुख होना। प्र० को मग जात, कहां को बोलत नन्द-सुवन तैं चित नहिं डोलत (सू० सा०—सूर, 1521); लगता है अब चित्त डिग गया है।

चित्त डुलाना—मन को दूसरी ओर लगाना । प्र० ऐसे सूर कमल लोचन त, चित नहिं अनत डुलावैं (हो) । (सू० सा०—सूर, 353) ।

चित्त डोलना—दे० चित्त डिगना ।

चित्त थिराना—मन स्थिर होना । प्र० पुनि दादुर मोर पपीहन की मुनि कै धुनि चित्त थिरातो नहीं (इश्क०—बोधा, 6) ।

चित्त देना—मन लगाना । प्र० विषै विकार बहुत रुचि मानीं, माया मोह चित दीन्हा (कबीर ग्रंथा०—कबीर, 171); काम-क्रोध-मद-लोभ-मोह तजि, अनत नहीं चित दीनौ (सू० सा०—सूर, 129); पुनि-पुनि चितइ चरन चित दीन्हा (राम० (कि)—तुलसी, 767); घन आनंद जान ! सुनौ चित दै हित-रीति दई तुम तौ तजि कै (घन० कवित्त—घना०, 59); तू श्रद्धा समेत आनंद से चित दे सुन (प्रेम०—ल० ला०, 6) ।

चित्त धरना—मन में निश्चित करना; ध्यान करना । प्र० अब कहीं ध्रुव बर देनऽवतार । राजा सुनौ ताहि चित धार (सू० सा०—सूर, 403); बिनती रिषिराज की चित्त धरौ । चहुं भैयन के अब ब्याह करौ (केशव० (2)—केशव, 253) ।

चित्त न रहना—मन अस्थिर होना । प्र० अब चित्त न रहा तो छोड़ दो ।

चित्त पड़ना (कौड़ी) या पट—अनुकूल या प्रतिकूल होना । प्र० हम लोग गंवार हैं, अपने मन से कोई बातें करेंगे तो न जाने चित पड़े या पट, चलकर बाबू प्रेमशंकर से सलाह लो (प्रेमा०—प्रेमचंद, 214) ।

चित्त पड़ना—जीत होना; सही दांव पड़ना । प्र० मुझे तो लगता है कि अपनी चित्त पड़ेगी ।

चित्त पर खचित कर देना या हो जाना—हृदय पर गहरा न भुलाया जानेवाला प्रभाव पड़ना । प्र० श्रेष्ठ काव्य वही है जो किसी भाव या रूप को पाठक के चित्त पर ऐसा खचित कर दे कि उसका प्रभाव सहज न दूर हो ।

चित्त पर (में) चढ़ना—(1) अनुरक्त होना; किसी का ध्यान मन में बसा होना । प्र० कै गुमान गुन रूप को तैं न ठान गुरु मान, मनमोहन चित चढ़ि रहीं तोसो किती न आन (जग०—पद्माकर, 52) ।
(2) मन में आना; प्रभाव डालना । प्र० शब्द बचन ते अर्थ कढ़ि चढ़ै सामुहे चित्त । ते दोउ बाचक वाच्य हैं, अभिधावृत्ति निमित्त (शब्द०—देव, 2); चढ़ सकें तो चढ़ें किसी चित पर, हम किसी की निगाह पर न चढ़ें (चोखे०—हरिऔध, 21) ।
(3) मन में दृढ़ धारणा होना । प्र० मेरे चित्त पर तो उसकी बात चढ़ गयी है, मैं उसी के अनुसार काम करनेवाला हूं ।

चित्त फटना—दुर्व्यवहार से दुःखी या उदासीन हो जाना । प्र० हज़रत उमर बिन-उस्मान को मंसूर की यह करतूत बहुत बुरी लगी और इनसे उनका चित्त कुछ ऐसा फटा कि इन्हें अपने से पृथक कर दिया (पद्म पराग—पद्म० शर्मा, 171) ।

चित्त बंटना—(1) कई कामों में मन लगना । प्र० वे दिन भले हुते अहो तब तों । बंट गए ठौर-ठौर चित्त अब तों (नंद० ग्रंथा—नंद०, 187) ।
(2) चित्त एकाग्र न होना । प्र० जब तक तुम्हारा चित्त बंटा रहेगा तब तक बात कैसे समझ में आयेगी ।

चित्त बंटाना—ध्यान इधर-उधर कराना । प्र० मैं इस समय पढ़ रहा हूं, सिनेमा की बातें करके मेरा चित मत बंटाओ ।

चित्त बसना—मन लगा होना; अनुरक्ति होना । प्र० चाह भर्‍यो चंचल हमारो चित नौल बधू तेरी चाल चंचल चितौनि में बसत है (जग०—पद्माकर, 31); कैसे भूलें कुंवर जिनमें चित्त ही जा बसा है (प्रिय०—हरिऔध, 197) ।

चित्त बांधना—प्रेम करना । प्र० कंत सुहाग कि पाइअ सांधा । पावै सोइ जो ओहिं चित बांधा (पद०—जायसी, 8/8) ।

चित्त बिकना—मन का वशीभूत हो जाना । प्र० इक सायक, इक चाप चपल अति, चितवन चित्त बिकात (सू० सा०—सूर, 2730) ।

चित्त भंग होना—एकाग्रता में बाधा पहुंचना । प्र० मैं एकाग्रतापूर्वक पढ़ रही थी पर पड़ोसियों की तू-तू मैं-मैं के कारण चित्त भंग हो गया ।

चित्त भी अपना पट्ट भी अपना होना—हर तरह से अपना लाभ होना । प्र० वाह ! वाह ! चित्त भी मेरा और पट्ट भी मेरा (मृग०—वृं० वर्मा, 410) ।

चित्त में आना—दे० चित्त आना ।

चित्त में उठना—मन में ध्यान आना । प्र० मेरे चित्त में जो उठा सो तुम्हें बता दिया, उचित-अनुचित का विचार तुम कर लो ।

चित्त में चुभना—(1) मन पर गहरा असर होना । प्र० चित चुभि रही मदन मोहन की, चितवनि मृदु मुसकानि (सू० सा०—सूर, 4424); चंचल चितौनि, चित्त चुभी, चित्तचोर वारी, मोरवारी बेसरि, सुकेसरि की आड़ वह (शब्द०—देव, 23); सुन्दर बदन पर कोरिक मदन वारौं, चित चुभी चितवनि लोचन बिसाल की (घन० कवित्त—घना०, 182); बस यह चोचले की बातें चित्त में चुभ गई (परीक्षा०—श्री० दास, 155) ।
(2) मन को पीड़ा होना । प्र० उसकी उस दिन की निष्ठुरता मेरे चित्त में चुभ गई है ।

चित्त में जमना, -बैठना—(1) मन पर गहरा असर होना । प्र० मेरे चित्त में तुम्हारी बातें जम गयी हैं, मैं तो उन्हीं के अनुसार आचरण करने जा रहा हूं ।
(2) समझ में आना । प्र० अभी प्रस्ताव ही चित्त में नहीं जमा तो उसके अनुसार काम कैसे चालू हो ।

चित्त में धंसना, -पैठना, -पोई होना, -बसना, -समाना—मन में बराबर ध्यान बना रहना । प्र० मालति होइ असि चित्त पईठी । और पुहुप कोइ आव न दीठी (पद०—जायसी, 41/20); कुन्तल कुटिल मुकुट कुंडल छबि, रही जु चित्त में पोइ (सू० सा०—सूर, 4412) ।

चित्त में धरना—(1) मन में ध्यान रखना । प्र० तन-मन-धन आतमा निवेदन, सौं उन चितहिं धरी (सू० सा०—सूर, 4272) ।
(2) प्रेम करना । प्र० गाढ़े दिन को मित्र चित्त में क्यों नहिं राखहु (राधा० ग्रंथा०—राधा० दास, 57) ।

चित्त में पैठना—दे० चित्त में धंसना।

चित्त में पोई होना—दे० चित्त में धंसना।

चित्त में बसना—दे० चित्त में धंसना।

चित्त में बैठना—दे० चित्त में जमना।

चित्त में बैठाना—अच्छी तरह स्वीकार करना। प्र० इस सम्बन्ध में और तर्क करने से लाभ नहीं है, मैंने उसकी बातों को चित्त में बैठा लिया है।

चित्त में रखना—(1) बुरा मानना। प्र० सुत अपराध करें दिन केते, जननीं के चित रहैं न तेते (कबीर ग्रंथा०—कबीर, 123)।
(2) ध्यान में रखना। प्र० मजाक में कही हुई बात को इस तरह चित्त में मत रखिए।

चित्त में लाना—(1) विचार करना। प्र० आपसे कितनी बार तो कह चुका हूं पर आप मेरी बात चित्त में ही नहीं लाते।
(2) इच्छा होना। प्र० चित्त में लाए बिना तो काम होने से रहा।
(3) प्रेम होना।

चित्त में शूल होना—ईर्ष्या होना। प्र० मीत उदित, हित उदित हैं, नित बैरिन के चित शूल (गीता० (बा)—तुलसी, 22)।

चित्त में समाना—दे० चित्त में धंसना।

चित्त मैला करना—मन में दुर्भाव आना। प्र० कबीर भूल बिगाड़ियां, तूं नां करि मैला चित (कबीर ग्रंथा०—कबीर, 84)।

चित्त रखना—प्रेम करना; मन लगाना। प्र० जो चित राखहि एक स्यों ते सुख पावहि नीत (कबीर ग्रंथा०—कबीर, 261); हरि चरनन चित राखौ गोइ (सू० सा०—सूर, 348)।

चित्त लगना या लगाना—(1) प्रेम होना या करना; ध्यान होना या करना। प्र० हमारा भर्म गया भय भागा। जब राम नाम चितु लागा (कबीर ग्रंथा०—कबीर, 298); देखि रूप तोर आगर लागि रहा चित मोर (पद०—जायसी, 34/2); मैं तो एक पुरुष कौं ध्यायौ, अरु एकहि सौं चित्त लगायौ (सू० सा०—सूर, 397); रघुपति पद सरोज चितु राचा (राम० (बा)—तुलसी, 266), धन दारा अरु सुतन मैं, रहत लगाए चित्त (रहीम कवि०—रहीम, 13); लेकिन उनसे मेरा चित्त लगा कब (सिन्दूर०—ल० मिश्र, 49)।
(2) मन का एकाग्र या स्थिर होना या करना। प्र० कहं मथनी, कहं माठ है, चित कहां लगायौ (सू० सा०—सूर, 1334); करु उद्योग उपाय अतिहि दृढ़ चित्त लगाए (राधा० ग्रंथा०—राधा० दास, 31)।

चित्त लाना—मन लगाना। प्र० चरन कंवल चित लाइये, रांम नांम गुन गाइ (कबीर ग्रंथा०—कबीर, 89); तुम कह्यौ सप्त दिवस मम आइ। कहौं हरि कथा, सुनौ चित लाइ (सू० सा०—सूर, 344); थोरेहि महं सब कहउं बुझाई सुनहु तात मति मन चित लाई (राम० (अर०) —तुलसी, 708); 'नंददास' की आस, श्री जमुना पूरन करी तातैं घरी-घरी चित्त लावौं (नंद० ग्रंथा०—नंद०, 283)।

चित्त लेटना—पीठ के बल लेटना।

चित्त लेना—(1) आकर्षित करना। प्र० देखे नहीं कबहूं भरि आंखिनि आजुहिं कैसे चलें चित लीनें (केशव०—केशव, 57)।
(2) मन की थाह लेना। प्र० पहले होशियारी से मौसी का चित्त ले लो फिर यह प्रस्ताव रखो।

चित्त समा रहना—ध्यान लगा होना। प्र० चरन कमल चित रह्यो समाई, (कबीर ग्रंथा०—कबीर, 269)।

चित्त से उतरना या उतारना—भूल जाना। प्र० सखी, अब इन बातों से और भी दुःख बढ़ेगा, इससे चित्त से यह बातें उतार दे (भा० ग्रं० (1)—भारतेन्दु, 35)।
(2) नीचा जंचना, प्रिय न लगना। प्र० वह शांत प्रकृति कुत्ता × × × × वह मौन व्रतधारी बिल्ली × × × सब उसके चित्त से उतर गये (मान० (7)—प्रेमचंद, 225)।

चित्त से न टलना—हर समय ध्यान बना रहना। प्र० सूर चित तैं टरत नाहीं, राधिका की प्रीति (सू० सा०—सूर, 4041)।

चित्त हरना—मन को वश में कर लेना।

चित्त हलका होना—मन से किसी दुश्चिंता के बोझ का दूर होना। प्र० आपसे बातें करके और आपके सामने सब कुछ स्वीकार करके मेरा चित्त हल्का हो गया।

चित्त होना—(1) प्रेम होना। प्र० वे बहु-नायक रस के लोभी उनको चित्त अनेक तियन में (भा० ग्रं० (2)—भारतेन्दु, 637)।
(2) मन में होना। प्र० सवाल इस बात का है कि यदि कोई काम या बात चित्त हो तो आदमी उसके अनुसार काम करे। जब बात ही भूल जाये तो काम कहां से हो।
(3) पटका जाना; परास्त होना। प्र० अरे, तुम तो ऐसे चित्त होगे कि देखना।

चित्त-पट होना—दे० चित-पट होना।

चित्ती खाना, -पड़ना—दाग पड जाना। रखे-रखे-ही सारे कपड़े चित्ती खा गये।

चित्ती पड़ना, -होना—(1) जुए में जीत जाना। प्र० मेरी चित्ती पड़ी, मैं अब चला।
(2) दे० चित्ती खाना।

चित्ती होना—दे० चित्ती पड़ना।

चित्र आंकना, -प्रस्तुत करना, -रांचना, -सामने रखना, चित्रण करना, चित्रित करना—स्थिति का यथार्थ चित्रण करना। प्र० उस लेख में बद्रीनाथ की यात्रा का बड़ा सुन्दर चित्र आपने आंका है।

चित्र आंखों के आगे खड़ा होना—स्थिति या व्यक्ति का रूप साकार हो जाना। प्र० आज भी रह-रहकर वह चित्र आंखों के आगे खड़ा हो जाता है।

चित्र आंखों के आगे खींच देना, -उपस्थित कर देना, -खड़ा कर देना, -खींच देना—स्थिति का हूबहू चित्र अंकित कर देना। प्र० वर्तमान समय की सम्मोहिनी सभ्यता की छीछालेदर का जो सुन्दर चित्र उन्होंने 'महारण्य-पर्यवेक्षणम्' नामक लेख में खींचा है, वह देखने ही

योग्य है (पद्म पराग-पद्म० शर्मा, 68)।

चित्र उतारना, -उरेहना, -खींचना—चित्र बनाना। प्र० आप मेरा चित्र नहीं उतारेंगे चाचाजी ?

चित्र उपस्थित करना—दे० चित्र आंखों के आगे खींच देना।

चित्र उरेहना—दे० चित्र उतारना।

चित्र खड़ा कर देना—दे० चित्र आंखों के आगे खींच देना।

चित्र खींच देना—दे० चित्र आंखों के आगे खींच देना।

चित्र खींचना—दे० चित्र उतारना।

चित्र प्रस्तुत करना—दे० चित्र आंकना।

चित्र बन जाना—चुपचाप बैठ जाना। प्र० मेरी बातें सुन वह चित्र बनी बैठ गयी।

चित्र रांचना—दे० चित्र आंकना।

चित्र सामने रखना—दे० चित्र आंकना।

चित्र-अवरेखा होना, -लिखा सा होना—कोई गति न होना; स्तब्ध हो जाना। प्र० लिखी चित्र-सी सूर सु ह्वै रहिं, इकटक पल बिसराइ (सू० सा०-सूर, 1239); राम विलोके लोग सब चित्र लिखे से देखि (राम० (बा)-तुलसी, 267); चित्र लिखी सी रही दई यह कहा भई अब (नंद० ग्रंथा० नंद०, 175); गुरुजन के भय संग गई नहिं, रहि गई मनहुं चित्र लिखि काढ़ी (भा० ग्रंथा० (2)-भारतेन्दु, 47)।

चित्रण करना—दे० चित्र आंकना।

चित्र-लिखा-सा होना—दे० चित्र-अवरेखा होना।

चित्रित करना—दे० चित्र आंकना।

चिथड़े बिखेरना—मार-मारकर बुरा हाल कर देना।

चिथड़े लगना या लगाना, -लपेटना—(1) बहुत गरीब हो जाना; कष्ट से दिन बिताना। प्र० बिचारों की हालत बहुत खराब हो गयी है। सभी चिथड़े लगाये घूमते हैं।

(2) फटे-पुराने मैले-कुचैले कपड़े पहनना। प्र० क्या हर समय चिथड़े लपेटे घूमा करते हो ? जाओ, ढंग के कपड़े पहनकर आओ।

चिथड़े लपेटना—दे० चिथड़े लगना या लगाना।

चिथड़े-चिथड़े हो जाना—धज्जियां उड़ जाना। प्र० यह कोट तो चिथड़े-चिथड़े हो गया है, कोई दूसरा फटा-पुराना हो तो दे दो।

चिथड़े-हाल—अत्यन्त दरिद्र। प्र० रामलाल तो आजकल एकदम चिथड़े-हाल हो रहा है।

चिथाड़ मचना—नोचानोच होना; तंग किया जाना। प्र० घर से निकला नहीं कि चारों ओर से चिथाड़ मच जाती—वाह बाबू जी, वाह ! दो दिन का वादा करके ले गये और आज दो महीने से सूरत नहीं दिखाई (मान० (2)-प्रेमचंद, 191)।

चिनगारियां लगना—बुरा मालूम होना। प्र० मेरी बातें सुनकर तुम्हें चिनगारी क्यों लग गयी ?

चिनगारी छूटना (आंखों से)—बहुत गुस्सा होना। प्र० मेरा स्पष्ट उत्तर सुनते ही उनकी आंखों से चिनगारी छूटने लगी।

चिनगारी छोड़ना, -डालना—नाराज करनेवाली बातें या काम करना; अहित का काम करना। प्र० भैरो का भी शुभा सूरदास ही पर हुआ, इसी ने यह चिनगारी छोड़ी (रंग०-प्रेमचंद, 237)।

चिनगारी झड़ना—उत्तेजनापूर्ण बातें कहना। प्र० मेरी लेखनी से चिनगारियां झड़ते देख दिवंगत श्री शचीन्द्रनाथ जी सान्याल × × ने ललक कर मेरा संग्रह किया था (अपनी०-उग्र, 112)।

चिनगारी डालना—दे० चिनगारी छोड़ना।

चिपक जाना—साथ न छोड़ना। प्र० और मुझे डर कि कादिर साहब आ गये तो यह हज़रत ऐसे चिपक जायेंगे कि मेरा बात तक करना मुश्किल कर देंगे (पैंतरे-अश्क, 64)।

चिपकना या चिपकाना—किसी काम में लगे रहना या लगा देना; नौकरी करना या दिलवाना। प्र० जब तक कहीं चिपकोगे नहीं तब तक काम कैसे बनेगा।; इसी कोशिश में हूं कि छोटे भाई को भी कहीं चिपका दूं।

चिपटना—लिप्त रहना; साथ लगे रहना। प्र० जिन्होंने आक्रमण के समय में गड्ढों में बीज छिपाकर रख दिया था वे लौट आने पर खेती पर चिपट गये (मृग०-वृं० वर्मा, 2)।

चिप्पा खाना—बिगड़ जाना। प्र० तुम्हारी करनी से सारा सामान चिप्पा खा गया।

चिप्पी लड़ाना—लड़ाई करवाना। प्र० चिप्पी लड़ाने में तुम बड़े उस्ताद हो, मुझे पता है।

चिमिरचिक्की होना—बहुत दुबला-पतला होना। प्र० यह आदमी तो एकदम चिमिरचिक्की-सा है, यह क्या करेगा ?

चिर निद्रा में सो जाना—मृत्यु हो जाना।

चिरवत्ती करना—चिथड़े-चिथड़े कर डालना। प्र० देखो तो सही, गुस्से में सारी साड़ी चिरवत्ती कर डाली।

चिराग का हंसना—बुझने के पहले दीये की लौ का भभकना।

चिराग गुल हो जाना या करना—(1) सत्यानाश हो जाना। प्र० आज वह रंगमंच पर न आती तो पन्द्रह परिवारों के चिराग गुल हो जाते (ग़बन-प्रेमचंद, 320)।

(2) वंश लुप्त हो जाना। प्र० इस लड़के की मौत से तो उनके घर का चिराग ही गुल हो गया।

चिराग गुल पगड़ी गायब होना—मौका मिलते ही झटपट माल गायब हो जाना। प्र० आगे बढ़कर मैंने बत्ती को तेल में खिसका दिया, चलिए चिराग गुल, पगड़ी गायब (आज़ाद०-प्रेमचन्द, 38)।

चिराग जल चुकना—शक्ति न रहना। प्र० अब मुझमें क्या धरा है ? चिराग जल चुका है, अब तो बस रोशनी की आभा भर है।

चिराग जलना, -रोशन होना—पुत्र उत्पन्न होना; उन्नति होना। प्र० चलो, उनके घर में भी चिराग तो जला।

चिराग ठंडा करना—चिराग बुझाना। प्र० फूलों की सेज पर आ कर दे चिराग ठंडा (इंशा०-इंशा०, 56)।

चिराग ठंडा होना—दीया बुझना। प्र० चिराग ठंडा हो गया है, तेल डाल-

कर फिर से जलाओ।

(2) पुरुषार्थ समाप्त होना। प्र० अरे यार, अब चिराग ठंडा हो गया, अब दम कहां।

चिराग तले अंधेरा होना—अच्छाई के साथ ही बुराई का होनां। प्र० चिरागतले अंधेरा, देवी के मंदिर के पिछवाड़े यह अंधेर? (मान० (3)-प्रेमचंद, 146)।

चिराग बढ़ाना—दे० चिराग ठंडा करना।

चिराग बुझ जाना—दे० चिराग गुल करना या होना।

चिराग रौशन होना—दे० चिराग जलना।

चिराग लेकर ढूंढ़ना—अच्छी तरह ढूंढ़ना। प्र० तुम दुनिया में चिराग लेकर ढूंढ़ आओ, ऐसा शरीफ आदमी तुम्हें न मिलेगा (कर्म०-प्रेमचंद, 131)।

चिराग शेर करना—रोशनी तेज़ करना। प्र० ज़रा चिराग शेर करो तब न पढ़ा जाय।

चिराग से चिराग जलना—एक से दूसरा काम होना। प्र० चिराग से ही चिराग जलता है, एक बार काम शुरू कर दो तो शृंखला-सी बन जायगी।

चिराग-जलते या चिराग-जले—शाम का समय। प्र० चिराग जलते-जलते जानवरों का बाजार लग गया (कर्म०-प्रेमचंद, 368)।

चिराग-बत्ती करना—दीया जलाना। प्र० सांझ हो गयी, चिराग-बत्ती तो करो, मंगरू।

चिरागी चढ़ाना—भेंट चढ़ाना। प्र० कुछ न कुछ चिरागी चढ़ानी ही पड़ेगी, ऐसे तो नहीं चलेगा।

चिरागी नदारद होना—गुरुदक्षिणा न होना। प्र० वाह! काम सीख लिया और चिरागी नदारद।

चिरागी होना—मकान या गांव का गैर आबाद होना। प्र० नादिरशाह के आक्रमण के समय दिल्ली के आस-पास के न जाने कितने गांव चिरागी हो गये।

चिरायंध फैलना—बदनामी फैलना। प्र० सारे शहर में जो चिरायंध फैल गई है, उसे कैसे दूर करोगे?

चिरौरी करना, चिरौरी-मिनती करना—प्रार्थना करना; खुश करने के लिए खुशामद करना। प्र० बहुत से पकड़े जाने वाले बच्चों के मां-बाप अवश्य ही चिंतित पुलिसवालों की चिरौरियां और गुहार लगाते हुए दिखलाई पड़ रहे थे (अमृत०-अ० ना०, 386)।

चिरौरी-मिनती करना—दे० चिरौरी करना।

चिलचिलाती दोपहरी, -धूप—तेज़ धूप। प्र० चिलचिलाती दोपहरी थी और मथुरा सांड़ को भगाये लिये जाता था (मान० (3)-प्रेमचंद, 83); क्यों कढ़ेंगे चिलचिलाती धूप में वे सहेंगे किस तरह आंचें कड़ी (बोल०-हरिऔध, 23)।

चिलचिलाती धूप—दे० चिलचिलाती दोपहरी।

चिलम चढ़ाना, -भरना—(1) चाकरी करना; सेवा करना। प्र० आप मुझे एक बार मौका दें, मैं आपकी चिलम भरकर अपनी जिन्दगी गुजार दूंगा।

(2) चिलम पर तम्बाकू और आग रखना। प्र० अरे सरवना, ज़रा चिलम तो चढ़ा।

चिलम जगना—पीने के लिए चिलम तैयार रहना। प्र० जब चिलम जगती रही तब ज्ञान की जोत न्यारी क्यों न जगती कम रहे (चुभते०-हरिऔध, 125)।

चिलम पर आग भी न रखवाना—अत्यन्त तुच्छ समझना। प्र० हुंह, मैं उससे चिलम पर आग भी न रखवाऊं, तुम साथ बैठाकर खिलाने की कहते हो।

चिलम पीना—चिलम पर तम्बाकू रखकर सेवन करना।

चिलम भरना—दे० चिलम चढ़ाना।

चिल्ल-पुकार मचाना—फरियाद करना। प्र० चारों ओर से चिल्ल-पुकार मची हुई है, कुछ न कुछ तो करना ही होगा।

चिल्ल-पों करना या होना, -मचना या मचाना—शोर करना; आपत्ति करना, हाय-तोबा करना। प्र० शाम को घर में खूब चिल्ल-पों मची (जिन्दगी-निर्गुण, 114)।

चिल्ल-पों मचना या मचाना—दे० चिल्ल-पों करना या होना।

चिल्ला खींचना—युद्ध की तैयारी करना। प्र० इतने दिनों तक मैं चुप था पर अब तो चिल्ला खींचने का आदेश देना ही होगा।

चिल्ली मारना—बिजली गिरना।

चिल्ले का जाड़ा—कड़ाके का जाड़ा। प्र० बाप रे बाप! कैसा चिल्ले का जाड़ा है, हाथ-पैर ठिठुरे जा रहे हैं।

चिहर जाना—बीच से फटने लगना; फैल जाना। प्र० घड़ा तो चिहर गया है, इसमें पानी मत भरना।

चिल्हक उठना—रह रहकर दर्द उठना। प्र० कमर में रह-रहकर चिल्हक उठती है, बड़ी तकलीफ हो रही है।

चीं करना—कुछ भी न कहना या विरोध करना। प्र० पिताजी के सामने चीं करने की हिम्मत नहीं थी (गु० कहा०-गुलेरी, 11)।

चीं बुलाना—हार स्वीकार करा लेना। प्र० मेरे सामने आये तब न पता चले कि वह चीं बुला सकता है या मैं।

चीं बोलना—हार मान लेना। प्र० द्विवेदी जी ने पहले ही हमले में हरिश्चन्द्र को वह धरकर फफेड़ा है कि सब हिन्दी वाले चीं बोल जावेंगे (गु० नि०-बा० मु० गु०, 434)।

चीं-चपड़ करना—प्रतिवाद करना; कुछ कहना। प्र० ताहिर अली सोचने लगे, कौन चमार सबसे मोटा है, जिसे आज रुपए न दूं, तो चीं-चपड़ न करे (रंग० (2)-प्रेमचंद, 224)।

चींटी का पैर न टिक पाना—बहुत दुर्गम मार्ग होना। प्र० पाव न टिके पपीलका, लोगनि लादे बैल। (कबीर ग्रंथा०-कबीर, 31)।

चींटी की गिरह में पेट होना—दे० चिउंटे की गिरह में पेट होना।

चींटी की चाल—मंद चाल। प्र० कांपते हुए रुआंसे स्वर में 'आया जी' कहकर, पुस्तक स्लेट और पेंसिल ले, वह चींटी की-सी चाल से नीचे को चला (चेतन-अश्क, 39)।

चींटी को पर निकलना—ऐसा काम करना जिससे मृत्यु हो; मरने के निकट होना। प्र० देखो कालकौतुक, पिपीलकनि पंख लागो, भाग मेरे लोगनि के भई चित-चही है (गीता० (सुं०)—तुलसी, 24)।

चींटी भरा कबाब—झंझट की स्थिति। प्र० लो, राम बाबू का फेयरवेल तो चींटी भरा कबाब हो गया।

चींटी लगना—बीमारी या धूप से बदन में चुनचुनाहट होना। प्र० मेरे तो सारे बदन में चींटी लग रही है, अब चलकर नहाऊंगा।

चींटे को पर निकलना, -लगना—(1) नाश के समय बुद्धि भ्रष्ट होना। प्र० सूरदास सुरपति रिस पाई। कीड़ी तनु ज्यों पांख उपाई (ब्र० सू० को०)।

(2) बुद्धि भ्रष्ट होना।

चींटे को पर लगना—दे० चींटे का पर निकलना।

चीख मारना—चीखना। प्र० यह लड़का तो बड़ा चीख मारता है।

चीज़—लड़की। प्र० वहां 'चीजें' बड़ी छटी-छंटी आती हैं (सारा०—यादव, 109)।

चीनी गलना—मिठाई बनने की तैयारी होना; कड़ाही में चीनी पड़ना। प्र० पहले चीनी गला लो महराज, तब बेसन घोलो।

चीनी जाना—पेशाब में चीनी की मात्रा अधिक हो जाना। प्र० पिछले 4-6 महीनों से चीनी भी जाने लगी है।

चीमड़—ऐसा व्यक्ति जिसे सहज ही प्रभावित न किया जा सके। प्र० ऐसे लोग बड़े चीमड़ होते हैं, जल्दी खत्म नहीं होते × × (अमृत०—नागर, 703)।

चीरा उतारना, -तोड़ना—प्रथम समागम करना।

चीरा तोड़ना—दे० चीरा उतारना।

चीरा लगना—मवाद निकालने के लिए फोड़ा आदि काटा जाना। प्र० लगता है चीरा लगवाए बिना काम नहीं चलेगा।

चील का मूत—बेकार और न मिलनेवाली चीज।

चील की तरह मंडराना—चारों ओर चक्कर काटना। प्र० दुनिया का यह हाल है कि कुछ मिलने का सुराग मिला नहीं कि लोग चील की तरह मंडराने लगते हैं।

चील के घोंसले से मांस छीनना—दुष्कर कार्य करना। प्र० वैसे अब तक तो पुलिस विभाग में वह चील के घोंसले से भी मांस ढूंढ़ लाने में गुरु माना जाता था (ब्रह्म०—दे० स०, 245)।

चुंदी उखाड़ना, चुटिया उखाड़ना—बेइज्जत करना। प्र० इस तरह उनकी चुटिया उखाड़कर तुम्हें क्या मिला।

चुंदी खड़ी होना—चेतन होना; आश्चर्य होना। प्र० उस दिन उसका रवैया देखते ही मेरी चुंदी खड़ी हुई थी।

चुंदी पकड़ में आना, -हाथ में आना—किसी का वश में आना। प्र० अब तो उनकी चुंदी पकड़ में आ गई है।

चुंदी हाथ में आना—दे० चुंदी पकड़ में आना।

चुआ पड़ना—आधिक्य होना। प्र० उसके चेहरे से भलमनसाहत चुई पड़ती है।; उसके चेहरे से खून चुआ पड़ता है।

चुक जाना—(1) खत्म हो जाना। प्र० अभी काम कहां चुका है ? उसके पूरा हुए बिना कैसे चल सकूंगा ?

(2) किसी का देना चुकती हो जाना। प्र० अब तो रघुवंश जी का भी (देना) चुक जाय तो निश्चिन्त होऊं।

चुकौता (ती) लिखना या लिखाना—भरपाई की रसीद लिखवाना या लिखना।

चुगना—बहुत जरा-जरा खाना। प्र० तुम तो खा नहीं रही हो, चुग रही हो।

चुगली खाना, -लगाना—पीठ पीछे शिकायत करना। प्र० अब देखि कौन नैं स्वामिनी सों चुगली खाई (भा० ग्रं० (1)—भारतेन्दु, 447)।

चुगली लगाना—दे० चुगली खाना।

चुचका आम—दुबला; सूखा हुआ-सा आदमी। प्र० पटवारी की देह क्यों नहीं फूल जाती, चुचके आम बने हुए हैं (प्रेमा०—प्रेमचंद, 6)।

चुटकियों पर (में) उड़ा देना—(1) अत्यन्त तुच्छ समझना। प्र० हम लोगों की बात तो अब चुटकियों में उड़ा देता है (भूले०—भग० वर्मा, 139)।

(2) टिकने न देना; बहकाना। प्र० ऐसे सैंकड़ों मुकदमें आपके पुन्य प्रताप सैं चुटकियों मैं उड़ा सकता हूं (परीक्षा०—श्री० दास, 93); मैंने थोड़ा-सा अध्ययन किया होता तो प्रियनाथ को चुटकियों पर उड़ा देता (प्रेमा०—प्रेमचंद, 317)।

चुटकियों पर नाचना—किसी के इशारों पर चलना। प्र० है बुरी चाट लग गई तो क्या अब रहें नाचते न चुटकी पर (चुभते०—हरिऔध, 29)।

चुटकियों पर मुहिम सर होना—आसानी से जीत होना। प्र० जी ठिकाने है अगर रहता नहीं। चुटकियों पर तो मुहिम होगी न सर (चुभते० —हरिऔध, 36)।

चुटकियों में—झटपट; आसानी से। प्र० ऐसी मिलें मैं चुटकियों में खोल सकता हूं (गोदान—प्रेमचंद, 295)।

चुटकियों में उड़ाना—(1) आसान समझना; आसानी से हल कर देना। प्र० ऊपरी प्रश्नों को मंसाराम ने चुटकियों में उड़ा दिया (निर्मला—प्रेमचंद, 58)।

(2) आसानी से नष्ट कर देना। प्र० और इन मजनूं साहब को तो यों चुटकियों में उड़ा दे······कटवा के बहा दे रातों-रात (प्रतीक्षा—यादव, 57)।

(3) कुछ परवाह न करना। प्र० उस दिन आपने मेरी बातों को चुटकियों में क्यों उड़ा दिया था ?

(4) हंसी में उड़ाना। प्र० देखिए प्रयोग (3)।

चुटकी—भिक्षा। प्र० बच्चा, इस साधु को भी चुटकी देता जा।

चुटकी काटना—व्यंग्य करना। प्र० किसलिये दिल काटने चुटकी लगा, आपने चुटकी अगर दिल में न ली (चोखे०—हरिऔध, 52)।

चुटकी देना—(1) भिक्षा देना। प्र० मैंने उमर भर ब्राह्मण नाई, कमीन और फकीर को चुटकी देकर, दस आदमी को खिलाकर खाया है

(झूठा० (1)—यशपाल, 487)।
(2) चुटकी बजाना। प्र० चुटकी देकर जरा मुन्ना को बहलाए रखो, मैं अभी आयी।

चुटकी बजाते—चटपट; अत्यन्त सहज ही; बिना प्रयास। प्र० यदि उसकी मां से मेरी बातचीत हो सकती, तो मैं उसे चुटकी बजाते राजी कर लेती (मा—कौशिक, 64)।

चुटकी बजाना—(1) निन्दा करना। प्र० क्यों न चुटकी मांग करके ही जियें, हम भला चुटकी बजायें किसलिये (बोल०—हरिऔध, 158)।
(2) अंगूठे और बीच की उंगली को जोर से छटका कर शब्द निकालना।

चुटकी बजानेवाला—खुशामदी।

चुटकी बैठना—चुटकी से काम करने का अभ्यास पड़ जाना। प्र० मेरी चुटकी अब बैठ गयी है, जल्दी-जल्दी डोरा उठा सकती हूं।

चुटकी भर—बहुत थोड़ा; जरा-सा। प्र० भिक्षुक को एक द्वार पर भरपेट कहां मिलता है। उसे तो चुटकी ही मिलेगी (गोदान—प्रेमचन्द, 46)।

चुटकी भरना—(1) चुभती या लगती बात कहना। प्र० हम बनेंगे क्यों, बनो तो तुम बनो, हम भरेंगे दम, तुम्हीं चुटकी भरो (बोल०—हरिऔध, 159)।
(2) चुटकी काटना। प्र० इतनी जोर से चुटकी भर ली है कि दाग पड़ गया।

चुटकी भरे लोहू टपकना—बहुत सुकुमार और लाल होना। प्र० वह तो ऐसी सुन्दर-सुकुमार है कि क्या कहूं—चुटकी भरे लहू टपकता है।

चुटकी मांगना—भिक्षा मांगना। प्र० क्यों न चुटकी मांग करके ही जियें, हम भला चुटकी बजायें किसलिये (बोल०—हरिऔध, 158)।

चुटकी में मसल देना—बिना प्रयास किसी को दबा देना।

चुटकी लगाना—(1) रुपया बजाने के लिए दो अंगुलियों पर रुपया रखकर अंगूठे से उछालना। प्र० चुटकी लगाकर देख लो कि रुपया खरा है या नहीं।
(2) उंगलियों से जेब काटना। प्र० उसने ऐसी होशियारी से चुटकी लगाई कि मुझे तनिक खबर तक न हुई।
(3) दूध दुहने के लिए थन पकड़ना। प्र० ढंग से चुटकी लगाए बिना भला दूध उतरेगा।
(4) उंगलियों से पकड़कर फाड़ना। प्र० अरे, चुटकी लगाओ न, कैंची की क्या जरूरत है।

चुटकी लेना—(1) मजाक उड़ाना। प्र० तुम तो दानशीलता पर हंस रहे थे—मां ने चुटकी ली—क्या तुम भी कभी भिखारी के हाथ पर चार पैसे रखते हो? (दूधगाछ-दे० स०, 73)।
(2) चुभती या लगती बात कहना। प्र० देवीजी ने चुटकी ली—सौ रुपये में उससे बहुत अच्छा पत्र मिल सकता है (मान० (4)—प्रेमचंद, 61)।

चुटकी-चुटकी जमा करना—थोड़ा-थोड़ा करके संचय करना। प्र० उस बेचारी विधवा ने चुटकी-चुटकी करके जो जमा किया था, सब एक दिन रात में उसका नालायक बेटा उठा ले गया।

चुटकुला छोड़ना—(1) दिल्लगी की बात कहना। प्र० देवीदयाल जी बैठे-बैठे चुटकुला छोड़ने में एक ही उस्ताद हैं।
(2) कोई ऐसी बात कहना जिससे नया मामला उठ खड़ा हो। प्र० अब यह तुमने एक नया चुटकुला छोड़ा।

चुटिया उखाड़ना—दे० चुंदी उखाड़ना।

चुटिया दबना—दबाव में होना। प्र० इस समय अपनी चुटिया दबी हुई है, वे जो चाहें कह और कर सकते हैं।

चुटिया पकड़कर निकाल बाहर करना—अपमानपूर्वक निकाल देना। प्र० मेरे किसी नाटक में वह होता, तो मैं पहले ही दिन उसे चुटिया से पकड़कर रिहर्सल रूम से बाहर निकाल देती।

चुटिया हाथ में देना—वश में या अधीन कर देना। प्र० परिस्थिति ने हमारी चुटिया उसके हाथ में दे रखी थी (मान० (7)—प्रेमचंद, 23)।

चुटिया हाथ में रखना, -होना—वश में करना या होना। प्र० आपके हाथ में सबों की चुटिया है (मैला०—रेणु, 221)।

चुटिया हाथ में होना—दे० चुटिया हाथ में रखना।

चुटीला—तीखा। प्र० हरिशंकर परसाई ऐसा चुटीला व्यंग्य करते हैं कि तबीयत तिलमिला जाती है।

चुटुर-पुटुर—फुटकर। प्र० न जाने कितना चुटुर-पुटुर खर्च होता है, कुछ जानते हो?

चुन-चुनकर—सम्पूर्ण; किसी को बिना छोड़े; सबको। प्र० मैं एक-एक से चुन-चुनकर पूछूंगा।

चुनचुना लगना—(1) बुरा लगना। प्र० मैंने उन्हें कहा सो कहा, मैं उसके लिए जिम्मेदार हूं। तुम्हें चुनचुना क्यों लगता है।
(2) पेट में कीड़ियों के होने पर मलद्वार में उनके काटने के कारण जलन और पीड़ा होना।

चुनना—सजना। प्र० मेजों पर भोजन चुना जाने लगा (मान० (4)—प्रेमचद, 81)।
(2) दीवार के भीतर जीवित आदमी को खड़ा करके दीवार बन्द कर देना।

चुना हुआ—उत्तम; श्रेष्ठ। प्र० मैं तो चुने हुए लोगों को ही बुलाने के पक्ष में हूं।

चुनाचुनी करना—बहुत-सी इधर-उधर की बातें करना। प्र० अब चुनाचुनी छोड़कर काम की बात कीजिए।

चुनाव लड़ना—चुनाव में उम्मेदवार की तरह भाग लेना। प्र० इस बार मुखर्जी बाबू चुनाव नहीं लड़ेंगे।

चुनौती देना—प्रतिद्वन्द्विता के लिए ललकारना। प्र० ताके कर रावन कहं मनौ चुनौती दीन्हि (राम० (अर०)—तुलसी, 712)।

चुप नाधना, -मारना, -लगना या लगाना, -साधना—चुप रहना; कुछ न बोलना। प्र० आजाद और उनके दोस्त और आगे बढ़े, तो देखते

क्या हैं कि एक गंवार औरत रोती चली जाती है, और एक मर्द चुपके-चुपके समझा रहा है—चुपाई मार, चुपाई मार (आज़ाद०—प्रेमचंद, 72)।

चुप मारना—दे० चुप नाधना।

चुप लगना या लगाना—दे० चुप नाधना।

चुप साधना—दे० चुप नाधना।

चुप होना—उत्तर न दे पाना। प्र० मैंने भी उन्हें ऐसा करारा जवाब दिया कि वे चुप ही हो गये।

चुपकी लगाना—शांत रहना। प्र० तुम चुपकी लगाए रखो, इसी में कल्याण है।

चुपके से—गुप्त रूप से। प्र० बड़ी जीजी घर का सारा गहना चुपके से पार कर ले गयीं, हम लोगों को कानोंकान खबर तक नहीं हुई।

चुपचाप पी जाना—किसी चुटीली बात को सुनकर बिना किसी प्रतिवाद के सहन कर जाना। प्र० मैं सब कुछ चुपचाप पी गया, कोई चारा न था।

चुपचाप बैठे रहना—अकर्मण्य बैठे रहना। प्र० करते क्या हैं, चुपचाप बैठे रहते हैं।

चुपचुपाते बैठ रहना—चुप होकर बैठना। प्र० हम लोग क्या करते, चुपचुपाते बैठ रहे।

चुपड़ी और दो-दो होना—भरपूर लाभ होना। प्र० नकलची इतिहास लेखकों ने पंद्रह-बीस दिनों में एक बृहद् इतिहास ग्रंथ तैयार करके बेचारे प्रकाशक के मत्थे मढ़ दिया। कुछ टके मिल गये और वे इतिहास लेखक की श्रेणी में भी जा बैठे। चुपड़ी और दो-दो (पद्म० के पत्र—पद्म० शर्मा, 248)।

चुपड़ी खाना, -मिलना—(1) स्वादिष्ट भोजन मिलना। प्र० आपको तो चुपड़ी खाने को मिल जाये, और क्या।
(2) खूब लाभ होना। प्र० देखिए प्रयोग (1)।

चुप्पी साधना—कुछ न बोलना; टालना। प्र० का चुप साधि रहेउ बलवाना (तुलसी); बाबू जी ने तो ऐसी चुप्पी साध ली है कि समझ में ही नहीं आता कि वे क्या चाहते हैं।

चुभ जाना—हृदय को बहुत बुरा लगना। प्र० 'नौकर' शब्द इनके मन में चुभ गया (अमृत०—अ० ना०, 26)।

चुभती भाषा—हृदय को प्रभावित करनेवाली भाषा। प्र० उग्र भाषा के गुणी थे। चुभती भाषा में कोई बात कहना वे बखूबी जानते थे।

चुभती हुई आंख से देखना—मर्मभेदी दृष्टि से देखना। प्र० सिंगार ने उसे चुभती हुई आंखों से देखकर कहा—मैं तुमसे पूछने आया हूं कि माधुरी कहां है? (मान० (5)—प्रेमचंद, 52)।

चुभती हुई बात—तीखी या व्यंग्यपूर्ण बात। प्र० उसके बाद जगदम्बा सहाय की प्रगतिशील बेटी ने उसे चुभती हुई दो-चार बातें सुनाईं (बूंद०—अ० ना०, 88)।

चुभना—गहरा असर करना। प्र० भिक्षुणी की कहानी भोली कन्नगी के मन में चुभ गई (सुहाग०—अ० ना०, 117)।

चुराना-पचराना—चोरी करना। प्र० इस तरह चुरा-पचराकर कितने दिन काम चलाओगे?

चुर्र-मुर्र कर डालना—समाप्त कर देना; परास्त कर देना। प्र० तमाशाई तो समझे कि पहलवान आज़ाद को चुर्र-मुर्र कर डालेगा ×× (आज़ाद०—प्रेमचंद, 8)।

चुल्ल उठना, -बरना, चूल उठना—खुजलाहट होना। प्र० इंजेक्शन लेते ही मेरे सारे बदन में चुल्ल उठने लगी।

चुल्ल काटना—कुलबुलाहट होना। प्र० क्यों, तुम्हें भी चुल्ल काटने लगी?

चुल्ल बरना—दे० चुल्ल उठना।

चुल्ल मिटना, चूल मिटना—कामवासना तृप्त होना।

चुल्लुओं खून पीना, -लहू पीना—बहुत सताना। प्र० है यही काढ़ना कलेजे का, है यही चुल्लुओं लहू पीना (बोल०—हरिऔध, 160)।

चुल्लुओं रोना—बहुत अधिक रोना। प्र० हाय है धोना पड़ा मरजाद से, आज हमको चुल्लुओं रोना पड़ा (बोल०—हरिऔध, 161)।

चुल्लुओं लहू पीना—दे० चुल्लुओं खून पीना।

चुल्लू उछालना—बदनाम या बेइज्जत करना। प्र० वे लोग तो मेरे नाम पर चुल्लू उछालने के लिए तुले हुए हैं (अमृत०—अ० ना०, 509—510)।

चुल्लू भर पानी को भी न पूछना—बिलकुल काम न आना। प्र० अभी इस तरह पाल-पोस रहे हो कि एक दिन काम आएगा, मगर देख लेना, जो चुल्लू-भर पानी को भी पूछे (रंग० (1)—प्रेमचंद, 26)।

चुल्लू भर पानी देना—जलांजलि देना। प्र० भर सके तो क्या भला दम भर सके, दे सके जल भी न चुल्लू भर अगर (बोल०—हरिऔध, 160)।

चुल्लू भर पानी देनेवाला—जलांजलि देनेवाला; अंतिम समय काम आनेवाला या अंतिम संस्कार करनेवाला। प्र० बंस में कोई चिल्लू भर पानी देनेवाला, घर में दिया जलानेवाला भी नहीं रहता (गोदान—प्रेमचंद, 224)।

चुल्लू भर पानी में डूब मरना—बहुत लज्जित होना। प्र० मुंह में कालिख लगी कि नहीं? या अभी कुछ कसर बाकी है? डूब मरो सब के सब जाकर चुल्लू भर पानी में (मान० (1)—प्रेमचंद, 62)।

चुल्लू में उल्लू होना—(1) थोड़े में उबल पड़ना। प्र० क्यों न अपने आप उल्लूपन खुले, आप चुल्लू में हुए उल्लू अगर (बोल०—हरिऔध, 160)।
(2) थोड़े ही नशे से मतवाला हो जाना। प्र० देखिए प्रयोग (1)।

चुल्लू में समुद्र न समाना—छोटे में बड़ी चीज न समाना। प्र० इतनी बड़ी बात तुम्हारी समझ में नहीं आ सकती, कहीं चुल्लू में समुद्र समा सकता है?

चुल्लू-चुल्लू साधना—थोड़ा-थोड़ा बचाकर रखना। प्र० चुल्लू-चुल्लू साधने से एक दिन घर भर सकता है।

चुसकी लगाना, -लेना—स्वाद से थोड़ा-थोड़ा पीना। प्र० आप तो बड़ा चुसकी लगाकर शरबत पी रहे हैं।

चुसकी लेना—दे० चुसकी लगाना।

चुस्त भाषा—मंजी हुई; गठी हुई भाषा। प्र० जैनेन्द्रजी बड़ी चुस्त भाषा में लिखते हैं।

चुस्ती आना (भाषा में)—कसावट आना; निरर्थक शब्दों या अभिव्यक्ति का न रहना। प्र० एक बार और पढ़कर काट-छांट कर दो तो कहानी में चुस्ती आ जाये।

चूं करना, -चकार करना, -चरा करना—कुछ कहना; प्रतिवाद करना। प्र० वह जो कुछ करता या कहता था, वही कानून था, किसी को उसमें चूं करने की ताकत न थी (मान० (1)—प्रेमचंद, 185); × × × इसलिये उसने जरा चूं चरा नहीं की और दूसरे दिन सवेरे ही यहां से चला गया (अंधेरे०—राकेश, 347)।

चूं-चकार करना—दे० चूं करना।

चूं-चरा करना—दे० चूं करना।

चूं-चूं करना—कुछ कहना; दबे स्वरों में कुछ कहना या प्रतिवाद करना। प्र० मैंने सिनेमा जाने का कार्यक्रम स्थगित करने को कहा नहीं कि सब चूं-चूं करने लगे।

चूंदरी भी मैली न होना—विवाह हुए बहुत थोड़े दिन बीतना। प्र० अभी तो बेचारी की चूंदरी भी नहीं मैली हुई (मान० (1)—प्रेमचंद, 217)।

चूक पड़ना—भूल हो जाना। प्र० है हरिजन थैं चूक परी, जे कुछ आहि तुम्हारौ हरि (कबीर ग्रंथा०—कबीर, 135); बहुतै चूक परी अनजानत, कहा अबकैं पछिताने (सू० सा०—सूर, 4090)।

चूची-पीता—बहुत छोटा नादान बच्चा। प्र० वह क्या चूची-पीता है जो उसे समझ नहीं आया।

चूड़ियां ठंडी करना, -तोड़ना, -फोड़ना—पति के मरने पर स्त्री का अपनी चूड़ियां उतारना या तोड़ना। प्र० बहू की चूड़ियां ठंडी कर दो, नाउन।

चूड़ियां तोड़ना—दे० चूड़ियां ठंडी करना।

चूड़ियां पहन लेना—(1) पुरुष का कायर होना। प्र० जम लड़ें, दें पछाड़ जम को भी। लें पहन हाथ में न हम चूड़ी (चुभते०—हरिऔध, 97)।

(2) स्त्री का किसी के घर बैठ जाना। प्र० वह चूड़ियां पहनने को बिलकुल राजी नहीं है।

चूड़ियां पहनाना—विधवा स्त्री से विवाह करना।

चूड़ियां फूटना—विधवा हो जाना। प्र० उस बेचारी की चूड़ियां भी फूट गयीं, गोद भी सूनी हो गयी।

चूड़ियां फोड़ना—दे० चूड़ियां ठंडी करना।

चूड़ियां बंधाना, -बढ़ाना—हाथ से चूड़ियां अलग करना।

चूड़ियां बढ़ाना—दे० चूड़ियां बंधाना।

चूड़ियां मैली होना—लाज लगना, डर लगना। प्र० जब मरदों की वहां जाते चूड़ियां मैली होती हैं, तो औरत ही जायंगी (रंग० (2)—प्रेमचंद, 116)।

चूड़ियां सलामत रहना—सौभाग्य बना रहना। प्र० दूधों नहाओ, पूतों फलो, तुम्हारी चूड़ियां सदा सलामत रहें।

चूतड़ियों चलना—खिसक-खिसककर चलना। प्र० बच्चा अभी तक चूतड़ियों ही चलता है, खड़े होकर नहीं चलता?

चूतर के नीचे दबा बैठना—अपने कब्जे में कर रखना। प्र० आप सब कुछ अपने ही चूतर के नीचे दबाकर बैठ रहिए।

चूतर के पीछे लगे रहना—एक पल के लिए भी साथ न छोड़ना। प्र० तुम क्या हर समय मेरे चूतर के पीछे लगे रहते हो जी?

चूतर घिसना—खुशामद करना। प्र० तुम चूतर घिसते रहो पर मैं तुम्हें एक कौड़ी और देनेवाला नहीं हूं।

चूतर टिकना—कहीं कुछ देर बैठ पाना। प्र० कहीं तो उसका चूतर टिकता नहीं, वह काम कैसे करेगा।

चूतर टेकना, -लगाना—बैठना। प्र० जरा चूतर तो टेको कि खड़े-खड़े ही चले जाओगे?

चूतर ढंकने को न होना—अत्यन्त दरिद्र होना। प्र० उसके पास तो आप ही चूतर ढंकने को नहीं है, वह किसी और की क्या सहायता करेगा।

चूतर तोपना—वस्त्र पहनना। प्र० ढंग से चूतर तोपने तक का होश उसे नहीं रहता।

चूतर दिखाना—डरकर भाग जाना। प्र० वह तो तुम्हारी टेर पाते ही चूतर दिखाकर भाग जायगा।

चूतर पर छाप लगवाना—पीठ दिखाकर भागना। प्र० तुम कुछ भी कहो, कालू चूतर पर छाप लगवानेवाला जीव नहीं है।

चूतर पर डंडे मारकर—जबरदस्ती। प्र० मैं तो उसके चूतर पर डंडे मारकर उससे अपने रुपये वसूल लूंगा।

चूतर पर यमदूत के डंडे लगना—खूब मार पड़ना; कड़ा दंड मिलना। प्र० तुम्हारे चूतर पर यमदूत के डंडे लगेंगे न तब तुम्हारा दिमाग दुरुस्त होगा।

चूतर पर हल्दी लगना—किसी प्रकार विवाह होना। प्र० इतने दिनों से ब्याह टलता आ रहा था। किसी तरह राम-रांम करके चूतर पर हल्दी तो लगी।

चूतर पीटना, -बजाना—अत्यन्त प्रसन्न होना। प्र० बेटे के लौटने की खबर सुनते ही बूआ चूतर पीटने लगीं।

चूतर पोंछना—खुशामद करना; हर तरह की सेवा करना। प्र० कांग्रेसी मिनिस्टरों के चूतड़ पोंछ-पोंछ कर प्रेस दबा लिया, अब आंखें दिखाता है (झूठा० (2)—यशपाल, 364)।

चूतर बजाना—दे० चूतर पीटना।

चूतर मटकाकर चल देना—किसी बात की अवहेलना करके चल देना। प्र० हम वहां खड़े बकत रह गये और ऊ चूतर मटकाय के चली गयीं।

चूतर मटकाना—कमर हिलाना; अभद्रता दिखलाना। प्र० यहां चूतर मत मटकाओ, जाओ, अपने घर का रास्ता लो।

चूतर में कांटा होना—कहीं स्थिर होकर बैठ न पाना। प्र० उसके चूतर में तो कांटा है, कहीं टिककर बैठता ही नहीं।

चूतर लगाना—दे० चूतर टेकना।

चूतर सिकोड़ना—धीरे-धीरे चलना। प्र० क्या इस तरह चूतर सिकोड़ रहे हो, जरा पैर उठाकर चलो।

चूतरों का लहू मरना-एक जगह जमकर रहने को बाध्य होना। प्र० वह अब कहीं जाने लायक नहीं रहा, उसके चूतरों का लहू मर गया है।

चूतिया बनाना-बेवकूफ बनाना। प्र० वाह, तुमने उस दिन मुझे अच्छा चूतिया बनाया। मुझे वहां बुलाकर खुद गायब हो गये।

चूतिया-चक्कर में—बेकार में; मूर्खता मे। प्र० अरे यार, मैं व्यर्थ के चूतिया-चक्कर में पड़ गया।

चून के बराबर नून खाना—अनुभवी होना; जीवन देखे हुए होना। प्र० उनसे क्या तर्क करोगे? तुम्हारे खाये चून के बराबर तो उन्होंने नून खाया है।

चूना—टपका पड़ना; प्रकट होना। प्र० उन पर जनता की श्रद्धा चू पड़ी (मृग०—वृं० वर्मा, 295)।

चूना करना, -छूना-दिवालों पर चूने से सफेदी करना। प्र० मकान में चूना करवाकर ही जाना नहीं बाद में झंझट होगी।

चूना छूना-दे० चूना करना।

चूना पड़ना—बच्चों के पखाने की जगह कीड़ी हो जाना।

चूना फेरना—चूना से रंग करना। प्र० मेरी कोठरी में भी चूना फेरना है मिस्त्री।

चूना लगाना—बेवकूफ बनाना; धोखा देना। प्र० मैं चूना तुझे लगाऊंगी तू करनी का फल पायेगी (नूर०—भक्त, 54); कितने पुलिस-अफसरों को उसने चूना लगाया था (दे० दु०—शिव०, 75)।

चूने की डिबिया से बाहर निकलना—अनुभव प्राप्त करना; जानकारी करना। प्र० पहले चूने की डिबिया से बाहर तो निकल आते, तभी बढ़-बढ़ कर बोलते (दूधगाछ—दे० स०, 267)।

चूमकर छोड़ देना—(1) काम शुरू करके छोड़ देना। प्र० तुम्हारी यह बुरी आदत है कि कोई भी काम पूरा नहीं करते, बस चूमकर छोड़ देते हो।

(2) पूरा खाये बिना छोड़ देना। प्र० खाया क्या, बस जरा चूमकर छोड़ दिया।

चूमना-चाटना—प्यार करना। प्र० वहां चूमना-चाटना चलता रहता है, किसी को होश थोड़े ही रहता है।

चूर कर देना—(1) नष्ट कर देना। प्र० देवि! आज तुमने मेरी साधना चूर-चूर कर दी (चित्र०—भग० वर्मा, 26)।

(2) हिम्मत पस्त कर देना या थका डालना। प्र० अगर सचमुच दुःख उसने जाना होता—दुःख कैसे तोड़कर चूर-चूर करके रख देता है × × तो उसकी जबान ऐंठ जाती (नदी०—अज्ञेय, 43)।

चूर रहना या होना—(1) अत्यन्त व्यस्त होना। प्र० फुरसत मिली भी तो दिन रात इस फिकिर में चूर-चूर रहते हैं कि क्यों कर बिहिश्त की राह पावें (भट्ट नि०—बा० भट्ट, 126)।

(2) किसी चीज का बहुत प्रभाव होना (आमतौर पर बुरा)। प्र० वे तो जब देखो तब शराब के नशे में चूर रहते हैं।

(3) अत्यधिक थक जाना। प्र० फिर नियुक्त करनेवाले अफसर की कृपा से वे चूर भी ऐसे होते थे कि फुरसत होने पर चित पड़े रहने के अतिरिक्त कुछ न करते (शेखर० (2)—अज्ञेय, 36)।

चूर-चूर करना या होना—(1) नष्ट होना। प्र० चाहते हम जिसे रहे उसकी, हो गईं चूर चाहतें सारी (चुभते०—हरिऔध, 156)।

(2) चूर रहना या होना (3)

चूल उठना-दे० चुल्ल उठना।

चूल ढीली होना-परिश्रम के कारण बहुत थक जाना। प्र० इस समय मेरी चूलें ढीली हो रही हैं, मुझसे बात मत करो।

चूल बैठना—पर्याप्त होना; पूरा पड़ना। प्र० बंगालियों की बढ़ती से अली इस नतीजे पर आये कि बिना अंगरेजी के चूल न बैठेगी (चोटी०—निराला, 16)।

चूल मिटना—दे० चुल्ल मिटना।

चूल मिलाना, -से चूल मिलाना—ठीक-ठीक हिसाब बैठाना। प्र० मैं ऐसी चूल मिलाऊंगी कि भांप न कोई पायेगा (नूर०—भक्त, 53); चूल से चूल हैं मिला देते, रंगतें ढंग से बदलते हैं (चुभते०—हरिऔध, 128)।

चूल से चूल मिलाना—दे० चूल मिलाना।

चूल हिल जाना या हिला देना—कमजोर हो जाना या कर देना। प्र० इस वर्ष के बड़े घाटे ने लक्ष्मण बाबू के रोजगार की चूलें हिला दीं।

चूल्हा अगोरना—खिलाने के लिए चौका लिए प्रतीक्षा करना। प्र० यह भी कोई नियम है कि जब तक एक न बज जाय, जगह से न उठो। कब तक कोई चूल्हा अगोरता रहे (गोदान—प्रेमचंद, 179)।

चूल्हा अलग होना, -फूटना—बंटवारा होना। प्र० कर्नल साहब ने न जाने कितने नाते-रिश्तेदार और मेल-जोल के घरों में चूल्हे को फूटने से बचाया है (बूंद०-अ० ना०, 289)।

चूल्हा गरम होना—खाना बनना। प्र० हो सके तब किस तरह चूल्हा गरम, जब कि मूठी ही गरम होती नहीं (बोल०—हरिऔध, 164)।

चूल्हा चेतना या चेताना, -जलना, -झोंकना, -फूंकना—खाना बनने के लिए चूल्हे में आग जलायी जाना; खाना बनना या बनाना। प्र० मैं तुम्हारे लिए एक सुघड़ रसोईदारिन ठीक कर दूंगी, तब फिर तुम्हें चूल्हा फूंकने की तकलीफ न उठानी पड़ेगी (मा० मा० (1)—कि० गो०, 84); होरी ने लजाते हुए आज घर में चूल्हा न जलने की कथा कही (गोदान—प्रेमचंद, 178); तब कुछ पैसे मिलते, तब हमारे घर चूल्हा चेतता, मुंह निवाले लगते (अपनी०—उग्र, 37)।

चूल्हा जलना—दे० चूल्हा चेतना।

चूल्हा झोंकना—दे० चूल्हा चेतना।

चूल्हा ठंडा करना या होना—चूल्हे की आग बुझाना या बुझना। प्र० आशा थी, बहू ने रोटी बना रखी होगी, मगर देखा तो यहां चूल्हा ठंडा पड़ा

हुआ था (मान० (1)–प्रेमचंद, 6)।

चूल्हा तोड़ना–गृहस्थी बिगाड़ना। प्र० पर क्या हम चूल्हे तोड़ते हैं (बोने०–रां० रा०, 39)।

चूल्हा न जलना–(1) बहुत दरिद्र होना। प्र० उनके घर में तो अवसर ही चूल्हा नहीं जलता।

(2) भोजन न बनना। प्र० क्या बात है बहू, आज चूल्हा नहीं जलेगा?

चूल्हा न्योतना—घर के सब आदमियों को भोजन का न्यौता देना। प्र० ताई और मौसी के यहां चूल्हा न्योत आना।

चूल्हा फूंकना—दे० चूल्हा चेतना।

चूल्हा फूटना—दे० चूल्हा अलग होना।

चूल्हा बंद होना, चूल्हे का उपास करना, -पर तवा न होना, -में चूहे दौड़ना—अन्न की कमी के कारण खाना न बनना। प्र० भैरो बेचारे के यहां आज कई दिनों से चूल्हा बंद पड़ा है।

चूल्हा सौंप देना—खाना बनाने का काम सौंप देना। प्र० × × तुमने इस बेचारी को आते ही चूल्हा सौंप दिया (एक म्यान०–नानक०, 137)।

चूल्हा-चक्की-गृहस्थी का काम। प्र० औरत बेचारी रात-दिन चूल्हे-चक्की में जुती रहे, फिर भी वह निकम्मी ही समझी जाती है (प्रेमा०–प्रेमचंद, 432)।

चूल्हा-चौका करना–घर-गृहस्थी का काम करना। प्र० बेचारी बाहर का काम भी करती है, चूल्हा-चौका भी करती है। और क्या चाहिए?

चूल्हे का उपास करना—दे० चूल्हा बंद होना।

चूल्हे पर तवा न होना—दे० चूल्हा बंद होना।

चूल्हे पर नजर होना—भोजन मिलने की प्रतीक्षा होना। प्र० तीन बज रहे थे, सबकी भूख कड़कड़ा गयी थी, सभी की नजर चूल्हे पर थी।

चूल्हे में चूहे दौड़ना—दे० चूल्हा बंद होना।

चूल्हे में जलना, -सिर झोंकना—खाना बनाने का परिश्रम करना। प्र० बेचारी चम्पा को चूल्हे में जलना और चक्की में पिसना पड़ता (मान० (7)–प्रेमचंद, 215–216)।

चूल्हे में जाना, -पड़ना—नष्ट होना; जहन्नुम में जाना। प्र० चल तू भी चूल्हे में जा और जोगी भी (भा० ग्रं० (1)–भारतेन्दु, 24); जिस पुरुष जाति में शशि जैसी स्त्री की कद्र नहीं होगी, वह पड़े चूल्हे में (शेखर० (2)–अज्ञेय, 70)।

चूल्हे में जाय चाहे भाड़ में—कितना ही बड़ा नुकसान क्यों न हो। प्र० × × इन्हें क्या परवा है, चाहे कोई चूल्हे भाड़ में जाय (प्रेमा०–प्रेमचंद, 29)।

चूल्हे में डालना–नष्ट करना; छोड़ देना। प्र० अर्जी दो, टिकट लगाओ, पंचायतन खों चूल्हे में डारी (झांसी०–वृं० वर्मा, 150)।

चूल्हे में पड़ना—दे० चूल्हे में जाना।

चूल्हे में सिर झोंकना—दे० चूल्हे में जलना।

चूल्हे लगना—चूल्हे में पड़ना। प्र० चूल्हे लगे ऐसी पढ़ाई-लिखाई।

चूल्हे से आग भागना—घर में खाना न बनना। प्र० जिस घर में क्लेश रहे, चूल्हे से भागती है आग, घड़े से दौड़ता है पानी (दूधगाछ–दे० स०, 387)।

चूल्हे से निकलकर भट्ठी में पड़ना, -भाड़ में पड़ना—एक छोटी विपत्ति से बचकर बड़ी में पड़ना। प्र० भैया यहां तो बुरी गति है, चूल्हे से निकलकर भट्ठी में पड़ गये।

चूल्हे से निकलकर भाड़ में पड़ना—दे० चूल्हे से निकलकर भट्ठी में पड़ना।

चूल्हे-दुआर तक—घर के एकदम भीतर तक। प्र० क्या ज़रूरत है कि हर आदमी को चूल्हे-दुआर तक बुलाया जाय।

चूल्हे-भाड़ में जाना, -पड़ना—नष्ट हो जाना। प्र० जायदाद गयी चूल्हे भाड़ मा–× × (अमृत०–अ० ना०, 502)।

चूल्हे-भाड़ में पड़ना—दे० चूल्हे-भाड़ में जाना।

चूस लेना—सार खींच लेना; किसी के पास का सब कुछ हथिया लेना। प्र० यह आपको चूसकर, निस्सत्व बनाकर, जयपुर का पल्ला पकड़ेगा (त्रिप०–प्रेमी, 97)।

चूहों का डंड पेलना, -की कबड्डी होना—घर में भोजन का अभाव होना। प्र० पर चुनार में अक्सर चूहे डंड ही पेला करते थे, या जजमानी से भिक्षा मिल जाती थी, या मेरी आई किसी की मजूरी कर कूट-पीसकर लाती थी (अपनी०—उग्र, 26)।

चूहों की कबड्डी होना—दे० चूहों का डंड पेलना।

चें बोल जाना—हिम्मत पस्त हो जाना। प्र० यार! मुझसे दूने तो हो, फिर भी चें बोल गये (कर्म०–प्रेमचंद, 315)।

चेक काटना—चेक लिखकर देना। प्र० तुम कल आना, मैं चेक काट दूंगा।

चेतना को छूना—चेतना को प्रभावित करना। प्र० वह बात आज हमारी चेतना को छू चुकी है (दूधगाछ–दे० स०, 409)।

चेतना को मृत्यु सूंघ जाना—चेतना न रह जाना। प्र० वह चुप थी जैसे उसकी चेतना को भी मृत्यु सूघ गयी हो (चेतन–अश्क, 90)।

चेतना भरना–उत्साहित करना। प्र० इस आंदोलन में यदि नयी चेतना न भरी जा सकी तो इसका चलना मुश्किल है।

चेतावनी देना—सावधान करना। प्र० मैंने तुम्हें अंतिम बार चेतावनी दे दी है, आगे तुम्हारी जो मर्ज़ी आये करो।

चेन टूट जाना—किसी काम या बात की शृंखला टूट जाना। प्र० अब तो काम की चेन टूट गयी है, फिर से नये सिरे से चालू करना होगा।

चेपी लगाना—कागज़ का टुकड़ा चिपकाना। प्र० इन टूटे शीशों पर चेपी लगा दो तो फिलहाल काम चल जायगा।

चेमेगोइयां—चर्चा; जनानी बातचीत। प्र० दोपहर आयी, गली महल्ले पुरुषों से प्रायः सूने हुए, स्त्रियों की चेमेगोइयां बढ़ीं (अमृत०–अ० ना०, 365)।

चेरी—अनुगामिनी। प्र० कथा जो कहै आइ पिय केरी। पांवरि होउं जनम भरि चेरी (पद०–जायसी, 31/2); सूरदास-स्वामी जस प्रगट्यौ, ज़ानी जनम-जनम की चेरी (सू० सा०–सूर, 25[illegible]); आंखि ही मेरी पै चेरी भई लखि फेरी फिरैं न सुजान की घेरी (घन० कवित्त–घना०; 201)।

चेला करना—अनुगामी बनाना । प्र० आपने तो सभी लड़कों को चेला कर रखा है, आपकी क्या बात है ।

चेला मूड़ना—बेवकूफ बनाना । प्र० आयाढ़ी को चेला मूड़ने वाले गोसाइयों के दिन फिरते हैं (प्र० पी०–प्र० ना० नि०, 104) ।

(2) चेला बनाना । प्र० हज़रत निज़ामुद्दीन सूफी-संप्रदाय के पक्के मुवल्लिग फ़क़ीर थे × × मुरीद बनाना या चेले मूड़ना इनका धार्मिक व्यवसाय था (पद्म पराग–पद्म० शर्मा, 191) ।

चेले-चपाड़े—चेले । प्र० उन्होंने खूब चेले-चपाड़े जुटा रखे हैं ।

चेहरा उठना या उठाना—नियमपूर्वक पूजन आदि के उपरांत किसी देवी-देवता का मुखौटा लगाना । प्र० पंचमी के दिन काली जी का चेहरा उठेगा, जुलूस निकलेगा ।

चेहरा उतरना—लज्जा, चिन्ता, रोग, शोक आदि के कारण चेहरे का निस्तेज होना; उदास होना । प्र० गोमती का चेहरा उतर गया—तो मिल चुके ? (गोदान–प्रेमचंद, 180) ।

चेहरा कस जाना—चेहरे पर असंतोष या क्रोध का भाव स्पष्ट उभरना । प्र० सुनकर लाल साहब का चेहरा कस गया (अमृत०–नागर, 500) ।

चेहरा खिंचा होना—क्रोध, चिन्ता आदि से मुख पर खिंचाव आना । प्र० शेखर को देखते ही वे खिंचे हुए चेहरे कुछ ढीले पड़े, माँ की आंखों में आंसू आ गये और पिता एकदम से लौटकर ऊपर चले गये (शेखर० (1)–अज्ञेय, 107) ।

चेहरा खिल उठना या खिला होना—चेहरे पर प्रसन्नता का भाव आना । प्र० आज उनका चेहरा कुछ खिला हुआ था (मान० (८)–प्रेमचन्द, 27) ।

चेहरा गवाही देना—चेहरे से किसी बात का प्रकट होना । प्र० तुम्हारा चेहरा गवाही दे रहा है कि तुम क्या करके आये हो ।

चेहरा गुलनार हो जाना—बहुत खुश हो जाना । प्र० मकतबखाने में लड़कों के चेहरे गुलनार हो गये (आज़ाद०–प्रेमचन्द, 62) ।

चेहरा चमकने लगना—प्रसन्न होना या मुंह पर प्रसन्नता झलकना । प्र० बेटे की सफलता का समाचार सुनते ही उनका चेहरा चमकने लगा ।

चेहरा चौदहां होना—(1) चेहरा खिल उठना । प्र० मुझे देखते ही उनका चेहरा चौदहां हो गया ।

(2) चेहरा पिटा होना (व्यंग्य) । प्र० देखिए प्रयोग नं० (1) ।

चेहरा जर्द पड़ना, -पीला पड़ना—लज्जा, भय इत्यादि के कारण चेहरे का रंग पीला पड़ जाना । प्र० ओंकारनाथ का चेहरा ज़र्द पड़ गया (गोदान–प्रेमचन्द, 68); मोती का चेहरा पीला पड़ गया (झांसी०–वृं० वर्मा, 281) ।

चेहरा ढीला होना—चेहरे से क्रोध आदि भाव का दूर होना । प्र० शेखर को देखते ही वे खिंचे हुए चेहरे कुछ ढीले पड़े, मां की आंखों में आंसू आ गये, और पिता एकदम लौटकर ऊपर चले गये (शेखर० (1)–अज्ञेय, 107) ।

चेहरा तमतमा उठना—क्रोध से मुख लाल हो जाना । प्र० क्यों म्यां—चेहरा क्यों तमतमाया हुआ है, ददुआ से लड़े या भाभी से (टेढ़े०–भग० वर्मा, 17) ।

चेहरा दिखाने आना—ज़रा देर नाम करने के लिए आना । प्र० चेहरा दिखाने आने की क्या ज़रूरत थी, मत आते ।

चेहरा दिखाने लायक न रखना या न रहना—अत्यन्त लज्जाजनक स्थिति में होना । प्र० मैं तो बाबूजी को चेहरा दिखलाने लायक भी न रही ।

चेहरा नीला पड़ जाना—(1) आकृति से भय, उद्विग्नता, लज्जा आदि प्रकट होना । प्र० वह बहुत घबड़ाने लगा, उसके हाथ-पांव सुन्न होने लगे, चेहरा नीला पड़ गया ।

(2) सजीवता के लक्षण नष्ट होना । प्र० उसका चेहरा नीला पड़ने लगा, सांस अवरुद्ध होने लगी ।

चेहरा पथरा जाना—चेतना के चिह्न लुप्त होना । प्र० देखते-देखते चेहरा पथरा गया ।

चेहरा पहनाना—किसी के वास्तविक रूप को बदलकर दूसरा रूप देना । प्र० वह जो है उसे वही रहने दो न, भलमनसाहत का चेहरा पहनाने की कोशिश क्यों करते हो ?

चेहरा पीला पड़ना—दे० चेहरा जर्द पड़ना ।

चेहरा फक् हो जाना, -फीका फक् हो जाना, चेहरे का चिराग बुझ जाना, -पानी ढल जाना, -रंग उड़ जाना, -रंग उतर जाना, -रंग फक् हो जाना, -फीका हो जाना—भय आदि के कारण मुख का कांतिहीन होना । प्र० निन्नी का चेहरा लाल हो गया और लाखी का फक् (मृग०–वृं० वर्मा, 204) ।

चेहरा फीका फक् हो जाना—दे० चेहरा फक् हो जाना ।

चेहरा बदलना—रूप बदलना । प्र० रंग आदि करवाकर उन्होंने मकान का चेहरा ही बदल दिया है ।

चेहरा बिगड़ना—मुंह उदास होना । प्र० आज तुम्हारा चेहरा ऐसा बिगड़ा हुआ क्यों है ?

चेहरा बिगाड़ देना—मारते-मारते बुरा हाल करना । प्र० तुम चुप रहो नहीं तो मैं तुम्हारा चेहरा बिगाड़ दूंगा ।

चेहरा बुझ जाना—चेहरे से उत्साह या खुशी के भाव का एकदम गायब हो जाना । प्र० प्रभा का नाम सुनते ही अम्मा का चेहरा जैसे बुझ गया (सारा०–यादव, 130) ।

चेहरा भरभरा आना—ज्वर का ताप आने के पूर्व चेहरे का रूप थोड़ा बदल जाना । प्र० चेहरा भरभरा गया है, लगता है बुखार आयेगा ।

चेहरा भांप लेना—चेहरा देखकर समझ जाना । प्र० मैंने उसी दिन उसका चेहरा भांप लिया था ।

चेहरा मुरझाना—उदास होना । प्र०—× × उसकी चर्चा होने पर उसका चेहरा इस तरह मुरझा क्यों गया है (अंधेरे०–राकेश, 43) ।

चेहरा लाल होना—लज्जा या क्रोध के कारण मुंह का लाल हो जाना । प्र० सुरेश की बातें सुन उसकी नजरें झुक गयीं, चेहरा लाल हो गया ।

चेहरा लिखाना फौज में नाम लिखाना।

चेहरा सफेद पड़ जाना—भय के कारण चेहरे का रंग सफेद हो जाना। प्र० बाबूजी का नाम सुनते ही उसका चेहरा सफ़ेद पड़ गया।

चेहरा स्याह पड़ना—दुःख, चिन्ता, अपमान या भेद खुलने आदि के कारण मुंह का फक् हो जाना। प्र० उस स्थान पर हठात् कमला को देखकर नीलिमा का मुंह एकदम स्याह-सा पड़ गया (बौने०—रां० रा०, 171)।

चेहरा हरा होना—(1) चेहरे पर ताजगी आना। प्र० क्यों महाराज जब से मैं आया हूं, मेरा चेहरा कुछ हरा हुआ है (गबन—प्रेमचंद, 189)।

(2) प्रसन्न होना। प्र० चिट्ठी पढ़ते ही उसका चेहरा हरा हो गया।

चेहरा-मोहरा चेहरे की बनावट। प्र० चेहरा-मोहरा तो अच्छा ही है, खाली रंग जरा दबता है।

चेहराशाही—बादशाह का मुंह छपा हुआ रुपया। प्र० कितने चेहराशाही होंगे तुम्हारे पास?

चेहरे का उतार चढ़ाव देखना—मुंह के भाव-परिवर्तन को देखना। प्र० मैं तो दूर बैठा उसके चेहरे का उतार-चढ़ाव देखता रहा।

चेहरे का कहना—चेहरे से साफ प्रकट होना। प्र० तुम फिर झूठ बोल रहे हो, चेहरा कहे देता है (मान० (7)—प्रेमचंद, 47)।

चेहरे का चिराग बुझ जाना—दे० चेहरा फक् हो जाना।

चेहरे का पानी उड़ जाना, -उतर जाना, -ढल जाना—चेहरा फक् हो जाना; चेहरा श्रीहीन हो जाना। प्र० जुआना चुप रही। उसके चेहरे का पानी फिर ढल गया (सात०—नागर, 148)।

चेहरे का पानी उतर जाना—दे० चेहरे का पानी उड़ जाना।

चेहरे का पानी ढल जाना—दे० चेहरे का पानी उड़ जाना।

चेहरे का रंग उड़ जाना—दे० चेहरा फक् हो जाना।

चेहरे का रंग उतर जाना—दे० चेहरा फक् हो जाना।

चेहरे का रंग पलटना, -की रंगत बदल जाना—चेहरे का भाव बदलना। प्र० उसे देखते ही भाभी के चेहरे का रंग पलट गया।

चेहरे का रंग फक् हो जाना—दे० चेहरा फक् हो जाना।

चेहरे का रंग फीका हो जाना—दे० चेहरा फक् हो जाना।

चेहरे की रंगत बदल जाना—दे० चेहरे का रंग पलटना।

चेहरे पर एक काली रेखा दिखाई देना—चेहरे से निराशा, आशंका या दुःख का आभास मिलना।

चेहरे पर कराह की लकीर खिंच जाना—चेहरे से आंतरिक दुःख प्रकट हो जाना। प्र० खबर सुनकर हाजी साहब के चेहरे पर एक बेसाखता कराह की लकीर खिंच गयी (अमृत०—नागर, 662)।

चेहरे पर खून उतरना—गुस्सा आना। प्र० मैं देख रहा था कि महाराजा साहब के चेहरे पर खून उतर रहा है (एक०—मुल्क०, 21)।

चेहरे पर खोल चढ़ाए रहना—बनावटी भाव रखना। प्र०—दूसरी तरफ मैं था जो लोगों की उपस्थिति में चेहरे पर एक खोल चढ़ाए रखता था, ××× (अंधेरे०—राकेश, 115)।

चेहरे पर जनानापन बरसना—चेहरे से स्त्रैण लगना। प्र० किसी के चेहरे को देखकर कोई कहता है कि इनके चेहरे पर जनानापन बरस रहा है (सा० सु०—बा० भट्ट, 14)।

चेहरे पर जर्दी छाना—चेहरा निस्तेज, श्रीहीन होना। प्र० शायद एक सप्ताह से बाल नहीं बने थे। चेहरे पर जर्दी छायी थी (मान० (4)—प्रेमचंद, 307)।

चेहरे पर तस्वीर उतरना—चेहरे से भाव प्रकट होना। प्र० इसी तरह धन देख चोर, साह, लोभी, कदर्य के मन में जुदे-जुदे भाव उदय होते हैं जिनकी तस्वीर प्रत्येक के चेहरे पर उतर आती है (सा० सु०—बा० भट्ट, 15)।

चेहरे पर धूल उड़ना, -उधियाना—मुख मलीन होना। प्र० मैं जाता दीन-हीन-मलीन कपड़े पहने—धूल उड़ती चेहरे पर (अपनी०—उग्र, 98)।

चेहरे पर धूल उधियाना—दे० चेहरे पर धूल उड़ना।

चेहरे पर नूर बरसना—बहुत सुन्दर और रुआबदार होना। प्र० जी हां! क्या रुतबा पाया है, भई वाह! नूर बरसता है चेहरे पर! (नये हाथ—वि० रस्तोगी, 21)।

चेहरे पर बल पड़ना—चेहरे से घृणा या क्रोध मालूम पड़ना। प्र० उनकी शक्ल देखते ही आपके चेहरे पर बल क्यों पड़ जाता है?

चेहरे पर बारह बजना—चेहरा घबराया हुआ होना। प्र० लीला देखकर मन-ही-मन मुस्कुराती है—चेहरे पर बारह बज गए (परती०—रेणु, 270)।

चेहरे पर भूसा उड़ना—चेहरे से नीरसता टपकना। प्र० तुम रूखे-फीके आदमी, चेहरे पर भूसा उड़ रहा है (आज़ाद०—प्रेमचंद, 163)।

चेहरे पर मक्खी भिनभिनाना—बहुत आलसी होना। प्र० तुम्हारी यही गति रही तो चेहरे पर मक्खियां भिनभिनायेंगी।

चेहरे पर मुर्दनी छाना, -फिरना, -हवा फिरना—बहुत उदास या दुःखी होना। प्र० आपके चेहरे पर ऐसी मुर्दनी क्यों छायी हुई है?

चेहरे पर मुर्दनी फिरना—दे० चेहरे पर मुर्दनी छाना।

चेहरे पर मैल आना—चेहरे से किसी तरह की कटुता या दुर्भाव प्रकट होना। प्र० ×× मगर चेहरे पर मैल नहीं आने दिया (गोदान—प्रेमचंद, 210)।

चेहरे पर राख पुत जाना—प्रतिकूल बात के कारण चेहरा स्याह हो जाना। प्र० बार्कर के चेहरे पर अचानक राख पुत गई (परती०—रेणु, 348)।

चेहरे पर रियासत बरसना—चेहरे से रुआब प्रकट होना।

चेहरे पर लपट चढ़ना—क्रोधित होना। प्र० बड़े कुंवरजी अब बोले। चेहरे पर लपटें चढ़ने लगीं (अमृत०—नागर, 502)।

चेहरे पर लालिमा दौड़ जाना—चेहरे पर लज्जा का हलका-सा भाव आ जाना।

चेहरे पर शिकन न आना—चेहरे पर दुःख या लज्जा आदि का कोई भाव न आना। प्र० इनका सुपरिण्टेण्डेण्ट इन्हें गालियां देता है लेकिन क्या

मजाल है कि उनके चेहरे पर शिकन तक आ जाय (भूले०–भग० वर्मा, 264)।

चेहरे पर सुर्खी आना—स्वास्थ्य लाभ के कारण चेहरा स्वस्थ दिखना।

चेहरे पर स्याही पुतना, -फिरना—कलंक लगना; अपमान होना। प्र० जिन शिकायतों का आधार लिया गया था, उनमें राजा का हाथ न था, फलतः चेहरे पर स्याही न फिरी (चोटी०–निराला, 49)।

चेहरे पर स्याही फिरना—दे० चेहरे पर स्याही पुतना।

चेहरे पर हंसी खेल जाना—हंसी आ जाना।

चेहरे पर हवा फिरना—दे० चेहरे पर मुर्दनी छाना।

चेहरे पर हवाइयां उड़ना—चेहरे पर घबराहट के चिह्न आना। प्र० पंचों के मुंह पर हवाइयां उड़ रही हैं (मैला०–रेणु, 117)।

चेहरे पर हौलदिली बोलना—चेहरे से घबराहट प्रकट होना। प्र० रमेश, छैलू, हर्रो, छोटे बड़े सभी के चेहरों पर हौलदिली बोल रही थी (अमृत०–नागर, 340)।

चेहरे से खून चूना, -टपकना—चेहरे का खून की अधिकता के कारण एकदम लाल होना।

चेहरे से खून टपकना—दे० चेहरे से खून चूना।

चेहरे से टपकना—चेहरे से प्रकट होना। प्र० वह आत्माभिमान जो उस समय भी उनके मुख से टपक रहा था, क्या करुणा के हृदय से कभी विस्मृत हो सकता था (मान० (1)–प्रेमचंद, 38)।

चेहरे से नकाब उतर जाना—वास्तविकता प्रकट होना। प्र० ज़रा सब्र कीजिए, देखिए उसके चेहरे से कैसा नकाब उतरता है।

चैन उड़ाना—आनंद करना।

चैन की छनना, -बंशी बजाना—खूब मौज से दिन बिताना। प्र० चार-पांच हजार बहुत होते हैं। अपने घर सेठ की तरह बैठा हुआ चैन की बंशी बजाऊंगा (रंग० (1)–प्रेमचंद, 94)।

चैन की बंशी बजाना—दे० चैन की छनना।

चैन की नींद सोना, -से बैठना—निश्चिन्त होना। प्र० अब मैं चैन की नींद सो सकूंगा।

चैन की रोटी खाना—सुख से जीवन बिताना। प्र० तुम चैन की रोटी खाओ, तुम्हें क्या।

चैन की सांस लेना—किसी भारी विपत्ति या काम के बाद आराम मिलना। प्र० तुम इतना काम करने का भरोसा दे दो तो मैं चैन की सांस लूं।

चैन देना—सांत्वना देना। प्र० मेरी समझ में नहीं आ रहा है कि तुम्हें चैन कैसे दूं।

चैन न आना, -पड़ना—शान्ति न मिलना। प्र० जब तक राकेश लौटकर नहीं आता तब तक घर में किसी को चैन नहीं पड़ेगा।

चैन न पड़ना—दे० चैन न आना।

चैन से कटना—सुख से समय बीतना। प्र० तब भी तुम्हारी तो चैन से कटती है (कामना–प्रसाद, 55)।

चैन से बैठना—दे० चैन की नींद सोना।

चैलेंज देना—मुकाबले के लिए ललकारना। प्र० मैंने उसे चैलेंज दे दिया है, अब उसकी जो मर्जी हो करे।

चोंका पीना—स्तनपान करना।

चोंगा—बेवकूफ। प्र० आप भी बस चोंगा ही रहे (आज़ाद०–प्रेमचंद, 543)।

चोंगा पहनना या पहनाना, जामा पहनना या पहनाना—किसी काम या बात को स्वीकार करना या करवाना। प्र० तो अब आपने भी चोंगा पहन लिया?

चोंच—महाबुद्धू। प्र० ब्रजकिशोर—पूरे चोंच ही रहे। उसे नौकर रक्खा, उसकी कन्या के आशिक़े ज़ार बने बैठे हो (भिखा०–कौशिक, 40)।

चोंच खोलना—बोलना। प्र० सबके पहिले लाला साहब उठे और बन्दगी करके यों चोंच खोली (भा० ग्रं० (3)–भारतेन्दु, 861)।

चोंच चलाना, -होना—कहासुनी होना; लड़ाई-झगड़ा होना। प्र० दिन में दो-एक बार मां-बेटे में चोंचें हो जाती थीं (मान० (4)–प्रेमचंद, 260)।

चोंच बंद करना या कराना—बोलती बंद करना या होना। प्र० बस-बस, बहुत हुआ। अब अपनी चोंच बंद करो नहीं तो ठीक न होगा।

चोंच बदलौवल—प्रेम। प्र० दोनों को और कुछ काम तो है नहीं, बस चोंच बदलौवल किया करते हैं।

चोंच सम्हालकर बोलना, -सम्हालना—अदब और नियंत्रण से बात करना। प्र० तुम चोंच सम्हालकर बोलो नहीं तो मैं धक्के देकर निकाल बाहर कर दूंगा।

चोंच सम्हालना—दे० चोंच सम्हालकर बोलना।

चोंच होना—दे० चोंच चलना।

चोंचला करना—इतराना; अतिरिक्त लाड़ करना या चाहना। प्र० लड़कियां बचपन में लड़कों से ज्यादा चोंचलें करती हैं (मान० (4)–प्रेमचंद, 176)।

चोंचला बघारना—इतराना। प्र० बस, बस! बहुत चोंचले न बघारो (मा–कौशिक, 344)।

चोंचलेबाजी—झूठा दिखावा। प्र० ×× चन्दा का वह सारा प्यार कुछ नहीं, एक कॉकेटरी एक चोंचलेबाजी था (उखड़े०–यादव, 247)।

चोंचें लड़ाना—(1) झगड़ा करना। प्र० ×××× तुम दोनों गुरु-शिष्य चोंचें क्यों लड़ाने लग गये (एक म्यान०–नानक०, 134)। (2) प्रेम करना।

चों-चों—कहासुनी; तर्क। प्र० शरद ने थोड़ी देर तो दोनों की चों-चों का आनन्द लिया (उखड़े०–यादव, 277)।

चोंचों का मुरब्बा—बहुत-सी चीजों का मिला-जुला रूप। प्र० यह फ़िल्म है कि चों-चों का मुरब्बा।

चोखे में होना—मौज में होना; लाभ में होना। प्र० भाई, तुम तो हर तरह से चोखे में ही रहे।

चोट आना, -उठाना, -सहना—जख्मी होना। प्र० पीछे रहकर काम करने के लिए वह तैयार है पर सैनिकों की टुकड़ी में शामिल होकर चोट

उठाने के लिए नहीं।

चोट उठाना—दे० चोट आना।

चोट उभरना—चोट लगे हुए अंग में फिर से दर्द उठना। प्र० कल से चोट फिर उभर आयी है।

चोट करना, -चलाना, -बिताना—प्रहार करना (शब्दों या कार्य से)। प्र० घूंघट ओट चितै घनआनंद, चोट बितै अंगूठाहि दिखावै (घन० कवित्त–घना०, 190); उनसे मेरी कई साल से दुश्मनी है। तब से वह मुझ पर बराबर चोट करते चले आते हैं (गु० नि०–बा० मु० गु०, 503)।

चोट की चलना, -होना, -चलना—आपस में कहासुनी या मनोमालिन्य होना। प्र० जाति के पांचवें सवारों में और उनमें जिन्हें कहें बरतर देखकर चोट बे तरह चलती, चोट है लग रही कलेजे पर (चुभते०–हरिऔध, 73)।

चोट की होना—दे० चोट की चलना।

चोट खाना—(1) किसी आघात का प्रभाव होना। प्र० नीलिमा ने कुछ चोट खाये स्वर में उससे कहा (अंधेरे०–राकेश, 106)।

(2) मार खाना। प्र० मेरे हाथ की चोट तुमने अभी तक खाई नहीं है।

चोट खाई नागिन, -खाया सांप—अत्यन्त क्रोधित। प्र० महबूबा चोट खाई नागिन-सी तड़प उठी (सात०–नागर, 150)।

चोट खाया सांप—दे० चोट खाई नागिन।

चोट खाली जाना—निशाना ठीक न बैठना। प्र० उसकी दूसरी चोट भी खाली गयी।

चोट चलना—दे० चोट की चलना।

चोट चलाना—दे० चोट करना।

चोट पर आना—वार सहने के लिए तैयार होना। प्र० वह भी इस समय चोट पर आ गया है।

चोट पर चढ़ाना—बढ़ावा देना। प्र० लुत्तो ने इसी बीच सरवन बाबू को चोट पर चढ़ाया (परती०–रेणु, 325)।

चोट पर चोट लगना—मुसीबत पर मुसीबत आना। प्र० उन पर तो एक के बाद एक चोट लगती ही जा रही है।

चोट पहुंचाना—हृदय को दुःख देना। प्र० तुम क्यों मां को चोट पहुंचाना चाहते हो?

चोट बचाना—प्रहार बचाना। प्र० मैं बड़ी मुश्किल से चोट बचा सका।

चोट बिताना—दे० चोट करना।

चोट लगना या लगाना—मानसिक आघात पहुंचना या पहुंचाना। प्र० कहीं ऐसा न हो कि महाकवि के स्वाभिमान को चोट लगे।

चोट सहना—दे० चोट आना।

चोट होना—झगड़ा होना। प्र० बहुत रोकने पर भी दोनों में एक चोट हो ही गयी।

चोटियां नोची जाना—अपमान-दुर्गति होना। प्र० नीच को तो बिठा लिया सिर पर, ऊंच की चोटियां गई नोचीं (चुभते०–हरिऔध, 62)।

चोटी कट जाना या कटवाना—इज्जत नष्ट होना। प्र० चोट खा वह ठाट चकनाचूर हो, चाह से जिसकी कि चोटी कट गई (चुभते०–हरिऔध, 117)।

चोटी का—सर्वोत्तम; श्रेष्ठ। प्र० हिन्दी के कुछ प्रसिद्ध एवं चोटी के आलोचकों का मत है कि हिन्दी का रीति कालीन साहित्य × × पूर्व-मध्य-कालीन राधा-कृष्ण-प्रधान भक्ति की लहर का स्वाभाविक परिणाम है (कबीर–ह० प्र० द्वि०, 5)।

चोटी का पसीना एड़ी तक (पर) आना—कठिन परिश्रम पड़ना। प्र० हम लोग दाने-दाने को मुंहताज हैं × × चोटी का पसीना एड़ी तक आता है तब भी गुजर नहीं होता (गोदान–प्रेमचंद, 19)।

चोटी की बात—श्रेष्ठ बात। प्र० चोंचलों से नाथ रीझेगा न तब, है गई यह बात चोटी की कही (बोल०–हरिऔध, 6)।

चोटी की लाज रखना—ब्राह्मणत्व या श्रेष्ठवर्ण का गर्व बनाए रखना। प्र० जब चटोरे बन कटा चोटी सके, किस तरह तब लाज चोटी की रखें (बोल०–हरिऔध, 6)।

चोटी खड़ी होना—साहस या क्रोध का आवेश होना। प्र० खौलता जिनकी रगों का है लहू, है दिलेरी बांट में जिनके पड़ी। डांट सुनकर सूरमापन से भरी, कब न उनकी हो गई चोटी खड़ी (बोल०–हरिऔध, 6)।

चोटी दबना, -पैरों के नीचे दबना—बेबस होना, लाचार होना। प्र० जिसे दुश्मनों के भय के मारे रात को नींद न आती हो × × जिसकी चोटी दूसरों के पैरों के नीचे दबी हो × × उसे मैं सुखी नहीं कहता (गोदान–प्रेमचंद, 15)।

चोटी पकड़कर नचाना, -पैर के नीचे रखना—पूरी तरह वश में कर लेना। प्र० निकल गयी सारी बुद्धिमानी, कल की लौंडिया चोटी पकड़ कर नचाने लगी? (निर्मला–प्रेमचंद, 44)।

चोटी पर पहुंचना—शीर्ष स्थान मिलना। प्र० यह न समझिए कि इस पेशे के जो लोग चोटी पर पहुंच गये हैं वे ज्यादा रोशन ख्याल हैं (प्रेमा०–प्रेमचंद, 249)।

चोटी पैर के नीचे रखना—दे० चोटी पकड़कर नचाना।

चोटी (दूसरे के) पैरों के नीचे दबना—दे० चोटी दबना।

चोटी मुड़ाना—मान-अपमान का ध्यान न करना। प्र० जहां देखी रोटी, वहां मुंड़ाई चोटी।

चोटी हाथ में होना—दबाव में होना; वश में होना। प्र० अगर रुपए न दिये तो ऐसी खबर लूंगा कि याद करेंगे। उनकी चोटी मेरे हाथ में है (गोदान–प्रेमचंद, 181)।

चोटी-एड़ी एक करना—प्राणपण से चेष्टा करना।

चोटीमार—ठीक अनुपात में। प्र० सब चीजें चोटीमार मिलाना।

(2) पैमाने के चौरस नहीं बल्कि पैमाने के ऊपर उठा हुआ; जितना अंट सके। प्र० देखो चोटीमार मत देना, बराबर से देना।

चोटें साफ करना—मारना। प्र० वाह भाई बांके, तुम सचमुच रुस्तम हो। बेचारे दर्जी पर सारी चोटें साफ कर दीं (आज़ाद०–प्रेमचंद, 9)।

चोन्हा करना—(1) नखरा करना।
(2) जानवरों का अपने मालिक के प्रति प्रेम प्रदर्शित करना।

चोप से बात करना—प्रेम से बात करना। प्र० ताई बड़े चोप से बातें कर रही थीं।

चोर का दिल आधा होना—चोर के मन में डर होना। प्र० जरूर दबा लेते; मगर चोर का दिल आधा होता है (मान० (4)–प्रेमचंद, 92)।

चोर का धन—छिपाकर रखी गयी प्रिय वस्तु। प्र० चोर के धन की तरह इसे कब तक छिपाकर रखोगी?

चोर की दाढ़ी में तिनका होना—कोई अपराध करनेवाले का अपनी ओर से ही शंकित होना। प्र० ब्रजकिशोर हंसकर बोले—चोर की दाढ़ी में तिनका (भिखा०–कौशिक, 186)।

चोर के घर छिछोर पैठना, -मोर पैठना, -पर मोर पड़ना—धूर्त से धूर्तता करना। प्र० मेरी थैली मिल गई। चोर के घर में छिछोर पैठा (रंग० (1)–प्रेमचंद, 289)।

चोर के घर मोर पैठना—दे० चोर के घर छिछोर पैठना।

चोर के बदले साव को दंड देना—दोषी के बदले निर्दोष को दंड देना। प्र० चोरनि छांड़ि छांड़ि कै डांडो उलटो धन को स्वामी (भा० ग्रं० (2)–भारतेन्दु, 578)।

चोर को पैर न होना—चोर में साहस न होना। प्र० पकड़कर उससे पूछ-ताछ करो, डराओ-धमकाओ। तुरन्त सब उगल देगा, चोर को पैर नहीं होते।

चोर खयाल—ऐसा विचार जिसे व्यक्ति छिपा कर रखना चाहता हो; कोई बुरा भाव। प्र० उसके मन में एक चोर ख्याल यह भी आ गया था कि टामस के आगरे में न मौजूद रहने पर वह लवमूल के साथ अपना मन बहलाने का मौका भी शायद पा जाए (सात०–नागर, 119)।

चोर पकड़ा जाना—किसी गुप्त या गूढ़ बात का पता चलना। प्र० इतने दिनों बाद, अब कहीं जाकर चोर पकड़ा गया है।

चोर पड़ना, -लगना—चोर का चीज़ें चुरा ले जाना। प्र० कल रात ज़मींदार के यहां चोर पड़ गया है।

चोर पर मोर पड़ना—दे० चोर के घर छिछोर पैठना।

चोर पैठना—मन में किसी शंका का होना। प्र० मेरे मन में तो उसी दिन से चोर पैठ गया है।

चोर बनना—अर्थ सम्बन्धी किसी गोलमाल के लिए उत्तरदायी ठहराया जाना। प्र० मैं तुम्हारे चक्कर में पड़कर व्यर्थ चोर नहीं बनना चाहता।

चोर लगना—दे० चोर पड़ना।

चोर से चोरी करने को और साव से जागते रहने को कहना—दोनों ओर होना; दोनों पक्षों को उकसाना। प्र० जा में विद्या नारदी, बिगरन देर न लाग, पैस चोर भुंसि स्वान को, कहत धनी सों जाग (वृं० स०–वृन्द, 103)।

चोर-आंख से देखना—छिपकर देखना; कनखी से देखना। प्र० तारा सिंह, ज्ञानचंद × × और गांव के मुसल्ली, जो कुछ दूर खड़े चोर-आंखों से देख रहे थे, एकदम बोल उठे—गाओ, गाओ न (एक चादर०–बेदी, 74)।

चोर-चोर मौसेरे भाई होना—सब दुष्ट एक से होना। प्र० आप क्यों न बधाई देंगे, चोर-चोर मौसेरे भाई जो होते हैं (गोदान–प्रेमचंद, 169)।

चोर-परैय्या पड़ना—सामने से चीज चोरी चली जाना। प्र० आजकल तो ऐसी चोर-परैय्या पड़ी है कि पूछो मत।

चोर-बदन—उम्र की तुलना में दुबला और छोटा दिखनेवाला। प्र० और तो सब ठीक है, बस लड़की जरा चोर-बदन है।

चोर-बाजार—चोरी से, छिपे-छिपे सौदा होना। प्र० जहां उसमें छिपाकर बेचने की भावना आई वहीं वह चोर बाजार की चीज बन जाती है (मेरे०–गुलाब०, 79)।

चोरी उघारना—चोरी या भेद को प्रकट कर देना। प्र० चोरि न देहि उघारि कै, औगुन न कहिहैं आनि (सू० सा०–सूर, 3846)।

चोरी की बात—गुप्त बात।

चोरी लगना या लगाना—चोरी का अपराध लगना या लगाना। प्र० कहीं उसने न देखा हो तो समझेगा कि मुझे चोरी लगती है (सेवा०–प्रेमचंद, 82)।

चोरी-चमारी करना—चोरी और छोटे-मोटे बुरे काम करना।

चोरी-चोरी, -छिपे, -लुक्का—गुप्त रूप से।

चोरी-छिपे—दे० चोरी-चोरी।

चोरी-लुक्का—दे० चोरी-चोरी।

चोरों की बस्ती—बेईमानों का जमघट। प्र० भैया, इस चोरों की बस्ती से भाग चलने में ही कल्याण है।

चोरौंधा माल—गुपचुप मिला माल; चोरी-चोरी मिला माल।

चोला छूटना—मृत्यु होना।

चोला छोड़ना, -बदलना—मर जाना। प्र० किसी-न-किसी दिन तो मनुष्य को चोला छोड़ना ही होगा।

चोला तर होना, -प्रसन्न होना, -मस्त होना—तबीयत खुश हो जाना। प्र० सिंहासन के ठीक सामने ऐसा फोहारा लगाया है कि उसमें से गुलाबजल की फुहारें निकलती हैं। मेरा तो चोला मस्त हो गया (मान० (1)–प्रेमचंद, 156); पीते ही चोला तर हो जाता है, आंखें खुल जाती हैं (गोदान–प्रेमचंद, 220)।

चोला पड़ना—किसी शुभ कार्य के बाद बच्चे को नये कपड़े पहनाना।

चोला प्रसन्न होना—दे० चोला तर होना।

चोला बदलना—(1) एकदम परिवर्तन होना। प्र० सारा गांव यही कहता था कि होरी घर बरबाद कर देगा लेकिन सिर पर बोझ पड़ते ही मैंने ऐसा चोला बदला कि लोग देखते रह गए (गोदान–प्रेमचंद, 27)।
(2) एक वेष को त्यागकर दूसरा वेष धारण करना। प्र० अरे वाह, इतनी जल्दी तुमने चोला भी बदल डाला।

(3) दे० चोला छोड़ना।

चोला मस्त होना--दे० चोला तर होना।

चोलीदामन का नाता, -साथ—बहुत अधिक साथ या घनिष्ठता। प्र० पन्ना रूपवती स्त्री थी और रूप और गर्व में चोली-दामन का नाता है (मान० (1)–प्रेमचंद, 1)।

चोली-दामन का साथ—दे० चोलीदामन का नाता।

चौंक पड़ना—आश्चर्य करना; आशंकित होना। प्र० उसकी बातें सुनकर मैं तो उसी दिन चौंका था, पर वह इतनी जल्दी और इतनी दूर तक कर गुजरेगा, यह नहीं सोचा था।

चौंसठ घड़ी—हर समय। प्र० मेरे करम में तो चौंसठों घड़ी का रोना लिख गया है सो रोऊंगी।

चौआई उड़ना (चौ-वायु)—चारों ओर चर्चा होना; अफवाह होना। प्र० बूआ से कोई बात कह भर दो फिर सारे गांव में चौआई उड़ जायेगी।

चौआ-चौआ—थोड़ा-थोड़ा करके। प्र० चौआ-चौआ करके लो, सब एक साथ क्यों बटोरे जा रहे हो?

चौक चढ़ना—विवाह करना। प्र० कोई तरह से यह लड़की चौक चढ़े तो चैन मिले।

चौक धराना, -पूरना—शुभ कार्य के अवसर पर आंटा रोली आदि के द्वारा जमीन पर बैठने का स्थान सजाना। प्र० बीथी सींचीं चतुरसम चौकें चारु पुराइ (राम० (बा)–तुलसी, 300); मैं चौक पूरने लगा (कुल्ली०–निराला, 144)।

चौक पूरना—दे० चौक धराना।

चौक बैठना—किसी शुभ कार्य के संपादन के लिये पूजन स्थान पर बैठना। प्र० मौसी जी, चौक बैठ चुकी हैं, तुम जो कहना चाहती हो मुझसे कहो।

चौक-चौबंद—हृष्ट-पुष्ट। प्र० उधर पंडित जी दूध और घी खाकर चौक-चौबन्द हो गये (मान० (5)–प्रेमचंद, 48)।

चौकड़ी भरना—(1) चारों पैरों से तेजी से भागना। प्र० यह वह भरते थे चौकड़ी एण की सी, मृग-गण समता की तो न थे ताब लाते (प्रिय०–हरिऔध, 187)।

(2) आनंद से इधर-उधर दौड़ना। प्र० कभी पड़ोस का कोई दरिद्र बालक नया कुरता पहन कर आंगन में चौकड़ी भरता दिखाई देता (अतीत०–महादेवी, 12)।

चौकड़ी भुला देना या भूल जाना--सारी हेकड़ी भुला देना या भूल जाना। प्र० मेरे दाता ने चाहा तो वह तावभाव और राव-चाव और कूद-फांद लपट-झपट दिखाऊं जो देखते ही आपके ध्यान का घोड़ा जो बिजली से भी बहुत चंचल अचपलाहट में है हिरन के रूप में अपनी चौकड़ी भूल जाए (इंशा०–इंशा०, 90); इनकी सारी चौकड़ी भुला देगी (मान० (1)–प्रेमचंद, 60)।

चौकड़ी मारकर बैठना—पालथी लगाकर बैठना। प्र० चलो, सब लोग चौकड़ी मारकर बैठ जाओ।

चौकन्ना होना—सतर्क होना। प्र० यह देखते ही चाणक्य चौकन्ना हो गया (भा० ग्रं० (1)–भारतेन्दु, 167)।

चौकन्ने कानों सुनना—सावधानी से, ध्यान से सुनना। प्र० चौकन्ने कानों सुना और फाड़-फाड़ देखा (ज्ञान०–यशपाल, 100)।

चौकस रहना—सावधान रहना। प्र० तो उससे बहुत चौकस रहना चाहिए (भा० ग्रं० (1)–भारतेन्दु, 26)।

चौका अलग करना—(1) दुराव करना। प्र० रात को कहती थीं ×× कि लाला आयेंगे तो उनको संग लेकर हरिद्वार जाऊंगी, और अब यों चौका अलग कर रही हो (वौने०–रां० रा०, 161)।

(2) बंटवारा करना। प्र० पिछले महीने दोनों भाइयों ने चौका भी अलग कर लिया है।

चौका करना—चार उंगलियों पर धागा लपेटना। प्र० डोरी का चौका कर लो नहीं तो उलझ जायगी।

चौका घेलना, -देना, -लगना या लगाना—लीप पोतकर बराबर करना; सत्यानाश करना। प्र० काहे तू चौका लगाय जयचंदवा (भा० ग्रं० (2)–भारतेन्दु, 502); पर इधर मैं सुधारता जाता हूं, उधर तुम चौका लगाये चली जाती हो (दे० दु०–शिव०, 15)।

चौका देना, -फेरना, -लीपना—(1) जमीन को जल से धोकर पवित्र करना। प्र० साच सील का चौंक दीजै, भाव भगति की सेवा कीजै (कबीर ग्रंथा०–कबीर, 245)।

(2) दे० चौंका घेलना।

चौका फेरना—दे० चौका देना।

चौका लगना या लगाना—दे० चौका घेलना।

चौका लीपना—दे० चौंका देना।

चौंका-पानी होना—खाना बन चुकना। प्र० ए रानी, तुमरे घर चौंका पानी हुइ चुका? (अमृत०–नागर, 285)।

चौका-बर्तन करना—चौका धोने तथा बर्तन मांजने का काम करना। प्र० आज दाई नहीं आई है, चौका-बर्तन भी करना होगा।

चौकी देना—(1) रखवाली करना; पहरा देना। प्र० महाराज! हमारे तो यही काम हैं कि श्मशान में जाय चौकी दे (प्रेम०–ल० ला०, 292)।

(2) आदर-सत्कार करना। प्र० गुरुजी को चौंकी दो, बेटा।

चौकी पड़ना—(1) पड़ाव पड़ना। प्र० मांडू का सुल्तान नरवर पर चढ़ आया है। चौकियां पड़ती जा रही हैं (मृग०–वृं० वर्मा, 241)।

(2) पहरा पड़ना। प्र० रात 10 बजते न बजते वहां चौकी पड़ने लगती है।

चौकी बैठना या बैठाना—पहरे के लिए सिपाही नियुक्त होना या करना। प्र० चारों ओर दैत्यों की चौकी बैठा दी (प्रेम०–ल० ला०, 16)।

चौकी भरना—देवी-देवताओं का आह्वान करने के लिए चौकी पर रोली-चावल से घर बनाना और पूजन करना। प्र० पंडित जी को चौंकी भरने के लिए रोली, चावल, सुपाड़ी और नाड़ा दे जाओ।

चौके की रांड़—विवाह के थोड़े दिन बाद विधवा हो जानेवाली स्त्री।

चौके पर से उठ जाना—खाते-खाते खाना छोड़कर उठ जाना। प्र० पंडित

जी चौके पर से उठ आये (मान० (8)–प्रेमचंद, 259)।

चौके लगना—रसोई बनाना। प्र० मालन चौके लगी है। दिवानजी से कहना आज घर ही आएं (डार०–कृ० सो०, 58)।

चौखट चूमना—अधीनता स्वीकार करना। प्र० मैं तो उनकी चौखट चूमने को तैयार हूं पर वे राजी तो हों।

चौखट तक पहुंचना—बहुत निकट पहुंचना। प्र० चौखट तक पहुंचकर तुम भीतर न गये, लौट आये?

चौखट न लांघना—(1) किसी के घर न आना। प्र० मेरे सेठ जी लाख धनी हों पर उन्हें मैं अपनी चौखट न लांघने दूंगा (सेवा०–प्रेमचंद, 20)।

(2) कहीं बाहर न जाना। प्र० मुझे इस तरह घर में कैद करके रखा गया है, चौखट तक लांघने की इजाज़त नहीं।

चौखट पर माथा नवाना, -रगड़ना—किसी का आदर करना; सेवक-सा होना। प्र० बड़े-बड़े महापति उसकी चौखट पर माथा रगड़ने लगे (मान० (8)–प्रेमचंद, 51); ऐसा विरला ही कोई असामी था जिसने उनकी चौखट पर मस्तक न नवाया हो (प्रेमा०–प्रेमचंद, 48)।

चौखट पर माथा रगड़ना—दे० चौखट पर माथा नवाना।

चौखट लांघना—कहीं जाना-आना। प्र० मैं तो अब मास्टर साहब की चौखट लांघने को भी राजी नहीं (दे० दु०–शिव०, 34)।

चौगुना होना—(1) अधिक बढ़ना। प्र० क्यों उमंगें जांय दस गूनी न हो चाव कैसे चित न चौगूना करे (चुभते०–हरिऔध, 12)।

(2) हिम्मत बढ़ना। प्र० तुम्हारा प्रोत्साहन पाकर वह चौगुना हो गया है।

चौगून—एक मात्रा में चार स्वर या ताल होना। प्र० कमरुद्दीन खां ने पहले दुगून, फिर चौगून और फिर अठगून तानें लीं।

चौचंद पारना—बदनामी करना। प्र० आप तो हर तरह से चौचंद पारने पर ही आमादा हो गये हैं।

चौचक्क चित्त होना—एकदम चित्त पड़ना। प्र० पहलवान ने टंगड़ी मारी और दाजू चौचक्क चित्त हो रहे।

चौचक्क होना—चारों कोने से बराबर। प्र० नहीं, काठ एकदम चौचक्क है, तुम ले जा सकते हो।

चौड़ा चकला—विस्तृत। प्र० इतना बड़ा चौड़ा चकला मैदान पड़ा है, कम है?

चौड़े आना—भेद खुल जाना; खुले रूप में सामने आना। प्र० ठग लोग साधुओं का वेष बनाए घूमते हैं और संसार उनकी पूजा भी करता है पर एक न एक दिन वे चौड़े आ ही जाते हैं।

चौड़े में लुटना—खुले आम बरबाद होना। प्र० सरकार मैं तो कहीं का न रहा, चौड़े में लुट गया।

चौथ का चांद—भाद्रशुक्ल चतुर्थी का चांद जिसे देखने से झूठा कलंक लगता है; दूसरे को कलंकित करनेवाला; कलंकपूर्ण। प्र० मैं किसी को क्या कहूं? मैं तो खुद ही आजकल चौथ का चांद हो रहा हूं।

चौथ का चांद देखना—झूठमूठ में कलंकित होना। प्र० ऐसा लगता है जैसे मैंने चौथ का चांद देखा हो नहीं तो यह दोष क्यों लगता।

चौथ के चांद की तरह छोड़ना—कभी न देखना। प्र० सो पर नारि लिलार गोसाईं। तजउ चउथि के चंद कि नाईं (राम० (सुं)–तुलसी, 834)।

चौथ निकलना—अधिकार होना। प्र० यहा क्या तुम्हारी चौथ निकलती है कि जब देखो तब मांगने पहुंच जाते हो?

चौथ वसूल करना—चौथाई कर वसूल करना।

चौथापन—बुढ़ापा। प्र० होइ न विषय विराग भवन बसत भा चौथपन (राम० (बाल)–तुलसी, 154); अब उन पर चौथापन आ गया था, कमर झुक कर कमान हो गई थी ×× (जिन्दगी–निर्गुण, 60)।

चौथी अवस्था—बुढ़ापा। प्र० पुत्रों, मेरी अब चौथी अवस्था आ गयी है (जैसे०–परसाई, 9)।

चौथी की दुलहिन—अत्यन्त नाजुक।

चौथी खेलना—विवाह की एक रस्म जिसमें दूल्हा-दुल्हन एक-दूसरे पर मेवा-फल फेंकते हैं।

चौथी छुड़ाना, -छूटना—चौथी के दिन वर-कन्या का कंगन खुलना।

चौथी छूटना—दे० चौथी छुड़ाना।

चौदह पुश्तों में—लम्बे अरसे में; कभी भी। प्र० मेरे चौदह पुश्तों में कभी कोई थाने नहीं गया, आज मैं जाऊं? (जहाज०–इ० जोशी, 17)।

चौदहवीं का चांद, -रात का चांद—बहुत खूबसूरत; चमकता हुआ। प्र० हुसेनाबाद का इमामबाड़ा चौदहवीं रात का चांद बना हुआ था (आज़ाद०–प्रेमचंद, 54)।

चौदहवीं रात का चांद—दे० चौदहवीं का चांद।

चौधार आंसू बहाना—खूब रोना। प्र० सुधा बेचारी बैठी चौधार आंसू बहाती रही, कोई आंसू पोंछनेवाला भी न था।

चौपट होना—बिगड़ जाना; तबाह होना। प्र० यह लड़का तो एकदम चौपट हो गया है।

चौपट-चरण—ऐसा व्यक्ति जिसके आगमन से सब काम बिगड़ जाय। प्र० उसके जैसे चौपट-चरण को मैं यहां नहीं चाहता।

चौपटानंद—हर काम को चौपट करनेवाला।

चौ-पहरा देना—चार-चार प्रहर की ड्यूटी देना अर्थात् 12 घंटे काम करना।

चौपाया होना—विवाहित होना। प्र० "देश को साहसी और कर्मठ युवकों की जरूरत है" का नारा देनेवाला यह युवक भी अब चौपाया हो गया है (सारा०–यादव, 9)।

चौबाला होना—चौगुना होना; बहुत बढ़ जाना। प्र० जुआना की प्रेममदिर आंखों की रीझ चौबाला हो गई ×× (सात०–नागर, 142)।

चौबीसों घंटे—हर समय। प्र० जिस मालिक को पिछले कई महीनों से हर पल देखा करती है, उसे एक बेवफा और चालाक औरत के हुक्म से वह पूरे चौबीस घंटों तक न देख पाएगी (सात०–नागर, 38)।

चौमुख (चौमुखी) लड़ना—एक साथ चारों ओर के प्रहार का सामना

करना; एकाएक कई व्यक्तियों से लड़ना या झगड़ना। प्र० धनिया ने समझा, सबके सब मिलकर मुझे नीचा दिखाना चाहते हैं। चौमुख लड़ाई लड़ने को तैयार हो गयी (गोदान–प्रेमचंद, 44)।

चौमुखा दीया जलना—(1) दीवाला निकल जाना। प्र० उनका तो चौमुखा दीया जल गया भाई।

(2) बहुत खर्च होना। प्र० ऐसा चौमुखा दीया जला रहे हो तो कितने दिन घर चलेगा?

चौरंग उड़ाना, -काटना—(1) बिलकुल निराश कर देना। प्र० उन्होंने तो मुझे चौरंग काट दिया, क्या करता, मुंह ऐसा मुंह लेकर लौट आया।

(2) किसी हथियार से कोई चीज बड़ी सफ़ाई से काटना। प्र० उसने बकरी को क्या चौरंग उड़ाया कि मैं देखता ही रह गया।

चौरंग काटना—दे० चौरंग उड़ाना।

चौरस का बाजार, चौसर बाजार—चौक बाज़ार।

चौरसाई लेना—जमीन को चौरस करने के लिए ऊंचाई-निचाई की जांच करना।

चौराई बांटना—अत्यन्त साधारण चीज़ बांटना। प्र० नाम इतना बड़ा था पर बेटे के व्याह में राय साहब ने चौराई भी न बांटी।

चौरासी पर नाचना, -में पड़ना, -में भरमना, -लाख का फेर, -लाख योनि में भटकना, -लाख योनि में भ्रमण करना—आवागमन में फंसे रहना। प्र० तिल सुख कारनि दुःख अस मेरु। चौरासी लख लीया फेरू (कबीर ग्रंथा०–कबीर, 232); आकर चारि लक्ष चौरासी जोनि भ्रमत यह जिव अविनासी (राम० (उ)–तुलसी, 1069); मूढ़ मानव इसी तरह चौरासी में भरमता रहता है।

चौरासी में पड़ना—दे० चौरासी पर नाचना।

चौरासी में भरमना—दे० चौरासी पर नाचना।

चौरासी लाख का फेर—दे० चौरासी पर नाचना।

चौरासी लाख योनि में भटकना—दे० चौरासी पर नाचना।

चौरासी लाख योनि में भ्रमण करना—दे० चौरासी पर नाचना।

चौराहे की चर्चा—अफवाह। प्र० तुम चौराहे की चर्चा को इतना महत्त्व ही क्यों देते हो?

चौराहे पर खड़ा होना—ऐसी स्थिति में होना जहां यह न निर्णय किया जा सके कि कौन-सा मार्ग पकड़ना है। प्र० वह इस समय परेशानी, घबराहट और राजनीतिक उदासीनता के चौराहे पर खड़ा है।

चौराहे पर बेच आना—बहुत होशियार होना; किसी से जो मर्जी आए करवा लेने की क्षमता रखना। प्र० वह तो ऐसी चंट है कि मास्टर साहब को चौराहे पर बेच आये (जिन्दगी–उषा०, 98)।

चौसर (चौसरी) का बाजार—दे० चौरस का बाजार।

चौहद्दी बांधना, -लगाना—चारों ओर की सीमा निश्चित करना। प्र० तुम बगीचे की चौहद्दी जरूर बांध लो नहीं तो बाद में झगड़ा उठ खड़ा होगा।

चौहद्दी लगाना—दे० चौहद्दी बांधना।

छ

छंगा बना फिरना—भला बनना। प्र० माना कि चौधरी भगवानदीन का काम बेजा था लेकिन उनके सामने कहते, नहीं, जब तक वह जिए, इन्हीं लड़कों की (अंग-विशेष का उल्लेख कर कहा) धो-धो कर पीते रहे, अब सब छंगे बने फिरते हो (कुल्ली०–निराला, 43)।

छंट जाना—कम हो जाना। प्र० भीड़ जरा छंट जाय तो चलूं।

छंटनी करना या होना—काम करनेवालों में से कुछ को निकाल देना। प्र० आजकल हर कारखाने में ही छंटनी की जा रही है।

छंटा गुर्गा—बहुत बड़ा धूर्त। प्र० जहां किसी मातहत ने जरूरत से ज्यादा खिदमत और खुशामद की, मैं समझ जाता हूं कि यह छंटा हुआ गुर्गा है (कर्म०–प्रेमचंद, 316)।

छंटा हुआ—चुना हुआ; धूर्त। प्र० यहां तो जितने हैं, एक से एक छंटे हैं (मान० (1)–प्रेमचंद, 131)।

छंटा-छंटा फिरना, -रहना—साथ बचाना। प्र० वह तो साथ बैठता नहीं, हमेशा छंटा-छंटा फिरता है।

छंटा-छंटा रहना—दे० छंटा-छंटा फिरना।

छंद-बंद बांधना—बातों में फांसना। प्र० उसने तो ऐसा छंद-बंद बांधा कि पूछो मत।

छंद-मंत्र गिनना—छंदों का सुरताल ठीक करना।

छक जाना, -रहना—तृप्त होना; खुश होना। प्र० छछा इहै छत्रपतियासा, छकि किन रहहु छाड़ि किन आसा (कबीर ग्रंथा०–कबीर, 311); वह छकि छाकि रहे दोउ लोचन बहियां गहि झूलन की (ब्र० सा०–सूर, 139); झलकै अति सुंदर आनन गौर, छके दृग राजत काननि छ्वै (घन० कवित्त–घना०, 2); पर देख अर्जुन को निकट उत्साह से से वह था छका (जय०–गुप्त, 77)।

छक रहना—दे० छक जाना।

छककर भोजन करना—पेट भरकर आनन्दपूर्वक भोजन करना। प्र० चौबेजी ने आज खूब छककर भोजन किया।

छकड़ा लादना—छकड़े में सामान भरना।

छकड़ी भूल जाना—मौजमस्ती न रह जाना।

छकना या छकाना—(1) परेशान या लज्जित होना या करना। प्र० कल तो मैंने उसे ऐसा छकाया कि पूछो मत।

(2) तृप्त होना या कर देना। प्र० पंडितजी, चिन्ता मत कीजिए, आज मैं आपको छका दूंगा।

छक्का छुड़ाना—हिम्मत पस्त कर देना। प्र० आज तोमरों के छक्के छुटा दूंगा (मृग०–वृं० वर्मा, 291)।

छक्का छूटना—(1) बुद्धि काम न करना। प्र० किसानों ने यह घोषणा सुनी, तो छक्के छूट गये (कर्म०–प्रेमचंद, 368)।

(2) हिम्मत हारना। प्र० दूसरे दिन जैसा युद्ध हुआ उससे रोज़ की सेना के छक्के छूट गये (झांसी०–वृं० वर्मा, 399)।

छक्का हाथ मारना—कोई बड़ा काम कर लेना; सफलता पाना। प्र०

वीरभद्र बाबू ! बस समझ लीजिए इस काम में भी छक्का हाथ मार दिया (परती०–रेणु, 121)।

छक्का-पंजा—धूर्तता। प्र० सीखो अभी, समझती सब हूं सब का छक्का-पंजा (नूर०–भक्त, 61)।

छक्का-पंजा करना—(1) जुआ खेलना। प्र० इन्हें छक्का-पंजा करने से फ़ुरसत मिले तब न कुछ और करें।

(2) छल करना। प्र० उसने तो ऐसा-ऐसा छक्का-पंजा किया कि कुछ पूछो मत !

छक्का-पंजा चलाना—चालबाजी करना। प्र० वह तो चौबीसों घंटा छक्का-पंजा चलाने में ही लगा रहता है।

छक्का-पंजा भूलना—(1) होशियारी न लगना। प्र० अजी होली ऐसी मचाओ कि × × लोग छक्का-पंजा सब भूल जायं (राधा० ग्रंथा०–राधा० दास, 94-95)।

(2) बुद्धि का काम न करना। प्र० देखिए प्रयोग (1)।

छक्का-पंजा होना—खूब बन आना (चालाकी के अर्थ में ही प्रयुक्त)। प्र० रामू की बहू की जान आफत में और कबरी बिल्ली के छक्के-पंजे (इंस्टा०–भग० वर्मा)।

छक्के चढ़ना—काबू में आना। प्र० अभी तक तुम रामसरन के छक्के नहीं चढ़े हो इसीलिए इतना उछल रहे हो।

छक्के-पंजे उड़ाना—आनन्द करना। प्र० कुछ पूछो मत, आजकल घर में बड़े लोग हैं नहीं सो सब छक्के-पंजे उड़ा रहे हैं।

छगन-मगन—प्यारे बच्चे। प्र० इन सब छगन-मगन को ले जाओ अपने साथ, घुमा लाना।

छछूंदर का चमेली का तेल लगाना—(1) अयोग्य व्यक्ति का बड़ा काम करने चलना।

(2) कुरूप या सामान्य व्यक्ति का बहुत फैशन करने चलना।

छछूंदर की तरह नाचना—बहुत नाराज या बेसब्र हो उठना। प्र० मगर इतना याद रखिएगा कि कहीं अंदर खबर हुई तो बेगम साहब छछूंदर की तरह नाचेंगी (आजाद०–प्रेमचंद, 122)।

छछूंदर के सिर में चमेली का तेल—असंगत मेल। प्र० अरे वाह, घासीराम जी और सांस्कृतिक अनुष्ठान—छछूंदर के सिर में चमेली का तेल हो गया।

छछूंदर छोड़ना—खुराफात करना; झगड़ा लगवाना। प्र० वे तो बैठे-बैठे छछूंदर छोड़ा करते हैं।

छछूंदर न निगलते बनना न छोड़ते बनना—दोनों ही ओर से नुकसान होने की संभावना होने के कारण कुछ भी करने में दुविधा बोध करना। प्र० अगर यही सब चिन्ताएं उठानी हैं तो ब्याह ही क्यों न कर लूं ? मुझसे न तो इस छछूंदर को निगलते बनता है और न ही इसे छोड़ते बनता है (अंधेरे०–राकेश, 86)।

छछूंदर बनना—इधर-उधर टकराना। प्र० तब छछूंदर क्या बना फिरता रहा जब छबीली छांह छू पाता नहीं (चुभते०–हरिऔध, 161)।

छज्जेदार—जिसका किनारा आगे की ओर निकला हुआ हो। प्र० यह छज्जेदार आलमारी मुझे कम पसन्द है।

छटंकी लगाना—भाग जाना। प्र० मुझे देखते ही वह छटंकी लगा गया।

छटकना या छटकाना—कतराना; दूर-दूर रहना या कर देना। प्र० यार ! क्यों छटक रहे हो ? (राधा०–ब्र० स०, 107)।

छटपट करना, छटपटाना—बेचैन या व्याकुल होना। प्र० लड़की से मिलने के लिए वे कब से ही छटपट कर रहे हैं।

छटपटाना—दे० छटपट करना।

छटपटी पड़ना—किसी बात को जानने का अपार कौतूहल होना। प्र० उन्हें तो उसी दिन से छटपटी पड़ी हुई है, हर किसी से पूछते रहते हैं।

छटांक का सेर करना—थोड़े को बहुत कर देना; बढ़ा-चढ़ा देना। प्र० अरे साहब, आप छटांक का सेर करने में उस्ताद हैं, यह छिपी बात थोड़े ही है।

छटांक भर—बहुत थोड़ा। प्र० छटांक भर दूध दिया और उसका सारी जिंदगी भर बखान !

छटा दिखाना—रूप दिखलाना। प्र० क्या छटा दिखलायी है आपने ! बिखरे बाल, रूखा चेहरा ! क्या हुआ है ?

छठी इंद्रिय-भीतरी बुद्धि। प्र० पासवाले मियांजी भी एक झपकी के बाद चैतन्य हुए और हवाई जहाज की खिड़कियों पर लोगों का झुकाव और उसके बाद सचेत होने की शारीरिक भंगिमाओं ने उनकी छठी इंद्रिय को आभास कराया कि वे अपने मंजिले मकसूद के निकट पहुँच गये हैं (अमृत०–नागर, 416)।

छठी का खाया-पीया निकलना या निकालना, -दूध निकलना या निकालना, -याद कराना—(1) बहुत परेशान होना या करना। प्र० एक-एक कर तीनों हंसेरी में मैंने उसको छट्ठी का दूध याद कराया (परती०–रेणु, 415–416)।

(2) थकना या थका डालना। प्र० बाप रे बाप, तुमने तो आज छठी का खाया-पीया निकलवा दिया।

छठी का दीया दिखाना—बहुत बचपन या जन्म से जानना। प्र० जी हां, आपने तो मेरी छठी का दीया दिखाया है, आप कैसे न जानेंगे !

छठी का दूध निकलना या निकालना—दे० छठी का खाया-पीया निकलना या निकालना।

छठी का दूध याद आना—बहुत हैरानी होना। प्र० दो दिन में खाने के लाले पड़ते ही सब छठी का दूध याद न आ जाये तो कहना (बौनें० –रां० रा०, 78)।

छठी का दूध याद करना—दे० छठी का खाया-पीया निकलना या निकालना।

छठी का राजा—पुराना रईस।

छठी के पोतड़े न धुलना—कुछ भी अनुभव न होना। प्र० तुम्हारे छठी के पोतड़े तो धुले नहीं तुम क्या करके निहाल करोगे।

छठी में न पड़ना—(1) भाग्य में न होना। प्र० पढ़िबो पर्यो न छठी छ मत, रिगु जजुर अथर्वन साम को (विनय०–तुलसी, 155)।

(2) स्वभाव में न होना। प्र० पढ़ना-लिखना तो तुम्हारी छठी में पड़ा नहीं है, तुम कैसे पढ़ोगे।

छठें कान में पड़ना—तीसरे व्यक्ति द्वारा सुना जाना। प्र० छठें श्रवन यह परत कहानी नास तुम्हार सत्य मम बानी (राम० (बा)-तुलसी, 175)।

छठें-आठवें का सम्बन्ध होना—झगड़ा होना; वैमनस्य होना। प्र० छठ आठें मोहि कान्ह कुंवर सौं, तिनकौं कहति प्रीति तोसौं हैं (सू० सा०-सूर, 2335)।

छठें-छमासे, -छमाहे—कभी-कभी। प्र० जब रामू काशीजी पढ़ने गया, तब भी छठें-छमासे मुझसे मुलाकात हो जाया करती थी (दे० दु०—शिव०, 59)।

छठे-छमाहे—दे० छठें-छमासे।

छड़ना—पीटना। प्र० देखो, मैं कैसा छड़ता हूं तुम्हें!

छड़ी से काम लेना—छड़ी से मारना। प्र० ज्यादा चीं-चपड़ करूं तो छड़ी से काम ले सकते हो (निर्मला-प्रेमचंद, 117)।

छड़ी-छटांक, -सवारी—(1) अकेले; एकाकी। प्र० वे कभी-कभी छड़ी छटांक ही पहुँच जाते हैं।

(2) बिना सामान के। प्र० देखिए प्रयोग (1)।

छड़ी-सवारी—दे० छड़ी छटांक।

छत की कड़ियां गिनना—बेकार होना; समय बर्बाद करना। प्र० करते क्या हैं, छत की कड़ियां गिनते जिंदगी के दिन गुजार रहे हैं!

छत पटना, -पड़ना—दीवार के ऊपर बैठाई हुई कड़ियों पर कंकड़, सुर्खी, चूना आदि पीटा जाना।

छत पड़ना—दे० छत पटना।

छत बंधना—बादल छा जाना। प्र० कल से ही छत बंधी है पर पानी नहीं बरसा।

छत बैठ जाना—छत गिर पड़ना। प्र० ×× कड़ियों के टूट जाने से जगह-जगह छत बैठ गयी थी (प्रेमा०-प्रेमचंद, 132)।

छत-फाड़ ठहाका—जोरों की हंसी। प्र० वह बड़े जोश से बोलता हुआ जबान चूक जाने से कह गया—दसियों नहीं बीसियों, बीसियों नहीं हजारों, हजारों नहीं करोड़ों, करोड़ों नहीं लाखों·········कि हाल का मौन एक छत्त-फाड़ ठहाके से भंग हो गया (पैंतरे-अश्क, 24-25)।

छत्ता तोड़ी हुई मक्खी—बेसहारा; व्याकुल। प्र० जैसे मधु तोरे की माखी त्यों हम बिनु बृजनाथ (सूरदास)।

छत्तीस का अंकेन रिश्ता होना, -का सम्बन्ध होना—दुश्मनी होना; विरोध भाव होना। प्र० झूठ से मुझसे छत्तीस का अंकेन रिश्ता है (बौने०-रां० रा०, 159); इसीलिए जड़ार्थ से मेरा छत्तीस का सम्बन्ध रहा (कुल्ली०-निराला, 78)।

छत्तीस का सम्बन्ध होना—दे० छत्तीस का अंकेन रिश्ता होना।

छत्तीस बनना, -रहना या होना—विरुद्ध होना; विमुख होना। प्र० मगर दोनों जैसे छत्तीस बने हुए थे। न बोलते थे, न ताकते थे (गोदान—प्रेमचन्द, 225)।

छत्तीस रहना या होना—दे० छत्तीस बनाना।

छत्तीसापन करना—चालबाजी करना। प्र० मुझसे भी छत्तीसापन करते हो? यह कहां की बात हुई?

छत्तीसी—छली-धूर्त। प्र० अरे यह छिनाल बड़ी छत्तीसी है, इसको तुमने समझा है क्या (भा० ग्रं० (1)-भारतेन्दु, 31); ये सब उसी छत्तीसी के गुन हैं, उसी ने लाड़-प्यार दिखा-दिखाकर उसको खराब कर दिया है (मा-कौशिक, 201)।

छत्र भंग होना—राजत्व शेष होना; अधिकार समाप्त होना। प्र० कभी-न-कभी उनका छत्र भी भंग होगा।

छत्र-छांह, छत्रच्छाया—संरक्षण। प्र० पान्सा, चेलम्मा आदि अपने आत्मीय गुरुजनों की छत्रच्छाया (उसे) प्राप्त थी (सुहाग०-नागर, 171)।

छत्रच्छाया—दे० छत्र-छांह।

छत्रच्छाया सिर से उठ जाना—संरक्षक का न रह जाना। प्र० दस वर्ष की छोटी उम्र में पिता की छत्रच्छाया सिर से उठ गई।

छनकना—भड़कना। प्र० यूसुफ छनके। पिता से कुल हाल कहा (चोटी०-निराला, 165)।

छनक-बनक—साज-बाज। प्र० क्या छनक-बनक से आज मामी आई हैं, जरा देख तो!

छनन-मनन होना—पकवान बनना, भोजन बनना। प्र० उनके यहां आज सबेरे से ही छनन-मनन हो रहा है।

छनना—बातचीत होना। प्र० वह बाहर निकले, तो नायकराम ने पूछा-कैसी छनी? (रंग० (2)-प्रेमचन्द, 204)।

(2) खूब मेल-जोल होना। प्र० आजकल उन दोनों में खूब छनती है।

छन्न होना—सूख जाना, उड़ जाना। प्र० छत तो ऐसी गरम हो रही है कि पानी डालो और छन्न हो जाता है!

छपाका मारना—पानी में जोर से कूदना। प्र० पास के तख्ते से लड़के एक के बाद एक छपाका मारे ही जा रहे थे।

छप्पन टके खर्च होना—बहुत खर्च होना। प्र० यहां छप्पन टके खर्च हो गये, तुम्हें संतोष ही नहीं हुआ।

छप्पन टके मिलना—अधिक लाभ होना। प्र० तुम्हें छप्पन टके मिल भी गये और संतोष भी नहीं हुआ।

छप्पन-छुरी—(1) छल-कपटवाली। प्र० सामने कैसी मीठी बोली बोलती है? और, मन में छप्पन छुरी (परती०-रेणु, 495)।

(2) रूप-सौन्दर्य और साज-शृंगार से तीव्र प्रहार करनेवाली। प्र० अरे भाई, उस छप्पन छुरी की अदा ही कुछ और है।

छप्पर टूट पड़ना—बड़ी भारी विपत्ति आ पड़ना। प्र० मेरे सिर पर तो छप्पर टूट पड़ा है, समझ नहीं आता कि क्या करूं, क्या न करूं।

छप्पर पर एक खपड़ा न छोड़ना—सब कुछ बर्बाद कर देना। प्र० जिन्दगी रह गई और यह लड़का हंसता-खेलता उठ खड़ा हुआ, तो इन दगाबाज ओझों के छप्पर पर एक खपड़ा न रहने दूंगा (दे० दु०-शिव०, 193)।

छप्पर पर फूस न होना—बहुत गरीब होना। प्र० वह तो एकदम बरबाद हो गया, सिर पर छप्पर का फूस तक न बचा।

छप्पर पर रखना, छान्ह पर फेंकना, -रखना—कोई जिक्र न करना; छोड़ देना। प्र० ईमानदार रहकर थोड़ी आमदनी से हम किसी तरह बड़ी कठिनाई से अपना दिन काटते हों तो यह उससे अच्छा है कि हम ईमानदारी को छप्पड़ पर रख बेईमान हो बहुत रुपया बटोर गुलछर्रे उड़ावें (भट्ट नि०—बा० भट्ट, 43)।

छप्पर पर होना—व्यर्थ पड़ी रहना; कोई महत्त्व न होना। प्र० खुदा की याद ताक पर; इल्म छप्पर पर, छटे हुए शोहदे बन बैठे (आजाद०—प्रेमचन्द, 30)।

छप्पर फाड़कर देना—अप्रत्याशित ढग से देना। प्र० जब वह देता है तो छप्पर फाड़कर देता है (कठ०—दे० स०, 220)।

छप्पर रखना—(1) एहसान रखना। प्र० उसे जाना है जाये, न जाना है मत जाये। मुझ पर छप्पर क्यों रखता है।

(2) कलंक लगाना। प्र० देखो, इस मामले में उस पर छप्पर रखने की कोशिश मत करो, बात उलटे तुम्हीं पर आ जायेगी।

छप्पर से टपक पड़ना—अनायास मिलना। प्र० खरीदकर नहीं लाया हूं तो क्या कहीं छप्पर से टपक पड़ी है!

छमछाम हो जाना—एकदम शांत हो जाना। प्र० बाबूजी की आवाज सुनते ही सब लोग छमछाम हो गये।

छरहरा—ऐसा शरीर जो न मोटा हो और न दुबला। प्र० जुवति आनंद भरी, भई जुरि कै खरी, नई छरहरी सुठि बैस थोरी (सू० सा०—सूर, 2369); आयु 15 से कुछ ऊपर। शरीर छरेरा (झांसी०—वृं० वर्मा, 62)।

छर्रा उड़ाना, -खींचना, -चलना—मदक पीना। प्र० तुम बैठे-बैठे छर्रा उड़ाओ, तुम्हें क्या!

छर्रा खींचना—दे० छर्रा उड़ाना।

छर्रा चलना—(1) बंदूक दगना। प्र० बंदर आ गये हैं, छर्रा चलाओ जल्दी!

(2) दे० छर्रा उड़ाना।

छर्रा पिलाना—बंदूक में छर्रा भरना।

छल न छू जाना—छल का लेश मात्र भी न होना। प्र० सरल सुभाउ छुआ छल नाहीं (राम० (बा)—तुलसी, 244)।

छल पिलाना—(1) धोखेबाजी सिखाना। प्र० आप उसे भी छल पिलायेंगे ही, अपने जैसा बनाये बिना चैन न लेंगे।

(2) कटोरे बजा-बजाकर राह चलते पथिकों को पानी पिलाना।

छल से सानी हुई—अत्यन्त कपटपूर्ण। प्र० बोले मधुर बचन छल सानी (राम० (बा)- तुलसी, 101)।

छलकती उमंग—ऐसा उत्साह जो स्पष्ट प्रकट हो रहा हो।

छलकते नैन—आंसू भरे नेत्र।

छलका पड़ना—प्रकट होना। प्र० अधरानि मैं आधिय बात धरैं लड़कानि की आनि परैं छलकैं (घन० कबित्त—घना०, 120)।

छलके दूध पर आंसू बहाना—खराब हो गये काम के लिए व्यर्थ अफसोस करना। प्र० मिस्टर जान सेवक छलके हुए दूध पर आंसू न बहाते थे (रंग०—प्रेमचंद, 135)।

छलके दूध से लाभ उठाना—बर्बाद होती हुई वस्तु या काम से भी फायदा उठाना। प्र० बाबू सालिगराम ने छलके हुए दूध से मुनाफा उठाया है (बूंद०—नागर, 130)।

छल-छंद करना, छलछेव करना—छल-कपट करना। प्र० 'हरिऔध' छल-छन्द छोड़ो लो बदल आंखें (मर्म०—हरिऔध, 164)।

छल-छंद का छछूंदर छू लेना, -छूना—छल-कपट का भाव मन में आना। बार-बार किसलिये उसे छल-छंद-छछूंदर छू ले (मर्म०—हरिऔध, 2)।

छलछंद छूना—दे० छलछंद का छछूंदर छू लेना।

छलछंद में न होना—किसी छलकपट से मतलब न होना। प्र० फिर जाननेवाले यह जानते हैं कि जी-जान से नवाब की सेवा करती है और किसी छल-छंद में नहीं है (सात०—नागर, 87)।

छलछेव करना—दे० छलछंद करना।

छलनी करना—दे० चलनी कर डालना।

छलनी में डाल छाज में उड़ाना—थोड़ी बात को बहुत बढ़ा-चढ़ाकर कहना।

छलनी हो जाना—बहुत छेद हो जाना। प्र० पैरों के तलवे कांटों से छलनी हो गये (दे० दु०—शिव०, 11)।

छलबटें देना—फरेब करना। प्र० न जाने क्यों वह हर समय छलबटें देता है।

छलबटों में आना—फरेब और धोखें में आना। प्र० न जाने कैसे उस दिन मैं उसके छलबटों में आ गया।

छल-बल—धोखाधड़ी। प्र० इस तरह के छलबल से उसे वश में करना क्या उचित था?

छलांग मारना—बीच की कई स्थितियों को पारकर आगे पहुंच जाना। प्र० वे तो लम्बी छलांग मारकर सहायक मैनेजर बन गये।

छलावा खेलना—इधर-उधर छिपना (भूत आदि का)। प्र० वह प्रेत सारी रात यही छलावा खेलता रहा, कभी इस खिड़की में कभी उसमें।

छलावा हो जाना—गायब हो जाना। प्र० देखते-देखते वह तो छलावा हो गया।

छलावा-सा—बहुत चंचल। प्र० वह तो छलावा-सा अभी यहां अभी वहां नाचता रहता है।

छांछ फूंककर पीना—हर काम को बहुत समझ-बूझकर और सावधानी से करना। प्र० वे तो अतिरिक्त सावधान हैं, छांछ भी फूंककर पीते हैं।

छांट करना—(1) कमी करना। प्र० पिछले चार महीनों से मैंने सिगरेट के खर्च में छांट कर दी है।

(2) वमन करना। प्र० बच्चे ने छांट कर दी है, सब कपड़े बदल दो।

छांट-कुपुट करना—कमी करना। प्र० हर खर्च में छांट-कुपुट मत करो बेटा, नहीं तो लोग नाम धरेंगे।

छांटना—ज्ञान बघारना, किसी बात में शेखी लगाना। प्र० संसकीरत छांटयी, घर बहेयें, अपने यार के चिट्ठी लिखिहैं (राधा० ग्रंथा०—राधा० दास, 560)।
(2) लकड़ी, मिट्टी इत्यादि को थोड़ा काटकर नाप का करना। प्र० बड़ी भट्ठी को दाहिनी ओर से थोड़ी छांट दो।
(3) काम करनेवालों में से कुछ को निकाल देना। प्र० अगर खजाने में उसी वक्त चोरी हो गई हो तो छांट दिये जाओगे या बचोगे '(चोटी०-निराला, 97)।

छांटने-बिराने लायक न होना—निन्दा करने लायक न होना। प्र० उनकी लड़की कोई छांटने-बिराने लायक थोड़े ही है जो तुम इस तरह कह रही हो।

छांटा देना—छलपूर्वक अपने को अलग कर लेना। प्र० वह तो हम सबको छांटा देकर चल दिया।

छांह करना, -देना—सहारा या आश्रय देना। प्र० सोई गोकुल गोबरधन सोइ, कौन करे अब छांहि (सू० सा०—सूर, 3848); नोखेराम ने छांह न दी होती, तो भीख भी मांगती (गोदान—प्रेमचन्द, 27)।

छांह की तरह साथ रहना—हर समय साथ रहना। प्र० सूर स्याम स्याम-बस ऐसैं ज्यौं संग छांह डुलावै (सू० सा०—सूर, 2638); चाह भई फिरौं या चित मेरे की, छांह भई फिरौं नाह के पीछैं (शब्द०—देव, 14)।

छांह गहना, -छांह तले बसना, -में बसना, -बैठना—आश्रित होना; नीचे होना। प्र० कहै कवीर जाकै भेदै नाहीं, निज जन बैठे हरि की छ हीं (कबीर ग्रंथा०—कबीर, 104); तुम सा बली संसार में कोई नहीं और सब तुम्हारी छांह तले बसते हैं (प्रेम सा०—ल० ला०, 12); मेरी बांह गही स्वामी ने मैंने उनकी छांह गही (यशो०—गुप्त, 43)।

छांह छूना—पास जाना। प्र० मैं उस दुष्ट की छांह तक छूने को तैयार नहीं, हरगिज़ नहीं।

छांह तले बसना—दे० छांह गहना।

छांह देना—दे० छांह करना।

छांह न छू पाना—पास तक न पहुंच पाना। प्र० तव सके छूट क्यों छिछोरापन सूझ जब छांह छू नहीं पाती (चुभते०—हरिऔध, 116)।

छांह न छूने देना—पास न फटकने देना। प्र० हंसि-हंसि खावत हौ, छांहौं न छ्वावत हौ, जागि-जागि स्वावत हौ आपै हू तें आन जू (घन० कवित्त—घना०, 98)।

छांह न पड़ने देना—सम्पर्क या प्रभाव से बिलकुल दूर रखना। प्र० मैं इस लड़के पर मामा की छांह तक नहीं पड़ने देना चाहता।

छांह बचाना, -से दूर रहना—दूर-दूर रहना; पास न आना। प्र० मुझे तो उनकी छांह बचाने में ही अपना भला दीखता है।

छांह में कमाना, -बैठकर कमाना—आराम से रहकर धन कमाना। प्र० आपको ऊपरवालों की सहायता मिली, आप छांह में बैठकर कमा रहे हैं।

छांह में बसना—दे० छांह गहना।

छांह में बैठकर कमाना—दे० छांह में कमाना।

छांह में बैठना—दे० छांह गहना।

छांह में होना—(1) शरण में होना। प्र० वह तो आपकी छांह में है, आप ही उसके बारे में फैसला करें।
(2) छिपना। प्र० सुकर्ण सिंह मुगलों की छांह में है अन्नदाता।

छांह से दूर रहना—दे० छांह बचाना।

छा जाना—चारों ओर या हृदय में व्याप्त हो जाना। प्र० वह उनके ऊपर इतना छा गई कि उनको किसी दूसरी चीज में दिलचस्पी ही न लेने देती थी (एक०—मुल्क०, 52)।

छाए रहना—(1) बने रहना; रहना। प्र० अहो मधुप एकै मन सबकौ, सुतौ उहां लै छाए हौ (सू० सा०—सूर, 4118); बीते औधि आरत बियान कौं बिसारत हौ, धारत न पाउं वेग कहौ कित छाए हौ (क० र०—सेनापति, 19)।
(2) प्रभाव होना। प्र० अपने शासन काल में फारसी और अंग्रेजी हमारे देश में छाई रहने के बावजूद भी हमारी संस्कृति और विचार-धारा को प्रभावित भले ही करती रही है, अनुप्राणित नहीं कर सकती थीं (सा० जि०—ल० प्र० सु०, 58)।
(3) मन में ध्यान बना रहना। प्र० उसकी वह मधुर मूर्ति मेरे मन में छायी हुई है।

छाकटा—बादमाश या चालबाज।

छाकटेबाजी चलना—धोखा देना; चालबाजी करना। प्र० अधिक दिनों तक तुम्हारी छाकटेबाजी नहीं चलने वाली है।

छाजन छाना—मकान की छत डालना।

छाज-सी दाढ़ी—चौड़ी और बड़ी दाढ़ी। प्र० उसकी छाज-सी दाढ़ी मुझे बिलकुल अच्छी नहीं लगती।

छाजों मेह पड़ना, -बरसना—मूसलाधार वृष्टि होना।

छाजों मेह बरसना—दे० छाजों मेह पड़ना।

छाता देना, -लगाना—सिर पर छाता तानना। प्र० छाता देकर जाओ, धूप बहुत तेज है।

छाता लगाना—दे० छाता देना।

छाती—साहस, ताकत। प्र० सीधी-सी बात है, जिसमें छाती हो वह सामने आ जाये।

छाती अड़ाना—मुकाबिला करना। प्र० यहां छाती अड़ाने से कौन मुकरता है?

छाती उछलना—भावातिरेक होना। प्र० देखकर अपने लड़ैते लाल को × × प्यार से छाती उछलती ही रही (चोखे०—हरिऔध, 6)।

छाती उठना, -उभरना—यौवनावस्था के आगमन स्वरूप स्तनों का उभरना। प्र० जो उभरते भाव हैं जी में बुरे देख करके छातियां उभरी हुई

(बोल०–हरिऔध, 179)।

छाती उड़ी जाना—जी घबराना; दुःख या आशंका से जी व्याकुल होना। प्र० उसी दिन से मेरी छाती उड़ी जा रही है कि न जाने क्या हो!

छाती उभरना—दे० छाती उठना।

छाती उभारकर चलना—इतराकर चलना। प्र० इतना छाती उभारकर चलने की क्या जरूरत है।

छाती उमगना, -उमड़ना—प्रेम व करुणा से गद्‌गद होना। प्र० कौन सुख पाती नहीं थी प्यार कर चूम मुख छाती उमड़ आती रही (बोल०–हरिऔध, 181)।

छाती उमड़ना—दे० छाती उमगना।

छाती ऊँची बनना, -होना—गौरव या गर्व होना। प्र० उस जवानी की उमंगों से उभर कौन-सी छाती हुई ऊंची नहीं (बोल०–हरिऔध, 180)।

छाती ऊँची होना—दे० छाती ऊंची बनना।

छाती कठोर होना—कठोर हृदयवाला व्यक्ति। प्र० कुलिस कठोर निठुर सोइ छाती (राम० (बा)–तुलसी, 126)।

छाती कड़ी करना—हृदय को कठोर बनाना। प्र० बोले राउ कठिन करि छाती (राम० (अ)–तुलसी, 401)।

छाती करना—साहस करना। प्र० इस तरह घबराने से तो काम नहीं चलेगा, जरा छाती करो भाई।

छाती कांपना—भयभीत होना। प्र० देखि महिपालनि की कम्पति है छाती ऐसी, सम्पति सहित देत जाचकनि दान है (मति० मक०–मतिराम, 200)।

छाती का कांटा—बहुत दुःखदायी। प्र० परन्तु ग्वालियर तो छाती का कांटा था (मृग०–वृं० वर्मा, 406)।

छाती का पत्थर, -बोझ—बहुत दुःखप्रद। प्र० हम उबर पाये न सिर के बार से, बोझ छाती का नहीं टाले टला (चुभते०–हरिऔध, 72)।

(2) बड़ा दायित्व; बड़ी चिन्ता। प्र० आपके मुंह से यह सुनकर छाती का पत्थर हट गया (नये हाथ–त्रि० रस्तोगी, 84)।

छाती का फोड़ा—आंतरिक पीड़ा। प्र० बेटे की करतूतों से मामा परेशान हैं, उनकी छाती के फोड़े को कोई नहीं समझता।

छाती का बोझ—दे० छाती का पत्थर।

छाती का यम—दुःखदायी वस्तु या व्यक्ति। प्र० भूत बन वह कब नहीं सिर पर चढ़ा, कब रहा है पाप छाती का न यम (बोल०–हरिऔध, 177)।

छाती का हाड़ तोड़कर, -फाड़कर—अत्यन्त परिश्रम से। प्र० मैंने इसी छाती का हाड़ तोड़कर जोता-बोया है (तितली–प्रसाद, 180)।

छाती कुलिश होना—हृदय कठोर होना। प्र० ऊधौ कुलिस भई यह छाती (सू० सा०–सूर, 4299)।

छाती कूट-कूटकर रोना—बहुत अधिक रोना।

छाती कूटना, -पीटना—बहुत दुःख करना (शोक या ईर्ष्या के कारण)। प्र० नारिवृंद कर पीटहिं छाती (राम० (लं)–तुलसी, 910); कूटते क्यों न तब फिरें छाती, फूटते आंख-बांह भी टूटी (चुभते०–हरिऔध, 70); अमीना ने छाती पीट ली। यह कैसा बेसमझ लड़का है कि दोपहर हुआ कुछ खाया न पिया। लाया क्या, चिमटा (मान० (1)–प्रेमचंद, 3ˉ)।

छाती के किवाड़—सीना, छाती। प्र० मैं अपने रुपये लुटाता हूं तो तेरी छाती के किवाड़ क्यों फटते हैं?

छाती के किवाड़ खुलना या खोलना, -पट खुलना या खोलना—(1) ज्ञान होना या देना। प्र० कब खुला कान आंख भी न खुली, खुल किवाड़े सके न छाती के (बोल०–हरिऔध, 183)।

(2) बहुत आनन्द होना या देना। प्र० इन्हीं लाल पटों में से ×× जुही कदम गेंदा चमेली इस ढब से छूटने लगें जो देखने वालों की छातियों के केवाड़ खुल जाएं (इंशा०–इंशा०, 121)।

(3) दिल खोलकर बातें करना। प्र० खोलने वाले अगर खोले खुले, तो किवाड़े छातियों के खोल दें (चोखे०–हरिऔध, 17)।

(4) बहुत कष्ट होना; चीत्कार करना। प्र० उनके यहां की चीख-पुकार से तो छाती के पट खुल गये।

छाती के पट खुलना या खोलना—दे० छाती के किवाड़ खुलना या खोलना।

छाती खाना—बहुत तंग करना। प्र० यह लड़की तो बड़ा छाती खाती है।

छाती खोलकर खड़ा होना—मुकाबले के लिए पूरी तरह तैयार होना। प्र० मैं तो छाती खोलकर खड़ा हो गया कि जो होना हो, हो जाय।

छाती खोलकर चलना—निर्भय होकर चलना। प्र० तुम डरते क्यों हो, छाती खोलकर चलो।

छाती खोलना-(1) कोई बात गुप्त न रखना। प्र० मैं तो छाती खोल-कर बात करने में विश्वास करता हूं।

(2) साहसी होना। प्र० वह जोरदार आदमी है, हर समय छाती खोले तैयार रहता है।

(3) उदार होना। प्र० उन्होंने छाती खोलकर पिता के श्राद्ध का काम किया।

छाती गजभर की होना—प्रसन्नता और गर्व होना। प्र० होरी की छाती गजभर की हो गयी (गोदान–प्रेमचन्द, 9)।

छाती गर्व से फूल उठना—गर्व होना।

छाती चढ़ना—स्तनों में दूध भर आना। प्र० बच्चा हुए तीन दिन हो गये पर अभी तक छाती नहीं चढ़ी।

छाती चलनी करना या होना, -चूर-चूर करना या होना, -छलनी होना, -छिदना, -में झंझरी पड़ना, -बनना—मन को बहुत पीड़ा पहुंचना या पहुंचाना; दुःख सहते-सहते पस्त हो जाना। प्र० आज छूआछूत-चिन्ता से छिदे कौन-सी छाती हुई छलनी नहीं (चुभते०–हरिऔध, 115); किन्तु अब नहीं। छाती में झंझरियां बन गई हैं

(तितली–प्रसाद, 280)।

छाती चूर-चूर करना या होना—दे० छाती चलनी करना या होना।

छाती चौड़ी करना या होना—(1) हृष्ट-पुष्ट आकार का होना। प्र० किस तरह चौड़ी बना लेवें उसे दैव ने छाती अगर चौड़ी न दी (बोलते०–हरिऔध, 178)।

(2) गर्व करना या होना। प्र० देखिए प्र० (1)।

छाती छरछराना, -छिलना—जी को कष्ट होना। प्र० देखकर नाक जाति की छिदती छरछराती अगर नहीं छाती (चुभते०–हरिऔध, 65)।

छाती छलनी होना—दे० छाती चलनी होना।

छाती छिदना—दे० छाती चलनी होना।

छाती छिलना—दे० छाती छरछराना।

छाती छुड़ाना—स्तनपान करना छुड़ाना।

छाती जलना, -दहना, -सुलगना—(1) शोक से हृदय संतप्त होना। प्र० काम पावक जरति छाती लौन लायौ आनि (सू० सा०–सूर, 4601); राखु राम कहुं जेहि तेहि भांती, नाहित जरिहि जनम भरि छाती (राम० (अ)–तुलसी, 404); विरह-अनल दहकत नित छाती (भा० ग्रं० (1)–भारतेन्दु, 386); उस दिन की स्मृति से छाती अब भी जलने लगती है (कुरु०–दिनकर, 51)।

(2) ईर्ष्या होना। प्र० अवां अनल इव सुलगइ छाती (राम० (बा)–तुलसी, 171); जात से फाजिल पढ़कर हमारी बेटी ने मास्टरी पास किया है। परजात वालों की छाती जलती है (परती०–रेणु, 207)।

(3) क्रोध की अधिकता होना। प्र० वहइ न हाथु दहइ रिस छाती (राम० (बा)–तुलसी, 285)।

(4) अजीर्ण आदि के कारण छाती में जलन होना। प्र० मैं इस समय कुछ नहीं खाऊंगा। छाती जल रही है, रात का खाना नहीं पचा है।

छाती जलाना—दुःख देना; कुढ़ाना; संताप देना। प्र० सूर न होहि स्याम के मुख की, जाहु न जारहु छाती (सू० सा०–सूर, 4283); बाद-विवाद बिषादु बढ़ाइकै, छाती पराई औ आपनी जारैं (कवि०–तुलसी, 168)।

छाती जुड़ाना, -ठंडी पड़ना, -होना, -शीतल होना, -सिराना—शांति मिलना। प्र० दुइ बरदान भूप सन थाती, मांगहु आजु जुड़ावहु छाती (राम० (अ)–तुलसी, 392); जब नरवर के किले में इनका झंडा फहरावे ×× तभी मेरी छाती जुड़ायगी, मेरी आत्मा भी (मृग०–वृं० वर्मा, 101)।

छाती टुकड़े-टुकड़े होना, -टूक-टूक होना, -दो टूक होना—दुःख से अत्यन्त व्यथित होना। प्र० आज तुम्हारी ओर से मुंह फेरते हुए छाती दो टूक हुई जा रही है (लिली–निराला, 94); क्यों न देख इन व्यवहारों को टूक-टूक फिर हो छाती (मुकुल–सु० कु० चौ०, 24)।

छाती टूक-टूक होना—दे० छाती टुकड़े-टुकड़े होना।

छाती टूटना—बहुत दुःख होना। प्र० देखकर कटता कलेजा जाति का, फूटती हैं आंख छाती टूटती (चुभते०–हरिऔध, 78)।

छाती ठंडी पड़ना—दे० छाती जुड़ाना।

छाती ठंडी होना—दे० छाती जुड़ाना।

छाती ठुकना—(1) हिम्मत होना। प्र० इनका मन कमजोर है इससे इनकी छाती अबतक नहीं ठुकती (परीक्षा०–श्री० दास, 116)।

(2) चित्त में दृढ़ता आना। प्र० देखिए प्रयोग (1)।

छाती ठोंककर कहना—बड़ी दृढ़तापूर्वक कहना। प्र० क्यों इतनी छाती ठोंक और हाथ उठा-उठा कर लोगों को विश्वास दिया (भा० ग्रं० (1)–भारतेन्दु, 449); अमर ने छाती ठोंककर कहा—जिस रास्ते तुम जा रहे हो वह ×× सर्वनाश का रास्ता है (कर्म०–प्रेमचंद, 294)।

छाती ठोंककर खड़ा होना—मुकाबले के लिए साहस के साथ प्रस्तुत होना। प्र० भैरो की बातें सुनकर वह तुरन्त छाती ठोंककर खड़ा हो गया।

छाती ठोंकना—साहस दिखलाना; मुकाबला करना। प्र० भाग को तो ठोंकते ही हम रहे आज छाती ठोंककर भी देख लें (चुभते०–हरिऔध, 99)।

छाती ढलना—उम्र होना; स्त्रियों के यौवन का समाप्त होना।

छाती तनी रहना—सगर्व रहना। प्र० आप तनकर के हमें तन बिन न दें जो तनी है तो रहे छाती तनी (चोखे०–हरिऔध, 49)।

छाती तले रखना, -रहना या होना—बहुत प्यार से रखना या रहना; अपने पास रखना। प्र० विमाता तो उसे छाती तले रखती हैं, पलभर को भी दूर नहीं होने देतीं।

छाती तले रहना या होना—दे० छाती तले रखना।

छाती तानकर खड़ा होना—साहसपूर्वक सामना करना। प्र० इन सबके सामने मैं छाती तान कर खड़ा हो सकता हूं (पद्म पराग–पद्म० शर्मा, 406); शूरधर्म कहते हैं छाती तान तीर खाने को (कुरु०–दिनकर, 52)।

छाती तानकर चलना—अभिमानपूर्वक चलना। प्र० न जाने क्यों वह हर समय छाती तानकर ही चलता है।

छाती थामकर रह जाना, -पकड़कर बैठ जाना, -रह जाना—ऐसा शोक जिसे व्यक्त न किया जा सके; असह्य; अव्यक्त शोक। प्र० क्या करती, भगवान ने जो दिया सो सब सहना पड़ा, छाती थामकर रह गयी।

छाती दबाना—बच्चे का दूध पीना। प्र० कल से ही मुन्ना छाती नहीं दबा रहा है।

छाती दरकना, -फटना, -बिदरना, -बिहरना—(1) दुःख से हृदय व्यथित होना। प्र० बल बिलोकि बिहरत नहिं छाती (राम० (लं)–तुलसी, 896); गरजनि तरजनि अनु-अनु भांती, फूटैं कांन अरु फाटै छाती (नंद० ग्रंथा०–नंद०, 168); देख दर-दर दीन बन फिरते उसे, कब नहीं छाती दरक जाती रही (बोल०–हरिऔध, 177)।

(2) ईर्ष्या होना। प्र० अगर हमारी बढ़ती देखकर किसी की छाती फटती है तो फट जाय, मुझे परवाह नहीं (गोदान–प्रेमचंद, 43)।

(3) डर लगना। प्र० भूषण चलत सरजा की सैन छिति पर, छाती दरकति है खरी अखिल खल की (भूषण ग्रंथा०–भूषण, 163)।

छाती दहना—दे० छाती जलना।

छाती दहलना—डर लगना। प्र० मगर वहां तुम न जाओगे क्योंकि वहां जाते तुम्हारी छाती दहलती है (मान० (1)–प्रेमचंद, 300)।

छाती दूनी होना—गर्व या प्रसन्नता होना। प्र० बात ही ऐसी हुई है कि छाती दुगुनी हो जाय (गोदान–प्रेमचंद, 122)।

छाती देना—(1) भरोसा कराना; प्रश्रय देना। प्र० अब तो इस बच्चे पर छाती दो, यही तुम्हारी नाव को पार लगायेगा (बौने०–रां० रा०, 71)।

(2) स्तन पिलाना। प्र० बच्चे को छाती दो बहू, बड़ी देर से रो रहा है।

छाती दो टूक होना—दे० छाती टुकड़े-टुकड़े होना।

छाती धक्‌धक् करना, -धड़कना, -धुकुर-पुकुर करना—डर लगना। प्र० गंगा की छाती धक्-धक् करने लगी (मान० (1)–प्रेमचंद, 131)।

छाती धड़कना—दे० छाती धक्-धक् करना।

छाती धुकुर-पुकुर करना—दे० छाती धक्-धक् करना।

छाती निकालकर चलना—अकड़कर चलना। प्र० पास जिनके कमाल कोई है वे न छाती निकाल हैं चलते (बोल०–हरिऔध, 179)।

छाती निकालकर रख देना—बड़ा से बड़ा त्याग या काम किसी के लिए करना। प्र० बाकी हमारे हाथ में जस नहीं है निगोड़ा—चाहे हम अपनी छाती निकाल के रख दें (बूंद०–नागर, 158)।

(2) दिल की बात कह देना; सच्चा अनुभव और इच्छा प्रकट कर देना। प्र० मैंने तो छाती निकालकर रख दिया, और तो कुछ कहने-सुनने को बाकी नहीं रहा।

छाती पक जाना—मन बहुत दुःखी हो जाना। प्र० अब मेरी छाती पक गयी है, और नहीं।

छाती पकड़कर बैठ जाना—दे० छाती थामकर रह जाना।

छाती पकड़कर रह जाना—दे० छाती थामकर रह जाना।

छाती पकड़ना—स्तनपान करना। प्र० बच्चा कल से ही छाती नहीं पकड़ रहा है, तनिक झड़वा ले आओ।

छाती पक्की करना—दृढ़ निश्चय करना। प्र० मैंने तो छाती पक्की कर ली है, मैं तो जाऊंगी ही।

छाती पत्थर की करना या होना—दुःख सहने के लिये हृदय कठोर करना। प्र० तो बनें क्यों न आप पत्थर हम कर न छाती सके अगर पत्थर (बोल०–हरिऔध, 177)।

छाती पत्थर-सी होना—निर्दय और कठोर होना। प्र० किसलिये बाल-दूब तो न जमी जो न पत्थर समान छाती है (चोखे०–हरिऔध, 127)।

छाती पर अंगार दहकना—ईर्ष्या या क्रोध होना। प्र० उसकी छाती पर हर समय अंगार क्यों दहका करता है?

छाती पर आ चढ़ना—हर वक्त घेरे रहना। प्र० सब नाते-रिश्ते वाले हर समय छाती पर आ चढ़ते हैं, इनसे कैसे मुक्ति पायी जाय।

छाती पर आ जाना, -धमकना—किसी काम के लिए आ डटना। प्र० लो सूरज जी अभी तुम्हारी छाती पर आये जाते हैं (उखड़े०–यादव, 178)।

छाती पर आ धमकना—दे० छाती पर आ जाना।

छाती पर का पत्थर, -पहाड़—बहुत बोझिल; भार स्वरूप। प्र० दस बरस के बाद ये लड़कियां छाती पर का पहाड़ हो जायंगी (दे० दु०–शिव०, 35)।

छाती पर का पहाड़—दे० छाती पर का पत्थर।

छाती पर का बोझ उतरना—किसी बड़ी चिन्ता से मुक्त होना।

छाती पर कायम होना—हर घड़ी साथ लगा रहना। प्र० जब देखो तब यह छाती पर कायम रहता है।

छाती पर कुलिश रखना—हृदय को कठोर करना। प्र० रघुकुल तिलक चले एहि भांती देखउं ठाढ़ कुलिस धरि छाती (राम० (अ)–तुलसी, 516)।

छाती पर कोदों दलना, -दाल दलना, -नमक मलना, -मूंग दलना—दुःख पहुंचानेवाला काम करना। प्र० नाचैं मोर कुलाहल कीजैं। इन्द्र की छाती लौंन सौं मीजैं (नंद० ग्रंथा०–नंद०, 169); जिस कन्नगी की छाती पर उसने मूंग दले हैं वह अब उसको अपनी छाती पर मूंग न दल पाएगी (सुहाग०–नागर, 172); जब दलाते हैं हमीं दिल थाम तो लोग कोदों क्यों न छाती पर दलें (चुभते०–हरिऔध, 65)।

छाती पर घूंसा मारकर चल देना—असमय में सबको बिलखता छोड़ मर जाना। प्र० ऐसे ही वे चले गए थे, ऐसे ही यह भी छाती में घूंसा मार कर चला गया है (बौने०–रां० रा०, 63)।

छाती पर घूंसे लगना—किसी के दुर्वचन या कुकर्म से मर्मान्तिक पीड़ा पहुंचना। प्र० उसके निर्ममतापूर्ण वचन छाती पर घूंसे से लगे।

छाती पर चढ़ बैठना—जबरदस्ती करना। प्र० 'कहां जाऊं' यह प्रश्न प्रधान बनकर पहले ही क्षण मेरी छाती पर चढ़कर बैठ गया (जहाज०–इ० जोशी, 10)।

छाती पर चढ़कर—जबरदस्ती। प्र० मैं छाती पर चढ़कर काम करवा लूंगा, तुम उसकी चिन्ता मत करो।

छाती पर चढ़कर ढाई चुल्लू लहू पीना, -लहू पीना—(1) मार डालना। (2) बदला लेना।

छाती पर चढ़कर लहू पीना—दे० छाती पर चढ़कर ढाई चुल्लू लहू पीना।

छाती पर चढ़ना—(1) कष्ट देने के लिए तैयार रहना। प्र० पैने नैन तेरे से न हेरे मैं अनेरे कहूं, घाती बड़े काती लिए छाती पै रहैं चढ़े (घन० कवित्त–घना०, 127); तुझे पाला-पोसा, पढ़ाया-लिखाया, सब इसलिए कि तू यों हमारी इज्जत उतारकर रख ले? छाती पर चढ़-चढ़ कर आये? (सारा०–यादव, 231)।

(2) कोई काम करवाने के लिए बार-बार आना। प्र० कल से ही वे छाती पर चढ़े हैं कि पहले उनकी अंगूठी बना दूं।

छाती पर छुरी चलना—मन को बहुत कष्ट होना। प्र० उस दिन की स्मृति से छाती अब भी जलने लगती है भीतर कहीं छुरी कोई उर पर चलने

लगती है (कुरु०–दिनकर, 51)।

छाती पर झेलना—स्वयं दुःख सहना। प्र० मैंने इस छाती पर बहुत कुछ झेला है।

छाती पर दाल दलना—दे० छाती पर कोदों दलना।

छाती पर धर करके ले जाना, -रखकर ले जाना, -लादकर ले जाना—मरते समय अपने साथ ले जाना। प्र० अरे हां, कोई छाती पै रख के तो ले नहीं जावे है (सारां०–यादव, 60)।

छाती पर धरा होना, -रखा होना—भोजन का ठीक तरह से न पचना। प्र० सवेरे का खाना अभी तक छाती पर रखा है।

छाती पर नमक दलना—दे० छाती पर कोदों दलना।

छाती पर नारियल फोड़ना—जानबूझ कर कष्ट पहुंचाना।

छाती पर पत्थर की सिल रखना—मन को बहुत कठोर बनाना। प्र० कहां तक छाती पर पत्थर की सिल रखूं (मान० (3)–प्रेमचन्द, 55)।

छाती पर पत्थर रखना, -सिल रखना—दुःख सहने के लिए हृदय कठोर करना। प्र० मैं तो दियो छाती पवि, लयो कलिकाल दवि, सांसति सहत, परबस को न सहैगो (विनय०–तुलसी, 259); दयानन्द, हरिचंद अलखधारी केशव कर। दुःख भूल्यो ज्यौं त्यों करि छाती धरि पाथर (प्र० पी०–प्र० ना० मि०, 175); छाती पर पत्थर रख पत्नी संग चला ही जाता हो (नूर०–भक्त, 15)।

छाती पर पहाड़ होना—अधिक चिन्ता होना। प्र० मेरी छाती पर तो आप ही पहाड़ है, मैं अपनी चिन्ता में ही हूं।

छाती पर पाप चढ़ना—पाप लगना। प्र० जो बढ़ा रिस-वेग अपने आप तो भूल सिर पर पाप छाती पर चढ़ा (बोल०–हरिऔध, 178)।

छाती पर पैर रखकर—उपेक्षा या निरादरपूर्वक। प्र० वे इस तरह छाती पर पैर रखकर चले गये, मैं देखता रहा।

छाती पर फिरना—बराबर स्मरण आना। प्र० मैं उसे एक पल के लिए भी नहीं भूल पाती, वह बराबर छाती पर फिरता रहता है।

छाती पर बने रहना—(1) हर समय पास रहना। प्र० यहां से जाता कौन है, सभी तो छाती पर बने रहते हैं।

(2) किसी काम के लिए बराबर आते रहना। प्र० अपना काम करवाने के लिए वे कई दिनों से छाती पर बने हैं।

छाती पर बाल होना—उदार होना; विश्वासपात्र होना। प्र० किसी की छाती पर बाल हों तो कुछ कहा-सुना भी जाय, नहीं तो क्या लाभ!

छाती पर बैठाना—दुःख का कारण बनाना। प्र० चाहती है कि उसे सौत बनाकर छाती पर बैठा दे (मान० (1)–प्रेमचन्द, 172)।

छाती पर मूंग दलना—दे० छाती पर कोदों दलना।

छाती पर रखकर ले जाना—दे० छाती पर धरकर ले जाना।

छाती पर रखा होना—दे० छाती पर धरा होना।

छाती पर लादकर ले जाना—दे० छाती पर धरकर ले जाना।

छाती पर लिखा होना—मन पर अमिट प्रभाव होना। प्र० वे बतियां छतियां लिखि राखीं, जो नंदलाल कही (सू० सा०–सूर, 4013)।

छाती पर सवार रहना या होना—किसी काम को करने के लिए कड़ी ताकीद करना। प्र० मालिक इस तरह रहे तो काम करने में जी लगता है। यह नहीं कि हरदम छाती पर सवार (मान० (1)–प्रेमचन्द, 304)।

छाती पर सांप फिरना, -लोटना—ईर्ष्या होना; मानसिक कष्ट होना; व्याकुलता होना। प्र० मेरी और मदनमोहन की मित्रता देखकर आपकी छाती पर सांप लोटता है (परीक्षा०–श्री० दास, 159-160); जब से आप मिनिस्टर हुए हैं, उनकी छाती पर सांप लोट रहा है (गोदान–प्रेमचन्द, 324)।

छाती पर सांप लोटना—दे० छाती पर सांप फिरना।

छाती पर सिल रखना—दे० छाती पर पत्थर रखना।

छाती पर से पहाड़ उतरना—चिन्ता से मुक्त होना। प्र० यह बड़ा आनन्द हुआ, मानो आज मेरी छाती पर से एक बोझा उतर गया (भा० ग्रं० (1)–भारतेन्दु, 28)।

छाती पर से बोझ उतरना—दे० छाती पर से पहाड़ उतरना।

छाती पर सौत बिठाना—प्रतिद्वन्द्वी को स्थान देना। प्र० तुमने छाती पर सौत लाकर बिठा दिया है, तो कुछ तो करना ही होगा।

छाती पर हाथ मारना—छाती कूटना; हाय-हाय करना। प्र० कल्ह मरते आज क्यों जायें न मर हाथ छाती पर अगर हैं मारते (चुभते०–हरिऔध, 99)।

छाती पर हाथ रखकर कहना—सत्य कहना; अपने अंतर को साक्षी देकर कहना। प्र० छाती पर हाथ रखकर कहो कि क्या उस समय तुम ऐसे ही सोचते थे?

छाती पर हाथ रखना—सिहाना; हाय-हाय करना; व्याकुल होना। प्र० दोनों धनिया को देखकर छाती पर हाथ रख लेते थे (गोदान–प्रेमचन्द, 300)।

छाती पर होला भूनना—बहुत दुःख देना। प्र० सास ने तो ऐसा-ऐसा छाती पर होला भूना है कि मेरा ही जी जानता है।

छाती पिलाना—स्तनपान कराना। प्र० जान को वार कर जिलाती है पालती है पिला पिला छाती (चोखे०–हरिऔध, 4)।

छाती पीटकर रह जाना—पछताकर या दुःख करके रह जाना। प्र० यह सब बातें मुहल्लेवालों से मालूम हुईं। छाती पीटकर रह गयी (कर्म०–प्रेमचंद, 186)।

छाती पीटना—दे० छाती कूटना।

छाती फटना—दे० छाती दरकना।

छाती फाड़कर—दे० छाती का हाड़ तोड़कर।

छाती फाड़कर मर जाना—बहुत ही कष्ट पाना; जान देना। प्र० भाग में लड़कों का सुख भोगना नहीं बदा था, तो क्या करूं? छाती फाड़ के मर जाऊं (ग़बन–प्रेमचंद, 178)।

छाती फाड़कर चिल्लाना, -रोना—बड़ी करुणा से रोना। प्र० जाती बार वह छाती फाड़कर रोई—मुझ अभागिन को छाती से लगा कर (गोली–चतुर०, 134)।

छाती फाड़कर रोना—दे० छाती फाड़कर चिल्लाना।

छाती फाड़ना—(1) अत्यन्त कष्ट पाना । प्र० सज्जन की दादी × × अपना घर लुटता देख दिन-रात अपनी छाती फाड़ा करती थीं (बूंद० –नागर, 89) ।
(2) बहुत परिश्रम करना । प्र० छाती मैं फाड़ूं और मौज वह मारे ।

छाती फुलाकर कहना—सगर्व कहना । प्र० मैं तो यह बात खुले आम छाती फुलाकर कहता हूं ।

छाती फुलाना—गर्व करना । प्र० वे शिकार और जुआ, मदिरा और विलासिता के दास होकर गर्व से छाती फुलाये घूमते हैं (कामना–प्रसाद, 44) ।

छाती फूल उठना—(1) प्रसन्नता होना । प्र० यज्ञदानी इन्कार तो कर रहे थे, पर छाती फूली जाती थी (मान० (1)–प्रेमचन्द, 187); और अपने बेटे की वीर-घटना सुनकर तो तुम्हारी छाती हर्ष से फूल उठी होगी, क्यों ? (सु० सु०–सुदर्शन, 293) ।
(2) गर्व होना । प्र० देखिए प्रयोग (1) ।

छाती बल्लियों उछलना—(1) बहुत घबराहट होना । प्र० ज्ञान शंकर ने उसे हाथ में लिया तो उनकी छाती बल्लियों उछलने लगी (प्रेमा०–प्रेमचंद, 324) ।
(2) बहुत प्रसन्नता होना । प्र० बेटे की सफलता की खबर पा उसकी छाती बल्लियों उछलने लगी ।

छाती बिदरना—दे० छाती दरकना ।

छाती बिहरना—दे० छाती दरकना ।

छाती भर आना—(1) हृदय का भावातिरेक से गद्‌गद् होना । प्र० पुलक गात आई भरि छाती (राम० (बा)–तुलसी, 294); देखकर लाल को किलक हंसते × × कौन छाती भला न भर आई (चोखे०–हरिऔध, 4) ।
(2) स्तनों में दूध आना । प्र० देखिए प्रयोग (1) ।

छाती भर जाना—शोक संतप्त हो जाना । प्र० मेरी छाती भर गयी है, मैं अब और कुछ भी कहने और करने की स्थिति में नहीं हूं ।

छाती मजबूत होना—हिम्मत होना । प्र० मेरी छाती इतनी मजबूत नहीं है (ग़बन–प्रेमचंद, 281) ।

छाती मसलना—छाती दबाना । प्र० जरा छाती मसल दो, हलका-सा दर्द हो रहा है ।

छाती मसोसना—मन ही मन दुःखी होना । प्र० छाती मसोसकर रह गयी, क्या करती ।

छाती में कांटा छिटना, -बिछना—मन में पीड़ा होना; कसक होना । प्र० तब भला जी जाय क्यों छितरा नहीं जब कि छाती में रहें कांटे छिटे (चुभते०–हरिऔध, 72) ।

छाती में कांटा बिछना—दे० छाती में कांटा छिटना ।

छाती में छाले पड़ना—जी दुःखी होना । प्र० दिल भला किसका नहीं है छिल गया कौन छाती में नहीं छाले पड़े (बोल०–हरिऔध, 183) ।

छाती में छुरी भोंकना—अति अहित करना । प्र० वे पतित हैं पेट पापी के लिये छातियों में भोंक दें जो छूरियां (चोखे०–हरिऔध, 17) ।

छाती में छेद करना या होना, -पड़ना—मन को बहुत कष्ट पहुंचना या पहुंचाना । प्र० बैद आगैं भेद कैसो, छेद तौ छाती छिए (सू० सा०–सूर, 4483); लगती बातें कह करता है वह न किसी छाती में छेद (मर्म०–हरिऔध, 15) ।

छाती में छेद पड़ना—दे० छाती में छेद करना ।

छाती में जलन होना—ईर्ष्या होना । प्र० उनकी छाती में हर समय जलन होती रहती है ।

छाती में झंझरी पड़ना—दे० छाती चलनी होना ।

छाती में झंझरी बनना—दे० छाती चलनी होना ।

छाती में तलवार उतर जाना—छाती में तलवार भोंकी जाना । प्र० वह उतर चित से न पायेगी तभी जाय जब तलवार छाती में उतर (बोल०–हरिऔध, 184) ।

छाती में दूध उमड़ आना—वात्सल्य भाव का उद्रेक होना । प्र० रघु सिंह के आने से अम्मा की बूढ़ी छातियों में मानों दूध उमड़ आया (अमृत०–नागर, 127) ।

छाती में लिख रखना—हमेशा याद रखना । प्र० वै बतियां छतियां लिखि राखी जे नंदलाल कही (सू० सा०–सूर, 4013) ।

छाती रौंदना—जी को कष्ट पहुंचाना । प्र० अब पढ़ा-लिखाकर हाथी बना दिया है न, सो हमारी ही छाती रौंदोगे (सारा०–यादव, 232) ।

छाती लगाना, -लाना—(1) छाती से लगाना । प्र० निरखत अंक स्याम सुंदर के बार-बार लावति छाती (सू० सा०–सूर, 4105) ।
(2) स्तन-पान कराना । प्र० माता ने अपना हृदय कठोर कर लिया कि नवजात शिशु को छाती भी न लगाती थी (मान० (5)–प्रेमचंद, 200) ।

छाती लाना—दे० छाती लगाना ।

छाती वज्र की होना—बहुत कठोर मनवाला होना । प्र० आपकी छाती तो वज्र की है, आप से कुछ भी कहने-सुनने से क्या लाभ !

छाती शीतल होना—दे० छाती जुड़ाना ।

छाती सराहना—शाबाशी देना । प्र० मैं तो हमेशा ही उसकी छाती सराहता हूं ।

छाती सिराना—दे० छाती जुड़ाना ।

छाती सुलगना—दे० छाती जलना ।

छाती सूख जाना—स्तनों में दूध न रह जाना । प्र० वही लड़की पेट-पोछनी थी । छाती बिलकुल सूख गयी थी, लेकिन भगवान की लीला है, और क्या ? (गोदान–प्रेमचंद, 283) ।

छाती से चिपकाये रहना—बराबर साथ रखना; अत्यन्त प्रिय मानना । प्र० पति की मृत्यु के बाद से वह बच्चे को छाती से चिपकाये घूमती रहती है ।

छाती से छाती और आंख से आंख मिलाना—(1) बराबरी करना । प्र० तुम उसकी छाती से छाती और आंख से आंख नहीं मिला सकते, मैं कहे देता हूं ।

(2) मुकाबले के लिए सामने आना। प्र० देखिए प्रयोग (1)।

छाती से पत्थर टलना, -भार उतरना—एक बड़े दायित्व या चिन्ता से मुक्ति पाना। प्र० अरे खैर यू सब खातिर बात तौ चौकस हुइ जै है, बाकी राजा हुइ जांय कौनो तरीके ते, तौ सहदइया हमार छाती से भार अस उतरै (अमृत०–नागर, 628); इस लड़के को तुम नौकरी पर लगवा दो तो मेरी छाती से पत्थर टल जाये।

छाती से भार उतरना—दे० छाती से पत्थर टलना।

छाती से लगा रहना—हरदम पास रहना। प्र० यह लड़का तो हर समय दादी की छाती से ही लगा रहता है।

छाती से लगाकर रखना, -लगाना, -लाना—बहुत प्यार करना। प्र० क्यों बलिबलि कहि छतियन लाई। दसा देखि अति संभ्रम पाई (नंद० ग्रंथा०–नंद०, 110); यों तो मुझे देखते ही खिल उठते थे, दौड़कर छाती से लगा लेते थे, आज मुखातिब ही नहीं होते (रंग० (2)–प्रेमचंद, 175)।

छाती से लगाना—दे० छाती से लगाकर रखना।

छाती से लाना—दे० छाती से लगाकर रखना।

छान डालना, -मारना—(1) घूम आना। प्र० काम करनेवाला हो, तो ऐसा हो। थोड़े ही दिनों में उसने सारा मुल्क छान डाला (रंग० (2)–प्रेमचंद, 270)।

(2) खूब मन लगाकर खोजना। प्र० जोगी महेन्दर और उसके नब्बे लाख अतीतों ने सारे वन के बन छान मारे (इंशा०–इंशा०, 117)।

(3) खूब अध्ययन करना। प्र० मैंने तो इस विषय पर लिखे अनेक ग्रंथ छान डाले पर कहीं संतोषजनक समाधान नहीं मिला।

छान पर होरहा भूंजना—असंभव काम करने की कोशिश करना।

छान मारना—दे० छान डालना।

छानकर पानी पीना—पूरी सावधानी बरतना। प्र० गुरु कीजे जानके, पानी पीजे छानके।

छान-छप्पर—घर-द्वार। प्र० छान-छप्पर कुछ भी तो नहीं रहा।

छानना—(1) शराब पीना, भंग छानना। प्र० हो तुम भी निरे बछिया के ताऊ। आज ज्यादा छान गये थे? (गबन–प्रेमचंद, 99)।

(2) दे० छान डालना।

छान-पगहा तुड़ाना—भागने का प्रयत्न करना। प्र० तुम व्यर्थ ही छान-पगहा तुड़ाने की कोशिश कर रहे हो।

छान-परताल करना, छान-बीन करना—खोज करना। प्र० नकलची इतिहास लेखकों ने उन्हीं के आधार पर बिना अधिक छानबीन किये मक्खी पर मक्खी मारना शुरू कर दिया (पद्म० के पत्र–पद्म० शर्मा, 248); मैं जिस काम को करता हूं, पहले उसकी छान-बीन कर लेता हूं (मा–कौशिक, 22)।

छान-बीन करना—दे० छान-परताल करना।

छाना—रहना। प्र० कहा भयौ जो लोग कहत हैं, कान्ह द्वारिका छायौ (सू० सा०–सूर, 4914); चित्रकूट रघुनंदन छाए समाचार सुनि-सुनि मुनि आए (राम० (अ)–तुलसी, 498)।

छाना हुआ—जाना हुआ; देखा हुआ। प्र० उस मुहल्ले का कोना-कोना मेरा छाना हुआ है, जो पूछो अभी बताता हूं।

छानी पर फूस न होना—बहुत गरीब होना। प्र० उसके पास क्या धरा है? छानी पर फूस तक नहीं है।

छान्ह पर फेंकना—दे० छप्पर पर रखना।

छान्ह पर रखना—दे० छप्पर पर रखना।

छाप—प्रभाव। प्र० उनके आचार-व्यवहार सब पर विदेश की छाप है!

छाप करना, -लगाना, छापा लगाना—मुहर लगाना। प्र० सब चिट्ठियों पर छाप करके भेजना।

छाप छोड़ना, -डालना—प्रभाव डालना। प्र० अब तक शहर में कोई ऐसा साधु, सात्त्विक पुरुष न था जो उन पर अपनी छाप डाल सकें (प्रेमा०–प्रेमचंद, 387)।

छाप डालना—दे० छाप छोड़ना।

छाप पड़ना—प्रभाव पड़ना। प्र० आपकी बातों की छाप मुझ पर बिलकुल नहीं पड़ी थी, यह निश्चित है।

छाप बैठना—दबोच लेना। प्र० उठकर भागने को ही था कि मैं गले पर पहुंच गया और जाते ही छाप बैठा (आज़ाद०–प्रेमचंद, 310)।

छाप लगाना—दे० छाप करना।

छापा पड़ना—अचानक आक्रमण होना। प्र० आंख पर छापा पड़ा, चाहे छिनीं। सब सुखों पर दे दिया दुःख-पुट गया (बोल०–हरिऔध, 202); कल रात गये बगल वाले मकान पर पुलिस का छापा पड़ा।

छापा मारना—एकाएक हमला करना। प्र० उस दिन आपकी सेना को कोट के बाहर निकालकर अंगरेजी सेना पर छापा मारना था (झांसी०–वृं० वर्मा, 434)।

छापा लगाना—दे० छाप करना।

छापामार—छापा डालनेवाला। प्र० दलपत सिंह के इतना बड़ा छापामार इस इलाके में कोई दूसरा नहीं।

छापे में छपना—खुले आम घोषित होना। प्र० तुम्हारी करनी तो छापे में छपने लायक है।

छाया आ जाना—जिन्न या भूत का असर आना। प्र० हर छठ-छमाहें इस पर छाया आती है!

छाया की तरह साथ रहना—हर समय साथ रहना। प्र० आजाद मिस्तरी का काम जानता था परन्तु पुलिस छाया की तरह उसके पीछे लगी रहती थी (झूठा० (2)–यशपाल, 425)।

छाया ढलना—सूर्य की छाया का नीचे जाना; संध्या होना। प्र० छाया ढलने लगी है, अब काम छोड़ो।

छाया तक न छू सकना, -पहुंच सकना—पास तक न पहुंच सकना। प्र० सो मति मोरि भरत महिमाही कहै काह छलि छुअति न छांही (राम० (अ)–तुलसी, 646); तुम उनकी छाया तक नहीं छू सकते, इसे अच्छी तरह समझ लो।

छाया तक न पहुंच सकना—दे० छाया तक न छू सकना।

छाया न छूना, -से दूर भागना, -रहना—पास न जाना; कोई सम्पर्क न रखना। प्र० मैंने कभी नहीं देखा कि छोटी भावज जेठ की छाया तक से दूर भाग जाय (चेतन—अश्क, 122)।

छाया पकड़ना—अवास्तविक को पाने का प्रयत्न करना। प्र० तुम तो छाया को पकड़ने की कोशिश कर रहे हो, सो कैसे होगा।

छाया पड़ना, -लगना—प्रभाव पड़ना। प्र० तुम पर भी भाई की छाया पड़ गयी है।

छाया भी न दिखाई देना—बिलकुल न दिखाई देना। प्र० आपकी तो आजकल छाया भी नहीं दिखाई देती।

छाया मिटना—प्रभाव दूर होना। प्र० अजहुं न छाया मिटति तुम्हारी, तासु चरित सुनु भ्रम रुज हारी (राम० (बा)—तुलसी, 153)।

छाया में आना, -शरण लेना—शरण में आना। प्र० मैं तो आपकी छाया में आ गया हूं महाराज, जो आदेश होगा, वही करूंगा।

छाया में शरण लेना—दे० छाया में आना।

छाया रहना—पूरा प्रभाव होना; पूर रहना। प्र० उन पर तो धनोन्माद छाया रहता है।

छाया लगना—दे० छाया पड़ना।

छाया से कांपना, -डरना—बहुत अधिक डरना; किसी व्यक्ति की कल्पना या अनुपस्थिति में भी भयभीत होना। प्र० मैं तो उनकी छाया से भी डरता हूं।

छाया से दूर भागना— दे० छाया न छूना।

छाया से दूर रहना—दे० छाया न छूना।

छाया से डरना—दे० छाया से कांपना।

छाया हाथ से पकड़ना—असंभव काम करने का प्रयास करना। प्र० वह छाया हाथ से पकड़ना चाहता है पर क्या यह संभव है?

छाया होना—(1) प्रतिरूप होना; समान होना। प्र० वह बिलकुल अपने पिता की छाया थे।
(2) पूरा प्रभाव होना। प्र० पिता की छाया तो उस पर थी ही।

छायी मड़ैया उजाड़ना—बसा-बसाया घर बर्बाद करना; स्थिति खराब करना। प्र० सास रो-रो के कहती है कि मेरे बेटे के जीते जी रंडापे का नेम साध के मुझ अनाथ बुढ़िया की छाई छवाई मड़ैया उजाड़ना चाहती है (अमृत०—नागर, 623)।

छाये घर में आग लगाना—बने बनाये काम को बिगाड़ना; अनिष्ट करना। प्र० एहि पापिनिहि बूझि का परेऊ। छाइ भवन पर पावकु धरेऊ (राम० (अ)—तुलसी, 415)।

छार करना या होना, छार-खार करना या होना—नष्ट करना या होना। प्र० यह तन जारौं छार कै कहौं कि पवन उड़ाउ मकु तेहि मारग हाइ परौं कंत धरे जहं पाउ (पद०—जायसी, 30/12); तुलसी जनकी दिए, स्वामी सों सनेह किये कुसल, नतरु सब ह्वै हैं छार छन मैं (गीता० (सुं०)—तुलसी, 23); मेरे हिय की वेदना—जो कियो आस सब छार (राधा० ग्रंथा०—राधा० दास, 28)।

छार लगाना—संन्यास लेना। प्र० यह दुख भयौ सूर के प्रभु सौं कहत लगैवन छार (सू० सा०—सूर, 4161)।

छार लिपटा पड़ा रहना—कूड़ा-कर्कट में पड़ा रहना। प्र० घर का सारा सामान यों ही छार लिपटा पड़ा है।

छार-खार करना या होना—दे० छार करना या होना।

छावनी छवाना—बहुत समय तक रहना। प्र० तुम क्या यहीं छावनी छवाना चाहते हो?

छावनी पर कौआ न बैठने देना—किसी को पास न आने देना। प्र० वे तो छावनी पर कौआ तक नहीं बैठने देते, तुम उनसे क्या निकाल सकोगे?

छिगुनी छूकर पहुंचा गिलना, -पकड़ना—थोड़ा मिलने पर धीरे-धीरे और लेने की कोशिश करना।

छिगुनी छूकर पहुँचा पकड़ना—दे० छिगुनी छूकर पहुंचा गिलना।

छिछला—हलका; सारहीन। प्र० समग्र दृष्टि से देखते ही यह तर्क छिछला और बचकाना हो जाता है (अमृत०—नागर, 233)।

छिछली भावना—क्षुद्र या बुरे विचार। प्र० ऋषि विश्वमित्र के प्रति भानुप्रताप जी की छिछली भावना भांपते ही वह अवधवासी महात्मा मारे रोष के स्वयंमेव क्रोधी कौशिक बन उठे (अपनी०—उग्र, 70)।

छिड़ना—बातचीत, लड़ाई-झगड़ा या लड़ाई प्रारम्भ होना। प्र० दोनों में रात-दिन छिड़ी रहती है (गोदान—प्रेमचंद, 220); इसका नतीजा यह हुआ कि आखिरकार भारत और पाकिस्तान में लड़ाई छिड़कर ही रही।

छिद जाना—व्यथित होना। प्र० वह वचन बात से कहीं तीखा वेधता है बिना बिधे ही जो। छिद उठे जो उसे नहीं सुनकर कान में छेद ही नहीं हैं तो (चुभते०—हरिऔध, 102)।

छिदराकर चलना—टांगें फैलाकर चलना। प्र० ठीक से चलो, ऐसे छिदराकर क्यों चल रहे हो?

छिद्रान्वेषण करना—खोज-खोज कर बुराई निकालना। प्र० ज्ञानशंकर तो सदैव उनका छिद्रान्वेषण किया करते (प्रेमा०—प्रेमचंद, 125)।

छिद्रान्वेषी—बहुत खोज-पूछ करनेवाला। प्र० धूर्तों ने उन्हें मानव-चरित्र का छिद्रान्वेषी बना दिया था (रंग०—प्रेमचंद, 45)।

छिन पर छिन, छिन-छिन—बार-बार; जरा-जरा देर पर। प्र० छिन पर छिन पानी चाहिए, छिन पर छिन दाना। दिन भर कुछ-न-कुछ लगा रहता है।

छिन-छिन—दे० छिन पर छिन।

छिनाल का अंग—ऐसी वस्तु जिसे देखकर लज्जा हो। प्र० विश्वास तो मानों छिनाल का अंग हो रहा था, देखते-सुनते लज्जा आती थी कि हाय ये कैसे आर्य हैं, किससे उत्पन्न हैं (भा० ग्रं० (3)—भारतेन्दु, 837)।

छिनाल-छत्तीसी झाड़ देना—औरतों के नखरे मिटा देना। प्र० घसीट लाओ यहाँ, सब छिनाल-छतीसी अभी झाड़ दूंगा (दे० दु०—शिव०, 102)।

छिपकिली—दूसरों को फंसानेवाली या वश में करनेवाली। प्र० मगर उमा

माथुर भी कुछ कम छिपकिली न थी (अमृत०—नागर, 414)।

छिपा जहर—गुप्त दुर्भाव। प्र० वह ऊपर से मीठी-मीठी बातें करता है पर मन में छिपा जहर रखता है।

छिपा रुस्तम—ऐसा मनुष्य जिसमें गुण या अवगुण अप्रकट रूप से हों। प्र० मुझे पहले से मालूम होता तो तुम्हें इस घर में घुसने न देती। तुम तो एक छिपे रुस्तम निकले (मान० (7)-प्रेमचन्द, 48); यह भी छिपा रुस्तम है, इसी ने तेरा दिमाग बिगाड़ा है (निशि०—वि० प्र०, 178)।

छिपे-छिपे चोट करना—चोरी-चोरी क्षति पहुंचाना। प्र० वह तुम्हें छिपे-छिपे चोट करना चाहता है।

छिया छरद करना—अत्यन्त घृण्य मानना। प्र० जो छिया छरद करि सकल संतन तजी, तासु तैं मूढ़ मति प्रीति ठानी (सू० सा०—सूर, 110)।

छिया-छिया होना—निन्दा होना। प्र० पिया-पिया बासो दिया, छिया-छिया जग होतु (मति० मक०—मतिराम, 201)।

छिलके के अंदर छिलका निकालना—निस्सार प्रयास करना। प्र० तुम तो व्यर्थ छिलके के अंदर छिलका निकाल रहे हो।

छिला कसेरू, -बादाम—बहुत सजा-सजाया; बना-ठना। प्र० वाह यार, आज तो तुम छिले कसेरू हो रहे हो, क्या बात है?

छिला बादाम—दे० छिला कसेरू।

छींक पड़ना, -होना—असगुन होना। प्र० मुझे तो पहले ही शंका हुई थी ठीक चलने के समय छींक पड़ी थी।

छींक होना—दे० छींक पड़ना।

छींकते ही नाक कटना—(1) बुरे काम का फल तत्काल मिलना। प्र० तुम यह मत समझना कि तुम जो चाहो करो, उसकी देख-रेख करनेवाला कोई नहीं है। शायद तुम्हें नहीं पता कि छींकते ही नाक कटती है। (2) मामूली बात पर सजा मिलना। प्र० यहाँ तो छींकते नाक कटती है, कौन काम में हाथ डाले।

छींकना—अपशकुन करना या मनाना। प्र० छींकने वाले करें तो क्या करें छींकते हैं छींक ही आती नहीं (चुभते०—हरिऔध, 32)।

छींका टूटना—मनोवांछित वस्तु मिल जाना। प्र० लो, तुम्हारे लिए छींका टूटा, तुम मौज करो।

छींके पर निगाह होना—अच्छी चीज को पाने की ताक में होना। प्र० उसकी नजर तो हर समय छींके पर रहती है।

छींटा आना—तनिक भी अहित होना या आलोचना होना। प्र० मैं सब बातें ऐसी खूबसूरती से तय कर दूंगा कि आप पर छींटा भी न आने पायेगा (प्रेमा०—प्रेमचंद, 271)।

छींटा उड़ाना—निन्दा या बुराई करना। प्र० आपका उस महान आत्मा पर छींटे उड़ाना छोटे मुंह बड़ी बात है (कर्म०—प्रेमचन्द, 251)।

छींटा कसना, -छोड़ना, -जमाना, -डालना, -फेंकना, -कशी करना या होना—निन्दा करना; फब्तियां कसना। प्र० डाइरेक्टर-प्रोड्यूसर जयन्त देसाई और उनकी हालीवुड-कट पत्नी उर्वशी पर छींटे कसने में लोगों को मजा आ रहा है (दूधगाछ—दे० स०, 251); मुन्ना ने छींटा जमाया—"एक घोड़ा फेर रही हूं" (चोटी०—निराला, 38); वैयक्तिक चरित्र पर भी कहीं छींटाकशी हुई (मेरे०—गुलाब०, 209)।

छींटा छोड़ना—दे० छींटा कसना।

छींटा जमाना—दे० छींटा कसना।

छींटा डालना—दे० छींटा कसना।

छींटा देना, -मारना—किसी बात की पुष्टि करना। प्र० "आपकी इस उदारता से आपका नाम बिक्रम और हातम की तरह दूर, दूर तक फैल गया है और बहुत लोग आपके दर्शनों की अभिलाषा रखते हैं" मुन्शी चुन्नीलाल ने छींटा दिया (परीक्षा०—श्री० दास, 21)।

छींटा पड़ना—(1) हलकी वर्षा होना। प्र० थोड़े दिन पहले एक छींटा हो गया था इससे चारों तरफ हरियाली छा गई (परीक्षा०—श्री० दास, 109)।
(2) थोड़ा असर होना। प्र० जो न जी में छींट परहित की पड़ी तो हुआ क्या छींट माथे को बना (चुभते०—हरिऔध, 121)।
(3) व्यंग्य किया जाना। प्र० उस दिन मीटिंग में उन पर खूब छींटे पड़े।

छींटा फेंकना—दे० छींटा कसना।

छींटा मारना—दे० छींटा देना।

छींटाकशी करना या होना—दे० छींटा कसना।

छींटों में आना—बहकावे में आना। प्र० ताऊजी ने न जाने कैसे भैया के छींटों में आकर ऐसे नागवार काम के लिए अनुमति दे दी।

छीछालेदर उड़ाना, -करना या होना—(1) हंसी उड़ाना; दुर्गति करना या होना। प्र० लेकिन मैं इतना नीचे नहीं गिर सकता कि पैसे के लिये छीछालेदर करता फिरूं (भारती०—रां० रा०, 94)।
(2) काम बिगाड़ना या बिगड़ना। प्र० ऐसी छीछालेदर उसके घर में कभी न हुई थी (मान० (1)—प्रेमचंद, 61)।
(3) पोल खोलना या खुलना। प्र० वह तुम्हारी खूब छीछालेदर करेगा, तुम वहाँ जाओ तो सही।; राम-राम, तुमने सब छीछालेदर करके रख दिया।

छीछालेदर करना या होना—दे० छीछालेदर उड़ाना।

छी-छी करना—घृणा करना। प्र० उनके कर्म प्रायः इतने बुरे, इतने असह्य हुआ करते हैं कि दूसरे उन्हें बुरा समझ कर ही नहीं रह जाते, छिः छिः करके ही संतोष नहीं कर लेते, मरम्मत करने के लिए भी तैयार हो जाते हैं (चिन्ता० (1)—शुक्ल, 61)।

छी-छी फिरना—बच्चे का पाखाना फिरना।

छीना झपटी करना—खुद लेने का आग्रह करना; कोई चीज लेने के लिए झगड़ा करना। प्र० तुम दोनों ही ले लेना, छीना-झपटी क्यों कर रहे हो?

छीर डालना, छोर डालना—कपड़े के छोरों पर झालर डालना। प्र० चादर के दोनों ओर छीर डाल दो, बहू।

छुआ देना—बहुत कम मात्रा में देना; नाम-मात्र को देना। प्र० घी बस जरा-सा छुआ भर देना, समझीं।

छुईमुई को मात करना—अत्यन्त कोमल एवं लज्जालु होना। प्र० तेरी बहू तो छुइमुई को मात कर रही है।

छुईमुई होना—(1) जरा-सी बात या विषम परिस्थिति में घबड़ा जानेवाली, नष्ट होनेवाली। प्र० हिन्दू धर्म एक कच्चा धागा, छुईमुई का पौदा या मकड़ी का जाला बना हुआ था कि जरा किसी ने छुआ, अंगुली उठाई और फूंक मारी नहीं कि वह टूट गया और मुरझा गया (पद्म पराग—पद्म० शर्मा, 14)।

(2) लजा जाना। प्र० मीनाक्षी छुई-मुई-सी हो गई (कठ०—दे० स०, 39)।

छुच्छू बनाना—तुच्छ बनाना। प्र० वह तो हर समय मुझे छुच्छू बनाये रहता है यह खूब रही।

छुछहंड़ दिखाना—इन्कार कर देना। प्र० उन्होंने ऐसा सूखा छुछहंड़ दिखा दिया कि क्या कहूं।

छुटकारा पाना, -मिलना, -होना—फुरसत मिलना। प्र० इस परीक्षा से छुटकारा पाऊँ तो एकबार बाबूजी के पास हो आऊँ।

छुटकारा मिलना—दे० छुटकारा पाना।

छुटकारा होना—दे० छुटकारा पाना।

छुटा छरिंदा—अनियंत्रित; स्वतंत्र। प्र० वह ठहरा छुटा छरिंदा, उसका क्या भरोसा।

(2) बेफिक्र। प्र० दे० प्रयोग (1)।

छुट्टा-छुट्टी होना—लड़ाई होना। प्र० दोनों बहनों में आजकल छुट्टा-छुट्टी हो गयी है।

छुट्टी पाना, -मिलना—(1) छुटकारा पाना। प्र० मुझे इस झंझट से छुट्टी मिले तब न कुछ और करूं!

(2) अनुपस्थिति की स्वीकृति मिलना। प्र० उसे छुट्टी मिल गयी है, अब जल्दी ही चला जायगा।

(3) नौकरी से जवाब मिल जाना। प्र० मुझे पिछले महीने छुट्टी मिल गयी है, काम की तलाश में हूं।

छुट्टी मनाना—अवकाश का दिन आनन्द से बिताना। प्र० मैं तो आजकल छुट्टियां मना रही हूं।

छुट्टी मिलना—दे० छुट्टी पाना।

छुट्टी होना—झंझट दूर होना। प्र० तुम यहां से जाओ तो मेरी छुट्टी हो।

छुट्टे हाथ—हाथ में बिना कुछ लिये। प्र० वह तो यों ही छुट्टे हाथ चला आया।

छुड़ाना—(1) रेहन माल छुड़ाना। प्र० अगले महीने रुपये हो जायेंगे तब तुम्हारे गहने छुड़ा लूंगा।

(2) किसी के कब्जे से निकालना; मुक्त कराना। प्र० पुलिस की हिरासत से साथियों को छुड़ाना ही पड़ेगा।

छुतहा रोग—दे० छूत की बीमारी।

छुद्दा रखना—दोष देना; अविश्वास करना। प्र० नाहक किसी पर छुद्दा रखना अच्छा नहीं (आजाद०—प्रेमचन्द, 107)।

छुनुन-मुनुन—जेवरों की झनकार। प्र० बगल के कमरे में छुनुन-मुनुन हो रही थी।

छुरियां कटखन में पड़ना—(1) ले जाकर इस्तेमाल करना। प्र० मेरी सारी चीजें तुम लोगों की छुरियाँ कटखन में पड़ गयीं।

(2) रक्त का पाखाना होना। प्र० पिछले सात दिनों से उसकी छुरियां कटखन में पड़ी हुई हैं।

छुरी गले पर फिरना या फेरना—दुःख पहुंचना या पहुंचाना। प्र० इस तरह तुम क्यों मेरे गले पर छुरी फेरना चाहते हो?

छुरी चलना—छुरी से लड़ाई या वार होना। प्र० मुहल्ले के नवयुवकों में छुरी चल जायगी (सेवा०—प्रेमचंद, 72)।

छुरी चलाना—छिपे-छिपे किसी का अहित करना। प्र० यारो, क्यों विपत के मारे हुए दुखियों पर यह कीचड़ फेंक रहे हो, ये छुरियां चला रहे हो? (रंग० (1)—प्रेमचन्द, 398)।

छुरी तले दबाना—बहुत दुःख देना। प्र० इस तरह छुरी तले दबाना उचित नहीं।

छुरी तले दम लेना—दुःखमय जीवन व्यतीत करना। प्र० मेरी तो सारी जिन्दगी ऐसे ही छुरी तले दम लेते गुजरी है।

छुरी तेज करना—(1) सताना; दुःख देना। प्र० वे हर समय मुझ पर ही छुरी तेज करते रहते हैं।

(2) छुरी से काटना। प्र० आव देखा न ताव, दो रुपये टेंट से निकाले और आम पर छुरी तेज की (आजाद०—प्रेमचंद, 128)।

छुरी तेज रहना—मारने को तैयार रहना। प्र० उनकी छुरी हमेशा तेज रहती है, कहने की जरूरत नहीं होती।

(किसी पर) छुरी तेज रहना या होना—किसी (कमजोर) को दण्ड देना।

छुरी तेज होना—(1) रोब होना। प्र० उनकी बात मत पूछो, आजकल उनकी छुरी तेज है।

(2) लड़ने को तैयार होना। प्र० भाई सीधी-सी बात है, यदि तुम्हारी छुरी तेज होगी तो उनकी भी होगी ही।

छुरी देना—मारना; गला काटना। प्र० वह तो छुरी देने को कमर कसे तैयार है।

छुरी पर सान देना—लड़ने की तैयारी करना।

छुरी फिरना—छाती फटना, कष्ट होना। प्र० उसकी उन्नति देख तुम पर छुरी क्यों फिरती है?

छुरी फेरना—(1) बहुत हानि पहुँचाना। प्र० किसलिये हम फेर दें उन पर छुरी जो कि मुंह से बोल भी सकती नहीं (चुभते०—हरिऔध, 155)।

(2) मारना। प्र० इसके नाम पर कला के गले पर खुल्लमखुल्ला छुरी फेरी जाने लगी (सा० जि०—ल० प्र० सु०, 64)।

छुरी मारना—छुरी भोंकना।

छुरी से बात करना—छुरी से वार करना; मार डालना। प्र० वह अगर नाराज होंगे तो दरजा घटा देंगे। आप तो छुरी से बात करेंगे (आजाद०—

प्रेमचंद, 451)।

छुरी-कटारी चलाना—बहुत सताना।

छुरी-कटारी दिखाना, -बताना—मारने की धमकी देना।

छुरी-कटारी बताना—दे० छुरी कटारी दिखाना।

छुरी-कटारी रहना—वैर होना। प्र० उन दोनों में तो एक जमाने से छुरी-कटारी है।

छुरी-कटारी लिये रहना—लड़ने के लिये आमादा रहना। प्र० तुम हर समय छुरी-कटारी लिये तैयार रहते हो।

छुरी-कटारी होना—छुरी चलना। प्र० नुक्कड़ पर तो दोनों गुण्डों में छुरी-कटारी हो रही है।

छुरी-बंद भाई—एक ही पेशे के कसाई। प्र० हम दोनों छुरी-बंद भाई हैं, मामू!

छुल-छुल मूतना—डर के मारे पेशाव कर देना।

छुल-छुल करते फिरना—कहीं स्थिर नहीं रहना। प्र० क्या इधर से उधर छुल-छुल करते फिरा करते हो, कहीं स्थिर होकर बैठो न!

छूंछ उड़ाना—टुकड़े-टुकड़े करना; खाल उधेड़ना। प्र० मैं उस नालायक की छूंछ उड़ा कर रख दूंगा।

छूंछे हाथ—(1) बिना रुपये पैसे के; खाली हाथ। प्र० घर कैसें पैठव मैं छूंछे। कौन उतर देवेउं तिन पूंछे (पद०—जायसी, 7/2)।

(2) बिना अस्त्र-शस्त्र के। प्र० तलवार बंदूक कुछ दीजिए तब न आगे बढ़ूं या छूंछे हाथ ही जाऊं।

छू करना—मंत्र पढ़ना या आशीर्वाद देकर फूंकना। प्र० चुप करो, अभी मैं छू कर देता हूं, दर्द ठीक हो जायगा।

छू न जाना—(1) बिलकुल न होना। प्र० भय तो उसे छू तक नहीं गया था (सतमी०—राहुल, 101)।

(2) कोई असर न होना। प्र० उसने कुछ खाया पिया नहीं और इसके लिए गालियां सुनीं जो उसे छू नहीं गईं (शेखर० (1)—अज्ञेय, 175)।

छू बनना, -होना—चुपचाप भाग जाना। प्र० तुमने न कुछ कहा न सुना, छू हो गये।

छू लेना—असर होना। प्र० बुआ को शायद यह बात छू गई (त्याग०—जैनेन्द्र, 17)।

छू होना—दे० छू बनना।

छुआ-छूत—खान-पान रहन-सहन आदि में नियम-विचार करना। प्र० बूआजी को बड़ा छुआ-छूत है, किसी के हाथ की पक्की रसोई भी नहीं खातीं।

छू-छक्का देखना—तमाशा देखना। प्र० कहां तो नमाज पढ़ने मसजिद आये थे, कहां छू-छक्का देखने का शौक हुआ (आजाद०—प्रेमचंद, 91)।

छूछा लगना—सारहीन प्रतीत होना। प्र० जितने तरह के अभिमान हैं उनमें कुल का अभिमान हमें बड़ा छूछा मालूम होता है (भट्ट नि०—बा० भट्ट, 18)।

छू-छू बनना या बनाना—बेवकूफ बनना या बनाना। प्र० इस किस्से में वह बिचारा अच्छा छू-छू बन गया।

छूट देना—स्वतंत्रता देना; प्रतिबंध न रखना। प्र० रविवार को यहां न आने की मैंने उसे छूट दे रखी है।

छूट होना—कोई रोक न होना। प्र० दुर्भाग्यवश इस समय जो व्यवस्था हमारे सिर पर है, उसमें इस बात की छूट है (अशोक०—ह० प्र० द्वि०, 157)।

छूटकर—बड़े आग्रह से। प्र० गरमियों में तो वह छूटकर सत्तू खाते थे; बल्कि जाड़े में भी कड़ाके की धूप में बैठकर बड़े प्रेम से सत्तू खाया करते थे (दे० बु०—शिव०, 118)।

छूटते ही—फौरन। प्र० मेरे सवाल पूछने पर छूटते ही वह बोला—× ×।

छूटना—(1) आजाद होना। प्र० रामनारायण पिछले महीने छूटकर आया है।

(2) बोझ हलका होना। प्र० चलो बाबा, मैं किसी तरह इस झमेले से छूटा, मेरी जान बची।

छूटा तीर—कही हुई बात या किया काम। प्र० छूटा तीर कभी वापिस आता है?

छूटा सांड़—ऐसा व्यक्ति जिस पर किसी प्रकार का कोई बंधन न हो। प्र० लड़के गांव में भी हैं, मगर उनमें कुछ लिहाज है, कुछ अदब है, कुछ डर है। ये सब तो छूटे सांड़ हैं (गोदान—प्रेमचंद, 260)।

छूटी हत्या गले पड़ना—जबरदस्ती किसी काम या अपयश का अपने सिर आना। प्र० बिना मतलब यह छूटी हत्या मेरे गले पड़ रही है।

छूत—नापाक होना; दोष, बुराई। प्र० इस पानी में क्या छूत है जो तुम नहीं पीओगी। अभी तो कुएं से खींचकर आया है।

छूत उतरना—अशौच दूर होना। प्र० तेरहवें दिन छूत उतरेगी तब तेल लगाना।

छूत उतारना, -झाड़ना—भूत-प्रेत की छाया का प्रभाव मंत्र से दूर करना।

छूत करना—छुआ-छूत मानना। प्र० इतना छूत करोगी तो इस घर में गुजारा होना मुश्किल होगा।

छूत की बीमारी—(1) वह बात या प्रभाव जो बात की बात में चारों ओर फैल जाए। प्र० शराब तो आजकल छूत की बीमारी हो गयी है, जो पीनेवाले के सम्पर्क में आया, उसे यह रोग लगा।

छूत छुड़ाना—उलाहना मिटाना। प्र० आप छूत छुड़ाने आये थे क्या जो दस मिनिट में जाने को कह रहे हैं।

छूत झाड़ना—दे० छूत उतारना।

छूत पैठना—छूत लगना। प्र० क्यों, इस बर्तन में छूत पैठ गयी है क्या जो इस्तेमाल के लायक न रहा?

छूत फैलना—चारों ओर प्रभाव होना। प्र० अनुशासनहीनता और उद्दंडता की छूत चारों ओर फैल गयी है।

छूत लगना—(1) प्रभाव होना। प्र० क्या तुम्हें भी नये जमाने की छूत लग गयी है?

(2) अशौच होना। प्र० मुझे आजकल छूत लगा है, परसों शुद्ध होऊंगा।

छूते सोना होना—काम करते लाभ ही लाभ होना। प्र० जिसको मैंने छू दिया हुआ वह सोना (चक्र०—दिनकर, 44)।

छूना—(1) प्रयोग में लाना; लेना। प्र० तब सब लोग सभी हिन्दुस्तानी वस्तुएं काम में लाते थे अब कौन अंग्रेजी के आगे हिन्दुस्तानी को छूता है? (राधा० ग्रंथा०—राधा० दास, 556)।
(2) प्रभावित करना। प्र० ये कहीं भी हमें नहीं छूती (सारा०—यादव, 150)।
(3) मारना। प्र० उसने तो बहू को छुआ भी नहीं (गोदान—प्रेमचंद, 30)।

छूने को होना, -से होना—स्त्रियों का रजस्वला होना।

छूने से होना—दे० छूने को होना।

छू-मंतर—जादू। प्र० देखते रहो, पल भर में छू-मंतर से मैं टेबुल की सब चीजें गायब कर दूंगा।

छू-मंतर करना—(1) जादू करना; मंत्र पढ़ना। प्र० मैं अभी छू-मंतर करता हूं, सब चीजें नीचे के खाने से ऊपर के खाने में पहुंच जायेंगी।
(2) गायब कर देना। प्र० देखते-देखते उसने सब छू-मंतर कर दिया।

छू-मंतर होना—भाग जाना; अदृश्य हो जाना। प्र० उसका सारा विराग, सारी उदासीनता मानों छू-मंतर हो गयी थी (गबन—प्रेमचंद, 8)।

छूमछननन होना—खुशियां मनाना। प्र० उनके यहां तो पिछले कई दिनों से छूमछननन हो रहा है।

छेंक देना—(1) वही में भरपाई लिखना। प्र० पठानिन की रकम छेंक लीजिएगा मुनीम जी, रुपये आ गये हैं।
(2) विवाह स्थिर हो जाना। प्र० कार्तिक में लड़का छेंकने जाऊंगा।

छेंकन छेंकना—इमारत की बुनियाद का खत लगाना।

छेंकना—(1) दुर्ग घेरना। प्र० मेघनाद सुनि श्रवन अस गढ़ पुनि छेंका आइ (राम० (लं)—तुलसी, 916)।
(2) किसी को दी या किसी से ली हुई रकम भरपाई करना। प्र० मेरी रकम छेंकना मत भूल जाना मुनीम जी।
(3) किसी प्रण इत्यादि को आगे और बढ़ने न देने के लिये मंत्र इत्यादि का उपचार करना।

छेड़ करना—चिढ़ाना। प्र० तुम हर समय उससे छेड़ क्यों करते हो? छोटा भाई है तुम्हारा।

छेड़ निकालना—चिढ़ानेवाली बात करना। प्र० जब उन्हें नहीं पसन्द है तो उनसे छेड़ क्यों निकालते हो।

छेड़ में—मजाक में; चिढ़ाने के लिए। प्र० होटलवाला ईरानी अक्सर हमसे छेड़ में कहा करता कि आजकल आप लोगों की चांदी कटती होगी (ये कोठे०—नागर, 37-38)।

छेड़खानी करना, छेड़-छाड़ करना—तंग करना; लड़कियों को छेड़ना। प्र० हर समय हर किसी से छेड़-छाड़ करना क्या ठीक है?

छेड़-छाड़ करना—दे० छेड़खानी करना।

छेड़छाड़ होना—(1) वार होना। प्र० दोनों पक्षों में छेड़छाड़ होने लगी थी।
(2) आरंभ होना। प्र० बरसात की छेड़छाड़ भी होने लगी।

छेड़-छेड़ लड़ना—सायास बार-बार लड़ाई करना। प्र० मैं तो चुप हूं, वे ही छेड़-छेड़ लड़ रही हैं।

छेड़ना—(1) पर-स्त्री से अश्लील कुरुचिपूर्ण व्यवहार करना। प्र० वहीं खड़े रहो! हमको क्यों छेड़ते हो? (मृग०—वृं० वर्मा, 153)।
(2) कोई बाजा बजाना। प्र० तानपूरा तनिक जोर से छेड़ो।
(3) प्रारम्भ करना; कहना। प्र० मैं तो उस बारे में कोई भी बात नहीं करना चाहती थी; पर मौसीजी ने ही छेड़ दिया।

छेद—दोष; क्षति पहुचानेवाली बात या स्थिति। प्र० उसके साम्राज्य में जो दो-चार छिद्र हैं उनमें हमारे गणराज्य ही सबसे अधिक उसकी आंख में खटक रहे हैं (वैशाली० (2)—चतुर०, 96)।

छेद करना—हानि करना। प्र० मैंने तो आपका कोई छेद नहीं किया फिर आप मुझसे रुष्ट क्यों हैं।

छेद ढूंढ़ना, -निकालना—बुराई खोजना। प्र० तुमने हर किसी में छेद ढूंढ़ने का पेशा अख्तियार कर लिया है, ढूंढ़ो।

छेद निकालना—दे० छेद ढूंढ़ना।

छेद-छेदकर मार डालना, छेदना—बहुत तंग करना; दुःख देना। प्र० भाभी जीने न देंगी। छेद-छेद कर मार डालेंगी (सेवा०—प्रेमचंद, 53)।

छेदना—दे० छेद-छेदकर मार डालना।

छेव मारना—निशान बनाना। प्र० पहले छेव मार लो फिर काटना नहीं तो टेढ़ा-मेढ़ा हो जायगा।

छेव लगाना—वार या घाव करना। प्र० कल रात चोरों ने भैया को कई छेव लगाये।

छै जाना—छेद फैल जाना। प्र० लो इसका छेद भी छै गया।

छैल चिकनियां—बनठनकर रहनेवाला। प्र० सेठ जी जवान और बड़े छैल-चिकनिया थे (ये कोठे०—नागर, 52)।

छैला बनना—(1) कम उम्रवाले लड़कों-सा आचरण करना। प्र० अंधा छैला बना जाता है (रंग०—प्रेमचंद, 337)।
(2) खूब सजधजकर रहना। प्र० वह तो आजकल एकदम छैला बना घूमता है।

छोकर बुद्धि—अनुभवहीनता। प्र० ऐसी छोकर बुद्धि से कहीं कोई काम पार पड़ सकता है।

छोटभैय्या—बड़े आदमियों में नीचे वाले। प्र० उनकी गिनती अभी तक छुटभैयों में थी (मान० (6)—प्रेमचंद, 120)।

छोटा—तुच्छ; संकुचित। प्र० बन बिलोकि लघु लागहिं बिपुल बिबुध-बन-बाग (गीता० (अ)—तुलसी, 47); शेखर को लगा कि वह कुछ छोटा हो गया है या उसके सामने वाला व्यक्ति कुछ ऊंचा उठ गया है (शेखर० (2)—अज्ञेय, 63); और तुम पुरुष हो······इतने छोटे हृदय और इतनी छोटी आत्मा के बल पर······(सिंदूर०—उग्र, 113)।

छोटा आदमी—नीच जाति या मामूली काम करनेवाला आदमी। प्र० कैसे

छोटे नरनु तैं सरत बड़नु के काम मढ़्यो दमामो जातु क्यौं, कहि चूहे कैं चाम (बिहारी रत्ना०–बिहारी, 131); ऐसे ही लोगों का सहारा पाकर कभी-कभी छोटे आदमी मुंशीजी के मुंह लग जाते थे (मान० (8)–प्रेमचंद, 17)।

छोटा करना, -गिनना, -मानना, -समझना—तुच्छ समझना। प्र० बोली चतुर सखी मृदु बानी। तेजवंत लघु गनिअ न रानी (राम० (बा)–तुलसी, 263)।

छोटा गिनना—दे० छोटा करना।

छोटा चौक होना—प्रथम रजोदर्शन का संस्कार कर्म।

छोटा जी, -दिल, छोटी तबीयत—संकुचित मन; हीन मनोवृत्ति। प्र० उनका छोटा जी है, उनसे क्या उम्मीद रख सकते हो।

छोटा दिल—दे० छोटा जी।

छोटा बनाना—तुच्छ समझना। प्र० लेकिन आप इसके लिए कृतज्ञ मत होइए, आप उस तरह अपने को छोटा मत बनाइए (शेखर० (1)-अज्ञेय, 223)।

छोटा भाग्य—कम सौभाग्यशाली स्थिति। प्र० भाग छोट अभिलाषु बड़ करउं एक विस्वास (राम० (बा)–तुलसी, 14)।

छोटा मानना—दे० छोटा करना।

छोटा समझना—दे० छोटा करना।

छोटापन—क्षुद्रता। प्र० छोटेपन महं आइ है, कैसे मोटी बात। छेरी के मुंह में दियो, ज्यों पेठा न समात (वृं० स०–वृन्द०, 95)।

छोटा-मोटा—सामान्य; मामूली। प्र० कोई छोटा-मोटा काम कर लूंगा, मेरा-खर्च निकल आयेगा।

छोटी जाति—शूद्र जाति। प्र० एक दिन उसे घर से आज्ञा मिली कि वह यदि पड़ोसवाले घर में चला भी जाय तो वहां कुछ खाये-पीये नहीं ×× क्योंकि वे छोटी जात के हैं (शेखर० (1)–अज्ञेय, 60)।

छोटी तबीयत—दे० छोटा जी।

छोटी बात—मामूली या तुच्छ बात। प्र० अति लघु बात लागि दुखु पावा (राम० (अ)–तुलसी, 414); ताहिरअली इस रकम का हिसाब लेना छोटी बात समझते थे (रंग०–प्रेमचंद, 230)।

छोटी बात मुंह से निकालना—तुच्छ बात कहना। प्र० ऐसी छोटी बात फिर मुंह से भी मत निकालना।

छोटी बुद्धि—नीच बुद्धि; संकीर्ण या स्वार्थी मनोवृत्ति। प्र० उनकी ऐसी छोटी बुद्धि है तो उनके ऊपर इतने बड़े काम का दायित्व न डालो।

छोटी हंड़िया-छोटे दिल का। प्र० वह छोटी हंड़िया है, उससे कुछ आशा मत करो।

छोटी हाजिरी—नाश्ता। प्र० प्रातःकाल था। लोग जल-पान करके, या छोटी हाजिरी खाकर, मेज पर से उठे थे (रंग० (1)–प्रेमचंद, 40)।

छोटी-छोटी बात—दे० छोटी बात।

छोटे दिल का आदमी—कम हौसलेवाला; तुच्छ; हीन मनोवृत्तिवाला। प्र० छोटे दिल के आदमी कोई भी बड़ा काम कैसे उठा सकते हैं।

छोटे मुंह बड़ी बात—असमर्थ या कम हैसियतवाले व्यक्ति का कोई बड़ा काम करना। प्र० उनकी रचनाओं को समझना मेरे लिए छोटा मुंह बड़ी बात थी (मान० (1)–प्रेमचंद, 78)।

छोटे मुंह बड़ी बात कहना—अपनी योग्यता या स्थिति से अधिक बात करना; किसी बड़े को अपमानित करना। प्र० छोटे बदन कहउं बड़ि बाता। छमब तात लखि बाम बिधाता (राम० (अ)–तुलसी, 650); छोटे मुंह बड़ी बात, कहौ किन आपु सम्हारे (सू० सा०–सूर, 2079); यदि सबकी धड़क एकबारगी खुल जाय तो एक ओर छोटे मुंह से बड़ी-बड़ी बातें निकलने लगें, चार दिन के मेहमान तरह-तरह की फरमाइशें करने लगें ×× (चिन्ता० (1)–शुक्ल, 65-66)।

छोटे लोग—निम्न श्रेणी के लोग। प्र० चौराहों पर, 'छोटे लोगों' के महल्लों में कनिया में लल्ला लल्ली सम्हाले, कांव-कांव करती कामिनियों के बीच घिर कर सनीचर वाले भड्डरी तक यज्ञ करा रहे थे (अमृत०–नागर, 644)।

छोटे लोगो का थोड़े धन मे बौरा जाना—क्षुद्र बुद्धि वाले लोगों का उन्नति करने पर बहुत घमंड करना। प्र० खेलत खात रहे ब्रज भीतर। नान्हें लोग तनक धन ईतर (सू० सा०–सूर, 1542)।

छोटे से छोटा—मामूली से मामूली। प्र० मैं छोटे से छोटा काम करने को तैयार हूं।

छोटे-बड़े—अमीर-गरीब सभी। प्र० उनके यहां छोटे-बड़े सबके साथ समान बर्ताव होता है।

छोटों के मुंह लगना—निम्न प्रवृत्तिवाले लोगों से जवाब-सवाल करना। प्र० जो छोटों के मुंह लगे, वह छोटा (गोदान–प्रेमचंद, 226)।

छोड़ जाना, -मरना—अपने बाद रहने देना। प्र० यह सारी जमीन जायदाद मैं तुम्हीं लोगों के लिए तो छोड़ जाऊंगा।

छोड़ देना—(1) त्याग देना। प्र० उन्होंने तो अपनी बीबी को छोड़ दिया है।

(2) रिहा कर देना। प्र० अब इन कैदियों को भी छोड़ दीजिए, कब तक हिरासत में रखिएगा।

छोड़ बैठना—त्याग देना। प्र० मां उसी दिन से खाना-पीना छोड़े बैठी हैं।

छोड़ मरना-दे० छोड़ जाना।

छोड़कर—अतिरिक्त; सिवाय। प्र० मुझे छोड़कर और सब लोग तो जा ही सकते हैं।

(किसी पर किसी को) छोड़ना—किसी को पकड़ने या चोट पहुंचाने के लिये उसके पीछे किसी को लगा देना। प्र० गुप्तचर छोड़ दिये गये हैं, उम्मीद है कि अपराधी जल्दी ही पकड़ लिए जायेंगे।

छोड़ने जाना—किसी को स्टेशन अथवा दरवाजे तक पहुंचाने जाना। प्र० मैं भाई साहब के एक मित्र के साथ चला जाऊंगा। वही मुझे छोड़ भी जायेंगे (पैंतरे–अश्क, 20)।

छोप देना—जबरदस्ती लाद देना। प्र० मैं तो ना-ना करती रही पर वे माने ही नहीं, जबरदस्ती इतना काम मुझ पर छोप दिया।

छोप रखना, छोपे रहना—अपनी ही कहे जाना; दूसरे को न बोलने देना।

प्र० तुम अपनी ही छोप रखोगे या किसी और को भी कुछ कहने दोगे ।

छोप-छाप करना, छोपना-छापना—घर आदि की मरम्मत करना । प्र० छोप-छाप करके यह बरसात निकाल दो, उसके बाद देखा जायगा ।

छोपना-छापना—दे० छोप-छाप करना ।

छोपा मारना—किसी मनुष्य या वस्तु के चारों ओर बहुत से लोगों का घिरा रहना । प्र० तुम सब लोग क्या छोपा मारे हो ? बहू को जरा देर आराम तो करने दो ।

छोपे रहना—दे० छोप रखना ।

छोर डालना—दे० छोर डालना ।

छोह करना, छोहाना—प्यार करना । प्र० बड़ा छोह कर रही हैं बुआ, कुछ मतलब होगा ।

छोह दिखाना—ऊपरी प्रेम दिखाना । प्र० वे तो हर समय छोह दिखाया करती हैं, पर मैं ही नहीं रुख देती ।

छोहाना—दे० छोह करना ।

छौंकना—अपनी बात कहना । प्र० चुप रहो जी तुम, समझते तो कुछ हो नहीं और बीच-बीच में अपनी छौंकते हो (सारा०—यादव, 197) ।

छौना चढ़ाना—जानवर का बच्चा चढ़ाकर देवी की पूजा करना ।

कोश जिनसे मुहावरे संग्रहीत हैं

1–हिन्दी मुहावरा कोश	: भोलानाथ तिवारी
2–वृहत् मुहावरा कोश	: रामदहिन मिश्र : छविनाथ पांडेय
3–हिन्दी मुहावरा कोश	: आर० जे० सरहिंदी
4–हिन्दी मुहावरे	: ब्रह्मस्वरूप दिनकर शर्मा
5–हिन्दी शब्द सागर	: नागरी प्रचारिणी सभा
6–हिन्दुस्तानी कहावतें और मुहावरे	: फालन
7–वृहत् हिन्दी कोश	: ज्ञान मंडल
8–व्रजभाषा सूर कोश	: प्रेमनारायण टंडन
9–हिन्दी लोकोक्ति कोश	: विश्वम्भर नाथ खत्री
10–मानक हिन्दी कोश	: रामचंद्र वर्मा
11–लोकोक्तियाँ तथा मुहावरे	: गोविन्ददास विनीत
12–मुहावरे और लोकोक्तियाँ	: गिरीशचंद्र जोशी
13–लोकोक्तियाँ और मुहावरे	: बहादुरचंद्र शास्त्री
14–हिन्दुस्तानी मुहावरे	: अम्बिकाप्रसाद वाजपेयी
15–मुहावरा कोश	: रघुवीर शरण : श्रीराम गुप्त
16–मुहावरे और कहावतें	: बालमुकुंद अर्श मलसियानी

आवश्यक संशोधन

पृ/का/पं०	मुद्रित	शुद्ध रूप
9/2/22	असीसी	असीसा
12/1/42	तुम्हारौ	तुम्हारी
13/2/19	7	87
15/2/17	पड़	पड़े
16/2/8	अट्ठ-सट्ठ	अट्ट-सट्ट
16/2/13	अठकापालीपन	अठकपालीपन
18/1/13	मोल	भील
18/1/35	अघमेसर	अधभेसर
18/2/26	469	4691
20/1/36	प्रक्षि	क्षिप्र
20/2/31	सुदृद	सुहृद
22/1/42	प्रपना	अपना
23/1/14	जांघै	जांघ
24/1/10	मा०	मा
24/2/34	डालकर	ढालकर
25/1/2	अंतद्वन्द्व	अंतर्द्वन्द्व
25/2/38	पर	घर
27/1/25	रांगें	रंगि
27/2/18	भुतना	भुगतना
27/2/25	2425	1425
29/1/17	मल	मैल
29/1/31	आवे	आये
29/1/41	सत्यासी	सत्य-सी
29/2/42	भूरि	मूरि
30/1/17	करि	कर
30/1/37	भ्रम	स्रम
30/1/38	सु०	सू०
30/2/6	गप्पों	गप्पो
32/1/19	अलोला	अलोना
32/2/24–25	हास्यो	हार्‌यो
32/2/31	बात	घात
35/2/12	हया	हयां
35/2/26	सब	सच
36/2/28	मी०	पी०
36/1/22	कानासूर	का नासूर
36/1/36	पड़ी	बड़ी

पृ/का/पं०	मुद्रित	शुद्ध रूप
37/1/5	मा०	मा
37/1/17	तीन	तीव्र
38/1/1	, करना	अनावश्यक
39/2/10	चह्यौ	चल्यौ
40/1/36	जो	जोत
43/2/14	चित्र	चित्त
45/1/13	साथ	साघ
45/2/4	उ०	गु०
46/2/29	शीलों	शीलो
46/2/30	खन	खून
47/2/18	पह्चान में	में पह्चान
48/1/2	उस	उसकी
51/2/16	भगवान	भागवान
52/2/22	वचाई, लाई	वचाइ, लाइ
53/1/1	थक	पक
54/2/35	तल	तले
55/2/2	कुछू	कछू
56/2/31	नाजनोन	नाजनीन
57/1/29	सपनोहूं	सपनेहूं
59/2/35, 36	आंते-पोते	आंते-पीते
60/1/7	एलिग	एलिस
60/2/1	करोने	करीने
64/1/21	छद	छेद
71/2/11	दूर	हूर
72/2/7	पायना	पायना
72/2/41	गस्या मित्या	गर्‌या मिल्या
73/2/18	वालों	बालों
74/2/18	25	22
74/2/21	भूल	मूल
76/2/11	मुर्गा	मुर्गी
80/1/19	अजाव	अजाब
81/1/31	का	को
81/2/16	जानि	जनि
84/2/8	तय	तप
87/1/33		तेतखन के पहले जोड़ें—बहुत ऊंचा होना। प्र०

पृ/का/पं०	मुद्रित	शुद्ध रूप
91/1/14	चालें	चाले
91/1/15	भूल	मूल
95/2/24	नेंह	नंह
99/1/39	पो०	पी०
100/1/2	बरदास्त	बरदाश्त
100/1/21, 23, 25, 26, 28, 29	उड़नघाईं	उड़नघाईं
104/1/35	अपकृत	उपकृत
105/1/24	बड़ा	बड़ी
107/1/36	कुछु	कछु
108/2/19	अलट-पुलट	उलट-पुलट
112/1/4	भक	मक
112/2/10	भक	मक
113/1/3	को	का
114/2/4	तो	वे तो
115/2/7	नाहरी	नोहरी
117/1/17	जसने	जनने
119/1/22	कर	कह
124/1/15, 17	खादार	रवादार
124/2/2	में	से
125/1/6	समुझों	समुझीं
125/1/7	आत	वात
134/2/13	चाहना	चाटना
135/1/10	कंकड़	कंकण
135/1/15	प्रजा	पंजा
138/1/4	सुमागी	सुभागी
142/2/39	बैगत	बैंगन
143/1/3	घर-चर	घर-भर
143/2/2	कट-कटा	कटा-कटा
144/2/25	छैला	छैल
145/1/25	चेलम्भा	चेलम्मा
150/1/30, 31	कद्द	कद्दू
151/2/12	उघरि	उघरि
155/1/26	वेकना	ठोंकना
155/1/28	वैसा	कैसा
159/2/9	वैंठ	वैंठे
159/2/31	छड़ाहु	छाड़हु
160/2/20	मी०	पी०
162/1/7–8	[illegible]	शऊर
163/2/4	का	अनावश्यक
169/2/13	रवाना	खाना
170/2/15	कसस	कसम
171/1/31	के	से
177/1/31	मानों	मनों
180/2/25	रेडियो	रंडियों
184/1/22	वहा	वहा
185/2/13	हुओ	दुओ
187/1/26	भरेगा	मरेगा
193/1/21	दुखमयी	दुखदायी
195/2/12	पीनी	पीली
196/2/8	ख्यात्	स्यात्
199/2/23	ढ़ानी	ठानी
200/1/42	वड़ें	वढ़ें
202/1/10	अनर्थ	अनर्घ
203/1/4	सहीं	नहीं
204/2/14	की	अनावश्यक
206/1/10	पूर्वभ्यास	पूर्वाभास
207/1/7	रोते	रोने
207/1/40	इसे	उसे
210/2/12	(3)	(उ)
212/2/41	जुड़ाई	जोड़ाई
214/1/5	वनना	बनाना
218/1/22	जारि	जोरि
220/1/36	क्ष	अनावश्यक
221/2/17	थाग	घाग
223/2/39	आत्मवल	आत्मवल का
227/2/28	खरीद	खरीदे
228/1/26	खर्चा	खर्ची
231/1/30	ड्योढ़ा न	ड्योढ़ान
233/1/13	पक्का	पका
234/2/31	खास	खासा
234/2/33	दस्तखान	दस्तरखान
243/2/25	हो	ही
246/2/14	भजीजे	भतीजे
247/2/14	जुआवर	जुआना
248/2/20	170	107
249/2/31	ईश्वरीय	ईश्वरी
251/1/35	ड़हा	गड़हा
255/2/18	दाग	दाम
259/1/35	को	का

पृ/का/पं०	मुद्रित	शुद्ध रूप
260/1/40	दिन्दुवान	हिन्दुवान
261/1/18	बोरो	बीरी
261/1/30	उतरना	उतरना या उतारना
264/1/10, 11	गोलापन	गीलापन
266/1/36	132	131
268/2/19	धुलते	घुलते
270/2/20	हुसको	हुमको
271/1/4	था	थी
271/1/5	गाजर-मूल	गाजर-मूली
272/2/17	छवि	अनावश्यक
281/1/12	गूल	गुल
285/1/10	गोड़	गोड़ें
286/2/39	द्राविणी	द्राविड़ी
288/1/26	450	458
302/1/4	का	कारें
306/1/24	घमाकर	घुमाकर
309/1/34	घोड़े चढ़कर	घोड़े पर चढ़कर
311/1/25	चकता	चकत्ता
315/1/15	निगुण	निर्गुण
340/1/4	चटकी	चुटकी
344/2/23	दंगा	दूंगा
349/1/15	289	389
357/2/6	3	37
367/1/38	हाइ	होइ
366/2/24	छत	छूत
368/2/15	छुद्र	क्षुद्र